दूसरा कांड

तीसरा कांड

चौथा कांड

पांचवां कांड

छठा कांड

सातवां कांड

आठवां कांड

नौवां कांड

दसवां कांड

ग्यारहवां कांड

बारहवां कांड

तेरहवां कांड

चौदहवां कांड

पंद्रहवां कांड

सोलहवां कांड

सत्रहवां कांड

अठारहवां कांड

उन्नीसवां कांड

बीसवां कांड

पहला कांड

सूक्त पहला — देवता—वाचस्पति

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः.
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे. (१)

जो रजोगुण, तमोगुण एवं सतोगुण तीन गुण और पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, तन्मात्रा एवं अहंकार सात पदार्थ दिव्य रूप में सर्वत्र भ्रमण करते हैं, वाणी के स्वामी ब्रह्म उन तत्त्वों और पदार्थों की दिव्य शक्ति मुझे दें. (१)

पुनरेहि वाचस्पते देवेन मनसा सह.
वसोष्पते नि रमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम् (२)

हे वाणी के स्वामी ब्रह्म देव! आप दिव्य मन के साथ मेरे समीप आइए. हे प्राण के स्वामी ब्रह्म! इच्छित फल दे कर मुझे आनंदित कीजिए. मेरे द्वारा अध्ययन किए गए वेदशास्त्र धारण करने की मुझे बुद्धि दीजिए. (२)

इहैवाभि वि तनूभे आर्त्नी इव ज्यया.
वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्.(३)

हे वाणी के स्वामी ब्रह्म! जिस प्रकार धनुष की डोरी चढ़ाने से उस के दोनों सिरे समान रूप से खिंच जाते हैं, उसी प्रकार मुझे वेदशास्त्र धारण करने की शक्ति एवं आनंदोपभोग के इच्छित साधन प्रदान करो. (३)

उपहूतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिर्ह्वयताम्.
सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि (४)

वाणी के स्वामी ब्रह्म का हम आह्वान करते हैं. हमारे द्वारा आह्वान किए गए ब्रह्म हमें अपने समीप बुलाएं. हम संपूर्ण ज्ञान से सदैव युक्त रहें तथा कभी दूर न हों. (४)

सूक्त दूसरा — देवता—पर्जन्य

विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम्.

विद्मो ष्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिवर्पसम् (१)

जड़ चेतन सब का पोषण कर्ता एवं सब को धारण करने वाला बादल बाण का पिता है तथा सभी तत्त्वों से युक्त पृथ्वी इस बाण की माता है. तात्पर्य यह है कि बादल और पृथ्वी दोनों से बाण अर्थात शक्ति की उत्पत्ति होती है. यह बात हम जानते हैं. (१)

ज्या के परि णो नमाश्मानं तन्वं कृधि.
वीडुर्वरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि (२)

हे धनुष की निंदनीय डोरी! तुम हमारी ओर न झुक कर हमारे शत्रुओं की ओर झुको. हे देवपति! हमारे शरीरों को पत्थर के समान सुदृढ़ बनाओ, हमें शत्रुओं के द्वेषपूर्ण कर्मों से दूर रखो एवं हमारे शत्रुओं का बल नष्ट करो. (२)

वृक्षं यद्गवः परिषस्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्यृभुम्.
शरुमस्मद् यावय दिद्युमिन्द्र (३)

हे इंद्र! जिस प्रकार गरमी से व्याकुल गाएं वट वृक्ष की छाया में शरण लेती हैं, उसी प्रकार हमारे शत्रुओं के द्वेष पूर्ण बाण हम से दूर रह कर उन्हीं के समीप जाएं. (३)

यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजनम्.
एवा रोगं चास्रावं चान्तस्तिठतु मुञ्ज इत् (४)

जिस प्रकार पृथ्वी और द्युलोक के मध्य तेज रहता है, उसी प्रकार यह बाण बहुमूत्र, अतिसार (दस्त) आदि रोगों तथा घावों को दबाए रहे. (४)

सूक्त तीसरा — देवता—पर्जन्य

विद्मा शरस्य पितरं पर्जन्यं शतवृष्ण्यम्.
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति (१)

हम सैकड़ों सामर्थ्यों वाले एवं बाण के पिता पर्जन्य अर्थात बादल को जानते हैं. हे मूत्ररोगी! मैं तेरे मूत्रादि रोगों को समाप्त करता हूं. शरीर में रखा हुआ मूत्र बाहर निकल कर पृथ्वी पर गिरे. (१)

विद्मा शरस्य पितरं मित्रं शतवृष्ण्यम्.
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति (२)

हम सैकड़ों सामर्थ्यों वाले एवं बाण के पिता मित्र अर्थात सूर्य को जानते हैं. हे रोगी मनुष्य! इसी बाण से मैं तेरे मूत्रादि रोगों को नष्ट करता हूं. तेरे पेट में रुका हुआ मूत्र बाहर निकल कर पृथ्वी पर गिरे. (२)

विद्मा शरस्य पितरं वरुण शतवृष्ण्यम्.

तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति (३)

हम सैकड़ों सामर्थ्यों से संपन्न एवं बाण के पिता वरुण को जानते हैं. हे रोगी मनुष्य! इसी बाण से मैं तेरे मूत्रादि रोगों को दूर करता हूं. तेरे पेट में रुका हुआ मूत्र बाहर निकल कर धरती पर गिरे. (३)

विद्मा शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृष्ण्यम्.
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति (४)

हम सैकड़ों शक्तियों वाले एवं बाण के पिता चंद्र को जानते हैं. हे रोगी मनुष्य! मैं उसी बाण से तेरे मूत्रादि रोगों को समाप्त करता हूं. तेरे पेट में रुका हुआ मूत्र बाहर निकले और धरती पर गिरे. (४)

विद्मा शरस्य पितरं सूर्यं शतवृष्ण्यम्.
तेना ते तन्वे३ शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति (५)

हम सैकड़ों शक्तियों वाले एवं बाण के पिता सूर्य को जानते हैं. हे रोगी! मैं इसी बाण से तेरे मूत्रादि रोगों को नष्ट करता हूं. उदर (पेट) में संचित तेरा मूत्र बाहर निकल कर धरती पर गिरे. (५)

यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद्वस्तावधि संश्रुतम्.
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् (६)

जो मूत्र तेरी आंतों में, मूत्रनाड़ियों में एवं मूत्राशय में रुका हुआ है, वह तेरा सारा मूत्र शब्द करता हुआ शीघ्र बाहर निकल आए. (६)

प्र ते भिनद्मि मेहनं वर्त्रं वेशन्त्या इव.
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् (७)

हे मूत्र व्याधि से पीड़ित रोगी! मैं तेरे मूत्र निकलने के मार्ग का उसी प्रकार भेदन करता हूं, जिस प्रकार जलाशय का जल बाहर निकालने के लिए नाली खोदते हैं. तेरा सारा मूत्र शब्द करता हुआ बाहर निकले. (७)

विषितं ते वस्तिबिलं समुद्रस्योदधेरिव.
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् (८)

हे मूत्र रोग से दुखी रोगी! जिस प्रकार सागर, जलाशय आदि का जल निकलने के लिए मार्ग बना दिया जाता है, उसी प्रकार मैं ने तेरे रुके हुए मूत्र को बाहर निकालने के लिए तेरे मूत्राशय का द्वार खोल दिया है. तेरा सारा मूत्र शब्द करता हुआ बाहर निकले. (८)

यथेषुका परापतदवसृष्टाधि धन्वनः.
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् (९)

जैसे खिंची हुई डोरी वाले धनुष से छोड़ा हुआ बाण तेजी से लक्ष्य की ओर जाता है, वैसे तेरा रुका हुआ सारा मूत्र शब्द करता हुआ बाहर निकले. (९)

सूक्त चौथा — देवता—जल

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्. पृंचतीर्मधुना पयः (१)

यज्ञ करने के इच्छुक जन अपनी माताओं और बहनों के समान जल, सोमरस, दूध एवं घृत आदि यज्ञ सामग्री ले कर आते हैं. (१)

अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह. ता नो हिन्वन्त्वध्वरम् (२)

जो जल सूर्य मंडल में स्थित है अथवा सूर्य जिस जल के साथ स्थित है, वह जल हमारे यज्ञ को फल देने में समर्थ बनाए. (२)

अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः. सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः (३)

मैं स्वच्छ एवं देवता रूप जलों का आह्वान करता हूं. जल से पूर्ण जलाशयों अर्थात नदियों और तालाबों में हमारी गाएं जल पीती हैं. (३)

अप्स्व१न्तरमृतमप्सु भेषजम्.
अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः (४)

जलों में अमृत है. जलों में ओषधियां निवास करती हैं. इन जलों के प्रभाव से हमारे घोड़े बलवान बन, हमारी गाएं शक्ति संपन्न बनें. (४)

सूक्त पांचवां — देवता—जल

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन. महे रणाय चक्षसे (१)

हे जल! आप सभी प्रकार का सुख देने वाले हैं. अन्न आदि सुखों का उपभोग करने के इच्छुक हम सब को आप उन के उपभोग की शक्ति प्रदान करें. आप हमें महान एवं रमणीय आनंद स्वरूप ब्रह्म के साक्षात्कार का सामर्थ्य दें. (१)

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः. उशतीरिव मातरः (२)

जिस प्रकार माताएं अपनी इच्छा से दूध पिला कर बालकों को पुष्ट करती हैं, उसी प्रकार हे जल! आप अपने अत्यधिक कल्याणकारी रस का हमें अधिकारी बनाएं. (२)

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ. आपो जनयथा च नः (३)

हे जल! हम जिस अन्न आदि को पा कर तृप्त होते हैं, उसे प्राप्त करने के लिए हम आप को पर्याप्त रूप में पाएं. हे जल! आप पर्याप्त रूप में आ कर हमें

तृप्त करें. (३)

ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्. अपो याचामि भेषजम् (४)

मैं धनों के स्वामी एवं सुख साधन प्रदान कर के गतिशील मनुष्यों को एक स्थान पर बसाने वाले जल की ओषधि के रूप में याचना करता हूं. (४)

सूक्त छठा — देवता—जल

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये. शं योरभि स्रवन्तु नः (१)

दिव्यगुणों वाला जल सभी ओर से हमारा कल्याण करने वाला हो. जल हमारे चारों ओर कल्याण की वर्षा करे एवं पीने के लिए उपलब्ध हो. (१)

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा. अग्निं च विश्वशम्भुवम् (२)

मुझे सोम ने बताया है कि सारी ओषधियां एवं अग्नि जल में निवास करती हैं. अग्नि सारे संसार का कल्याण करने वाली है. (२)

आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम. ज्योक् च सूर्यं दृशे (३)

हे जल! तुम मेरे रोगों का निवारण करने के लिए ओषधियां प्रदान करो. अधिक समय तक सूर्य के दर्शन करने के लिए तुम मेरे शरीर को पुष्ट करो. (३)

शं न आपो धन्वन्या३ः शमु सन्त्वनूप्याः.
शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः (४)

जल हमें मरु भूमि में सुखकारी हों. जिन स्थानों में जल की प्राप्ति सुलभ है, वहां के जल हमारा कल्याण करें. कुआं, बावड़ी आदि खोद कर प्राप्त किए गए जल हमारे लिए कल्याणकारी हों. घड़े में भर कर लाया गया जल हमें सुख दे. वर्षा से प्राप्त होने वाला जल हमारे लिए सुखकारी हो. (४)

सूक्त सातवां — देवता—अग्नि और इंद्र

स्तुवानमग्न आ वह यातुधानं किमीदिनम्.
त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्बभूविथ (१)

हे अग्नि! हम जिन देवों की स्तुति करते हैं, उन्हें तुम हमारे समीप लाओ एवं हमें मारने की इच्छा से घूमने वाले राक्षसों को हम से दूर भगाओ. हे दिव्य गुणों वाले अग्नि! हमारे नमस्कार आदि से प्रसन्न तुम दस्युजनों की हत्या कर देते हो. (१)

आज्यस्य परमेष्ठिञ् जातवेदस्तनूवशिन्.
अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय (२)

हे स्वर्ग आदि उत्तम स्थानों में निवास करने वाले, हे जातवेद एवं हे जलशक्ति

रूप में सब के शरीरों में स्थित अग्नि! हमारे द्वारा स्रुवा आदि से नाप कर दिए गए घृत का भोजन कीजिए एवं राक्षसों का विनाश भी कीजिए. (२)

वि लपन्तु यातुधाना अत्त्रिणो ये किमीदिनः.
अथेदमग्ने नो हविरिन्द्रश्च प्रति हर्यतम् (३)

हे अग्नि! आप और परम ऐश्वर्य वाले इंद्र, हमारे दिए गए हवि को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करें. राक्षस, सब का भक्षण करने वाले दस्यु, एवं इधरउधर घूमने वाले दुष्ट जन नष्ट हो जाएं. (३)

अग्निः पूर्व आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान्.
ब्रवीतु सर्वो यातुमान् यमस्मीत्येत्य (४)

सब से पहले अग्निदेव राक्षसों को दंड देना आरंभ करें. इस के पश्चात शक्तिशाली भुजाओं वाले इंद्र राक्षसों को दूर भगाएं. अग्नि और इंद्र से पीड़ित सभी राक्षस आ कर आत्मसमर्पण करें और अपना परिचय दें कि मैं अमुक हूं. (४)

पश्याम् ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः
त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम् (५)

हे सब को जानने वाले अग्नि! हम आप का पराक्रम देखें. हे उपासना के योग्य अग्नि. हमारी इच्छानुसार राक्षसों से कहिए कि वे हमें दुख न दें. आप के द्वारा सताए हुए राक्षस अपना परिचय देते हुए हमारी शरण में आएं. (५)

आ रभस्व जातवेदोऽस्माकार्थाय जज्ञिषे.
दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय (६)

हे सब को जानने वाले अग्नि! तुम राक्षसों के विनाश का कार्य आरंभ करो, क्योंकि तुम हमारे प्रयोजन पूर्ण करने के लिए उत्पन्न हुए हो. हे अग्नि! तुम हमारे दूत बन कर राक्षसों को दूर भगाओ. (६)

त्वमग्ने यातुधानानुपबद्धां इहा वह.
अथैषामिन्द्रो वज्रेणापि शीर्षाणि वृश्चतु (७)

हे अग्नि! तुम रस्सी आदि से राक्षसों के हाथपैर बांध कर उन्हें यहां ले आओ. इस के पश्चात इंद्र अपने वज्र से उन के सिर काट दें. (७)

सूक्त आठवां — देवता—बृहस्पति

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत्.
य इदं स्त्री पुमानकरिह स स्तुवतां जनः (१)

मेरे द्वारा अग्नि आदि देवों को दिया हुआ घृत आदि हवि दुष्ट राक्षसों को यहां

से उसी प्रकार दूर हटा दे, जिस प्रकार नदी की धारा फेन को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाती है. मेरे प्रति अभिचार, जादू, टोना, टोटका करने वाले स्त्रीपुरुष अपने मनोरथ में असफल हो कर यहां मेरी शरण में आएं और मेरी स्तुति करें. (१)

अयं स्तुवान आगमदिमं स्म प्रति हर्यत.
बृहस्पते वशे लब्ध्वाग्नीषोमा वि विध्यतम् (२)

हे बृहस्पति आदि देवो! आप की स्तुति करता हुआ जो यह मनुष्य आप की शरण में आया है, यह हमारा विरोधी शत्रु है. हे बृहस्पति, अग्नि एवं सोम! इन उपद्रवकारियों को वश में कर के अनेक प्रकार से दंडित करो. (२)

यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नयस्व च.
नि स्तुवानस्य पातय परमक्ष्युतावरम् (३)

हे सोमरस पीने वाले अग्निदेव! तुम राक्षसों की संतानों के समीप पहुंच कर उन्हें समाप्त कर दो और हमारी संतान की रक्षा करो. हमारे जो शत्रु तुम से भयभीत हो कर तुम्हारी प्रार्थना करते हैं, तुम उन की दाईं और बाईं दोनों आंखें बाहर निकाल लो. (३)

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहा सतामत्त्रिणां जातवेदः.
तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने (४)

हे सब के विषय में जानने वाले अग्नि! तुम गुहा में निवास करने वाले राक्षसों को जानते हो. हे मंत्र द्वारा वृद्धि पाते हुए अग्नि! इन राक्षसों द्वारा सैकड़ों प्रकार की हिंसा को रोको एवं संतान सहित इन का विनाश करो. (४)

सूक्त नौवां — देवता—वसु

अस्मिन् वसु वसवो धारयन्त्विन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः.
इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिञ्ज्योतिषि धारयंतु (१)

भांतिभांति की धन संपत्ति की कामना करने वाले इस पुरुष को वसु, इंद्र, पूषा, वरुण, मित्र, अग्नि एवं विश्वेदेव धन प्रदान करें तथा ये देव इसे उत्तम ज्योति संपन्न बनाएं. (१)

अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिरस्तु सूर्यो अग्निरुत वा हिरण्यम्.
सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं नाकमधि रोहयेमम् (२)

हे इंद्रादि देवो! ग्रामादि सुखों के इच्छुक इस पुरुष के अधिकार में सूर्य, अग्नि, चंद्र, स्वर्ग आदि की ज्योति पूर्ण रूप से रहे. इस के कारण शत्रु हमारे अधिकार में रहें. तुम हमें सभी प्रकार के दुःखों से हीन स्वर्ग में पहुंचाओ. (२)

येनेन्द्राय समभरःपयांस्युत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः.

तेन त्वमग्न इह वर्धयेमं सजातानां श्रैष्ठ्य आ धेह्येनम् (३)

हे सब कुछ जानने वाले अग्नि! आप ने जिन उत्तम मंत्रों द्वारा इंद्र के लिए दुग्ध, घृत आदि रस हवि के रूप में प्राप्त कराए, हे अग्नि! उन्हीं मंत्रों के द्वारा इस पुरुष की वृद्धि करो एवं इसे अपनी जाति वालों में श्रेष्ठ बनाओ. (३)

ऐषां यज्ञमुत वर्चो ददेऽहं रायस्पोषमुत चित्तान्यग्ने.
सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं नाकमधि रोहयेमम् (४)

हे अग्नि! तुम्हारी कृपा से मैं इन शत्रुओं के स्वर्ग आदि लोकों के साधक यज्ञ, कर्म, तेज, धन एवं चित्त का हरण करता हूं. मेरे शत्रु मुझ से निम्न स्थिति में रहें. आप मुझ यजमान को सभी दुखों से रहित एवं उत्तम स्वर्ग में पहुंचा दो. (४)

सूक्त दसवां — देवता—वरुण

अयं देवानामसुरो वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः.
ततस्परि ब्रह्मणा शाशदान उग्रस्य मन्योरुदिमं नयामि (१)

इंद्रादि देवों में वरुण पापियों को दंड देने वाले हैं. इस प्रकार के ये वरुण सब से उत्कृष्ट हैं. सभी पदार्थ तेजस्वी वरुण देव के वश में हैं. इसलिए मैं वरुण की स्तुति संबंधी मंत्रों से शक्ति प्राप्त कर के वरुण देव के प्रचंड कोप के कारण उत्पन्न जलोदर रोग वाले इस पुरुष को रोगमुक्त करता हूं. (१)

नमस्ते राजन् वरुणास्तु मन्यवे विश्वं ह्युग्र निचिकेषि द्रुग्धम्.
सहस्रमन्यान् प्र सुवामि साकं शतं जीवाति शरदस्तवायम् (२)

हे तेजस्वी वरुण! तुम्हारे क्रोध के लिए नमस्कार है. तुम सभी प्राणियों द्वारा किए गए अपराधों को जानते हो. मैं हजारों अपराधी पुरुषों को तुम्हारी सेवा में भेज रहा हूं. ये मनुष्य आप के प्रति निष्ठा वाले बन कर सौ वर्ष तक जीवित रहें. (२)

यदुवक्थानृतं जिह्वया वृजिनं बहु.
राज्ञस्त्वा सत्यधर्मणो मुंचामि वरुणादहम् (३)

हे जलोदर रोग से ग्रसित पुरुष! अपनी जिह्वा से तूने पाप का साधन असत्य भाषण अधिक किया है. मैं सत्य धर्म वाले एवं तेजस्वी वरुण के कोप से तेरी रक्षा करता हूं. (३)

मुंचामि त्वा वैश्वानरादर्णवान् महतस्परि.
सजातानुग्रेहा वद ब्रह्म चाप चिकीहि नः (४)

हे पुरुष! मैं तुझे जठराग्नि को मंद करने वाले महान जलोदर रोग से छुड़ाता हूं. हे परम शक्तिशाली वरुण! आप अपने सहचरों, भटों अर्थात अपने सेवकों से कहिए कि

वे बारबार आ कर इस मनुष्य को पीड़ा न दें. आप हमारे द्वारा दिए गए हवि रूप अन्न और स्तुति से प्रसन्न हो कर हमारे भय का विनाश कीजिए. (४)

सूक्त ग्यारहवां   देवता—पूषा आदि

वषट् ते पूषन्नस्मिन्त्सूतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः.
सिस्रतां नार्यृतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां सूतवा उ (१)

हे पूषा देव! सुख उत्पन्न करने वाले इस यज्ञ कर्म में प्राणि समूह के प्रेरक देव अर्यमा होता बन कर आप को हवि प्रदान करें. संपूर्ण जगत के निर्माता वेधा देव आप को वषट्कार के द्वारा हवि प्रदान करें. आप की कृपा से यह गर्भिणी नारी प्रसव संबंधी कष्ट से छुटकारा पा कर जीवित संतान को जन्म दे. सुख पूर्वक प्रसव के लिए इस के संधि बंध शिथिल हो जाएं. (१)

चतस्रो दिवः प्रदिशश्चतस्रो भूम्या उत.
देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्णुवन्तु सूतवे (२)

द्युलोक से संबंधित प्राची आदि चार दिशाओं एवं भूलोक की आग्नेयी आदि चार दिशाओं ने एवं इन दिशाओं के अधिष्ठाता इंद्र आदि देवों ने पहले गर्भ को पूर्ण किया था. वे सभी देव इस समय गर्भ को गर्भाशय से बाहर निकालें एवं जरायु के आच्छादन से मुक्त करें. (२)

सूषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि.
श्रथया सूषणे त्वमव त्वं बिष्कले सृज (३)

प्रसव की देवता पूषा गर्भ को जरायु के बंधन से अलग करें. हम भी सुखपूर्वक प्रसव के लिए योनि मार्ग को खोल रहे हैं. तुम भी सुखपूर्वक प्रसव के लिए योनि मार्ग को शिथिल करो. हे सूतिमारुत देव! आप भी गर्भ का मुख नीचे को कर के उसे बाहर निकलने हेतु प्रेरित करो. (३)

नेव मांसे न पीबसि नेव मज्जस्वाहतम्.
अवैतु पृश्नि शेवलं शुने जराय्वत्तवेऽव जरायु पद्यताम् (४)

हे प्रसव करने वाली नाड़ी! तू इस उदरगत जरायु से पुष्ट नहीं होगी, क्योंकि इस का संबंध मांस, मज्जा आदि से नहीं है. इसलिए उजले रंग की यह जरायु दोनों के ऊपर तैरने वाली काई के समान नीचे गिर जाए. इसे कुत्ते के खाने के लिए नीचे गिर जाने दें. (४)

वि ते भिनद्मि मेहनं वि योनिं वि गवीनिके.
वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं जरायुणाव जरायु पद्यताम् (५)

हे गर्भिणी! मैं गर्भस्थ बालक को बाहर निकालने के लिए मूत्रमार्ग को फैलाता

हूं तथा योनि के आसपास की नाड़ियों को भी फैलाता हूं. क्योंकि ये प्रसव में बाधा डालती हैं. मैं माता और पुत्र को अलगअलग करता हूं. इस के बाद मैं पुत्र को जरायु से अलग करता हूं. जरायु गर्भाशय से नीचे गिर जाए. (५)

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः.
एवा त्वं दशमास्य साकं जरायुणा पताव जरायु पद्यताम् (६)

हे दशमास गर्भस्थ शिशु! जिस प्रकार वायु, मन एवं आकाश में उड़ने वाले पक्षी आकाश में बिना रोकटोक के विचरण करते हैं, उसी प्रकार तू जरायु के साथ गर्भ से बाहर आ. जरायु गर्भाशय से नीचे गिरे. (६)

सूक्त बारहवां — देवता—यक्ष्मानाशन

जरायुजः प्रथम उस्रियो वृषा वातभ्रजा स्तनयन्नेति वृष्ट्या
स नो मृडाति तन्व ऋजुगो रुजन् य एकमोजस्त्रेधा विचक्रमे (१)

नक्षत्रों को पराजित कर के प्रकट होने वाले, संसार में सब से प्रथम उत्पन्न एवं वायु के समान शीघ्रगामी सूर्य बादलों को गर्जन करने के लिए प्रेरित करते हुए वर्षा के साथ आते हैं. वे सूर्य त्रिदोष से उत्पन्न रोग आदि का विनाश करते हुए हमारी रक्षा करें. सीधे चलने वाले जो सूर्य एक हो कर भी अपने तेज को तीन प्रकार से प्रकाशित करते हैं, वे हमें सुख प्रदान करें. (१)

अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम.
अङ्कान्त्समङ्कान् हविषा विधेम यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता (२)

हे प्राणियों के प्रत्येक अंग में अपनी दीप्ति से वर्तमान सूर्य! हम तुम्हें नमस्कार करते हुए चरु आदि से तुम्हारी उपासना करते हैं. हम तुम्हारे अनुचर एवं परिवार रूप देवों की भी हवि से सेवा करते हैं. जिस ज्वर आदि रोग ने इस पुरुष के शरीर के अवयवों को जकड़ रखा है, हम उस की निवृत्ति के लिए हवि द्वारा तुम्हारी पूजा करते हैं. (२)

मुंच शीर्षक्त्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य.
यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च (३)

हे सूर्य! इस पुरुष को सिर के रोग से छुटकारा दिलाओ. जो खांसी का रोग इस के जोड़जोड़ में प्रवेश कर गया है, उस से भी इसे मुक्त कराओ. वर्षा एवं जल से उत्पन्न जो पित्त के विकार से जनित आदि रोग हैं, उन से इस पुरुष को मुक्त कराइए. ये रोग इस पुरुष को छोड़ कर वनस्पति और पर्वतों में चले जाएं. (३)

शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे.
शं मे चतुर्भ्यो अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वे३ मम (४)

मेरे शरीर के अवयव सिर का रोग शांति के रूप में कल्याणकारी हो. मेरे चरण आदि निम्न अंगों को सुख मिले. मेरे दोनों हाथों और दोनों चरणों को सुख प्राप्त हो. मेरे शरीर के मध्य भाग को नीरोगता प्राप्त हो. (४)

सूक्त तेरहवां — देवता—विद्युत

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे.
नमस्ते अस्त्वश्मने येना दूडाशे अस्यसि (१)

हे पर्जन्य! विद्युत को मेरा नमस्कार हो. गर्जन करते हुए वज्र को मेरा नमस्कार हो. आप आततायिओं को दूर फेंक देते हैं. (१)

नमस्ते प्रवतो नपाद् यतस्तपः समूहसि.
मृडया नस्तनूभ्यो मयस्तोकेभ्यस्कृधि (२)

हे पर्जन्य! आप सत्पुरुषों की रक्षा करते हैं. आप को नमस्कार है. आप जल को भीतर धारण किए रहते हैं और समय से पहले नीचे नहीं गिरने देते हैं. आप पाप विनाशक तप को एकत्र करते हैं एवं पापियों पर अपना वज्र फेंकते हैं. आप हमारे शरीर को सुख दें और हमारे पुत्र, पौत्र आदि का कल्याण करें. (२)

प्रवतो नपात्रम एवास्तु तुभ्यं नमस्ते हेतये तपुषे च कृण्मः.
विद्म ते धाम परमं गुहा यत् समुद्रे अन्तर्निहितासि नाभिः (३)

हे ऊंचाई से नीचे की ओर गिरने वाले पर्जन्य! तुम्हारे लिए नमस्कार है. तुम्हारे संतापकारी आयुध वज्र को नमस्कार है. हम आप के गुफा के समान अगम्य एवं उत्तम निवास स्थान को जानते हैं. जिस प्रकार शरीर में नाभि मध्यस्थ है, उसी प्रकार तुम अंतरिक्ष के केंद्र सागर में स्थित हो. (३)

यां त्वा देवा असृजन्त विश्व इषुं कृण्वाना असनाय धृष्णुम्.
सा नो मृड विदथे गृणाना तस्यै ते नमो अस्तु देवि (४)

हे अग्नि! सभी देवों के अप्रिय पुरुषों पर गिराने के लिए एवं शत्रुओं पर बाण के रूप में फेंकने के लिए तुम्हारी रचना की गई है. यज्ञ में तुम्हारी स्तुति भी की जाती है. तुम हमारी रक्षा करो. हे आकाश में चमकती हुई अग्नि! तुम्हारे लिए नमस्कार हो. (४)

सूक्त चौदहवां — देवता—यम

भगमस्या वर्च आदिष्यधि वृक्षादिव स्रजम्.
महाबुध्न इव पर्वतो ज्योक् पितृष्वास्ताम् (१)

मनुष्य जिस प्रकार वृक्ष से माला बनाने हेतु फूल तोड़ता है, उसी प्रकार मैं इस स्त्री के भाग्य और तेज को स्वीकार करता हूं. धरती में भीतर तक धंसा हुआ पर्वत

जिस प्रकार स्थिर रहता है, उसी प्रकार यह बुरे भाग्य वाली स्त्री चिरकाल तक पिता के घर रहे अर्थात यह कभी पति का मुख न देखे. (१)

एषा ते राजन् कन्या वधूर्नि धूयतां यम.
सा मातुर्बध्यतां गृहेऽथो भ्रातुरथो पितुः (२)

हे सुशोभित सोम! यह कन्या आप की पत्नी है, क्योंकि इस ने पहले आप को स्वीकार किया है, इसलिए यह पतिगृह से निकाल दी जानी चाहिए. यह कन्या चिरकाल तक अपने पिता एवं भाई के घर पड़ी रहे. (२)

एषा ते कुलपा राजन् तामु ते परि दद्मसि.
ज्योक् पितृष्वासाता आ शीर्ष्णः समोप्यात् (३)

हे सुशोभित सोम! यह स्त्री पतिव्रता होने के कारण आप के कुल का पालन करने वाली है, इसलिए हम इसे रक्षा के लिए आप को देते हैं. यह तब तक अपने पिता के घर पर रहे. यह धरती पर सिर गिरने तक अर्थात मरण पर्यंत अपने पिता के घर रहे. (३)

असितस्य ते ब्रह्मणा कश्यपस्य गयस्य च.
अन्तःकोशमिव जामयोऽपि नह्यामि ते भगम् (४)

हे स्त्री! मैं तेरे भाग्य को असित, ब्रह्मा, कश्यप एवं गय ऋषियों के मंत्रों से इस प्रकार सुरक्षित करता हूं, जिस प्रकार स्त्रियां घरों में अपना धन, वस्त्र आदि छिपा कर रखती हैं. (४)

सूक्त पंद्रहवां — देवता—सिंधु आदि

सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः.
इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि (१)

नदियां हमारे अनुकूल बहें, पवन हमारे अनुकूल चले एवं पक्षी हमारी इच्छा के अनुसार (गति करें). पुरातन देव मेरे इस यज्ञ को स्वीकार करें, क्योंकि मैं घी, दूध आदि का संग्रह कर के यह यज्ञ कर रहा हूं. (१)

इहैव हवमा यात म इह संस्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः.
इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः (२)

हे देवो! आप सब को त्याग कर मेरे इस यज्ञ में पधारें. इस में आज्य आदि का होम है. हे स्तुतियों द्वारा बढ़ाए जाते हुए देवो! आप इस यजमान की वृद्धि करें. हे देवो! हमारी स्तुतियों को सुन कर प्रसन्न हुए आप की कृपा से हमारे घर में गाय, अश्व आदि पशु एवं अन्य संपत्ति निवास करे. (२)

ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः.
तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि (३)

गंगा आदि नदियों की जो अक्षय धारा एवं झरने सदा बहते रहते हैं तथा ग्रीष्म ऋतु में कभी नहीं सूखते हैं, उन के कारण हमारा समस्त पशु धन सदैव समृद्ध हो. (३)

ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदकस्य च.
तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि (४)

घी, दूध और जल के जो प्रवाह सदैव गतिशील रहते हैं, उन सभी न सूखने वाले प्रवाहों के कारण हमारी सभी संपत्ति बढ़ती रहे. (४)

सूक्त सोलहवां — देवता—अग्नि, वरुण आदि

ये ऽमावास्यां३ रात्रिमुदस्थुर्व्राजमत्त्रिणः.
अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमधि ब्रवत् (१)

मनुष्यों का भक्षण करने वाले जो राक्षस अमावस्या की अंधेरी रात में इधर उधर घूमते हैं. चौथे अग्निदेव उन राक्षसों एवं चोरों का संहार कर के हमारी रक्षा करें. (१)

सीसायाध्याह वरुणः सीसायाग्निरुपावति.
सीसं म इन्द्रः प्रायच्छत् तदङ्ग यातुचातनम् (२)

वरुण देव ने फेन के विषय में कहा है. सीसे जस्ते के विषय में अग्नि ने भी यही कहा है. परम ऐश्वर्ययुक्त इंद्र ने मुझे सीसा प्रदान किया है. इंद्र ने कहा है कि हे प्रिय! यह सीसा राक्षसों का संहार करने वाला है. (२)

इदं विष्कन्धं सहत इदं बाधते अत्त्रिणः.
अनेन विश्वा ससहे या जातानि पिशाच्याः (३)

यह सीसा राक्षस, पिशाच आदि द्वारा डाले जाने वाले विघ्नों को समाप्त करने वाला है. यह मनुष्यों का भक्षण करने वाले राक्षसों को नष्ट करता है. मैं इस सीसे के द्वारा सभी राक्षसों को पराजित करता हूं. वे राक्षस पिशाची से उत्पन्न हैं. (३)

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्.
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा (४)

हे शत्रु! यदि तू हमारी गायों, घोड़ों एवं सहायता करने वाले सेवकों की हत्या करता है तो मैं सीसे से तुझे मारूंगा. तू मेरे वीरों की हत्या नहीं कर सकेगा. (४)

सूक्त सत्रहवां देवता—स्त्रियां एवं धर्मपत्नियां

अमूर्या यन्ति योषितो हिरा लोहितवाससः.
अभ्रातर इव जामयस्तिष्ठन्तु हतवर्चसः (१)

स्त्रियों की लाल रक्त प्रवाहिनी जो नाड़ियां रोग के कारण सदा प्रवाहित होती रहती हैं, वे रोग नष्ट हो जाने के कारण इस प्रकार रुक जाएं, जिस प्रकार बिना भाइयों वाली बहनें ससुराल न जा कर अपने पिता के घर में ही रुक जाती हैं. (१)

तिष्ठावरे तिष्ठ पर उत त्वं तिष्ठ मध्यमे.
कनिष्ठिका च तिष्ठति तिष्ठादिद् धमनिर्मही (२)

हे शरीर के निचले भाग में वर्तमान नाड़ी! हे शरीर के ऊपरी भाग में स्थित नाड़ी! हे शरीर के मध्य भाग में वर्तमान नाड़ी! तू भी स्थिर हो जा. रुधिर का प्रवाह बंद करने के लिए छोटी और बड़ी सभी नाड़ियां स्थिर हो जाएं. (२)

शतस्य धमनीनां सहस्रस्य हिराणाम्.
अस्थुरिन्मध्यमा इमाः साकमन्ता अरंसत (३)

हृदय संबंधी सैकड़ों धमनियां, हजारों शिराएं एवं उन की मध्यवर्ती रक्तवाहिनी नाड़ियां इस मंत्र के प्रभाव से खून बहाना बंद कर दें. शेष नाड़ियां पूर्ववत रक्त प्रवाह चालू रखें. (३)

परि वः सिकतावती धनूर्बृहत्यक्रमीत्.
तिष्ठतेलयता सु कम (४)

हे पथरी रोग उत्पन करने वाली नाड़ी! हे धनु और बृहती नाड़ी. तुम रुधिर प्रवाह के सभी मार्गों को चारों ओर से घेर कर फैली हुई हो. तुम रक्त स्राव रहित बनो तथा इस जन का सुख बढ़ाओ. (४)

सूक्त अठारहवां देवता—सावित्री आदि

निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं१ निररातिं सुवामसि.
अथ या भद्रा तानि नः प्रजाया अरातिं नयामसि (१)

हम ललाट के असौभाग्य सूचक चिह्न को शत्रु के समान अपने शरीर से दूर करते हैं. जो सौभाग्य सूचक चिह्न हैं, वे हमारी संतान को प्राप्त हों. हम ने अपने शरीर से बुरे चिह्न दूर किए हैं, वे हमारे शत्रुओं को प्राप्त हों. (१)

निररणिं सविता साविषक् पदोर्निर्हस्तयोर्वरुणो मित्रो अर्यमा.
निरस्मभ्यमनुमती रराणा प्रेमां देवा असाविषुः सौभगाय (२)

सब को प्रेरणा देने वाले सविता देव, वरुण देव, मित्र एवं अर्यमा देव हमारे हाथों

और पैरों में स्थित असौभाग्य सूचक लक्षणों को दूर कर दें. अनुमति देवी, 'भय मत करो', कहती हुई हमारे शरीर में वर्तमान सभी बुरे लक्षणों को निकाल दें. इंद्र आदि देवों ने इस अनुमति देवी को हमें सौभाग्य देने के लिए प्रेरित किया है. (२)

यत आत्मनि तन्वां घोरमअस्ति यद्वा केशेषु प्रतिचक्षणं वा.
सर्वं तद् वाचाप हन्मो वयं देवस्त्वा सविता सूदयतु (३)

हे पुरुष! तेरे अपने शरीर, केशों एवं नेत्रों के जो बुरे लक्षण हैं, हम मंत्र रूपी वाणी से उन सभी बुरे लक्षणों का विनाश करते हैं. सविता देव तुझे कल्याण की प्रेरणा दें. (३)

रिश्यपदीं वृषदतीं गोषेधां विधमामुत.
विलीढ्यं ललाम्यं१ ता अस्मन्नाशयामसि (४)

हम से संबंधित जो स्त्री हरिण के समान पैरों वाली, बैल के समान दांतों वाली, गाय के समान गति वाली एवं विकृत शब्द बोलने वाली है; हम मंत्रों के प्रभाव से उस के इन दुर्लक्षणों को दूर करते हैं. जिस स्त्री के माथे पर दुर्लक्षणों के प्रतीक उलटे रोम हैं, उन्हें भी हम अपने मंत्रों के प्रभाव से दूर करते हैं. (४)

सूक्त उन्नीसवां — देवता—इंद्र आदि

मा नो विदन् विव्याधिनो मो अभिव्याधिनो विदन्.
आराच्छरव्या अस्मद्विषूचीरिन्द्र पातय (१)

अस्त्रशस्त्र आदि से ताड़ित करने वाले जो शत्रु हैं, वे हमें प्राप्त न कर सकें. सामने आ कर हिंसा करने वाले हमें न पा सकें. हे परम ऐश्वर्य संपन्न इंद्र देव! शत्रुओं द्वारा बारबार छोड़े गए अनेक प्रकार के मुखों वाले जो बाण हैं, उन्हें हम से दूर स्थान में गिराओ. (१)

विष्वञ्चो अस्मच्छरवः पतन्तु ये अस्ता ये चास्याः.
दैवीर्मनुष्येषवो ममामित्रान् वि विध्यत (२)

जो बाण शत्रुओं द्वारा धनुष से छोड़े जा रहे हैं, अथवा जो बाण छोड़ने के लिए तरकस में सुरक्षित हैं, वे हम से दूर रहें. जो दैवी एवं मानवीय अस्त्रशस्त्र हैं, वे जा कर हमारे शत्रुओं को वेध डालें. (२)

यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्ट्यो यो अस्मां अभिदासति.
रुद्रः शरव्य यैतान् ममामित्रान् वि विध्यतु (३)

हमारी जाति का अधिक बली, शत्रु समान शक्ति वाला अथवा निकृष्ट बलशाली जो मनुष्य हमें दास बनाना चाहता है, हमारे उन अमित्रों को, सब को रुलाने वाले संहार कर्ता देव रुद्र अपने बाणों से बींध डालें. (३)

यः सपत्नो योऽसपत्नो यश्च द्विषञ्छपाति नः.
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् (४)

जो हमारी जाति का अथवा भिन्न जाति का पुरुष हम से द्वेष रखने के कारण हमें शाप देता है. इंद्र आदि सभी देव उस का विनाश करें. मेरे द्वारा प्रयोग किए गए मंत्र उस के शाप से मेरी रक्षा करें. (४)

सूक्त बीसवां — देवता—सोम, मरुत आदि

अदारसृद् भवतु देव सोमास्मिन् यज्ञे मरुतो मृडता नः.
मा नो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या (१)

हे सोम देव! हमारा शत्रु अपने स्थान से भागा हुआ होने के कारण कभी भी अपनी स्त्री के पास न पहुंच सके. हे मरुत देव! इस यज्ञ में आप हमारी रक्षा करें. सामने से आता हुआ तेजस्वी शत्रु मुझे प्राप्त न कर सके. कीर्ति और उन्नति के मार्ग में विघ्न डालने वाले पाप भी हमें न पा सकें. (१)

यो अद्य सेन्यो वधोऽघायूनामुदीरते.
युवं तं मित्रावरुणावस्मद् यावयतं परि (२)

आज युद्ध में हिंसक और पापी शत्रुओं के हम पर चलाए गए जो आयुध हमारी ओर आ रहे हैं, हे वरुण देव! उन्हें आप हम से दूर रखो. हे मित्र और वरुण! युद्ध में शत्रु को हम से इस प्रकार दूर रखो कि वह हमें छू भी न सके. (२)

इतश्च यदमुतश्च यद् वधं वरुण यावय.
वि महच्छर्म यच्छ वरीयो यावया वधम् (३)

हे वरुण! हमारे समीपवर्ती शत्रु द्वारा चलाया हुआ जो आयुध हम तक आता है अथवा दूरवर्ती शत्रु का जो आयुध हमारे ऊपर चलाया जाता है, उसे हम से दूर करो. हमें महान सुख प्रदान करो एवं मंत्र प्रयोग आदि के कारण असफल न होने वाले शस्त्रास्त्रों से हमें दूर रखो. (३)

शास इत्था महां अस्यमित्रसाहो अस्तृतः.
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन (४)

हे इंद्र! आप शासक और नियंता होने के कारण महान गुणों से युक्त हैं. आप शत्रुओं को पराजित करने वाले हैं. आप की मित्रता प्राप्त करने वाला पुरुष कभी पराजित नहीं होता. शत्रु कभी भी उस का अपमान नहीं कर पाते. (४)

सूक्त इक्कीसवां — देवता—इंद्र

स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी.

वृषेंद्रः पुर एतु नः सोमपा अभयङ्करः (१)

विनाश रहित, क्षोभ न देने वाले, सभी प्रजाओं के पालनकर्त्ता, वृत्र नामक राक्षस अथवा जल के आधार मेघ को नष्ट करने वाले, शत्रुओं की विशेष रूप से हिंसा करने वाले, सभी प्राणियों को वश में रखने वाले, मनोकामनाओं की वर्षा करने वाले एवं सोमरस को पीने वाले इंद्रदेव हमारे लिए अभय करने वाले बन कर संग्राम में हमारे नेता बनें. (१)

वि न इंद्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः.
अधमं गमया तमो यो अस्मां अभिदासति (२)

हे परम ऐश्वर्य युक्त इंद्र देव! हमारी विजय के लिए हम से संग्राम करने वाले शत्रुओं का विनाश करो. जो युद्ध का प्रयत्न करने वाले शत्रु हैं, उन को पराजित करो. हमारे खेत, धन आदि छीन कर हमें हानि पहुंचाने वाले शत्रु को अवनति रूपी अंधकार में पहुंचाओ. (२)

वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज.
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः (३)

हे वृत्र राक्षस को मारने वाले इंद्र! तुम राक्षसों का विनाश करो एवं संग्रामों में विजय प्राप्त करो. तुम वृत्र के समान शक्तिशाली हमारे शत्रु के कपोलों को विदीर्ण करो. (३)

अपेन्द्र द्विषतो मनोऽप जिज्यासतो वधम्.
वि महच्छर्म यच्छ वरीयो यावया वधम् (४)

हे परम ऐश्वर्य वाले इंद्रदेव! हम से द्वेष करने वाले शत्रु के हिंसक मन को नष्ट कीजिए. जो शत्रु हमें समाप्त करने का इच्छुक है, उस के आयुध का विनाश करो. हमें महान सुख प्रदान करो एवं मंत्र प्रयोग के कारण असफल न होने वाले शस्त्रों को हम से दूर रखो. (४)

सूक्त बाईसवां — देवता—सूर्य और हृदय रोग

अनु सूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते.
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि (१)

हे रोग ग्रसित पुरुष! तेरे हृदय को संताप पहुंचाने वाला हृदय रोग एवं कामला आदि रोग से उत्पन्न तेरे शरीर का पीलापन सूर्य की ओर चला जाए. हे रोगी! गाय के लाल वर्ण से पहचाने जाने वाले के रूप में मैं तुझे स्वस्थ कराता हूं. (१)

परि त्वा रोहितैर्वर्णैर्दीर्घायुत्वाय दध्मसि.
यथायमरपा असदथो अहरितो भुवत् (२)

हे व्याधिग्रस्त पुरुष! तेरी दीर्घायु के लिए हम तुझे गाय के समान लाल रंग से ढकते हैं. यह पुरुष पापरहित हो कर कामला आदि रोगों के कारण होने वाले शरीर के पीले रंग से छूट जाए. (२)

या रोहिणीर्देवत्या२ गावो या उत रोहिणीः.
रूपंरूपं वयोवयस्ताभिष्ट्वा परि दध्मसि (३)

देवों की जो लाल रंग की कामधेनु आदि गाएं एवं मनुष्यों की जो लाल रंग की गाएं हैं, इन दोनों प्रकार के लाल रंग के रूप और यौवन को ले कर, हे रोगी पुरुष! हम तुझे ढकते हैं. (३)

शुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि.
अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि (४)

हे रोगी पुरुष! हम तेरे शरीर में रहने वाले रोग से उत्पन्न हरे रंग को स्रोतों में तथा रोपणाक नामक पक्षियों में स्थापित करते हैं. हम तेरे हलदी के समान पीले रंग को गोपीतनक नामक पीले रंग के पक्षियों में स्थापित करते हैं. (४)

सूक्त तेईसवां — देवता—वनस्पति

नक्तंजातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्नि च.
इदं रजनि रजय किलासं पलितं च यत् (१)

हे हरिद्रा! (हलदी) नामक ओषधि. तू रात में उत्पन्न हुई है. इसलिए तू शरीर की सफेदी दूर करने में समर्थ है. हे भृंगराज (भागरा) नामक ओषधि! रंग काला कर देने वाली इंद्रावारुणि नामक ओषधि! एवं असित वर्ण करने वाली नील नामक ओषधि! तुम कुष्ठ रोग के कारण विकृत रंग वाले इस अंग को अपने रंग में रंग दो. वृद्धावस्था के कारण जो बाल श्वेत हो गए हैं, उन्हें भी अपने रंग में रंग दो. (१)

किलासं च पलितं च निरितो नाशया पृषत्.
आ त्वा स्वो विशतां वर्णः परा शुक्लानि पातय (२)

हे ओषधि! कुष्ठ रोग और असमय में केश श्वेत होने के रोग को शरीर से दूर कर के नष्ट करो. हे रोगी! तुम्हें अपने बालों का पहले वाला रंग पुनः प्राप्त हो. हे ओषधि! तू इस के श्वेत रंग को दूर कर दे. (२)

असितं ते प्रलयनमास्थानमसितं तव.
असिक्न्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत् (३)

हे नील नामक ओषधि! तेरे उत्पन्न होने का स्थान काले रंग का होता है. तू काले रंग की होती है, इसलिए तू कुष्ठ रोग के कारण दूषित अंग के सफेद रंग और बालों के पकने को दूर कर. (३)

अस्थिजस्य किलासस्य तनूजस्य च यत् त्वचि.
दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्म श्वेतमनीनशम् (४)

हड्डियों से उत्पन्न, त्वचा से उत्पन्न एवं इन दोनों के मध्यवर्ती मांस से उत्पन्न कुष्ठ रोग के कारण जो श्वेत चिह्न शरीर पर उत्पन्न हो गए हैं, उन्हें मैं मंत्र के प्रभाव से नष्ट करता हूं. (४)

सूक्त चौबीसवां देवता—आसुरी वनस्पति

सुपर्णो जातः प्रथमस्तस्य त्वं पित्तमासिथ.
तदासुरी युधा जिता रूपं चक्रे वनस्पतीन् (१)

हे ओषधि! सब से पहले गरुड़ उत्पन्न हुए. तू उन के शरीर में पित्त दोष के रूप में थी. आसुरी माया ने गरुड़ से युद्ध कर के पित्त को जीत लिया एवं विजय के कारण प्राप्त उस पित्त को ओषधि का रूप दे दिया. (१)

आसुरी चक्रे प्रथमेदं किलासभेषजम् इदंकिलासनाशनम्.
अनीनशत् किलासं सरूपामकरत् त्वचम् (२)

आसुरी माया रूपी स्त्री ने सब से पहले कुष्ठ रोग दूर करने की ओषधि बनाई थी. नीली आदि ओषधियों ने कुष्ठ रोग को नष्ट कर के त्वचा को पहले के समान स्वस्थ बनाया. (२)

सरूपा नाम ते माता सरूपो नाम ते पिता.
सरूपकृत् त्वमोषधे सा सरूपमिदं कृधि (३)

हे ओषधि! तेरी माता तेरे समान ही काले रंग वाली है. तेरा पिता आकाश भी तेरे ही समान नीले रंग का है. हे नील नामक ओषधि! तू अपने संपर्क में आने वाले पदार्थ को अपने समान रंग वाला बना देती है. इसलिए कुष्ठ रोग से दूषित इस अंग को अपने समान रंग वाला अर्थात काला कर दे. (३)

श्यामा सरूपंकरणी पृथिव्या अध्युद्भृता.
इदमू षु प्र साधय पुना रूपाणि कल्पय (४)

हे काले रंग की एवं अपने संपर्क में आने वाले को अपने समान बना देने वाली ओषधि! तू आसुरी माया द्वारा धरती से उत्पन्न की गई है. तू कुष्ठ रोग से आक्रांत इस अंग को पुनः पहले के समान रंग वाला बना दे. (४)

सूक्त पच्चीसवां देवता—यक्ष्मानाशक अग्नि

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि.
तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् (१)

हे जीवन को कष्ट पूर्ण बनाने वाले ज्वर! जिस अग्नि ने प्रवेश कर के जलों

को जलाया अर्थात गरम किया, यश, दान आदि धार्मिक कृत्य करने वालों ने जिस अग्नि में होम किया है, उसी उत्तम अग्नि में से तेरा जन्म बताया गया है. यह सब जानता हुआ तू गरम जल से स्नान करने वाले हमारे शरीर को त्याग कर अग्नि में प्रवेश कर. (१)

यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम्.
हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् (२)

हे जीवन को दुखमय बनाने वाले ज्वर! तू यद्यपि उष्णता कारक एवं सुखाने वाला है. यद्यपि तेरा जन्म अग्नि से हुआ है, तथापि हे दीप्तिशाली ज्वर! तू मनुष्य के शरीर में पीले रंग को उत्पन्न करने वाला है. इसलिए तू हूढ़ नाम से प्रसिद्ध है. तू हमारे गरम जल से भीगे हुए शरीर को अपना जन्म स्थान अग्नि जान कर हमारे शरीर से बाहर निकल जा. (२)

यदि शोको यदि वाभिशोको यदि वा राज्ञो वरुणास्यासि पुत्रः.
हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृङ्ग्धि तक्मन् (३)

हे शीत ज्वर! तुम शरीर को शोकाकुल करने वाले, शरीर को सभी प्रकार से सुखाने वाले एवं तेजस्वी वरुण के पुत्र हो. तुम हूढ़ नाम से प्रसिद्ध हो. तुम हमारे गरम जल से भीगे हुए शरीर को अपना जन्म स्थान अग्नि जान कर हमारे शरीर से बाहर निकल जाओ. (३)

नमः शीताय तक्मने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि.
यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने (४)

मैं शीत उत्पन्न करने वाले ज्वर को नमस्कार करता हूं. मैं ठंड लगने के बाद चढ़ने वाले एवं शोककारक ज्वर को प्रणाम करता हूं. जो ज्वर प्रतिदिन दूसरे दिन, एवं तीसरे दिन आता है, मैं उस के लिए नमस्कार करता हूं. (४)

सूक्त छब्बीसवां — देवता—इंद्र आदि

आरे३सावस्मदस्तु हेतिर्देवासो असत्. आरे अश्मा यमस्यथ (१)

हे देवो! आप की कृपा से शत्रु द्वारा प्रयुक्त खड्ग आदि आयुध हमारे शरीर से दूर हो जाएं. हे शत्रुओ! तुम यंत्र आदि के द्वारा जो पत्थर फेंकते हो, वे भी हम से दूर रहें. (१)

सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः (२)

आकाश में दिखाई देते हुए सूर्य देव हमारे मित्र हों. संपत्ति देने वाले सविता देव हमारे मित्र हों. सविता देव अनेक प्रकार के धनों के स्वामी हैं. वे तथा इंद्रदेव हमारे मित्र हैं. (२)

युयं नः प्रवतो नपान्मरुतः सूर्यत्वचसः. शर्म यच्छाथ सप्रथाः (३)

हे सूर्य द्वारा पृथ्वी से सोखे हुए जल को न गिराने वाले पर्जन्य देव! हे सात गणों वाले मरुत देव! आप सब सूर्य के समान तेज वाले हैं. आप सब हमारा विस्तार से कल्याण करें. (३)

सुषूदत मृडत मृडया नस्तनूभ्यो मयस्तोकेभ्यस्कृधि (४)

हे इंद्र आदि देवो! आप शत्रुओं द्वारा छोड़े जाने वाले आयुधों को हम से दूर करो तथा हमें सुख दो. हे इंद्र आदि देवो! आप हमारे शरीरों को सुख दें एवं हमारी संतान को सुखी बनाएं. (४)

सूक्त सत्ताईसवां — देवता—ब्रह्मणस्पति

अमूः पारे पृदाक्वस्त्रिषप्ता निर्जरायवः.
तासां जरायुभिर्वयमक्ष्या३वपि व्ययामस्यघायोः परिपन्थिनः (१)

सांपों की ये इक्कीस जातियां देवों के समान बुढ़ापे से रहित हैं एवं नागलोक में निवास करती हैं. इन सांपों की केंचुली जरायु के समान उन से लिपटी रहती है. सांपों की उस केंचुली के द्वारा हम दूसरों का अहित सोचने वाले शत्रुओं की आंखों को ढकते हैं. (१)

विषूच्येतु कृन्तती पिनाकमिव बिभ्रती.
विष्वक् पुनर्भुवा मनोऽसमृद्धा अघायवः (२)

शिव के धनुष पिनाक के समान शत्रुओं के मारने में सक्षम आयुध धारण करती हुई, खड्ग आदि आयुधों से शत्रुओं को फाड़ती हुई हमारी सेना मारकाट मचाती हुई आगे बढ़े. यदि शत्रु सेना उस का सामना करने के लिए एकत्र हो, तो शत्रु सैनिकों का मन कुछ सोचने और निश्चय करने में समर्थ न हो. ऐसी स्थिति में हमारे शत्रु राष्ट्र, कोश आदि से रहित हो जाएं. (२)

न बहवः समशकन् नार्भका अभि दाधृषुः.
वेणोरद्गा इवाभितोऽसमृद्धा अघायवः (३)

हाथी, घोड़े और रथों से युक्त बहुत से शत्रु सैनिक हमें जीतने में असमर्थ हो कर हार जाएं. अल्प संख्या वाले शत्रु हमारे सामने आने का साहस न कर सकें. बांस की ऊपरी शाखाएं जिस प्रकार दुर्बल होती हैं, हम से पराजित हो कर धनहीन बने शत्रु उसी प्रकार समृद्धि रहित हो जाएं. (३)

प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं वहतं पृणतो गृहान्.
इन्द्राण्येतु प्रथमाजीतामुषिता पुरः (४)

हे चलने के इच्छुक व्यक्ति के चरणो! तुम आगे बढ़ो एवं शीघ्र चलने के लिए

गति करो. तुम हमें इच्छित फल देने वाले पुरुष के निवास स्थान तक पहुंचाओ. किसी से पराजित न होने वाले इंद्र की पत्नी हमारी सेना की देवता हैं. वह हमारी सेना की रक्षा के लिए आगेआगे चलें. (४)

सूक्त अट्ठाईसवां देवता—अग्नि

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः.
दहन्नप द्वयाविनो यातुधानान् किमीदिनः (१)

राक्षसों के विनाशक और रोगों को दूर करने वाले अग्नि देव उन्हें नष्ट करने के लिए उन के समीप चलें. अग्निदेव मायामय, सौम्य, हिंसक एवं भयावह रूप धारण करने वाले, दूसरों के दोष खोजने वाले, पीड़ादायक एवं परेशान करने वाले राक्षसों को भस्म करते हुए इस पुरुष के समीप आ रहे हैं. (१)

प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः.
प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः (२)

हे अग्निदेव! आप इन राक्षसों और दूसरों के दोष देखने वाले पिशाचों को भस्म कर दो. हे काले मार्ग वाले अग्नि! दूसरों के प्रतिकूल आचरण करने वाली राक्षसियों को भी आप भस्म कर दें. (२)

या शशाप शपनेन याघं मूरमादधे.
या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमत्तु सा (३)

जिन राक्षसियों ने कठोर वचनों के द्वारा हमें शाप दिया है, जिन राक्षसियों ने सभी पापों की जड़ हिंसा को स्वीकार कर लिया है तथा जो हमारी संतान, रस, सौंदर्य एवं पुष्टि का विनाश करती हैं, वे सभी अपने अथवा हमारे शत्रुओं के बालकों का भक्षण करें. (३)

पुत्रमत्तु यातुधानीः स्वसारमुत नप्त्यम्.
अधा मिथो विकेश्यो३ वि घ्नतां यातुधान्यो३ वि तृह्यान्तामराय्यः (४)

राक्षसियां अपने पुत्र, बहन और नाती को खा जाएं. राक्षसियां एकदूसरे के केश खींच कर लड़ने के कारण बाल बिखेरें तथा मृत्यु को प्राप्त हों. दान न करने वाली राक्षसियां आपस में लड़ कर मर जाएं. (४)

सूक्त उनतीसवां देवता—ब्रह्मणस्पति

अभीवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे.
तेनास्मान् ब्रह्मणस्पतेऽभि राष्ट्राय वर्धय (१)

हे ब्रह्मणस्पति! समृद्धि एवं शक्ति प्रदान करने वाली जिस मणि को धारण कर

के इंद्र उन्मत्त हुए हैं, उसी मणि के द्वारा शत्रुओं से पीड़ित हमारे राष्ट्र की संपन्नता बढ़ाओ. आप की कृपा से हम संपन्न जनों द्वारा सुरक्षित राष्ट्र में शत्रुओं के भय से रहित हों. (१)

अभिवृत्य सपत्नानभि या नो अरातयः.
अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति (२)

हे अभीवर्त मणि! तुम हमारे शत्रुओं के सामने डट कर उन्हें पराजित करो. जो हमारे राष्ट्र, धन आदि का अपहरण कर के हमारे प्रति शत्रुता का व्यवहार करते हैं, उन के सामने डट कर तुम उन को पराजित करो. जो हम से युद्ध करने के लिए सेना सजाते हैं, अथवा हमारे प्रति अभिचार (जादूटोने) के रूप में शत्रुता करते हैं, तुम उन्हें भी पराजित करो. (२)

अभि त्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृधत्.
अभि त्वा विश्वा भूतान्यभीवर्तो यथाससि (३)

हे अभीवर्त मणि! सविता देव ने तुम्हारी वृद्धि की है और सोम देव ने तुम्हें समृद्ध बनाया है. हे मणि! सभी प्राणियों ने तुम्हारी वृद्धि की है. जो व्यक्ति तुम्हें धारण करता है, वह सभी साधनों से संपन्न हो जाता है. (३)

अभीवर्तो अभिभवः सपत्नक्षयणो मणिः.
राष्ट्राय मह्यं बध्यतां सपत्नेभ्यः पराभुवे (४)

शत्रुओं की पराजय करने वाली एवं राक्षसों का विनाश करने वाली अभीवर्त मणि राष्ट्र की समृद्धि और शत्रुओं के विनाश के लिए मेरे हाथ में बांधो. (४)

उदसौ सूर्यो अगादुदिदं मामकं वचः.
यथाहं शत्रुहोऽसान्यसपत्नः सपत्नहा (५)

आकाश मंडल में दिखाई देने वाले एवं सभी प्राणियों के प्रेरक सूर्य देव उदित हो गए हैं. अपनी विजय की एवं शत्रुओं की पराजय की कामना करने वाली मेरी वेद रूपी वाणी भी प्रकट हो गई है. अभीवर्त मणि को धारण करने वाला मैं जिस प्रकार शत्रुओं को मारने वाला बनूं, ऐसा सुयोग उपस्थित हो. मैं शत्रुरहित हो जाऊं. यदि मेरा कोई शत्रु हो भी तो उसे मैं पराजित करूं. (५)

सपत्नक्षयणो वृषाभिराष्ट्रो विषासहिः.
यथाहमेषां वीराणां विराजानि जनस्य च (६)

हे मणि! मैं तुम्हारे प्रभाव से शत्रुओं का नाशक, प्रजाओं का पालक, अपने राष्ट्र का स्वामी एवं शत्रुओं को वश में करने वाला बनूं. मैं शत्रु सेना के वीरों एवं

उन की प्रजाओं पर शासन करने में समर्थ बनूं. (६)

सूक्त तीसवां देवता—विश्वेदेव

विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्.
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः (१)

हे विश्वेदेव! वसु एवं आदित्य देवो! दीर्घ आयु की कामना करने वाले इस पुरुष की रक्षा करो एवं दीर्घ आयु की कामना करने वाले इस पुरुष के विषय में सावधान रहो. इस का सजातीय अथवा विजातीय शत्रु इस के पास तक न आ सके. कोई भी इस की हिंसा करने में समर्थ न हो. (१)

ये वो देवाः पितरो ये च पुत्राः सचेतसो मे शृणुतेदमुक्तम्.
सर्वेभ्यो वः परि ददाम्येतं स्वस्त्ये नं जरसे वहाथ (२)

हे देवो! आप के जो पितर एवं पुत्र हों, वे भी इस पुरुष के विषय में की गई मेरी प्रार्थना पर ध्यान दें. दीर्घ आयु की कामना करने वाले इस पुरुष को मैं आप सब को सौंपता हूं. इस की वृद्धावस्था तक आप इस का कल्याण करें. (२)

ये देवा दिविष्ठ ये पृथिव्यां ये अंतरिक्ष ओषधीषु पशुष्वप्स्व१न्तः.
ते कृणुत जरसमायुरस्मै शतमन्यान् परि वृणक्तु मृत्यून् (३)

जो देव स्वर्ग में एवं पृथ्वी पर निवास करते हैं, वायु आदि जो देव अंतरिक्ष में गमन करते हैं तथा जो देव ओषधियों, पशुओं एवं जलों में स्थित हैं, वे सब देव इस दीर्घ आयु की कामना करने वाले पुरुष को वृद्धावस्था पर्यंत आयु प्रदान करें एवं इसे मृत्यु से बचाएं. (३)

येषां प्रयाजा उत वानुयाजा हुतभागा अहुतादश्च देवाः.
येषां वः पञ्च प्रदिशो विभक्तास्तान् वो अस्मै सत्रसदः कृणोमि (४)

जिस देव के निमित्त पंचयाग किए जाते हैं, वह अग्नि देव; जिन देवों के निमित्त बाद वाले तीन यज्ञ किए जाते हैं, वह इंद्र आदि देव; जो बलि का अपहरण करते हैं, दिशाओं के स्वामी देव हैं, इन सब को एवं इन के अतिरिक्त जो देव हैं, उन को भी मैं इस दीर्घ आयु चाहने वाले पुरुष के समीप बैठने के लिए नियुक्त करता हूं. (४)

सूक्त इकत्तीसवां देवता—आशापाल अर्थात वास्तोष्पति

आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः.
इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् (१)

पूर्व आदि दिशाओं की रक्षा करने वाले एवं कभी न मरने वाले इंद्र, यम आदि चार देवों के लिए हम इस भाग में मंत्रों के साथ आहुति देते हैं. वे देव सभी

प्राणियों के स्वामी हैं. (१)

य आशानामाशापालाश्चत्वार स्थन देवाः.
ते नो निर्ऋत्याः पाशेभ्यो मुंचतांहसोअंहसः (२)

जो दिशाओं का पालन करने वाले इंद्र आदि चार देव हैं, वे हमें मृत्यु देव के पाशों से छुड़ाएं तथा पापों से हमारी रक्षा करें. (२)

अस्रामस्त्वा हविषा यजाम्यश्लोणस्त्वा घृतेन जुहोमि.
य आशानामाशापालस्तुरीयो देवः स नः सुभूतमेह वक्षत् (३)

हे धन देने वाले देव कुबेर! मैं अपने अभिमत धन आदि प्राप्त करने के लिए हवि से इंद्र आदि देवों की प्रसन्नता के लिए हवन करता हूं. दिशाओं की रक्षा करने वाले इंद्र आदि देवों में जो चौथे देव कुबेर हैं, वे इस यज्ञ में हमें स्वर्ण, रजत आदि धन दें. (३)

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः.
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम् (४)

हमारी माता, हमारे पिता, हमारी गायों और सारे संसार का कल्याण हो. हमारी माता आदि उत्तम धन एवं श्रेष्ठ ज्ञान वाले हैं. हम सौ वर्ष तक सूर्य के दर्शन करते रहें. (४)

सूक्त बत्तीसवां — देवता—द्यावा पृथिवी

इदं जनासो विदथ महद् ब्रह्म वदिष्यति.
न तत् पृथिव्यां नो दिवि येन प्राणन्ति वीरुधः (१)

हे जानने के इच्छुक जनो! इस बात को जानो कि वह जल रूप ब्रह्म पृथ्वी पर नहीं रहता और न वह आकाश में निवास करता है. उसी जल के कारण सभी वृक्ष एवं लताएं जीवित रहती हैं. (१)

अंतरिक्ष आसां स्थाम श्रान्तसदामिव.
आस्थानमस्य भूतस्य विदुष्टद् वेधसो न वा (२)

जिस प्रकार गंधर्वों का निवास स्थान अंतरिक्ष है, उसी प्रकार इन ओषधियों का कारण रूप जल आकाश और धरती के मध्य अर्थात अंतरिक्ष में निवास करता है. इस लोक में जो भी स्थावर और जंगम हैं, उन सब का आश्रय भी जल है. विधाता मनु आदि भी इसे नहीं जानते. (२)

यद् रोदसी रेजमाने भूमिश्च निरतक्षतम्.
आर्द्रं तदद्य सर्वदा समुद्रस्येव स्रोत्याः (३)

हे जल उत्पन्न करने के लिए कांपती हुई उत्तम पृथ्वी एवं आकाश! तुम दोनों

पहले बताए हुए जल का उत्पादन करो. वह जल वर्तमान काल में नया रहता है अर्थात वर्षा का जल समाप्त हो जाने पर भी आकाश में जल उसी प्रकार समाप्त नहीं होता, जिस प्रकार सागर में मिलने वाली सरिताएं कभी नहीं सूखतीं. (३)

विश्वमन्यामभीवार तदन्यस्यामधिश्रितम्.
दिवे च विश्ववेदसे पृथिव्यै चाकरं नमः (४)

सारा संसार आकाश से चारों ओर से घिरा हुआ है. यह संसार पृथ्वी पर आश्रित है. मैं संसार के धन के रूप में स्थित द्युलोक को तथा पृथ्वी को नमस्कार करता हूं. (४)

सूक्त तैंतीसवां — देवता—जल

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः सविता यास्वग्निः.
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवंतु (१)

सोने के रंग की शुद्ध अग्नियां एवं सविता जिन जलों से उत्पन्न हुए हैं, बादलों में स्थित जिन जलों में विद्युत रूपी अग्नि तथा सागर में स्थित जिन जलों में वाडवाग्नि उत्पन्न हुई है, जिन शोभन रंग वाले जलों ने अग्नि को गर्भ के रूप में धारण किया है, वे जल हमारे लिए रोग नाशक और सुखकारक हों. (१)

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्.
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवंतु (२)

राजा वरुण जिन जलों के मध्य में स्थित हो कर मनुष्यों के सत्य और असत्य को जानते हुए चलते हैं, जिन शोभन वर्ण वाले जलों ने अग्नि को गर्भ के रूप में धारण किया है, वे जल हमारे लिए रोग के नाशक और सुखकारक हों. (२)

यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति.
या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवंतु (३)

इंद्र आदि देव जिन जलों के सार रूप अमृत को द्युलोक में भक्षण करते हैं तथा जो जल अनेक प्रकार से स्थित रहते हैं, जिन शोभन वर्ण वाले जलों ने अग्नि को गर्भ के रूप में धारण किया है, वे जल हमारे लिए रोग के नाशक और सुखकारक हों. (३)

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे.
घृतश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवंतु (४)

हे जल के अभिमानी देव! मुझे सुखकर दृष्टि से देखो तथा अपने कल्याणकारी शरीर से मेरी देह का स्पर्श करो. जो जल अमृत को टपकाने वाले तथा पवित्र करने वाले हैं, वे हमारे लिए रोग विनाशक और सुखकारी हों. (४)

सूक्त चौंतीसवां

देवता—मधु, वनस्पति

इयं वीरुन्मधुजाता मधुना त्वा खनामसि.
मधोरधि प्रजातासि सा नो मधुमतस्कृधि (१)

यह सामने वर्तमान लता मधुर रस से युक्त भूमि में उत्पन्न हुई है. मैं इसे मधुर रूप वाले फावड़े आदि की सहायता से खोदता हूं. तू मुझ से उत्पन्न हुई है. तू हमें भी मधु रस से युक्त बना. (१)

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वमूले मधूलकम्.
ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि (२)

हे मधु लता! तू मेरी जीभ के अग्र भाग पर शहद के समान स्थित हो तथा जीभ की जड़ में मधु रस वाले मधु नामक जल वृक्ष के फूल के रूप में वर्तमान रह. तू केवल मेरे शरीर व्यापार में लग तथा मेरे चित्त में आ. (२)

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्.
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसन्दृशः (३)

हे मधु लता! तुम्हें धारण करने से मेरा निकट गमन दूसरों को प्रसन्न करने वाला हो तथा मेरा दूर गमन दूसरों को प्रसन्न करे. मैं वाणी से मधुयुक्त हो कर तथा समस्त कार्यों के द्वारा मधु के समान बन कर सब के प्रेम का पात्र बनूं. (३)

मधोरस्मि मधुतरो मदुघान्मधुमत्तरः.
मामित् किल त्वं वनाः शाखां मधुमतीमिव (४)

हे मधु लता! मैं तुझ से उत्पन्न होने वाले शहद से भी अधिक मधुर हूं. मैं शहद टपकाने वाले पदार्थ से भी अधिक मधुर हूं. तुम निश्चय ही केवल मुझे उसी प्रकार प्राप्त हो जाओ, जिस प्रकार शहद वाली डाल के पास लोग पहुंच जाते हैं. (४)

परि त्वा परितत्नुनेक्षुणागामविद्विषे.
यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः (५)

हे पत्नी! मैं तुझे सभी ओर व्याप्त एवं ईख के समान मधुर मधु के द्वारा आपस में प्रेम के लिए प्राप्त हुआ हूं. (५)

सूक्त पैंतीसवां

देवता—हिरण्य

यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः.
तत् ते बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय (१)

हे यजमान! दक्ष की संतान महर्षियों ने सौमनस्य को प्राप्त हो कर राजा शतानीक के लिए जिस निर्दोष स्वर्ण को बांधा था, वही स्वर्ण मैं तेरी दीर्घ आयु के लिए, तेज के लिए, बल प्राप्ति के लिए एवं सौ वर्ष की लंबी आयु पाने के लिए

तुझे बांधता हूं. (१)

नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत्.
यो बिभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः (२)

स्वर्ण बंधे हुए इस पुरुष को राक्षस और पिशाच पराजित नहीं कर सकते, क्योंकि यह देवों का प्रथम उत्पन्न हुआ ओज है. दक्ष पुत्रों से संबंधित इस स्वर्ण को जो बांधता है, वह प्राणियों के मध्य सौ वर्ष की आयु प्राप्त करता है. (२)

अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं च वनस्पतीनामुत वीर्याणि.
इन्द्रइवेन्द्रियाण्यधि धारयामो अस्मिन् तद् दक्षमाणो बिभरद्धिरण्यम् (३)

मैं जलों के तेज, ज्योति, ओज और बल तथा वनस्पतियों का वीर्य उसी प्रकार धारण करता हूं, जिस प्रकार इंद्र में इंद्रियों के असाधारण चिह्न वर्तमान हैं. इसीलिए वृद्धि प्राप्त करता हुआ यह पुरुष हिरण्य धारण करे. (३)

समानां मासामृतुभिष्ट्वा वयं संवत्सरस्य पयसा पिपर्मि.
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहृणीयमानाः (४)

हे संपत्ति चाहने वाले पुरुष! मैं तुझे संवत्सरों की, महीनों की, ऋतुओं की एवं काल संबंधी दूध की धार से पूर्ण करता हूं. इंद्र और अग्नि तथा समस्त देव क्रोध न करते हुए तुझे संपन्नता की अनुमति दें. (४)

दूसरा कांड

सूक्त पहला

देवता—ब्रह्म, आत्मा

वेनस्त् पश्यत् परमं गुहा यद् यत्र विश्वं भवत्येकरूपम्.
इदं पृश्निरदुहज्जायमानाः स्वर्विदो अभ्यनूषत व्राः (१)

दीप्तिशाली आदित्य ने समस्त प्राणियों के हृदय में सत्य, ज्ञान आदि लक्षणों से युक्त ब्रह्म का साक्षात्कार किया, जिस में समस्त विश्व एकाकार हो जाता है. स्वर्ग और आदित्य ने इस विश्व को व्यक्त किया. उत्पन्न होती हुई तथा अपने उत्पन्न कर्ता को जानती हुई प्रजाएं उस की स्तुति करती हैं. (१)

प्र तद् वोचेदमृतस्य विद्वान् गन्धर्वो धाम परमं गुहा यत्.
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुष्पितासत् (२)

अविनाशी ब्रह्म को जानते हुए आदित्य ब्रह्म के विषय के प्रवचन करें कि वह उत्कृष्ट स्थान एवं हृदय में स्थित है. उस के तीन भाग हृदय में छिपे हुए हैं. जो उन्हें जानता है, वह अपने पिता का भी पिता होता है. (२)

स नः पिता जनिता स उत बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा.
यो देवानां नामध एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्ति सर्वा (३)

वह सूर्यात्मक परमात्मा हमारा पालनकर्त्ता, जन्मदाता एवं बंधु है. वह स्वर्ग आदि स्थानों एवं वहां प्राप्त होने वाले समस्त प्राणियों को जानता है. एकमात्र वही इंद्र आदि देवों का नाम रखने वाला है अथवा वह स्वयं ही इंद्र आदि नाम धारण करता है. इस प्रकार के परमात्मा को सभी प्राणी यह पूछते हुए प्राप्त होते हैं कि वह परमात्मा किस प्रकार का है ? (३)

परि द्यावापृथिवी सद्य आयमुपातिष्ठे प्रथमजामृतस्य.
वाचमिव वक्तरि भुवनेष्ठा धास्युरेष नन्वे३षो अग्निः (४)

ज्ञान होने के पश्चात तत्त्व ज्ञानी कहता है, ''मैं ने तत्त्व ज्ञान होते ही द्यावा और पृथ्वी को सभी ओर से प्राप्त कर लिया है तथा मैं ही ब्रह्म से प्रथम उत्पन्न प्राणी एवं भौतिक पदार्थ हूं. जिस प्रकार वक्ता के समीपवर्ती जन वाणी को तत्काल सुन और

समझ लेते हैं, उसी प्रकार यह परमात्मा संसार में स्थित, सब के पोषण का इच्छुक एवं वैश्वानर के रूप में सब का पोषक है.'' (४)

परि विश्वा भुवनान्यायमृतस्य तन्तुं विततं दृशे कम्.
यत्र देवा अमृतमानशानाः समाने योनावध्यैरयन्त (५)

ज्ञानोत्पत्ति से पूर्व मैं ने पृथ्वी आदि लोकों को प्राप्त किया. इस का प्रयोजन ब्रह्म को देखना है जो इस विश्व का कारण है. उस ब्रह्म में इंद्र आदि देव अमृत का स्वाद लेते हुए अपने आप को तन्मय कर देते हैं. (५)

सूक्त दूसरा देवता—गंधर्व अप्सराएं

दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः.
तं त्वा यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव नमस्ते अस्तु दिवि ते सधस्थम् (१)

दिव्य सूर्य पृथ्वी आदि लोकों का पालनकर्ता है. समस्त प्रजाओं के द्वारा वही अकेला नमस्कार करने योग्य है एवं स्तुति के योग्य है. हे दिव्य सूर्यदेव! मैं ब्रह्म के रूप में आप की आराधना करता हूं. आप को मेरा नमस्कार है. आप का आवास स्वर्ग में है. (१)

दिवि स्पृष्टो यजतः सूर्यत्वगवयाता हरसो दैव्यस्य.
मृडाद् गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यः सुशेवाः (२)

आकाश में स्थित, यज्ञ करने योग्य, सूर्य के समान वर्ण वाले एवं देव संबंधी क्रोध को नष्ट करने वाले गंधर्व हमें सुखी बनाएं. वे पृथ्वी आदि लोकों के स्वामी, एकमात्र नमस्कार करने योग्य एवं शोभन सुख देने वाले हैं. (२)

अनवद्याभिः समु जग्म आभिरप्सरास्वपि गन्धर्व आसीत्.
समुद्र आसां सदनं म आहुर्यतः सद्य आ च परा च यन्ति (३)

सूर्यरूपी गंधर्व निंदा के अयोग्य किरणों रूपी अप्सराओं से मिल गया था. समुद्र इन अप्सराओं का निवास स्थान कहा गया है, जहां से ये सूर्योदय के साथ ही यहां आती हैं और सूर्यास्त के साथ चली जाती हैं. (३)

अभ्रिये दिद्युन्नक्षत्रिये या विश्वावसुं गन्धर्वं सचध्वे.
ताभ्यो वो देवीर्नम इत् कृणोमि (४)

हे आकाश में जन्म लेने वाली, प्रकाश युक्त एवं नक्षत्र रूपिणी किरणो! तुम में से जो विश्वावसु गंधर्व अर्थात चंद्रमा के साथ संयुक्त होती हैं, हे दिव्य किरणो! मैं तुम्हारे लिए नमस्कार करता हूं. (४)

याः क्लन्दास्तमिषीचयोऽक्षकामा मनोमुहः.
ताभ्यो गन्धर्वपत्नीभ्योऽप्सराभ्योऽकरं नमः (५)

जो किरणें मनुष्य को रुलाने वाली, शक्ति संपन्न, इंद्रियों को निष्क्रिय करने की इच्छुक एवं मन को मोहने वाली हैं, उन गंधर्व पत्नी अप्सराओं को मैं नमस्कार करता हूं. (५)

सूक्त तीसरा — देवता—स्राव-विरोधी ओषधि

अदो यदवधावत्यवत्कमधि पर्वतात्.
तत्ते कृणोमि भेषजं सुभेषजं यथाससि (१)

मुंजवान पर्वत से उतर कर जो मूंज धरती पर वर्तमान है, हे मूंज! तेरे उस अग्रभाग से मैं ओषधि बनाता हूं, क्योंकि तू उत्तम जड़ीबूटी है. (१)

आदङ्ग कुविदङ्ग शतं या भेषजानि ते.
तेषामसि त्वमुत्तममनास्रावमरोगणम् (२)

हे ओषधि! प्रयोग के तुरंत बाद रोग समाप्त करो एवं बहुत से रोगों का विनाश करो. तुम से संबंधित अनगिनत जड़ीबूटियां हैं, उन में तुम उत्तम हो. तुम अतिसार आदि रोग दूर करने वाली एवं इन के मूल कारणों का विनाश करने वाली हो. (२)

नीचैः खनन्त्यसुरा अरुस्राणमिदं महत्.
तदास्रावस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् (३)

प्राणों का अपहरण करने वाले राक्षस एवं शरीर को निर्बल बनाने वाले रोग विशाल घाव के पकने के स्थान को नीचे से विदीर्ण करते हैं. यह महती ओषधि उस का समूल विनाश करती है तथा अतिसार आदि रोगों को जड़ से मिटा देती है. (३)

उपजीका उद्भरन्ति समुद्रादधि भेषजम्.
तदास्रावस्य भेषजं तदु रोगमशीशमत् (४)

बामी बनाने वाली दीमक पृथ्वी के नीचे स्थित जलराशि से रोग निवारक जड़ीबूटी को उखाड़ती है. वह अतिसार आदि रोगों की ओषधि है और उन्हें शांत करने वाली है. (४)

अरुस्राणमिदं महत् पृथिव्या अध्युद्भृतम्.
तदास्रवस्य भेषजं तदु रोगमनीनशत् (५)

घाव को पकाने वाली यह जड़ीबूटी अर्थात मिट्टी खेत से खोद कर लाई गई है. यह अतिसार रोगों की ओषधि है और उन्हें शांत करती है. (५)

शं नो भवन्त्वप ओषधयः शिवाः.
इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षस आराद् विसृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम् (६)

ओषधियों के रूप में प्रयोग किए जाते हुए जल एवं ओषधियां हमारे रोगों को शांत करने वाले हैं. इंद्र का वज्र रोग उत्पन्न करने वाले राक्षसों का विनाश करे. मनुष्यों को पीड़ा पहुंचाने के निमित्त प्रयुक्त राक्षसों के रोग रूपी बाण हम से दूर गिरें अर्थात रोग हम से दूर रहें. (६)

सूक्त चौथा देवता—जंगिड़ मणि

दीर्घायुत्वाय बृहते रणायारिष्यन्तो दक्षमाणाः सदैव.
मणिं विष्कन्धदूषणं जङ्गिडं बिभृमो वयम् (१)

हम दीर्घ जीवन के लिए तथा महान रमणीय कर्म के लिए राक्षस, पिशाच आदि को भगाने वाली इस मणि को धारण करते हैं जो वाराणसी में प्रसिद्ध जंगिड़ वृक्ष से बनती है. इस के कारण हम हिंसित न होते हुए अपना पालन करते हैं. (१)

जङ्गिडो जम्भाद् विशराद् विष्कन्धादभिशोचनात्.
मणिः सहस्रवीर्यः परि णः पातु विश्वतः (२)

असीमित सामर्थ्य वाली जंगिड़ मणि राक्षस के दांतों द्वारा खाए जाने से, शरीर के खंडखंड हो कर बिखरने से, रोग आदि रूप विघ्नों से, उचित अनुचित कार्य के सोचविचार से एवं जमुहाई आदि सब से हमें बचाएं. (२)

अयं विष्कन्धं सहतेऽयं बाधते अत्त्रिणः.
अयं नो विश्वभेषजो जङ्गिडः पात्वंहसः (३)

जंगिड़ वृक्ष से निर्मित यह मणि दूसरों को पराजित करती है, कृत्या आदि भक्षकों को नष्ट करती है तथा समस्त रोगों की ओषधि है. यह जंगिड़ मणि हमें पाप से बचाए. (३)

देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा.
विष्कन्धं सर्वा रक्षांसि व्यायामे सहामहे (४)

अग्नि आदि देवों के द्वारा दी हुई एवं सुख देने वाली जंगिड मणि से हम विघ्न करने वाले सभी राक्षसों को अपने घूमनेफिरने के प्रदेश में पराजित करते हैं. (४)

शणश्च मा जङ्गिडश्च विष्कन्धादभि रक्षताम्.
अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसेभ्यः (५)

मणि को बांधने वाले सूत्र का कारण सन एवं यह जंगिड मणि मुझ को विघ्नों से बचाएं. इन में से एक अर्थात जंगिड़ मणि वन से लाया गया है और अन्य अर्थात कृषि से संबंधित सन रस से लाया गया है. (५)

कृत्यादूषिरयं मणिरथो अरातिदूषिः.
अथो सहस्वाञ्जङ्गिडः प्र ण आयूंषि तारिषत् (६)

यह मणि दूसरों के द्वारा किए गए जादूटोने से उत्पन्न पीड़ा की निवारक एवं शत्रुओं को नष्ट करने वाली है. शक्ति संपन्न यह जंगिड़ मणि हमारी आयु को बढ़ाए. (६)

सूक्त पांचवां

देवता—इंद्र

इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिभ्याम्.
पिबा सुतस्य मतेरिह मधोश्चकानश्चारुर्मदाय (१)

हे परम ऐश्वर्य वाले इंद्र! तुम हम पर प्रसन्न हो जाओ एवं हमें मनचाहा फल प्रदान करो. हे शूर इंद्र! अपने घोड़ों की सहायता से तुम मेरे यज्ञ में आओ तथा इस यज्ञ में निचोड़े गए सोमरस को पियो. यह सोमरस प्रशंसनीय एवं मधुर है. पीने पर यह सोमरस तृप्ति और उत्तम मादकता का कारण बनता है. (१)

इन्द्र जठरं नव्यो न पृणस्व मधोर्दिवो न.
अस्य सुतस्य स्व१र्णोप त्वा मदाः सुवाचो अगुः (२)

हे इंद्र! तुम नवीन के समान सोमरस से अपना पेट उसी प्रकार भर लो जिस प्रकार स्वर्ग के अमृत से पूर्ण करते हो. इस निचोड़े गए सोमरस के मद से संबंधित उत्तम स्तुति तथा स्वर्ग के समान आनंद तुम्हें यहां भी प्राप्त हो. (२)

इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो वृत्रं यो जघान यतीर्न.
बिभेद वलं भृगुर्न ससहे शत्रून् मदे सोमस्य (३)

शत्रु विनाशक एवं समस्त प्राणियों के मित्र इंद्र ने वृत्र राक्षस को आसुरी प्रजाओं के समान मार डाला. जिस प्रकार यज्ञ करते हुए अंगिरा गोत्रीय भृगुओं के यज्ञ का आधार गौ का हरण करने वाले बल नामक असुर को मार डाला था, उसी प्रकार इंद्र ने वृत्र का हनन किया. इंद्र ने सोमरस के मद में शत्रुओं को पराजित किया. (३)

आ त्वा विशन्तु सुतास इन्द्र पृणस्व कुक्षी विड्ढि शक्र धियेह्या नः.
श्रुधी हवं गिरो मे जुषस्वेन्द्र स्वयुग्भिर्मत्स्वेह महे रणाय (४)

हे इंद्र! निचोड़ा गया सोमरस तुम्हारे उदर में प्रवेश करे. तुम इस से अपनी दोनों कोखों को भर लो. तुम हमारा आह्वान सुन कर यहां आओ तथा हमारी स्तुतियां सुनो एवं उन्हें स्वीकार करो. हे इंद्र! तुम इस यज्ञ में अपने मित्र मरुत आदि देवों के साथ सोमरस पी कर तृप्त बनो तथा हमारे यज्ञकर्म को संपन्न बनाओ. (४)

इन्द्रस्य नु प्रा वोचं वीर्याणि यानि चकार प्रथमानि वज्री.
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् (५)

मैं वज्रधारी इंद्र के उन वीरता पूर्ण कार्यों का वर्णन करता हूं जो उन्होंने पूर्व

काल में किए हैं. उन्होंने वृत्रासुर का हनन किया तथा उस के बाद उस के द्वारा रोके गए जल को निकाल दिया एवं पर्वतों से निकलने वाली नदियों को बहाया. (५)

अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष.
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः (६)

पर्वत पर सोते हुए इस वृत्रासुर का इंद्र ने वध किया. वृत्र के पिता त्वष्टा ने इंद्र के लिए सुगमता से चलाया जाने वाला तथा तेज धारों वाला वज्र बनाया. इस के बाद जल सागर की ओर इस प्रकार बहने लगा, जिस प्रकार रंभाती हुई गाएं दौड़ती हैं. (६)

वृषायमाणो अवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत् सुतस्य.
आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् (७)

बैल के समान आचरण करते हुए इंद्र ने प्रजापति के पास से सोम रूपी अन्न प्राप्त किया. उस ने तीन सोम यागों में निचोड़े गए सोमरस का पान किया. इस के पश्चात इंद्र ने अपना शत्रुघातक वज्र हाथ में लिया एवं असुरों में सर्वप्रथम उत्पन्न हुए वृत्र की हत्या की. (७)

सूक्त छठा — देवता—अग्नि

समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या.
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः (१)

हे अग्नि! संवत्सर, ऋषिगण एवं पृथ्वी आदि तत्व तुम्हारी वृद्धि करें. इन सब के द्वारा बढ़े हुए तुम प्रकाश युक्त शरीर से दीप्त बनो तथा पूर्व आदि चार दिशाओं को और आग्नेय आदि चार विदिशाओं अर्थात दिशा कोणों को प्रकाशित करो. (१)

सं चेध्यस्वाग्ने प्र च वर्धयेममुच्च तिष्ठ महते सौभगाय.
मा ते रिषन्नुपसत्तारो अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये (२)

हे अग्नि! तुम स्वयं दीप्त बनो एवं इस यजमान की इच्छाएं पूर्ण करते हुए इसे समृद्ध बनाओ एवं उस के सौभाग्य के हेतु उत्साहित बनो. तुम्हारे सेवक ऋत्विज आदि नष्ट न हों. हे अग्नि! तुम्हारे ऋत्विज ब्राह्मण ही यशस्वी हैं, अन्य नहीं. (२)

त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवा नः.
सपत्नहाग्ने अभिमातिजिद् भव स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् (३)

हे अग्नि! हम ब्राह्मण तुम्हारी आराधना करते हैं. तुम हमारे प्रमादों को शांत करते हुए अथवा छिपाते हुए वर्तमान रहो. हे अग्नि! शत्रुओं को पराजित एवं पापों का विनाश करो. तुम प्रमाद न करते हुए अपने घर में जागृत रहो. (३)

क्षत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधा यतस्व.
सजातानां मध्यमेष्ठा राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह (४)

हे अग्नि देव! तुम अपने बल से संयुक्त बनो. हे मित्र का पोषण करने वाले अग्नि! तुम मित्र भाव से उपकार करने वाले बनो. तुम अपने समान उत्पन्न ब्राह्मणों में मध्यस्थ एवं क्षत्रियों में यज्ञ हो. हे अग्नि! इस प्रकार के तुम, इस यज्ञ में प्रकाशित हो जाओ. (४)

अति निहो अति सृधोऽत्यचित्तीरति द्विषः.
विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः (५)

हे अग्नि! तुम इंद्रियों के विषयों से उत्पन्न दोषों को, पाप बुद्धि वाले मनुष्यों को, देह का शोषण करने वाले रोगों को एवं हमारे शत्रुओं को समाप्त करो. तुम हमें समस्त पापों से पार करो तथा हमारे लिए पुत्र, पौत्र आदि से युक्त धन प्रदान करो. (५)

सूक्त सातवां — देवता—वनस्पति

अघद्विष्टा देवजाता वीरुच्छपथयोपनी.
आपो मलमिव प्राणैक्षीत् सर्वान् मच्छपथां अधि (१)

पाप का विनाश करने वाली, देवों के द्वारा बनाई गई एवं पाप का निवारण करने वाली दूर्वा मुझ से सभी पापों को इस प्रकार धो कर दूर कर दे, जिस प्रकार पानी मैल को धो डालता है. (१)

यश्च सापत्नः शपथो जाम्याः शपथश्च यः.
ब्रह्मा यन्मन्युतः शपात् सर्वं तन्नो अधस्पदम् (२)

द्वेष करने वाले शत्रु से संबंधित एवं बहन से संबंधित जो आक्रोश है तथा ब्राह्मण ने क्रोधित हो कर जो शाप दिया है—ये तीनों प्रकार के शाप मेरे पैर के नीचे रहें. (२)

दिवो मूलमवततं पृथिव्या अध्युत्ततम्.
तेन सहस्रकाण्डेन परि णः पाहि विश्वतः (३)

हे मणि! हमें स्वर्ग की जड़ के समान विस्तृत एवं पृथ्वी के ऊपर विस्तृत असीमित पाप से बचाओ और सभी प्रकार से हमारी रक्षा करो. (३)

परि मां परि मे प्रजां परि णः पाहि यद् धनम्.
अरातिर्नो मा तारीन्मा नस्तारिषुरभिमातयः (४)

हे मणि! मेरी, मेरी संतान की एवं मेरे धन की रक्षा करो. शत्रु हमारा अतिक्रमण न करे अर्थात हमें पराजित न करे. हमारी हत्या करने के इच्छुक पिशाच आदि हमारी

हिंसा न करें. (४)

शप्तारमेतु शपथो यः सुहार्त्तेन नः सह.
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणीमसि (५)

मुझे दिया हुआ शाप उसी के पास लौट जाए, जिस ने मुझे शाप दिया है. जो पुरुष शोभन हृदय वाला है, उस मित्र के साथ हम सुखी रहें. हम चुगली करने वाले दुष्ट हृदय वाले की आंखों एवं पसली की हड्डी को नष्ट करते हैं. (५)

सूक्त आठवां — देवता—यक्ष्मा, कुष्ठ आदि

उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके.
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् (१)

तेजस्वी एवं बंधन से छुड़ाने वाले तारे उदित हों. वे तारे पुत्र, पौत्र आदि के शरीर में होने वाले यक्ष्मा, कुष्ठ आदि रोगों एवं उन के फंदों से हमें छुड़ाएं जो हमारे शरीर के नीचे एवं ऊपर के भागों में हैं. (१)

अपेयं रात्र्युच्छत्वपोच्छन्त्वभिकृत्वरीः.
वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु (२)

यह प्रातःकाल के समीप वाली रात उसी प्रकार हमारे शरीर से व्याधियों को समाप्त करे, जिस प्रकार प्रकाश के कारण अंधकार का विनाश होता है. रोग की शांति करते हुए आदित्य देव आएं. निश्चित ओषधि भी रोग का विनाश करे. (२)

बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिलपिञ्ज्या.
वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु (३)

मटमैले वर्ण के अर्जुन वृक्ष के काठ से, जौ की भूसी से एवं तिल की मंजरी से निर्मित मणि तेरा रोग दूर करे. क्षेत्रीय व्याधियों, अतिसार, यक्ष्मा आदि का विनाश करने वाली ओषधि समस्त रोगों को दूर करे. (३)

नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः.
वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु (४)

हे रोगी! तेरे रोग को शांत करने के लिए मैं बैल जुते हुए हलों को एवं हरण तथा जुए को नमस्कार करता हूं. क्षेत्रीय व्याधियों अर्थात अतिसार, यक्ष्मा आदि रोगों का विनाश करने वाली ओषधि समस्त रोग दूर करे. (४)

नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो नमः संदेश्येभ्यो नमः क्षेत्रस्य पतये.
वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु (५)

ऐसे सूने घरों को नमस्कार है, जिन के द्वार एवं खिड़की रूपी नेत्र खुले हुए हैं. ऐसे गड्ढा के लिए नमस्कार है, जिन की मिट्टी निकाल दी गई है. सूने घर आदि रूप क्षेत्र के पति को नमस्कार है. क्षेत्रीय व्याधियों अर्थात अतिसार, यक्ष्मा आदि रोगों का विनाश करने वाली ओषधि सभी रोग दूर करे. (५)

सूक्त नौवां — देवता—वनस्पति

दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु.
अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय (१)

हे ढाक, गूलर आदि दस वृक्षों से बनी हुई मणि! ब्रह्म राक्षस और राक्षसी से पकड़े हुए इस पुरुष को छुड़ाओ. उस ब्रह्म राक्षसी ने इसे शरीर के जोड़ों में पकड़ा हुआ है. हे वनस्पति से निर्मित मणि! तू इसे जीवित प्राणियों के लोक में पहुंचा अर्थात इसे पुनः जीवित कर. (१)

आगादुदगादयं जीवनां व्रातमप्यगात्.
अभूदु पुत्राणां पिता नृणां च भगवत्तमः (२)

हे मणि! तेरे प्रभाव से यह पुरुष गृह से युक्त हो कर इस लोक में आ गया है. इस ने जीवित मनुष्यों के समूह को प्राप्त कर लिया है. यह पुत्रों का पिता बन गया है तथा इस ने मनुष्यों के मध्य अतिशय भाग्य पा लिया है. (२)

अधीतीरध्यगादयमधि जीवपुरा अगन्.
शतं ह्यस्य भिषजः सहस्रमुत वीरुधः (३)

ब्रह्म ग्रह से छूटा हुआ यह पुरुष पूर्व में अध्ययन किए गए वेद आदि शास्त्रों को स्मरण करे तथा जीवों के आवास स्थानों को जाने, क्योंकि ग्रह से गृहीत इस पुरुष की चिकित्सा करने वाले सौ वैद्य हैं और हजार जड़ीबूटियां हैं. (३)

देवास्ते चीतिमविदन् ब्रह्माण उत वीरुधः.
चीतिं ते विश्वे देवा अविदन् भूम्यामधि (४)

हे मणि! ग्रह विकार से रोगी को छुड़ाने से तेरे प्रभाव को इंद्र आदि देव जानते हैं. ब्राह्मण एवं वृक्ष भी तेरे इस प्रभाव को जानते हैं. हे रोगी! तुझ मूर्च्छित को चेतना प्राप्त होने की बात धरती पर सभी देव जानते हैं. (४)

यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः.
स एव तुभ्यं भेषजानि कृणवद् भिषजा शुचिः (५)

विधान को जानने वाले जिस महर्षि ने इस मणि का बंधन किया है, वह ग्रह विकार को शांत करे. वही वैद्यों में सर्वोत्तम है. निर्मल ज्ञान वाले वे ही वैद्य तेरे लिए ओषधियों का निर्माण करें. (५)

क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (१)

हे व्याधि पीड़ित पुरुष! मैं तुझे क्षय, कोढ़ आदि रोगों से, रोग के कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से उत्पन्न पाप से, गुरु, देव आदि के द्रोह से एवं वरुण के पाप से छुड़ाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी हैं. (१)

शं ते अग्निः सहाद्भिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः.
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (२)

हे रोगी पुरुष! जलों के सहित अग्नि तेरे लिए सुखकर हो. सभी जड़ीबूटियों के साथ सोमलता तेरे लिए सुखकारी हो. इसी प्रकार मैं तुझे क्षय, कोढ़ आदि से, रोग के कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से उत्पन्न पाप से, गुरु, देव आदि के द्रोह से एवं वरुण देव के पापों से छुड़ाता हूं. मैं अपने मंत्र से तुझे पाप रहित बनाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी बनें. (२)

शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्छं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः. एवाहं त्वां
क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (३)

हे रोगी पुरुष! धरती और आकाश के मध्य तेरे लिए पक्षियों को धारण करने वाली वायु सुखकारी हो. पूर्व, पश्चिम आदि चारों उत्तम दिशाएं तेरे लिए सुखकारी हों. इसी प्रकार मैं तुझे क्षय, कुष्ठ आदि से, रोग के कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से, उत्पन्न पाप से, गुरु, देव आदि के द्रोह से एवं वरुण देव के पापों से छुड़ाता हूं. मैं अपने मंत्र से तुझे पाप रहित बनाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी हों. (३)

इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो वातपत्नीरभि सूर्यो विचष्टे. एवाहं त्वां
क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (४)

हे रोगी पुरुष! ये दिव्य एवं वायु पत्नी पूर्व आदि चारों दिशाएं एवं सब के प्रेरक सविता सभी प्रकार तुम्हें सुखी करें. इसी प्रकार मैं तुझे क्षय, कुष्ठ आदि से, रोग के कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से उत्पन्न पाप से, गुरू, देव आदि के द्रोह से तथा वरुण देव के पापों से छुड़ाता हूं. मैं अपने मंत्र के द्वारा तुझे पाप रहित बनाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी हों. (४)

तासु त्वान्तर्जरस्या दधामि प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः एवाहं त्वां
क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (५)

हे रोगी पुरुष! मैं तुझे पूर्व आदि दिशाओं के मध्य वृद्धावस्था तक नीरोग रह कर जीवन बिताने योग्य बनाता हूं. तेरा राजयक्ष्मा आदि रोग एवं पाप देवता निर्मित रोग तुझ से दूर चले जाएं. इसी प्रकार मैं तुझे क्षय, कोढ़ आदि से, रोग के कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से उत्पन्न पाप से, गुरु, देव आदि के द्रोह से एवं वरुण देव के पापों से छुड़ाता हूं. मैं अपने मंत्र से तुझे पाप रहित बनाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी हों. (५)

अमुक्था यक्ष्माद् दुरितादवद्याद् द्रुहः पाशाद् ग्राह्याश्चोदमुक्थाः. एवाहं त्वां
क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (६)

हे रोगी पुरुष! तू यक्ष्मा रोग से छूट गया है. रोग के कारण बने हुए पाप से, निंदा से, द्रोह से, वरुण के पाप से तू छूट गया है. इसी प्रकार मैं तुझे क्षय, कोढ़ आदि से, रोग के कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से उत्पन्न पाप से, गुरु, देव आदि के द्रोह से तथा वरुण देव के पाप से छुड़ाता हूं. मैं अपने मंत्र से तुझे पाप रहित बनाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी हों. (६)

अहा अरातिमविदः स्योनमप्यभूर्भद्रे सुकृतस्य लोके.
एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (७)

हे रोगी पुरुष! तूने शत्रु के समान बाधा पहुंचाने वाले रोग को त्याग दिया है एवं सुख प्राप्त कर लिया है. उत्तम कर्मों के फल के रूप में प्राप्त होने वाले इस कल्याणमय भूलोक में तू स्थित है. इसी प्रकार मैं तुझे क्षय, कोढ़, आदि से, रोग का कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से उत्पन्न पाप से, देव, गुरु आदि के द्रोह से एवं वरुण देव के पाप से छुड़ाता हूं. मैं अपने मंत्र से तुझे पाप रहित बनाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी हों. (७)

सूर्यमृतं तमसो ग्राह्या अधि देवा मुञ्चन्तो असृजन्निरेणसः. एवाहं त्वां
क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात्.
अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (८)

हे रोगी पुरुष! सत्य बने हुए सूर्य अंधकार रूपी ग्रह से तुझे छुड़ाते हैं. इंद्र आदि देव तुझे पाप से मुक्त करते हैं. इसी प्रकार मैं तुझे क्षय, कोढ़ आदि से, रोग का कारण बने हुए पाप देवता से, बांधवों के आक्रोश से उत्पन्न पाप से, गुरू, देव आदि के द्रोह से, वरुण देव के पाप से छुड़ाता हूं. मैं अपने मंत्र के द्वारा तुझे पाप रहित बनाता हूं. द्यावा और पृथ्वी दोनों तेरे लिए कल्याणकारी हों. (८)

दूष्या दूषिरसि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि.
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम (१)

हे तिलक वृक्ष से निर्मित मणि! विनाश करने वाली कृत्या का तू निवारण करती है. तू युद्धों को नष्ट एवं वज्र को असफल करने वाली है. तू हम से अधिक शक्तिशाली शत्रु को मारने के लिए पकड़ तथा हमारे समान शक्तिशाली शत्रु को छोड़ कर चली जा. (१)

स्रक्त्योऽसि प्रतिसरोऽसि प्रत्यभिचरणोऽसि.
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम (२)

हे मणि! तू तिलक वृक्ष से निर्मित है. तू कृत्या आदि को भगाने वाला रक्षा सूत्र है. तू दूसरों के द्वारा किए गए जादूटोनों का निवारण करने वाली है. तू मुझ से अधिक शक्तिशाली शत्रु को मारने के लिए पकड़ तथा मेरे समान शक्तिशाली शत्रु को छोड़ कर आगे बढ़ जा. (२)

प्रति तमभि चर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः.
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम (३)

जो शत्रु हम से और हमारे पुत्रों, बांधवों तथा पशुओं से द्वेष करता है एवं हम जिस के विनाश की इच्छा करते हैं, हे मणि! तुम इन दोनों प्रकार के शत्रुओं का विनाश करो. तुम मुझ से अधिक शक्तिशाली शत्रु को मारने के लिए पकड़ो तथा मेरे समान शक्ति वाले शत्रु को छोड़ कर आगे बढ़ जाओ. (३)

सूरिरसि वर्चोधा असि तनूपानोऽसि.
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम (४)

हे मणि! तू हमारे शत्रुओं द्वारा किए गए जादू टोनों को जानने वाली, तेजस्विनी एवं हमारे शरीरों की रक्षा करने वाली है. तू हम से अधिक शक्तिशाली शत्रु को मारने के लिए पकड़ एवं हमारे समान शक्ति वाले शत्रु को छोड़ कर आगे चली जा. (४)

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि.
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम (५)

हे मणि! तू शत्रुओं को शोक में डुबाने वाली, तेजस्विनी, संताप देने वाली एवं ज्योति के समान न छूने योग्य है. तू मुझ से अधिक शक्तिशाली शत्रु को मारने के लिए पकड़ ले और मेरे समान शक्ति वाले शत्रु को छोड़ कर आगे बढ़ जा. (५)

सूक्त बारहवां देवता—द्यावा, पृथ्वी, अंतरिक्ष

द्यावापृथिवी उर्व१न्तरिक्षं क्षेत्रस्य पत्न्युरुगायोऽद्भुतः.
उतान्तरिक्षमुरु वातगोपं त इह तप्यन्तां मयि तप्यमाने (१)

द्यावा और पृथ्वी के मध्य विस्तृत अंतरिक्ष विद्यमान है. इन तीनों लोकों के अधिपति देव क्रमशः अग्नि, वायु और सूर्य हैं. ये अद्‌भुत एवं महापुरुषों द्वारा प्रशंसित विष्णु, ब्रह्मांड में व्याप्त, आकाश, लोक एवं लोकाधिपति हैं. मुझ अभिचारकर्ता के दीक्षा नियमों के कारण संतप्त होने पर संतप्त हों. तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार मैं अपने शत्रु के विनाश हेतु तत्पर हूं, उसी प्रकार ये देव भी उस के हिंसक बनें. (१)

इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो मह्यमुक्थानि शंसति.
पाशे स बद्धो दुरिते नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति (२)

हे देवो! मेरा यह वचन सुनो, तुम सब यज्ञ के योग्य हो. भरद्वाज मुनि मेरी अभिलाषा पूर्ति के लिए शास्त्रपाठ कर रहे हैं. जो शत्रु मेरे सन्मार्गगामी मन को कष्ट पहुंचाता है, वह मेरे द्वारा किए गए जादूटोने के पाप में बंध कर मृत्यु रूपी दुर्गति को प्राप्त हो. (२)

इदमिन्द्र शृणुहि सोमप यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि.
वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षं यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति (३)

हे सोमरस के पीने से संतुष्ट मन वाले इंद्र, मेरे द्वारा कहे गए वाक्य को सुनो. मैं शत्रुओं के द्वारा किए गए अपकारों से दुखी मन के द्वारा तुम्हें बारबार बुला रहा हूं. जो मेरे मन को इस प्रकार दुखी कर रहे हैं, मैं उन शत्रुओं को उसी प्रकार काटता हूं, जिस प्रकार कुल्हाड़ी वृक्ष को काटती है. (३)

अशीतिभिस्तिसृभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः.
इष्टापूर्तमवतु नः पितृणामामुं ददे हरसा दैव्येन (४)

तीन और अस्सी अर्थात तिरासी सभा गायन कर्ताओं के, बारह आदमियों के, आठ वसुओं के एवं दीर्घ सत्र का अनुष्ठान करने वाले अंगिरा गोत्रीय ऋषियों के सहयोग से हमारे पूर्वजों ने जो यज्ञ, कुआं एवं बाग से संबंधित उत्तम कर्म किए हैं, वे शत्रुओं से हमारी रक्षा करें. हम अपकार करने वाले शत्रु को जादू टोने रूपी देवता के क्रोध के द्वारा अपने वश में करते हैं. (४)

द्यावापृथिवी अनु मा दीधीथां विश्वे देवासो अनु मा रभध्वम्.
अङ्गिरस पितरः सोम्यासः पापमार्छत्वपकामस्य कर्ता (५)

हे द्यावा पृथ्वी! तुम शत्रु को जीतने में मेरे अनुकूल बनो. हे समस्त देवो! तुम मेरे शत्रु को पकड़ने के लिए तैयार हो जाओ. हे सोमरस के पात्र अंगिरा गोत्रीय

ऋषियो एवं पितरो! तुम ऐसा प्रयत्न करो कि मुझ से द्रोह करने वाले शत्रु मृत्यु को प्राप्त हों. (५)

अतीव यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यो निन्दिषत् क्रियमाणम्.
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषं द्यौरभिसंतपाति (६)

हे मरुतो! जो शत्रु अपनेआप को हम से अधिक शक्तिशाली मानता है अथवा जो हमारे द्वारा किए जाने वाले मंत्र संबंधी कर्म की निंदा करता है, उस के लिए संतापकारी आयुध बाधक हों. मेरे कर्म से द्वेष करने वाले को द्यौ संताप दे. (६)

सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्ते वृश्चामि ब्रह्मणा.
अया यमस्य सादनमग्निदूतो अरङ्कृतः (७)

हे शत्रु! तेरे सात प्राणों अर्थात आंख, नाक, कान और मुंह के सात छिद्रों को तथा तेरे कंठ की आठ धमनियों को मैं अपने मंत्र संबंधी अभिचार कर्म के द्वारा काटता हूं. छिन्न अंगों वाला तू यमराज के घर जा. तेरे जलाने के लिए अग्नि दूत के समान आ गई है. इस के बाद तेरे शव को सजाया जाएगा. (७)

आ दधामि ते पदं समिद्धे जातवेदसि.
अग्निः शरीरं वेवेष्ट्वसुं वागपि गच्छतु (८)

हे शत्रु! मैं जलती हुई अग्नि में तेरे कटे हुए चरणों के साथ तेरे पैरों की धूल फेंकता हूं. अग्नि तेरे शरीर में प्रवेश कर के तेरे सारे अंगों में फैल जाए. तेरी वाणी और प्राण भी समाप्त हो जाएं. (८)

सूक्त तेरहवां देवता—अग्नि, बृहस्पति, विश्वेदेव

आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्ने.
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रानभि रक्षतादिमम् (१)

हे अग्नि! तू इस ब्रह्मचारी को वृद्धावस्था तक आयु प्रदान कर. हे घृत के कारण प्रज्वलित एवं घृतरूपी रीढ़ वाले अग्नि देव! मधुर एवं निर्मल गोघृत से संतुष्ट हो कर तुम इस ब्रह्मचारी की रक्षा उसी प्रकार करो, जिस प्रकार पिता पुत्र की रक्षा करता है. (१)

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः.
बृहस्पतिः प्रायच्छतद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ (२)

हे देवो! इस ब्रह्मचारी को वस्त्र पहनाओ एवं हमारे तेज से इस का पोषण करो. इसे ऐसा बनाओ कि वृद्धावस्था ही इस की मृत्यु बने. इस प्रकार इस की आयु को दीर्घ बनाओ. बृहस्पतिदेव ने यह वस्त्र ब्राह्मणों के राजा सोम को पहनने के लिए दिया था. (२)

परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्गृष्टीनामभिशस्तिपा उ.
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व (३)

हे विद्यार्थी! तुम ने यह वस्त्र क्षेम प्राप्त करने के हेतु धारण किया है. इसे धारण कर के तुम हिंसा के भय से प्रजाओं की रक्षा करो. तुम अधिक समय तक पुत्र, पौत्र आदि को व्याप्त करने वाले सौ वर्षों तक जीवित रहो एवं धन की पुष्टि धारण करो. (३)

एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः.
कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् (४)

हे ब्रह्मचारी! तू आ और अपने दाहिने पैर से पत्थर पर आक्रमण कर. तेरा शरीर पत्थर के समान दृढ़ हो. समस्त देव तेरी आयु सौ वर्ष की बनाएं. (४)

यस्य ते वासः प्रथमवास्यं१ हरामस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः.
तं त्वा भ्रातरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम् (५)

हे ब्रह्मचारी! तुम ने नवीन वस्त्र धारण किया है. हम तुम से पहले पहना हुआ वस्त्र ले रहे हैं. सभी देव तुम्हारी रक्षा करें. शोभन वृद्धि से बढ़ते हुए बहुत से भाई तुम्हारे बाद जन्म लें. (५)

सूक्त चौदहवां — देवता—अग्नि, भूतपति, इंद्र

निः सालां धृष्णुं धिषणमेकवाद्यां जिघत्स्वम्.
सर्वाश्चण्डस्य नप्त्यो नाशयामः सदान्वाः (१)

मैं शाल वृक्ष से भी ऊंची निःसाला नामक राक्षसी को नष्ट करता हूं. वह भय उत्पन्न करने वाली, पराजित करने वाली, कठोर वचन बोलने वाली एवं मुझे खाने की इच्छुक है. चंड नामक पापग्रह की सभी नातिनों को मैं नष्ट करता हूं जो मुझ पर क्रोध करने वाली हैं. (१)

निर्वो गोष्ठादजामसि निरक्षान्निरुपानसात्.
निर्वो मगुन्द्या दुहितरो गृहेभ्यश्चातयामहे (२)

हे मगुंदी नाम की राक्षसी की पुत्रियो! मैं तुम्हें अपनी गोशाला से, जुए खेलने के स्थान से तथा धान्य रखने के घर से दूर भगाता हूं. मैं तुम्हें अपने घरों से निकाल कर विशेष प्रकार से नष्ट करता हूं. (२)

असौ यो अधराद् गृहस्तत्र सन्त्वराय्यः.
तत्र सेदिर्न्युच्यतु सर्वाश्च यातुधान्यः (३)

यह जो अत्यधिक प्रसिद्ध पाताल लोक है, कल्याण में विघ्न करने वाली राक्षसियां वहां चली जाएं. पाप देवता निर्मित वहीं पाताल में नीचे चली जाएं. सभी राक्षसियां भी वहीं रहें. (३)

भूतपतिर्निरजत्विन्द्रश्चेत: सदान्वा:.
गृहस्य बुध्न आसीनास्ता इन्द्रो वज्रेणाधि तिष्ठतु (४)

भूतों के स्वामी रुद्र और इंद्र क्रोध करने वाली राक्षसियों को मेरे घर से निकालें. इंद्र मेरे घर के नीचे के भाग में निवास करने वाली पिशाचियों को वज्र से दबा कर रखें. (४)

यदि स्थ क्षेत्रियाणां यदि वा पुरुषेषिता:.
यदि स्थ दस्युभ्यो जाता नश्यतेत: सदान्वा: (५)

हे पिशाचियो! यदि तुम मातापिता के शरीर से आए हुए कोढ़, पागलपन, संगृहणी आदि का कारण बनी हुई हो अथवा तुम्हें मेरे शत्रुओं ने यहां भेजा है, यदि तुम चोर आदि के समीप से प्रकाश में आई हो, तो तुम सब यहां से भाग जाओ. (५)

परि धामान्यासामाशुर्गाष्ठामिवासरन्.
अजैषं सर्वानाजीन् वो नश्यतेत: सदान्वा: (६)

इन पिशाचियों के निवास स्थान पर मैं ने चारों ओर से इस प्रकार आक्रमण किया है, जिस प्रकार तेज दौड़ने वाला घोड़ा अपनी घुड़साल की ओर जाता है. हे पिशाचियो! मैं ने तुम सब को संग्राम में जीत लिया है. इस कारण तुम सब निराश्रित हो कर भाग जाओ. (६)

सूक्त पंद्रहवां — देवता—प्राण

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यत:. एवा मे प्राण मा बिभे: (१)

जिस प्रकार द्यौ और पृथ्वी न किसी से भयभीत और आशंकित होते हैं और न नष्ट होते हैं, हे मेरे प्राणो! उसी प्रकार तुम भी शत्रु, ग्रह, रोग आदि से मत डरो. (१)

यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यत:. एवा मे प्राण मा बिभे: (२)

जिस प्रकार दिन और रात न किसी से भयभीत और आशंकित होते हैं तथा न नष्ट होते हैं, हे मेरे प्राणो! उसी प्रकार तुम भी शत्रु, ग्रह, रोग आदि से मत डरो. (२)

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यत:. एवा मे प्राण मा बिभे: (३)

जिस प्रकार सूर्य और चंद्र न किसी से भयभीत होते हैं, न आशंकित होते है और न नष्ट होते हैं, हे मेरे प्राणो! इसी प्रकार तुम भी शत्रु, ग्रह, रोग आदि से डरो मत. (३)

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यत:. एवा मे प्राण मा बिभे: (४)

जिस प्रकार ब्राह्मण और क्षत्रिय न किसी से भयभीत होते हैं, न आशंकित होते हैं और न नष्ट होते हैं, हे मेरे प्राणो! उसी प्रकार तुम भी किसी से मत डरो. (४)

यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यतः. एवा मे प्राण मा बिभेः (५)

जिस प्रकार सत्य और असत्य न किसी से भयभीत होते हैं, न आशंकित होते हैं और न कभी नष्ट होते हैं, हे मेरे प्राणो! उसी प्रकार तुम भी मत डरो. (५)

यथा भूतं च भव्यं च न बिभीतो न रिष्यतः. एवा मे प्राण मा बिभेः (६)

जिस प्रकार वर्तमान का वस्तु समूह और भविष्य में उत्पन्न होने वाली वस्तुएं न किसी से भयभीत होती हैं, न आशंकित होती हैं और न कभी नष्ट होती हैं, हे मेरे प्राणो! उसी प्रकार तुम भी किसी से मत डरो. (६)

सूक्त सोलहवां देवता—प्राण, अपान आदि

प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं स्वाहा (१)

हे प्राण और अपान वायु के अभिमानी देवो! मृत्यु से मेरी रक्षा करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (१)

द्यावापृथिवी उपश्रुत्या मा पातं स्वाहा (२)

हे द्यावा और पृथ्वी! मुझे सुनने की शक्ति दे कर मेरी रक्षा करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (२)

सूर्य चक्षुषा मा पाहि स्वाहा (३)

सूर्य रूप देखने वाली इंद्रिय आंख के द्वारा मेरी रक्षा करे. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (३)

अग्ने वैश्वानर विश्वैर्मा देवैः पाहि स्वाहा (४)

हे वैश्वानर अग्नि! सभी देवों के साथ मेरी इंद्रियों को शक्ति प्रदान करके मेरी रक्षा करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (४)

विश्वम्भर विश्वेन मा भरसा पाहि स्वाहा (५)

हे विश्वंभर! अपनी समस्त पोषण शक्ति के द्वारा मेरी रक्षा करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (५)

सूक्त सत्रहवां देवता—ओज आदि

ओजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा (१)

हे अग्नि! तुम ओज हो. इसीलिए मुझ में ओज धारण करो. यह हवि भलीभांति

हवन किया हुआ हो. (१)

सहोऽसि सहो मे दाः स्वाहा (२)

हे अग्नि! तुम शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ तेज हो, इसीलिए तुम मुझे तेज प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (२)

बलमसि बलं मे दाः स्वाहा (३)

हे अग्नि! तुम बल हो, इसीलिए मुझे बल प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (३)

आयुरस्यायुर्मे दाः स्वाहा (४)

हे अग्निदेव! तुम आयु हो, इसीलिए मुझे आयु प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (४)

श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः स्वाहा (५)

हे अग्निदेव! तुम श्रोत्र हो, इसीलिए मुझे श्रोत्र अर्थात सुनने की शक्ति प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (५)

चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः स्वाहा (६)

हे अग्निदेव! तुम चक्षु हो, इसीलिए मुझे चक्षु अर्थात देखने की शक्ति प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (६)

परिपाणमसि परिपाणं मे दाः स्वाहा (७)

हे अग्निदेव! तुम सभी प्रकार से पालन करने वाले हो, इसीलिए मेरा पालन करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (७)

सूक्त अठारहवां — देवता—अग्नि

भ्रातृव्यक्षयणमसि भ्रातृव्यचातनं मे दाः स्वाहा (१)

हे अग्निदेव! तुम शत्रु का विनाश करने वाले हो, इसीलिए मुझे शत्रु नाश की शक्ति प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (१)

सपत्नक्षयणमसि सपत्नचातनं मे दाः स्वाहा (२)

हे अग्निदेव! तुम विरोधियों का नाश करने वाले हो, इसीलिए तुम मुझे विरोधियों का विनाश करने की शक्ति प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (२)

अरायक्षयणमस्यरायचातनं मे दाः स्वाहा (३)

हे अग्निदेव! तुम दान न करने वालों का विनाश करने वाले हो, इसीलिए मुझे

भी दान न करने वालों का विनाश करने की शक्ति प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (३)

पिशाचक्षयणमसि पिशाचचातनं मे दाः स्वाहा (४)

हे अग्निदेव! तुम मांस भक्षण करने वाले पिशाचों का नाश करने वाले हो, इसीलिए मुझे भी पिशाचों का विनाश करने की शक्ति प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (४)

सदान्वाक्षयणमसि सदान्वाचातनं मे दाः स्वाहा (५)

हे अग्निदेव! तुम आक्रोश करने वाली पिशाचियों का विनाश करने वाले हो, इसीलिए मुझे भी पिशाचियों के विनाश की शक्ति प्रदान करो. यह हवि भलीभांति हवन किया हुआ हो. (५)

सूक्त उन्नीसवां — देवता—अग्नि

अग्ने यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (१)

हे अग्निदेव! तुम्हारी जो तपाने की शक्ति है, उस से उस को संतप्त करो जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिस से द्वेष करते हैं. (१)

अग्ने यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (२)

हे अग्निदेव! तुम्हारी जो संहार की शक्ति है, उस के द्वारा उस का संहार करो जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिस से द्वेष करते हैं. (२)

अग्ने यत् ते तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (३)

हे अग्निदेव! तुम्हारी जो दीप्ति है, उस के द्वारा उन्हें जलाने के लिए दीप्त बनो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (३)

अग्ने यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (४)

हे अग्निदेव! तुम्हारी जो दूसरों को शोकमग्न करने की शक्ति है, उस के द्वारा तुम उन्हें शोक मग्न करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (४)

अग्ने यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (५)

हे अग्निदेव! तुम्हारा जो तेज है, उस से उन लोगों को तेजहीन बनाओ जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं (५)

सूक्त बीसवां — देवता—वायु

वायो यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (१)

हे वायुदेव! तुम्हारी जो संताप पहुंचाने की शक्ति है, उस से उन्हें संताप पहुंचाओ जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (१)

वायो यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (२)

हे वायुदेव! तुम्हारी जो छीनने की शक्ति है, उस का प्रयोग उन लोगों के प्रति करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (२)

वायो यत् ते तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (३)

हे वायुदेव! तुम्हारा जो वेग है, उस का प्रयोग उन के प्रति करो जो हम से द्वेष रखते हैं अथवा हम जिन से द्वेष रखते हैं. (३)

वायो यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (४)

हे वायुदेव! तुम्हारी जो दूसरों को शोक मग्न करने की शक्ति है, उस का प्रयोग उन लोगों के प्रति करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (४)

वायो यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (५)

हे वायुदेव! तुम्हारा जो तेज है, उस के द्वारा उन्हें तेजहीन बनाओ, जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (५)

सूक्त इक्कीसवां — देवता—सूर्य

सूर्य यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (१)

हे सूर्यदेव! आप की जो तप्त करने की शक्ति है, उस से उन्हें संताप पहुंचाओ जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (१)

सूर्य यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (२)

हे सूर्यदेव! आप की जो सुख, शांति एवं शक्ति हरण करने वाली शक्ति है, उस से उन लोगों की सुख, शांति एवं शक्ति का हरण करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (२)

सूर्य यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (३)

हे सूर्यदेव! तुम्हारी जो दीप्ति है, उस से उन्हें जलाओ जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (३)

सूर्य यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (४)

हे सूर्यदेव! तुम्हारी जो शोक मग्न करने की शक्ति है, उस से उन्हें शोक मग्न करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (४)

सूर्य यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (५)

हे सूर्यदेव! आप का जो तेज है, उस से उन्हें तेजहीन बनाओ जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (५)

सूक्त बाईसवां — देवता—चंद्र

चन्द्र यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (१)

हे चंद्र देव! तुम्हारी जो दूसरों को संतप्त करने की शक्ति है, उस से उन्हें संतप्त करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (१)

चन्द्र यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (२)

हे चंद्रदेव! तुम्हारी जो छीनने की शक्ति है, उस का प्रयोग उन लोगों के सुख, शांति एवं शक्ति छीनने के लिए करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (२)

चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (३)

हे चंद्रदेव! तुम्हारी जो दीप्ति है, उस से उन लोगों को दीप्तिहीन बनाओ जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (३)

चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (४)

हे चंद्रदेव! तुम्हारी जो दूसरों को शोक मग्न करने की शक्ति है, उस के द्वारा उन्हें शोक मग्न करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (४)

चन्द्र यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (५)

हे चंद्रदेव! तुम्हारा जो तेज है, उस से उन्हें तेजहीन करो, जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (५)

सूक्त तेईसवां — देवता—आप अर्थात जल

आपो यद् वस्तपस्तेन तं प्रति तपत योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (१)

हे जलदेव! तुम्हारी जो दूसरों को संताप देने की शक्ति है, उस से उन्हें संताप प्रदान करो जो हम से द्वेष करते हैं और हम जिन से द्वेष करते हैं. (१)

आपो यद् वो हरस्तेन तं प्रति हरत योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (२)

हे जलदेव! तुम्हारी जो हरण करने की शक्ति है, उस से उन की सुखशांति का हरण करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (२)

आपो यद् वोऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्चत योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (३)

हे जलदेव! तुम्हारी जो दीप्ति है, उस के द्वारा उन लोगों को दीप्तिहीन बनाओ

जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (३)

आपो यद् वः शोचिस्तेन तं प्रति शोचत योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (४)

हे जलदेव! तुम्हारी जो दूसरों को शोक मग्न करने की शक्ति है, उस से उन्हें शोक मग्न करो जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (४)

आपो यद् वस्तेजस्तेन तमतेजसं कृणुत योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (५)

हे जलदेव! तुम्हारा जो तेज है, उस के द्वारा उन लोगों को तेजहीन बनाओ जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. (५)

सूक्त चौबीसवां देवता—आयुध

शेरभक शेरभ पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (१)

हे राक्षसों के गांव के मुखिया और राक्षसों के स्वामी! तुम ने हमारी ओर जो दरिद्रता प्रदान करने वाली राक्षसी भेजी है तथा जो राक्षस भेजे हैं, वे हमारी ओर से वापस लौट जाएं. तुम्हारे जो आयुध हैं, वे भी वापस लौट जाएं. तुम्हारे अनुचर चोर भी लौट जाएं. तुम हमारे जिस शत्रु के हो, उसी के पास चले जाओ तथा उसे खा डालो. जिस प्रयोग करने वाले ने तुम्हें मेरे पास भेजा है. तुम उसी को खाओ. तुम उसी का मांस भक्षण करो. (१)

शेवृधक शेवृध पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (२)

हे अपने आश्रितों का सुख बढ़ाने वाले एवं गांव के मुखिया के स्वामी! तुम ने हमारी ओर जो दरिद्रता प्रदान करने वाली राक्षसी भेजी है तथा जो राक्षस भेजे हैं वे हमारी ओर से वापस लौट जाएं. तुम्हारे जो आयुध हैं वे भी वापस लौट जाएं. तुम्हारे अनुचर चोर भी लौट जाएं. तुम हमारे जिस शत्रु के हो, उसी के पास चले जाओ तथा उसे खा डालो. जिस प्रयोग करने वाले ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, तुम उसी को खाओ. तुम उसी का मांस भक्षण करो. (२)

म्रोकानुम्रोक पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (३)

हे धन आदि छीन कर छिपे रूप में चलने वाले एवं उस का अनुसरण करने वाले चोरो! तुम ने हमारी ओर दरिद्रता प्रदान करने वाली जो राक्षसी और राक्षस भेजे हैं, वे हमारी ओर से वापस लौट जाएं. तुम्हारे जो आयुध हैं वे भी वापस लौट जाएं. तुम्हारे अनुचर चोर भी लौट जाएं. तुम हमारे जिस शत्रु के हो उसी के पास चले जाओ तथा उसे खा डालो. जिस प्रयोग करने वाले ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, तुम उसी को खाओ. तुम उस का मांस भक्षण करो. (३)

सर्पानुसर्प पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (४)

हे कुटिल चलने वाले राक्षसों के स्वामी एवं उस के अनुचर! तुम ने हमारी ओर दरिद्रता प्रदान करने वाली राक्षसी और राक्षस भेजे हैं, वे हमारी ओर से वापस लौट जाएं. तुम्हारे जो आयुध हैं, वे भी लौट जाएं. तुम्हारे अनुचर चोर भी वापस चले जाएं. तुम हमारे जिस शत्रु के हो, उसी के पास चले जाओ तथा उसे खा डालो. जिस प्रयोग करने वाले ने तुम्हें हमारे पास भेजा है, तुम उसी को खाओ. तुम उसी का मांस भक्षण करो. (४)

जूर्णि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (५)

हे प्राणियों के शरीर को वृद्ध बनाने वाली राक्षसी! तूने हमारी ओर दरिद्रता प्रदान करने वाली जो राक्षसियां भेजी हैं, वे हमारी ओर से वापस लौट जाएं. तेरे जो आयुध हैं वे भी लौट जाएं. तेरे अनुचर चोर भी लौट जाएं. तू हमारे जिस शत्रु की है, उसी के पास चली जा तथा उसे खा डाल. जिस प्रयोग करने वाले ने तुझे मेरे पास भेजा है, तू उसी को खा. तू उसी का मांस भक्षण कर. (५)

उपब्दे पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (६)

हे क्रूर शब्द करने वाली राक्षसी! तुम ने हमारी ओर दरिद्रता प्रदान करने वाली जो राक्षसियां भेजी हैं, वे हमारी ओर से वापस लौट जाएं. तुम्हारे जो आयुध हैं, वे भी लौट जाएं. तुम्हारे अनुचर चोर भी वापस चले जाएं. तुम हमारे जिस शत्रु की हो, उसी के पास चली जाओ तथा उसे खा डालो. जिस प्रयोग करने वाले ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, तुम उसी को खाओ. तुम उसी का मांस भक्षण करो. (६)

अर्जुनि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (७)

हे अर्जुन वृक्ष के समान रंग वाली राक्षसी! तुम ने मेरी ओर दरिद्रता प्रदान करने वाली जो राक्षसी भेजी है, वह हमारी ओर से वापस लौट जाए. तुम्हारे जो आयुध हैं, वे भी लौट जाएं. तुम्हारे अनुचर चोर भी वापस चले जाएं. तुम हमारे जिस शत्रु की हो, उसी के पास चली जाओ तथा उसे खा डालो. जिस प्रयोग करने वाले ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, तुम उसी को खाओ. तुम उसी का मांस भक्षण करो. (७)

भरूजि पुनर्वो यन्तु यातवः पुनर्हेतिः किमीदिनीः.
यस्य स्थ तमत्त यो वः प्राहैत् तमत्त स्वा मांसान्यत्त (८)

हे शरीर का अपहरण करने हेतु आने वाली राक्षसी! तुम ने हमारी ओर दरिद्रता प्रदान करने वाली जो राक्षसियां भेजी हैं, वे हमारी ओर से वापस लौट जाएं. तुम्हारे

जो आयुध हैं, वे भी लौट जाएं. तुम्हारे अनुचर चोर भी वापस चले जाएं. तुम हमारे जिस शत्रु की हो, उसी के पास वापस लौट जाओ तथा उसे खा डालो. जिस प्रयोग करने वाले ने तुम्हें मेरे पास भेजा है, तुम उसी को खा डालो. तुम उसी का मांस भक्षण करो. (८)

सूक्त पच्चीसवां — देवता—पृश्निपर्णी

शं नो देवी पृश्निपर्ण्यशं निर्ऋत्या अकः.
उग्रा हि कण्वजम्भनी तामभक्षि सहस्वतीम् (१)

चमकती हुई पृश्निपर्णी नाम की जड़ीबूटी हमें सुख प्रदान करे तथा रोग उत्पन्न करने वाली पाप देवता निर्ऋति को दुख दे. मैं ने अत्यधिक शक्तिशाली, पापनाशिनी एवं रोग को पराजित करने वाली जड़ी पृश्निपर्णी को खाया है. (१)

सहमानेयं प्रथमा पृश्निपर्ण्यजायत.
तयाहं दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि शकुनेरिव (२)

रोगों को पराजित करने वाली पृश्निपर्णी सभी जड़ीबूटियों में प्रमुख बन कर उत्पन्न हुई है. इस के द्वारा मैं दाद, खुजली, कोढ़ आदि रोगों के कारण को इस प्रकार समाप्त करता हूं, जिस प्रकार खड्ग से पक्षी का सिर काटा जाता है. (२)

अरायमसृक्पावानं यश्च स्फातिं जिहीर्षति.
गर्भादं कण्वं नाशय पृश्निपर्णि सहस्व च (३)

हे पृश्निपर्णी नामक जड़ी! मेरे शरीर के रक्त को गिराने वाले कुष्ठ आदि रोगों को, शरीर वृद्धि को रोकने वाले संग्रहणी आदि रोगों को तथा गर्भ को नष्ट करने वाले रोग के उत्पादक कण्व नामक पाप को नष्ट करो एवं मेरे शत्रुओं को पराजित करो. (३)

गिरीमेनां आ वेशय कण्वाञ्जीवितयोपनान्.
तांस्त्वं देवि पृश्निपर्ण्यग्निरिवानुदहन्निहि (४)

हे पृश्निपर्णी नाम की बूटी! प्राणों का नाश करने वाले एवं कुष्ठ आदि रोगों को उत्पन्न करने वाले पाप कण्व को पर्वत की गुफा में घुसा दो. जिस प्रकार अग्नि वन में रहने वाले पशुओं को जला देती है, उसी प्रकार तू पर्वत की गुफा में घुसे हुए पापों को जलाती हुई जा. (४)

पराच एनान् प्र णुद कण्वाञ्जीवितयोपनान्.
तमांसि यत्र गच्छन्ति तत् क्रव्यादो अजीगमम् (५)

हे पृश्निपर्णी! प्राणों का नाश करने वाले एवं कोढ़ आदि रोगों को उत्पन्न करने वाले कण्व नामक पापों को पीछे की ओर जाने को विवश कर. मैं भी कुष्ठ आदि

रोगों को वहां भेजता हूं, जहां सूर्योदय के बाद अंधकार चला जाता है. (५)

सूक्त छब्बीसवां

देवता—पशुगण

एह यन्तु पशवो ये परेयुर्वायुर्येषां सहचारं जुजोष.
त्वष्टा येषां रूपधेयानि वेदास्मिन् तान् गोष्ठे सविता नि यच्छतु (१)

जो पशु कभी न लौटने के लिए चले गए हैं, वे मेरी इस गोशाला में आ जाएं. वायु जिन की रक्षा के लिए साथ चलती है एवं त्वष्टा जिन के गर्भाशय के बछड़ों का रूप जानते हैं, उन समस्त पशुओं को सविता देव इस गोशाला में इस प्रकार स्थापित करें कि वे कभी न भागें. (१)

इमं गोष्ठं पशवः सं स्रवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन्.
सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ (२)

गाय आदि पशु मेरी इस गोशाला में आएं. उन्हें यहां लाने का ढंग जानते हुए बृहस्पति देव उन्हें यहां लाएं. हे सिनीवाली अर्थात पूर्णिमा और अमावस्या की देवियो! तुम इन पशुओं के पीछे चलती हो. तुम गोशाला में आए हुए इन पशुओं को रोको. (२)

सं सं स्रवन्तु पशवः समश्वाः समु पूरुषाः.
सं धान्यस्य या स्फातिः संस्राव्येण हविषा जुहोमि (३)

गाय आदि पशु, घोड़े, सेवक आदि पुरुष तथा गेहूं, जौ आदि अन्नों की वृद्धि मेरे पास आए. इस के निमित्त मैं घृत से हवन करता हूं. (३)

सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्.
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ (४)

मैं पहली बार बच्चा देने वाली गाय के ताजा दूध में घी मिलाता हूं तथा घी में शक्ति देने वाला अन्न और जल मिलाता हूं. मेरे पुत्र, पौत्र आदि घी से शरीर चुपड़ कर दृढ़ गात्र वाले बनें. इस के निमित्त मुझ गोस्वामी के पास गाएं स्थित रहें. (४)

आ हरामि गवां क्षीरमाहार्षं धान्यं१ रसम्.
आहृता अस्माकं वीरा आ पत्नीरिदमस्तकम् (५)

मैं गायों का दूध लाता हूं तथा अन्न एवं जल भी लाता हूं. मैं पुत्र, पौत्र एवं पत्नी को ले आया हूं. इन सब से मेरा घर पूर्ण रहे. (५)

सूक्त सत्ताईसवां

देवता—ओषधि, इंद्र, रुद्र

नेच्छत्रुः प्राशं जयाति सहमानाभिभूरसि.
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे (१)

हे ग्वारपाठा नामक जड़ी! तुम्हारा सेवन करने वाले वक्ता को उस का विरोधी न जीत सके. तुम्हारा स्वभाव शत्रु को सहन करने का है, इसीलिए तुम प्रतिवादी को पराजित कर देती हो. मुझ प्रश्न पूछने वाले से जो विरोधी प्रतिप्रश्न पूछते हैं, उन को तुम पराजित करो. हे ओषधि! मेरे विरोधी वक्ताओं का गला सुखा दो, जिस से वे बोल न सकें. (१)

सुपर्णस्त्वान्वविन्दत् सूकरस्त्वाखनन्नसा.
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे (२)

हे ग्वारपाठा नामक जड़ी! सुंदर पंखों वाले गरुड़ ने विष दूर करने के लिए तुम्हें खोज कर प्राप्त किया था. आदि वाराह ने अपनी थूथन से तुम्हें खोदा था. मुझ प्रश्न पूछने वाले से जो विरोधी प्रति प्रश्न पूछते हैं, उन्हें तुम पराजित करो. हे ओषधि! मेरे विरोधी वक्ताओं का गला सुखा दो, जिस से वे बोल न सकें. (२)

इन्द्रो ह चक्रे त्वा बाहावसुरेभ्य स्तरीतवे.
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे (३)

हे ग्वारापाठा नामक जड़ी! इंद्र ने असुरों की हिंसा करने के लिए तुम्हें अपनी भुजाओं में धारण किया था. मुझ प्रश्न पूछने वाले से जो विरोधी प्रति प्रश्न पूछते हैं, उन्हें तुम पराजित करो तथा मेरे विरोधी वक्ताओं का गला सुखा दो, जिस से वे बोल न सकें. (३)

पाटामिन्द्रो व्याश्नादसुरेभ्य स्तरीतवे.
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे (४)

इंद्र ने असुरों की हिंसा करने के लिए ग्वारपाठा नाम की जड़ी को खाया था. हे ग्वारपाठा! मुझ प्रश्न पूछने वाले से जो विरोधी प्रति प्रश्न पूछते हैं, उन्हें तुम पराजित करो तथा मेरे विरोधी वक्ताओं का गला सुखा दो, जिस से बोल न सकें. (४)

तयाहं शत्रून्त्साक्ष इन्द्रः सालावृकां इव.
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे (५)

ग्वारपाठे को धारण कर के अथवा खा कर मैं अपने विरोधी वक्ताओं को उसी प्रकार निरुत्तर कर दूंगा, जिस प्रकार इंद्र ने जंगली कुत्तों का रूप धारण करने वाले असुरों को हराया था. हे ग्वारापाठा! मुझ प्रश्न करने वाले से जो विरोधी प्रतिप्रश्न करते हैं, उन्हें तुम पराजित करो तथा मेरे विरोधी वक्ताओं का गला सुखा दो, जिस से वे बोल न सकें. (५)

रुद्र जलाषभेषज नीलशिखण्ड कर्मकृत्.
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे (६)

हे सुखकर जड़ीबूटियों वाले, नीले रंग के शिखंड अर्थात मोर के पंखों के

मुकुट से युक्त एवं अपने उपासकों के दुष्कर्मों को काटने वाले रुद्र! मेरे द्वारा सेवन की जाती हुई ग्वारपाठा नाम की जड़ी को मेरे विरोधी वक्ताओं का तिरस्कार करने योग्य बनाओ. हे ग्वारपाठा! मुझ प्रश्न करने वाले से जो विरोधी प्रतिप्रश्न पूछते हैं, उन्हें तुम पराजित करो तथा मेरे विरोधी वक्ताओं का मुंह सुखा दो, जिस से वे बोल न सकें. (६)

तस्य प्राशं त्वं जहि यो न इन्द्राभिदासति.
अधि नो ब्रूहि शक्तिभिः प्राशि मामुत्तरं कृधि (७)

हे इंद्र! जो विरोधी वक्ता अपनी युक्तियों से मेरा तिरस्कार करता है, तुम उस के उस प्रश्न को समाप्त कर दो, जो मेरे प्रतिकूल हो. तुम अपनी शक्तियों से मुझे अधिक बोलने वाला बनाओ तथा मुझ प्रश्न पूछने वाले को उत्तर देने वाले से श्रेष्ठ बनाओ. (७)

सूक्त अट्ठाईसवां — देवता—जरिमा, आयु आदि

तुभ्यमेव जरिमन् वर्धतामयं मेममन्ये मृत्यवो हिंसिषुः शतं ये.
मातेव पुत्रं प्रमना उपस्थे मित्र एवं मित्रियात् पात्वंहसः (१)

हे स्तुति किए जाते हुए अग्निदेव! तुम्हारी सेवा के लिए ही यह कुमार रोग आदि से रहित हो कर बढ़े. जो असंख्य हिंसक रोग एवं पिशाच हैं, वे भी इस बालक की हिंसा न करें. माता जिस प्रकार पुत्र को गोद में ले कर उस की रक्षा करती है, उसी प्रकार मित्र नाम के देव पाप से इस बालक की रक्षा करें. (१)

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ.
तदग्निर्होता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति (२)

हिंसकों का भक्षण करने वाले मित्र एवं वरुण एक मत हो कर इस बालक को वृद्धावस्था के द्वारा मरने वाला बनाएं. देवों का आह्वान करने वाले एवं जानने योग्य बालकों को जानने वाले अग्नि देव समस्त प्रादुर्भाव के स्थानों को पाकर इस के लिए दीर्घ आयु का वचन दें अर्थात इस की आयु बढ़ाएं. (२)

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः.
मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः (३)

हे अग्निदेव! पृथ्वी पर जो पशु उत्पन्न हो चुके हैं और जो उत्पन्न होने वाले हैं, तुम उन के स्वामी हो. प्राण और अपान वायु इस बालक का त्याग न करें. मित्र एवं शत्रु इस का वध न करें. (३)

द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने.
यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः (४)

हे बालक! द्यौ तेरा पिता और पृथ्वी तेरी माता है. ये दोनों एक मत हो कर तुझे दीर्घ आयु प्रदान करें, जिस से तू पृथ्वी की गोद में प्राण और अपान वायु से सुरक्षित हो कर सौ वर्ष तक जीवित रहे. (४)

इममग्न आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन्.
मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् (५)

हे अग्निदेव! इस बालक को दीर्घ जीवन प्रदान करो एवं तेजस्वी बनाओ. हे तेजस्वी वरुण एवं मित्र देव! इसे पुत्र उत्पन्न करने योग्य वीर्य प्रदान करो. हे अदिति! तुम माता के समान इस बालक को सुख प्रदान करो. हे समस्त देवो! यह ऐसा हो कि इस का शरीर वृद्धावस्था को प्राप्त करे. (५)

सूक्त उनतीसवां देवता—अग्नि, सूर्य आदि

पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो३ बले.
आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः (१)

पृथ्वी संबंधी पदार्थों के रस को पीने वाले पुरुष को इंद्र आदि देव भग देवता के समान बली बनाएं. सूर्य इस पुरुष को दीर्घ आयु प्रदान करें. सब के प्रेरक आदित्य एवं बृहस्पति इसे तेज प्रदान करें. (१)

आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिलिधेह्यस्मै.
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् (२)

हे जातवेद अग्नि! इसे सौ वर्ष की दीर्घ आयु प्रदान करो. हे त्वष्टा देव! इस के लिए अधिक संतान स्थापित करो. हे सब के प्रेरक सविता देव! इस के लिए धन की अधिकता को प्रेरित करो. आप सब का यह पुत्र सौ वर्ष तक जीवित रहे. (२)

आशीर्ण ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ.
जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधरान्त्सपत्नान् (३)

हमारे आशीर्वाद सत्य हों. हे द्यावा पृथ्वी! इसे अन्न दो तथा उत्तम संतान वाला बनाओ. तुम दोनों एक मत हो कर इसे बल एवं धन प्रदान करो. हे इंद्र देव! यह पुरुष अपने बल से शत्रुओं को विजय और खेतों को अपने अधिकार में करता हुआ अपने शत्रुओं को पराजित करे. (३)

इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो मरुद्भिरुग्रः प्रहितो न आगन्.
एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे मा क्षुधन्मा तृषत् (४)

इंद्र से जीवन प्राप्त कर के, वरुण की अनुमति लेकर तथा मरुतों से बल प्राप्त कर के भेजा हुआ यह हमारे समीप आया है. हे द्यावा पृथ्वी! तुम्हारी गोद में वर्तमान यह पुरुष न कभी भूखा रहे और न कभी प्यास से व्याकुल हो. (४)

ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती धत्तं पयो अस्मै पयस्वती धत्तम्.
ऊर्जमस्मै द्यावापृथिवी अधातां विश्वे देवा मरुत ऊर्जमापः (५)

हे शक्तिशालिनी द्यावा पृथ्वी! इस भूखे को बलकारक अन्न दो. हे जलपूर्ण द्यावा पृथ्वी! इस प्यासे की रोग निवृत्ति के लिए जल प्रदान करो. प्रार्थना करने पर द्यावा पृथ्वी इसे अन्न दें. विश्वेदेव, मरुदगण एवं जल देवता इसे बल प्रदान करें. (५)

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चाः.
सवासिनौ पिबतां मन्थमेतमश्विनो रूपं परिधाय मायाम् (६)

हे प्यासे पुरुष! मैं तेरे नीरस हृदय को सुखकारी जलों से तृप्त करता हूं. इस के पश्चात तू रोग रहित, उत्तम तेज युक्त एवं प्रसन्न हो जाएगा. एक मत धारण करने वाले अश्विनीकुमार मायारूप बना कर इस सत्तू को पीने के लिए शक्ति तैयार करें. (६)

इन्द्र एतां ससृजे विद्धो अग्र ऊर्जां स्वधामजरां सा त एषा.
तया त्वं जीव शरदः सुवर्चा मा त आ सुस्रोद् भिषजस्ते अक्रन् (७)

प्राचीन काल में वृत्रासुर के द्वारा घायल इंद्र ने प्यास से व्याकुल हो कर बलकारक अन्न एवं वृद्धावस्था का विनाश करने वाला यह सत्तू बनाया था. वही अन्न और सत्तू तुझे दिया जा रहा है. इस के द्वारा तू उत्तम तेज वाला बन कर सौ वर्ष तक जीवित रह. पिया हुआ सत्तू तेरे शरीर में रह कर बल प्रदान करे. देवों के वैद्य अश्विनीकुमारों ने तेरे लिए यह ओषधि तैयार की है. (७)

सूक्त तीसवां — देवता—अश्विनीकुमार आदि

यथेदं भूम्या अधि तृणं वातो मथायति.
एवा मथ्नामि ते मनो यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नपगा असः (१)

हे स्त्री! धरती के ऊपर पड़े हुए तिनके को वायु जिस प्रकार भ्रमित करती है, मैं तेरे मन को उसी प्रकार चंचल बना दूंगा. इस से तू मुझे चाहने वाली बन जाएगी तथा मेरे पास से कहीं अन्यत्र नहीं जा सकेगी. (१)

सं चेन्नयाथो अश्विना कामिना सं च वक्षथः.
सं वां भगासो अग्मत सं चित्तानि समु व्रता (२)

हे अश्विनीकुमारों! मेरी चाही गई स्त्री को मेरे समीप ले आओ तथा मुझ कामी पुरुष से मिला दो. हम दोनों के भाग्य एक साथ मिल जाएं. हमारे मन और कर्म भी समान हों. (२)

यत् सुपर्णा विवक्षवो अनमीवा विवक्षवः.

तत्र मे गच्छताद्धवं शल्य इव कुल्मलं यथा (३)

शोभन पंखों वाले कबूतर आदि पक्षी जो स्त्री विषयक बात कहने के इच्छुक होते हैं, रोग रहित कामीजन भी वही बात कहना चाहते हैं. उस विषय में किया जाता हुआ मेरा आह्वान उस कामिनी के लिए मैल भरे बाण के समान हो. अर्थात वह मेरी बात सुन कर मेरे वश में हो जाए. (३)

यदन्तरं तद् बाह्यं यद् बाह्यं तदन्तरम्.
कन्यानां विश्वरूपाणां मनो गृभायौषधे (४)

जो अर्थ मन में होता है, वही वाणी के द्वारा प्रकट होता है. बाहर वाणी के द्वारा जो बात कही जाती है, वही मनुष्य के मन में रहती है. हे जड़ीबूटी! सर्व गुण संपन्न कन्या के मन को ग्रहण करो. अर्थात तुम्हारा लेपन करने से उस कन्या का मन मेरे वश में हो जाए. (४)

एयमगन् पतिकामा जनिकामोऽहमागमम्.
अश्वः कनिक्रदद् यथा भगेनाहं सहागमम् (५)

पति की अभिलाषा करती हुई यह स्त्री मेरे समीप आई थी. मैं ने भी पत्नी की कामना से इसे प्राप्त किया था. घोड़ा जिस प्रकार हिनहिनाता हुआ घोड़ी के पास जाता है. उसी प्रकार मैं इस नारी से मिला हूं. (५)

सूक्त इकत्तीसवां देवता—मही

इन्द्रस्य या मही दृषत् क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी.
तया पिनष्मि सं क्रिमीन् दृषदा खल्वां इव (१)

सभी कीड़ों को मारने वाली जो इंद्र की शिला है, उसी शिला के द्वारा मैं शरीर के भीतर स्थित कीटाणुओं को उसी प्रकार मारता हूं, जिस प्रकार सिलबट्टे से चने पीसे जाते हैं. (१)

दृष्टमदृष्टमतृहमथो कुरूरुमतृहम्.
अल्गण्डून्त्सर्वाञ्छलुनान् क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि (२)

मैं आंखों से दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले कीटाणुओं को मारता हूं. इस के अतिरिक्त शरीर के अंतर्गत जाल के समान स्थित कीटाणुओं का भी मैं विनाश करता हूं. मैं अपने मंत्र के बल से अलगंडू एवं शल्ना नाम के कीटाणुओं को तथा अन्य सभी कीटाणुओं को नष्ट करता हूं. (२)

अल्गण्डून् हन्मि महता वधेन दूना अदूना अरसा अभूवन्.
शिष्टानशिष्टान् नि तिरामि वाचा यथा क्रिमीणां नकिरुच्छिषातै (३)

मैं हवन के साधन अन्न और जड़ीबूटियों के द्वारा रक्त तथा मांस को दूषित

करने वाले अलगंडू नाम के कीटाणुओं का वध करता हूं. मेरी जड़ीबूटी और मेरे मंत्र के द्वारा संतप्त अथवा असंतप्त वे कीटाणु निर्जीव हो जाएं. मैं बचे हुए और पहले न मरे हुए कीटाणुओं को अपने मंत्र के द्वारा इस प्रकार मारता हूं, जिस से अनेक प्रकार के कीटाणुओं में से एक भी न बचे. (३)

अन्वान्त्र्यं शीर्षण्य१मथो पार्ष्टेयं क्रिमीन्.
अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि (४)

क्रम से आंतों में होने वाले, सिर में होने वाले, तथा पसलियों में स्थित कीटाणुओं को मैं मंत्र के द्वारा नष्ट करता हूं. ये कीटाणु शरीर में प्रवेश करने वाले एवं भांतिभांति के मार्गों से गमन करने वाले हैं. (४)

ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वप्स्व१न्तः.
ये अस्माकं तन्वमाविविशुः सर्वं तद्धन्मि जनिम क्रिमीणाम् (५)

जो कीटाणु पर्वतों में, वनों में, ओषधियों में, पशुओं में तथा जल में स्थित हैं, वे घाव के द्वारा अथवा अन्न पान के द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश कर चुके हैं. मैं इन सभी प्रकार के कीटाणुओं की उत्पत्ति समाप्त करता हूं. (५)

सूक्त बत्तीसवां

देवता—आदित्य

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिभिः.
ये अन्त क्रिमयो गवि (१)

उदय होते हुए तथा अस्त होते हुए सूर्य अपनी फैलने वाली किरणों के द्वारा उन कीटाणुओं का विनाश करे जो गाय के शरीर के भीतर स्थित हैं. (१)

विश्वरूपं चतुरक्षं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम्.
शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः (२)

मैं नाना आकारों वाले, चार आंखों वाले, चितकबरे रंग के एवं धवल वर्ण के कीटाणुओं का विनाश करता हूं. मैं उन कीटाणुओं की पीठ और शीश का भी विनाश करता हूं. (२)

अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत्.
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन् (३)

हे कीटाणुओ! मैं तुम्हें उसी प्रकार पुनः उत्पन्न न होने के लिए नष्ट करता हूं, जिस प्रकार अग्नि, कण्व और जमदग्नि ऋषि ने मंत्र की शक्ति से तुम्हारा विनाश किया था. मैं अगस्त्य ऋषि के मंत्र द्वारा सभी कीटाणुओं का विनाश करता हूं. (३)

हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः.
हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा (४)

कीटाणुओं का राजा मारा गया एवं इन का सचिव भी मारा गया. जिन कीटाणुओं की माता, भाई और बहनें भी मारी गई थीं, वे नष्ट हो गए. (४)

हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः.
अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः (५)

इन कीटाणुओं के कुल के निवास स्थान नष्ट हो गए एवं इन के घरों के आसपास के घर भी नष्ट हो गए. इस के अतिरिक्त जो कीटाणु बीज अवस्था में थे, वे भी नष्ट हो गए. (५)

प्र ते शृणामि शृङ्गे याभ्यां वितुदायसि.
भिनद्मि ते कुषुम्भं यस्ते विषधानः (६)

हे कीटाणु! मैं तेरे उन सींगों को तोड़ता हूं, जिन के द्वारा तू व्यथा पहुंचाता है. मैं तेरे कुषुंभ नामक अंग विशेष को भी विदीर्ण करता हूं जो विष को धारण करने वाला है. (६)

सूक्त तैंतीसवां देवता—यक्ष्मा का विनाश

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि.
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते (१)

हे यक्ष्मा रोग से पीड़ित पुरुष! मैं तेरी आंखों से, नाक से, कानों से तथा ठोड़ी से यक्ष्मा रोग को बाहर निकालता हूं. मैं तेरे सिर में से, मस्तिष्क से तथा जीभ से यक्ष्मा रोग को बाहर निकालता हूं. (१)

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात्.
यक्ष्मं दोषण्य१मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते (२)

हे यक्ष्मा रोग से पीड़ित पुरुष! मैं तेरी गरदन से, रक्त से पूर्ण नाड़ियों से, हंसली एवं सीने की हड्डियों से, संधियों से, कंधों से तथा भुजाओं से यक्ष्मा रोग को बाहर निकालता हूं. मैं बाहुओं में होने वाले यक्ष्मा रोग को भी नष्ट करता हूं. (२)

हृदयात् ते परि क्लोम्नो हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्.
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीह्नो यक्नस्ते वि वृहामसि (३)

हे रोगी! मैं तेरे हृदय से, हृदय के समीपवर्ती मांस पिंड क्लोम से, क्लोम से संबंधित हलक्षण नामक मांस पिंड से, दोनों ओर स्थित गुर्दों से, तिल्ली से एवं हृदय के समीपवर्ती यकृत से यक्ष्मा रोग को बाहर निकालता हूं. (३)

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि.
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते (४)

हे यक्ष्मा रोग से पीड़ित पुरुष! मैं तेरी आंखों से, गुदा से, बड़ी आंत से, पेट

से, दोनों कोखों से, अनेक छिद्रों वाले मलाशय से तथा नाभि से यक्ष्मा रोग को बाहर निकालता हूं. (४)

ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्.
यक्ष्मं भसद्यं१ श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते (५)

हे रोगी पुरुष! मैं तेरी जंघाओं से, घुटनों से, घुटनों के नीचे वाले भागों से, पैरों के पंजों से, कमर से, नितंबों से, तथा गुर्दों में स्थित यक्ष्मा रोग को वहां से बाहर निकालता हूं. (५)

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः.
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते (६)

हे रोगी पुरुष! मैं हड्डियों से, चर्बी से, शिराओं से, धमनियों से, हाथों से, हाथों की उंगलियों से तथा नाखूनों से यक्ष्मा रोग को बाहर निकालता हूं. (६)

अङ्गेअङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि.
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि (७)

हे यक्ष्मा रोगी पुरुष! तेरे अंगअंग में, रोमरोम में तथा जोड़जोड़ में जो यक्ष्मा रोग है, उसे मैं कश्यप महर्षि के मंत्रों के सूक्त के द्वारा बाहर निकालता हूं. (७)

सूक्त चौंतीसवां — देवता—विश्वकर्मा

य ईशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत यो द्विपदाम्.
निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानं सचन्ताम् (१)

जो पशुपति रुद्र चार पैरों वाले पशुओं और दो पैरों वाले मनुष्यों के स्वामी हैं, उन के पास से प्राप्त किया हुआ यह यज्ञ के योग्य पशु यज्ञ का भाग बने एवं यजमान को धन की समृद्धियां प्राप्त हों. (१)

प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः.
उपाकृतं शशमानं यदस्थात् प्रियं देवानामप्येतु पाथः (२)

हे देवो! इस मारे जाते हुए पशु को त्याग कर जाते हुए चक्षु, प्राण आदि इसे यजमान के लिए वीर्य के द्वारा पुण्य लोकों में जाने का मार्ग बनाएं. इस पशु में देवों का प्रिय जो मांस है, वह भी इसे प्राप्त हो. (२)

ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च.
अग्निष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः (३)

इस यज्ञीय पशु के समूह के जो पशु इसे मारा जाता हुआ देख कर दुखी होते हैं और दुखी मन से इसे प्रेम भरे नेत्रों द्वारा देखते हैं, अग्नि देव उन सब के लिए प्रेम

का फंदा खोल दें. अपनी सृष्टि के साथ शब्द करते हुए विश्वकर्मा भी इसे मुक्त करें. (३)

ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपा विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः.
वायुष्टानग्रे प्र मुमोक्तु देवः प्रजापतिः प्रजया संरराणः (४)

जो ग्रामीण पशु सभी रूपों से युक्त एवं विविध रूप वाले हो कर भी प्रायः एक रूप वाले हैं, उन सब को वायु देव सब से पहले मुक्त करें. अपनी प्रजा के साथ एक मत होते हुए प्रजापति भी बाद में इस पशु को मुक्त कराएं. (४)

प्रजानन्तः प्रति गृह णन्तु पूर्वे प्राणमङ्गेभ्यः पर्याचरन्तम्.
दिवं गच्छ प्रति तिष्ठा शरीरैः स्वर्गं याहि पथिभिर्देवयानैः (५)

हे पशु! इस यज्ञ में तेरे माहात्म्य को जानते हुए अंतरिक्ष में स्थित देव तेरे अंगों की सेवा करते हुए सभी ओर से निकल कर सामने आते हुए तेरे प्राणों को ग्रहण करें. इस के पश्चात तुम देवों के द्वारा गृहीत हो कर स्वर्ग में जाओ तथा वहां दिव्य भोगों के प्रति स्थित बनो. इस यज्ञ के बाद तुम देवों के मार्ग से स्वर्ग में जाओ. (५)

सूक्त पैंतीसवां देवता—विश्वकर्मा

ये भक्षयन्तो न वसून्यानृधुर्यानग्नयो अन्वतप्यन्त धिष्ण्याः.
या तेषामवया दुरिष्टिः स्विष्टिं नस्तां कृणवद् विश्वकर्मा (१)

हम ने भोजन करते हुए पृथ्वी में धनों को गाढ़ दिया है. पवित्र स्थानों में अग्नियों को जानते हुए विश्वकर्मा हमारे यज्ञ को सफल बनाएं. जो लोग हवन नहीं करते हैं अथवा दोष पूर्ण यज्ञ करते हैं, वे मेरे यज्ञ की सफलता देख कर शोक करें. (१)

यज्ञपतिमृषय एनसाहुर्निर्भक्तं प्रजा अनुतप्यमानम्.
मथव्यान्स्तोकानप यान् रराध सं नष्टेभिः सृजतु विश्वकर्मा (२)

ऋषियों ने ऐसे यजमान को पाप युक्त बताया है जो दुर्गति वाला हो तथा जिस की प्रजाएं उस के साथसाथ दुःखी हों. उस यजमान ने सोमरस की बूंदों को चुरा कर जो अपराध किया है, विश्वकर्मा सोमरस की उन बूंदों से हमारे यजमान को मिलाएं. (२)

अदान्यान्त्सोमपान् मन्यमानो यज्ञस्य विद्वान्त्समये न धीरः.
यदेनश्चकृवान् बद्ध एष तं विश्वकर्मन् प्र मुञ्चा स्वस्तये (३)

यज्ञ का स्वरूप जानने के गर्व से मोहित तथा अपने अतिरिक्त सोम पीने वाले पंडितों को भी अज्ञानी समझने वाला उसी प्रकार पाप करता है, जिस प्रकार संग्राम

में अपने को महाबली समझने वाला और शत्रु योद्धाओं का तिरस्कार करने वाला बंदी बन कर कष्ट उठाता है. हे विश्वकर्मा! उस पापी को कल्याण प्राप्ति के लिए पाप से छुड़ाओ. (३)

घोरा ऋषयो नमो अस्त्वेभ्यश्चक्षुर्यदेषां मनसश्च सत्यम्.
बृहस्पतये महिष द्युमन्नमो विश्वकर्मन् नमस्ते पाह्यस्मान् (४)

जो क्रूर ऋषि अर्थात प्राण, चक्षु आदि हैं, उन के लिए नमस्कार है. इन प्राणों और अंत:करण के मध्य में जो यथार्थदर्शी नेत्र हैं, उन के लिए भी नमस्कार है. बृहस्पति देव के लिए भी इसी प्रकार का दीप्तिशाली एवं महत्त्व पूर्ण नमस्कार है. हे विश्वकर्मा, आप को नमस्कार है. आप हमारी रक्षा करें. (४)

यज्ञस्य: चक्षु: प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि.
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः (५)

यज्ञ के नेत्र, यज्ञ के आदि रूप एवं मुख रूप अग्नि के प्रति मैं वाणी, कान तथा मन के द्वारा हवन करता हूं. विश्वकर्मा के द्वारा विस्तृत इस यज्ञ में समस्त देव एक मत हो कर आएं. (५)

सूक्त छत्तीसवां देवता—अग्नि आदि

आ नो अग्ने सुमतिं संभलो गमेदिमां कुमारीं सह नो भगेन.
जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुरोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै (१)

हे अग्निदेव! हमारी मान्यता के अनुसार, सर्व लक्षणों से युक्त एवं कन्या चाहने वाला वर हमें प्राप्त हो तथा सौभाग्य के कारण हमारी इस कुमारी को वर प्राप्त हो, यह कुमारी समान हृदय वाले वर को पा कर स्वयं प्रसन्न हो और उसे भी प्रसन्न करे. पति के साथ निवास स्थान इस के लिए सौभाग्यदायक हो. (१)

सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टमर्यम्णा संभृतं भगम्.
धातुर्देवस्य सत्येन कृणोमि पतिवेदनम् (२)

सोमदेव के द्वारा सेवित, ब्रह्म से अथवा गंधर्व से युक्त, विवाह की अग्नि से स्वीकृत कन्या रूपी भाग्य को देवों की आज्ञा के अनुसार यथार्थ वचन से मैं मनुष्य अर्थात वर को प्राप्त कराता हूं. (२)

इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति.
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु (३)

हमारी यह कन्या पति को प्राप्त करे, जिस से सोम राजा इसे सौभाग्य शालिनी बनाएं. विवाह के पश्चात यह पुत्रों को जन्म देती हुई श्रेष्ठ पत्नी सिद्ध हो. इस प्रकार यह पति को पा कर सौभाग्य युक्त एवं सुशोभित हो. (३)

यथाखरो मघवंश्चारुरेष प्रियो मृगाणां सुषदा बभूव.
एवा भगस्य जुष्टेयमस्तु नारी सम्प्रिया पत्याविराधयन्ती (४)

जिस प्रकार प्रशंसनीय भोज्य पदार्थों से युक्त, शोभन एवं पशुओं के आवास वाला यह प्रदेश प्रिय एवं सुखद होता है, उसी प्रकार यह कन्या पति के साथ प्रसन्नता देने वाली वस्तुएं बनाती हुई सुख समृद्धि प्राप्त करे. (४)

भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम्.
तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः (५)

हे कन्या! तू भाग्य के साधनों से पूर्ण एवं विनाशरहित नाव पर सवार हो. इस नाव के सहारे तू अपने मनचाहे पति को प्राप्त कर. (५)

आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कृणु.
सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः (६)

हे धनपति कुबेर! पति के द्वारा यह कहलवाओ कि यह कन्या मेरी पत्नी बने. इस वर को कन्या की ओर अभिमुख करो तथा सभी प्राणियों को इस के विवाह के अनुकूल कार्य करने वाला बनाओ. यह कन्या अपना मनचाहा पति प्राप्त करे. (६)

इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भगः.
एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिकामाय वेत्तवे (७)

सोने के आभूषण, धूपन का द्रव्य गुगल, लेपन का द्रव्य तथा औक्ष अलंकारों के अधिष्ठाता देव भग ने तुझे गंधर्व तथा अग्नि द्वारा अभिलषित पति को प्राप्त करने के हेतु दिए हैं. (७)

आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिकाम्यः.
त्वमस्यै धेह्योषधे (८)

हे कन्या! सब के प्रेरक सविता देव तेरे लिए मनचाहे वर को लाएं. वह भी तुझ से विवाह कर के तुझे अपने घर ले जाए. हे जड़ीबूटी! तुम इस कुमारी के लिए पति प्रदान करो. (८)

तीसरा कांड

सूक्त पहला

देवता—अग्नि, मरुत, इंद्र

अग्निर्नः शत्रून् प्रत्येतु विद्वान् प्रतिदहन्नभिशस्तिमरातिम्.
स सेनां मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः (१)

हिंसक शत्रुओं की सेना को मोहित कर के जातवेद अर्थात अग्नि शस्त्रास्त्र उठाने में असमर्थ बना दें. देवासुर संग्राम में देव सेना का प्रतिनिधित्व करने वाले अग्निदेव शत्रुओं के अंगों को भस्म करते हुए आगे बढ़ें. (१)

यूयमुग्रा मरुत ईदृशे स्थाभि प्रेत मृणत सहध्वम्.
अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्निर्ह्येषां दूतः प्रत्येतु विद्वान् (२)

हे मरुतो! तुम संग्राम में सहायता करने के लिए मेरे समीप रहो एवं मेरे शत्रुओं पर प्रहार करने जाओ. वसु देवगण भी मेरी प्रार्थना पर शत्रुनाश के लिए आगे बढ़ें. वसुओं में प्रधान अग्नि भी शत्रुओं को जानते हुए दूत के समान अग्रसर हो. (२)

अमित्रसेनां मघवन्नस्माञ्छत्रूयतीमभि.
युवं तानिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति (३)

हे इंद्र! हम निरापराधों के प्रति शत्रु के समान आचरण करने वाली सेना के सामने जाओ. हे वृत्रनाशक इंद्र! तुम और अग्नि दोनों प्रतिकूल बन कर शत्रु सेना को भस्म करो. (३)

प्रसूत इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून्.
जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विष्वक् सत्यं कृणहि चित्तमेषाम् (४)

हे इंद्र! हरि नाम के अश्वों से युक्त रथ में बैठ कर तुम समतल मार्ग से अपने वज्र को धारण करते हुए शत्रु सेना की ओर गमन करो. तुम सामने और पीछे से आते हुए तथा युद्ध से मुंह मोड़ कर भागते हुए शत्रुओं का विनाश करो. हमारे विनाश के प्रति दृढ़ निश्चय वाले इन के चित्त को तुम सर्वथा अव्यवस्थित कर दो. (४)

इन्द्रः सेनां मोहयामित्राणाम्.

अग्नेर्वातस्य ध्राज्या तान् विषूचो वि नाशय (५)

हे इंद्र! हमारे शत्रुओं की सेना को कर्त्तव्य ज्ञान से शून्य बना दो. अग्नि और वायु के सहयोग से भस्म करने हेतु विकराल बनी हुई अपनी गति से शत्रु सेना को युद्ध से मुंह मोड़ कर भागने पर विवश कर के नष्ट कर दो. (५)

इन्द्रः सेनां मोहयतु मरुतो घ्नन्त्वोजसा.
चक्षुंष्यग्निरा दत्तां पुनरेतु पराजिता (६)

देवों के अधिपति इंद्र शत्रु सेना को किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दें और मरुत अपने तेज से उस का विनाश करें. अग्नि देव उन की आंखों से देखने की शक्ति छीन लें. इस प्रकार पराजित शत्रु सेना वापस चली जाए. (६)

सूक्त दूसरा — देवता—अग्नि, इंद्र आदि

अग्निर्नो दूतः प्रत्येतु विद्वान् प्रतिदहन्नभिशस्तिमरातिम्.
स चित्तानि मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः (१)

सब कुछ जानने वाले और देवदूत अग्नि हमारे शत्रुओं को जला डालें और सामने की ओर से आते हुए हिंसक शत्रुओं के मन को किंकर्त्तव्यविमूढ़ कर दें. जातवेद अग्नि उन्हें इस योग्य न रखें कि वे हाथ से शस्त्र उठा सकें. (१)

अयमग्निरमूमुहद् यानि चित्तानि वो हृदि.
वि वो धमत्वोकसः प्र वो धमतु सर्वतः (२)

हे शत्रुओ! तुम्हारे हृदयों में जो हम पर आक्रमण करने संबंधी विचार हैं, उन्हें समाप्त करते हुए अग्नि देव तुम्हारे हृदयों को मोहित करें. वे तुम्हें तुम्हारे निवास से पूरी तरह निकाल दें एवं तुम्हारे स्थानों को नष्ट कर दें. (२)

इन्द्र चित्तानि मोहयन्नर्वाङाकूत्या चर.
अग्नेर्वातस्य ध्राज्या तान् विषूचो वि नाशय (३)

हे इंद्र! तुम हमारे शत्रुओं के हृदयों को भ्रमित करते हुए एवं अपने मन में उन्हें नष्ट करने का संकल्प लिए हुए शत्रुसैन्य के सामने जाओ. तुम अग्नि और वायु के सहयोग से भस्म करने हेतु विकराल बनी हुई अपनी गति से शत्रु सेना को युद्ध से मुंह मोड़ कर भागने पर विवश कर के नष्ट कर दो. (३)

व्याकूतय एषामिताथो चित्तानि मुह्यत.
अथो यदद्यैषां हृदि तदेषां परि निर्जहि (४)

हे विरुद्ध संकल्पो! तुम शत्रुओं के हृदयों में जाओ. हे शत्रुओं के हृदयो! तुम भ्रमित हो जाओ. युद्ध करने के लिए उद्यत हमारे शत्रुओं के हृदयों में जो कार्य करने की इच्छा है, उसे पूर्ण रूप से नष्ट कर दो. (४)

अमीषां चित्तानि प्रतिमोहयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि.
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैर्ग्राह्यामित्रांस्तमसा विध्य शत्रून् (५)

हे सुखों और प्राणों को नष्ट करने वाली अप्वा नाम की पापदेवी! तुम हमारे शत्रुओं के हृदयों को भ्रमित करती हुई उन के शरीरों में व्याप्त हो जाओ. तुम हम से मुंह मोड़ कर हमारे शत्रुओं की ओर जाओ और रोग, भय आदि से उत्पन्न शोकों से उन के हृदयों को संतप्त करो. तुम अज्ञान रूप पिशाची के सहयोग से हमारा अहित चाहने वाले शत्रुओं को मार डालो. (५)

असौ या सेना मरुतः परेषामस्मानैत्यभ्योजसा स्पर्धमाना.
तां विध्यत तमसापव्रतेन यथैषामन्यो अन्यं न जानात् (६)

हे मरुतो! शत्रुओं की यह सेना अपने बल की अधिकता के कारण हमारे साथ संघर्ष करती हुई हमारी ओर आ रही है. इसे अपने द्वारा प्रेरित माया से कर्त्तव्यज्ञान शून्य बना करके नष्ट कर दो. इन शत्रुओं को ऐसा बना दो कि इन में से कोई भी एक दूसरे को न पहचान सके. (६)

सूक्त तीसरा

देवता—अग्नि

अचिक्रदत् स्वपा इह भुवदग्ने व्यचस्व रोदसी उरूची.
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आमुं नय नमसा रातहव्यम् (१)

हे अग्नि! अपने राज्य से च्युत हुआ यह राजा पुनः राज्य पाने के लिए तुम्हारी प्रार्थना कर रहा है. तुम्हारी कृपा से यह अपने राज्य में प्रजाओं का पालक बने. हे व्यापन शील अग्नि! इस के निमित्त तुम धरती और आकाश में व्याप्त हो जाओ. विश्वेदेव और उनंचास मरुत तुम्हारी सहायता करें. तुम्हें नमस्कार करने वाले एवं हवि देने वाले इस राजा को इस का राज्य पुनः प्राप्त कराओ. (१)

दूरे चित् सन्तमरुषास इन्द्रमा च्यावयन्तु सख्याय विप्रम्.
यद् गायत्रीं बृहतीमर्कमस्मै सौत्रामण्या दधृषन्त देवाः (२)

हे ऋत्विजो! आप लोग स्वर्ग में निवास करने वाले मेधावी इंद्र को राजा की सहायता करने हेतु बुलाएं. देवों ने गायत्री और बृहती छंदों तथा इंद्र संबंधी सौत्रामणी यज्ञ के द्वारा इंद्र को अतिशय शक्तिशाली बना दिया है. (२)

अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु सोमस्त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः.
इन्द्रस्त्वा ह्वयतु विड्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः (३)

हे राजन! आप का राज्य शत्रुओं ने छीन लिया है. आप को आप के राज्य पर स्थापित करने के लिए वरुण अपने से संबंधित जल से, सोम अपने आश्रय स्थान पर्वतों से तथा इंद्र आप की प्रजाओं के माध्यम से आप के राज्य में प्रवेश के लिए बुलाएं. आप शत्रुओं द्वारा अपराजित होते हुए बाज के समान ही तीव्र गति से आएं

और अपनी इन प्रजाओं का पालन करें. (३)

श्येनो हव्यं नयत्वा परस्मादन्यक्षेत्रे अपरुद्धं चरन्तम्.
अश्विना पन्थां कृणुतां सुगं त इमं सजाता अभिसंविशध्वम् (४)

स्वर्ग में निवास करने वाले देव शत्रुओं द्वारा पराए राज्य में बंदी बनाए गए आप को अपने देश में लाएं. अश्विनीकुमार आप के मार्ग को शत्रुओं से शून्य बनाएं. हे बांधवो! अपने राज्य में पुनः प्रविष्ट इस राजा की तुम सब सेवा करो. (४)

ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः प्रति मित्रा अवृषत.
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्ते विशि क्षेममदीधरन् (५)

हे राजन! जो लोग अब तक आप के विरोधी थे, वे भी आप के अनुकूल बन कर स्नेह करें और आप के आज्ञापालक बनें. इंद्र, अग्नि और विश्वेदेव आप में प्रजापालन की क्षमता उत्पन्न करें. (५)

यस्ते हवं विवदत् सजातो यश्च निष्ट्यः.
अपाञ्चमिन्द्र तं कृत्वाथेममिहाव गमय (६)

हे राजन! आप के समान शक्तिशाली, आप से उच्च बलशाली और आप से हीन पराक्रम वाला जो शत्रु आप से सहमत न हो, इंद्र उसे उस राष्ट्र से बहिष्कृत कर के वहां के राजा को वहां स्थापित करें. (६)

सूक्त चौथा देवता—इंद्र

आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसोदिहि प्राङ् विशां पतिरेकराट् त्वं वि राज.
सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तूपसद्यो नमस्यो भवेह (१)

हे राजन! आप का राज्य आप को पुनः प्राप्त हो गया. इस कारण आप तेज के साथ पुनः प्रसिद्ध हों तथा प्रजापालक और शत्रु विनाशक बनें. सभी दिशाओं के देव और उन में निवास करने वाले प्रजाजन आप को अपना स्वामी स्वीकार करें. आप के राज्य के सभी निवासी आप की सेवा करें और आप का अभिवादन करें. (१)

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः.
वर्ष्मन राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि (२)

हे राजन! प्रजाएं राज्य शासन के लिए आप का वरण करें. पूर्व आदि चार और मध्यवर्ती पांचवीं दिशा आप के लिए तेजस्विनी बन कर आप का वरण करें. आप अपने देश के उच्च सिंहासन पर विराजमान हों. उस के पश्चात आप शत्रुओं से अपराजित रहते हुए हम सेवकों को यथायोग्य धन प्रदान करें. (२)

अच्छ त्वा यन्तु हविनः सजाता अग्निर्दूतो अजिरः सं चरातै.
जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु बहुं बलिं प्रति पश्यासा उग्रः (३)

हे राजन! आप के सजातीय अन्य राजा आप के बुलाने पर आएं. आप का दूत अग्नि के समान निर्बाध हो कर सर्वत्र विचरण करे. आप की पत्नियां तथा पुत्र आप की पुनः राज्य प्राप्ति से प्रसन्न हों. आप पर्याप्त शक्तिशाली बन कर अनेक प्रकार के उपायन अर्थात भेंट में आई हुई वस्तुएं अपने सामने आई देखें. (३)

अश्विना त्वाग्रे मित्रावरुणोभा विश्वे देवा मरुतस्त्वा ह्वयन्तु.
अधा मनो वसुदेयाय कृणुष्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि (४)

हे राजन! अश्विनीकुमार, दोनों मित्र-वरुण, विश्वेदेव एवं मरुत आप को राज्य में प्रवेश करने के लिए बुलाएं. आप अपना मन, धन दान करने में लगाएं. इस के पश्चात आप शत्रुओं से अपराजित रहते हुए हम सेवकों को यथायोग्य धन प्रदान करें. (४)

आ प्र द्रव परमस्याः परावतः शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम्.
तदयं राजा वरुणास्तथाह स त्वायमह्वत् स उपेदमेहि (५)

हे दूरदेश में स्थित राजन! दूर देश से अपने राज्य में शीघ्र आइए. अपने राज्य में प्रवेश के समय धरती और आकाश दोनों आप के लिए मंगलकारी बनें. वरुण आप को बुला रहे हैं. आप अपने राष्ट्र में आओ. (५)

इन्द्रेन्द्र मनुष्याः३ः परेहि सं ह्यज्ञास्था वरुणैः संविदानः.
स त्वायमह्वत् स्वे सधस्थे स देवान् यक्षत् स उ कल्पयाद् विशः (६)

हे परम ऐश्वर्य संपन्न इंद्र! हम मनुष्यों के समीप आओ. हे राजन! वरुण के साथ एकमत हो कर इंद्र आप को बुला रहे हैं, इसलिए आप अपने राज्य में प्रवेश करें एवं वहां रह कर इंद्र आदि देवों के निमित्त यज्ञ करें तथा प्रजाओं को अपनेअपने काम में लगाएं. (६)

पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः सर्वाः सङ्गत्य वरीयस्ते अक्रन्.
तास्त्वा सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु दशमीमुग्रः समुना वशेह (७)

धनवती एवं मार्ग में हितकारिणी देवियां आप का कल्याण करें. हे राजन! अनेक रूपों वाली जल देवियां एकत्र हो कर आप के लिए श्रेयस्कर बनें एवं एकमत हो कर आप को आप के राष्ट्र में बुलाएं. वहां आप सशक्त और प्रसन्न रह कर सौ वर्ष का जीवन भोगें. (७)

सूक्त पांचवां

देवता—सोम

आयमगन् पर्णमणिर्बली बलेन प्रमृणन्त्सपत्नान्.

ओजो देवानां पय ओषधीनां वर्चसा मा जिन्वत्वप्रयावन् (१)

अपनी शक्ति की अधिकता से शत्रुओं को नष्ट करने वाली तथा सभी ओषधियों की सार रूप तथा श्रेष्ठ फल देने वाली यह पर्णमणि मुझे प्राप्त हो. हे देवो! ओज रूप यह पर्णमणि मुझे अपने तेज से तेजस्वी बनाए. (१)

मयि क्षत्रं पर्णमणे मयि धारयताद् रयिम्.
अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः (२)

हे पलाश से निर्मित पर्णमणि! मुझ मणि धारण कर्ता को बल एवं धन प्रदान करो. तुम्हें धारण करने के कारण मैं अपने राज्य को स्वाधीन करने में किसी की सहायता न लेने से सर्वोत्तम बनूं. (२)

यं निदधुर्वनस्पतौ गुह्यं देवाः प्रियं मणिम्.
तमस्मभ्यं सहायुषा देवा ददतु भर्तवे (३)

इंद्र आदि देवों ने मनचाहा फल देने के कारण प्रिय इस मणि को पलाश वृक्ष में गोपनीय रूप से छिपा कर रखा था. देवगण मेरी आयु वृद्धि करें और भरणपोषण के निमित्त मुझे वह पर्णमणि प्रदान करें. (३)

सोमस्य पर्णः सह उग्रमागन्निन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टः.
तं प्रियासं बहु रोचमानो दीर्घायुत्वाय शतशारदाय (४)

दूसरों को पराजित करने की शक्ति देने वाली सोम मणि मुझे प्राप्त हो. इंद्र द्वारा दी हुई और वरुण द्वारा अनुमत उस प्रिय मणि को मैं सौ वर्ष की दीर्घ आयु पाने के लिए धारण करूं. (४)

आ मारुक्षत् पर्णमणिर्मह्या अरिष्टतातये.
यथाहमुत्तरोऽसान्यर्यम्ण उत संविदः (५)

यह पर्णमणि मेरा कल्याण करने के लिए मुझे चिरकाल तक प्राप्त हो. यह मणि धारण कर के मैं अर्यमा की कृपा से शत्रु नाश में समर्थ, अधिक बली एवं उत्तम बन जाऊं. (५)

ये धीवानो रथकाराः कर्मारा ये मनीषिणः.
उपस्तीन् पर्ण मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान् (६)

हे पर्णमणि! तुम सभी मछली पकड़ने वाले, रथकार अर्थात बढ़ई, लुहार और बुद्धिजीवी जनों को मेरी सेवा करने के लिए मेरे चारों ओर उपस्थित करो. (६)

ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये.
उपस्तीन् पर्ण मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान् (७)

हे पर्णमणि! जो राजगण, राजा बनाने में समर्थ सचिवगण, रथ हांकने वाले सूत और गांव के मुखिया हैं, उन सब को तू मेरी सेवा करने के लिए मेरे चारों ओर उपस्थित कर. (७)

पर्णोऽसि तनूपानः सयोनिर्वीरो वीरेण मया.
संवत्सरस्य तेजसा तेन बध्नामि त्वा मणे (८)

हे पर्णमणि! सोमलता के पत्तों से निर्मित होने के कारण तुम देह की रक्षा करने वाली हो. तुम शक्तिशालिनी और मुझ वीर के समान जन्म वाली हो. सूर्य के समान तेजस्विनी तुझ पर्णमणि को मैं तेज प्राप्ति के लिए बांधना चाहता हूं. (८)

सूक्त छठा

देवता—अश्वत्थ

पुमान् पुंसः परिजातोऽश्वत्थः खदिरादधि.
स हन्तु शत्रून् मामकान् यानहं द्वेष्मि ये च माम् (१)

अत्यंत शक्ति संपन्न वृक्ष पीपल से तथा गायत्री के सार से उत्पन्न सहयोग से निर्मित अश्वत्थ मणि धारण करने पर मेरे उन शत्रुओं का विनाश करें, जिन से मैं द्वेष करता हूं और जो मुझ से द्वेष करते हैं. (१)

तानश्वत्थ निः शृणीहि शत्रून वैबाधदोधतः.
इन्द्रेण वृत्रघ्ना मेदी मित्रेण वरुणेन च (२)

हे खदिर वृक्ष में उत्पन्न पीपल से निर्मित अश्वत्थमणि! तू मेरे शत्रुओं का पूर्ण रूप से नाश कर दे. वृत्र का नाश करने वाले इंद्र और वरुण के साथ तेरी मित्रता है. (२)

यथाश्वत्थ निरभनोऽन्तर्महत्यर्णवे.
एवा तान्सर्वान्निर्भङ्ग्धि यानहं द्वेष्मि ये च माम् (३)

हे मणि के उपादानकारण अश्वत्थ! तुम जिस प्रकार, खदिर वृक्ष के कोटर को भेद कर उत्पन्न हुए हो, उसी प्रकार मेरे सभी शत्रुओं का विनाश कर दो. (३)

यः सहमानश्चरसि सासहान इव ऋषभः.
तेनाश्वत्थ त्वया वयं सपत्नान्त्सहिषीमहि (४)

पीपल उसी प्रकार दूसरे वृक्षों को पराजित करता हुआ बढ़ता है, जिस प्रकार बैल अपने दर्प से अन्य पशुओं को पराजित करता है. हे पीपल! तुम से निर्मित मणि को धारण करने वाले हम शत्रुओं का नाश करें. (४)

सिनात्वेनान् निर्ऋतिर्मृत्यो पाशैरमोक्यैः.
अश्वत्थ शत्रून् मामकान् यानहं द्वेष्मि ये च माम् (५)

हे अश्वत्थ! पाप की देवी मृत्यु के न छूटने वाले फंदों से मेरे उन शत्रुओं को बांधो, जिन से मैं द्वेष करता हूं और जो मुझ से द्वेष करते हैं. (५)

यथाश्वत्थ वानस्पत्यानारोहन् कृणुषेऽधरान्.
एवा मे शत्रोर्मूर्धानं विष्वग् भिन्द्धि सहस्व च (६)

हे अश्वत्थ! जिस प्रकार तुम सभी वनस्पतियों अर्थात वृक्षों को नीचे छोड़ते हुए ऊपर उठते हो, उसी प्रकार मेरे शत्रुओं के शीशों को सभी ओर से कुचलो और उन का विनाश कर दो. (६)

तेऽधराञ्चः प्र प्लवन्तां छिन्ना नौरिव बन्धनात्.
न वैबाधप्रणुत्तानां पुनरस्ति निवर्तनम् (७)

तट के वृक्षों से रस्सी के सहारे बंधी हुई नाव खुलने के बाद जिस प्रकार किनारे को प्राप्त न कर के नदी की धारा के साथ नीचे की ओर बहती जाती है, उसी प्रकार मेरे शत्रु नीचे को मुंह कर के नदी के प्रवाह में बहें, क्योंकि खदिर के वृक्ष में उत्पन्न पीपल के प्रभाव में आए हुए शत्रुओं का उद्धार नहीं होता. (७)

प्रैणान् नुदे मनसा प्र चित्तेनोत ब्रह्मणा.
प्रैणान् वृक्षस्य शाखयाश्वत्थस्य नुदामहे (८)

मैं दृढ़ मानसिक शक्ति और गंध के प्रभाव द्वारा अपने शत्रुओं का उच्चाटन करता हूं. मैं मंत्रों से प्रभावित पीपल वृक्ष की शाखा के द्वारा शत्रुओं का विनाश करता हूं. (८)

सूक्त सातवां देवता—हरिण आदि

हरिणस्य रघुष्यदोऽधि शीर्षणि भेषजम्.
स क्षेत्रियं विषाणया विषूचीनमनीनशत् (१)

तेज दौड़ने वाले काले हरिण के सिर में जो सींग रूपी रोग निवारक ओषधि है, वह मातापिता से आए हुए क्षय, कुष्ठ, मिरगी आदि का पूर्णतया नाश करे. (१)

अनु त्वा हरिणो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरक्रमीत्.
विषाणे वि ष्य गुष्पितं यदस्य क्षेत्रियं हृदि (२)

हे मृगशृंग! तुम्हें क्षेत्रीय रोगों का विनाश करने के लिए मैं ने मणि के रूप में धारण किया है. इस रोगी के हृदय में जो रोग बसे हुए हैं, तुम उन का विनाश करो. (२)

अदो यदवरोचते चतुष्पक्षमिवच्छदिः.
तेना ते सर्वं क्षेत्रियमङ्गेभ्यो नाशयामसि (३)

यह चार कोनों वाला मृगचर्म चौकोरी चटाई के समान सुशोभित हो रहा है. हे रोगी! इस के द्वारा मैं तेरे क्षय, कुष्ठ आदि रोगों का नाश करता हूं. (३)

अमू ये दिवि सुभगे विचृतौ नाम तारके.
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् (४)

आकाश में स्थित विधृतनाम के दो तारे क्षय, कुष्ठ, मिरगी आदि क्षेत्रीय रोगों का विनाश करें. (४)

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः.
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात् (५)

जल ही ओषधि है. जल ही सब रोगों का नाश करने वाला है. जल किसी एक रोग की नहीं, समस्त रोगों की ओषधि है. हे रोगी! जल तुझे क्षय, कुष्ठ, मिरगी आदि क्षेत्रीय रोगों से छुड़ाएं. (५)

यदासुतेः क्रियमाणायाः क्षेत्रियं त्वा व्यानशे.
वेदाहं तस्य भेषजं क्षेत्रियं नाशयामि त्वत् (६)

हे रोगी! अन्न का यथाविधि उपयोग न करने के कारण तेरे शरीर में जो क्षय, कुष्ठ, मिरगी आदि क्षेत्रीय रोग उत्पन्न हो गए हैं, मैं चिकित्सक उन की जौ आदि के रूप में ओषधि जानता हूं. उस ओषधि के द्वारा मैं तेरे क्षेत्रीय रोगों का विनाश करता हूं. (६)

अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसामुत.
अपास्मत् सर्वं दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु (७)

तारों के छिपने के समय अर्थात उषाकाल से पूर्व और उषाकाल के समय किए गए स्नान आदि नित्य कर्मों के प्रभाव से रोगों का कारण दूर हो जाए. इस के पश्चात हमारे क्षय, कुष्ठ, मिरगी आदि क्षेत्रीय रोग नष्ट हो जाएं. (७)

सूक्त आठवां — देवता—मित्र आदि विश्वेदेव

आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवेशयन् पृथिवीमुस्रियाभिः.
अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्बृहद् राष्ट्रं संवेश्यं दधातु (१)

मृत्यु से रक्षा करने में समर्थ और मित्रवत सब के उपकारी मित्र देवता अर्थात सूर्य वसंत आदि ऋतुओं के द्वारा हमारी आयु को दीर्घ करने में समर्थ हों. वे अपनी किरणों से पृथ्वी को व्याप्त करें. सूर्य देव के आगमन के पश्चात वरुण, वायु और अग्नि हमें शासन करने योग्य विशाल राज्य प्रदान कराएं (१)

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः.

हुवे देवीमदितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्ठा यथासानि (२)

सब के विधाता धाता देव, दानशील अर्यमा और सब के प्रेरक सविता देव मेरी हवि ग्रहण करें. इन के साथसाथ इंद्र और त्वष्टा देव भी मेरी स्तुतियां सुनें. मैं वीर पुत्रों की माता अदिति का आह्वान करता हूं, जिस से मैं अपने समान व्यक्तियों में सम्मान पा सकूं. (२)

हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्यां अहमुत्तरत्वे.
अयमग्निर्दीदायद् दीर्घमेव सजातैरिद्धोऽप्रतिब्रुवद्भिः (३)

मैं यजमान को श्रेष्ठ पद प्राप्त करने के लिए सोम का, सविता का तथा समस्त अदिति पुत्रों का नमस्कारात्मक मंत्रों के द्वारा आह्वान करता हूं. सब के आधारभूत अग्निदेव अपनी दीप्ति बढ़ाएं. मैं अपने अनुकूलवर्ती बंधु बांधवों के साथ चिरकाल तक श्रेष्ठता प्राप्त करूं. (३)

इहेदसाथ न परो गमाथेर्यो गोपाः पुष्टपतिर्व आजत्.
अस्मै कामायोप कामिनीर्विश्वे वो देवा उपसंयन्तु (४)

हे कामिनियो! तुम सब कन्या के समीप ही रहो. इस के सामने से दूर मत जाओ. मार्ग की प्रेरणा देने वाले एवं पालन कर्ता पूषा देव तुम्हें प्रेरणा दें. इस वर की इच्छा पूर्ति के लिए विश्वेदेव तुझ कामना करने वाली स्त्री को उस के समीप जाने की प्रेरणा दें. (४)

सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि.
अमी ये विव्रता स्थन तान् वः सं नमयामसि (५)

हे हमारे विरोधी जनो! हम तुम्हारे चित्तों, कर्मों और संकल्पों को अपने अनुकूल बनाते हैं. इन में जो नियमों के विरुद्ध काम करने वाले हों, उन्हें हम तुम्हारे सामने ही दंड दें. (५)

अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत.
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्मान एत (६)

हे मेरे विरोधी जनो! मैं अपने मन के द्वारा तुम सब के मनों को और अपने चित्त के द्वारा तुम सब के चित्तों को अपने वश में करता हूं. आओ और तुम सब भी अपने हृदयों को मेरे वश में करो. तुम सब भी मेरी इच्छा के अनुसार मेरा अनुगमन करो और मेरे अनुकूल बनो. (६)

सूक्त नौवां — देवता—द्यावा, पृथ्वी, विश्वेदेव

कर्शफस्य विशफस्य द्यौष्पिता पृथिवी माता.
यथाभिचक्र देवास्तथाप कृणुता पुनः (१)

जो नाखून और खुर वाले बाघ आदि पशु हैं, जो बिना खुर वाले सर्प आदि जंतु हैं तथा जो फटे हुए खुर वाले गाय, बैल, भैंस आदि पशु हैं उन का पिता द्युलोक है और माता पृथ्वी है. हे देवो! इन विघ्नकारी पशुओं और जीवजंतुओं को आप ने जिस प्रकार हमारे अभिमुख किया है, उसी प्रकार इन्हें हम से अलग करो. (१)

अश्रेष्माणो अधारयन् तथा तन्मनुना कृतम्.
कृणोमि वध्रि विष्कन्धं मुष्काबर्हो गवामिव (२)

दूषित शरीर से रहित देवों ने अभिमत कार्य में आने वाले विघ्नों की शांति के लिए अरलू वृक्ष से बने दंड को धारण किया है. मनुष्यों की सृष्टि करने वाले मनु ने भी यही किया था. बैलों को जिस प्रकार प्रजनन में असमर्थ बनाया जाता है, उसी प्रकार मैं सूखे चमड़े की रस्सी से विघ्नों को निष्क्रिय कर रहा हूं. (२)

पिशङ्गे सूत्रे खृगलं तदा बध्नन्ति वेधसः.
श्रवस्युं शुष्मं काबवं वध्रिं कृण्वन्तु बन्धुरः (३)

पीले रंग के धागे जिस प्रकार कवच को धारण करते हैं, उसी प्रकार साधक अरलू मणि को अर्थात अरलू वृक्ष से बने डंडे को धारण करते हैं. हमारे द्वारा धारण की हुई अरलू मणि श्रवस्यु, शोधक और कबरे रंग के क्रूर प्राणियों से संबंधित विघ्नों को समाप्त करे. (३)

येना श्रवस्यवश्चरथ देवा इवासुरमायया.
शुनां कपिरिव दूषणो बन्धुरा काबवस्य च (४)

हे शत्रुओं को जीत कर यश की इच्छा करने वाले मनुष्यो! जिस प्रकार देवगण असुरों की माया से मोहित थे, उसी प्रकार तुम शत्रुओं द्वारा डाले गए विघ्नों से मोहित हो. जिस प्रकार बंदर कुत्तों को भगा देता है, उसी प्रकार तुम्हारे द्वारा धारण किया हुआ खड्ग विघ्नों को दूर भगा दे. (४)

दुष्ट्यै हि त्वा भत्स्यामि दूषयिष्यामि काबवम्.
उदाशवो रथा इव शपथेभिः सरिष्यथ (५)

हे मणि! मैं शत्रुओं द्वारा डाले गए विघ्नों को समाप्त करने के लिए तुझे धारण करता हूं. इसी प्रकार मैं काबव नाम के विघ्न को दूर करता हूं. हे मनुष्यो! तुम दौड़ने के लिए विस्तृत घोड़ों वाले रथों के समान शत्रुओं द्वारा उत्पन्न विघ्नों से रहित हो कर अपने कार्यों में लगो. (५)

एकशतं विष्कन्धानि विष्ठिता पृथिवीमनु.
तेषां त्वामग्र उज्जहरुर्मणिं विष्कन्धदूषणम् (६)

हे मणि! धरती पर एक सौ एक विघ्न हैं. देवों ने उन की शांति के लिए तुझे

धारण किया था. हे विघ्नों को दूर करने वाली मणि! मैं भी तुझे उसी उद्देश्य से धारण करता हूं. (६)

सूक्त दसवां　　　　देवता—इष्टका

प्रथमा हव्यु वास सा धेनुरभवद् यमे.
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् (१)

सृष्टि के आदि में उत्पन्न एकाष्टका उषा ने अंधकार दूर कर दिया था. यह हमारे पूर्वजों के लिए दूध देने वाली हुई थी. यह हमारे लिए भी दूध देने वाली हो और अभिमत फल प्रदान करे. (१)

यां देवाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमुपायतीम्.
संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली (२)

जिस एकाष्टका संबंधी रात्रि को धेनु के रूप में समीप आती हुई देख कर हवि का भोग देने वाले देवगण, उस की प्रशंसा करते हैं. वह एकाष्टका रात्रि संवत्सर की पत्नी है. वह हमारे लिए कल्याण करने वाली हो. (२)

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे.
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज (३)

हे रात्रि! तुम संवत्सर की प्रतिमा हो. हम तुम्हारी उपासना करते हैं. तुम हमारे पुत्र, पौत्र आदि को लंबी आयु वाला बनाओ तथा हमें गाय आदि धन से संपन्न करो. (३)

इयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छदास्वितरासु चरति प्रविष्टा.
महान्तो अस्यां महिमानो अन्तर्वधूर्जिगाय नवगज्जनित्री (४)

यह आज की एकाष्टक लक्षणा वह प्रथम उत्पन्न उषा है, जिस ने सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न हो कर अंधकार का विनाश किया था. वही उषा इन दिखाई देने वाली अन्य उषाओं में अनुगत हो कर उदित होती है. इस उषा में असीमित महिमा है. इस में सूर्य, अग्नि और सोम का निवास है. सूर्य की पत्नी, यह उषा प्राणियों को प्रकाश देती हुई सब से उत्तम रहे. (४)

वानस्पत्या ग्रावाणो घोषमक्रत हविष्कृण्वन्तु परिवत्सरीणम्.
एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा वयं स्याम पतयो रयीणाम् (५)

हे एकाष्टक वृक्षों से बने ऊखल! मूसल आदि ने तथा पत्थरों ने संवत्सर में तैयार होने वाले जौ, धान आदि कूटतेपीटते हुए शब्द किया है. तुम्हारी कृपा से हम उत्तम पुत्र, पौत्रों, शक्तिशाली सेवकों तथा धनों के स्वामी बनें. (५)

इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय.
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिरस्तु (६)

हे जातवेद अग्नि! तुम हव्य ग्रहण करो. तुम्हारी कृपा से दूध, घी देने वाली गाएं, तेज दौड़ने वाले घोड़े तथा गांव में होने वाले बकरी, भेड़, गधा, ऊंट आदि नाना आकार वाले सात प्रकार के पशु मुझ से प्रेम रखें. (६)

आ मा पुष्टे च पोषे च रात्रि देवानां सुमतौ स्याम. पूर्णा दर्वे परा पत
सुपूर्णा पुनरा पत. सर्वान् यज्ञान्त्संभुञ्जतीषमूर्जं न आ भर (७)

हे रात्रि! मुझे समृद्ध धन और पुत्र, पौत्र आदि का स्वामी बनाओ. तुम्हारी कृपा से मैं देवों का भी कृपापात्र बनूं. हे दर्वी अर्थात हवन के साधन पात्र! तू हवि से पूर्ण हो कर देवों के पास जा और वहां से हमारे मन चाहे फल ले कर हमारे समीप आ. तू हवि से सभी यज्ञों का पालन करता हुआ देवों के पास से अन्न और बल ला कर हमें प्रदान कर. (७)

आयमगन्त्संवत्सरः पतिरेकाष्टके तव.
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज (८)

हे एकाष्टका! यह संवत्सर आ गया है. यह तेरा पति है. तू अपने पति संवत्सर के सहित हमारी संतान को अधिक आयु वाली करती हुई हमें धन संपन्न बना. (८)

ऋतून् यज ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान्.
समाः संवत्सरान् मासान् भूतस्य पतये यजे (९)

हे एकाष्टका! मैं बसंत आदि ऋतुओं को और उन के अधिष्ठाता देवों को हृदय के द्वारा प्रसन्न करता हूं. मैं ऋतु संबंधी, दिनरात संबंधी और बारह मासों से संबंधित यज्ञ करता हूं. मैं चराचर प्राणियों के स्वामी काल के निमित्त भी तेरे द्वारा यज्ञ करता हूं. (९)

ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो माद्भ्यः संवत्सरेभ्यः.
धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे (१०)

हे एकाष्टका! मैं बसंत आदि ऋतुओं, ऋतु संबंधी दिनरात, बारह मासों, संवत्सर के धाता विधाता देवों और सभी चराचर प्राणियों के स्वामी काल के निमित्त तेरा यज्ञ करता हूं. (१०)

इडया जुह्वतो वयं देवान् घृतवता यजे.
गृहानलुभ्यतो वयं सं विशेमोप गोमतः (११)

हम गाय के घी से युक्त हवि के द्वारा यज्ञ करते हुए देवों को प्रसन्न करते हैं. उन देवों की कृपा से हम सभी अभिलषित वस्तुओं एवं अनेक गायों से युक्त घरों को प्राप्त कर के उन में सुख से निवास करें. (११)

एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम्.
तेन देवा व्यसहन्त शत्रून् हन्ता दस्यूनामभवच्छचीपतिः (१२)

सब की स्वामिनी एकाष्टका ने तपस्या के द्वारा महिमा युक्त इंद्र को जन्म दिया. इंद्र की सहायता से देवों ने शत्रुओं को पराजित किया. शची देवी के पति वह इंद्र, दस्यु जनों के विनाशक हुए. (१२)

इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितासि प्रजापतेः.
कामानस्माकं पूरय प्रति गृहणाहि नो हविः (१३)

हे इंद्र और सोम की माता एकाष्टका! तू प्रजापति की पुत्री है. तू हमारे द्वारा दी हुई हवि को स्वीकार करती हुई हमें संतान तथा पशुओं से संपन्न बना. (१३)

सूक्त ग्यारहवां देवता—इंद्र, अग्नि आदि

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्.
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् (१)

हे व्याधि ग्रस्त मनुष्य! मैं हवि के अन्न द्वारा तुझे उस यक्ष्मा रोग से मुक्त करता हूं जो मेरे जाने बिना ही तेरे शरीर में प्रवेश कर गया है. राजा सोम को जिस राजयक्ष्मा ने गृहीत किया था, दीर्घ जीवन के लिए उस से भी मैं तुझे मुक्त करता हूं. हे इंद्र और अग्नि! जिस पिशाचिनी ने इस बालक को पकड़ लिया है, आप दोनों उस से इस बालक को छुड़ाइए. (१)

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव.
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय (२)

यह व्याधिग्रस्त मनुष्य चाहे क्षीण आयु वाला हो गया हो अथवा इस लोक को छोड़ कर मृत्यु के देव यमराज के समीप चला गया हो अर्थात चाहे उस की चिकित्सा असंभव हो-इस प्रकार के पुरुष को भी मैं मृत्यु के पास से वापस ला कर सौ वर्ष जीवित रहने के लिए शक्तिशाली बनाता हूं. (२)

सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम्.
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् (३)

जो हवि देखने की शक्ति प्रदान करती है तथा जिस से सुनने आदि की सैकड़ों शक्तियां प्राप्त होती हैं, उस हवि की शक्ति से मैं इस रोगी को मृत्यु से लौटा लाया हूं. उस हवि में सौ वर्ष जीने का फल प्रदान करने की शक्ति है. मैं हवि के द्वारा इंद्र को इस कारण प्रसन्न करता हूं कि वे इस पुरुष को सैकड़ों वर्ष तक की आयु का विनाश करने वाले पापों से छुटकारा दिलाएं. इस प्रकार यह सौ वर्ष तक जीवित रह सके. (३)

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्.
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् (४)

हे रोग से मुक्त पुरुष! तुम प्रतिदिन वृद्धि प्राप्त करते हुए सौ शरद ऋतुओं, सौ हेमंत ऋतुओं और सौ वसंत ऋतुओं तक जीवित रहो. इंद्र, अग्नि, सविता और बृहस्पति तुम्हें सौ वर्ष की आयु प्रदान करें. सैकड़ों वर्ष की आयु प्रदान करने वाले हवि के द्वारा मैं इसे मृत्यु के पास से लौटा लाया हूं. (४)

प्र विशतं प्राणापानावनड्वाहाविव व्रजम्.
व्य१न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितराञ्छतम् (५)

हे प्राण और अपान वायु! जिस प्रकार वृषभ अपनी पशुशाला में प्रवेश करता है, उसी प्रकार तुम इस क्षय रोग से ग्रस्त रोगी के शरीर में प्रवेश करो. इस राजयक्ष्मा के अतिरिक्त, जो मृत्यु के हेतु सैकड़ों रोग कहे गए हैं, वे भी इस रोगी से विमुख हो जाएं. (५)

इहैव स्तं प्राणापानौ माप गातमितो युवम्.
शरीरमस्याङ्गानि जरसे वहतं पुनः (६)

हे प्राण और अपान वायु! तुम इस के शरीर में ही रहो, इस के शरीर से अकाल में ही मत निकलो. इस रोगी व्यक्ति के शरीर के हस्त, चरण आदि अंगों को तुम वृद्धावस्था तक मत त्यागो. (६)

जरायै त्वा परि ददामि जरायै नि धुवामि त्वा.
जरा त्वा भद्रा नेष्ट व्य१न्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितराञ्छतम् (७)

हे रोग मुक्त पुरुष! मैं तुझे वृद्धावस्था को देता हूं अर्थात तुझे वृद्धावस्था तक जीवित रहने वाला बनाता हूं. मैं वृद्धावस्था तक रोगों से तेरी रक्षा करता हूं. वह वृद्धावस्था तुझे कल्याण प्राप्त कराए. (७)

अभि त्वा जरिमाहित गामुक्षणमिव रज्ज्वा. यस्त्वा मृत्युरभ्यधत्त
जायमानं सुपाशया. तं ते सत्यस्य हस्ताभ्यामुदमुञ्चद् बृहस्पतिः (८)

हे रोग मुक्त पुरुष! जिस प्रकार गर्भाधान में समर्थ बैल को रस्सी से बांधा जाता है, उसी प्रकार मैं तुझे वृद्धावस्था से बांधता हूं. अर्थात तुझे वृद्धावस्था तक जीवित रहने वाला बनाता हूं. तुझे जन्म लेते ही अकाल में मृत्यु ने अपने फंदे में कस लिया है. उस फंदे को बृहस्पति ब्रह्मा के हाथों के द्वारा कटवा दें. (८)

सूक्त बारहवां — देवता—शाला, वास्तोष्पति

इहैव ध्रुवां नि मिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठाति घृतमुक्षमाणा.
तां त्वा शाले सर्ववीराः सुवीरा अरिष्टवीरा उप सं चरेम (१)

मैं इसी प्रदेश में खंबों आदि के कारण स्थिर रहने वाली शाला बनाता हूं. वह शाला मुझे अभिमत फल देती हुई कुशलता पूर्वक स्थिर रहे. हे शाला! मैं अनेक पुत्रपौत्रों, शोभन गुणों वाली संतान एवं रोग आदि बाधाओं से हीन परिवार वाला हो कर तुझ में निवास करूं. (१)

इहैव ध्रुवा प्रति तिष्ठ शालेऽश्वावती गोमती सूनृतावती.
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्वत्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय (२)

हे शाला! तू बहुत से घोड़ों, गायों, प्रिय बालकों की मधुर वाणी, पर्याप्त अन्न, घृत एवं दूध से पूर्ण हो कर इसी प्रदेश में स्थिर हो और हमारे महान कल्याण के लिए प्रयत्नशील बन. (२)

धरुण्यसि शाले बृहच्छन्दाः पूतिधान्या.
आ त्वा वत्सो गमेदा कुमार आ धेनवः सायमास्यन्दमानाः(३)

हे शाला! तू बहुत से भोगों को धारण करने वाली है. अनेक वेद मंत्रों से और पके होने के कारण सुगंधित बने विविध प्रकार के अन्नों से युक्त तुझ में बछड़े और बालक आएं तथा गाएं संध्या काल में थनों से दूध टपकाती हुई आएं. (३)

इमां शालां सविता वायुरिन्द्रो बृहस्पतिर्नि मिनोतु प्रजानन्.
उक्षन्तूदना मरुतो घृतेन भगो नो राजा नि कृषिं तनोतु (४)

इंद्र और बृहस्पति खंभों को स्थापित कर के इस शाला का निर्माण करें. मरुत इस शाला को जल से सींचें तथा भग देव इस के आसपास की भूमि को कृषि के योग्य बनाएं. (४)

मानस्य पत्नि शरणा स्योना देवी देवेभिर्निमितास्यग्रे.
तृणं वसाना सुमना असस्त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः (५)

हे शाला! तू धान्य आदि का पोषण करने वाली, सुखकरी, रक्षिका एवं तेजस्विनी है. देवों ने सृष्टि के आरंभ में तेरा निर्माण किया था. तिनकों से ढकी हुई तू उत्तम आशाओं वाली हो कर हमें पुत्र, पौत्र आदि से युक्त धन प्रदान कर. (५)

ऋतेन स्थूणामधि रोह वंशोग्रो विराजन्नप वृङ्क्ष्व शत्रून्.
मा ते रिषन्नुपसत्तारो गृहाणां शाले शतं जीवेम शरदः सर्ववीराः (६)

हे बांस! तू बाधाहीन रूप से इस शाला के खंभे के रूप में खड़ा रह तथा शक्तिशाली बन कर विराजता हुआ हमारे शत्रुओं को यहां से दूर भगा. हे शाला! तेरे आवासों में निवास करने वालों की हिंसा न हो. हम अभिलाषित पुत्रों और पौत्रों से युक्त हो कर सौ वर्ष तक जीवित रहें. (६)

एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह.

इमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः (७)

युवक पुत्र और गायों के सहित बछड़े इस शाला में आएं. टपकने वाले शहद तथा दही के कलश भी इस शाला में आएं. (७)

पूर्णं नारि प्र भर कुम्भमेतं घृतस्य धारामममृतेन संभृताम्.
इमां पातॄनमृतेना समङ्ग्धीष्टापूर्तमभि रक्षात्येनाम् (८)

हे स्त्री! तू अमृत के समान जल से युक्त शहद, घी आदि की धारा बहाती हुई जल से भरे घड़े को ले कर इस शाला में आ तथा इस घट को अमृत के समान जल से पूर्ण कर. इस शाला में किए जाने वाले श्रौत और स्मार्त कर्म चोरों, अग्नि आदि से हमारी रक्षा करें. (८)

इमा आपः प्र भराम्ययक्ष्मा यक्ष्मनाशनीः.
गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन सहाग्निना (९)

मैं यक्ष्मा रोग से रहित और अपने सेवकों के यक्ष्मा रोग का विनाश करने वाले जलों से पूर्ण कलश को शाला में लाता हूं. इस के साथ ही मैं कभी न बुझने वाली अग्नि को भी लाता हूं. (९)

सूक्त तेरहवां देवता—सिंधु, जल, वरुण

यददः संप्रयतीरहावनदता हते.
तस्मादा नद्यो३ नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः (१)

हे जल! मेघों के द्वारा ताड़ित हो कर इधरउधर गमन करने और नाद करने के कारण तुम्हारा नाम नदी हुआ है. हे बहने वाले जल! तुम्हारे उदक आदि अन्य नाम भी इसी प्रकार सार्थक हैं. (१)

यत् प्रेषिता वरुणेनाच्छीभं समवल्गत.
तदाप्नोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनुष्ठन (२)

राजा वरुण के द्वारा प्रेरित होने के तुरंत बाद तुम एकत्र हो कर नृत्य करने लगे थे. उस समय तुम्हें इंद्र प्राप्त हुए थे. इस कारण तुम्हारा नाम आप हुआ. (२)

अपकामं स्यन्दमाना अवीवरत वो हि कम्.
इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् वार्नाम वो हितम् (३)

बिना किसी कामना के बहने वाले तुम्हारा वरण इंद्र ने अपनी शक्ति से किया था. हे क्रीड़ा करने वाले जल! इस कारण तुम्हारा नाम वारि पड़ा. (३)

एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् स्यन्दमाना यथावशम्.
उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते (४)

अकेले इंद्र ने इच्छानुसार इधरउधर बहने वाले तुम्हें प्रतिष्ठित किया था. इंद्र से सम्मानित हो कर तुम ने अपने को महान समझ लिया. इस कारण तुम्हें उदक कहा जाता है. (४)

आपो भद्रा घृतमिदाप आसन्नग्नीषोमौ बिभ्रत्याप इत् ताः.
तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् (५)

कल्याण करने वाला जल ही घृत हुआ. अग्नि में हवन किया हुआ घृत ही जल बन जाता है. जल ही अग्नि और सोम को धारण करता है. इस प्रकार के जल का मधुर रस कभी क्षीण न होने वाले बल के साथ मुझे प्राप्त हो. (५)

आदित् पश्याम्युत वा शृणोम्या मा घोषो गच्छति वाङ् मासाम्.
मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः (६)

इस के पश्चात मैं देखता हूं और सुनता हूं कि बोले जाते हुए शब्द मेरी वाणी को प्राप्त हो रहे हैं. मैं कल्पना करता हूं कि उन जलों के आने से ही मुझे अमृत प्राप्त हुआ है. हे सुनहरे रंग वाले जलो! तुम्हारे सेवन से मैं तृप्त हो गया हूं. (६)

इदं व आपो हृदयमयं वत्स ऋतावरीः.
इहेत्थमेत शक्वरीर्यत्रेदं वेशयामि वः (७)

हे जलो! यह सोना तुम्हारा हृदय है और यह मेढक तुम्हारा बछड़ा है. हे अभिमत फल देने में समर्थ जलो! इस खोदे गए स्थान में मेढक के ऊपर फेंकी हुई अबका घास उग आती है, उसी प्रकार तुम इस में स्थिर प्रवाह वाले बनो. मैं इस खोदे गए स्थान में तुम्हें प्रविष्ट कराता हूं. (७)

सूक्त चौदहवां — देवता—गोष्ठ, अर्यमा आदि

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या.
अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि (१)

हे गायो! मैं तुम्हें सुखपूर्ण गोशाला से युक्त करता हूं तथा तुम्हें आहार रूपी धन प्रदान करता हूं. मैं तुम्हें पुत्र, पौत्र आदि संतान से युक्त करता हूं. (१)

सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः.
समिन्द्रो यो धनञ्जयो मयि पुष्यत यद् वसु (२)

हे गायो! अर्यमा, उषा एवं धन जीतने वाले इंद्र तुम्हें उत्पन्न करें. इस के पश्चात तुम अपने दूध, घी आदि धन से मुझे पुष्ट करो. (२)

संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः.

बिभ्रतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन (३)

हे गायो! मेरी इस गोशाला में तुम पुत्र, पौत्र आदि संतान से युक्त तथा चोर, बाघ आदि के भय से रहित हो कर निवास करो. गोबर देने वाली तथा रोग रहित और अमृत के समान दूध धारण करने वाली तुम मुझे प्राप्त होओ. (३)

इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत.
इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः (४)

हे गायो! तुम मेरी गोशाला में आओ. मक्खी जिस प्रकार संतान वृद्धि करती हुई, क्षण भर में अगणित हो जाती है, उसी प्रकार तुम भी अधिक संतान वाली बनो. तुम इसी गोशाला में पुत्रपौत्रों को जन्म दो और मुझ साधक के प्रति प्रेम रखो. (४)

शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत.
इहैवोत प्र जायध्वं मया वः सं सृजामसि (५)

हे गायो! तुम्हारे रहने का स्थान सुखमय हो. तुम क्षण में हजारों के रूप में बढ़ने वाले शारिशाक जीव के समान मेरी पशुशाला में ही समृद्ध बनो. तुम यहीं संतान उत्पन्न करो. मैं तुम्हें अपने से युक्त करता हूं. (५)

मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इहं पोषयिष्णुः.
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम (६)

हे गायो! तुम मुझ गोस्वामी की गोशाला में आओ. यह गोशाला तुम्हारा पोषण करने वाली है. चारे रूपी धन के कारण अनगिनत होती हुई तुम चिरकाल तक मुझ चिरजीवी के साथ रहो. (६)

सूक्त पंद्रहवां — देवता—इंद्र, अग्नि

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु.
नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् (१)

यज्ञ करने वाला मैं इंद्र को वाणिज्य करने वाला समझ कर स्तुति करता हूं. वे इंद्र यहां आएं और मेरे सम्मुख हों. इंद्र मेरे वाणिज्य में बाधा पहुंचाने वाले शत्रुओं तथा मार्ग रोकने वाले चोरों और बाघों की हिंसा करते हुए अग्रसर हों तथा मुझ व्यापारी को धन देने वाले बनें. (१)

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति.
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि (२)

व्यापार के जो बहुत से मार्ग हैं और धरती तथा आकाश के मध्य में लोग जिन मार्गों पर गमन करते हैं, वे मार्ग घी, दूध से हमारी सेवा करें, जिस से हम व्यापार कर के लाभ सहित मूल धन ले कर अपने घर आ सकें. (२)

इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय.
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् (३)

हे अग्नि! व्यापार से लाभ की कामना करता हुआ मैं शीघ्र गमन की शक्ति पाने के निमित्त घी के साथ हव्य की आहुति देता हूं. मैं मंत्रों से तुम्हारी स्तुति करता हुआ अपनी व्यवहार कुशल बुद्धि को असंख्य धनों वाला होने के लिए होम में लगाता हूं. (३)

इमामग्ने शरणिं मीमृषो नो यमध्वानमगाम दूरम्.
शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपण: फलिनं मा कृणोतु.
इदं हव्यं संविदानौ जुषेथां शनुं नो अस्तु चरितमुत्थितं च (४)

हे अग्नि! हम से दूर तक चलने से जो हिंसा हुई है और हमारे व्रत का लोप हुआ है, उसे क्षमा करो. व्यापार की वस्तुओं का क्रय और विक्रय दोनों ही मुझे लाभकारी हों. हे इंद्र और अग्नि! तुम एकमत हो कर इस हव्य को स्वीकार करो. तुम दोनों की कृपा से मेरा क्रयविक्रय और उस से लाभ के रूप में प्राप्त धन मेरे लिए सुखकारी हो. (४)

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमान:.
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्ने सातघ्नो देवान् हविषा नि षेध (५)

हे देवो! जिस मूल धन से लाभ रूपी धन की इच्छा करता हुआ मैं व्यापार करता हूं, वह मेरे लिए सुखकारी हो. हे अग्नि! इस हवन किए जाते हुए हव्य से लाभ में बाधा डालने वाले देवों को संतुष्ट कर के रोको. हे देवो, तुम्हारे प्रभाव से मेरा धन बढ़े, कम न हो. (५)

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमान:.
तस्मिन् म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापति: सविता सोमो अग्नि: (६)

जिस मूल धन से मैं लाभ रूपी धन की इच्छा करता हुआ व्यापार करता हूं, इंद्र, सविता, सोम, प्रजापति और अग्निदेव मेरा मन उस धन की ओर प्रेरित करें. (६)

उप त्वा नमसा वयं होतर्वैश्वानर स्तुम:.
स न: प्रजास्वात्मसु गोषु प्राणेषु जागृहि (७)

हे देवों का आह्वान करने वाले अग्नि देव! हम हव्य ले कर तुम्हारी स्तुति करते हैं. तुम हमारे पुत्रों, पौत्रों, गायों और प्राणों की रक्षा के लिए सावधान रहो. (७)

विश्वाहा ते सदमिद्भरेमाश्वायेव तिष्ठते जातवेद:.
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम (८)

हे जातवेद अग्नि! हमारे घर में नित्य निवास करने वाले तुम्हें हम प्रतिदिन

उसी प्रकार हवि देते हैं, जिस प्रकार हम अपने घर में रहने वाले घोड़े को समयसमय पर घास आदि खिलाते हैं. हे अग्नि! तुम्हारे सेवक हम धन और अन्न की समृद्धि से प्रसन्न होते हुए कभी नष्ट न हों. (८)

सूक्त सोलहवां — देवता—इंद्र, अग्नि

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना.
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हवामहे (१)

हम शक्ति और बुद्धि प्राप्त करने के निमित्त प्रातःकाल अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण, भग, उषा, बृहस्पति, सोम और रुद्र का आह्वान करते हैं. (१)

प्रातर्जितं भगमुग्रं हवामहे वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता.
आध्रश्चिद् यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद् यं भगं भक्षीत्याह (२)

जो आदित्य वर्षा आदि के द्वारा सब के धारण कर्ता और पोषण करने वाले हैं. दरिद्र भी जिन्हें अपने अभिमत फल का साधन जानता हुआ पूजा करता है तथा राजा भी जिन्हें पूजने का इच्छुक रहता है, हम प्रातःकाल उन अदिति पुत्र एवं अपराजित शक्ति वाले सूर्य का आह्वान करते हैं. (२)

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः.
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम (३)

हे सूर्य! तुम सारे जगत के नेता हो. तुम्हारा धन कभी नष्ट नहीं होता. हमारी स्तुति को तुम सफल करो. हे भग! हमें गायों और घोड़ों से संपन्न करो. हम पुत्र, पौत्र, सेवक आदि मनुष्यों वाले बनें. (३)

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्.
उतोदितौ मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम (४)

इस कर्म का अनुष्ठान करने के समय हम भग देव की कृपा दृष्टि पा कर धन और सौभाग्य वाले रहें. हे इंद्र! हम प्रातःकाल, मध्याह्न, संध्या के समय सूर्य, अग्नि आदि देवों की कृपा दृष्टि प्राप्त करते रहें. (४)

भग एव भगवां अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम.
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीमि स नो भग पुरएता भवेह (५)

भग देव ही धनवान हैं. उन की कृपा से हम धन के स्वामी हैं. हे भग! इस प्रकार के तुम्हें सभी लोग बुलाते हैं. इस व्यापार में तुम हमारे आगे चलने वाले बनो. (५)

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय.
अर्वाचीनं वसुविदं भगं मे रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु (६)

जिस प्रकार सवार के पीठ पर बैठ जाने के बाद घोड़ा चलने के लिए तैयार हो जाता है, उसी प्रकार उषा देवी धन देने वाले भग देव को मेरे यज्ञ में लाने के लिए प्रस्तुत हों. तेजी से दौड़ने वाले घोड़े जिस प्रकार रथ को ले जाते हैं, उसी प्रकार उषा देवी भग देव को मेरे पास ले आएं. (६)

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवती: सदमुच्छन्तु भद्रा:.
घृतं दुहाना विश्वत: प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभि: सदा न: (७)

हे उषा देवी! बहुत से अश्वों, गायों, पुत्रपौत्र आदि से युक्त एवं कल्याण कारिणी बन कर सदा हमारे लिए उदित हों. हे उषा देवी! तुम जल प्रदान करती हुई तथा समस्त गुणों से युक्त हो कर अपने अविनाशी धनों से हमारी सदा रक्षा करो. (७)

सूक्त सत्रहवां — देवता—सीता

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक्.
धीरा देवेषु सुम्नयौ (१)

बुद्धिमान लोग बैलों को हल में जोतते हैं. देवों को सुखकर अन्न प्राप्ति की इच्छा से वे बैलों के कंधों पर जुआ रखते हैं. (१)

युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्.
विराज: श्नुष्टि: सभरा असन्नो नेदीय इत् सृण्य: पक्वमा यवन् (२)

हे किसानो! हलों को जुओं से युक्त करो और जुओं को बैलों के कंधों पर स्थापित करो. अंकुर उगने योग्य इस जुते हुए खेत में गेहूं, जौ आदि बीजों को बोओ. हमारे अन्न के पौधे दानों के भार वाले हों. शीघ्र ही वे पौधे पक कर दरांती का स्पर्श पाने योग्य हो जाएं. (२)

लाङ्गलं पवीरवत् सुशीमं सोमसत्सरु.
उदिद् वपतु गामविं प्रस्थावद् रथवाहनं पीबरीं च प्रफर्व्यम् (३)

लोहे केफाल वाला हल कृषि योग्य खेत को सुख देता है. गेहूं, जौ आदि धान्य की उत्पत्ति का कारण होने से यह हल सोमयाग का कर्ता है. हल का भाग फाल भूमि के भीतर रह कर गति करता है. यह हल गाय आदि पशुओं की समृद्धि का कारण बने. (३)

इन्द्र: सीतां नि गृह्णातु तां पूषाभि रक्षतु.
सा न: पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् (४)

इंद्र हल द्वारा खेत में बनाई गई रेखा अर्थात कूंड़ को ग्रहण करें तथा पूषा देव उस की रक्षा करें. हल से जुती हुई भूमि हमें अभिमत फल देने वाली बन कर सभी

वर्षों में जौ, गेहूं आदि अन्न दे. (४)

शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमि शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान्.
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै (५)

सुंदर फाल अर्थात हल के लोहे वाले भाग हमें सुख देते हुए भूमि को जोतें. किसान हमें सुख देते हुए बैलों के पीछे चलें. हे सूर्य और वायु! तुम हमारे द्वारा दिए गए हवि से संतुष्ट होते हुए इस यजमान के लिए जौ, गेहूं आदि के पौधों को शोभन बालियों से युक्त करो. (५)

शुनं वाहाः शुनं नरः कृषतु लाङ्गलम्.
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय (६)

बैल और किसान सुख पूर्वक हल जोतें. हल सुखपूर्वक धरती को फाड़े. रस्सियां सुख पूर्वक बांधी जाएं. हे शुनः अर्थात वायुदेव! तुम बैलों के हांकने के लिए प्रयुक्त होने वाले चाबुक को सुख पूर्वक प्रेरणा दो. (६)

शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम्. यद् दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुप सिञ्चतम् (७)

हे सूर्य और वायुदेव! तुम इस खेत में मेरा हवि ग्रहण करो. सूर्य और वायु दोनों ने आकाश में बादलों के रूप में जो जल पहुंचाया है, उस से वर्षा के रूप में इस जुती हुई भूमि को सींचो. (७)

सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव.
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः (८)

हे जुती हुई भूमि! हम तुझे नमस्कार करते हैं. हे सुंदर भाग्य वाली भूमि! तू हमारे अनुकूल बन. तू जिस प्रकार से हमारे अनुकूल मन वाली हो, उसी प्रकार हमें शोभन फल देने वाली हो जा. (८)

घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः.
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत् पिन्वमाना (९)

हे जुती हुई भूमि! तू मधुर स्वाद वाले जल से भली प्रकार सिंची हुई हो कर तथा विश्वेदेव और मरुतों द्वारा अनुमति पाकर जल सहित हमारे सामने आ. तू शक्ति संपन्न हो कर घी से मिले हुए अन्न को सींचने वाली है. (९)

सूक्त अठारहवां देवता—वनस्पति

इमां खनाम्योषधिं वीरुधां बलवत्तमाम्.
यया सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम् (१)

पाठा नाम की इस लता रूपी जड़ीबूटी को मैं खोदता हूं जो सभी जड़ीबूटियों से अधिक बलवान है. इस जड़ीबूटी के द्वारा सौत को बाधा पहुंचती है तथा इसे

धारण करने वाली स्त्री पति को प्राप्त करती है. (१)

उत्तानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वाति.
सपत्नीं मे परा णुद पतिं मे केवलं कृधि (२)

हे ऊपर की ओर मुख वाले पत्तों से युक्त जड़ीबूटी पाठा! तू इंद्र आदि देवों की कृपा से मुझे प्राप्त हुई है. तू मेरी सौत को पराजित करने वाली है. तू मेरी सौत को मेरे पति से दूर ले जा और मेरे पति को केवल मेरा बना. (२)

नहि ते नाम जग्राह नो अस्मिन् रमसे पतौ.
परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि (३)

हे सौत! मैं तेरा नाम कभी नहीं लेना चाहती. मेरे पति के साथ तू रमण मत कर. मैं तुझे बहुत दूर भेज रही हूं. (३)

उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः. अधः सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः (४)

हे सभी जड़ी बूटियों में श्रेष्ठ पाठा! मैं अधिक श्रेष्ठ बनूं. लोक में जो अधिक श्रेष्ठ स्त्रियां हैं, मैं उन से भी अधिक श्रेष्ठ बनूं. मेरी जो सौत है, वह अति नीच नारियों से भी नीच बने. (४)

अहमस्मि सहमानाथो त्वमसि सासहिः.
उभे सहस्वती भूत्वा सपत्नीं मे सहावहै (५)

हे पाठा नामक जड़ी बूटी! मैं तेरी कृपा से अपनी सौतों को पराजित करने वाली बनूं और तू भी शत्रुओं का तिरस्कार करने में समर्थ हो. इस प्रकार हम दोनों शत्रुओं को पराजित करने वाली बनें. मैं अपनी सौत को पराजित करूं. (५)

अभि तेऽधां सहमानामुप तेऽधां सहीयसीम्.
मामुन प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु (६)

हे सौत! मैं तेरे पलंग के चारों ओर तथा पलंग के ऊपर इस पराजित करने वाली पाठा नाम की जड़ी बूटी को रखती हूं. थनों से दूध टपकाती हुई गाय जिस प्रकार बछड़े की ओर दौड़ती है तथा जल जिस प्रकार नीचे की ओर बहता है, उसी प्रकार तू मेरे पीछेपीछे चल. (६)

सूक्त उन्नीसवां

देवता—इंद्र

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं१ बलम्.
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः (१)

मेरा ब्राह्मणत्व जाति से पतित करने वाले दोष का विनाश करने में प्रबल हो. मंत्र के प्रभाव से उत्पन्न मेरी शक्ति और मेरा शारीरिक बल अमोघ अर्थात कभी

असफल न होने वाला बने. मैं जिस का पुरोहित हूं, वह क्षत्रिय जाति जय प्राप्त करने वाली तथा वृद्धावस्था से रहित बने. (१)

समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं१ बलम्.
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् (२)

मैं जिस राजा के राज्य में निवास करता हूं, उस राज्य को मैं समृद्ध बनाता हूं. मैं अपने मंत्रों के प्रभाव से अपने राजा को शारीरिक शक्ति तथा हाथी, घोड़ा आदि से युक्त बनाता हूं. अग्नि में हवन किए जाते हुए इस हवि के द्वारा मैं अपने राजा के शत्रुओं की भुजाओं को छिन्नभिन्न करता हूं. (२)

नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरिं मघवानं पृतन्यान्.
क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम् (३)

हमारे राजा कार्य और अकार्य को जानने वाले तथा अधिक धन वाले हैं. जो शत्रु हमारे ऐसे राजा को पराजित करने की इच्छा से सेना एकत्र करते हैं, हमारे राजा के वे शत्रु नीचे की ओर मुंह कर के गिरें और पैरों से कुचले जाएं. इस प्रयोजन की सिद्धि के निमित्त मैं असफल न होने वाले मंत्रों के द्वारा अपने राजा के शत्रुओं को क्षीण करता हूं और अपने राजा को विजय दिलाता हूं. (३)

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत.
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः (४)

मैं जिन राजाओं का पुरोहित हूं, वे तेज धार वाले फरसे से भी अधिक शत्रु के छेदन में समर्थ हों तथा अग्नि से अधिक शत्रु सेना को भस्म करने वाले बनें वे राजा इंद्र के वज्र से भी अधिक तीक्ष्ण बनें अर्थात उन की गति कहीं रुके नहीं. (४)

एषामहमायुधा सं स्याम्येषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि.
एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्ण्वे३षां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः (५)

मैं अपने राजाओं के आयुधों को तेज धार वाला बनाता हूं तथा इन के राज्य को शोभन वीरों से युक्त करता हूं. इन का शारीरिक बल, बुढ़ापे से रहित तथा शत्रुओं को जीतने वाला हो. इन के युद्धोन्मुख मन की सभी देव रक्षा करें. (५)

उद्धर्षन्तां मघवन् वाजिनान्युद् वीराणां जयतामेतु घोषः. पृथग् घोषा उलुलयः
घोषा केतुमन्त उदीरताम्. देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया (६)

हे इंद्र! तुम्हारी कृपा से हमारी हाथियों, घोड़ों और रथों वाली सेना युद्ध में हर्षित रहे. विजय प्राप्त करने वाले हमारे वीरों का जयघोष शत्रुओं के कानों को बहरा बनाता हुआ उठे. सब से पृथक एवं सभी के द्वारा जाने गए जयघोष फैलें. इंद्र जिन में सब से बड़े हैं, ऐसे मरुत युद्ध में हमारी सहायता करने के लिए अपनी सेना ले कर आएं. (६)

प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः.
तीक्ष्णेषवोऽबलधन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रबाहवः (७)

हे सैनिको! युद्ध भूमि की ओर बढ़ो तथा देवों की कृपा से शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो. तेज धार वाले आयुधों को धारण करने वाली तुम्हारी भुजाएं शक्तिशालिनी बनें और शक्ति रहित आयुधों को धारण करने वाले तथा बलहीन शत्रुओं का विनाश करें. (७)

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते.
जयामित्रान् प्र पद्यस्व जह्येषां वरंवरं मामीषां मोचि कश्चन (८)

हे बाण! तू मंत्रों के द्वारा तीक्ष्ण बनाया गया है तथा शत्रुओं के विनाश में कुशल है. तू हमारे धनुष से छूट कर शत्रु सेना की ओर जा कर गिर और उन के शरीर में प्रवेश कर के उन की उत्तम सेना का विनाश कर. शत्रु सैनिकों में से कोई भी बचने न पाए. (८)

सूक्त बीसवां

देवता—अग्नि

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः.
तं जानन्नग्न आ रोहाधा नो वर्धया रयिम् (१)

हे अग्निदेव! यह अरणि अथवा यजमान तेरी उत्पत्ति का कारण बने. जिस से उत्पन्न हो कर तुम दीप्त होते हो, अपने उस उत्पत्ति कारण को जानते हुए उस में प्रवेश करो. इस के पश्चात तुम हमारे धन की वृद्धि करो. (१)

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव.
प्र णो यच्छ विशां पते धनदा असि नस्त्वम् (२)

हे अग्निदेव! हमारे सामने हो कर हमें प्राप्त होने वाले फल को प्रिय कहो तथा हमारे सामने आ कर प्रसन्न मन वाले बनो. हे वैश्वानर रूप से प्रजापालक अग्नि! हमें अपेक्षित धन प्रदान करो, क्योंकि तुम ही हमारे धन दाता हो. (२)

प्र णो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः.
प्र देवीः प्रोत सूनृता रयिं देवी दधातु मे (३)

अर्यमा, भग और बृहस्पतिदेव, हमें धन प्रदान करें. इंद्राणी आदि देवियां तथा प्रिय वाणी वाली सरस्वती देवी हमें धन प्रदान करें. (३)

सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे.
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् (४)

हम तेजस्वी सोम और अग्नि को स्तुति रूपी वचनों के द्वारा यहां बुलाते हैं. वे हमारा मनचाहा फल दे कर हमारी रक्षा करें. हम अदिति के पुत्र, मित्र और वरुण

को, सब के प्रेरक सूर्य को तथा इन सभी देवों को बनाने वाले ब्रह्मा को तथा देवों के हितकारक बृहस्पति को बुलाते हैं. (४)

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय.
त्वं नो देव दातवे रयिं दानाय चोदय (५)

हे अग्नि! तुम अन्य अग्नियों के साथ मिल कर हमारी मंत्रों वाली स्तुति को और स्तुतियों द्वारा साध्य यज्ञ को सफल करो. हे अग्निदेव! हवि देने वाले हमारे यजमान को हमें धन देने के लिए प्रेरित करो. (५)

इन्द्रवायू उभाविह सुहवेह हवामहे.
यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असद् दानकामश्च नो भुवत् (६)

इंद्र और अग्नि सुख पूर्वक बुलाए जा सकते हैं, इसलिए हम इस यज्ञ में उन का आह्वान करते हैं. हम इस कारण उन का आह्वान करते हैं कि हमारे सभी जन उन की संगति से शोभन मन वाले बनें तथा हमें दान देने की इच्छा करें. (६)

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय.
वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् (७)

हे स्तोता! तुम अर्यमा, बृहस्पति, इंद्र, वाणी रूपी सरस्वती एवं वेग वाले सविता देव को हमें धन देने के लिए प्रेरित करो. (७)

वाजस्य नु प्रसवे सं बभूविमेमा च विश्वा भुवनान्यन्तः.
उतादित्सन्तं दापयतु प्रजानन् रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ (८)

हम अन्न उत्पन्न करने वाले कर्म को शीघ्र प्राप्त करें. दिखाई देने वाले सभी प्राणी वाज प्रसव अर्थात वृष्टि द्वारा अन्न पैदा करने वाले देव के मध्य निवास करते हैं. सभी प्राणियों के हृदय के अभिप्राय को जानने वाले वाज-प्रसव देव दान न करने वाले मुझ पुरुष को धन दान करने की प्रेरणा दें तथा हमारे धन को पुत्र, पौत्र आदि से युक्त करें. (८)

दुह्रां मे पञ्च प्रदिशो दुह्रामुर्वीर्यथाबलम्.
प्रापेयं सर्वा आकूतीर्मनसा हृदयेन च (९)

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एवं इन की मध्यवर्ती दिशा—इस प्रकार पांच दिशाएं, पृथ्वी, आकाश, दिन, रात, जल, तथा जड़ीबूटियां मुझे अभिमत फल दें. मैं हृदय और अंतःकरण से उत्पन्न संकल्पों को प्राप्त करूं. (९)

गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि.
आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे (१०)

मैं सभी प्रकार के धन देने वाली वाणी का उच्चारण करता हूं. हे वाणी रूपी देवी!

तुम अपने तेज से मेरा मनचाहा फल देने के लिए आओ. वायु सभी ओर से मेरे प्राणों को आच्छादित करे तथा त्वष्टा देव मेरे शरीर को पुष्ट बनाएं. (१०)

सूक्त इक्कीसवां

देवता—अग्नि

ये अग्नयो अप्स्व१न्तर्ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु.
य आविवेशौषधीर्यो वनस्पतींस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् (१)

मेघों में रहने वाली विद्युत रूपी अग्नि को, जलों में वाडव के रूप में निवास करने वाली अग्नि को, मनुष्यों के शरीर में वैश्वानर के रूप में रहने वाली अग्नि को, सूर्यकांत आदि मणियों में गेहूं, जौ, आदि फसलों में तथा वृक्षों में रहने वाली अग्नि को यह हवि प्राप्त हो. (१)

यः सोमे अन्तर्यो गोष्वन्तर्य आविष्टो वयःसु यो मृगेषु.
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पदस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् (२)

जो अग्नि सोमलता में अमृत रस का परिपाक करने के लिए रहती है, जो अग्नि गाय, भैंस आदि पशुओं में निवास कर के उन के दूध को परिपक्व करती है, जो अग्नि पक्षियों और पशुओं में प्रविष्ट है तथा जो अग्नि मनुष्यों, और चौपायों में व्याप्त है. मेरे द्वारा दिया हुआ हवि उसे प्राप्त हो. (२)

य इन्द्रेण सरथं याति देवो वैश्वानर उत विश्वदाव्यः.
यं जोहवीमि पृतनासु सासहिं तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् (३)

दान आदि गुण वाले जो अग्निदेव इंद्र के साथ एक रथ में बैठ कर गमन करते हैं, जो अग्नि मनुष्यों में वैश्वानर तथा विश्व को जलाने वाले दावाग्नि हैं, जो अग्नि देव युद्धों में शत्रु को पराजित करने वाले हैं, उन सभी अग्नियों को मेरा हवि प्राप्त हो. (३)

यो देवो विश्वाद् यमु काममाहुर्यं दातारं प्रतिगृह्णन्तमाहुः.
यो धीरः शक्रः परिभूरदाभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् (४)

जो अग्निदेव सब का भक्षण करने वाले हैं, जिन्हें कामना करने योग्य तथा मनचाहा फल देने वाला कहा जाता है, जो अग्निदेव, बुद्धिमान, सभी कार्य करने में समर्थ, शत्रुओं को पराजित करने वाले तथा किसी से पराजित न होने वाले हैं, उन्हें मेरी आहुति प्राप्त हो. (४)

यं त्वा होतारं मनसाभि संविदुस्त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः.
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् (५)

जिस से प्राणी सत्ता प्राप्त करते हैं, उस संवत्सर के तेरह महीने, मनु के द्वारा सृष्टि की आदि में कल्पित बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, पांच ऋतुएं तुम्हें देवों का आह्वान करने वाला जानते हैं, उस तेजस्वी, यशस्वी और प्रिय वाणी वाले अग्नि को यह हवि प्राप्त हो. (५)

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे.
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् (६)

वृषभ जिन के हवि रूपी अन्न हैं, बांझ गाएं जिन का हवि हैं, सोम जिन की पीठ पर रहता है तथा जो आहुति के द्वारा सारे जगत के विधाता हैं और वैश्वानर अग्नि जिन में सब से बड़े हैं, उन सभी अग्नियों को मेरा हव्य प्राप्त हो. (६)

दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं ये विद्युतमनुसंचरन्ति.
ये दिक्ष्व१न्तर्ये वाते अन्तस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् (७)

जो अग्निदेव आकाश, पृथ्वी और इन के मध्य भाग में व्याप्त हैं, जो बादलों में स्थित बिजली में संचरण करते हैं, जो अग्नि तीनों लोकों में व्याप्त दिशाओं में वर्तमान हैं तथा सारे जगत के आधार वायु में संचरण करते हैं, उन सभी को मेरी आहुति प्राप्त हो. (७)

हिरण्यपाणिं सवितारमिन्द्रं बृहस्पतिं वरुणं मित्रमग्निम्.
विश्वान् देवानङ्गिरसो हवामह इमं क्रव्यादं शमयन्त्वग्निम् (८)

स्तोताओं को देने के लिए जिन के हाथ में सुवर्ण रहता है, ऐसे सविता, बृहस्पति, वरुण, इंद्र तथा अग्नि का और विश्वेदेवों का मैं अंगिरा ऋषि आह्वान करता हूं. वे इस मांस खाने वाली अग्नि को शांत करें. (८)

शान्तो अग्निः क्रव्याच्छान्तः पुरुषरेषणः.
अथो यो विश्वदाव्य१स्तं क्रव्यादमशीशमम् (९)

मांस भक्षक अग्नि सविता आदि देवों की कृपा से शांत हों. पुरुषों की हिंसा करने वाली अग्नि भी सुखकारी हों. जो सब को जलाने वाली और मांस भक्षक अग्नि है, उस को मैं ने शांत कर दिया है. (९)

ये पर्वताः सोमपृष्ठा आप उत्तानशीवरीः.
वातः पर्जन्य आदग्निस्ते क्रव्यादमशीशमन् (१०)

सोमलता जिन के ऊपर वर्तमान है, ऐसे मुंजवान आदि पर्वत के ऊपर शयन करने वाले जल ने, वायु ने और बादलों ने मांसभक्षक अग्नि को शांत कर दिया है. (१०)

सूक्त बाईसवां — देवता—विश्वेदेव

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो अदित्या यत् तन्वः संबभूव.
तत् सर्वे समदुर्मह्यमेतद् विश्वे देवा अदितिः सजोषाः (१)

हम में हाथी के समान अपराजेय एवं प्रसिद्ध बल हो. देवमाता अदिति के शरीर से जो महान एवं प्रसिद्ध तेज उत्पन्न हुआ है, सभी देव, अदिति के साथ

मिल कर मुझे वह तेज और यश प्रदान करें. (१)

मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च चेततु.
देवासो विश्वधायसस्ते माञ्जन्तु वर्चसा (२)

दिन के स्वामी इंद्र, रात्रि के स्वामी वरुण, स्वर्ग के अधिपति इंद्र और सब का संहार करने वाले रुद्र मुझे अनुग्रह करने योग्य समझें. सारे संसार का पोषण करने वाले मित्र आदि देव मुझे तेजस्वी बनाएं. (२)

येन हस्ती वर्चसा संबभूव येन राजा मनुष्येष्वप्स्व१न्तः.
येन देवा देवतामग्र आयन् तेन मामद्य वर्चसाग्ने वर्चस्विन कृणु (३)

जिस तेज से हाथी विशालकाय बनता है, जिस तेज से राजा मनुष्यों में तेजस्वी होता है, जिस तेज से जल में प्राणी तेजस्वी बनते हैं अथवा जिस तेज से आकाश में गंधर्व आदि तेजस्वी बनते हैं तथा सृष्टि के आदि में जिस तेज के कारण इंद्र आदि ने देवत्व प्राप्त किया, हे अग्नि, उस संपूर्ण तेज से इस समय मुझे तेजस्वी बनाओ. (३)

यत् ते वर्चो जातवेदो बृहद् भवत्याहुतेः. यावत् सूर्यस्य वर्च आसुरस्य च
हस्तिनः. तावन्मे अश्विना वर्च आ धत्तां पुष्करस्रजा (४)

हे जन्म लेने वाले प्राणियों के ज्ञाता तथा आहुतियों द्वारा हवन किए जाते हुए अग्निदेव! तुम में जितना तेज है, सूर्य में जितना तेज है तथा असुरों के हाथों में जितना तेज है, उतना ही तेज कमल की माला से सुशोभित अश्विनीकुमार मुझ में धारण करें. (४)

यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुर्यावत् समश्नुते.
तावत् समैत्विन्द्रियं मयि तद्धस्तिवर्चसम् (५)

चारों दिशाएं जितने स्थान को व्याप्त करती हैं तथा रूप को ग्रहण करने वाले नेत्र जितने नक्षत्रों को देखते हैं, परम ऐश्वर्य वाले इंद्र का असाधारण चिह्न तथा पूर्वोक्त देवों का तेज हमें प्राप्त हो. (५)

हस्ती मृगाणां सुषदामतिष्ठावान् बभूव हि.
तस्य भगेन वर्चसाऽभि षिञ्चामि मामहम् (६)

वन में स्वेच्छा से रहने वाले हरिण आदि पशुओं के मध्य जंगली हाथी अपने बल की अधिकता के कारण राजा होता है. उस हाथी के भाग्य रूपी तेज से मैं अपने आप को सींचता हूं. (६)

सूक्त तेईसवां

देवता—योनि

येन वेहद् बभूविथ नाशयामसि तत् त्वत्.

इदं तदन्यत्र त्वदप दूरे नि दध्मसि (१)

हे स्त्री! जिस पाप से जनित रोग के कारण तू बांझ हुई है, उस पाप को हम तुझ से दूर करते हैं. यह पाप रोग तुझे दुबारा न हो जाए, इसलिए हम इसे दूर देश में पहुंचाते हैं. (१)

आ ते योनिं गर्भ एतु पुमान् बाण इवेषुधिम्.
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः (२)

हे स्त्री! बाण जिस प्रकार स्वाभाविक रूप से तरकश में पहुंच जाता है, उसी प्रकार पुरुष के वीर्य से युक्त गर्भ तेरे जननांग में पहुंचे. वह गर्भ दस मास के पश्चात पुत्र के रूप में परिवर्तित हो कर तथा सशक्त बन कर जन्म ले. (२)

पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम्.
भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् (३)

हे स्त्री! तू पुत्र को जन्म दे. उस पुत्र की पत्नी से पुत्र ही उत्पन्न हो. इस प्रकार अविछिन्न रूप से उत्पन्न पुत्रों की भी तू माता होगी. उन के जो पुत्र होंगे, उन की भी तू माता होगी. (३)

यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति च.
तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव (४)

हे नारी ! बैल जिस प्रकार अपने अमोघ वीर्य से गायों में बछड़े उत्पन्न करता है, उसी प्रकार तू अमोघ वीर्य से उत्पन्न पुत्रों को प्राप्त कर. तू प्रसूता हो कर पुत्रों के साथ वृद्धि को प्राप्त हो. (४)

कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनिं गर्भ एतु ते.
विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव (५)

हे स्त्री! ब्रह्मा जी ने वृषभ संबंधी जो व्यवस्था की है, उस के अनुसार मैं तेरे लिए संतानोत्पत्ति संबंधी कर्म करता हूं. गर्भ तेरी योनि में जाए, उस के पश्चात तू पुत्र प्राप्त करे, वह पुत्र तेरे लिए सुख प्रदान करे तथा तू भी उस के लिए सुख का कारण बने. (५)

यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव.
तास्त्वा पुत्रविद्याय दैवीः प्रावन्त्वोषधयः (६)

जिन वृक्षों का पिता आकाश और माता पृथ्वी है, जलराशि उन की वृद्धि का मूल कारण है. वृक्षों के रूप में वे दिव्य जड़ीबूटियां पुत्र लाभ के लिए तेरी रक्षा करें. (६)

सूक्त चौबीसवां — देवता—वनस्पति

पयस्वतीरोषधयः पयस्वन्मामकं वचः.

अथो पयस्वतीनामा भरेऽहं सहस्रशः (१)

मेरे जौ, गेहूं आदि अन्न सारयुक्त हों तथा मेरा वचन भी सारयुक्त हो. मैं उन सार वाली फसलों से उत्पन्न धान्य को अनेक प्रकार से प्राप्त करूं. (१)

वेदाहं पयस्वन्तं चकार धान्यं बहु.
सम्भृत्वा नाम यो देवस्तं वयं हवामहे यो यो अयज्वनो गृहे (२)

मैं उस सार वाले देव को जानता हूं. उस ने जौ, गेहूं आदि की वृद्धि की है. भौंरे के समान संग्रह करने वाले जो देव हैं, उन का मैं स्तुतियों के द्वारा आह्वान करता हूं. यज्ञ करने वाले के घर में जो जौ, गेहूं आदि धान्य है, देव उसे एकत्र करके मुझे प्रदान करें. (२)

इमा याः पञ्च प्रदिशो मानवीः पञ्च कृष्टयः.
वृष्टे शापं नदीरिवेह स्फातिं समावहान् (३)

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और इन की मध्यवर्ती—ये पांच दिशाएं तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद—ये पांच जातियां इस यजमान के धनधान्य की उसी प्रकार वृद्धि करें, जिस प्रकार वर्षा का जल प्रवाह में पड़े हुए जलों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है. (३)

उदुत्सं शतधारं सहस्रधारमक्षितम्.
एवास्माकेदं धान्यं सहस्रधारमक्षितम् (४)

जल की उत्पत्ति का स्थान सौ अथवा हजार धाराओं वाला होने पर भी कभी क्षीण नहीं होता है, इसी प्रकार हमारा यह धान्य अनेक प्रकार से हजार धाराओं वाला हो कर क्षय रहित बने. (४)

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर.
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह (५)

हे सौ हाथों वाले देव! तुम अपनी भुजाओं से धन एकत्र करो तथा हजार हाथों से ला कर हमें धन दो. इस के पश्चात अपने द्वारा दिए हुए धन से मुझे समृद्ध बनाओ. (५)

तिस्रो मात्रा गन्धर्वाणां चतस्रो गृहपत्न्याः.
तासां या स्फातिमत्तमा तया त्वाभि मृशामसि (६)

विश्वावसु आदि गंधर्वों की संपन्नता के कारण हैं—उन की तीन कलाएं. उन की चार अप्सरा रूपी पत्नियां हैं. हे धान्य! पत्नियों में जो अतिशय समृद्ध है, उस से हम तेरा स्पर्श कराते हैं. (६)

उपोहश्च समूहश्च क्षत्तारौ ते प्रजापते.
ताविहा वहतां स्फातिं बहुं भूमानमक्षितम् (७)

हे प्रजापति! उपोह नाम का देव और धन की वृद्धि करने वाले देवों का समूह—ये दोनों तुम्हारे सारथी हैं. अनेक प्रकार के तथा क्षय रहित धन धान्य को एवं समृद्धि को ये हमारे समीप लाएं. (७)

सूक्त पच्चीसवां देवता—कामेषु

उत्तुदस्त्वोत् तुदतु मा धृथाः शयने स्वे.
इषुः कामस्य या भीमा तया विध्यामि त्वा हृदि (१)

हे नारी! उत्तुद नाम के देव अत्यधिक व्यथित करने वाले हैं. वे तुझे कामार्ता करें. मदन विकारों से व्यथित हो कर तू अपने पलंग पर सोना पसंद मत कर. कामदेव का जो भयानक बाण है, उस से मैं तेरे हृदय को ताड़ित करता हूं. (१)

आधीपर्णां कामशल्यामिषुं सङ्कल्पकुल्मलाम्.
तां सुसन्नतां कृत्वा कामो विध्यतु त्वा हृदि (२)

मन का कामोन्माद जिस का पर्ण अर्थात पीछे वाला भाग है और रमण करने की अभिलाषा जिस का फल अर्थात आगे वाला भाग है तथा भोग विषयक संकल्प जिस के दोनों भागों को जोड़ने वाला द्रव्य है, इस प्रकार के बाण को अपने धनुष पर रख कर कामदेव तेरे हृदय का वेधन करें. (२)

या प्लीहानं शोषयति कामस्येषुः सुसन्नता.
प्राचीनपक्षा व्योषा तया विध्यामि त्वा हृदि (३)

कामदेव के द्वारा भलीभांति खींचा गया बाण प्राणों के आश्रय प्लीहा को जलाता है. हे नारी! मैं सीधे पंखों वाले तथा अनेक प्रकार से दहन करने वाले उस बाण से तेरे हृदय का वेधन करता हूं. (३)

शुचा विद्धा व्योषया शुष्कास्याभि सर्प मा.
मृदुर्निमन्युः केवली प्रियवादिन्यनुव्रता (४)

दाह करने वाले तथा शोकात्मक बाण से घायल होने के कारण तेरा कंठ सूख जाए और उस कंठ के कारण अपना अभिप्राय प्रकट करने में असमर्थ हो कर तू मेरे समीप आ. तू मृदुभाषिणी, एक मात्र मुझ से रक्षा पाने वाली तथा मेरे अनुकूल बोलने वाली बन और मेरे अनुकूल आचरण कर. (४)

आजामि त्वाजन्या परि मातुरथो पितुः.
यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि (५)

हे नारी! मैं कोड़े से मार कर तुझे अपने अभिमुख करता हूं. मैं वहां से तुझे अपने समीप बुलाता हूं, जिस से तू मेरे संकल्प को पूरा करे और मेरी बुद्धि के अनुसार चले. (५)

व्यस्यै मित्रावरुणौ हृदश्चित्तान्यस्यतम्.
अथैनामक्रतुं कृत्वा ममैव कृणुतं वशे (६)

हे मित्र और वरुण! इस स्त्री के हृदय को ज्ञानशून्य कर दो. इस के पश्चात इसे कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के ज्ञान से शून्य कर के मेरे वशीभूत बना दो. (६)

सूक्त छब्बीसवां — देवता—अग्नि

येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः.
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा (१)

हे दान आदि गुण युक्त गंधर्वो! तुम हमारे निवास स्थान से पूर्व दिशा में हमारे विरोधियों को मारने वाले बनो. तुम्हारे अग्नि तुल्य बाण उन पूर्व दिशा के निवासियों से हमारी रक्षा करने में समर्थ हों. वे हमें सुखी करें. तुम्हारे बाण सर्प, बिच्छू आदि शत्रुओं को हम से दूर रखें. तुम हमें अपना कहो. हम तुम्हें नमस्कार करते और आहुति देते हैं. (१)

येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्यविष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः.
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा (२)

हे दान आदि गुणों से युक्त गंधर्वो! तुम हमारे निवास स्थान से दक्षिण दिशा में हमारे विरोधियों से हमारे रक्षक बनो. हमारी अभिलाषा ही तुम्हारा बाण है, वह हमारी रक्षा करे. तुम हमें अपना कहो. हम तुम्हें नमस्कार करें और आहुति देते रहें. (२)

येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः.
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा (३)

हे देवो! तुम पश्चिम दिशा में हमें अन्न देने वाले बनो. वर्षा के जल तुम्हारे बाण हैं. वे हमारी रक्षा करें. तुम हमें अपना बनाओ. तुम्हें हम नमस्कार करते हैं और आहुति देते हैं. (३)

येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः.
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा (४)

हे दान आदि गुणों से युक्त गंधर्वो! तुम उत्तर दिशा में हमारी हिंसा करने वालों को मारने वाले बनो. वायु ही तुम्हारा बाण है, वह हमारी रक्षा करे. तुम हमें अपना कहो. हम तुम्हें नमस्कार करते हैं और आहुति देते हैं. (४)

येऽस्यां स्थ ध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधीरिषवः.
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा (५)

हे दान आदि गुणों से युक्त गंधर्वो! तुम ध्रुव दिशा में अर्थात पृथ्वी पर हमारी

रक्षा करने वाले बनो. जौ, गेहूं, पेड़, पौधे आदि तुम्हारे बाण हैं. वे हमारी रक्षा करें. तुम हमें अपना कहो. हम तुम्हें नमस्कार करते हैं और आहुति देते हैं. (५)

येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो बृहस्पतिरिषवः.
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा (६)

हे दान आदि गुणों से युक्त गंधर्वो! इस ऊपर की दिशा में तुम हमारे रक्षक बनो. बृहस्पति तुम्हारे बाण हैं. वे हमारी रक्षा करें. हम तुम्हें नमस्कार करते हैं और आहुति देते हैं. (६)

सूक्त सत्ताईसवां — देवता—प्राची

प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः.
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु.
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः (१)

पूर्व दिशा हम पर कृपा करे. अग्नि इस दिशा के अधिपति हैं. काले रंग के सांप उस में रक्षा करने के लिए स्थित हैं. अदिति के पुत्र धाता, अर्यमा आदि इस दिशा के आयुध हैं. इसके अधिपति अग्नि, रक्षक काले सांप, धाता अर्यमा आदि आयुधों को मेरा नमस्कार प्रसन्न करने वाला हो. जो शत्रु हमें बाधा पहुंचाता है अथवा हम जिससे द्वेष रखते हैं. हे अग्नि आदि देवो! उसे हम तुम्हारे भोजन के लिए तुम्हारी दाढ़ के नीचे रखते हैं. (१)

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः.
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु.
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः (२)

दक्षिण दिशा हम पर कृपा करे. इंद्र इस के अधिपति हों. टेढ़ेमेढ़े चलने वाले सर्प इस दिशा के रक्षक हैं. पितर इस दिशा के दुष्टों का निग्रह करने वाले आयुध हैं. इस के अधिपति इंद्र को, रक्षक टेढ़ेमेढ़े चलने वाले सर्प को और आयुध रूप पितरों को मेरा नमस्कार प्रसन्न करने वाला हो. जो शत्रु मुझे बाधा पहुंचाता है अथवा मैं जिन से द्वेष रखता हूं, हे इंद्र आदि देवो! मैं उसे तुम्हारे भक्षण के लिए तुम्हारी दाढ़ में रखता हूं. (२)

प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः.
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु.
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः (३)

पश्चिम दिशा हम पर कृपा करे. वरुण इस के अधिपति हैं. कुत्सित शब्द करने वाला पृदाकू नाम का सर्प इस का रक्षक है और जौ, गेहूं आदि इस दिशा के दुष्टों को वश में करने वाले बाण हैं. इस के अधिपति वरुण को, रक्षक कुत्सित शब्द

करने वाले पृदाकु नाम वाले सर्प को और जौ तथा गेहूं आदि बाणों को हमारा नमस्कार प्रसन्न करने वाला हो. जो शत्रु हमें बाधा पहुंचाता है अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं, हे वरुण आदि देवो! हम उसे तुम्हारे भक्षण के लिए तुम्हारी दाढ़ में रखते हैं. (३)

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः.
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु.
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः (४)

उत्तर दिशा हम पर अनुग्रह करे. सोम इस दिशा के अधिपति अर्थात स्वामी हैं. स्वयं उत्पन्न होने वाला सर्प इस का रक्षक है और वज्र इस के दुष्टों को वश में करने वाला बाण है. इस के अधिपति सोम को, स्वयं उत्पन्न होने वाले रक्षक सर्प को और वज्र रूप बाण को हमारा नमस्कार प्रसन्न करने वाला हो. जो शत्रु हमें बाधा पहुंचाते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं. हे सोम आदि देवो! उन्हें हम तुम्हारे भक्षण के लिए तुम्हारी दाढ़ में रखते हैं. (४)

ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः.
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु.
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः (५)

नीचे की ओर वाली अर्थात स्थिर दिशा हम पर अनुग्रह करे. विष्णु इस के अधिपति हैं, काली गरदन वाला सांप इस का रक्षक है और वृक्ष इस के दुष्ट नाशकारी बाण हैं. इस के अधिपति विष्णु को, रक्षक काली गरदन वाले सर्प को और आयुध वृक्षों को हमारा नमस्कार प्रसन्न करने वाला हो. हे विष्णु आदि देवो! जो शत्रु हमें बाधा पहुंचाते हैं, अथवा हम जिन से द्वेष रखते हैं, उन्हें हम तुम्हारे भक्षण के हेतु तुम्हारी दाढ़ में रखते हैं. (५)

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः.
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु.
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः (६)

ऊपर वर्तमान दिशा हम पर कृपा करे. बृहस्पति इस के स्वामी हैं, श्वेतवर्ण का सर्प इस का रक्षक है और वर्षा का जल इस का दुष्ट निवारक आयुध है. हम इस के स्वामी बृहस्पति को रक्षक श्वेत वर्ण के सर्प को तथा दुष्ट निवारक आयुध वर्षा के जल को नमस्कार करते हैं. हे बृहस्पति आदि देवो! जो शत्रु हमें बाधा पहुंचाते हैं अथवा हम जिन से द्वेष रखते हैं, उन्हें हम तुम्हारे भक्षण के हेतु तुम्हारी दाढ़ में रखते हैं. (६)

सूक्त अट्ठाईसवां — देवता—अश्विनीकुमार

एकैकयैषा सृष्ट्या सं बभूव यत्र गा असृजन्त भूतकृतो विश्वरूपाः.

यत्र विजायते यमिन्यपर्तुः सा पशून् क्षिणाति रिफती रुशती (१)

विधाता के द्वारा बनाई गई यह सृष्टि क्रमशः एकएक कर के उत्पन्न हुई. यहां पृथ्वी आदि तत्त्वों के निर्माता ऋषियों ने अनेक रंगों वाली गायों, मानुषियों और घोड़ियों को उत्पन्न किया. उत्पत्ति वाली इस सृष्टि में यदि कोई गाय आदि निकृष्ट रज और वीर्य से उत्पन्न जुड़वां संतान को जन्म देती है, वह यजमान के गाय आदि पशुओं का भक्षण करती हुई और चोर, बाघ आदि के द्वारा हिंसा करती हुई विनाश करती है. (१)

एषा पशून्त्सं क्षिणाति क्रव्याद् भूत्वा व्यद्वरी.
उतैनां ब्रह्मणे दद्यात् तथा स्योना शिवा स्यात् (२)

दो बच्चों को एक साथ जन्म देने वाली यह गाय मांस खाने वाली एवं दुःख देने वाली के समान यजमान के अन्य पशुओं का विनाश करती है. यह टोनेटोटके के समान संताप देने वाली है. इसे ब्राह्मण को दान कर देना चाहिए. ऐसा करने से यह अपनी संतान के द्वारा यजमान के लिए कल्याणकारिणी बन जाती है. (२)

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा.
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि (३)

हे जुड़वां बच्चों को जन्म देने वाली गाय! तू मनुष्यों, गायों और घोड़ों के लिए कल्याणकारिणी बन. तू इस देश में हमें सब प्रकार से सुखदायी हो. (३)

इह पुष्टिरिह रस इह सहस्रसातमा
भव. पशून् यमिनि पोषय (४)

मेरे यजमान के इस घर में गाय आदि धन पुष्ट हों तथा दूध, दही आदि रस समृद्ध हों. हे जुड़वां बच्चों को जन्म देने वाली गाय! तू इस यजमान के पशुओं का पोषण कर और इसे हजारों प्रकार के धन प्रदान कर. (४)

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्व१ः स्वायाः.
तं लोकं यमिन्यभिसंबभूव सा नो मा हिंसीत् पुरुषान् पशूंश्च (५)

जिस लोक में शोभन हृदय वाले तथा उत्तम कर्म करने वाले पुरुष प्रसन्न होते हैं तथा ज्वर आदि रोगों का त्याग कर के उन के शरीर पुष्ट होते हैं, वहाँ यदि जुड़वां बच्चों को जन्म देने वाली गाय सामने आ जाए तो वह हमारे मनुष्यों और पशुओं की हिंसा न करे. (५)

यत्रा सुहार्दां सुकृतामग्निहोत्रहुतां यत्र लोकः.
तं लोकं यमिन्यभिसंबभूव सा नो मा हिंसीत् पुरुषान् पशूंश्च (६)

जिस लोक में शोभन हृदय, शोभन ज्ञान और शोभन कर्म वाले अपने शरीर से ज्वर आदि रोगों का त्याग कर के प्रसन्न होते हैं, वहां जुड़वां बच्चों को जन्म देने

वाली गाय आ गई है. वह हमारे पुरुषों और पशुओं की हिंसा न करे. (६)

सूक्त उनतीसवां देवता—अवि, काम, भूमि

यद् राजानो विभजन्त इष्टापूर्तस्य षोडशं यमस्यामी सभासदः.
अविस्तस्मात् प्र मुञ्चति दत्तः शितिपात् स्वधा (१)

दक्षिण दिशा के आकाश में दिखाई देने वाले यमराज के सभासद दुष्टों को दंड दें और धर्मात्माओं का पालन करने में युक्त हों. श्रुतिओं में बताए गए यज्ञ आदि और स्मृतियों में बताए गए वापी, कूप, सरोवर आदि कर्मों के जो सोलह पाप होते हैं, उन्हें यमराज के सभासद पुण्य से पृथक करते हैं. उस पाप से यज्ञ में बलि के रूप में दी गई यह सफेद पैरों वाली भेड़ हमें मुक्त करे. यह भेड़ यमराज के सभासदों के लिए अग्नि हो. (१)

सर्वान् कामान् पूरयत्याभवन् प्रभवन् भवन्
आकूतिप्रोऽविर्दत्तः शितिपान्नोप दस्यति (२)

चारों दिशाओं को व्याप्त करने वाला, फल देने में समर्थ एवं वृद्धि करने वाला यह यज्ञ हमारी सभी अभिलाषाओं को पूर्ण करता है. संकल्पों को पूर्ण करने वाली यह सफेद पैरों वाली भेड़ इस यज्ञ में दी जा रही है. यह क्षीण न हो कर हमारी इच्छा के अनुसार बढ़ेगा ही. (२)

यो ददाति शितिपादमविं लोकेन संमितम्.
स नाकमभ्यारोहति यत्र शुल्को न क्रियते अबलेन बलीयसे (३)

जो यजमान सफेद पैरों वाली एवं लोक विश्वास के अनुसार फल देने वाली भेड़ का दान करता है, वह स्वर्ग को प्राप्त करता है. स्वर्ग लोक में निर्बल व्यक्ति सबल का शासन मान कर शुल्क नहीं देता. (३)

पञ्चापूपं शितिपादमविं लोकेन संमितम्.
प्रदातोप जीवति पितॄणां लोकेऽक्षितम् (४)

जिस भेड़ के चारों पैरों और नाभि पर पांच पुए रखे जाते हैं, उसे पंचापूप कहते हैं. पंचापूप अर्थात पांच पुओं वाली और सफेद पैरों वाली भेड़ का दाता पृथ्वी आदि लोकों के पांच समान पितरों के लोक में समाप्त न होने वाला फल भोगता है. (४)

पञ्चापूपं शितिपादमविं लोकेन संमितम्.
प्रदातोप जीवति सूर्यामासयोरक्षितम् (५)

पंचापूप अर्थात पांच पुओं वाली और सफेद पैरों वाली भेड़ को लोक विश्वास के अनुसार दान करने वाला सूर्य और चंद्रमा के लोकों में समाप्त न होने वाला फल भोगता है. (५)

इरेव नोप दस्यति समुद्र इव पयो महत्.
देवौ सवासिनाविव शितिपान्नोप दस्यति (६)

यज्ञ में दी गई सफेद पैरों वाली भेड़ सागर के जल के समान कभी क्षीण नहीं होती और इस का दूध बढ़ता ही जाता है. अश्विनीकुमारों के समान यह भेड़ कभी क्षीण नहीं होती. (६)

क इदं कस्मा अदात् कामः कामायादात्.
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामः समुद्रमा विवेश.
कामेन त्वा प्रति गृहणामि कामैतत् ते (७)

यह दक्षिणा रूपी धन प्रजापति ने प्रजापति को ही दिया था. दक्षिणा देने वाला पारलौकिक फल का अभिलाषी है और लेने वाला लौकिक फल का इच्छुक है. इस प्रकार दक्षिणा का दाता और लेने वाला दोनों ही इच्छा वाले हैं. इच्छा का रूप सागर के समान असीमित है. इच्छा का अंत नहीं है. हे दक्षिणा द्रव्य! मैं इसी प्रकार की इच्छा से तुझे ग्रहण करता हूं. हे अभिलाषा! स्वीकार किया हुआ यह धन तेरे लिए हो. (७)

भूमिष्ट्वा प्रति गृहणात्वन्तरिक्षमिदं महत्.
माहं प्राणेन मात्मना मा प्रजया प्रतिगृह्य वि राधिषि (८)

हे दक्षिणा द्रव्य! तुझे यह धरती और विशाल आकाश ग्रहण करे. इसीलिए तुझे ग्रहण कर के मैं प्राण से, आत्मा से और पुत्रपौत्र आदि संतान से हीन न बनूं. (८)

सूक्त तीसवां

देवता—सौमनस्य

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः.
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या (१)

हे विवाद करने वाले पुरुषो! मैं तुम्हारे लिए सौमनस्य कर्म करता हूं जो विद्वेष रहित एवं परस्पर प्रेम कराने वाला है. जिस प्रकार गाय अपने बछड़े से प्रेम करती है. उसी प्रकार तुम भी परस्पर प्रेम करो. (१)

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः.
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् (२)

पुत्र पिता के अनुकूल कर्म करने वाला हो. माता पुत्र आदि के प्रति सौमनस्य वाली बने. पत्नी पति से मधुर एवं सुखकर वचन कहे. (२)

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा.
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया (३)

भाई अपने सगे भाई से उत्तराधिकार को ले कर तथा बहन अपनी सगी बहन से द्वेष न करे. यह सब समान गति वाले एवं समान कर्मों वाले हो कर कल्याणकारी वचन कहें. (३)

येन देवा न वियन्ति नो च विद्विषते मिथः.
तत् कृण्मो ब्रह्म वो गृहे संज्ञानं पुरुषेभ्यः (४)

जिस मंत्र के बल से देवगण, भिन्नभिन्न विचारों वाले नहीं बनते और परस्पर द्वेष नहीं करते, उसी मंत्र का प्रयोग मैं तुम्हारे घर में एकमत स्थापित करने के लिए करता हूं. (४)

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः.
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि (५)

हे मनुष्यो! तुम छोटेबड़े की भावना से एक दूसरे का अनुसरण करते हुए समान चित्त वाले, समान सिद्धि वाले तथा समान कार्य करने वाले बनो. इस प्रकार आचरण करते हुए तुम एक दूसरे से बिछुड़ो मत तथा एक दूसरे से प्रिय वचन बोलते हुए आओ. मैं भी तुम सब से मिलकर तुम्हें कार्यों में प्रवृत्त होने वाला तथा समान विचारों वाला बनाता हूं. (५)

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि.
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः (६)

हे समानता के इच्छुक जनो! तुम परस्पर प्रेम के कारण एक स्थान पर रहकर समान जल और अन्न का उपयोग करो. इस के लिए मैं तुम सबको प्रेम के एक बंधन में बांधता हूं. जिस प्रकार पहिए के अनेक अरे एक नाभि को घेरे रहते हैं, उसी प्रकार तुम सब एक फल की कामना करते हुए अग्नि की उपासना करो. (६)

सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्.
देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु (७)

मैं तुम सब को एक कार्य करने में एक साथ संलग्न कर के समान विचारों वाला बनाता हूं तथा समान अन्न का उपयोग करने वाला और सौमनस्य कर्म के द्वारा तुम्हें वश में करता हूं. स्वर्ग लोक में अमृत रक्षा करने वाले इंद्र आदि देवों का मन जिस प्रकार समान बना रहता है, उसी प्रकार मैं तुम्हें सभी समयों में समान मन वाला बनाता हूं. (७)

सूक्त इकत्तीसवां

देवता—अग्नि आदि

वि देवा जरसावृतन् वि त्वमग्ने अराल्या.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (१)

हे अश्विनीकुमारो! तुम इस बालक को आयु की हानि करने वाली वृद्धावस्था से दूर रखो. हे अग्नि! तुम इसे दान न देने के स्वभाव से और शत्रुओं से दूर रखो. मैं इसे रोग आदि दुखों को उत्पन्न करने वाले पापों तथा यक्ष्मा रोग से पृथक कर के चिर जीवन से संयुक्त करता हूं. (१)

व्यात्यां पवमानो वि शक्रः पापकृत्यया.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (२)

वायु इस बालक को रोगजनित पीड़ा से अलग रखे. तथा इंद्र पाप के कार्यों से बचाएं. मैं इसे रोग आदि दुखों को उत्पन्न करने वाले पापों तथा यक्ष्मा रोग से पृथक कर के चिर जीवन से युक्त करता हूं. (२)

वि ग्राम्याः पशव आरण्यैर्व्यापस्तृष्णयासरन्.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (३)

जिस प्रकार गाय, भैंस आदि ग्रामीण पशु वन के पशुओं से तथा जल प्यासे व्यक्तियों से दूर रहता है, उसी प्रकार मैं इस ब्रह्मचारी को रोग आदि दुख उत्पन्न करने वाले पापों से तथा यक्ष्मा रोग से दूर कर के चिर जीवन से युक्त करता हूं. (३)

वीउमे द्यावापृथिवी इतो वि पन्थानो दिशंदिशम्.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (४)

जिस प्रकार धरती और आकाश एक दूसरे से अलग रहते हैं तथा एक गांव से प्रत्येक दिशाओं में जाने वाले मार्ग स्वाभाविक रूप से पृथक होते हैं, उसी प्रकार मैं इस ब्रह्मचारी को रोग आदि दुखों के उत्पादक पापों तथा यक्ष्मा रोग से पृथक कर के चिर जीवन से युक्त करता हूं. (४)

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्तीतीदं विश्वं भुवनं वि याति.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (५)

त्वष्टा ने अपनी पुत्री के विवाह में जो दहेज दिया था, उसे स्थापित करने के निमित्त धरती और आकाश जिस प्रकार पृथक हुए थे, उसी प्रकार मैं इस ब्रह्मचारी को रोग आदि दुखों को उत्पन्न करने वाले पापों तथा क्षय रोग से पृथक कर के दीर्घ जीवन से संयुक्त करता हूं. (५)

अग्निः प्राणान्त्सं दधाति चन्द्रः प्राणेन संहितः.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (६)

जिस प्रकार जठराग्नि चक्षु आदि इंद्रियों को अन्न से बना हुआ रस पहुंचा कर अपनाअपना कार्य करने में समर्थ बनाती है तथा चंद्रमा प्राण वायु से युक्त हो कर अमृत रस से सभी आत्माओं का पोषण करता है, उसी प्रकार मैं इस ब्रह्मचारी को रोग आदि दुखों के उत्पादक पापों से तथा यक्ष्मा रोग से पृथक करके दीर्घ जीवन

प्रदान करता हूं. (६)

प्राणेन विश्वतोवीर्यं देवाः सूर्यं समैरयन्.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (७)

देवों ने सारे विश्व के प्रेरक सूर्य को प्राण के रूप में उत्पन्न किया. मैं ऐसे सूर्य को इस ब्रह्मचारी की आयु वृद्धि के निमित्त इस में स्थापित करता हूं. मैं इस ब्रह्मचारी को रोग आदि दुखों के उत्पादक पापों से, तथा यक्ष्मा रोग से पृथक कर के चिर जीवन से युक्त करता हूं. (७)

आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (८)

हे ब्रह्मचारी! तू दीर्घ आयु वाले पुरुषों की आयु से दीर्घ आयु प्रदान करने वाले देवों के प्राण से चिरकाल तक जीवन धारण कर तथा मृत्यु को प्राप्त मत हो. मैं तुझे रोग आदि दुखों के जनक पापों तथा यक्ष्मा रोग से पृथक कर के चिर जीवन से युक्त करता हूं. (८)

प्राणेन प्राणतां प्राणेहैव भव मा मृथाः.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (९)

हे ब्रह्मचारी! श्वास लेने वाले प्राणियों की प्राण वायु से तू सांस ले. तू इसी लोक में निवास कर अर्थात जीवित रह, मर मत. मैं तुझे रोग के उत्पादक पापों तथा यक्ष्मा रोग से पृथक कर के चिर जीवन से युक्त करता हूं. (९)

उदायुषा समायुषोदोषधीनां रसेन.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (१०)

हम चिर काल के जीवन से मृत्यु को प्राप्त करते हैं, इस लोक में निवास करते हैं तथा जौ, गेहूं आदि के रस से वृद्धि को प्राप्त करते हैं. मैं इस ब्रह्मचारी को रोग आदि दुखों के जनक पापों तथा यक्ष्मा रोग से पृथक कर के चिर जीवन से संयुक्त करता हूं. (१०)

आ पर्जन्यस्य वृष्ट्योदस्थामामृता वयम्.
व्य१हं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा (११)

हम वृष्टि करने वाले पर्जन्य देव के द्वारा बरसाए हुए जल से अमरता प्राप्त कर के उठ बैठते हैं. हे ब्रह्मचारी! मैं तुझे रोग आदि दुखों से जन्य पापों से पृथक कर के चिर जीवन से संयुक्त करता हूं. (११)

चौथा कांड

सूक्त पहला

देवता—बृहस्पति

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः.
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः (१)

सत, चित, आनंद और सारे विश्व का कारण ब्रह्म सब से पहले सूर्य रूप में प्रकट हुआ जो पूर्व दिशा में उत्पन्न होता है तथा अपने तेज से सारे जगत को व्याप्त करता है. यह प्रकाश और वर्षा का कारण सूर्यात्मक तेज सभी दिशाओं से आरंभ हो कर अपने शोभन प्रकाश को फैलाता है. सत और असत के उत्पत्ति स्थान के ज्ञान का तथा धरती, आकाश आदि का ज्ञान प्रकट करने वाला वही सूर्यात्मक तेज है. (१)

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः.
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे (२)

संपूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाले पिता प्रजापति ब्रह्मा हैं. उन से प्राप्त और नाद रूप में सभी प्राणियों में व्याप्त वाणी सारे संसार के व्यवहारों की स्वामिनी है. ये प्रथम शब्द से वाच्य सूर्यात्मक तेज अर्थात ब्रह्म को स्तुति रूप में प्राप्त हों. (२)

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति.
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ (३)

इस प्रपंच के कारण, हितकारी एवं निरावरण ज्ञान से सारे जगत को जानते हुए जो देव सर्व प्रथम उत्पन्न हुए, वे इंद्र आदि सभी देवों के जन्मों का वर्णन करते हैं. प्रथम उत्पन्न देव ने सब के कारण रूप ब्रह्म के मध्य भाग से, नीचे वाले भाग से और ऊपर वाले भाग से वेदों का उद्धार किया. इस के पश्चात देवों को हवि के रूप में अन्न मिला. (३)

स हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्.
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः (४)

सूर्य के रूप में सर्व प्रथम उत्पन्न हुए देव आकाश में कारण रूप में तथा पृथ्वी में

सत्य रूप में स्थित हैं एवं उन्होंने धरती व आकाश को अविनाशी रूप में स्थापित किया. धरती और आकाश को व्याप्त कर के वर्तमान उस प्रथम देव ने धरती और आकाश को स्थापित किया है. वह इन दोनों के मध्य में सूर्य के रूप में उत्पन्न हुआ है तथा आकाश और पृथ्वी को अपने तेज से व्याप्त कर रहा है. (४)

स बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्.
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः (५)

प्रथम तेज के रूप में उत्पन्न परब्रह्म ने लोक के मूल अर्थात निचले भाग से ले कर ऊपर वाले भाग तक को व्याप्त किया. दान आदि गुणों से युक्त बृहस्पति इस लोक के अधिपति हैं. दीप्ति वाला दिन उस प्रकाश वाले सूर्य से उत्पन्न हुआ. इस के पश्चात दीप्ति वाले एवं मेधावी ऋत्विज अपनेअपने व्यापारों में लग गए. (५)

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम.
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु (६)

ऋत्विजों का यज्ञ इस दिखाई न देने वाले और सब से पहले उत्पन्न सूर्य देव का मंडल निश्चय ही सब को प्रेरणा देता है. यह सूर्य हजारों किरणों के साथ इस प्रकार पूर्व दिशा में प्रकट होता है कि इन्हें हवि लक्षण अन्न शीघ्र प्राप्त हो जाता है. (६)

योऽथर्वाणं पितरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्.
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान् (७)

बृहस्पति देव ने प्रजापति अथर्वा को लोक का उत्पन्न करने वाला और इंद्र आदि देवों का बंधु जाना. बृहस्पति एवं अथर्वा को हमारा नमस्कार है. हवि रूप अन्न से युक्त हो कर वे हम पर उसी प्रकार कृपा करते हैं, जिस प्रकार वे अन्न से युक्त एवं सभी प्राणियों के जन्म दाता हैं. (७)

सूक्त दूसरा

देवता—आत्मा

य आत्मा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः.
योऽस्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम (१)

जो प्रजापति सभी प्राणियों को प्राण एवं शांति देने वाले हैं, सभी प्राणी एवं देव भी जिन का शासन मानते हैं तथा दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं. हम हवि द्वारा इस प्रकार के प्रजापति देव की पूजा करते हैं. (१)

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैको राजा जगतो बभूव.
यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम (२)

जो प्रजापति अपने माहात्म्य से सांस लेने वाले और पलक झपकाने वाले

समस्त गतिशील प्राणियों के एकमात्र स्वामी हैं, जीवन और मृत्यु छाया के समान जिन के अधीन हैं, मैं हवि के द्वारा उन प्रजापति देव की पूजा करता हूं. (२)

यं क्रन्दसी अवतश्चस्कभाने भियसाने रोदसी अह्वयेथाम.
यस्यासौ पन्था रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम (३)

संसार की रक्षा के लिए धरती और आकाश अपने स्थान पर स्थिर हैं. प्रजापति ने उन्हें निराधार प्रदेश में धारण किया है. नीचे गिरने की आशंका से भयभीत धरती और आकाश के मध्य विद्यमान वे प्रजापति रोए थे, इसलिए इन दोनों का नाम रोदसी हुआ. जिस प्रजापति का आकाश में स्थित मार्ग वर्षा के जल का निर्माण करता है, हम हवि द्वारा उन प्रजापति की पूजा करते हैं. (३)

यस्य द्यौरुर्वी पृथिवी च मही यस्याद उर्व१न्तरिक्षम्.
यस्यासौ सूरो विततो महित्वा कस्मै देवाय हविषा विधेम (४)

जिन प्रजापति की महिमा से आकाश विस्तीर्ण और पृथ्वी विस्तृत हुई है, जिन की महिमा से अंतरिक्ष अर्थात आकाश और पृथ्वी के मध्यवर्ती भाग का विस्तार हुआ है तथा आकाश में प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला सूर्य विस्तीर्ण हुआ है, हम हव्य द्वारा उस प्रजापति की पूजा करते हैं. (४)

यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा समुद्रे यस्य रसामिदाहुः.
इमाश्च प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम (५)

जिस प्रजापति देव की महिमा से हिमालय आदि सभी पर्वत उत्पन्न हुए हैं, सागर में सभी सरिताएं जिस की महिमा से समा जाती हैं; पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण चार दिशाएं जिस प्रजापति की भुजाएं हैं, हम हवि के द्वारा उस की पूजा करते हैं. (५)

आपो अग्रे विश्वमावन् गर्भं दधाना अमृता ऋतज्ञाः.
यासु देवीष्वधि देव आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम (६)

सृष्टि के आदि में जिन जलों ने सारे जगत की रक्षा की, अविनाशी और जगत के कारण हिरण्यगर्भ को जिन दिव्य जलों ने गर्भ के रूप में धारण किया, उन जलों को अपने मध्य धारण करने वाले प्रजापति की हम हवि के द्वारा पूजा करते हैं. (६)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्.
स दाधार पृथिवीमुत द्यां कस्मै देवाय हविषा विधेम (७)

सृष्टि के आदि में हिरण्यगर्भ उत्पन्न हुए तथा उत्पन्न होते ही सभी प्राणियों के स्वामी हो गए, उन्होंने इस धरती और आकाश को धारण किया. हम हवि द्वारा उन प्रजापति की पूजा करते हैं. (७)

आपो वत्सं जनयन्तीर्गर्भमग्रे समैरयन्.
तस्योत जायमानस्योल्व आसीद्धिरण्ययः कस्मै देवाय हविषा विधेम (८)

ईश्वर के द्वारा सब से प्रथम निर्मित जलों ने हिरण्यगर्भ को जन्म देने के लिए ईश्वर के वीर्य को धारण किया. उस उत्पन्न होने वाले प्रजापति के उल्व अर्थात गर्भ को घेरने वाली झील स्वर्णमय थी. हम हव्य द्वारा उस प्रजापति की पूजा करते हैं. (८)

सूक्त तीसरा

देवता—व्याघ्र

उदितस्त्रयो अक्रमन् व्याघ्रः पुरुषो वृकः.
हिरुग्घि यन्ति सिन्धवो हिरुग् देवो वनस्पतिर्हिरुङ् नमन्तु शत्रवः (१)

बाघ, चोर मनुष्य और भेड़िए—ये तीन इस स्थान से भाग कर दूर चले जाएं. जिस प्रकार सरिताएं गूढ़ रूप में बहती हैं, उसी प्रकार बाघ आदि भी दिखाई न दें. वनस्पतियों के अधिष्ठाता देव जिस प्रकार वनस्पतियों में छिपे रहते हैं, उसी प्रकार बाघ आदि भी लुप्त हो जाएं. बाघ आदि के जो शत्रु हैं, वे उन्हें दूर भगा दें. (१)

परेणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः.
परेण दत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु (२)

जंगली हिंसक पशु भेड़िया हमारे चलनेफिरने के मार्ग से दूर चला जाए. चोर भेड़िए से भी अधिक दूर चला जाए. दांतों वाले, रस्सी के आकार वाले एवं दूसरे की हिंसा करने वाले सांप के अतिरिक्त अन्य हिंसक प्राणी भी हमारे संचरण मार्ग से दूर चले जाएं. (२)

अक्ष्यौ च ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि.
आत् सर्वान् विंशतिं नखान् (३)

हे बाघ! मैं तेरी दोनों आंखों और मुख को नष्ट करता हूं. इस के अतिरिक्त मैं तेरे चारों पैरों के बीस नाखूनों को भी नष्ट करता हूं. (३)

व्याघ्रं दत्वतां वयं प्रथमं जम्भयामसि.
आदु ष्टेनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम् (४)

हम दांतों से हिंसा करने वाले पशुओं में सब से पहले बाघ का नाश करते हैं. इस के पश्चात हम चोर, सर्प, यक्ष, राक्षस आदि तथा भेड़िए का नाश करते हैं. (४)

यो अद्य स्तेन आयति स संपिष्टो अपायति.
पथामपध्वंसेनैत्विन्द्रो वज्रेण हन्तु तम् (५)

आज जो चोर आता है, वह हमारे द्वारा कुटपिट कर दूर भागे. वह मार्गों में से

कष्टदायक मार्ग से जाए और इंद्र अपने वज्र से उस की हिंसा करें. (५)

मूर्णा मृगस्य दन्ता अपिशीर्णा उ पृष्टयः.
निम्रुक् ते गोधा भवतु नीचायच्छशयुर्मृगः (६)

बाघ आदि हिंसक पशुओं के दांत भोथरे अर्थात खाने में असमर्थ हो जाएं. उन के सींग और पसलियों की हड्डियां भी पैनी न रहें. हे पथिक! वह तेरे मार्ग में दिखाई न दे और सोने वाले दुष्ट पशु भी पिछले मार्ग से दूर चले जाएं. (६)

यत् संयमो न वि यमो वि यमो यन्न संयमः.
इन्द्रजाः सोमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भनम् (७)

जहां मंत्र के सामर्थ्य से इंद्र और सोम से संबंधित संयमन कभी विपरीत प्रभाव नहीं डालता. हे क्रियाकलाप! तू अथर्वा महर्षि द्वारा दिया हुआ है, इसलिए तू बाघ आदि दुष्ट प्राणियों का हिंसक बन. (७)

सूक्त चौथा — देवता—वनस्पति आदि

यां त्वा गन्धर्वो अखनद् वरुणाय मृतभ्रजे.
तां त्वा वयं खनामस्योषधिं शेपहर्षणीम् (१)

हे कपित्थ अर्थात कैथ नाम के वृक्ष एवं फल! वरुण का पौरुष नष्ट होने पर उन्हें वह शक्ति पुनः प्राप्त कराने के लिए गंधर्वों ने तुझे खोद कर प्राप्त किया था. उसी शक्तिवर्धक ओषधि को हम खोदते हैं. (१)

उदुषा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः.
उदेजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिना (२)

सूर्यपत्नी उषा शक्तिशाली वीर्य से युक्त हो तथा सूर्यदेव उसे उत्कृष्ट वीर्य संपन्न करें. मेरा यह मंत्र भी शक्तिशाली हो तथा जगत के सृष्टा प्रजापति देव भी इसे अपने बल वीर्य से उन्नत करें. (२)

यथा स्म ते विरोहतोऽभितप्तमिवानति.
ततस्ते शुष्मवत्तरमियं कृणोत्वोषधिः (३)

हे वीर्य के इच्छुक पुरुष! पुत्र, पौत्र आदि के रूप में विरोहण के कारण तेरी पुरुष इंद्रिय क्रोधित सांप के फन के समान चेष्टा कर सके, इसी कारण मैं तुझे यह ओषधि प्रदान करता हूं. (३)

उच्छुष्मौषधीनां सार ऋषभाणाम्.
सं पुंसामिन्द्र वृष्ण्यमस्मिन् धेहि तनूवशिन् (४)

वीर्य वर्धक ओषधियों में श्रेष्ठ तथा गर्भाधान में समर्थ पुरुषों का सार यह ओषधि तुझे वीर्य युक्त करे. हे इंद्र! पुष्ट करने वाली ओषधियों में जो वीर्य है, उसे

इस पुरुष के शरीर में धारण करो. (४)

अपां रसः प्रथमजोऽथो वनस्पतीनाम्.
उत सोमस्य भ्रातास्युतार्शमसि वृष्ण्यम् (५)

हे कपित्थ की जड़! तू जलों के मंथन के समय सब से पहले रस के रूप में उत्पन्न हुई. तू सभी वृक्षों का सार और सोम की सजातीय है. तू अंगिरा आदि ऋषियों के मंत्रों से उत्पन्न वीर्य है. (५)

अद्याग्ने अद्य सवितरद्य देवि सरस्वति.
अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः (६)

हे अग्नि, सविता, देवी सरस्वती और ब्रह्मणस्पति! इस वीर्य चाहने वाले पुरुष की पुरुषइंद्रिय को आज वीर्य प्रदान कर के धनुष के समान तान दो. (६)

आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि.
क्रमस्वर्श इव रोहितमनवग्लायता सदा (७)

हे वीर्य के इच्छुक पुरुष! मैं तेरी पुरुषइंद्रिय को अपने मंत्र के प्रभाव से धनुष पर चढ़ी डोरी के समान सशक्त बनाता हूं. इस कारण तू गर्भाधान करने में समर्थ बैल के समान प्रसन्न मन से सदा अपनी पत्नी पर आक्रमण कर. (७)

अश्वस्याश्वतरस्याजस्य पेत्वस्य च.
अथ ऋषभस्य ये वाजास्तानस्मिन् धेहि तनूवशिन् (८)

हे ओषधि! घोड़ों, बच्चों, बकरों, मेढ़ों और बैलों में जो वीर्य है, तू इस पुरुष के शरीर में वैसा ही वीर्य स्थापित कर. (८)

सूक्त पांचवां देवता—वृषभ

सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्.
तेना सहस्येना वयं नि जनान्स्वापयामसि (१)

कामनाओं एवं जल की वर्षा करने वाले सूर्य उदयाचल के समीपवर्ती सागर से उदय होते हैं. उदित एवं शत्रुओं को वश में करने वाले सूर्य के द्वारा हम अपने सामने स्थित व्यक्तियों को निद्रा-परवश बनाते हैं. (१)

न भूमिं वातो अति वाति नाति पश्यति कश्चन.
स्त्रियश्च सर्वाः स्वापय शुनश्चेन्द्रसखा चरन् (२)

भूमि पर वायु अधिक न चले अर्थात तेज हवा के कारण लोगों की नींद न टूटे. सोए हुए व्यक्तियों में से कोई भी दूसरों को न देख सके. हे इंद्र के मित्र वायु! तुम प्राण वायु के रूप में शरीर में वर्तमान रह कर सभी समीपवर्ती स्त्रियों और कुत्तों को सुला दो. (२)

प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया नारीर्या वह्यशीवरी:.
स्त्रियो याः पुण्यगन्धयस्ताः सर्वाः स्वापयामसि (३)

जो स्त्रियां आंगन में अथवा पलंग पर सो रही हैं अथवा जो स्त्रियां झूले आदि में सोने की अभ्यस्त हैं और उत्तम गंध वाली हैं, उन सब को मैं सुलाता हूं. (३)

एजदेजदजग्रभं चक्षुः प्राणमजग्रभम्.
अङ्गान्यजग्रभं सर्वा रात्रीणामतिशर्वरे (४)

सभी गतिशील प्राणियों को मैं ने सुला दिया. उन के नेत्र और नासिका निद्रा द्वारा गृहीत हैं. उन के हस्त, चरण आदि को भी मैं ने निद्रा मग्न करा दिया है. यह सब मध्य रात्रि के समय किया है, जब अंधकार की अधिकता होती है. (४)

य आस्ते यश्चरति यश्च तिष्ठन् विपश्यति.
तेषां सं दध्मो अक्षीणि यथेदं हर्म्यं तथा (५)

हमारे संचरण के समय जो मार्ग में बैठा है तथा जो ठहर कर देख रहा है, मैं उन सब की आंखें इस प्रकार बंद करता हूं, जिस प्रकार दिखाई देने वाला यह भवन देखने में असमर्थ है. (५)

स्वप्तु माता स्वप्तु पिता स्वप्तु श्वा स्वप्तु विश्पतिः.
स्वपन्त्वस्यै ज्ञातयः स्वप्त्वयमभितो जनः (६)

जिस स्त्री को निद्रित कर के हम वश में करने के इच्छुक हैं, उस की माता सबसे पहले सो जाए. इस के पश्चात उस का पिता, घर की रक्षा करने वाला कुत्ता और घर का स्वामी उस का पति भी सो जाए. उस के बंधुबांधव एवं उस के घर की रक्षा के लिए नियुक्त चारों ओर स्थित जन भी सो जाएं. (६)

स्वप्न स्वप्नाभिकरणेन सर्वं नि ष्वापया जनम्.
ओत्सूर्यमन्यान्त्स्वापयाव्युषं जागृतादहमिन्द्र इवारिष्टो अक्षितः (७)

हे स्वप्न के देव! शैया आदि पर सोने वाले इन जनों को तथा अन्य व्यक्तियों को सूर्योदय तक निद्रा मग्न रखो. सब के सो जाने पर हिंसा और क्षय से रहित हो कर इंद्र के समान मैं भोग में संलग्न रहूं एवं जागरण करूं. (७)

सूक्त छठा — देवता—ब्राह्मण आदि

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः.
स सोमं प्रथमः पपौ स चकारारसं विषम् (१)

सर्पों में सब से पहले तक्षक उत्पन्न हुआ जो मनुष्यों में ब्राह्मण के समान सर्पों में पूज्य था. उस के दस शीश और दस मुख थे. क्षत्रिय आदि जातियों वाले सर्पों से पहले उत्पन्न होने के कारण तक्षक ने सब से पहले स्वर्ग लोक में स्थित अमृत पिया.

सोम अर्थात अमृत पीने वाला ब्राह्मण तक्षक कंद मूल, आदि से उत्पन्न रस को विष के प्रभाव से हीन बनाए. (१)

यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावत् सप्त सिन्धवो वितष्ठिरे.
वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम् (२)

धरती और आकाश का जितना विस्तार है तथा सागर जितने परिमाण में स्थित है, मैं इन दोनों स्थानों में स्थित कंद, मूल, फल से उत्पन्न विष को नष्ट करने वाले मंत्रों से युक्त वाणी का उच्चारण करता हूं. (२)

सुपर्णस्त्वा गरुत्मान् विष प्रथममावयत्.
नामीमदो नारूरुप उतास्मा अभवः पितुः (३)

हे विष! सब से पहले सुंदर पंखों वाले गरुड़ ने तुम्हें खाया था. इस कारण तू इस पुरुष को मतवाला मत बना एवं विमूढ़ मत कर. हे विष! तू इस के लिए अन्न बन जा. (३)

यस्त आस्यत् पञ्चाङ्गुरिर्वक्राच्चिदधि धन्वनः.
अपस्कम्भस्य शल्यान्निरवोचमहं विषम् (४)

पांच अंगुलियों वाले जिस हाथ ने डोरी चढ़े हुए होने के कारण झुके हुए धनुष के द्वारा पुरुष के शरीर में विष को पहुंचाया है, उस हाथ को मैं सुपारी वृक्ष के टुकड़े से मंत्रों की सहायता से प्रभावहीन करता हूं. (४)

शल्याद् विषं निरवोचं प्राञ्जनादुत पर्णधेः.
अपाष्ठाच्छृङ्गात् कुल्मलान्निरवोचमहं विषम् (५)

बाणों में लगे फल से जिस विष ने शरीर में प्रवेश किया, उसे मैं मंत्र बल से बाहर निकालता हूं. विषैले पत्तों वाले वृक्ष से, लेप से, पत्तों से, पशु के सींग से एवं मल से जो विष उत्पन्न हुआ है, उसे मैं अपने मंत्र बल से शरीर से अलग करता हूं. (५)

अरसस्त इषो शल्योऽथो ते अरसं विषम्.
उतारसस्य वृक्षस्य धनुष्टे अरसारसम् (६)

हे बाण! तेरा विष बुझा हुआ फल विष रहित हो जाए. इस के बाद तेरा विष प्रभावहीन हो जाए. सारहीन वृक्ष से बना हुआ और तुझ से संबंधित धनुष भी प्रभावहीन हो जाए. (६)

ये अपीषन् ये अदिहन् य आस्यन् ये अवासृजन्.
सर्वे ते वध्रयः कृता वध्रिर्विषगिरिः कृतः (७)

जो लोग विषपूर्ण जड़ीबूटियों को पीस कर खिलाते हैं, जो लोग लेप के रूप

में विष का प्रयोग करते हैं, जो विष को दूर से फेंकते हैं तथा जो समीप रह कर अन्न, फल आदि में विष मिला देते हैं, मैं ने अपने मंत्र के प्रभाव से इन सब को शक्तिहीन बना दिया है. जिन पर्वतों पर कंद मूल के रूप में विष उत्पन्न होता था, उन्हें भी मैं ने शक्तिहीन कर दिया है. (७)

वध्रयस्ते खनितारो वध्रिस्त्वमस्योषधे.
वध्रिः स पर्वतो गिरिर्यतो जातमिदं विषम् (८)

हे विषयुक्त जड़ीबूटी! तुझे खोदने वाले शक्तिहीन हो जाएं तथा मेरे मंत्र के प्रभाव से तू भी प्रभावहीन हो जा. जिन पर्वतों पर विषैले कंदमूल उत्पन्न होते हैं, वे भी शक्तिहीन हो जाएं. (८)

सूक्त सातवां — देवता—वनस्पति

वारिदं वारयातै वरणावत्यामधि.
तत्रामृतस्यासिक्तं तेना ते वारये विषम् (१)

वारण वृक्ष जहां उत्पन्न होते हैं, उस वारणावती का विषहारी जल हम मनुष्यों के विष को दूर करता है. उस जल में स्वर्ग स्थित अमृत का विषनाशक प्रभाव विद्यमान है. इस कारण मैं उस अमृतमय जल से तेरे कंद, मूल आदि से उत्पन्न विष को दूर करता हूं. (१)

अरसं प्राच्यं विषमरसं यदुदीच्यम्.
अथेदमधराच्यं करम्भेण वि कल्पते (२)

मेरी मंत्र शक्ति से पूर्व दिशा और उत्तर दिशा में उत्पन्न होने वाला विष प्रभावहीन हो जाए. दक्षिण, पश्चिम तथा नीचे की दिशा में उत्पन्न होने वाला विष करंभ (भात) से सामर्थ्यहीन हो जाए. (२)

करम्भं कृत्वा तिर्यं पीबस्पाकमुदारथिम्.
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो जक्षिवान्स न रूरुपः (३)

हे दुष्ट शरीर वाले विष! बिना जाने हुए खाया हुआ तू चर्बी को जलाने वाला और उदर संबंधी रोगों का जनक है. इस पुरुष ने तुझे करंभ (भात) समझ कर खाया था. तू इस पुरुष को मूर्च्छित मत बना. (३)

वि ते मदं मदावति शरमिव पातयामसि.
प्र त्वा चरुमिव येषन्तं वचसा स्थापयामसि (४)

हे मूर्च्छित करने वाली जड़ीबूटी! तेरे मूर्च्छा लाने वाले विष को मैं शरीर से इस प्रकार दूर करता हूं, जिस प्रकार धनुष से छूटा हुआ बाण दूर गिरता है. हे विष! तू गुप्त रूप से जाने वाले दूत के समान शरीर के अंगों में व्याप्त हो जाता है. मैं अपनी

मंत्र शक्ति से तुझे शरीर से निकाल कर दूर करता हूं. (४)

परि ग्राममिवाचितं वचसा स्थापयामसि.
तिष्ठा वृक्ष इव स्थाम्न्यभ्रिखाते न रूरुपः (५)

हे खोदने से प्राप्त होने वाली जड़ी बूटी! जनसमूह के समान प्रभावशाली तेरे विष को भी हम अपनी मंत्र शक्ति के द्वारा शरीर से निकाल कर दूर स्थापित करते हैं. तू अपने स्थान पर वृक्ष के समान निश्चल रह तथा इस पुरुष को मूर्च्छित मत कर. (५)

पवस्तैस्त्वा पर्यक्रीणन् दूर्शेभिरजिनैरुत.
प्रक्रीरसि त्वमोषधेऽभ्रिखाते न रूरुपः (६)

हे विषमूलक जड़ीबूटी! महर्षियों ने तुझे झाड़ू के तिनकों के बदले खरीदा है. तू हरिण आदि पशुओं के चर्म के बदले क्रय की गई है. तू बड़े परिश्रम से खरीदी गई है, इसलिए यहां से दूर हो जा और इस पुरुष को मूर्च्छित मत कर. (६)

अनाप्ता ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे.
वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे (७)

हे पुरुषो! तुम्हारे प्रतिकूल आचरण करने वाले शत्रुओं ने पहले जो यज्ञ आदि कर्म किए हैं, उन कर्मों के द्वारा वे हमारे पुत्र, पौत्र आदि को इस स्थान पर हिंसित न करें. किया जाता हुआ यह चिकित्सा कर्म मैं उन की रक्षा के लिए तुम्हारे सामने उपस्थित करता हूं. (७)

सूक्त आठवां

देवता—जल

भूतो भूतेषु पय आ दधाति स भूतानामधिपतिर्बभूव.
तस्य मृत्युश्चरति राजसूयं स राजा राज्यमनु मन्यतामिदम् (१)

अभिषेक द्वारा ऐश्वर्य प्राप्त करने वाला राजा ही समृद्ध जनपदों में भोज्य सामग्री पहुंचाता है. इस प्रकार वह प्राणियों का स्वामी हुआ. मृत्यु के देव यमराज दुष्टों को दंड दिलाने और सज्जनों का पालन करने के लिए ही राजा का राजसूय यज्ञ कराते हैं. वह राजा इस राज्य को तथा दुष्ट निग्रह और सज्जन परिपालन के कर्म को स्वीकार करे. (१)

अभि प्रेहि माप वेन उग्रश्चेत्ता सपत्नहा.
आ तिष्ठ मित्रवर्धन तुभ्यं देवा अधि ब्रुवन् (२)

हे राजा! तुम सिंहासन तथा हाथी, रथ, घोड़ा आदि सवारियों के प्रति अनिच्छा मत करो. तुम शक्तिशाली एवं कार्य अकार्य का ज्ञान रखने वाले हो. तुम शत्रु हंता हो, राजसिंहासन पर बैठ कर तुम मित्रों का कल्याण करो. इंद्र आदि देव तुम्हें अपना कहें. (२)

637/10

आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषञ्छ्रियं वसानश्चरति स्वरोचिः.
महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ (३)

सिंहासन पर बैठे हुए राजा की सब लोग सेवा करें. राजा भी सिंहासन पर बैठ कर राज्यलक्ष्मी को धारण करे, तेजस्वी बने तथा प्रजा पालन में तत्पर हो. अभिषेक से उत्पन्न राज्यतेज दसों दिशाओं में फैल जाए. शत्रुओं को दूर भगाने वाले राजा के नाममात्र से शत्रु भयभीत होने लगें. यह राजा शत्रु, मित्र, पत्नी आदि के प्रति विविध प्रकार का व्यवहार करता हुआ दंड, युद्ध, अध्ययन आदि कर्म करे. (३)

व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे वि क्रमस्व दिशो महीः.
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्त्वापो दिव्याः पयस्वतीः (४)

हे राजा! तुम व्याघ्रचर्म पर बैठ कर और बाघ के समान अपराजेय हो कर पूर्व आदि विशाल दिशाओं को जीतो. तेजस्वी होने के कारण सारी प्रजाएं तुम्हारी कामना करें तथा दिव्य जल तुम्हारे राज्य को प्राप्त हो, जिस से तुम्हारे राज्य में अकाल न पड़े. (४)

या आपो दिव्याः पयसा मदन्त्यन्तरिक्ष उत वा पृथिव्याम्.
तासां त्वा सर्वासामपामभि षिञ्चामि वर्चसा (५)

हे राजा! आकाश से बरसने वाले जो जल अपने रस से, प्राणियों को तृप्त करते हैं, अंतरिक्ष और पृथ्वी पर जो जल स्थित हैं, मैं तीनों लोकों में स्थित इन जलों से तुम्हारा अभिषेक करता हूं. (५)

अभि त्वा वर्चसासिचन्नापो दिव्याः पयस्वतीः.
यथासो मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत् (६)

हे राजा! दिव्य जल अपने तेज से तुम्हें सींचे, जिस से तुम मित्रों के बढ़ाने वाले बनो. सब को प्रेरणा देने वाले सविता देव तुम्हें सामर्थ्य दें. (६)

एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः सिंहं हिन्वति महते सौभगाय.
समुद्रं न सुभुवस्तस्थिवांसं मर्मृज्यन्ते द्वीपिनमप्स्व१न्तः (७)

नदी के रूप में जल जिस प्रकार सागर को प्रसन्न करते हैं, उसी प्रकार दिव्य जल राजा को शक्तिशाली बनाएं. जिस प्रकार माता पुत्र का आलिंगन करती है, उसी प्रकार महान सौभाग्य प्राप्त करने के लिए जल राजा को शक्ति पूर्ण बनाते हैं. जल में वर्तमान गैंडे के समान अपराजेय राजा को सेवक जन अभिषेक के द्वारा और वस्त्राभूषणों से अलंकृत करें. (७)

सूक्त नौवां — देवता—त्रैककुदांजन

एहि जीवं त्रायमाणं पर्वतस्यास्यक्ष्यम्.

विश्वेभिर्देवैर्दत्तं परिधिर्जीवनाय कम् (१)

हे अंजन मणि! तू त्रिककुद नामक पर्वत से जीवित प्राणियों की रक्षा के लिए आ. तू त्रिककुद पर्वत की आंख है. इंद्र आदि सभी देवों ने रोग रहित रहने के लिए तुझे चार दीवारी के रूप में प्रदान किया है. (१)

परिपाणं पुरुषाणां परिपाणं गवामसि.
अश्वनामर्वतां परिपाणाय तस्थिषे (२)

हे त्रिककुद पर्वत पर उत्पन्न अंजन मणि! तू पुरुषों, गायों, घोड़ों और घोड़ियों की रक्षा के लिए स्थित है. (२)

उतासिं परिपाणं यातुजम्भनमाञ्जन.
उतामृतस्य त्वं वेत्थाथो असि जीवभोजनमथो हरितभेषजम् (३)

हे अंजन! तू राक्षस, पिशाच आदि से उत्पन्न पीड़ा का नाश करने वाला है. तू अमृत का सार जानता है. तू अनिष्ट निवारण करने के कारण जीवों का पालक है. तू पांडु रोग से उत्पन्न कालेपन को दूर करने वाला है. (३)

यस्याञ्जन प्रसर्पस्यङ्गमङ्गं परुष्परुः.
ततो यक्ष्मं वि बाधस उग्रो मध्यमशीरिव (४)

हे अंजन! तू जिस पुरुष के शरीर के सभी अंगों और अंगों की संधियों में प्रवेश कर के व्याप्त होता है, उस के शरीर से तू यक्ष्मा रोग को इस प्रकार दूर करता है, जिस प्रकार शक्तिशाली वायु मेघों के जल को क्षण मात्र में दूर ले जाती है. (४)

नैनं प्राप्नोति शपथो न कृत्या नाभिशोचनम्.
नैनं विष्कन्धमश्नुते यस्त्वा बिभर्त्याञ्जन (५)

हे अंजन! जो पुरुष तुझे धारण करता है, उस तक दूसरे के द्वारा प्राप्त किया हुआ पाप नहीं पहुंचता तथा दूसरे व्यक्तियों द्वारा किए गए अभिचार से उत्पन्न कृत्या नाम की राक्षसी भी उस तक न पहुंचे. कृत्या से उत्पन्न शोक भी तुझे प्राप्त न हो तथा विघ्न भी उस तक न पहुंचे. (५)

असन्मन्त्राद् दुष्वप्न्याद् दुष्कृताच्छमलादुत.
दुर्हार्दश्चक्षुषो घोरात् तस्मान्नः पाह्याञ्जन (६)

हे अंजन मणि! अभिचार संबंधी बुरे मंत्रों से उत्पन्न दुःख से, बुरे स्वप्नों से प्राप्त दुःख से, पूर्वजन्म में किए हुए पाप से, दूसरे के द्वारा किए हुए पाप से, दूषित मन से तथा दूसरों के क्रूर नेत्र से हमारी रक्षा करो. (६)

इदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम्.
सनेयमश्वं गामहमात्मानं तव पूरुष (७)

हे अंजन! तेरी महिमा को जानता हुआ मैं यथार्थ ही कहूंगा, असत्य नहीं बोलूंगा. तुम्हारा दास बन कर मैं घोड़ा, गाय एवं जीवन को प्राप्त करूं. (७)

त्रयो दासा आञ्जनस्य तक्मा बलास आदहिः.
वर्षिष्ठः पर्वतानां त्रिककुन्नाम ते पिता (८)

कठिनता से जीवित रखने वाला ज्वर, सन्निपात और सर्प का विष—ये तीन दास के समान अंजन मणि के वश में हैं. अर्थात अंजनमणि इन के विकार को दूर कर देती है. पर्वतों में सब से प्राचीन त्रिककुद तुम्हारा पिता है. (८)

यदाञ्जनं त्रैककुदं जातं हिमवतस्परि.
यातूंश्च सर्वाञ्जम्भयत् सर्वाश्च यातुधान्यः (९)

हिमालय पर्वत के ऊपर के भाग में त्रिककुद नाम का पर्वत है. वहां उत्पन्न अंजन वृक्ष सभी राक्षसों और सभी राक्षसियों को नष्ट करे. (९)

यदि वासि त्रैककुदं यदि यामुनमुच्यसे.
उभे ते भद्रे नाम्नी ताभ्यां नः पाह्याञ्जन (१०)

हे अंजन! तू मनुष्यों द्वारा चाहे त्रिककुद पर्वत से संबंधित कहा जाता है, अथवा यमुना से संबंधित. तेरे त्रैककुद और यामुन दोनों ही नाम कल्याणकारी हैं. तू अपने दोनों नामों के द्वारा हमारी रक्षा कर. (१०)

सूक्त दसवां — देवता—शंखमणि, तृशन

वाताज्जातो अन्तरिक्षाद् विद्युतो ज्योतिषस्परि.
स नो हिरण्यजाः शङ्खः कृशनः पात्वंहसः (१)

वायु से उत्पन्न, अंतरिक्ष से उत्पन्न, बिजली से उत्पन्न, ज्योति मंडल के ऊपर के स्थान से उत्पन्न तथा स्वर्ग से उत्पन्न शंख पाप से हमारी रक्षा करे. (१)

यो अग्रतो रोचनानां समुद्रादधि जज्ञिषे.
शङ्खेन हत्वा रक्षांस्यत्त्रिणो वि षहामहे (२)

हे शंख! तू प्रकाशित होने वाले नक्षत्रों के आगे वर्तमान होता है तथा सागर के ऊपर वाले भाग पर जन्म लेता है. हम तेरे द्वारा राक्षसों और पिशाचों को पराजित करते हैं. (२)

शङ्खेनामीवाममतिं शङ्खेनोत सदान्वाः.
शङ्खो नो विश्वभेषजः कृशनः पात्वंहसः (३)

हम मणि के रूप में प्राप्त शंख से रोग और सभी अनर्थों के मूल अज्ञान के साथसाथ दरिद्रता को भी पराजित करते हैं. सभी उपद्रवों का विनाशक और स्वर्ण से उत्पन्न शंख पाप से हमारी रक्षा करे. (३)

दिवि जातः समुद्रजः सिन्धुतस्पर्याभृतः.
स नो हिरण्यजाः शङ्ख-आयुष्प्रतरणो मणिः (४)

शंख पहले स्वर्ग लोक में और उस के बाद समुद्र में उत्पन्न हुआ. नदी के उद्गम स्थान से लाया हुआ तथा स्वर्ण निर्मित शंख और शंख से निर्मित मणि हमारी आयु वृद्धि करने वाली हो. (४)

समुद्राज्जातो मणिर्वृत्राज्जातो दिवाकरः.
सो अस्मान्त्सर्वतः पातु हेत्या देवासुरेभ्यः (५)

समुद्र अथवा आकाश से उत्पन्न मणि शंख का उपादान है अर्थात मणि से ही शंख का निर्माण होता है. यह मणि निर्मित शंख बादलों से बाहर निकले सूर्य के समान दमकता है. शंख से निर्मित यह मणि हमें देवों और असुरों के भय से बचाए. (५)

हिरण्यानामेकोऽसि सोमात् त्वमधि जज्ञिषे.
रथे त्वमसि दर्शत इषधौ रोचनस्त्वं प्र ण आयूंषि तारिषत् (६)

हे शंख! तू स्वर्ण, रजत आदि भास्वर द्रव्यों में प्रमुख है, क्योंकि तू अमृतमय चंद्र मंडल से उत्पन्न हुआ है. युद्धों में तू रथों पर दिखाई देने योग्य है. तरकश में भरा हुआ तू दीप्त दिखाई देता है. इस प्रकार का शंख अथवा शंख से निर्मित मणि हमारी आयु को बढ़ाए. (६)

देवानामस्थि कृशनं बभूव तदात्मन्वच्चरत्यप्स्व१न्तः.
तत् ते बध्नाम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय
शतशारदाय कार्शनस्त्वाभि रक्षतु (७)

इंद्र आदि देवों का जो रक्षक था, वह स्वर्ण शंख का कारण हुआ अर्थात स्वर्ण से शंख का निर्माण हुआ. वह स्वर्ण शंख के रूप में शरीर धारण कर के जलों के भीतर विद्यमान रहता है. हे यज्ञोपवीतधारी ब्रह्मचारी! मैं इस प्रकार से शंख के रूप में स्थित स्वर्ण को तेरे शरीर में चिरकाल जीवन के लिए बांधता हूं. यह स्वर्ण संबंधी मणि तुझे शक्ति, तेज एवं दीर्घ आयु प्रदान करने के साथसाथ सौ वर्ष तक तेरी रक्षा करे. (७)

सूक्त ग्यारहवां — देवता—इंद्र के रूप में अनड्वान

अनड्वान् दाधार पृथिवीमुत द्यामनड्वान् दाधारोर्व१न्तरिक्षम्.
अनड्वान् दाधार प्रदिशः षडुर्वीरनड्वान् विश्वं भुवनमा विवेश (१)

गाड़ी ढोने में समर्थ बैल हल जोतने आदि के कारण पृथ्वी का पोषक है. यही बैल चरु, पुरोडाश आदि की उत्पत्ति में सहायक होने के कारण आकाश और अंतरिक्ष को भी धारण करता है. पूर्व आदि महा दिशाओं का पोषण कर्ता भी यही

धर्म रूपी बैल है. इस प्रकार ब्रह्मा द्वारा बनाया गया यह बैल पृथ्वी आदि सभी लोकों की रक्षा के लिए उन में प्रवेश कर के स्थित रहता है. (१)

अनड्वानिन्द्रः स पशुभ्यो वि चष्टे त्रयाञ्छक्रो वि मिमीते अध्वनः.
भूतं भविष्यद् भुवना दुहानः सर्वा देवानां चरति व्रतानि (२)

यह बैल इंद्र है. इसलिए सभी पशुओं की अपेक्षा अधिक तेजस्वी है. जिस प्रकार बैल अविच्छन्न रूप से संतान उत्पन्न करता है, इंद्र उसी प्रकार भूत, भविष्य और वर्तमान वस्तुओं को उत्पन्न करता हुआ अन्य देवों के कार्य करता है. (२)

इन्द्रो जातो मनुष्येष्वन्तर्घर्मस्तप्तश्चरति शोशुचानः.
सुप्रजाः सन्त्स उदारे न सर्षद् यो नाश्नीयादनडुहो विजानन् (३)

मनुष्यों में वह बैल इंद्र के समान है. वह बैल धर्म है. वह सूर्य के रूप में सारे जगत को ऊर्जा एवं प्रकाश देता हुआ विचरण करता है. जो हमारे द्वारा बैल को दिया गया महत्त्व विशेष रूप से जानता है, वह सभी सुखों को भोगता है और शोभन संतान युक्त हो कर देह त्याग करने के बाद संसार में नहीं आता. (३)

अनड्वान् दुहे सुकृतस्य लोक ऐनं प्याययति पवमानः पुरस्तात्.
पर्जन्यो धारा मरुत ऊधो अस्य यज्ञः पयो दक्षिणा दोहो अस्य (४)

इंद्रदेव रूपी यह बैल यज्ञ आदि पुण्य से प्राप्त लोकों में अधिक फल देता है. यज्ञ के आरंभ में शोधन किया गया यह अमृतमय सोम इस बैल को रस से भर देता है. वृष्टि प्रेरकदेव दुग्ध की धारा है. उनन्चास पवन ऐन है, सभी प्रकार का यज्ञ इस का दूध है और यज्ञ में दी गई दक्षिणा ही दुहने की क्रिया है, इस प्रकार इस इंद्र और धर्म रूपी बैल का दोहन अक्षय होता है. (४)

यस्य नेशे यज्ञपतिर्न यज्ञो नास्य दातेशे न प्रतिग्रहीता.
यो विश्वजिद् विश्वभृद् विश्वकर्मा घर्मं नो ब्रूत यतमश्चतुष्पात् (५)

यजमान इस देवता रूप बैल का स्वामी नहीं है. यज्ञ, दान देने वाला और दान ग्रहण करने वाला भी इस का स्वामी नहीं है. यह विश्व को जीतने वाला तथा विश्व का भरणपोषण करने वाला है. समस्त विश्व इसी का कार्य है. चार चरणों वाला यह वृषभ हमें तेजस्वी सूर्य का स्वरूप बताता है. (५)

येन देवाः स्वरारुरुहुर्हित्वा शरीरममृतस्य नाभिम्.
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं घर्मस्य व्रतेन तपसा यशस्यवः (६)

इस वृषभ रूप धर्म की सहायता से देवगण शरीर त्याग कर स्वर्ग में आरूढ़ हुए हैं. वह स्वर्ग अमृत की नाभि है. इस वृषभ की सहायता से हम पुण्य के फल के रूप में प्राप्त भूलोक पर विजय करते हैं. दीप्ति वाले सूर्य से संबंधित वृत्त के द्वारा

हम आदित्य के सुख की इच्छा करते हैं. (६)

इन्द्रो रूपेणाग्निर्वहेन प्रजापतिः परमेष्ठी विराट्.
विश्वानरे अक्रमत वैश्वानरे अक्रमतानडुह्यक्रमत.
सोऽदृंहयत सोऽधारयत (७)

यह वृषभ आकृति से इंद्र तथा अपने कंधे से अग्नि के समान है. इस प्रकार यह वृषभ प्रजापति रूप है. (७)

मध्यमेतदनडुहो यत्रैष वह आहितः.
एतावदस्य प्राचीनं यावान् प्रत्यङ् समाहितः (८)

इस वृषभ के शरीर में प्रजापति ब्रह्म प्रविष्ट हैं. उन्होंने इस के शरीर के मध्य भाग को भार वहन करने योग्य बनाया है. इस के मध्य भाग में भार रखा है. इस के अगले और पिछले दोनों भाग समान हैं. (८)

यो वेदानडुहो दोहान्त्सप्तानुपदस्वतः.
प्रजां च लोकं चाप्नोति तथा सप्तऋषयो विदुः (९)

जो पुरुष इस बैल के क्षय रहित जौ आदि रूप सात दोहनों को जानता है, वह पुत्र, पौत्र आदि संतान तथा स्वर्ग आदि लोकों को प्राप्त करता है. इस बात को सप्त ऋषि जानते हैं. (९)

पद्भिः सेदिमवक्रामन्निरां जङ्घाभिरुत्खिदन्.
श्रमेणानड्वान् कीलालं कीनाशश्चाभि गच्छतः (१०)

यह प्रजापति रूप वृषभ निराशा उत्पन्न करने वाली दरिद्रता को अपने चारों चरणों से औंधे मुंह गिरा कर अपनी जंघाओं से धरती को खोदता है. यह बैल अपने श्रम से किसान को अन्न देता है. (१०)

द्वादश वा एता रात्रीर्व्रत्या आहुः प्रजापतेः.
तत्रोप ब्रह्म यो वेद तद् वा अनडुहो व्रतम् (११)

इस वृषभ में व्याप्त यज्ञात्मक प्रजापति के व्रत के योग्य बारह रात्रियों को विद्यमान बताते हैं. उन रात्रियों में प्रजापति रूपी वृषभ को जो जानता है, वही इस व्रत का अधिकारी है. (११)

दुहे सायं दुहे प्रातर्दुहे मध्यन्दिनं परि.
दोहा ये अस्य संयन्ति तान् विद्मानुपदस्वतः (१२)

ऊपर बताए गए लक्षणों वाले वृषभ को मैं सायंकाल, प्रातःकाल और दोपहर के समय दुहता हूं. मैं सभी यज्ञों के अनुष्ठान के फलों को भी दुहता हूं. इस वृषभ के जो दोहन फल प्रदान करते हैं, उन्हें मैं जानता हूं. (१२)

सूक्त बारहवां — देवता—रोहिणी वनस्पति

रोहण्यसि रोहण्यस्थ्नश्छिन्नस्य रोहणी.
रोहयेदमरुन्धति (१)

हे लाल रंग वाली लाख! तू घाव को भरने वाली है, इसलिए तू तलवार की धार से कटे हुए इस अंग से बहते रक्त को उसी स्थान पर रोक दे. हे अरुंधती देवी! तू इस रक्त निकले हुए अंग को रक्त युक्त एवं बिना घाव वाला बना. (१)

यत् ते रिष्टं यत् ते द्युत्तमस्ति पेष्ट्रं त आत्मनि.
धाता तद् भद्रया पुनः सं दधत् परुषा परुः (२)

हे शस्त्र से घायल पुरुष! तेरा जो अंग घायल और शस्त्र प्रहार की वेदना से जल रहा है तथा तेरा जो अंग मुग्दर आदि के प्रहार से भग्न हो गया है, विधाता तेरे उन अंगों को लाख के द्वारा जोड़ दे. (२)

सं ते मज्जा मज्ज्ञा भवतु समु ते परुषा परुः.
सं ते मांसस्य विस्त्रस्तं समस्थ्यपि रोहतु (३)

हे घायल पुरुष! तेरे शरीर की जो चर्बी चोट से विभक्त हो गई है, वह जुड़ जाए और तू सुख का अनुभव करे. तेरे शरीर की टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाए. प्रहार के घाव से कटा हुआ मांस सुखपूर्वक उत्पन्न हो जाए तथा तेरे शरीर की टूटी हुई हड्डी सुख से जुड़ जाए. (३)

मज्जा मज्ज्ञा सं धीयतां चर्मणा चर्म रोहतु.
असृक् ते अस्थि रोहतु मांसं मांसेन रोहतु (४)

तेरी चर्बी से चर्बी मिल जाए. चमड़ा चमड़े से मिल जाए और तेरे शरीर से टपकता हुआ रक्त मंत्र और ओषधि के प्रभाव से पुनः हड्डी को प्राप्त हो. तेरा मांस मांस से मिल जाए. (४)

लोम लोम्ना सं कल्पया त्वचा सं कल्पया त्वचम्
असृक् ते अस्थि रोहतु छिन्नं सं धेह्योषधे (५)

हे लाख नाम की ओषधि! तू प्रहार के कारण शरीर से पृथक त्वचा को त्वचा से मिला दे. हे घायल पुरुष! तेरी हड्डियों पर रक्त दौड़ने लगे. हे ओषधि! शरीर का जो भी कटा हुआ भाग है, उसे जोड़ कर दैनिक गतिविधियों में सक्षम बना. (५)

स उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः.
प्रति तिष्ठोर्ध्वः (६)

हे शस्त्र के प्रहार से घायल पुरुष! मंत्र और ओषधि की शक्ति से तेरा घायल

अंग स्वस्थ हो गया है. तू चारपाई से उठ कर उसी प्रकार तेजी से दौड़, जिस प्रकार रथ उत्तम पहियों और दृढ़ धुरों से युक्त हो कर तेजी से चलता है. (६)

यदि कर्त पतित्वा संशश्रे यदि वाशमा प्रहृतो जघान.
ऋभू रथस्येवाङ्गानि सं दधत् परुषा परुः (७)

हे पुरुष! यदि काटने वाला आयुध तेरे शरीर पर गिर कर उस को काट रहा है अथवा दूसरों के द्वारा फेंका हुआ पत्थर तुझे चोट पहुंचा रहा है, तेरे शरीर के उन अंगों को मंत्र और ओषधि का प्रभाव उसी प्रकार स्वस्थ बनाए, जिस प्रकार बढ़ई रथ के भिन्न अंगों को जोड़ कर एक कर देता है. (७)

सूक्त तेरहवां देवता—विश्वेदेव

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः.
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः. (१)

हे देवो! यज्ञोपवीत संस्कार वाले इस बालक को धर्म पालन के विषय में सावधान करो. इसे अध्ययन से उत्पन्न ज्ञान आदि फल प्राप्त कराओ. हे देवो! इस ने अनुष्ठान न करने के रूप में जो पाप किया है, उस से इस की रक्षा करो. तुम इसे सौ वर्ष तक जीवित रखो. (१)

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः.
दक्षं ते अन्य आवातु व्य१न्यो वातु यद् रपः (२)

सागर और उस से भी दूर देश से आने वाली दोनों प्रकार की हवाएं चलें. प्राण और अपान वायु इस के शरीर में गति करें. हे उपनयन संस्कार वाले पुरुष! प्राण वायु तुझे बल प्रदान करे तथा अपान वायु तेरे पापों को दूर करे. (२)

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः.
त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे (३)

हे वायु! सभी रोगों का विनाश करने वाली जड़ीबूटी लाओ तथा रोग उत्पन्न करने वाले पाप का विनाश करो. हे वायु! तुम सभी व्याधियों को दूर करने वाली हो, इसीलिए तुम्हें इंद्र आदि देवों का दूत कहा जाता है. (३)

त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः.
त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् (४)

इंद्र आदि देव इस उपनयन संस्कार वाले ब्रह्मचारी की रक्षा करें. उनचास मरुत इस की रक्षा करें. सभी प्राणी इस की इस प्रकार रक्षा करें, जिस से यह पाप रहित हो सके. (४)

आ त्वागमं शन्तातिभिरथो अरिष्टतातिभिः.

दक्षं त उग्रमाभारिषं परा यक्ष्मं सुवामि ते (५)

हे उपनयन संस्कार वाले ब्रह्मचारी! मैं सुख देने वाले मंत्रों और कल्याणकारी कर्मों के साथ तेरे पास आया हूं. मैं तेरे लिए उग्र एवं समृद्धि देने वाला बल लाया हूं. मैं यक्ष्मा रोग को तुझ से दूर भगाता हूं. (५)

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः.
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः (६)

मुझ ऋषि का यह हाथ भाग्य वाला एवं भाग्यवालियों से भी अधिक उत्तम है. मेरा यह हाथ सभी रोगों को दूर करने वाली ओषधि है. इस का स्पर्श सुख देने वाला हो. (६)

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी.
अनामयित्नुभ्यां हस्ताभ्यां ताभ्यां त्वाभि मृशामसि (७)

हे उपनयन संस्कार वाले बालक! प्रजापति के दस उंगलियों वाले हाथों के द्वारा निर्मित जीभ शब्दों के आगेआगे चलती है. सरस्वती का उस में अधिष्ठान है. प्रजापति के उन्हीं रोगनाशक हाथों से मैं तेरा स्पर्श करता हूं. (७)

सूक्त चौदहवां देवता—अग्नि, आज्य

अजो ह्य१ग्नेरजनिष्ट शोकात् सो अपश्यज्जनितारमग्रे.
तेन देवा देवतामग्र आयन् तेन रोहान् रुरुहुर्मेध्यासः (१)

बकरा अग्नि के ताप से उत्पन्न हुआ था. उस ने सभी पशुओं की सृष्टि करने वाले प्रजापति को सब से पहले देखा. सृष्टि के आदि में इंद्र आदि देव उसी बकरे के कारण देवत्व को प्राप्त हुए. उसी बकरे को साधन बना कर अन्य ऋषि भी स्वर्ग आदि लोकों में पहुंचे. (१)

क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यान् हस्तेषु बिभ्रतः.
दिवस्पृष्ठं स्वर्गत्वा मिश्रा देवेभिराध्वम् (२)

हे मनुष्यो! तुम यज्ञ के निमित्त प्रज्वलित अग्नि के द्वारा दुःख रहित स्वर्ग में पहुंचो. अंतरिक्ष की पीठ के समान स्वर्ग में पहुंच कर तुम देवों के समान ऐश्वर्य प्राप्त करो तथा वहीं निवास करो. (२)

पृष्ठात् पृथिव्या अहमन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद् दिवमारुहम्.
दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्व१र्ज्योतिरगामहम् (३)

मैं पृथ्वी की पीठ अर्थात भूलोक से अंतरिक्ष लोक पर और अंतरिक्ष से स्वर्ग लोक पर चढ़ता हूं. दुःख रहित स्वर्ग की पीठ से मैं सूर्य मंडल में स्थित हिरण्यगर्भ रूपी ज्योति को प्राप्त करता हूं. (३)

स्वऽर्यन्तो नापेक्षन्त आ द्यां रोहन्ति रोदसी.
यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे (४)

यज्ञ के फल से प्राप्त होने वाले स्वर्ग को जाने वाले लोग पुत्र, पशु आदि संबंधी सुख की इच्छा नहीं करते हैं. जो यजमान विश्व को धारण करने वाले यज्ञ को भलीभांति जानते हुए उस का विस्तार करते हैं, वे स्वर्ग को जाते हैं. (४)

अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानां चक्षुर्देवानामुत मानुषाणाम्.
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति (५)

हे अग्नि देव! तुम देवों में मुख्य होने के कारण यज्ञ करने योग्य स्थान पर पहुंचो. अग्नि देव हवि पहुंचाने के कारण इंद्र आदि देवों को नेत्र के समान प्रिय हैं तथा मनुष्यों को यज्ञ के द्वारा पुण्य लोक का दर्शन कराते हैं. अग्नि के प्रकाश में यज्ञ करने के इच्छुक एवं यज्ञ करने वाले भृगुवंशी महर्षियों के साथ समान प्रीति वाले बन कर यज्ञ के फल के रूप में स्वर्ग प्राप्त करें. (५)

अजमनज्मि पयसा घृतेन दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तम्.
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् (६)

द्युलोक के योग्य एवं यजमान को स्वर्ग में पहुंचाने वाले बकरे को मैं रस युक्त घी से चुपड़ता हूं. इस प्रकार के बकरे की सहायता से पुण्य के फल के रूप में मिलने वाले स्वर्ग लोक को जाएं तथा दुःख के स्पर्श से शून्य हो कर उत्तम सूर्य ज्योति को प्राप्त करें. (६)

पञ्चौदनं पञ्चभिरङ्गुलिभिर्दर्व्योद्धर पञ्चधैतमोदनम्.
प्राच्यां दिशि शिरो अजस्य धेहि दक्षिणायां दिशि दक्षिणं धेहि पार्श्वम् (७)

हे पाचक? पांच भागों में कटे हुए इस बकरे को अपनी पांच उंगलियों की सहायता से पकड़ी हुई कल्छी के सहारे बटलोई से निकाल कर कुशों पर रखो. पांच भागों में विभाजित इस बकरे के पके हुए सिर को पूर्व दिशा में रखो तथा इस के शरीर के दाएं भाग को दक्षिण दिशा में स्थापित करो. (७)

प्रतीच्यां दिशि भसदमस्य धेह्युत्तरस्यां दिश्युत्तरं धेहि पार्श्वम्. ऊर्ध्वायां
दिश्यऽजस्यानूकं धेहि दिशि ध्रुवायां धेहि पाजस्यमन्तरिक्षे मध्यतो मध्यमस्य (८)

इस बकरे की कमर के पके हुए मांस को पश्चिम दिशा में तथा इस के बाएं भाग के मांस को उत्तर दिशा में रखो. इस की पीठ के मांस को ऊपर की दिशा में तथा पेट के मांस को नीचे की दिशा में रखो. इस के शरीर के मध्यवर्ती मांस को आकाश में स्थापित करो. (८)

शृतमजं शृतया प्रोर्णुहि त्वचा सर्वैरङ्गैः सम्भृतं विश्वरूपम्.
स उत् तिष्ठेतो अभि नाकमुत्तमं पद्भिश्चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु (९)

अपने सभी अंगों से पूर्ण बने बकरे को सभी दिशाओं में व्याप्त करो. हे बकरे! तुम इस लोक से चारों पैरों के द्वारा स्वर्गलोक में चढ़ते हुए चारों दिशाओं को व्याप्त करो. (९)

सूक्त पंद्रहवां देवता—दिशाएं

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजूतानि यन्तु.
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु (१)

पूर्व आदि दिशाएं वायु एवं मेघों से युक्त हो कर उदय हों. जल से भरे हुए मेघ वायु से प्रेरित हो कर परस्पर मिल जाएं. सांड के समान गर्जन करते हुए एवं वायु से प्रेरित मेघ द्वारा बरसाए गए जल धरती को तृप्त करें. (१)

समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम्.
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः (२)

महान एवं शोभन गान वाले मरुद्गण वर्षा के द्वारा हम पर अनुग्रह करें. जलों के रस धरती में बोए गेहूं, जौ आदि के बीजों से मिल जाएं. वर्षा के जल की धाराएं धरती की पूजा करें. वर्षा द्वारा सिंचित भूमि से नाना प्रकार की जौ, गेहूं आदि फसलें जाति भेद से अलगअलग उत्पन्न हों. (२)

समीक्षयस्व गायतो नभांस्यपां वेगासः पृथगुद् विजन्ताम्.
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तांवीरुधो विश्वरूपाः (३)

हे मरुद्गण! तुम स्तुति करते हुए हम लोगों को मेघों के दर्शन कराओ. वेग युक्त जल धाराएं इधरउधर बहें. वर्षा के जल की धाराएं धरती की पूजा करें. वर्षा द्वारा सिंचित भूमि से नाना प्रकार की जौ, गेहूं आदि फसलें जाति भेद से अलगअलग उत्पन्न हों. (३)

गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक्.
सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु (४)

हे पर्जन्य अर्थात वर्षा के देव! गर्जन करते हुए मरुतों का समूह तुम्हारी स्तुति करे. वर्षा के जल की बूंदें अनेक रूप धारण कर के पृथ्वी को गीला करें. (४)

उदीरयत मरुतः समुद्रतस्त्वेषो अर्को नभ उत् पातयाथ.
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु (५)

हे मरुतो! समुद्र से वर्षा का जल ऊपर उठाओ. दीप्तिशाली एवं जल युक्त आकाश बादल को ऊपर उठाएं. सांड के समान गर्जन करते हुए एवं वायु से प्रेरित मेघ द्वारा बरसाए गए जल धरती को तृप्त करें. (५)

अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि.
त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारैषी कृशगुरेत्वस्तम् (६)

हे पर्जन्य! चारों ओर गर्जन करो एवं मेघों में प्रवेश कर के शब्द करो. तुम बरसे हुए जल से धरती को सींचो. तुम्हारे द्वारा प्रेरित गाढ़ा एवं वर्षा करने में समर्थ बादल आए. जल की धाराओं का इच्छुक एवं कृश किरणों वाला सूर्य छिप जाए. (६)

सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत.
मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु (७)

हे मनुष्यो! शोभन दान वाले मरुत तुम्हें तृप्त करें. अजगर से भी मोटी जल धाराएं उत्पन्न हों. वायु के द्वारा प्रेरित मेघ पृथ्वी पर वर्षा करें. (७)

आशामाशां वि द्योततां वाता वान्तु दिशोदिशः.
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु (८)

प्रत्येक दिशा में बिजली चमके और बादलों को लाने वाली हवाएं चलें. वायु के द्वारा प्रेरित मेघ पृथ्वी पर वर्षा करें. (८)

आपो विद्युदभ्रं वर्षं सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत.
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु (९)

हे शोभन दान वाले मरुतो! तुम से संबंधित मेघों का जल, बिजली, जल से भरे हुए मेघ, तथा अजगर के समान मोटी जल धाराएं पृथ्वी पर प्रवाहित हों. (९)

अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव.
स नो वर्षं वनुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि (१०)

बादलों में स्थित जलों के शरीर से मिली हुई बिजली रूपी अग्नि पैदा होने वाली जड़ीबूटियों की स्वामिनी है. उत्पन्न होने वाले प्राणियों के ज्ञाता अग्नि देव प्रजाओं को जीवन देने वाली तथा स्वर्ग का अमृत प्राप्त कराने वाली वर्षा हमें प्रदान करें. (१०)

प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादाप ईरयन्नुदधिमर्दयाति.
प्र प्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेहि (११)

प्रजाओं के पालक सूर्य व्यापक सागर से जलों को वर्षा के निमित्त प्रेरित करते हुए पीड़ित करें. व्यापक एवं घोड़े के समान वेग वाले मेघ का वर्षा जल रूपी वीर्य वृद्धि को प्राप्त हो. हे पर्जन्य! तुम इस शक्तिशाली मेघ के द्वारा हमारे सामने आओ. (११)

अपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः श्वसन्तु गर्गरा अपां वरुणाव नीचीरपः सृज

वदन्तु पृश्निबाहवो मण्डूका इरिणानु (१२)

मेघों के जन्मदाता एवं वर्षा के जल के द्वारा सब के रक्षक सूर्य हमारे पिता हैं. वे वर्षा के जलों को नीचे गिराएं. इस के पश्चात गड़गड़ शब्द करती हुई जल धाराएं बहें. हे वरुण! तुम भी पृथ्वी को सींचने वाले जल मेघों से नीचे गिराओ. श्वेत भुजाओं वाले मेढक तृण रहित भूमि पर चेतना प्राप्त कर के शब्द करें. (१२)

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः.
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः (१३)

एक वर्ष तक सोए रहने वाले मेढक वर्ष के अंत में वर्षा के जल से जागृत हो कर व्रतचारी ब्राह्मणों के समान पर्जन्य को प्रसन्न करने वाली वाणी बोलते हैं. (१३)

उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि.
मध्ये ह्रदस्य प्लवस्व विगृह्य चतुरः पदः (१४)

हे मेढकी! तू प्रसन्नता को प्राप्त कर के टर्रटर्र शब्द कर. हे दर्दुरी! तू ऐसा शब्द कर कि तेरे घोष से वर्षा होने लगे. वर्षा के जल से भरे हुए सरोवर के मध्य में तू अपने चारों पैरों को उछलने के अनुसार फैला कर छलांग लगा. (१४)

खण्वखा३इ खैमखा३इ मध्ये तदुरि.
वर्षं वनुध्वं पितरो मरुतां मन इच्छत (१५)

हे खंडख, हे खेमख और हे तादुरी नामक मेढकियो! तुम तालाब के मध्य में रह कर अपने घोष से हमें वर्षा प्रदान करो. हे हमारे पालनकर्ता मंडूको! तुम अपने घोष से वायु का मन वश में कर लो. (१५)

महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च सविद्युतं भवतु वातु वातः.
तन्वतां यज्ञं बहुधा विसृष्टा आनन्दिनीरोषधयो भवन्तु (१६)

हे पर्जन्य! तुम सागर से विशाल मेघ का उद्धार करो तथा मेघ की वर्षा से सारी धरती को सींचो. तुम उस मेघ को बिजली वाला बनाओ. हवा वर्षा के अनुकूल चले तथा हवा वर्षा के अनुकूल हो. वर्षा के द्वारा अनेक प्रकार से प्रेरित जल यज्ञ का विस्तार करे. जौ, गेहूं आदि फसलें वर्षा के जल से हर्षित हों. (१६)

सूक्त सोलहवां — देवता—वरुण

बृहन्नेषामधिष्ठाता अन्तिकादिव पश्यति.
य स्तायन्मन्यते चरन्त्सर्वं देवा इदं विदुः (१)

महान वरुण इन शत्रुओं का नियंत्रण करते हुए इन के सभी अन्यायी जनों को समीप से देखते हैं. वरुण जगत की स्थावर एवं जंगम सभी वस्तुओं को जानते हैं.

अतींद्रिय ज्ञान के कारण देवगण स्थिर और नश्वर सभी तत्त्वों को जानते हैं. (१)

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्.
द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः (२)

जो शत्रु सामने खड़ा होता है, जो चलता है, जो कुटिलता पूर्वक ठगता है, जो छिप कर प्रतिकूल आचरण करता है तथा जो शत्रु कष्टमय जीवन पा कर विरोध करता है, महान वरुण इन सभी शत्रुओं को समय से देखते हैं. दो व्यक्ति एकांत में बैठ कर जो गुप्त मंत्रणा करते हैं, उसे राजा वरुण तीसरे के रूप में जानते हैं. (२)

उतेयं भूमिर्वरुणस्य राज्ञ उतासौ द्यौर्बृहती दूरेअन्ता.
उतो समुद्रौ वरुणस्य कुक्षी उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः (३)

यह भूमि भी दुष्टों का निग्रह करने वाले स्वामी वरुण के वश में रहती है. समीप और दूर तक फैली हुई धरती भी उन्हीं के अधिकार में है. पूर्व और पश्चिम में वर्तमान सागर वरुण की कोख में है. इस प्रकार स्वल्प जल में भी सारा जगत छिपा हुआ है. (३)

उत यो द्यामतिसर्पात् परस्तान्न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः.
दिव स्पशः प्र चरन्तीदमस्य सहस्राक्षा अति पश्यन्ति भूमिम् (४)

जो अनर्थकारी शत्रु पुण्य कर्मों से प्राप्त होने वाले स्वर्ग का अतिक्रमण कर के कुमार्ग पर चलता है, वह राजा वरुण के पाशों से न छूटे. स्वर्ग लोक से निकलने वाले वरुण के गुप्तचर पृथ्वी पर घूमते हैं. वे हजार आंखों वाले होने के कारण भूलोक के सारे वृतांत को देखते हैं. (४)

सर्वं तद् राजा वरुणो वि चष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात्.
संख्याता अस्य निमिषो जनानामक्षानिव श्वघ्नी नि मिनोति तानि (५)

धरती और आकाश के मध्य में तथा राजा वरुण के सामने जो प्राणी रहते हैं, उन्हें वे विशेष रूप से देखते हैं. उन के भलेबुरे कर्मों की गणना करने वाले वरुण उन के कर्मों के अनुसार ऐसा दंड निश्चित करते हैं, जिस प्रकार जुआरी अपनी विजय के लिए पांसे फेंकता है. (५)

ये ते पाशा वरुण सप्तसप्त त्रेधा तिष्ठन्ति विषिता रुशन्तः.
छिनन्तु सर्वे अनृतं वदन्तं यः सत्यवाद्यति तं सृजन्तु (६)

हे वरुण! तुम्हारे उत्तम, मध्यम एवं अधम श्रेणी के सातसात पापियों के निग्रह के निमित्त जहांतहां बंधे हुए हैं. वे पाश पापियों की हिंसा करते हुए स्थित हैं, वे पाश असत्य भाषण करने वाले हमारे शत्रु को काट दें और जो सत्यवादी है, उसे छोड़ दें. (६)

शतेन पाशैरभि धेहि वरुणैनं मा ते मोच्यनृतवाङ् नृचक्षः.

आस्तां जाल्म उदरं श्रंसयित्वा कोश इवाबन्धः परिकृत्यमानः (७)

हे वरुण! अपने सौ पाशों से इस असत्यवादी को बांधो. हे मनुष्यों के भलेबुरे कर्मों को देखने वाले! असत्य बोलने वाला तुम से छूटने न पाए. बिना विचारे काम करने वाला अपने उदर को जलोदर रोग से दूषित पा कर तलवार की म्यान के समान झूलता रहे. (७)

यः समाम्यो३ वरुणो यो व्याम्यो३ यः संदेश्यो३ वरुणो यो विदेश्यः.
यो दैवो वरुणो यश्च मानुषः (८)

वरुण के सामान्य पाश समान रूप से एवं विशेष पाश विधि रूप से मनुष्यों को रोगी बनाते हैं. वरुण का जो पाश समान देश में तथा जो विदेश में बांधने वाला है, जो पाश देवों से संबंधित और जो मनुष्यों से संबंधित है, मैं उन सब पाशों से तुझे बांधता हूं . (८)

तैस्त्वा सर्वैरभि ष्यामि पाशैरसावामुष्यायणामुष्याः पुत्र.
तानु ते सर्वाननुसंदिशामि (९)

हे अमुक शत्रु, अमुक गोत्र वाले, एवं अमुक के पुत्र, मैं तुझे वरुण के इन सभी पाशों से बांधता हूं. (९)

सूक्त सत्रहवां देवता—अपामार्ग, वनस्पति

ईशानां त्वा भेषजानामुज्जेष आ रभामहे.
चक्रे सहस्रवीर्यं सर्वस्मा ओषधे त्वा (१)

हे सहदेवी! तू जड़ीबूटियों की स्वामिनी है. मैं शत्रु द्वारा किए गए अभिचार के दोष को शांत करने के लिए तेरा स्पर्श करता हूं. मैं अभिचार से उत्पन्न दोषों को दूर करने के लिए तुझे सामर्थ्य वाली बताता हूं. (१)

सत्यजितं शपथयावनीं सहमानां पुनःसराम्.
सर्वाः समह्वयोषधीरितो नः पारयादिति (२)

वास्तव में अभिचार आदि दोषों को दूर करने वाली सत्यजित, दूसरे के आक्रोश को मिटाने वाली शपथ योगिनी, सब को पराजित करने वाली सहमाना, बारबार व्याधि का विनाश करने वाली पुनःसरा नामक जड़ी बूटियों को अन्य जड़ीबूटियां अभिचार दोष का नाश करने के लिए प्राप्त होती हैं. (२)

या शशाप शपनेन याघं मुरमादधे.
या रसस्य हरणाय जातमारेभे तोकमत्तु सा (३)

जिस पिशाची ने आक्रोश में भर कर हमें शाप दिया है, जिस ने मूर्च्छा प्रदान करने वाला पाप हमारी ओर भेजा है और जो शरीर के रक्त आदि का हरण करने

के लिए मेरे पुत्र आदि का आलिंगन करती है, वह मेरे ऊपर अभिचार करने वाले शत्रु के पुत्र को खा जाए. (३)

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्नीललोहिते.
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुस्तया कृत्याकृतो जहि (४)

हे कृत्या नाम की राक्षसी! अभिचार करने वालों ने तुझे मिट्टी के बिना पके पात्र में धुआं उगलती हुई नीली और लाल ज्वालाओं वाली अग्नियों में तथा बिना पके मांस में अभिमंत्रित किया है, तू उन का विनाश कर. (४)

दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वमराय्यः.
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि (५)

हम अभिचार द्वारा सताए हुए इस पुरुष से बुरे स्वप्न संबंधी भय को, दुष्ट जीवन वाले लोगों संबंधी भय को, राक्षसों संबंधी भय को और महान अभिचार से उत्पन्न भय के कारण को नष्ट करते हैं. दरिद्रता के कारण पाप लक्ष्मियां, छेदिका, भेदिका आदि दुष्ट नामों वाली जो पिशाचियां हैं, मैं उन्हें भी इस के शरीर से दूर भगाता हूं. (५)

क्षुधामारं तृष्णामारमगोतामनपत्यताम्.
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे (६)

हे अपामार्ग! हम तेरी सहायता से भूख की पीड़ा से पुरुष को मारने वाले एवं प्यास की अधिकता से पुरुष की मृत्यु करने वाले अभिचार का विनाश करते हैं. हम तेरी सहायता से गायों के अभाव को और संतानहीनता को भी समाप्त करते हैं. (६)

तृष्णामारं क्षुधामारमथो अक्षपराजयम्.
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे (७)

हे अपामार्ग! हम तेरी सहायता से प्यास की पीड़ा से पुरुष को मारने वाले, भूख की पीड़ा से पुरुष को मारने वाले अभिचार एवं जुए में पराजय को दूर भगाना चाहते हैं. (७)

अपामार्ग ओषधीनां सर्वासामेक इद् वशी.
तेन ते मृज्म आस्थितमथ त्वमगदश्चर (८)

हे अभिचार के दोष से गृहीत पुरुष! एक मात्र अपामार्ग ही सब जड़ी बूटियों को वश में करने वाला है. हम अपामार्ग की सहायता से तुझ में अभिचार द्वारा उत्पन्न रोग आदि को दूर करते हैं. इस के पश्चात तू रोग रहित हो कर विचरण कर. (८)

637/11

सूक्त अठारहवां देवता—अपामार्ग, वनस्पति

समं ज्योतिः सूर्येणाह्ना रात्री समावती.
कृणोमि सत्यमूतयेऽरसाः सन्तु कृत्वरीः (१)

सूर्य से उस का ज्योतिमंडल कभी अलग नहीं होता. रात्रि दिन के समान विस्तार वाली होती है. उसी प्रकार मैं यथार्थ कर्म करता हूं. मैं अभिचार से पीड़ित पुरुष की रक्षा के लिए विनाश करने वाली कृत्याओं को कार्य करने में असमर्थ बनाता हूं. (१)

यो देवाः कृत्यां कृत्वा हरादविदुषो गृहम्.
वत्सो धारुरिव मातरं तं प्रत्यगुप पद्यताम् (२)

हे देवो! जो मनुष्य मंत्रों और ओषधि के द्वारा पीड़ा पहुंचाने वाली कृत्या के निर्माण हेतु उस के घर जाता है. जिस प्रकार बछड़ा गाय के पीछेपीछे जाता है, उसी प्रकार वह कृत्या अभिचार करने वाले पुरुष के समीप जाए. (२)

अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति.
अश्मानस्तस्यां दग्धायां बहुलाः फट् करिक्रति (३)

जो शत्रु अनुकूल के समान साथ रह कर कृत्या निर्माण रूपी पाप करता है और उस के द्वारा उस मनुष्य को मारना चाहता है, जिस के प्रति उस का द्वेष होता है. उस कृत्या के प्रतिकार के द्वारा प्रभावहीन होने पर मेरे मंत्रों के सामर्थ्य से उत्पन्न पाषाण कृत्या बनाने वाले शत्रु की हिंसा करें. (३)

सहस्रधामन् विशिखान् विग्रीवाञ्छायया त्वम्.
प्रति स्म चक्रुषे कृत्यां प्रियां प्रियावते हर (४)

हे हजार स्थानों में होने वाली सहदेवी! तू हमारे शत्रुओं के केशों एवं ग्रीवा को काट कर उन का विनाश कर. तू हमारे शत्रुओं का हित करने वाली कृत्या को उन्हीं की ओर लौटा दे जिन्होंने उस का निर्माण किया है. (४)

अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम्.
यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु (५)

इस सहदेवी नाम की जड़ीबूटी के द्वारा मैं ने सभी कृत्याओं को दूषित एवं प्रभावहीन बना दिया है. मेरे शत्रुओं ने जिस कृत्या को मेरे खेतों में, मेरी गोशाला में और वायु संचार वाले स्थान में गाढ़ दिया है, उन सभी कृत्याओं को मैं प्रभावहीन कर चुका हूं. (५)

यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम्.
चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः (६)

जिस शत्रु ने कृत्या का निर्माण किया है तथा उस के द्वारा मेरे एक पैर और एक उंगली को नष्ट करना चाहता है, वह मेरी हिंसा न कर सके. उस के द्वारा किया गया अभिचार कर्म मेरे मंत्र और जड़ीबूटी के प्रभाव से मेरा मंगल करे तथा कृत्या निर्माण करने वाले को जला दे. (६)

अपामार्गोऽप मार्ष्टु क्षेत्रियं शपथश्च यः.
अपाह यातुधानीरप सर्वा अराय्यः (७)

अपामार्ग जड़ी मातापिता से होने वाले संक्रामक रोग के रूप में हम को प्राप्त क्षय, कुष्ठ, अपस्मार आदि को दूर करे. यह हमारे शत्रुओं द्वारा दिए हुए पापों को, पिशाचियों को और दरिद्रता को भी दूर करे. (७)

अपमृज्य यातुधानानप सर्वा अराय्यः.
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं मृज्महे (८)

हे अपामार्ग! तुम सभी यक्षों, राक्षसों और दरिद्रता उत्पन्न करने वाली पिशाचियों को मुझ से दूर करो. हम यक्ष, राक्षस एवं पिशाचियों द्वारा किए हुए सभी दुःखों को तुम्हारे द्वारा प्रभावहीन करते हैं. (८)

सूक्त उन्नीसवां देवता—अपामार्ग वनस्पति

उतो अस्यबन्धुकृदुतो असि नु जामिकृत्.
उतो कृत्याकृतः प्रजां नडमिवा च्छिन्धि वार्षिकम् (१)

हे अपामार्ग अथवा सहदेवी! तू शत्रुओं और विरोधियों का विनाश करने में समर्थ है. तू कृत्या का प्रयोग करने वाले के पुत्र, पौत्र आदि को वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाली नड नाम की घास के समान काट कर नष्ट कर दे. (१)

ब्राह्मणेन पर्युक्तासि कण्वेन नार्षदेन.
सेनेवैषि त्विषीमती न तत्र भयमस्ति यत्र प्राप्नोष्योषधे (२)

हे सहदेवी अथवा अपामार्ग निषाद के पुत्र कर्ण नामक मंत्रदृष्टा ब्राह्मण ने तेरा प्रयोग किया है. यजमान की रक्षा के लिए तू सेना के समान गमन करती है. तू जिस देश में प्राप्त होती है, वहां अभिचार संबंधी भय नहीं रहता. (२)

अग्रमेष्योषधीनां ज्योतिषेवाभिदीपयन्.
उत त्रातासि पाकस्याथो हन्तासि रक्षसः (३)

हे सहदेवी अथवा अपामार्ग! तू सभी जड़ीबूटियों में उसी प्रकार श्रेष्ठ है, जिस प्रकार प्रकाश करने वालों में सूर्य! तू दुर्बल की रक्षक और उसे बाधा पहुंचाने वाले राक्षस की विनाशक है. (३)

यददो देवा असुरांस्त्वयाग्रे निरकुर्वत.

ततस्त्वमध्योषधेऽपामार्गो अजायथाः (४)

हे ओषधि! प्राचीन काल में इंद्र आदि देवों ने तेरे द्वारा ही राक्षसों को पराजित किया था. इसी कारण तूने अपामार्ग नाम प्राप्त किया था. (४)

विभिन्दती शतशाखा विभिन्दन् नाम ते पिता.
प्रत्यग् वि भिन्धि त्वं तं यो अस्मां अभिदासति (५)

हे अपामार्ग! तू सैकड़ों शाखाओं वाली हो कर विभिंदती नाम प्राप्त करती है. तुझे उत्पन्न करने वाला विभिंद कहलाता है. जो शत्रु हमारा विनाश करना चाहता है, तू उस की विरोधी बन कर उस का विनाश कर. (५)

असद् भूम्याः समभवत् तद् यामेति महद् व्यचः.
तद् वै ततो विधूपायत् प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु (६)

हे ओषधि! तेरे पास से निकल कर महान तेज जिस भूमि तक जाता है, वहां गाढ़ी गई कृत्या किसी को हानि नहीं पहुंचा सकती. तू अपने स्थान से निकल कर विशेष रूप से प्रज्वलित होती हुई कृत्या के निर्माण करने वाले को पीड़ा पहुंचा. (६)

प्रत्यङ् हि सम्बभूविथ प्रतीचीनफलस्त्वम्.
सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया वधम् (७)

हे आत्माभिमुख फल देने वाले अपामार्ग! तू शत्रु के विनाश को मुझ से दूर कर के उसी के पास भेज दे. शत्रु द्वारा मेरे प्रति किए गए हिंसा साधनों और कृत्या को तू मुझ से दूर कर. (७)

शतेन मा परि पाहि सहस्रेणाभि रक्ष मा.
इन्द्रस्ते वीरुधां पत उग्र ओज्मानमा दधत् (८)

हे सहदेवी अथवा अपामार्ग! तू सैकड़ों और हजारों उपायों से मेरी रक्षा कर और मुझे कृत्या के दोष से छुड़ा. हे लतारूपी जड़ीबूटियों की स्वामिनी! महा तेजस्वी इंद्र तेरा तेज मुझ में स्थापित करें. (८)

सूक्त बीसवां — देवता—जड़ीबूटी

आ पश्यति प्रति पश्यति परा पश्यति पश्यति.
दिवमन्तरिक्षमाद् भूमिं सर्वं तद् देवि पश्यति (१)

हे सदापुष्पा नाम की जड़ीबूटी! यह पुरुष तेरी मणि को धारण करने वाला होने से आने वाले भय के कारण को, वर्तमान भय के कारण को तथा भविष्य काल में होने वाले भय के कारण को देखता है और दूर करना जानता है. यह स्वर्ग, अंतरिक्ष एवं पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी प्राणियों को मणि धारण के कारण देखता है. (१)

तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीः षट् चेमाः प्रदिशः पृथक्.
त्वयाहं सर्वा भूतानि पश्यानि देव्योषधे (२)

हे सदा पुष्पा जड़ीबूटी! तेरी मणि को धारण करने के प्रभाव से मैं तीन स्वर्गों, तीन पृथ्वियों, छः प्रदिशाओं, अर्थात पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर नीचे तथा इन सब में रहने वाले सभी प्राणियों को जानता हूं. (२)

दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य् हासि कनीनिका.
सा भूमिमा रुरोहिथ वह्यं श्रान्ता वधूरिव (३)

हे सदा पुष्पा जड़ीबूटी! तू दिव्य गरुड़ की कनीनिका अर्थात आंख की पुतली के समान है. तू गरुड़ के नेत्र से निकल कर धरती पर उसी प्रकार उगी है, जिस प्रकार थकान के कारण चलने में असमर्थ वधू सवारी पर बैठ जाती है. (३)

तां मे सहस्राक्षो देवो दक्षिणे हस्त आ दधत्.
तयाहं सर्वं पश्यामि यश्च शूद्र उतार्यः (४)

हजार आंखों वाले इंद्र देव ने उस सदा पुष्पा को मेरे दाहिने हाथ में धारण कराया है. तेरे प्रभाव से मैं सब को देखता और वश में करता हूं, चाहे वह शूद्र हो अथवा आर्य अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य. (४)

आविष्कृणुष्व रूपाणि मात्मानमप गूहथाः.
अथो सहस्रचक्षो त्वं प्रति पश्याः किमीदिनः (५)

हे ओषधि! तू अपने राक्षस, पिशाच आदि को दूर करने वाले रूप को प्रकाशित कर तथा अपने स्वरूप को मत छिपा. हे जड़ीबूटी! हमारी रक्षा के लिए उन राक्षसों की प्रतीक्षा कर जो छिपे हुए रूप से यह खोजते हुए घूमते हैं कि यह क्या है, यह क्या है? (५)

दर्शय मा यातुधानान् दर्शय यातुधान्यः.
पिशाचान्त्सर्वान् दर्शयेति त्वा रभ ओषधे (६)

हे सदा पुष्पा जड़ी! मुझे राक्षसों एवं राक्षसियों के दर्शन कराओ. वे गूढ़ रूप से मुझे बाधा न पहुंचा सकें. मैं तुम्हें इसीलिए धारण करता हूं कि तुम मुझे सभी पिशाचों को दिखाओ. (६)

कश्यपस्य चक्षुरसि शुन्याश्च चतुरक्ष्याः.
वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तं मा पिशाचं तिरस्करः (७)

हे सदा पुष्पा जड़ी! तू महर्षि कश्यप एवं चार आंखों वाली देवशुनी सरमा की आंख है अर्थात उन की आंख के समान आकृति वाली है. अंतरिक्ष में सूर्य जिस प्रकार विचरण करते हैं, उसी प्रकार चलतेफिरते पिशाचों को तू मुझ से मत छिपा. (७)

उदग्रभं परिपाणद् यातुधानं किमीदिनम्.
तेनाहं सर्वं पश्याम्युत शूद्रमुतार्यम् (८)

खोज करने के लिए घूमते हुए राक्षसों को मैं ने अपनी रक्षा की दृष्टि से वश में कर लिया है. उस पिशाच की सहायता से मैं शूद्र एवं ब्राह्मण जाति वाले ग्रह को देखता हूं. (८)

यो अन्तरिक्षेण पतति दिवं यश्चातिसर्पति.
भूमिं यो मन्यते नाथं तं पिशाचं प्र दर्शय (९)

जो पिशाच अंतरिक्ष से गिरता है, जो स्वर्गलोक से ऊपर गमन करता है और धरती को अपने अधिकार में मानता है, उस पिशाच को भी मुझे दिखा, जिस से मैं उस का निराकरण कर सकूं. (९)

सूक्त इक्कीसवां देवता—गाएं

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे.
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः (१)

गाएं हमारी ओर आएं, हमारा कल्याण करें, हमारी गोशाला में बैठें तथा हमें दूध आदि दे कर प्रसन्न करें. श्वेत, कृष्ण आदि अनेक वर्णों की गाएं अधिक संतान वाली हो कर यजमान के घर में समृद्ध बनें तथा अधिक समय तक इंद्र के निमित्त दूध देती रहें. (१)

इन्द्रो यज्वने गृणते च शिक्षत उपेद् ददाति न स्वं मुषायति.
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् (२)

इंद्र स्तुति करने वाले यजमानों को गाय प्राप्त करने का उपाय बताते हैं. तथा उन्हें बहुत सी गाएं प्रदान करते हैं. इंद्र उस यजमान के धन का अपहरण नहीं करते. वे उस स्तोता और यजमान के धन को अधिक मात्रा में बढ़ाते हुए उसे स्वर्ग में स्थान दिलाते हैं, जिस में दुख नहीं होता. (२)

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति.
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित् ताभिः सचते गोपतिः सह (३)

इंद्र के द्वारा दी गई गाएं नष्ट न हों तथा उन्हें चोर न चुरा सकें. शत्रुओं के आयुध उन गायों को पीड़ा न पहुंचाएं. जिन गायों के दूध और घी के द्वारा यज्ञ किया जाता है और जिन्हें यज्ञ की दक्षिणा के रूप में दिया जाता है, उन गायों के साथ यजमान अधिक समय तक रहे, उन से वियुक्त न हो. (३)

न ता अर्वा रेणुककाटोऽश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि.
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः (४)

हिंसक एवं कमर के टुकड़े करने वाले बाघ आदि दुष्ट पशु उन गायों तक न पहुंचें. वे गाएं मांस पकाने वाले के समीप न जाएं एवं यजमान के भय रहित स्थान को प्राप्त हों. (४)

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः.
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम् (५)

गाएं ही पुरुष का धन और सौभाग्य हैं. इंद्र ऐसी इच्छा करें, जिस से मुझे गाएं मिल सकें. छाना गया सोमरस गायों के दूध और दही में ही सिद्ध किया जाता है. हे मनुष्यो! ये जो गाएं दिखाई देती हैं, वे ही इंद्र हैं. इस हेतु मैं गायों के दूध, घी आदि हवि के द्वारा हृदय और ज्ञान से इंद्र का यज्ञ करना चाहता हूं. (५)

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्.
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद् वो वय उच्यते सभासु (६)

हे गायो! तुम अपने दूध, घी आदि से दुर्बल मनुष्य को भी मोटाताजा बनाओ तथा अशोभन अंग वाले को शोभन अवयवों वाला बनाओ. हे कल्याणी वाणी वाली गाय! हमारे घर को अलंकृत बनाओ. तुम्हारे दूध, दही, घी आदि से बना भोजन सभाओं में अधिक प्रशंसा पाता है. (६)

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः.
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु (७)

हे गाय! तुम उत्तम घास वाली भूमि में चलती हुई स्वच्छ जल पियो और उत्तम संतान वाली बनो. चोर तुम्हें न चुरा सके. बाघ आदि दुष्ट पशु तुम्हारी हिंसा न करें. रुद्र का आयुध तुम्हारा स्पर्श न करे. (७)

सूक्त बाईसवां — देवता—इंद्र, क्षत्रिय राजा

इममिन्द्र वर्धय क्षत्रियं म इमं विशामेकवृषं कृणु त्वम्.
निरमित्रानक्ष्णुह्यस्य सर्वास्तान् रन्धयास्मा अहमुत्तरेषु (१)

हे इंद्र! मेरे इस क्षत्रिय राजा को पुत्र, पौत्र, वाहन आदि से समृद्ध बनाओ. इस राजा को तुम वीर्य वालों में प्रमुख बनाओ. जो इस के शत्रु राजा हैं, उन सब को तुम प्राण हीन कर दो. तुम सभी को इस के वश में करो. मैं भी इसे अपने मंत्रों के सामर्थ्य से इंद्र आदि लोकपालों में से एक बनाता हूं. (१)

एमं भज ग्रामे अश्वेषु गोषु निष्टं भज यो अमित्रो अस्य.
वर्ष्म क्षत्राणामयमस्तु राजेन्द्र शत्रुं रन्धय सर्वमस्मै (२)

हे इंद्र! इस राजा को जनसमूह से, घोड़ों से और गायों से संयुक्त करो इस का जो शत्रु है, उसे जन समूह आदि से अलग करो. यह राजा अन्य क्षत्रियों के शीश पर वर्तमान

हो अर्थात सर्वश्रेष्ठ क्षत्रिय बने. इस के सभी शत्रुओं को तुम इस के वश में करो. (२)

अयमस्तु धनपतिर्धनानामयं विशां विश्पतिरस्तु राजा.
अस्मिन्निन्द्र महि वर्चांसि धेह्यवर्चसं कृणुहि शत्रुमस्य (३)

हे इंद्र! यह राजा धनपतियों में उत्तम धनपति तथा प्रजातियों में उत्तम प्रजापालक हो. इस राजा में महान तेज और वीर्य धारण करो तथा इस राजा के शत्रुओं को तेजहीन बनाओ. (३)

अस्मै द्यावापृथिवी भूरि वामं दुहाथां घर्मदुघे इव धेनू.
अयं राजा प्रिय इन्द्रस्य भूयात् प्रियो गवामोषधीनां पशूनाम् (४)

हे द्यावा और पृथ्वी! मेरे इस राजा के लिए धर्मदुघा गौ के समान अधिक मात्रा में धन प्रदान करो. यह राजा इंद्र का अत्यधिक प्रिय हो जाए तथा उस के कारण मैं गायों, जड़ी बूटियों और पशुओं का प्रिय बनूं. (४)

युनज्मि त उत्तरावन्तमिन्द्रं येन जयन्ति न पराजयन्ते.
यस्त्वा करदेकवृषं जनानामुत राज्ञामुत्तमं मानवानाम् (५)

हे राजन! मैं अतिशय उत्कर्ष वाले इंद्र को तुम्हारा मित्र बनाता हूं. उन इंद्र की प्रेरणा से तुम्हारे योद्धा विजयी होंगे, कभी पराजित नहीं होंगे. जिस इंद्र ने तुम्हें अन्य मनुष्यों के मध्य गायों में सांड के समान उत्तम बनाया है, उसी ने तुम्हें मनुष्यों और राजाओं में श्रेष्ठ बनाया है. (५)

उत्तरस्त्वमधरे ते सपत्ना ये के च राजन् प्रतिशत्रवस्ते.
एकवृष इन्द्रसखा जिगीवाञ्छत्रूयतामा भरा भोजनानि (६)

हे राजन! तुम श्रेष्ठ बनो तथा तुम्हारे विरोधी निम्नतम बनें. वे विरोधी तुम्हारे प्रति शत्रुता का भाव रखते हैं. तुम सर्व प्रमुख एवं इंद्र के मित्र बन कर सभी पर विजय प्राप्त करो. जो तुम्हारे शत्रुओं के समान आचरण करते हैं, तुम उन के भोगसाधन धनों को छीन लो. (६)

सिंहप्रतीको विशो अद्धि सर्वा व्याघ्रप्रतीकोऽव बाधस्व शत्रून्.
एकवृष इन्द्रसखा जिगीवाञ्छत्रूयतामा खिदा भोजनानि (७)

हे राजन! तुम सिंह के समान पराक्रमी बन कर सभी प्रजाओं पर शासन करो तथा बाघ के समान आक्रमणकारी बन कर सभी शत्रुओं को बाधा पहुंचाओ. तुम सर्व प्रमुख एवं इंद्र के मित्र बन कर सभी पर विजय प्राप्त करो. जो तुम्हारे शत्रुओं के समान आचरण करते हैं, तुम उन के भोग साधन धनों को छीन लो. (७)

सूक्त तेईसवां — देवता—अग्नि

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते.

विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः (१)

मैं मुख्य विशेष ज्ञानी एवं देवयज्ञ, पितृयज्ञ, मूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ और बृहतयज्ञ नामक पांच यज्ञ करने वाले अग्निदेव का महत्त्व जानता हूं. उन्हें अनेक प्रकार से प्रज्वलित किया जाता है. सभी प्रजाओं में जठराग्नि के रूप में प्रवेश करने वाले अग्निदेव से मैं याचना करता हूं कि वह मुझे पाप से बचाएं. (१)

यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन्.
एवा देवेभ्यःसुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः (२)

हे जातवेद अग्नि! तुम जिस प्रकार चरु, पुरोडाश आदि हव्य को देवों तक पहुंचाते हो तथा जिस प्रकार ज्ञान रखते हुए यज्ञ पूर्ण करते हो, उसी प्रकार हमारे विषय में देवों की उत्तम बुद्धि को लाओ. इस प्रकार के अग्नि हमें पाप से छुड़ाएं. (२)

यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभगम्.
अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वहंसः (३)

होम के आधार पर होने के कारण अनेक फल प्राप्त कराने में नियुक्त, ढोने वालों में श्रेष्ठ, अनेक यज्ञ कर्मों के द्वारा सेवनीय, राक्षसों के विनाश कर्ता, यज्ञों की वृद्धि करने वाले एवं घृत की आहुतियों से दीप्त अग्नि की मैं स्तुति करता हूं. इस प्रकार के अग्नि मुझे पाप से छुड़ाएं. (३)

सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विभुम्.
हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः (४)

शोभन जन्म वाले उत्पन्न होने वाले प्राणियों के ज्ञाता, संसार के मनुष्यों के हितैषी, व्यापक एवं हव्य वहन करने वाले अग्नि का मैं आह्वान करता हूं. वह पाप से मेरी रक्षा करें. (४)

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः.
येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः (५)

ऋषियों ने जिन मित्र बने हुए अग्नि की सहायता से अपना सामर्थ्य बढ़ाया, देवों ने जिन की सहायता से असुरों की माया को नष्ट किया तथा जिन अग्नि की सहायता से इंद्र ने पणियों को पराजित किया, वे अग्नि मुझे पाप से बचाए. (५)

येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन्.
येन देवाः स्व१राभरन्त्स नो मुञ्चत्वंहसः (६)

जिस अग्नि की सहायता से देवों ने अमृत प्राप्त किया, जिन अग्नि की सहायता से जड़ीबूटियों ने मधुर रस प्राप्त किया तथा जिन की सहायता से स्वर्ग प्राप्त किया जाता है, वह अग्नि देव मुझे पाप से छुड़ाएं. (६)

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम्.
स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः (७)

जिस अग्नि के शासन में सारा जगत वर्तमान है, अंतरिक्ष में ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशित हैं, उत्पन्न हुए और उत्पन्न होने वाले सभी प्राणी जिन के शासन में हैं, मैं उन अग्नि की स्तुति करता हूं तथा फल की कामना से बार-बार हवन करता हूं. ऐसे अग्नि देव मुझे पाप से छुड़ाएं. (७)

चौबीसवां सूक्त — देवता—इंद्र

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उप मेम आगुः.
यो दाशुषः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः (१)

मैं बारबार इंद्र का महत्व स्वीकार करता हूं. वृत्र की हत्या करने वाले इंद्र के ये स्तोत्र मेरे समीप आ कर मुझे स्तोता बनाते हैं. जो इंद्र चरु, पुरोडाश आदि देने वाले एवं उत्तम यज्ञ करने वाले यजमान का आह्वान स्वीकार करते हैं, वह इंद्र मुझे पाप से बचाएं. (१)

य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययुर्यो दानवानां बलमारुरोज.
येन जिताः सिन्धवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः (२)

जो इंद्र ऊपर हाथ उठा कर शत्रु सेनाओं को भगा देते हैं, जिन्होंने दानवों के बल को सभी ओर से नष्ट कर दिया है, जिन इंद्र ने मेघों में स्थित जलों को जीता था तथा जिन्होंने पणियों के द्वारा चुराई हुई गाएं प्राप्त कीं, वह हमें पाप से छुड़ाएं. (२)

यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्विद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम्.
यस्याध्वरः सप्तहोता मदिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः (३)

जो इंद्र मनुष्यों को मनचाहा फल दे कर पूर्ण करने वाले, बैल के समान शक्तिशाली और स्वर्ग प्राप्त करने वाले हैं, जिन इंद्र के लिए पत्थर सोमरस प्रदान करते हैं एवं सात होताओं से युक्त जिन इंद्र से संबंधित सोमयाग प्रसन्न करने वाला होता है, वह हमें पाप से बचाएं. (३)

यस्य वशास ऋषभास उक्षणो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वर्विदे.
यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः (४)

जिन इंद्र के यज्ञ के निमित्त बांझ गाएं, बैल एवं सांड़ लाए जाते हैं, स्वर्ग प्राप्त करने वाले जिन इंद्र के निमित्त यज्ञों में गांठों वाले खंभे गाड़े जाते हैं तथा जिन इंद्र के निमित्त निचोड़ने के साधनों से युक्त एवं निर्मल सोमरस छाना जाता है, वह इंद्र हमें पाप से बचाएं. (४)

यस्य जुष्टिं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गविष्टौ.
यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः (५)

सोमरस वाले यजमान जिन की प्रीति की कामना करते हैं तथा जिन आयुध धारी इंद्र को पणियों द्वारा चुराई गई गायों की खोज के लिए बुलाया जाता है तथा जिन इंद्र के विषय में अर्चना के साधन मंत्र आश्रित हैं, वह इंद्र हमें पाप से बचाएं. (५)

य: प्रथम: कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम्.
येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहस: (६)

जो इंद्र प्रमुख रूप से ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ करने के लिए उत्पन्न हुए थे, जिन प्रमुख इंद्र का वृत्र हनन संबंधी शौर्य कर्म प्रसिद्ध है तथा जिन के द्वारा उठाया गया वज्र सभी ओर हिंसा करता है, वह इंद्रदेव मुझे पाप से बचाएं. (६)

य: सङ्ग्रामान् नयति सं युधे वशी य: पुष्टानि संसृजति द्वयानि.
स्तौमीन्द्रं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहस: (७)

जो स्वतंत्र इंद्र प्रहार करने के लिए युद्ध करते हैं, जो पुष्ट स्त्रीपुरुषों के जोड़े बनाते हैं, मैं फल की कामना से उन्हीं इंद्र की स्तुति करता हूं और उन के निमित्त बारबार हवन करता हूं. वह मुझे पाप से छुड़ाएं. (७)

सूक्त पच्चीसवां — देवता—वायु, सविता

वायो: सवितुर्विदथानि मन्महे यावात्मन्वद् विशथो यौ च रक्षथ:.
यौ विश्वस्य परिभू बभूवथुस्तौ नो मुञ्चतमंहस: (१)

वायु और सविता के वेदों में वर्णन किए गए कर्मों को मैं जानता हूं. हे वायु एवं सविता देव! तुम दोनों स्थावर और संगम जीवों में प्रवेश करते हो एवं रक्षा करते हो. तुम दोनों विश्व की रक्षा के लिए उत्पन्न हुए हो. तुम दोनों हमें पाप से छुड़ाओ. (१)

ययो: सङ्ख्याता वरिमा पार्थिवानि याभ्यां रजो युपितमन्तरिक्षे.
ययो: प्रायं नान्वानशे कश्चन तौ नो मुञ्चतमंहस: (२)

जिन वायु और सविता देव के महत्त्व जनों के द्वारा भलीभांति प्रसिद्ध हैं, जिन दोनों के द्वारा आकाश में जल को धारण किया जाता है तथा कोई अन्य देव जिन वायु और सविता के उत्तम गमन को प्राप्त नहीं कर पाता, वे दोनों हमें पाप से मुक्त करें. (२)

तव व्रते नि विशन्ते जनासस्त्वय्युदिते प्रेरते चित्रभानो.
युवं वायो सविता च भुवनानि रक्षथस्तौ नो मुञ्चतमंहस: (३)

हे सविता! तुम से संबंधित कर्म में लोग नियम से लगे रहते हैं. हे विचित्र दीप्ति वाले सूर्य! तुम्हारे निकलने पर सभी लोग अपनेअपने काम में लग जाते हैं. तुम

दोनों अर्थात वायु और सविता लोकों की रक्षा करते हो. तुम दोनों हमें पाप से बचाओ. (३)

अपेतो वायो सविता च दुष्कृतमप रक्षांसि शिमिदां च सेधतम्.
सं ह्यूर्जया सृजथः सं बलेन तौ नो मुञ्चतमंहसः (४)

हे वायु एवं सविता देव! तुम मेरे पाप को मुझ से दूर करो. उपद्रवकारी राक्षसों तथा जलती हुई कृत्या राक्षसी को यहां से दूर भगाओ. तुम ऊर्जा और बल से मेरा सृजन करो तथा मुझे पाप से बचाओ. (४)

रयिं मे पोषं सवितोत वायुस्तनू दक्षमा सुवतां सुशेवम्.
अयक्ष्मतातिं मह इह धत्तं तौ नो मुञ्चतमंहसः (५)

सविता और वायु मेरे लिए धन और पुष्टि को प्रेरित करें. ये दोनों मेरे शरीर में सुख एवं बल प्रदान करें. इस यजमान के शरीर में ये दोनों रोगहीनता तथा तेज धारण करें और हमें पाप से बचाएं. (५)

प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये महस्वन्तं मत्सरं मादयाथः.
अर्वाग् वामस्य प्रवतो नि यच्छतं तौ नो मुञ्चतमंहसः (६)

हे सविता एवं वायु देव! हमारी रक्षा के लिए हमें उत्तम बुद्धि प्रदान करो तथा दीप्तिशाली एवं मादक सोमरस को पी कर प्रसन्न बनो. तुम दोनों उत्तम धन को हमारी ओर प्रेरित करो तथा हमें पाप से छुड़ाओ. (६)

उप श्रेष्ठा न आशिषो देवयोर्धामन्नस्थिरन्.
स्तौमि देवं सवितारं च वायुं तौ नो मुञ्चतमंहसः (७)

वायु और सविता देव के तेज के विषय में हमारी उत्तम एवं फलदायक प्रार्थनाएं उपस्थित हैं. हम धन आदि गुणों से युक्त वायु एवं सविता देव की स्तुति करते हैं. ये दोनों हमें पाप से छुड़ाएं. (७)

सूक्त छब्बीसवां देवता—द्यावा, पृथ्वी

मन्वे वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ ये अप्रथेथाममिता योजनानि.
प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूनां ते नो मुञ्चतमंहसः (१)

हे द्यावा पृथ्वी! तुम दोनों शोभन भोगों वाले एवं समान चित्त वाले हो. मैं तुम्हारी स्तुति करता हूं. तुम दोनों अनगिनत योजन विस्तृत हो. तुम दोनों में निवास करने वाले देव मनुष्यों अथवा धनों के उत्तम स्थान बनते हों. तुम दोनों हमें पाप से छुड़ाओ. (१)

प्रतिष्ठे ह्यभवतं वसूना प्रवृद्धे देवी सुभगे उरूची.
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः (२)

सभी प्राणियों के आधार बने हुए द्यावा पृथ्वी सारे जगत में प्रविष्ट हैं. हे दिव्य, उत्तम सौभाग्य वाले एवं व्याप्त द्यावा पृथ्वी! मेरे सुख के कारण बनो एवं मुझे पाप से बचाओ. (२)

असन्तापे सुतपसौ हुवेऽहमुर्वी गम्भीरे कविभिर्नमस्ये.
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः (३)

संताप रहित, उत्तम ताप वाले, गंभीर एवं विद्वानों द्वारा नमस्कार के योग्य द्यावा पृथ्वी, मेरे सुख के कारण बनें एवं मुझे पाप से छुड़ाएं. (३)

ये अमृतं बिभृथो ये हवींषि ये स्रोत्या बिभृथो ये मनुष्यान्.
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः (४)

जो द्यावा पृथ्वी अमृत को धारण करते हैं तथा जो चरु, पुरोडाश आदि को, नदियों को एवं मनुष्यों को धारण करते हैं, वे मेरे लिए सुख के कारण बनें एवं मुझे पाप से छुड़ाएं. (४)

ये उस्रिया बिभृथो ये वनस्पतीन् ययोर्वां विश्वा भुवनान्यन्तः.
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः (५)

जो द्यावा पृथ्वी सभी गायों को धारण करते हैं, जो सभी वृक्षों को धारण करते हैं तथा जिन दोनों के मध्य समस्त भवन हैं, वे द्यावा पृथ्वी, मेरे लिए सुख का कारण बनें एवं मुझे पाप से छुड़ाएं. (५)

ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्यामृते न किं चन शक्नुवन्ति.
द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः (६)

जो द्यावा पृथ्वी अन्न एवं घृत के द्वारा समस्त विश्व को तृप्त करते हैं, जिन दोनों के बिना मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकते, वे द्यावा पृथ्वी मेरे लिए सुख का कारण बनें एवं मुझे पाप से छुड़ाएं. (६)

यन्मेदमभिशोचति येनयेन वा कृतं पौरुषेयान्न दैवात्.
स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः (७)

यह पाप और उस का फल मुझे सभी ओर से जलाता है एवं इसी के कारण बारबार पाप किए जाते हैं. पुरुषों से प्रेरित पाप के समान देव कर्मों से संबंधित पाप भी मुझे जलाता है. मैं फल की कामना से द्यावा पृथ्वी की स्तुति करता हूं. ये दोनों मुझे पाप से छुड़ाएं. (७)

सूक्त सत्ताईसवां

देवता—मरुत

मरुतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाते अवन्तु.
आशूनिव सुयमानह्व ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१)

मैं उनन्चास मरुतों का माहात्म्य जानता हूं. वे मरुत मुझे अपना कहें. अन्न के लाभ का अवसर आने पर वे इस अन्न की मेरे लिए रक्षा करें. मैं घोड़ों की लगाम के समान संयमित मरुतों को अपनी रक्षा के लिए बुलाता हूं. वे मुझे पाप से छुड़ाएं. (१)

उत्समक्षितं व्यचन्ति ये सदा य आसिञ्चन्ति रसमोषधीषु.
पुरो दधे मरुतः पृश्निमातृंस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (२)

जो मरुत सदैव वर्षा की धाराओं से युक्त एवं विनाश रहित मेघ को आकाश में फैलाते हैं तथा गेहूं, जौ, वृक्ष आदि में रस सींचते हैं, मध्यमा वाणी जिन की माता हैं, ऐसे मरुतों को मैं अपने सामने रखता हूं. वे मुझे पाप से बचाएं. (२)

पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ.
शग्मा भवतु मरुतो नः स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (३)

हे मरुतो! तुम क्रांतदर्शी हो कर गायों के दूध को, जड़ीबूटियों के रस को तथा घोड़ों के वेग को बढ़ाते हो. सभी कार्य करने में समर्थ वे मरुत हमारे लिए सुखकारी हों तथा हमें पाप से बचाएं. (३)

अपः समुद्राद् दिवमुद वहन्ति दिवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति.
ये अद्भिरीशाना मरुतश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (४)

जो मरुत, सागर के जल को मेघों के द्वारा अंतरिक्ष में पहुंचाते हैं, इस के पश्चात उसी जल को अंतरिक्ष से धरती पर छोड़ते हैं, उन्हीं जलों के स्वामी बन कर जो मरुत विचरण करते हैं, वे हमें पाप से छुड़ाएं. (४)

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति.
ये अद्भिरीशाना मरुतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (५)

मरुत वर्षा से उत्पन्न अन्न के द्वारा एवं जलों के द्वारा जनों को तृप्त करते हैं. जो पक्षियों को चर्बी से युक्त करते हैं, जो मरुत मेघों के ईश बन कर विचरण करते हैं, वे हमें पाप से बचाएं. (५)

यदीदिदं मरुतो मारुतेन यदि देवा दैव्येनेदृगार.
यूयमीशिध्वे वसवस्तस्य निष्कृतेस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (६)

हे मरुतो! यदि मेरा दुःख अथवा दुख का कारण पाप मुझे मरुत संबंधी अपराध के कारण प्राप्त हुआ है, हे इंद्र आदि देवो! यदि मुझे यह दुख देव संबंधी अपराध के कारण प्राप्त हुआ है तो हे मरुतो! इस दुख अथवा पाप को मिटाने में तुम समर्थ हो. तुम मुझे पाप से छुड़ाओ. (६)

तिग्ममनीकं विदितं सहस्वन् मारुतं शर्धः पृतनासूग्रम्.
स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (७)

तीक्ष्ण समय बना हुआ प्रसिद्ध एवं पराजित करने वाला मरुतों का बल सेनाओं

को दुःसह होता है. उन्हीं मरुतों की मैं स्तुति करता हूं एवं उन्हें सुख प्राप्ति के लिए बुलाता हूं. वे मुझे पाप से बचाएं. (७)

सूक्त अट्ठाईसवां

देवता—भव, शर्व

भवाशर्वौ मन्वे वां तस्य वित्तं ययोर्वामिदं प्रदिशि यद् विरोचते.
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः (१)

हे भव और शर्व! मैं तुम्हारा महत्त्व जानता हूं. मेरे द्वारा कहा जाता हुआ अपना महत्त्व तुम जानो. तुम दोनों के शासन में यह सारा विश्व प्रकाशित होता है. भव और शर्व शत्रुओं को अपने वज्र से संयुक्त करते हैं, इस समय क्या उत्पन्न हुआ है, ऐसी खोज करने वाले राक्षसों को भी अपने आयुध से मारो. जो भव और शर्व इस विश्व के दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं, वे हमें पाप से बचाएं. (१)

ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे चिद् यौ विदिताविषुभृतामसिष्ठौ.
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः (२)

जिन भव और शर्व के मार्ग के समीप अथवा दूर जो कुछ भी है, वह उन्हीं के अधिकार में है, जो भव और शर्व सब के द्वारा ज्ञात, वपुषधारी और बाण फेंकने में कुशल है, जो इस संसार के दो पैरों वाले मनुष्य तथा चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं, वे हमें पाप से बचाएं. (२)

सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवेऽहं दूरेगव्यूती स्तुवन्नेम्युग्रौ.
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः (३)

मैं हजार आंखों वाले वृत्र का व्रत करता हूं एवं दूर देश में वर्तमान भव और शर्व का आह्वान करता हूं. मैं उन्हीं शक्तिशालियों की प्रशंसा करता हूं जो भव और शर्व इस संसार के दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं, वे हमें पाप से बचाएं. (३)

यावारेभाथे बहु साकमग्रे प्र चेदस्राष्ट्रमभिभां जनेषु.
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः (४)

हे भव और शर्व! तुम ने सृष्टि की आदि में बहुत से प्राणियों के समूह का निर्माण किया है. इस के पश्चात उन में वीर्य की पर्याप्त मात्रा में रचना कर, जो भव और शर्व जो इस विश्व के दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं, वे हमें पाप से छुड़ाएं. (४)

ययोर्वधान्नापपद्यते कश्चनान्तर्देवेषूत मानुषेषु.
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः (५)

जिन भव और शर्व के हनन साधन आयुधों से देवों और मनुष्यों के मध्य कोई नहीं बचता तथा जो इस विश्व के दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं, वे हमें पाप से बचाएं. (५)

यः कृत्याकृन्मूलकृद् यातुधानो नि तस्मिन् धत्तं वज्रमुग्रौ.
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः (६)

हे भव और शर्व! जो शत्रु कृत्या राक्षसी के द्वारा दूसरों का विनाश करता है एवं जो राक्षस वंशवृद्धि के मूल आधार संतान का विनाश करता है, इन दोनों प्रकार के शत्रुओं पर अपना वज्र छोड़ो. जो भव और शर्व इस विश्व के दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं, वे हमें पाप से बचाएं. (६)

अधि नो ब्रूतं पृतनसूग्रौ सं वज्रेण सृजतं यःकिमीद.
स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः (७)

हे पराजित न होने वाले भव और शर्व! हमारे विषय में पक्षपात के वचन कहो एवं संग्रामों में हमारे बल को पराजित न होने वाला बनाओ. मैं द्यावा और पृथ्वी की स्तुति करता हूं. मुझे पाप से छुड़ाएं. (७)

सूक्त उनतीसवां — देवता—मित्र, वरुण

मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे.
प्र सत्यावानमवथो भरेषु तौ नो मुञ्चतमंहसः (१)

हे ऋत अर्थात सत्य, जल अथवा यज्ञ को बढ़ाने वाले एवं समान ज्ञान वाले मित्र और वरुण! मैं तुम दोनों के महत्त्व की स्तुति करता हूं. तुम द्रोह करने वालों का हनन कर देते हो. तुम सत्यप्रतिज्ञ पुरुष की संग्राम में रक्षा करते हो. ऐसे मित्र और वरुण मुझे पाप से बचाएं. (१)

सचेतसौ द्रुह्वणो यौ नुदेथे प्र सत्यावानमवथो भरेषु.
यौ गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतं तौ नो मुञ्चतमंहसः (२)

हे समान ज्ञान वाले मित्र और वरुण! तुम दोनों द्रोह करने वालों का पतन करते हो और सत्यप्रतिज्ञ जनों की युद्ध में रक्षा करते हो. तुम दोनों पीले रंग के रथ के द्वारा चल कर निचोड़े गए सोमरस को प्राप्त करते हो एवं मनुष्यों के कर्मों के साक्षी हो. तुम दोनों हमें पाप से बचाओ. (२)

यावङ्गिरसमवथो यावगस्तिं मित्रावरुणा जमदग्निमत्रिम्.
यौ कश्यपमवथो यौ वसिष्ठं तौ नो मुञ्चतमंहसः (३)

हे मित्र और वरुण! तुम अगस्त्य, अंगस्त्य, जमदग्नि एवं अत्रि ऋषि की रक्षा करते हो. जिन मित्र और वरुण ने कश्यप और वशिष्ठ ऋषियों की रक्षा की, वे हमें

पाप से छुड़ाएं. (३)

यौ श्यावाश्वमवथो वध्र्यश्वं मित्रावरुणा पुरुमीढमत्रिम्.
यौ विमदमवथ: सप्तवध्रिं तौ नो मुञ्चतमंहस: (४)

जिन मित्र और वरुण ने श्यावाश्व, वध्र्यश्व पुरुषमीढ एवं अत्रि की रक्षा की, जिन मित्र और वरुण ने विभद और सप्तवध्रि ऋषि की रक्षा की, वे हमें पाप से बचाएं. (४)

यौ भरद्वाजमवथो यौ गविष्ठिरं विश्वामित्रं वरुण मित्र कुत्सम्.
यौ कक्षीवन्तमवथ: प्रोत कण्वं तौ नो मुञ्चतमंहस: (५)

हे मित्र और वरुण! तुम ने भरद्वाज, गविष्ठिर, विश्वामित्र एवं कुत्स ऋषि की रक्षा की. जिन मित्र और वरुण ने कक्षीवान तथा कण्व ऋषि की रक्षा की वे हमें पाप से बचाएं. (५)

यौ मेधातिथिमवथो यौ त्रिशोकं मित्रावरुणावुशनां काव्यं यौ.
यौ गोतममवथ: प्रोत मुद्गलं तौ नो मुञ्चतमंहस: (६)

जिन मित्र और वरुण ने मेधातिथि, त्रिशक तथा शुक्राचार्य के पुत्र उशना ऋषि की रक्षा की, जिन्होंने गौतम एवं मुद्गल ऋषि की रक्षा की, वे हमें पाप से छुड़ाएं. (६)

ययो रथ: सत्यवर्त्मर्जुरश्मिर्मिथुया चरन्तमभियाति दूषयन्.
स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहस: (७)

जिन मित्र और वरुण का सत्यमार्ग पर चलने वाला एवं रस्सियों से युक्त रथ निषिद्ध मार्ग पर चलते हुए पुरुष को बाधा पहुंचाता हुआ सामने आता है, मैं ऐसे मित्र और वरुण की स्तुति करता हूं एवं सुख की इच्छा से उन के निमित्त बारबार हवन करता हूं. वे दोनों मुझे पाप से बचाएं. (७)

सूक्त तीसवां

देवता—वाक

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवै:.
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा (१)

अंभृण महर्षि की ब्रह्मवादिनी पुत्री वाक ने स्वयं को ब्रह्म समझ कर स्तुति की है. मैं रुद्रों और वसुओं के साथ संचरण करती हूं. मैं आदित्यों और विश्वेदेवों के साथ संचरण करती हूं. मित्र और वरुण को मैं ही धारण करती हूं. इंद्र, अग्नि तथा दोनों अश्विनीकुमारों को भी मैं ने ही धारण किया है. (१)

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्.
तां मा देवा व्यदधु: पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्त: (२)

मैं ही दिखाई देने वाले विश्व का नियंत्रण करने वाली, उपासकों को फल के रूप में धन दिलाने वाली, परब्रह्म का साक्षात्कार करने वाली तथा यज्ञ के योग्य देवों में प्रमुख हूं. अनेक भाग से प्रपंचों में स्थित मुझ को उपासकों को फल देने वाले देव बहुत से साधनों में निर्धारित करते हैं. (२)

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवानामुत मानुषाणाम्.
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् (३)

मैं ही स्वयं अनुभव किए गए ब्रह्म के विषय में लोकहित की दृष्टि से कह रही हूं. वह ब्रह्म देवों और मनुष्यों का प्रिय है मैं जिसजिस पुरुष की रक्षा करना चाहती हूं, उसउस को बलवान बना देती हूं. मैं उसे ब्रह्म, ऋषि, और उत्तम बुद्धि वाला बना देती हूं. (३)

मया सोऽन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणति य ईं शृणोत्युक्तम्.
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धेयं ते वदामि (४)

भोग करने वाला जो मनुष्य अन्न खाता है, वह मुझ शक्तिरूपा के द्वारा ही अन्न खाता है. जो मनुष्य विश्व को देखता है, सांस लेता है अथवा सुनता है, ये सब व्यापार शक्ति स्थानों में मैं ही करती हूं. मुझे न मानते हुए वे संसार में क्षीण होते हैं. हे सखा! मेरी कही हुई बात सुन. मैं तुझे श्रद्धा के योग्य ब्रह्म का उपदेश करती हूं. (४)

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ.
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश (५)

मैं ब्राह्मणों के द्वेषी एवं हिंसकों को मारने के लिए महादेव का धनुष तानती हूं अर्थात उस की डोरी खींचती हूं. मैं ही स्तोता जन के लिए संग्राम करती हूं तथा द्यावा और पृथ्वी में मैं ही प्रविष्ट हूं. (५)

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्.
अहं दधामि द्रविणा हविष्मते सुप्राव्या३ यजमानाय सुन्वते (६)

निचोड़ने योग्य सोमरस को अथवा शत्रुओं का विनाश करने एवं स्वर्ग में स्थित सोम को मैं ही धारण करती हूं. त्वष्टा, पूषा और भव को भी मैं ही धारण करती हूं. हवि लिए हुए, देवों को हवि प्राप्त कराने वाले एवं सोमरस निचोड़ने वाले यजमान के लिए यज्ञ के फल के रूप में धन मैं ही धारण करती हूं. (६)

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्व१न्तः समुद्रे.
ततो वि तिष्ठे भुवनानि विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि (७)

इस दिखाई देने वाले प्रपंच के ऊपरी भाग अर्थात सत्यलोक में वर्तमान इस प्रपंच के जनक को मैं जानती हूं. इस जगत के कारण रूप मेरा उत्पत्ति स्थान सागर

के जलों में स्थित हैं. तेज का कारण होने से मैं भुवनों को प्रकाशित करती हूं. मैं इस देह से स्वर्ग का स्पर्श करती हूं. (७)

अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा.
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिम्ना सं बभूव (८)

सभी भूतों को कारण के रूप में उत्पन्न करती हुई मैं वायु के समान वर्तमान हूं. इस आकाश और इस पृथ्वी से भिन्न रहने वाली मैं अपनी महिमा से इस प्रकार की हुई हूं. (८)

सूक्त इकत्तीसवां

देवता—मन्यु

त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो हर्षमाणा हृषितासो मरुत्वन्.
तिग्मेषव आयुधा संशिशाना उप प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः (१)

हे क्रोध के अभिमानी देव मन्यु! तेरे द्वारा रथ वाले शत्रु को पीड़ित करते हुए, प्रसन्न एवं क्रोध में भरे, तेज बाणों वाले तथा आयुधों की धार तेज करते हुए हमारे मनुष्य तेरी कृपा से वायु के समान वेग वाले एवं अग्नि के समान अपराजित बन कर शत्रु के पास जाएं. (१)

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि.
हत्वाय शत्रून् वि भजस्व वेद ओजो मिमानो वि मृधो नुदस्व (२)

हे मन्यु! तुम आग के समान दीप्त हो कर शत्रुओं को पराजित करो. हे सहनशील मन्यु! तुम हमारी सेना के सेनापति बन कर बुलाए जाने पर आओ और हमारे शत्रुओं को मार कर उन का धन हमें प्रदान करो. तुम शक्ति का प्रदर्शन करते हुए संग्रामकारी शत्रुओं का वध करो. (२)

सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मै रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून्.
उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुध्रे वशी वशं नयासा एकज त्वम् (३)

हे मन्यु! इस राजा के शत्रु की सेना के हाथी, घोड़े आदि को कुचलते हुए एवं नष्ट करते हुए शत्रुओं को पराजित करने के लिए आओ. हे अधिक शक्तिशाली मन्यु! तुम्हारे बल को कोई रोक नहीं सकता. हे बिना सहायक के कार्य करने वाले एवं सब को वश में करने वाले मन्यु! तुम सभी जनों को स्वाधीन बनाते हो. (३)

एको बहूनामसि मन्य ईडिता विशंविशं युद्धाय सं शिशाधि.
अकृत्तरुक्त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्मसि (४)

हे मन्यु! हमारे द्वारा स्तुत तुम अकेले ही बहुत से शत्रुओं के विनाश हेतु पर्याप्त होते हो. तुम सभी प्रजाओं में प्रवेश कर के उन्हें युद्ध के लिए प्रेरित करो. हे अविच्छन्न दीप्ति वाले मन्यु! तुम्हारी सहायता से हम विजय के लिए सिंहनाद के

समान घोष करते हैं. (४)

विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवोऽस्माकं मन्यो अधिपा भवेह.
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्मा तमुत्सं यत आबभूथ (५)

हे मन्यु! विजय करने वाले तुम इंद्र के समान विजय के प्राचीन उपायों के बताने वाले बन कर इस संग्राम में हमारा पालन करो. हे सहनशील मन्यु! हम तुम्हें प्रसन्न करने वाली स्तुतियां बोल रहे हैं. जिस स्थान से तुम प्रकट होते हो, हम उस अमृत धारा वाले स्थान को जानते हैं. (५)

आभूत्या सहजा वज्र सायक सहो बिभर्षि सहभूत उत्तरम्.
क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि (६)

हे वज्र के समान अकुंठित शक्ति वाले! हे शत्रुओं का अंत करने वाले एवं शत्रुओं के पराजय के साथ उत्पन्न मन्यु! तुम उत्तम बल धारण करते हो. तुम हमारे यज्ञ के साथ चिकने बनो. हे बहुत से यजमानों द्वारा बुलाए गए मन्यु! धन प्राप्ति वाले संग्राम में हमारे सहायक बनो. (६)

संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं धत्तां वरुणश्च मन्युः.
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप नि लयन्ताम् (७)

वरुण और मन्यु अपना धन ला कर हमें दें. हमारे शत्रु हृदय में भय धारण करते हुए पराजित हों तथा भयभीत हो कर भाग जाएं. (७)

सूक्त बत्तीसवां — देवता—मन्यु

यस्ते मन्योऽविधद् वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्.
साह्याम दासमार्यं त्वया युजा वयं सहस्कृतेन सहसा सहस्वता (१)

हे मन्यु! जो पुरुष तुम्हारी सेवा करता है, हे वज्र के समान अंकुठित शक्ति वाले एवं शत्रुओं का अंत करने वाले! वह पुरुष नित्य शत्रुओं को पराजित करने वाला अपना बल संपूर्ण रूप से बढ़ाता है. तुम बल उत्पन्न करने वाले, हराने वाले और शक्ति देने वाले हो. तुम्हारी सहायता से हम असुरों एवं उन के शत्रु देवों को भी पराजित करें. (१)

मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः.
मन्युर्विश ईडते मानुषीर्याः पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः (२)

मन्यु ही इंद्र हैं और मन्यु ही समस्त देव हैं. मन्यु देवों का आह्वान करने वाले, वरुण एवं जातवेद अग्नि हैं. जो मानुषी प्रजाएं हैं, वे भी मन्यु की ही स्तुति करती हैं. हे मन्यु! तुम तप से संयुक्त हो कर हमारी रक्षा करो. (२)

अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान् तपसा युजा वि जहि शत्रून्.

अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं नः (३)

हे मन्यु! हमारे सामने आओ एवं महान से भी महान बन कर अपने संताप की सहायता से हमारे शत्रुओं का विनाश करो. स्नेह न करने वाले के हंता, शत्रु वधकारक एवं दस्यु विनाशकारी तुम हमारे लिए सभी धनों को लाओ. (३)

त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः.
विश्वचर्षणिः सहुरिः सहीयानस्मास्वोजः पृतनासु धेहि (४)

हे मन्यु! तुम्हारा बल पराजित करने वाला है. तुम स्वयंभू, क्रोधी, शत्रुओं को सहन करने वाले, विश्व के दृष्टा, सहनशील एवं सहने वालों में श्रेष्ठ हो. तुम संग्राम में हमें बल प्रदान करो. (४)

अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः.
तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीडाहं स्वा तनूर्बलदावा न एहि (५)

हे उत्तम ज्ञान वाले मन्यु! तुम्हारे महान यज्ञ में भाग न लेने वाला अर्थात तुम्हारा यजमान न बनने वाला मैं युद्ध से भाग आया हूं. तुम्हारे संतोष के कर्म न करने वाले मैं ने तुम्हें क्रोधित बना दिया. इस समय तुम मेरे बलदाता बन कर आओ. (५)

अयं ते अस्म्युप न एह्यर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वदावन्.
मन्यो वज्रिन्नभि न आ ववृत्स्व हनाव दस्यूंरुत बोध्यापेः (६)

हे मन्यु! मैं तुम्हारा यज्ञ कर्म करने वाला हो गया हूं. तुम मेरे समीप आओ और मेरे सामने हो कर शत्रुओं की ओर चलो. हे सहनशील एवं सभी फल देने वाले! हे वर्जनशील आयुधधारी मित्र! हमारे सामने रहो. हम दोनों अपने शत्रुओं का विनाश करेंगे. तुम हमें अपना बंधु जानो. (६)

अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा नोऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि.
जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रमुभावुपांशु प्रथमा पिबाव (७)

हे मन्यु! हमारे सामने आओ और हमारी दाहिनी ओर रह कर हमारे सचिव का काम करो. इस के पश्चात हम बहुत से शत्रुओं का विनाश करेंगे. हम तुम्हारे लिए धारण करने वाले मधुर सोमरस का सार अंश देते हैं. हम दोनों सब से पहले इस प्रकार सोमरस पिएं कि किसी को पता नहीं चले. (७)

सूक्त तैंतीसवां — देवता—अग्नि

अप नः शोशुचदघमग्ने शुशुग्ध्या रयिम्. अप नः शोशुचदघम् (१)

हे अग्नि! तुम्हारी कृपा से हमारा पाप नष्ट हो जाए. तुम हमारे धन को सभी ओर से समृद्ध करो और हमारे पाप को नष्ट करो. (१)

सुक्षेत्रिया सुगातुया वसूया च यजामहे. अप नः शोशुचदघम् (२)

हे अग्नि! हम शोभन क्षेत्र एवं शोभन मार्ग पाने की इच्छा से तुम्हारा हवन करते हैं. तुम हमारे धन को सभी ओर समृद्ध करो तथा हमारे पाप को नष्ट करो. (२)

प्र यद् भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकासश्च सूरयः. अप नः शोशुचदघम् (३)

हे अग्नि! मैं उन स्तोताओं के मध्य श्रेष्ठ स्तोता हूं और मेरे ज्ञानी पुत्र आदि भी स्तोताओं में श्रेष्ठ हैं, इसलिए तुम हमारे पाप को नष्ट करो. (३)

प्र यत् ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम्. अप नः शोशुचदघम् (४)

हे अग्नि! तुम्हारे स्तोता जो तुम्हारी कृपा से जन्म लेते हैं. इसलिए हम विद्वान भी तुम्हारी स्तुति के कारण पुत्र, पौत्र आदि से समृद्ध हों. तुम हमारे पाप को नष्ट करो. (४)

प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः. अप नः शोशुचदघम् (५)

बलवान अग्नि की किरणें सभी ओर प्रवर्तित होती हैं, इसलिए तुम हमारे पापों को नष्ट करो. (५)

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि. अप नः शोशुचदघम् (६)

हे अग्नि! तुम सभी ओर मुख वाले एवं सर्वव्यापक हो. तुम हमारे पाप नष्ट करो. (६)

द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय. अप नः शोशुचदघम् (७)

हे सभी ओर मुख वाले अग्नि! जिस प्रकार लोग नाव के द्वारा उस पार पहुंच जाते हैं, उसी प्रकार हमारे शत्रुओं को हम से दूर करो तथा हमारे पापों को नष्ट करो. (७)

स नः सिन्धुमिव नावाति पर्षा स्वस्तये. अप नः शोशुचदघम् (८)

हे उक्त गुणों वाले अग्नि! जिस प्रकार नाव के द्वारा सागर को पार करते हैं उसी प्रकार हमारे शत्रुओं को हम से दूर करो एवं हमारे पापों को नष्ट करो. (८)

सूक्त चौंतीसवां — देवता—ब्रह्मौदन

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्ठं वामदेव्यमुदरमोदनस्य.
छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्टारी जातस्तपसोऽधि यज्ञः (१)

दिए जाते हुए ब्रह्मौदन की स्तुति की जा रही है—"ब्रह्म अर्थात रथंतर साम इस ओदन का शीश एवं बृहत साम इस की पीठ है. वामदेव ऋषि द्वारा देखा गया साम इस का पेट तथा गायत्री आदि छंद इस के पक्ष अर्थात दोनों कोखें हैं. सत्य नाम का साम इस का मुख है. विस्तार वाला ब्रह्मौदन सत्र यज्ञ ब्रह्म के भीतरी भाग

से उत्पन्न हुआ है." (१)

अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपि यन्ति लोकम्.
नैषां शिश्नं प्र दहति जातवेदाः स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम् (२)

सत्र यज्ञ के करने वाले अमृतमय, वायु के द्वारा पवित्र, निर्मल, एवं दीप्तिशाली होते हैं और देहावसान के पश्चात ज्योतिर्मय लोक को जाते हैं. स्वर्गलोक में वर्तमान ब्रह्मौदन सत्र यज्ञ करने वालों की इंद्रियों को अग्नि नहीं जलाती. इन्हें भोगने के लिए स्त्रियों का समूह प्राप्त होता है. (२)

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनानवर्तिः सचते कदा चन.
आस्ते यम उप याति देवान्त्सं गन्धर्वैर्मदते सोम्येभिः (३)

जो यजमान बताई हुई रीति से विस्तृत अवयवों वाले ब्रह्मौदन को पकाते हैं, उन के समीप दरिद्रता कभी नहीं आती. वह यजमान देहांत के पश्चात यमराज के द्वारा पूजित हो कर सुख से निवास करता है तथा यम की अनुमति पा कर देवों के समीप पहुंचता है. वह सोमरस के योग्य विश्वावसु आदि गंधर्वों के साथ प्रसन्न रहता है. (३)

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनान् यमः परि मुष्णाति रेतः.
रथी ह भूत्वा रथयान ईयते पक्षी ह भूत्वाति दिवः समेति (४)

जो यजमान बताई हुई रीति से विस्तृत अवयवों वाले ब्रह्मौदन को पकाते हैं, यमराज उन के वीर्य का अपहरण नहीं करते. रथ द्वारा जाने योग्य भूलोक में वे जब तक जीवित रहते हैं, तब तक रथ पर बैठ कर चलते हैं या पक्षों वाले हो कर अंतरिक्ष के ऊपर वर्तमान लोक को पार कर के भोगों से युक्त होते हैं. (४)

एष यज्ञानां विततो वहिष्ठो विष्टारिणं पक्त्वा दिवमा विवेश. आण्डीकं कुमुदं सं तनोति बिसं शालूकं शफको मुलाली. एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः (५)

वह ब्रह्मौदन सत्र यज्ञ विस्तृत होने के कारण यज्ञों में सब से अधिक वहन करने वाला है. यजमान इस विस्तीर्ण अवयवों वाले ओदन को पका कर स्वर्ग प्राप्त करता है, अंडे की आकृति वाले कंद से उत्पन्न कुमुद फूल को हृदय पर रखता है तथा कमल तंतुओं को, उत्पल (कमल) के कंद को एवं जल में उत्पन्न तथा खुर की आकृति वाली मृणाली अर्थात कमलिनी को सीने पर रखता है. हे यजमान! स्वर्ग में तेरे समीप चारों ओर कमल के सरोवर स्थित रहें. ये सभी धाराएं ब्रह्मौदन सत्र यज्ञ के फल के रूप में प्राप्त स्वर्ग में मधुरता पूर्ण सिंचन करती हुई तेरे समीप पहुंचें तथा समीप में वर्तमान सरोवर भी तेरे समीप उपस्थित हों. (५)

घृतह्रदा मधुकूलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना. एतास्त्वा धारा उप यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः (६)

हे यजमान! स्वर्ग लोक में घी से भरे हुए गड्ढों वाली, शहद के किनारों वाली, मदिरा रूपी जल वाली तथा दूध, दही, एवं जल से पूर्ण सभी धाराएं तेरे समीप पहुंचें. ब्रह्मौदन सत्र यज्ञ के फल के रूप में प्राप्त स्वर्ग में मधुरता पूर्ण सिंचन करती हुई ये सभी धाराएं तेरे समीप पहुंचें तथा समीप में वर्तमान सरोवर भी उपस्थित हों. (६)

चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णां उदकेन दध्ना. एतास्त्वा धारा उप
यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः (७)

मैं दूध, दही, शहद और मदिरा से भरे हुए चार घड़ों को पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर दिशाओं में रखता हूं. हे यजमान! ब्रह्मौदन सत्र यज्ञ के फल के रूप में प्राप्त स्वर्ग में दूध, जल एवं दही से पूर्ण ये सभी धाराएं तेरे समीप पहुंचें एवं माधुर्य को सिंचन करते हुए सरोवर तेरे समीप उपस्थित रहें. (७)

इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोकजितं स्वर्गम्.
स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघा मे अस्तु (८)

इस विस्तृत अवयवों वाले, कर्म फल को जीतने वाले एवं स्वर्ग के साधन ओदन को मैं ब्राह्मणों में रखता हूं. क्षीर आदि रस से बढ़ता हुआ यह नष्ट न हो. इस के फल के रूप में मुझे भांतिभांति के फल देने वाली एवं कामनाएं पूर्ण करने वाली धेनु प्राप्त हो. (८)

सूक्त पैंतीसवां

देवता—अतिमृत्यु

यमोदनं प्रथमजा ऋतस्य प्रजापतिस्तपसा ब्रह्मणेऽपचत्.
यो लोकानां विधृतिर्नाभिरेषात् तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् (१)

परब्रह्म से प्रथम उत्पन्न हिरण्यगर्भ नामक प्रजापति ने तप के द्वारा ब्रह्म के लिए जो ओदन पकाया था तथा जो ओदन पृथ्वी आदि लोकों को बांधने वाला है, उस ओदन से मैं मृत्यु को पार करूं. (१)

येनातरन् भूतकृतोऽति मृत्युं यमन्वविन्दन् तपसा श्रमेण.
यं पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वं तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् (२)

प्राणियों के निर्माण कर्ता देवों ने जिस ओदन की सहायता से मृत्यु का अतिक्रमण किया था, जिस ओदन को तप और श्रम के द्वारा प्राप्त किया था तथा जिसे हिरण्यगर्भ प्रजापति ने सब से पहले ब्रह्म के लिए पकाया था, उसी ओदन की सहायता से मैं मृत्यु को पार करूं. (२)

यो दाधार पृथिवीं विश्वभोजसं यो अन्तरिक्षमापृणाद् रसेन.
यो अस्तभ्नाद् दिवमूर्ध्वो महिम्ना तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् (३)

जिस ओदन ने समस्त प्राणियों का भोग बनी हुई पृथ्वी को धारण किया था,

जो ओदन अपने रस से अंतरिक्ष को पूर्ण करता है तथा जिस ओदन ने अपनी महत्ता से द्युलोक अर्थात स्वर्ग को ऊपर धारण किया था, उसी ओदन की सहायता से मैं मृत्यु को पार करता हूं. (३)

यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वादशारः.
अहोरात्रा यं परियन्तो नापुस्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् (४)

जिस ब्रह्मौदन से मास उत्पन्न हुए, जिन में पहिए के 'अरे' के समान तीस दिन स्थित हैं; जिस ब्रह्मौदन से बारह महीनों वाला संवत्सर उत्पन्न हुआ; जिस ब्रह्मौदन को रात और दिन समीप रहते हुए भी प्राप्त नहीं कर पाते, उसी ओदन की सहायता से मैं मृत्यु को पार करूं. (४)

यः प्राणदः प्राणदवान् बभूव यस्मै लोका घृतवन्तः क्षरन्ति.
ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् (५)

जो ओदन मृत्यु के समीप पहुंचे हुए जनों को प्राण देने वाला हुआ, जिस ओदन के लिए लोक घी की धाराएं बरसाते हैं तथा जिस ओदन के तेज से सभी दिशाएं प्रकाशित हैं, उसी ओदन की सहायता से मैं मृत्यु को पार करता हूं. (५)

यस्मात् पक्वादमृतं सम्बभूव यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव.
यस्मिन् वेदा निहिता विश्वरूपास्तेनौदनेनाति तराणि मृत्युम् (६)

जिस पके हुए ब्रह्मौदन से स्वर्ग का अमृत उत्पन्न हुआ, जो छंदों की प्रमुख गायत्री का अधिपति बना तथा जिस में शाखा भेद से समस्त वेद स्थित हैं, उसी ओदन की सहायता से मैं मृत्यु को पार करता हूं. (६)

अव बाधे द्विषन्तं देवपीयुं सपत्ना ये मेऽप ते भवन्तु.
ब्रह्मौदनं विश्वजितं पचामि शृण्वन्तु मे श्रद्दधानस्य देवाः (७)

मैं हिंसा करने वाले शत्रु का वध करता हूं तथा देवों के हिंसकों की हत्या करता हूं. जो मेरे शत्रु हैं, वे भाग जाएं. इस के निमित्त मैं सब को जीतने वाले ब्रह्मौदन को पकाता हूं. मुझ श्रद्धालु के वचनों को देव सुनें और मेरी सहायता करें. (७)

सूक्त छत्तीसवां देवता—सत्य ओज वाले अग्नि

तान्सत्यौजाः प्र दहत्वग्निर्वैश्वानरो वृषा.
यो नो दुरस्याद् दिप्साच्चाथो यो नो अरातियात् (१)

सच्चे बल वाले, वैश्वानर एवं गर्भाधान में समर्थ अग्नि उन शत्रुओं को जलाएं, जो हमारे प्रति दुष्टों के समान आचरण करें, जो हमारी हिंसा करना चाहें तथा जो हमारे प्रति शत्रु के समान आचरण करें. (१)

यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति,
वैश्वानरस्य दंष्ट्रयोरग्नेरपि दधामि तम् (२)

जो शत्रु हिंसा की इच्छा न करने वाले मुझ को मारना चाहता है तथा जिस हिंसा की इच्छा करने वाले को मैं मारना चाहता हूं, उस को मैं वैश्वानर अग्नि की दाढ़ों में रखता हूं. (२)

य आगरे मृगयन्ते प्रतिक्रोशे ऽमावास्ये.
क्रव्यादो अन्यान् दिप्सतः सर्वांस्तान्त्सहसा सहे (३)

युद्ध भूमि में जो पिशाच हमें खाने के लिए खोजते हैं तथा शत्रुओं द्वारा किए गए आक्रोश के कारण अमावस्या की आधी रात में हमें मारना चाहते हैं, हम मंत्रों के प्रभाव से उन्हें पराजित करते हैं. (३)

सहे पिशाचान्त्सहसैषां द्रविणं ददे.
सर्वान् दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिर्ऋध्यताम् (४)

मैं बल के द्वारा राक्षसों को पराजित करता हूं तथा उन राक्षसों के धन को अपने अधिकार में करता हूं. मैं द्वेष करने वाले सभी शत्रुओं को मारता हूं. मेरा इष्ट फल विषयक संकल्प और सुख समृद्ध हो. (४)

ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण मिमते जवम्.
नदीषु पर्वतेषु ये सं तैः पशुभिर्विदे (५)

हे अग्नि आदि देवो! जो पशु, राक्षस, पिशाच आदि से बचना चाहते हैं तथा उन्हें छोड़ कर सूर्य के समान वेग से भागते हैं तथा जो पशु नदियों और तीर्थों में घूमते हैं, तुम्हारे प्रभाव से मैं उन राक्षस आदि को मार कर उन पशुओं के साथ संयुक्त होता हूं. (५)

तपनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव.
श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम् (६)

मैं मंत्रों के सामर्थ्य से पिशाचों को उसी प्रकार संताप देता हूं, जिस प्रकार बाघ गायों के स्वामियों को दुखी करता है. सिंह को देख कर जिस प्रकार कुत्ता भय से छिप जाता है, उसी प्रकार मेरे मंत्रों के प्रभाव से वे अधोगति पाते हैं. (६)

न पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभिः.
पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे (७)

मैं पिशाचों, चोरों और वन में रहने वाले लुटेरों से न मिलूं. मैं जिस ग्राम में प्रवेश कर के निवास करूं, उस से पिशाच भाग जाएं. (७)

यं ग्राममाविशत इदमुग्रं सहो मम.
पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पापमुप जानते (८)

मंत्र के प्रभाव से उत्पन्न मेरा यह बल जिस ग्राम में प्रवेश कर के निवास करता है, पिशाच उस ग्राम से भाग जाता है. वहां रहने वाले लोग पिशाचों हिंसा रूपी पाप को नहीं जानते. (८)

ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनं मशका इव.
तानहं मन्ये दुर्हितान्जने अल्पशयूनिव (९)

जो पिशाच मिल कर मुझे इस प्रकार क्रोधित करते हैं, जिस प्रकार मच्छर हाथी को क्रोधित बना देते हैं; मैं उन्हें उसी प्रकार हनन के योग्य दुष्ट जानता हूं, जिस प्रकार जनसंचार के स्थान पर छोटे शरीर वाले कीड़े होते हैं. (९)

अभि तं निर्ऋतिर्धत्तामश्वमिवाश्वाभिधान्या.
मल्वो यो मह्यं क्रुध्यति स उ पाशान्न मुच्यते (१०)

पाप देवता मेरे शत्रु को उसी प्रकार बांध लें, जिस प्रकार रस्सी घोड़े को बांधती हैं जो शत्रु मेरे लिए क्रोध करता है, वह शत्रु पाप देवता निर्ऋत्ति के पाश से न छूटे. (१०)

सूक्त सैंतीसवां — देवता—जड़ीबूटी आदि

त्वया पूर्वमथर्वाणो जघ्नू रक्षांस्योषधे.
त्वया जघान कश्यपस्त्वया कण्वो अगस्त्यः (१)

हे जड़ीबूटियो! प्राचीन काल में तुम्हें साधन बना कर अथर्व वेद संबंधी महर्षियों ने राक्षसों को मारा था. तुम्हारे द्वारा कश्यप, कण्व, और अगस्त्य ऋषियों ने राक्षसों का वध किया. (१)

त्वया वयमप्सरसो गन्धर्वांश्चातयामहे.
अजशृङ्ग्यज रक्षः सर्वान् गन्धेन नाशय (२)

हे अजशृंगी नाम की जड़ी! तुझे साधन बना कर हम उपद्रव करने वाली अप्सराओं और गंधर्वों का नाश करते हैं. तू राक्षसों को यहां से दूर भगा तथा अपनी गंध से सभी राक्षसों का विनाश कर. (२)

नदीं यन्त्वप्सरसोऽपां तारमवश्वसम्.
गुल्गुलूः पीला नलद्यौऽक्षगन्धिः प्रमन्दनी.
तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन (३)

गंधर्वों की पत्नियां अप्सराएं अपने वास स्थान पर उसी प्रकार चली जाएं, जिस प्रकार नदी पार करने वाले मल्लाह के समीप पहुंचते हैं. हे अप्सराओ! गुग्गुलु, पीला, नलदी, ओक्षगंधि एवं प्रमंदिनी के हवन से भयभीत हो कर अपने निवास स्थान को चली जाओ तथा वहीं रहो. (३)

यत्राश्वत्था न्यग्रोधा महावृक्षाः शिखण्डिनः.
तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन (४)

जहां अश्वत्थ, न्यगोध आदि महावृक्ष एवं मोर होते हैं, हे अप्सराओ! वहां से अपने निवास स्थान को चली जाओ तथा वहीं रुकी रहो. (४)

यत्र वः प्रेङ्खा हरिता अर्जुना उत यत्राघाटाः कर्कर्यः संवदन्ति.
तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन (५)

हे अप्सराओ! तुम्हारे खेलने के लिए जहां झूले पड़े हैं, उन झूलों का रंग हरा और सफेद है. जहां कर्करी नाम के बाजे बजाए जाते हैं, वहां से भाग कर अपने निवास स्थान को चली जाओ तथा वहीं रहो. (५)

एयमगन्नोषधीनां वीरुधां वीर्यावती.
अजशृङ्ग्यराटकी तीक्ष्णशृङ्गी व्यृषतु (६)

जड़ीबूटियों एवं वृक्षों में सब से अधिक शक्ति वाली अजशृंगी, अराटकी तथा तीक्ष्ण शृंगी नाम की जड़ीबूटियां आ गई हैं. इस स्थान से राक्षस भाग जाएं. (६)

आनृत्यतः शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः. भिनद्मि मुष्कावपि यामि शेपः (७)

मैं मोर के समान नाचते हुए अप्सरा के पति गंधर्व के अंडकोषों को फोड़ता हूं तथा उस के पुरुष जननांग को निष्क्रिय बनाता हूं. (७)

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीरयस्मयीः.
ताभिर्हविरदान् गन्धर्वानवकादान् व्यृषतु (८)

इंद्र का आयुध भयंकर, सौ धारों वाला एवं लोहे का बना हुआ है. उसी से वह हवि न देने वाले एवं शैवाल खाने वाले गंधर्वों को मारें. (८)

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीर्हिरण्ययीः.
ताभिर्हविरदान् गन्धर्वानवकादान् व्यृषतु (९)

इंद्र के आयुध भयंकर, सौ धारों वाले एवं सोने के बने हैं. इंद्र उन्हीं से हवि न देने वाले तथा शैवाल भक्षण करने वाले गंधर्वों का वध करें. (९)

अवकादानभिशोचानप्सु ज्योतय मामकन्.
पिशाचान् सर्वानोषधे प्र मृणीहि सहस्व च (१०)

हे अजशृंगी जड़ी! शैवाल खाने वाले, सभी को शोक पहुंचाने वाले उन गंधर्वों को जलों में प्रकाशित करो, जो युद्ध से संबंधित हैं. तुम सभी पिशाचों को मारो तथा पराजित करो. (१०)

श्वेवैकः कपिरिवैकः कुमारः सर्वकेशकः. प्रियो दृश इव भूत्वा गन्धर्वः

सचते स्त्रियस्तमितो नाशयामसि ब्रह्मणा वीर्यावता (११)

मायावी होने के कारण एक गंधर्व कुत्ते के समान, दूसरा बंदर के समान है. गंधर्व सारे शरीर पर बाल उगे होने पर भी बालक ही होता है. गंधर्व देखने में प्रिय रूप बना कर स्त्रियों से मिलते हैं. मैं अत्यधिक शक्तिशाली मंत्रों की सहायता से उन्हें यहां से भगाता हूं. (११)

जाया इद् वो अप्सरसो गन्धर्वाः पतयो यूयम्.
अप धावतामर्त्या मर्त्यान् मा सचध्वम् (१२)

हे गंधर्वो! ये अप्सराएं तुम्हारी पत्नियां हैं और तुम इन के पति हो. तुम गंधर्व जाति के हो, इसलिए मनुष्यों से दूर भाग जाओ, इन से मत मिलो. (१२)

सूक्त अड़तीसवां देवता—अप्सराएं, अक्ष शलाका

उद्भिन्दतीं सञ्जयन्तीमप्सरां साधुदेविनीम्.
ग्लेह कृतानि कृण्वानामप्सरां तामिह हुवे (१)

बाजी लगा कर धन का भेदन करती हुई एवं भलीभांति जुए में जीतने वाली एवं अक्ष शलाका आदि से अच्छी तरह जुआ खेलने वाली अप्सरा की मैं स्तुति करता हूं. सदैव दांव पर लगाए गए धन पर जुआ जीतने के चिह्न बनाने वाली उस अप्सरा को मैं यहां बुलाता हूं. (१)

विचिन्वतीमाकिरन्तीमप्सरां साधुदेविनीम्.
ग्लेह कृतानि गृहणानामप्सरां तामिह हुवे (२)

एक निश्चित काठ पर तीनचार अक्षों अर्थात पासों को एक करती हुई, पुनः उन्हें ही जुए में जीतने के लिए बहुत से काठों पर बखेरती हुई एवं जय के उपाय जानने के कारण भलीभांति जुआ खेलती हुई अप्सरा को मैं अपने समीप बुलाता हूं. वह जुए में लगाए गए धन को चिह्न बना कर जीत लेती है. (२)

यायैः परिनृत्यत्यााददाना कृतं ग्लहात्. सा नः कृतानि सीषती प्रहामाप्नोतु मायया:.
सा नः पयस्वत्यैतु मा नो जैषुरिदं धनम् (३)

जो अप्सरा जुए में जीते गए धन को 'यह मेरा है' कह कर अधिकार में कर लेती हैं तथा पासों की संख्याओं के द्वारा जुए में जीत कर प्रसन्नता पूर्वक नृत्य करती हैं, वह हमारे कृतों में अर्थात चार संख्या के दांवों को सोखती हुई पासों को अपनी माया से प्राप्त कर के गाय आदि धन वाली अप्सरा हमारे समीप आए. जुए के दांव पर लगा हमारा धन दूसरे न जीत सकें. (३)

या अक्षेषु प्रमोदन्ते शुचं क्रोधं च बिभ्रती.
आनन्दिनीं प्रमोदिनीमप्सरां तामिह हुवे (४)

जो अप्सरा जुए में जीतने के कारण प्रसन्नता एवं हार के कारण शोक और क्रोध को धारण करती है, जुए के कारण हर्षित होने वाली तथा ज्वारियों को प्रसन्नता देने वाली उस अप्सरा को मैं बुलाता हूं. (४)

सूर्यस्य रश्मीननु याः संचरन्ति मरीचीर्वा या अनुसंचरन्ति.
यासामृषभो दूरतो वाजिनीवान्त्सद्यः सर्वान् लोकान् पर्यैति रक्षन्.
स न ऐतु होममिमं जुषाणो३न्तरिक्षेण सह वाजिनीवान् (५)

जो अप्सराएं सूर्य की किरणों के पीछे घूमती हैं अथवा सूर्य की किरणें उन के पीछे चलती हैं, उन अप्सराओं के गर्भाधान में समर्थ पति सदा उषाओं से संबंधित रहते हैं. वे सभी लोकों की रक्षा करने के लिए प्रतिदिन आते हैं. उषा के पति सूर्य अप्सराओं के साथ हमारे होम के हवि को स्वीकार करते हुए आएं. (५)

अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन् कर्की वत्सामिह रक्ष वाजिन्.
इमे ते स्तोका बहुला एह्यर्वाङियं ते मनोऽस्तु (६)

हे बलवान सूर्य! इस स्थान पर धौरे रंग के बछड़ों का पालन करो. तुम्हारी ये दूध की बूंदें हमारे लिए समृद्ध हों. तुम यहां शीघ्र आओ. यह धौरे रंग की गौ तुम्हारी है. तुम्हारे लिए नमस्कार है. (६)

अन्तरिक्षेण सह वाजिनीवन् कर्की वत्सामिह रक्ष वाजिन्.
अयं घासो अयं व्रज इह वत्सां नि बध्नीमः
यथानाम व ईश्महे स्वाहा (७)

हे बलवान सूर्य! इस स्थान पर धौरे रंग के बछड़ों का पालन करो. यह घास और गोशाला पुष्टिकर हो. इस गोशाला में मैं बछड़ों को बांधता हूं. मैं तुम्हें उसी प्रकार बांधता हूं, जिस से तुम्हारा स्वामी बन सकूं. यह हवि उत्तम आहुति वाला हो. (७)

सूक्त उनतालीसवां देवता—पृथ्वी, अग्नि

पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स आर्ध्नोत्.
यथा पृथिव्यामग्नये समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु (१)

पृथ्वी पर देवता रूप में स्थित अग्नि के लिए सभी प्राणी नमन करते हैं. वे अग्नि इस से समृद्ध होते हैं. पृथ्वी पर प्राणी जिस प्रकार अग्नि के लिए नमन करते हैं, उसी प्रकार का नमन मेरे लिए भी हो. (१)

पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः. सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्.

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा (२)

पृथ्वी गाय है और अग्नि उस का बछड़ा है. अग्नि रूपी बछड़े के कारण पृथ्वी मेरे लिए मनचाही मात्रा में बल कारक अन्न दे. पृथ्वी मुझे सौ वर्ष की आयु प्रजा, पुष्टि एवं धन दे. यह हवि उत्तम आहुति वाला हो. (२)

अन्तरिक्षेवायवे समनमन्त्स आर्ध्नोत्.
यथान्तरिक्षे वायवे समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु (३)

अंतरिक्ष में अधिपति के रूप में स्थित वायु के लिए यक्ष, गंधर्व आदि ने भलीभांति नमस्कार किया. वायु उन के नमस्कार से प्रसन्न हुए. जिस प्रकार गंधर्व आदि ने अंतरिक्ष में वायु के लिए नमस्कार किया, उसी प्रकार वह मेरे लिए नमस्कार करें. (३)

अन्तरिक्षं धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः. सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्.
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा (४)

अंतरिक्ष गाय है और वायु उस का बछड़ा है. वह गाय वायु रूपी बछड़े के कारण मुझे बल कारक अन्न पर्याप्त मात्रा में प्रदान करे. वायु मुझे सौ वर्ष की आयु, प्रजा, पुष्टि एवं धन दे. यह हवि उत्तम आहुति वाला हो. (४)

दिव्यादित्याय समनमन्त्या आर्ध्नोत्.
यथा दिव्यादित्याय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु (५)

द्युलोक में स्थित सूर्य के लिए वहां के सभी प्राणियों ने नमस्कार किया. उस नमस्कार से सूर्य प्रसन्न हुए. प्राणियों ने जिस प्रकार द्युलोक के सूर्य के लिए नमस्कार किया, उसी प्रकार मेरे लिए भी नमस्कार करें. (५)

द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः. सा मे आदित्येन वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्.
आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा (६)

द्यौ गाय है और सूर्य उस का बछड़ा है. वह द्यौ रूपी गाय सूर्य रूपी बछड़े के कारण मेरे लिए मनचाहा बल कारक अन्न प्रदान करे. वह मुझे सौ वर्ष की आयु, प्रजा, पुष्टि और धन प्रदान करे. यह हवि उत्तम आहुति वाला हो. (६)

दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्ध्नोत्.
यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु (७)

दिशाओं में वर्तमान चंद्रमा के लिए वहां के जीवों ने नमस्कार किया. इस से चंद्रमा बहुत प्रसन्न हुए. जीवों ने जिस प्रकार चंद्रमा के लिए नमस्कार किया, उसी प्रकार मेरे लिए भी करेंगे. (७)

दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः. ता मे चन्द्रेण वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्.

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा (८)

दिशाएं गाय हैं और चंद्रमा उन का बछड़ा है. वे दिशाएं चंद्रमा रूपी बछड़े के कारण मुझे मनचाहा बलकारक अन्न प्रदान करें. वे मुझे सौ वर्ष की आयु, प्रजा, पुष्टि एवं धन दें. (८)

अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ.
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् (९)

अंगार रूप लौकिक अग्नि में प्रवेश कर के देवता रूप अग्नि संचरण करते हैं. अथर्वा, अंगिरा आदि ऋषियों के पुत्र हमें आरोप के रूप में प्राप्त पाप से बचाएं. मैं नमस्कार के साथ अन्न से तुम्हारे निमित्त हवन करता हूं. हम देवों के भाग हवि को मिथ्या न करें. (९)

हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्.
सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् (१०)

हे जातवेद अग्नि! मैं तुम्हारे लिए हृदय और मन से पवित्र हवि का हवन करता हूं. हे देव! तुम सभी ज्ञानों को जानते हो. हे जातवेद अग्नि! तुम्हारे सात मुख हैं. उन मुखों के लिए मैं घी का हवन करता हूं. तुम मेरे हव्य को स्वीकार करो. (१०)

सूक्त चालीसवां देवता—जातवेद

ये पुरस्ताज्जुह्वति जातवेदः प्राच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान्.
अग्निमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (१)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु पूर्व दिशा में हवन करते हुए हम पर जादूटोने तथा पूर्व दिशा से हमारी हिंसा करना चाहते हैं, अग्नि में गिर कर हमारे वे विरोधी दुखी हों. हम उन के द्वारा किए गए जादूटोने को वापस लौटा कर उन्हें मारते हैं. (१)

ये दक्षिणतो जुह्वति जातवेदो दिक्षणाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान्.
यममृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (२)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु हमारे निवास स्थान की दक्षिण दिशा में हवन कर के जादूटोना कर रहे हैं, वे दक्षिण दिशा से हमारी हिंसा करते हैं. वे शत्रु हमारी ओर से मुंह फेर कर जल जाएं. इन जादूटोना करने वालों को हम उन के जादूटोने को उन्हीं की ओर लौटा कर मारते हैं. (२)

ये पश्चाज्जुह्वति जातवेदः प्रतीच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान्.
वरुणमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (३)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु हमारे निवास स्थान की पश्चिम दिशा में हवन कर के जादूटोना कर रहे हैं, वे पश्चिम दिशा से हमारी हिंसा करते हैं. वे शत्रु हमारी ओर से मुंह फेर कर जल जाएं. उन जादूटोना करने वालों को हम उन के जादूटोने को उन्हीं की ओर लौटा कर मारते हैं. (३)

य उत्तरतो जुह्वति जातवेद उदीच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान्.
सोममृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (४)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु हमारे निवास स्थान की उत्तर दिशा में हवन कर के जादूटोना कर रहे हैं, वे उत्तर दिशा से हमारी हिंसा करते हैं. वे शत्रु हमारी ओर से मुंह फेर कर जल जाएं. उन जादूटोना करने वालों को हम उन के जादूटोने उन्हीं की ओर लौटा कर मारते हैं. (४)

ये३ऽधस्ताज्जुह्वति जातवेदो ध्रुवाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान्.
भूमिमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (५)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु हमारे निवास से नीचे की दिशा में हवन कर के जादूटोना कर रहे हैं, वे नीचे की दिशा से हमारी हिंसा करते हैं. वे शत्रु हमारी ओर से मुंह फेर कर जल जाएं. उन जादूटोना करने वालों को हम उन के जादूटोने उन्हीं की ओर वापस कर के मारते हैं. (५)

ये३ऽन्तरिक्षाज्जुह्वति जातवेदो व्यध्वाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान्.
वायुमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (६)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु हमारे निवास स्थान से अंतरिक्ष की दिशा में हवन कर के जादूटोना कर रहे हैं, वे अंतरिक्ष की दिशा से हमारी हिंसा करते हैं, वे शत्रु हमारी ओर से मुंह फेर कर जल जाएं. उन जादूटोना करने वालों को हम उन के जादूटोने उन्हीं की ओर वापस कर के मारते हैं. (६)

य उपरिष्टाज्जुह्वति जातवेदः ऊर्ध्वाया दिशोऽभिदासन्त्यस्मान्.
सूर्यमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (७)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु हमारे निवास स्थान से ऊपर की दिशा में हवन कर के जादूटोना कर रहे हैं, वे ऊपर की दिशा से हमारी हिंसा करते हैं. वे शत्रु हमारी ओर से मुंह फेर कर जल जाएं. उन जादूटोना करने वालों को हम उन के जादूटोने उन्हीं की ओर वापस कर के मारते हैं. (७)

637/13

ये दिशामन्तर्देशेभ्यो जुह्वति जातवेदः सर्वाभ्यो दिग्भ्योऽभिदासन्त्यस्मान्.
ब्रह्मात्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि (८)

हे जातवेद अग्नि! जो शत्रु अन्तर्दिशाओं में आहुति डालकर जादूटोने द्वारा दिशाओं के कोणों से हमें नष्ट करना चाहता, वह शत्रु पराजित होते हुए कष्ट भोगे. अपने शत्रुओं को हम प्रतिसर कर्म से नष्ट करते हैं. (८)

पांचवां कांड

सूक्त पहला

देवता—वरुण

ऋधङ्मन्त्रो योनिं य आबभूवामृतासुर्वर्धमानः सुजन्मा.
अदब्धासुर्भ्राजमानोऽहेव त्रितो धर्ता दाधार त्रीणि (१)

जिस के प्राण मरण रहित हैं, जो जन्म ले कर बढ़ता है, कोई भी जिस की हिंसा नहीं कर सकता, जो दिन के समान प्रकाश वाला है, जो तीनों लोकों का धारणकर्ता और पालक है, वह योनि से उत्पन्न हुआ है. (१)

आ यो धर्माणि प्रथमः ससाद ततो वपूंषि कृणुषे पुरूणि.
धास्युर्योनिं प्रथम आ विवेशा यो वाचमनुदितां चिकेत (२)

जो जीवात्मा सब से पहले धर्म का पालन करता है तथा इसी हेतु अनेक शरीरों को धारण करता है, जो संज्ञाओं के द्वारा आकृष्ट वाणी का निर्माण करता है, वह अन्न की इच्छा से योनि में सब से पहले प्रवेश करता है. (२)

यस्ते शोकाय तन्वं रिरेच क्षरद्धिरण्यं शुचयोऽनु स्वाः.
अत्रा दधेते अमृतानि नामास्मे वस्त्राणि विश एरयन्ताम् (३)

हे वरुण! जो जीवात्मा तुम्हारे निमित्त धर्म पालन हेतु कष्ट सहता हुआ सुवर्ण के समान अपनी कीर्ति फैलाने के लिए शरीर में आया है, उसे द्यावा पृथ्वी अमरत्व प्रदान करते हैं तथा प्रजाएं वस्त्र देती हैं. (३)

प्र यदेते प्रतरं पूर्व्यं गुः सदःसद आतिष्ठन्तो अजुर्यम्.
कविः शुषस्य मातरा रिहाणे जाम्यै धुर्यं पतिमेरयेथाम् (४)

जो उत्तम स्थान पर बैठ कर उस परमात्मा का चिंतन करते हैं जो ब्राह्मण के हितैषी हैं तथा उसे प्राप्त कर चुके हैं, वे लोक परमात्मा की उपासना करके उस स्त्री को भी ईश्वर के दर्शन कराएं जो प्रजा को अपनी बहन समझ कर उस का भार वहन करती है. (४)

तद् षु ते महत् पृथुज्मन् नमः कविः काव्येना कृणोमि.
यत् सम्यञ्चावभियन्तावभि क्षामत्रा मही रोधचक्रे वावृधेते (५)

पृथ्वी को स्थिर रखने वाले दो राजा पहिए के समान तेज चाल से आगे बढ़ रहे हैं. हे पृथ्वी! मैं अथर्ववेद का ज्ञाता ब्राह्मण हूं और तुम्हारे लिए अन्न भेंट करता हूं. (५)

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामिदेकामभ्यं हुरो गात्.
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ (६)

मनु आदि ऋषियों ने चोरी, गुरु-पत्नी-गमन, ब्रह्म-हत्या, भ्रूण-हत्या, मद्यपान, मिथ्या-भाषण एवं पापकर्म — इन सात कर्मों के रूप में धार्मिक, मर्यादा निश्चित की है. जो इस मर्यादा को नहीं मानता, वह पापी है. इन सात मर्यादाओं का पालन करने वाला पुरुष मृत्यु के पश्चात सूर्य मंडल में स्थित आदित्य को प्राप्त करता है और प्रलय काल तक वहीं स्थित रहता है. (६)

उतामृतासुर्व्रत एमि कृण्वन्नसुरात्मा तन्व१स्तत् समुद्गुः.
उत वा शक्रो रत्नं दधात्यूर्जया वा यत् सचते हविर्दाः (७)

शरीर से संबंधित जो स्वयं प्रकाश उभरता है, मैं उसी का व्रती हूं. मैं अपने बल के सहारे आ रहा हूं. जो व्यक्ति इंद्र को शक्ति वाला हवि देता है, इंद्र उसे रत्न आदि धन प्रदान करते हैं. (७)

उत पुत्रः पितरं क्षत्रमीडे ज्येष्ठं मर्यादमह्वयन्त्स्वस्तये.
दर्शन् नु ता वरुण यास्ते विष्ठा आवर्व्रततः कृणवो वपूंषि (८)

क्षत्रिय जाति का पुत्र अपने पिता की पूजा करे तथा उत्तम कल्याण पाने के लिए धर्म पालन में प्रवृत्त हो. हे वरुण! अनेक स्थानों को दिखाते हुए तुम सांसारिक जीवों की रचना करते हो. (८)

अर्धमर्धेन पयसा पृणक्ष्यर्धेन शुष्म वर्धसे अमुर.
अविं वृधाम शग्मियं सखायं वरुणं पुत्रमदित्या इषिरम्.
कविशस्तान्यस्मै वपूंष्यवोचाम रोदसी सत्यवाचा (९)

मित्र और वरुण अदिति के पुत्र हैं. हम इन दोनों की वृद्धि करते हैं. हे वरुण! तुम आधे दूध, घृत आदि से इस सेना का बल बढ़ाते हो और आधे से अपनी वृद्धि करते हो. हे आकाश और पृथ्वी के देवो! विद्वान ऋषियों ने जिन शरीरों का वर्णन किया है, हम अपनी सत्य वाणी से उन्हीं का वर्णन करते हैं. (९)

सूक्त दूसरा — देवता—वरुण

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः.

सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूनन् यदेनं मदन्ति विश्व ऊमा: (१)

इंद्र संसार में धनवान एवं बली होने के कारण श्रेष्ठ माने जाते हैं. इंद्र ने जन्म लेते ही शत्रु का संहार करना आरंभ कर दिया था, इसीलिए इन के सैनिक इन की रक्षा करते हैं एवं प्रसन्न रहते हैं. (१)

वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति.
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु (२)

बढ़ता, शक्तिशाली एवं ओजस्वी शत्रु अपने दासों को भयभीत करता है. चर और अचर सारा विश्व हम में लीन हो जाता है. वेतन पाने वाले सच्चे वीर युद्ध में परमात्मा की प्रार्थना करते हैं. (२)

त्वे क्रतुमपि पृञ्चन्ति भूरि द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः.
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः (३)

हे इंद्र! जन्म, संस्कार और युद्ध की दीक्षा से तीन बातें मनुष्य के जन्म के साथ ही निश्चित हो जाती हैं एवं विशाल यज्ञ को तुम तक पहुंचाती हैं. तुम सभी पदार्थों को उत्तम स्वाद वाला बनाने वाले हो तुम हमारे पदार्थों को भी स्वादिष्ट बनाओ एवं सुंदर रीति से युक्त करो. (३)

यदि चिन्नु त्वा धना जयन्तं रणेरणे अनुमदन्ति विप्राः.
ओजीयः शुष्मिन्स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् दुरेवासः कशोकाः (४)

हे बलशाली इंद्र! तुम सभी युद्धों में विजय प्राप्त करते हो. यदि ब्राह्मण तुम्हारी स्तुति करें तो तुम उन्हें स्थिर रहने वाला बल प्रदान करो. जो मुख्य सुखमय वातावरण को दुःखमय बना देते हैं अथवा जिन की गति बुरी है, वे तुम तक न आ सकें. (४)

त्वया वयं शाशद्महे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि.
चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि (५)

हे इंद्र! तुम्हारी सहायता से हम युद्ध में अपने सभी विरोधियों को समाप्त कर देते हैं. मैं तपस्या द्वारा सिद्ध अपनी वाणी से तुम्हारे शस्त्रों को प्रेरणा प्रदान करता हूं तथा तुम्हारी गतिशील वाणी को तीखा बनाता हूं. (५)

नि तद् दधिषेऽवरे परे च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे.
आ स्थापयत मातरं जिगत्नुमत इन्वत कर्वराणि भूरि (६)

जिस घर में उत्तम एवं साधारण प्राणियों का पालन हुआ तथा जिस घर में अन्न द्वारा उन की रक्षा की गई, उस घर में कालिका माता की गतिशील शक्ति की स्थापना करो. इस प्रकार वह घर अद्भुत पदार्थों से पूर्ण हो जाएगा. (६)

स्तुष्व वर्ष्मन् पुरुवर्त्मानं समृभ्वाणमिनतममाप्तमाप्त्यानाम्.
आ दर्शति शवसा भूर्योजाः प्र सक्षति प्रतिमानं पृथिव्याः (७)

हे शरीरधारी पुरुष! तू उस राजा की स्तुति कर जो विचरण करने वाला, तेजस्वी, स्वामी एवं उन गुणों से युक्त है जो आप्त जनों में होते हैं. राजा पृथ्वी का प्रतिरूप है एवं युद्ध में जुटा हुआ है. (७)

इमा ब्रह्म बृहद्दिवः कृणवदिन्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः.
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजा तुरश्चिद् विश्वमर्णवत् तपस्वान् (८)

यह राजा स्वर्ग प्राप्ति की अभिलाषा से महान स्तोत्रों द्वारा इंद्र को प्रसन्न कर रहा है. स्वर्ग के स्वामी इंद्र मेघों के द्वारा जल वर्षा कर के विश्व को जल से पूर्ण करते हैं. (८)

एवा महान् बृहद्दिवो अथर्वावोचत् स्वां तन्व१मिन्द्रमेव.
स्वसारौ मातरिभ्वरी अरिप्रे हिन्वन्ति चैने शवसा वर्धयन्ति च (९)

अपने शरीर को इंद्र मान कर महर्षि अथर्वा ने कहा था कि पाप रहित भगिनियां इसे बल के द्वारा बढ़ाती हुई प्रसन्न करती हैं. (९)

सूक्त तीसरा — देवता—अग्नि

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम.
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम (१)

हे अग्निदेव! युद्धों में हम वर्चस्वी बनें. हम तुम्हें प्रकट करते हुए अपने शरीर को शक्तिशाली बनाएं. चारों दिशाएं और प्रदिशाएं हमारे सामने तथा आप के संरक्षण में शत्रुओं की इस सेना पर विजय प्राप्त करें. (१)

अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषां त्वं नो गोपाः परि पाहि विश्वतः.
अपाञ्चो यन्तु निवता दुरस्यवोऽमैषां चित्तं प्रबुधां वि नेशत् (२)

हे अग्निदेव! तुम हजारों शत्रुओं का क्रोध समाप्त करते हुए सभी ओर से हमारी रक्षा करो. हमें दुख देने के इच्छुक लोग हमारे सामने नम्र बनें तथा हमारे सामने से चले जाएं. (२)

मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः.
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामायास्मै (३)

इंद्र के साथ मरुत, विष्णु और अग्नि आदि सभी देव युद्ध भूमि में मेरे अनुकूल बनें. अंतरिक्ष में मेरा यशोगान गूंजे तथा वायु की गति मेरे अनुकूल हो. (३)

मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु.

एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवा अभि रक्षन्तु मेह (४)

मैं जो इच्छा और संकल्प करता हूं, वह सत्य हो. मैं सभी प्रकार के पापों से दूर रहूं तथा विश्वेदेव मेरी रक्षा करें. (४)

मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः.
दैवा होतारः सनिषन् न एतदरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः (५)

मैं जिन देवों को बुलाता हूं, वे मुझे अन्न से संपन्न बनाएं. यज्ञ में देवों के होता हमारे समीप बैठें, जिस से हम रोगरहित और शक्तिशाली बन सकें. (५)

दैवीः षडुर्वीरुरु नः कृणोत विश्वे देवास इह मादयध्वम्.
मा नो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या (६)

हे विश्वेदेव! आप सब हमारे लिए पृथ्वी, आकाश, जल, ओषधि, दिन और रात—इन छः दिव्य शक्तियों को बढ़ाइए. आप प्रसन्न हों, जिस से कोई न हमारा तिरस्कार करे और न हमारी निंदा करे. हमें पाप न लगे. (६)

तिस्रो देवीर्महि नः शर्म यच्छत प्रजायै नस्तन्वे३ यच्च पुष्टम्.
मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रधाम द्विषते सोम राजन् (७)

भारती, सरस्वती और पृथ्वी—ये तीन देवियां हमारा कल्याण करें. हमारी प्रजाएं पोषक पदार्थ पा कर पुण्य शरीर वाली हों. हे तेजस्वी सोम! हम संतान एवं पशुओं से हीन न हों तथा शत्रु हमें दुख न दें. (७)

उरुव्यचा नो महिषः शर्म यच्छत्वस्मिन् हवे पुरुहूतः पुरुक्षु.
स नः प्रजायै हर्यश्व मृडेन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः (८)

हे इंद्र! तुम नदी के समान गतिशील, गुणसंपन्न एवं अन्न के स्वामी हो. तुम हमें इस यज्ञ के कारण सुख प्रदान करो. तुम हमारी संतान का नाश मत करो तथा हमारा त्याग मत करो. (८)

धाता विधाता भुवनस्य यस्पतिर्देवः सवितामिमातिषाहः.
आदित्या रुद्रा अश्विनोभा देवाः पान्तु यजमानं निर्ऋथात् (९)

धाता, विधाता, संसार के स्वामी एवं शत्रुहंता सवितादेव, आदित्य, रुद्र तथा दोनों अश्विनीकुमार यजमान को पाप से बचाएं और उग्र शत्रुओं से रक्षा करें. (९)

ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामह एनान्.
आदित्या रुद्रा उपरिस्पृशो न उग्रं चेत्तारमधिराजमक्रत (१०)

जो हमारे शत्रु हैं, वे हम से दूर भाग जाएं. हम इंद्र और अग्नि के द्वारा अपने शत्रुओं को बांधते हैं. आदित्य और रुद्र ने हमें जो राजा बना दिया है, वह सावधान

करने वाला है. (१०)

अर्वाञ्चमिन्द्रममुतो हवामहे यो गोजिद् धनजिदश्वजिद् यः.
इमं नो यज्ञं विहवे शृणोत्वस्माकमभूर्हर्यश्व मेदी (११)

हम ऐसे इंद्र को यज्ञ में बुलाते हैं जो भूमि के विजेता, धन के विजेता और घोड़ों को जीतने वाले हैं, वह इंद्र हमारी स्तुति सुनें. हे इंद्र! तुम हम से स्नेह करने वाले बनो. (११)

सूक्त चौथा — देवता—कुष्ठ, तक्मा-नाशन

यो गिरिष्वजायथा वीरुधां बलवत्तमः.
कुष्ठेहि तक्मनाशन तक्मानं नाशयन्नितः (१)

हे पर्वतों में उत्पन्न होने वाली तथा शक्तिशाली ओषधि कुष्ठ! तू कोढ़ नामक कठिन रोग का नाश करने वाली है. तू हमें कष्ट देने वाले रोग को नष्ट करती हुई यहां आ. (१)

सुपर्णसुवने गिरौ जातं हिमवतस्परि.
धनैरभि श्रुत्वा यन्ति विदुर्हि तक्मनाशनम् (२)

गरुड़ को उत्पन्न करने वाले हिमवंत पर्वत के ऊपर उत्पन्न होने वाली इस ओषधि के विषय में हम ने लोगों से सुना और अन्न ले कर वहां गए. इस प्रकार हम ने इस ओषधि को प्राप्त किया. (२)

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि.
तत्रामृतस्य चक्षणं देवाः कुष्ठमवन्वत (३)

यहां तीसरे देव स्थान में अश्वत्थ अर्थात पीपल विराजमान है. यहां देवों ने अमृत के समान गुण वाले कूठ को जाना. (३)

हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि.
तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत (४)

देवों ने सोने के रस्से से बंधी हुई स्वर्ग की नौका के द्वारा अमृत के पुष्प के समान कूठ को प्राप्त किया. (४)

हिरण्ययाः पन्थान आसन्नरित्राणि हिरण्यया.
नावो हिरण्ययीरासन् याभिः कुष्ठं निरावहन् (५)

सोने के बने हुए मार्ग से स्वर्ण की नाव के द्वारा कूठ को लाया गया. उन नावों की पतवारें भी सोने की थीं. (५)

इमं मे कुष्ठ पूरुषं तमा वह तं निष्कुरु. तमु मे अगदं कृधि (६)

हे कूठ! मेरे इस पुरुष को अपने समीप ले कर और इस रोग से छुटकारा दिला कर स्वस्थ बनाओ. (६)

देवेभ्यो अधि जातो ऽसि सोमस्यासि सखा हितः.
स प्राणाय व्यानाय चक्षुषे मे अस्मै मृड (७)

हे कूठ! तुम देवों के समीप उत्पन्न हुए हो तथा सोम के हितकारक मित्र हो. तुम मेरे इस पुरुष के प्राण, व्यान एवं नेत्रों को सुख देने वाले बनो. (७)

उदङ् जातो हिमवतः स प्राच्यां नीयसे जनम्.
तत्र कुष्ठस्य नामान्युत्तमानि वि भेजिरे (८)

कूठ हिमालय पर्वत के उत्तरभाग में उत्पन्न हुआ है एवं मनुष्यों के द्वारा पूर्व दिशा में लाया गया है. वहां उस के उत्तम नामों का विभाजन हुआ. (८)

उत्तमो नाम कुष्ठास्युत्तमो नाम ते पिता.
यक्ष्मं च सर्वं नाशय तक्मानं चारसं कृधि (९)

हे कूठ! तुम्हारी प्रसिद्धि उत्तम है तथा तुम्हारे पिता भी उत्तम थे. तुम सभी प्रकार के राजयक्ष्मा रोगों का नाश करो तथा कुष्ठ रोग को हम से दूर भगाओ. (९)

शीर्षामयमुपहत्यामक्ष्योस्तन्वोऽरपः.
कुष्ठस्तत् सर्वं निष्करद् दैवं समह वृष्ण्यम् (१०)

सिर संबंधी रोग, नेत्र संबंधी व्याधियां एवं रोग उत्पन्न करने वाले पाप को कूठ ने दैवी बल पा कर इन सब को नष्ट कर दिया. (१०)

सूक्त पांचवां — देवता—लाक्षा

रात्री माता नभः पितार्यमा ते पितामहः.
सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा (१)

हे लाख नामक ओषधि! तू चंद्रमा की किरणों से पुष्ट होती है. इसलिए रात्रि तेरी माता है. तू वर्षा काल में उत्पन्न होती है, इसलिए आकाश तेरा पिता है. आकाश में मेघों को उत्पन्न करने के कारण सूर्य तेरा पितामह है. तेरा नाम सिलाची है और तू देवों की बहन है. (१)

यस्त्वा पिबति जीवति त्रायसे पुरुषं त्वम्.
भर्त्री हि शश्वतामसि जनानां च न्यञ्चनी (२)

जो तुझे पीता है, वह जीवित रहता है. तू पुरुष की रक्षा करती है, तू मनुष्यों का भरणपोषण करने वाली एवं उन्नत बनाने वाली है. (२)

वृक्षंवृक्षमा रोहसि वृषण्यन्तीव कन्यला.

जयन्ती प्रत्यातिष्ठन्ती स्परणी नाम वा असि (३)

तू बैल की इच्छा करने वाली गाय के समान प्रत्येक वृक्ष पर चढ़ती है. तू विजय प्राप्त करती है एवं स्थित रहती है, इसलिए तेरा नाम स्परणी है. (३)

यद् दण्डेन यदिष्वा यद् वारुर्हरसा कृतम्.
तस्य त्वमसि निष्कृतिः सेमं निष्कृधि पुरुषम् (४)

हे लाख! जो डंडे से चोट खाया है और जो धारदार शस्त्र से घायल है, तू उन के घावों को ठीक करने का उपाय है, इसलिए तू इस पुरुष को घावविहीन बना. (४)

भद्रात् प्लक्षान्निस्तिष्ठस्यश्वत्थात् खदिराद् धवात्.
भद्रान्न्यग्रोधात् पर्णात् सा न एह्यरुन्धति (५)

हे लाख! तू कदंब, पाकड़, पीपल, खैर, धौ, भद्र, न्यग्रोध एवं पर्ण नामक वृक्षों से उत्पन्न होती है. हे घाव को शुद्ध करने वाली एवं भरने वाली ओषधि लाख! तू हमें प्राप्त हो. (५)

हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्यवर्णे वपुष्टमे.
रुतं गच्छासि निष्कृते निष्कृतिर्नाम वा असि (६)

हे स्वर्ण के समान वर्ण वाली सुभगा एवं सूर्य के समान चमक वाली ओषधि लाख! तू शरीर को स्वस्थ बनाती है. तू घाव को ठीक करती है, इसलिए तेरा नाम निष्कृति है. (६)

हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे लोमशवक्षणे.
अपामसि स्वसा लाक्षे वातो हात्मा बभूव ते (७)

हे सोने के समान वर्ण वाली, सुभगा, सूर्य के समान वर्ण वाली एवं लोगों का विनाश करने वाली लाख! तू जलों की बहन है और वायु तेरी आत्मा है. (७)

सिलाची नाम कानीनोऽजबभ्रु पिता तव.
अश्वो यमस्य यः श्यावस्तस्य हास्नास्युक्षिता (८)

हे लाख! तेरे नाम सिलाची और कानीन हैं. बकरियों का पालक तेरा पिता है. यमराज का जो पीले रंग का घोड़ा है, उस के रक्त से तुझे सींचा गया है. (८)

अश्वस्यास्नः सम्पतिता सा वृक्षां अभि सिष्यदे.
सरा पतत्रिणी भूत्वा सा न एह्यरुन्धति (९)

हे घाव भरने वाली लाख! तू घोड़े के रंग वाली है एवं वृक्षों को सींचती हैं. तू सरकने वाली है, इसलिए चिड़िया बन कर हमारे समीप आ. (९)

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः.
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः (१)

संपूर्ण सृष्टि का कारण ब्रह्म सृष्टि के आरंभ में सूर्य के रूप में प्रकट हुआ. उस का तेज सीमा रहित है जो सभी दिशाओं और लोकों में व्याप्त होता है. वह अनुपम है. सत इसी से उत्पन्न हुआ है और असत इसी में समा जाता है. (१)

अनाप्ता ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे.
वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे (२)

हे मनुष्यो! तुम्हारे विरोधी शत्रुओं ने जो उत्तम कर्म किए हैं, उन कर्मों से वे हमारी संतानों तथा वीरों का विनाश न करें, इसलिए मैं वह अभिचार कर्म तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर रहा हूं. (२)

सहस्रधार एव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः.
तस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवे (३)

आकाश में स्थित एवं हजारों मार्गों वाले स्वर्ग में विनाश करने वाले यह घोषित कर चुके हैं. जो लोग युद्ध में जाने के लिए आनाकानी करते हैं, उन्हें बांधने के लिए यमदूत पाश लिए हुए सदा तत्पर रहते हैं एवं अपनी आंखें कभी बंद नहीं करते. (३)

पर्यू षु प्र धन्वा वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः.
द्विषस्तदध्यर्णवेनेयसे सनिस्रसो नामासि त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः (४)

हे सूर्य! तुम अन्न उत्पादन के निमित्त मेघों के समीप जाते हो और उन्हें ताड़ित कर के सागर के पास पहुंचाते हो. इसी कारण तुम्हारा नाम सनिस्रत है. वर्ष का तेरहवां महीना जो इंद्र का घर है, तुम उस में भी वर्षा करने को तत्पर हो. (४)

न्वे३तेनारात्सीरसौ स्वाहा.
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः (५)

इसी अभिचार कर्म द्वारा इस पुरुष ने सिद्धि प्राप्त की थी. यह अभिचार कर्म सुंदर आहुति वाला हो. हे सोम और रुद्र! तुम तीखे अस्त्रों वाले हो. तुम हमें इस युद्ध में विजयी बना कर सुख प्रदान करो. (५)

अवैतेनारात्सीरसौ स्वाहा.
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः (६)

इस अभिचार कर्म के द्वारा ही इस राजा ने सिद्धि प्राप्त की है एवं शत्रुओं का विनाश किया है. इस की छवि सुंदर आहुति वाली हो. हे सोम एवं रुद्र! तुम तीक्ष्ण

शस्त्रों वाले हो. तुम इस युद्ध में विजय प्रदान करा के हमें सुख दो. (६)

अपितेनारात्सीरसौ स्वाहा.
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः (७)

इस अभिचार कर्म द्वारा ही इस राजा ने अपने शत्रुओं का विरोध करते हुए उन का दमन किया तथा सिद्धि प्राप्त की. इस की यह हवि सुंदर आहुति वाली हो. हे सोम और रुद्र! तुम अत्यधिक तीक्ष्ण आयुधों वाले तथा सुख प्राप्त करने वाले हो. तुम हमें इस युद्ध में विजयी बना कर सुख प्रदान करो. (७)

मुमुक्तमस्मान्दुरितादवद्याज्जुषेथां यज्ञममृतमस्मासु धत्तम् (८)

हे सोम एवं रुद्र देव! हमें ऐसे पाप से बचाओ, जिस का नाम लेने में भी लज्जा आती है. तुम इस यज्ञ को प्राप्त करो और इस में अमृत धारण करो. (८)

चक्षुषो हेते मनसो हेते ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते.
मेन्या मेनिरस्यमेनयस्ते सन्तु येऽस्मां अभ्यघायन्ति (९)

हे नेत्र की, मन की, ब्रह्म की एवं तप की संहारक शक्ति! तुम सभी आयुधों की अपेक्षा श्रेष्ठ आयुध हो. जो आयुधधारी हमें नष्ट करना चाहते हैं, वे आयुधहीन हो जाएं. (९)

योऽस्मांश्चक्षुषा मनसा चित्त्याकूत्या च यो अघायुरभिदासात्.
त्वं तानग्ने मेन्यामेनीन् कृणु स्वाहा (१०)

हे अग्नि! हमारी हत्या रूपी पाप करने का इच्छुक जो व्यक्ति हम को चक्षु से, मन से और चित्तवृत्ति से क्षीण करना चाहता है, उसे अपने आयुध के द्वारा आयुधहीन बनाओ. हमारी यह आहुति उत्तम हो. (१०)

इन्द्रस्य गृहोऽसि. तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः
सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन (११)

हे अग्नि! तुम इंद्र के गृह हो. तुम सर्वत्र गमन करने वाले, सब के पुरुष, सब की आत्मा एवं सब के शरीर हो. मैं अपने सभी सहयोगियों सहित आप की शरण में आया हूं. (११)

इन्द्रस्य शर्मासि. तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः
सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन (१२)

हे अग्नि! तुम इंद्र के सुख, सर्वत्र गमन करने वाले, सब की आत्मा, सब के शरीर एवं सब के पुरुष हो. मैं अपने सभी सहयोगियों सहित तुम्हारी शरण में आया हूं. (१२)

इन्द्रस्य वर्मासि. तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपुरुषः
सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन (१३)

हे अग्नि! तुम इंद्र के कवच, सर्वत्र गमन करने वाले, सब की आत्मा, सब के शरीर और सब के पुरुष हो. मैं अपने समस्त परिवार और पूरी संपत्ति के साथ तुम्हारी शरण में आता हूं. (१३)

इन्द्रस्य वरूथमसि. तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपुरुषः
सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन (१४)

हे अग्नि! तुम इंद्र के सैनिक, सर्वत्र गमन करने वाले, सब के पुरुष, सब की आत्मा और सब के शरीर हो. मैं अपने सभी सहयोगियों सहित तुम्हारी शरण में आया हूं. (१४)

सूक्त सातवां — देवता—अराति

आ नो भर मा परि ष्ठा अराते मा नो रक्षीर्दक्षिणां नीयमानाम्.
नमो वीर्त्साया असमृद्धये नमो अस्त्वरातये (१)

हे अराति! हम को धन संपन्न बना. तू हमारे चारों ओर स्थित मत हो और हमारे द्वारा लाई गई दक्षिणा को प्रभावित मत कर. यह हवि हम दान हीनता की अधिष्ठात्री देवी को वृद्धि न होने की इच्छा से दे रहे हैं. यह तुझे प्राप्त हो. (१)

यमराते पुरोधत्से पुरुषं परिरापिणम्.
नमस्ते तस्मै कृण्मो मा वनिं व्यथयीर्मम (२)

हे अराति! हम उस पुरुष को दूर से प्रणाम करते हैं, जो तुम्हारे सम्मुख रहता है एवं केवल बोलने वाला है, काम नहीं करता. तुम हमारी इस इच्छा को ठुकराना मत. (२)

प्र णो वनिर्देवकृता दिवा नक्तं च कल्पताम्.
अरातिमनुप्रेमो वयं नमो अस्त्वरातये (३)

हम में देवों की भक्ति रातदिन बढ़ती रहे. इसीलिए हम अराति की शरण में जाते हैं. अराति को नमस्कार हो. (३)

सरस्वतीमनुमतिं भगं यन्तो हवामहे.
वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषं देवानां देवहूतिषु (४)

मैं देवों का आह्वान करने वाले यज्ञों में उस वाणी का उच्चारण करता हूं, जो उन्हें प्रसन्न करने वाली है. हम सब सरस्वती, अनुमति और भगदेव की शरण प्राप्त करते हैं और उन्हें बुलाते हैं. (४)

यं याचाम्यहं वाचा सरस्वत्या मनोयुजा.

श्रद्धा तमद्य विन्दतु दत्ता सोमेन बभ्रुणा (५)

मन से उत्पन्न सरस्वती की वाणी के द्वारा मैं जिस वस्तु को पाने की प्रार्थना करता हूं, वह शक्तिशाली सोमदेव की श्रद्धा द्वारा दी हुई प्राप्त हो. (५)

मा वनिं मा वाचं नो वीर्त्सीरुभाविन्द्राग्नी आ भरतां नो वसूनि.
सर्वे नो अद्य दित्सन्तोऽरातिं प्रति हर्यत (६)

हे अराति! तू हमारी वाणी और भक्ति को अवरुद्ध मत कर. इंद्र और अग्नि हमें धन प्रदान करें तथा वे इस समय हमारे शत्रुओं के अनुकूल न हों. (६)

परोऽपेह्यसमृद्धे वि ते हेतिं नयामसि.
वेद त्वाहं निमीवन्तीं नितुदन्तीमराते (७)

हे अराति! मैं जानता हूं कि तू दुर्बल बनाने वाला और पीड़ा देने वाला है. इस कारण तू मुझ से दूर रह. मैं तेरी विनाशक शक्ति को दूर कर सकता हूं. (७)

उत नग्ना बोभुवती स्वप्नया सचसे जनम्.
अराते चित्तं वीर्त्सन्त्याकूतिं पुरुषस्य च (८)

हे अराति! तू मनुष्यों की कामनाओं को असफल करता है तथा उन्हें सदा प्रभाव के रूप में प्राप्त होता है. (८)

या महती महोन्माना विश्वा आशा व्यानशे.
तस्यै हिरण्यकेश्यै निर्ऋत्या अकरं नमः (९)

असमृद्धि अर्थात दरिद्रता हमारी सभी आशाओं को सीमित कर रही है. सुनहरे केशों वाली इस असमृद्धि को मैं नमस्कार करता हूं. (९)

हिरण्यवर्णा सुभगा हिरण्यकशिपुर्मही.
तस्यै हिरण्यद्रा पयेऽरात्या अकरं नमः (१०)

यह सुनहरे रंग वाली पृथ्वी व्याप्ति के कारण हिरण्यकश्यप के वश में हो कर समृद्धहीन हो गई थी. यह असमृद्धि रमणीयता का विनाश करती है. मैं इस को नमस्कार करता हूं. (१०)

सूक्त आठवां — देवता—अग्नि

वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य आज्यं वह.
अग्ने तां इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् (१)

हे अग्नि! तुम शक्तिशाली ओषधि के ईंधन से देवों के हेतु घृत का वहन करो. इस कर्म से तुम देवों को प्रसन्न करो. मेरे यज्ञ में सभी देव आएं. (१)

इन्द्रा याहि मे हवमिदं करिष्यामि तच्छृणु. इम ऐन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे. तेभिः शकेम वीर्य१ जातवेदस्तनूवशिन् (२)

हे इंद्र! मेरे इस यज्ञ में आओ और मैं जो स्तुति कर रहा हूं, उसे सुनो. सभी ऋत्विज मेरी इच्छा के अनुसार कार्य करें. हे जन्म लेने वालों के ज्ञाता इंद्र! जिन ऋत्विजों का मैं ने वर्णन किया है, उन के प्रयत्न से हम शक्तिशाली बनें. (२)

यदसावमुतो देवा अदेवः संश्चिकीर्षति.
मा तस्याग्निर्हव्यं वाक्षीद्धवं देवा अस्य मोप गुर्ममैव हवमेतन (३)

हे देवगण! जो भक्तिहीन पुरुष यज्ञ करना चाहता है, उस के हव्य को अग्नि तुम्हारे पास तक न पहुंचाएं. देवगण उस भक्ति हीन पुरुष के यज्ञ में न जा कर मेरे यज्ञ में पधारें. (३)

अति धावतातिसरा इन्द्रस्य वचसा हत.
अविं वृक इव मथ्नीत स वो जीवन् मा मोचि प्राणमस्यापि नह्यत (४)

हे मनुष्यो! तुम इंद्र के वचनों से वृद्धि प्राप्त करो और शत्रुओं का विनाश करो. तुम शत्रु को इस प्रकार मथो, जिस प्रकार भेड़िया भेड़ को मथता है. वह जीवित न रहने पाए. तुम उसे नष्ट कर दो. (४)

यममी पुरोदधिरे ब्रह्माणमपभूतये. इन्द्र स ते अधस्पदं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे (५)

हे इंद्र! इन शत्रुओं ने हमारी दुर्गति के निमित्त यज्ञ में जिसे अपना पुरोहित बनाया है, उस का अधःपतन हो जाए. मैं उसे मृत्यु के समीप फेंक रहा हूं. (५)

यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे.
तनूपानं परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि (६)

हे देव! हमारे शत्रुओं ने तनुपान एवं परिपाण नामक कर्म के समय अपने मंत्रमय कवचों को सिद्ध कर लिया है. तुम इन कर्मों से संबंधित मंत्रों को असफल बनाओ. (६)

यानसावतिसरांश्चकार कृणवच्च यान्.
त्वं तानिन्द्र वृत्रहन् प्रतीचः पुनरा कृधि यथामुं तृणहां जनम् (७)

हे वृत्र राक्षस का नाश करने वाले इंद्र! हमारे शत्रु ने जिन योद्धाओं को आगे की ओर बढ़ाया है, उन्हें तुम पीछे धकेल दो, जिस से मैं शत्रु की सेना का विनाश कर सकूं. (७)

यथेन्द्र उद्वाचनं लब्ध्वा चक्रे अधस्पदम्.
कृण्वेऽहमधरांस्तथामूञ्छश्वतीभ्यः समाभ्यः (८)

इंद्र ने जिस प्रकार स्तुति वचनों के श्रेष्ठ अस्त्र से अपने शत्रु को पराजित किया था, उसी प्रकार मैं इन शत्रुओं का तिरस्कार करता हूं. (८)

अत्रैनानिन्द्रा वृत्रहन्नुग्रो मर्मणि विध्य. अत्रैवैनानभि तिष्ठेन्द्र मेद्यऽहं तव.
अनु त्वेन्द्रा रभामहे स्याम सुमतौ तव (९)

हे वृत्र को मारने वाले इंद्र! तुम उग्र बन कर इस युद्ध में मेरे शत्रु के मर्मस्थलों का वेध करो. मैं तुम्हारा स्नेहपात्र हूं, इसीलिए तुम मेरे इन शत्रुओं से युद्ध करो. मैं तुम्हारा अनुगामी हूं और भविष्य में भी तुम्हारी सुमति में रहूंगा. (९)

सूक्त नौवां — देवता—वास्तोष्पति

दिवे स्वाहा (१)

द्युलोक के अधिष्ठाता देव के लिए हमारी यह हवि समर्पित है. (१)

पृथिव्यै स्वाहा (२)

पृथ्वी के अधिष्ठाता देव के लिए हमारी यह हवि समर्पित है. (२)

अन्तरिक्षाय स्वाहा (३)

आकाश के अधिष्ठाता देव के लिए हमारी यह हवि समर्पित है. (३)

अन्तरिक्षाय स्वाहा (४)

अंतरिक्ष अर्थात धरती और आकाश के अधिष्ठाता देव के लिए यह हवि समर्पित है. (४)

दिवे स्वाहा (५)

द्युलोक अर्थात स्वर्ग के अधिष्ठाता के लिए हमारी यह हवि समर्पित है. (५)

पृथिव्यै स्वाहा (६)

पृथ्वी के लिए हमारी यह हवि समर्पित है. (६)

सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणो३न्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम्.
अस्तृतो नामाहमयमस्मि स आत्मानं नि दधे द्यावापृथिवीभ्यां गोपीथाय (७)

वायु मेरे नेत्र हैं, वायु मेरा प्राण है, अंतरिक्ष के अधिष्ठाता देव मेरी आत्मा हैं और पृथ्वी मेरा शरीर है. मैं अमर अथवा मृत्युरहित नाम वाला हूं. हे द्यावा पृथ्वी! मैं अपनी आत्मा को सुरक्षा के निमित्त आपके सामने समर्पित करता हूं. (७)

उदायुरुद् बलमुत् कृतमुत् कृत्यामुन्मनीषामुदिन्द्रियम्. आयुष्कृदायुष्पत्नी
स्वधावन्तौ गोपा मे स्तं गोपायतं मा. आत्मसदौ मे स्तं मा मा हिंसिष्टम् (८)

हे द्यावा पृथ्वी! तुम हमारी आयु, बल, कर्म, कृत्या, बुद्धि तथा इंद्रियों को उत्कृष्ट बनाओ. हे आयु बढ़ाने वाले, आयु की रक्षा करने वाले एवं स्व भासमान द्यावापृथ्वी! तुम मेरी रक्षा करो! आप मेरी आत्मा में स्थित हो और कभी मेरी हिंसा न करें. (८)

सूक्त दसवां — देवता—वास्तोष्पति

अश्मवर्म मेऽसि यो मा प्राच्या दिशो ऽघायुरभिदासात्. एतत् स ऋच्छात् (१)

हे पत्थर के बने घर! तू मेरा है. जो पापी हत्यारा मुझे पूर्व दिशा की ओर से नष्ट करना चाहता है, वह नाश को प्राप्त हो. (१)

अश्मवर्म मेऽसि यो मा दक्षिणाया दिशो ऽघायुरभिदासात्. एतत् स ऋच्छात् (२)

हे पत्थर के बने हुए घर! तू मेरा है. जो हत्या करने का इच्छुक पापी दक्षिण दिशा से मुझे नष्ट करने का इच्छुक है, वह यहां आतेआते स्वयं नष्ट हो जाए. (२)

अश्मवर्म मेऽसि यो मा प्रतीच्या दिशो ऽघायुरभिदासात्. एतत् स ऋच्छात् (३)

हे पत्थर के बने हुए घर! तू मेरा है. जो हत्या करने का इच्छुक पापी मुझे पश्चिम दिशा से नष्ट करना चाहता है, वह मेरे समीप आने से पहले ही नष्ट हो जाए. (३)

अश्मवर्म मेऽसि यो मोदीच्या दिशो ऽघायुरभिदासात्. एतत् स ऋच्छात् (४)

हे पत्थर के बने घर! तू मेरा है. जो पापी मेरी हत्या करने की इच्छा से उत्तर दिशा से आता है, वह मेरे समीप आ कर नष्ट हो जाए. (४)

अश्मवर्म मेऽसि यो मा ध्रुवाया दिशो ऽघायुरभिदासात्. एतत् स ऋच्छात् (५)

हे पत्थर के बने हुए घर! तू मेरा है. जो पापी ध्रुव दिशा अर्थात नीचे की ओर से मुझे नष्ट करने की इच्छा करता है, उस का नाश हो. (५)

अश्मवर्म मेऽसि यो मा मोर्ध्वाया दिशो ऽघायुरभिदासात्. एतत् स ऋच्छात् (६)

हे पत्थर के घर! तू मेरा है. जो पापी मुझे ऊपर की दिशा से समाप्त करना चाहता है, उस का नाश हो. (६)

अश्मवर्म मेऽसि यो मा दिशामन्तर्देशेभ्योऽघायुरभिदासात्. एतत् स ऋच्छात् (७)

हे पत्थर के बने हुए घर! तू मेरा है जो पापी दिशाओं के कोनों से मेरा नाश करना चाहता है, उस का नाश हो. (७)

बृहता मन उप ह्वये मातरिश्वना प्राणापानौ. सूर्याच्चक्षुरन्तरिक्षाच्छ्रोत्रं पृथिव्याः शरीरम्. सरस्वत्या वाचमुप ह्वयामहे मनोयुजा (८)

मैं चंद्रमा के मन का आह्वान करता हूं. मैं वायु से प्राण अपान की, सूर्य से नेत्र की, अंतरिक्ष से क्षेत्र की, पृथ्वी से शरीर की और सरस्वती से मन युक्त वाणी की प्रार्थना करता हूं. (८)

सूक्त ग्यारहवां — देवता—वरुण

कथं महे असुरायाब्रवीरिह कथं पित्रे हरये त्वेषनृम्णः.
पृश्निं वरुण दक्षिणां ददावान् पुनर्मघ त्वं मनसाचिकित्सीः (१)

हे शक्तिशाली वरुण! तुम ने जगत के पालन करने वाले सूर्य से क्या कहा था? तुम सूर्य को दक्षिणा देते हो एवं मन से चिकित्सा करते हो. (१)

न कामेन पुनर्मघो भवामि सं चक्षे कं पृश्निमेतामुपाजे.
केन नु त्वमथर्वन् काव्येन केन जातेनासि जातवेदाः (२)

मैं इच्छा मात्र से ही संपत्तिशाली नहीं बन गया हूं, अपितु सूर्य देव से प्रार्थना करता हूं. मैं यह सुख प्राप्त करता रहूं. हे ऋत्विज! तुम किस विद्या और चातुर्य के द्वारा सभी जन्म लेने वालों के ज्ञाता बन गए हो? (२)

सत्यमहं गभीरः काव्येन सत्यं जातेनास्मि जातवेदाः.
न मे दासो नार्यो महित्वा व्रतं मीमाय यदहं धरिष्ये (३)

यह सत्य बात है कि मैं काव्य अर्थात अथर्व के द्वारा प्राप्त चतुरता से ज्ञानी बन गया हूं तथा अग्नि के समान सब का मार्गदर्शन करता हूं. मैं जिस व्रत को धारण करूंगा, उसे कोई भंग नहीं कर सकता. (३)

न त्वदन्यः कवितरो न मेधया धीरतरो वरुण स्वधावन्.
त्वं ता विश्वा भुवनानि वेत्थ स चिन्नु त्वज्जनो मायी बिभाय (४)

हे स्वधा वाले वरुण! तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी दूसरा विद्वान मेधावी और वीर नहीं है. तुम सभी भुवनों को जानते हो, इसलिए सब लोग तुम से भयभीत रहते हैं. (४)

त्वं ह्यङ्ग वरुण स्वधावन् विश्वा वेत्थ जनिमा सुप्रणीते.
किं रजस एना परो अन्यदस्त्येना किं परेणावरममुर (५)

हे सुधा के पात्र एवं नीति पालक वरुण! तुम प्राणियों के सभी जन्मों को जानते हो. तुम सभी से मोह रखते हो. इस रजोगुण युक्त धन से श्रेष्ठ कौन सी वस्तु है. इस से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है. (५)

एकं रजस एना परो अन्यदस्त्येना पर एकेन दुर्णशं चिदर्वाक्. तत् ते विद्वान् वरुण प्र ब्रवीम्यधोवचसः पणयो भन्तु नीचैर्दासा उप सर्पन्तु भूमिम् (६)

इस रजोगुण युक्त धन से श्रेष्ठ गुण युक्त धन है. सतोगुण युक्त से श्रेष्ठ ब्रह्म है. हे वरुण देव! तुम इस विषय के जानने वाले हो, इसलिए मैं तुम से निवेदन करता हूं कि बुरा व्यवहार करने वाले लोग मेरे सामने निकृष्ट वचन न बोलें और दास जन झुक कर चलें. (६)

त्वं ह्य१ङ्ग वरुण ब्रवीषि पुनर्मघेष्ववद्यानि भूरि.
मो षु पणीँ रभ्ये३तावतो भून्मा त्वा वोचन्नराधसं जनासः (७)

हे वरुण देव! तुम बारबार धन प्राप्ति के अवसरों के विषय में बताते हो. तुम इन व्यवहार करने वालों की उपेक्षा मत करो. अन्यथा ये तुम्हें धनहीन समझने लगेंगे. (७)

मा मा वोचन्नराधसं जनासः पुनस्ते पृश्निं जरितर्ददामि.
स्तोत्रं मे विश्वमा याहि शचीभिरन्तर्विश्वासु मानुषीषु दिक्षु (८)

लोग बारबार तुम्हें धनहीन अथवा कंजूस न समझ लें, इसलिए मैं तुम्हें यह थोड़ा सा धन भेंट करता हूं. मेरी इच्छा है कि तुम्हारी यह स्तुति सारे संसार में फैल जाए और सभी दिशाओं में मनुष्य इसे गाएं. (८)

आ ते स्तोत्राण्युद्यतानि यन्त्वन्तर्विश्वासु मानुषीषु दिक्षु.
देहि नु मे यन्मे अदत्तो असि युज्यो मे सप्तपदः सखासि (९)

हे वरुण! मनुष्यों से युक्त सभी दिशाओं में तुम्हारी स्तुतियां फैल जाएं. तुम मुझे यह वस्तु दो जो अब तक नहीं दी है. तुम मेरे सप्तदा अर्थात सात कदम साथ चलने वाले सखा हो. (९)

समा नौ बन्धुर्वरुण समा जा वेदाहं तद्यन्नावेषा समा जा.
ददामि तद् यत् ते अदत्तो अस्मि युज्यस्ते सप्तपदः सखास्मि (१०)

हे बंधु वरुण! हम और तुम दोनों समान हैं. हमारी संतान भी समान हो. इन बातों को मैं जानता हूं. मैं ने तुम्हें अब तक जो नहीं दिया है, वह अब दे रहा हूं. मैं तुम्हारा सप्तदा सखा हूं. (१०)

देवो देवाय गृणते वयोधा विप्रो विप्राय स्तुवते सुमेधाः.
अजीजनो हि वरुण स्वधावन्नथर्वाणं पितरं देवबन्धुम्.
तस्मा उ राधः कृणुहि सुप्रशस्तं सखा नो असि परमं च बन्धुः (११)

हे अन्नधारक वरुण देव! देवगण देवों की स्तुति करते हैं तथा बुद्धिमान ब्राह्मण ब्राह्मणों की स्तुति करते हैं. हे सुधा के पात्र वरुण! तुम ने देवों को बंधु एवं हमारे पिता के समान अथर्व को जानने वाले को उत्पन्न किया है. तुम मुझे श्रेष्ठ धन में स्थापित करो. तुम हमारे सब से बड़े बंधु एवं सखा हो. (११)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः.
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेता : (१)

हे उत्पन्न हुओं को जानने वाले अग्नि! तुम आज मनुष्य के यज्ञ में प्रज्वलित हुए हो और देवों का यजन कर रहे हो. तुम मित्रों की पूजा करने वाले एवं ज्ञाता हो. तुम देवों का आह्वान करो. तुम देवों के दूत, ज्ञानवान और क्रांतदर्शी हो. (१)

तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान् मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व.
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः (२)

हे शरीररक्षक एवं उत्तम जिह्वा वाले अग्नि! तुम सत्यलोक को प्राप्त कराने वाले मार्गों को मधुर बना कर उन का आस्वादन करो एवं मेरे यज्ञ को बढ़ाते हुए इसे देवों को प्राप्त कराओ. (२)

आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः.
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान् (३)

हे अग्नि! तुम पूज्य व वंदना करने योग्य हो. तुम में भलीभांति हवन किया जाता है. हमारे इस यज्ञ कर्म में तुम वसुओं के सहित आओ. तुम देवों के होता हो. तुम हमारी प्रेरणा से देवों की पूजा करो. (३)

प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम्.
व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम् (४)

वेदी रूपी भूमि को ढकने वाले आह्वनीय अग्नि पूर्वाह्न में विस्तृत होते हैं. अग्नि अन्य ज्योतियों की अपेक्षा श्रेष्ठ, धनवान तथा पृथ्वी को सुख देने वाले हैं. (४)

व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः.
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः (५)

अग्नि की ज्वाला हवि को वहन करने वाली और व्याधियों को रोकने वाली है. इस कारण वह द्वार के समान है. हे अग्नि की प्रकाशमान ज्वाला! जिस प्रकार स्त्रियां पतियों का आदर करती है, उसी प्रकार तुम देवों को सुख देने वाली बनो. तुम हवि को व्याप्त करने वाली हो. (५)

आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ.
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने (६)

अग्नि की दीप्ति उषा और यज्ञ की दीप्ति से युक्त है. वह यज्ञों का संपादन करती एवं देवों से संयुक्त होती है. वह दिव्य, परस्पर मिलने वाली एवं उत्तम दीप्ति

यजमान के हेतु अग्नि की स्थापना करे. (६)

दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै.
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता (७)

वायु और अग्नि दिव्य हैं. मनुष्य होताओं में प्रमुख हैं. वे सुंदर वाणी वाले, यज्ञ के प्रेरक एवं यज्ञ के निर्माता हैं. वायु होताओं पर अनुग्रह करते हैं और आह्वनीय अग्नि की सेवा का आदेश देते हैं. अतएव यज्ञ पर उपकार करने वाले वायु और अग्नि देव मुझ पर भी उपकार करें. (७)

आ नो यज्ञं भारती तयूमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती.
तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं स्योनं सरस्वतीः स्वपसः सदन्ताम् (८)

सब प्राणियों को जल से संतुष्ट करने वाले अग्नि देव की कांति पृथ्वी का और सरस्वती का आह्वान करने पर सचेत हो. सुंदर कर्म करने वाली ये तीन देवियां कुश पर विराजमान हों. (८)

य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशद् भुवनानि विश्वा.
तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान् (९)

हे अग्नि! जो त्वष्टा देवता द्यावा पृथ्वी तथा समस्त प्राणियों को अनेक रूप प्रदान करता है, हमारी प्रेरणा से आज उस का यजन करो. (९)

उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पाथ ऋतुथा हवींषि.
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन (१०)

हे अग्निदेव! यह यज्ञ रूप अन्न देवों का भाग है. इसे और हवियों को प्रत्येक ऋतु में देवों तक पहुंचाओ. वनस्पति, सविता देव और अग्नि इस हव्य को मधु और घृत से युक्त कर के स्वादिष्ट बनाएं. (१०)

सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः.
अस्य होतुः प्रशिष्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदंतु देवाः (११)

अग्नि देव प्रकट होते ही यज्ञ का आरंभ करते हैं और प्रकट होते ही समस्त देवों में अग्रगण्य बन जाते हैं. देवों का आह्वान करने वाले इस अग्नि के मुख में देव गण स्वाहा शब्द से युक्त हवि ग्रहण करें. (११)

सूक्त तेरहवां — देवता—सर्प-विषनाशन

ददिर्हि मह्यं वरुणो दिवः कविर्वचोभिरुग्रैर्नि रिणामि ते विषम्.
खातमखातमुत सक्तमग्रभमिरेव धन्वन्नि जजास ते विषम् (१)

स्वर्ग के देवता वरुण ने मुझे उपदेश दिया है. उन के वचनों के द्वारा मैं तेरे विष को दूर करता हूं. जो विष मांस के ऊपर अथवा मांस के भीतर है, उसे मैं ग्रहण

करता हूं. जिस प्रकार जल रेत में गिरने पर नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार तेरा विष नष्ट हो जाए. (१)

यत् ते अपोदकं विषं तत् त एतास्वग्रभम्.
गृह्णामि ते मध्यममुत्तमं रसमुतावमं भियसा नेशदादु ते (२)

जल को दूषित करने वाला तेरा जो विष है, उसे मैं ने भीतर ही रोक लिया है. तेरे उत्तम और मध्यम रस अर्थात विष को मैं ग्रहण करता हूं. वह रस अर्थात तेरा विष नष्ट हो जाए. (२)

वृषा मे रवो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वचसा बाध आदु ते.
अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः (३)

मेरा वचन वर्षा करने वाला तथा मेघ के समान गर्जन करता है. मैं अपने उग्र वचन से तुझ सर्प को बांधता हूं. जिस प्रकार सूर्योदय होने पर अंधकार नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार यह पुरुष विष से मुक्त हो कर जीवित हो जाए. (३)

चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम्.
अहे म्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम् (४)

हे सर्प! मैं अपनी नेत्र शक्ति से तेरी नेत्र शक्ति का विनाश करता हूं तथा ऋषि के द्वारा तेरे विष को समाप्त करता हूं. तू मृत्यु को प्राप्त हो, जीवित न रहे. तेरा विष तुझ पर ही बुरा प्रभाव डाले. (४)

कैरात पृश्न उपतृण्य बभ्र आ मे शृणुतासिता अलीकाः.
मा मे सख्युः स्तामानमपि ष्ठाताश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम् (५)

हे सर्पो! तुम जंगल में घूमने वाले, काले धब्बों से युक्त, घास में रहने वाले, भूरे वर्ण वाले, काले वर्ण वाले तथा निंदनीय हो. तुम हमारे कथन को सुनो. तुम हमारे सखा के घर के समीप निवास मत करो. हमारा यह कथन तुम दूसरे सर्पों को भी सुना दो. (५)

असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च.
सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो वि मुञ्चामि रथां इव (६)

गीली जगह में निवास करने वाले, श्याम एवं श्वेत वर्ण से युक्त, पानी से दूर रहने वाले और सब को पराजित करने वाले क्रोध पूर्ण सर्पों के विष को हम उसी प्रकार दूर करते हैं, जिस प्रकार धनुष की डोरी और रथों के बंधन को उतारा जाता है. (६)

आलिगी च विलिगी च पिता च माता च.
विद्म वः सर्वतो बन्ध्वरसाः किं करिष्यथ (७)

हे सर्पो! तुम्हारे मातापिता आलिगी अर्थात चिपकने वाले और विलगी अर्थात

न चिपकने वाले हैं. हम तुम्हारे सभी बंधुओं से परिचित हैं. तुम रसहीन अर्थात विष हीन होकर क्या करोगे? (७)

उरुगूलाया दुहिता जाता दास्यसिक्न्या.
प्रतङ्कं दुद्रुषीणां सर्वासामरसं विषम् (८)

जो सांपिन गूलर नाम के विशाल वृक्ष से उत्पन्न हुई है, वह काली सांपिन की दासी है. जो सांपिन दांतों के माध्यम से अपना क्रोध प्रकट करती है, इसका विष हमें दुःख प्रदान करता है यह विष प्रभावहीन हो जाए. (८)

कर्णा श्वावित् तदब्रवीद् गिरेरवचरन्तिका.
याः काश्चेमाः खनित्रिमास्तासामरसतमं विषम् (९)

पर्वतों पर घूमने वाली और कांटों वाली ने कहा कि जो सांपिनें धरती में बिल बना कर निवास करती हैं, उनका विष प्रभावहीन हो जाए. (९)

ताबुवं न ताबुवं न घेत् त्वमसि ताबुवम्.
ताबुवेनारसं विषम् (१०)

तुम ताबुव नहीं हो, तुम ताबुव नहीं हो, क्योंकि ताबुव विष को प्रभावहीन कर देता है. (१०)

तस्तुवं न तस्तुवं न घेत् त्वमसि तस्तुवम्.
तस्तुवेनारसं विषम् (११)

तुम तस्तुव नहीं हो, तुम तस्तुव नहीं हो. निश्चित रूप से तुम तस्तुव नहीं हो. तस्तुव विष को प्रभावहीन कर देता है. (११)

सूक्त चौदहवां

देवता—ओषधि

सुपर्णस्त्वान्वविन्दत् सूकरस्त्वाखनन्नसा.
दिप्सौषधे त्वं दिप्सन्तमव कृत्याकृतं जहि (१)

हे ओषधि! सुपर्ण अर्थात गरुड या सूर्य ने तुम्हें प्राप्त किया था. सुअर ने अपनी नाक से तुम्हें खोदा था. हे कृत्या से संबंधित ओषधि! तुम कृत्या का प्रयोग करने वाले और हमें मारने का प्रयत्न करने वाले का नाश करो. (१)

अव जहि यातुधानानव कृत्याकृतं जहि.
अथो यो अस्मान् दिप्सति तमु त्वं जह्योषधे (२)

हे ओषधि! तुम यात तुधानों अर्थात राक्षसों और कृत्या का निर्माण करने वालों का विनाश करो. तुम उसका भी विनाश करो जो हमारी मृत्यु की इच्छा करता है. (२)

शिरस्येव परीशासं परिकृत्य परि त्वचः.
कृत्यां कृत्याकृते देवा निष्कमिव प्रति मुञ्चत (३)

हे देवो! जो हमारी हिंसा करने वाले हैं, उनकी त्वचा पर अपने आयुधों से घाव बना कर अपने आयुधों को अलग करो. लोग जिस प्रकार सोने के सिक्के अथवा आभूषण को ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार कृत्या का निर्माण करने वाला उसको स्वीकार करे. (३)

पुनः कृत्यां कृत्याकृते हस्तगृह्य परा णय.
समक्षमस्मा आ धेहि यथा कृत्याकृतं हनत् (४)

हे ओषधि! तुम कृत्या का हाथ पकड़ कर उनके समीप ले जाओ, जिन्होंने इसका निर्माण किया है. उनके समीप पहुंची हुई कृत्या उनका विनाश कर देगी. (४)

कृत्याः सन्तु कृत्याकृते शपथः शपथीयते.
सुखो रथ इव वर्तता कृत्या कृत्याकृतं पुनः (५)

कृत्या का प्रयोग करने वाले पर कृत्या का बुरा प्रभाव पड़े और श्राप देने वाले को ही श्राप लगे. जिस प्रकार रथ सरलतापूर्वक घूम जाता है, उसी प्रकार कृत्या अपने प्रेरक की ओर घूम जाए. (५)

यदि स्त्री यदि वा पुमान् कृत्यां चकार पाप्मने.
तामु तस्मै नयामस्यश्वमिवाश्वाभिधान्या (६)

यदि किसी स्त्री अथवा पुरुष ने तुझे पाप कर्म अर्थात मुझे डसने के लिए प्रेरणा दी है तो जिस प्रकार लगाम का संकेत करने से घोड़ा पीछे की ओर लौट पड़ता है, उसी प्रकार हम तुझे प्रेरणा देने वालों की ओर ही लौटाते हैं. (६)

यदि वासि देवकृता यदि वा पुरुषैः कृता.
तां त्वा पुनर्णयामसीन्द्रेण सयुजा वयम् (७)

हे कृत्या! यदि तुझे देवों ने अथवा पुरुषों ने प्रेरित किया है तो हम तुझे उन्हीं की ओर वापस लौटाते हैं, क्योंकि हम इंद्र के सखा हैं. (७)

अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः सहस्व.
पुनः कृत्यां कृत्याकृते प्रतिहरणेन हरामसि (८)

हे राक्षसों की सेना का सामना करने वाले अग्नि देव! तुम इन सेनाओं का सामना करो. हम इस कृत्या को कृत्या के प्रेरक की ओर ही वापस लौटा रहे हैं. (८)

कृतव्यधनि विध्य तं यश्चकार तमिज्जहि.

न त्वामचक्रुषे वयं वधाय सं शिशीमहि (९)

हे संहार का साधन कृत्या! जिस ने तेरा निर्माण किया है, तू उसी का छेदन कर के मार डाल. जिस ने तेरा निर्माण नहीं किया है, उस के वध के निमित्त हम तुझे शक्तिशालिनी नहीं बनाते. (९)

पुत्र इव पितरं गच्छ स्वज इवाभिष्ठितो दश.
बन्धमिवावक्रामी गच्छ कृत्ये कृत्याकृतं पुनः (१०)

हे कृत्या! जिस प्रकार पुत्र पिता के पास जाता है, उसी प्रकार तू अपने उत्पत्तिकर्ता के समीप जा. दबने पर जिस प्रकार सांप काट लेता है, उसी प्रकार तू उसे डस ले, जिस ने तुझे बनाया है. जिस प्रकार टूटा हुआ बंधन अपने ही शरीर पर गिरता है, उसी प्रकार तू कृत्याकर्ता के पास लौट जा. (१०)

उदेणीव वारण्यभिस्कन्दं मृगीव.
कृत्या कर्तारमृच्छतु (११)

कृत्या इस प्रकार अपने निर्माणकर्ता के पास जाए, जिस प्रकार ऐणी नाम की हिरनी, हथिनी और मृगी शीघ्रता से झपटती है. (११)

इष्वा ऋजीयः पततु द्यावापृथिवी तं प्रति.
सा तं मृगमिव गृह्णातु कृत्या कृत्याकृतं पुनः (१२)

कृत्या अपने निर्माण कर्ता की ओर उस के प्रतिकूल आचरण करती हुई अग्नि के समान जाए. जैसे किनारे को काट कर गिराता हुआ जल का वेग मिलता है अथवा रथ जिस प्रकार सरलता से मुड़ जाता है, उसी प्रकार कृत्या अपने निर्माणकर्ता से मिले. (१२)

अग्निरिवैतु प्रतिकूलमनुकूलमिवोदकम्.
सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः (१३)

अग्नि की तरह कृत्याकारी से प्रतिकूल आचरण करती हुई वह कृत्या उसके पास पहुंचे. जिस प्रकार पानी किनारों को काटता हुआ बढ़ता है उसी प्रकार वह कृत्या कृत्याकारी के अनुकूल होकर उसके पास पहुंचे. वह कृत्या सुखकारी रथ के समान कृत्याकारी के पास पुनः चली आए. (१३)

सूक्त पंद्रहवां — देवता—मधुला ओषधि

एका च मे दश च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (१)

हे यज्ञ के निमित्त उत्पन्न ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे एक और दस अर्थात ग्यारह हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना. क्योंकि तू मधुर है. (१)

द्वे च मे विंशतिश्च च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (२)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न होने वाली ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे दो और बीस अर्थात बाईस हों, परंतु तू मेरे शब्दों को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (२)

तिस्रश्च मे त्रिंशच्च च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (३)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न होने वाली ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे तीन और तीस अर्थात तैंतीस हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (३)

चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (४)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न होने वाली ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे चार और चालीस अर्थात चवालीस हों, परंतु तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (४)

पञ्च च मे पञ्चाशच्च च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (५)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न होने वाली ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे पांच और पचास अर्थात पचपन हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (५)

षट् च मे षष्टिश्च च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (६)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे छः और साठ अर्थात छियासठ हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (६)

सप्त च मे सप्ततिश्च च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (७)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे सात और सत्तर अर्थात सतहत्तर हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (७)

अष्ट च मेऽशीतिश्च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (८)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न ओषधि! मेरी निंदा करने वाले आठ और अस्सी

अर्थात अट्ठासी हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (८)

नव च मे नवतिश्च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (९)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे नौ और नब्बे अर्थात निन्यानवे हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (९)

दश च मे शतं च मेऽपवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (१०)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे दस और सौ अर्थात एक सौ दस हों, परंतु तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (१०)

शतं च मे सहस्रं चापवक्तार ओषधे.
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः (११)

हे ऋतु के अनुसार उत्पन्न ओषधि! मेरी निंदा करने वाले चाहे सौ और हजार अर्थात ग्यारह सौ हों, पर तू मेरी वाणी को मधुर बना, क्योंकि तू मधुर है. (११)

सूक्त सोलहवां — देवता—एक वृष

यद्येकवृषोऽसि सृजारसोऽसि (१)

हे लवण! यदि तू एक वृषभ अर्थात बैल के समान शक्ति वाला है तो इस गाय से संतान उत्पन्न कर, अन्यथा तू प्रभावहीन समझा जाएगा. (१)

यदि द्विवृषोऽसि सृजारसोऽसि (२)

हे लवण! यदि तू दो बैलों के समान शक्तिशाली है तो इस गाय को संतान वाली बना, अन्यथा तू शक्तिहीन समझा जाएगा. (२)

यदि त्रिवृषोऽसि सृजारसोऽसि (३)

हे लवण! यदि तू तीन बैलों के समान शक्ति वाला है तो इस गाय से संतान उत्पन्न कर, अन्यथा तू प्रभावहीन समझा जाएगा. (३)

यदि चतुर्वृषोऽसि सृजारसोऽसि (४)

हे लवण! यदि तू चार बैलों के समान शक्ति वाला है तो इस गाय को संतान वाली बना, अन्यथा तू शक्तिहीन समझा जाएगा. (४)

यदि पञ्चवृषोऽसि सृजारसोऽसि (५)

हे लवण! यदि तू पांच बैलों के समान शक्ति वाला है तो इस गाय से संतान

उत्पन्न कर, अन्यथा तू प्रभावहीन समझा जाएगा. (५)

यदि षड्वृषोऽसि सृजारसोऽसि (६)

हे लवण! यदि तू छः बैलों के समान शक्ति वाला है तो इस गाय से संतान उत्पन्न कर, अन्यथा तू शक्तिहीन समझा जाएगा. (६)

यदि सप्तवृषोऽसि सृजारसोऽसि (७)

हे लवण! यदि तू सात बैलों के समान शक्तिशाली है तो इस गाय को संतान वाली बना, अन्यथा तू शक्तिहीन समझा जाएगा. (७)

यद्यष्टवृषोऽसि सृजारसोऽसि (८)

हे लवण! यदि तू आठ बैलों के समान शक्ति वाला है तो इस गाय से संतान उत्पन्न कर, अन्यथा तू शक्तिरहित समझा जाएगा. (८)

यदि नववृषोऽसि सृजारसोऽसि (९)

हे लवण! यदि तू नौ बैलों के समान शक्तिशाली है तो इस गाय से संतान उत्पन्न कर, अन्यथा तू प्रभावरहित समझा जाएगा. (९)

यदि दशवृषोऽसि सृजारसोऽसि (१०)

हे लवण! यदि तू दस बैलों के समान शक्तिशाली है तो इस गाय को संतान वाली बना, अन्यथा तू प्रभावहीन समझा जाएगा. (१०)

यद्येकादशोऽसि सृजारसोऽसि (११)

हे लवण! यदि तू ग्यारह बैलों के समान शक्ति वाला है तो इस गाय से संतान उत्पन्न कर, नहीं तो तू शक्तिहीन समझा जाएगा. (११)

सूक्त सत्रहवां देवता—ब्रह्मजाया

तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषेऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा.
वीडुहरास्तप उग्रं मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतस्य (१)

सूर्य, वरुण, वायु, चंद्र तथा आप अर्थात जलदेवी—ये देवता ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं. इन्होंने ब्राह्मण द्वारा अपराध करने के विषय में कहा है. (१)

सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः.
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसीदग्निर्होता हस्तगृह्या निनाय (२)

सब से पहले सोम ने ब्रह्म के लिए उस गाय को दे दिया, जिस ने उन्हें उत्पन्न किया था. उस समय वरुण और सूर्य सोम के सहयोगी बने और अग्नि उन के होता थे. (२)

हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ब्रह्मजायेति चेदवोचत्
न दूताय प्रहेया तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य (३)

यह हम को उत्पन्न करने वाली है, इस प्रकार जो कहे उस का संकल्प हाथ में ले. यह संकल्प लेने के लिए दूत को न भेजे. (३)

यामाहुस्तारकैषा विकेशीति दुच्छुनां ग्राममवपद्यमानाम्.
सा ब्रह्मजाया वि दुनोति राष्ट्रं यत्र प्रापादि शश उल्कुषीमान् (४)

ग्राम की ओर बढ़ती हुई तारिका को उल्का कहते हैं. उस उल्का का अंश जहां गिरता है उस राज्य का नाश हो जाता है. इस प्रकार ब्रह्म से उत्पन्न तारिका राज्य का नाश कर देती है. (४)

ब्रह्मचारी चरति वेविषद् विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम्.
तेन जायामन्वविन्दद् बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वं१ न देवाः (५)

ब्रह्मचर्य देवता का अंग रूप होता है. वह ब्रह्मचर्य में रमण करता हुआ प्रजा के मध्य घूमता है. जिस प्रकार देवों ने सोम के चमस को प्राप्त किया है, उसी प्रकार बृहस्पति ने ब्रह्मचर्य के द्वारा पत्नी को पाया. (५)

देवा वा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसा ये निषेदुः.
भीमा जाया ब्राह्मणस्यापनीता दुर्धां दधाति परमे व्योमन् (६)

तपस्या में लीन रहने वाले सप्त ऋषियों ने और देवों ने ब्राह्मण जाया की चर्चा की थी कि ब्राह्मण की अपहरण की गई स्त्री स्वर्ग में भयंकर बन जाती है और अपहरण कर्ता की दुर्गति करती है. (६)

ये गर्भा अवपद्यन्ते जगद् यच्चापलुप्यते.
वीरा ये तृह्यन्ते मिथो ब्रह्मजाया हिनस्ति तान् (७)

जो गर्भ गिराए जाते हैं, संसार में जो उथलपुथल होती है, वीरों की परस्पर मारकाट, ये सारे कर्म ब्राह्मण की पत्नी ही करती है. (७)

उत यत् पतयो दश स्त्रियाः पूर्वे अब्राह्मणाः.
ब्रह्मा चेद्धस्तमग्रहीत् स एव पतिरेकधा (८)

ब्राह्मण की पत्नी के पूर्व अब्राह्मण बालक चाहे दस हों, पर जो ब्राह्मण उस का पाणि ग्रहण करता है, वही उस का पति होता है. (८)

ब्राह्मण एव पतिर्न राजन्यो३ न वैश्यः.
तत् सूर्यः प्रब्रुवन्नेति पञ्चभ्यो मानवेभ्यः (९)

ब्राह्मणी का पति ब्राह्मण ही हो सकता है, क्षत्रिय और वैश्य नहीं. सूर्य देव पांच प्रकार के मानव—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद यह कहते हुए दमन

करते हैं. (९)

पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या अददुः.
राजानः सत्यं गृह्णानां ब्रह्मजायां पुनर्ददुः (१०)

ब्राह्मण पत्नी को देवों, मनुष्यों और राजाओं ने सत्य को ग्रहण कर के प्रदान किया. (१०)

पुनर्दाय ब्रह्मजायां कृत्वा देवैर्निकिल्बिषम्.
ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वोरुगायमुपासते (११)

हम देवों द्वारा स्वच्छ किए हुए शक्तिदायक अन्न का विभाग कर के ब्राह्मण पत्नी को देते हैं तथा अत्यधिक कीर्तिशाली परमात्मा की उपासना करते हैं. (११)

नास्य जाया शतवाही कल्याणी तल्पमा शये.
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या (१२)

जिस राज्य में ब्राह्मण की पत्नी और गाय को बाधा पहुंचाई जाती है, वहां भांतिभांति के कल्याण करने वाली पत्नी शैया पर शयन नहीं करती.(१२)

न विकर्णः पृथुशिरास्तस्मिन् वेश्मनि जायते.
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या (१३)

जिस राज्य में ब्राह्मण की पत्नी को अचेत कर के रोका जाता है, उस राज्य में विशाल मस्तक वाले पुरुष जन्म नहीं लेते. (१३)

नास्य क्षत्ता निष्कग्रीवः सूनानामेत्यग्रतः.
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या (१४)

जिस राज्य में ब्राह्मण की पत्नी को मोहित कर के रोका जाता है, उस राज्य का वीर निष्क नाम का सोने का आभूषण धारण कर के भी सूना मे आगे नहीं जा पाता. (१४)

नास्य श्वेतः कृष्णकर्णो धुरि युक्तो महीयते.
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या (१५)

जिस राज्य में ब्राह्मण की पत्नी को चेतनाहीन कर के रोका जाता है, उस राज्य में राजा का श्वेत कानों वाला घोड़ा रथ के आगे जुत कर भी प्रशंसित नहीं होता. (१५)

नास्य क्षेत्रे पुष्करिणी नाण्डीकं जायते बिसम्.
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या (१६)

जिस राष्ट्र में ब्राह्मण की पत्नी को अचेत कर के रोका जाता है, उस राष्ट्र की पुष्करिणी में कमल और कमल तंतु उत्पन्न नहीं होते. (१६)

नास्मै पृश्निं वि दुहन्ति येऽस्या दोहमुपासते.
यस्मिन् राष्ट्रे निरुध्यते ब्रह्मजायाचित्त्या (१७)

जिस राष्ट्र में ब्राह्मण की पत्नी अचेत कर के रोकी जाती है, उस राष्ट्र में दूध दुहने की इच्छा करने वाले थोड़ा दूध भी नहीं दुह पाते. (१७)

नास्य धेनुः कल्याणी नानड्वान्त्सहते धुरम्.
विजानिर्यत्र ब्राह्मणो रात्रिं वसति पापया (१८)

जिस राष्ट्र में जाया अर्थात पत्नी से रहित ब्राह्मण पाप की भावना से रात्रि निवास करता है, उस राष्ट्र के स्वामी के यहां गाय कल्याण करने वाली नहीं होती और बैल गाड़ी या रथ के जुए को नहीं खींचते. (१८)

सूक्त अठारहवां देवता—ब्राह्मण की गाय

नैतां ते देवा अददुस्तुभ्यं नृपते अत्तवे.
मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम् (१)

हे राजन! देवों ने यह गाय तुम को भक्षण करने के लिए नहीं दी है. ब्राह्मण की गाय अखाद्य है. इसे खाने की इच्छा मत कर. (१)

अक्षद्रुग्धो राजन्यः पाप आत्मपराजितः.
स ब्राह्मणस्य गामद्यादद्य जीवानि मा श्वः (२)

इंद्रियों को वश में न करने वाला एवं आत्मपराजित जो राजा ब्राह्मण की गाय का भक्षण करता है, वह पापी राजा जीवित नहीं रहता. (२)

आविष्टिताघविषा पृदाकूरिव चर्मणा.
सा ब्राह्मणस्य राजन्य तृष्टैषा गौरनाद्या (३)

ब्राह्मण की चर्म से ढकी हुई गाय केंचुली से ढकी हुई व्यानी सर्पिणी के समान है. हे राजन! यह भक्षण करने योग्य नहीं है. (३)

निर्वै क्षत्रं नयति हन्ति वर्चोऽग्निरिवारब्धो वि दुनोति सर्वम्.
यो ब्राह्मणं मन्यते अन्नमेव स विषस्य पिबति तैमातस्य (४)

जो राजा ब्राह्मण के पदार्थों का भक्षण करता है, वह विष पीता है और अपना क्षात्र तेज गवां देता है. जिस प्रकार क्रोध में भरे हुए अग्नि देव सब कुछ नष्ट कर देते हैं, उसी प्रकार ब्राह्मण के पदार्थों को खाने योग्य समझने वाला राजा नष्ट हो जाता है. (४)

य एनं हन्ति मृदुं मन्यमानो देवपीयुर्धनकामो न चित्तात्.
सं तस्येन्द्रो हृदयेऽग्निमिन्ध उभे एनं द्विष्टो नभसी चरन्तम् (५)

ब्राह्मण को मृदु समझने वाला जो अज्ञानी उसे नष्ट करना चाहता है, वह देव हिंसक है. इंद्र उस पापी के हृदय में अग्नि प्रज्वलित कर देते हैं और आकाश तथा पृथ्वी दोनों उस के प्रति वैर भाव रखते हैं. (५)

न ब्राह्मणो हिंसितव्यो३ग्निः प्रियतनोरिव.
सोमो ह्यस्य दायाद इन्द्रो अस्याभिशस्तिपाः (६)

जिस प्रकार अपने शरीर को कोई नष्ट नहीं करना चाहता, उसी प्रकार अग्नि के समान तेजस्वी ब्राह्मण का नाश भी नहीं करना चाहिए. सोम ब्राह्मण का संबंधी हैं और इंद्र ब्राह्मण के श्राप को पूर्ण करते हैं. (६)

शतापाष्ठां नि गिरति तां न शक्नोति निःखिदन्.
अन्नं यो ब्रह्मणां मल्वः स्वाद्व१द्मीति मन्यते (७)

जो पापी ब्राह्मण के अन्न को स्वादिष्ट समझ कर भक्षण करता है, वह पापी मानव सैकड़ों विपत्तियों को निगलता है. (७)

जिह्वा ज्या भवति कुल्मलं वाङ्नाडीका दन्तास्तपसाभिदिग्धाः.
तेभिर्ब्रह्मा विध्यति देवपीयून् हृद्बलैर्धनुर्भिर्देवजूतैः (८)

ब्राह्मण की जीभ धनुष की प्रत्यंचा, वाणी धनुष की लकड़ी और तपस्या के कारण पवित्र दांत तीर हैं. ब्राह्मण देवताओं से प्रेरित इन्हीं धनुष बाणों से देव हिंसकों को बींधता है. (८)

तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा हेतिमन्तो यामस्यन्ति शरव्यां३ न सा मृषा.
अनुहाय तपसा मन्युना चोत दूरादव भिन्दन्त्येनम् (९)

ब्राह्मण अपने तप और क्रोध रूप बाणों को जिस की ओर फेंकता है, वे बेकार नहीं जाते. वे बाण दूर से ही शत्रु को वेध देते हैं. (९)

ये सहस्रमराजन्नासन् दशशता उत.
ते ब्राह्मणस्य गां जग्ध्वा वैतहव्याः पराभवन् (१०)

वीरहव्य के वशंज हजारों राजा पृथ्वी पर राज्य करते थे. ब्राह्मण की गाय का अपहरण करने के कारण वे पराभव को प्राप्त हुए. (१०)

गौरेव तान् हन्यमाना वैतहव्यां: अवातिरत्.
ये केसरप्राबन्धायाश्चरमाजामपेचिरन् (११)

वीरहव्य के वशंज जिन राजाओं ने केशर प्राबंधा नाम की चरम अजा का मांस पकाया था, उन राजाओं की मार खाते हुए गाय ने ही उन्हें छिन्नभिन्न कर दिया था. (११)

एकशतं ता जनता या भूमिर्व्यधूनुत.
प्रजां हिंसित्वा ब्राह्मणीमसंभव्यं पराभवन् (१२)

जो सैकड़ों लोग अपने चलने से धरती को कंपित कर देते थे, वे ब्राह्मण की संतान की हिंसा करने के कारण ही पराजित हुए. (१२)

देवपीयुश्चरति मर्त्येषु गरगीर्णो भवत्यस्थिभूयान्.
यो ब्राह्मणं देवबन्धुं हिनस्ति न स पितृयाणमप्येति लोकम् (१३)

जो देवबंधु ब्राह्मण की हिंसा करता है, वह देवशस्त्र मनुष्यों के मध्य विष खाने वाले के समान चलता फिरता है और अस्थि मात्र रह जाता है. वह पितृयान द्वारा मिलने वाले लोक को प्राप्त नहीं करता. (१३)

अग्निर्वै नः पदवायः सोमो दायाद उच्यते.
हन्ताभिशस्तेन्द्रस्तथा तद् वेधसो विदुः (१४)

अग्नि हमें हमारे पदों तक पहुंचाता है और सोम हमारा दायाद कहा जाता है. इंद्र हमारी ओर से मारने वाले एवं घायल करने वाले हैं. (१४)

इषुरिव दिग्धा नृपते पृदाकूरिव गोपते.
सा ब्राह्मणस्येषुर्घोरा तया विध्यति पीयतः (१५)

हे राजन! ब्राह्मण की वाणी रूपी बाण विष में बुझे बाण एवं सर्पिणी के समान भयानक होता है. जो पापी ब्राह्मण को कष्ट देते हैं, ब्राह्मण उन्हें उन्हीं के द्वारा नष्ट करता है. (१५)

सूक्त उन्नीसवां

देवता—ब्रह्मगवी

अतिमात्रमवर्धन्त नोदिव दिवमस्पृशन्.
भृगुं हिंसित्वा सृञ्जया वैतहव्याः पराभवन् (१)

सृंजय के पुत्र एवं वीतहव्य के वंशजों की बहुत वृद्धि हुई. उन्होंने भृगुवंशी ब्राह्मणों की हत्या कर दी, इसलिए उन की पराजय हुई तथा वे स्वर्ग को नहीं पा सके. (१)

ये बृहत्सामानमाङ्गिरसमार्पयन् ब्राह्मणं जनाः.
पेत्वस्तेषामुभयादमविस्तोकान्यावयत् (२)

जिन लोगों ने बृहत साम वाले अंगिरा गोत्री ब्राह्मणों को आपत्तियों और विपत्तियों से ढक दिया था, ब्रह्मा ने उन्हें ऐसा पुत्र दिया जो उन्हें नष्ट करने वाला था. देवों ने उन की संतान को दूर फेंक दिया. (२)

ये ब्राह्मणं प्रत्यष्ठीवन् ये वास्मिञ्छुल्कमीषिरे.
अस्नस्ते मध्ये कुल्यायाः केशान् खादन्त आसते (३)

जिन्होंने ब्राह्मणों पर थूका और जिन्होंने ब्राह्मणों से धन लेने की इच्छा की, वे रक्त की सरिता में पड़े हैं और बालों को खा रहे हैं. (३)

637/19

ब्रह्मगवी पच्यमाना यावत् साभि विजङ्गहे.
तेजो राष्ट्रस्य निर्हन्ति न वीरो जायते वृषा (४)

ब्राह्मण की पकाई जाती हुई गाय जिस राष्ट्र में तड़पती है, वह उस राष्ट्र का तेज समाप्त कर देती है और उस में वीर्य को सींचने वाले वीर पुरुष जन्म नहीं लेते. (४)

क्रूरमस्या आशसनं तृष्टं पिशितमस्यते.
क्षीरं यदस्याः पीयते तद् वै पितृषु किल्बिषम् (५)

ब्राह्मण की गाय को काटना क्रूर कर्म है. इस का मांस खाने के बाद प्यास प्यास करता है. जो लोग मारने की इच्छा से रखी हुई ऐसी गाय का दूध पीते हैं, उन के पितरों को वह दूध पाप का भागी बनाता है. (५)

उग्रो राजा मन्यमानो ब्राह्मणं यो जिघत्सति.
परा तत् सिच्यते राष्ट्रं ब्राह्मणो यत्र जीयते (६)

जो राजा अपने आप को उग्र मानता हुआ ब्राह्मण की हत्या करता है एवं ब्राह्मण जिस राज्य में दुखी रहता है, वह राजा और राष्ट्र दोनों समाप्त हो जाते हैं. (६)

अष्टापदी चतुरक्षी चतुःश्रोता चतुर्हनुः.
द्व्यास्या द्विजिह्वा भूत्वा सा राष्ट्रमव धूनुते ब्रह्मज्यस्य (७)

राजा के द्वारा ब्राह्मण पर डाली गई विपत्ति आठ पैरों, चार आंखों, चार कानों, चार ठोड़ियों, दो मुखों और दो जीभों वाली राक्षसी बन कर उन के राज्य को समाप्त कर देती है. (७)

तद् वै राष्ट्रमा स्रवति नावं भिन्नामिवोदकम्.
ब्रह्माणं यत्र हिंसन्ति तद् राष्ट्रं हन्ति दुच्छुना (८)

जिस राष्ट्र में ब्राह्मण की हिंसा होती है, उस राष्ट्र का ब्रह्मरूपी पाप उसे छेद वाली नौका के साथ डुबा देता है. ब्राह्मण पर डाली गई विपत्ति ही उस राष्ट्र को डुबा देती है. (८)

तं वृक्षा अप सेधन्ति छायां नो मोपगा इति.
यो ब्राह्मणस्य सद्धनमभि नारद मन्यते (९)

हे नारद! जो ब्राह्मण के धन को अपना धन समझता है, उस से वृक्ष भी द्वेष मानते हैं और उसे अपनी छाया में नहीं आने देना चाहते. (९)

विषमेतद् देवकृतं राजा वरुणोऽब्रवीत्.
न ब्राह्मणस्य गां जग्ध्वा राष्ट्रे जागार कश्चन (१०)

राजा वरुण ने कहा है कि ब्राह्मण का धन देवों द्वारा निर्मित विष ही है. ब्राह्मण

की गाय को मार कर राष्ट्र में कोई भी जीवित नहीं रहता. (१०)

नवैव ता नवतयो या भूमिर्व्यधूनुत.
प्रजां हिंसित्वा ब्राह्मणीमसंभव्यं पराभवन् (११)

जिन आठ सौ दस पुरुषों से धरती कांपती थी, वे ब्राह्मण की संतान की हिंसा कर के असंभव पराजय को प्राप्त हुए. (११)

यां मृतायानुबध्नन्ति कूद्यं पदयोपनीम्.
तद् वै ब्रह्मज्य ते देवा उपस्तरणमब्रुवन् (१२)

हे ब्राह्मण को हानि पहुंचाने वाले पुरुष! जो रस्सी मरे हुए पुरुष के शव में बांधी जाती है, उसी से देवों ने तेरा बिछौना बनाया है. (१२)

अश्रूणि कृपमाणस्य यानि जीतस्य वावृतुः.
तं वै ब्रह्मज्य ते देवा अपां भागमधारयन् (१३)

हे ब्राह्मण को हानि पहुंचाने वाले पुरुष! कृपा के पात्र ब्राह्मणों के आंसुओं का जो जल होता है, वही जल देवों ने तेरे लिए निश्चित किया है. (१३)

येन मृतं स्नपयन्ति श्मश्रूणि येनोन्दते.
तं वै ब्रह्मज्य ते देवा अपां भागमधारयन् (१४)

हे ब्राह्मण को हानि पहुंचाने वाले पुरुष! जो जल मृतक को स्नान करने के लिए एवं मूंछें भिगोने से बचता है, वही जल देवों ने तेरे पीने के लिए निश्चित किया है. (१४)

न वर्षं मैत्रावरुणं ब्रह्मज्यमभि वर्षति.
नास्मै समितिः कल्पते न मित्रं नयते वशम् (१५)

जिस राज्य में ब्राह्मण को दुख दिया जाता है, उस में वरुण वर्षा नहीं करते. उस राष्ट्र की सभा सामर्थ्य हीन होती है तथा उस की सेना शत्रुओं को वश में नहीं रख पाती है. (१५)

सूक्त बीसवां

देवता—वानस्पत्य

उच्चैर्घोषो दुन्दुभिः सत्वनायन् वानस्पत्यः संभृत उस्त्रियाभिः.
वाचं क्षुणुवानो दमयन्त्सपत्नान्त्सिंह इव जेष्यन्नभि तंस्तनीहि (१)

हे दुंदुभी! तू वनस्पतियों से बनाई गई है तथा उच्च स्वर करती है. तू शक्तिशाली जनों के समान आचरण कर तथा उच्च घोष से शत्रुओं का मान मर्दन कर. (१)

सिंह इवास्तानीद् द्रुवयो विबद्धोऽभिक्रन्दन्नृषभो वासितामिव.

वृषा त्वं वध्रयस्ते सपत्ना ऐन्द्रस्ते शुष्मो अभिमातिषाहः (२)

हे दुदुंभी! तू सिंह के समान गर्जन कर. हे वृक्ष के समान अधिक आयु वाली दुदुंभी! तू गाय को देख कर रंभाने वाले बैल के समान शब्द करती है. विशेष रूप से बंधी हुई तू वीर्य वर्षा करने वाली है, इस कारण तेरे शत्रु शक्ति रहित हो जाते हैं. तेरा बल इंद्र के समान है, इसलिए उसे वीर्य ही सहन कर पाता है. (२)

वृषेव यूथे सहसा विदानो गव्यन्नभि रुव सन्धनाजित्.
शुचा विध्य हृदयं परेषां हित्वा ग्रामान् प्रच्युता यन्तु शत्रवः (३)

जिस प्रकार गाय की कामना करने वाला बैल अपने शब्द के कारण झुंड में भी पहचान लिया जाता है, उसी प्रकार हे दुदुंभी! शत्रुओं को जीतने की इच्छा से शब्द कर के उन के हृदयों में संताप भर दे. वे शत्रु हमारे गांवों को छोड़ कर चले जाएं. (३)

संजयन् पृतना ऊर्ध्वमायुर्गृह्य गृह्णानो बहुधा वि चक्ष्व.
दैवीं वाचं दुन्दुभ आ गुरस्व वेधाः शत्रूणामुप भरस्व वेदः (४)

हे दुदुंभी! तू उच्च शब्द करती हुई शत्रु सेनाओं को जीत लेती है. तू उन्हें पकड़ कर युद्ध में विजय प्राप्त करती है. तू दैवी वाणी का उच्चारण कर और शत्रुओं का धन मुझे प्राप्त करा. (४)

दुन्दुभेर्वाचं प्रयतां वदन्तीमाशृण्वती नाथिता घोषबुद्धा.
नारी पुत्रं धावतु हस्तगृह्यामित्री भीता समरे वधानाम् (५)

दुदुंभी की घोर गर्जना से शत्रुओं की नारियां होश में आ जाती हैं. वे युद्ध में मारे गए शत्रुओं को देख कर भयभीत होती हैं और अपने पुत्र का हाथ पकड़ कर भाग जाती हैं. (५)

पूर्वो दुन्दुभे प्र वदासि वाचं भूम्याः पृष्ठे वद रोचमानः.
अमित्रसेनामभिजञ्जभानो द्युमद् वद दुन्दुभे सूनृतावत् (६)

हे दुदुंभी! तेरी ध्वनि सब से पहले निकलती है, इसलिए तू शत्रु सेना का विनाश कर तथा पृथ्वी के ऊपर सत्य वचनों का प्रचार कर. (६)

अन्तरेमे नभसी घोषो अस्तु पृथक् ते ध्वनयो यन्तु शीभम्.
अभि क्रन्द स्तनयोत्पिपानः श्लोककृन्मित्रतूर्याय स्वर्धी (७)

हे दुदुंभी! धरती और आकाश के मध्य तेरी ध्वनियां अनेक रूपों में व्याप्त हों तथा शोभन प्रतीत हों. तू उच्च शब्द से समृद्ध हो तथा मित्रों में वेग व्याप्त करने के लिए उच्च स्वर से गर्जन कर. (७)

धीभिः कृतः प्र वदाति वाचमुद्धर्षय सत्वनामायुधानि.

इन्द्रमेदी सत्वनो नि ह्वयस्व मित्रैरमित्रां अव जङ्घनीहि (८)

हे दुदुंभी! कुशलता पूर्वक बजाने पर तू मोहक शब्द निकालती है. शक्तिशाली मनुष्यों के आयुधों को ऊंचा कर के तू उन्हें प्रसन्न बना. तू वीरों का आह्वान करती हुई हमारे मित्रों द्वारा हमारे शत्रुओं का विनाश करा, क्योंकि तू इंद्र की प्रिया है. (८)

संक्रन्दनः प्रवदो धृष्णुषेणः प्रवेदकृद् बहुधा ग्रामघोषी.
श्रेयो वन्वानो वयुनानि विद्वान् कीर्तिं बहुभ्यो वि हर द्विराजे (९)

हे दुदुंभी! तू गर्जन करने वाले गाँवों को गुंजित करने वाली, धनदात्री और सेना को साहस प्रदान करने वाली है. तू कल्याण करने वाली एवं उत्तम पुरुषों को जानने वाली है. तू इन दो राजाओं के युद्ध के मध्य अनेक वीरों को कीर्ति प्रदान कर. (९)

श्रेयःकेतो वसुजित् सहीयान्त्संग्रामजित् संशितो ब्रह्मणासि.
अंशूनिव ग्रावाधिषवणे अद्रिर्गव्यन् दुन्दुभेऽधि नृत्य वेदः (१०)

हे संग्राम में विजय प्राप्त करने वाली दुदुंभी! तू कल्याणी, धन जीतने वाली, शक्तिशालिनी एवं मंत्र के द्वारा तीक्ष्ण बनाई हुई है. अधिश्रवण काल में पर्वत अपने पाषाण खंडों को दबाता हुआ नृत्य करता है, उसी प्रकार तू भी शत्रुओं के धन पर अधिकार करती हुई नृत्य कर. (१०)

शत्रूषाण्नीषाडभिमातिषाहो गवेषणः सहमान उद्भित्.
वाग्वीव मन्त्रं प्र भरस्व वाचं सांग्रामजित्यायेषमुद् वदेह (११)

हे दुदुंभी! तू ऐसा शब्द निकालती है, जो शत्रुओं की वाणी से टक्कर ले सके. तू गवेषणा करने वाले बातूनी पुरुष के समान युद्ध जीतने के निमित्त शब्द करती हुई गूंज. (११)

अच्युतच्युत् समदो गमिष्ठो मृधो जेता पुरएतायोध्यः.
इन्द्रेण गुप्तो विदथा निचिक्यद्धृद्द्योतनो द्विषतां याहि शीभम् (१२)

हे युद्ध में विजय प्राप्त करने वाली दुदुंभी! तू हर्ष से पूर्ण है एवं डिगती नहीं है. तू आगे युद्ध में जा कर योद्धाओं की प्रेरक और युद्ध जीतने वाली है. इंद्र के द्वारा रक्षित तू शत्रुओं के हृदयों को जलाती हुई उन के समीप जा. (१२)

सूक्त इक्कीसवां देवता—वानस्पत्य

विहृदयं वैमनस्यं वदामित्रेषु दुन्दुभे.
विद्वेषं कश्मशं भयममित्रेषु नि दध्मस्यवैनान् दुन्दुभे जहि (१)

हे दुदुंभी! तू शत्रुओं में वैमनस्य फैला एवं उन के हृदयों में एकदूसरे के प्रति द्वेष भर दे. हम अपने शत्रुओं में द्वेष की भावना फैलाना चाहते हैं. तू उन का तिरस्कार करती हुई उन्हें समाप्त कर दे. (१)

उद्वेपमाना मनसा चक्षुषा हृदयेन च.
धावन्तु बिभ्यतोऽमित्राः प्रत्रासेनाज्ये हुते (२)

हमारे द्वारा होम किए गए घृत से हमारे शत्रु कंपित हों और मन, नेत्र तथा हृदय से भयभीत हो कर भाग जाएं. (२)

वानस्पत्यः संभृत उस्त्रियाभिर्विश्वगोत्र्यः.
प्रत्रासममित्रेभ्यो वदाज्येनाभिघारितः (३)

हे वनस्पति से बनी हुई दुदुंभी! तू चमड़े से मढ़ी हुई है तथा मेघ घटा के समान घोर शब्द करती है. घी से चुपड़ी हुई तू शत्रुओं को भय उत्पन्न करने वाला शब्द कर. (३)

यथा मृगाः संविजन्त आरण्याः पुरुषादधि.
एवा त्वं दुन्दुभेऽमित्रानभि क्रन्द प्र त्रासयाथो चित्तानि मोहय (४)

हे दुदुंभी! वनचारी शिकारी पुरुष से जिस प्रकार वन के पशु भयभीत होते हैं, उसी प्रकार तू अपने गर्जन से शत्रुओं को भयभीत करती हुई, उन के चित्तों को मोहित बना. (४)

यथा वृकादजावयो धावन्ति बहु बिभ्यतीः.
एवा त्वं दुन्दुभेऽमित्रानभि क्रन्द प्र त्रासयाथो चित्तानि मोहय (५)

जिस प्रकार भेड़ें और बकरियां भेड़िए के कारण अधिक भयभीत हो कर भागती हैं, उसी प्रकार तू गड़गड़ाहट करती हुई शत्रुओं को भयभीत कर के उन का चित्त मोहित कर. (५)

यथा श्येनात् पतत्रिणः संविजन्ते अहर्दिवि सिंहस्य स्तनथोर्यथा.
एवा त्वं दुन्दुभेऽमित्रानभि क्रन्द प्र त्रासयाथो चित्तानि मोहय (६)

हे दुदुंभी! जिस प्रकार बाज से सभी पक्षी और सिंह से सभी प्राणी भयभीत रहते हैं, उसी प्रकार तू शत्रुओं के प्रति गड़गड़ाहट कर के उन्हें भयभीत कर के उन के चित्तों को मोहित कर. (६)

परामित्रान् दुन्दुभिना हरिणस्याजिनेन च.
सर्वे देवा अतित्रसन् ये संग्रामस्येशते (७)

जो संग्राम के देवता हैं, उन्होंने हिरण के चमडे से मढ़ी हुई दुदुंभी बजा कर शत्रुओं को भयभीत कर के पराजित किया. (७)

यैरिन्द्रः प्रक्रीडते पद्घोषैश्छायया सह.
तैरमित्रास्त्रसन्तु नोऽमी ये यन्त्यनीकशः (८)

इंद्र जिन पदघोषों से खेलते हैं, उन से अधिक संख्या वाले शत्रु भयभीत हों. (८)

ज्याघोषा दुन्दुभयोऽभि क्रोशन्तु या दिशः.
सेना पराजिता यतीरमित्राणामनीकशः (९)

शत्रुओं की पराजित सेनाएं जिस ओर भाग रही हैं, हमारे बाणों की डोरी और दुंदुभि का शब्द मिल कर उधर ही उन को भयभीत करें और हरा दें. (९)

आदित्य चक्षुरा दत्स्व मरीचयोऽनु धावत.
पत्सङ्गिनीरा सजन्तु विगते बाहुवीर्ये (१०)

हे सर्य! तुम शत्रुओं के नेत्रों की देखने की शक्ति छीन लो. हे सूर्य किरणो! तुम दौड़ते हुए शत्रुओं की पीठ पर पड़ो. भुजाओं की शक्ति क्षीण होने पर जब शत्रु भागने लगें तो उन का साथ मत दो. (१०)

यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून्.
सोमो राजा वरुणो राजा महादेव उत मृत्युरिन्द्रः (११)

हे मरुतो! तुम उग्र कर्म करने वाले हो. तुम इंद्र के साथ मिल कर शत्रुओं का मर्दन करो. सोम राजा, वरुण राजा, महादेव और मृत्युदेव इंद्र का सहयोग करें. (११)

एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः.
अमित्रान् नो जयन्तु स्वाहा (१२)

ये देव सेनाएं समान चित्त वाली हैं और इन के झंडे में सूर्य विराजमान हैं. ये सेनाएं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें. मेरी यह आहुति ग्रहण करने योग्य हो. (१२)

सूक्त बाईसवां — देवता—तक्मानाशन

अग्निस्तक्मानमप बाधतामितः सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षाः.
वेदिर्बर्हिः समिधः शोशुचाना अप द्वेषांस्यमुया भवन्तु (१)

अग्नि देव ज्वर को बाधा पहुंचाएं. पत्थर के समान दृढ़ सौम्य, पवित्र और दक्ष वरण, वेल्वी, कुश तथा प्रज्वलित समिधाएं ज्वर से द्वेष करने वाली हों. (१)

अयं यो विश्वान् हरितान् कृणोष्युच्छोचयन्नग्निरिवाभिदुन्वन्.
अधा हि तक्मन्नरसो हि भूया अधा न्य ङ्ङधराङ् वा परेहि (२)

हे देह को नष्ट कर देने वाले ज्वर! तू सभी मनुष्यों को संताप देता है. इसलिए तू तिरस्कृत, निर्बल एवं अधम स्थान को चला जा. (२)

यः परुषः पारुषेयो ऽवध्वंस इवारुणः.
तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं परा सुव (३)

हे शक्तिशाली! तुम कठोर एवं अवध्वंस के समान लाल रंग वाले ज्वर को मुक्त

से दूर हटाओ. (३)

अधराञ्चं प्र हिणोमि नमः कृत्वा तक्मने.
शकम्भरस्य मुष्टिहा पुनरेतु महावृषान् (४)

मैं ज्वर को नमस्कार कर के उसे निम्न स्थान में जाने के लिए प्रेरित करता हूं. मुक्के के समान प्रहार करने वाला ज्वर महावृषभ को पुनः प्राप्त हो. (४)

ओको अस्य मूजवन्त ओको अस्य महावृषाः.
यावज्जातस्तक्मंस्तावानसि बल्हिकेषु न्योचरः (५)

मूंज से युक्त स्थान इस ज्वर का घर है तथा वीर्य की महान वर्षा करने वाले इस के स्थान हैं. हे तक्मा! तू वाह्लीक देश में जितना है, उतना ही उत्पन्न हुआ है. (५)

तक्मन् व्याल वि गद व्यङ्ग भूरि यावय.
दासीं निष्टक्वरीमिच्छ तां वज्रेण समर्पय (६)

हे जीवन को सर्प के समान कष्ट देने वाले ज्वर! तू चोरी कर ने वाली दासी से वज्र रूप में मिल और हम से अपनेआप को दूर रख. (६)

तक्मन् मूजवतो गच्छ बल्हिकान् वा परस्तराम्.
शूद्रामिच्छ प्रफर्व्यं१ तां तक्मन् वीव धूनुहि (७)

हे तक्मा! तू मूंज वाले प्रदेश को अथवा बाह्लीक देश को अथवा उस से भी दूर चला जा. तू प्रसव अवस्था वाली दासी से मिल और उसे कंपित कर. (७)

महावृषान् मूजवतो बन्ध्वद्धि परेत्य.
प्रैतानि तक्मने ब्रूमो अन्यक्षेत्राणि वा इमा (८)

हम मूंज वाले एवं अधिक वर्षा वाले स्थानों पर जाने के लिए ज्वर से निवेदन करते हैं कि तू वहां जा कर अथवा अन्य स्थानों पर जा कर वहां की वस्तुओं का भक्षण कर. (८)

अन्यक्षेत्रे न रमसे वशी सन् मृडयासि नः.
अभूदु प्रार्थस्तक्मा स गमिष्यति बल्हिकान् (९)

हे ज्वर! तू अन्य स्थानों में क्यों रमण नहीं करता है? तू हमारे वश में हो कर हमें सुखी बना. हम तुझ से बाह्लीक देश में जाने की प्रार्थना करते हैं. (९)

यत् त्वं शीतोऽथो रूरः सह कासावेपयः.
भीमास्ते तक्मन् हेतयस्ताभिः स्म परि वृङ्ग्धि नः (१०)

हे ज्वर! तू शीत के साथ रहता है तथा खांसी के साथ कंपित करने वाला है. तेरे आयुध भयंकर हैं. इन के साथ तू हम से दूर चला जा. (१०)

मा स्मैतान्त्सखीन् कुरुथा बलासं कासमुद्युगम्.
मा स्मातोऽर्वाङैः पुनस्तत् त्वा तक्मन्नुप ब्रुवे (११)

हे ज्वर! तू खांसी और शक्ति क्षीण करने वाले रोगों को हमारा मित्र मत बना. मैं तुझसे बारबार निवेदन करता हूं कि तू उस निचले स्थान से यहां मत आ. (११)

तक्मन् भ्रात्रा बलासेन स्वस्रा कासिकया सह.
पाप्मा भ्रातृव्येण सह गच्छामुमरणं जनम् (१२)

हे ज्वर! शक्ति क्षीण करने वाले रोग तुम्हारे भाई और खांसी तुम्हारी बहन है. पाप तुम्हारा भतीजा है. इन सब के साथ तुम दुष्ट पुरुष के पास जाओ. (१२)

तृतीयकं वितृतीयं सदन्दिमुत शारदम्.
तक्मानं शीतं रूरं ग्रैष्मं नाशय वार्षिकम् (१३)

हे देव! तिजारी, चौथइया, वर्षा संबंधी, शरद, ग्रीष्मकाल में होने वाले ज्वर के साथसाथ शीत ज्वर का विनाश करो. (१३)

गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः.
प्रैष्यन् जनमिव शेवधिं तक्मानं परि दद्मसि (१४)

हम मूंज वाले स्थान से, अंग देश से, मध्य देश से और गांधार देश से कष्ट वाले रोग ज्वर को भगाते हुए सुखी बनते है. (१४)

सूक्त तेईसवां

देवता—इंद्र

ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती.
ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति (१)

द्यावा पृथ्वी, सरस्वती देवी, इंद्र और अग्नि मुझ में ओतप्रोत हैं. वे कृमियों का विनाश करें. (१)

अस्येन्द्र कुमारस्य क्रिमीन् धनपते जहि.
हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम (२)

हे धन के स्वामी इंद्र! इस बालक के शत्रु रूप कृमियों का विनाश करो. इन्हें मेरे उग्र वचनों के साथ पूरी तरह नष्ट करो. (२)

यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति.
दतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि (३)

जो कृमि आंखों में घूमते हैं जो नाकखनों में चलतेफिरते हैं तथा जो दांतों के मध्य निवास करते हैं, उन कृमियों को हम नष्ट करते हैं. (३)

सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ.
बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः (४)

दो समान रूप वाले, दो भिन्न रूप वाले, दो काले, दो लाल रंग के, एक खाकी रंग वाला, एक खाकी रंग के कान वाला, एक गृद्ध और कोक—हम इन सभी कीड़ों को मंत्र की शक्ति से नष्ट करते हैं. (४)

ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः.
ये के च विश्वरूपास्तान् क्रिमीन् जम्भयामसि (५)

जो कृमि तीखी कोख वाले हैं, जो काले हैं, जो तीखी भुजाओं वाले एवं जो अनेक रूपों वाले हैं, उन सब को हम मंत्र की शक्ति से नष्ट करते हैं. (५)

उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा.
दृष्टांश्च घ्नन्नदृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणन् क्रिमीन् (६)

सभी को दिखाई देने वाले सूर्य अदृश्य कृमियों को नष्ट करते हैं. वे दृश्य और अदृश्य कृमियों को नष्ट करते हुए पूर्व दिशा से उदय हो रहे हैं. (६)

येवाषासः कष्कषास एजत्काः शिपवित्नुकाः.
दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिरुतादृष्टश्च हन्यताम् (७)

हे इंद्र! तुम शीघ्र गमन करने वाले, कष्ट देने वाले, कंपित करने वाले, तीक्ष्ण कृमि, दिखाई देने वाले अथवा दिखाई न देने वाले सभी कृमियों को नष्ट करो. (७)

हतो येवाषः क्रिमीणां हतो नदनिमोत.
सर्वान् नि मष्मषाकरं दृषदा खल्वां इव (८)

तीव्रगामी कृमि मेरी मंत्र शक्ति से नष्ट हो गए. नदमिना नाम के कीड़ों को मैं ने इस प्रकार पीस डाला है, जिस प्रकार चने पत्थरों से पीसे जाते हैं. (८)

त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम्.
शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः (९)

मैं तीन सिरों वाले, तीन ककुदों वाले, चितकबरे रंग वाले और श्वेत वर्ण वाले कृमियों को मंत्र की शक्ति से नष्ट करता हुआ, उन की पसलियों और सिरों को कुचलता हूं. (९)

अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत्.
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनष्म्यहं क्रिमीन् (१०)

मैं अत्रि ऋषि, कण्व ऋषि और जमदग्नि ऋषि के समान मंत्र बल से कृमियों का विनाश करता हूं. हे कृमियो! मैं अगस्त्य ऋषि के समान मंत्र शक्ति से तुम्हें

मारता हूं. (१०)

हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः.
हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा (११)

हमारे मंत्रों और ओषधि की शक्ति से कृमियों के राजा और मंत्री नष्ट हो गए हैं. माता, भाई और बहनों सहित कृमियों का पूरा कुटुंब नष्ट हो गया है. (११)

हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशः.
अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः (१२)

इन कृमियों के बैठने के स्थान नष्ट हो गए और इन के आसपास के स्थान भी नष्ट हो गए. जो कृमि बीज रूप में थे, वे भी नष्ट हो गए. (१२)

सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम्.
भिनद्म्यश्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम् (१३)

मैं सभी नर कृमियों और मादा कृमियों को पत्थर से नष्ट करता हूं एवं उन का मुंह अग्नि से नष्ट करता हूं. (१३)

सूक्त चौबीसवां देवता—सविता

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१)

सविता सभी उत्पन्न पदार्थों के अधिपति हैं. वे इस ब्रह्म कर्म में, इस पुरोधा में, इस संकल्प में, इस देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (१)

अग्निर्वनस्पतीनामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिनाकर्मण्यस्यांपुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (२)

अग्नि वनस्पतियों के अधिपति हैं. वह इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (२)

द्यावापृथिवी दातृणामधिपत्नीः ते मावताम्.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (३)

द्यावा और पृथ्वी दाताओं के अधिपति हैं. वे इस वेदोक्त, पौरोहित्य कर्म में,

प्रतिष्ठा में, संकल्प, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (३)

वरुणोऽपामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (४)

वरुण जलों के अधिपति हैं. वह इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (४)

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम्.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (५)

मित्र और वरुण वर्षा के अधिपति हैं. वे इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (५)

मरुतः पर्वतानामधिपतयस्ते मावन्तु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (६)

मरुद्गण पर्वतों के अधिपति हैं. वे इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (६)

सोमो वीरुधामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (७)

सोम लताओं के स्वामी हैं, वह इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (७)

वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्या
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (८)

वायुदेव अंतरिक्ष के अधिपति हैं. वे इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (८)

सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (९)

सूर्य देव अंतरिक्ष के अधिपति अर्थात हमारे स्वामी हैं. वह हमारी रक्षा करें. वह इस वेदोक्त महित कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, वेदों के आह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप में हमारी रक्षा करें. (९)

चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावतु
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१०)

चंद्रमा नक्षत्रों के अधिपति हैं. वह इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (१०)

इन्द्रो दिवोऽधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (११)

इंद्र स्वर्ग के राजा हैं. वह इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (११)

मरुतां पिता पशूनामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१२)

मरुतों के पिता पशुओं के अधिपति हैं. वह इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद कर्म में मेरी रक्षा करें. (१२)

मृत्युः पितृणामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१३)

मृत्यु प्रजाओं के स्वामी है. वह इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (१३)

यमः प्रजानामधिपतिः स मावतु.
अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१४)

यम पितरों के अधिपति हैं. वह मेरे इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाह्वान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी सहायता करें. (१४)

पितरः परे ते मावन्तु. अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां
प्रतिष्ठायामस्यां चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१५)

सात पीढ़ियों के ऊपर के पितर इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, संकल्प में प्रतिष्ठा

में, देवाहवान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (१५)

तता अवरे ते मावन्तु. अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१६)

सपिंड पितर इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, संकल्प में, प्रतिष्ठा में, देवाहवान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (१६)

ततस्ततामहास्ते मावन्तु. अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा (१७)

पितरों के पितामह मेरे इस वेदोक्त पौरोहित्य कर्म में, प्रतिष्ठा में, संकल्प में, देवाहवान कर्म में तथा आशीर्वाद रूप कर्म में मेरी रक्षा करें. (१७)

सूक्त पच्चीसवां — देवता—योनि

पर्वताद् दिवो योनेरङ्गादङ्गात् समाभृतम्.
शेपो गर्भस्य रेतोधाः सरौ पर्णमिवा दधत् (१)

पर्वत की ओषधि, स्वर्ग के पुण्य और अंगों की शक्ति से पुष्ट वीर्य धारण करने वाला पुरुष जल में पत्ते के समान गर्भाधान करता है. (१)

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे.
एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे हुवे (२)

जिस प्रकार विशाल पृथ्वी सभी भूतों अर्थात प्राणियों का गर्भ धारण करती हैं, उसी प्रकार मैं तेरा गर्भ धारण करती हूं और उस की रक्षा के निमित्त तुझे बुलाती हूं. (२)

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वती.
गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा (३)

हे सिनीवाली एवं सरस्वती! मेरे गर्भ को पुष्ट बनाओ. फूलों की माला धारण करने वाले अश्विनीकुमार मेरे गर्भ की रक्षा करें. (३)

गर्भं ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः.
गर्भं त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते (४)

मित्र, वरुण, बृहस्पतिदेव, इंद्र, अग्नि और धाता देव तेरे गर्भ को पुष्ट करें. (४)

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु.
आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते (५)

विष्णु तेरी योनि की कल्पना करें, त्वष्टा तेरे रूप की रचना करें, प्रजापति तेरा सिंचन करें और धाता तेरे गर्भ को पुष्ट करें. (५)

यद् वेद राजा वरुणो यद् वा देवी सरस्वती.
यदिन्द्रो वृत्रहा वेद तद् गर्भकरणं पिब (६)

राजा वरुण, देवी सरस्वती एवं वृत्र नाशक इंद्र जिस गर्भपोषक वस्तु को जानते हैं, उसे तू पी ले. (६)

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्.
गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेह धाः (७)

हे अग्नि! तुम ओषधियों के, वनस्पतियों के तथा सभी प्राणियों के गर्भ हो. अतएव तुम मेरे गर्भ को पुष्ट करो. (७)

अधि स्कन्द वीरयस्व गर्भमा धेहि योन्याम्.
वृषासि वृष्ण्यावन् प्रजायै त्वा नयामसि (८)

हे वृषणों अथवा अंडकोषों वाले! तू वर्षण अर्थात सेचन करता है. तू योनि में गर्भ स्थापित कर. तू ऊपर हो कर चलता हुआ वीरता का प्रदर्शन कर. हम तुझे प्रजा के निमित्त ग्रहण करते हैं. (८)

वि जिहीष्व बार्हत्सामे गर्भस्ते योनिमा शयाम्.
अदुष्टे देवाः पुत्रं सोमपा उभयाविनम् (९)

हे सांत्वनामयी साध्वी! तू विशेष गति वाली हो. मैं तुझ में गर्भाधान करता हूं. सोमपान करने वाले देवों ने इस लोक में और परलोक में रक्षा करने वाला पुत्र प्रदान किया है. (९)

धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः.
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे (१०)

हे धाता! इस नारी की आंतों से निकले मूत्र को मूत्राशय में ले जाने वाली जो नालियां दोनों पसलियों की ओर स्थित हैं, उन में स्थित पुत्र गर्भ को पुष्ट करो, जिस से यह दसवें मास में प्रसव कर सके. (१०)

त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः.
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे (११)

हे त्वष्टा! इस नारी की आंतों से निकले मूत्र को मूत्राशय में ले जाने वाली जो नाड़ियां दोनों पसलियों की ओर स्थित हैं, उन में स्थित पुत्र गर्भ को पुष्ट करो. जिस से यह दसवें मास में प्रसव कर सके. (११)

सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः.
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे (१२)

हे सविता! इस नारी की आंतों से निकले मूत्र को मूत्राशय में ले जाने वाली जो

नालियां दोनों पसलियों की ओर स्थित हैं, उन में स्थित पुत्र गर्भ को पुष्ट करो, जिस से यह दसवें मास में प्रसव कर सके. (१२)

प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः.
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे (१३)

हे प्रजापति! इस नारी की आंतों से निकले मूत्र को मूत्राशय तक ले जाने वाली जो नाड़ियां दोनों पसलियों की ओर स्थित हैं, उन में स्थित पुत्र गर्भ को पुष्ट करो, जिस से यह दसवें मास में प्रसव कर सके. (१३)

सूक्त छब्बीसवां — देवता—अग्नि

यजूंषि यज्ञे समिधः स्वाहाग्निः प्रविद्वानिह वो युनक्तु (१)

यजुर्वेद के मंत्रो और समिधाओ! सब कुछ जानने वाले अग्नि देव इस यज्ञ में तुम से मिलें. (१)

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा (२)

सब को उत्पन्न करने वाले सविता देव इस यज्ञ में तुम से मिलें. उन के लिए यह आहुति सुंदर हो. (२)

इंद्र उक्थामदान्यस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा (३)

हे उक्त कर्म करने वालो! सब कुछ जानने वाले इंद्र इस यज्ञ में तुम से मिलें. उन के निमित्त यह आहुति सुंदर हो. (३)

प्रैषा यज्ञे निविदः स्वाहा शिष्टाः पत्नीभिर्वहतेह युक्ताः (४)

हे शिष्ट मनुष्यो! तुम अपनी पत्नियों के सहित इस यज्ञ में आदेशों को धारण करो. यह आहुति उत्तम हो. (४)

छन्दांसि यज्ञे मरुतः स्वाहा मातेव पुत्रं पिपृतेह युक्ताः (५)

जिस प्रकार माता पुत्र का पालन करती है, उसी प्रकार इस यज्ञ में मरुद्गण छंदों का पालन करें. मरुद्गण के लिए यह आहुति उत्तम हो. (५)

एयमगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिर्यज्ञं तन्वानादितिः स्वाहा ६)

यह अदितिदेवी कुशों और प्रोक्षणियों के साथ यज्ञ का वर्णन करती हुई आई है. (६)

विष्णुर्युनक्तु बहुधा तपांस्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा (७)

भगवान विष्णु भलीभांति किए गए तपों का फल दें. यह आहुति विष्णु के

निमित्त उत्तम हो. (७)

त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा (८)

त्वष्टा देव इस यज्ञ में भलीभांति संभाले गए रूपों को संयुक्त करें. यह आहुति त्वष्टा देव के निमित्त हो. (८)

भगो युनक्त्वाशिषो न्व१स्मा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा (९)

भग देवता इस यज्ञ में सुंदर आशीर्वाद प्रदान करें. यह आहुति उन के निमित्त हो. (९)

सोमो युनक्तु बहुधा पयांस्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा (१०)

सोमदेव इस यज्ञ में संयुक्त होने वाले जलों को मिलाएं. यह आहुति उन के निमित्त हो. (१०)

इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याण्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा (११)

इंद्र इस यज्ञ में यज्ञ के अनुरूप शक्तियों को संयुक्त करें. यह आहुति इंद्र के निमित्त हो. (११)

अश्विना ब्रह्मणा यातमर्वाञ्चौ वषट्कारेण यज्ञं वर्धयन्तौ.
बृहस्पते ब्रह्मणा याह्यर्वाङ् यज्ञो अयं स्वरिदं यजमानाय स्वाहा (१२)

हे अश्विनीकुमारो! तुम बृहस्पतिदेव एवं मंत्रों के साथ इस यज्ञ की वृद्धि करते हुए हमारे सामने आओ. यह यज्ञ यजमान के हेतु कल्याण करने वाला हो. यह आहुति अश्विनीकुमारों एवं बृहस्पति के हेतु उत्तम हो. (१२)

सूक्त सत्ताईसवां देवता—अग्नि

ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोचींष्यग्नेः.
द्युमत्तमा सुप्रतीकः ससूनुस्तनूनपादसुरो भूरिपाणिः (१)

अग्नि की समिधाएं ऊंची और वीर्य तेजयुक्त होते हैं. यह अत्यंत प्रदीप्त, सुंदर एवं सूर्य के समान है. प्राणदाता अग्नि का यज्ञों में बहुत सहयोग रहता है. (१)

देवो देवेषु देवः पथो अनक्ति मध्वा घृतेन (२)

अग्निदेव सभी देवों में श्रेष्ठ हैं और मधु से मार्गों का शोधन करते हैं. (२)

मध्वा यज्ञं नक्षति प्रैणानो नराशंसो अग्निः सुकृद् देवः सविता विश्ववारः (३)

सुंदर कर्म करने वाले तथा सभी मनुष्यों द्वारा प्रशंसनीय सविता देव तथा संसार के द्वारा वरण करने योग्य अग्नि देव यज्ञ को मधुयुक्त करते हुए व्याप्त होते हैं. (३)

637/16

अच्छायमेति शवसा घृता चिदीडानो वह्निर्नमसा (४)

घृत एवं हव्य अन्न के सहित स्तुतियों को प्राप्त करने वाले अग्निदेव सामने से आते हैं. (४)

अग्निः स्रुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षदस्य महिमानमग्नेः (५)

यज्ञों में देवों की संगति करने वाले अग्निदेव इस यज्ञ की महिमा और स्रुवों को अपने से युक्त करें. (५)

तरी मन्द्रासु प्रयक्षु वसवश्चातिष्ठन् वसुधातरश्च (६)

देवों की संगति करने वाले एवं हर्ष उत्पन्न करने वाले यज्ञों में तारक और धन को बढ़ाने वाले वरुण देवता निवास करते हैं. (६)

द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं रक्षन्ति विश्वहा (७)

अग्नि की तेजस्विनी लपटें यजमान के व्रत की सभी प्रकार से रक्षा करती हैं. (७)

उरुव्यचसाग्नेर्धाम्ना पत्यमाने.
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्तेमं यज्ञमवतामध्वरं नः (८)

महत्त्व वाले तथा गतिशील अग्निदेव इस यज्ञ में तेज को ऐश्वर्यपूर्ण एवं आहुति की दीप्ति का संपादन करते हैं. (८)

दैवा होतार ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वयाभि गृणत गृणता नः स्विष्टये.
तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं सदन्तामिडा सरस्वती मही भारती गृणाना (९)

हे होताओ! यज्ञ की इस अग्नि की प्रशंसा करो. इस से हमारा कल्याण होगा. पृथ्वी, अग्नि और सरस्वती—ये तीनों देवियां प्रशंसा करती हुई कुश पर विराजमान हों. (९)

तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु. देव त्वष्टा रायस्पोषं वि ष्य नाभिमस्य (१०)

हे त्वष्टा देव! हमारे जल, अन्न और धन की पुष्टि करते हुए तुम इस स्त्री की नाभि खोल दो. (१०)

वनस्पतेऽव सृजा रराणः. त्मना देवेभ्यो अग्निर्हव्यं शमिता स्वदयतु (११)

हे वनस्पति! तुम शब्द करती हुई अपने आप को इस यज्ञ में छोड़ो तथा अग्नि इस हवि को देवों के लिए स्वादिष्ट बनाएं. (११)

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः.
इन्द्राय यज्ञं विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् (१२)

हे जन्म लेने वालों के ज्ञाता अग्निदेव! इंद्र के निमित्त इस यज्ञ को संपन्न करो.

सभी देव इस हवि को ग्रहण करें. (१२)

सूक्त अट्ठाईसवां देवता—त्रिवृत्त अग्नि

नव प्राणान्नवभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय.
हरिते त्रीणि रजते त्रीण्ययसि त्रीणि तपसाविष्ठितानि (१)

हम सौ वर्ष की आयु पाने के लिए नव प्राणों को इन तीन से संयुक्त करते हैं. इन नौ में सोने, चांदी और लोहे के तीनतीन धागे अर्थात तार हैं जो उष्णता लिए हुए हैं. (१)

अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो द्यौरन्तरिक्षं प्रदिशो दिशश्च.
आर्तवा ऋतुभिः संविदाना अनेन मा त्रिवृता पारयन्तु (२)

अग्नि, चंद्र, सूर्य, पृथ्वी, जल, आकाश, अंतरिक्ष, दिशाएं और उपदिशाएं इस त्रिवृत्त अर्थात नौ कर्मों से मुझे ऋतुओं सहित प्राप्त हो कर पार करें. इस में ऋतुओं के अंश भी सहायता करें. (२)

त्रयः पोषास्त्रिवृति श्रयन्तामनक्तु पूषा पयसा घृतेन.
अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम् (३)

तीन पुष्टिकारक इस त्रिवृत्त के आश्रित हों. उषादेवी दूध और घी से इस यज्ञ कर्म को बढ़ाएं. इस के आश्रय में अन्न, पुरुषों और पशुओं की अधिकता रहे. (३)

इममादित्या वसुना समुक्षतेममग्ने वर्धय वावृधानः.
इममिन्द्र सं सृज वीर्येणास्मिन् त्रिवृच्छ्रयतां पोषयिष्णु (४)

आदित्य इस बालक को धन से पूर्ण करें. हे अग्नि, तुम स्वयं बढ़ते हुए इस बालक की भी वृद्धि करो. हे इंद्र! तुम इसे वीर्य युक्त करो. पोषण करने वाला त्रिवृत्त इस का आश्रित हो. (४)

भूमिष्ट्वा पातु हरितेन विश्वभृदग्निः पिपर्त्वयसा सजोषाः.
वीरुद्भिष्टे अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम् (५)

पृथ्वी स्वर्ग के द्वारा तेरी रक्षा करे. विश्व का भरणपोषण करने वाले अग्निदेव लोहे के द्वारा तेरा पालन करें तथा तुझ में लताओं से प्राप्त जल के द्वारा बल धारण करें. (५)

त्रेधा जातं जन्मनेदं हिरण्यमग्नेरेकं प्रियतमं बभूव सोमस्यैकं हिंसितस्य
परापतत्. अपामेकं वेधसां रेत आहुस्तत् ते हिरण्यं त्रिवृदस्त्वायुषे (६)

जन्म से ही यह स्वर्ण तीन प्रकार से उत्पन्न हुआ है. अग्नि को उस स्वर्ण का एक जन्म प्रिय हुआ. वह सोम के पीड़ित होने पर गिरा. विद्वान लोग एक को जलों

का वीर्य कहते थे. हे ब्रह्मचारी! वह स्वर्ण तेरी आयु वृद्धि के हेतु त्रिवृत्त अर्थात तिगुना हो जाए. (६)

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्.
त्रेधामृतस्य चक्षणं त्रीण्यायूंषि तेऽकरम् (७)

जमदग्नि ऋषि की तीन आयु हैं—बचपन, यौवन और वृद्धावस्था. महर्षि कश्यप की भी यही तीन अवस्थाएं हैं. अमृत के निदर्शन रूप में तीनों आयु मैं तुझे देता हूं. (७)

त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदायन्नेकाक्षरमभिसंभूय शक्राः.
प्रत्यौहन्मृत्युममृतेन साकमन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा (८)

त्रिवृत्त रूप से तीन समर्थ स्वर्ण एक अक्षर पर आकर शक्तिशाली बनते हैं. वे सभी पापों को नष्ट कर के अमृत के द्वारा तेरी मृत्यु को समाप्त करें. (८)

दिवस्त्वा पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वर्जुनम्.
भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम् (९)

आकाश स्वर्ण के द्वारा तेरी रक्षा करे. मध्य लोक से रजत तेरी रक्षा करे. पृथ्वी लोक तेरी रक्षा करे. ये तीनों देव नगरियों को प्राप्त होते हैं. (९)

इमास्तिस्रो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः.
तास्त्वं बिभ्रद् वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव (१०)

ये देवताओं की जो तीन नगरियां हैं, वे सभी ओर से तेरी रक्षा करें. उन्हें धारण करता हुआ तू अपने शत्रुओं की अपेक्षा अधिक तेजस्वी बन. (१०)

पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आबेधे प्रथमो देवो अग्रे.
तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदाबधे मे (११)

देवों के आगे प्रमुख देव ने स्वर्ण रूपी अमृत को बांधा था. मैं उस के लिए दस बार नमस्कार करता हूं. वह देवता मुझे इस त्रिवृत्त को मांगने की आज्ञा दे. (११)

आ त्वा चृतत्वर्यमा पूषा बृहस्पतिः.
अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि (१२)

अर्यमा, पूषा और बृहस्पति तुझे भली प्रकार बांधें. दिन में उत्पन्न होने वाले का जो नाम है, उस नाम से हम तुझे बांधते हैं. (१२)

ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे वर्चसे त्वा.
संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृण्मसि (१३)

हे ब्रह्मचारी! आयु और तेज की प्राप्ति के लिए मैं तुझे ऋतुओं, मासों और

संवत्सरों के तेजरूप सूर्य से संबंधित करता हूं. (१३)

घृतादुल्लुप्तं मधुना समक्तं भूमिदृंहमच्युतं पारयिष्णु.
भिन्दत् सपत्नानधरांश्च कृण्वदा मा रोह महते सौभगाय (१४)

घी से तर तथा शहद से सिंचा हुआ तू पृथ्वी के समान दृढ़ है. तू शत्रुओं को चीरता हुआ एवं उन्हें तिरस्कृत करता हुआ महान सौभाग्य देने के लिए मुझ पर स्थित हो. (१४)

सूक्त उनतीसवां देवता—जातवेद

पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम्.
त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुषं सनेम (१)

हे सभी कर्मों में प्रथम नियुक्त होने वाले अग्निदेव! मेरे द्वारा किए गए इस कार्य का भार वहन करो. तुम ओषधि प्रदान करने वाले वैद्य हो. हम तुम्हारे द्वारा गाय, अश्व एवं मनुष्यों को रोग रहित दशा में प्राप्त करें. (१)

तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः.
यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पताति (२)

हे जातवेद अग्निदेव! जो हमारे विरुद्ध खेल खेल रहा है तथा जो हमारा भक्षण करना चाहता है, सभी देवों के साथ मिल कर उस का परकोटा गिरा दो. (२)

यथा सो अस्य परिधिष्पताति तथा तदग्ने कृणु जातवेदः.
विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः (३)

हे अग्नि! तुम सभी देवों के साथ मिल कर ऐसा यत्न करो, जिस से उस का परकोटा गिर जाए जो हमारे विरोध में खेल खेल रहा है और जो हमें खाना चाहता है. (३)

अक्ष्यौ३ नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्द्धि प्र दतो मृणीहि.
पिशाचो अस्य यतमो जघासाग्ने यविष्ठ प्रति तं शृणीहि (४)

जो पिशाच हमें खाना चाहता है, तुम उस की आंखें फोड़ दो, जीभ काट डालो और दांत तोड़ दो. इस प्रकार तुम उस का विनाश कर दो. (४)

यदस्य हृतं विहृतं यत् पराभृतमात्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः.
तदग्ने विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः (५)

हे अग्निदेव! इस का जो मांस पिशाचों ने इस के शरीर से नोंच कर खा लिया है, उसे इस के शरीर में पुनः स्थापित कर दो तथा मंत्र शक्ति से इस के शरीर में प्राणों का पुनः संचार कर दो. (५)

आमे सुपक्वे शबले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने ददम्भ.
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु (६)

हे अग्नि! जो पिशाच कच्चे, पक्के और चितकबरे पात्र में विशेष रूप से पके हुए एवं कच्चे, पक्के भोजन में इस पुरुष के मांस को घोल कर हमारे विनाश की इच्छा कर रहा है, वह पिशाच अपनी संतान सहित कष्ट भोगे तथा यह पुरुष आरोग्य को प्राप्त करे. (६)

क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भाकृष्टपच्ये अशने धान्ये३ यः.
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु (७)

हे अग्नि! दूध में, मट्ठे में एवं कृषि द्वारा पके हुए अन्न में प्रविष्ट हो कर जो पिशाच इस पुरुष को नष्ट करने की इच्छा कर रहा है, वह अपनी संतान के साथ कष्ट भोगे एवं यह पुरुष रोग रहित हो जाए. (७)

अपां मा पाने यतमो ददम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम्.
तदात्मन प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु (८)

जिस पिशाच ने मुझे जल पीने में, यात्रा करने में तथा सोते समय पीड़ित किया है, हे अग्नि! वह संतान के सहित इसी प्रकार का कष्ट भोगे एवं यह पुरुष रोग रहित हो जाए. (८)

दिवा मा नक्तं यतमो ददम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम्.
तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु (९)

हे अग्नि! मुझे रात और दिन में यात्रा करते समय और सोते समय जिस मांस भक्षी पिशाच ने पीड़ित किया है, वह अपनी संतान सहित कष्ट भोगे तथा यह पुरुष नीरोग हो जाए. (९)

क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः.
तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु च्छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः (१०)

हे अग्नि! तुम मांसभक्षी, रुधिर पीने वाले तथा मन को कष्ट देने वाले पिशाच को नष्ट करो. अश्व के स्वामी इंद्र उसे अपने वज्र से मारें तथा सोम उस का शीश काट लें. (१०)

सनादग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः.
सहमूरानन् दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः (११)

हे अग्नि! तुम सदा से राक्षसों का मर्दन करते आए हो, राक्षस युद्ध में तुम्हें कभी नहीं जीत सके हैं. तुम मांस भक्षियों को जला दो. ये तुम्हारे दिव्य अस्त्र से बच न सकें. (११)

समाहर जातवेदो यद्धृतं यत् पराभृतम्.
गात्राण्यस्य वर्धन्तामंशुरिवा प्यायतामयम् (१२)

हे अग्नि! इस मनुष्य का जो ज्ञान और मांस नष्ट हो गया है, उसे तुम पुनः इस के शरीर में लाओ. यह सोमलता के अंकुर के समान पुष्ट हो तथा इस के अंगप्रत्यंग पूर्ण हों. (१२)

सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम्.
अग्ने विरप्शिनं मेध्यमयक्ष्मं कृणु जीवतु (१३)

हे अग्नि! सोमलता के अंकुर के समान पुष्ट होने के कारण इस पुरुष के अंगप्रत्यंग पूर्णता को प्राप्त हों. इस गुणवान पुरुष को जीवित रहने के लिए नीरोग कीजिए. (१३)

एतास्ते अग्ने समिधः पिशाचजम्भनीः.
तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः (१४)

हे अग्नि! तुम्हारी ये समिधाएं पिशाचों को नष्ट करने वाली हैं. हे जातवेद! इन समिधाओं को प्राप्त कर के तुम प्रसन्न बनो. (१४)

तार्ष्टाघीरग्ने समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा.
जहातु क्रव्याद्रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति (१५)

हे अग्नि! तृषा शांत करने वाली इन समिधाओं को घी के साथ ग्रहण करो. जो राक्षस इस पुरुष के मांस की इच्छा करता है, वह अपने कार्य से विमुख हो जाए. (१५)

सूक्त तीसवां देवता—आयु

आवतस्त आवतः परावतस्त आवतः.
इहैव भव मा नु गा मा पुर्वाननु गाः पितृनसुं बध्नामि ते दृढम् (१)

मैं समीप के देश से और दूर के देश से तेरे प्राणों को दृढ़ता से बांधता हूं. तू यहीं रह और अपने पूर्ववर्ती पितरों का अनुकरण मत कर. (१)

यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः स्वो यदरणो जनः.
उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते (२)

पितृऋण को न चुकाने वाले जिस पुरुष ने तुझ पर अधिकार किया है, मैं उस से छूटने का उपाय अपने मंत्र बल से तुझे बताता हूं. (२)

यद् दुद्रोहिथ शेपिषे स्त्रियै पुंसे अचित्त्या.
उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते (३)

तूने जिस स्त्री अथवा पुरुष के प्रति वैरभाव रखते हुए इस पापपूर्ण अभिचार का प्रयोग किया है, मैं तुझे उस से मुक्त करने से संबंधित बात बताता हूं. (३)

यदेनसो मातृकृताच्छेषे पितृकृताच्च यत्.
उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते (४)

तू अपने पिता अथवा माता द्वारा किए गए पाप के कारण रोगी हो कर शैया पर पड़ा है. मैं अपनी वाणी से उस रोग से उन्मोचन और प्रमोचन की बात तुझे बताता हूं. (४)

यत् ते माता यत् ते पिता जामिर्भ्राता च सर्जतः.
प्रत्यक् सेवस्व भेषजं जरदष्टिं कृणोमि त्वा (५)

तेरी माता, तेरे पिता, तेरे भाई अथवा तेरी बहन ने जिस मंत्र अथवा ओषधि का प्रयोग तेरे लिए निश्चित किया है, उसे भली प्रकार से सेवन कर. मैं तुझे वृद्धावस्था तक जीवित रहने वाला बनाता हूं. (५)

इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह.
दूतौ यमस्य मानु गा अधि जीवपुरा इहि (६)

हे पुरुष! तू यमराज के दूतों का अनुकरण मत कर अर्थात मर मत. तू अपने समस्त परिवार जनों के साथ यहां जीवित रह. (६)

अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः.
आरोहणमाक्रमणं जीवतोजीवतोऽयनम् (७)

तू उदय होने के मार्ग को जानने वाला है और इस यज्ञ कर्म के द्वारा बुलाया गया है. उत्तरायण एवं दक्षिणायन तेरे जीवन में ही व्यतीत हों. (७)

मा बिभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिं कृणोमि त्वा.
निरवोचमहं यक्ष्ममङ्गेभ्यो अङ्गज्वरं तव (८)

हे रोगी! तू भय त्याग दे, क्योंकि तू मरेगा नहीं. मैं तुझे वृद्धावस्था तक इस लोक में रहने योग्य बनाता हूं. तेरे शरीर में से यक्ष्मा रोग और अस्थिगत ज्वर दूर हो चुका है. (८)

अङ्गभेदो अङ्गज्वरो यश्च ते हृदयामयः.
यक्ष्मः श्येन इव प्रापप्तद् वाचा साढः परस्तराम् (९)

तेरे शरीर में व्याप्त ज्वर, तेरा हृदय रोग एवं यक्ष्मा रोग—ये सभी मेरे मंत्र रूपी बाणों से तिरस्कृत हो कर उड़ने वाले बाज पक्षी के समान दूर जा कर गिरे हैं. (९)

ऋषी बोधप्रतीबोधावस्वप्नो यश्च जागृविः.
तौ ते प्राणस्य गोप्तारौ दिवा नक्तं च जागृताम् (१०)

जो बोध, प्रतिबोध, स्वप्न और जागृति नामक तेरे प्राणरक्षक ऋषि हैं, वे रातदिन जागते रहें. (१०)

अयमग्निरुपसद्य इह सूर्य उदेतु ते.
उदेहि मृत्योर्गम्भीरात् कृष्णाच्चित् तमसस्परि (११)

यह अग्नि समीप रहने योग्य है. तेरे लिए सूर्य इसी लोक में उदय हो. तू गहरी, काली और अंधकारपूर्ण मृत्यु से निकल कर जीवन को प्राप्त हो. (११)

नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे नमः पितृभ्य उत ये नयन्ति.
उत्पारणस्य यो वेद तमग्निं पुरो दधेऽस्मा अरिष्टतातये (१२)

यमराज के लिए नमस्कार है. मृत्यु के लिए नमस्कार है. पितरों के लिए नमस्कार है. ये तुझे ले जाने वाले हैं. जो अग्नि शरीर के पारण की विधि जानते हैं, वे तेरे कल्याण के लिए आए हैं. मैं तुझे स्थापित करता हूं. (१२)

ऐतु प्राण ऐतु मन ऐतु चक्षुरथो बलम्.
शरीरमस्य सं विदां तत् पद्भ्यां प्रति तिष्ठतु (१३)

इस पुरुष को प्राण, नेत्र और बल प्राप्त हों. मैं ने इस के शरीर को मंत्र शक्ति के द्वारा प्राण युक्त किया है. वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाए. (१३)

प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं समीरय तन्वा३ सं बलेन.
वेत्थामृतस्य मा नु गान्मा नु भूमिगृहो भुवत् (१४)

हे अग्नि! तुम इस पुरुष को प्राण और चक्षु से युक्त करो तथा इस के शरीर में बल भर दो. तुम अमृत के जानने वाले हो. यह इस लोक से प्रस्थान न करे और श्मशान इस का घर न बने. (१४)

मा ते प्राण उप दसन्मो अपानोऽपि धायि ते.
सूर्यस्त्वाधिपतिर्मृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः (१५)

हे रोगी! तेरे प्राणों का क्षय न हो तथा तेरी अपान वायु भी तेरा त्याग न करे. सूर्य अपनी किरणों द्वारा मृत्यु शैया पर पड़े हुए तुझे उस से उठा दें. (१५)

इयमन्तर्वदति जिह्वा बद्धा पनिष्पदा.
त्वया यक्ष्मं निरवोचं शतं रोपीश्च तक्मनः (१६)

भीतर से हिलती हुई और मुख में बांधी हुई मेरी जीभ कहती है कि तुझे यक्ष्मा रोग ने त्याग दिया है और तेरे ऊपर ज्वर का आक्रमण शांत हो गया है. (१६)

अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः. यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः पुरुष जज्ञिषे.
स च त्वानु ह्वयामसि मा पुरा जरसो मृथाः (१७)

वह पराजित न होने वाला मृत्यु लोक देवों को भी प्रिय है. इस लोक में तूने मृत्यु के लिए ही जन्म लिया है. वह मृत्यु तेरा आह्वान करती है. तू वृद्धावस्था से पहले मृत्यु को प्राप्त न हो. (१७)

सूक्त इकत्तीसवां — देवता—कृत्या का प्रतिहरण

यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये.
आमे मांसे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (१)

हे कृत्या! अभिचार करने वाले ने मिट्टी के कच्चे पात्र में चावल, जौ, गेहूं, उपवाक, तिल एवं कांगनी के मिले हुए अन्नों में अथवा मुर्गे आदि के मांसों में तुझे स्थित किया है. मैं तुझे उसी की ओर लौटाता हूं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (१)

यां ते चक्रुः कृकवाकावजे वा यां कुरीरिणि.
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (२)

हे कृत्या! अभिचार कर्ता ने तुझे मुर्गे अथवा बकरे के मांस में अथवा पेड़ पर स्थित किया है. मैं तुझे उसी की ओर लौटाता हूं, जिस ने तुझे अभिचार कर के भेजा है. (२)

यां ते चक्रुरेकशफे पशूनामुभयादति.
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (३)

हे कृत्या! अभिचार कर्ता ने तुझे एक शाफ अर्थात टाप वाले और दोनों ओर दांतों वाले (घोड़े या गधे) पशु पर स्थित किया है. हम तुझे उसी की ओर लौटाते हैं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (३)

यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वा नराच्याम्.
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (४)

हे कृत्या! अभिचारकर्ता ने तुझे मनुष्यों द्वारा पूजित खाने के पदार्थ में ढक कर खेत में स्थित किया है. हम तुझे उसी की ओर लौटाते हैं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (४)

यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये पूर्वाग्नावुत दुश्चितः.
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (५)

हे कृत्या! अभिचार करने वाले ने तुझे गार्हपत्य अग्नि में अथवा यज्ञशाला में स्थित किया है. हम तुझे उसी की ओर लौटाते हैं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (५)

यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधिदेवने.

अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (६)

हे कृत्या! अभिचार करने वाले ने तुझे सभा में अथवा जुआ खेलने के पासों में स्थित किया है. हम तुझे उसी की ओर लौटाते हैं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (६)

यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे.
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (७)

हे कृत्या! अभिचार करने वाले ने तुझे सेना में, बाण पर अथवा दुदुंभि पर स्थित किया है. हम तुझे उसी की ओर लौटाते हैं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (७)

यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः श्मशाने वा निचख्नुः.
सद्मनि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम् (८)

हे कृत्या! अभिचार करने वाले ने तुझे कुएं में, श्मशान में अथवा घर में स्थित किया है. हम तुझे उसी की ओर लौटाते हैं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (८)

यां ते चक्रुः पुरुषास्थे अग्नौ संकसुके च याम्.
म्रोकं निर्दाहं क्रव्यादं पुनः प्रति हरामि ताम् (९)

हे कृत्या! अभिचार करने वाले मांसभक्षी ने तुझे पुरुष की हड्डी पर अथवा प्रकाशित अग्नि पर स्थित किया है. हम तुझे उसी की ओर लौटाते हैं, जिस ने अभिचार कर के तुझे भेजा है. (९)

अपथेना जभारैणां तां पथेतः प्र हिण्मसि.
अधीरो मर्याधीरेभ्यः सं जभाराचित्त्या (१०)

जिस अज्ञानी अभिचार कर्ता ने कृत्या को बुरे मार्ग से हम मर्यादा में रहने वालों पर भेजा है, हम कृत्या को उसी मार्ग से अभिचार करने वालों की ओर लौटाते हैं. (१०)

यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम्.
चकार भद्रमस्मभ्यमभागो भगवद्भ्यः (११)

जिस ने हमारे ऊपर कृत्या का अभिचार किया है, वह हमारी उंगली अथवा पैर को नष्ट नहीं कर सका है. वह अपनी अभिसंधि में सफल न हो और हम भाग्यशालियों का अमंगल न कर सके. (११)

कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेय्यम्.
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया (१२)

शत्रुता रखने वाले जिस अभिचारकर्ता ने छिप कर हम पर कृत्या भेजने का दुष्कर्म किया है, इंद्र उसे अपने विशाल शस्त्र से नष्ट कर दें और अग्निदेव उसे अपनी ज्वालाओं से जला दें. (१२)

छठा कांड

सूक्त पहला

देवता—सविता

दोषो गाय बृहद् गाय द्युमद्धेहि आथर्वण स्तुहि देवं सवितारम् (१)

हे अथर्वा ऋषि के पुत्र दध्यङ् ऋषि! स्तुति के योग्य एवं विशाल साम मंत्रों का रातदिन अर्थात हर समय गुणगान करो तथा उन के द्वारा हमें धन युक्त बनाओ. हे स्तुति करने वाले दध्यङ् ऋषि! तुम अपने नाम मंत्रों द्वारा दानादि गुणों से संपन्न सविता देव की स्तुति करो. (१)

तमु ष्टुहि यो अन्तः सिन्धौ सूनुः. सत्यस्य युवानम द्रोघवाचं सुशेवम् (२)

हे स्तुति करने वाले! उन्हीं सविता देव की स्तुति करो जो ब्रह्म के प्रथम पुत्र हैं एवं जो प्रवाहशील सागर से उदित होते दिखाई देते हैं. वे नित्य तरुण, रात्रि के अंधकार का विनाश करने वाले एवं शोभन वचन उच्चारण करने वाले हैं. (२)

स घा नो देवः सविता साविषदमृतानि भूरि. उभे सुष्टुती सुगातवे (३)

वे ही सविता देव हमें अमर बनाने के साधन यज्ञों अधिक मात्रा में देवों को प्राप्त कराएं एवं हमें मृत्यु विरोधी बल प्रदान करें. वे सविता देव हमें शोभन स्तुति के साधन दोनों प्रकार के रथंतर साम गान हेतु प्रेरित करें. (३)

सूक्त दूसरा

देवता—सोम

इन्द्राय सोममृत्विजः सुनोता च धावत. स्तोतुर्यो वचः शृणवद्धवं च मे (१)

हे अध्वर्यु आदि ऋत्विजो! इंद्र के लिए सोम को निचोड़ो और निचोड़े गए सोम का दशापवित्र के द्वारा सभी प्रकार शोधन करो. वे इंद्र मुझ स्तोता के स्तुति लक्षण आह्वान को सुनें तथा आदरपूर्वक जानें. (१)

आ यं विशन्तीन्दवो वयो न वृक्षमन्धसः.
विरप्शिन् वि मृधो जहि रक्षस्विनीः (२)

जिस प्रकार पक्षी अपने निवास वाले वृक्ष पर स्वेच्छा से शीघ्र पहुंच जाते हैं,

उसी प्रकार सोम इंद्र के शरीर में शक्ति उत्पादक के रूप में स्वयं पहुंच जाते हैं. हे महान इंद्र! सोम पान से उत्तेजित हो कर हमें बाधा पहुंचाने वाले सैनिकों से युक्त एवं युद्ध करती हुई शत्रु सेनाओं का विनाश करो. (२)

सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे. युवा जेतेशानः स पुरुष्टुतः (३)

हे अध्वर्युगण! सोमपान के लिए उत्सुक एवं हाथ में वज्र धारण करने वाले इंद्र के लिए सोमरस निचोड़ो. वे इंद्र नित्य तरुण, विजयी, सारे संसार के समीप तथा बहुत से यजमानों द्वारा प्रशंसित हैं. (३)

सूक्त तीसरा — देवता—इंद्र, पूषा

पातं न इन्द्रापूषणादितिः पान्तु मरुतः.
अपां नपात् सिन्धवः सप्त पातन पातु नो विष्णुरुत द्यौः (१)

हे इंद्र और पूषादेव! हमारी रक्षा करो. देवमाता अदिति हमारी रक्षा करें. उनन्चास मरुद्गण हमारी रक्षा करें. अपानपात अर्थात जल को ईंधन बनाने वाले अग्नि देव एवं सात सागर हमारी रक्षा करें. विष्णु एवं आकाश हमारी रक्षा करें. आह्वनीय अग्नि और अग्नि की सुखकर तथा राक्षसों द्वारा दिए हुए दुख से रक्षक किरणें हमारी रक्षा करें. (१)

पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः.
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः (२)

द्यावा और पृथ्वी अभिमत फल पाने के लिए हमारी रक्षा करें. सोमरस कुचलने का पत्थर और सोमरस पाप से हमारी रक्षा करे. सौभाग्य युक्त देवी सरस्वती हमारी रक्षा करे. अग्नि हमारी रक्षा करे. जिनकी किरणें हमें पवित्र करती हैं. (२)

पातां नो देवाश्विना शुभस्पती उषासानक्तोत न उरुष्यताम्.
अपां नपादभिह्रुती गयस्य चिद् देव त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये (३)

हे दानादि गुण युक्त एवं दीप्त तेज वाले अश्विनीकुमारो! हे दिन और रात के अधिष्ठाता देवो! हमारी रक्षा करो. अपानपात अर्थात मेघों के जल को बढ़ाने वाले अग्नि राक्षस आदि की हिंसा से हमें बचाएं. हे त्वष्टा देव! सभी फलों की प्राप्ति के लिए हमें बढ़ाओ. (३)

सूक्त चौथा — देवता—त्वष्टा

त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः.
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रायमाणं सहः (१)

त्वष्टा एवं ब्रह्मणस्पति अर्थात इस मंत्र के अधिपतिदेव मेरे स्तुति लक्षण वचनों को सुनें. अदिति अपने पुत्रों और भ्राताओं के साथ हमारे रक्षक एवं शत्रुओं द्वारा

अतिक्रमण रहित बल की शीघ्र रक्षा करें. (१)

अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः.
अप तस्य द्वेषो गमेदभिह्रुतो यावयच्छत्रुमन्तितम् (२)

अदिति और उन के भग, वरुण, मित्र और अर्यमा नामक पुत्र और उनन्चास मरुतों का समूह मेरी रक्षा करें. इन का द्वेष कर्म हम से दूर चला जाए. तुम हम से द्वेष रखने वाले शत्रु को हम से पृथक करो. (२)

धिये समश्विना प्रावतं न उरुष्या ण उरुज्मन्नप्रयुच्छन्.
द्यौ३ष्पितर्यावय दुच्छुना या (३)

हे अश्विनीकुमारो! अग्निहोत्र आदि उत्तम कर्म करने की सद्‌बुद्धि के लिए हमारी रक्षा करो. हे विस्तीर्ण गमन वाले वायुदेव! तुम प्रमाद न करते हुए हमारी रक्षा करो. हे पिता के समान द्युलोक! कुत्ते के समान आक्रमण करने वाली पाप की देवी को हमारे पास से भगाओ. (३)

सूक्त पांचवां देवता—अग्नि, इंद्र

उदेनमुत्तरं नयाग्ने घृतेनाहुत. समेनं वर्चसा सृज प्रजया च बहुं कृधि (१)

हे घृत के द्वारा बुलाए गए अग्निदेव! तुम इस यजमान को उत्तम पद प्राप्त कराओ. उत्तम पद प्राप्त कराने के पश्चात तुम इस यजमान को शारीरिक तेज से युक्त करो तथा पुत्र, पौत्र आदि से समृद्ध बनाओ. (१)

इन्द्रेमं प्रतरं कृधि सजातानामसद् वशी.
रायस्पोषेण सं सृज जीवातवे जरसे नय (२)

हे इंद्र! इस यजमान की अतिशय वृद्धि करो. तुम्हारी कृपा से यह अपने बंधुओं के मध्य सब को वश में करने वाला तथा स्वयं स्वतंत्र बने. तुम इसे धन संपन्न बनाओ तथा इस के जीवन को वृद्धावस्था तक पहुंचाओ. (२)

यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम्.
तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं च ब्रह्मणस्पतिः (३)

हे अग्निदेव! हम जिस यजमान के घर में यज्ञ कर रहे हैं, उस यजमान को तुम समृद्ध बनाओ. सोम देव एवं ब्रह्मणस्पतिदेव इसे अपना कहें. (३)

सूक्त छठा देवता—ब्रह्मणस्पति

योऽस्मान् ब्रह्मणस्पतेऽदेवो अभिमन्यते.
सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते (१)

हे ब्रह्मणस्पतिदेव! जो देव विरोधी शत्रु हमें वध करने योग्य मानता है, उस को सोम रस निचोड़ने वाले मुझ यजमान के वश में करो. (१)

यो नः सोम सुशंसिनो दुःशंस आदिदेशति.
वज्रेणास्य मुखे जहि स संपिष्टो अपायति (२)

हे सोम! दुर्वचन बोलने वाला जो शत्रु हमें बाधा पहुंचाता है और अपने कठोर वचनों से हमारा पराभव करता है, उस के मुख पर वज्र का प्रहार करो. वह शत्रु वज्र के आघात से छिन्नभिन्न हो कर भाग जाए. (२)

यो नः सोमाभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः.
अप तस्य बलं तिर महीव द्यौर्वधत्मना (३)

हे सोम! हमारा जो संबंधी हमारा अभिभव करना चाहता है तथा जो निकृष्ट शत्रु हमें बाधा पहुंचाता है, तुम उस को उसी प्रकार नष्ट कर दो, जिस प्रकार द्युलोक वज्र के द्वारा विनाश करता है. (३)

सूक्त सातवां — देवता—सोम

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः. तेना नोऽवसा गहि (१)

हे सोम! जिस मार्ग से, अदिति मित्र एवं उस के बारह पुत्र अनुग्रह करते हुए संचना करते हैं, उसी मार्ग से हमारा कल्याण करते हुए आओ. (१)

येन सोम साहन्त्यासुरान् रन्धयासि नः. तेना नो अधि वोचत (२)

हे सोम! जिस बल के द्वारा तुम हमारे शक्तिशाली शत्रुओं का विनाश करते हो, उसी शक्ति के द्वारा हमें आशीर्वाद वचन सुनाओ. (२)

येन देवा असुराणामोजांस्यवृणीध्वम्. तेना नः शर्म यच्छत (३)

हे देवो! तुम अपने जिस बल से शत्रुओं की शक्ति अपने में मिला लेते हो, उसी बल के द्वारा हमारे लिए सुख प्रदान करो. (३)

सूक्त आठवां — देवता—कामात्मा

यथा वृक्षं लिबुजा समन्तं परिषस्वजे.
एवा परि ष्वजस्व मां यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः (१)

हे पत्नी! जिस प्रकार लता चारों ओर से वृक्ष को लपेटती है, उसी प्रकार तू मेरा आलिंगन कर. जिस प्रकार तू मेरी कामना करती हुई मेरे समीप से कहीं न जाए, उसी प्रकार मैं तुझे अपने वश में करता हूं. (१)

यथा सुपर्णः प्रपतन् पक्षौ निहन्ति भूम्याम्.
एवा नि हन्मि ते मनो यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः (२)

हे कामिनी! जिस प्रकार गरुड़ अपने निवास स्थान से उड़ता हुआ धरती पर

अपने दोनों पंखों को पटकता है, उसी प्रकार मैं तेरे हृदय को पीड़ित करता हूं. जिस प्रकार तू मेरी कामना करती हुई मेरे समीप से कहीं न जाए, उसी प्रकार मैं तुझे अपने वश में करता हूं. (२)

यथेमे द्यावापृथिवी सद्यः पर्येति सूर्यः.
एवा पर्येमि ते मनो यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः (३)

हे नारी! सब का प्रेरक सूर्य जिस प्रकार इस आकाश और धरती को शीघ्र व्याप्त कर लेता है, उसी प्रकार मैं तेरे मन को व्याप्त करूंगा. जिस प्रकार तू मेरी कामना करती हुई मेरे समीप से कहीं न जाए, उसी प्रकार मैं तुझे अपने वश में करता हूं. (३)

सूक्त नौवां

देवता—कामात्मा

वाञ्छ मे तन्वं१ पादौ वाञ्छाक्ष्यौ३ वाञ्छ सक्थ्यौ.
अक्ष्यौ वृषण्यन्त्याः केशा मां ते कामेन शुष्यन्तु (१)

हे कामिनी! तू मेरे शरीर, पैरों, नेत्रों और जंघाओं की कामना कर. तू ऐसे पुरुष की कामना करती है, जो तुझे संतुष्ट कर सके. तेरी सुंदर आंखें और केश मेरे मन को व्याकुल करते हैं. (१)

मम त्वा दोषणिश्रिषं कृणोमि हृदयश्रिषम्.
यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि (२)

हे पत्नी! मैं तुझे अपनी बांहों और हृदय में आश्रय लेने वाली बनाता हूं. इस प्रकार तू मेरे संकल्प के अधीन होगी और मेरे चित्त को प्राप्त करेगी. (२)

यासां नाभिरारेहणं हृदि संवननं कृतम्.
गावो घृतस्य मातरोऽमूं सं वानयन्तु मे (३)

जिन के अंग आनंद प्राप्ति के साधन होते हैं और जिन के हृदय में विधाता ने वशीकरण की शक्ति प्रदान की है; घी, दूध देने वाली गाएं मेरे ऐसे अधिकार में रहें. (३)

सूक्त दसवां

देवता—अग्नि, वायु

पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्योऽग्नयेऽधिपतये स्वाहा (१)

पृथ्वी के लिए, शब्द सुनने के साधन कान के लिए, भूमि पर स्थित वृक्षों के अधिष्ठाता देवों के लिए तथा धरती के स्वामी अग्नि के लिए हव्य शोभन आहुति वाला हो. (१)

प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो वायवेऽधिपतये स्वाहा (२)

वायु रूप प्राण के लिए, वायु से संबंधित अंतरिक्ष के लिए, पक्षियों के लिए तथा वायु के अधिपति देवता के लिए यह हव्य शोभन आहुति वाला हो. (२)

दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायाधिपतये स्वाहा (३)

आकाश के लिए, नेत्र के लिए, नक्षत्र के लिए तथा द्युलोक के अधिपति सूर्य के लिए यह हव्य शोभन आहुति वाला हो. (३)

सूक्त ग्यारहवां — देवता—वीर्य

शमीमश्वत्थ आरूढस्तत्र पुंसुवनं कृतम्.
तद् वै पुत्रस्य वेदनं तत् स्त्रीष्वा भरामसि (१)

शमी वृक्ष स्त्री है और अश्वत्थ अर्थात पीपल का वृक्ष पुरुष है. अग्निरूप पुत्र उत्पन्न करने के लिए वह शमी वृक्ष पर आरूढ़ है. उसी पीपल वृक्ष से अरणियां बनाई जाती हैं, जो अग्नि उत्पादन के काम आती हैं. इस प्रकार के अश्वत्थ पर पुंसवन किया गया है. वह पुंसवन अर्थात पुत्र प्राप्ति कर्म हम स्त्रियों में करते हैं. (१)

पुंसि वै रेतो भवति तत् स्त्रियामनु षिच्यते.
तद् वै पुत्रस्य वेदनं तत् प्रजापतिरब्रवीत् (२)

पुरुषमय बीजरूप वीर्य होता है. वह गर्भाधान कर्म के द्वारा नारी के गर्भाशय में डाला जाता है. वही पुत्र प्राप्ति का साधन बनता है. यह पुंसवन कर्म प्रजापति ने बताया है. (२)

प्रजापतिरनुमतिः सिनीवाल्य चीक्लृपत्.
स्त्रैषूयमन्यत्र दधत् पुमांसमु दधदिह (३)

प्रजापति ने, अमावस्या की देवी सिनीवाली ने और पूर्णमासी के देवता ने गर्भाशय में स्थित वीर्य के अंश से हाथ, पैर आदि की रचना की है. उन्होंने स्त्री के प्रसव संबंधी निमित्त अर्थात गर्भ को हम से पृथक अर्थात नारी में पुत्र रूपी संतान को एक वर्ष के पश्चात जन्म लेने योग्य बनाया. (३)

सूक्त बारहवां — देवता—विष निवारण

परि द्यामिव सूर्योऽहीनां जनिमागमम्.
रात्री जगदिवान्यद्धंसात् तेना ते वारये विषम् (१)

जिस प्रकार सूर्य अंतरिक्ष में व्याप्त होता है, उसी प्रकार मैं सर्पों के जन्म को जानता हूं. जिस प्रकार रात्रि अपने अंधकार से सारे संसार को व्याप्त कर लेती है, उसी प्रकार शरीर में व्याप्त विष को मैं ओषधि से दूर करता हूं. (१)

यद् ब्रह्मभिर्यदृषिभिर्यद् देवैर्विदितं पुरा.
यद् भूतं भव्यमासन्वत् तेना ते वारये विषम् (२)

जिस ओषधि को प्राचीन काल में मंत्रों ने, अगस्त्य, वसिष्ठ, आदि ऋषियों तथा इंद्र आदि देवों ने जाना है, उन भूत, वर्तमान और भविष्यकाल की ओषधियों से मैं तेरे शरीर में स्थित विष का निवारण करता हूं. (२)

मध्वा पृञ्चे नद्य१: पर्वता गिरयो मधु.
मधु परुष्णी शीपाला शमास्ने अस्तु शं हृदे (३)

गंगा आदि नदियां, हिमालय आदि विशाल पर्वत और छोटे पर्वत तेरे शरीर में विष नाशक अमृत सींचें. शैवाल से युक्त परुष्णी नाम की नदी तेरे शरीर पर अमृत चुपड़े. यह विषनाशक अमृत तेरे और मेरे हृदय के लिए सुखकारी हो. (३)

सूक्त तेरहवां

देवता—मृत्यु

नमो देववधेभ्यो नमो राजवधेभ्य:.
अथो ये विश्यानां वधास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते (१)

इंद्र आदि के हनन साधन वज्र आदि को नमस्कार है, जिस से वे हमारा त्याग कर दें. राजा से संबंधित आयुधों को नमस्कार है. हे मृत्यु! वैश्य जातियों के वध के जो साधन हैं, उन से बचाने के लिए हम तुझे नमस्कार करते हैं. (१)

नमस्ते अधिवाकाय परावाकाय ते नम:.
सुमत्यै मृत्यो ते नमो दुर्मत्यै त इदं नम: (२)

हे मृत्यु! तेरा पक्षपात कर के वचन बोलने वाले दूत को तथा पराभव का वर्णन करने वाले के लिए नमस्कार है. हे मृत्यु! तेरी अनुग्रहकारिणी बुद्धि के लिए एवं निग्रह करने वाली दुर्बुद्धि के लिए नमस्कार है. (२)

नमस्ते यातुधानेभ्यो नमस्ते भेषजेभ्य:.
नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं नम: (३)

हे मृत्यु! तुझ से संबंधित राक्षसों को नमस्कार है, जो लोगों को पीड़ा पहुंचाते हैं. तुझ से रक्षा करने वाली ओषधियों को नमस्कार है. तुझ से संबंधित मूल पुरुषों तथा शापानुग्रह समर्थ ब्राह्मणों के लिए नमस्कार है. (३)

सूक्त चौदहवां

देवता—बलास

अस्थिस्रंसं परुस्रंसमास्थितं हृदयामयम्.
बलासं सर्वं नाशयाङ्गेष्ठा यश्च पर्वसु (१)

मंत्र की शक्ति से हड्डियों को कंपित करने वाले, शरीर के जोड़ों को ढीला

करने वाले तथा सारे शरीर में व्याप्त श्लेष्मा द्वारा किए हुए हृदय रोग की शक्ति का विनाश करें. वह रोग खांसी और सांस से संबंधित है. (१)

निर्बलासं बलासिनः क्षिणोमि मुष्करं यथा.
छिनद्म्यस्य बन्धनं मूलमुर्वार्वा इव (२)

जिस प्रकार सरोवर से कमल उखाड़ा जाता है, उसी प्रकार मैं इस रोगी पुरुष के श्लेष्मा रोग को जड़ से नष्ट करता हूं. जिस प्रकार पकी हुई ककड़ी अपने नाल से अपनेआप अलग हो जाती है, उसी प्रकार मैं इस रोगी के श्लेष्मा रोग का बंधन तोड़ता हूं. (२)

निर्बलासेतः प्र पताशुङ्गः शिशुको यथा.
अथो इट इव हायनोऽप द्राह्यवीरहा (३)

हे श्लेष्मा रोग! जिस प्रकार भागा हुआ शुंशुकि हरिण दूर चला जाता है तथा गया हुआ संवत्सर फिर वापस नहीं आया, उसी प्रकार हमारे वीरों के विनाशकारी तू इस रोगी को छोड़ कर बुरी दिशा में चला जा. (३)

सूक्त पंद्रहवां — देवता—वनस्पति

उत्तमो अस्योषधीनां तव वृक्षा उपस्तयः.
उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्मां अभिदासति (१)

हे सोमपर्ण से उत्पन्न पलाश वृक्ष! तू वनस्पतियों में उत्तम है. सभी वृक्ष तेरे उपासक अर्थात तुझ से निम्न स्थिति वाले हैं. तेरी कृपा से हमारा वह शत्रु हमारा उपासक बने जो हमें नष्ट करना चाहता है. (१)

सबन्धुश्चासबन्धुश्च यो अस्मां अभिदासति.
तेषां सा वृक्षाणामिवाहं भूयासमुत्तमः (२)

हमारे गोत्र वाला अथवा हमारे गोत्र से भिन्न जो शत्रु हमें क्षीण करना चाहता है, उन सब में मैं उसी प्रकार उत्तम बनूं, जिस प्रकार तू सभी वृक्षों में श्रेष्ठ है. (२)

यथा सोम ओषधीनामुत्तमो हविषां कृतः.
तलाशा वृक्षाणामिवाहं भूयासमुत्तमः (३)

जिस प्रकार पुरोडाश के प्रयोग के लिए सोमलता सभी लताओं और वनस्पतियों में श्रेष्ठ मानी जाती है, उसी प्रकार मैं अपने गोत्र वालों में श्रेष्ठ बनूं. (३)

सूक्त सोलहवां — देवता—मंत्र में उक्त

आबयो अनाबयो रसस्त उग्र आबयो. आ ते करम्भमद्मसि (१)

हे रोग निवृत्ति के लिए खाई जाने वाली सरसों एवं न खाए जाने वाले सरसों

के तने! तेरा रस अर्थात तेल रोग निवारण में सक्षम है. हे सरसों! हम तेरा करम्भ (साग) मंत्रों से युक्त कर के खाते हैं. (१)

विह्लो नाम ते पिता मदावती नाम ते माता.
स हि न त्वमसि यस्त्वमात्मानमावय: (२)

हे सरसों के साग! तेरा पिता विहह्ल तथा माता मदावती नाम की है. तू अपना साग मनुष्यों को खाने के लिए दे देती है, इसलिए तू अपने मातापिता के समान नहीं रहती. (२)

तौविलिकेऽवेलयावायमैलब ऐलयीत्. बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्चापेहि निराल (३)

हे तौविलिक नाम की पिशाची! तू रोगों का कारण है. तू हमारे रोग को पराजित कर के लौटा दे. तेरे द्वारा होने वाला ऐलय नाम का नेत्र रोग दूर चला जाए. हे वभ्रु, वभ्रुकण तथा निराल नामक रोग! तुम इस पुरुष के शरीर से भाग जाओ. (३)

अलसालासि पूर्वा सिलाञ्जालास्युत्तरा. नीलागलसाला (४)

पौधों की मंजरी अलसला प्रथम उत्पन्न होने के कारण पूर्व है और बाद में उत्पन्न होने के कारण सिलांजला उत्तरा है. नीलांगलसाला इन के मध्य वाली है. (४)

सूक्त सत्रहवां

देवता—गर्भ बृंहण

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे.
एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे (१)

हे नारी! जिस प्रकार विशाल पृथ्वी प्राणियों के शरीर को धारण करती है, उसी प्रकार तेरा गर्भ भी प्रसव के समय जन्म लेने के लिए स्थित रहे. (१)

यथेयं पृथिवी मही दाधारेमान् वनस्पतीन्.
एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे (२)

यह विशाल पृथ्वी जिस प्रकार वृक्षों को धारण करती है, उसी प्रकार तेरा गर्भ भी प्रसव के समय जन्म लेने के हेतु स्थित रहे. (२)

यथेयं पृथिवी मही दाधार पर्वतान् गिरीन्.
एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे (३)

हे नारी! जिस प्रकार यह विशाल पृथ्वी पर्वतों को धारण करती है, उसी प्रकार तेरा गर्भ भी प्रसव के समय जन्म लेने के लिए स्थित रहे. (३)

यथेयं पृथिवी मही दाधार विष्ठितं जगत्.
एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे (४)

हे नारी! यह विशाल पृथ्वी जिस प्रकार चराचर जगत को धारण करती है. उसी प्रकार तेरा गर्भ भी प्रसव के समय जन्म लेने के लिए स्थित रहे. (४)

सूक्त अठारहवां देवता—ईर्ष्या विनाशन

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापराम्.
अग्निं हृदय्यं१ शोकं तं ते निर्वापयामसि (१)

हे ईर्ष्या करने वाले पुरुष! तेरी ईर्ष्यापूर्ण मति यह है कि इस स्त्री को कोई देख न ले. इस मति को शांत करते हुए हम तेरे हृदय विदारक शोक एवं क्रोध को शांत करते हैं. (१)

यथा भूमिर्मृतमना मृतान्मृतमनस्तरा. यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्योर्मृतं मनः (२)

सब प्राणियों से अधिष्ठित पृथ्वी शांत मन वाली और सब के शरीर से भी उदात्त मन वाली होती है. जिस प्रकार मृत पुरुष का मन ईर्ष्या रहित होता है, उसी प्रकार स्त्री विषयक ईर्ष्यायुक्त पुरुष का मन भी शांत हो जाए. (२)

अदो यत् ते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम्.
ततस्त ईर्ष्यां मुञ्चामि निरूष्माणं दृतेरिव (३)

हे ईर्ष्याग्रस्त पुरुष! लोहार जिस प्रकार भस्त्रा अर्थात धोंकनी से सांस बाहर निकालता है, वैसे ही मैं तेरे हृदय से ईर्ष्या दूर करता हूं. (३)

सूक्त उन्नीसवां देवता—मंत्र में उक्त

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया.
पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा (१)

देवगण मुझे पवित्र करें. मनुष्य मुझे बुद्धि अथवा कर्म के द्वारा पवित्र करें. सभी प्राणी मुझे पवित्र करें और अंतरिक्ष में विचरण करने वाली वायु मुझे पवित्र करे. (१)

पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे. अथो अरिष्टतातये (२)

निचोड़ा जाता हुआ सोम मुझे यज्ञ कर्म के लिए, बल प्राप्ति के लिए, जीवन के लिए तथा अहिंसा करने के लिए पवित्र करे. (२)

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च. अस्मान् पुनीहि चक्षसे (३)

हे सब के प्रेरक सविता देव! तुम्हारा तेज पवित्र करने का साधन है. अपने तेज और प्रेरणा से हमें इहलोक और परलोक के सुख के साधन यज्ञ के लिए शुद्ध करो. (३)

सूक्त बीसवां

देवता—यक्ष्मा नाशक

अग्नेरिवास्य दहत एति शुष्मिण उतेव मत्तो विलपन्नपायति.
अन्यमस्मदिच्छतु कं चिदव्रतस्तपुर्वधाय नमो अस्तु तक्मने (१)

गीले और सूखे सब को जलाने वाली दावाग्नि के समान अंगों को जलाने वाले इस ज्वर का दाह सारे शरीर में व्याप्त है. उस समय व्यक्ति उन्मत्त के समान विलाप करता हुआ इस लोक से चला जाता है. इस प्रकार का प्रबल पित्त ज्वर हमें त्याग कर किसी चरित्रहीन पुरुष के पास चला जाए. (१)

नमो रुद्राय नमो अस्तु तक्मने नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते.
नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः (२)

ज्वर के अभिमानी देव रुद्र के लिए नमस्कार है. ज्वर के लिए नमस्कार है. दीप्तिशाली एवं स्वामी वरुण के लिए नमस्कार है. द्युलोक तथा पृथ्वी के लिए नमस्कार है. पृथ्वी पर उत्पन्न ओषधियों को नमस्कार है. (२)

अयं यो अभिशोचयिष्णुर्विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि.
तस्मै तेऽरुणाय बभ्रवे नमः कृणोमि वन्याय तक्मने (३)

सभी ओर से पूरे शरीर को शोक युक्त करता हुआ, जो यह पित्त ज्वर है, वह सभी प्राणियों का रक्त दूषित कर के उन्हें हलदी के समान पीला बना देता है. उस रक्त वर्ण एवं पीत वर्ण तथा सेवा करने योग्य ज्वर को नमस्कार है. (३)

सूक्त इक्कीसवां

देवता—चंद्रमा

इमा यास्तिस्रः पृथिवीस्तासां ह भूमिरुत्तमा.
तासामधि त्वचो अहं भेषजं समु जग्रभम् (१)

ये जो पृथ्वी आदि तीन लोक हैं, उन में यह पृथ्वी उत्तम है, जिस पर हम स्थित हैं. पृथ्वी की त्वचा के समान ऊपर वर्तमान जो भूमि है, मैं उस पर उत्पन्न ओषधियों का संग्रह करता हूं. (१)

श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम्.
सोमो भग इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा (२)

हे हरिद्रा! तू अमोघ शक्ति के कारण अन्य भेषजों में उसी प्रकार प्रशंसनीय है तथा वीरुधों में मुख्य है, जैसे रात्रि और दिन के काल विभाग के कारण चंद्रमा एवं सूर्य मुख्य हैं. (२)

रेवतीरनाधृषः सिषासवः सिषासथ. उत स्थ केशदृंहणीरथो ह केशवर्धनीः (३)

हे धनवती ओषधियो! तुम किसी के द्वारा हिंसित नहीं हो. तुम आरोग्य देने के

लिए इच्छुक हो, इसलिए मुझे आरोग्य प्रदान करो. तुम केशों को दृढ़ बनाने वाली हो, इसलिए मेरे केशों को दृढ़ करो. (३)

सूक्त बाईसवां देवता—आदित्य रश्मि, मरुत

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत् पतन्ति.
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्यादिद् घृतेन पृथिवीं व्यू दुः (१)

कृष्ण वर्ण अंतरिक्ष को पा कर सूर्य की किरणें पृथ्वी के पदार्थों का रस ग्रहण करती हुई द्युलोक में पहुंच जाती हैं. वे सूर्य किरणें जल को सूर्य मंडल से वृष्टि के रूप में लाती हैं और बाद में धरती को जल से गीला कर देती हैं. (१)

पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः.
ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु (२)

हे मरुद्गण! स्वर्ण से बने आभूषण वक्ष स्थल पर धारण कर के तुम जब चलते हो तो जलों को रसमय और ओषधियों को सुखकारी बनाते हो. हे नेता मरुद्गण! तुम जहां पर वर्षा का जल गिराते हो, उस देश में बल कारक अन्न और बुद्धियुक्त प्रजा का पोषण करो. (२)

उदप्रुतो मरुतस्तां इयर्त वृष्टिर्या विश्वा निवतस्पृणाति.
एजाति ग्लहा कन्येव तुन्नैरुं तुन्दाना पत्येव जाया (३)

हे मरुद्गण! तुम जल बरसाने वाले उन मेघों को प्रेरित करो, जिन से संबंधित वर्षा सभी फसलों को और सरिताओं को पुष्ट करती है. जिस प्रकार दरिद्र मातापिता अपनी कन्या को देख कर दुखी होते हैं, मेघ उसी प्रकार अपनी गर्जना से लोगों को भयभीत और कंपित करते हैं. पत्नी जिस प्रकार पति से बातचीत करती हुई उसे अन्न आदि प्रदान करती है, मेघ गर्जन रूपी वाणी उसी प्रकार गमनशील मेघ से बात करती है. (३)

सूक्त तेईसवां देवता—जल

सस्रुषीस्तदपसो दिवा नक्तं च सस्रुषीः. वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरुप ह्वये (१)

उत्तम कर्म करने वाला मैं सभी प्राणियों के जीवन का रूप प्राप्त करने वाले, जगत के रक्षक एवं सदैव बहने वाले जलों को अपने समीप बुलाता हूं. (१)

ओता आपः कर्मण्या मुञ्चन्त्वितः प्रणीतये. सद्य कृण्वन्त्वेतवे (२)

सदैव बहने वाले, लौकिक और वैदिक कर्मों के साधन जल हमें उत्तम फल शीघ्र पाने के लिए सभी पापों से बचाएं. (२)

देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः. शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः (३)

प्रकाशित होने वाले एवं सब के प्रेरक सूर्य की प्रेरणा होने पर मनुष्य लौकिक और वैदिक कर्म करे. जल हमारे लिए कल्याणकारी हों और ओषधियां हमारे पापों को शांत करें. (३)

सूक्त चौबीसवां देवता—जल

हिमवतः प्रस्रवन्ति सिन्धौ समह संगमः.
आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृद्द्योतभेषजम् (१)

पाप नाशक गंगा आदि नदियों का जल हिमालय से निकलता है और सागर में मिलता है. इस प्रकार का दिव्य जल हृदय की जलन मिटाने वाली ओषधियां प्रदान करे. (१)

यन्मे अक्ष्योरादिद्योत पार्ष्ण्योः प्रपदोश्च यत्.
आपस्तत् सर्वं निष्करन् भिषजां सुभिषक्तमाः (२)

जो रोग मेरी आंखों को व्यथित करते हैं, जो मेरे घुटनों और जांघों में आश्रय लेते हैं, व्याधि विनाशकों में कुशल दिव्य जल उन सब को नष्ट करें. (२)

सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्य१ स्थन.
दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै (३)

हे जलो! सागर तुम्हारा पति है और तुम सागर रूपी राजा की पत्नियां हो. तुम सब नदी रूप हो जाओ. तुम सब मुझे उस रोग को दूर करने की ओषधि दो, जिस से मैं निरोग हो सकूं. (३)

सूक्त पच्चीसवां देवता—गंडमालाविनाशन

पञ्च च याः पञ्चाशच्च संयन्ति मन्या अभि.
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव (१)

गले के ऊपरी भाग में स्थित पचपन प्रकार की गंड मालाएं गले के ऊपरी भाग की धमनियों को व्याप्त करती हैं. वे सब इस प्रकार नष्ट हो जाएं, जिस प्रकार पतिव्रता को पा कर सभी दोष नष्ट हो जाते हैं. (१)

सप्त च याः सप्ततिश्च संयन्ति ग्रैव्या अभि.
इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव (२)

गरदन की नसों में स्थित सतत्तर प्रकार की गंड मालाएं गरदन की धमनियों को व्याप्त करती हैं. वे सब इस प्रकार नष्ट हो जाएं, जिस प्रकार पतिव्रता को पा कर सभी दोष नष्ट हो जाते हैं. (२)

नव च या नवतिश्च संयन्ति स्कन्ध्या अभि.

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव (३)

कंधों की नसों में स्थित निन्यानवे प्रकार की गंडमालाएं कंधों की धमनियों को व्याप्त करती हैं. वे सब इस प्रकार नष्ट हो जाएं, जिस प्रकार पतिव्रता को पा कर सभी दोष नष्ट हो जाते हैं. (३)

सूक्त छब्बीसवां — देवता—पाप्मा

अव मा पाप्मन्त्सृज वशी सन् मृडयासि नः.
आ मा भद्रस्य लोके पाप्मन् धेह्यविह्रुतम् (१)

हे पाप के अभिमानी देव! मुझे छोड़ दो. तुम सब को वश में करने वाले हो. तुम मुझे सुख दो. हे पाप्मा! पीड़ारहित मुझ को पुण्य के फल के रूप में प्राप्त होने वाले लोक में स्थापित करो. (१)

यो नः पाप्मन् न जहासि तमु त्वा जहिमो वयम्.
पथामनु व्यावर्तनेऽन्यं पाप्मानु पद्यताम् (२)

हे पाप्मा! यदि मुझे नहीं छोड़ोगे तो मैं इस अनुष्ठान द्वारा तुम्हें बलपूर्वक चार मार्गों के संगम रूप चौराहे पर छोड़ूंगा. वहां छोड़ा हुआ पाप हमारे शत्रुओं में प्रवेश करे. (२)

अन्यत्रास्मन्न्युच्यतु सहस्राक्षो अमर्त्यः.
यं द्वेषाम तमृच्छतु यमु द्विष्मस्तमिज्जहि (३)

इंद्र के समान अमर रहने वाला एवं बली पाप उसी को प्राप्त हो, जिस से हम द्वेष करते हैं. हे पाप! जो हमारा शत्रु है, तू उसी के पास जा. (३)

सूक्त सत्ताईसवां — देवता—यम

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम.
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे (१)

हे देवो! पाप देवता द्वारा भेजा गया दूत कबूतर हम को पीड़ित करने की इच्छा करता हुआ हमारे घर आया है. उसे लौटाने के लिए हम हवि के द्वारा तुम्हारी अर्चना करते हैं. हमारे दुपायों अर्थात उत्तराधिकारियों और चौपाओं अर्थात पशुओं का कल्याण हो. (१)

शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहं नः.
अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु (२)

हे देवो! पाप देवता द्वारा भेजा हुआ कबूतर हमारे लिए सुखकारी हो तथा घरों को पीड़ित न करे, क्योंकि यह अनपराधक है. इस के लिए मेधावी अग्नि हमारे हवि को स्वीकार करें. उस की कृपा से पंखों वाला कबूतर नाम का

आयुध हमें छोड़ दे. (२)

हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मानाष्ट्री पदं कृणुते अग्निधाने.
शिवो गोभ्य उत पुरुषेभ्यो नो अस्तु मा नो देवा इह हिंसीत् कपोतः (३)

पंखों वाला आयुध अर्थात कबूतर हमें न मारे. वह दावाग्नि से व्याप्त वन में चला जाए. हे देवो! वह कबूतर हमारी गायों और पुरुषों को सुख देने वाला हो. वह कबूतर हमारी हिंसा न करे. (३)

सूक्त अट्ठाईसवां देवता—यम

ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदमिषं मदन्तः परि गां नयामः.
संलोभयन्तो दुरिता पदानि हित्वा न ऊर्जं प्र पदात् पथिष्ठः (१)

हे देवो! इस मंत्र के द्वारा कबूतर को हमारे घर से दूर जाने के लिए प्रेरित करो. हम अन्न को पा कर तृप्त होते हुए धरती पर गायों को सभी ओर चराएं. हम कबूतर के पंजों के चिह्नों को भली प्रकार धोएं और वह कबूतर हमारी पाकशाला के अन्न को त्याग कर पक्षियों में श्रेष्ठ हो तथा उड़ जाए. (१)

परीमेऽग्निमर्षत परीमे गामनेषत.
देवेष्वक्रत श्रवः क इमां आ दधर्षति (२)

हे ऋत्विज! लोग कबूतर के प्रवेश के दोष की शांति के लिए अग्नि को मेरे घर में ले आए हैं और घर में गाय को सभी ओर घुमा रहे हैं. इन्होंने अग्नि आदि देवों को हवि रूप में अर्पित किया है. अब हमारे पुरुषों को कौन पराजित कर सकता है. (२)

यः प्रथमः प्रवतमाससाद बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानः.
योऽस्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदस्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे (३)

यह आज मरने योग्य है, यह कल मरने योग्य है, इस प्रकार की गणना करते हुए देवों में मुख्य यमराज ने उत्तम मार्ग प्राप्त किया है. वे यम इस यजमान के दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं. मृत्यु को प्रेरित करने वाले उन यम को नमस्कार है. (३)

सूक्त उनतीसवां देवता—यम

अमून् हेतिः पतत्रिणी न्येतु यदुलूको वदति मोघमेतत्.
यद् वा कपोतः पदमग्नौ कृणोति (१)

यह पंखों वाला आयुध हमारे दूरस्थ शत्रुओं के पास जाए. यह उल्लू जो कहता है, वह असत्य हो. कबूतर ने अशुभ की सूचना के लिए जो हमारे चूल्हे की अग्नि के समीप पंजे का चिह्न बनाया है, वह भी प्रभावहीन हो जाए. (१)

यौ ते दूतौ निर्ऋत इदमेतोऽप्रहितौ प्रहितौ वा गृहं नः.

कपोतोलूकाभ्यामपदं तदस्तु (२)

हे पाप देवता निर्ऋति! तेरे द्वारा भेजे हुए जो कबूतर और उल्लू हैं. वे मेरे घर में आ कर भी आश्रय न पा सकें. (२)

अवैरहत्यायेदमा पपत्यात् सुवीरताया इदमा ससद्यात्.
पराङेव परा वद पराचीमनु संवतम्.
यथा यमस्य त्वा गृहेऽरसं प्रतिचाकशानाभूकं प्रतिचाकशान् (३)

कबूतर और उल्लू के आने का जो अपशकुन है, वह हमारे वीरों की हिंसा न करे तथा हमारे वीरों के सद्भाव के निमित्त वह अपशकुन दूर चला जाए. हे यम के दूत कबूतर! तेरे स्वामी के घर में प्राणी जिस प्रकार तुझे प्रभावहीन समझते हैं, उसी प्रकार तुझे हम भी देखें. (३)

सूक्त तीसवां देवता—शमी

देवा इमं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्यामधि मणावचर्कृषुः.
इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः (१)

देवों ने सरस्वती नदी के समीप मनुष्यों को शहद से युक्त जौ दिए. उस समय जोतने से भूमि में अन्न उत्पन्न करने के लिए इंद्र हल के स्वामी और शोभन दान वाले मरुत किसान बने थे. (१)

यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो येनाभिहस्यं पुरुषं कृणोषि.
आरात्त्वदन्या वनानि वृक्षि त्वं शमि शतवल्शा वि रोह (२)

हे शमी नामक वृक्ष! तेरा जो मद मन चाहे केशों को उत्पन्न करने वाला और वृद्धि करने वाला है तथा जिस के द्वारा तुम पुरुष को सभी प्रकार प्रसन्न करते हो, मैं भी तुम से दूर स्थित वनों को काटता हूं. हे शमी! तू सौ शाखाओं वाला हो कर बढ़े. (२)

बृहत्पलाशे सुभगे वर्षवृद्ध ऋतावरि.
मातेव पुत्रेभ्यो मृड केशेभ्यः शमि (३)

हे बड़ेबड़े पत्तों वाली, केवल वर्षा के जल से बढ़ने वाली एवं सौभाग्य सूचक शमी! माता जिस प्रकार पुत्रों को बढ़ाती है, तू उसी प्रकार हमारे केशों की वृद्धि कर. (३)

सूक्त इकतीसवां देवता—गौ

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः. पितरं च प्रयन्त्स्वः (१)

ये अगमनशील और तेजस्वी सूर्य उदयाचल पर पहुंच कर पूर्व दिशा में दिखाई दे रहे हैं और अपनी किरणों से सभी प्राणियों की माता भूमि को व्याप्त कर रहे हैं.

इन्होंने स्वर्ग और अंतरिक्ष को ढक लिया है. ये सूर्य वर्षा का जल देने के कारण गौ कहे जाते हैं. (१)

अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः. व्यख्यन्महिषः स्वः (२)

प्राण वायु ग्रहण करने के पश्चात अपान वायु छोड़ते हुए इस प्राणि समूह के शरीर में सूर्य की प्रभा वर्तमान है. वह महान सूर्य स्वर्ग तथा सभी ऊपर वाले लोकों को प्रकाशित करता है. (२)

त्रिंशद् धामा वि राजति वाक् पतङ्गो अशिश्रियत्. प्रति वस्तोरहर्द्युभिः (३)

दिवस एवं रात के अवयव तीस मुहूर्त तेज के स्थान हैं और इस सूर्य की चमक से विराजमान रहते हैं. तीनों वेदों के रूप वाली वाणी भी सूर्य के आश्रय में ही रहती है. (३)

सूक्त बत्तीसवां

देवता—अग्नि

अन्तर्दावे जुहुता स्वे३तद् यातुधानक्षयणं घृतेन.
आराद् रक्षांसि प्रति दह त्वमग्ने न नो गृहाणामुप तीतपासि (१)

हे ऋत्विजो! राक्षसों का विनाश करने वाले इस हवि को घी के साथ अग्नि में हवन करो. हे अग्नि! उपद्रव करने वाले इन राक्षसों को भस्म करो तथा हमारे घरों को संताप युक्त मत करो. (१)

रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत पिशाचाः पृष्टीर्वोऽपि शृणातु यातुधानाः.
वीरुद् वो विश्वतोवीर्या यमेन समजीगमत् (२)

हे पिशाचो! तुम्हारी गरदन को रुद्र देव काटें. हे यातुधानो! तुम्हारी पीठ की हड्डियों का वह ही विनाश करें. सभी प्रकार की शक्ति वाली ओषधि तुम यातुधानों को मृत्यु से मिला दे. (२)

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्त्रिणो नुदतं प्रतीचः.
मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम् (३)

हे मित्र और वरुण! इस देश में हमें भय नहीं रहे. तुम अपने तेज से मानव भक्षी राक्षसों को हम से पराङ्मुख करो. दूर भागे हुए वे मुझ ज्ञानी को प्राप्त न करें तथा मेरी आवास भूमि को प्राप्त न कर सकें. वे एक दूसरे पर प्रहार करते हुए मृत्यु को प्राप्त करें. (३)

सूक्त तेतीसवां

देवता—इंद्र

यस्येदमा रजो युजस्तुजे जना वनं स्वः. इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् (१)

हे मनुष्यो! जिस इंद्र का प्रसन्नताकारक प्रकाश शत्रु विनाश के लिए तत्पर करता है, उस इंद्र के रमणीय एवं सेवा के योग्य तेज को तुम ग्रहण करो. (१)

नाधृष आ दधृषते धृषाणो धृषितः शवः.
पुरा यथा व्यथिः श्रव इन्द्रस्य नाधृषे शवः (२)

वह इंद्र दूसरों से तिरस्कृत नहीं होते तथा अपना तिरस्कार करने वाले की शक्ति को पराजित करते हैं. प्राचीन काल में वृत्रासुर के वध के समय इंद्र के बल को कोई पराजित नहीं कर सका, उसी प्रकार अब भी उन का बल पराजित न हो. (२)

स नो ददातु तां रयिमुरुं पिशङ्गसंदृशम्. इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा (३)

हे इंद्र! हमें पीले रंग का धन अर्थात स्वर्ण अधिक मात्रा में प्रदान करो. इंद्र सभी मनुष्यों के स्वामी तथा सभी प्रकार के उत्कर्ष वाले हैं. (३)

सूक्त चौंतीसवां देवता—अग्नि

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्. स नः पर्षदति द्विषः (१)

हे स्तोता! मनुष्यों की कामनाएं पूरी करने वाले तथा राक्षसों के हंता अग्नि की स्तुति करो. वे अग्नि हमें राक्षस, पिशाच आदि से छुड़ाएं. (१)

यो रक्षांसि निजूर्वत्यग्निस्तिग्मेन शोचिषा. स नः पर्षदति द्विषः (२)

जो अग्नि, अपने तीक्ष्ण तेज से राक्षसों का विनाश करते हैं, वह अग्नि हमें राक्षस, पिशाच आदि से बचाएं. (२)

यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते. स नः पर्षदति द्विषः (३)

जो अग्नि अत्यंत दूर देश से जल रहित मरु भूमि में छिप जाते हैं और बहुत सुंदर लगते हैं, वह अग्नि हमें राक्षस, पिशाच आदि से छुड़ाएं. (३)

यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति. स नः पर्षदति द्विषः (४)

जो अग्नि सभी भुवनों को संपूर्ण रूप से देखते हैं और सूर्य रूपी एक साधन से प्रकाशित करते हैं, वह हमें राक्षस, पिशाच आदि से बचाएं. (४)

यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत. स नः पर्षदति द्विषः (५)

इस भूलोक के ऊपर जो अंतरिक्ष है, उस में जो निर्मल सूर्य रूपी अग्नि उत्पन्न हुई थी, वह हमें शत्रुओं से बचाए. (५)

सूक्त पैंतीसवां देवता—वैश्वानर

वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः.

अग्निर्नः सुष्टुतीरुप (१)

सभी मनुष्यों के हितकारी अग्नि हमारी रक्षा के लिए दूर देश से आएं. वह अग्नि हमारी सुंदर स्तुतियों को ग्रहण करें. (१)

वैश्वानरो न आगमदिमं यज्ञं सजूरुप.
अग्निरुक्थेष्वंहसु (२)

सभी मनुष्यों के हितकारी अग्नि हमारे समीप आएं और आ कर हमारे द्वारा की जाती हुई स्तुतियों से प्रसन्न होते हुए इस यज्ञ को स्वीकार करें. (२)

वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाक्लृपत्.
ऐषु द्युम्नं स्वर्यमत् (३)

वैश्वानर अग्नि ने महर्षियों द्वारा किए गए स्तोत्रों और शस्त्रों को समर्थ बनाया है तथा प्रसिद्ध यश एवं अन्न प्राप्त कराया है अथवा इन्हें स्वर्ग प्राप्त कराया है. (३)

सूक्त छत्तीसवां देवता—अग्नि

ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्.
अजस्रं घर्ममीमहे (१)

हम यज्ञात्मक ज्योति के स्वामी एवं सतत दीप्तिशाली वैश्वानर अग्नि की आराधना करते हैं. हम उन से उत्तम फल की याचना करते हैं. (१)

स विश्वा प्रति चाक्लृप ऋतूंरुत् सृजते वशी.
यज्ञस्य वय उत्तिरन् (२)

वैश्वानर अग्नि सभी प्रजाओं को सभी फल देने में समर्थ हैं. स्वतंत्र अग्नि सूर्य के रूप में वसंत आदि ऋतुओं का निर्माण करते हैं. वे यज्ञ का अन्न देवों को प्राप्त कराते हैं. (२)

अग्निः परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य.
सम्राडेको वि राजति (३)

उत्तम स्थानों में अग्नि सम्राट, भूत और भविष्यत काल में कामनापूर्ण करने वाला हो कर विराजता है. (३)

सूक्त सैंतीसवां देवता—चंद्रमा

उप प्रागात् सहस्राक्षो युक्त्वा शपथो रथम्.
शप्तारमन्विच्छन् मम वृक इवाविमतो गृहम् (१)

हजार आंखों वाले इंद्र शाप क्रिया के कर्ता होते हुए अपने रथ में घोड़े जोड़ कर हमारे समीप आएं. जिस प्रकार भेड़ों के स्वामी के घर में भेड़िया जाता है, उसी

प्रकार वह मुझे शाप देने वाले शत्रु को मारें. (१)

परि णो वृङ्ग्धि शपथ ह्रदमग्निरिवा दहन्.
शप्तारमत्र नो जहि दिवो वृक्षमिवाशनि: (२)

हे शपथ! तू हमारा वध मत कर. तू अग्नि के समान हमारे शत्रुओं के कुल को जला. आकाश से गिरा हुआ वज्र जिस प्रकार वृक्ष को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार तू इस देश में हमें शाप देने वाले शत्रु का विनाश कर. (२)

यो न: शपादशपत: शपतो यश्च न: शपात्.
शुने पेष्ट्रमिवावक्षामं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे (३)

जो शत्रु हम शाप न देने वालों को कठोर वचनों के द्वारा शाप दे तथा जो हम शाप देने वालों को शाप दे, उन दोनों को हम इस प्रकार मृत्यु के आगे फेंकते हैं, जैसे कुत्ते के आगे रोटी डाली जाती है. (३)

सूक्त अड़तीसवां देवता—बृहस्पति

सिंहे व्याघ्र उत या पृदाकौ त्विषिरग्नौ ब्राह्मणे सूर्ये या.
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना (१)

सिंह, बाघ और सर्प में जो आक्रमण के रूप में तेज है, अग्नि में दाह के रूप में, ब्राह्मण में शाप के रूप में और सूर्य में ताप के रूप में जो तेज है, उसी सौभाग्यशाली तेज ने इंद्र को जन्म दिया है. वह तेजस्वरूप देवी हमारे तेज से एक होती हुई हमारे समीप आए. (१)

या हस्तिनि द्वीपिनि या हिरण्ये त्विषिरप्सु गोषु या पुरुषेषु.
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना (२)

जो तेज गजेंद्र में बल की अधिकता के रूप में, चीते में हिंसा के रूप में तथा सोने में आह्लाद के रूप में है, जलों में, गायों में और मनुष्यों में जो तेज है, उसी सौभाग्यशाली तेज ने इंद्र को जन्म दिया है. वह तेजस्वरूपा देवी हमारे तेज से एक होती हुई हमारे समीप आए. (२)

रथे अक्षेष्वृषभस्य वाजे वाते पर्जन्ये वरुणस्य शुष्मे.
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना (३)

गमन के साधन रथ में, उस के पहियों में, गर्भाधान करने में समर्थ बैल के शीघ्र गमन में, वायु में, वर्षा करने वाले जल में एवं वरुण के बल में जो तेज है, उसी सौभाग्यशाली तेज ने इंद्र को जन्म दिया है. वह तेजरूपा देवी हमारे तेज से एक होती हुई हमारे समीप आए. (३)

राजन्ये दुन्दुभावायतायामश्वस्य वाजे पुरुषस्य मायौ.
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सा न ऐतु वर्चसा संविदाना (४)

राजकुमार में, बजाई जाती हुई दुंदुभी में, घोड़े के शीघ्र गमन में एवं पुरुष की उच्च घोषणा में जो तेज है, उसी सौभाग्यशाली तेज ने इंद्र को जन्म दिया है. वह तेज रूपी देवी हमारे तेज से एक होती हुई हमारे समीप आए. (४)

सूक्त उनतालीसवां

देवता—बृहस्पति

यशो हविर्वर्धतामिन्द्रजूतं सहस्रवीर्यं सुभृतं सहस्कृतम्.
प्रसर्स्राणमनु दीर्घाय चक्षसे हविष्मन्तं मा वर्धय ज्येष्ठतातये (१)

हमारे द्वारा इंद्र के उद्देश्य से दी हुई अपरिमित सामर्थ्य से युक्त, भलीभांति वर्तमान एवं हजारों को पराजित करने वाले बल को देने वाली हवि की वृद्धि हो. हे इंद्र! उस हवि की वृद्धि के पश्चात मुझ हवि देने वाले यजमान को चिरकाल तक होने वाले दर्शन और श्रेष्ठता के लिए बढ़ाओ. (१)

अच्छा न इन्द्रं यशसं यशोभिर्यशस्विनं नमसाना विधेम.
स नो रास्व राष्ट्रमिन्द्रजूतं तस्य ते रातौ यशसः स्याम (२)

सामने वर्तमान, यश देने वाले एवं अधिक यशस्वी इंद्र को हम नमस्कार आदि के द्वारा पूजते हुए उन की सेवा करते हैं. हे इंद्र! तुम हमें अपने द्वारा प्रेरित राज्य प्रदान करो. तुम्हारे उस दान से हम यशस्वी बनें. (२)

यशा इन्द्रो यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत.
यशा विश्वस्य भूतस्याहमस्मि यशस्तमः (३)

इंद्र, अग्नि और सोम यश की इच्छा करते हुए उत्पन्न हुए. यश का इच्छुक मैं भी समस्त प्राणियों की अपेक्षा अतिशय यशस्वी बनूं. (३)

सूक्त चालीसवां

देवता—इंद्र

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नोऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु.
अभयं नोऽस्तूर्वऽन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाभयं नो अस्तु (१)

हे द्यावा पृथ्वी! तुम्हारी कृपा से हम निर्भय हैं. चंद्रमा एवं सूर्य हमें निर्भय करें. द्यावा और पृथ्वी के मध्य में वर्तमान अंतरिक्ष हमारे लिए अभय करे. हमारे द्वारा सप्त ऋषियों को दिया जाता हुआ हवि हमें अभय देने वाला हो. (१)

अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जं सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु.
अशत्र्विन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः (२)

सूर्यदेव हमारे निवास के गांव में और उस की चारों दिशाओं में अन्न उत्पन्न करें एवं कुशल प्रदान करें. हमारे मित्र इंद्र हमें अभय प्रदान करें तथा राजा का क्रोध हमें त्याग कर हम से दूर चला जाए. (२)

अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात्.
इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि (३)

हे इंद्र! हमारी दक्षिण दिशा को शत्रुरहित करो. हमारी उत्तर दिशा को शत्रुविहीन बनाओ. हमारी पश्चिम और पूर्व दिशाओं को भी शत्रुहीन बनाओ. (३)

सूक्त इकतालीसवां 59 देवता—मन

मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये.
मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम् (१)

हे पुरुष! सुख का अनुभव कराने वाले मन के लिए, ज्ञान के साधन चित्त के लिए, ध्यान के साधन बुद्धि के लिए, स्मृति के साधन संकल्प के लिए, ज्ञान के साधन चेतना के लिए, अतीत की स्मृति के कारण मति के लिए, सुनने से उत्पन्न ज्ञान के लिए एवं चक्षु से उत्पन्न ज्ञान के लिए हम आज्य से सेवा करते हैं. (१)

अपानाय व्यानाय प्राणाय भूरिधायसे.
सरस्वत्या उरुव्यचे विधेम हविषा वयम् (२)

अपान वायु को, व्यान वायु को, प्राण वायु को, प्राणापान व्यान वायुओं को धारण करने वाले प्राणियों की, अत्यधिक व्याप्ति वाली सरस्वती की हम आज्य आदि के द्वारा सेवा करते हैं. (२)

मा नो हासिषुर्ऋषयो दैव्या ये तनूपा ये नस्तन्वस्तनूजाः.
अमर्त्या मर्त्यअभि नः सचध्वमायुर्धत्त प्रतरं जीवसे नः (३)

प्राण के अधिष्ठाता देव एवं दिव्य गुणों वाले सप्त ऋषि हमें नहीं त्यागें. शरीरों के रक्षक ऋषि हमें सभी ओर से प्राप्त हों. वे हमें जीवन के लिए अत्यधिक आयु प्रदान करें. (३)

सूक्त बयालीसवां देवता—मन्यु

अव ज्यामिव धन्वनो मन्युं तनोमि ते हृदः.
यथा संमनसौ भूत्वा सखायाविव सचावहै (१)

हे पुरुष! धनुर्धारी जिस प्रकार धनुष पर चढ़ी हुई डोरी को उतारता है. उसी प्रकार मैं तेरे हृदय से क्रोध को दूर करता हूं. (१)

सखायाविव सचावहा अव मन्युं तनोमि ते.
अधस्ते अश्मनो मन्युमुपास्यामसि यो गुरू (२)

मित्रों के समान हम एकमत हो कर रक्षा कार्य करें. हे क्रुद्ध पुरुष! मैं तेरे क्रोध

को भारी पत्थर के नीचे दबाता हूं. (२)

अभि तिष्ठामि ते मन्युं पार्ष्ण्या प्रपदेन च.
यथावशो न वादिषो मम चित्तमुपायसि (३)

हे वृद्ध पुरुष! मैं तेरे क्रोध को अपने अधीन करने के लिए पैरों के ऊपर और नीचे के भागों से खड़ा होता हूं. जिस प्रकार तुम परवश हो कर मेरा विरोध करने में समर्थ न बनो तथा जिस प्रकार तुम मेरे मन के अनुकूल बनो, मैं वैसा ही उपाय करता हूं. (३)

सूक्त तेंतालीसवां — देवता—मन्युशमन

अयं दर्भो विमन्युकः स्वाय चारणाय च.
मन्योर्विमन्युकस्यायं मन्युशमन उच्यते (१)

यह दर्भ अर्थात कुश अपनी जातियों और शत्रुओं के क्रोध के विनाश का कारण है. यह क्रोध करने वाले शत्रु तथा परमार्थ रूप से क्रोधाविष्ट आत्मीय का क्रोध शांत करने का उपाय कहा जाता है. (१)

अयं यो भूरिमूलःसमुद्रमवतिष्ठति.
दर्भः पृथिव्या उत्थितो मन्युशमन उच्यते (२)

अधिक जड़ों वाला यह कुश अधिक जल वाले भाग में स्थित है. पृथ्वी पर ऊपर की ओर उठा हुआ कुश क्रोध शांत करने वाला बताया जाता है. (२)

वि ते हनव्यां शरणिं वि ते मुख्यां नयामसि.
यथावशो न वादिषो मम चित्तमुपायसि (३)

हे पुरुष! हम तेरी उस ध्वनि को नम्र बनाते हैं, जो क्रोध व्यक्त करने वाली है. हम तेरे मुख की उस ध्वनि को भी शांत बनाते हैं जो क्रोध को उत्पन्न करती है. तात्पर्य यह है कि हम तेरा क्रोध शांत करते हैं. तू हमारे विरोध में बोलने में समर्थ न हो. इस प्रकार हम तेरा मन अपने मन में मिलाते हैं. (३)

सूक्त चवालीसवां — देवता—मंत्र में उक्त

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिव्यस्थाद् विश्वमिदं जगत्.
अस्थुर्वृक्षा ऊर्ध्वस्वप्नास्तिष्ठाद् रोगो अयं तव (१)

हे रोगी पुरुष! जिस प्रकार गृह नक्षत्रों से युक्त द्युलोक में स्थित है, जिस प्रकार सब की आधार बनी हुई पृथ्वी स्थित है, जिस प्रकार यह दिखाई देता हुआ जगत स्थित है, जिस प्रकार खड़े एवं सोने वाले वृक्ष ऊपर की ओर स्थित हैं, उसी प्रकार तेरा यह रक्त बहने का रोग स्थित हो, अर्थात तेरा रक्त प्रवाह रुक जाए. (१)

शतं या भेषजानि ते सहस्रं संगतानि च.
श्रेष्टमास्रावभेषजं वसिष्ठं रोगनाशनम् (२)

हे रोगी पुरुष! जो सैकड़ों अथवा हजारों संख्या वाली ओषधियां रोग शांत करती हैं, यह कर्म उन सब में श्रेष्ठ एवं रक्तस्राव दूर करने वाला है. (२)

रुद्रस्य मूत्रमस्यमृतस्य नाभिः.
विषाणका नाम वा असि पितृणां मूलादुत्थिता वातीकृतनाशनी (३)

हे गाय के सींग से निकले हुए जल! तू रुद्र का मूत्र तथा अमृत का बंधक है. हे गाय के सींग! तू विषाण नाम के रोग को शांति की सूचना देता है. तू पितरों के मूल से उत्पन्न तथा रक्तस्राव के आधार पाप का नाश करने वाला है. (३)

सूक्त पैंतालीसवां देवता—दुःस्वप्न विनाश

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि.
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः (१)

हे पापमय अशक्त मन! तू हम से दूर चला जा. तू अशोभन बातें मुझ तक क्यों लाता है ? तू दूर चला जा. मैं तुझे नहीं चाहता. यहां से दूर जा कर तू घने वृक्षों वाले वन में प्रवेश कर और वहीं रह. मेरा शोभन मन पत्नी, पुत्र आदि से युक्त घर में और गौ आदि पशुओं में संलग्न रहे. (१)

अवशसा निःशसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः.
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे अस्मद् दधातु (२)

सामान्य हिंसा, अत्यधिक हिंसा तथा मुंह फेरने वालों की हिंसा के द्वारा जाग्रत अवस्था में हम जिस बुरे स्वप्न से पीड़ित होते हैं, निद्रावस्था में भी वही बुरा स्वप्न हम को पीड़ित करता है. बुरे स्वप्नों के निमित्त उन सभी अशोभन पापों को अग्नि देव हम से दूर करें. (२)

यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽपि मृषा चरामसि.
प्रचेता न आङ्गिरसो दुरितात् पात्वंहसः (३)

हे इंद्र और ब्रह्मणस्पति! दुख के निमित्त जिस पाप के कारण हम स्वप्न में अत्यधिक निंदनीय आचरण करते हैं, उस दुख देने वाले पाप के आंगिरस मंत्रों के अधिष्ठाता देव वरुण हमारी रक्षा करें. (३)

सूक्त छियालीसवां देवता—दुःस्वप्न विनाश

यो न जीवोऽसि न मृतो देवानाममृतगर्भो ऽसि स्वप्न.
वरुणानी ते माता यमः पितारुर्नामासि (१)

हे स्वप्न! न तुम जीवित हो, न मृत हो. तुम इंद्रियों के अधिष्ठाता अग्नि आदि देवों के अमृत से पूर्ण हो. वरुण की पत्नी तेरी माता और यम तेरे पिता हैं. तेरा नाम दुख देने वाला अशुभ अररु है. (१)

विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रो ऽसि यमस्य करण:. अन्तकोऽसि
मृत्युरसि. तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि (२)

हे स्वप्न के अभिमानी देव! हम तुम्हारे जन्म को जानते हैं. तुम वरुणानी आदि देव पत्नियों के पुत्र एवं यम के साधन हो, इसलिए तुम अंतक और मृत्यु हो. हे स्वप्न! हम तुझे उसी प्रकार जानते हैं. तू बुरे स्वप्न से उत्पन्न दुख से हमारी रक्षा कर. (२)

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति.
एवा दुष्वप्न्यं सर्वं द्विषते सं नयामसि (३)

जैसे गाय के खुर आदि दूषित अंगों को काट कर दूर कर देते हैं, जैसे ऋणी मनुष्य साहूकार को धन देता है, उसी प्रकार बुरे स्वप्न से उत्पन्न सभी भयों को मैं उस मनुष्य को देता हूं जो मुझ से द्वेष करता है. (३)

सूक्त सैंतालीसवां

देवता—अग्नि

अग्नि: प्रात: सवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशंभू:.
स नः पावको द्रविणे दधात्वायुष्मन्त: सहभक्षा: स्याम (१)

सभी प्राणियों का हित करने वाले, जगत के कर्ता एवं सब को सुख देने वाले अग्नि प्रात:सवन नामक सोम यज्ञ में हमारी रक्षा करें. सब को पवित्र करने वाले अग्निदेव हमें यज्ञ के फलस्वरूप धन में स्थापित करें. अग्निदेव की कृपा से हम अपने पुत्र, पौत्र आदि के साथ भोजन करने वाले बनें. (१)

विश्वे देवा मरुत इन्द्रो अस्मानस्मिन् द्वितीये सवने न जह्यु:.
आयुष्मन्त: प्रियमेषां वदन्तो वयं देवानां सुमतौ स्याम (२)

सभी देश, दान आदि गुण वाले उनन्चास मरुत और उन के स्वामी इंद्र माध्याह सवन नामक सोमयाग में हम ऋत्विजों को न छोड़ें. हम उन देवों को प्रसन्न करने वाली स्तुतियां बोलते हुए देवों की अनुग्रह बुद्धि में स्थित हों. (२)

इदं तृतीयं सवनं कवीनामृतेन ये चमसमैरयन्त.
ते सौधन्वना: स्व रानशाना: स्विष्टिं नो अभि वस्यो नयन्तु (३)

तृतीय सवन नाम का यह सोम याग उन ऋभुओं का है, जिन्होंने अपने शिल्प कर्म से चमस की रचना की थी. आंगिरस के पुत्र वे सुधन्वा रथ, चमस आदि बनाने के कारण देवत्व को प्राप्ति हुए हैं. वे ऋभु उत्तम फल का ध्यान कर के हम को यज्ञ

पूर्ति का अधिकारी बनाएं. (३)

सूक्त अड़तालीसवां देवता—मंत्र में बताए गए

श्येनो ऽसि गायत्रच्छन्दा अनु त्वा रभे.
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा (१)

हे बाज के समान शीघ्र गति वाले प्रातः सवन नामक यज्ञ! तेरे स्तोत्र में गायत्री छंद है. मैं तुझे डंडे के समान आधार रूप में ग्रहण करता हूं, इसीलिए तू इस यज्ञ की समाप्ति को मेरे पास ला. मेरा यह हवि उत्तम आहुतियों वाला हो. (१)

ऋभुरसि जगच्छन्दा अनु त्वा रभे.
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा (२)

हे तृतीय सवन वाले यम! तेरी स्तुतियों में जगती छंद का अधिक प्रयोग होने से तेरा नाम जगच्छंद है तथा तू आंगिरस के पुत्र सुधन्वा को प्रसन्न करने के कारण ऋभु कहलाता है. मैं ने तुझे डंडे के समान आधार रूप में ग्रहण किया है, इसलिए तू इस यज्ञ की समाप्ति को मेरे समीप ला. मेरा यह हवि उत्तम आहुतियों वाला हो. (२)

वृषासि त्रिष्टुप्छन्दा अनु त्वा रभे.
स्वस्ति मा सं वहास्य यज्ञस्योदृचि स्वाहा (३)

हे मध्याह्न सवन! तू सेचन समर्थ इंद्र ही है. तेरी स्तुतियों में त्रिष्टुप छंद की अधिकता है, इसीलिए तू त्रिष्टुप छंद कहलाता है. मैं तुझे डंडे के समान आधार रूप में ग्रहण करता हूं, इसीलिए तू इस यज्ञ की समाप्ति को मेरे समीप ला. मेरा यह हवि उत्तम आहुतियों वाला हो. (३)

सूक्त उनन्चासवां देवता—अग्नि

नहि ते अग्ने तन्वः क्रूरमानंश मर्त्यः.
कपिर्बभस्ति तेजनं स्वं जरायु गौरिव (१)

हे अग्नि! तुम्हारे ज्वाला रूप शरीर के तीक्ष्ण तेज को मरणधर्मा पुरुष प्राप्त नहीं कर सकता. ये बंदर के समान चंचल स्वभाव वाली और शरीर के जल को पीने वाली तुम्हारी ज्वालाएं इस देह को उसी प्रकार भस्म कर देती हैं, जिस प्रकार पहली बार बच्चा देने वाली गाय अपनी जेर को खा जाती है. (१)

मेषइव वै सं च वि चोर्वच्यसे यदुत्तरद्रावुपरश्च खादतः.
शीर्ष्णा शिरोऽप्ससाप्सो अर्दयन्नंशून् बभस्ति हरितेभिरासभिः (२)

हे अग्नि! मेढ़ा जिस प्रकार अधिक घास वाले स्थान पर जाता है और घास चरने के पश्चात उस स्थान से अन्यत्र चला जाता है, उसी प्रकार तुम पहले जलाने योग्य

पुरुष शरीर के अंगों से मिलते हो और बाद में उसे जलाने के बाद अन्यत्र चले जाते हो. वन को जलाने वाली दावाग्नि और शव को जलाने वाली शवाग्नि. ये दोनों अग्नियां वृक्ष अथवा शव को भस्म करती हुई अपनी ज्वालाओं से लता आदि को भी जला देती हैं. (२)

सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्याखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः.
नि यन्नियन्त्युपरस्य निष्कृतिं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्रितः (३)

हे अग्नि! तुम्हारी ज्वालाएं बाज पक्षी के समान शीघ्र व्यापक होने वाली हैं. काला हरिण जिस प्रकार अपने निवास स्थान में गति करता है, उसी प्रकार तुम्हारी ज्वालाएं समीप आकर नृत्य करती है. धुआं उत्पन्न करने के कारण तुम्हारी ज्वालाएं मेघ का निर्माण करती हैं. हे अग्नि! तुम्हारी दीप्तियां सूर्य मंडल को पा कर सभी प्राणियों के जीवन के आधार जल को उत्पन्न करती हैं. (३)

सूक्त पचासवां देवता—अश्विनीकुमार

हतं तर्दं समङ्कमाखुमश्विना छिन्तं शिरो अपि पृष्टीः शृणीतम्.
यवान्नेददानपि नह्यतं मुखमथाभयं कृणुतं धान्याय (१)

हे अश्विनीकुमारो ! हिंसक एवं बिल में प्रवेश करने वाले चूहे का विनाश करो. उस का सिर काट डालो तथा उस की पीठ की हड्डी चूरचूर कर दो. चूहा हमारे जौ नहीं खा पाए, इसलिए उस का मुंह बंद कर दो. ऐसा कर के तुम धान्य के लिए अभय करो. (१)

तर्द है पतङ्ग है जभ्य हा उपक्वस.
ब्रह्मेवासंस्थितं हविरनदन्त इमान् यवानहिंसन्तो अपोदित (२)

हे हिंसक चूहो तथा हे पतंगो! तुम उपद्रव करते हो, इसीलिए तुम्हारे विनाश के निमित्त दी गई हवि ब्रह्म के समान प्रभावशील हो. तुम हमारे जौ आदि अन्नों का विनाश न करते हुए इस स्थान से भाग जाओ. (२)

तर्दापते वघापते तृष्टजम्भा आ शृणोत मे.
य आरण्या व्यद्वरा ये के च स्थ व्यद्वरास्तान्त्सर्वाञ्जम्भयामसि (३)

हे हिंसक चूहों एवं पतंगों आदि के स्वामी! तुम तीखे दांतों वाले हो. तुम मेरे इस वचन को सुनो. तुम चाहे जंगल में रहने वाले हो अथवा ग्राम में निवास करने वाले हो, हम अपने इस अनुष्ठान द्वारा तुम्हारा विनाश करते हैं. (३)

सूक्त इक्यावनवां देवता—सोम

वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः. इन्द्रस्य युज्यः सखा (१)

वायु से संबंधित दशापवित्र के द्वारा शोधित सोमरस मुख से चल कर नाभि देश में पहुंचता है. वह इंद्र का योग्य मित्र है. (१)

आपो अस्मान् मातरः सूदयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु.
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि (२)

संसार की माता जलदेवी हमें शुद्ध करे तथा अपने द्रव रूप रस से हमें पवित्र करे, क्योंकि देवता रूप जल स्नान, आचमन एवं प्रक्षेपण आदि करने वाले के सभी पापों को धोते हैं, इसीलिए ऐसे जलों में स्नान कर के मैं पवित्र हो कर यज्ञ कर्म के हेतु उपस्थित होता हूं. (२)

यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरन्ति.
अचित्या चेत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः (३)

हे जलों के स्वामी वरुण देव! मनुष्यगण जो पाप करते हैं तथा हम सब भी अज्ञान के कारण तुम से संबंधित धर्मों के विपरीत जो कार्य करते हैं, उस अज्ञान जनित पाप के कारण हमारी हिंसा मत करो. (३)

सूक्त बावनवां देवता—सूर्य, गाएं

उत् सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वन्.
आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा (१)

सूर्य देव हमारे प्रति उपद्रव करने वाले राक्षस, पिशाच आदि का विनाश करते हुए पूर्व दिशा में उदय होते हैं. सभी प्राणियों के द्वारा देखे गए और हमारे द्वारा अदृश्य राक्षसों आदि के हंता आदित्य उदयाचल पर्वत से उदय होते हैं. (१)

नि गावो गोष्ठे असदन् नि मृगासो अविक्षत.
न्यूर्मयो नदीनां न्य१दृष्टा अलिप्सत (२)

सूर्योदय के कारण राक्षसों के विनाश से इस समय हमारी गाएं निर्भय हो कर गोशाला में बैठी हैं तथा वन के पशु भी अपनेअपने स्थान पर निर्भय स्थित हैं. नदियों की तरंग सुख से उठ रही है. रात्रि में न दिखाई देने वाली प्रजाएं सूर्य के प्रकाश में पूर्णतया देखी जा सकती हैं. (२)

आयुर्ददं विपश्चितं श्रुतां कण्वस्य वीरुधम्.
आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान् नि शमयत् (३)

सौ वर्ष की आयु देने वाली, रोगशांति के उपाय जानने वाली, महर्षि कण्व द्वारा बताई गई ओषधि तथा सभी रोगों का विनाश करने वाली शमी को मैं इस रोगी का रोग मिटाने के लिए ले आया हूं. यह शमी रूप ओषधि दिखाई न देने वाले शरीर के मध्यवर्ती रोगों और राक्षस आदि को शांत करे. (३)

सूक्त तिरेपनवां देवता—पृथ्वी आदि

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु.
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च (१)

पृथ्वी और आकाश मेरे प्रति अनुग्रह वाले बन कर मुझे मनचाहा फल दें. दीप्तिशाली और महान सूर्य दक्षिण दिशा से मेरी रक्षा करें. पितरों से संबंधित एवं स्वधा की अधिष्ठात्री देवी मुझ पर अनुग्रह करें. सोम, अग्नि, वायु सविता और भग मेरी रक्षा करें. (१)

पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु पुनश्चक्षुः पुनरसुर्न ऐतु.
वैश्वानरो नो अदब्धस्तनूपा अन्तस्तिष्ठाति दुरितानि विश्वा (२)

मुख और नासिका द्वारा शरीर में प्रवेश करने वाला प्राण वायु तथा जीवात्मा हमें पुनः प्राप्त हो. चक्षु और जीवन हमें पुनः प्राप्त हों. संसार भर के मनुष्यों के हितैषी, रोग आदि से पराजित न होने वाले एवं शरीर के पालक अग्नि हमारे शरीर में स्थित रहते हैं. वे रोग के कारण होने वाले सभी पापों का विनाश करें. (२)

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन.
त्वष्टा नो अत्र वरीयः कृणोत्वनु नो मार्ष्टु तन्वोऽ यद् विरिष्टम् (३)

हम दीप्ति से तथा देह की स्थिति के आधार रस से युक्त हों. हम शरीर के अंगों — हाथ, पैर आदि से युक्त हों तथा शोभन मन से युक्त हों. त्वष्टा देव हमारे शरीर को शक्ति युक्त बनाएं तथा हमारे शरीर का जो रोग वाला भाग हैं, उसे अपने हाथ से शुद्ध करें. (३)

सूक्त चौअनवां देवता—अग्नि, सोम

इदं तद् युज उत्तरमिन्द्रं शुम्भाम्यष्टये.
अस्य क्षत्रं श्रियं महीं वृष्टिरिव वर्धया तृणम् (१)

सभी देवों में श्रेष्ठ इंद्र को मैं अभीष्ट फल पाने के लिए स्तुति आदि से प्रसन्न करता हूं. हे इंद्र! अधिक वर्षा जिस प्रकार घास की वृद्धि करती है, उसी प्रकार तुम अभिचार से पीड़ित इस पुरुष के बल और पुत्र, पौत्रादि सहित धन की वृद्धि करो. (१)

अस्मै क्षत्रमग्नीषोमावस्मै धारयतं रयिम्.
इमं राष्ट्रस्याभीवर्गे कृणुतं युज उत्तरम् (२)

हे अग्नि और सोम! इस यजमान में बल स्थापित करो और इसे धन प्रदान करो. तुम इस यजमान को जनपद के उच्च वर्ग का सदस्य बनाओ. इस फल को पाने के लिए मैं उत्तम यज्ञ कर्म करता हूं. (२)

सबन्धुश्चासबन्धुश्च यो अस्मां अभिदासति.
सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते (३)

हे इंद्र! मेरे समान गोत्र वाला अथवा मुझ से भिन्न गोत्र वाला जो शत्रु मेरा विनाश करना चाहता है, इन दोनों प्रकार के शत्रुओं को सोम अभिशव करने वाले यजमान के वश में करो. (३)

सूक्त पचपनवां देवता—विश्वेदेव

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति.
तेषामज्यानिं यतमो वहाति तस्मै मा देवाः परि धत्तेह सर्वे (१)

जिन मार्गों से केवल देव ही जाते हैं, वे बहुत से मार्ग पृथ्वी और आकाश के मध्य वर्तमान हैं. उन मार्गों में जो समृद्धि लाने वाला है, मुझे सभी देव उसी मार्ग पर स्थापित करें. (१)

ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षाः स्विते नो दधात.
आ नो गोषु भजता प्रजायां निवात इद् वः शरणे स्याम (२)

ग्रीष्म, हेमंत, शिशिर, बसंत, शरद और वर्षा—इन छः ऋतुओं के अधिष्ठाता देव हमें सरलता से प्राप्त होने वाले धनों में स्थापित करें. हे ऋतुओं के अभिमानी देवो! तुम हमें गायों एवं पुत्र, पौत्र आदि से युक्त करो. हम तुम्हारे ऐसे घर में रहें, जहां सभी दुखों के कारणों का अभाव हो. (२)

इदावत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः.
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम (३)

हे मनुष्यो! इदावत्सर, परिवत्सर और संवत्सर को बारबार नमस्कार कर के प्रसन्न करो. हम यज्ञ के योग्य इदावत्सर आदि के अधिष्ठाता देवों की अनुग्रह बुद्धि में हों तथा उन की कृपा का फल प्राप्त करें. (३)

सूक्त छप्पनवां देवता—विश्वेदेव, रुद्र

मा नो देवा अहिर्वधीत् सतोकान्त्सहपूरुषान्.
संयतं न वि ष्परद् व्यात्तं न सं यमन्नमो देवजनेभ्यः (१)

हे विष को शांत करने वाले देवो! सांप हमें और हमारे पुत्र, पौत्र आदि की एवं सेवकों की हिंसा न करे. हमें काटने के लिए सांप का मुंह न खुले. उस का खुला हुआ मुख मंत्र शक्ति के कारण बंद न हो. सर्प विष शांत करने में समर्थ देवों को नमस्कार है. (१)

नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये. स्वजाय बभ्रवे नमो नमो देवजनेभ्यः (२)

असित, तिरश्चिराजी, बबेरू और स्वज नामक सर्पों को नमस्कार है. सर्प के विष को शमन करने में समर्थ देवों को नमस्कार है. (२)

सं ते हन्मि दता दतः समु ते हन्वा हनू.
सं ते जिह्वया जिह्वां सम्वास्नाह आस्यम् (३)

हे सांप! मैं तेरे ऊपर वाले और नीचे वाले दांतों को मिलाता हूं. मैं तेरी कौड़ी के ऊपर और नीचे वाले भागों को भी मिलाता हूं. मैं तेरी एक जीभ से दूसरी जीभ को मिलाता हूं. मैं तेरे मुख के ऊपर और नीचे वाले भागों को भी मिलाता हूं. (३)

सूक्त सत्तावनवां देवता—रुद्र, भेषज

इदमिद् वा उ भेषजमिदं रुद्रस्य भेषजम्. येनेषुमेकतेजनां शतशल्यामपब्रवत् (१)

यही रोग की ओषधि है और यही अंतकाल में सब को रुलाने वाले रुद्र की ओषधि है. इस एक गांठ वाली ओषधि का प्रयोग सौ कांटों वाले बांस के रूप में लक्ष्य को समीप जान कर किया था. (१)

जालाषेणाभि षिञ्चत जालाषेणोप सिञ्चत.
जालाषमुग्रं भेषजं तेन नो मृड जीवसे (२)

हे परिचय करने वालो! गोमूत्र के फेन से मिले जल से घाव को धोओ. उसी जल से घाव के आसपास वाले भाग को धोओ. गोमूत्र का झाग अत्यधिक प्रभावशाली ओषधि है. इस के द्वारा हमें जीवित रहने के लिए सुखी बनाओ. (२)

शं च नो मयश्च नो मा च नः किं चनाममत्.
क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम् (३)

हे देव! हमारे रोग का शमन हो, हमें सुख प्राप्त हो तथा हमारी प्रजा, पशु आदि रोगग्रस्त न हों. हमारे रोग का कारण जो पाप हैं. उस का विनाश हो. समस्त यज्ञात्मक कर्म और स्थावर जंगम रूप ओषधि हमारे रोग और पाप का विनाश करने वाली हो. (३)

सूक्त अट्ठावनवां देवता—इंद्र आदि

यशसं मेन्द्रो मघवान् कृणोतु यशसं द्यावापृथिवी उभे इमे.
यशसं मा देवः सविता कृणोतु प्रियो दातुर्दक्षिणाया इह स्याम (१)

धन के स्वामी इंद्र मुझे यशस्वी बनाएं. ये दोनों धरती और आकाश मुझे यशस्वी बनाएं. सविता देव मुझे यशस्वी बनाएं. मैं यशस्वी बन कर ग्राम, नगर आदि में दक्षिणा देने वाले का प्रिय बनूं. (१)

यथेन्द्रो द्यावापृथिव्योर्यशस्वान् यथाप ओषधीषु यशस्वतीः.
एवा विश्वेषु देवेषु वयं सर्वेषु यशसः स्याम (२)

इंद्र जिस प्रकार धरती और आकाश के मध्य वर्षा करने के कारण यशस्वी हैं, जिस प्रकार जल धान, जौ आदि की वृद्धि के कारण यशस्वी हैं. उसी प्रकार हम समस्त देवों तथा मनुष्यों में यशस्वी बनें. (२)

यशा इन्द्रो यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत.
यशा विश्वस्य भूतस्याहमस्मि यशस्तमः (३)

इंद्र, अग्नि और सोम यश की इच्छा करते हुए उत्पन्न हुए. यश का इच्छुक मैं भी समस्त प्राणियों की अपेक्षा अधिक यशस्वी बनूं. (३)

सूक्त उनसठवां — देवता—अरुंधती आदि

अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वमरुन्धति. अधेनवे वयसे शर्म यच्छ चतुष्पदे (१)

हे सहदेवी नाम की ओषधि! तुम सब से पहले गाड़ी खींचने में समर्थ मेरे बैलों को सुख दो. इस के पश्चात तुम मेरी दुधारू गायों को सुखी बनाओ. मेरी गायों के अतिरिक्त तुम पांच वर्ष की अवस्था वाले नए बैल, घोड़े आदि चौपायों को भी सुख प्रदान करो. (१)

शर्म यच्छत्वोषधिः सह देवीररुन्धती.
करत्पयस्वन्तं गोष्ठमयक्ष्मां उत पूरुषान् (२)

मनचाहा फल देने वाली सहदेवी नाम की ओषधि मुझे सुख दे. वह मेरी गोशाला को अधिक दूध वाला तथा मेरे पुत्र, सेवक आदि को रोग रहित करे. (२)

विश्वरूपां सुभगामच्छावदामि जीवलाम्.
सा नो रुद्रस्यास्तां हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः (३)

नाना रूपों वाली, सौभाग्य वाली एवं जीवन देने वाली सहदेवी नाम की ओषधि के सामने हो कर मैं प्रार्थना करता हूं. वह हमारे हिंसकों द्वारा हमारी ओर चलाई गई तलवार को हम से और हमारी गायों से दूर ले जाए. (३)

सूक्त साठवां — देवता—अर्यमा

अयमा यात्यर्यमा पुरस्ताद् विषितस्तुपः.
अस्या इच्छन्नग्रुवै पतिमुत जायामजानये (१)

जिन की किरणें विशेष रूप से उजली हैं, वह सूर्य पूर्व दिशा में उग रहे हैं. वह इस पति रहित कन्या को पति और स्त्रीहीन पुरुष को पत्नी प्रदान करने की इच्छा से उदय हो रहे हैं. (१)

अश्रमदियमर्यमन्नन्यासां समनं यती.
अङ्गो न्वर्यमनस्या अन्याः समनमायति (२)

हे अर्यमा देव! अन्य पतिव्रता नारियों ने पतियों को पाने के उपायों के रूप में शांति पाने के लिए जिन कर्मों को किया था, उन्हें पति की अभिलाषा करने वाली यह कन्या कर चुकी है तथा पति को प्राप्त न करने के कारण दुखी है. अन्य स्त्रियां इस पतिकामा की शांति के उपाय कर रही हैं. (२)

धाता दाधार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम्.
धातास्या अग्रुवै पतिं दधातु प्रतिकाम्यम् (३)

संपूर्ण जगत के धारणकर्ता विधाता ने इस पृथ्वी को धारण किया है. उसी ने द्युलोक को भी धारण किया है. धाता ही इस पति की कामना करने वाली कन्या को पति दें, क्योंकि वह जगत का नियंत्रण करते हैं. (३)

सूक्त इकसठवां — देवता—रुद्र

मह्यमापो मधुमदेरयन्तां मह्यं सूरो अभरज्ज्योतिषे कम्.
मह्यं देवा उत विश्वे तपोजा मह्यं देवः सविता व्यचो धात् (१)

जल के अधिष्ठाता देव अपना मधुर रस मेरे लिए लाएं. सभी के प्रेरक सूर्य ने मेरे लिए अपना सुखकारी और प्रकाशित तेज दिया है. ब्रह्म के तप से उत्पन्न सभी देव मुझे मनचाहा फल दें. (१)

अहं विवेच पृथिवीमुत द्यामहमृतूंरजनयं सप्त साकम्.
अहं सत्यमनृतं यद् वदाम्यहं दैवीं परि वाचं विशश्च (२)

मंत्र दृष्टा अपने सर्वगत ब्रह्म भाव की खोज करता हुआ कहता है कि मैं ने विस्तृत धरती और आकाश को पृथक किया है. मैं ने सात ऋतुओं को जन्म दिया है. सात ऋतुओं का तात्पर्य बसंत आदि छः ऋतुओं और एक अधिक मास से है. सत्य और असत्य के रूप में जो लोक प्रसिद्ध वाक्य हैं, उन्हें मैं ही बोलता हूं. दैवीय वाणी को मैं ने ही प्राप्त किया है. (२)

अहं जजान पृथिवीमुत द्यामहमृतूंरजनयं सप्त सिन्धून्.
अहं सत्यमनृतं यद् वदामि यो अग्नीषोमावजुषे सखाया (३)

मैं ने धरती और आकाश को उत्पन्न किया है. मैं ने ही छः ऋतुओं और गंगा आदि सात नदियों और सात सागरों का निर्माण किया है. मैं अग्नि और सोम को सागर के निर्माण में सहयोग के रूप में प्राप्त करता हूं. (३)

सूक्त बासठवां — देवता—वैश्वानर आदि

वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु वातः प्राणेनेषिरो नभोभिः.

द्यावापृथिवी पयसा पयस्वती ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम् (१)

सभी प्राणियों में जठराग्नि के रूप में वर्तमान अग्नि देव मुझे पवित्र करें. शरीर के मध्य विचरण करते हुए वायुदेव मुझे श्वासोच्छ्वास के द्वारा पवित्र करें. वे ही वायुदेव अंतरिक्ष में गमन करते हुए मुझे नव प्रदेशों के द्वारा पवित्र करें. जल के सार रस के द्वारा सार वाले, यज्ञ पूर्ण कराने में समर्थ तथा सत्य से पूर्ण द्यावा पृथ्वी मुझे पवित्र करें. (१)

वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः.
तया गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् (२)

हे मनुष्यो! वैश्वानर अग्नि से संबंधित तथा प्रिय तत्त्व से पूर्ण स्तुति को आरंभ करो. उस वाणी का शरीर बने हुए ऊपर के भाग विस्तृत हैं. उस वैश्वानर अग्नि की स्तुति करते हुए हम संग्रामों में धन के स्वामी बनें. (२)

वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः.
इहेडया सधमादं मदन्तो ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् (३)

हे मनुष्यो! तेज पाने के लिए वैश्वानर अग्नि की स्तुति आरंभ करो. हम वैश्वानर अग्नि की कृपा से शुद्ध तथा ब्रह्मवर्चस्व के द्वारा दीप्त हो कर दूसरों को भी पवित्र करें. हम अन्न से पुष्ट हो कर परस्पर प्रसन्नता के हेतु बनें तथा इस लोक में स्थित रह कर उदय होते हुए सूर्य के दर्शन करें. (३)

सूक्त तिरेसठवां देवता—निर्ऋति

यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत्.
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः (१)

हे पुरुष! अनिष्टकारिणी देवी ने तेरे सभी अंगों में पाप रूपी फंदा डाला है और तेरी गरदन में ऐसी रस्सी बांधी है, जिस से छूटना असंभव है. मैं उस निर्ऋति रूपी फंदे से तुझे चिर काल तक जीवित रहने के लिए, बल के लिए एवं तेज के लिए छुड़ाता हूं. मेरे द्वारा छुड़ाया हुआ तू मेरी प्रेरणा से सदा अन्न का भक्षण कर. (१)

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान्.
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे (२)

हे तीक्ष्ण दीप्ति वाली एवं अनिष्टकारिणी देवी निर्ऋति! तुझे नमस्कार है. नमस्कार से प्रसन्न हो कर तू लोहे के बने बंधन के फंदों से हमें छुड़ा. हे साधक पुरुष! पाप से मुक्त होने पर यम ने तुम्हें इसी लोक को दे दिया है. मृत्यु के देव उन यम को नमस्कार है. (२)

अयस्मये द्रुपदे बेधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम्.
यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् (३)

हे निर्ऋति! लोहे की शृंखलाओं में अथवा लकड़ी के बने चरण बंधन में जब तुम किसी पुरुष को बांधती हो, तब वह इस लोक में मृत्यु के द्वारा बंधा हो जाता है. प्रसिद्ध ज्वर आदि रोग और राक्षस, पिशाच आदि मृत्यु के हजारों कारण हैं. हे निर्ऋति! तुम मृत्यु देव यम से और देवता, पितर आदि से तालमेल कर के इस पुरुष को उत्तम सुख प्रदान करो. (३)

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ.
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर (४)

हे अभिलाषाएं पूर्ण करने वाले अग्निदेव! तुम समस्त प्रकार के धन प्राप्त कराते हो. तुम यज्ञवेदी में प्रज्वलित होते हो. तुम हमें धन दो. (४)

सूक्त चौंसठवां — देवता—सौमनस्य

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम्.
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते (१)

हे सौमनस्य के इच्छुक जनो! तुम समान ज्ञान वाले बनो और समान कार्य में सलंग्न हो जाओ. ज्ञान की उत्पत्ति के निमित्त तुम्हारे अंत:करण समान हों. इंद्र आदि देव जिस प्रकार एक ही कार्य को जानते हुए यजमानों द्वारा दिए गए हवि को ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार तुम भी विरोध त्याग कर इच्छित फल पाओ. (१)

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम्.
समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् (२)

हमारा गुप्त भाषण एक रूप हो. हमारे कार्यों में प्रवृत्ति समान हो. हमारा कर्म भी एकरूप हो तथा हमारा अंत:करण भी इसी प्रकार का हो. उक्त फल पाने के लिए हे देवो! हम एकता उत्पन्न करने वाले आज्य आदि से आप के निमित्त हवन करें. इस से आप सब एक चित्तता को प्राप्त करो. (२)

समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:.
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति (३)

हे सौमनस्य चाहने वालो! तुम्हारा संकल्प समान हो. तुम्हारे संकल्पों को उत्पन्न करने वाले हृदय समान हों. तुम्हारा मन एकरूप हो, जिस से तुम सब सभी कार्य ठीक से कर सको. (३)

सूक्त पैंसठवां — देवता—इंद्र

अव मन्युरवायताव बाहु मनोयुजा.
पराशर त्वं तेषां पराञ्चं शुष्ममर्दयाधा नो रयिमा कृधि (१)

हमारे शत्रु का क्रोध शांत हो तथा उस का तिरस्कार नष्ट हो. उस के द्वारा ताने

गए आयुध विफल हों. हमारे शत्रुओं की भुजाएं आयुध उठाने में असमर्थ हों. हे शत्रुनाशक इंद्र! तुम उन शत्रुओं के बल को विमुख करो. इसके पश्चात उन शत्रुओं का धन हमारे समीप लाओ. (१)

निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तं यं देवाः शरुमस्यथ.
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् (२)

हे देवो! असुरों का बाहुबल समाप्त करने के लिए तुम जो हिंसक बाण चलाते हो, मैं उस बाण रूप देवता को दिए जाने वाले हवि से अपने शत्रु की भुजाओं को काटता हूं. (२)

इन्द्रश्चकार प्रथमं नैर्हस्तमसुरेभ्यः.
जयन्तु सत्वानो मम स्थिरेणेन्द्रेण मेदिना (३)

इंद्र ने सब से पहले अपने शत्रु असुरों को भुजबल विहीन किया था. युद्ध में दृढ़ एवं हमारे सहायक इंद्र की सहायता से मेरे योद्धा शत्रुओं को पराजित करें. (३)

सूक्त छियासठवां — देवता—इंद्र

निर्हस्तः शत्रुरभिदासन्नस्तु ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान्.
समर्पयेन्द्र महता वधेन द्रात्वेषामघहारो विविद्धः (१)

हमें पीड़ित करने वाला शत्रु हाथों की शक्ति से हीन हो जाए. हे इंद्र! जो शत्रु अपनी सेनाओं की सहायता से हमें युद्ध के लिए ललकारते हैं, उन्हें अपने हनन साधन विशाल वज्र से संयुक्त करो. इन शूरों में जो मुझे मृत्यु रूपी दुख पहुंचाने वाला है, वह अधिक घायल हो कर बुरी दशा को प्राप्त हो. (१)

आतन्वाना आयच्छन्तोऽस्यन्तो ये च धावथ.
निर्हस्ताः शत्रवः स्थनेन्द्रो वोऽद्य पराशरीत् (२)

हे शत्रुओ! तुम धनुष पर डोरी चढ़ाते हुए, धनुष को खींचते हुए और बाण फेंकते हुए हमारे सामने आ रहे हो. तुम सब अशक्त हाथों वाले बन जाओ. आज इंद्र तुम्हें आहत करें. (२)

निर्हस्ताः सन्तु शत्रवोऽङ्गैषां म्लापयामसि.
अथैषामिन्द्र वेदांसि शतशो वि भजामहै (३)

हमारे शत्रु हाथों की शक्ति से हीन हों. हम उन के अंगों को हर्ष रहित करेंगे. हे इंद्र! इस के पश्चात हम तुम्हारी कृपा से उन शत्रुओं के धनों को विभाजित कर के प्राप्त करें. (३)

सूक्त सड़सठवां   देवता—इंद्र

परि वर्त्मानि सर्वत इन्द्रः पूषा च सस्रतुः.
मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां परस्तराम् (१)

इंद्र और उषा — ये दोनों देव सभी दिशाओं के संचरण मार्गों को रोक दें. इस समय दूर दिखाई देने वाली शत्रु सेनाएं अत्यधिक मोह में पड़ जाएं और उन में कार्यअकार्य का निर्णय करने की क्षमता न रहे. (१)

मूढा अमित्राश्चरताशीर्षाण इवाहयः.
तेषां वो अग्निमूढानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम् (२)

हे शत्रुओ! कटे हुए शीश वाले सांप जिस प्रकार हिलतेडुलते हैं, कुछ कर नहीं पाते, उसी प्रकार तुम जय के उपाय से शून्य हो कर युद्धभूमि में घूमो. हमारी आहुतियों के कारण मोह को प्राप्त उन शत्रुओं का वध श्रेष्ठ नायक इंद्र करें. (२)

ऐषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भियं कृधि.
पराङमित्र एषत्वर्वाची गौरुपेषतु (३)

हे इच्छा पूर्ण करने वाले इंद्र! तुम सोम मणि को ढकने वाले कृष्ण मृग- चर्म को हमारे योद्धाओं में बांधो. हमारे शत्रु हमारे सामने से भाग जाएं तथा उन शत्रुओं का पशु धन हमें प्राप्त हो. (३)

सूक्त अड़सठवां   देवता—सविता आदि

आयमगन्त्सविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि.
आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत प्रचेतसः (१)

आकाश में दिखाई देते हुए सब के प्रेरक सवितादेव मुंडन करने वाले उस्तरे के साथ आए हैं. हे वायु! गरम जल के साथ तुम भी आओ. बारह आदित्य, एकादश रुद्र तथा आठ वसु—ये सब समान ज्ञान वाले हो कर उस जल से बालक का सिर गीला करें. हे सेवको! तुम वरुण और राजा सोम से संबंधित उस्तरे के द्वारा गीले बालों को काटो. (१)

अदितिः श्मश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा.
चिकित्सतु प्रजापतिर्दीर्घायुत्वाय चक्षसे (२)

देव माता अदिति इस पुरुष के दाढ़ीमूंछ के बाल अलग करें. जल के देवता अपने तेज से उन्हें भिगोएं. प्रजापति चिरकाल तक जीवन के लिए एवं देखने के लिए इस की चिकित्सा करें. (२)

येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्.

तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्ववानयमस्तु प्रजावान् (३)

सविता देव ने जानते हुए जिस उस्तरे से सोम के और राजा वरुण के बालों को काटा, हे ब्राह्मणो! तुम उसी उस्तरे से इस पुरुष की दाढ़ी और मूंछों के बाल काटो. इस विशेष संस्कार से यह पुरुष अनेक गायों, घोड़ों और प्रजाओं से युक्त हो. (३)

सूक्त उनहत्तरवां देवता—बृहस्पति

गिरावरगराटेषु हिरण्ये गोषु यद् यशः.
सुरायां सिच्यमानायां कीलाले मधु तन्मयि (१)

हिमालय पर्वत में जो यश है, रथ में बैठ कर चलने वाले राजाओं में, स्वर्ण में और गायों में जो यश है, वह मुझे प्राप्त हो. पात्रों में ढाली जाती हुई मदिरा में और अन्न में जो मधुर रस रूपी यश है, वह मुझे प्राप्त हो. (१)

अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती.
यथा भर्गस्वतीं वाचमावदानि जनां अनु (२)

हे सुंदर सूर्या के पति अश्विनीकुमारो! मुझे मधुमक्खियों द्वारा एकत्र किए गए मधु से सींचो, जिस से मैं मनुष्यों को लक्ष्य कर के, मधुर वाणी बोलूं. (२)

मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत् पयः.
तन्मयि प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु (३)

प्रजापति जिस प्रकार अंतरिक्ष में ज्योतिमंडल को दृढ़ करते हैं, उसी प्रकार मुझ यजमान में तेज, यश और यज्ञ का फल धारण करें. (३)

सूक्त सत्तरवां देवता—संध्या

यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा अधिदेवने. यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः.
एवा ते अघ्न्ये मनोऽधि वत्से नि हन्यताम् (१)

मांसभक्षी को मांस, शराबी को शराब और जुआरी को पांसे जिस प्रकार प्रिय होते हैं तथा जिस प्रकार सुरत चाहने वाले पुरुष का मन स्त्री में लगा रहता है, हे गौ! उसी प्रकार तेरा मन तेरे बछड़े में लगा रहे. (१)

यथा हस्ती हस्तिन्याः पदेन पदमुद्युजे. यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः.
एवा ते अघ्न्ये मनोऽधि वत्से नि हन्यताम् (२)

हाथी जिस प्रकार अपने पैर से प्रेम के साथ हथिनी का पैर मोड़ता है तथा जिस प्रकार सुरत के इच्छुक पुरुष का मन स्त्री में लगा रहता है, हे गौ! उसी प्रकार तेरा मन तेरे बछड़े में लगा रहे. (२)

यथा प्रधिर्यथोपधिर्यथा नभ्यं प्रधावधि. यथा पुंसो वृषण्यत स्त्रियां निहन्यते मनः.
एवा ते अघ्न्ये मनोऽधि वत्से नि हन्यताम् (३)

हे गौ! जिस प्रकार रथ के पहिए की नेमि अरों से संबंधित रहती है और सुरत के इच्छुक पुरुष का मन जिस प्रकार नारी में लगा रहता है, उसी प्रकार तेरा मन अपने बछड़े में लगा रहे. (३)

सूक्त इकहत्तरवां देवता—विश्वेदेव, अग्नि

यदन्नमद्मि बहुधा विरूपं हिरण्यमश्वमुत गामजामविम्.
यदेव किं च प्रतिजग्रहाहमग्निष्टद्धोता सुहुतं कृणोतु (१)

भूख की पीड़ा के वशीभूत हो कर मैं विविध प्रकार का जो अन्न अनेक प्रकार से खाता हूं, अन्न के अतिरिक्त मैं दरिद्रता के कारण जो सोना, घोड़े और गाएं ग्रहण करता हूं, मुझ यजमान को वह सब अन्न, सोना आदि अग्निदेव भली प्रकार हवन किया हुआ बनाएं. (१)

यन्मा हुतमहुतमाजगाम दत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः.
यस्मान्मे मन उदिव रारजीत्यग्निष्टद्धोता सुहुतं कृणोतु (२)

होम के द्वारा संस्कार वाला और इस से विपरीत जो धन मुझे प्राप्त हुआ है, वह पितृ देवों द्वारा मुझे उपभोग के लिए दिया गया है. मनुष्यों ने उस के उपभोग की अनुमति दी है. जिस धन के कारण मेरा मन हर्ष की अधिकता से उद्दीप्त रहता है, अग्निदेव की कृपा से वह धन मुझ यजमान के लिए दोषरहित हो. (२)

यदन्नमद्म्यनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत संगृणामि.
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम् (३)

हे देवो! असत्य भाषण के द्वारा दूसरों का जो अन्न अपहरण कर के मैं खाता हूं, उसे मैं अन्न के मालिक को चाहे देता रहा हूं अथवा नहीं देता रहा हूं, पर मैं उसे देने की प्रतिज्ञा करता हूं. वैश्वानर देव की अत्यधिक महिमा से वह अन्न मेरे लिए सुखकर और मधुर हो. (३)

सूक्त बहत्तरवां देवता—शेप, अर्क

यथासितः प्रथयते वशां अनु वपूंषि कृण्वन्नसुरस्य मायया.
एवा ते शेपः सहसायमर्कोऽङ्गेनाङ्गं संसमकं कृणोतु (१)

जैसे बंधा हुआ पुरुष अपने वशवर्ती पुरुषों को लक्षित कर के आसुरी माया के द्वारा अपने शरीरों को प्रसारित करता है, उसी प्रकार अकौआ के वृक्ष से बनी यह ओषधि अर्थात अर्कमणि तेरे प्रजनन अंग अर्थात लिंग को स्त्री के उपभोग के योग्य बनाए. (१)

यथा पसस्तायादरं वातेन स्थूलभं कृतम्.
यावत् परस्वतः पसस्तावत् ते वर्धतां पसः (२)

हे साधक! जिस प्रकार तायादर नाम के प्राणी का प्रजनन अंग अर्थात लिंग वायु लगने से मोटा हो जाता है, और जैसा परस्वर नाम के प्राणी का लिंग होता है, तेरा लिंग भी बढ़ कर उसी परिमाण का हो जाए. (२)

यावदङ्गीनं पारस्वतं हास्तिनं गार्दभं च यत्.
यावदश्वस्य वाजिनस्तावत् ते वर्धतां पसः (३)

हे साधक पुरुष! पारस्वत नामक हरिण की, हाथी की, गधे की जननेंद्रिय जिस प्रकार की होती है तथा यौवन में स्थित घोड़े की जननेंद्रिय जैसी होती है, तेरी पुरुषेंद्रिय भी उसी परिमाण में बढ़ जाए. (३)

सूक्त तिहत्तरवां — देवता—वरुण

एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु.
अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः (१)

वरुण, सोम एवं अग्निदेव कर्म के निमित्त यहां आएं. बृहस्पति देव आठ वसुओं के साथ यहां आएं. हे समान जन्म वाले बांधवो! तुम सब समान मन वाले हो कर इस शक्तिशाली एवं कार्यअकार्य जानने वाले यजमान के अधीन हो जाओ. (१)

यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तराकूतिर्या वो मनसि प्रविष्टा.
तान्सीवयामि हविषा घृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु (२)

हे बांधवो! तुम्हारे हृदयों में जो शीर्षक बल है और तुम्हारे मन में जो सब कुछ प्राप्त करने की अभिलाषा है, मैं हवन किए जाते हुए इस हवि के द्वारा बल और उस अभिलाषा को परस्पर संबंधित करता हूं. तुम्हारी अनुकूल प्रवृत्ति मुझ सौमनस्य के इच्छुक पुरुष को प्राप्त हो. (२)

इहैव स्त माप याताध्यस्मत् पूषा परस्तादपथं वः कृणोतु.
वास्तोष्पतिरनु वो जोहवीतु मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु (३)

हे बांधवो! आप मेरे घर में प्रेम से निवास करें तथा यहां से कहीं न जाएं. यदि तुम मेरे प्रतिकूल आचरण करो तो सविता देव तुम्हारा मार्ग रोकें. घरों के पालक देव वास्तोस्पति तुम्हें मेरे लिए बुलाएं. सौमनस्य के इच्छुक मुझ यजमान के प्रति तुम्हारी अनुकूल प्रवृत्ति हो. (३)

सूक्त चौहत्तरवां — देवता—ब्रह्मणस्पति

सं वः पृच्यन्तां तन्व१ः सं मनांसि समु व्रता.
सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत् (१)

हे सौमनस्य के इच्छुक पुरुषो! तुम्हारे शरीर परस्पर के अनुराग से बंधें तथा हृदय भी एकदूसरे के समीप आएं. तुम्हारे कृषि, वाणिज्य आदि कर्म भी सामंजस्य पूर्ण रहें. ब्रह्मणस्पति देव तुम्हें संगत हृदय वाला बनाएं तथा भग नामक देव तुम्हें परस्पर तालमेल वाला करें. (१)

संज्ञपनं वो मनसोऽथो संज्ञपनं हृदः.
अथो भगस्य यच्छ्रान्तं तेन संज्ञपयामि वः (२)

हे सौमनस्य चाहने वाले पुरुषो! मैं ऐसा यज्ञ कर्म करता हूं, जिस से तुम्हारा मन उचित ज्ञान से पूर्ण हो. भग नाम के देव का जो श्रम से उत्पन्न तप है, उस के द्वारा मैं तुम्हें समान ज्ञान वाला बनाता हूं. (२)

यथादित्या वसुभिः संबभूवुर्मरुद्भिरुग्रा अहृणीयमानाः.
एवा त्रिणामन्नहृणीयमान इमाञ्जनान्त्संमनसस्कृधीह (३)

जिस प्रकार अदिति के पुत्र मित्र, वरुण आदि आठ वसुओं के साथ समान ज्ञान वाले हुए, जिस प्रकार उनन्चास मरुतों के साथ उग्र एवं बलशाली रुद्र क्रोध करते हुए समान ज्ञान वाले हुए, हे तीन नामों अर्थात पार्थिव, विद्युत और सूर्य अग्नि! तुम क्रोध न करते हुए इन जनों को समान ज्ञान वाला बनाओ. (३)

सूक्त पिचहत्तरवां   देवता—इंद्र

निरमुं नुद ओकसः सपत्नो यः पृतन्यति.
नैर्बाध्येन हविषेन्द्र एनं पराशरीत् (१)

जो शत्रु सेना ले कर हम से युद्ध करने आता है, हम उसे अपने निवास स्थान से निकालते हैं. हमारे शत्रुओं को मारने में समर्थ हवि के द्वारा इंद्र इस शत्रु की हिंसा करें, जिस से यह लौट कर न आए. (१)

परमां तं परावतमिन्द्रो नुदतु वृत्रहा.

यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यः (२)

वृत्रासुर का वध करने वाले इंद्र उस शत्रु को अत्यधिक दूर देश में जाने की प्रेरणा दें. वह बहुत वर्षों तक वापस न आए. (२)

एतु तिस्रः परावत एतु पञ्च जनां अति. एतु तिस्रोऽति रोचना यतो न
पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यो यावत् सूर्यो असद् दिवि (३)

इंद्र के द्वारा प्रेरित हमारा शत्रु तीनों भूमियों और निषाद आदि पांच जनों को पार कर के दूर वहां चला जाए, जहां से वापस न आए. जब तक सूर्य आकाश में रहे, तब तक वह अनेक वर्षों तक न लौटे. (३)

सूक्त छियत्तरवां 54 देवता—सायंतन अग्नि

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे. संप्रेद्धो अग्निर्जिह्वाभिरुदेतु हृदयादधि (१)

जो राक्षस आदि इस के चारों ओर बैठते हैं तथा हिंसा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं, उन के हृदय से उत्पन्न प्रज्वलित अग्नि उन्हें जला दे. (१)

अग्नेः सांतपनस्याहमायुषे पदमा रभे. अद्धातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः (२)

अधिक तपन वाले उन अग्निदेव के जीवन के लिए मैं उपक्रम करता हूं, जिन के मुख से निकलते हुए धूम को अद्धाति नाम के ऋषि देखते हैं. (२)

यो अस्य समिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम्. नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे (३)

विजय के इच्छुक क्षत्रिय जाति के पुरुष के द्वारा स्थापित अग्नि और दीप्त करने वाली आहुतियों को जो पुरुष जानता है, वह मृत्यु का कारण बनने वाले ऐसे स्थान में पैर नहीं रखता है, जहां हाथी, बाघ आदि घूमते हैं. (३)

नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो न सन्नां अव गच्छति.
अग्नेर्यः क्षत्रियो विद्वान्नाम गृह्णात्यायुषे (४)

कल्याण की कामना करने वाले को शत्रु नहीं मार पाते. वह अपने समीपवर्ती शत्रुओं को भी नहीं जानता. जो क्षत्रिय इस प्रकार से महात्मा अग्नि को जानता हुआ, अग्नि का नाम चिरकाल तक जीवित रहने के लिए उच्चारण करता है, शत्रु उस का वध नहीं कर पाते. (४)

सूक्त सतहत्तरवां देवता—जातवेद

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिव्यस्थाद् विश्वमिदं जगत्.
आस्थाने पर्वता अस्थु स्थाम्न्यश्वां अतिष्ठिपम् (१)

नियंता ईश्वर की आज्ञा से जिस प्रकार आकाश और पृथ्वी अपने स्थान पर स्थित हैं, उन के मध्य में स्थित जगत भी अपने स्थान पर वर्तमान है.

मेरु, मंदार आदि पर्वत भी ईश्वर के द्वारा बनाए गए स्थान पर स्थित हैं. हे नारी! उसी प्रकार मैं तुझे घर की थूनी से बांधता हूं. बांधने का प्रकार वही है, जिस प्रकार घुड़सवार दुष्ट घोड़ों को रस्सी से बांधता है. (१)

य उदानट् परायणं य उदानण्न्यायनम्.
आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे (२)

मैं उस देवता का आह्वान करता हूं, जो पीछे गमन करने वालों में व्याप्त है. जो नीचे गमन करने वालों में व्याप्त है और जो भागने वालों के लौटने की गति को रोकता है. (२)

जातवेदो नि वर्तय शतं ते सन्त्वावृतः.
सहस्रं त उपावृतस्ताभिर्नः पुनरा कृधि (३)

हे जातवेद अग्नि! इस भागने वाली स्त्री को घर में स्थापित करो. तुम्हारे पास इसे लौटाने के सैकड़ों उपाय हैं. तुम इसे मेरे पास लौटाने के लिए हजारों उपाय जानते हो. उन के द्वारा तुम इस स्त्री को पुनः मेरी ओर आकर्षित करो. (३)

सूक्त अठहत्तरवां देवता—चंद्रमा

तेन भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः.
जायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसेनाभि वर्धताम् (१)

प्रसिद्ध एवं समृद्धि करने वाले हवि से यह पति पुनः प्रजा और पशु आदि से समृद्ध हो. विवाह करने वाले पिता आदि जिस पत्नी को इस के समीप लाए थे, उस पत्नी की दधि, मधु, घृत आदि से हवन किए जाते हुए अग्निदेव वृद्धि करें. (१)

अभि वर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम्. रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ (२)

यह वर एवं वधू गायों के दूध से समृद्ध हों. इन्हें गायों आदि की समृद्धि प्राप्त हो. ये पतिपत्नी असीमित तेज और धन के द्वारा पूर्ण काम बनें. (२)

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम्.
त्वष्टा सहस्रमायूंषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम् (३)

हे वर! त्वष्टा देव ने स्त्री को जन्म दिया एवं त्वष्टा ने ही तुम्हें इस स्त्री का पति बनाया है. त्वष्टा देव तुम दोनों अर्थात पतिपत्नी की हजार वर्षों की दीर्घ आयु प्रदान करें. (३)

सूक्त उन्यासीवां देवता—संस्फान

अयं नो नभसस्पतिः संस्फानो अभि रक्षतु. असमातिं गृहेषु नः (१)

हवि प्रदान करने के कारण आकाश के पालन कर्ता अग्नि धान्य की वृद्धि करते हुए हमारी रक्षा करें एवं हमारे घरों की कुठिया को कभी धान्य से रहित न बनाएं. (१)

त्वं नो नभसस्पत ऊर्जं गृहेषु धारय. आ पुष्टमेत्वा वसु (२)

हे अंतरिक्ष के पालन कर्ता अग्नि! तुम हमारे घरों में रस वाले अन्न को स्थापित करो. प्रजा, पशु एवं धन हमारे पास आएं. (२)

देव संस्फान सहस्रापोषस्येशिषे.
तस्य नो रास्व तस्य नो धेहि तस्य ते भक्तिवांसः स्याम (३)

हे दानादिगुण युक्त एवं प्रजापालन में प्रवृत्त आदित्य, तुम हजार संख्या वाली प्रजाओं का पोषण करने वाले धनों के स्वामी हो. तुम उसी प्रकार का धन हमें प्रदान करो तथा उस धन का भाग हमें भोग करने के लिए दो. तुम्हारी कृपा से हम उस धन के स्वामी बनें. (३)

सूक्त अस्सीवां — देवता—चंद्रमा

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूतावचाकशत्.
शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम (१)

कौआ, कबूतर आदि घात करने की इच्छा से बारबार देखते हुए इस पुरुष के शरीर पर गिरते हैं. हे अग्नि! इस दोष को शांत करने के लिए हम स्वर्ग में रहने वाले श्वान के तेज की हवि से तुम्हारी सेवा करते हैं. (१)

ये त्रयः कालकाञ्जा दिवि देवा इव श्रिताः.
तान्त्सर्वानह्व ऊतयेऽस्मा अरिष्टतातये (२)

कालकांज नाम के जो तीन असुर उत्तम कर्मों के कारण देवों के समान स्वर्ग में वर्तमान हैं, मैं इस पुरुष की रक्षा के लिए तथा कौए, कबूतर आदि पक्षियों के आघात संबंधी दोष की भीति के निमित्त सभी कालकांज असुरों का आह्वान करता हूं. (२)

अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थं समुद्रे अन्तर्महिमा ते पृथिव्याम्.
शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम (३)

हे अग्नि, वाडवाग्नि के रूप में तुम्हारा जन्म सागर में हुआ था तथा सूर्य के रूप में तुम्हारी स्थिति आकाश में रही है. सागर और धरती के मध्य तुम्हारी महिमा देखी जाती है. हे अग्नि! हम हवि के द्वारा तुम्हारी सेवा करते हैं. (३)

सूक्त इक्यासीवां — देवता—आदित्य

यन्तासि यच्छसे हस्तावप रक्षांसि सेधसि.
प्रजां धनं च गृह्णानः परिहस्तो अभूदयम् (१)

हे अग्नि! तुम गर्भ को नष्ट करने वाले राक्षस आदि को वश में करने में समर्थ हो, इसीलिए अपने दोनों हाथ फैलाओ तथा उन के द्वारा गर्भ का नाश करने वाले राक्षसों का विनाश करो. पुत्र आदि रूप प्रजा और उन के भोग के लिए धन प्रदान करते हुए अग्नि अपने हाथ फैला कर रक्षा करें. (१)

परिहस्त वि धारय योनिं गर्भाय धातवे. मर्यादे पुत्रमा धेहि तं त्वमा गमयागमे (२)

हे कंकण! तुम गर्भ धारण करने के लिए गर्भाशय को विस्तृत करो. हे पत्नी!

तुम अपने गर्भाशय में पुत्र को धारण करो तथा पति के आगमन पर मेरे मनचाहे पुत्र को जन्म दो. (२)

यं परिहस्तमबिभरदितिः पुत्रकाम्या.
त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद् यथा पुत्रं जनादिति (३)

पुत्र की इच्छा से देवता अदिति ने जिस कंकण को धारण किया, वही कंकण त्वष्टा देव मेरी इस पत्नी के हाथ में बांधें, जिस से यह पुत्र को जन्म दे सके. (३)

सूक्त बयासीवां देवता—इंद्र

आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः.
इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे वासवस्य शतक्रतोः (१)

मैं अपने समीप आए हुए इंद्र को प्रसन्न करने वाले नाम वृत्र हंता का उच्चारण करता हूं. विवाह की इच्छा वाला मैं वृत्र का वध करने वाले, वसुओं द्वारा उपासना किए गए और शक्ति की प्रसिद्धि करने वाले सौ कर्मों के स्वामी इंद्र की उपासना अभिमत फल को पाने के लिए करता हूं. (१)

येन सूर्यां सावित्रीमश्विनोहतुः पथा.
तेन मामब्रवीद् भगो जायामा वहतादिति (२)

जिस प्रकार अश्विनीकुमारो ने सविता की पुत्री सूर्या से विवाह किया, उसी प्रकार से भग ने मुझ से कहा कि पत्नी ले आओ. (२)

यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्ययः.
तेना जनीयते जायां मह्यं धेहि शचीपते (३)

हे इंद्र! तुम्हारा जो हाथ आकर्षक धन धारण करने वाला एवं स्वर्ण से युक्त है, हे शची के पति! उसी हाथ से पत्नी के इच्छुक मुझ को पत्नी प्रदान करो. (३)

सूक्त तिरासीवां देवता—सूर्योदय

अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसतेरिव.
सूर्यः कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वोऽपोच्छतु (१)

हे गंडमालाओ! जिस प्रकार बाज पक्षी अपने निवास स्थान से उड़ता है, उसी प्रकार तुम मेरे शरीर से निकल जाओ. सूर्य मेरी चिकित्सा करें और चंद्रमा मेरे शरीर से तुम्हें दूर करें. (१)

एन्येका श्येन्येका कृष्णैका रोहिणी द्वे.
सर्वासामग्रभं नामावीरघ्नीरपेतन (२)

एक गंडमाला लाल रंग की, दूसरी श्वेत वर्ण की तथा तीसरी काले रंग की

हैं. इन के अतिरिक्त दो गंडमालाएं लाल रंग की हैं. मैं इन सब को प्रसन्न करने वाले नाम का उच्चारण करता हूं. इस से प्रसन्न हो कर तुम इस पुरुष को त्याग कर अन्यत्र चली जाओ. (२)

अस्रुतिका रामायण्यपचित् प्र पतिष्यति.
ग्लौरितः प्र पतिष्यति स गलुन्तो नशिष्यति (३)

पीब बहाने वाली तथा घाव के रूप वाली गंडमाला इस पुरुष के शरीर से दूर जाएगी. इस के घाव के कारण होने वाला दुख नष्ट हो जाएगा तथा चंद्रमा गंडमालाओं की पीड़ा को शेष नहीं रखेगा. (३)

वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो मनसा स्वाहा मनसा यदिदं जुहोमि (४)

हे घाव रोग के अभिमानी देव! तुम अपनी आहुति का भक्षण करो. सेवा किए जाते हुए तुम आहुति का भक्षण करो. मैं भी मन से यह हवि देता हूं. (४)

सूक्त चौरासीवां देवता—निर्ऋति

यस्यास्त आसनि घोरे जुहोम्येषां बद्धानामवसर्जनाय कम्.
भूमिरिति त्वाभिप्रमन्वते जना निर्ऋतिरिति त्वाहं परि वेद सर्वतः (१)

हे रोगाभिमानिनी पाप की देवी! घाव के रोगों से उत्पन्न बंधनों से छूटने के लिए मैं तुम्हारे भयानक मुख में हवि डालता हूं तथा घाव को धोने के लिए यह हवि ओषधि युक्त जल प्रयोग करता हूं. तुम्हें ज्ञानहीन जन पृथ्वी समझते हैं. तुम्हारा स्वरूप जानता हुआ मैं सभी प्रकार निर्ऋति अर्थात सभी रोगों का कारण जानता हूं. (१)

भूते हविष्मती भवैष ते भागो यो अस्मासु. मुञ्चेमानमूनेनसः स्वाहा (२)

हे सर्वत्र विद्यमान निर्ऋति! तुम हमारे द्वारा दिया हुआ आज्य स्वीकार करो. यह तुम्हारा भाग्य है जो इस समय हम ने निश्चित किया है. तुम हमें रोग के कारण पाप से बचाओ. हमारा यह हवि उत्तम आहुति वाला हो. (२)

एवो ष्व१स्मन्निर्ऋतेऽनेहा त्वमयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान्.
यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे (३)

हे पाप देवता निर्ऋति! तुम हमें बाधा न पहुंचाती हुई अत्यंत दृढ़ बंधन वाले रस्सी के फंदों को हम से दूर करो. ये फंदे रोगात्मक हैं. हे रोगी! यमराज तुम्हें मेरे लिए देते हैं. मृत्यु के देवता उस यम को नमस्कार है. (३)

अयस्मये द्रुपदे बेधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम्.
यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् (४)

हे निर्ऋति! लोहे की शृंखलाओं से अथवा लकड़ी के बने चरण बंधन से जब

तुम किसी पुरुष को बांधती हो, तब वह इस लोक में मृत्यु के द्वारा बद्ध हो जाता है. प्रसिद्ध ज्वर आदि रोग और राक्षस, पिशाच आदि मृत्यु के हजारों कारण हैं. हे निर्ऋति! तुम मृत्यु के देव यम से और देवता, पितर आदि से तालमेल कर के इस पुरुष को उत्तम सुख प्रदान करो. (४)

सूक्त पिच्चासीवां — देवता—वनस्पति

वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः.
यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन् (१)

यह दिव्य गुण युक्त वरण नाम की वनस्पति से बनी हुई मणि राजयक्ष्मा रोग का निवारण करे. इस पुरुष में जिस यक्ष्मा रोग का निवास है, उस रोग का निवारण इंद्र आदि देव करें. (१)

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च.
देवानां सर्वेषां वाचा यक्ष्मं ते वारयामहे (२)

हे रोगी पुरुष! तेरे हाथ में वरण वृक्ष से बनी हुई मणि बांधने वाले हम सब इंद्र, मित्र और वरुण की आज्ञा से यक्ष्मा रोग का निवारण करते हैं. हम सभी देवों की आज्ञा से तेरे यक्ष्मा रोग को तेरे शरीर से निकालते हैं. (२)

यथा वृत्र इमा आपस्तस्तम्भ विश्वधा यतीः.
एवा ते अग्निना यक्ष्मं वैश्वानरेण वारये (३)

त्वष्टा का पुत्र वृत्रासुर जिस प्रकार स्थावर और जंगम विश्व का पोषण करने वाले इन मेघों के जलों की गति रोकता है, हे रोगी! मैं वैश्वानर अग्नि की सहायता से तेरे यक्ष्मा रोग का उसी प्रकार निवारण करता हूं. (३)

सूक्त छियासीवां — देवता—एक वृष

वृषेन्द्रस्य वृषा दिवो वृषा पृथिव्या अयम्.
वृषा विश्वस्य भूतस्य त्वमेकवृषो भव (१)

यह पुरुष इंद्र की कृपा से सेचन समर्थ हो. यह द्युलोक एवं पृथ्वी लोक में श्रेष्ठ बने. हे श्रेष्ठता के इच्छुक पुरुष! तू संसार के सभी प्राणियों में श्रेष्ठ बन. (१)

समुद्र ईशे स्रवतामग्निः पृथिव्या वशी. चन्द्रमा नक्षत्राणामीशे त्वमेकवृषो भव (२)

सागर बहने वाले जलों का स्वामी है. अग्निदेव पृथ्वी के स्वामी हैं. चंद्रमा नक्षत्रों का स्वामी है. तुम सभी प्राणियों में श्रेष्ठ बनो. (२)

सम्राडस्यसुराणां ककुन्मनुष्याणाम्. देवानामर्धभागसि त्वमेकवृषो भव (३)

हे इंद्र! तुम असुरों के स्वामी हो. तुम बैल की ठाट के समान सभी मनुष्यों में

उन्नत बनो. हे इंद्र! सभी देव मिल कर तुम्हारे बराबर होते हैं. हे श्रेष्ठता के इच्छुक मनुष्य! तू इंद्र की कृपा से सभी प्राणियों में श्रेष्ठ बन. (३)

सूक्त सत्तासीवां — देवता—ध्रुव

आ त्वाहार्षमन्तर भूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलत्.
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत् (१)

हे राजन! हम तुम्हें अपने राष्ट्र में लाए हैं! तुम हमारे मध्य हमारे स्वामी बनो. तुम चंचलता रहित हो कर राज्य के अधिकार पर दृढ़ बनो. सभी प्रजाएं तुम्हें चाहें. यह राष्ट्र तुम्हारे अधिकार से भ्रष्ट न हो. (१)

इहैवैधि माप च्योष्ठाः पर्वतइवाविचाचलत्.
इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमु धारय (२)

हे राजन! तुम इसी राज्य सिंहासन पर सदा वर्तमान रहो. इस से कभी वंचित न बनो. तुम पर्वत के समान निश्चल हो कर इंद्र के समान इसी राष्ट्र में स्थिर रहो. तुम अपने इस राष्ट्र को धारण करो. (२)

इन्द्र एतमदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा.
तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं च ब्रह्मणस्पतिः (३)

स्थिरता प्रदान करने वाले हमारे द्वारा दिए हुए हवि से संतुष्ट इंद्र ने इस राष्ट्र में इस राजा को स्थिर रूप से स्थापित किया है. सोम ने इस राजा को अपना कहा है. वेद राशि का पालन करने वाले ब्रह्म देव यही कहें. (३)

सूक्त अठासीवां — देवता—ध्रुव

ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत्.
ध्रुवासः पर्वता इमे ध्रुवो राजा विशामयम् (१)

आकाश जिस प्रकार स्थित है, यह पृथ्वी जिस प्रकार ध्रुव दिखाई देती है. यह दिखाई देता हुआ विश्व जिस प्रकार ध्रुव है तथा ये सभी पर्वत जिस प्रकार स्थिर है, प्रजाओं का स्वामी यह राजा भी उसी प्रकार स्थिर हो. (१)

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः.
ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् (२)

हे राजन! राजा वरुण तुम्हारे राज्य को स्थिर करें. प्रकाश करते हुए बृहस्पति तुम्हारे राष्ट्र को ध्रुव बनाएं. इंद्र और अग्नि तुम्हारे राष्ट्र को स्थिर बनाएं. (२)

ध्रुवोऽच्युतः प्र मृणीहि शत्रूञ्छत्रूयतोऽधरान् पादयस्व.
सर्वा दिशः संमनसः सध्रीचीर्ध्रुवाय ते समितिः कल्पतामिह (३)

हे राजन! तुम इस राष्ट्र में स्थिर और अच्युत रह कर शत्रुओं का विनाश करो तथा शत्रुओं के समान आचरण करने वाले अन्य जनों को भी अधोमुख गिराओ. सभी दिशाएं सौमनस्य वाली बन कर तुम्हारी सेवा में लगें. तुम्हारा यह आयोजन सभी दिशाओं में तुम्हें स्थिरता प्रदान करने में समर्थ हो. (३)

सूक्त नवासीवां देवता—मंत्रों में बताए गए

इदं यत् प्रेण्यः शिरो दत्तं सोमेन वृष्ण्यम्.
ततः परि प्रजातेन हार्दिं ते शोचयामसि (१)

मुझ प्रेम प्राप्त करने वाले का जो यह शक्ति प्रदान करने वाला शीश है, वह मुझे सोम ने दिया है. उन के द्वारा उत्पन्न विशेष स्नेह से मैं तुम्हारे मन को संताप युक्त करता हूं. (१)

शोचयामसि ते हार्दिं शोचयामसि ते मनः.
वातं धूम इव सध्य१ङ् मामेवान्वेतु ते मनः (२)

हे पति और पत्नी! मैं तुम दोनों के हृदयों को परस्पर प्रेम उत्पन्न कर के संतप्त करता हूं. मैं तुम्हारे मन को उसी प्रकार संतप्त करता हूं, जिस प्रकार धुआं वायु का अनुगमन करता है. तुम्हारा मन इसी प्रकार मेरा अनुगामी हो. (२)

मह्यं त्वा मित्रावरुणौ मह्यं देवी सरस्वती.
मह्यं त्वा मध्यं भूम्या उभावन्तौ समस्यताम् (३)

हे पत्नी! मित्र और वरुण देव तुम्हें मुझ से मिलाएं. सरस्वती देवी तुम्हें मुझ से मिलाएं. धरती पर स्थित सभी प्राणी तुम्हें मुझ से मिलाएं तथा इस भूमि के ऊपर और नीचे के प्रदेश तुम्हें मुझ से मिलाएं. (३)

सूक्त नब्बैवां देवता—रुद्र

यां ते रुद्र इषुमास्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च.
इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि (१)

हे रोगी! तेरे हाथ, पैर और हृदय आदि अंगों को बेधने के लिए रुद्र देव ने जो बाण अपने धनुष पर चढ़ा कर फेंका है, आज मैं उस का प्रतिकार करने के लिए उस बाण को तुझ से विमुख करने के लिए शरीर से दूर फेंकता हूं. (१)

यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनु विष्ठिताः.
तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्वयामसि (२)

हे शूल रोगी! तेरे हाथ, पैर आदि अंगों में जो सैकड़ों धमनी नाड़ियां स्थित हैं,

उन के लिए मैं विषरहित एवं शूलहीन ओषधियां बनाता हूं. (२)

नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै. नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै (३)

हे व्याधि रूप अस्त्र चलाने वाले रुद्र! तुम को नमस्कार है. धनुष पर चढ़े हुए तुम्हारे बाण को नमस्कार है. धनुष से छोड़े जाते हुए तुम्हारे बाण को नमस्कार है. लक्ष्य पर गिरने वाले तुम्हारे बाण को नमस्कार है. (३)

सूक्त इक्यानबेवां — देवता—यक्ष्मा का विनाश

इमं यवमष्टायोगैः षड्योगेभिरचर्कृषुः. तेना ते तन्वो३ रपोऽपाचीनमप व्यये (१)

ओषधि के रूप में प्रयोग में लाए जाते हुए जौ को आठ बैलों वाले तथा छः बैलों वाले हल से जोत कर उत्पन्न किया गया है. हे रोगी! उस जौ से मैं तेरे शरीर के रोग के कारण पाप को दूर करता हूं. (१)

न्य१ग् वातो वाति न्यक् तपति सूर्यः. नीचीनमघ्नया दुहे न्यग् भवतु ते रपः (२)

वायु जिस प्रकार नीचे चलती है, सूर्य जिस प्रकार नीचे तपते हैं, जिस प्रकार गायों से नीचे की ओर दूध काढ़ा जाता है, हे रोगी! उसी प्रकार तेरे रोग का कारण पाप शांत हो जाए. (२)

आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः.
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् (३)

सभी ओषधियां जल का विकार हैं. इस प्रकार जल ही रोग निवारण के लिए उत्तम ओषधि है. जल सारे संसार के लिए ओषधि रूप है, वे ही जल तेरे लिए रोग निवारक ओषधि बनें. (३)

सूक्त बानबेवां — देवता—बाजि अर्थात घोड़ा

वातरंहा भव वाजिन् युज्यमान इन्द्रस्य याहि प्रसवे मनोजवाः.
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आ ते त्वष्टा पत्सु जवं दधातु (१)

हे रथ के जुए में जुते हुए अश्व! तू वायु के समान तेज चलने वाला बन. इंद्र की प्रेरणा होने पर तू मन के समान वेग से गंतव्य पर पहुंच. सारे संसार को जानने वाले उनन्चास मरुद्गण तुझ से मिल जाएं एवं त्वष्टा देव तेरे चरणों को वेग प्रदान करें. (१)

जवस्ते अर्वन् निहितो गुहा यः श्येने वात उत योऽचरत् परीत्तः.
तेन त्वं वाजिन् बलवान् बलेनाजिं जय समने पारयिष्णुः (२)

हे अश्व! तेरा वेग असाधारण स्थान गुफा में छुपा है. तेरा जो वेग बाज पक्षी और वायु में सुरक्षित है, तू उसी वेगशाली बल से बलवान हो कर हमें संग्राम में

सफलता दिला. (२)

तनूष्टे वाजिन् तन्वं१ नयन्ती वाममस्मभ्यं धातवु शर्म तुभ्यम्.
अह्रुतो महो धरुणाय देवो दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयात् (३)

हे वेगवान अश्व! सवार के शरीर को युद्धभूमि में पहुंचाता हुआ तेरा शरीर हमें धन प्राप्त कराए तथा तुझे सुख पहुंचाता हुआ दौड़े. तू खाली स्थान में फैले गांव, जनपद आदि को धारण करने के लिए सीधा चलता हुआ इस प्रकार अपने स्थान को जा, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अपने स्थान पर पहुंचता है. (३)

सूक्त तिरानबेवां देवता—यम

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋथो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः.
देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृञ्जन्तु वीरान् (१)

पापियों की हिंसा के लिए यम, मृत्यु, अघमार, निर्ऋति, बभ्रु, शर्व एवं नीलशिखंड आदि देवगण, अपने परिवार जनों के साथ अपनेअपने स्थान से चल दिए हैं. वे हमारे पुत्र, पौत्र आदि को छोड़ दें. (१)

मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्र उत राज्ञे भवाय.
नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदघविषा नयन्तु (२)

शर्व के लिए, क्षेत्र के लिए एवं उन सब के स्वामी महादेव के लिए मैं मन से, तेज से, घृत और आज्यों से नमस्कार करता हूं. ये सभी नमस्कार के योग्य हैं. प्रसन्न हो कर ये पाप रूपी विष से पूर्ण कृत्याओं को हम से दूर ले जाएं. (२)

त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः.
अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम (३)

हे सब कुछ जानने वाले मरुदगण एवं विश्वेदेव! तुम कृत्याओं की मारक शक्ति से हमारी रक्षा करो. हम अग्नि, सोम, वरुण, शुद्ध बलशाली मित्र, वायु एवं पर्जन्य के कृपा पात्र रहें. (३)

सूक्त चौरानबेवां देवता—सरस्वती

सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि.
अमी ये विव्रता स्थन तान् वः सं नमयामसि (१)

हे उदास मन वाले लोगो! मैं तुम्हारे परस्पर विरुद्ध हृदयों को एक विषय पर सहमत करता हूं. मैं तुम्हारे कर्मों एवं संकल्पों को भी एक रूप बनाता हूं. पहले तुम सब परस्पर विरुद्ध कर्म करने वाले थे. मैं तुम सब को समान मन वाला बनाता हूं. (१)

अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत.

मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्मान एत (२)

हे परस्पर विरोधी मन वाले लोगो! मैं तुम्हारे हृदयों को अपने हृदय के अधीन बनाता हूं. तुम सब भी अपने हृदयों को मेरे हृदय का अनुगमन करने वाला बनाओ. तुम्हारे हृदय मेरे वश में हों एवं तुम सब मेरा अनुगमन करो. (२)

ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती.
ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्चर्ध्यास्मेदं सरस्वति (३)

धरती और आकाश सदा मेरे सम्मुख और परस्पर संबद्ध रहें. देवी सरस्वती भी मेरे अभिमुख और अनुकूल रहे. इंद्र और अग्नि मेरे अनुकूल रहें. हे सरस्वती देवी! इस समय हम समृद्ध हों. (३)

सूक्त पंचानबेवां देवता—वनस्पति

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि.
तत्रामृतस्य चक्षणं देवाः कुष्ठमवन्वत (१)

तीसरे आकाश में देवों का स्थान पीपल है. वहां देवों ने अमृत के गुण वाले वनस्पति कूठ को जाना. (१)

हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि.
तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत (२)

देवों ने सोने के बंधनों वाली स्वर्ग की नाभि के द्वारा कूठ वनस्पति को प्राप्त किया, जो अमृत का पुरुष है. (२)

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो हिमवतामुत. गर्भो विश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि (३)

हे अग्नि! तुम वर्षा से उत्पन्न होने वाली वनस्पतियों के भीतर स्थित हो तथा शीतल स्पर्श वाली वनस्पतियों में भी स्थित हो. तुम संसार के सभी प्राणियों में स्थित हो. तुम मेरे इस मनुष्य को रोग रहित बनाओ. (३)

सूक्त छियानबेवां देवता—वनस्पति, सोम

या ओषधयः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः.
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः (१)

जिन वृक्षों और वनस्पतियों के राजा सोम हैं तथा जो रस, वीर्य आदि के विपाक के कारण सैकड़ों प्रकार की दिखाई देती हैं, बृहस्पतिदेव के द्वारा उन रोगों की औषधि के रूप में नियत वे वनस्पतियां हमें पाप से बचाएं. (१)

मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्या दुत.
अथो यमस्य पड्वीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् (२)

जल अथवा ओषधियां मुझे ब्राह्मणों के क्रोध से उत्पन्न पाप से बचाएं तथा वरुण देव द्वारा निश्चित असत्य भाषण आदि पाप से भी बचाएं. वे हमें यम के उस फंदे से बचाएं जो पैरों को बांधता है. वे मुझे सभी देवों से संबंधित पापों से बचाएं. (२)

यच्चक्षुषा मनसा यच्च वाचोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः.
सोमस्तानि स्वधया नः पुनातु (३)

हमने आंखों के द्वारा, मन के द्वारा, वाणी के द्वारा जागते हुए अथवा सोते हुए जो पाप किए हैं. पितृलोक के स्वामी सोमदेव पितरों को लक्ष्य कर के किए गए पितृ कर्म के द्वारा हमें पवित्र करें. (३)

सूक्त सत्तानबेवां देवता—मित्र, वरुण

अभिभूर्यज्ञो अभिभूरग्निरभिभूः सोमो अभिभूरिन्द्रः.
अभ्य१हं विश्वाः पृतना यथासान्येवा विधेमाग्निहोत्रा इदं हविः (१)

विजय की कामना करने वाले हम लोगों के द्वारा किया हुआ यज्ञ शत्रुओं का पराभव करने वाला हो. यज्ञों को पूर्ण करने वाले अग्नि एवं यज्ञ के साधन सोम शत्रुओं को पराजित करें. इंद्र एवं सभी शत्रु सेनाओं को पराजित करने के इच्छुक हम शत्रु की सभी सेनाओं को जिस प्रकार पराजित करें, उसी के निमित्त संग्राम में विजय के इच्छुक हम हवि का हवन करते हैं. (१)

स्वधास्तु मित्रावरुणा विपश्चिता प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह पिन्वतम्.
बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः. कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत् (२)

हे मेधावी मित्र और वरुण! तुम्हारे लिए दिया गया वह हवि रूप अन्न तुम्हें तृप्ति दे. तुम इस राजा पर प्रजाओं से युक्त बल एवं मधुर रस सींचो. तुम पराजय करने वाली पाप देवी निर्ऋति को हम से विमुख कर के दूर देश में ले जाओ. तुम हमारे शत्रुओं के द्वारा किया हुआ पाप हम से दूर ले जाओ. (२)

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम्.
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा (३)

हे सैनिको! अधिक बलशाली एवं परम ऐश्वर्य युक्त इस वीर राजा की वीरता से प्रसन्न बनो एवं इस के लिए युद्ध हेतु तत्पर रहो. हे मरुतो! गांवों को एवं शत्रुओं की गायों को जीतने वाले तथा हाथ में वज्र धारण करने वाले इंद्र की वीरता से प्रसन्न बनो. इंद्र शत्रुओं को जीतने वाले, जयशील एवं अपने बल से शत्रुओं की हिंसा करने वाले हैं. (३)

सूक्त अट्ठानबेवां   देवता—इंद्र

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै.
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह (१)

इस संग्राम में इस राजा की सहायता के लिए आए हुए इंद्र विजयी हों. वह किसी से पराजित न हों. सभी राजाओं के स्वामी इंद्र इन राजाओं में सुशोभित हों. शत्रुओं को अत्यधिक काटने वाले ये स्तुत्य एवं वंदनीय हैं. हे सब के द्वारा सेवा करने योग्य इंद्र! तुम इस संग्राम में हमारे द्वारा पूजित बनो. (१)

त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्युस्त्वं भूरभिभूतिर्जनानाम्.
त्वं दैवीर्विश इमा वि राजायुष्मत् क्षत्रमजरं ते अस्तु (२)

हे इंद्र! तुम राजाओं के राजा एवं यशस्वी हो. तुम अपने तेज से सभी प्राणियों को पराजित करते हो. ये देव संबंधिनी प्रजाएं तुम्हें शोभा देती है. हे राजन! तुम्हारा बल चिरकाल तक जीवन से युक्त एवं वृद्धावस्था से विहीन हो. (२)

प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि राजोतोदीच्या दिशो वृत्रहञ्छत्रुहोऽसि.
यत्र यन्ति स्रोत्यास्तज्जितं ते दक्षिणतो वृषभ एषि हव्यः (३)

हे इंद्र! तुम पूर्व दिशा के राजा हो. हे वृत्र राक्षस को मारने वाले इंद्र! तुम उत्तर दिशा के भी स्वामी तथा शत्रुओं के हंता हो. हमारी इच्छाएं पूर्ण करने वाले तुम हमारे द्वारा बुलाए जाने पर युद्ध के समय हमारे दक्षिण भाग में वर्तमान रहो. (३)

पालनकर्ता इंद्र की भुजाएं हम अपने चारों ओर धारण करते हैं, वे सब ओर से हमारी रक्षा करें. हे सब के प्रेरक और राजा सोमदेव! मुझे संग्राम में कष्ट न होने वाला और शोभन विजयवाला बनाओ. (४)

सूक्त निन्यानबेवां   देवता—इंद्र

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वांहूरणाद्धुवे.
ह्वयाम्युग्रं चेत्तारं पुरुणामानमेकजम् (१)

हे इंद्र! विस्तीर्ण शरीर के कारण मैं तुझे संग्रामों में बुला रहा हूं. मैं संग्राम में पराजय से बचने के लिए तुम्हारा आह्वान पहले ही करता हूं. हे इंद्र! तुम अत्यधिक शक्तिशाली, जय के उपाय जानने वाले, अनेक शत्रुओं को जीतने वाले एवं अकेले ही युद्ध जीतने वाले हो. (१)

यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन् न उदीरते. इन्द्रस्य तत्र बाहू समन्तं परि दद्मः (२)

इस समय शत्रुओं की सेनाओं के आयुध हमें मारने के लिए उठ रहे हैं. इस वध से हमारी रक्षा के लिए इंद्र की भुजाएं सर्वत्र सहायता करें. हे राजन! हे सविता! हे सोम! विनाश से बचने के लिए मुझे संग्राम में उत्तम विजय प्रदान करो. (२)

परि दद्म इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्रायतां नः.
देव सवितः सोम राजन्त्सुमनसं मा कृणु स्वस्तये (३)

पालनकर्ता इंद्र की भुजाएं हम अपने चारों ओर धारण करते हैं, वे सब ओर से हमारी रक्षा करें. हे सबके प्रेरक और राजा सोम देव! मुझे संग्राम ने नष्ट न होने वाला और शोभन विजय वाला बनाओ. (३)

सूक्त सौवां देवता—वनस्पति

देवा अदुः सूर्यो अदाद् द्यौरदात् पृथिव्यदात्.
तिस्रः सरस्वतीरदुः सचित्ता विषदूषणम् (१)

इंद्र आदि सभी देवों ने एकमत हो कर मुझे स्थावर और जंगम विष को दूर करने वाली ओषधि प्रदान की है. सूर्य, आकाश एवं पृथ्वी ने मुझे विष नाशक ओषधि दी है. इड़ा, सरस्वती और भारती—इन तीन देवियों ने एकमत हो कर मुझे विष नाशक ओषधि प्रदान की है. (१)

यद् वो देवा उपजीका आसिञ्चन् धन्वन्युदकम्.
तेन देवप्रसूतेनेदं दूषयता विषम् (२)

हे देवो! तुम से संबंधित और वल्मीक का निर्माण करने वाले उपजीक नामक प्राणियों ने जलहीन स्थान में तुम्हारा वरदान पा कर जो जल बरसाया, देवों द्वारा दिए हुए उस जल से, इस विष का प्रभाव नष्ट करो. (२)

असुराणां दुहितासि सा देवानामसि स्वसा.
दिवस्पृथिव्याः संभूता सा चकर्थारसं विषम् (३)

हे वल्मीक की मिट्टी! तुम देव विरोधी असुरों की पुत्री और देवों की बहन हो. आकाश और धरती से उत्पन्न वल्मीक की यह मिट्टी स्थावर और जंगम प्राणियों से उत्पन्न विष को प्रभावहीन करे. (३)

सूक्त एक सौ एकवां देवता—बृहस्पति

आ वृषायस्व श्वसिहि वर्धस्व प्रथयस्व च.
यथाङ्गं वर्धतां शेपस्तेन योषितमिज्जहि (१)

हे पुरुष! तू सांड़ के समान गर्भाधान समर्थ हो एवं जीवित रहे. तेरे अंगों का

विकास हो और तेरा शरीर विस्तीर्ण हो. जैसे तेरी जननेंद्रिय बढ़े, वैसे ही तू संभोग की इच्छुक नारी के समीप जा. (१)

येन कृशं वाजयन्ति येन हिन्वन्त्यातुरम्.
तेनास्य ब्रह्मणस्पते धनुरिवा तानया पसः (२)

जिस रस के द्वारा वीर्यरहित पुरुष को प्रजनन समर्थ बनाया जाता है, जिस रस के द्वारा रोगी पुरुष को प्रसन्न किया जाता है, हे मंत्रसमूह के पालक देव! उसी रस विशेष से इस पुरुष की इंद्रिय को धनुष के समान विस्तृत करो. (२)

आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि.
क्रमस्वर्श इव रोहितमनवग्लायता सदा (३)

हे वीर्य के इच्छुक! हम तेरी पुरुषेंद्रिय को धनुष की डोरी के समान विस्तृत करते हैं. तू गर्भाधान में समर्थ बैल के समान प्रसन्न मन से अपनी पत्नी पर आक्रमण कर. (३)

सूक्त एक सौ दोवां — देवता—अश्विनीकुमार

यथायं वाहो अश्विना समैति सं च वर्तते.
एवा मामभि ते मनः समैतु सं च वर्तताम् (१)

हे अश्विनीकुमारो! भलीभांति सिखाया हुआ घोड़ा जिस प्रकार सवार की इच्छा के अनुसार चलता है और उस के अधीन रहता है. हे कामिनी! उसी प्रकार तेरा मन मुझ कामुक को लक्ष्य कर के आए और मेरे अधीन रहे. (१)

आहं खिदामि ते मनो राजाश्वः पृष्ट्यामिव.
रेष्मच्छिन्नं यथा तृणं मयि ते वेष्टतां मनः (२)

हे कामिनी! मैं तेरे मन को इस प्रयोग के द्वारा उसी प्रकार अपने अनुकूल बनाता हूं, जिस प्रकार श्रेष्ठ अश्व लगाम को चबाता है. हे कामिनी! वायु के द्वारा छिन्नभिन्न तिनका जिस प्रकार घूमता है, उसी प्रकार तेरा मन मेरे अधीन हो कर भ्रमण करे. (२)

आञ्जनस्य मदुघस्य कुष्ठस्य नलदस्य च.
तुरो भगस्य हस्ताभ्यामनुरोधनमुद्भरे (३)

हे नारी! मैं सौभाग्यकारी देव के शीघ्रता करते हुए हाथों के द्वारा त्रिककुद पर्वत पर उत्पन्न नीलांजन, मधूक वृक्ष की लकड़ी, कूठ नामक वनस्पति और खस को पीस कर बनाए गए उबटन से तेरे शरीर पर लेप करता हूं. (३)

सूक्त एक सौ तीनवां — देवता—बृह्मणस्पति

संदानं वो बृहस्पतिः संदानं सविता करत्.

संदानं मित्रो अर्यमा संदानं भगो अश्विना (१)

हे शत्रु सेनाओ! बृहस्पतिदेव इन फेंके हुए पाशों के द्वारा तुम्हारा बंधन करें. सब के प्रेरक सविता देव तुम्हारा बंधन करें. मित्र तथा अर्यमा देव तुम्हारा बंधन करें. भग और अश्विनीकुमार तुम्हारा बंधन करें. (१)

सं परमान्त्समवमानथो सं द्यामि मध्यमान्.
इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् (२)

मैं शत्रु की दूर देश वर्तिनी तथा समीप वर्तिनी सेनाओं को पाशों के द्वारा बांधता हूं. मैं समीप और दूर के मध्य स्थान में वर्तमान सेनाओं को भी पाशों से बांधता हूं. इस प्रकार की सेनाओं एवं सेनापतियों को संग्राम के स्वामी इंद्र त्याग दें. हे अग्नि! इंद्र द्वारा त्यागे हुए इन क्षत्रियों को तुम पाशों से बांधो. (२)

अमी ये युधमायन्ति केतून् कृत्वानीकशः.
इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् (३)

हमारे प्रति प्रसन्न बने हुए इंद्रदेव और अग्नि देव हमारे उन शत्रुओं को बंधन में बांधें.

सूक्त एक सौ चारवां — देवता—इंद्र

आदानेन संदानेनामित्राना द्यामसि.
अपाना ये चैषां प्राणा असुनासून्त्समच्छिदन् (१)

आदान नाम के पाश यंत्र विशेष के द्वारा तथा संधान नाम के पाश यंत्र के द्वारा हम शत्रुओं को बांधते हैं. इन शत्रुओं की प्राण एवं अपान वायु को मैं अपने प्राण के द्वारा भलीभांति छिन्न करता हूं. (१)

इदमादानमकरं तपसेन्द्रेण संशितम्.
अमित्रा येऽत्र नः सन्ति तानग्न आ द्या त्वम् (२)

मैं ने तप के द्वारा बांधने का साधन यह पाश यंत्र निर्मित किया है. इसे इंद्र ने पहले ही तेज कर दिया है. इस संग्राम में हमारे जो शत्रु हैं, हे अग्नि! उन सब को पाश बंधन से बांधो. (२)

ऐनान् द्यतामिन्द्राग्नी सोमो राजा च मेदिनौ.
इन्द्रो मरुत्वानादानममित्रेभ्यः कृणोतु नः (३)

हमारे द्वारा दिए गए हवि से प्रसन्न होने वाले इंद्र और अग्नि हमारे इन शत्रुओं को बांधें तथा राजा सोम इन्हें बांधें. मरुद्गणों के सहित इंद्र हमारे शत्रुओं का पाश बंधन करें. (३)

सूक्त एक सौ पांचवां — देवता—कास

यथा मनोमनस्केतैः परापतत्याशुमत्.

एवा त्वं कासे प्र पत मनसोऽनु प्रवाय्यम् (१)

जिस प्रकार मन के द्वारा जाने जाते हुए दूरस्थ विषयों के साथ पुरुष शीघ्रता से ध्रुव मंडल तक जाता है, उसी प्रकार हे खांसी और कफ रोग वाली कृत्या! तू मन के वेग से पुरुष के शरीर से निकल कर दूर देश में चली जा. (१)

यथा बाणः सुसंशितः परापतत्याशुमत्.
एवा त्वं कासे प्र पत पृथिव्या अनु संवतम् (२)

जिस प्रकार अच्छी तरह तेज किया हुआ बाण धनुष से छूट कर शीघ्र ही भूमि को छेदता हुआ गिरता है. हे खांसी! तू उसी प्रकार बाण से बिंधी हुई पृथ्वी को लक्ष्य कर के इस पुरुष से दूर चली जा. (२)

यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुमत्.
एवा त्वं कासे प्र पत समुद्रस्यानु विक्षरम् (३)

जिस प्रकार सूर्य की किरणें लोक परलोक तक शीघ्र जाती हैं. हे खांसी! तू उस देश को लक्ष्य कर के चली जा, जिस देश में सागर के जल के विविध प्रवाह हैं. (३)

सूक्त एक सौ छहवां — देवता—दूर्वा

आयने ते परायणे दूर्वा रोहतु पुष्पिणीः.
उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान् (१)

हे अग्नि! तुम्हारे अभिमुख जाने में अथवा पराङ्मुख जाने में हमारे देश में पुष्प युक्त कोमल दूर्वा उत्पन्न हो. हमारे घर और खेत में पानी के सोते उत्पन्न हों तथा कमलों वाला सरोवर निर्मित हो. (१)

अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम्.
मध्ये ह्रदस्य नो गृहाः पराचीना मुखा कृधि (२)

हमारा वह घर जल का स्थान एवं सागर का निवेश बने. हमारे घर गहरे तालाबों के मध्य में हों. हे अग्नि! तुम अपने ज्वाला रूपी मुख हमारी ओर से फेर लो. (२)

हिमस्य त्वा जरायुणा शाले परि व्ययामसि.
शीतह्रदा हि नो भुवोऽग्निष्कृणोतु भेषजम् (३)

हे शाला! हम तुझे हिमालय के शीतल जल से इस प्रकार घेरते हैं, जिस प्रकार जरायु गर्भ को तथा शैवाल जल को घेरता है. हे शाला! तू हमारे लिए शीतल जल वाली बन जा. हमारी प्रार्थना सुन कर अग्नि हमारे घरों को जलने से बचाने वाली ओषधि बनें. (३)

सूक्त एक सौ सातवां — देवता—विश्वजित

विश्वजित् त्रायमाणायै मा परि देहि.

त्रायमाणे द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद् यच्च नः स्वम् (१)

हे विश्वजित देव! जगत का पालन करने वाली देवी के लिए रक्षा के हेतु मुझ स्वस्त्ययन इच्छुक को दो. हे त्रायमाणा नामक देवी! हमारे दो पैरों वाले सभी पुत्र, पौत्र आदि की रक्षा करो तथा मेरे सभी चौपायों की भी रक्षा करो. (१)

त्रायमाणे विश्वजिते मा परि देहि.
विश्वजिद् द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद् यच्च नः स्वम् (२)

हे पालन करने वाली देवी त्रायमाणा! मुझे विश्वजित नाम के देवता को दे दो. हे सब को जीतने वाले! हमारे दो पैरों वाले पुत्र, पौत्र आदि और सभी चौपायों की रक्षा करो. (२)

विश्वजित् कल्याण्यै मा परि देहि.
कल्याणि द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद् यच्च नः स्वम् (३)

हे विश्वजित! मुझे सर्वमंगलकारिणी देवी को दे दो. हे कल्याणी! हमारे सभी दो पैरों वाले पुत्र, पौत्र आदि और चौपायों की रक्षा करो. (३)

कल्याणि सर्वविदे मा परि देहि.
सर्वविद् द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद् यच्च नः स्वम् (४)

हे कल्याणी! मुझे सब कुछ जानने वाले देव को दे दो. हे सर्वहित! हमारे सभी दो पैरों वाले पुत्र, पौत्र आदि और चौपायों की रक्षा करो. (४)

सूक्त एक सौ आठवां देवता—मेधा, अग्नि

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वेभिरा गहि.
त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञिया (१)

हे देव और मनुष्य आदि के द्वारा उपासना की जाती हुई मेधा देवी! तुम हमें देने के लिए गाय और अश्वों के साथ आओ. तुम सूर्य की किरणों के समान अपनी व्याप्ति की सामर्थ्य के साथ हमारे समीप आओ. तुम हमारे लिए यज्ञ के योग्य हो. (१)

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्टुताम्.
प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे (२)

मैं वेदों से युक्त एवं देव, मनुष्य आदि के द्वारा पूजी जाती हुई मेधा देवी का आह्वान करता हूं. ब्राह्मणों के द्वारा सेवित, ऋषियों के द्वारा स्तुति की गई और ब्रह्मचारियों द्वारा सेवित मेधा देवी को मैं इंद्र आदि की रक्षा पाने के लिए बुलाता हूं. (२)

यां मेधामृभवो विदुर्यां मेधामसुरा विदुः.

ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वेशयामसि (३)

ऋभु नाम के देव जिस मेधा को जानते थे, जिस मेधा को राक्षस जानते थे तथा वसिष्ठ आदि ऋषि वेद शास्त्र विषयक जिस मेधा को जानते थे, उसे हम अपने में स्थापित करते हैं. (३)

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः.
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कृणु (४)

जिस मेधा को पृथ्वी आदि तत्त्वों का निर्माण करने में समर्थ, मंत्र दृष्टा एवं प्रसिद्ध ऋषि जानते हैं. हे अग्नि! उसी मेधा के द्वारा तुम मुझे मेधावी बनाओ. (४)

मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यन्दिनं परि.
मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वेशयामहे (५)

मैं प्रातःकाल, सायंकाल और मध्याह्न काल में मेधा देवी की स्तुति करता हूं. मैं सूर्य की किरणों के साथ दिन में स्तुति वचनों के द्वारा उस महानुभावा मेधा को अपने में स्थापित करता हूं. (५)

सूक्त एक सौ नौवां देवता—पिप्पली

पिप्पली क्षिप्तभेषज्यू३तातिविद्धभेषजी.
तां देवाः समकल्पयन्नियं जीवितवा अलम् (१)

पिप्वली अर्थात पीपल ने सभी ओषधियों का तिरस्कार कर दिया है तथा सभी रोगों को पीड़ित किया है. इंद्र आदि देवों ने अमृत मंथन के समय इस का निर्माण किया था, क्योंकि यही एक ओषधि सभी रोगों के निवारण में समर्थ है. (१)

पिप्पल्य१ः समवदन्तायतीर्जननादधि.
यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः (२)

पिप्वलियों ने सागर मंथन के समय अपने जन्म के पश्चात आ कर आकाश में संभाषण किया कि जीवित पुरुष को हम ओषधि के रूप में व्याप्त करते हैं. वह पुरुष नष्ट न हो. (२)

असुरास्त्वा न्यखनन् देवास्त्वोदवपन् पुनः.
वातीकृतस्य भेषजीमथो क्षिप्तस्य भेषजीम् (३)

हे पिप्वली! असुरों ने तुझे खोदा तथा देवों ने सभी प्राणियों के हित के लिए तुझे उखाड़ा. तुम वातरोग से पीड़ित की ओषधि बनी हुई आक्षेपक अर्थात मिर्गी

नाम के वातरोग की ओषधि हो. (३)

सूक्त एक सौ दसवां

देवता—अग्नि

प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि.
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रायस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व (१)

सभी देवों की आत्मा होने के कारण ये अग्नि चिरंतन हैं. ये स्तुति के योग्य एवं यज्ञों में देवों को बुलाने वाले हैं. हे अग्नि! इस प्रकार तुम नवीन बने रहते हो. तुम अपने शरीर को घृत आदि से पूर्ण करो तथा हमारे लिए सौभाग्य प्रदान करो. (१)

ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलबर्हणात् परि पाह्येनम्.
अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय (२)

ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न पुत्र पिता, बड़े भाई आदि का हंता होता है. मूल नक्षत्र में उत्पन्न पुत्र पूरे कुल की हिंसा करता है. इसलिए इस कुमार के यम द्वारा किए जाने वाले संतान के मूलोच्छेद से रक्षा करो. सौ वर्ष तक जीवित रहने के दीर्घ जीवन के लिए सभी पाप इस कुमार से दूर चले जाएं. (२)

व्याघ्रेऽह्न्यजनिष्ट वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः.
स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीज्जनित्रीम् (३)

बाघ के समान क्रूर एवं पाप नक्षत्र में वीर पुत्र ने जन्म लिया. दुष्ट नक्षत्र में उत्पन्न यह पुत्र जन्म लेते ही उत्तम शक्ति वाला बने. यह पुत्र बड़ा हो कर पिता का वध न करे तथा जन्म देने वाली माता की हिंसा न करे. (३)

सूक्त एक सौ ग्यारहवां

देवता—अग्नि

इमं मे अग्ने पुरुषं ममुग्ध्ययं यो बद्धः सुयतो लालपीति.
अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति (१)

हे अग्नि! मेरे इस पुरुष को रोग के आधार पाप से बचाओ. पाप रूपी पाशों से बंधा हुआ यह पुरुष जो नियमित रूप से प्रलाप करता है, इसीलिए यह तुम्हारे निमित्त हवि रूपी भाग अधिक मात्रा में दे. इस प्रकार यह उन्माद रहित बने. (१)

अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम्.
कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽससि (२)

हे गंधर्व ग्रह से गृहीत पुरुष! यदि तेरा मन गंधर्व ग्रह के विकार से उद्भ्रांत है तो अग्नि तेरे मन को शांत करें. प्रतिकार को जानता हुआ मैं इस ग्रह विकार की

ओषधि करता हूं, जिस से तू उन्माद रहित बन. (२)

देवैनसादुन्मदितमुन्मत्तं रक्षसस्परि.
कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति (३)

हे पुरुष! तूने देवों के विषय में किए हुए पाप के कारण चित्त का उन्माद पाया है. राक्षसों अर्थात ब्रह्मराक्षस आदि ग्रहों के कारण उन्मत्त इस पुरुष के रोग के प्रतिकार को जानता हुआ मैं इस की ओषधि करता हूं. (३)

पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः.
पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽससि (४)

हे उन्माद से गृहीत पुरुष! अप्सराएं और गंधर्व तेरा उन्माद रोग दूर कर के तुझे हमें पुनः प्रदान करें. इस के पश्चात इंद्र ने तुझे मेरे लिए दिया है. हवि एवं सभी देवों ने तुम्हें मेरे लिए इस हेतु दिया है कि तुम उन्माद रहित हो सको. (४)

सूक्त एक सौ बारहवां — देवता—अग्नि

मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न एषां मूलबर्हणात् परि पाह्येनम्.
स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे (१)

हे अग्नि! यह वेदना इन पिता, माता, भ्राता आदि के मध्य बड़े भाई का वध न करे. तुम जड़ उखाड़ने के अर्थात बड़े भाई से पहले विवाह करने वाले दोष के कारण भी इस की रक्षा करो. हे अग्नि! तुम इस को छुड़ाने के उपाय जानते हो, इसीलिए इसे पकड़ने वाली पिशाची के बंधन से छुड़ाओ. इस के बंधन छुड़ाने के लिए सभी देव तुम्हें अनुमति दें. (१)

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन्.
स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् (२)

हे अग्नि! माता, पिता और पुत्र को वेदना के दोष रूपी पाश बंधनों से छुड़ाओ. वेदना के दोष उत्तम, मध्यम और अधम—तीन प्रकार के हैं. हे अग्नि! तुम इस को छुड़ाने के उपाय जानते हो, इसलिए पकड़ने वाली पिशाची के बंधन की रस्सियां छुड़ाओ. इस के बंधन छुड़ाने के लिए तुम्हें सभी देव अनुमति दें. (२)

येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धोऽङ्गेअङ्ग आर्पित उत्सितश्च.
वि ते मुच्यन्तां विमुचो हि सन्ति भ्रूणघ्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व (३)

बड़े भाई से पहले विवाह कराने वाला छोटा भाई जिन पाप रूप पाशों से प्रत्येक अंग में बंधा, रोगी एवं अशांत स्थिति वाला है; उस के वे पाश छूट जाएं. क्योंकि इंद्र आदि सभी देव छुड़ाने वाले हैं; हे देव! इस भ्रूण हंता को उन पापों से

छुड़ाओ जो इसे बड़े भाई से पहले विवाह करने से प्राप्त हुए हैं. (३)

सूक्त एक सौ तेरहवां देवता—पूषा

त्रिते देवा अमृजतैतदेनस्त्रित एनन्मनुष्येषु ममृजे.
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु (१)

अपने बड़े भाई से पहले विवाह करने से संबंधित पाप को प्राचीन काल के देवों ने त्रित में विसर्जित कर दिया था. त्रित ने अपने में विसर्जित पाप को मनुष्यों में स्थापित कर दिया. हे बड़े भाई से पहले विवाह करने वाले! इस कारण यदि ग्रहणशील पाप देवता ग्राही ने तुम्हें प्राप्त किया है, उसे देवगण मंत्र से नष्ट कर दें. (१)

मरीचीर्धूमान् प्र विशानु पाप्मन्नुदारान् गच्छोत वा नीहारान्.
नदीनां फेनां अनु तान् वि नश्य भ्रूणघ्नि पूषन् दुरितान मृक्ष्व (२)

हे बड़े भाई से पहले विवाह करने से उत्पन्न पाप देवता! तू परिवित्ती अर्थात बड़े भाई से पहले विवाह करने वाले को त्याग कर अग्नि, सूर्य आदि में, चमस में अथवा अग्नि से उत्पन्न धुएं में अथवा उस से बने बादलों में प्रवेश कर जा अथवा तू कोहरे में मिल जा. हे पाप देवता! तू नदियों के जल में प्रवेश कर के विविध प्रकार से गति कर. (२)

द्वादशधा निहितं त्रितस्यापमृष्टं मनुष्यैनसानि.
ततो यदि त्वा ग्राहिरानशे तां ते देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु (३)

त्रित के पाप को बारह स्थानों पर रखा गया. पहले मनुष्य में, उस के बाद तीन आप्तियों में, इस के पश्चात सूर्योदय की आठ दिशाओं में—इस प्रकार वह पाप बारह स्थानों पर रखा गया है. इस कारण यदि ग्रहणशील पाप देवता ग्राही ने तुम्हें प्राप्त किया है तो उसे देवगण मंत्र के द्वारा नष्ट कर दें. (३)

सूक्त एक सौ चौदहवां देवता—विश्वेदेव

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्.
आदित्यास्तस्मान्नो यूयमृतस्यर्तेन मुञ्चत (१)

हे अग्नि आदि देवो! इंद्रियों के वशीभूत हो कर हम ने जो पाप किया है, हे अदिति पुत्र देवो! तुम यज्ञ संबंधी सत्य के द्वारा उस पाप से हमें बचाओ. (१)

ऋतस्यर्तेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः.
यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम (२)

हे अदिति पुत्र देवो! तुम यज्ञ के द्वारा प्रसन्न करने योग्य हो. तुम यज्ञ संबंधी सत्य के द्वारा इस यज्ञ कार्य द्वारा हमें सभी पापों से मुक्त करो. (२)

मेदस्वता यजमानाः स्रुचाज्यानि जुह्वतः.
अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम (३)

चर्बी वाले पशु से यज्ञ पूर्ण करते हुए यजमान स्रुच (चमस) के द्वारा यज्ञ में आज्य डालते हैं. हे विश्वेदेव! हम कामना रहित हो कर और पाप से डरते हुए पाप के वश में न हों. (३)

सूक्त एक सौ पंद्रहवां देवता—विश्वेदेव

यद् विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चकृमा वयम्.
यूयं नस्तस्मान्मुञ्चत विश्वे देवाः सजोषसः (१)

हे विश्वेदेवो! पाप का निमित्त जानते हुए अथवा न जानते हुए हम ने जो पाप किया, हमारे साथ प्रसन्न होते हुए तुम हमें उस पाप से छुड़ाओ. (१)

यदि जाग्रद् यदि स्वपन्नेन एनस्योऽकरम्.
भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम् (२)

पाप को प्रेम करने वाले हम ने जाग्रत अवस्था में अथवा सोते हुए जो पाप किए, उन से विश्वेदेव हमें भूतकाल और भविष्यकाल में काठ के चरण बंधन के समान छुड़ाएं. (२)

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव.
पूतं पवित्रेणेवाज्यं विश्वे शुम्भन्तु मैनसः (३)

काठ के चरण बंधन से छूटने अथवा पसीने से भीगा हुआ स्नान कर के मैल से मुक्त होने से पवित्र होता है अथवा घी जिस प्रकार कपड़े से छानने पर शुद्ध होता है, उसी प्रकार विश्वेदेव मुझे पाप से छुड़ाएं. (३)

सूक्त एक सौ सोलहवां देवता—विवस्वान

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया.
वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम् (१)

खेती करने वाले किसानों ने प्राचीनकाल में भूमि को खोदते हुए जो यम संबंधी क्रूर कर्म किया था, वे बुरे और भले काम में विभाजन न करने के कारण जानकार नहीं थे. घृत, मधु, तेल से युक्त अन्न हम अदिति पुत्र देवों और यमराज के लिए हवन करते हैं. इस के पश्चात वह यज्ञ योग्य अन्न मधुरता युक्त तथा हमारे भोग करने योग्य है. (१)

वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति.
मातुर्यदेन इषितं न आगन् यद् वा पितापराद्धो जिहीडे (२)

विवस्वान अर्थात सूर्य के पुत्र यमराज अपने लिए हवि का भाग करें तथा

माधुर्य से युक्त उस भाग को हमें प्रदान करें. माता के पास से जो पाप हम अपराध करने वालों के पास आया है अथवा पिता हमारे द्वारा किए गए अपराध से क्रोधित है, वह पाप भी शांत हो. (२)

यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन्.
यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः (३)

दिखाई देता हुआ यह पाप यदि हमारे मातापिता, भाई, किसी परिजन, पुत्र अथवा आत्मीय व्यक्ति के पास से आया है, उस पाप के कारण क्रोधित जितने पितर हमारे समीप आते हैं, उन सब का क्रोध शांत हो. (३)

सूक्त एक सौ सत्रहवां देवता—अग्नि

अपमित्यमप्रतीत्तं यदस्मि यमस्य येन बलिना चरामि.
इदं तदग्ने अनृणो भवामि त्वं पाशान् विचृतं वेत्थ सर्वान् (१)

मैं ही इस प्रकार का ऋणी हूं जो ऋण लेने के बाद धनी को नहीं लौटाता हूं, उसी शक्तिशाली ऋण के कारण मैं शासक यम के वश में रहता हूं. हे अग्नि, तुम्हारे प्रभाव से मैं उस ऋण से छूट गया हूं. मैं ऋण न चुकाने के कारण होने वाले पारलौकिक पाशों से छूट जाऊंगा. (१)

इहैव सन्तः प्रति दद्म एनज्जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत्.
अपमित्य धान्यं१ यज्जघसाहमिदं तदग्ने अनृणो भवामि (२)

हम इस लोक में रहते हुए ही धनी को ऋण लौटाते हैं. इस लोक में जीवित रहते हुए ही जीवित धनी को ऋण चुकाना चाहिए. मैं ने धनी से ले कर जो अन्न खाया है, हे अग्नि! तुम्हारी कृपा से मैं दूसरे का धान्य खाने के ऋण से छूट जाऊं. (२)

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनृणाः स्याम.
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनृणा आ क्षियेम (३)

हे अग्नि! तुम्हारी कृपा से मैं इस लोक में, स्वर्ग आदि परलोकों में तथा स्वर्ग से उत्तम लोक में ऋण रहित हो कर जाऊं. जो देवों के गमन के लोक हैं, पितरों के गमन से लोक हैं, मैं वहां ऋण रहित हो कर ही जाऊं. (३)

सूक्त एक सौ अठारहवां देवता—अग्नि

यद्धस्ताभ्यां चकृम किल्बिषाण्यक्षाणां गत्नुमुपलिप्समानाः.
उग्रंपश्ये उग्रजितौ तदद्याप्सरसावनु दत्तामृणं नः (१)

इंद्रियों के विषयों—शब्द, स्पर्श, रूप आदि को प्राप्त करने के लिए हम ने जो पाप किए हैं, हे उग्रंपश्या एवं उग्रजिता नाम की अप्सराओ! आज हमारा ऋण

अनुकूल रूप से धनी को चुकाओ, जिस से हम उऋण हो सकें. (१)

उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत् किल्बिषाणि यदक्षवृत्तमनु दत्तं न एतत्.
ऋणान्नो नर्णमेर्त्समानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत् (२)

हे उग्रंपश्या और राष्ट्रभीति नामक अप्सराओ! हम ने जो पाप किए हैं जैसे इंद्रियों का निषिद्ध विषयों में जाना; हमारे ऊपर ऋण के रूप में चढ़ा हुआ जो पाप है, उसे हमारे अनुकूल हो कर समाप्त कर दो. इस से हमारे ऋणी होने के कारण यमराज इस लोक में पाश ले कर हमें पकड़ने न आ सकें. (२)

यस्मा ऋणं यस्य जायामुपैमि यं याचमानो अभ्यैमि देवा:.
ते वाचं वादिषुर्मोत्तरां मद्देवपत्नी अप्सरसावधीतम् (३)

मैं जिस धनी का ऋण धारण करता हूं, मैं कामुक बन कर जिस की पत्नी के पास जाता हूं अथवा जिस पुरुष के पास मैं ऋण के रूप में धन मांगने के लिए जाता हूं, हे देव! वे सब मुझ से प्रतिकूल बातें न कहें. हे अप्सराओ! मेरी यह बात अपने मन में धारण करो. (३)

सूक्त एक सौ उन्नीसवां देवता—वैश्वानर अग्नि

यददीव्यन्नृणमहं कृणोम्यदास्यन्नग्न उत संगृणामि.
वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् (१)

हे अग्नि देव! व्यवहार करने में अशक्त हो कर मैं ने जो ऋण लिया और उसे नहीं चुका पाया; मैं उसे देने की प्रतिज्ञा करता हूं. सभी प्राणियों के हितैषी, पालन कर्ता एवं वश में करने वाले अग्नि हमें पुण्य कर्मों के फल के रूप में मिलने वाला लोक प्रदान करें. (१)

वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु.
स एतान् पाशान् विचृतं वेद सर्वानथ पक्वेन सह सं भवेम (२)

मुझ पर जो लौकिक ऋण एवं देवों के प्रति की गई प्रतिज्ञा पूर्ण न करने का ऋण है, उन सब को मैं अग्नि देव को बताता हूं. अग्नि देव इन लौकिक और दैविक ऋणों रूपी पाशों को ढीला करना जानते हैं. (२)

वैश्वानर: पविता मा पुनातु यत् संगरमभिधावाम्याशाम्.
अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि (३)

सभी भावों को पवित्र करने वाले अग्नि मुझे पवित्र करें. मैं ने ऋण चुकाने एवं यज्ञ करने का जो वचन दिया है तथा मैं देवों में जो आशा उत्पन्न करता हूं, उन के ऋण को चुकाता नहीं हूं. मैं अपने मन से लौकिक सुखों की याचना करता हूं. इस प्रकार के असत्य भाषण में जो पाप है, उसे मैं दूर करता हूं. (३)

सूक्त एक सौ बीसवां देवता—अंतरिक्ष आदि

यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम.
अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् (१)

मैं ने अंतरिक्ष में रहने वाले, पृथ्वी पर रहने वाले तथा स्वर्ग लोक में रहने वाले जनों की हिंसा के रूप में जो पाप किया है, मैं ने अपने मातापिता के प्रतिकूल आचरण कर के जो हिंसा रूपी पाप किया है, गृहस्थों द्वारा सेवित यह अग्नि मुझे उन पापों से छुड़ा कर उन लोकों को प्राप्त कराएं जो पुण्य कर्म करने वालों को प्राप्त होते हैं. (१)

भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः.
द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा माव पत्सि लोकात् (२)

पृथ्वी हमारी माता है और देवमाता अदिति हमारे जन्म का कारण है. अंतरिक्ष हमारा भाई है. यह मुझे मिथ्या भाषण रूपी पाप से बचाए. आकाश हमारा पिता है. वह पिता से आए दोष से हमें बचाए एवं हमें सुखी बनाए. मैं व्यर्थ ही प्राण त्याग कर के तथा यज्ञ आदि न कर के स्वर्ग लोक से अधोगति प्राप्त न करूं. (२)

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्व१ः स्वायाः.
अश्लोणा अङ्गैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान् (३)

यज्ञ आदि करने वाले सहृदय जन अपने शरीर के ज्वर आदि रोगों को त्याग कर स्वर्ग आदि लोकों में प्रसन्न होते हैं. हम भी कुष्ठ आदि रोगों से हीन अंगों के द्वारा सरल गति से चलते हुए स्वर्ग लोक में अपने पिता, माता और पुत्रों से मिलें. (३)

सूक्त एक सौ इक्कीसवां देवता—अग्नि आदि

विषाणा पाशान् वि ष्याध्यस्मद् य उत्तमा अधमा वारुणा ये.
दुष्वप्न्यं दुरितं निः ष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् (१)

हे बंधन की देवी निर्ऋति! हमारे शरीर के मार्गों को बांधने वाले फंदे की रस्सियों को हम से छुड़ाती हुई हमें मुक्त करो. जो पाश उत्तम, अधम और वरुण से संबंधित हैं उन्हें हम से अलग करो. बुरे स्वप्न से उत्पन्न पाप के फंदों को भी हम से अलग करो. इन फंदों से छूट कर हम पुण्य के फल के रूप में मिलने वाले लोकों को प्राप्त करें. (१)

यद् दारुणि बध्यसे यच्च रज्ज्वां यद् भूम्यां बध्यसे यच्च वाचा.
अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् (२)

हे पुरुष! तुम काठ के बंधन में, रस्सी में अथवा धरती के गड्ढे में राजा की आज्ञा

से बांधे गए हो. यह गार्हपत्य अग्नि तुम्हें उन बंधनों से छुड़ा कर वह लोक प्राप्त कराएं जो उत्तम कर्म करने के फल के रूप में मिलता है. (२)

उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके.
प्रेहामृतस्य यच्छतां प्रैतु बद्धकमोचनम् (३)

विचृत अर्थात मूल नक्षत्र में उदय या उत्पन्न होने वाली विचृत नाम की तारिकाएं इस बंधे हुए पुरुष को मरने से बचाएं तथा साथ ही बंधन से मुक्त करें. (३)

वि जिहीष्व लोकं कृणु बन्धान्मुञ्चासि बद्धकम्.
योन्या इव प्रच्युतो गर्भः पथः सर्वा अनु क्षिय (४)

हे बंधन से संबंधित देवता! तुम अनेक प्रकार से आओ और इस स्थान पर बंधे हुए पुरुष को उसके बंधन से छुड़ाओ. हे पुरुष! जिस प्रकार माता के गर्भ से बच्चा बाहर निकल आता है, उसी प्रकार तू बंधन से छूटकर स्वच्छंद रूप से सभी मार्गों पर चल. (४)

एक सौ बाईसवां सूक्त देवता—विश्वकर्मा

एतं भागं परि ददामि विद्वन् विश्वकर्मन् प्रथमजा ऋतस्य.
अस्माभिर्दत्तं जरसः परस्तादच्छिन्नं तन्तुमनु सं तरेम (१)

हे विश्वकर्मा! तुम ब्राह्मण से पहले उत्पन्न हुए हो. तुम्हारे इस महत्त्व को जानता हुआ मैं अपनी रक्षा के लिए तुम्हें हवि प्रदान करता हूं. मेरे द्वारा तुम्हें दिया हुआ यह हवि मुझे वृद्धावस्था तक दीर्घ जीवन प्रदान करे और मैं अपनी संतान के मध्य जीवन व्यतीत करूं. (१)

ततं तन्तुमन्वेके तरन्ति येषां दत्तं पित्र्यमायनेन.
अबन्ध्वेके ददतः प्रयच्छन्तो दातुं चेच्छिक्षान्त्स स्वर्ग एव (२)

कुछ ऋणी जन देह त्याग के पश्चात पुत्र, पौत्र आदि द्वारा पितर संबंधी ऋण चुकाने के कारण ऋण से छूट गए. पुत्र, पौत्र आदि संतान से रहित लोग धनी को धन धान्य का ऋण चुका कर उस स्वर्ग को प्राप्त करते हैं, जिसे ऋण चुकाने के इच्छुक प्राप्त करते हैं. (२)

अन्वारभेथामनुसंरभेथामेतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते.
यद् वां पक्वं परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दंपती सं श्रयेथाम् (३)

हे पतिपत्नी! परलोक में हित करने वाला कर्म आरंभ करो तथा इस के पश्चात संयुक्त हो जाओ. कर्मफल के रूप में प्राप्त होने वाले स्वर्ग आदि लोकों में श्रद्धा रखते हुए तुम दोनों सेवा करो. (३)

यज्ञं यन्तं मनसा बृहन्तमन्वारोहामि तपसा सयोनिः.
उपहूता अग्ने जरसः परस्तात् तृतीये नाके सधमादं मदेम (४)

अन्नशन आदि दीक्षा नियमों के द्वारा दिव्य देह पाने का पात्र बना हुआ मैं अपने द्वारा किए गए महान यज्ञ का विचार कर के उसी में स्थित रहता हूं. हे अग्नि! तुम्हारी अनुमति पा कर मैं वृद्धावस्था से भी अधिक आयु पा कर दुख रहित स्वर्गलोक में पुत्र, पौत्र आदि सहित हर्षित बनूं. (४)

शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि.
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददातु तन्मे (५)

शुद्ध, पवित्र और यज्ञ के योग्य उन जलों को मैं ऋत्विज ब्राह्मणों के हाथ धोने के लिए अलग रखता हूं. हे जलो! जिस अभिलाषा से मैं तुम्हें छिड़कता हूं, मरुद्गणों के सहित इंद्र मेरी वह अभिलाषा पूर्ण करें. (५)

सूक्त एक सौ तेईसवां देवता—विश्वेदेव

एतं सधस्थाः परि वो ददामि यं शेवधिमावहाज्जातवेदाः.
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स्म जानीत परमे व्योमन् (१)

हे स्वर्ग में यजमान के साथ बैठने वाले देवो! मैं यह हवि भाग तुम्हें देता हूं. यह विधि रूपी भाग अग्नि तुम सब को प्राप्त कराते हैं. यह यजमान उस हवि रूपी विधि का अनुगमन करता हुआ आएगा. इस यजमान को तुम स्वर्गलोक में जानना. (१)

जानीत स्मैनं परमे व्योमन् देवाः सधस्था विद लोकमत्र.
अन्वागन्ता यजमानः स्वस्तीष्टापूर्तं स्म कृणुताविरस्मै (२)

हे यजमान के साथ स्वर्ग में बैठने वाले देवो! उस स्वर्ग में इस यजमान को जानना. यह यजमान उस हवि रूपी विधि का अनुगमन करता हुआ आएगा. इस यजमान को तुम स्वर्ग लोक में पहचान लेना. (२)

देवाः पितरः पितरो देवाः. यो अस्मि सो अस्मि (३)

वसु, रुद्र आदि जो देव हैं, वे हमारे पितर हैं. जो पिता, पितामह आदि हमारे पितर हैं, वे ही देव हैं. उन सब का मैं जो हूं, सो हूं. (३)

स पचामि स ददामि स यजे स दत्तान्मा यूषम् (४)

उन्हीं देवों और पितरों की संतान मैं पाक यज्ञ करता हूं और दान देता हूं. वही मैं यज्ञ करता हूं. अनुष्ठान के फल के कारण मैं पुत्र, पौत्र आदि से रहित न बनूं. (४)

नाके राजन् प्रति तिष्ठ तत्रैतत् प्रति तिष्ठतु.

विद्धि पूर्तस्य नो राजन्त्स देव सुमना भव (५)

हे स्वामी सोम! तुम स्वर्ग लोक में सुखपूर्वक स्थित रहो, हमारे अनुष्ठान भी स्वर्ग में स्थित रहें. तुम अपने मन में यह निश्चय कर लो कि तुम को मुझे इस अनुष्ठान का फल देना है. हे देव! इस प्रकार के तुम शोभन मन वाले बनो. (५)

सूक्त एक सौ चौबीसवां देवता—दिव्यजल

दिवो नु मां बृहती अन्तरिक्षादपां स्तोको अभ्यपप्तद् रसेन.
समिन्द्रियेण पयसाहमग्ने छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतां कृतेन (१)

द्युलोक से अथवा विशाल मेघ रहित आकाश से जल की बूंद मेरे ऊपर गिरी. हे अग्नि! तुम्हारी कृपा से मैं इंद्रदेव के चिह्न जल से संयुक्त बनूं. मैं वेदमंत्रों और यज्ञों के माध्यम से पुण्यवान जनों द्वारा किए गए कर्म की सहायता से उत्तम फल प्राप्त करूं. (१)

यदि वृक्षादभ्यपप्तत् फलं तद् यद्यन्तरिक्षात् स उ वायुरेव.
यत्रास्पृक्षत् तन्वो३ यच्च वासस आपो नुदन्तु निर्ऋतिं पराचैः (२)

वृक्ष से पानी की जो बूंद मेरे ऊपर गिरी, वह उस वृक्ष का फल ही है. मेघ रहित आकाश से जो बूंद मेरे ऊपर गिरी, वह वायु भी है. वर्षा की वे बूंदें मेरे शरीर का स्पर्श करती हैं अथवा मेरे वस्त्रों को भिगोती हैं. वे बूंदें पाप देवता निर्ऋति का प्रक्षालन करने में समर्थ होने के कारण मेरे पापों को दूर करें. (२)

अभ्यञ्जनं सुरभि सा समृद्धिर्हिरण्यं वर्चस्तदु पूत्रिममेव.
सर्वा पवित्रा वितताध्यस्मत् तन्मा तारीन्निर्ऋतिर्मो अरातिः (३)

मेरे शरीर पर गिरी हुई वर्षा की बूंद सुगंधित तेल और उबटन मुझे पवित्र करने वाले ही हैं. पवित्रता के सभी कहे गए और न कहे गए साधन मेरे ऊपर फैले हैं. पवित्रता के साधनों से ढके हुए मेरे शरीर को पाप देवता निर्ऋति एवं कोई शत्रु अतिक्रमण न करे. (३)

सूक्त एक सौ पच्चीसवां देवता—वनस्पति

वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः.
गोभिः संनद्धो असि वीडयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि (१)

हे वृक्ष से बने हुए रस. तेरे अंग दृढ़ हों. तू हमारा सखा, शत्रुओं से हमें पार करने वाला और शोभन वीरों से युक्त है. तू गाय के चर्म से बनी हुई रस्सियों से बंधे होने के कारण दृढ़ हो. तुझ पर बैठा हुआ पुरुष शत्रुओं को जीतने वाला हो. (१)

दिवस्पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृतं सहः.
अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रं हविषा रथं यज (२)

हे रस! तेरा बल आकाश के पास से प्राप्त हुआ है. सार वाले वृक्षों से प्राप्त बल ही यह रथ है. जलों का बल एवं गाय के चर्म से बनी रस्सियों से ढका हुआ यह रथ इंद्र के वज्र के समान गति वाला हो. हे होता! इस प्रकार के रथ का हव्य से यजन करो. (२)

इन्द्रस्यौजो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः.
स इमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय (३)

हे दिव्य गुणों से युक्त रथ! तुम इंद्र के बल, मरुतों की सेना, मित्र अर्थात सूर्य के गर्भ और वरुण की नाभि हो. इस प्रकार के तुम हमारी यज्ञ क्रिया की सेवा करते हुए हवि को ग्रहण करो. (३)

सूक्त एक सौ छब्बीसवां देवता—दुंदुभि

उप श्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते वन्वतां विष्ठितं जगत्.
स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद् दवीयो अप सेध शत्रून् (१)

हे दुंदुभि! तू अपने घोष से पृथ्वी और आकाश को भर दे. अनेक प्रकार से स्थित प्राणी अनेक देशों में तेरा जय घोष सुनें. इस प्रकार का तू संग्राम के देव इंद्र और उन के अनुचर मरुतों के द्वारा हमारे शत्रुओं को दूर से भी दूर स्थान पर भगा दे. (१)

आ क्रन्दय बलमोजो न आ धा अभि ष्टन दुरिता बाधमानः.
अप सेध दुन्दुभे दुच्छुनामित इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व (२)

हे दुंदुभि! तू अपने शब्द से शत्रु की सेना अर्थात रथ, घोड़े हाथी और पैदल सैनिकों को पराजित कर के हमारे बल को बढ़ा. तू पराजय के कारणों और शत्रुओं द्वारा दिए हुए दुखों को दूर करता हुआ ऐसा श्रवण कटु शब्द कर, जिस से शत्रुओं के हृदय फट जाएं. तू इस युद्ध स्थल से शत्रुओं की सेना को भगा दे. तू इंद्र देव की मुट्ठी के समान शत्रु नाशकारी है, इसलिए तू दृढ़ हो. (२)

प्रामूं जयाभीऽमे जयन्तु केतुमद् दुन्दुभिर्वावदीतु.
समश्वपर्णाः पतन्तु नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु (३)

हे इंद्र! तुम दूर दिखाई देने वाली शत्रु सेना को इस प्रकार पराजित करो कि वह दोबारा हम पर आक्रमण न कर सके. हमारे योद्धा शत्रु सेना पर विजय प्राप्त करें तथा विजय सूचक दुंदुभि बजाएं. हमारे सेनानायक घोड़ों पर सवार हो कर युद्ध भूमि में जाएं तथा हमारे अमात्य और राजा विजयी हों. (३)

सूक्त एक सौ सत्ताईसवां   देवता—वनस्पति

विद्रधस्य बलासस्य लोहितस्य वनस्पते.
विसल्पकस्यौषधे मोच्छिषः पिशितं चन (१)

हे पलाश वृक्ष एवं हे विसर्प व्याधि की ओषधि! खांसी और सांस से रक्त बहाने वाले विसर्पक रोग से संबंधित मांस, रक्त आदि को हम से दूर करो. (१)

यौ ते बलास तिष्ठतः कक्षे मुष्कावपश्रितौ.
वेदाहं तस्य भेषजं चीपुद्रुरभिचक्षणम् (२)

हे खांसी और सांस रोग! तेरे विसर्पक आदि रूप कांख अर्थात बगल में विदग्धि नाम के विशेष घाव के रूप में स्थित रहते हैं तथा अंडकोषों में आश्रय लेते हैं. मैं उन की ओषधि जानता हूं, चीपुद्र नाम का विशेष वृक्ष इसे मिटाने वाली ओषधि है. (२)

यो अङ्ग्यो यः कर्ण्यो यो अक्ष्योर्विसल्पकः.
वि वृहामो विसल्पकं विद्रधं हृदयामयम्.
परा तमज्ञातं यक्ष्ममधराञ्चं सुवामसि (३)

हमारे हाथ, पैर आदि अंगों में, कानों में और आंखों में जो विसर्पक हैं, उन्हें मैं जड़ से उखाड़ता हूं. मैं विदग्धि को, हृदय रोग को तथा अज्ञात स्वरूप वाले यक्ष्मा रोग को भी नीचे की ओर विमुख करता हूं. (३)

सूक्त एक सौ अट्ठाईसवां   देवता—शकधूम, सोम

शकधूमं नक्षत्राणि यद् राजानमकुर्वत.
भद्राहमस्मै प्रायच्छन्निदं राष्ट्रमसादिति (१)

प्राचीन काल में शकधूम नाम के ब्राह्मण को तारों ने चंद्रमा के समान राजा बनाया. मुझ भद्रा ने इस शकधूम ब्राह्मण को प्राचीन काल में कल्याणकारी समय इसलिए दिया था कि उसे नक्षत्र मंडल का स्वामित्व प्राप्त हो. (१)

भद्राहं नो मध्यन्दिने भद्राहं सायमस्तु नः.
भद्राहं नो अह्नां प्राता रात्री भद्राहमस्तु नः (२)

हमारे लिए दोपहर और सायंकाल पुण्यकारक हों. इस के अतिरिक्त प्रातःकाल और पूरी रात्रि भी हमारे लिए शुभ हो. (२)

अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम्.
भद्राहमस्मभ्यं राजञ्छकधूम त्वं कृधि (३)

हे शकधूम ब्राह्मण तथा हे नक्षत्रों के राजा चंद्रमा! रातदिन, नक्षत्रों, सूर्य और

चंद्रमा के पास हमारे लिए पुण्य वाला दिन लाओ. (३)

यो नो भद्राहमकरः सायं नक्तमथो दिवा.
तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदा नमः (४)

हे शकधूम ब्राह्मण और हे तारों के स्वामी चंद्रमा ! तुम ने जो सायंकाल में, रात में और दिन में हमारा कल्याण किया, उसे तुम्हारे लिए नमस्कार है. (४)

सूक्त एक सौ उन्तीसवां — देवता—भग

भगेन मा शांशपेन साकमिन्द्रेण मेदिना. कृणोमि भगिनं माप द्रान्त्वरातयः (१)

मैं गाय एवं भैंस के खुरों की आकृति वाले देव के द्वारा अपने आप को सौभाग्यशाली बनाता हूं. मैं अपनी सेवा से संतुष्ट इंद्र के द्वारा अपने को सौभाग्यशाली बनाता हूं. हमारे शत्रु हमारे समीप से दूर चले जाएं और बुरी दशा को प्राप्त हों. (१)

येन वृक्षां अभ्यभवो भगेन वर्चसा सह.
तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः (२)

हे ओषधि! तुम जिस सौभाग्य प्रदान करने वाले देव से तेज प्राप्त कर के समीपवर्ती वृक्षों का तिरस्कार करती हो, उसी सौभाग्य से मुझे सौभाग्यशाली बनाओ. हमारे शत्रु हम से दूर चले जाएं और बुरी गति को प्राप्त हों. (२)

यो अन्धो यः पुनःसरो भगो वृक्षेष्वाहितः.
तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः (३)

जो भग नामक देव, अंधे होने के कारण आगे चलने में असमर्थ हैं और मार्ग में स्थित वृक्षों को नहीं छोड़ते हैं, हे ओषधि! मुझे उस भाग्य से भाग्यशाली बनाओ. हमारे शत्रु हम से दूर चले जाएं और बुरी दशा को प्राप्त हों. (३)

सूक्त एक सौ तीसवां — देवता—स्मर

रथजितां राथजितेयीनामप्सरसामयं स्मरः.
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु (१)

हे रथजिता अर्थात माष नाम की जड़ीबूटी! अपने वाहन रथ से विश्व को जीतने वाली एवं विशेष वैराग्य उत्पन्न करने वाली अप्सराओं से संबंधित स्मर अर्थात कामदेव को दूर करो. हे देव! उस कामदेव को इस नारी के समीप भेजो. मुझ से विमुख यह स्त्री कामदेव से पीड़ित हो कर मेरी याद कर के दुखी हो. (१)

असौ मे स्मरतादिति प्रियो मे स्मरतादिति.
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु (२)

यह पुरुष मेरा स्मरण करे तथा मेरे प्रति अनुराग पूर्ण हो कर मेरा स्मरण करे. हे देव! इस के प्रति कामदेव को भेजो, जिससे यह मेरा स्मरण करे और मेरे स्मरण के कारण दुखी हो. (२)

यथा मम स्मरादसौ नामुष्याहं कदा चन.
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु (३)

जिस प्रकार यह दुष्टा स्त्री मेरा स्मरण करती है, उस प्रकार आर्त हो कर मैं कभी भी इस स्त्री का स्मरण नहीं करता हूं. हे देवो! कामदेव को इस की ओर भेजो, जिस से यह मेरा स्मरण करे और मेरे स्मरण के कारण दुख का अनुभव करे. (३)

उन्मादयत मरुत उदन्तरिक्ष मादय.
अग्न उन्मादया त्वमसौ मामनु शोचतु (४)

हे मरुद्गण! इस स्त्री को मतवाली बनाओ. हे आकाश! तुम भी इसे मतवाली बना कर मेरे वश में करो. हे अग्निदेव! तुम इसे मतवाली बनाओ, जिस से यह अपने आप को भूल कर मेरा चिंतन करे. (४)

सूक्त एक सौ इकतीसवां — देवता—स्मर

नि शीर्षतो नि पत्तत आध्यो३ नि तिरामि ते.
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु (१)

हे पत्नी! मैं तेरे सिर से ले कर सारे शरीर में चिंताओं का प्रवेश कराता हूं! देवगण तेरे प्रति कामदेव को भेजें, जिस से दुखी होकर तू मेरा चिंतन करे. (१)

अनुमतेऽन्विदं मन्यस्वाकूते समिदं नमः.
देवाः प्र हिणुत स्मरमसौ मामनु शोचतु (२)

हे सब कर्मों की अनुमति देने वाली देव पत्नी! मुझ पर कृपा करो. हे संकल्प की देवी आकृति! तुम मेरे इस नमस्कार को स्वीकार करो. हे देवो! इस के प्रति कामदेव को भेजो, जिस से दुखी हो कर यह मेरा स्मरण करे. (२)

यद् धावसि त्रियोजनं पञ्चयोजनमाश्विनम्.
ततस्त्वं पुनरायसि पुत्राणां नो असः पिता (३)

हे पुरुष! यदि तू यहां से भाग कर तीन योजन दूर चला जाता है, पांच योजन दूर चला जाता है अथवा उतनी दूर चला जाता है, जितनी दूर घोड़ा दिन भर में पहुंच सकता है, तू वहां से भी मेरे पास आ जा और मेरे पुत्रों का पिता बन. (३)

सूक्त एक सौ बत्तीसवां — देवता—स्मर

यं देवाः स्मरमसिञ्चन्नप्स्व१न्तः शोशुचानं सहाध्या.
तं ते तपामि वरुणस्य धर्मणा (१)

सभी देवों ने कामदेव को उस की पत्नी, आधि अर्थात चिंता के साथ जल में डुबो दिया, क्योंकि वह उस के वियोग में संतप्त था. हे नारी! मैं तेरे लिए उस कामदेव को जल के स्वामी वरुण की धारण शक्ति से संतप्त करता हूं. (१)

यं विश्वे देवाः स्मरमसिञ्चन्नप्स्व१न्तः शोशुचानं सहाध्या.
तं ते तपामि वरुणस्य धर्मणा (२)

विश्वेदेव नामक देवों ने कामदेव को उस की पत्नी आधि अर्थात चिंता के साथ जल में डुबो दिया, क्योंकि वह उस के वियोग में संतप्त था. हे नारी! मैं तेरे लिए उस कामदेव को जल के स्वामी वरुण की धारण शक्ति से संतप्त करता हूं. (२)

यमिन्द्राणी स्मरमसिञ्चदप्स्व१न्तः शोशुचानं सहाध्या.
तं ते तपामि वरुणस्य धर्मणा (३)

इंद्र पत्नी ने कामदेव को उस की पत्नी आधि अर्थात चिंता के साथ जल में डुबो दिया, क्योंकि वह उस के वियोग में संतप्त था. हे नारी! मैं तेरे लिए उस कामदेव को जल के स्वामी वरुण की धारण शक्ति से संतप्त करता हूं. (३)

यमिन्द्राग्नी स्मरमसिञ्चतामप्स्व१न्तः शोशुचानं सहाध्या.
तं ते तपामि वरुणस्य धर्मणा (४)

इंद्र और अग्निदेवों ने कामदेव को उस की पत्नी आधि अर्थात चिंता के साथ जल में डुबो दिया, क्योंकि वह उस के वियोग में संतप्त था. हे नारी! मैं तेरे लिए उस कामदेव को जल के स्वामी वरुण की धारण शक्ति से संतप्त करता हूं. (४)

यं मित्रावरुणौ स्मरमसिञ्चतामप्स्व१न्तः शोशुचानं सहाध्या.
तं ते तपामि वरुणस्य धर्मणा (५)

मित्र और वरुण देवों ने कामदेव को उस की पत्नी आधि अर्थात चिंता के साथ जल में डुबो दिया, क्योंकि वह उस के वियोग में संतप्त था. हे नारी! मैं तेरे लिए उस कामदेव को जल के स्वामी वरुण की धारण शक्ति से संतप्त करता हूं. (५)

सूक्त एक सौ तैंतीसवां — देवता—मेखला

य इमां देवो मेखलामाबबन्ध यः संननाह य उ नो युयोज.
यस्य देवस्य प्रशिषा चरामः स पारमिच्छात् स उ नो वि मुञ्चात् (१)

शत्रुओं को मारने में कुशल देव ने अपने शत्रु को मारने के लिए यह मेखला बांधी है, जो इस समय भी दूसरों की मेखला को बांधता है, जिस ने मेखला के द्वारा हमें अभिचार कर्म में लगाया है तथा जिस देव की आज्ञा से हम चलतेफिरते हैं, वह हमारे द्वारा प्रारंभ किए गए अभिचार की समाप्ति की इच्छा करे. वही हमें शत्रुओं से छुड़ाए. (१)

आहुतास्यभिहुत ऋषीणामस्यायुधम्.
पूर्वा व्रतस्य प्राश्नती वीरघ्नी भव मेखले (२)

हे मेखला! तुम आहुतियों के द्वारा संस्कार की गई तथा बंधन हेतु बुलाई गई हो, जिस से वे शत्रुओं का बंधन करते थे. तुम प्रारंभ किए गए कर्म से पहले होने वाली तथा शत्रुओं के वीरों का विनाश करने वाली हो. (२)

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि निर्याचन् भूतात् पुरुषं यमाय.
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि (३)

मैं ब्रह्मचारी होने के कारण सूर्य के पुत्र यमराज का सेवक हूं. इसी कारण मैं प्राणियों में से अपने शत्रु के विनाश हेतु यमराज से प्रार्थना करता हूं. मारने योग्य उस शत्रु को मैं मंत्र, तप, शारीरिक दंड एवं मेखला के द्वारा बांधता हूं. (३)

श्रद्धाया दुहिता तपसोऽधि जाता स्वस ऋषीणां भूतकृतां बभूव.
सा नो मेखले मतिमा धेहि मेधामथो नो धेहि तप इन्द्रियं च (४)

श्रद्धा की पुत्री सृष्टि के आदि में ब्रह्म के तप से उत्पन्न हुई. प्राणियों को जन्म देने वाले मरीचि आदि ऋषियों की जो यह मेखला है, वह इसी प्रकार उत्पन्न हुई है. हे मेखला! तू हमें क्रांतदर्शिनी बुद्धि प्रदान कर तथा हमें मेधा दे. इस के अतिरिक्त तू मुझे ताप तथा वीर्य प्रदान कर. (४)

यां त्वा पूर्वे भूतकृत ऋषयः परिबेधिरे.
सा त्वं परि ष्वजस्व मां दीर्घायुत्वाय मेखले (५)

हे मेखला! पृथ्वी आदि तत्त्वों की रचना करने वाले प्राचीन ऋषियों ने तुझे बांधा था. दीर्घ आयु प्रदान करने के लिए तू मेरा भी आलिंगन कर. (५)

सूक्त एक सौ चौंतीसवां — देवता—वज्र

अयं वज्रस्तर्पयतामृतस्यावास्य राष्ट्रमप हन्तु जीवितम्.
शृणातु ग्रीवाः प्र शृणातूष्णिहा वृत्रस्येव शचीपतिः (१)

मेरे द्वारा धारण किया गया, यह दंड इंद्र के वज्र के समान सत्य और यज्ञ के सामर्थ्य से तृप्त हो. यह वज्र हमारे द्वेषी राजा के राष्ट्र का विनाश करे तथा उस की गले की हड्डियां काट दे. यह गले की धमनियों को भी उसी प्रकार काट दे, जिस प्रकार शचीपति इंद्र ने वृत्र के गले की धमनियां काटी थी. (१)

अधरोऽधर उत्तरेभ्यो गूढः पृथिव्या मोत्सृपत्.
वज्रेणावहतः शयाम् (२)

अधिक ऊंचों की अपेक्षा, अतिशय अधोगति वाला एवं धरती में छुपा हुआ धरती से

बाहर न निकले, वह इस वज्र के द्वारा घायल हो कर सोता रहे. (२)

यो जिनाति तमन्विच्छ यो जिनाति तमिज्जहि.
जिनतो वज्र त्वं सीमन्तमन्वञ्चमनु पातय (३)

हे वज्र! जो शत्रु हमें हानि पहुंचाता है, उसी के समीप जा. जो हमें हानि पहुंचाता है, उसी को मार. जो शत्रु हमें हानि पहुंचाता है, तू उस के शरीर के भागों को विदीर्ण कर. (३)

सूक्त एक सौ पैंतीसवां देवता—वज्र

यदश्नामि बलं कुर्व इत्थं वज्रमा ददे.
स्कन्धानमुष्य शातयन् वृत्रस्येव शचीपतिः (१)

मैं जो भोजन करता हूं, उस से मुझे बल प्राप्त होता है. उस बल से मैं वज्र पकड़ता हूं. हे वज्र! इंद्र ने जिस प्रकार राक्षस के शरीर के अवयवों को काट डाला था, उसी प्रकार तू मेरे शत्रु के शरीर को काट डाल. (१)

यत् पिबामि सं पिबामि समुद्र इव संपिबः.
प्राणानमुष्य संपाय सं पिबामो अमुं वयम् (२)

मैं जो जल पीता हूं, उस के द्वारा मानव शत्रु को पकड़ कर उस का रस पीता हूं. जिस प्रकार सागर नदी मुख से पूरा जल ग्रहण कर के पी जाता है, उसी प्रकार मैं शत्रु का रस पीता हूं. मैं पहले इस शत्रु के प्राणों को रस बना कर पीता हूं और बाद में इस पूरे शत्रु का विनाश कर देता हूं. (२)

यद् गिरामि सं गिरामि समुद्र इव संगिरः.
प्राणानमुष्य संगीर्य सं गिरामो अमुं वयम् (३)

मैं जो कुछ निगलता हूं, उस के द्वारा अपने मानव शत्रु को ही निगल जाता हूं. जिस प्रकार सागर नदी के जल को निगल जाता है, उसी प्रकार मैं शत्रु के अंगों को निगलता हूं. मैं पहले इस शत्रु के अंगों को निगलता हूं और बाद में इसे समाप्त कर देता हूं. (३)

सूक्त एक सौ छत्तीसवां देवता—वनस्पति

देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे.
तां त्वा नितत्नि केशेभ्यो दृंहणाय खनामसि (१)

हे प्रकाश करती हुई, कालमाची नामक जड़ीबूटी! तू दिव्य पृथ्वी में उत्पन्न हुई है. हे नीचे की ओर जाने वाली जड़ीबूटी! मैं तुझे अपने केशों को दृढ़ करने के लिए खोदता हूं. (१)

दृंह प्रत्नाज्जनयाजाताञ्जातानु वर्षीयसस्कृधि (२)

हे जड़ीबूटी! तू मेरे केशों को दृढ बना तथा मेरे जो केश उत्पन्न नहीं हुए, उन्हें उत्पन्न कर. मेरे जो केश उत्पन्न हो गए हैं, उन्हें तू अधिक विशाल बना दे. (२)

यस्ते केशोऽवपद्यते समूलो यश्च वृश्चते.
इदं तं विश्वभेषज्याभि षिञ्चामि वीरुधा (३)

हे केशों को दृढ़ करने के इच्छुक पुरुष! तेरा जो केश धरती पर गिरता है तथा जो जड़ रहित काटा जाता है, मैं तेरे उन सभी केशों को, केश संबंधी रोगों का विनाश करने वाली ओषधि से गीला करता हूं. (३)

सूक्त एक सौ सैंतीसवां देवता—वनस्पति

यां जमदग्निरखनद् दुहित्रे केशवर्धनीम्.
तां वीतहव्य आभरदसितस्य गृहेभ्यः (१)

जमदग्नि ऋषि ने अपनी पुत्री के केशों को बढ़ाने वाली जिस ओषधि को खोदा था उसे वीतहव्य महर्षि ने अपने केश बढ़ाने के लिए असित केश नामक मुनि के घर से जिसे चुराया था. (१)

अभीशुना मेया आसन् व्यामेनानुमेयाः.
केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि (२)

हे केशों को बढ़ाने के इच्छुक पुरुष! पहले तेरे केश अंगुलों में (दो अंगुल, चार अंगुल आदि रूप में) नापने योग्य थे. इस के पश्चात वे दोनों हाथ फैला कर नापने योग्य हो गए. हे पुरुष! तेरे शीश के चारों ओर केश नड नामक घास के समान बढ़ें. (२)

दृंह मूलमाग्रं यच्छ वि मध्यं यामयौषधे.
केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि (३)

हे ओषधि, मेरे बालों की जड़ों को दृढ़ बना तथा उन के ऊपरी भाग को लंबा बना. इस के अतिरिक्त तू मेरे केशों के मध्य भाग को दृढ़ बना. हे पुरुष! तेरे शीश के चारों ओर केश नई घास के समान बढ़ें. (३)

सूक्त एक सौ अड़तीसवां देवता—वनस्पति

त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमाभिश्रुतास्योषधे. इमं मे अद्य पूरुषं क्लीबमोपशिनं कृधि (१)

हे शक्तिहीन करने वाली जड़ीबूटी! तू सभी लताओं में श्रेष्ठ एवं सभी ओर प्रसिद्ध है. आज मेरे इस शत्रु पुरुष को नपुंसक तथा स्त्री के समान बना दे. (१)

क्लीबं कृध्योपशिनमथो कुरीरिणं कृधि.

अथास्येन्द्रो ग्रावभ्यामुभे भिनत्त्वाण्ड्यौ (२)

हे जड़ीबूटी! मेरे शत्रु को नपुंसक तथा स्त्री के समान बना दे. तू इसे स्त्री के समान बड़ेबड़े केशों वाला बना दे. इस के पश्चात इंद्र इस के दोनों अंडकोषों को पत्थरों से फोड़ डालें. (२)

क्लीब क्लीबं त्वाकरं वध्रे वध्रिं त्वाकरमरसारसं त्वाकरम्.
कुरीरमस्य शीर्षणि कुम्बं चाधिनिदध्मसि (३)

हे नपुंसक! मैं ने तुझे इस अनुष्ठान के द्वारा नपुंसक बना दिया है. हे षंढ अर्थात जन्मजात नपुंसक! मैं ने तुझे षंढ बना दिया है. हे वीर्यहीन! मैं ने तुझे वीर्य रहित बना दिया है. मैं नपुंसक बने हुए इस पुरुष के शीश पर नारियों के शृंगार बने हुए केश समूह को उत्पन्न करता हूं. (३)

ये ते नाड्यौ देवकृते ययोस्तिष्ठति वृष्ण्यम्.
ते ते भिनद्मि शम्ययामुष्या अधि मुष्कयोः (४)

तेरी ये नाड़ियां विधाता द्वारा बनाई गई हैं, जिन में वीर्य आश्रय लेता है. मैं अंडकोषों पर स्थित तेरी उन वीर्यवाहिनी नाड़ियों को पत्थर पर रख कर डंडे से तोड़ता हूं. (४)

यथा नडं कशिपुने स्त्रियो भिन्दन्त्यश्मना.
एवा भिनद्मि ते शेपोऽमुष्या अधि मुष्कयोः (५)

स्त्रियां चटाई बनाने के लिए जिस प्रकार नड नामक घास को पत्थर से कूटती हैं, हे शत्रु! मैं तेरे अंडकोषों को उसी प्रकार पत्थर के ऊपर रख कर दूसरे पत्थर से फोड़ता हूं. (५)

सूक्त एक सौ उन्तालीसवां देवता—वनस्पति

न्यस्तिका रुरोहिथ सुभगंकरणी मम. शतं तव प्रतानास्त्रयस्त्रिंशन्नितानाः.
तया सहस्रपर्ण्या हृदयं शोषयामि ते (१)

हे शंखपुष्पी! तू दुर्भाग्य के लक्षण को पूरी तरह निगलती हुई उत्पन्न होती है. तू मेरे सौभाग्य का निर्माण करती है. हे जड़ीबूटी! तेरी सौ शाखाएं तथा तैंतीस जड़ें हैं. हे नारी! इस हजार पत्तों वाली शंखपुष्पी के द्वारा मैं तेरे हृदय को कामाग्नि से संतप्त करता हूं. (१)

शुष्यतु मयि ते हृदयमथो शुष्यत्वास्यम्.
अथो नि शुष्य मां कामेनाथा शुष्कास्या चर (२)

हे कामिनी! मेरे विषय में तेरा हृदय संतप्त हो. तेरा मुख भी सूख जाए इस के अतिरिक्त तू मेरे प्रति अभिलाषा करती हुई अत्यधिक संतप्त हो. तू सूखे मुंह वाली

बन कर मेरे समीप आ. (२)

संवननी समुष्पला बभ्रु कल्याणि सं नुद.
अमूं च मां च सं नुद समानं हृदयं कृधि (३)

हे पीले पत्तों वाली एवं कल्याण करने वाली जड़ीबूटी! तू वशीकरण करने वाली है. तू फलों से युक्त हो कर उस नारी को मेरे समीप आने की प्रेरणा दे. इस के पश्चात मुझ कामुक और कामिनी को मिला दे. (३)

यथोदकमपपुषोऽपशुष्यत्यास्यम्.
एवा नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर (४)

हे कामिनी! जिस प्रकार जल न पीने वालों का मुंह सूख जाता है, उसी प्रकार तू मेरे प्रति काम भावना से संतप्त हो. तू सूखे मुंह वाली बन कर मेरे समीप आ. (४)

यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः.
एवा कामस्य विच्छिन्नं सं धेहि वीर्यावति (५)

हे अतिशय वीर्यवर्धक जड़ीबूटी! न्यौला जिस प्रकार सांप के टुकड़े कर के पुनः उन्हें जोड़ता है, उसी प्रकार स्त्री के विमुख होने के कारण जो मुझ में कामविकार आ गया है उसे दूर कर के मुझे मेरी पत्नी से पुनः मिला दें. (५)

सूक्त एक सौ चालीसवां — देवता—ब्रह्मणस्पति

यौ व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च.
यौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः (१)

हे ब्रह्मणस्पति और हे जातवेद अग्नि! बाघ के समान जो दो दांत ऊपर की पंक्ति में अतिरिक्त रूप से नीचे की ओर मुंह कर के स्थित हैं, वे मातापिता को खाना चाहते हैं. वे दांत मातापिता का कल्याण करने वाले हों. (१)

व्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्.
एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च (२)

हे पहले निकले हुए, ऊपर वाले दो दांतो! तुम गेहूं, जौ, उर्द और तिल खाओ. तुम्हारे रमणीय फल के लिए ही गेहूं, जौ आदि का भाग रखा गया है. तुम माता और पिता की हिंसा मत करो. (२)

उपहूतौ सयुजौ स्योनौ दन्तौ सुमङ्गलौ.
अन्यत्र वां घोरं तन्व१: परैतु दन्तौ हिंसिष्टं पितरं मातरं च (३)

दोनों ऊपर वाले दांत देव के द्वारा अनुमति प्राप्त, मित्र बने हुए, सुखकारक एवं शोभन हों. हे दोनों दांतो! नरमादा का संकेत करने वाला चिह्न बनाओ. वह चिह्न

पुत्र, पौत्र आदि के रूप में समृद्धि करने वाला हो. (३)

सूक्त एक सौ इकतालीसवां — देवता—अश्विनीकुमार

वायुरेनाः समाकरत् त्वष्टा पोषाय ध्रियताम्.
इन्द्र आभ्यो अधि ब्रवद् रुद्रो भूम्ने चिकित्सतु (१)

वायुदेव हमारी इन गायों को एकत्र करें, त्वष्टा देव इन्हें पोषण के लिए धारण करें, इंद्र इन के प्रति प्रेम भरी बातें कहें तथा रुद्रदेव इन की संख्या वृद्धि के लिए इन की चिकित्सा करें. (१)

लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि.
अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु (२)

हे गोपाल! तांबे के बने हुए लाल रंग के शस्त्र से गाय के बछड़ों और बछियों के कानों में नर और मादा होने का चिह्न बनाओ. अश्विनीकुमार भी इन के कानों में इसी प्रकार का चिह्न बनाएं. यह चिह्न पूजा के रूप में संख्या में अधिकता प्राप्त करे. (२)

यथा चक्रुर्देवासुरा यथा मनुष्या उत.
एवा सहस्रपोषाय कृणुतं लक्ष्माश्विना (३)

देवों और असुरों ने पशुओं के कानों में शस्त्र से जिस प्रकार का नरमादा होने का चिह्न बनाया, मनुष्यों ने भी इसी प्रकार चिह्न बनाया. अश्विनीकुमार गायों की असीमित वृद्धि के लिए इसी प्रकार का चिह्न बनाएं. (३)

सूक्त एक सौ बयालीसवां — देवता—वायु

उच्छ्रयस्व बहुर्भव स्वेन महसा यव.
मृणीहि विश्वा पात्राणि मा त्वा दिव्याशनिर्वधीत् (१)

हे जौ अन्न! तू उगता हुआ ऊंचा हो तथा अनेक प्रकार का बन. तू अपने तेज से कुसूल, कोष्ठ आदि सभी पात्रों को भर दे. आकाश से गिरने वाला वज्र तेरी हिंसा न करे. (१)

आशृण्वन्तं यवं देवं यत्र त्वाच्छावदामसि.
तदुच्छ्रयस्व द्यौरिव समुद्र इवैध्यक्षितः (२)

सामने हो कर हमारी बात सुनते हुए जौ नामक देव की मैं इस भूमि में प्रार्थना करता हूं. तू धरती पर आकाश के समान ऊंचा हो तथा सागर के समान क्षय रहित हो कर बढ़. (२)

अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः.

पृणन्तरे अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः (३)

हे जौ! तुझ से संबंधित कर्म करने वाले विनाश रहित हों. तेरे ढेर नाश रहित हों. तुझे घर में रखने को ले जाने वाले लोग विनाश रहित हों. तुझे खाने वाले लोग भी विनाश रहित हों. (३)

सातवां कांड

सूक्त पहला
देवता—आत्मा

धीती वा ये अनयन् वाचो अग्रं मनसा वा येऽवदन्नृतानि.
तृतीयेन ब्रह्मणा वावृधानास्तुरीयेणामन्वत नाम धेनोः (१)

प्रजापति अथवा इंद्र और अग्नि की स्तुति करने वालों ने वाणी व्यवहार के समस्त अर्थ का ध्यान किया. जिन कहने के इच्छुकों ने देवता वाचक शब्दों के रूप में सत्य बोला, उन्होंने तृतीय ब्रह्म अर्थात मध्यमा नामक भाषा शक्ति के द्वारा वृद्धि प्राप्त करते हुए चौथी अर्थात वैखरी वाणी से प्रसन्न होने वाले प्रजापति का नाम उच्चारण किया. (१)

स वेद पुत्रः पितरं स मातरं स सूनुर्भुवत् स भुवत् पुनर्मघः.
स द्यामौर्णोदन्तरिक्षं स्व१: स इदं विश्वमभवत् स आभवत् (२)

भलीभांति जानने वाले पुत्रों को अनर्थ से बचाने वाला प्रजापति द्युलोक तथा पृथ्वी को जानता है. वह प्रजापति संसार के लोगों को अपनेअपने कर्म करने की प्रेरणा देता है. वह आकाश तथा पृथ्वी को अपनी महिमा से व्याप्त करता है. वह प्रजापति ही यह दिखाई देता हुआ विश्व बन गया है. (२)

सूक्त दूसरा
देवता—आत्मा

अथर्वाणं पितरं देवबंधु मातुर्गर्भं पितुरसुं युवानम्.
य इमं यज्ञं मनसा चिकेत प्र णो वोचस्तमिहेह ब्रवः (१)

प्रजाओं के पालक देवों की सृष्टि करने वाले, माता के गर्भ से जन्म लेने वाले बालक को युवा बनाने वाले एवं गर्भ के जनक को प्राण युक्त करने वाले प्रजापति से मैं अपनी अभिलाषा की सिद्धि के लिए याचना करता हूं. उस ने इस ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ को मन से जाना है. हे ब्रह्म! उस प्रजापति को मुझे बताओ. इस बात की अभिलाषा पूर्ण करने वाले यज्ञ कर्म में बताओ. (१)

सूक्त तीसरा
देवता—आत्मा

अया विष्ठा जनयन् कर्वराणि स हि घृणिरुरुर्वराय गातुः.

स प्रत्युदैद् धरुणं मध्वो अग्रं स्वया तन्वा तन्वमैरयत (१)

इस माया के द्वारा विश्व आत्मा के रूप में स्थित यह प्रजापति यज्ञ आदि कर्मों को उत्पन्न करता है. वह दीप्तिशाली उत्तम कर्म फल के लिए महान मार्ग है. वह स्थायी एवं चिरकाल तक रहने वाले मधुर जल को उत्पन्न करता है. उस ने अपने विराट शरीर के द्वारा सभी प्राणियों के शरीरों को प्रेरित किया है. (१)

सूक्त चौथा देवता—वायु

एकया च दशभिश्चा सुहुते द्वाभ्यामिष्टये विंशत्या च.
तिसृभिश्च वहसे त्रिंशता च वियुग्भिर्वाय इह ता वि मुञ्च (१)

हे शोभन आह्वान वाले वायुदेव! सब के प्रेरक प्रजापति अपने रथ में जुड़े हुए ग्यारह घोड़ों के सहारे हमारे यज्ञ में आएं. तुम बाईस तथा तैंतीस अश्वों के द्वारा वहन किए जाते हो. हे वायु! हमारे यज्ञ में आ कर अपने घोड़ों को यहीं रोके रहो अर्थात हमारे यज्ञ से दूसरी जगह मत जाओ. (१)

सूक्त पांचवां देवता—आत्मा

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्.
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः (१)

देवत्व को प्राप्त यजमानों ने अग्नि के द्वारा यज्ञ पूर्ण किया. अग्नि के कर्म उन के प्रमुख कर्म थे. वे महत्त्व युक्त देव स्वर्ग को प्राप्त हुए. वहां प्राण के अभिमानी प्राचीन देव निवास करते हैं. (१)

यज्ञो बभूव स आ बभूव स प्र जज्ञे स उ वावृधे पुनः.
स देवानामधिपतिर्बभूव सो अस्मासु द्रविणमा दधातु (२)

यज्ञ रूप प्रजापति, विश्व आत्मा के रूप में प्रसिद्ध एवं सब के कारण हुए. वे प्रसिद्ध हुए तथा वे आज भी जगत की आत्मा के रूप में बारबार बढ़ते हैं. वे इंद्र आदि देवों में प्रमुख हुए. यह यज्ञ हम सेवकों को अधिक धन प्रदान करे. (२)

यद् देवा देवान् हविषायजन्तामर्त्यान् मनसामर्त्येन.
मदेम तत्र परमे व्योमन् पश्येम तदुदितौ सूर्यस्य (३)

कर्म से देवत्व को प्राप्त जनों ने न मरने वाले इंद्र आदि देवों के हेतु देव विषयक मन से चरू, पुरोडाश आदि के द्वारा यज्ञ किया. हम यजमान उस विशाल स्वर्ग में प्रसन्न हों एवं जब तक सूर्य का प्रकाश रहे, तब तक इस यज्ञ का फल रहे. (३)

यत् पुरुषेण हविषा यज्ञं देवा अतन्वत.
अस्ति नु तस्मादोजीयो यद्विहव्येनेजिरे (४)

यजमानों ने पुरुष रूप हवि से पुरुषमेध नामक यज्ञ का विस्तार किया. उस में जो ओजस्वी एवं सारवान है उसे हवि के रूप में देखा. (४)

मुग्धा देवा उत शुनायजन्तोत गोरङ्गैः पुरुधायजन्त.
य इमं यज्ञं मनसा चिकेत प्र णो वोचस्तमिहेह ब्रवः (५)

कार्य और अकार्य के विवेक से हीन यजमानों ने कुत्ते के द्वारा यज्ञ किया तथा गाय के अंगों के द्वारा भी अनेक बार यज्ञ किया. जो इस यज्ञ करने योग्य परमात्मा को मन से जानता है, वह गुरु हमें बताओ. उसे यहीं और इसी समय परमात्मा का स्वरूप बताओ. (५)

सूक्त छठा देवता—अदिति

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः.
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् (१)

खंड न होने योग्य जो पृथ्वी एवं देवमाता है, वही स्वर्ग और अंतरिक्ष है. वही संसार की निर्मात्री माता और उत्पन्न करने वाला पिता है. वही माता और पिता से उत्पन्न पुत्र है. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं निषाद—ये पांच जातियों वाले जन भी अदिति हैं. प्रजाओं की उत्पत्ति और जन्म का अधिकरण भी अदिति है. (१)

महीमू षु मातरं सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हवामहे.
तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूचीं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् (२)

महती एवं शोभन कर्मों वाली माता को सत्य और यज्ञ का पालन करने वाली माता के उद्देश्य से हम अपनी रक्षा के लिए यज्ञ करते हैं. अधिक बल एवं शक्ति संपन्न, विनाश रहित, अति दूर तक जाने वाली, शोभन सुख वाली एवं उत्तम कर्मों से प्रसन्न होने वाली देव माता अदिति को हम अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं. (२)

सूक्त सातवां देवता—अदिति

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्.
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसो अस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये (१)

भलीभांति रक्षा करती हुई, विस्तीर्ण, पहुंचने योग्य, पाप रहित, सुख वाली सुखमय कर्मों की प्रेरणा एवं अखंडनीय दैवी नाव में हम सवार हों. उस शोभन डांडों वाली एवं छिद्र रहित दैवी नाव पर अपराध न करने वाले हम कल्याण प्राप्त करने के लिए सवार हों. (१)

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे.
यस्या उपस्थ उर्व१न्तरिक्षं सा नः शर्म त्रिवरूथं नि यच्छात् (२)

हम अन्न की उत्पत्ति के लिए, अन्न का निर्माण करने वाली विशाल एवं

अखंडनीय अदिति की स्तुति करते हैं. जिस अदिति की गोद में विस्तृत आकाश है, वही अदिति हमें तीन मंजिला और तीन कक्षों वाला घर प्रदान करे. (२)

सूक्त आठवां देवता—अदिति

दितेः पुत्राणामदितेरकारिषमव देवानां बृहतामनर्मणाम्.
तेषां हि धाम गाभिषक् समुद्रियं नैनान् नमसा परो अस्ति कश्चन (१)

मैं दिति के पुत्रों अर्थात दैत्यों का स्थान छीन कर अदिति के पुत्रों अर्थात देवों को देता हूं. वे देव गुणों से महान एवं शत्रुओं द्वारा पराजित न होने वाले हैं. उन का सागर अथवा आकाश में स्थित निवास स्थान दूसरों के लिए दुर्जेय और दुर्गम है. इन देवों से महान कोई भी नहीं है. (१)

सूक्त नौवां देवता—बृहस्पति

भद्रादधि श्रेयः प्रेहि बृहस्पतिः पुरएता ते अस्तु.
अथेममस्या वर आ पृथिव्या आरेशत्रुं कृणुहि सर्ववीरम् (१)

हे वस्त्र, धन आदि का लाभ चाहने वाले पुरुष! तू उत्तरोतर कल्याणकारी संपत्ति प्राप्त कर. लाभ के हेतु जाते हुए तेरे आगेआगे बृहस्पति चलें. हे बृहस्पति! तुम पृथ्वी के उस उत्तम स्थान पर इस पुरुष को स्थापित करो, जहां धन आदि लाभ प्राप्त हों. इस के सभी पुत्र, पौत्र आदि वीर हों एवं इस के शत्रु इस से दूर रहें. (१)

सूक्त दसवां देवता—पूषा

प्रपथे पथामजनिष्ट पूषा प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः.
उभे अभि प्रियतमे सधस्ते आ च परा च चरति प्रजानन् (१)

मार्ग रक्षक सूर्यदेव, मार्गों के आरंभ में रक्षा करने के लिए उपस्थित होते हैं. सूर्य देव पृथ्वी एवं आकाश के प्रवेश द्वार में उपस्थित होते हैं. अत्यधिक प्रेम करने वाले एवं परस्पर एक साथ स्थित धरती और आकाश दोनों को लक्षित कर के यजमानों द्वारा किए गए कर्म और उस का फल जानते हुए सूर्य आकाश से पृथ्वी पर आते हैं और पृथ्वी से आकाश पर जाते हैं. (१)

पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्मां अभयतमेन नेषत्.
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरोऽप्रयुच्छन् पुर एतु प्रजानन् (२)

सब के पोषक सूर्यदेव सभी दिशाओं को जानते हैं. वे हमें भयरहित मार्गों से ले चलें. कल्याण के दाता, दीप्तिपूर्ण एवं पुत्र, पौत्र आदि वीरों से युक्त तथा प्रमाद न करते हुए और हमें पूर्ण रूप से जानते हुए आगेआगे चलें. (२)

पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन. स्तोतारस्त इह स्मसि (३)

हे पूषा! अर्थात सूर्यदेव! तुम्हारे यज्ञरूप कर्म में संलग्न हम कभी भी नष्ट न हों. इस कर्म में हम सदा तुम्हारे स्तुतिकर्ता बनें. (३)

परि पूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम्.
पुनर्नो नष्टमाजतु सं नष्टेन गमेमहि (४)

पोषक सूर्यदेव अधिक दूर देश से भी धन देने के लिए अपना दाहिना हाथ फैलाएं. हमारा नष्ट हुआ धन पुनः हमारे पास आए. हम अपने नष्ट हुए धन से पुनः मिल जाएं. (४)

सूक्त ग्यारहवां देवता—सरस्वती

यस्ते स्तनः शशयुर्यो मयोभूर्यः सुम्नयुः सुहवो यः सुदत्रः.
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवे कः (१)

हे वाणी की देवी सरस्वती! तेरा जो स्तन शिशु का पोषण करता है, सुख प्रदाता है, दूसरों को सुख देता है, जो सब के द्वारा आह्वान किया जाता है, जो कल्याण के साधन देता है और जिस के द्वारा समस्त धनों का पोषण होता है, अपने इस प्रकार के स्तन को इस जन्मगृहीत करने वाले बालक के पीने योग्य बनाओ. (१)

सूक्त बारहवां देवता—सरस्वती

यस्ते पृथु स्तनयित्नुर्य ऋष्वो दैवः केतुर्विश्वमाभूषतीदम्.
मा नो वधीर्विद्युता देव सस्यं मोत वधी रश्मिभिः सूर्यस्य (१)

हे देवपर्जन्य! तुम्हारा जो विस्तृत और महान गर्जन करता हुआ वज्र है, जो बाधक, देव निर्मित एवं अनर्थ ज्ञापक वज्र है, वह इस सारे विश्व को व्याप्त करता है. हे पर्जन्य देव! इस प्रकार के वज्र से हमारी फसलों का विनाश मत करो, इस के अतिरिक्त सूर्य की किरणों से हमारी फसलों का विनाश मत होने दो. (१)

सूक्त तेरहवां देवता—सभा, समिति आदि

सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने.
येना संगच्छा उप मा स शिक्षाच्चारु वदानि पितरः संगतेषु (१)

विद्वानों का समाज एवं संग्राम करने वाले योद्धा जनों का समूह मेरी रक्षा करे. सारे संसार की सृष्टि करने वाले प्रजापति की वे दोनों पुत्रियां मेरी रक्षा करें. जो मेरी रक्षा के विषय में एकमत हैं, उन से मैं संगत होऊं तथा विद्वान मेरे समीप आ कर मुझे शिक्षा दें. हे सभासदजनो! जो मेरी कही बात का 'साधुसाधु' कह कर समर्थन करें, उन के साथ मिल कर मैं वादविवादों में न्याय युक्त उत्तर दूं. (१)

विद्म ते सभे नाम नरिष्टा नाम वा असि.
ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः (२)

हे सभा! मैं तेरे नामों को जानता हूं. तेरा नाम नरिष्टा अर्थात दूसरों के द्वारा अभिभूत न होने वाली है. तुझ से संबंधित जो सभासद हैं, वे सब मेरे समान वचन वाले अर्थात मेरा अनुमोदन करने वाले हों. (२)

एषामहं समासीनानां वर्चो विज्ञानमा ददे.
अस्याः सर्वस्याः संसदो मामिन्द्र भगिनं कृणु (३)

सभा में सामने बैठे हुए इन बोलने वालों के तेज और विज्ञान को मैं स्वीकार करता हूं. हे इंद्र! मुझे इस समुदाय में स्थित सभा का विजयी बनाओ. (३)

यद् वो मनः परागतं यद् बद्धमिह वेह वा.
तद् व आ वर्तयामसि मयि वो रमतां मनः (४)

हे सभासदो! तुम्हारा जो मन हम से हट कर दूर चला गया है तथा जो मन इस विषय से संबंधित है, मैं तुम्हारे उस मन को अपने अनुकूल करता हूं. तुम्हारा मेरी ओर आया हुआ मन मेरे अनुकूल चिंतन करे. (४)

सूक्त चौदहवां — देवता—सूर्य

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजांस्याददे.
एवा स्त्रीणां च पुंसां च द्विषतां वर्च आ ददे (१)

उदय होता हुआ सूर्य जिस प्रकार तारों का प्रकाश छीन लेता है, उसी प्रकार मैं द्वेष करने वाले स्त्रीपुरुषों के तेज का अपहरण करता हूं. (१)

यावन्तो मा सपत्नानामायन्तं प्रतिपश्यथ.
उद्यन्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आ ददे (२)

शत्रुओं के मध्य में जिन शत्रुओं को मैं युद्ध के लिए आता हुआ देख रहा हूं, उन के तेज का अपहरण मैं उसी प्रकार करता हूं, जिस प्रकार सूर्य उदय के समय सोने वाले पुरुषों का तेज छीन लेते हैं. (२)

सूक्त पंद्रहवां — देवता—सविता

अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुम्.
अर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम् (१)

धरती और आकाश का निर्माण करने वाले सविता देव की मैं स्तुति करता हूं. ये सवितादेव कमनीय कर्म करने वाले, यथार्थ के प्रेरक, रत्नों को धारण करने वाले एवं सब का प्रिय करने वाले हैं, इसलिए सब के माननीय हैं. (१)

ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत् सवीमनि.
हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपात् स्वः (२)

जिन सवितादेव की व्याप्त करने वाली दीप्ति उत्कृष्ट है तथा सारे

जगत को प्रकाशित करती है उन की आज्ञा होने पर शोभन कर्म वाले ब्रह्मा हाथ में सोना ले कर कल्पना के द्वारा सुख देने वाले सोम का निर्माण करते हैं. (२)

सावीर्हि देव प्रथमाय पित्रे वर्ष्माणमस्मै वरिमाणमस्मै.
अथास्मभ्यं सवितर्वार्याणि दिवोदिव आ सुवा भूरि पश्वः (३)

हे सवितादेव! इस प्रमुख एवं पुष्टि की कामना करने वाले यजमान को पुत्र, पौत्र आदि संतान की प्रेरणा दो. इस पुष्टि चाहने वाले यजमान को उत्तमता प्रदान करो. हे सवितादेव! इस के पश्चात हमारे लिए प्रतिदिन वरण करने योग्य फल एवं अधिक मात्रा में पशु प्रदान करो. (३)

दमूना देवः सविता वरेण्यो दधद् रत्नं दक्षं पितृभ्य आयूंषि.
पिबात् सोमं ममददेनमिष्टे परिज्मा चित् क्रमते अस्य धर्मणि (४)

दान देने की इच्छा रखने वाले, श्रेष्ठ एवं सब के प्रेरक सवितादेव धन एवं बल प्रदान करते हुए तथा पूर्वजों के पास से सौ वर्ष की आयु देते हुए निचोड़े गए सोम का पान करें. पिया हुआ यह सोम सवितादेव से संबंधित याग में सवितादेव को प्रसन्न करे. सभी ओर व्याप्त होने वाला वह सोम सविता देव के पेट में निवास करे. (४)

सूक्त सोलहवां

देवता—सविता

तां सवितः सत्यसवां सुचित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्ववाराम्.
यामस्य कण्वो अदुहत् प्रपीनां सहस्रधारां महिषो भगाय (१)

हे सब के प्रेरक सवितादेव! मैं सत्य से अनुमत, इच्छा करने योग्य एवं सब के द्वारा वरण करने योग्य तुम्हारी कृपा दृष्टि की याचना करता हूं. सवितादेव की उस कृपा दृष्टि को कण्व नामक ऋषि ने प्राप्त किया था. वह कृपादृष्टि अत्यधिक बढ़ी हुई, अनेक धाराओं वाली तथा सौभाग्यदायिनी थी. (१)

सूक्त सत्रहवां

देवता—सविता

बृहस्पते सवितर्वर्धयैनं ज्योतयैनं महते सौभगाय.
संशितं चित् सन्तरं सं शिशाधि विश्व एनमनु मदन्तु देवाः (१)

हे बृहस्पति एवं हे सवितादेव! सूर्योदय तक सोने वाले इस ब्रह्मचारी और यजमान को बढ़ाओ. इस यजमान और ब्रह्मचारी को महान सौभाग्य के लिए प्रकाशित करो. व्रत धारण करने वाले इस को भलीभांति कुशल बनाओ. सभी देव इस यजमान का अनुमोदन करें. (१)

सूक्त अठारहवां — देवता—धाता आदि

धाता दधातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः.
स नः पूर्णेन यच्छतु (१)

सभी साधनों से युक्त एवं जगत के पालक धाता देव हमारे लिए धन प्रदान करें. वे धातादेव हमें पूर्ण और समृद्ध करें. (१)

धाता दधातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम्.
वयं देवस्य धीमहि सुमतिं विश्वराधसः (२)

धातादेव हवि देने वाले मुझ यजमान को हमारे अभिमुख आने वाली, जीवनदायिनी एवं क्षीण न होने वाली सुमति प्रदान करें. हम भी क्षीण न होने वाले धन को धारण करने वाले धातादेव की अनुग्रह बुद्धि धारण करें. (२)

धाता विश्वा वार्या दधातु प्रजाकामाय दाशुषे दुरोणे.
तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु विश्वे देवा अदितिः सजोषाः (३)

धातादेव वरण करने योग्य समस्त फलों को धारण करें. वे फल प्राप्ति की इच्छा करने वाले यजमान के हेतु हों. उस यजमान के लिए इंद्र आदि अमृत प्रदान करें. वे सभी देव एवं देवमाता अदिति परस्पर मिल कर प्रयत्नशील हों. (३)

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिपतिर्नो अग्निः.
त्वष्टा विष्णु प्रजया संरराणो यजमानाय द्रविणं दधातु (४)

सभी कल्याणों के देने वाले धाता, कर्मों के प्रेरक सविता और वेदों के रक्षक प्रजापति, अग्नि, रूपों के निर्माता त्वष्टा, व्यापक देव विष्णु—ये सभी हमारे हवि को स्वीकार करें एवं यज्ञ करने वाले यजमान के लिए धन दें. (४)

सूक्त उन्नीसवां — देवता—पृथिवी, पर्जन्य

प्र नभस्व पृथिवि भिन्द्धी३दं दिव्यं नभः.
उद्नो दिव्यस्य नो धातरीशानो वि ष्या दृतिम् (१)

हे पृथ्वी! बादल फसल की वृद्धि के लिए तुझ पर महती वर्षा करेंगे. उस वर्षा के कारण तू दृढ़ बन. आकाश में उत्पन्न होने वाला यह बादल पृथ्वी को विदीर्ण करे. हे धाता! आकाश में होने वाले जल का भाग हमें प्रदान करो. तुम वर्षा प्रदान करने में समर्थ मेघरूपी जलपूर्ण मशक को छोड़ो अर्थात महती वर्षा करो. (१)

न घ्रंस्तताप न हिमो जघान प्र नभतां पृथिवी जीरदानुः.
आपश्चिदस्मै घृतमित् क्षरन्ति यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम् (२)

ग्रीष्म ऋतु हमें संताप न दे और शीत ऋतु हमें कांपने की बाधा न पहुंचाए.

अत्यधिक दान देने वाली पृथ्वी वर्षा से भीग जाए. इस यजमान के लिए जल भी प्रसन्नता कारक हों. जहां सोम नामक देव हैं, उस देश में सदा ही कल्याण होता है. (२)

सूक्त बीसवां देवता—प्रजापति, धाता

प्रजापतिर्जनयति प्रजा इमा धाता दधातु सुमनस्यमान.:
संजानाना: संमनस: सयोनयो मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु (१)

प्रजापति इस पुत्र, पौत्र आदि रूप प्रजा को उत्पन्न करें तथा अनुकूल मन वाले धाता इस प्रजा का पोषण करें. ये प्रजाएं समान ज्ञान वाली, मिले हुए मन वाली और समान कारण वाली हों. पुष्टपति नाम के देव मुझे प्रजा विषयक पोषण प्रदान करें. (१)

सूक्त इक्कीसवां देवता—अनुमति

अन्वद्य नोऽनुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम्.
अग्निश्च हव्यवाहनो भवतां दाशुषे मम (१)

सभी कर्मों की अनुमति देने वाली पौर्णमासी की देवी हमारा यज्ञ इस समय देवों को बताएं. अग्निदेव भी मुझ यजमान की हवि देवों को प्राप्त कराने वाले हों. (१)

अन्विदनुमते त्वं मंससे शं च नस्कृधि.
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः (२)

हे अनुमति नामक देवी! तुम हमें अनुमति दो तथा हमें सुख प्राप्त कराओ. तुम सामने आ कर अग्नि में डाला हुआ हमारा हवि स्वीकार करो. हे देवि! पुत्र, पौत्र आदि रूप हमारी प्रजा की रक्षा करो. (२)

अनु मन्यतामनुमन्यमानः प्रजावन्तं रयिमक्षीयमाणम्.
तस्य वयं हेडसि मापि भूम सुमृडीके अस्य सुमतौ स्याम (३)

हे अनुमति नामक देवी! मुझे पुत्र, पौत्र आदि से युक्त एवं कभी समाप्त न होने वाले धन को प्राप्त कराओ. हम तेरे क्रोध के विषय न बनें. हम इस अनुमति देवी की सुख देने वाली और अनुग्रह करने वाली बुद्धि में रहें. (३)

यत् ते नाम सुहवं सुप्रणीतेऽनुमते अनुमतं सुदानु.
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम् (४)

हे यजमानों को धन देने वाली तुप्रणीति देवी एवं हे अनुमति! हमारे यज्ञ को इस प्रकार पूर्ण करो कि तुम्हारा हवन सिद्ध हो सके. यह प्रसन्न करने योग्य एवं

अभिमत फल देने वाला है. (४)

एमं यज्ञमनुमतिर्जगाम सुक्षेत्रतायै सुवीरतायै सुजातम्.
भद्रा ह्यस्याः प्रमतिर्बभूव सेमं यज्ञमवतु देवगोपा (५)

अनुमति देवी हमारे द्वारा दिए जाते हुए यज्ञ में आएं. वे हमें उत्तम फल देने वाली हों. हे विश्वधारा तथा हे सुभगा अनुमति! हमें उत्तम संतान वाला धन प्रदान करो. (५)

अनुमतिः सर्वमिदं बभूव यत् तिष्ठति चरति यदु च विश्वमेजति.
तस्यास्ते देवि सुमतौ स्यामानुमते अनु हि मंससे नः (६)

अनुमति देवी ही यह सारा दिखाई देता हुआ संसार हैं. वह जगत में स्थावर, जंगम आदि के रूप में वर्तमान है एवं बिना विचारे ज्येष्ठता करती हैं. यह सारा संसार बुद्धिपूर्वक चेष्टा करता है. हे अनुमति देवी! हम तेरी अनुग्रह बुद्धि में हों. हे अनुमति! तुम हमें अनुमति दो. (६)

सूक्त बाईसवां — देवता—आत्मा

समेत विश्वे वचसा पतिं दिव एको विभूरतिथिर्जनानाम्.
स पूर्व्यो नूतनमाविवासत् तं वर्तनिरनु वावृत एकमित् पुरु (१)

हे सब बांधवो! आकाश के स्वामी सूर्य की स्तुति मंत्रों के द्वारा करो. वे सूर्य प्राणियों के मुख्य स्वामी एवं नित्य चलते रहने वाले हैं. वे पुरातन सूर्य इस नूतन पुरुष की सेवा करें. बहुत से सत्कर्म उस एकमात्र सूर्य के मार्ग का अनुवर्तन करते हैं. (१)

सूक्त तेईसवां — देवता—ब्रध्न

अयं सहस्रमा नो दृशे कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्मणि (१)

यह दिखाई देता हुआ सूर्य हजार वर्ष तक हमें दिखाई देता रहे. क्रांतदर्शी पुरुषों के द्वारा मनन करने योग्य, सब को अपनेअपने कर्मों में लगाने वाले ये सूर्य हमें प्रतिदिन सत्कर्म करने की प्रेरणा देते रहें. (१)

ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयन्.
अरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमत्तमाश्चिते गोः (२)

पाप रहित, समान ज्ञान वाले एवं दिन के समय अतिशय दीप्तिशाली सूर्य हमें पूजा आदि कर्मों में प्रेरित करें. (२)

सूक्त चौबीसवां — देवता—दुःस्वप्न विनाश

दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वमराय्यः.

दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशयामसि (१)

व्याधि दिखाने वाले बुरे सपने को, राक्षसों को, टोनेटोटके से उत्पन्न भीषण भय को, पिशाचियों को तथा दरिद्रता को हम इस होने वाले टोटके से ग्रस्त पुरुष से दूर करते हैं. (१)

सूक्त पच्चीसवां देवता—सविता

यन्न इन्द्रो अखनद् यदग्निर्विश्वे देवा मरुतो यत् स्वर्काः.
तदस्मभ्यं सविता सत्यधर्मा प्रजापतिरनुमतिर्नि यच्छात् (१)

परम ऐश्वर्य वाले इंद्र देव ने हमारे लिए जो फल दिया तथा अग्नि, विश्वेदेव, मरुद्गण और स्वर्का नामक देवों ने हमारे लिए जो फल दिया. सब के प्रेरक सविता और यथार्थ नाम वाले प्रजापति ने जिस फल की अनुमति दी. वह फल हमें प्राप्त हो. (१)

सूक्त छब्बीसवां देवता—विष्णु

ययोरोजसा स्कभिता रजांसि यौ वीर्यैर्वीरतमा शविष्ठा.
यौ पत्येते अप्रतीतौ सहोभिर्विष्णुमगन् वरुणं पूर्वहूतिः (१)

जिन विष्णु और वरुण के बल के द्वारा पृथ्वी आदि स्थान दृढ़ किए गए हैं, जो विष्णु और वरुण अपने वीरतापूर्ण कर्मों के द्वारा अतिशय शक्तिशाली ऐश्वर्य प्राप्त कर चुके हैं, उन विष्णु और वरुण को सभी देवों से पहले किया गया आह्वान प्राप्त हो. (१)

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते प्र चानति वि च चष्टे शचीभिः.
पुरा देवस्य धर्मणा सहोभिर्विष्णुमगन् वरुणं पूर्वहूतिः (२)

विष्णु और वरुण की आज्ञा में यह जगत विशेष रूप से दीप्त है, सांस लेता है और अपनेअपने कार्यों का फल देखता है. इस के अतिरिक्त जगत को प्रकाशित करने वाले विष्णु और वरुण के धारक कर्म और बलों के साथ प्राचीन काल में चेष्टा करता था. इस प्रकार के विष्णु और वरुण को फल चाहने वाले लोग अपने प्रथम आह्वान से जोड़ें. (२)

सूक्त सत्ताईसवां देवता—विष्णु

विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि यः पार्थिवानि विममे रजांसि.
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः (१)

मैं उन विष्णु के किन वीरतापूर्ण कर्मों का वर्णन करूं, जिन्होंने पृथ्वी के रूप में लोकों का निर्माण किया है. विष्णु ने इस से भी ऊंचे स्तर के स्थान स्वर्ग को धारण किया है. महापुरुषों द्वारा स्तुति किए गए विष्णु ने पृथ्वी, अंतरिक्ष और आकाश में चरण

रखते हुए यह निर्माण किया है. (१)

प्र तद् स्तवते वीर्याणि मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः.
परावत आ जगम्यात् परस्याः (२)

वीरतापूर्ण कर्मों के कारण विष्णु की स्तुति की जाती है. विष्णु सिंह के समान भयानक, भूमि पर विचरण करने वाले एवं पर्वत में स्थित हैं. वे विष्णु मेरी स्तुति सुन कर दूर देश से भी यहां आएं. (२)

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा.
उरु विष्णो वि क्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि. घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर (३)

उन विष्णु के तीन विस्तृत चरण विक्षेपों में सभी भुवन एवं प्राणी निवास करते हैं. हे व्यापक विष्णु! तीनों लोकों में अपने तीन चरण रखने का पराक्रम करो तथा हमारे निवास स्थान को धन संयुक्त बनाओ. हे घृत के कारण रूप विष्णु! यह हवन किया जाता हुआ घृत पियो तथा यज्ञ के स्वामी यजमान की वृद्धि करो. विष्णु ने इस विश्व में विक्रम का प्रदर्शन किया है. उन्होंने तीन बार अपने चरण स्थापित किए हैं. इन विष्णु के तीन चरण विक्षेपों में सारा विश्व स्थापित है. (३)

इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा. समूढमस्य पांसुरे (४)

सब के रक्षक और दूसरों के द्वारा पराजित न होने वाले विष्णु ने इस पृथ्वी लोक से आरंभ कर के प्राणियों को धारण करने वाले तीनों लोक को धारण किए. (४)

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः. इतो धर्माणि धारयन् (५)

हे स्तोताओ! सर्व व्यापक विष्णु देव के उन कर्मों को देखो, जिन कर्मों के द्वारा उन्होंने तुम्हारे कर्मों का स्पर्श किया. ये विष्णु इंद्र देव के योग्य सखा हैं. (५)

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे. इन्द्रस्य युज्यः सखा (६)

व्यापक विष्णु देव के उत्तम स्थान को मेधावी लोग देखते हैं. उन का स्थान आकाश में सूर्य मंडल के समान विस्तृत है. (६)

तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः. दिवीव चक्षुराततम् (७)

हे विष्णुदेव! पृथ्वी एवं द्युलोक से भी महान किसी अन्य लोक से अर्थात विस्तीर्ण अंतरिक्ष से लाए हुए बहुत से धनों से अपने हाथों को पूर्ण करो. इस के पश्चात हमारे सामने आ कर अपने दाहिने और बाएं हाथों से हमें अधिक धनराशि प्रदान करो. (७)

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्या महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्.
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात् (८)

हे विष्णु देव! आप अपने दोनों हाथों के द्वारा द्युलोक, भूलोक और अंतरिक्ष लोक से हमें बहुत से साधन प्रदान करो. (८)

सूक्त अट्ठाईसवां — देवता—इडा

इडैवास्माँ अनु वस्तां व्रतेन यस्याः पदे पुनते देवयन्तः.
घृतपदी शक्वरी सोमपृष्ठोप यज्ञमस्थित वैश्वदेवी (१)

गहन रूपा इडा ही हमारे द्वारा किए जाते हुए यज्ञ कर्मों को फल देने वाला बनाएं. उस इडा के चरणों में देवों की कामना करने वाले यजमान अपने आप को पवित्र करते हैं. हम जहांजहां चरण रखें वहांवहां घृत टपकाने वाली, फल देने में समर्थ एवं पीठ पर सोम लिए हुए इडा नाम की बहन हमारे यज्ञ को विस्तृत करें. (१)

सूक्त उनतीसवां — देवता—झंडा

वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः स्वस्तिः परशुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति.
हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम् (१)

वेद (दर्भ समूह) हमारे लिए अविनाश का कारण बने. पेड़ काटने के काम आने वाली कुल्हाड़ी हमारा कल्याण करे. घास काटने का साधन वेदि अर्थात खुरपी तथा परशु हमारा कल्याण करे. हवि का निर्माण करने वाले, यज्ञ के योग्य एवं यज्ञ की कामना करते हुए मुझ यजमान का यज्ञ वे देव स्वीकार करें. (१)

सूक्त तीसवां — देवता—अग्नि, विष्णु

अग्नाविष्णू महि तद् वां महित्वं पाथो घृतस्य गुह्यस्य नाम.
दमेदमे सप्त रत्ना दधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमा चरण्यात् (१)

हे अग्नि और विष्णु! तुम दोनों कहे जाते हुए माहात्म्यपूर्ण, महान गोपनीय, और टपकने वाले घृत को पियो. अग्नि और विष्णु प्रत्येक यज्ञशाला में रत्न धारण करते हैं. तुम दोनों की जिह्वा हवन में डाले गए घृत को सामने आ कर प्राप्त करे. (१)

अग्नाविष्णू महि धाम प्रियं वां वीथो घृतस्य गुह्या जुषाणौ.
दमेदमे सुष्टुत्या वावृधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमुच्चरण्यात् (२)

हे अग्नि और विष्णु! तुम दोनों का तेज महान एवं सब को प्रसन्न करने वाला है. तुम दोनों, घृत के चरु, पुरोडाश आदि रूपों का भक्षण करो. परस्पर प्रसन्न होते

हुए तुम दोनों सभी यजमानों के घरों में शोभन स्तुति से बढ़ते हुए अपनी जिह्वाओं से घृत का भक्षण करो. (२)

सूक्त इकत्तीसवां देवता—द्यावा, पृथ्वी, मित्र, बृहस्पति

स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अकरयम्.
स्वाक्तं मे ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत् (१)

धरती और आकाश मेरे यज्ञ के बलिदान वाले खंबे अर्थात यूप को भलीभांति रंगें. दिखाई देते हुए ये सूर्य यज्ञ के यूप को रंगें. मंत्र का पालन करने वाले देव मेरे यूप को रंगें. सब के प्रेरक सवितादेव इस यूप को रंगा हुआ बनाएं. (१)

सूक्त बत्तीसवां देवता—इंद्र

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य यावच्छ्रेष्ठाभिर्मघवञ्छूर जिन्व.
यो नो द्वेष्ट्यधरः सरस्पदीष्ट यमु द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु (१)

हे इंद्र! आज बहुत सी रक्षाओं अर्थात रक्षा साधनों के द्वारा हमारा पालन करो. हे धनवान एवं शौर्य संपन्न इंद्र! प्रशंसनीय रक्षा साधनों के द्वारा हमें पूर्णतया प्रसन्न करो. जो शत्रु हम से द्वेष करते हैं, वे अधोमुख हो कर गिरें. जिस शत्रु से हम द्वेष करते हैं, उसे तुम्हारा प्राण त्याग दे. (१)

सूक्त तेतीसवां देवता—आयु

उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम्.
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतु मे (१)

सब को प्रसन्न करने वाले, स्तुति किए जाते हुए, नित्य तरुण एवं घृत की आहुतियों से बढ़ने वाले अग्निदेव को हम नमस्कार एवं हविरूप अन्न ले कर मिलें. वे मेरी और मेरे विद्यार्थी की आयु १०० वर्ष करें. (१)

सूक्त चौंतीसवां देवता—पूषा

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः.
सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे (१)

मरुत आदि देवगण मुझ फल चाहने वाले यजमान को पुत्र आदि रूप प्रजा से और धन से युक्त करें. अग्नि मेरे विद्यार्थी की आयु लंबी करें. (१)

सूक्त पैंतीसवां देवता—जातवेद

अग्ने जातान् प्र णुदा मे सपत्नान् प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व.

अधस्पदं कृणुष्व ये पृतन्यवोऽनागसस्ते वयमदितये स्याम (१)

हे अग्नि! मेरे उत्पन्न शत्रुओं को मुझ से बहुत दूर जाने की प्रेरणा दो. हे जातवेद अग्नि! मेरे जो शत्रु उत्पन्न नहीं हुए हैं, उन का विनाश करो. जो शत्रु सेना ले कर मुझ से युद्ध करने के इच्छुक हैं. उन्हें अपने पैरों के नीचे कुचल दो. हे खंड न करने योग्य पृथ्वी अथवा अदीना देवमाता! हम पापरहित हो कर तुम्हारे कृपा पात्र बनें. (१)

सूक्त छत्तीसवां — देवता—जातवेद

प्रान्यान्त्सपत्नान्त्सहसा सहस्व प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व.
इदं राष्ट्रं पिपृहि सौभगाय विश्व एनमनु मदन्तु देवाः (१)

हे अग्नि! मेरे उत्पन्न शत्रुओं को बहुत दूर भगा दो. हे उत्पन्नों को जानने वाले अग्निदेव! मेरे ऐसे शत्रुओं का विनाश करो, जिन्हें मैं नहीं जानता. हमारे इस राष्ट्र को तुम सौभाग्य से पूर्ण करो. सभी देव शत्रु विनाश का प्रयोग करने वाले इस यजमान को प्रसन्न करें. (१)

इमा यास्ते शतं हिराः सहस्रं धमनीरुत.
तासां ते सर्वासामहमश्मना बिलमप्यधाम् (२)

हे मुझ से विद्वेष करने वाली स्त्री! तेरी जो गर्भधारण संबंधी सौ से अधिक नाड़ियां हैं तथा हजार धमनियां हैं, मैं उन सब का मुख पत्थर से ढक कर तुझे बांझ बनाता हूं. (२)

परं योनेरवरं ते कृणोमि मा त्वा प्रजाभि भून्मोत सूनुः.
अस्वं१ त्वाप्रजसं कृणोम्यश्मानं ते अपिधानं कृणोमि (३)

हे मेरे प्रतिकूल रहने वाली नारी! मैं तेरी योनि के भीतर वाले स्थान अर्थात गर्भाशय को गर्भ धारण के अयोग्य बनाता हूं. इसीलिए तुझे कन्या रूपी संतान भी प्राप्त न हो. तुझे पुत्र संतान भी न मिले. मैं तुझे खच्चरी के समान संतान रहित बनाता हूं. मैं तेरे गर्भाशय को पत्थर से ढकता हूं. (३)

सूक्त सैंतीसवां — देवता—अक्षि, मन

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम्.
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति (१)

हे पत्नी! मेरी और तेरी आंखें शहद के समान मधुर हों अर्थात हम एकदूसरे के प्रति अनुरक्त हों. हमारी आंखों का अग्रभाग काजल से युक्त हो. तू मुझे हृदयंगम कर अर्थात ऐसा प्रयत्न कर, जिस से मैं तेरा प्रिय बन सकूं. हम दोनों का मन समान

कार्य करने वाला हो. (१)

सूक्त अड़तीसवां देवता—वस्त्र

अभित्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा.
यथासो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन (१)

स्त्री अपने पति से कहती है—हे पति! मैं तुम को अपने मंत्र से युक्त वस्त्र से बांधती हूं. इस प्रकार तुम केवल मेरे ही हो सकोगे तथा दूसरी नारियों का नाम भी नहीं लोगे. (१)

सूक्त उन्तालीसवां देवता—वनस्पति

इदं खनामि भेषजं मां पश्यमभिरोरुदम्. परायतो निवर्तनमायतः प्रतिनन्दनम् (१)

मैं वश में करने वाली इस सौवर्चा नामक जड़ी को खोदता हूं. यह मेरे पति को मेरे अनुकूल बनाए और मेरे पति का अन्य नारियों से संबंध रोके. यह जड़ी मुझे छोड़ कर जाते हुए पति को वापस लाए तथा मेरी ओर आते हुए पति को आनंदित करे. (१)

येना निचक्र आसुरीन्द्रं देवेभ्यस्परि.
तेना नि कुर्वे त्वामहं यथा तेऽसानि सुप्रिया (२)

असुरों की माया ने जिस जड़ी के बल से इंद्र के अतिरिक्त सभी देवों को युद्ध में अपने अधीन किया था, हे पति! उसी जड़ी के द्वारा मैं तुझे अपने वश में करती हूं. मैं ऐसा इसीलिए करती हूं, जिस से मैं तेरी असाधारण प्यारी हो सकूं. (२)

प्रतीची सोममसि प्रतीच्युत सूर्यम्.
प्रतीची विश्वान् देवान् तां त्वाच्छावदामसि (३)

हे शंखपुष्पी नामक जड़ी! तू वशीकरण के निमित्त सोम के सम्मुख होती है. तू सब के प्रेरक सूर्य के भी सम्मुख होती है. अधिक कहने से क्या लाभ, तू सभी देवों के सम्मुख होती है. मैं अपने पति को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए तेरी स्तुति करती हूं. (३)

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद.
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन (४)

पति के वशीकरण के लिए जड़ीबूटी पा कर नारी अपने पति से कहती है—हे पति! आओ. अब मैं ही बोलूंगी. तुम कभी मत बोलना. तुम केवल विद्वानों की सभा में बोलना. हे पति! तुम केवल मेरे ही रहोगे, अन्य नारियों के नहीं. (४)

यदि वासि तिरोजनं यदि वा नद्यस्तिरः.
इयं ह मह्यं त्वामोषधिर्बद्ध्वेव न्यानयत् (५)

हे पति! यदि तुम मेरी दृष्टि से ओझल हो जाओगे अथवा मुझ से दूर नदी के पार चले जाओगे, तब भी यह शंखपुष्पी नामक जड़ी पति से प्रेम करने वाली मेरे समीप तुम्हें इस प्रकार लाएगी, जैसे किसी को बांध कर लाया जाता है. (५)

सूक्त चालीसवां देवता—मंत्रों में बताए गए छंद

दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तमपां गर्भं वृषभमोषधीनाम्.
अभीपतो वृष्ट्या तर्पयन्तमा नो गोष्ठे रयिष्ठां स्थापयाति (१)

हे इंद्र! हमारी गोशाला में दिव्य, शोभन गति वाले, जल से पूर्ण, महान जलों के मध्य रहने वाले, जड़ी बूटियों की वृद्धि के लिए वर्षा करने वाले, सभी ओर से जलों से संगत एवं सारे संसार को वर्षा से तृप्त करने वाले सारस्वत नामक देव को स्थापित करो. वे सदा धन वाले प्रदेश में ठहरते हैं. (१)

सूक्त इकतालीसवां देवता—सरस्वान

यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे यस्य व्रत उपतिष्ठन्त आपः.
यस्य व्रते पुष्टपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे हवामहे (१)

समस्त पशु अपनी पुष्टि के निमित्त जिस के कर्म का अनुगमन करते हैं, जिस के कर्म में जल आपस में मिलते हैं तथा जिस के कर्म के अधीन पोषण के स्वामी हैं, उन सरस्वान देव की तृप्ति के लिए हम उन का आह्वान करते हैं. (१)

आ प्रत्यञ्चं दाशुषे दाश्वंसं सरस्वन्तं पुष्टपतिं रयिष्ठाम्.
रायस्पोषं श्रवस्युं वसाना इह हुवेम सदनं रयीणाम् (२)

सामने हो कर प्रसन्न करने के लिए हम हवि देने वाले यजमान को मनचाहा फल देने वाले, पोषण के स्वामी, धन के स्थान पर ठहरने वाले एवं धन के पोषक सरस्वान देव को सेवा के निमित्त बुलाते हैं. (२)

सूक्त बयालीसवां देवता—श्येन

अति धन्वान्यत्यपस्ततर्द श्येनो नृचक्षा अवसानदर्शः.
तरन् विश्वान्यवरा रजांसीन्द्रेण सख्या शिव आ जगम्यात् (१)

मनुष्यों के सभी कर्मों के साक्षी एवं अंत में आकाश में दिखाई देने वाले सूर्य मरुस्थल को पार कर के अत्यधिक जलपूर्ण करें. वे आकाश से नीचे स्थित समस्त लोकों को पार करते हुए अपने मित्र इंद्र के साथ कल्याणकारी बन कर नवीन गृह निर्माण के स्थान में आएं. (१)

श्येनो नृचक्षा दिव्यः सुपर्णः सहस्रपाच्छतयोनिर्वयोधा.
स नो नि यच्छाद् वसु यत् पराभृतमस्माकमस्तु पितृषु स्वधावत् (२)

मनुष्यों के सभी कर्मों को देखने वाले, दिव्य एवं शोभन गति वाले, हजार किरणों वाले, असंख्य कार्यों के कारण एवं अन्न के दाता सूर्य हमें चिरकाल तक स्थापित करें. हमारा जो धन चोरों ने चुरा लिया है, वह हमारे पितरों के निमित्त स्वधा के रूप में हो. (२)

सूक्त तेतालीसवां देवता—सोम

सोमारुद्रा वि वृहतं विषूचीममीवा या नो गयमाविवेश.
बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत् (१)

हे सोम एवं रुद्र देव! सभी ओर फैलने वाले उस अमीवा नामक रोग का विनाश करो जो हमारे शरीर में प्रवेश कर गया है. इस के अतिरिक्त अमीवा रोग का कारण बनी हुई पिशाची को विमुख कर के दूर ले जाओ, जिस से वह हमारे पास न आ सके. हमारे द्वारा किए हुए पाप को भी हम से दूर करो. (१)

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मद् विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम्.
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो असत् तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत् (२)

हे सोम एवं रुद्र देव! तुम दोनों हमारे शरीरों में रोगों को निकालने वाली जड़ीबूटियों को स्थापित करो. हमारे शरीरों में स्थित हमारे द्वारा किया हुआ जो पाप है, उसे भी हम से अलग करो और नष्ट कर दो. (२)

सूक्त चवालीसवां देवता—वाक

शिवास्त एका अशिवास्त एकाः सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः.
तिस्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन् तासामेका वि पपातानु घोषम् (१)

हे अकारण निंदित पुरुष! तेरे विषय में कुछ वाणियां स्तुति रूपा एवं कल्याणी हैं तथा कुछ वाणियां तेरे विषय में निंदापूर्ण हैं. सौमनस्य का आचरण करती हुई इन दो प्रकार की वाणियों के अतिरिक्त तीन वाणियां अर्थात परा, पश्यंती और मध्यमा—इस शब्द प्रयोग में शरीर के भीतर छुपी रहती हैं. केवल एक अर्थात वैखरी वाणी ध्वनि के रूप में निकलती है. (१)

सूक्त पैंतालीसवां देवता—इंद्र

उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनयोः.
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम् (१)

हे इंद्र और विष्णु! तुम दोनों सर्वदा विजयी बनो और किसी से कभी पराजित न होओ. इन दोनों में से एक भी दूसरे से पराजित नहीं होता. हे इंद्र और विष्णु! तुम दो असुरों के साथ जिस वस्तु की स्पर्धा करते हो, वह वस्तु लोक, वेद और वाणी के रूप में स्थित हो कर हजारों से भी बढ़कर हो. (१)

सूक्त छियालीसवां देवता—ईर्ष्या

जनाद् विश्वजनीनात् सिन्धुतस्पर्याभृतम्.
दूरात् त्वा मन्य उद्भृतमीर्ष्याया नाम भेषजम् (१)

ईर्ष्या समाप्त करने वाली जड़ीबूटी को संबोधित कर के कहा जा रहा है— सभी जनों के हितकारक जनपद से तथा सागर से लाई हुई को एवं दूर देश से उखाड़ कर लाई तुझ, सक्तुमंथ नामक जड़ी बूटी को मैं क्रोध का निवारण करने वाली मानता हूं. (१)

सूक्त सैंतालीसवां देवता—ईर्ष्या

अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक्. एतामेतस्येर्ष्यामुद्नाग्निमिव शमय (१)

जिस प्रकार अग्नि वस्तुओं को जलाती है, उसी प्रकार क्रोध के कारण मेरे कार्य बिगाड़ने वाले तथा दावाग्नि के जलाने के समान क्रोध करते हुए सामने वाले पुरुष को मेरे विषय में प्रयोग की जाती हुई ईर्ष्या को इस प्रकार शांत करो, जिस प्रकार शीतल जल डालने से अग्नि शांत कर दी जाती है. (१)

सूक्त अड़तालीसवां देवता—सिनीवाली

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा.
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः (१)

हे सिनीवाली! अर्थात ऐसी अमावस्या! जिस में चंद्रमा दिखाई नहीं देता है, तू बहुत से जनों द्वारा स्तुति की गई एवं देवों की बहन है. तू सामने डाले गए हव्य को स्वीकार कर तथा हमारे लिए पुत्र आदि के रूप में प्रजा प्रदान कर. (१)

या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुसूवरी.
तस्यै विश्पत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन (२)

हे सिनीवाली! तू सुंदर हाथ वाली, शोभन उंगलियों वाली, सुंदर प्रसव वाली तथा बहुत सी प्रजाओं को जन्म देने वाली है. हे ऋत्विजो तथा यजमानो! प्रजाओं का पालन करने वाली उस सिनीवाली के लिए हवि दो. (२)

या विश्पत्नीन्द्रमसि प्रतीची सहस्रस्तुकाभियन्ती देवी.
विष्णो पत्नि तुभ्यं राता हवींषिपतिं देवि राधसे चोदयस्व (३)

जो सिनीवाली प्रजाओं का पालन करने वाली तथा परमैश्वर्य संपन्न इंद्र के सामने खड़ी होने वाली है तथा हजारों स्तोताओं द्वारा प्रशंसित एवं प्रकाशित होने वाली है. हे विष्णु अथवा इंद्र की पत्नी! तेरे लिए हवि दी गई है. हे देवी! तू प्रसन्न हो कर अपने पति इंद्र को हमें धन देने के लिए प्रेरित कर. (३)

66

सूक्त उनंचासवां देवता—कुहू

कुहूं देवीं सुकृतं विद्मनापसमस्मिन् यज्ञे सुहवा जोहवीमि.
सा नो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद् ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् (१)

कुहू अथवा चंद्रमा दिखाई न देने वाली अमावस्या देवी को मैं इस यज्ञ में बुलाता हूं अथवा हवि से होम करता हूं. शोभन कर्म करने वाली, विदित कर्मों वाली एवं शोभन आह्वान वाली वह अमावस्या हमें सब के द्वारा वरणीय धन दे तथा अधिक धन देने वाला, प्रशंसनीय एवं वीर पुत्र प्रदान करे. (१)

कुहूर्देवानाममृतस्य पत्नी हव्या नो अस्य हविषो जुषेत.
शृणोतु यज्ञमुशती नो अद्य रायस्पोषं चिकितुषी दधातु (२)

देवों के मध्य कुहू अर्थात अमावस्या रूप देवी अमृत अथवा जल की पत्नी अर्थात पालन करने वाली है. हव्य देने योग्य यह हमारे द्वारा दिए जाते हुए हवि को प्राप्त करे तथा हमारे यज्ञ की कामना करती हुई आज हमारा आह्वान सुने. इस के पश्चात हमारे यज्ञ को जानने वाली वह हमारे धन को पुष्ट करे. (२)

सूक्त पचासवां देवता—राका अर्थात पूर्णमासी

राकामहं सुहवा सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना.
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् (१)

मैं शोभन आह्वान वाली, पूर्ण चंद्र से सुशोभित एवं शोभन स्तुति वाली पूर्णिमा का आह्वान करता हूं. यह शोभन ज्ञान वाली पूर्णिमा मेरा आह्वान सुने तथा प्रजनन के लक्षण को सी दे. ऐसा वह न टूटने वाली नाड़ी रूपी सुई से सिए. ऐसा कर के पूर्णिमा हमें विक्रांत पुत्र एवं बहुत सा धन प्रदान करे. (१)

यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि.
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रापोषं सुभगे रराणा (२)

हे राका अर्थात पूर्णिमा देवी! तेरी जो सुंदर रूप वाली कल्याण बुद्धियां हैं, जिन के द्वारा तू हवि देने वाले यजमान को धन प्रदान करती है, आज तू उन्हीं कल्याणकारी बुद्धियों एवं शोभन मन से युक्त हो कर हमारे समीप आ. तू हमें बहुत से धनों का पोषण देती हुई आ. (२)

सूक्त इक्यावनवां देवता—देव पत्नियां

देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये.
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु (१)

हमारी कामना करती हुई देव पत्नियां हमारी रक्षा करें तथा हमें संतान और अन्न

प्रदान करने के लिए आएं. जो देव पत्नियां पृथ्वी पर रहने वाली तथा अंतरिक्ष में स्थित हैं, वे शोभन आह्वान सुन कर हमें सुख और गृह प्रदान करें. (१)

उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्य१ग्नाय्यश्विनी राट्.
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम् (२)

देव पत्नियां अर्थात देवियां मेरी कामना करें. वे देवियां इंद्र पत्नी, अग्नि पत्नी एवं अश्विनी कुमारों की पत्नियां हैं. रुद्र की पत्नी रुद्राणी और वरुण की पत्नी वरुणानी मेरे सामने आ कर मेरी स्तुति सुनें. नारियों का जो ऋतु काल है, उस समय देव पत्नियां हमारी हवि को स्वीकार करें. (२)

सूक्त बावनवां — देवता—इंद्र

यथा वृक्षमशनिर्विश्वाहा हन्त्यप्रति. एवाहमद्य कितवानक्षैर्बध्यासमप्रति (१)

बिजली की आग अद्वितीय है तथा वह जिस प्रकार वृक्षों का विनाश करती है, उसी प्रकार मैं भी अद्वितीय हो कर आज जुआरी पुरुषों का वध करूं. मैं जुआरियों का वध पांसों से करूंगा अर्थात उन्हें पांसों से हराऊंगा, पराजित करूंगा. (१)

तुराणामतुराणां विशामवर्जुषीणाम्. समैतु विश्वतो भगो अन्तर्हस्तं कृतं मम (२)

जुआ खेलने में चाहे जुआरी शीघ्रता करे अथवा देरी करे, मैं ही उस से जुए में जीतूंगा. जो जुआरी हार जाने पर भी इस आशा से जुआ खेलना बंद नहीं करता कि मैं ही जीतूंगा, ऐसे जुआरी लोगों का धन सभी ओर से मेरे ही पास आए. जुए के पांसे मेरे ही हाथ में रहें. (२)

ईडे अग्निं स्वावसुं नमोभिरिह प्रसक्तो वि चयत् कृतं नः.
रथैरिव प्र भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणं मरुतां स्तोममृध्याम् (३)

जो अग्निदेव अपना धन अपने स्तुतिकर्ताओं को देते हैं, मैं उन की स्तुति करता हूं. इस द्यूत कर्म के अधिपति अग्निदेव हम जुआरियों के लाभ के लिए कृपा करें. अग्निदेव रथों के समान स्थित पांसों से प्रहार करें. इस के पश्चात मैं सभी देवों की क्रम से स्तुति प्रारंभ करूं. (३)

वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरेभरे.
अस्मभ्यमिन्द्र वरीयः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन् वृष्ण्या रुज (४)

हे इंद्र! तुम्हारी सहायता से हम अपने विरोधी जुआरी को जीत लें. तुम प्रत्येक द्यूत क्रीड़ा में हम जीत के इच्छुकों का अंश सुरक्षित करो. इस के अतिरिक्त तुम हमें अत्यधिक धन प्राप्त कराओ. हे धनवान इंद्र! तुम मेरे विरोधी जुआरियों को जीतने की शक्ति को समाप्त कर दो. (४)

अजैषं त्वा संलिखितमजैषमुत संरुधम्.
अविं वृको यथा मथदेवा मथ्नामि ते कृतम् (५)

विरोधी जुआरी को संबोधन कर के कहा जा रहा है—हे जुआरी! तूने अपने पैरों में अंकों को ठीक से लिख लिया है. फिर भी मैं तुझे जीतूंगा. मैं तुझे ऐसे स्थान में जीत लूंगा, जहां अंक रोके जाते हैं. भेड़िया जिस प्रकार भेड़ को मसल डालता है, उसी प्रकार मैं तेरे दांव को नष्ट कर दूंगा. (५)

उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले.
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित् तं रायः सृजति स्वधाभिः (६)

अधिक जुआ खेलता हुआ पुरुष अपने विरोधी जुआरी को जीत लेता है, क्योंकि दूसरे का धन हरण करने वाला जुआरी पांसे फेंकने से पहले ही उस के अंकों का निश्चय कर लेता है. देवों की कामना करता हुआ जो जुआरी जीत में प्राप्त धन को देव संबंधी कार्यों में लगाता है, उसे इंद्र धनों और अन्नों से युक्त करते हैं. (६)

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वे.
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टासो वृजनीभिर्जयेम (७)

हे इंद्र! दरिद्रता के कारण आई हुई दुर्बुद्धि को मैं पशुओं के द्वारा पार करूं. हे बहुतों द्वारा बुलाए गए इंद्र! हम सभी जौ आदि अन्नों की सहायता से भूख का निवारण करें. विरोधी जुआरियों से पराजित न होते हुए हम मुख्य धनों को जुआघर से जीत कर ले जाएं. (७)

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः.
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित् (८)

मेरे दाहिने हाथ में लाभ का कारण कृत अर्थात जुए की महान विजय तथा बाएं हाथ में ऐसी विजय है, जो जुए का साध्य है. इस प्रकार मैं दूसरों की गायों को जीतने वाला, घोड़ों को जीतने वाला, धन को जीतने वाला और स्वर्ण जीतने वाला बनूं. (८)

अक्षाः फलवतीं द्युवं दत्त गां क्षीरिणीमिव.
सं मा कृतस्य धारया धनुः स्नाव्नेव नह्यत (९)

विजय के लिए पांसों से प्रार्थना की जा रही है—हे पांसो! तुम इस जुए के खेल को मेरे लिए इस प्रकार फल देने वाला बनाओ, जिस प्रकार दूध देने वाली गाय होती है. धनुष जिस प्रकार तांत से बनी डोरी के द्वारा बाण को दूर फेंकता है, उसी प्रकार पांसे चार संख्या वाले दावों के लिए मुझे विजय से जोड़ें. (९)

सूक्त तिरपनवां — देवता—इंद्र, बृहस्पति

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः.
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु (१)

बृहस्पति पश्चिम दिशा से, उत्तर दिशा से तथा नीचे वाले स्थान से हिंसा करने वाले पुरुष से मेरी रक्षा करें. इंद्र पूर्व दिशा से तथा बीच के स्थान से हमारी रक्षा करें. मित्र बने हुए इंद्र हम स्तोताओं के लिए अधिक धन प्रदान करें. (१)

सूक्त चौवनवां देवता—सौमनस्य

संज्ञानं नः स्वेभिः संज्ञानमरणेभिः. संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम् (१)

अपने लोगों के साथ हमारा एक मत हो तथा अनुकूल न बोलने वाले अर्थात प्रतिकूल पुरुषों के साथ हम समान ज्ञान वाले हों. हे अश्विनीकुमारो! तुम दोनों इस समय इस विषय में अपने और परायों के साथ हमें एकमत बनाओ. (१)

सं जानामहै मनसा सं चिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन.
मा घोषा उत्स्थुर्बहुले विनिर्हते मेषुः पप्तदिन्द्रस्याहन्यागते (२)

हम अपने मन के साथ दूसरों के मन को संयुक्त करें और जाग कर दूसरों के कार्यों से संगत बनें. हम देव संबंधी मन अर्थात देवों के प्रति श्रद्धा रखने वाले मन के कारण दूसरों से अलग न हों. अधिक कुटिलता संबंधी शब्द न उठें. दिन निकलने पर इंद्र के वज्र के समान मर्मवेधी वाणी हमें सुनाई न दे. (२)

सूक्त पचपनवां देवता—आयु

अमुत्रभूयादधि यद् यमस्य बृहस्पतेरभिशस्तेरमुञ्चः.
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः (१)

हे बृहस्पति! परलोक में भवन वाले यमराज के श्राप से तुम इस ब्रह्मचारी को छुड़ाते हो. यमराज का शाप मरण का कारण है. हे अग्नि! तुम्हारी कृपा से अश्विनीकुमार अपनी क्रियाओं के द्वारा हमारे ब्रह्मचारी को मृत्यु के कारण से छुड़ाएं. (१)

सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं प्राणापानौ ते सयुजाविह स्ताम्.
शतं जीव शरदो वर्धमानोऽग्निष्टे गोपा अधिपा वसिष्ठः (२)

हे प्राण और अपान वायु! तुम दोनों आयु की कामना करने वाले मनुष्य के शरीर में संक्रमण करो तथा उस के शरीर का त्याग मत करो. हे आयु की कामना करने वाले पुरुष! तेरे इस शरीर में प्राण और अपान वायु संयुक्त रहें. इस के पश्चात तू सौ वर्ष तक जीवित रहे. जीवित रहते हुए तेरे हवि आदि से समृद्ध होते हुए अग्निदेव तेरी रक्षा करने वाले, तुझे अपना समझने वाले तथा निवास स्थान देने वाले हों. (२)

आयुर्यत् ते अतिहितं पराचैरपानः प्राणः पुनरा ताविताम्.
अग्निष्टदाहार्निर्ऋतेरुपस्थात् तदात्मनि पुनरा वेशयामि ते (३)

हे आयु की कामना करने वाले पुरुष! तुम्हारा जो जीवन तुम्हें छोड़ कर और तुम्हारा अतिक्रमण कर के गया है, वह प्राण और अपान वायु की कृपा से पुनः वापस आ जाए. उस आयु का अग्नि ने निकृष्ट गति वाली मृत्यु के पास से हरण कर लिया है. अग्नि के द्वारा हरण कर के लाई गई उस आयु को मैं तेरे शरीर में पुनः स्थापित करता हूं. (३)

मेमं प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परा गात्.
सप्तर्षिभ्य एनं परि ददामि त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु (४)

प्राण वायु इस आयु चाहने वाले पुरुष का त्याग न करे तथा अपान वायु भी इसे छोड़ कर न जाए. मैं इस पुरुष को रक्षा के हेतु सप्त ऋषियों के लिए सौंप रहा हूं. वे सात ऋषि अर्थात सात प्राण इसे वृद्धावस्था तक ले जाएं. (४)

प्र विशतं प्राणापानावनड्वाहाविव व्रजम्.
अयं जरिम्णः शेवधिरिष्ट इह वर्धताम् (५)

हे प्राण और अपान वायु! जिस प्रकार गाड़ी को खींचने वाले बैल गोठ में प्रवेश करते हैं, उसी प्रकार तुम आयु चाहने वाले पुरुष के शरीर में प्रवेश करो. वह आयु चाहने वाला पुरुष वृद्धावस्था की निधि बने. वह इस लोक में मृत्यु की बाधा से रहित हो कर जीवित रहे एवं वृद्धि को प्राप्त करे. (५)

आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्ष्मं सुवामि ते.
आयुर्नो विश्वतो दधदयमग्निर्वरेण्यः (६)

हे आयु चाहने वाले पुरुष! हम तेरे प्राण को वापस बुलाते हैं. हम तेरी आयु के प्रतिबंधक यक्ष्मा रोग को पीछे हटने के लिए प्रेरित करते हैं. वे वरेण्य एवं हवन किए जाते हुए अग्निदेव हमारे इस यजमान को सभी प्रकार से सौ वर्ष की आयु प्रदान करें. (६)

उद् वयं तमसस्परि रोहन्तो नाकमुत्तमम्.
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् (७)

पाप से ऊपर उठे हुए हम उत्तम एवं दुख रहित स्वर्ग में आरोहण करें. इस के पश्चात हम उत्तम एवं ज्योतिरूप में प्रकाशित सूर्य देव के समीप जाएं. (७)

सूक्त छप्पनवां — देवता—इंद्र

ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कुर्वते.
एते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु यच्छतः (१)

हे धन देने वाले इंद्र! तुम्हारे जो मार्ग द्युलोक से नीचे वर्तमान हैं, उन विश्व प्रेरक मार्गों के द्वारा हमें सुख में स्थापित करो. अर्थात हमें सुख प्रदान करो. (१)

सूक्त सत्तावनवां

देवता—इंद्र

ऋचं साम यदप्राक्षं हविरोजो यजुर्बलम्.
एष मा तस्मान्मा हिंसीद् वेदः पृष्टः शचीपते (१)

हम ऋग्वेद और सामवेद को हवि के द्वारा पूजते हैं. यजमान ऋग्वेद और सामवेद के द्वारा यज्ञ कर्म करते हैं. ये दोनों वेद सदस नामक मंडप में शोभा देते हैं तथा यज्ञ को देवों तक पहुंचाते हैं. (१)

ये ते पन्थानोऽव दिवो येभिर्विश्वमैरयः. तेभिः सुम्नया धेहि नो वसो (२)

मैं ने ऋग्वेद से हवि, सामवेद से ओज और यजुर्वेद से बल के विषय में पूछा था. अर्थात ऋग्वेद आदि में हवि आदि का अध्ययन किया था. हे शची के पति और व्याकरण के नियम बनाने वाले इंद्र! इस प्रकार सुविचारित ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद मुझ अध्यापक के अध्ययनअध्यापन में बाधा न डाल कर मनचाहा फल दें. (२)

सूक्त अट्ठावनवां

देवता—बिच्छू

तिरश्चिराजेरसितात् पृदाकोः परि संभृतम्.
तत् कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुदनीनशत् (१)

तिरश्चिराजी अर्थात तिरछी रेखाओं वाले काले और प्रदाकू अर्थात अपने द्वारा काटे हुए प्राणियों को रुलाने वाले सर्पों के विष को तथा कंकपर्व नामक काटने वाले विषैले जंतु के विष को यह मधु नाम की जड़ीबूटी नष्ट करे. (१)

इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुन्मधुला मधूः.
सा विहृतस्य भेषज्यथो मशकजम्भनी (२)

यह प्रयोग की जाती हुई ओषधि मधु अर्थात शहद से निर्मित है, इसलिए इस से शहद टपकता है. मधु युक्त तथा मधूक नाम वाली यह जड़ीबूटी कुटिलता करने वाले विष का नाश करने वाली तथा मच्छरों को समाप्त करने वाली है. (२)

यतो दष्टं यतो धीतं ततस्ते निर्ह्वयामसि.
अर्भस्य तृप्रदंशिनो मशकस्यारसं विषम् (३)

विषैले जंतु द्वारा काटे गए पुरुष से कहा जा रहा है—हे सर्प द्वारा काटे गए पुरुष! तुम्हारे जिस अंग में विषैले सर्प ने काटा है अथवा तुम्हारे जिस अंग को सर्प आदि ने पिया है, उस अंग से मैं सर्प का विष निकालता हूं तथा मुख, पूंछ और चरण—इन तीन अंगों से काटने वाले मच्छर के विष को भी मैं प्रभावहीन बनाता हूं. (३)

अयं यो वक्रो विपरुर्व्यङ्गो मुखानि वक्रा वृजिना कृणोषि.
तानि त्वं ब्रह्मणस्पत इषीकामिव सं नमः (४)

हे ब्रह्मणस्पति! सर्प आदि के द्वारा काटा हुआ जो यह पुरुष अंगों को सिकोड़ता है, इस के अंगों के जोड़ ढीले पड़ गए हैं, इस के अवयव विवश हो गए हैं तथा इस के मुख आदि अंग टेढ़े पड़ गए हैं. तुम इस के सभी अंगों को उसी प्रकार सीधा बनाओ, जिस प्रकार टेढ़ी सींक को सरल बनाया जाता है. (४)

अरसस्य शर्कोटस्य नीचीनस्योपसर्पतः. विषं ह्य१ स्यादिष्यथो एनमजीजभम् (५)

विष रहित, नीचे की ओर मुंह किए हुए एवं तेरे समीप आते हुए शर्कोटक नाम के सांप के मैं ने टुकड़े कर दिए हैं अर्थात मैं ने इस का विष समाप्त कर दिया है तथा इस सर्प को मैं ने नष्ट कर दिया है. (५)

न ते बाह्वोर्बलमस्ति न शीर्षे नोत मध्यतः.
अथ किं पापयामुया पुच्छे बिभर्ष्यर्भकम् (६)

बिच्छू को संबोधन कर के कहा जा रहा है—हे बिच्छू! तेरे हाथों में दूसरों को पीड़ा पहुंचाने वाला बल नहीं है. तेरे सिर में भी बल नहीं है. तेरे मध्य भाग अर्थात कमर में भी बल नहीं है. तू अपनी, परपीड़ाकारिणी बुद्धि के द्वारा थोड़ा विष अपनी पूंछ में क्यों धारण करता है? (६)

अदन्ति त्वा पिपीलिका वि वृश्चन्ति मयूर्यः.
सर्वे भल ब्रवाथ शर्कोटमरसं विषम् (७)

हे सर्प! तुझे चीटियां खा लेती हैं और मोरनियां तेरे टुकड़ेटुकड़े कर देती हैं. हे सर्प का विष दूर करने में समर्थ जड़ीबूटियो! तुम शर्कोटक सर्प के विष को सामर्थ्यहीन कर देती हो, यह बात भलीभांति कही जाती है. (७)

य उभाभ्यां प्रहरसि पुच्छेन चास्ये न च.
आस्ये३ न ते विषं किमु ते पुच्छधावसत् (८)

हे बिच्छू! तू पूंछ और मुख दोनों के द्वारा प्राणियों को बाधा पहुंचाता है तेरे मध्य भाग और मुख में विष नहीं है. तेरे रोओं वाले भाग अर्थात पूंछ में विष क्यों हो. (८)

सूक्त उनसठनवां — देवता—सरस्वती

यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे यद् याचमानस्य चरतो जनां अनु.
यदात्मनि तन्वो मे विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद् घृतेन (१)

मांगने के लिए दाताओं से स्पष्ट बात कहने वाला मेरा जो अंग क्षुब्ध था तथा

मांगने के लिए जनजन के समीप मेरा जो अंग व्याकुल था, मेरे शरीर का वह बाधित अंग सरस्वती क्षोभ रहित करें तथा उसे घृत से पूर्ण करें. (१)

सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवृतन्नृतानि.
उभे इदस्योभे अस्य राजत उभे यतेते उभे अस्य पुष्यतः (२)

मरुतों से युक्त एवं जलों के पुत्र वरुण के लिए सात नदियां बहती हैं. द्युलोक में स्थित इंद्र के निमित्त मनुष्य यज्ञ आदि कर्म करते हैं. वे यज्ञकर्म देवों और मानवों के संघ के निवास स्थान होते हैं एवं आकाश और धरती इन देवों और मनुष्यों के ऐश्वर्य बनते हैं. आकाश और धरती इन देवों तथा मनुष्यों के लिए प्रयत्न करते हैं तथा अन्न, जल आदि से पोषण करते हैं. (२)

सूक्त साठवां — देवता—इंद्र, वरुण

इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रती.
युवो रथो अध्वरो देववीतये प्रति स्वसरमुप यातु पीतये (१)

हे निचोड़े गए सोमरस को पीने वाले एवं व्रत धारण करने वाले इंद्र और वरुण! मद करने वाले एवं हमारे द्वारा निचोड़े गए सोमरस को पियो. शत्रुओं के द्वारा पराजित न होने वाला तुम्हारा रथ तुम दोनों को सोमरस पीने और यज्ञ कर्म करने के लिए यजमान के घर के समीप ले जाए. (१)

इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम्.
इदं वामन्धः परिषिक्तमासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम् (२)

हे मनचाहा फल देने वाले इंद्र और वरुण! तुम दोनों अत्यधिक मधुर और मनचाहा फल देने वाले सोमरस को पियो. यह सोमलक्षण अन्न हम ने चमस आदि पात्रों में रख दिया है, इसीलिए इस कुशासन पर बैठ कर सोमरस पियो और तृप्त हो जाओ. (२)

सूक्त इकसठवां — देवता—शत्रु नाशन

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात्.
वृक्षइव विद्युता हत आ मूलादनु शुष्यतु (१)

जो शत्रु हम निंदा न करने वालों की निंदा करता है और जो शत्रु हम निंदा करने वालों की निंदा करता है, वह इस प्रकार नष्ट हो जाए जिस प्रकार बिजली से मारा हुआ वृक्ष जड़ से सूख जाता है. (१)

सूक्त बासठवां — देवता—गुहा

ऊर्जं बिभ्रद् वसुवनिः सुमेधा अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण.

गृहानैमि सुमना वन्दमानो रमध्वं मा बिभीत मत् (१)

हे घरो! अन्न धारण करता हुआ और धन का स्वामी मैं शोभन बुद्धि वाला हो कर तुम्हें अनुकूल और मैत्री पूर्ण दृष्टि से देखूं. मैं तुम्हारी स्तुति करता हुआ तुम्हारे पास आऊं. मेरे अधिकार में तुम सुखी रहो, इसलिए जब मैं दूसरे स्थान से तुम्हारे पास आऊं तो तुम मुझे पराया समझ कर भय मत करो. (१)

इमे गृहा मयोभुव ऊर्जस्वन्तः पयस्वन्तः.
पूर्णा वामने तिष्ठन्तस्ते नो जानन्त्वायतः (२)

यह घर सुख देने वाले, अन्न एवं रस से युक्त, दूध आदि एवं धन से समृद्ध रहे हैं. सामने दिखाई देते हुए ये घर प्रवास से आते हुए हमें स्वामी के रूप में जानें. (२)

येषामध्येति प्रवसन् येषु सौमनसो बहुः.
गृहानुप ह्वयामहे ते नो जानन्त्वायतः (३)

प्रवास करता हुआ पुरुष जिन घरों का स्मरण करता है तथा जिन घरों में सौमनस्य वाला पदार्थ अधिक मात्रा में है, मैं ऐसे घर पाने के लिए प्रार्थना करता हूं. हमारे ये घर प्रवास से आते हुए हमें स्वामी के रूप में जानें. (३)

उपहूता भूरिधनाः सखायः स्वादुसंमुदः.
अक्षुध्या अतृष्या स्त गृहा मास्मद् बिभीतन (४)

हे घरो! अनुमति हेतु प्रार्थना करने पर तुम अधिक धन युक्त, मैत्रीपूर्ण तथा स्वादिष्ट और मधुर पदार्थों से युक्त बनो. तुम सदा भूख और प्यास से रहित अर्थात सभी प्रकार तृप्त जनों वाले बनो. हे घरो! जब हम बाहर से आएं, तब तुम हमें पराया समझ कर भयभीत मत बनो. (४)

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः.
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः (५)

हमारे घरों में गाएं, बकरियां और भेड़ें बुलाई जाएं. इस के अतिरिक्त हमारे घरों में अन्न का सारभूत अंश भी चाहा जाए. (५)

सूनृतावन्तः सुभगा इरावन्तो हसामुदाः.
अतृष्या अक्षुध्या स्त गृहा मास्मद् बिभीतन (६)

68

हे घरो! तुम में प्यारी और सच्ची बातें कही जाएं, तुम शोभन भाग्य वाले बनो. सदा तुम में अन्न भरा रहे. तुम लोगों की हंसी से मुखरित रहो. हम जब बाहर से आएं तो तुम हमें पराया समझ कर भयभीत मत होना. (६)

इहैव स्त मानु गात विश्वा रूपाणि पुष्यत.

ऐष्यामि भद्रेणा सह भूयांसो भवता मया (७)

हे घरो! तुम इसी स्थान पर सुखी रहो. प्रवास करते हुए मुझ गृहस्वामी के पीछे मत आओ. तुम पशु आदि सभी रूपों वाले का पोषण करो. मैं धन ले कर पुनः तुम्हारे समीप आऊंगा. देशांतर से वापस आते मुझे पराया समझ कर तुम भयभीत मत होना. (७)

सूक्त तिरसठवां देवता—अग्नि

यदग्ने तपसा तप उपतप्यामहे तपः.
प्रियाः श्रुतस्य भूयास्मायुष्मन्तः सुमेधसः (१)

हे अग्निदेव! तुम्हारे समीप समिदाधान आदि रूप कर्म के द्वारा जो तप किया जा सकता है, वह तप हम करते हैं. उस तप के द्वारा हम अध्ययन किए हुए वेदमंत्रों के प्रिय, अधिक आयु वाले और उत्तम धारण शक्ति से संपन्न बनें. (१)

अग्ने तपस्तप्यामह उप तप्यामहे तपः.
श्रुतानि शृण्वन्तो वयमायुष्मन्तः सुमेधसः (२)

हे अग्निदेव! तुम्हारे समीप ही हम शरीर को सुखाने वाला तप करें. हम इस का तप किसी दूसरे स्थान पर न करें. हम अध्ययन किए गए वेदमंत्रों को सुनते हुए अधिक आयु वाले और उत्तम बुद्धि वाले बनें. (२)

सूक्त चौंसठवां देवता—जातवेद

अयमग्निः सत्पतिर्वृद्धवृष्णो रथीव पत्तीनजयत् पुरोहितः.
नाभा पृथिव्यां निहितो दविद्युतदधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः (१)

यह अग्निदेव देवों का पालन करने वाले तथा अधिक शक्ति संपन्न हैं. रथ में बैठा हुआ व्यक्ति जिस प्रकार दूसरे की पत्नी अथवा प्रजा को अपने अधिकार में कर लेता है, उसी प्रकार प्रजा को हम अपने वश में करें. यज्ञस्थल की नाभि अर्थात उत्तरवेदी में स्थापित तथा अत्यधिक दीप्त होते हुए अग्नि संग्राम में हमें जीतने वाले शत्रुओं को हमारे पैरों के नीचे अर्थात हमारा वशवर्ती बनाएं. (१)

सूक्त पैंसठवां देवता—अग्नि

पृतनाजितं सहमानमग्निमुक्थैर्हवामहे परमात् सधस्थात्.
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद् देवोऽति दुरितान्यग्नि (१)

संग्राम में शत्रुओं को जीतने वाले, शत्रुओं को पराजित करने वाले एवं अरणि रूपी उत्तम स्थान से जन्म लेने वाले अग्नि का आह्वान हम मंत्रों के द्वारा करते हैं. वह हमारे सभी कष्टों का विनाश करें. दीप्ति वाले अग्नि हमारे सभी पापों को दग्ध करें. (१)

सूक्त छियासठवां देवता—जल, अग्नि

इदं यत् कृष्णः शकुनिरभिनिष्पतन्नपीपतत्.
आपो मा तस्मात् सर्वस्माद् दुरितात् पान्त्वंहसः (१)

काले पक्षी अर्थात कौए ने आकाश से नीचे आते हुए, जो पंखों से मेरे अंग पर चोट की है, उस से होने वाले समस्त पापों से अभिमंत्रित जल मेरी रक्षा करे. (१)

इदं यत् कृष्णः शकुनिरवामृक्षन्निर्ऋते ते मुखेन.
अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्यः प्र मुञ्चतु (२)

हे मृत्युदेवता! काले पक्षी अर्थात कौए ने जो अपने मुख से मेरे अंग को स्पर्श किया है, उस से होने वाले पाप से मुझे गार्हपत्य नामक अग्नि बचाएं. (२)

सूक्त सड़सठवां देवता—अपामार्ग

प्रतीचीनफलो हि त्वमपामार्ग रुरोहिथ.
सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया इतः (१)

हे अपामार्ग अर्थात चिरचिटा के झाड़! तुम सामने की ओर मुख वाले फलों के रूप में उगे हो, इस कारण मेरे सभी दोषों को मुझ से अत्यधिक दूर करो. (१)

यद् दुष्कृतं यच्छमलं यद् वा चेरिम पापया.
त्वया तद् विश्वतोमुखापामार्गाप मृज्महे (२)

हमने जो दुष्कर्म, पाप एवं मलिन आचरण किया है, हे सभी ओर शाखाओं वाले अपामार्ग अर्थात चिरचिटा के झाड़! तेरे द्वारा हम उसे दूर करते हैं. (२)

श्यावदता कुनखिना बण्डेन यत्सहासिम.
अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदप मृज्महे (३)

हम ने काले दांतों वाले, बुरे नाखूनों वाले एवं नपुंसक पुरुष के साथ भोजन किया है. हे अपामार्ग अर्थात चिरचिटा के झाड़! तेरे द्वारा उस से होने वाले पाप का हम निवारण करते हैं. (३)

सूक्त अड़सठवां देवता—ब्रह्म

यद्यन्तरिक्षे यदि वात आस यदि वृक्षेषु यदि वोलपेषु.
यदश्रवन् पशव उद्यमानं तद् ब्राह्मणं पुनरस्मानुपैतु (१)

आकाश के मेघाच्छन्न होने पर, आंधी चलने पर, वृक्षों की छाया में, फसलों में, ग्रामीण एवं जंगली पशुओं के समीप मैं ने जो वेदाध्ययन किया है अथवा वेदपाठ सुना है, वह भी मेरे लिए फलदायक हो. (१)

सूक्त उनहत्तरवां

देवता—आत्मा

पुनर्मैत्विन्द्रियं पुनरात्मा द्रविणं ब्राह्मणं च.
पुनरग्नयो धिष्ण्या यथास्थाम कल्पयन्तामिहैव (१)

इंद्र के द्वारा दिया हुआ वीर्य अथवा दी हुई चक्षु आदि इंद्रियों की शक्ति मेरे पास पुनः आए. आत्मा, धन एवं वेद का अध्ययन मुझे पुनः प्राप्त हो. यज्ञ आदि कर्मों में स्थापित अग्नियां इसी स्थान में पुनः प्रबुद्ध हों. (१)

सूक्त सत्तरवां

देवता—सरस्वती

सरस्वति व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु.
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि रास्व नः (१)

हे सरस्वती देवी! तुम अपने से संबंधित व्रतों में एवं गार्हपत्य यज्ञ आदि रूप दिव्य स्थानों में सामने आ कर हवि स्वीकार करो तथा हमें पुत्र आदि रूप प्रजा प्रदान करो. (१)

इदं ते हव्यं घृतवत् सरस्वतीदं पितृणां हविरास्यं१ यत्.
इमानि त उदिता शंतमानि तेभिर्वयं मधुमन्तः स्याम (२)

हे सरस्वती! तुम्हारे लिए हवन किया जाता हुआ घृतयुक्त यह हवि तथा पितरों के निमित्त दिया जाता हुआ यह हवि तथा हमारे लिए सुख देने वाले जो हवि हैं, ये तुम्हारे निमित्त समर्पित किए गए हैं. तुम्हारे निमित्त दिए गए हवियों के द्वारा हम मधुर रस से युक्त अन्न वाले हों. (२)

सूक्त इकहत्तरवां

देवता—सरस्वती

शिवाः न शंतमा भव सुमृडीका सरस्वति. मा ते युयोम संदृशः (१)

हे सरस्वती! तुम हमारे निमित्त सभी सुख देने वाली, रोगनिवारण में अत्यधिक समर्थ एवं शोभन सुख देने वाली बनो. हम तुम्हारे यथार्थ रूप के ज्ञान से अलग न हों. (१)

सूक्त बहत्तरवां

देवता—सुख

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः.
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु (१)

बाहर चलती हुई वायु हमारे लिए सुख देती हुई बहे. सब के प्रेरक सूर्य हमारे लिए सुख देते हुए तपें. दिन हमारे लिए सुख देने वाले हों तथा रात भी हमें सुख प्रदान करे. उषाकाल इस प्रकार विकसित हों, जिस से हमें सुख मिल सके. (१)

यत् किं चासौ मनसा यच्च वाचा यज्ञैर्जुहोति हविषा यजुषा.
तन्मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना पुरा सत्यादाहुतिं हन्त्वस्य (१)

दूर स्थित मेरा शत्रु मेरी हत्या करने की इच्छा से जो कर्म करने का विचार करता है तथा वचन से जो कर्म करने की बात कहता है, अभिचार कर्मों अर्थात जादू टोने के द्वारा उस के लिए उचित द्रव्य के द्वारा तथा मंत्र के द्वारा जो होम करता है, उस कर्म को सफल होने से पहले ही पाप देवता निर्ऋति मृत्यु के साथ मिल कर नष्ट करें. (१)

यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते अस्य घ्नन्त्वनृतेन सत्यम्.
इन्द्रेषिता देवा आज्यमस्य मथ्नन्तु मा तत् सं पादि यदसौ जुहोति (२)

दूसरों को पीड़ा देने वाली पाप की देवी निर्ऋति एवं राक्षस मेरे इस शत्रु के यथार्थ कर्म फल को असत्य फल के द्वारा समाप्त करें. तात्पर्य यह है कि मेरे शत्रु के द्वारा किया हुआ अभिचार कर्म फल देने वाला न हो. उस का फल विपरीत हो. इंद्र के द्वारा प्रेरित देव इस शत्रु का होम कर्म नष्ट करें. यह शत्रु हमारे वध के लिए जो कर्म करता है, वह संपन्न एवं फलदायक न हो. (२)

अजिराधिराजौ श्येनौ संपातिनाविव.
आज्यं पृतन्यतो हतां यो नः कश्चाभ्यघायति (३)

अजिर और अधिराज नामक मृत्यु दूत मुझ से संग्राम करने के इच्छुक पुरुष के घृत से पूर्ण होने वाले होम कर्म का उसी प्रकार विनाश करें, जिस प्रकार पक्षियों के ऊपर बाज आकाश मार्ग से गिरता है. जो शत्रु हमारे विपरीत हिंसा कर्म करने की इच्छा करता है, उस का आज्य नष्ट हो जाए. (३)

अपाञ्चौ त उभौ बाहू अपि नह्याम्यास्यम्.
अग्नेर्देवस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः (४)

हे हमारे निमित्त अभिचार कर्म करने वाले मनुष्य! होम कर्म में लगे हुए तेरे दोनों हाथों को मैं पीछे की ओर बांधता हूं, जिस से वे होम करने में समर्थ न हो सकें. मंत्र का उच्चारण करने में समर्थ तेरे मुख को भी मैं बंद करता हूं. तेरे हाथों और मुख को बांधने से अग्निदेव के क्रोध के कारण तेरे हवि को मैं नष्ट करूंगा. (४)

अपि नह्यामि ते बाहू अपि नह्याम्यास्यम्.
अग्नेर्घोरस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः (५)

मैं अभिचार कर्म में संलग्न तेरे दोनों हाथों और मुख को बांधता हूं, जिस से तेरे हाथ आहुति न दे सकें और मुख मंत्र का उच्चारण न कर सके. इस प्रकार

अग्निदेव के भयानक क्रोध के द्वारा मैं तेरे हवि एवं उस से सिद्ध होने वाले कर्म का विनाश करता हूं. (५)

सूक्त चौहत्तरवां
देवता—अग्नि

परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि.
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भंकरावतः (१)

हे अरणि मंथन से उत्तम अग्नि! तुम कर्म फलों को पूर्ण करने वाले एवं मेधावी हो. हम राक्षसों का हनन करने के लिए तुम्हें चारों ओर धारण करते हैं. तुम घर्षक रूप वाले एवं राक्षसों का प्रतिदिन विनाश करने वाले हो. (१)

सूक्त पचहत्तरवां
देवता—इंद्र

उत् तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम्.
यदि श्रातं जुहोतन यद्यश्रातं ममत्तन (१)

ऋत्विजो! उठो, अर्थात अपने आसनों पर बैठे मत रहो. बसंत आदि ऋतुओं में इंद्र को देने के लिए पकाए जाने वाले हवि के भाग को देखो. यदि वह हवि पक गया है तो उसे इंद्र के निमित्त अग्नि में हवन कर दो. यदि वह नहीं पका है तो उसे पकाओ. (१)

श्रातं हविरो ष्विन्द्र प्र याहि जगाम सूरो अध्वनो वि मध्यम्.
परि त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न व्राजपतिं चरन्तम् (२)

हे इंद्र! तुम्हारे निमित्त हवि पक गया है. इसलिए तुम शीघ्र आओ. सूर्य अपने गंतव्य मार्ग के मध्य भाग में पहुंच गए हैं अर्थात दोपहर हो गया है. ऋत्विज निचोड़े हुए सोमरस के द्वारा उसी प्रकार तुम्हारी उपासना कर रहे हैं, जिस प्रकार वंश के रक्षक पुत्र गृहपति की उपासना करते हैं. (२)

सूक्त छिहत्तरवां
देवता—इंद्र

श्रातं मन्य ऊधनि श्रातमग्नौ सुशृतं मन्ये तदृतं नवीयः.
माध्यन्दिनस्य सवनस्य दध्नः पिबेन्द्र वज्रिन् पुरुकृज्जुषाणः (१)

हवि गाय के थनों में दूध के रूप में पका है और थनों से काढ़ा हुआ दूध अग्नि पर तपा कर पकाया जाता है. मैं मानता हूं कि यह हवि भलीभांति पक चुका है, इसलिए यह हवि सत्य एवं अधिक नवीन है. हे वज्रधारी एवं बहुत से कर्म करने वाले इंद्र! तुम प्रसन्न होते हुए, माध्यदिंन सवन अर्थात यज्ञ में सोमरस से संबंधित दधिमिश्रित सोमरस नामक हवि का पान करो. (१)

सूक्त सतहत्तरवां
देवता—अंगिरस

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुह्यते वामिषे मधु.

त्वं हि वां पुरुदमासो अश्विना हवामहे सधमादेषु कारवः (१)

हे मनचाहा फल देने वाले अश्विनीकुमारो! द्युलोक में स्थित देवों के रथी अग्निदेव दीप्त हो चुके हैं. उस अग्नि से आज्य ठीक से पक गया है. इस के पश्चात तुम्हारे अन्न के हेतु मधुर रस वाला दूध काढ़ा जाता है. तुम दोनों के स्तुतिकर्ता हम हवि से पूर्ण घरों वाले हों एवं यज्ञों में तुम्हारा आह्वान करें. (१)

समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो वां घर्म आ गतम्.
दुह्यन्ते नूनं वृषणेह धेनवो दस्रा मदन्ति वेधसः (२)

हे अश्विनीकुमारो! अग्नि दीप्त हो गई है और उस पर तुम्हारे लिए आज्य तप्त हो चुका है, इसीलिए तुम आ जाओ. हे अभिमत फल देने वाले अश्विनीकुमारो! तुम्हारे निमित्त प्रवर्ग्य नामक कर्म में गाएं अधिक मात्रा में दुही जाती हैं इसलिए शत्रुओं का विनाश करने वाले तुम अश्विनीकुमारों की स्तुतियों के द्वारा सेवा करते हुए होता प्रसन्न हो रहे हैं. (२)

स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञो यो अश्विनोश्चमसो देवपानः.
तमु विश्वे अमृतासो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति (३)

दीप्त प्रवर्ग्ययाग अश्विनीकुमारों आदि देवों के निमित्त दिया गया है. अश्विनीकुमार चमस के द्वारा उस का पान करते हैं. अश्विनीकुमारों के उसी चमस को सभी अमर देव प्रसन्न होते हुए आदित्य के मुख से चाटते हैं. (३)

यदुस्रियास्वाहुतं घृतं पयोऽयं स वामश्विना भाग आ गतम्.
माध्वी धर्तारा विदथस्य सत्पती तप्तं घर्मं पिबतं रोचने दिवः (४)

गोशाला में स्थित गायों में वर्तमान जो घृत का उत्पादक दूध है, वह यज्ञ के पात्र में डाल दिया गया है. वह तुम दोनों का भाग है, इसीलिए आओ. हे मधु विद्या के ज्ञाता अश्विनीकुमारो! तुम यज्ञ के धारण कर्ता हो. हे देवों का पालन करने वाले अश्विनीकुमारो! द्युलोक के प्रकाशक अग्नि में तपाए हुए घी का पान करो. (४)

तप्तो वां घर्मो नक्षतु स्वहोता प्र वामध्वर्युश्चरतु पयस्वान्.
मधोर्दुग्धस्याश्विना तनाया वीतं पातं पयस उस्रियायाः (५)

हे अश्विनीकुमारो! तुम दोनों होता के द्वारा भलीभांति स्तुति किए गए हो. तुम ठीक से तपाए गए एवं विशाल पात्र में स्थित आज्य अर्थात घी को प्राप्त करो. तुम्हारे लिए अध्वर्यु नामक ऋत्विज यज्ञ करे. इस के पश्चात दूध, घी आदि के द्वारा यज्ञ का विस्तार करने वाली गाय के मधुर रस से युक्त दूध को तुम दोनों पियो. (५)

उप द्रव पयसा गोधुगोषमा घर्मे सिञ्च पय उस्रियायाः.
वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो वि राजति (६)

हे गाय को दुहने वाले अध्वर्यु! तुम तपाए हुए दूध के साथ मेरे समीप आओ तथा

गाय के दूध को तपे हुए घी में डालो, जिस से सब के प्रेरक सविता देव स्वर्ग को प्रकाशित करें. वे आदि उषा के गमन के पीछे विराजते हैं. (६)

उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचत् (७)

मैं सरलता से दुही जाने योग्य इस गाय का आह्वान करता हूं. आई हुई इस गाय को कल्याणमय हाथ वाला अध्वर्यु दुहे. सब के प्रेरक सविता देव हमें उत्तम दूध प्रदान करें. (७)

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसा न्यागन्.
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय (८)

अपने बछड़े के लिए हुंकार करती हुई, धनों का पालन करने वाली तथा मन से अपने बछड़े की कामना करती हुई गाय सभी प्रकार मेरे समीप आए. यह गाय अश्विनीकुमारों के लिए दूध दे तथा हमारे सौभाग्य के हेतु अपने परिवार की वृद्धि करे. (८)

जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान्.
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्य शत्रूयतामा भरा भोजनानि (९)

हे अग्नि! सब के द्वारा सेवित एवं प्रसन्न मन वाला अतिथि सभी यजमानों के घरों में आए तथा तुम्हारे विषय में मेरी भक्ति को जाने. हे अग्नि! तुम मुझ पर आक्रमण करने वाली शत्रु सेनाओं को त्याग कर मेरे शत्रुओं का भोजन मेरे लिए लाओ. (९)

अग्ने शर्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु.
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व/शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि (१०)

हे अग्नि! तुम हमें धनधान्य देने के लिए कोमल मन वाले बनो. तुम्हारे प्रकाशित होते हुए तेज उत्तम हों. तुम इस प्रकार की कृपा करो, जिस से हम पतिपत्नी दोनों एकमात्र तुम्हारी सेवा करें. जो अपनेआप को हमारा शत्रु मानते हैं, उन के तेजों पर तुम आक्रमण करो. (१०)

सूयवसाद् भगवती हि भूया अधावयं भगवन्तः स्याम.
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती (११)

हे धर्मदुघा धेनु! तू उत्तम घास खाती हुई हमारे लिए सौभाग्यशालिनी हो, इस से हम भी धन वाले बनें. तू सदा घास का भक्षण कर तथा शोभन भाग्य वाली बन. हे गाय! तू सर्वदा घास खा तथा सभी ओर घूमती हुई निर्मल जल पी. (११)

सूक्त अठहत्तरवां

देवता—मंत्र में बताए गए

अपचितां लोहिनीनां कृष्णा मातेति शुश्रुम.
मुनेर्देवस्य मूलेन सर्वा विध्यामि ता अहम् (१)

हम ने ऐसा सुना है कि लाल रंग की गंडमालाओं को उत्पन्न करने वाली कृष्णा नाम की राक्षसी है. इस प्रकार की बढ़ी हुई सभी गंडमालाओं को मैं द्योतमान अथर्वा ऋषि के द्वारा बताए हुए बाण से विदीर्ण करता हूं. (१)

विध्याम्यासां प्रथमां विध्याम्युत मध्यमाम्.
इदं जघन्या मासामा च्छिनद्मि स्तुकामिव (२)

दोष की दृष्टि से गंडमालाएं तीन प्रकार की हैं. उन्हीं का यहां वर्णन है. मैं इन पकी हुई गंडमालाओं में से मुख्य गंडमाला को जानता हूं, जिस की चिकित्सा करना कठिन है. मैं बाण से उसे फाड़ता हूं. दूसरे प्रकार की सुसाध्य अर्थात सरलता से चिकित्सा के योग्य गंडमाला मध्यमा है. मैं उसे भी फोड़ता हूं. इस समय मैं इन गंडमालाओं के मध्य उस को ऊन के धागे के समान तोड़ता हूं, जिस की चिकित्सा थोड़े प्रयत्न से हो सकती है. (२)

त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि त ईर्ष्याममीमदम्.
अथो यो मन्युष्टे पते तमु ते शमयामसि (३)

हे ईर्ष्यायुक्त पुरुष! स्त्री के विषय में तेरा जो क्रोध है, उसे मैं त्वष्टा संबंधी मंत्र से दूर करता हूं. हे इस के पति! तेरा जो क्रोध है उसे भी मैं शांत करता हूं. (३)

व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह.
तं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे (४)

हे व्रत के पालन कर्ता अग्नि! दर्श, पौर्णमास आदि यज्ञकर्मों द्वारा सम्मानित तुम सभी दिनों में प्रसन्न मन वाले हो कर हमारे घर में दीप्त बनो. हे जातवेद अग्नि! भलीभांति दीप्त तुम्हारे चारों ओर हम पुत्र, पौत्र आदि के साथ बैठें. (४)

सूक्त उनासीवां

देवता—गौ

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः.
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु (१)

हे गायो! तुम संतान से युक्त, शोभन घास वाले प्रदेश में घास चरती हो तथा सुख से जल पीने योग्य तालाब आदि में जल पीती हो. तुम्हें कोई चोर न चुरा सके. बाघ आदि दुष्ट पशु भी तुम्हें न खा सकें. ज्वर के देव रुद्र के आयुध तुम्हें त्याग दें. (१)

पदज्ञा स्थ रमतयः संहिता विश्वनाम्नीः.

उप मा देवीर्देवेभिरेत. इमं गोष्ठमिदं सदो घृतेनास्मान्त्समुक्षत (२)

हे गायो! तुम अपनी सहचरी गायों के खुरों के चिह्नों को जानो. बछड़ों एवं दूसरी गायों के साथ मिल कर तुम अनेक नामों वाली बनो. हे दीप्तिशालिनी धेनुओ! तुम देवों के सहित मुझ पुष्टि के इच्छुक के समीप आओ तथा यहां आ कर मेरी गोशाला, घर एवं मुझ गृहस्वामी को घी और दूध से सींचो. (२)

सूक्त अस्सीवां देवता—अपचित ओषधि आदि

आ सुस्रसः सुस्रसो असतीभ्यो असत्तराः.
सेहोररसतरा लवणाद् विक्लेदीयसीः (१)

अत्यधिक पीब टपकाने वाली और बाधा पहुंचाने वाले रोग के लक्षणों से भी अधिक कष्ट पहुंचाने वाली गंडमालाएं सभी ओर से बहने वाली बनें. तात्पर्य यह है कि मंत्र तथा ओषधि के प्रयोग से गंडमालाएं समाप्त हो जाएं. गंडमालाएं रुई से भी अधिक नीरस तथा नमक से भी अधिक भीगने वाली बनें. (१)

या ग्रैव्या अपचितोऽथो या उपपक्ष्याः.
विजाम्नि या अपचितः स्वयंस्रसः (२)

जो गंडमालाएं गले में होती हैं, बगल में होती हैं और गोपनीय स्थानों में होती हैं, वे सब बिना पकी हुई गंडमालाएं पक कर फूट जाएं. (२)

यः कीकसाः प्रशृणाति तलीद्यमवतिष्ठति.
निर्हास्तं सर्वं जायान्यं यः कश्च ककुदि श्रितः (३)

जो कष्टसाध्य राजयक्ष्मा रोग हड्डियों में व्याप्त होता है, जो अस्थियों के समीप वाले मांस को सुखाता है, जो गरदन के ऊपर वाले भाग को पतला कर देता है तथा जो पत्नी के निरंतर संभोग से उत्पन्न होता है, इन सभी प्रकार के क्षय रोगों को यह जड़ी नष्ट करे. (३)

पक्षी जायान्यः पतति स आविशति पूरुषम्.
तदक्षितस्य भेषजमुभयोः सुक्षतस्य च (४)

क्षय रोग पक्षी बन कर गिरता है तथा पुरुष में प्रवेश करता है. हम शरीर की सभी धातुओं का शोषण करने वाले तथा शोषण न करने वाले दोनों प्रकार के रोगों को मंत्र और ओषधि से दूर करते हैं. (४)

सूक्त इक्यासीवां देवता—इंद्र

विद्म वै ते जायान्य जानं यतो जायान्य जायसे.
कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृण्मो हविर्गृहे (१)

हे क्षय रोग! हम तेरी उत्पत्ति के उस स्थान को जानते हैं, जहां से तू जन्म लेता है. तेरी उत्पत्ति के स्थान को जानते हुए हम यजमान के घर में इंद्र आदि देवों के लिए तुझे देते हैं. (१)

धृषत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम्.
माध्यन्दिने सवन आ वृषस्व रयिष्ठानो रयिमस्मासु धेहि (२)

हे शत्रुओं को दलित करने वाले इंद्र! द्रोण कलश में स्थित सोमरस का पान करो. हे शूर एवं वृत्र का हनन करने वाले इंद्र! तुम धन संबंधी युद्धों के निमित्त अर्थात हमें धन प्राप्त कराने के लिए सोमपान करो. तुम हमारे माध्यदिंन यज्ञ में भरपेट सोमरस पियो. तुम धन के अधिष्ठान हो, इसीलिए हमें धन प्रदान करो. (२)

सूक्त बयासीवां — देवता—मरुत

सांतपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन. अस्माकोती रिशादसः (१)

हे संतपन अर्थात सूर्य से संबंधित अथवा संताप के समय अर्थात दोपहर में यज्ञ करने योग्य मरुतो! यह हवि तुम्हारे निमित्त बनाया गया है, इसीलिए इसे सेवन करो. शत्रुओं को बाधा पहुंचाने वाले तुम हमारी रक्षा के लिए हवि का सेवन करो. (१)

यो नो मर्तो मरुतो दुर्हणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति.
द्रुहः पाशान् प्रति मुञ्चतां सस्तपिष्ठेन तपसा हन्तना तम् (२)

हे धन देने वाले मरुतो! जो दुष्ट मनुष्य हम से छिप कर हमारे मन को क्षुब्ध करता है, वह शत्रु पापियों से द्रोह करने वाले वरुण के पाशों को धारण करे. हे मरुतो! हमें मारने की इच्छा करने वाले मनुष्य को अपने आयुध से मार डालो. (२)

संवत्सरीणा मरुतः स्वर्का उरुक्षयाः सगणा मानुषासः.
ते अस्मत् पाशान् प्र मुञ्चन्त्वेनसः सांतपना मत्सरा मादयिष्णवः (३)

प्रति वर्ष उत्पन्न होने वाले, शोभन मंत्रों द्वारा स्तुत, विस्तृत आकाश के निवासी, अपनेअपने संघों से युक्त, वर्षा के द्वारा सब के हितकारी, शत्रुओं को संताप देने वाले, प्रसन्न होते हुए और सब को संतुष्ट करने वाले मरुत पापों के कारण होने वाले दोष को हम से दूर रखें. (३)

सूक्त तिरासीवां — देवता—अग्नि

वि ते मुञ्चामि रशनां वि योक्त्रं वि नियोजनम्. इहैव त्वमजस्र एध्यग्ने (१)

हे अग्निदेव! मैं तुम्हारे द्वारा निर्मित एवं रोगी के गलों को बांधने वाली रस्सी को खोलता हूं. मैं रोगी की कमर को बांधने वाली तथा रोगी के पैरों को बांधने वाली रस्सियों को खोलता हूं. हे अग्नि! इसी रुग्ण शरीर में तुम सदैव वृद्धि प्राप्त करो. (१)

अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन.
दीदिह्य१स्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दां देवतासु (२)

हे अग्निदेव! इस यजमान के लिए बल धारण करने वाले तुम को मैं देव संबंधी मंत्र के द्वारा हवि वहन करने के लिए युक्त करता हूं. इस समय हमें धन एवं पुत्र आदि की प्राप्ति का सुख प्रदान करो. हवि देने वाले इस यजमान के विषय में अग्नि, इंद्र आदि देवों को बताओ. (२)

सूक्त चौरासीवां — देवता—अमावस्या

यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा.
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम् (१)

हे अमावस्या! तुम्हारे महत्त्व के कारण निवास करते हुए फल की कामना करने वाले लोग तुम्हें हवि देते हैं. हमें वह फल प्राप्त हो और हम धनों के स्वामी बनें. पूर्ण चंद्र से युक्त पौर्णमासी पश्चिम दिशा में विजयी होती है तथा पूर्व दिशा में विजय प्राप्त करती है. (१)

अहमेवास्म्यमावास्या३ मामा वसन्ति सुकृतो मयीमे.
मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे (२)

मैं ही अमावस्या संबंधी देव हूं. शोभन कर्मों वाले देवयज्ञ योग्यता के कारण मुझ में निवास करते हैं. साध्य और सिद्ध नामक दोनों प्रकार के इंद्र आदि देव मुझ से मिलते हैं. (२)

आगन् रात्री संगमनी वसूनामूर्जं पुष्टं वस्वावेशयन्ती.
अमावास्यायै हविषा विधेमोर्जं दुहाना पयसा न आगन् (३)

अमावस्या की रात्रि हमें धन प्रदान करने के निमित्त आए. वह हमें अन्न का रस, पोषण और धन देती हुई आए. (३)

अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान.
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् (४)

हे अमावस्या! तेरे अतिरिक्त कोई भी देव इस समय वर्तमान समस्त साकार प्राणियों में व्याप्त होने वाला नहीं है. हम जिस फल की कामना करते हुए तुम्हें हवि देते हैं, हमें वह फल प्राप्त हो और हम धनों के स्वामी बनें. (४)

सूक्त पचासीवां — देवता—पौर्णमासी प्रजापति

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय.
तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम (१)

पूर्ण चंद्र से युक्त पौर्णमासी पश्चिम दिशा में विजयी होती है तथा पूर्व दिशा में विजय प्राप्त करती है. यह आकाश के मध्य में भी सर्वोत्कृष्ट सिद्ध होती है. हम इस पौर्णमासी में यज्ञ करने योग्य देवों के साथ महत्त्व से निवास करते हुए, स्वर्ग के ऊपरी भाग में अन्न के साथ प्रसन्न हों. (१)

वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यजामहे.
स नो ददात्वक्षितां रयिमनुपदस्वतीम् (२)

हम अभिलषित फल देने वाले तथा अन्न धन से युक्त पौर्णमास पर्व का यज्ञ करते हैं. पौर्णमास यज्ञ हमें विनाश रहित, शत्रुओं की बाधा से रहित एवं उपभोग करने पर भी क्षीण न होने वाला धन दे. (२)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान.
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् (३)

हे प्रजापति! तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी देव इस समय वर्तमान समस्त आकार के प्राणियों में व्याप्त होने वाला नहीं है. हम जिस फल की कामना करते हुए तुम्हें हवि देते हैं, हमें वह फल प्राप्त हो और हम धनों के स्वामी बनें. (३)

पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वरेषु.
ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः (४)

पौर्णमासी दिनों और रात्रियों में यज्ञ के योग्य प्रमुख तिथि है. पौर्णमासी सभी रात्रियों और सोम आदि हवियों में उत्तम है. हे यज्ञ के योग्य पौर्णमासी! जो दर्श, पौर्णमास आदि यज्ञों के द्वारा तुम्हारी अर्चना करते हैं, वे शोभन कर्मों वाले यजमान स्वर्ग में स्थित होते हैं. (४)

सूक्त छियासीवां — देवता—सावित्री

पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम्.
विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूंरन्यो विदधज्जायसे नवः (१)

सूर्य और चंद्र आगेपीछे चलते हुए आकाश में साथसाथ गमन करते हैं. ये शिशु के रूप में सागरों के पास जाते हैं. इन में से एक आदित्य अर्थात सूर्य समस्त प्राणियों को देखता है तथा दूसरा चंद्रमा ऋतुओं, मासों एवं पक्षों का निर्माण करता हुआ नवीन होता रहता है. (१)

नवोनवो भवसि जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेष्यग्रम्.
भागं देवेभ्यो वि दधास्यायन् प्र चन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः (२)

हे चंद्रमा! तू शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा आदि तिथियों में उत्पन्न होता हुआ नवीन बनता है. झंडे के समान दिनों का परिचय कराता हुआ तू रात्रियों के आगेआगे चलता

है. हे चंद्रमा! इस प्रकार ह्रास और वृद्धि के द्वारा पखवाड़े के अंत को प्राप्त हुआ तू हवि का विभाग करता है. इस प्रकार तू दीर्घ आयु धारण करता है. (२)

सोमस्यांशो युधां पतेऽनूनो नाम वा असि.
अनूनं दर्श मा कृधि प्रजया च धनेन च (३)

हे सोम अर्थात चंद्रमा के अंश रूप पुत्र अर्थात बुध एवं योद्धाओं के पालक! तुम सर्वदा तेजस्वी हो, इसलिए हे दृष्टव्य बुध! हवि के द्वारा तुम्हारी पूजा करने वाले मुझ को पुत्र आदि प्रजा एवं धन से संपन्न बनाओ. (३)

दर्शोऽसि दर्शतोऽसि समग्रोऽसि समन्तः.
समग्रः समन्तो भूयासं गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन (४)

हे चंद्र! तुम अमावस्या के साथ ही सूर्य के भी देखने योग्य हो. इस के बाद तृतीया आदि तिथियों में भी तुम कला रूप से दिखाई देते हो. इस के पश्चात अष्टमी आदि तिथियों में इस से भी अधिक स्पष्ट दिखाई देते हो. पौर्णमासी तिथि में तुम संपूर्ण कलाओं से युक्त हो जाते हो. इसी प्रकार मैं भी गाय आदि से समृद्ध और संपूर्ण बनूं. (४)

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेना प्यायस्व.
आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन (५)

हे सोम! जो शत्रु हम से द्वेष करता है अथवा जिस शत्रु से हम द्वेष करते हैं, तुम उस शत्रु के प्राणों का अपहरण करो. हम गायों, अश्वों, प्रजाओं, पशुओं, धनों और घरों से युक्त हों. (५)

यं देवा अंशुमाप्याययन्ति यमक्षितमक्षिता भक्षयन्ति.
तेनास्मानिन्द्रो वरुणो बृहस्पतिरा प्याययन्तु भुवनस्य गोपाः (६)

जिस सोम को देवगण शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन एकएक कला दे कर बढ़ाते हैं तथा जिस सोम को संपूर्ण रूप में सभी दिनों में क्षीणता रहित पितर आदि पीते हैं, उस सोम के साथ इंद्र, वरुण, बृहस्पति एवं सभी प्राणियों के रक्षक देव हवि आदि से प्रसन्न करने वाले हम को बढ़ाएं. (६)

सूक्त सतासीवां — देवता—अग्नि

अभ्यर्चत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त.
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ताम् (१)

गायों के समूह आदि की दृष्टि से जिन की शोभन स्तुति की जाती है, उन अग्नि की अर्चना करो. वह हमें भद्र धन प्रदान करें तथा हमारे इस यज्ञ में अन्य देवों को लाएं. इसलिए घृत की मधुवर्ण धाराएं देवों को प्राप्त हों. (१)

मय्यग्रे अग्निं गृह्णामि सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन.
मयि प्रजां मय्यायुर्दधामि स्वाहा मय्यग्निम् (२)

मैं सब से पहले अरणि मंथन से उत्पन्न अग्नि को धारण करता हूं. मैं अग्नि को क्षत्रिय संबंधी तेज, बल और सामर्थ्य के साथ हवि देता हूं. (२)

इहैवाग्ने अधि धारया रयिं मा त्वा नि क्रन् पूर्वचित्ता निकारिणः.
क्षत्रेणाग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः (३)

हे अग्नि! तुम्हारी परिचर्या करने वाले हम हैं. हमें ही धन दो. हम से पहले जो लोग तुम्हारे प्रति आकर्षित थे और हमारे अपकारी थे, वे तुम्हें स्वाधीन न बनाएं. हे अग्नि! तुम्हारा स्वरूप बल के साथ स्थिर हो, तुम्हारा परिचारक यह यजमान अपनी कामनाएं प्राप्त करे तथा किसी से भी पराजित न हो. (३)

अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः.
अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीनन्‌ु द्यावापृथिवी आ विवेश (४)

अग्निदेव प्रातःकाल के पूर्व से ही प्रकाशित होते हैं. महान जातवेद अग्नि इस के पश्चात दिनभर प्रकाशित रहते हैं. ये सूर्यात्मक अग्नि प्रातःकाल के पश्चात व्यापक किरणों के द्वारा प्रकाशित होते हैं. अग्नि का यह प्रकाश धरती और आकाश दोनों में प्रवेश कर के प्रकाशित करता है. (४)

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः.
प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ ततान (५)

अग्निदेव प्रातःकाल से पूर्व ही प्रकाशित होते हैं. महान जातवेद अग्नि इस के पश्चात दिन भर प्रकाशित रहते हैं. अग्नि अनेक रूप से प्रवृत्त होने के कारण सूर्य की किरणों के रूप में स्वयं ही प्रकाशित होते हैं. इस प्रकार अग्निदेव धरती और आकाश में सभी जगह प्रकाशित होते हैं. (५)

घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे.
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने (६)

हे अग्नि! तुम से संबंधित हवि देवों के साथ उन के निवास स्थान अर्थात स्वर्ग में है. इस समय हम तुम्हें घृत के द्वारा भलीभांति तृप्त करते हैं. हे अग्नि! तुम्हें दिव्य जल प्राप्त हो तथा गाएं तुम्हारे लिए घृत प्रदान करें. (६)

सूक्त अठासीवां देवता—वरुण

अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः.
ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु (१)

हे समस्त देवों के स्वामी वरुण! जलों के मध्य तुम्हारा स्वर्ण निर्मित निवास स्थान है, जहां दूसरे नहीं पहुंच सकते. इस कारण सच्चे कर्मों वाले राजा वरुण हमारे शरीर के सभी स्थानों को त्याग दें अर्थात हमें जलोदर आदि रोग न हो. (१)

धाम्नोधाम्नो राजन्नितो वरुण मुञ्च नः.
यदापो अघ्न्या इति वरुणेति यदूचिम ततो वरुण मुञ्च नः (२)

हे राजा वरुण! इन सभी रोग स्थानों से हमें त्याग दो तथा उन से संबंधी पापों से हमें बचाओ. हे जलों के स्वामी एवं हिंसा रहित वरुण! हम ने प्रसिद्ध देवों का नाम न ले कर जो पाप किया है, उस से भी हमें बचाओ. (२)

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय.
अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम (३)

हे वरुण! हमारे शरीर के ऊपरी भाग में स्थित अपने पाश को शिथिल करो तथा हमारे शरीर के मध्य भाग में स्थित अपने पाश को भी शिथिल करो. इस के पश्चात हे अदिति पुत्र वरुण! सभी पापों से छूट कर हम तुम्हारे कर्म में पापरहित होने के लिए सम्मिलित हों. (३)

प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उत्तमा अधमा वारुणा ये.
दुष्वप्न्यं दुरितं निष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् (४)

हे वरुण! तुम्हारे जो उत्तम और अधम पाप हैं, उन सब पापों से हमें छुड़ाओ. दुःस्वप्न में होने वाले पाप को भी हम से दूर करो. पापहीन हो कर हम पुण्य के लोक में पहुंचें. (४)

सूक्त नवासीवां — देवता—अग्नि, इंद्र

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्ने क्षत्रभृद् दीदिहीह.
विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गमय् (१)

हे अग्नि! कोई तुम्हें तनक भी पराजित नहीं कर सकता. हे जातवेद! अमर, विराट और क्षत्र बल को धारण करने वाले वरुण हमारे इस यज्ञ स्थल में अतिशय दीप्त बनें तथा सभी रोगों का विनाश कर के इस समय सभी मनुष्य संबंधी कल्याणों से हमारे घरों की रक्षा करें. (१)

इन्द्र क्षत्रमभि वाममोजोऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम्.
अपानुदो जनममित्रायन्तमुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम् (२)

हे इंद्र! तुम कष्ट से त्राण करने वाले बल को धारण कर के उत्पन्न हुए हो. हे अभिमत फल देने वाले! जो हम मनुष्यों की उत्पत्ति के पश्चात शत्रु के समान आचरण करता है, उस को हम से दूर कर के तुम ने देवों के लिए स्वर्ग नाम का

विस्तीर्ण लोक बनाया है. (२)

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगम्यात् परस्याः.
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व (३)

इंद्र बुरे चरणों वाले एवं पर्वत निवासी सिंह के समान भयानक हैं. वह अत्यधिक दूरवर्ती आकाश से आएं. आने के पश्चात वे अपने गतिशील वज्र को भलीभांति तेज कर के हमारे शत्रुओं को मारें तथा संग्राम के लिए उद्यत अन्य शत्रुओं का भी विनाश करें. (३)

सूक्त नब्बेवां देवता—गरुड़

त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम्.
अरिष्टनेमिं पृतनाजिमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम (१)

हम यज्ञकर्म की पूर्ति के निमित्त गरुड़ का आह्वान करते हैं. वह बलशाली, देवों के द्वारा सोम लाने हेतु प्रेरित तथा सब को पराजित करने वाले हैं. उन के रथ पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता. वह संग्राम में शत्रुओं को नष्ट करने वाले हैं. गरुड़ शत्रु सेनाओं के विजेता एवं शीघ्रगामी है. (१)

सूक्त इक्यानबेवां देवता—इंद्र

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्.
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति न इन्द्रो मघवान् कृणोतु (१)

हम त्राण एवं रक्षा करने वाले इंद्र का आह्वान करते हैं. हम अपने आह्वानों के द्वारा शूर इंद्र को बुलाते हैं. हम शक्तिशाली एवं पुरुहूत इंद्र को बुलाते हैं. शक्तिशाली इंद्र हमें स्वास्थ्य प्रदान करें. (१)

सूक्त बानबेवां देवता—इंद्र

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्व१न्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश.
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये (१)

जो रुद्रदेव यज्ञ करने योग्य होने के कारण अग्नि में प्रवेश कर गए हैं तथा जिन्होंने वरुण के रूप में जलों में प्रवेश किया है, जिन्होंने वृक्षों, लताओं और जड़ीबूटियों में स्थान प्राप्त किया है, रुद्र इन सभी प्राणियों का निर्माण करने में समर्थ हुए हैं, उन अग्नि रूप रुद्र को नमस्कार है. (१)

सूक्त तिरानबेवां देवता—सर्पविष का विनाश

अपेह्यरिरस्यरिर्वा असि. विषे विषमपृक्था विषमिद् वा अपृक्थाः.
अहिमेवाभ्यपेहि तं जहि (१)

हे सर्पविष! तू इस डसे हुए पुरुष के शरीर से दूर चला जा, क्योंकि तू शत्रु है. तू केवल इस का ही नहीं, सभी मनुष्यों का शत्रु है, इसीलिए तू विषैले सर्प में ही अपना विष संयुक्त कर. तू अपना विषैला प्रभाव ही संयुक्त कर. हे विष! तू जिस सर्प का है, उसी के समीप जा तथा उसी का विनाश कर. (१)

सूक्त चौरानबेवां — देवता—अग्नि

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्ष्महि.
पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा (१)

मैं दिव्य जलों की पूजा करता हूं. मैं उन जलों के रस से युक्त हो जाऊं. हे अग्नि! मैं तुम्हारे लिए हवि ले कर आया हूं. इस प्रकार के मुझे तुम तेज से युक्त करो. (१)

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा.
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः (२)

हे अग्नि! मुझे तेज से, बल से, संतान से एवं लंबी आयु से युक्त करो. मेरी पवित्रता को देवगण जाने तथा अतींद्रिय मुनियों के साथ इंद्र भी मेरी पवित्रता को जाने. (२)

इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत्.
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम् (३)

हे जलो! मेरे इस पाप को दूर करो. मुझ में जो निंदा रूपी मल तथा असत्य है उस से देवगण द्रोह करें. अर्थात उसे समाप्त कर दें. मैं ने ऋण ले कर उसे न चुकाने के लिए जो शपथ खाई है, उस पाप को भी देवगण मुझ से दूर करें. (३)

एधोऽस्येधिषीय समिदसि समेधिषीय. तेजोऽसि तेजो मयि धेहि (४)

हे अग्नि! तुम दीप्त होते हो, इस के फल के रूप में मैं समृद्ध बनूं. हे अग्नि! तुम तेज रूप हो, इसीलिए मुझ में भी तेज धारण करो. (४)

सूक्त पचानबेवां — देवता—मंत्रों में बताए गए

अपि वृश्च पुराणवद् व्रततेरिव गुष्पितम्. ओजो दासस्य दम्भय (१)

हे अग्नि! तुम पुराने शत्रुओं के समान इस समय भी जार रूप शत्रु का उसी प्रकार विनाश करो, जिस प्रकार लताओं के समूह को काट देते हैं. (१)

वयं तदस्य संभृतं वस्विन्द्रेण वि भजामहै.
म्लापयामि भ्रजः शिभ्रं वरुणस्य व्रतेन ते (२)

हम इंद्र देव की सहायता से इस सामने बैठे शत्रु के धन को अपने अधीन कर

लें. हे जार! तेरे शुभ वर्ण वाले एवं दीप्त वीर्य को वरुण देव संबंधी कर्म के द्वारा हम क्षीण करते हैं. (२)

यथा शेपो अपायातै स्त्रीषु चासदनावया:. अवस्थस्य क्नदीवत:
शाङ्कुरस्य नितोदिन:. यदाततमव तत्तनु यदुत्ततं नि तत्तनु (३)

जिस प्रकार जार का प्रजनन अंग नारी संभोग के योग्य न रहे तथा नारी के समीप व्यर्थ सिद्ध हो, उस प्रकार जार परकीया स्त्रियों में संभोग रहित हो जाए, जो जार संभोग हेतु बुलाए जाने पर नारी को अत्यधिक व्यथित करता था, उस जार का विशाल प्रजनन अंग छोटा हो जाए तथा उस का ऊपर उठा हुआ प्रजनन अंग नीचे को झुक जाए. (३)

सूक्त छियानबेवां — देवता—चंद्रमा, इंद्र

इन्द्र: सुत्रामा स्ववां अवोभि: सुमृडीको भवतु विश्ववेदा:.
बाधतां द्वेषो अभयं न: कृणोतु सुवीर्यस्य पतय: स्याम (१)

भली प्रकार रक्षा करने वाले एवं धन के स्वामी इंद्र अपने रक्षा साधनों से हमें सभी प्रकार सुखी बनाएं. वह इंद्र हमें अभय प्रदान करें तथा हम शोभन शक्ति वाले धन के स्वामी बनें. (१)

सूक्त सत्तानबेवां — देवता—चंद्रमा, इंद्र

स सुत्रामा स्ववां इन्द्रो अस्मदाराच्चिद् द्वेष: सनुतर्युयोतु.
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम (१)

शोभन रक्षा वाले एवं धन के स्वामी इंद्र हम से दूर से ही द्वेष करने वालों को नष्ट करें. हम यज्ञ के योग्य इंद्र की शोभन बुद्धि में हों तथा वह हमारे प्रति सौमनस्य रखें. (१)

सूक्त अट्ठानबेवां — देवता—इंद्र

इन्द्रेण मन्युना वयमभि ष्याम पृतन्यत:. घ्नन्तो वृत्राण्यप्रति (१)

सहायक इंद्र के कोप के कारण हम संग्राम की इच्छा रखने वाले शत्रुओं को पराजित करें. पापों को इंद्र इस प्रकार नष्ट करें कि वह शेष न बचें. (१)

सूक्त निन्यानबेवां — देवता—सोम

ध्रुवं ध्रुवेण हविषाव सोमं नयामसि. यथा न इन्द्र: केवलीर्विश: संमनसस्करत् (१)

हम सोमरस को रथ में आसीन कर के हवि के साथ लाते हैं, जिस से इंद्र हमारी संतानों को असाधारण एवं परस्पर सौमनस्य वाली बनाएं. (१)

सूक्त सौवां

देवता—गिद्ध

उदस्य श्यावौ विथुरौ गृध्रौ द्यामिव पेततुः.
उच्छोचनप्रशोचनावस्योच्छोचनौ हृदः (१)

इस शत्रु के नित्य चलने वाले दोनों काले होंठ विदीर्ण हो जाएं तथा इस प्रकार गिर पड़ें, जिस प्रकार आकाश में उड़ता हुआ गिद्ध नीचे गिरता है. उच्छोचन और प्रशोचन नामक मृत्यु देव इस शत्रु के हृदय को अधिक रूप में शोक पहुंचाने वाले हों. (१)

अहमेनावुदतिष्ठिपं गावौ श्रान्तसदाविव. कुर्कुराविव कूजन्तावुदवन्तौ वृकाविव (२)

अनुष्ठान करने वाला मैं इस शत्रु के दोनों काले होंठों को इस प्रकार उखाड़ता हूं, जिस प्रकार थक कर बैठी हुई गायों को डंडे से कोंच कर उठाया जाता है. भूंकते हुए कुत्तों को पत्थर आदि फेंक कर भगाया जाता है और गायों के झुंड में से बछड़ों को पकड़ कर ले जाते हुए भेड़ियों को ग्वाले बलपूर्वक भगाते हैं. (२)

आतोदिनौ नितोदिनावथो संतोदिनावुत.
अपि नह्याम्यस्य मेढ्रं य इतः स्त्री पुमाञ्जभार (३)

सभी प्रकार से व्यथा पहुंचाने वाले शत्रु के अत्यधिक बाधा डालने वाले दोनों होंठों को मैं उखाड़ता हूं जो मिल कर बोलते हुए मुझे व्यथित करते हैं. हम से द्वेष रखने वाले जिस पुरुष अथवा स्त्री ने इस स्थान से हमारा धन चुराया है, उस शत्रु के प्रजनन अंग को भी मैं बांधता हूं. (३)

सूक्त एक सौ एकवां

देवता—पक्षी

असदन् गावः सदनेऽपप्तद् वसतिं वयः.
आस्थाने पर्वता अस्थुः स्थाम्नि वृक्कावतिष्ठिपम् (१)

गाय जिस प्रकार गोशाला में बैठती है, पक्षी जिस प्रकार अपने घोंसले में जाते हैं और पर्वत जिस प्रकार अपने स्थान पर स्थित रहते हैं, मैं अपने शत्रु के घर में उसी प्रकार भेड़ियों को स्थापित करता हूं. (१)

सूक्त एक सौ दोवां

देवता—इंद्र, अग्नि

यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतश्चिकित्वन्नवृणीमहीह.
ध्रुवमयो ध्रुवमुता शविष्ठ प्रविद्वान् यज्ञमुप याहि सोमम् (१)

हे यज्ञ में देवों का आह्वान करने वाले एवं हे ज्ञानवान अग्नि! हम ने तुम्हें आज इस यज्ञ में होता के रूप में वरण किया है, इसीलिए तुम निश्चय ही यज्ञ करो तथा इस यज्ञ कर्म के दोषों को शांत करो. तुम इस यज्ञ को विशेष रूप से सोमरस युक्त

जानकर आओ. (१)

समिन्द्र नो मनसा नेष गोभिः सं सूरिभिर्हरिवन्त्सं स्वस्त्या.
सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानाम् (२)

हे इंद्र! हमें स्तुति रूपी शब्दों से युक्त कर के बोलने में कुशल बनाओ, जिस से हम तुम्हारी स्तुति कर सकें. हे अश्वों के स्वामी इंद्र! हमें विद्वानों से युक्त करो, जिस से हमारा विनाश न हो. हमें ब्रह्म ज्ञान एवं देव हितकारी अग्निहोत्र आदि से युक्त बनाओ. हमें अग्नि आदि यज्ञ के योग्य देवों की सुमति में स्थापित करो. (२)

यानावह उशतो देव देवांस्तान् प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे.
जक्षिवांसः पपिवांसो मधून्यस्मै धत्त वसवो वसूनि (३)

हे दीप्तिशाली अग्नि! तुम ने हवि की कामना करने वाले देवों का आह्वान किया है. तुम उन्हें अपने निवास स्थान में रहने के लिए प्रेरित करो. हे पुरोडाश का भक्षण करने वाले, मधु रस से युक्त आज्य को पीने वाले एवं लोकों के रक्षक देवो! तुम इस यजमान के लिए धन दो. (३)

सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्म सवने मा जुषाणाः.
वहमाना भरमाणाः स्वा वसूनि वसुं घर्मं दिवमा रोहतानु (४)

हे देवो! तुम्हारे घर सुख से पहुंचने योग्य बनाए गए हैं. हवि का सेवन करने वाले तुम सब घरों में आए थे. तुम अपने धनों को प्राप्त कर के हमारा पोषण करते हुए समस्त लोक में निवास करने वाले आदित्य में स्थित बनो और हमें धन देने के पश्चात अपने स्थान को जाओ. (४)

यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ. स्वां योनिं गच्छ स्वाहा (५)

हे यज्ञ! तू यज्ञ कर ने योग्य परमात्मा विष्णु के समीप जा, जिस से तू प्रतिष्ठित हो सके. इस के पश्चात तू यज्ञ का पालन करने वाले यजमान को फल देने के हेतु प्राप्त हो. इस के पश्चात तू सारे संसार के कारण बने हुए परमेश्वर की शक्ति को प्राप्त कर. यह आज्य शोभन आहुति वाला हो. (५)

एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः. सुवीर्यः स्वाहा (६)

हे यजमान! यह यज्ञ विविध स्तोतों वाला, शोभन पुत्र, पौत्र आदि से युक्त हो एवं तुम्हें मिले. यह आज्य शोभन आहुति वाला हो. (६)

वषड्ढुतेभ्यो वषडहुतेभ्यः. देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित (७)

इष्ट देवों और अग्नि देवों के लिए यह आज्य अग्नि में दिया जाए. हे मार्ग को जानने वाले देवो! तुम मार्ग पा कर हमारे यज्ञ में जिस मार्ग से आए हो, उसी मार्ग से लौट जाओ. (७)

मनसस्पत इमं नो दिवि देवेषु यज्ञम्.
स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा (८)

हे समस्त प्राणियों के स्वामी देव! हमारे इस यज्ञ को स्वर्ग में वर्तमान देवों तक पहुंचाओ. तुम हमारे यज्ञ को आकाश में, पृथ्वी पर, अंतरिक्ष में एवं सभी कर्मों के आधार वायु में स्थापित करो. (८)

सूक्त एक सौ तीनवां देवता—इंद्र

सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः.
सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा (१)

स्रुक आदि पात्र पुरोडाश और आज्य से पूर्ण हो कर इंद्र के साथ, वसुओं के साथ मरुद्गण के साथ तथा विश्वेदेवों के साथ संपन्न हुए. इस प्रकार का पात्र इंद्र को प्राप्त हो तथा यह हवि शोभन आहुति वाला हो. (१)

सूक्त एक सौ चारवां देवता—वेदी

परि स्तृणीहि परि धेहि वेदिं मा जामिं मोषीरमुया शयानाम्.
होतृषदनं हरितं हिरण्ययं निष्का एते यजमानस्य लोके (१)

हे दर्भ घास के फूल! तुम यज्ञ वेदी के चारों ओर विस्तीर्ण हो कर उसे ढक लो. तुम इस वेदी पर सोते हुए यजमान के सहयोगियों का एवं संतान का विनाश मत करो. हे होताओं के बैठने के स्थान हरित वर्ण वाले एवं स्वर्ग के समान रमणीय दर्भ! तुम यज्ञ वेदी पर फैल जाओ. ये फैले हुए दर्भ यजमान के लोकों में सोने के अलंकार हों. (१)

सूक्त एक सौ पांचवां देवता—बुरे स्वप्न का विनाश

पर्यावर्तेदुष्वप्नयात् पापात् स्वप्न्यादभूत्याः.
ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः (१)

मैं बुरे स्वप्न से उत्पन्न पाप से छूट जाऊं तथा स्वप्न के दोष से भी अलग रहूं. मैं बुरे स्वप्न का निवारण करने वाले मंत्र को बोलता हूं. बुरे स्वप्न से संबंध रखने वाले शोक मुझ से दूर हों. (१)

सूक्त एक सौ छठवां देवता—बुरे स्वप्न का विनाश

यत् स्वप्ने अन्नमश्नामि न प्रातरधिगम्यते.
सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा (१)

स्वप्न देखते समय मैं जो अन्न खाता हूं, वह अन्न प्रातःकाल दिखाई नहीं देता.

वह अन्न दिन में भी नहीं दिखाई देता. स्वप्न में खाया गया समस्त भोजन मेरे लिए कल्याण करने वाला हो. (१)

सूक्त एक सौ सातवां देवता—द्यावा, पृथ्वी आदि

नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यामन्तरिक्षाय मृत्यवे.
मेक्षाम्यूर्ध्वस्तिष्ठन् मा मा हिंसिपुरीश्वरा: (१)

मैं धरती, आकाश, अंतरिक्ष और मृत्यु को नमस्कार कर के बैठा हूं. मैं ऊर्ध्व लोक को न जाऊं अर्थात मृत्यु को प्राप्त न करूं. द्यावा, पृथ्वी आदि के अधिष्ठाता देव मेरी हिंसा न करें. (१)

सूक्त एक सौ आठवां देवता—आत्मा

को अस्या नो द्रुहो ऽवद्यवत्या उन्नेष्यति क्षत्रियो वस्य इच्छन्.
को यज्ञकाम: क उ पूर्तिकाम: को देवेषु वनुते दीर्घमायु: (१)

हमें निवास स्थान देने का इच्छुक कौन क्षत्रिय राजा इस समय बाधा पहुंचाने वाली एवं अहितकारिणी पिशाची से हमारा उद्धार करेगा? हमारे द्वारा किए जाते हुए यज्ञ की कामना करता हुआ एवं हमें धन की आपूर्ति की इच्छा करता हुआ कौन सा देव देवों के मध्य चिरकाल तक होने वाले जीवन को प्राप्त करता है. (१)

सूक्त एक सौ नौवां देवता—आत्मा

क: पृश्निं धेनुं वरुणेन दत्तमथर्वणे सुदुघां नित्यवत्साम्.
बृहस्पतिना सख्यं जुषाणो यथावशं तन्व: कल्पयाति (१)

लाल आदि रंगों वाली, सरलता से दुही जाने वाली, सर्वदा बछड़े देने वाली एवं अथर्वा ऋषि के लिए वरुण द्वारा दी गई गाय को बृहस्पतिदेव के साथ मित्रता का भाव रखता हुआ कौन सा देव इच्छानुसार कल्पित कर सकता है. आशय यह है कि केवल बृहस्पति देव ही ऐसा कर सकते हैं. (१)

सूक्त एक सौ दसवां देवता—ब्रह्मचारी

अपक्रामन् पौरुषेयाद् वृणानो दैव्यं वच:.
प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभि: सखिभि: सह (१)

हे ब्रह्मचारी! तू पुरुषों के हितकारी लौकिक कर्म त्याग कर देव संबंधी वाक्य अर्थात वेद मंत्रों के स्वाध्याय को स्वीकार करता हुआ संयमी बन तथा सभी ब्रह्मचारियों के साथ निवास कर. (१)

सूक्त एक सौ ग्यारहवां
देवता—जातवेद

यदस्मृति चकृम किं चिदग्न उपारिम चरणे जातवेदः.
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः (१)

हे अग्निदेव! हम ने तुम्हारे स्मरण से रहित जो कर्म किया है तथा इस यज्ञ के अनुष्ठान में जो कमी रह गई है, हे उत्तम कर्म जानने वाले अग्निदेव! तुम उस पाप से हमारी रक्षा करो. इस के पश्चात मैं अपने प्रिय व्यक्तियों के शोभन यज्ञ कर्म में संलग्न रहूं. (१)

सूक्त एक सौ बारहवां
देवता—सूर्य

अव दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः.
आपः समुद्रिया धारास्तास्ते शल्यमसिस्रसन् (१)

कश्यप नामक प्रधान सूर्य से संबंधित सात व्यापक किरणों वाले आरोग्य आदि सूर्य हैं. वे आकाश में उत्पन्न धारा रूपी जलों को आकाश से नीचे उतारते हैं. हे रोगी! वे जल शल्य के समान तेरे यक्ष्मा रोग को नष्ट कर दें. (१)

सूक्त एक सौ तेरहवां
देवता—अग्नि

यो नस्तायद् दिप्सति यो न आविः स्वो विद्वानरणो वा नो अग्ने.
प्रतीच्येत्वरणी दत्वती तान् मैषामग्ने वास्तु भून्मो अपत्यम् (१)

हे अग्नि! जो शत्रु हमें प्रच्छन्न रूप से मारना चाहता है, जो शत्रु हमें प्रकाश रूप में मारना चाहता है तथा दूसरे को बाधा पहुंचाने के उपाय जानता हुआ आत्मीय बंधु हमें मारना चाहता है—इन तीनों को दांतों वाली तथा कष्टकारिणी राक्षसी प्राप्त हो. अर्थात वह अपने दांतों से खाने के लिए उन के समीप आए. हे अग्नि! उक्त तीनों का घर एवं संतान नष्ट हो जाए. (१)

यो नः सुप्ताञ्जाग्रतो वाभिदासात् तिष्ठतो वा चरतो जातवेदः.
वैश्वानरेण सयुजा सजोषास्तान् प्रतीचो निर्दह जातवेदः (२)

हे अग्नि! जो शत्रु हमें सोते हुए मारना चाहता है, जो हमें जागते हुए मारना चाहता है, जो शत्रु हमें बैठे हुए मारना चाहता है तथा जो शत्रु हमें चलते हुए मारना चाहता है, हे अग्नि! तुम जठराग्नि से मिल कर और समान प्रीति वाले बन कर हमें मारने के लिए सामने आते हुए शत्रुओं को जलाओ. (२)

सूक्त एक सौ चौदहवां
देवता—अग्नि

इदमुग्राय बभ्रवे नमो यो अक्षेषु तनूवशी.
घृतेन कलिं शिक्षामि स नो मृडातीदृशे (१)

637/25

अधिक बलशाली एवं मटमैले रंग वाले उस देव को नमस्कार है जो जुए में विजय प्राप्त कराता है. वह जुए में पांसों से इच्छानुसार विजय दिलाने वाला है. मंत्र युक्त घृत के द्वारा मैं कलि अर्थात पराजय देने वाले पांच अंकों को नष्ट करता हूं. नमस्कार से प्रसन्न जुए का देव इस प्रकार के जय लक्षण फल के द्वारा हमें सुखी करें. (१)

घृतमप्सराभ्यो वह त्वमग्ने पांसूनक्षेभ्यः सिकता उपश्च.
यथाभागं हव्यदातिं जुषाणा मदन्ति देवा उभयानि हव्या (२)

हे अग्नि! तुम हमारी विजय के लिए अंतरिक्ष में घूमने वाली अप्सराओं को आज्य अर्थात घृत पहुंचाओ तथा हमारे विरोधी जुआरियों के लिए सूक्ष्म धूल के कण, शकर और जल पहुंचाओ, जिस से वे पराजित हों. अपनेअपने भाग के अनुसार हवि प्राप्त करते हुए देव दो प्रकार के हवि से अर्थात सोम और घृत से तृप्त होते हैं. (२)

अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्यं च.
ता मे हस्तौ सं सृजन्तु घृतेन सपत्नं मे कितवं रन्धयन्तु (३)

जुए की देवियां अप्सराएं भूलोक और अंतरिक्ष लोक में एक साथ प्रसन्न होती हैं. वे अप्सराएं मेरे दोनों हाथों को जय लक्षण फल से संयुक्त करें तथा मेरे विरोधी जुआरी को मेरे वश में करें. (३)

आदिनवं प्रतिदीव्ने घृतेनास्मां अभि क्षर.
वृक्षमिवाशन्या जहि यो अस्मान् प्रतिदीव्यति (४)

मैं अपने विरोधी जुआरी को जीतने के लिए पांसों के द्वारा जुआ खेलता हूं. हे जुए से संबंधित देवियो! मुझे सारपूर्ण विजय से युक्त कराओ. जो जुआरी मुझे जीतने के लिए मेरे विरोध में जुआ खेलता है, उस का उसी प्रकार विनाश करो, जिस प्रकार बिजली सूखे वृक्ष का विनाश कर देती है. (४)

यो नो द्युवे धनमिदं चकार यो अक्षाणां ग्लहनं शेषणं च.
स नो देवो हविरिदं जुषाणो गन्धर्वेभिः सधमादं मदेम (५)

जिस देव ने जुआ खेलते हुए लोगों को विरोधी जुआरी की हार के रूप में धन दिलाया है तथा जिस देव ने विरोधी जुआरी के पांसों का ग्रहण और विरोध में दमन किया है, वह देव हमारी इस हवि को स्वीकार करे. हम जुए के देवों अर्थात गंधर्वों के साथ प्रसन्न रहें. (५)

संवसव इति वो नामधेयमुग्रंपश्या राष्ट्रभृतो ह्य१क्षाः.
तेभ्यो व इन्दवो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् (६)

हे गंधर्वो अर्थात जुए के पांसो! तुम वसु अर्थात धन प्राप्त कराते हो, इसलिए

तुम्हारा नाम संवसु है. क्योंकि पांसे उग्रंपश्या राष्ट्रभृत नामक दो अप्सराओं से संबंधित हैं, इसलिए हम उन गंधर्वों अथवा पांसों के लिए सोमयुक्त हवि प्रयुक्त करते हैं. इस के पश्चात जुआ खेलते हुए हम धनों के स्वामी बनें. (६)

देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदूषिम.
अक्षान् यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे (७)

मैं दुखी हो कर अग्नि आदि देवों को धन लाभ के हेतु बुलाता हूं. मैं ने वेदमंत्रों के ग्रहण के नियमों का पालन किया है तथा मैं मटमैले रंग के पांसों को जुआ खेलने के लिए निर्मित कर रहा हूं इसलिए जुए के अधिष्ठाता देव जय लक्षण फल के द्वारा हमें सुखी करें. (७)

सूक्त एक सौ पंद्रहवां देवता—इंद्र, अग्नि

अग्न इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति. उभा हि वृत्रहन्तमा (१)

हे अग्नि और इंद्र! तुम हवि देने वाले यजमान के पापों को पूर्ण रूप से नष्ट करो, क्योंकि तुम दोनों अर्थात अग्नि और इंद्र ने वृत्र का वध किया है. (१)

याभ्यामजयन्त्स्वश्रग्र एव यावातस्थतुर्भुवनानि विश्वा.
प्रचर्षणी वृषणा वज्रबाहू अग्निमिन्द्रं वृत्रहणा हुवेऽहम् (२)

पूर्वजों ने जिन अग्नि और इंद्र की सहायता से स्वर्ग को अपने अधीन किया है, जिन अग्नि और इंद्र ने सारे लोकों को अपनी महिमा से व्याप्त कर लिया है तथा जो अपने उपासकों के कर्म के फल को विशेष रूप से देखते हैं, उन्हें मनचाहा फल देने वाले, हाथों में वज्र धारण करने वाले तथा वृत्र हंता अग्नि और इंद्र को मैं विजय पाने के लिए बुलाता हूं. (२)

उप त्वा देवो अग्रभीच्चमसेन बृहस्पतिः.
इन्द्र गीर्भिर्न आ विश यजमानाय सुन्वते (३)

हे इंद्र! तुम्हें बृहस्पति देव ने सोमपान के द्वारा अन्यत्र जाने से रोक दिया है. हे इंद्र! तुम सोम निचोड़ने वाले यजमान को धन आदि से पुष्ट करने के लिए हम स्तोताओं की स्तुतियां सुन कर आओ. (३)

सूक्त एक सौ सोलहवां देवता—वृषभ

इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधान आत्मा देवानामुत मानुषाणाम्.
इह प्रजा जनय यास्त आसु या अन्यत्रेह तास्ते रमन्ताम् (१)

हे छोड़े गए बैल! तुम सोम के आधार और इंद्र के उदर हो. तुम देवों और मनुष्यों के शरीर हो. तुम इस लोक में संतान उत्पन्न करो. सामने उपस्थित इस गांव

में अथवा तुम्हारे निमित्त जो गाएं अन्यत्र विद्यमान हैं, उन में तुम्हारी प्रजाएं सुख से विहार करें. (१)

सूक्त एक सौ सत्रहवां — देवता—जल

शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते.
आपः सप्त सुस्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः (१)

शोभाकारिणी, द्यावा पृथ्वी के मध्य जो अज्ञानावृत जन चेतन और अचेत की मध्यवर्ती दशा में वर्तमान हैं, वे सात प्रकार के दिव्य जल बरसाते हैं. ऐसे द्यावा पृथ्वी हमें पाप कर्म से बचाएं. (१)

मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्या दुत.
अथो यमस्य पड्वीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् (२)

जल अथवा ओषधियां मुझे ब्राह्मण के आक्रोश से उत्पन्न पाप से तथा असत्य भाषण के कारण लगने वाले पाप से छुड़ाएं. वे यम के पाशों से तथा देव संबंधी सभी पापों से मुझे बचाएं. (२)

सूक्त एक सौ अठारहवां — देवता—तृष्टिका

तृष्टिके तृष्टवन्दन उदमूं छिन्धि तृष्टिके. यथा कृतद्विष्टासोऽमुष्मै शेप्यावते (१)

हे तृष्टिका अर्थात दाह उत्पन्न करने वाली वाणापर्ण्य नामक जड़ीबूटी तथा हे दाह उत्पन्न करने वाली तृष्टवंदना नामक जड़ीबूटी! इस स्त्री को भोक्ता पुरुष से बलपूर्वक दूर करो. हे कोक उत्पन्न करने वाली जड़ीबूटी तृष्टिका! प्रजनन एवं संभोग में सक्षम इस पुरुष के लिए तू द्वेष करने वाली बन. (१)

तृष्टासि तृष्टिका विषा विषातक्यसि. परिवृक्ता यथासस्यृषभस्य वशेव (२)

हे तृष्टिका नामक जड़ीबूटी! तेरा स्वभाव दाह उत्पन्न करना है. जिस प्रकार तू विष स्वरूपा एवं विष का संयोग करने वाली है तथा जिस प्रकार तू सभी के द्वारा वर्जित है, जिस प्रकार बांझ गाय सांड़ के लिए त्याज्य होती है, उसी प्रकार वह नारी पुरुष के लिए विष रूपिणी हो. (२)

सूक्त एक सौ उन्नीसवां — देवता—अग्नि, सोम

आ ते ददे वक्षणाभ्य आ तेऽहं हृदयाद् ददे.
आ ते मुखस्य संकाशात् सर्वं ते वर्च आ ददे (१)

हे नारी! मैं तेरी योनि एवं जांघों के तेज का अपहरण करता हूं. हे नारी! मैं तेरे स्वस्थ मन से साधु पुरुष के ध्यान रूपी तेज का अपहरण करता हूं. मैं तेरे मुख से सब को प्रसन्न करने वाले तेज का अपहरण करता हूं. अधिक क्या कहूं, मैं तेरे सभी

अंगों से सौभाग्य रूपी तेज का अपहरण करता हूं. (१)

प्रेतो यन्तु व्याध्यः प्रानुध्याः प्रो अशस्तयः.
अग्नी रक्षस्विनीर्हन्तु सोमो हन्तु दुरस्यतीः (२)

मानसिक व्याधियां इस गृह के पीडित पुरुष से दूर चली जाएं तथा मानसिक व्याधियों से संबंधित लगातार स्मरण भी इस से दूर हो जाए. दूसरों के द्वारा होने वाली निंदा एवं हिंसा भी इस से दूर रहे. अग्निदेव राक्षसों और राक्षसियों का विनाश करें तथा सोमदेव दूसरों द्वारा होने वाली बुरी इच्छाओं को इस से दूर करें. (२)

सूक्त एक सौ बीसवां देवता—सविता

प्र पतेतः पापि लक्ष्मि नश्येतः प्रामुतः पत.
अयस्मयेनाङ्केन द्विषते त्वा सजामसि (१)

हे पाप रूपिणी लक्ष्मी अर्थात दरिद्रता! तू इस प्रदेश से दूर चली जा. तू इस प्रदेश में दिखाई मत दे तथा इस प्रदेश से बहुत दूर चली जा. मैं तुझे अपने शत्रु के साथ लोहे के कांटों से बांधता हूं. (१)

या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टाभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्.
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धा हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः (२)

वंदना नाम की लताविशेष जिस प्रकार वृक्ष को चारों ओर से लपेट लेती है, उसी प्रकार दुर्गति करने वाली तथा प्रिय न लगने वाली दरिद्रता ने मुझे सभी ओर से घेर लिया है. हे सविता देव! इस दरिद्रता को मुझ से एवं मेरे प्रदेश से अन्यत्र स्थापित करो. हाथों में सोना लिए हुए सविता ने हमें धन दिया है. (२)

एकशतं लक्ष्म्यो३ मर्त्यस्य साकं तन्वा जनुषोऽधि जाताः.
तासां पापिष्ठा निरितः प्र हिण्मः शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नि यच्छ (३)

एक सौ लक्ष्मियां मनुष्य के जन्म के साथ ही उत्पन्न होती हैं. उन में से अतिशय पापिष्ठ लक्ष्मी को हम इस प्रदेश से दूर भेजते हैं. हे जन्म लेने वालों के ज्ञाता अग्निदेव! उन लक्ष्मियों में जो मंगलकारिणी हैं, उन्हें हमारे साथ स्थापित करो. (३)

एता एना व्याकरं खिले गा विष्ठिता इव.
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम् (४)

मैं इन बताई गई एक सौ लक्ष्मियों को उसी प्रकार विभाजित कर के दो भागों में रखता हूं जिस प्रकार गोशाला में बैठी हुई गायों को ग्वाला विभाजित करता है. पुण्य लक्ष्मियां मुझ में सुख से निवास करें और पापकारिणी लक्ष्मियां मुझ से दूर चली जाएं. (४)

सूक्त एक सौ इक्कीसवां — देवता—चंद्रमा

नमो रूराय च्यवनाय नोदनाय धृष्णवे.
नमः शीताय पूर्वकामकृत्वने (१)

शरीर का पसीना गिराने वाले, प्रेरक एवं सहन करने वाले, उष्णिक ज्वर से संबंधित देव को नमस्कार है. अभिलाषाओं का विनाश करने वाले शीत ज्वर से संबंधित देव को नमस्कार है. (१)

यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येतीमं मण्डूकमभ्ये त्वव्रतः (२)

जो ज्वर दूसरे अथवा चौथे दिन आता है, वह नियमहीन ज्वर मेढक के पास चला जाए. (२)

सूक्त एक सौ बाईसवां — देवता—इंद्र

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः.
मा त्वा के चिद् वि यमन् विं न पाशिनोऽति धन्वेव तां इहि (१)

हे इंद्र! स्तुति करने वाले योग्य एवं मोरों के समान रोमों वाले घोड़ों की सहायता से यहां आओ. हे इंद्र! कोई भी स्तोता अपनी स्तुतियों के द्वारा तुम्हें उस प्रकार न रोके, जिस प्रकार पक्षियों को पकड़ने वाला चिड़ीमार पक्षियों को रोकता है. जिस प्रकार प्यासा यात्री जल वाले स्थान पर जाता है, उसी प्रकार दूसरे स्तुतिकर्ताओं का अतिक्रमण कर के तुम शीघ्र हमारे पास आओ. (१)

सूक्त एक सौ तेईसवां — देवता—सोम, वरुण

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्.
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु (१)

हे विजय के इच्छुक राजा! मैं तेरे मर्मस्थानों को कवच से ढकता हूं. सोम राजा तुझे अपने अविनाशी तेज से आच्छादित करें. वरुण देव तेरे लिए अधिक सुख दें. इंद्र आदि सभी देव शत्रु सेना को भयभीत करते हुए तुझे हर्षित करें. (१)

आठवां कांड

सूक्त पहला

देवता—आयु

अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम्.
इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्य भागे अमृतस्य लोके (१)

सभी प्राणियों का विनाश करने वाले मृत्यु को नमस्कार है. हे ब्रह्मचारी! प्राण और अपान वायु तेरे शरीर में रमण करें. यह पुरुष प्राणों से युक्त हो. यह सूर्य प्रदेश में, भूलोक में एवं अमृत लोक में वर्तमान रहे. (१)

उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान्.
उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये (२)

भग नामक अदिति पुत्र ने इस मूर्च्छित पुरुष का उद्धार किया है. अमृतमयी किरणों से सोम ने इस का उद्धार किया है. मरुत देवों ने एवं अग्नि ने क्षेम के लिए इस का उद्धार किया है. (२)

इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः.
उत् त्वा निर्ऋत्याः पाशेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि (३)

हे आयु की कामना करने वाले पुरुष! तेरी प्राण वायु एवं चक्षु आदि इंद्रियां तेरे शरीर में निवास करें. तेरी आयु एवं मन भी तेरे इसी शरीर में रहें. हम निर्ऋति नामक पाप देवता के बंधनों से अपने मंत्रों द्वारा तेरा उद्धार करते हैं. (३)

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्था मृत्योः पड्वीशमवमुञ्चमानः.
मा च्छित्था अस्माल्लोकादग्नेः सूर्यस्य संदृशः (४)

हे पुरुष! तू मृत्यु के उन पाशों से छूट जा एवं पतन से बच. मृत्युदेव के पाश तेरे पैरों को बांधने वाले हैं. तू उन्हें काटता हुआ भूलोक से अलग मत हो. तू अग्नि और सूर्य का दर्शन करने के लिए इस लोक में रह. (४)

तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः.

सूर्यस्ते तन्वे३ शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः (५)

हे मरण के समीप पहुंचे हुए पुरुष! वायु तेरे सुख के लिए चले. जल तेरे लिए अमृत की वर्षा करे. सूर्य देव तेरे शरीर को सुख देने के लिए तपें. हे पुरुष! मृत्यु देव तुझ पर दया करें. (५)

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि.
आ हि रोहेममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि (६)

हे पुरुष! मैं तेरे जीवन के लिए ओषधियों का निर्माण करता हूं तथा तुझे बल प्रदान करता हूं. मृत्यु के पाशों से तेरा छुटकारा हो, तू उन पाशों में न फंसे. तू समाप्त न होने वाले तथा इंद्रिय सुख के अनुकूल शरीर रूपी रथ पर बैठ. इस शरीर रूपी रथ पर बैठ कर तू कह कि मुझे चेतना प्राप्त हो गई है. (६)

मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भून्मा जीवेभ्यः प्र मदो मानु गाः पितॄन्.
विश्वे देवा अभि रक्षन्तु त्वेह (७)

तेरा मन यमराज के विषय में न जाए तथा तेरा मन विलीन भी न हो. तू अपने बंधुओं के प्रति असावधान न रहे. तू मरे हुए पूर्वजों का अनुगमन मत कर. इंद्र आदि देव इसी शरीर में तेरा पालन करें. (७)

मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम्.
आ रोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे (८)

तू पितृलोक में गए हुओं के मार्ग का ध्यान मत कर तथा मृत पूर्वजों के लिए मत रो. मरे हुए लोग तुझे भी यहां से दूर देश में ले जाएंगे. तू अंधकार को त्याग कर प्रकाश में स्थित हो. हम अंधकार से प्रकाश में ले जाने के लिए तेरे हाथ पकड़ते हैं. (८)

श्यामश्च त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ.
अर्वाङेहि मा वि दीध्यो मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः (९)

हे मरने के समीप पहुंचे हुए पुरुष! यमराज के मार्ग के रक्षक दो कुत्ते हैं— एक काला और दूसरा चितकबरा. वे दोनों तुझे बाधा न पहुंचाएं. कुत्तों के काटने से बच कर तू हमारी ओर आ. तू मृत पुरुषों का ध्यान मत कर तथा इसी भूलोक में निवास करता हुआ एक बार भी वहां से विमुख मत हो. (९)

मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि.
तम एतत् पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक् (१०)

हे प्राणहीन पुरुष! तू मरे हुए लोगों के मार्ग पर गमन मत कर. वह मार्ग भयानक है. मैं तुझे उस मार्ग के विषय में बताता हूं, जिस मार्ग से लोग मृत्यु से पूर्व नहीं जाते हैं. तू इस मृत्युरूपी अंधकार में प्रवेश मत कर, क्योंकि यमराज की नगरी में प्रवेश करने पर भय प्रतीत होता है. हमारी ओर आने में तुझे अभय मिलेगा. (१०)

रक्षन्तु त्वाग्नयो ये अप्स्व१न्ता रक्षतु त्वा मनुष्या३ यमिन्धते.
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युता सह (११)

जल के मध्य में जो वाडव आदि अग्नियां हैं, वे तेरी रक्षा करें. मनुष्य यज्ञ करने के लिए अथवा भोजन पकाने के लिए जिन अग्नियों को जलाते हैं, वे तेरी रक्षा करें. जन्म लेने वालों को जानने वाले जठराग्निदेव तेरी रक्षा करें. आकाश की बिजली तेरे शरीर के साथ रहती हुई तुझे भस्म न करे. (११)

मा त्वा क्रव्यादभि मंस्तारात् संकसुकाच्चर. रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी
सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च. अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः (१२)

मांस का नाश करने वाली अग्नि तुझे अपना आहार बनाने का विचार न करे. तू सब का भक्षण करने वाली अग्नि से दूर देश में विचरण कर. पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चंद्रमा तथा अंतरिक्ष देव के आयुध से तेरी रक्षा करें. (१२)

बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम्.
गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम् (१३)

गोबोध और प्रतिबोध नामक ऋषि तेरी रक्षा करें. स्वप्न न देखने वाला, निद्रा न लेने वाला, सदा शरीर की रक्षा करने वाला तथा जागने वाला देव—ये सब तेरी रक्षा करें. (१३)

ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा (१४)

बोध आदि तेरा पालन करें और तेरी रक्षा करें. उन बोध आदि को नमस्कार है. यह हवि उन के लिए उत्तम आहुति वाला हो. (१४)

जीवेभ्यस्त्वा समुद्रे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायमाणः.
मा त्वा प्राणो बलं हासीदसुं तेऽनु ह्वयामसि (१५)

जीवनोपयोगी इंद्रियों के लिए एवं पुत्र, पत्नी, दास आदि की प्रसन्नता के लिए वायु, इंद्र, धाता एवं सविता तुझे मृत्यु से छीन कर हमें प्रदान करें. तेरी रक्षा करते हुए सविता देव तेरे प्राणों और शरीर के बल को तुझ से न छीनें. मैं तेरे प्राणों के अनुकूल उन का आह्वान करता हूं. (१५)

मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः.
उत् त्वादित्या वसवो भरन्तूदिन्द्राग्नी स्वस्तये (१६)

हे पुरुष! तुझे भक्षण करने के लिए मिले हुए दांतों वाला जंभ असुर न आए. अज्ञान अथवा अंधकार भी तुझे प्राप्त न करे. तेरी विस्तृत जीभ राक्षसों का वर्णन न करे. जिस प्रकार तू हिंसा रहित बने, उसे जंभ असुर न जाने. अदिति पुत्र देव तुझे मृत्यु से छुड़ाएं. आठ वसु इंद्र और अग्नि कल्याण के लिए तेरा उद्धार करें. (१६)

उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युत् प्रजापतिरग्रभीत्.
उत् त्वा मृत्योरोषधयः सोमराज्ञीरपीपरन् (१७)

द्यौ देवता एवं पृथ्वी तेरा भरणपोषण करें. सभी देवों के पिता प्रजापति ने तेरा उद्धार किया था. सोम की पत्नियों और जड़ीबूटियों ने मृत्यु से तुझे छुड़ाया था. (१७)

अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः.
इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि (१८)

हे आदित्य आदि देवो! यह पुरुष यहीं भूलोक में रहे. यह पुरुष इस भूलोक से स्वर्ग में न जाए. हम रक्षा करने वाले तुझ पुरुष को असीमित शक्ति के रक्षा विधान द्वारा मृत्यु से छीनते हैं. (१८)

उत् त्वा मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः.
मा त्वा व्यस्तकेश्योऽ मा त्वाघरुदो रुदन् (१९)

हे आयु की कामना करने वाले पुरुष! अन्न के देव धाता तुझे मृत्यु से बचाएं एवं तेरा उद्धार करें. बिखरे हुए केशों वाले बांधव एवं नारियां तेरी मृत्यु पर न रोएं. तेरे संबंधी दुख के कारण न रोएं. (१९)

आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः.
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम्. (२०)

हे मृत्यु के द्वारा पकड़े हुए पुरुष! मैं ने तुझे मृत्यु से छीन लिया है और इस प्रकार तुझे प्राप्त किया है. हे पुनः जन्म लेने वाले! तू संसार में दुबारा आया है. हे संपूर्ण अंगों वाले! तेरी चक्षु आदि इंद्रियां अपनेअपने विषय का प्रकाशन करने वाली हों. मैं ने तेरी सौ वर्ष की आयु प्राप्त कर ली है. (२०)

व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अक्रमीत्.
अप त्वन्मृत्युं निर्ऋतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि (२१)

हे अचेतन पुरुष! तेरी अचेतना निकल गई है. तुझे जीवनरूपी प्रकाश प्राप्त हो गया है. मैं ने तुझ से मृत्यु की देवता निर्ऋति को दूर कर दिया है. मैं तेरे बाहरी और आंतरिक रोगों का भी विनाश करता हूं. (२१)

सूक्त दूसरा — देवता—आयु

आ रभस्वेमाममृतस्य श्नुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते.
असुं ते आयुः पुनरा भरामि रजस्तमो मोप गा मा प्र मेष्ठाः (१)

हे आयु की कामना करने वाले पुरुष! तुम हमारे द्वारा किए जाते हुए अमरण संबंधी अनुष्ठान को अनुभव करो. तुम्हारा शरीर शत्रुओं के द्वारा छिन्नभिन्न न होने

वाला तथा वृद्धावस्था को प्राप्त करने वाला हो. इस के लिए मृत्यु से छीने गए तेरे प्राणों को मैं पुनः आयु से भरता हूं. तू सत्व गुण के प्रतिबंधक रजोगुण और तमोगुण को प्राप्त न हो. तू हिंसा को भी प्राप्त न हो. (१)

जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाङ त्वा हरामि शतशारदाय.
अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि (२)

हे पुरुष! तू मनुष्यों की ज्ञान दीप्ति प्राप्त कर के हमारे सामने आ. हम तुझे सौ संवत तक जीने के लिए मृत्यु से छीन लाए हैं. मृत्यु के ज्वर, सिरदर्द आदि पाशों से हम ने तुझे छुड़ाया है. हम तुझे निंदा से मुक्त करते हुए सौ वर्ष की दीर्घ आयु में अत्यधिक रूप से स्थापित करते हैं. (२)

वातात् ते प्राणमविदं सूर्याच्चक्षुरहं तव.
यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वद जिह्वयालपन् (३)

हे प्राणरहित पुरुष! मैं ने तुम्हारे प्राणों को वायु से प्राप्त किया है. मैं ने तुम्हारे चक्षु को सूर्य से प्राप्त किया है तथा मैं तुम्हारे मन को तुम्हीं में धारण करता हूं. इस प्रकार तुम सभी अंगों से युक्त हो कर एवं जीभ से बोलते हुए व्यक्त उच्चारण करो. (३)

प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि.
नमस्ते मृत्यो चक्षुषे नमः प्राणाय तेऽकरम् (४)

हे प्राणहीन पुरुष! मैं दो पैरों वाले अर्थात स्त्रीपुरुषों और चार पैरों वाले अर्थात गाय, घोड़े आदि पशुओं के प्राणों से तुझे इस प्रकार संयुक्त करता हूं, जिस प्रकार अरणि मंथन से अग्नि उत्पन्न होती है. हे मृत्यु! मैं ने तेरे क्रूर नेत्र के लिए नमस्कार किया है तथा तेरे अत्यधिक बल के लिए भी मैं नमस्कार करता हूं. (४)

अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि.
कृणोम्यस्मै भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः (५)

यह प्राणहीन पुरुष जीवित रहे. यह मरण को प्राप्त न हो. हम इसे चेष्टा करने के लिए प्रेरित करते हैं. हम इस मरने वाले पुरुष की चिकित्सा करते हैं. हे मृत्यु! तू इस का वध मत कर. (५)

जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम्.
त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये (६)

जीवन देने वाली, रोष रहित, सेवन करने वाले की रक्षिका, रोग को पराजित करने वाली एवं शक्ति संपन्न जीवंती अर्थात ग्वारपाठा नामक जड़ीबूटी को व्याधि नाश का इच्छुक मैं इस शांति कर्म के लिए बुलाता हूं. वह इस समीपवर्ती पुरुष का रोग निवारण करे. (६)

अधि ब्रूहि मा रभथाः सृजेमं तवैव सन्त्सर्वहाया इहास्तु.
भवाशर्वौ मृडतं शर्म यच्छतमपसिध्य दुरितं धत्तमायुः (७)

हे मृत्यु! तुम इस के पक्षपात का वचन कहो. अर्थात बोलो कि यह मेरा है. तुम इसे मारने का आरंभ मत करो. यह तुम्हारा ही जन है. यह भूलोक में सर्वत्र गति वाला बने. हे भव और शर्व! तुम इसे सुखी करो तथा इस के कल्याण का प्रयत्न करो. तुम इस के व्याधि रूपी पाप को निकाल कर इस में आयु को स्थापित करो. (७)

अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहीमं दयस्वोदितो३यमेतु.
अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुज्जरसा शतहायन आत्मना भुजमश्नुताम् (८)

हे मृत्यु! यह तुम से भयभीत है. तुम इसे बताओ कि यह तुम्हारी कृपा के योग्य है. तुम इस पर दया करो. यह अहिंसित, चक्षु आदि सभी अंगों से युक्त, उत्तम श्रोता एवं वृद्धावस्था पा कर सौ वर्षों तक अन्य जनों की अपेक्षा अधिक भोग प्राप्त करे. (८)

देवानां हेतिः परि त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजस उत् त्वा मृत्योरपीपरम्.
आरादग्निं क्रव्यादंनिरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि (९)

रुद्र आदि देवों का आयुध तुम्हारी हिंसा न करे. मैं मूर्च्छा लक्षण वाले आवरण से तुम्हें अलग करता हूं. मैं मृत्यु के पाश से तुम्हारा उद्धार करता हूं. मैं मांस खाने वाली अग्नि को तुझ से दूर निकालता हूं तथा तेरे जीवन के लिए परकोटे के रूप में यज्ञ की अग्नि को धारण करता हूं. (९)

यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम्.
पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्म कृण्मसि (१०)

हे मृत्यु! तेरे रजोमय मार्ग को कोई धर्षित नहीं कर सकता. उस मार्ग से मैं इस मृत्यु के समीप पहुंचे हुए पुरुष के लिए मनन रूपी कवच पहनाता हूं. (१०)

कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति.
वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतांश्चरतोऽप सेधामि सर्वान् (११)

हे आयु को चाहने वाले पुरुष! मैं तेरे शरीर में प्राण और अपान वायु को स्थिर करता हूं. मैं ऐसा उपाय करता हूं, जिस से बुढ़ापा और मृत्यु तुझे न छू सकें. मैं तेरी आयु का विस्तार कर के तेरा कल्याण करता हूं तथा यमराज के द्वारा भेजे हुए एवं सभी जगह घूमते हुए यमदूतों को तुझ से दूर करता हूं. (११)

आरादरातिं निर्ऋतिं परो ग्राहिं क्रव्यादः पिशाचान्.
रक्षो यत् सर्वं दुर्भूतं तत् तम इवाप हन्मसि (१२)

शत्रु बनी हुई एवं आगे आ कर पकड़ने वाले पाप देवता निर्ऋति का मैं समीप से हनन करता हूं तथा मांसाहारी पिशाचों का विनाश करता हूं. इस प्रकार दुष्टता को प्राप्त जो संपूर्ण राक्षस जाति है तथा जो अंधकार के समान दूसरों को ढकने वाले हैं, उन का मैं विनाश करता हूं. (१२)

अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः.
यथा न रिष्या अमृतः सजूरसस्तत् ते कृणोमि तदु ते समृध्यताम् (१३)

हे पाप देवता निर्ऋति के द्वारा प्राणरहित बनाए गए पुरुष! चिरजीवी एवं मरणरहित देव अग्नि से मैं तेरे प्राणों की याचना करता हूं. वह अग्निदेव सभी जन्म लेने वालों को जानते हैं. हे पुरुष! जिस प्रकार तू न मरे और मरणरहित हो कर प्रसन्न बने, मैं तेरे लिए उसी प्रकार का शांतिकर्म करता हूं. तुझ से संबंधित यह शांतिकर्म समृद्ध हो. (१३)

शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ.
शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वातु ते हृदे.
शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पयस्वतीः (१४)

हे कुमार! तेरे घर से निकलने के समय द्यावा पृथ्वी मंगल करने वाली हों, संताप न पहुंचाएं तथा तुझे धन प्रदान करें. सूर्य तेरे लिए सुखकारक तपें तथा वायु तेरे मन के अनुकूल बन कर एवं सुखकारी हो कर चले. दिव्य जल तेरे लिए अनेक प्रकार के स्वादों से युक्त एवं कल्याणकारी हो कर बरसें. (१४)

शिवास्ते सन्त्वोषधय उत् त्वाहार्षमधरस्या उत्तरां पृथिवीमभि.
तत्र त्वादित्यौ रक्षतां सूर्याचन्द्रमसावुभा (१५)

हे कुमार! तेरे भोजन के उपयोग में आने वाले गेहूं आदि अन्न सुखकारी हों. पृथ्वी के निचले भाग की अपेक्षा तेरे निमित्त ऊंची पृथ्वी का उद्धार किया गया है. पृथ्वी के उच्च भाग में अदिति के पुत्र सूर्य और चंद्रमा दोनों तेरी रक्षा करें. (१५)

यत् ते वासः परिधानं यां नीविं कृणुषे त्वम्.
शिवं ते तन्वे३ तत् कृण्मः संस्पर्शेऽद्रूक्ष्णमस्तु ते (१६)

हे बालक! जो वस्त्र तेरे ऊपरी भाग को ढक रहा है और जिसे तूने कमर के नीचे पहना है, ये दोनों प्रकार के वस्त्र तेरे शरीर के लिए कल्याणकारी एवं सुखद हों. इस वस्त्र को मैं ऐसा बनाता हूं कि यह छूने में कठोर न लगे. (१६)

यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वप्ता वपसि केशश्मश्रु.
शुभं मुखं मा न आयुः प्र मोषीः (१७)

हे सविता देव! अथवा हजामत बनाने वाले पुरुष! जब तुम केश काटने वाले नाई हो कर शोभन तेज वाले उस्तरे को चलाते हो, सिर और दाढ़ी के बाल काटते

हो, तब मुंडन किए जाते हुए इस बालक का मुख तेजस्वी बनाओ तथा इस की आयु को मत चुराओ. (१७)

शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ.
एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः (१८)

हे अन्न खाते हुए बालक! तेरे खाने के लिए निश्चित किए गए गेहूं और जौ तेरे लिए सुखकारी एवं शरीर बढ़ाने वाले हों. उपयोग के पश्चात ये गेहूं और जौ तेरे शरीर को विशेष रूप से पीड़ित न करें और तुझे पाप से छुड़ाएं. (१८)

यदश्नासि यत्पिबसि धान्यं कृष्याः पयः.
यदाद्यं१ यदनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि (१९)

हे कुमार! तुम जिस प्रकार के अनाज को कठिनता से खाते हो तथा दूध के समान सारवान पिसे हुए धान्य को पीते हो, जो अन्न सुख से खाने योग्य है तथा जो खाने में कठिन है, इन सभी प्रकार के अन्नों को मैं विषहीन बनाता हूं. (१९)

अह्ने च त्वा रात्रये चोभाभ्यां परि दद्मसि.
अरायेभ्यो जिघत्सुभ्य इमं मे परि रक्षत (२०)

हे कुमार! मैं रक्षा के निमित्त तुझे दिन और रात अर्थात दोनों के देवताओं के लिए देता हूं. हे देवताओ! तुम निर्धन के पास से तथा खाने वाले राक्षसों के पास से इस बालक की रक्षा करना. (२०)

शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः.
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहृणी यमानाः (२१)

हे बालक! मैं तेरी अवस्था के सौ वर्षों को हजार वर्ष, हजार वर्षों को दो युग, दो युगों को तीन युग और तीन युगों को चार युग बनाता हूं. इस प्रकार की प्रार्थना को प्रसिद्ध इंद्र, अग्नि तथा विश्वेदेव लज्जा अथवा क्रोध न करते हुए स्वीकार करें. (२१)

शरदे त्वा हेमन्ताय वसन्ताय ग्रीष्माय परि दद्मसि.
वर्षाणि तुभ्यं स्योनानि येषु वर्धन्त ओषधीः (२२)

हे बालक! मैं तुझे शरद ऋतु, हेमंत ऋतु, बसंत ऋतु, और ग्रीष्म ऋतु के लिए देता हूं. हे बालक! जिन वर्षों में भोग के साधन गेहूं, जौ आदि बढ़ते हैं, वे वर्ष तेरे लिए सुखकारी हों. (२२)

मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम्.
तस्मात् त्वां मृत्योर्गोपतेरुद्भरामि स मा बिभेः (२३)

मृत्यु देव दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं के स्वामी हैं. जिस प्रकार ग्वाला पशुओं का स्वामी होता है, उसी प्रकार मृत्यु देव सभी प्राणियों के स्वामी हैं. मैं तेरा मृत्यु से उद्धार करता हूं. तू भयभीत न हो. (२३)

सोऽरिष्ट न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा बिभेः.
न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः (२४)

हे मृत्यु देव से विमुख अर्थात मृत्यु की हिंसा से रहित पुरुष! तू मरेगा नहीं. तू मरेगा नहीं, इसीलिए भय मत कर. जिस स्थान में शांति कर्म किया जाता है, वहां के लोग प्राण त्याग नहीं करते हैं तथा असहनीय मूर्च्छा को भी प्राप्त नहीं करते. (२४)

सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पशुः.
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् (२५)

जहां गाय, घोड़े, पुरुष और पशु सभी जीवित रहते हैं, वहां महाशांति के लिए यज्ञ कर्म एवं राक्षस, पिशाच आदि का निवारण करने वाला कर्म किया जाता है जो जीवन के लिए कल्याणकारी होता है. (२५)

परि त्वा पातु समानेभ्योऽभिचारात् सबन्धुभ्यः.
अमम्रिर्भवामृतोऽतिजीवो मा ते हासिषुरसवः शरीरम् (२६)

हे शांति चाहने वाले पुरुष! मेरे द्वारा किया गया शांति कर्म सभी ओर से तेरा पालन करे. यह तुझे विद्या एवं ऐश्वर्य में समान अन्य मनुष्यों और संबंधियों द्वारा किए हुए जादूटोने से बचाए. तेरी मृत्यु न हो और तू अत्यधिक जीवन प्राप्त करे. प्राण तेरे शरीर का त्याग न करें. (२६)

ये मृत्यव एकशतं या नाष्ट्रा अतितार्याः.
मुञ्चन्तु तस्मात् त्वां देवा अग्नेर्वैश्वानरादधि (२७)

यमराज के जो प्रसिद्ध आयुध ज्वर, सिरदर्द आदि सौ संख्या में हैं और जो लोगों का नाश करने वाले हैं, उन से बचना कठिन है. अग्नि और वैश्वानर आदि देव तुझे उन सब से बचाएं. (२७)

अग्नेः शरीरमसि पारयिष्णु रक्षोहासि सपत्नहा.
अथो अमीवचातनः पूतुद्रुर्नाम भेषजम् (२८)

हे पूतद्रु नामक वृक्ष! तू अग्नि से व्याप्त शरीर वाला है. तू राक्षसों और शत्रुओं का विनाशक है तथा रोग को बाहर निकालने वाला है. (२८)

सूक्त तीसरा

देवता—अग्नि

रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म.

शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् (१)

मैं राक्षसों का हनन करने वाले एवं बल के साधन अन्न से युक्त अग्नि के लिए हवन करता हूं. यज्ञ के द्वारा मैं मित्र बने हुए विस्तार को प्राप्त अग्नि की शरण जाता हूं. तीक्ष्ण ज्वालाओं वाले वे अग्नि देव आज्य आदि के द्वारा प्रज्वलित हों. इस प्रकार के अग्नि देव दिन में हिंसा करने वाले से हमारी रक्षा करें. (१)

अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुप स्पृश जातवेदः समिद्धः.
आ जिह्वया मूरदेवान् रभस्व क्रव्यादो वृष्ट्वापि धत्स्वासन् (२)

हे जन्म लेने वालों के ज्ञाता अग्निदेव! हमारे द्वारा किए हुए घृत आदि से भलीभांति प्रज्वलित हो कर तुम लोहे के दांतों के समान अपनी ज्वालाओं के द्वारा राक्षसों को जला दो. जादूटोने के द्वारा जो दूसरों की हत्या का खेल खेलते हैं, उन्हें तुम अपनी जीभ से स्पर्श करो तथा मांस भक्षक राक्षस पिशाच आदि का विनाश कर के अपना मुख बंद कर लो. (२)

उभोभयाविन्नुप धेहि दंष्ट्रौ हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च.
उतान्तरिक्षे परि याह्यग्ने जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान् (३)

यह रक्षा करने योग्य है और यह मारने योग्य है—इन दो प्रकार के ज्ञान वाले हे अग्निदेव! तुम हिंसक एवं तीखी ज्वालाओं वाले हो. तुम हमारे शत्रु एवं हमारे द्वारा द्वेष किए गए पुरुष को अपनी दोनों दाढ़ों के बीच में रख लो. इस के पश्चात तुम आकाश में विचरण करो. हे अग्निदेव! मुझे बाधा पहुंचाने के निमित्त घूमते हुए राक्षसों को दांतों से चबा डालो. (३)

अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम्.
प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात् क्रविष्णुर्वि चिनोत्वेनम् (४)

हे अग्निदेव! तुम राक्षसों की त्वचा का छेदन करो. तुम्हारा हिंसक वज्र अपने ताप से इन राक्षसों की हत्या करे. हे जातवेद अग्नि! राक्षसों के जोड़ों को अलगअलग कर दो. इस के पश्चात भक्षक भेड़िया मांस की इच्छा करता हुआ इन्हें खींच कर ले जाए. (४)

यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम्.
उतान्तरिक्षे पतन्तं यातुधानं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः (५)

हे जातवेद अग्निदेव! तुम कहीं बैठे हुए और कहीं चलतेफिरते हुए राक्षसों को देखते हो. वे इस देश में हमारे प्रति उपद्रव करते हैं. आकाश में भी जाते हुए उस राक्षस को खींच लेने वाले तुम तीक्ष्ण हो कर अपनी ज्वालाओं से मारो. (५)

यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्यां अशनिभिर्दिहानः.
ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान् प्रतीचो बाहून् प्रति भङ्ग्ध्येषाम् (६)

हे अग्नि! तुम हमारे यज्ञों के द्वारा अपने बाणों को सीधा करते हुए एवं हमारी स्तुतियों के द्वारा उन के फलों को तेज करते हुए उन बाणों को राक्षसों के हृदयों में चुभा दो. इस के पश्चात हमारे वध के लिए उठी राक्षसों की भुजाओं को भग्न कर दो. (६)

उतारब्धान्त्स्पृणुहि जातवेद उतारेभाणां ऋष्टिभिर्यातुधानान्.
अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादः क्ष्विङ्कास्तमदन्त्वेनीः (७)

हे जातवेद अग्निदेव! हम तुम्हारी स्तुति करते हैं. तुम हमारा पालन करो तथा हल्ला करने वाले राक्षसों का अपने आयुधों के द्वारा वध करो. तुम शत्रु को उस के आक्रमण के पूर्व ही मार डालो. उस मारे हुए का भक्षण कच्चा मांस खाने वाले पक्षी करें. (७)

इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने यातुधानो य इदं कृणोति.
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम् (८)

हे अग्निदेव! इस शांति कर्म में जो राक्षस हमारे शरीर को पीड़ा देने वाला काम करता है, उन से कह दो कि वह तुम्हारे द्वारा प्रहार करने योग्य है. हे अधिक युवा अग्निदेव, उस पापी को अपनी जलाने वाली ज्वाला से स्पर्श करो. हे अग्निदेव! तुम पुण्यात्मा और पापियों को साक्षी रूप हो कर देखते हो. तुम इस पापी को अपनी दृष्टि के द्वारा वश में कर लो. (८)

तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः.
हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं मा त्वा दभन् यातुधाना नृचक्षः (९)

हे अग्निदेव! अपने भयंकर एवं उग्र तेज के द्वारा हमारे यज्ञ की रक्षा करो. हे दयालु मन वाले अग्निदेव! हमारे इस यज्ञ को देवों तक पहुंचाओ और यज्ञ की रक्षा करते हुए तुम राक्षसों को मारो. वे तुम्हें अपने वश में न कर सकें. (९)

नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा.
तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च (१०)

हे अग्निदेव! मनुष्यों का जो दंड एवं अनुग्रह कार्य है, उस के दृष्टा तुम ही हो. जो राक्षस प्रजा को पीड़ा पहुंचाते है, तुम उन के ऊपर से तीन अंगों अर्थात दो हाथों और तीसरे शीश को काट दो. तुम अपने तेज से उन राक्षसों की पसलियों तथा पैरों के तीन भागों को भी काट दो. (१०)

त्रिर्यातुधानः प्रसितिं त एत्वृतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति.
तमर्चिषा स्फूर्जयञ्जातवेदः समक्षमेनं गृणते नि युङ्ग्धि (११)

हे अग्निदेव! राक्षस तुम्हारी ज्वालाओं को तीन बार प्राप्त करें. अर्थात अग्नि उन्हें तीन बार प्रातः, दोपहर और शाम को जलाएं. जो मेरे सत्य यज्ञ को छल से नष्ट

637/26

करता है, उसे पकड़ कर मेरे सामने ही अपनी ज्वालाओं से नष्ट कर दो. (११)

यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद् वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः.
मन्योर्मनसः शरव्या३ जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान् (१२)

हे अग्नि देव! जिस राक्षस के कारण स्त्री और पुरुष आक्रोश से भरे हुए हैं तथा यज्ञ के श्रोता कटुवाणी से मंत्रों का उच्चारण कर रहे हैं, उस राक्षस पर अपने ज्वाला युक्त मन का प्रहार करो. (१२)

परा शृणीहि तपसा यातुधानान् पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि.
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपः शोशुचतः शृणीहि (१३)

हे अग्निदेव! अपने तेज से राक्षसों का विनाश करो तथा अपने प्राणनाशक तेज से उन्हें मार डालो. हत्या कर्म के द्वारा पीड़ा करने वाले उन राक्षसों को अपनी ज्वाला से जला दो. जो दूसरे के प्राणों से अपनेआप को तृप्त करते हैं, ऐसे राक्षसों को तुम अपनी ज्वाला से जला दो. (१३)

पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु प्रत्यगेनं शपथा यन्तु सृष्टाः.
वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन् विश्वस्यैतु प्रसितिं यातुधानः (१४)

आज देवगण राक्षस एवं पाप देवता को ऐसा मारें कि वे लौट कर न आएं. राक्षसों अथवा पाप को संतुष्ट करने वाले जो लोग हमें शाप देते हैं वह उन्हीं की ओर चला जाए. असत्य वचन के द्वारा जो प्रहार करता है, देवों के बाण उस के मर्म स्थल में लगें. वह राक्षस संसार को व्याप्त करने वाले अग्निदेव की ज्वाला में गिरे. (१४)

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः.
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च (१५)

जो राक्षस पुरुषों के मांस से अपना पोषण करता है तथा घोड़े और बकरी आदि के मांस से पुष्ट होता है, हे अग्निदेव! जो राक्षस गाय का दूध चुराता है. उन सब के सिरों को अपनी ज्वाला से काट दो. (१५)

विषं गवां यातुधाना भरन्तामा वृश्चन्तामदितये दुरेवाः.
परैणान् देवः सविता ददातु परा भागमोषधीनां जयन्ताम् (१६)

गायों के दूध की कामना करते हुए राक्षस उन से विष प्राप्त करें. दुष्ट गति वाले राक्षस सब को आश्रय देने वाली पृथ्वी के सुख के लिए छिन्नभिन्न हो जाएं अर्थात भूमि पर प्राप्त होने वाले पदार्थों को न पा सकें. सविता देव ये राक्षस वधिकों को सौंप दे. ये सब गेहूं, जौ आदि के भागीदार न बनें. (१६)

संवत्सरीणं पय उस्रियायास्तस्य माशीद् यातुधानो नृचक्षः.
पीयूषमग्ने यतमस्तितृप्सात् तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मणि (१७)

हे मनुष्यों को देखने वाले अग्निदेव! राक्षस हमारी गायों के वर्ष में होने वाले गर्भाधान, प्रसव आदि को नष्ट न करें तथा उन का दूध न पिएं. उन में से जो राक्षस हवि रूपी अमृत एवं गो घृत से अपनेआप को तृप्त करना चाहे, उस राक्षस को अपनी ज्वाला से ताड़ित कर के विमुख करो. (१७)

सनादग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः.
सहमूराननु दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः (१८)

हे अग्निदेव! तुम चिरकाल से राक्षसों का हनन करते हो, फिर भी राक्षस युद्धों में तुम्हें जीत नहीं सकते हैं. इसलिए तुम मांसाहारी राक्षसों को मूल सहित जला दो. वे तुम्हारे दैवी आयुध से न बच सकें. (१८)

त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तस्त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात्.
प्रति त्ये ते अजरासस्तपिष्ठा अघशंसं शोशुचतो दहन्तु (१९)

हे अग्निदेव! तुम नीचे की दिशा से पीड़ा पहुंचाने वाले राक्षसों से, ऊपर की दिशा से पीड़ा पहुंचाने वाले राक्षसों से तथा पूर्व दिशा से पीड़ा पहुंचाने वाले राक्षसों से हमारी रक्षा करो. सर्वत्र वर्तमान तुम्हारी चिनगारी पापी राक्षसों का विनाश करे. हे राक्षस! अग्निदेव वृद्ध न होने वाले, अतिशय संतापकारी एवं दीप्ति वाले हैं. (१९)

पश्चात् पुरस्तादधरादुतोत्तरात् कविः काव्येन परि पाह्यग्ने.
सखा सखायमजरो जरिम्णे अग्ने मर्तां अमर्त्यस्त्वं नः (२०)

हे सब कुछ जानने वाले अग्निदेव! तुम क्रांतदर्शी हो. इसलिए दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम दिशाओं से बाधा पहुंचाने वाले राक्षसों को जानते हो. तुम अपने रक्षा व्यापारों के द्वारा हमारी रक्षा करो. तुम मेरे सखा हो, इसलिए अपने सखा अर्थात मेरी रक्षा करो. हे अग्निदेव! तुम वृद्धावस्था रहित हो, मुझ वृद्ध और दुर्बल की रक्षा करो. तुम मरण रहित हो, मुझ मरणधर्मा की रक्षा करो. (२०)

तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे शफारुजो येन पश्यसि यातुधानान्.
अथर्ववज्ज्योतिषा दैव्येन सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष (२१)

हे अग्निदेव! तुम शब्द करते हुए राक्षस पर अपनी वह दृष्टि डालो अर्थात उसे जला दो, जिस से तुम पशु रूपधारी राक्षसों को देखते हो. अथर्वा नाम के महर्षि ने अपने तप और मंत्र के प्रभाव से जिस प्रकार राक्षस को जलाया, उसी प्रकार तुम भी अपनी दिव्य ज्योति से सत्य की हिंसा करने वाले एवं ज्ञानहीन राक्षसों को पूरी तरह जला दो. (२१)

परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि.
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावतः (२२)

हे सबको पराजित करने वाले अग्निदेव! हम तुम्हारा सभी प्रकार से ध्यान करते हैं. तुम अभिलाषाएं पूर्ण करने वाले, मेधावी, अधिक वर्षा युक्त तथा प्रतिदिन गिरते हुए बल और स्वभाव वाले राक्षसों के हंता हो. (२२)

विषेण भङ्गुरावतः प्रति स्म रक्षसो जहि.
अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिरर्चिभिः (२३)

हे अग्निदेव! विष के समान विनाशक अपने तीखे तेज से भग्नचरित्र वाले राक्षसों का विनाश करो. तुम उन्हें अपनी ताप युक्त ज्वालाओं से भी जलाओ. (२३)

वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा.
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षोभ्यो विनिक्ष्वे (२४)

ये अग्निदेव महान तेज से प्रकाशित हैं. हे अग्निदेव! अपने तेजों की अधिकता से तुम समस्त प्राणियों को प्रकट करते हो. ये अग्निदेव राक्षसों से संबंधित और कष्ट से जानने योग्य मायाओं का पूर्णतया विनाश करते हैं तथा राक्षसों के विनाश के लिए अपने सींग पैने करते हैं. (२४)

ये ते शृङ्गे अजरे जातवेदस्तिग्महेती ब्रह्मसंशिते.
ताभ्यां दुर्हार्दमभिदासन्तं किमीदिनं प्रत्यञ्चमर्चिषा जातवेदो वि निक्ष्व (२५)

हे जातवेद अग्नि! तुम्हारे जो प्रसिद्ध सींग हैं, उन के द्वारा तुम अपने विरोधियों का विनाश करो. तुम्हारे सींग जरा रहित, तीखे आयुधों के समान एवं हमारे मंत्रों के द्वारा शक्तिशाली बनाए गए हैं. तुम दुष्ट हृदय वाले सब के विनाशक एवं यह कौन है, यह कौन है, इस प्रकार बोल कर विनाश करने वाले राक्षसों को मारो. (२५)

अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः. शुचिः पावक ईड्यः (२६)

ये अग्निदेव सभी प्रकार से बाधा पहुंचाने वाले राक्षसों का विनाश करते हैं. अग्निदेव दीप्ति प्रकाश वाले, मृत्यु रहित, शुद्ध और सब को पवित्र करने वाले हैं. (२६)

सूक्त चौथा — देवता—मंत्र में बताए गए इंद्र आदि

इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं न्यर्पयतं वृषणा तमोवृधः.
परा शृणीतमचितो न्योषतं हतं नुदेथां नि शिशीतमत्त्रिणः (१)

हे इंद्र और सोम! राक्षसों को संतप्त करो तथा मार डालो. हे अभिलाषाएं पूर्ण करने वालो! अंधकार में बढ़ने वाले ज्ञानहीन राक्षसों को निम्न गति प्रदान करो तथा अत्यधिक जलाओ. मनुष्यों का भक्षण करने वाले राक्षसों को मारो तथा मारे हुए राक्षसों को हम से दूर ले जाओ. इस प्रकार उन की संख्या कम करो. (१)

इन्द्रासोमा समघशंसमभ्य१घं तपुर्ययस्तु चरुरग्निमां इव.
ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने (२)

हे इंद्र और सोम! अनर्थ बोलने वाले एवं पापी राक्षस को पराजित करो. वह राक्षस संताप को प्राप्त हो तथा अग्नि में डाले गए अन्न के समान जल जाए. तुम दोनों ब्राह्मणों से द्वेष करने वाले मांसाहारी एवं अब किसे, अब किसे खाऊं कहते हुए राक्षस के पीछे द्वेष और विरोध धारण करो. (२)

इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे अन्तरनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम्.
यतो नैषां पुनरेकश्चनोदयत् तद् वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः (३)

हे इंद्र और सोम! तुम दुष्कर्म करने वाले राक्षसों को ढकने वाले तथा बिना सहारे वाले अंधकार में धकेलो, जिस से अंधकार में पड़े हुए राक्षसों में से एक भी बाहर न आ सके. तुम दोनों का यह बल राक्षसों को हराने के लिए क्रोध युक्त हो. (३)

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशंसाय तर्हणम्.
उत् तक्षतं स्वर्य१ं पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः (४)

हे इंद्र एवं सोम! अंतरिक्ष से वध का साधन आयुध एक बार ही चलाओ. पाप की बातें करने वाले राक्षसों के वध के लिए अपना आयुध पृथ्वी से भी एक बार ही चलाओ. उन के वध के लिए अपने हिंसक वज्र को तेज करो तथा शब्द करते हुए जिस आयुध वज्र से तुम ने मेघों से जल प्राप्त किया है, उस से राक्षसों का वध करो. (४)

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्यग्नितप्तेभिर्युवमश्महन्मभिः.
तपुर्वधेभिरजरेभिरत्त्रिणो नि पर्शाने विध्यतं यन्तु निस्वरम् (५)

हे इंद्र और सोम! तुम दोनों अग्नि के द्वारा तपाए हुए, फौलाद के बने हुए, संतापकारी एवं पुराने न होने वाले अपने आयुधों को अंतरिक्ष में घुमाओ तथा उन के द्वारा मानवभक्षी राक्षसों को समीपवर्ती प्रदेश में भेज दो, जहां जा कर वे मर जाएं. (५)

इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना.
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधयेमा ब्रह्माणि नृपती इव जिन्वतम् (६)

हे इंद्र तथा सोम! तुम दोनों हमारे द्वारा की गई स्तुति को उसी प्रकार सब ओर से स्वीकार करो, जिस प्रकार रस्सी शक्तिशाली घोड़ों को बांध लेती है. हम आह्वान के योग्य बुद्धि से तुम दोनों को प्रेरित करते हैं. हमारे मंत्र तुम्हें उसी प्रकार प्रसन्न करें, जिस प्रकार राजा चारणों के वचन सुन कर प्रसन्न होते हैं. (६)

प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैर्हतं द्रुहो रक्षसो भङ्गुरावतः.

इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद् यो मा कदा चिदभिदासति द्रुहुः (७)

हे इंद्र एवं सोम! तुम दोनों शक्तिशाली एवं गमन के साधन अश्वों के द्वारा हमारा स्मरण करते हुए आओ तथा आ कर हम से द्रोह करने वाले और विनाशकारी राक्षसों की हिंसा करो. हे इंद्र एवं सोम! बुरे कर्म करने वाले राक्षस को सुख न मिले. जो दुष्ट एक बार भी मुझे बाधा पहुंचाए, उसे तुम दुःख दो. (७)

यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः.
आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता (८)

हे इंद्र! जो राक्षस सच्चे मन से कार्य करने वाले मुझ ब्राह्मण को शाप देता है और मुझ से असत्य वचन बोलता है, उस की बात अंजलि से निकल जाने वाले जल के समान सारहीन है. असत्य बोलने वाला वह स्वयं ही शून्य हो जाए अर्थात नष्ट हो जाए. (८)

ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः.
अहये वा तान् प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे (९)

जो राक्षस मुझ सत्यवादी की इच्छानुसार निंदा करते हैं और जो राक्षस मुझ कल्याणकारी के यज्ञ कर्म को अन्नों के द्वारा दूषित करते हैं—इन दोनों प्रकार के राक्षसों को सोमदेव सर्प के लिए दे दें अथवा पाप देवता निर्ऋति की गोद में बैठा दें. (९)

यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने अश्वानां गवां यस्तनूनाम्.
रिपु स्तेन स्तेयकृद् दभ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वा३ तना च (१०)

हे अग्निदेव! जो राक्षस हमारे शरीर के सार को नष्ट करना चाहता है तथा जो हमारे घोड़ों, गायों और पुत्र, पौत्र आदि के शरीर के रस को दूषित करना चाहता है, इस प्रकार का शत्रु तस्कर और लुटेरा है. वह नष्ट हो जाए. वह अपने शरीर से और अपनी संतान से नष्ट हो जाए. (१०)

परः सो अस्तु तन्वा३ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः.
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो मा दिवा दिप्सति यश्च नक्तम् (११)

हे देवो! वह राक्षस अपने शरीर से और अपने पुत्रों से अलग हो जाए. वह तीनों प्रकार की पृथ्वी के नीचे पहुंचे अर्थात नरक को प्राप्त हो. उस पापी का अन्न एवं यश नष्ट हो जाए. जो द्वेषकर्त्ता दिन अथवा रात में मुझे मारना चाहता है, उस का विनाश करो. (११)

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते.
तयोर्यत् सत्यं यतरदृजीयस्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् (१२)

विद्वान को सत्य और असत्य वचन जानना सरल होता है. सत्य और असत्य वचन

परस्पर विरुद्ध होते हैं. इन सत्य और असत्य वचनों में जो यथार्थ है और जो सरल है, सोमदेव उस की रक्षा करते हैं तथा असत्य वचन का विनाश करते हैं. (१२)

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्.
हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते (१३)

सोमदेव पापी राक्षस को जीवित रहने के लिए नहीं छोड़ते हैं. असत्य को धारण करने वाले पापी राक्षस को भी सोमदेव जीवित रहने के लिए नहीं छोड़ते हैं. सोमदेव राक्षस का विनाश करते हैं और असत्यवादी का भी विनाश करते हैं. ये दोनों इंद्र के पाश में बंध जाते हैं. (१३)

यदि वाहमनृतदेवो अस्मि मोघं वा देवां अप्यूहे अग्ने.
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम् (१४)

हे अग्निदेव! न तो मैं देवों की निंदा करने वाला हूं तथा न मैं स्तुति योग्य देवों के प्रति व्यर्थ धारण करता हूं. हे जातवेद अग्निदेव! फिर मुझ पर तुम क्रोध क्यों करते हो ? मुझ से अतिरिक्त जो देव विरोधी राक्षस हैं, वे नाश को प्राप्त हों. (१४)

अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्ततप पूरुषस्य.
अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह (१५)

हे मिथ्या आरोप लगाने वाले पुरुष! मैं यदि दूसरों को पीड़ा पहुंचाने वाला हूं अथवा मैं ने किसी पुरुष के जीवन की हिंसा की है तो मैं इसी दिन मर जाऊं. तुम ने मुझे व्यर्थ ही राक्षस कहा है. ऐसे तुम अपने दसों वीर पुत्रों से बिछुड़ जाओ. (१५)

यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह.
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट (१६)

जिस मिथ्या आरोप लगाने वाले ने मुझ अराक्षस को राक्षस कहा है, अथवा जिस ने राक्षस होते हुए भी अपने आपको शुद्ध बताया है—इन दोनों असत्यवादियों को इंद्र देव अपने वध साधन वज्र के द्वारा मारें. ये दोनों प्रकार के जन संसार के सभी प्राणियों से अधम हो कर नष्ट हों. (१६)

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहुस्तन्वं१ गूहमाना.
वव्रमनन्तमव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः (१७)

जो राक्षसी उलूकी के समान हमें मारने को आती है तथा जो द्रोह करने वाली राक्षसी अपने शरीर को छिपाती हुई आती है, वह दुष्ट राक्षसी अंतहीन गड्ढे में नीचे मुंह किए हुए गिरे. सोमलता को पीसने वाले पत्थर अपनी ध्वनियों से राक्षसों का विनाश करें. (१७)

वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्वी३च्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन.
वयो ये भूत्वा पतयन्ति नक्तभिर्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे (१८)

हे मरुतो! तुम सब प्रजाओं के मध्य अनेक प्रकार से स्थित रहो तथा राक्षसों का विनाश करने की इच्छा करो. तुम पकड़े हुए राक्षसों को भलीभांति चूर्ण कर दो. जो राक्षस पक्षी बन कर रात में घूमते हैं अथवा जो देव संबंधी यज्ञों में हिंसा करते हों, उन राक्षसों का विनाश करो. (१८)

प्र वर्तय दिवोऽश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि.
प्राक्तो अपाक्तो अधरादुदक्तोऽभि जहि रक्षसः पर्वतेन (१९)

हे इंद्र! अंतरिक्ष से अपना वज्र नीचे गिराओ. उस वज्र को तुम ऐसा तेज करो, जैसा सोमदेव ने किया था. तुम उस तेज किए हुए वज्र से पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण सभी दिशाओं में राक्षसों का विनाश करो. (१९)

एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम्.
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः (२०)

इस प्रकार के जो राक्षस कुत्तों के समान खाते हुए घूमते हैं और आकर हिंसा की इच्छा करते हुए अपराजित इंद्र की हिंसा करना चाहते हैं, इंद्र उन राक्षसों का वध करने के लिए अपना वज्र तेज करते हैं. वे इंद्र हिंसक राक्षसों के निमित्त निश्चय ही अपना वज्र तैयार करें. (२०)

इन्द्रो यातूनामभवत् पराशरो हविर्मथीनामभ्याऽविवासताम्.
अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एतु रक्षसः (२१)

इंद्र देवों के निमित्त दिए गए हवि को चुराने वाले तथा विरोधी गतिविधि करने वाले राक्षसों का विनाश करें. इंद्र राक्षसों को मारने के लिए इस प्रकार आक्रमण करें, जिस प्रकार कुल्हाड़ी वृक्षों को काटने के लिए उठती है. प्राप्त होने वाले राक्षसों को इंद्रदेव मिट्टी के बरतनों के समान काटते हुए आएं. (२१)

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्.
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र (२२)

हे इंद्र! जो राक्षस परिवारों के साथ आते हैं, जो अकेले आते हैं, जो कुत्तों, चकवों, गरुड़ एवं गिद्ध के समान आक्रमण करते हैं, उन का विनाश करो. जिस प्रकार पत्थर से मिट्टी का पात्र तोड़ा जाता है, उसी प्रकार अनेक आकारों में वर्तमान राक्षसों को मारो. (२२)

मा नो रक्षो अभि नड् यातुमावदपोच्छन्तु मिथुना ये किमीदिनः.
पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वस्मान् (२३)

हमें हिंसक राक्षस जाति प्राप्त न करे. अब किसे खाएं, अब किसे खाएं— ऐसा कहते हुए जो राक्षस जोड़े अर्थात स्त्रीपुरुष घूमते हैं, वे दूर चले जाएं. पृथ्वी माता हमें राक्षस, पिशाच आदि द्वारा किए गए पाप

से बचाएं. (२३)

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्.
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम् (२४)

हे इंद्र! तुम पुरुष रूपधारी राक्षस का वध करो तथा दूसरों को माया के द्वारा हिंसित करने वाली स्त्री रूप धारिणी राक्षसी का वध करो. मृत्यु जिन के लिए खेल है, ऐसे राक्षसों की गरदनें कट जाएं और वे मर जाएं. वे उदय होते हुए सूर्य को न देखें. (२४)

प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम्.
रक्षोभ्यो वधमस्यतमशनिं यातुमद्भ्यः (२५)

हे इंद्र एवं सोम! तुम प्रत्येक राक्षस को अपने प्रतिकूल देखो तथा विविध राक्षसों को अपने विपरीत समझो. तुम दोनों हमारी रक्षा के लिए जाग्रत रहो और हिंसक राक्षसों के वध के लिए अपना आयुध वज्र चलाओ. (२५)

सूक्त पांचवां — देवता—मंत्र में बताए गए

अयं प्रतिसरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते.
वीर्यवान्त्सपत्नहा शूरवीरः परिपाणः सुमङ्गलः (१)

तिलक वृक्ष से निर्मित यह मणि कृत्या राक्षसी को उसी के पास लौटा देती है, जो उसे किसी पर जादू टोने के रूप में भेजता है. यह वीरकर्म करने वाले शत्रुओं को भगाने में समर्थ है. यह मणि अतिशय शक्तिशालिनी, शत्रु घातक एवं यजमान की रक्षा करने वाले पुरोहित का मंगल करने वाली है. (१)

अयं मणिः सपत्नहा सुवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः.
प्रत्यक् कृत्या दूषयन्नेति वीरः (२)

तिलक वृक्ष से निर्मित मणि शत्रु घातक, संतान देने वाली, शक्तिशालिनी, वेगवती, शत्रुओं को पराजित करने वाली, उग्र तथा दूसरे के द्वारा भेजी गई कृत्या राक्षसी को उसी के विरोध में भेजने वाली है. शत्रुओं को अनेक प्रकार से दूषित करने वाली यह मणि हमारे सामने आती है. (२)

अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्ननेनासुरान् पराभावयन्मनीषी.
अनेनाजयद् द्यावापृथिवी उभे इमे अनेनाजयत् प्रदिशश्चतस्रः (३)

किसी भी उपाय से वृत्रासुर को मारने में असफल होने पर इंद्र ने इसी मणि को बांधने के प्रभाव से विजय के उपाय जाने एवं राक्षसों को पराजित एवं नष्ट किया था. इंद्र ने इसी मणि के प्रभाव से धरती और आकाश पर विजय प्राप्त की है. इसी मणि के प्रभाव से इंद्र ने पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण — चारों दिशाओं को जीता है. (३)

अयं स्राक्त्यो मणिः प्रतीवर्तः प्रतिसरः.
ओजस्वान् विमृधो वशी सो अस्मान् पातु सर्वतः (४)

तिलक वृक्ष से निर्मित यह मणि, विरोधियों को लौटाने वाली तथा रोग आदि का विनाश करने वाली है. शत्रु विनाशक तेज से युक्त, शत्रुओं को भगा कर युद्ध का अभाव करने वाली एवं सब को वश में करने वाली यह मणि सभी से हमारी रक्षा करे. (४)

तदग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः.
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु (५)

उस अग्निदेव ने कृत्या राक्षसी को वापस लौटाने वाली मणि के विषय में मुझे बताया है. सोम, बृहस्पति, सविता एवं इंद्र ने भी मणि के विषय में यही कहा है. अन्य प्रसिद्ध देवों एवं पुरोहितों ने भी इस मणि के द्वारा कृत्या राक्षसी को वापस लौटाया है. (५)

अन्तर्दधे द्यावापृथिवी उताहरुत सूर्यम्.
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु (६)

मैं धरती और आकाश को तथा दिवस और सूर्य को अपने तथा कृत्या राक्षसी के मध्य में स्थापित करता हूं. धरती, आकाश आदि देव एवं यजमान को कृत्या से बचाने वाले पुरोहित तिलक वृक्ष से मणि के द्वारा कृत्या राक्षसी को वापस करें. (६)

ये स्राक्त्यं मणिं जना वर्माणि कृण्वते.
सूर्य इव दिवमारुह्य वि कृत्या बाधते वशी (७)

कृत्या राक्षसी से बचाने वाले लोग तिलक वृक्ष से निर्मित मणि को अपना कवच बना लेते हैं. यह मणि दूसरे द्वारा भेजी गई कृत्या का उसी प्रकार विनाश करती है, जिस प्रकार सूर्य आकाश में पहुंच कर अंधकार का विनाश करते हैं. (७)

स्राक्त्येन मणिन ऋषिणेव मनीषिणा.
अजैषं सर्वाः पृतना वि मृधो हन्मि रक्षसः (८)

मुझ साधक ने तिलक वृक्ष द्वारा निर्मित मणि की सहायता से पृतना नामक सभी राक्षसियों को उसी प्रकार जीत लिया है, जिस प्रकार विद्वान ऋषि अथर्वा ने जीता था. मैं उपद्रवकारी राक्षसों को तिलक वृक्ष से निर्मित मणि के द्वारा नष्ट करता हूं. (८)

याः कृत्या आङ्गिरसीर्याः कृत्या आसुरीर्याः कृत्याः स्वयंकृता या
उचान्येभिराभृताः. उभयीस्ताः परा यन्तु परावतो नवतिं नाव्या३ अति (९)

जो कृत्या राक्षसियां अंगिरा ऋषि द्वारा बताई हुई विधि से प्रयुक्त हैं जो कृत्या

राक्षसियां असुरों द्वारा निर्मित हैं. जो कृत्या राक्षसियां चित्त विकलता के कारण किसी के द्वारा अपने ऊपर की गई हैं अथवा अन्य अभिचारकों द्वारा की गई हैं, वे दोनों प्रकार की कृत्याएं दूर चली जाएं. कृत्याएं नौ नदियों के पार चली जाएं. (९)

अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु देवा इन्द्रो विष्णुः सविता रुद्रो अग्निः.
प्रजापतिः परमेष्ठी विराड् वैश्वानर ऋषयश्च सर्वे (१०)

इंद्र, विष्णु, सविता, रुद्र एवं अग्नि कृत्या से बचने के इच्छुक इस यजमान को कवच के स्थान पर तिलक वृक्ष से निर्मित मणि बांधें अथवा सर्वोच्च स्थान पर विराजमान प्रजापति एवं सभी ऋषि यजमान की रक्षा के लिए यह मणि बांधें. प्रजापति संपूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी तथा सभी मनुष्यों के हितकारी हिरण्यगर्भ हैं. (१०)

उत्तमो अस्योषधीनामनड्वाञ्जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव.
यमैच्छामाविदाम तं प्रतिस्पाशनमन्तितम् (११)

हे मणि के उपादान तिलक वृक्ष! तू सभी वृक्षों में उत्तम है, क्योंकि अन्य वृक्ष सीमित फल के साधक हैं और तू समस्त अभिमत फल देने वाला होने के कारण उसी प्रकार श्रेष्ठ है, जिस प्रकार बैल पालतू चौपायों में और बाघ हिंसक जंगली पशुओं में श्रेष्ठ है. हम ने जिस की इच्छा की थी, उसे तेरी सहायता से पा लिया. मेरी इच्छित वस्तु विरोधी अभिचारक की बाधक एवं मेरे अत्यंत समीप रहने वाली है. (११)

स इद् व्याघ्रो भवत्यथो सिंहो अथो वृषा.
अथो सपत्नकर्शनो यो बिभर्तीमं मणिम् (१२)

जो पुरुष तिलक वृक्ष से निर्मित मणि को बांधता है, वह बाघ और सिंह के समान दूसरों को पराजित करने वाला होता है. वह गायों में सांड़ के समान स्वच्छंद घूमने वाला होता है एवं शत्रु का विनाश करता है. (१२)

नैनं घ्नन्त्यप्सरसो न गन्धर्वा न मर्त्याः.
सर्वा दिशो वि राजति यो बिभर्तीमं मणिम् (१३)

तिलक वृक्ष से निर्मित मणि धारण करने वाले को अप्सराएं, गंधर्व और मनुष्य कोई नहीं मार पाता है, वह सभी दिशाओं का स्वामी होता है. (१३)

कश्यपस्त्वामसृजत कश्यपस्त्वा समैरयत्. अबिभस्त्वेन्द्रो मानुषे.
बिभ्रत् संश्रेषिणेऽजयत्. मणिं सहस्रवीर्यं वर्म देवा अकृण्वत (१४)

हे मणि! कश्यप ऋषि ने तुम्हारा निर्माण किया था और उन्हीं ने तुम्हें सब के उपकार करने की प्रेरणा दी थी. सभी देवों के अधिपति इंद्र ने वृत्रासुर को मारने के लिए तुम्हें धारण किया था. इसी कारण मनुष्यों में जो तुम्हें धारण करता है, वह संग्राम में विजयी होता है. प्राचीन काल में असीमित सामर्थ्य वाली इस मणि को

देवों ने अपना कवच बनाया था. (१४)

यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा दीक्षाभिर्यज्ञैर्यस्त्वा जिघांसति.
प्रत्यक् त्वमिन्द्र तं जहि वज्रेण शतपर्वणा (१५)

हे शांति की कामना करने वाले पुरुष! जो तुझे कृत्या संबंधिनी हिंसक क्रियाओं द्वारा एवं यज्ञ दीक्षाओं द्वारा मारना चाहता है, तू इंद्र के समान बन कर अपने सौ पर्वों वाले वज्र के द्वारा उसे मार डाल. (१५)

अयमिद् वै प्रतीवर्त ओजस्वान्त्संजयो मणिः.
प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः (१६)

तिलक वृक्ष से निर्मित यह मणि निश्चय ही पाप राक्षसी कृत्या को लौटाने में समर्थ, अतिशय ओजस्वी एवं विजय प्राप्त करने वाली है. यह मणि पुत्र, पौत्र आदि की रक्षा करे एवं मेरी भी सभी प्रकार रक्षा करे. (१६)

असपत्नं नो अधरादसपत्नं न उत्तरात्.
इन्द्रासपत्नं नः पश्चाज्ज्योतिः शूर पुरस्कृधि (१७)

हे इंद्र! तुम शूर हो. तुम दक्षिण दिशा से, उत्तर दिशा से पश्चिम दिशा से एवं पूर्व दिशा से हमें विनाशक तेज प्रदान करो. (१७)

वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः.
वर्म म इन्द्रश्चाग्निश्च वर्म धाता दधातु मे: (१८)

धरती और आकाश के देवता मेरे लिए कवच बनें. दिवस और सूर्य मेरे लिए कवच बनें. इंद्र और अग्नि मेरे लिए कवच बनें. (१८)

ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति सर्वे.
तन्मे तन्वं त्रायतां सर्वतो बृहदायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासानि (१९)

इंद्र और अग्नि देवों द्वारा सम्मत मणिरूपी कवच अतिशय शक्तिशाली होता है. सभी देव इस मणि रूपी कवच का भेदन नहीं करते अर्थात उसे धारण करने वाले का पालन करते हैं. इस प्रकार का मणि रूपी कवच मेरे शरीर की सभी ओर से रक्षा करे, जिस से मैं सौ वर्ष की आयु प्राप्त करूं तथा वृद्धावस्था तक जीवित रहूं. (१९)

आ मारुक्षद् देवमणिर्मह्या अरिष्टतातये.
इमं मेथिमभिसंविशध्वं तनूपानं त्रिवरूथमोजसे (२०)

इंद्र, अग्नि, आदि देवों के द्वारा धारण की गई मणि विनाश से बचाने के लिए मेरी भुजा में बंधी है. हे मनुष्यो! तुम भी शत्रुओं का विनाश करने वाली इस मणि का सभी प्रकार आश्रय लो. यह मणि शरीर की रक्षा करने वाली, तीन प्रकार के

आवरण से युक्त एवं बल बढ़ाने वाली है. (२०)

अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु नृम्णमिमं देवासो अभिसंविशध्वम्.
दीर्घायुत्वाय शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासत् (२१)

इंद्र उस मणि में हमारा चाहा हुआ सुख स्थापित करें. हे देवो! अधिक आयु प्राप्त करने के लिए तुम भी इस मणि के चारों ओर स्थित रहो. यह प्रार्थना सौ वर्ष की एवं वृद्धावस्था पर्यंत आयु प्राप्त करने के लिए है . (२१)

स्वस्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी. इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवां
अपराजितः सोमपा अभयंकरो वृषा.
स त्व रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः (२२)

अपने भक्तों का कल्याण करने वाले, देव मनुष्य रूपी प्रजाओं के पालक, वृत्र राक्षस का वध करने वाले, अपराजित, सोम पीने वाले, अभय कर्ता एवं अभिमत फल दाता इंद्रदेव उस महिमामयी मणि को तुम्हारी भुजा में बांधें एवं तुम्हें सभी भयों से रातदिन तथा सभी ओर से बचाएं. (२२)

सूक्त छठा देवता—मंत्र में बताए गए मातृनामा

यौ ते मातोन्ममार्ज जातायाः पतिवेदनौ.
दुर्णामा तत्र मा गृधदलिंश उत वत्सपः (१)

हे गर्भिणी! तेरे जन्म लेने के समय तेरी माता ने पति को प्राप्त होने वाले जो दुर्नाम और सुनाम नामक दो उन्मार्जन किए थे, उन में त्वचा के दोष से सुगंधित दुर्नाम तेरी इच्छा न करे अर्थात तुझे प्राप्त न हो तथा अलीश एवं वत्सप नामक रोग भी तुझे न हों. (१)

पलालानुपलालौ शर्कुं कोकं मलिम्लुचं पलीजकम्.
आश्रेषं वव्रिवाससमृक्षग्रीवं प्रमीलिनम् (२)

गर्भिणी को पीड़ा पहुंचाने वाले जो पलाल, अनुपलाल, शुर्क, कोंक, मलिम्लुच, पलीजक, आश्रेय, बव्रिवास, क्षतग्रीव एवं प्रमीली नामक राक्षस हैं, मैं उन सब का विनाश करता हूं. (२)

मा सं वृतो मोप सृप ऊरू माव सृपोऽन्तरा.
कृणोम्यस्यै भेषजं बजं दुर्णामचातनम् (३)

हे दुर्नाम रोग से संबंधित राक्षस! इस गर्भिणी की जंघाओं के मध्य में संकोच उत्पन्न मत कर तथा उन के भीतर प्रवेश भी मत कर. तू गर्भिणी की जंघाओं के नीचे की ओर भी मत खिसक. इस गर्भिणी से संबंधित सफेद सरसों के रूप में मैं जो ओषधि तैयार करता हूं, वह दुर्नाम रोग का विनाश करने वाली है. (३)

दुर्णामा च सुनामा चोभा संवृतमिच्छतः.
अरायानप हन्मः सुनामा स्त्रैणमिच्छताम् (४)

दुर्णाम और सुनाम नामक दोनों रोग एक साथ ही संचरण करना चाहते हैं. मैं उन में से दुर्णाम को नष्ट करता हूं, जो सुंदरता का विरोधी है. सुनाम स्त्री की इच्छा करने वाला हो. (४)

यः कृष्णः केश्यसुर स्तम्बज उत तुण्डिकः.
अरायानस्या मुष्काभ्यां भंससोऽप हन्मसि (५)

जो कृष्णकेशी, स्तंभज एवं तुंडिक नामक असुर हैं, ये सब दुर्भाग्य रूपी रोग हैं. मैं इन्हें गर्भिणी की जंघाओं तथा कमर से दूर करता हूं. (५)

अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं क्रव्यादमुत रेरिहम्.
अरायाञ्छ्वकिष्किणो बजः पिङ्गो अनीनशत् (६)

अनुजिघ्र, प्रमृश, कृव्याद एवं शर्य नामक जो सुंदरता विनाशक रोगों से संबंधित राक्षस हैं, मैं ने पीली सरसों रूपी ओषधि के द्वारा इन सभी हिंसकों का विनाश कर दिया है. (६)

यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते भ्राता भूत्वा पितेव च.
बजस्तान्त्सहतामितः क्लीबरूपांस्तिरीटिनः (७)

हे गर्भिणी! जो राक्षस तेरी स्वप्न अवस्था में सहोदर भ्राता एवं पिता के समान विश्वास उत्पन्न करता हुआ गर्भ नष्ट करने के विचार से तुझ में प्रवेश करता है, मैं सफेद सरसों रूपी ओषधि के द्वारा इन सब को तथा नपुंसक का रूप बना कर घूमने वाले सभी राक्षसों का विनाश करता हूं. (७)

यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति यस्त्वा दिप्सति जाग्रतीम्.
छायामिव प्र तान्त्सूर्यः परिक्रामन्ननीनशत् (८)

हे गर्भिणी! जो राक्षस सोते समय तेरे समीप आता है अथवा जो जाग्रत अवस्था में तेरी हिंसा करना चाहता है, यह सरसों उन सब को उसी प्रकार नष्ट कर दे, जिस प्रकार आकाश में विचरण करने वाला सूर्य अंधकार का विनाश करता है. (८)

यः कृणोति मृतवत्सामवतोकामिमां स्त्रियम्.
तमोषधे त्वं नाशयास्याः कमलमञ्जिवम् (९)

जो राक्षस गर्भिणी को मरे हुए पुत्र वाली बनाता है अथवा जो उसे नष्टगर्भ वाली बनाता है, हे सरसों रूपी ओषधि! तू उस दुष्ट का विनाश कर तथा इस के गर्भ द्वार को स्पष्ट कर. (९)

ये शालाः परिनृत्यन्ति सायं गर्दभनादिनः. कुसूला ये च कुक्षिलाः

ककुभाः करुमाः स्रिमाः. तानोषधे त्वं गन्धेन विषूचीनान् वि नाशय (१०)

जो पिशाच संध्या के समय गधों के समान शब्द करते हुए घरों के चारों ओर नाचते हैं तथा जो कुसूल के समान आकृति बना कर नाचते हैं, इन के अतिरिक्त जो बड़े पेट वाले, अर्जुन वृक्ष के समान भयानक आकृति वाले एवं भांतिभांति के आकारों तथा ध्वनियां करने वाले राक्षस घरों के चारों ओर नाचते हैं, हे सरसों रूपी ओषधि! तू अपनी गंध से उन सभी विप्लवकारियों को समाप्त कर. (१०)

ये कुकुन्धाः कुकूरभाः कृत्तीर्दूर्शानि बिभ्रति.
क्लीबा इव प्रनृत्यन्तो वने ये कुर्वते घोषं तानितो नाशयामसि (११)

मुर्गे के समान ध्वनि करने वाले जो ककुंध नामक पिशाच हैं तथा जो दूषित कर्म धारण करते हैं, जो पिशाच हिजड़ों और पागलों के समान नृत्य करते हैं तथा जो वन में हल्ला मचाते हैं, इन सब को मैं गर्भिणी के पास से भगाता हूं. (११)

ये सूर्य न तितिक्षन्त आतपन्तममुं दिवः.
अरायान् बस्तवासिनो दुर्गन्धींल्लोहितास्यान् मककान् नाशयामसि (१२)

जो विशेष प्राणी आकाश में सभी ओर चलते हुए इन सूर्य को सहन नहीं करते हैं जो श्रीविहीन हैं, भेड़ का चमड़ा पहनते हैं, दुर्गंध वाले हैं, सदा मांस खाने के कारण जिन का मुंह लाल रहता है एवं जिन की चाल बुरी है, ऐसे पिशाचों का मैं नाश करता हूं. (१२)

य आत्मानमतिमात्रमंस आधाय बिभ्रति.
स्त्रीणां श्रोणिप्रतोदिन इन्द्र रक्षांसि नाशय (१३)

जो पिशाच गर्भिणी नारियों के स्थूल शरीर को कंधे पर धारण करते हैं तथा जो गर्भिणी स्त्रियों की कमर को अत्यधिक व्यथित करते हैं, हे इंद्र! उन राक्षसों का विनाश करो. (१३)

ये पूर्वे बध्वोइ यन्ति हस्ते शृङ्गाणि बिभ्रतः.
आपाकेष्ठाः प्रहासिन स्तम्बे ये कुर्वते ज्योतिस्तानितो नाशयामसि (१४)

जो पिशाच अपने बजाने के लिए अथवा पीने के लिए अपने हाथों में सींग ले कर अपनी पत्नियों के साथ घूमते हैं जो पाकशालाओं अथवा कुम्हारों के घरों में स्थित हैं, जो अट्टहास करते हैं तथा जो घर के खंबों पर अग्नि का रूप बना लेते हैं, उन सब को हम गर्भिणी के निवास स्थान से दूर भगाते हैं. (१४)

येषां पश्चात् प्रपदानि पुरः पार्ष्णीः पुरो मुखा. खलजाः शकधूमजा उरुण्डा.
ये च मट्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः. तानस्या ब्रह्मणस्पते प्रतीबोधेन नाशय (१५)

जिन राक्षसों के पंजे पीछे की ओर हैं, एड़ियां तथा मुख आगे की ओर हैं, जो खलिहान में जन्मे हैं, जो गाय, घोड़े आदि के गोबर से उत्पन्न हुए हैं, जो शीर्ष रहित

हैं जो मुटमुट शब्द करते हैं, जिन के मुंह घोड़े के समान हैं तथा जो वायु के समान तेज चलते हैं, हे ब्रह्मणस्पति! उन सब को निरोध के साधन इस सरसों के द्वारा नष्ट करो. (१५)

पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा अस्त्रैणाः सन्तु पण्डगाः.
अव भेषज पादय य इमां संविवृत्सत्यपतिः स्वपतिं स्त्रियम् (१६)

इधरउधर फैली हुई आंखों वाले, पतली जंघाओं वाले एवं पैरों से न चलने वाले जो पिशाच हैं, वे बिना स्त्रियों वाले हो जाएं. हे सरसों रूपी ओषधि! तुम उन्हें नीचे की ओर मुंह कर के गिराओ. जो अनियंत्रित पिशाच इस पति वाली गर्भिणी स्त्री को वश में करना चाहते हैं, उन का विनाश करो. (१६)

उद्धर्षिणं मुनिकेशं जम्भयन्तं मरीमृशम्. उपेषन्तमुदुम्बलं तुण्डेलमुत शालुडम्.
पदा प्र विध्य पार्ष्ण्या स्थालीं गौरिव स्पन्दना (१७)

अत्यधिक घर्षण वाले, मुनियों के समान लंबी जटाओं वाले, हिंसक, बारबार कष्ट देने वाले एवं गर्भिणी को सभी ओर खोजने वाले उदुंबल, तुंडेल एवं शालड असुरों को हे सरसों नामक ओषधि! अपने पैर से भलीभांति चोट कर के इस प्रकार मार डाल, जिस प्रकार बुरी गाय मिट्टी की दोहनी को पिछले पैर मार कर तोड़ देती है. (१७)

यस्ते गर्भं प्रतिमृशाज्जातं वा मारयाति ते.
पिङ्गस्तमुग्रधन्वा कृणोतु हृदयाविधम् (१८)

हे गर्भिणी स्त्री! जो राक्षस और पिशाच तेरे गर्भ को इस प्रकार पीड़ा देते हैं कि वह जीवित जन्म न ले अथवा जो तेरे जन्म लिए हुए पुत्र को मारते हैं, सफेद सरसों उन गर्भघातकों को दौड़ादौड़ा कर उन के हृदय में चोट मारें. (१८)

ये अम्नो जातान् मारयन्ति सूतिका अनुशेरते.
स्त्रीभागान् पिङ्गो गन्धर्वान् वातो अभ्रमिवाजतु (१९)

जो राक्षस, पिशाच आदि आधे जन्मे हुए बच्चों को मार डालते हैं एवं जो स्त्री का रूप धारण कर के प्रसूता के समीप सो जाते हैं. स्त्रियों को बाधा पहुंचाने वाले उन राक्षस, पिशाच आदि को पीली सरसों इस प्रकार भगा दे, जैसे वायु बादलों को हटा देती है. (१९)

परिसृष्टं धारयतु यद्धितं माव पादि तत्.
गर्भं त उग्रौ रक्षतां भेषजौ नीविभार्यौ (२०)

गर्भिणी स्त्री होम के विनियोग से युक्त सरसों के दो दानों को इसलिए धारण करे, जिस से उस की मनचाही संतान पुत्र आदि नष्ट न हों. हे गर्भिणी स्त्री! तेरे गर्भ की अत्यधिक बल युक्त ओषधि के रूप में सफेद और पीली—दोनों प्रकार की

सरसों रक्षा करें. सरसों तुझे नीवी अर्थात कमर में पहने हुए वस्त्र में अथवा ओढ़नी के सिरे में रखनी चाहिए. (२०)

पवीनसात् तङ्गल्वाऽच्छायकादुत नग्नकात्.
प्रजायै पत्ये त्वा पिङ्गः परि पातु किमीदिनः (२१)

वज्र के समान नाक वाले तंगल्व नामक विनाशकारी राक्षसों से तथा नग्न नामक असुरों से हे गर्भिणी स्त्री! पीले रंग की सरसों तेरी संतान की एवं तेरे पति की रक्षा करे एवं इन के अनुकूल बने. (२१)

द्व्यास्याच्चतुरक्षात् पञ्चपादादनङ्गुरेः.
वृन्तादभि प्रसर्पतः परि पाहि वरीवृतात् (२२)

हे जड़ीबूटी! तू दो मुखों वाले, चार आंखों वाले, पीछे की ओर पैरों वाले, अंगुली रहित एवं लताओं के कुंज से सामने की ओर आते हुए तथा सारे शरीर को अधिक रूप में व्याप्त करते हुए राक्षसों से गर्भिणी स्त्री की रक्षा कर. (२२)

य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः.
गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि (२३)

जो राक्षस कच्चा मांस खाते हैं, जो मानव मांस का भक्षण करते हैं तथा जो लंबे केशों वाले हैं. वे माया रूप धारण कर के गर्भ में प्रवेश करते हैं और उसे खा जाते हैं. हम उन तीनों प्रकार के राक्षसों को गर्भिणी के समीप से दूर भगाते हैं. (२३)

ये सूर्यात् परिसर्पन्ति स्नुषेव श्वशुरादधि.
बजश्च तेषां पिङ्गश्च हृदयेऽधि नि विध्यताम् (२४)

जिस प्रकार वधू अपने ससुर की आज्ञा पा कर पति के समीप जाती है, उसी प्रकार जो पीड़ा पहुंचाने वाले राक्षस सूर्य की अनुमति से भूलोक में घूमते हैं, उन के हृदय में पीली और सफेद सरसों के द्वारा प्रहार करना चाहिए. (२४)

पिङ्ग रक्ष जायमानं मा पुमांसं स्त्रियं क्रन्.
आण्डादो गर्भान्मा दभन् बाधस्वेतः किमीदिनः (२५)

हे पीली सरसों! तू जन्म लेते हुए बालक की रक्षा कर. तू जन्म लेते हुए लड़के एवं लड़की को पीड़ा मत पहुंचा. जरायु का भक्षण करने वाले राक्षस गर्भों की हिंसा न करें. हे पीली सरसों! ''यह क्या है, यह क्या है.'' इस प्रकार कह कर घूमने वाले राक्षसों को गर्भिणी के पास से दूर भगा. (२५)

अप्रजास्त्वं मार्तवत्समाद् रोदमघमावयम्.
वृक्षादिव स्रजं कृत्वाप्रिये प्रति मुञ्च तत् (२६)

हे पीली सरसों! जिस प्रकार वृक्ष से फूल तोड़ कर और उन की माला बना कर प्रियतम को पहनाई जाती है, उसी प्रकार तू इस स्त्री के बांझपन को, बच्चे मर जाने रूपी दुर्भाग्य को, सदा उत्पन्न होने वाले दुख को, पाप अथवा उन के फलरूपी दुखों को सदा सोने की माला बना कर उसे पहना दे, जिस से यह द्वेष करती है. (२६)

सूक्त सातवां देवता—आयुष्य ओषधियां

या बभ्रवो याश्च शुक्रा रोहिणीरुत पृश्नयः.
असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छावदामसि (१)

जो जड़ीबूटियां विभिन्न आकारों तथा शुक्ल, लाल आदि रंगों की हैं, उन सभी के सामने उपस्थित हो कर मैं रोग निवारण की प्रार्थना करता हूं. (१)

त्रायन्तामिमं पुरुषं यक्ष्माद् देवेषितादधि.
यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव (२)

पृथ्वी जिन की माता, आकाश जिन का पिता और सागर जिन का मूल है, वे जड़ीबूटियां दुर्भाग्य के कारण उत्पन्न इस राजयक्ष्मा रोग से इस पुरुष की रक्षा करें. (२)

आपो अग्रं दिव्या ओषधयः. तास्ते यक्ष्ममेनस्य१मङ्गादङ्गादनीनशन् (३)

हे रोगी पुरुष! जो पवित्र जल और दिव्य जड़ीबूटियां हैं, वे तेरे शरीर के प्रत्येक अंग से यक्ष्मा रोग का विनाश कर दें. (३)

प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकशुङ्गाः प्रतन्वतीरोषधीरा वदामि.
अंशुमतीः काण्डिनीर्या विशाखा ह्वयामि ते वीरुधो वैश्वदेवीरुग्राः पुरुषजीवनीः. (४)

हे यक्ष्मा रोग से ग्रसित पुरुष! मैं तेरे स्वास्थ्य लाभ के निमित्त फैली हुई, बहुत सी टहनियों वाली, एक टहनी वाली, गांठों वाली, पत्तियों वाली, शाखाओं से रहित एवं नसों वाली जो जड़ीबूटियां तुझे जीवन देने वाली हैं, उन सभी अत्यधिक प्रभावशालिनी एवं समस्त देवों के निवास वाली जड़ीबूटियों को तेरे लिए ग्रहण करता हूं. (४)

यद् वः सहः सहमाना वीर्य१ यच्च वो बलम्.
तेनेममस्माद् यक्ष्मात् पुरुषं मुञ्चतौषधीरथो कृणोमि भेषजम् (५)

हे रोगों का विनाश करने वाली जड़ीबूटियो! तुम में जो रोग नाश करने वाली शक्ति, वीर्य और बल है, उस के द्वारा इस पुरुष की यक्ष्मा रोग से रक्षा करो. मैं सभी ओषधियों को मंत्रों से युक्त बनाता हूं. (५)

जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम्.

अरुन्धतीमुन्नयन्तीं पुष्पां मधुमतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये (६)

कल्याण के निमित्त मैं जीवन देने वाली एवं क्रोध न करने वाली जीवंती एवं अरुंधती नामक जड़ी बूटियों का आह्वान करता हूं. ये जड़ीबूटियां ऊपर की ओर बढ़ने वाली, पुष्पों से युक्त एवं मधु सहित हैं. (६)

इहा यन्तु प्रचेतसो मेदिनीर्वचसो मम.
यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि (७)

मेरे मंत्रों के प्रभाव से चेतनायुक्त जड़ीबूटियां यहां आएं तथा इस रोग के कारण रूप पाप का विनाश करें. (७)

अग्नेर्घासो अपां गर्भो या रोहन्ति पुनर्णवाः.
ध्रुवाः सहस्रनाम्नीर्भेषजीः सन्त्वाभृताः (८)

जो जड़ीबूटियां जल का गर्भ हैं, अग्नि का भोजन हैं तथा बारबार उगने के कारण नवीन रहती हैं, इस प्रकार की हजारों नाम वाली जड़ीबूटियां नित्य यहां लाई जाएं. (८)

अवकोल्बा उदकात्मान ओषधयः.
व्यृषन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्ग्यः (९)

जो जड़ीबूटियां सिवार घास का गर्भ हैं और जल जिन का जीवन है, बारबार उगने के कारण जो सदा नवीन रहती हैं, वे रोगों के कारण रूप पापों का नाश करें उन ओषधियों के पत्ते अथवा कांटे नोकीली सींक के समान हैं. (९)

उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा उग्रा या विषदूषणीः.
अथो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीश्च यास्ता इहा यन्त्वोषधीः (१०)

जलोदर रोग का विनाश करने वाली, विष को शांत करने वाली, खांसी आदि रोगों पर प्रभावशालिनी तथा जो कृत्या नामक पाप देवता को दूर भगाने वाली हैं, वे जड़ीबूटियां यहां लाई जाएं. (१०)

अपक्रीताः सहीयसीर्वीरुधो या अभिष्टुताः.
त्रायन्तामस्मिन् ग्रामे गामश्वं पुरुषं पशुम् (११)

हमारे द्वारा लाई गई, रोगों का विनाश करने में समर्थ एवं मंत्रों द्वारा प्रभावित जो जड़ीबूटियां हैं, वे इस गांव के मनुष्यों और पशुओं की रक्षा करें. (११)

मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव. मधुमत् पर्णं मधुमत् पुष्पमासां मधोः संभक्ता अमृतस्य भक्षो घृतमन्नं दुहृतां गोपुरोगवम् (१२)

जिन वृक्षों की जड़, ऊपर का भाग एवं मध्य भाग मधुरता पूर्ण हैं, जिन के पत्ते एवं फूल मधु से भरे हुए हैं, जो मधु से भलीभांति पूर्ण हैं, उन का सेवन करते

वाला अमृत का सेवन करता है. वह स्वस्थ रहता हुआ गायों से घृत तथा अन्न प्राप्त करता है. (१२)

यावतीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः.
ता मा सहस्रपर्ण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वंहसः (१३)

पृथ्वी पर जितनी भी हजार पत्तों वाली जड़ीबूटियां हैं, वे मुझे मृत्यु एवं पाप से बचाएं. (१३)

वैयाघ्रो मणिर्वीरुधां त्रायमाणोऽभिशस्तिपाः.
अमीवाः सर्वा रक्षांस्यप हन्त्वधि दूरमस्मत् (१४)

वृक्षों से निर्मित वैयाघ्र मणि रक्षक एवं पवित्र करने वाली है. वह सभी रोगों और राक्षसों को हम से दूर करे. (१४)

सिंहस्येव स्तनथोः सं विजन्तेऽग्नेरिव विजन्त आभृताभ्यः.
गवां यक्ष्मः पुरुषाणां वीरुद्भिरतिनुत्तो नाव्या एतु स्रोत्याः (१५)

जिस प्रकार सिंह की गर्जना से प्राणी भयभीत होते हैं एवं प्रज्वलित अग्नि से सभी जीव व्याकुल हो कर भागते हैं, उसी प्रकार हमारे गौ आदि पशुओं तथा पुत्र, पौत्र आदि मनुष्यों का यक्ष्मा रोग नदियों को पार कर बहुत दूर चला जाए. (१५)

मुमुचाना ओषधयोऽग्नेर्वैश्वानरादधि.
भूमिंसंतन्वतीरित यासां राजा वनस्पतिः (१६)

जो ओषधियां धरती को आच्छादित किए हुए हैं और वनस्पति जिन के राजा हैं, वैश्वानर अग्नि से भी अधिक प्रभाव वाली वे ओषधियां हमें रोगों से मुक्त करती हैं. (१६)

या रोहन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च.
ता नः पयस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे (१७)

अंगिरा ऋषि द्वारा बताई गई जो जड़ीबूटियां ऊंचे पर्वतों पर एवं समतल मैदानों में उत्पन्न होती हैं, वे दूध के समान सार वाली जड़ीबूटियां हमारे लिए कल्याणकारिणी हों एवं हमारे हृदयों को शांति प्रदान करें. (१७)

याश्चाहं वेद वीरुधो याश्च पश्यामि चक्षुषा.
अज्ञाता जानीमश्च या यासु विद्म च संभृतम् (१८)

जिन वृक्षों को मैं जानता हूं, जिन को मैं अपनी आंखों से देख सकता हूं और जिन को मैं नहीं जानता, वे सभी रोग विनाश में समर्थ हैं. (१८)

सर्वाः समग्रा ओषधीर्बोधन्तु वचसो मम.
यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि (१९)

सभी जड़ीबूटियां मेरी स्तुतियों का अभिप्राय संपूर्ण रूप से जान लें तथा मुझे इस योग्य बना दें कि मैं इस रोगी पुरुष को रोग रूपी पाप से उस पार पहुंचा सकूं. (१९)

अश्वत्थो दर्भो वीरुधां सोमो राजामृतं हविः.
व्रीहिर्यवश्च भेषजौ दिवस्पुत्रावमर्त्यौ (२०)

वृक्षों का गर्भ पीपल, राजा सोम और अमृत हवि हैं. धान और जौ नामक फसलें आकाश से होने वाली वर्षा से उत्पन्न होने के कारण आकाश की संतान तथा अमर हैं. (२०)

उज्जिहीध्वे स्तनयत्यभिक्रन्दत्योषधीः.
यदा व पृश्निमातरः पर्जन्यो रेतसावति (२१)

जड़ीबूटियां बिजली की कड़क से और बादलों के गर्जन से जीवित रहती हैं. वायु और मेघ वर्षा रूपी जीवन से जड़ीबूटियों की रक्षा करते हैं. (२१)

तस्यामृतस्येमं बलं पुरुषं पाययामसि.
अथो कृणोमि भेषजं यथासच्छतहायनः (२२)

जड़ीबूटियों के अमृत रूपी बल को मैं रोगी पुरुष को पिलाता हूं. मैं इस की चिकित्सा इस प्रकार करता हूं कि यह रोगी पुरुष सौ वर्ष की अवस्था प्राप्त करे. (२२)

वराहो वेद वीरुधं नकुलो वेद भेषजीम्.
सर्पा गन्धर्वा या विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे (२३)

सुअर जिन वृक्षों को जानता है और नेवला जिन जड़ीबूटियों से परिचित है तथा सांप और गंधर्व जिन्हें जानते हैं, उन जड़ीबूटियों को मैं इस रोगी पुरुष की रक्षा के लिए बुलाता हूं. (२३)

याः सुपर्णा आङ्गिरसीर्दिव्या या रघटो विदुः. वयांसि हंसा या
विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः. मृगा या विदुरोषधीस्ता अस्मा अवसे हुवे (२४)

जिन सुंदर पत्तों वाली जड़ीबूटियों का अंगिरा ऋषि ने रोगियों पर प्रयोग किया, रमद्रुट जिन दिव्य जड़ीबूटियों को जानते थे, हंस एवं अन्य सभी पक्षी जिन जड़ीबूटियों से परिचित हैं तथा हरिण जिन जड़ीबूटियों को जानते हैं, उन सभी जड़ीबूटियों को मैं इस रोगी पुरुष की चिकित्सा के लिए बुलाता हूं. (२४)

यावतीनामोषधीनां गावः प्राश्नन्त्यघ्न्या यावतीनामजावयः.
तावतीस्तुभ्यमोषधीः शर्म यच्छन्त्वाभृताः (२५)

हे रोगी पुरुष! हिंसा के अयोग्य गाएं जितनी जड़ीबूटियों को खाती हैं और बकरियां या भेड़ें जिन जड़ीबूटियों को चरती हैं, मेरे द्वारा लाई गई वे सभी जड़ीबूटियां तेरा कल्याण करें. (२५)

यावतीषु मनुष्या भेषजं भिषजो विदुः.
तावतीर्विश्वभेषजीरा भरामि त्वामभि (२६)

हे रोगी पुरुष! वैद्य जितनी भी जड़ीबूटियों को ओषधि के रूप में जानते हैं, उन समस्त जड़ीबूटियों को मैं तेरी चिकित्सा के लिए लाता हूं. (२६)

पुष्पवतीः प्रसूमती फलिनीरफला उत.
संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये. (२७)

फूलों वाली, अंकुर उत्पन्न करने वाली, फल वाली और बिना फल वाली जो जड़ीबूटियां हैं, मैं इस रोगी पुरुष के कल्याण के लिए उन सब का प्रयोग इस प्रकार करता हूं, जिस प्रकार माता बालक को दूध पिलाती है. (२७)

उत् त्वाहार्षं पञ्चशलादथो दशशलादुत.
अथो यमस्य पड्वीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् (२८)

हे रोगी पुरुष! मैं ने पंच शलाका एवं दस शलाका वाली, काठ के चरण बंधन से यमराज के पाश से तथा सभी पापों से छुड़ा कर तुझे प्राप्त कर लिया है. (२८)

सूक्त आठवां — देवता—इंद्र

इन्द्रो मन्थतु मन्थिता शक्रः शूरः पुरंदरः.
यथा हनाम सेना अमित्राणां सहस्रशः (१)

शत्रुओं का दलन करने वाले, शक्तिशाली, वीर एवं विरोधियों के नगरों को उजाड़ने वाले इंद्र इस यज्ञ में अरणि मंथन कर के अग्नि प्रज्वलित करें, जिस के प्रभाव से हम अपने शत्रुओं की हजारों सैनिकों वाली सेनाओं का विनाश कर सकें. (१)

पूतिरज्जुरुपध्मानी पूतिं सेनां कृणोत्वमूम्.
धूममग्निं परादृश्यामित्रा हृत्स्वा दधतां भयम् (२)

अग्नि में गिरने वाली पुरानी रस्सी शत्रु की सेना को शक्तिहीन करे. इस यज्ञ अग्नि का धुआं देख कर ही शत्रु भयभीत हों और अपना धन छोड़ कर भाग जाएं. (२)

अमूनश्वत्थ निः शृणीहि खादामून् खदिराजिरम्.
ताजद्भङ्ग इव भज्यन्तां हन्त्वेनान् वधको वधैः (३)

हे पीपल के वृक्ष! तुम इन शत्रुओं को समाप्त करो. हे खैर के वृक्ष तुम इन सभी

गमनशील शत्रुओं को खा डालो. शत्रु अरंडी के वृक्ष के समान टूट जाएं. तुम अपने काष्ठ के प्रहार से इन का वध करो. (३)

परुषानमून् परुषाह्वः कृणोतु हन्त्वेनान् वधको वधैः.
क्षिप्रं शर इव भज्यन्तां बृहज्जालेन संदिताः (४)

परुष नाम का काठ इन शत्रुओं को कठोर अर्थात गतिहीन बनाए तथा वधक नाम का काठ अपने प्रहारों से इन का वध करे. वृहत जाल से टूटने वाले बाणों के समान ये शत्रु भी शीघ्र टूट जाएं. (४)

अन्तरिक्षं जालमासीज्जालदण्डा दिशो महीः.
तेनाभिधाय दस्यूनां शक्रः सेनामपावपत् (५)

इंद्र ने आकाश का जाल बनाया और पृथ्वी की दिशाओं को डंडा बना कर उसे ताना. इंद्र ने राक्षसों की सेनाओं को ललकार कर इसी जाल से नष्ट कर दिया. (५)

बृहद्धि जालं बृहतः शक्रस्य वाजिनीवतः.
तेन शत्रूनभि सर्वान् न्युब्ज यथा न मुच्यातै कतमश्चनैषाम् (६)

सेनापति इंद्र का आकाशरूपी जाल अत्यधिक विशाल है. हे इंद्र! इस जाल में फंसा कर शत्रुओं को इस प्रकार मारो कि उन में से एक भी न बचे. (६)

बृहत् ते जालं बृहत इन्द्र शूर सहस्रार्घस्य शतवीर्यस्य.
तेन शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदं जघान शक्रो दस्यूनामभिधाय सेनया (७)

हे सूर्य एवं इंद्र! तुम्हारा जाल विशाल है. तुम हजार के आधे अर्थात पांच सौ सैनिकों के स्वामी हो, जिन में से प्रत्येक सौ मनुष्यों के समान शक्तिशाली है. शक्तिशाली इंद्र ने ललकार कर अपनी सेना की सहायता से राक्षसों के सौ हजार, दस हजार एवं एक अरब सैनिकों को अंधकार से ढक दिया था. (७)

अयं लोको जालमासीच्छक्रस्य महतो महान्.
तेनाहमिन्द्रजालेनामूंस्तमसाभि दधामि सर्वान् (८)

यह विशाल लोक ही महान इंद्र का जाल था. मैं इंद्र के इसी जाल की सहायता से इन सभी शत्रुओं को अंधकार से ढकता हूं. (८)

सेदिरुग्रा व्यृद्धिरार्तिश्चानपवाचना.
श्रमस्तन्द्रीश्च मोहश्च तैरमूनभि दधामि सर्वान् (९)

मैं सुस्ती, व्याकुलता, धनहीनता, दुख, वचन का अभाव, थकान, तंद्रा और बेहोशी के द्वारा इन सभी शत्रुओं को आच्छादित करता हूं. (९)

मृत्यवेऽमून् प्र यच्छामि मृत्युपाशैरमी सिताः.

मृत्योर्ये अघला दूतास्तेभ्य एनान् प्रति नयामि बद्ध्वा (१०)

ये शत्रु मृत्यु के पाशों से बंध चुके हैं, इसलिए मैं इन्हें मृत्यु को देता हूं. मैं इन्हें बांध कर मृत्यु के शक्तिशाली दूतों की ओर ले जाता हूं. (१०)

नयतामून् मृत्युदूता यमदूता अपोम्भत.
परः सहस्रा हन्यन्तां तृणेढ्वेनान् मत्यं भवस्य (११)

हे मृत्यु दूतो! इन शत्रु सैनिकों को ले जाओ. हे यूमदूतो! इन का विनाश करो. जिस प्रकार तिनका तोड़ देते हैं, उसी प्रकार इन हजारों से अधिक राक्षसों का वध करो. (११)

साध्या एकं जालदण्डमुद्यत्य यन्त्योजसा.
रुद्रा एकं वसव एकमादित्यैरेक उद्यतः (१२)

साध्य देवता जाल के एक डंडे को पकड़ कर शत्रुओं पर बल से आक्रमण कर रहे हैं. जाल के शेष तीन डंडों में से एक को रुद्र ने, दूसरे को वसु ने और तीसरे को आदित्य ने उठा लिया है. (१२)

विश्वे देवा उपरिष्टादुब्जन्तो यन्त्वोजसा.
मध्येन घ्नन्तो यन्तु सेनामङ्गिरसो महीम् (१३)

विश्वेदेव अपने बल के द्वारा ऊपर से मारते हुए जाएं. अंगिरा के पुत्र सेना के मध्य भाग का विनाश करते हुए जाएं. (१३)

वनस्पतीन् वानस्पत्यानोषधीरुत वीरुधः.
द्विपाच्चतुष्पादिष्णामि यथा सेनाममूं हनन् (१४)

मैं अपने मंत्र बल से वनस्पतियों को, वनस्पतियों से बनी हुई ओषधियों को, वृक्षों को, दो चरणों वाले मनुष्यों को प्रेरित करता हूं, जिस से वे शत्रु सेना का विनाश कर सकें. (१४)

गन्धर्वाप्सरसः सर्पान् देवान् पुण्यजनान् पितॄन्.
दृष्टानदृष्टानिष्णामि यथा सेनाममूं हनन् (१५)

मैं गंधर्वों, अप्सराओं, सर्पों, देवों, पवित्रजनों, पितरों तथा देखे और बिना देखे हुए प्राणियों को अपने मंत्र बल से प्रेरित करता हूं कि वे शत्रु सेना को मार डालें. (१५)

इम उप्ता मृत्युपाशा यानाक्रम्य न मुच्यसे.
अमुष्या हन्तु सेनाया इदं कूटं सहस्रशः (१६)

हे शत्रु! मैं ने ये मृत्युपाश फैला दिए हैं. तू इन को पार कर के छूट नहीं सकता. यह कूट इस शत्रु सेना का हजारों की संख्या में संचार करे. (१६)

घर्म: समिद्धो अग्निनायं होम: सहस्रह:.
भवश्च पृश्निबाहुश्च शर्व सेनाममूं हतम् (१७)

धूप चढ़ी हुई है और यह होम अग्नि के कारण हजार गुना बढ़ चुका है. हे भव! प्रश्निबाहु और सर्व नामक देवो! इस शत्रु सेना का संहार करो. (१७)

मृत्योराषमा पद्यन्तां क्षुधं सेदिं वधं भयम्.
इन्द्रश्चाक्षुजालाभ्यां शर्व सेनाममूं हतम् (१८)

ये शत्रु भूख, दरिद्रता, वध और भय के कारण मृत्यु के मुख में चले जाएं. हे इंद्र और शर्व अक्ष और जालों के द्वारा इस शत्रु सेना का संहार करो. (१८)

पराजिता: प्र त्रसतामित्रा नुत्ता धावत ब्रह्मणा.
बृहस्पतिप्रणुत्तानां मामीषां मोचि कश्चन (१९)

हे शत्रुओ! तुम हमारे मंत्र बल से पराजित, भयभीत एवं दलित हो कर यहां से भाग जाओ. बृहस्पति के द्वारा मंत्र बल से प्रभावित इन में से एक भी न बचे. (१९)

अव पद्यन्तामेषामायुधानि मा शकन् प्रतिधामिषुम्.
अथैषां बहु बिभ्यतमामिषवो घ्नन्तु मर्मणि (२०)

इन शत्रुओं के आयुध न उठ सकें. इन के हाथ बाण चलाने में समर्थ न हों. इन अत्यधिक भयभीत शत्रुओं के मर्मस्थलों को हमारे बाण बींध दें. (२०)

सं क्रोशतामेनान् द्यावापृथिवी समन्तरिक्षं सह देवताभि:.
मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम् (२१)

छाया, पृथ्वी एवं आकाश सभी देवों के साथ इन शत्रुओं को शाप दें. ये शत्रु अथर्ववेद के किसी विद्वान का आश्रय न ले सकें और प्रतिष्ठा को प्राप्ति न करें. ये एकदूसरे के प्रति विद्वेष करते हुए मृत्यु को प्राप्त हों. (२१)

दिशश्चतस्रोऽश्वतर्यो देवरथस्य पुरोडाशा: शफा अन्तरिक्षमुद्धि:.
द्यावापृथिवी पक्षसी ऋतवोऽभीशवोऽन्तर्देशा: किंकरा वाक् परिरथ्यम् (२२)

चारों दिशाएं, अग्निदेव के रथ की चार अश्वतरियां अर्थात खच्चरियां हैं. यज्ञ का पुरोडाश उन खच्चरियों का सुम है तथा अंतरिक्ष उन का निवास स्थान है. धरती और आकाश के बीच का भाग बाण और वाणी उस रथ को हांकने वाला सारथी है. (२२)

संवत्सरो रथ: परिवत्सरो रथोपस्थो विराडीषाग्नी रथमुखम्.
इन्द्र: सव्यष्ठाश्चन्द्रमा: सारथि: (२३)

संवतत्सर अग्निदेव का रथ, परिवत्सर उस का पिछला भाग, विराट लगाम

और अग्नि मुख तथा चंद्रमा उस का सारथी है. इंद्र इन की बाईं ओर बैठते हैं. (२३)

इतो जयेतो वि जय सं जय जय स्वाहा. इमे जयन्तु परामी जयन्तां
स्वाहेभ्यो दुराहामीभ्यः. नीललोहितेनामूनभ्यवतनोमि (२४)

हे राजन! इधर से, उधर से एवं सभी ओर से आप की शोभन जय हो. इन मित्रों की विजय के लिए यह आहुति उत्तम हो. आप के शत्रु हार जाएं और मित्र विजयी हों. मैं नीले और लाल डोरों से इन शत्रुओं को लपेटता हूं. यह आहुति मित्रों के लिए कल्याणकारी और शत्रुओं के लिए हानिकारक हो. (२४)

सूक्त नौवां — देवता—मंत्र में बताए गए

कुतस्तौ जातौ कतमः सो अर्धः कस्माल्लोकात् कतमस्याः पृथिव्याः.
वत्सौ विराजः सलिलादुदैतां तौ त्वा पृच्छामि कतरेण दुग्धा (१)

विराट के दोनों वत्स कहां से उत्पन्न हुए? उन में से एक किसी लोक से उत्पन्न हुआ. उन में से पृथ्वी से कौन सा वत्स उत्पन्न हुआ? विराट के दोनों वत्स जल से निकले. मैं तुम से पूछता हूं कि तुम ने इन्हें किस प्रकार समझा है. (१)

यो अक्रन्दयत् सलिलं महित्वा योनिं कृत्वा त्रिभुजं शयानः.
वत्सः कामदुघो विराजः स गुहा चक्रे तन्वः पराचैः (२)

जिस ने जल को महत्त्व देते हुए, क्रंदन किया और जल को त्रिभुज बना कर सोता रहा. विराट का यह वत्स अभिलाषा पूर्ण करने वाला है. उस ने दूसरों के शरीर को अपनी गुफा बनाया है. (२)

यानि त्रीणि बृहन्ति येषां चतुर्थं वियुनक्ति वाचम्.
ब्रह्मैनद् विद्यात् तपसा विपश्चिद् यस्मिन्नेकं युज्यते यस्मिन्नेकम् (३)

इन में से तीन बृहती एवं महत्त्वपूर्ण हैं तथा चौथी वाणी है. विद्वान ब्रह्मा ने इस वाणी को तपस्या के द्वारा जाना. एकाकी रहने वाला ही इन में से एक को जान सकता है. (३)

बृहतः परि सामानि षष्ठात् पञ्चाधि निर्मिता.
बृहद् बृहत्या निर्मितं कुतोऽधि बृहती मिता (४)

बृहती से पांच सोम निर्मित हुए. इन में छठे से पांच का निर्माण हुआ. अर्थात ब्रह्म से पांच तत्त्व—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश की उत्पत्ति हुई. बृहत बृहती से उत्पन्न हुआ तो बृहती निर्मित कैसे हुई? (४)

बृहती परि मात्राया मातुर्मात्राधि निर्मिता.
माया ह जज्ञे मायाया मायाया मातली परि (५)

बृहती मात्राओं अर्थात पंचतन्मात्राओं से बढ़ कर है, क्योंकि पंच तन्मात्राएं अपनी माता प्रकृति से जन्मती हैं. ये माया से ही उत्पन्न हुई. इस प्रकार मातली माया से महान है. (५)

वैश्वानरस्य प्रतिमोपरि द्यौर्यावद् रोदसी विबबाधे अग्निः.
ततः षष्ठादामुतो यन्ति स्तोमा उदितो यन्त्यभि षष्ठमहः (६)

यह द्यौ वैश्वानर अग्नि पर ही स्थित है. धरती और आकाश जहां तक हैं, वहीं तक अग्निदेव बाधा पहुंचा सकते हैं. दिन के छठे भाग से स्तोत उत्पन्न हुआ. उस छठे भाग से ये आते हैं. (६)

षट् त्वा पृच्छाम ऋषयः कश्यपेमे त्वं हि युक्तं युयुक्षे योग्यं च.
विराजमाहुर्ब्रह्मणः पितरं तां नो वि धेहि यतिधा सखिभ्यः (७)

हे कश्यप ऋषि! आप युक्त और योग्य को संयुक्त करते हैं. हम छः ऋषि तुम से पूछते हैं कि विराट को ब्रह्म का पिता क्यों कहा जाता है. इन सखाओं को उस ब्रह्म का उपदेश करो. (७)

यां प्रच्युतामनु यज्ञाः प्रच्यवन्त उपतिष्ठन्त उपतिष्ठमानाम्.
यस्या व्रते प्रसवे यक्षमेजति सा विराड्षयः परमे व्योमन् (८)

जिस के अनुपस्थित होने पर यज्ञ नहीं होते तथा जिस के उपस्थित होने पर यज्ञ का अनुष्ठान होता है, जिस से संबंधित व्रत होने पर यज्ञ प्राप्त होता है, उसी विराट के परम व्योम में होने की बात कही जाती है. (८)

अप्राणैति प्राणेन प्राणतीनां विराट् स्वराजमभ्येति पश्चात्.
विश्वं मृशन्तीमभिरूपां विराजं पश्यन्ति त्वे न त्वे पश्यन्त्येनाम् (९)

हे ऋषियो! प्राण वायु से हीन विराट प्राण वायु का सेवन करने वाली प्रजाओं के प्राण के रूप में प्रवेश करता है. इस के पश्चात वह स्वराज को प्राप्त होता है. अनुरूप एवं जीवित विश्व में विराट को देखा जाता है तथा नहीं भी देखा जाता. (९)

को विराजो मिथुनत्वं प्र वेद क ऋतून् क उ कल्पमस्याः.
क्रमान् को अस्याः कतिधा विदुग्धान् को अस्या धाम कतिधा व्युष्टीः (१०)

प्रजापति विराट के मिथुन को जानते हैं. ऋतुओं और कल्पों के जानने वाले भी वे ही हैं. प्रजापति ही इस के क्रमों को जानते हैं कि वे कितने हैं तथा वे ही इस के स्थानों की संख्या जानते हैं. (१०)

इयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छदास्वितरासु चरति प्रविष्टा.
महान्तो अस्यां महिमानो अन्तर्वधूर्जिगाय नवगज्जनित्री (११)

वह विराट ही है, जो सब से पहले उषा के रूप में उत्पन्न हुआ था तथा उसी

ने सृष्टि का अंधकार मिटाया था. विराट से संबंधित उषा ही समस्त उषाओं में प्रवेश कर के प्रकाश करती है. सोम, सूर्य, अग्नि आदि सभी देव विराट के अधीन हैं. विराट रूप उषा ही सूर्य की पत्नी है. (११)

छन्द: पक्षे उषसा पेपिशाने समानं योनिमनु सं चरेते.
सूर्यपत्नी सं चरतः प्रजानती केतुमती अजरे भूरिरेतसा (१२)

वृद्धावस्था को प्राप्त न होने वाले छंद पक्षी उषा रूपी विराट के प्रकट होते ही समान कारण का अनुसरण करते हैं. सूर्य की पत्नी उषा ज्योति के वीर्य को जानती है. (१२)

ऋतस्य पन्थामनु तिस्र आगुस्त्रयो घर्मा अनु रेत आगुः.
प्रजामेका जिन्वत्यूर्जमेका राष्ट्रमेका रक्षति देवयूनाम् (१३)

सूर्य, चंद्र एवं अग्नि—ये तीनों सत्यों के मार्ग पर चलते एवं शक्ति के अनुसार अपने धर्म का पालन करते हैं. इन तीन में से एक की शक्ति ऋत्विजों को प्राप्त करती है. दूसरी शक्ति बल की वृद्धि करती है और तीसरी शक्ति राष्ट्र की रक्षा करती है. (१३)

अग्नीषोमावदधुर्या तुरीयासीद् यज्ञस्य पक्षावृषयः कल्पयन्तः.
गायत्रीं त्रिष्टुभं जगतीमनुष्टुभं बृहदर्कीं यजमानाय स्व राभरन्तीम् (१४)

अग्नि तथा सोम ने एवं यज्ञ की कल्पना करते हुए ऋषियों ने उस शक्ति को धारण किया जो चौथी थी. इस के पश्चात उस के गायत्री, त्रिष्टुप, जगती, अनुष्टुप और अर्की नामक पद्य बनाए गए. (१४)

पञ्च व्युष्टीरनु पञ्च दोहा गां पञ्चनाम्नीमृतवोऽनु पञ्च.
पञ्च दिशः पञ्चदशेन क्लृप्तास्ता एकमूर्ध्नीरभि लोकमेकम् (१५)

पांच शक्तियों के अनुकूल पांच दोहन, पांच गाएं एवं पांच ऋतुएं बनाई गईं. पांच दिशाएं इन पंद्रह अर्थात पांच दोहनों, पांच गायों और पांच ऋतुओं के द्वारा समर्थ हुईं. ये योगी के लिए एक लोक के रूप में बनीं. (१५)

षड् जाता भूता प्रथमजर्तस्य षडु सामानि षडहं वहन्ति.
षड्योगं सीरमनु सामसाम षडाहुर्द्यावापृथिवीः षडुर्वीः (१६)

ऋतु अर्थात सत्य से पहलेपहल छः ने जन्म लिया. छः साम दिन के छः विभागों को वहन करते हैं. छः साम पृथ्वी का अनुगमन करते हैं. धरती, आकाश एवं छः मास ये सब उष्णता से संबंधित हैं. (१६)

षडाहुः शीतान् षडु मास उष्णानृतुं नो ब्रूत यतमोऽतिरिक्तः.
सप्त सुपर्णाः कवयो नि षेदुः सप्त च्छन्दांस्यनु सप्त दीक्षाः (१७)

छः मास शीत ऋतु के और छः मास ग्रीष्म ऋतु के कहे गए हैं. हमें सत्य बताओ कि उन के अतिरिक्त कौन है. विद्वान लोग सात सुंदर पर्णों, सात छंदों और सात दीक्षाओं को जानते हैं. (१७)

सप्त होमाः समिधो ह सप्त मधूनि सप्तर्तवो ह सप्त.
सप्ताज्यानि परि भूतमायन् ताः सप्तगृध्रा इति शुश्रुमा वयम् (१८)

सात होमों की सात समिधाएं, सात मधु और सात ऋतुएं हैं. पुरुष को सात प्रकार के घृत प्राप्त होते हैं. हम ने ऐसा भी सुना है कि इसी प्रकार गृध्र भी सात हैं. (१८)

सप्त च्छन्दांसि चतुरुत्तराण्यन्यो अन्यस्मिन्नध्यार्पितानि.
कथं स्तोमाः प्रति तिष्ठन्ति तेषु तानि स्तोमेषु कथमार्पितानि (१९)

सात छंद और चार उत्तर अर्थात वेद परस्पर संबंधित हैं. ये दोनों प्रकार के सात एकदूसरे में स्थित हैं. स्तोम उन में किस प्रकार स्थित रहते हैं तथा वे स्तोत्रों में किस प्रकार समाहित हैं ? (१९)

कथं गायत्री त्रिवृतं व्याप कथं त्रिष्टुप् पञ्चदशेन कल्पते.
त्रयस्त्रिंशेन जगती कथमनुष्टुप् कथमेकविंशः (२०)

त्रिवृत में गायत्री किस प्रकार व्याप्त तथा त्रिष्टुप पंद्रह वर्णों से किस प्रकार निर्मित होता है. जगती छंद तैंतीस वर्णों से किस प्रकार बनता है और अनुष्टुप में इक्कीस वर्ण किस प्रकार होते हैं. (२०)

अष्ट जाता भूता प्रथमजर्तस्याष्टेन्द्रर्त्विजो दैव्या ये.
अष्टयोनिरदितिरष्टपुत्राष्टमीं रात्रिमभि हव्यमेति (२१)

ऋतु से सर्व प्रथम आठ भूत अर्थात तत्त्व उत्पन्न हुए. हे इंद्र! वे आठों दिव्य ऋत्विज हैं. आठ योनियों और आठ पुत्रों वाली अदिति अष्टमी तिथि की रात में हव्य ग्रहण करती हैं. (२१)

इत्थं श्रेयो मन्यमानेदमागमं युष्माकं सख्ये अहमस्मि शेवा.
समानजन्मा क्रतुरस्ति वः शिवः स वः सर्वाः सं चरति प्रजानन् (२२)

इस प्रकार तुम्हारा समान जन्मा मैं तुम्हारी मित्रता प्राप्त कर के सुखी हूं और अपने को श्रेयस्कार मानता हूं. कल्याण करने वाला यज्ञ ही तुम सब को जानता हुआ सर्वत्र संचरण करता है. (२२)

अष्टेन्द्रस्य षड् यमस्य ऋषीणां सप्त सप्तधा.
अपो मनुष्या३नोषधीस्तां उ पञ्चानु सेचिरे (२३)

इंद्र की आठ, यम की छः और ऋषियों की सतहत्तर जड़ीबूटियां हैं. (२३)

केवलीन्द्राय दुदुहे हि गृष्टिर्वशं पीयूषं प्रथमं दुहाना.
अथातर्पयच्चतुरश्चतुर्धा देवान् मनुष्यां३ असुरानुत ऋषीन् (२४)

इन जड़ीबूटियों को और मनुष्यों को पांच जल सींचते हैं. पहली बार बच्चा देने वाली गाय ने इंद्र के लिए अमृतरूपी दूध दिया. उसी दूध से इंद्र ने देवों, मनुष्यों, ऋषियों एवं असुरों—इन चारों को तृप्त किया. (२४)

को नु गौ: क एकऋषि: किमु धाम का आशिष:.
यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तु: कतमो नु स: (२५)

वह गाय कौन सी है ? एक ऋषि कौन है. उन का स्थान क्या है और आशीर्वाद क्या है. पृथ्वी पर एक वृत्त और एक ऋतु ही पूजनीय है. वह कौन सी है ? (२५)

एको गौरेक एकऋषिरेकं धामैकधाशिष:.
यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुर्नाति रिच्यते (२६)

वह धेनु एक ही है. वह ऋषि भी अकेला ही है. वे धाम और आशीर्वाद भी एक ही प्रकार के हैं. पृथ्वी पर एक वृत और एक ऋतु ही पूजनीय है. इन से बढ़ कर कोई भी नहीं है. (२६)

सूक्त दसवां (१) देवता—विराट

विराड् वा इदमग्र आसीत् तस्या जाताया: सर्वमबिभेदियमेवेदं भविष्यतीति (१)

प्रारंभ में विराट ही था. उस के उत्तम होने से सर्व को भय हुआ कि भविष्य में यह अकेला ही रहेगा. (१)

सोदक्रामत् सा गार्हपत्ये न्यक्रामत् (२)

उस विराट ने उत्क्रम किया. वह जल बनकर गार्हपत्य अग्नि में प्रवेश कर गया. (२)

गृहमेधी गृहपतिर्भवति य एवं वेद (३)

जो गृहपति इस प्रकार जानता है. वह गृहमेधि बन जाता है. (३)

सोदक्रामत् साहवनीये न्यक्रामत् (४)

उस विराट ने पुन: उत्क्रम किया और आह्वनीय अग्नि में प्रवेश कर गया. (४)

यन्त्यस्य देवा देवहूतिं प्रियो देवानां भवति य एवं वेद (५)

जो इस बात को जानता है, वह देवों का प्रिय हो जाता है और उस के आह्वान पर देवगण पधारते हैं. (५)

सोदक्रामत् सा दक्षिणाग्नौ न्यक्रामत् (६)

उस विराट ने पुनः उत्क्रम किया और वह दक्षिणाग्नि में प्रवेश कर गया. (६)

यज्ञर्तो दक्षिणीयो वासतेयो भवति य एवं वेद (७)

जो इस बात को जानता है, वह यज्ञ, ऋत और दक्षिणाग्नि में निवास करने वाला बनता है. (७)

सोदक्रामत् सा सभायां न्यक्रामत् (८)

विराट ने पुनः उत्क्रम किया तथा वह सभा में प्रवेश कर गया. (८)

यन्त्यस्य सभां सभ्यो भवति य एवं वेद (९)

जो इस बात को जानता है, वह सभ्य अर्थात सभा में बैठने योग्य बनता है और उस की सभा में सभी जाते हैं. (९)

सोदक्रामत् सा समितौ न्यक्रामत् (१०)

उस ने पुनः उत्क्रम किया और वह समिति में प्रवेश कर गया. (१०)

यन्त्यस्य समितिं सामित्यो भवति य एवं वेद (११)

जो इस को जानता है, वह समित्य अर्थात समिति में सम्मिलित होने योग्य बन जाता है. उस की समिति में सभी सम्मिलित होते हैं. (११)

सोदक्रामत् सामन्त्रणे न्यक्रामत् (१२)

उस विराट ने पुनः उत्क्रम किया और वह आमंत्रण में प्रवेश कर गया. (१२)

यन्त्यस्यामन्त्रणमामन्त्रणीयो भवति य एवं वेद (१३)

जो इस बात को जानता है, वह आमंत्रणीय अर्थात आमंत्रण के योग्य बन जाता है और सभी जन उस का आमंत्रण स्वीकार करते हैं. (१३)

सूक्त दसवां (२) देवता—विराट

सोदक्रामत् सान्तरिक्षे चतुर्धा विक्रान्तातिष्ठत् (१)

उस विराट ने अंतरिक्ष में उत्क्रमण किया और उत्क्रमण कर के वह चार प्रकार से स्थित हुआ. (१)

तां देवमनुष्या अब्रुवन्नियमेव तद् वेद यदुभय उपजीवेमेमामुप ह्वयामहा इति (२)

इस से देवों और मनुष्यों ने कहा—"इसे जो जानता है, वे दोनों ज्ञाता और गेव के सहारे जीवित हैं. हम उन का आह्वान करते हैं." (२)

तामुपाह्वयन्त (३)

उन्होंने उसे बुलाया. (३)

ऊर्ज एहि स्वध एहि सूनृत एहीरावत्येहीति (४)

हे ऊर्जा! यहां आओ. हे स्वधा! हमारे समीप आओ. हे सूनृता! यहां आओ. हे इरावती! हमारे समीप आओ. (४)

तस्या इन्द्रो वत्स आसीद् गायत्र्यभिधान्यभ्रमूधः (५)

इंद्र उस का बछड़ा बना, गायत्री उस की रस्सी बनी और मेघ उस के एन बनें. (५)

बृहच्च रथन्तरं च द्वौ स्तनावास्तां यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च द्वौ (६)

बृहत साम और रथंतर साम उस गाय के दो थन थे. उस गाय के शेष दो थन—यज्ञायज्ञिय और वामदेव्य. (६)

ओषधीरेव रथन्तरेण देवा अदुह्रन् व्यचो बृहता (७)

देवों ने गाय के रथंतर रूपी थन से जड़ीबूटियों को और बृहत सामरूपी थन से व्यच को दुहा. (७)

अपो वामदेव्येन यज्ञं यज्ञायज्ञियेन (८)

देवों ने वामदेव्य सामरूपी थन से जल का और यज्ञिय रूपी थन से यज्ञ का दोहन किया. (८)

ओषधीरेवास्मै रथंतरं दुहे व्यचो बृहत् (९)

इस बात को जो जानता है, उस के लिए रथंतर साम जड़ीबूटियां और बृहत साम अर्थात व्यापत आकाश प्रदान करते हैं. (९)

अपो वामदेव्यं यज्ञं यज्ञायज्ञियं य एवं वेद (१०)

इस बात को जानने वाले के लिए वामदेव्य साम जल और यज्ञायज्ञिय साम यज्ञ प्रदान करते हैं. (१०)

सूक्त दसवां (३) देवता—विराट

सोदक्रामत् सा वनस्पतीनागच्छत् तां वनस्पतयोऽघ्नत सा संवत्सरे समभवत् (१)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह वनस्पतियों के समीप पहुंचा. वनस्पतियों ने उस का हनन किया तो वह संवत्सर बन गया. (१)

तस्माद् वनस्पतीनां संवत्सरे वृक्णमपि रोहति
वृश्चतेऽस्याप्रियो भ्रातृव्यो य एवं वेद (२)

इसी कारण वनस्पतियों का कटा हुआ भाग संवत्सर अर्थात एक वर्ष में उत्पन्न हो जाता है. जो इस बात को जानता है, उस का शत्रु नाश को प्राप्त होता है. (२)

सोदक्रामत् सा पितॄनागच्छत् तां पितरोऽघ्नत सा मासि समभवत् (३)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह पितरों के समीप पहुंचा. पितरों ने उस का हनन किया तो वह विराट मास बन गया. (३)

तस्मात् पितृभ्यो मास्युपमास्यं ददति प्र पितृयाणं पन्थां जानाति य एवं वेद (४)

इसीलिए प्रतिमास पितरों की उपासना कर के उन्हें भोजन दिया जाता है. जो इस बात को जानता है, वह पितृयान मार्ग का ज्ञाता होता है. (४)

सोदक्रामत् सा देवानागच्छत् तां देवा अघ्नत सार्धमासे समभवत् (५)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह देवों के समीप पहुंचा. देवों ने उस का हनन किया, तब पक्ष उत्पन्न हुआ. (५)

तस्माद् देवेभ्योऽर्धमासे वषट् कुर्वन्ति प्र देवयानं पन्थां जानाति य एवं वेद (६)

इसीलिए आधा मास अर्थात पखवाड़े में देवों के लिए वषट् करते हैं. जो इस बात को जानता है, वह देवयान मार्ग का ज्ञात होता है. (६)

सोदक्रामत् सा मनुष्या३नागच्छत् तां मनुष्या अघ्नत सा सद्यः समभवत् (७)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह मनुष्यों के समीप पहुंचा. मनुष्यों ने उस का हनन किया तो वह तुरंत ही प्रकट हो गया. (७)

तस्मान्मनुष्येभ्य उभयद्युरुप हरन्त्युपास्य गृहे हरन्ति य एवं वेद (८)

इसीलिए मनुष्यों के लिए दूसरे दिन अपहरण करते हैं. जो इस बात को जानता है, उस के घर में प्रतिदिन अन्न पहुंचाया जाता है. (८)

सूक्त दसवां (४) देवता—विराट

सोदक्रामत् सासुरानागच्छत् तामसुरा उपाह्वयन्त माय एहीति (१)

उस विराट ने पुनः उत्क्रमण किया और वह असुरों के समीप पहुंचा. असुरों ने उस का आह्वान किया कि हमारे समीप आओ. (१)

तस्या विरोचनः प्राह्लादिर्वत्स आसीदयस्पात्रं पात्रम् (२)

प्रथम आह्वान करने वाला विरोचन उस का वत्स हुआ. लोहे का पात्र उस का पात्र बना. (२)

तां द्विमूर्धार्त्व्यो ऽधोक् तां मायामेवाधोक् (३)

637/28

दो सिरों वाले ऋतुपुत्र ने उस का तथा माया का दोहन किया. (३)

तां मायामसुरा उप जीवन्त्युपजीवनीयो भवति य एवं वेद (४)

असुर उसी माया के उपजीवी हैं. जो इस बात को जानता है, वह सब के उपजीवन के योग्य है. (४)

सोदक्रामत् सा पितृनागच्छत् तां पितर उपाह्वयन्त स्वध एहीति (५)

वह विराट उत्क्रमण कर के पितरों के समीप पहुंचा. पितरों ने उस का आह्वान किया— "हे स्वधा, आओ." (५)

तस्या यमो राजा वत्स आसीद् रजतपात्रम् पात्रम् (६)

राजा यम उस के वत्स हुए तथा चांदी का पात्र उस का पात्र हुआ. (६)

तामन्तको मार्त्यवोऽधोक् तां स्वधामेवाधोक् (७)

मृत्यु के देवता यमराज ने उस का तथा स्वधा का भी दोहन किया. (७)

तां स्वधां पितर उप जीवन्त्युपजीवनीयो भवति य एवं वेद (८)

पितर उस स्वधा के उपजीवी बनते हैं. जो इस बात को जानता है, वह सब के उपजीवन के योग्य बनता है. (८)

सोदक्रामत् सा मनुष्या३नागच्छत् तां मनुष्या३ उपह्वयन्तेरावत्येहीति (९)

वह विराट उत्क्रमण कर के मनुष्यों के समीप आया. मनुष्यों ने उस का आह्वान करते हुए कहा, "हे इरावती, यहां आओ." (९)

तस्या मनुर्वैवस्वतो वत्स आसीत् पृथिवी पात्रम् (१०)

वैवस्वत मनु उस के वत्स थे और पृथ्वी उस का पात्र बनी. (१०)

तां पृथी वैन्यो ऽधोक् तां कृषिं च सस्यं चाधोक् (११)

वेन के पुत्र पृथु ने उस पृथ्वी का दोहन करते हुए उस से फसलें और कृषि प्राप्त की. (११)

ते कृषिं च सस्यं च मनुष्या३ उप जीवन्ति
कृष्टराधिरुपजीवनीयो भवति य एवं वेद (१२)

मनुष्य उस कृषि और फसल के सहारे जीवित रहते हैं. जो इस बात को जानता है, वह कृषि कर्म में कुशल होता है तथा उस के सहारे सब जीवन यापन करते हैं. (१२)

सोदक्रामत् सा सप्तऋषीनागच्छत् तां

सप्तऋषय उपाह्वयन्त ब्रह्मण्वत्येहीति (१३)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह सात ऋषियों के समीप पहुंचा. सात ऋषियों ने उस का आह्वान करते हुए कहा—''ब्रह्मणस्पति, आओ.'' (१३)

तस्याः सोमो राजा वत्स आसीच्छन्दः पात्रम् (१४)

राजा सोम उस के वत्स थे और छंद उस का पात्र था. (१४)

तां बृहस्पतिराङ्गिरसो ऽधोक् तां ब्रह्म च तपश्चाधोक् (१५)

आंगिरस बृहस्पति ने उस का दोहन किया तथा उस के ब्रह्म और तप का भी दोहन किया. (१५)

तद् ब्रह्म च तपश्च सप्तऋषय उप जीवन्ति
ब्रह्मवर्चस्युपजीवनीयो भवति य एवं वेद (१६)

उस ब्रह्म और तप के उपजीवी सात ऋषि होते हैं. जो इस बात को जानता है, वह ब्रह्मवर्चस्व वाला होता है और सभी प्राणियों को उपजीवन देता है. (१६)

सूक्त दसवां (५) देवता—विराट

सोदक्रामत् सा देवानागच्छत् तां देवा उपाह्वयन्तोर्ज एहीति (१)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह देवों के समीप पहुंचा. देवों ने उस का आह्वान करते हुए कहा—''हे ऊर्जा, आओ.'' (१)

तस्या इन्द्रो वत्स आसीच्चमसः पात्रम् (२)

उस के वत्स इंद्र हुए और चमस उस का पात्र था. (२)

तां देवः सविताधोक् तामूर्जामेवाधोक् (३)

सविता देव ने उस का दोहन किया और ऊर्जा को दुहा. (३)

तामूर्जां देवा उप जीवन्त्युपजीवनीयो भवति य एवं वेद (४)

देवगण उस उर्जा के सहारे जीवित रहते हैं. जो इस बात को जानता है, वह सब को जीने का सहारा देने योग्य बनता है. (४)

सोदक्रामत् सा गन्धर्वाप्सरस आगच्छत् तां गन्धर्वाप्सरस उपाह्वयन्त पुण्यगन्ध एहीति (५)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह गंधर्वों तथा अप्सराओं के समीप पहुंचा. गंधर्वों और अप्सराओं ने उस का आह्वान करते हुए कहा—''हे पुण्य गंध, आओ.'' (५)

तस्याश्चित्ररथः सौर्यवर्चसो वत्स आसीत् पुष्करपर्णं पात्रम् (६)

सूर्यवर्चस का पुत्र उस का वत्स था और पुष्करपर्ण अर्थात सरोवर का पत्ता उस का पात्र था. (६)

तां वसुरुचिः सौर्यवर्चसो ऽधोक् तां पुण्यमेव गन्धमधोक् (७)

सूर्यवर्चस के पुत्र वसुरुचि ने उस का दोहन किया और पुण्यगंध को ही दुहा. (७)

तं पुण्यं गन्धं गन्धर्वाप्सरस उप जीवन्ति पुण्यगन्धिरुपजीवनीयो भवति य एवं वेद (८)

गंधर्व और अप्सराएं उस पुण्यगंध को अपने जीवन का सहारा बनाते हैं. जो इस बात को जानता है, वह सब को जीवन का आश्रय देने वाला बनता है. (८)

सोदक्रामत् सेतरजनानागच्छत् तामितरजना उपाह्वयन्त तिरोध एहीति (९)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह अन्य जनों के समीप गया. अन्य जनों ने उस का आह्वान करते हुए कहा—"हे तिरोधा, आओ." (९)

तस्याः कुबेरो वैश्रवणो वत्स आसीदामपात्रं पात्रम् (१०)

विश्रवा ऋषि के पुत्र कुबेर उस के वत्स थे और मिट्टी का कच्चा पात्र उस का पात्र था. (१०)

तां रजतनाभिः काबेरकोऽधोक् तां तिरोधामेवाधोक् (११)

रजत नाभि काबेरक ने उस का दोहन किया और उस से तिरोधा को दुहा. (११)

तां तिरोधामितरजना उप जीवन्ति तिरो धत्ते सर्वं पाप्मानमुपजीवनीयो भवति य एवं वेद (१२)

अन्य जन तिरोधा को जीवन का सहारा बनाते हैं. जो इस बात को जानता है, वह सब के पापों को तिरोहित करता है और सब को जीवन का सहारा देने वाला बनता है. (१२)

सोदक्रामत् सा सर्पानागच्छत् तां सर्पा उपाह्वयन्त विषवत्येहीति (१३)

उस विराट ने उत्क्रमण किया और वह सर्पों के समीप पहुंचा. सर्पों ने उस का आह्वान करते हुए कहा—"हे विषवाले आओ." (१३)

तस्यास्तक्षको वैशालेयो वत्स आसीदलाबुपात्रं पात्रम् (१४)

वैशालेय तक्षक उस का वत्स और अलाबु उस का पात्र था. (१४)

तां धृतराष्ट्र ऐरावतो ऽधोक् तां विषमेवाधोक् (१५)

ऐरावत संबंधी सर्प ने उस का दोहन किया और विष का दोहन किया. (१५)

तद् विषं सर्पा उप जीवन्त्युपजीवनीयो भवति य एवं वेद (१६)

उस विष के सहारे सर्प जीवित रहते हैं. जो इस बात को जानता है, वह सब को जीवन का सहारा देने वाला बनता है. (१६)

सूक्त दसवां (६) देवता—विराट

तद् यस्मा एवं विदुषेऽलाबुनाभिषिञ्चेत् प्रत्याहन्यात् (१)

जो इस को जानने वाले को अलाबु के द्वारा सींचता है, वह उस का हनन कर देता है. (१)

न च प्रत्याहन्यान्मनसा त्वा प्रत्याहन्मीति प्रत्याहन्यात् (२)

वैसे तो इस का हनन नहीं करता, पर जब मन से सोचता है कि उस का हनन करूं तो हनन कर देता है. (२)

यत् प्रत्याहन्ति विषमेव तत् प्रत्याहन्ति (३)

जो विषकारी विनाश करते हैं, वे ही विनाश करवाते हैं. (३)

विषमेवास्याप्रियं भ्रातृव्यमनुविषिच्यते य एवं वेद (४)

जो इस बात को जानता है, उस का विष ही प्रिय होता है. वह अपने भाई के पुत्र का ही सिंचन करता है. (४)

नौवां कांड

सूक्त पहला देवता—मधु, अश्विनीकुमार

दिवस्पृथिव्या अन्तरिक्षात् समुद्रादग्नेर्वातान्मधुकशा हि जज्ञे.
तां चायित्वामृतं वसानां हृद्भिः प्रजाः प्रति नन्दन्ति सर्वाः (१)

स्वर्ग, पृथ्वी, अंतरिक्ष, सागर और अग्नि से मधुकशा गौ उत्पन्न हुई. अमृत को धारण करने वाली उस मधुकशा गौ का सच्चे मन से पूजन करने वाली समस्त प्रजाएं संतुष्ट होती हैं. (१)

महत् पयो विश्वरूपमस्याः समुद्रस्य त्वोत रेत आहुः.
यत ऐति मधुकशा रराणा तत् प्राणस्तदमृतं निविष्टम् (२)

इस मधुकशा गौ के विश्व रूपी महान दूध को सागर का बल कहा गया है. स्तुतियों से आकर्षित हो कर यह मधुकशा गौ जिधर जाती है, वहां रहने वालों के प्राणों में अमृत स्थापित हो जाता है. (२)

पश्यन्त्यस्याश्चरितं पृथिव्यां पृथङ्नरो बहुधा मीमांसमानाः.
अग्नेर्वातान्मधुकशा हि जज्ञे मरुतामुग्रा नप्तिः (३)

पृथ्वी पर मनुष्य मधुकशा गौ के चरित्रों की अनेक प्रकार से मीमांसा करते हैं एवं इसे अनेक रूप वाली देखते हुए इसे मरुद्गण की प्रचंड पुत्री अग्नि और वायु से उत्पन्न हुई बताते हैं. (३)

मातादित्यानां दुहिता वसूनां प्राणः प्रजानाममृतस्य नाभिः.
हिरण्यवर्णा मधुकशा घृताची महान् भर्गश्चरति मर्त्येषु (४)

यह मधुकशा गौ आदित्यों की माता, वसुओं की पुत्री, प्रजाओं का प्राण और अमृत की नाभि हैं. सोने के रंग वाली मधुकशा घृत प्रदान करने वाली है. मनुष्यों में इस का महान तेज विचरण करता है. (४)

मधोः कशामजनयन्त देवास्तस्या गर्भो अभवद् विश्वरूपः.
तं जातं तरुणं पिपर्ति माता स जातो विश्वा भुवना वि चष्टे (५)

देवों ने मधुकशा को जन्म दिया. उस का गर्भ विश्वरूप हुआ. तरुण रूप में उत्पन्न हुए विश्वरूप का उस की माता मधुकशा ने भरणपोषण किया. विश्वरूप ने उत्पन्न होते ही सारे संसार को मोहित कर दिया. (५)

कस्तं प्र वेद क उ तं चिकेत यो अस्या हृदः कलशः सोमधानो अक्षितः.
ब्रह्मा सुमेधाः सो अस्मिन् मदेत (६)

उस विश्वरूप को कौन भलीभांति जानता है? उस का हृदय सोम को धारण करने के लिए कलश रूप में अक्ष अर्थात विनाश रहित रहता है, इस का साक्षात्कार किस को है? शोभन बुद्धि वाले ब्रह्मा जी इस में आनंदित होते हैं. (६)

स तौ प्र वेद स उ तौ चिकेत यावस्याः स्तनौ सहस्रधारावक्षितौ.
ऊर्जं दुहाते अनपस्फुरन्तौ (७)

उस के थन कभी दूध से शून्य न होने वाले एवं दूध की हजार धाराएं बहाने वाले हैं. ये थन सदैव दूध प्रदान करते रहते हैं. इन थनों को वही ब्रह्मा जानते हैं. (७)

हिङ्करिक्रती बृहती वयोधा उच्चैर्घोषाभ्येति या व्रतम्.
त्रीन् घर्मानभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः (८)

शब्द करने वाली एवं दूध के रूप में हवि धारण करने वाली मुधकशा गौ रंभाती हुई कर्म क्षेत्र में आती है. वह गौ देवों का आश्रय प्राप्त करने वालों के शब्द को अपने दूध से सशक्त बनाती है. (८)

यामापीनामुपसीदन्त्यापः शाक्वरा वृषभा ये स्वराजः.
ते वर्षन्ति ते वर्षयन्ति तद्विदे काममूर्जमापः (९)

मनोकामना की वर्षा करने वाले उज्ज्वल जल आते हैं, वे जल मधुकशा को जानने के लिए शक्ति देने वाले अन्न देते है एवं अभिलाषा पूर्ण करते हैं. (९)

स्तनयित्नुस्ते वाक् प्रजापते वृषा शुष्मं क्षिपसि भूम्यामधि.
अग्नेर्वातान्मधुकशा हि जज्ञे मरुतामुग्रा नप्तिः (१०)

हे वर्षा करने वाले प्रजापति-पति! तुम्हारी वाणी बिजली के समान भड़कने वाली है. तुम सारी पृथ्वी पर जल को सींचते हो. मरुतों की उग्र पुत्री मधुकशा का जन्म अग्नि और वायु से हुआ है. (१०)

यथा सोमः प्रातः सवने अश्विनोर्भवति प्रियः.
एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि ध्रियताम् (११)

जिस प्रकार अश्विनीकुमारों को प्रातः सवन में सोमरस प्रिय लगता है, अश्विनीकुमार उस प्रकार मुझ में तेज की स्थापना करें. (११)

यथा सोमो द्वितीये सवन इन्द्राग्न्योर्भवति प्रियः.

एवा म इन्द्राग्नी वर्च आत्मनि ध्रियताम् (१२)

जिस प्रकार सोमरस तीसरे सवन में इंद्र और अग्नि को प्रिय होता है, उसी प्रकार इंद्र और अग्नि मुझ में तेज की स्थापना करें. (१२)

यथा सोमस्तृतीये सवन ऋभूणां भवति प्रियः.
एवा म ऋभवो वर्च आत्मनि ध्रियताम् (१३)

जिस प्रकार सोमरस तीसरे सवन में शत्रुओं को प्रिय होता है, उसी प्रकार ऋभुगण मुझ में तेज धारण करें. (१३)

मधु जनिषीय मधु वंशिषीय. पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा (१४)

हे अग्नि! मैं दुग्ध आदि हवि से युक्त हो कर आया हूं. मैं मधु को प्रकट कर के उस के द्वारा तेजस्वी बनूं. मुझ में अपने वचन से तेज स्थापित करो. (१४)

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा.
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः (१५)

हे अग्नि! तुम मुझे अपने तेज, संतान एवं आयु से युक्त करो. देवगण और ऋषियों के साथ इंद्र मुझे तुम्हारी सेवा करने वाला जानें. (१५)

यथा मधु मधुकृतः संभरन्ति मधावधि.
एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि ध्रियताम् (१६)

जैसे मधु एकत्र करने वाले मुझ पर मधु गिराते हैं, उसी प्रकार अश्विनीकुमार मुझ में तेज को स्थापित करें. (१६)

यथा मक्षा इदं मधु न्यञ्जन्ति मधावधि.
एवा मे अश्विना वर्चस्तेजो बलमोजश्च ध्रियताम् (१७)

जिस प्रकार मधुमक्खियां मधु के ऊपर मधु रखती है, उसी प्रकार अश्विनीकुमार मुझ को वर्चस्वी, तेजस्वी, बली और ओज युक्त बनाएं. (१७)

यद् गिरिषु पर्वतेषु गोष्वश्वेषु यन्मधु.
सुरायां सिच्यमानायां यत् तत्र मधु तन्मयि (१८)

पर्वतों में, पहाड़ी प्रदेशों में, गायों में तथा अश्वों में जो मधु है, जो मधु नीचे की ओर बहने वाले जलों में है, वह मधु मुझ में स्थित हो. (१८)

अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती.
यथा वर्चस्वतीं वाचमावदानि जनां अनु (१९)

हे शोभा के लिए स्वर्ण के आभूषण धारण करने वाले अश्विनीकुमारो! तुम मुझे मधुमक्खियों द्वारा एकत्र किए गए मधु से युक्त करो, जिस से मैं मनुष्यों के प्रति ओजपूर्ण वाणी का उच्चारण कर सकूं. (१९)

स्तनयित्नुस्ते वाक् प्रजापते वृषा शुष्मं क्षिपसि भूम्यां दिवि.
तां पशव उप जीवन्ति सर्वे तेनो सेषमूर्जं पिपर्ति (२०)

हे प्रजापति! मेघों का गर्जन ही तुम्हारी वाणी है. हे वर्षा करने वाले प्रजापति! तुम पृथ्वी और स्वर्ग को जल से सींचते हो. पशु उसी जल से जीवित रहते है तथा वही वर्षा अन्न और जल का पोषण करती है. (२०)

पृथिवी दण्डो३न्तरिक्षं गर्भो द्यौः कशा विद्युत् प्रकशो हिरण्ययो बिन्दुः (२१)

पृथ्वी दंड है, अंतरिक्ष गर्भ है, द्यौ ब्रह्म है, विद्युत प्रकाश है और बिंदु हिरण्यमय है. (२१)

यो वै कशायाः सप्त मधूनि वेद मधुमान् भवति.
ब्राह्मणश्च राजा च धेनुश्चानड्वांश्च व्रीहिश्च यवश्च मधु सप्तमम् (२२)

निश्चय ही जो ब्रह्म के सात मधुओं को जानता है, वह मधु वाला बन जाता है तथा ब्राह्मण, राजा, गौ, बैल, धान, जौ के अतिरिक्त दसवां मधु ब्रह्म है. (२२)

मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति.
मधुमतो लोकाञ्जयति य एवं वेद (२३)

जो इस बात को जानता है, वह मधु वाला होता है, मधु पूर्णलोकों पर विजय प्राप्त करता है तथा मधुमय भोजन का भोग करता है. (२३)

यद् वीध्रे स्तनयति प्रजापतिरेव तत् प्रजाभ्यः प्रादुर्भवति.
तस्मात् प्राचीनोपवीतस्तिष्ठे प्रजापतेऽनु मा बुध्यस्वेति.
अन्वेनं प्रजा अनु प्रजापतिर्बुध्यते य एवं वेद (२४)

आकाश में जो मेघ गर्जन होता है, वह प्रजापति है, वह प्रजाओं के लिए ही प्रकट होता है. इसीलिए यज्ञोपवीत धारण करने वाला इस बात के लिए तत्पर हो जाए कि प्रजापति मुझे जाने. जो इस बात को जानता है, वही प्रजापति के पश्चात जन्म लेने वाला समझा जाता है. (२४)

सूक्त दूसरा — देवता—काम

सपत्नहनमृषभं घृतेन कामं शिक्षामि हविषाज्येन.
नीचैः सपत्नान् मम पादय त्वमभिष्टुतो महता वीर्येण (१)

मैं शत्रु विनाशक वृषभ रूपी काम को हवि एवं आज्य से प्रसन्न करता हूं. हे वृषभ! तुम्हारी स्तुति करने वाले मुझ स्तोता के शत्रुओं को तुम अपने महान पराक्रम से नीचे गिराओ. (१)

यन्मे मनसो न प्रियं न चक्षुषो यन्मे बभस्ति नाभिनन्दति.

तद् दुष्वप्न्यं प्रति मुञ्चामि सपत्ने कामं स्तुत्वोदहं भिदेयम् (२)

जो बुरा स्वप्न न मुझ को अच्छा लगता है और न मेरे नेत्रों को सुहाता है, जो मुझे भक्षण करता हुआ मालूम होता है और मुझे प्रसन्न नहीं करता, उस बुरे स्वप्न को काम की स्तुति करने वाला मैं शत्रु की ओर छोड़ता हूं. वह बुरा स्वप्न रूपी शत्रु का भेदन करे. (२)

दुष्वप्न्यं काम दुरितं च कामाप्रजस्तामस्वगतामवर्तिम्.
उग्र ईशानः प्रति मुञ्च तस्मिन् यो अस्मभ्यमंहूरणा चिकित्सात् (३)

हे उग्र एवं स्वामी कामदेव! तुम अपने स्वप्न रूपी पाप को प्रजा अर्थात संतान की हीनता को एवं निर्धनता को उसी और भेजो जो पराजय कर के हमें विपत्ति में डालने की चेष्टा करता है. (३)

नुदस्व काम प्र णुदस्व कामावर्तिं यन्तु मम ये सपत्नाः.
तेषां नुत्तानामधमा तमांस्यग्ने वास्तूनि निर्दह त्वम् (४)

हे कामदेव! दरिद्रता को उन की और जाने के लिए प्रेरित करो जो मेरे शत्रु हैं. वे ही मेरी दरिद्रता को प्राप्त करें. हे अग्नि! वे अंधकार में पड़े रहें. तुम उन के घर की वस्तुओं को भस्म कर दो. (४)

सा ते काम दुहिता धेनुरुच्यते यामाहुर्वाचं कवयो विराजम्.
तया सपत्नान् परि वृङ्ग्धि ये मम पर्येनान् प्राणः पशवो जीवनं वृणक्तु (५)

हे कामदेव! सभी जिसे ओजपूर्ण वाणी कहते हैं, वह तुम्हारी पुत्री है. तुम उस के द्वारा मेरे शत्रुओं का नाश करो. प्राण, पशु और जीवन उन के पास न रहें. (५)

कामस्येन्द्रस्य वरुणस्य राज्ञो विष्णोर्बलेन सवितुः सवेन.
अग्नेर्होत्रेण प्र णुदे सपत्नाञ्छम्बीव नावमुदकेषु धीरः (६)

जिस प्रकार पतवार धारण करने वाला मल्लाह नौका चलाता है, उसी प्रकार मैं कामदेव के, इंद्र के, राजा वरुण के, विष्णु के और सविता के बल से तथा देवों के यज्ञ से शत्रुओं को दूर भगाता हूं. (६)

अध्यक्षो वाजी मम काम उग्रः कृणोतु मह्यमसपत्नमेव.
विश्वे देवा मम नाथं भवन्तु सर्वे देवा हवमा यन्तु म इमम् (७)

सभी देव मेरे इस यज्ञ में आएं एवं मेरे स्वामी, शक्तिशाली कामदेव मेरी आंखों के सामने ही इसे पूर्ण करें तथा मुझे शत्रु रहित बनाएं. (७)

इदमाज्यं घृतवज्जुषाणाः कामज्येष्ठा इह मादयध्वम्.
कृण्वन्तो मह्यमसपत्नमेव (८)

हे कामदेव को अपने से बड़ा मानने वाले देवो! मेरे घृत वाले आज्य का सेवन

करते हुए तुम सुखी रहो. (८)

इन्द्राग्नी काम सरथं हि भूत्वा नीचैः सपत्नान् मम पादयाथः.
तेषां पन्नानामधमा तमांस्यग्ने वास्तून्यनुनिर्दह त्वम् (९)

हे कामदेव! इंद्र और अग्नि रथ पर सवार हो कर मेरे शत्रुओं को नीचे गिराते हैं. हे अग्नि! उन गिरे हुए शत्रुओं को अंधकार प्रकट कर के नष्ट करो एवं उन के घर की सभी वस्तुओं को जला डालो. (९)

जहि त्वं काम मम ये सपत्ना अन्धा तमांस्यव पादयैनान्.
निरिन्द्रिया अरसाः सन्तु सर्वे मा ते जीविषुः कतमच्चनाहः (१०)

हे कामदेव! तुम मेरे शत्रुओं का संहार करो तथा उन्हें घने अंधकार में गिराओ. वे सब इंद्रिय रहित एवं शक्तिहीन हो जाएं तथा वे कुछ ही दिन जीवित रहें. (१०)

अवधीत् कामो मम ये सपत्ना उरुं लोकमकरन्मह्यमेधतुम्.
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रो मह्यं षडुर्वीर्घृतमा वहन्तु (११)

कामदेव ने मेरे शत्रुओं का विनाश कर डाला तथा मेरी वृद्धि के लिए उस ने महान लोक का निर्माण किया. चारों दिशाओं के प्राणी मुझे नमस्कार करें तथा छः पृथ्वियां मेरे लिए घृत प्रदान करें. (११)

तेऽधराञ्चः प्र प्लवन्तां छिन्ना नौरिव बन्धनात्.
न सायकप्रणुत्तानां पुनरस्ति निवर्तनम् (१२)

बंधन टूटने पर नौका जिस प्रकार नीचे की ओर बहती है, मेरे शत्रु उसी प्रकार नीचे गिरते चले जाएं, क्योंकि जो लोग बाण से घायल हो कर भागते हैं, वे वापस नहीं आते. (१२)

अग्निर्यव इन्द्रो यवः सोमो यवः. यवयावानो देवा यावयन्त्वेनम् (१३)

अग्नि, इंद्र और सोमदेव—ये सभी देव मेरे शत्रुओं को दूर भगाएं. (१३)

असर्ववीरश्चरतु प्रणुत्तो द्वेष्यो मित्राणां परिवर्ग्य१:स्वानाम्.
उ त पृथिव्यामव स्यन्ति विद्युत उग्रो वो देवः प्र मृणत् सपत्नान् (१४)

इस मंत्र की शक्ति से प्रेरणा पा कर मेरा शत्रु पुत्रों, पौत्रों एवं समस्त वीरों से रहित हो कर घूमे. उस के मित्र भी उस का त्याग कर दें. विद्युत पृथ्वी पर उस के टुकड़े कर दे. हे यजमान! देवगण तुम्हारे शत्रुओं का मर्दन करें. (१४)

च्युता चेयं बृहत्यच्युता च विद्युद् बिभर्ति स्तनयित्नूंश्च सर्वान्.
उद्यन्नादित्यो द्रविणेन तेजसा नीचैः सपत्नान् नुदतां मे सहस्वान् (१५)

जो बिजली अपने गर्जन से सभी मेघों को पूर्ण कर देती है, वह नीचे गिर कर

अथवा अपने स्थान पर रह कर तथा उदय होते हुए सूर्य अपने शक्तिशाली तेज के द्वारा मेरे शत्रुओं को नीचे गिराएं. (१५)

यत् ते काम शर्म त्रिवरूथमुद्भु ब्रह्म वर्म विततमनतिव्याध्यं कृतम्.
तेन सपत्नान् परि वृङ्ग्धि ये मम पर्यैनान् प्राणः पशवो जीवनं वृणक्तु (१६)

हे कामदेव! तुम्हारा जो कल्याणकारी बल तीनों लोकों को पराजित करने वाला है, उस के एवं ब्रह्म रूपी विस्तृत कवच के द्वारा तुम मेरे शत्रुओं का विनाश करो. उन का जीवन एवं पशु प्राणहीन हो जाएं. (१६)

येना देवा असुरान् प्राणुदन्त येनेन्द्रो दस्यूनधमं तमो निनाय.
तेन त्वं काम मम ये सपत्नास्तानस्माल्लोकात् प्र णुदस्व दूरम् (१७)

हे कामदेव! जिस शक्ति के द्वारा इंद्र ने दैत्यों को मृत्यु रूपी भयानक अंधकार में धकेल दिया था और देवों ने जिस शक्ति के द्वारा असुरों को भगा दिया था, तुम उसी शक्ति के द्वारा मेरे शत्रुओं को इस लोक से दूर भगा दो. (१७)

यथा देवा असुरान् प्राणुदन्त यथेन्द्रो दस्यूनधमं तमो बबाधे.
तथा त्वं काम मम ये सपत्नास्तानस्माल्लोकात् प्र णुदस्व दूरम् (१८)

हे कामदेव! देवों ने जिस प्रकार असुरों को भगाया था तथा इंद्र ने दैत्यों को घोर अंधकार में धकेल कर संताप दिया था, उसी प्रकार तुम मेरे शत्रुओं को इस लोक से दूर भगा दो. (१८)

कामो जज्ञे प्रथमो नैनं देवा आपुः पितरो न मर्त्याः.
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत् कृणोमि (१९)

कामदेव सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ. देव, पितर और मनुष्य कोई भी उस की समानता नहीं कर सकता. इस कारण तुम सभी से ज्येष्ठ और समस्त विश्व में महान हो. मैं तुम्हारे लिए नमस्कार करता हूं. (१९)

यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावदापः सिष्यदुर्यावदग्निः.
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम्र इत् कृणोमि (२०)

हे कामदेव! द्यावा, पृथ्वी का जितना विस्तार है, जल और अग्नि जितने विस्तृत हैं, तुम उन से कहीं अधिक विस्तृत हो, इसीलिए तुम सभी से ज्येष्ठ हो और समस्त विश्व में व्याप्त हो. मैं तुम्हारे लिए नमस्कार करता हूं. (२०)

यावतीर्दिशः प्रदिशो विषूचीर्यावतीराशा अभिचक्षणा दिवः.
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत् कृणोमि (२१)

हे कामदेव! दिशाएं और प्रदिशाएं जितनी विस्तृत हैं और स्वर्ग की जितनी दिशाएं बताई गई हैं, तुम उन सभी से ज्येष्ठ हो और समस्त विश्व में व्याप्त हो. मैं

तुम को नमस्कार करता हूं. (२१)

यावतीर्भृङ्गा जत्वः कुरूरवो यावतीर्वघा वृक्षसर्प्यो बभूवुः.
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत् कृणोमि (२२)

हे कामदेव! भृंग, जतु, कर, वृक्ष एवं सर्प जितने विशाल हैं, तुम उन सभी से महान हो. तुम सभी में व्यस्त हो. मैं तुम को नमस्कार करता हूं. (२२)

ज्यायान् निमिषतोऽसि तिष्ठतो ज्यायान्त्समुद्रादसि काम मन्यो.
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत् कृणोमि (२३)

हे कामदेव! हे मन्यु! पलक झपकाने वाले एवं स्थित रहने वाले प्राणियों तथा समुद्र से भी तुम महान हो. तुम सारे विश्व में व्याप्त हो. मैं तुम को नमस्कार करता हूं. (२३)

न वै वातश्चन काममाप्नोति नाग्निः सूर्यो नोत चन्द्रमाः.
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इत् कृणोमि (२४)

अग्नि, सूर्य, चंद्रमा और वायु कामदेव की समानता नहीं कर पाते. इस कारण हे कामदेव! तुम सब से ज्येष्ठ एवं समस्त विश्व में व्याप्त हो. मैं तुम को नमस्कार करता हूं. (२४)

यास्ते शिवास्तन्वः काम भद्रा याभिः सत्यं भवति यद् वृणीषे.
ताभिष्ट्वमस्मां अभिसंविशस्वान्यत्र पापीरप वेशया धियः (२५)

हे कामदेव! तुम्हारे जो कल्याणकारी एवं भद्र शरीर हैं, उन के द्वारा तुम जिन का वरण करते हो, वही सत्य है. उन्हीं के द्वारा तुम हमारे शरीरों में प्रवेश करो. तुम अपनी पापबुद्धियों को हम से दूर रखो तथा उन्हें शत्रुओं में प्रविष्ट करो. (२५)

सूक्त तीसरा — देवता—शाला

उपमितां प्रतिमितामथो परिमितामुत.
शालाया विश्ववाराया नद्धानि वि चृतामसि (१)

उपमिता, प्रतिमिता और परिमिता जो शालाएं हैं, उन में से किसी भी शाला को खोलते हुए हम सब के लिए वरण करने योग्य शाला के द्वार खोलते हैं. (१)

यत् ते नद्धं विश्ववारे पाशोग्रन्थिश्च यः कृतः.
बृहस्पतिरिवाहं बलं वाचा वि स्रंसयामि तत् (२)

हे वरण करने योग्य शाला! तुझ में जो बंधन है, जो पाश है और जो गांठें हैं, उन्हें बृहस्पति के समान शक्तिशाली मैं अपने मंत्र बल से खोलता हूं. (२)

आ ययाम सं बबर्ह ग्रन्थींश्चकार ते दृढान्.

परूंषि विद्वाञ्छस्तेवेन्द्रेण वि चृतामसि (३)

हे शाला! बनाने वाले ने तुम्हें बहुत लंबा बनाया है. उस ने तुझ में मजबूत गांठें लगाई हैं. उन कठोर गांठों को जानता हुआ मैं इंद्र की शक्ति से उन्हें खोलता हूं. (३)

वंशानां ते नहनानां प्राणाहस्य तृणस्य च.
पक्षाणां विश्ववारे ते नद्धानि वि चृतामसि (४)

हे सब के द्वारा वरण करने योग्य शाला! तेरे बांसों के बंधनों की, लकड़ियों की, तिनकों की तथा वृक्षों की जो गांठें हैं, मैं उन्हें खोलता हूं. (४)

संदंशानां पलदानां परिष्वञ्जल्यस्य च.
इदं मानस्य पत्न्या नद्धानि वि चृतामसि (५)

मैं मान की पत्नी अर्थात शाला के द्वारा बांधे गए संदेशों के, पलदों के, परिष्यंद के तथा तृणों के बंधनों को खोलता हूं. (५)

यानि तेऽन्तः शिक्यान्याबेधू रण्याय कम्.
प्र ते तानि चृतामसि शिवा मानस्य पत्नी न उद्धिता तन्वे भव (६)

हे कल्याण करने वाली मान की पत्नी! तुझ में भीतर जो छींके बांधे गए हैं तथा मचान बनाए गए हैं, हम उन्हें खोलते हैं. तुम हमें स्वर्गलोक में सुख दो तथा हम पर क्रोधित न होओ. (६)

हविर्धानमग्निशालं पत्नीनां सदनं सदः. सदो देवानामसि देवि शाले (७)

हे शाला! तुम में हव्य प्राप्त अग्नि, कुंड, देवों के बैठने योग्य आसन तथा पत्नियों सहित यजमानों के बैठने योग्य स्थान है. (७)

अक्षुमोपशं विततं सहस्राक्षं विषूवति.
अवनद्धमभिहितं ब्रह्मणा वि चृतामसि (८)

हे दिव्यता संपन्न शाला! शयन कक्ष में विस्तृत झरोखा है. इस प्रकार के शयन कक्ष को मैं मंत्रों की शक्ति से खोलता हूं. (८)

यस्त्वा शाले प्रतिगृह्णाति येन चासि मिता त्वम्.
उभौ मानस्य पत्नि तौ जीवतां जरदष्टी (९)

हे शाला! जो तुझे ग्रहण करता है तथा जिस ने नाप कर तेरा निर्माण किया है. हे मान की पत्नी! ये दोनों शरीर के शिथिल हो जाने तक जीवित रहें. (९)

अमुत्रैनमा गच्छताद् दृढा नद्धा परिष्कृता.
यस्यास्ते विचृतामस्यङ्गमङ्गं परुष्परुः (१०)

हे शाला! हम तेरे दृढ़ता पूर्वक बंधे हुए अंगों को अलग कर रहे हैं. जिस ने तेरा

निर्माण किया है, उसे तू स्वर्ग प्रदान कर. (१०)

यस्त्वा शाले निमिमाय संजभार वनस्पतीन्.
प्रजायै चक्रे त्वा शाले परमेष्ठी प्रजापतिः (११)

हे शाला, जिस ने तेरा निर्माण किया है और तेरा निर्माण करने के लिए जो वृक्षों की लकड़ी लाया है, प्रजापति ने प्रजा के निमित्त तेरा निर्माण किया है. (११)

नमस्तस्मै नमो दात्रे शालापतये च कृण्मः.
नमोऽग्नये प्रचरते पुरुषाय च ते नमः (१२)

हे कृष्ण! शलाका दान करने वाले को, शाला के स्वामी को, अग्नि के लिए, घूमनेफिरने वाले पुरुष के लिए तथा तुझे भी नमस्कार है. (१२)

गोभ्यो अश्वेभ्यो नमो यच्छालायां विजायते.
विजावति प्रजावति वि ते पाशांश्चृतामसि (१३)

शाला में जन्म लेने वाली गायों और घोड़ों को नमस्कार है. हे विजावती और प्रजावती! हम तेरे बंधनों को खोलते हैं. (१३)

अग्निमन्तश्छादयसि पुरुषान् पशुभिः सह.
विजावति प्रजावति वि ते पाशांश्चृतामसि (१४)

हे विजावती और प्रजावती! तुम अग्नि को, पुरुषों को और पशुओं को अपने में छिपा लेती हो. हम तुम्हारे फंदों को खोलते हैं. (१४)

अन्तरा द्यां च पृथिवीं च यद् व्यचस्तेन शालां प्रति गृह्णामि त इमाम्.
यदन्तरिक्षं रजसो विमानं तत् कृण्वेऽहमुदरं शेवधिभ्यः
तेन शालां प्रति गृह्णामि तस्मै (१५)

द्यौ और पृथ्वी के मध्य जो विस्तृत आकाश हैं, उस के द्वारा हम तेरी इस शाला को ग्रहण करते हैं. अंतरिक्ष और पृथ्वी की जो रचना शक्ति है, वह तेरे उदर में स्थित है. (१५)

ऊर्जस्वती पयस्वती पृथिव्यां निमिता मिता.
विश्वान्नं बिभ्रती शाले मा हिंसीः प्रतिगृह्णतः (१६)

हे शाला! तू शक्तिशालिनी एवं दुग्ध से पूर्ण है. तुझे पृथ्वी पर नापतोल कर बनाया गया है. तू सभी प्रकार का अन्न धारण करती है. जो तुझे ग्रहण करते हैं, तू उन का विनाश मत कर. (१६)

तृणैरावृता पलदान् वसाना रात्रीव शाला जगतो निवेशनी.
मिता पृथिव्यां तिष्ठसि हस्तिनीव पद्वती (१७)

घासफूंस से ढकी हुई अर्थात चटाइयों को धारण करती हुई शाला जगत के

प्राणियों को रात्रि के समान विश्राम देने वाली है. हे शाला! तू हथिनी के पैरों के चिह्नों के समान पृथ्वी पर स्थित है. (१७)

इटस्य ते वि चृताम्यपिनद्धमपोर्णुवन्. वरुणेन समुब्जितां मित्रः प्रातर्व्युब्जतु (१८)

हे शाला! मैं व्यतीत हुए संवत्सर के समान तेरे बंधनों को खोल कर अलग करता हूं. तुझे वरुण ने खोला है, आदित्य तेरा उद्घाटन करते हैं. (१८)

ब्रह्मणा शालां निमितां कविभिर्निमितां मिताम्.
इन्द्राग्नी रक्षतां शालाममृतौ सोम्यं सदः (१९)

ब्रह्म ने इस शाला का निर्माण किया है और विद्वानों ने इस निर्माण की नापतोल में सहायता की है. सोमरस पीने के स्थान पर बैठे हुए इंद्र और अग्निदेव इस शाला की रक्षा करें. (१९)

कुलायेऽधि कुलायं कोशे कोशः समुब्जितः.
तत्र मर्तो वि जायते यस्माद् विश्वं प्रजायते (२०)

इस शाला रूपी घोंसले के भीतर शरीर रूपी घोंसला है. कोश में कोश सुसज्जित हैं. तात्पर्य यह है कि यह शाला कोश के समान है और इस में रहने वाला शरीर भी कोश के समान है. मरणधर्मा मनुष्य इसी में जन्म लेता है. सारे संसार की उत्पत्ति इसी प्रकार होती है. (२०)

या द्विपक्षा चतुष्पक्षा षट्पक्षा या निमीयते.
अष्टापक्षां दशपक्षां शालां मानस्य पत्नीमग्निर्गर्भ इवा शये (२१)

जो शाला दो कक्षों, चार कक्षों, छः कक्षों, आठ कक्षों और दस कक्षों वाली बनाई जाती है, मैं उस शाला में इस प्रकार सोता हूं, जिस प्रकार गर्भ में जठराग्नि विद्यमान रहती है. (२१)

प्रतीचीं त्वा प्रतीचीनः शाले प्रैम्यहिंसतीम्.
अग्निर्ह्य१न्तरापश्चर्तस्य प्रथमा द्वाः (२२)

हे शाला! मैं हिंसा रहित हो कर तुझ में प्रवेश करता हूं. तेरा मुख यदि पश्चिम की ओर है तो मैं पूर्वाभिमुख हो कर तुझ में प्रवेश करता हूं. ब्रह्म से उत्पन्न होने वाले अग्नि और जल भी मेरे साथ तुझ में प्रवेश करते हैं. (२२)

इमा आपः प्र भराम्ययक्ष्मा यक्ष्मनाशनीः.
गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन सहाग्निना (२३)

यक्ष्मा रोग से रहित मैं यक्ष्मा रोग का विनाश करने वाले जलों को भरता हूं तथा अमृतमय अग्नि ले कर घरों में प्रवेश करता हूं. (२३)

मा नः पाशं प्रति मुचो गुरुर्भारो लघुर्भव.
वधूमिव त्वा शाले यत्र कामं भरामसि (२४)

हे शाला! अपने पाशों को हमारी ओर मत फेंक. गुरु भार वाली तू मेरे लिए कम भार वाली प्रतीत हो. हम वधू के समान तेरा शृंगार करते एवं तुझे सामग्री से भरते हैं. (२४)

प्राच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः (२५)

शाला की पूर्व दिशा को नमस्कार है. स्वाहा के योग्य इन महान देवों के लिए यह आहुति शुभ हो. (२५)

दक्षिणाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः (२६)

शाला की दक्षिण दिशा को नमस्कार है. स्वाहा के योग्य इन महान देवों के लिए यह आहुति शुभ हो. (२६)

प्रतीच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः (२७)

शाला की पश्चिम दिशा को नमस्कार है. स्वाहा के योग्य इन महान देवों के लिए यह आहुति शुभ हो. (२७)

उदीच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः (२८)

शाला की उत्तर दिशा को नमस्कार है. स्वाहा के योग्य इन महान देवों के लिए आहुति शुभ हो. (२८)

ध्रुवाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः (२९)

शाला की नीचे की दिशा को नमस्कार है. स्वाहा के योग्य इन महान देवों के लिए यह आहुति शुभ हो. (२९)

ऊर्ध्वाया दिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः (३०)

शाला की ऊपर की दिशा को नमस्कार है. स्वाहा के योग्य इन महान देवों के लिए यह आहुति शुभ हो. (३०)

दिशोदिशः शालाया नमो महिम्ने स्वाहा देवेभ्यः स्वाह्येभ्यः (३१)

शाला की प्रत्येक दिशा को नमस्कार है. स्वाहा के योग्य इन महान देवों के लिए यह आहुति शुभ हो. (३१)

सूक्त चौथा — देवता—ऋषभ

साहस्रस्त्वेष ऋषभः पयस्वान् विश्वा रूपाणि वक्षणासु बिभ्रत्.
भद्रं दात्रे यजमानाय शिक्षन् बार्हस्पत्य उस्रियस्तन्तुमातान् (१)

यह शक्तिशाली वृषभ अर्थात बैल हजारों गायों को गर्भिणी बनाने में समर्थ है. यह अपनी वीर्यवाहिनी नाड़ियों में अनेक रूप धारण करता है. बृहस्पति संबंधी मंत्रों से युक्त यह बैल गायों के योग्य है. यह दान देने वाले यजमान का मंगल करता हुआ अपनी संतान की वृद्धि करे. (१)

अपां यो अग्रे प्रतिमा बभूव प्रभूः सर्वस्मै पृथिवीव देवी.
पिता वत्सानां पतिरघ्न्यानां साहस्रे पोषे अपि नः कृणोतु (२)

जो बैल जलों के समान एवं प्रतिमा के समान खड़ा हुआ, जो पृथ्वी के समान सब का स्वामी है, जो बछड़ों का पिता तथा हिंसा न करने योग्य गायों का पति है, वह हमें हजारों प्रकार से संपन्न बनाए. (२)

पुमानन्तर्वान्स्थविरः पयस्वान् वसोः कबन्धमृषभो बिभर्ति.
तमिन्द्राय पथिभिर्देवयानैर्हुतमग्निर्वहतु जातवेदाः (३)

वसु के कबंध को धारण करने वाला यह बैल पुमान अर्थात नर, आंतरिक शक्ति वाला एवं वीर्ययुक्त है. जन्म लेने वालों को जानने वाले अग्नि देव देवों के मार्ग से हमें इंद्र तक पहुंचाएं. (३)

पिता वत्सानां पतिरघ्न्यानामथो पिता महतां गर्गराणाम्.
वत्सो जरायु प्रतिधुक् पीयूष आमिक्षा घृतं तद् वस्य रेतः (४)

बैल बछड़ों का पिता एवं हिंसा के अयोग्य गायों का पति होने के साथ ही गरजने वाले मेघों का पालनकर्ता भी है. इस बैल का वीर्य, बछड़ा, जरायु (जेर) प्रतिधुक, अमृत, आमिक्षा एवं घृत के समान है. (४)

देवानां भाग उपनाह एषो३पां रस ओषधीनां घृतस्य.
सोमस्य भक्षमवृणीत शक्रो बृहन्नद्रिरभवद् यच्छरीरम् (५)

यह जड़ीबूटियों का रस जलों एवं घृत का भाग है. उपनय देवों का भाग है. इंद्र ने सोम के भक्षण के लिए अर्थात सोमरस पीने के लिए पर्वत के समान विशाल शरीर धारण किया था. (५)

सोमेन पूर्णं कलशं बिभर्षि त्वष्टा रूपाणां जनिता पशूनाम्.
शिवास्ते सन्तु प्रजन्व इह या इमा न्य१स्मभ्यं स्वधिते यच्छ या अमूः (६)

हे स्वधिति! तुम सोमरस से भरा हुआ कलश धारण करती हो. त्वष्टा पशुओं को आकार देने वाले हैं. जन्म लेने वाले तुम्हारे लिए मंगलकारी हों. तुम अपनी इन संतानों को हमें प्रदान करो. (६)

आज्यं बिभर्ति घृतमस्य रेतः साहस्रः पोषस्तमु यज्ञमाहुः.
इन्द्रस्य रूपमृषभो वसानः सो अस्मान् देवाः शिव ऐतु दत्तः (७)

यह बैल आज्य अर्थात यज्ञ के कारण रूप दूध आदि को धारण करता है. घृत इस का वीर्य है. यह जिन सहस्त्रों पुष्टियों को प्रदान करता है, उन्हीं को यज्ञ कहा जाता है. हे देवो! इंद्र का रूप धारण करता हुआ एवं यजमान के द्वारा दिया हुआ यह बैल हमारे लिए शुभ हो. (७)

इन्द्रस्यौजो वरुणस्य बाहू अश्विनोरंसौ मरुतामियं ककुत्.
बृहस्पतिं संभृतमेतमाहुर्ये धीरासः कवयो ये मनीषिणः (८)

जो धीर, मनीषी एवं विद्वान पुरुष हैं, वे बताते हैं कि इस बैल का ओज अर्थात बल इंद्र का भाग है, इस के बाहु अर्थात पैर वरुण के भाग हैं, इस का कंधा अश्विनीकुमारों का भाग है और इस की ठाट मरुतों का भाग है. इस का संभृत बृहस्पति का भाग है. (८)

दैवीर्विशः पयस्वाना तनोषि त्वामिन्द्रं त्वां सरस्वन्तमाहुः.
सहस्रं स एकमुखा ददाति यो ब्राह्मण ऋषभमाजुहोति (९)

हे बैल! तू अपने दूध आदि से देवों का विस्तार करता है. तुझे इंद्र एवं सारस्वत कहा गया है. जो ब्राह्मण मंत्रों द्वारा संपन्न होने वाले यज्ञ में बैल का दान करता है, वह एक मुख वाली हजारों गायों के दान का पुण्य प्राप्त करता है. (९)

बृहस्पतिः सविता ते वयो दधौ त्वष्टुर्वायोः पर्यात्मा त आभृतः.
अन्तरिक्षे मनसा त्वा जुहोमि बर्हिष्टे द्यावापृथिवी उभे स्ताम् (१०)

बृहस्पति एवं सविता ने तेरी आयु को धारण किया है. त्वष्टा एवं वायु ने तेरे संपूर्ण शरीर में आत्मा को धारण किया है. मैं मन से अंतरिक्ष में तेरी आहुति देता हूं. धरती तथा आकाश दोनों तेरे बर्हि अर्थात कुश हों. (१०)

य इन्द्र इव देवेषु गोष्वेति विवावदत्.
तस्य ऋषभस्याङ्गानि ब्रह्मा सं स्तौतु भद्रया (११)

जिस प्रकार इंद्र देवों के मध्य में आते हैं, उसी प्रकार यह बैल गर्जन करता हुआ गायों के मध्य जाता है. ब्रह्मा जी अपनी मंत्रमयी कल्याणी वाणी से इस बैल के अंगों की स्तुति करें. (११)

पार्श्वे आस्तामनुमत्या भगस्यास्तामनूवृजौ.
अष्ठीवन्तावब्रवीन्मित्रो ममैतौ केवलाविति (१२)

इस बैल के पार्श्व अर्थात दोनों ओर के भाग अनुमति के हैं तथा इस के अनुवृज अर्थात पीछे चलने वाले भाग अग्निदेव के हैं. मित्र देव ने कहा था कि बैल के केवल टखने मेरे भाग हैं. (१२)

भसदासीदादित्यानां श्रोणी आस्तां बृहस्पतेः.

पुच्छं वातस्य देवस्य तेन धूनोत्योषधीः (१३)

बैल की कमर आदित्यों की, पीठ बृहस्पति की तथा पूंछ वायु देव की है. उसी से यह जड़ीबूटियों को कंपित करता है. (१३)

गुदा आसन्त्सिनीवाल्याः सूर्यायास्त्वचमब्रुवन्.
उत्थातुरब्रुवन् पद ऋषभं यदकल्पयन् (१४)

बैल की गुदा सिनीवाली अर्थात अमावस्या का भाग है एवं त्वचा को सूर्य की पत्नी सूर्या का भाग कहा गया है. इस के पैर उत्थाता का भाग कहे गए हैं. इस प्रकार ऋषियों ने बैल की कल्पना की. (१४)

क्रोड आसीज्जामिशंसस्य सोमस्य कलशो धृतः.
देवाः संगत्य यत् सर्व ऋषभं व्यकल्पयन् (१५)

बैल की गुदा सिनीवाली का भाग थी तथा धारण किया गया कलश सोम का भाग था. सभी देवों ने एकत्र हो कर इस प्रकार बैल की कल्पना की थी. (१५)

ते कुष्ठिकाः सरमायै कूर्मेभ्यो अदधुः शफान्.
ऊबध्यमस्य कीटेभ्यः श्ववर्तेभ्यो अधारयन् (१६)

उन बैलों ने सरमा के लिए कुष्ठिकाओं को तथा कर्मों के लिए खुरों को धारण किया. उन्होंने बैल के ऊपर के भाग को खानों और कीड़ों के लिए धारण किया. (१६)

शृङ्गाभ्यां रक्ष ऋषत्यवर्तिं हन्ति चक्षुषा.
शृणोति भद्रं कर्णाभ्यां गवां यः पतिरघ्न्यः (१७)

जो बैल हिंसा न करने योग्य गायों का पति है, वह अपने सींगों से राक्षसों को तथा नेत्रों से दरिद्रता को दूर भगाता है. वह अपने कानों से कल्याणकारी बातें सुनता है. (१७)

शतयाजं स यजते नैनं दुन्वन्त्यग्नयः.
जिन्वन्ति विश्वे तं देवा यो ब्राह्मण ऋषभमाजुहोति (१८)

जो ब्राह्मण बैल का दान करता है, वह शतयाज नामक यज्ञ करने का पुण्य प्राप्त करता है. उसे अग्नि देव संताप नहीं देते और सभी देव उसे संतुष्ट करते हैं. (१८)

ब्राह्मणेभ्य ऋषभं दत्त्वा वरीयः कृणुते मनः.
पुष्टिं सो अघ्न्यानां स्वे गोष्ठेऽव पश्यते (१९)

जो व्यक्ति ब्राह्मणों को बैल का दान कर के अपने मन को उदार बनाता है, वह अपनी गोशाला में गायों की समृद्धि देखता है. (१९)

गाव: सन्तु प्रजा: सन्त्वथो अस्तु तनूबलम्.
तत् सर्वमनु मन्यन्तां देवा ऋषभदायिने (२०)

गाएं हों, संतानें हों तथा शरीर में शक्ति हो. बैल का दान करने वाले के लिए देवगण यह सब प्रदान करें. (२०)

अयं पिपान इन्द्र इद् रयिं दधातु चेतनीम्.
अयं धेनुं सुदुघां नित्यवत्सां वशं दुहां विपश्चितं परो दिव: (२१)

हवि प्राप्त करने वाले इंद्र यजमान को ज्ञान रूपी धन के अतिरिक्त सरलता से दुही जाने वाली एवं सदा बछड़ों को जन्म देने वाली गाय तथा स्वर्ग प्रदान करें. (२१)

पिशङ्गरूपो नभसो वयोधा ऐन्द्र: शुष्मी विश्वरूपो न आगन्.
आयुरस्मभ्यं दधत् प्रजां च रायश्च पोषैरभि न: सचताम् (२२)

पीले रंग वाला, आकाश के अन्न को धारण करने वाला एवं अनेक रूपों वाला इंद्र संबंधी बैल हमें प्राप्त हुआ. वह हमें आयु, संतान एवं धन देता हुआ सभी प्रकार से पुष्ट करे. (२२)

उपेहोपपर्चनास्मिन् गोष्ठ उप पृञ्च न:. उप ऋषभस्य यद् रेत उपेन्द्र तव वीर्यम्.

हे उपपृंच! यहां आओ तथा गोशाला में हम से मिलो. हे इंद्र! इस वृषभ का वीर्य ही तुम्हारा वीर्य है. (२३)

एतं वो युवानं प्रति दध्मो अत्र तेन क्रीडन्तीश्चरत वशां अनु.
मा नो हासिष्ट जनुषा सुभागा रायश्च पोषैरभि न: सचध्वम् (२४)

हे गायो! यह युवा बैल तुम्हारे लिए है. इस गोशाला में इस के साथ क्रीडा करती हुई तुम विचरण करो. तुम हमारा त्याग मत करो तथा हमें सुंदर धनों से पुष्ट बनाओ. (२४)

सूक्त पांचवां — देवता—अजन्मा

आ नयैतमा रभस्व सुकृतां लोकमपि गच्छतु प्रजानन्.
तीर्त्वा तमांसि बहुधा महान्त्यजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् (१)

इस अज को लाओ और यज्ञ कर्म आरंभ करो. जानता हुआ यह पुण्यात्माओं के लोक को भी जाए. यह अनेक प्रकार के विशाल अंधकारों को पार कर के तीसरे स्वर्ग में पहुंचे. (१)

इन्द्राय भागं परि त्वा नयाम्यस्मिन् यज्ञे यजमानाय सूरिम्.
ये नो द्विषन्त्यनु तान् रभस्वानागसो यजमानस्य वीराः (२)

हे अज! मैं इस यज्ञ में तुझे इंद्र के भाग के लिए यजमान के समीप ले जा रहा हूं. जो हमारे शत्रु हैं, तू उन पर पैर रख और यजमान के पुत्र आदि को पाप रहित बना. (२)

प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं यच्चचार शुद्धैः शफैरा क्रमतां प्रजानन्.
तीर्त्वा तमांसि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमा क्रमतां तृतीयम् (३)

हे पाप कर्म करने वाले अज! तू अपने पैरों को पवित्र कर एवं जानता हुआ अपने खुरों से स्वर्ग में आरोहण कर. यह अज अनेक प्रकार के अंधकारों को पार करता हुआ तृतीय स्वर्ग में पहुंचे. (३)

अनु च्छ्य श्यामेन त्वचमेतां विशस्तर्यथापर्व१ सिना माभि मंस्थाः.
माभि द्रुहः परुशः कल्पयैनं तृतीये नाके अधि वि श्रयैनम् (४)

हे विशस्त! अर्थात विशेष शासक काले लोहे के शस्त्र के द्वारा इस को शुद्ध करो. इस के जोड़ों को कष्ट न हो. इस के प्रत्येक जोड़ की कल्पना करते हुए इसे तीसरे स्वर्ग में पहुंचाओ. (४) .

ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ श्रयाम्या सिञ्चोदकमव धेह्येनम्.
पर्याधत्ताग्निना शमितारः शृतो गच्छतु सुकृतां यत्र लोकः (५)

मैं ऋग्वेद के मंत्रों के द्वारा कुंभी को अग्नि पर रखता हूं. तू जल छिड़क कर इसे अग्नि पर रख. हे शमिता जनो! यह शुद्ध अर्थात परिपक्व हो कर पुण्यवानों के लोक को जाए. (५)

उत्क्रामातः परि चेदतप्तस्तप्ताच्चरोरधि नाकं तृतीयम्.
अग्नेरग्निरधि सं बभूविथ ज्योतिष्मन्तमभि लोकं जयैतम् (६)

हे अज! तू इस तपे हुए अर्थात परिपक्व चरु के द्वारा स्वर्ग में जाने के लिए ऊपर चढ़. तू अग्नि के द्वारा अग्नि रूप हो गया है एवं प्रकाश वाले लोकों को प्राप्त कर. (६)

अजो अग्निरजमु ज्योतिराहुरजं जीवता ब्रह्मणे देयमाहुः.
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिंल्लोके श्रद्दधानेन दत्तः (७)

मनीषियों ने ऐसा कहा है कि अज ही अग्नि है और अज ही ज्योति है. जीवित पुरुष के द्वारा अज को ब्रह्म के लिए देने योग्य कहा गया है. श्रद्धालु पुरुष द्वारा इस लोक में दान किया हुआ अज दूरवर्ती लोकों में अंधकार का विनाश करता है. (७)

पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमतामाक्रंस्यमानस्त्रीणि ज्योतींषि.

ईजानानां सुकृतां प्रेहि मध्यं तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व (८)

पंचौदन अर्थात पांच प्रकार के भातों के पांच क्रम दिए जाएं. वह आक्रमण करता हुआ सूर्य, चंद्र, अग्नि—इन तीनों ज्योतियों में आरूढ़ हो. तू यज्ञ करने वाले पुण्यात्माओं के मध्य में जा कर तीसरे स्वर्ग को प्राप्त हो. (८)

अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः शरभो न चत्तोऽति दुर्गाण्येषः.
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानः स दातारं तृप्त्या तर्पयाति (९)

हे अज! तू ऐसे पुण्यात्माओं के लोक में आरोहण कर, जहां शरभ अर्थात हिंसक बाघ नहीं जा सकता और जहां समस्त दुर्लभ पदार्थ उपलब्ध हैं. ब्रह्मा के निमित्त दिया जाने वाला पंचौदन दाता को तृप्ति प्रदान करता है. (९)

अजस्त्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे नाकस्य पृष्ठे ददिवांसं दधाति.
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघास्येका (१०)

यह अज देने वाले को तीसरे स्वर्ग में और तीन पृष्ठों वाले स्वर्ग में पहुंचाता है. ब्रह्मा के निमित्त दिया हुआ पंचौदन यजमान को इच्छानुसार दूध देने वाली एवं अनेक रूप वाली धेनु बन जाता है. (१०)

एतद् वो ज्योतिः पितरस्तृतीयं पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति.
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमस्मिंल्लोके श्रद्दधानेन दत्तः (११)

हे पितरो! जो ब्रह्मा के निमित्त तृतीय पंचौदन के रूप में अज का दान करता है, श्रद्धालु के द्वारा इस लोक में दिया हुआ यह अज दूरवर्ती लोक में विस्तृत अंधकार का विनाश करता है. (११)

ईजानानां सुकृतां लोकमीप्सन् पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति.
स व्याप्तिमभि लोकं जयैतं शिवोऽस्मभ्यं प्रतिगृहीतो अस्तु (१२)

यज्ञ करने वाले पुण्यात्माओं के लोक में जाने की इच्छा करने वाला जो यजमान ब्रह्मा के लिए अज का दान करता है, वह मंगलमय स्थान प्राप्त करता है एवं स्वर्ग को जीतता है. (१२)

अजो ह्य१ग्नेरजनिष्ट शोकाद् विप्रो विप्रस्य सहसो विपश्चित्.
इष्टं पूर्तमभिपूर्तं वषट्कृतं तद् देवा ऋतुशः कल्पयन्तु (१३)

यह ज्ञानी एवं विद्वान अज ब्राह्मण की अग्नि से प्रकट हुआ है. देवगण इस के कारण इष्ट, पूर्त एवं वषट कर्म की ऋतु के अनुसार कल्पना करें. (१३)

अमोतं वासो दद्याद्धिरण्यमपि दक्षिणाम्.
तथा लोकान्त्समाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः (१४)

जो स्वर्ण की दक्षिणा को वस्त्र में लपेट कर देता है, वह पुरुष दिव्य एवं

पार्थिव लोकों को प्राप्त करता है. (१४)

एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः सोम्या देवीर्घृतपृष्ठा मधुश्चुतः.
स्तभान पृथिवीमुत द्यां नाकस्य पृष्ठेऽधि सप्तरश्मौ (१५)

हे अज! ये घृत मिश्रित और मधु टपकाने वाली सोमरस की दिव्य धाराएं तुझे प्राप्त हों. तू सूर्य के ऊपर स्थित स्वर्ग में विराजमान हो कर पृथ्वी और द्यौ को स्तंभित कर. (१५)

अजो३स्यज स्वर्गोऽसि त्वया लोकमङ्गिरसः प्राजानन्.
तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञेषम् (१६)

हे अज! तू स्वर्ग है. तेरे द्वारा ही अंगिरावंशी ऋषियों ने स्वर्ग को जाना है. मैं ने भी तेरे द्वारा उस पुण्यशाली लोक का ज्ञान प्राप्त किया है. (१६)

येना सहस्रं वहसि येनाग्ने सर्ववेदसम्. तेनेमं यज्ञं नो वह स्वर्देवेषु गन्तवे (१७)

हे अग्नि! अपने जिस बालक के द्वारा तुम हजारों प्रकार के ऐश्वर्य को देवों तक ले जाते हो, स्वर्ग प्राप्ति के निमित्त हमारे इस यज्ञ को उसी बल के द्वारा देवताओं तक पहुंचाओ. (१७)

अजः पक्वः स्वर्गे लोके दधाति पञ्चौदनो निर्ऋतिं बाधमानः.
तेन लोकान्त्सूर्यवतो जयेम (१८)

पंचौदन के रूप में पका हुआ अज स्वर्ग लोक में स्थापित करता है और पाप की देवी निर्ऋति को बाधा पहुंचाता है. हम इस अज रूपी धन के द्वारा सूर्यवान लोकों पर विजय प्राप्त करें. (१८)

यं ब्राह्मणे निदधे यं च विक्षु या विप्रुष ओदनानामजस्य.
सर्वं तदग्ने सुकृतस्य लोके जानीतान्नः संगमने पथीनाम् (१९)

अज के ओदन की जिन बूंदों को ब्राह्मणों के मध्य एवं प्रजाओं में स्थापित करते हैं, हे अग्निदेव! वह सब हमें पुण्यात्माओं के लोक में एवं भागों के संगम में जानें. (१९)

अजो वा इदमग्रे व्यक्रमत तस्योर इयमभवद् द्यौः पृष्ठम्.
अन्तरिक्षं मध्यं दिशः पार्श्वे समुद्रौ कुक्षी (२०)

अज ने सब से पहले व्यतिक्रमण किया तो उस का पेट भूमि, पीठ द्यौ, अंतरिक्ष मध्य भाग, पसलियां दिशाएं और कोखें सागर हुईं. (२०)

सत्यं चर्तं च चक्षुषी विश्वं सत्यं श्रद्धा प्राणो विराट् शिरः.
एष वा अपरिमितो यज्ञो यदजः पञ्चौदनः (२१)

अज के नेत्र सत्य और ऋत हुए, प्राण श्रद्धा हुए एवं शीश विराट हुआ. इस

प्रकार वह अज वास्तव में विश्व हुआ. यह पंचौदन रूपी अज असीमित फल है. (२१)

अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोत्यपरिमितं लोकमव रुन्द्धे.
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (२२)

जो यजमान दक्षिणा से प्रकाशित अज को पंचौदन के रूप में देता है, वह यज्ञ के असीमित फल को प्राप्त करता है तथा अपरिमित लोकों का उद्घाटन करता है. (२२)

नास्यास्थीनि भिन्द्यान्न मज्ज्ञो निर्धयेत्.
सर्वमेनं समादायेदमिदं प्र वेशयेत् (२३)

न तो इस अज की हड्डियों को तोड़े और न इस की मज्जा अर्थात चर्बी को धोए. इसे पूर्ण रूप से ले कर यह कहे कि मैं इस में प्रवेश करता हूं. (२३)

इदमिदमेवास्य रूपं भवति तेनैनं सं गमयति.
इषं मह ऊर्जमस्मै दुहे योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (२४)

उस का रूप यही है. इसी से वह हम को फल प्राप्त कराता है. जो दक्षिणा से प्रकाशित अज का पंचौदन के रूप में दान करता है, वह अज दानकर्ता को अन्न के साथ बल प्रदान करता है. (२४)

पञ्च रुक्मा पञ्च नवानि वस्त्रा पञ्चास्मै धेनवः कामदुघा भवन्ति.
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (२५)

जो दक्षिणा से प्रकाशित होते हुए अज को पंचौदन के रूप में दान करता है, उस को पांच स्वर्ण मुद्राएं, पांच नवीन वस्त्र और इच्छानुसार दूध देने वाली पांच गाएं प्राप्त होती हैं. (२५)

पञ्च रुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति.
स्वर्गं लोकमश्नुते योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (२६)

जो दक्षिणा से प्रकाशित अज को पंचौदन के रूप में दान करता है, वह स्वर्ग लोक का भोग करता है. उसे चमकती हुई पांच स्वर्ण मुद्राएं तथा शरीर पर वस्त्र और कवच प्राप्त होते हैं. (२६)

या पूर्वं पतिं वित्त्वाथान्यं विन्दतेऽपरम्.
पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः (२७)

जो स्त्री पूर्व पति को वाग्दान के रूप में जान कर भी अन्य पुरुष को प्राप्त कर लेती है, वे दोनों पंचौदन के रूप में अज का दान करने से कभी अलग नहीं होते. (२७)

समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः.
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (२८)

जो दक्षिणा से प्रकाशित अज को पंचौदन के रूप में दान करता है, वह पुनर्विवाहिता के साथ समान लोकों में निवास करता है. (२८)

अनुपूर्ववत्सां धेनुमनड्वाहमुपबर्हणम्.
वासो हिरण्यं दत्त्वा ते यन्ति दिवमुत्तमाम् (२९)

जो स्वर्ण के तारों से कढ़े हुए वस्त्रों सहित उपबर्हण अर्थात गर्भाधान समर्थ बैल और प्रतिवर्ष बछड़ा देने वाली गाय का दान करते हैं, वे उत्तम स्वर्ग में जाते हैं. (२९)

आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम्.
जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये (३०)

मैं अपने आप को, पिता को, पुत्र को, पौत्र को, बाबा को, पत्नी तथा जन्म देने वाली माता को एवं समस्त प्रियजनों को बुलाता हूं. (३०)

यो वै नैदाघं नामर्तुं वेद. एष वै नैदाघो नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः.
निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना.
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (३१)

जो नैदाघ अर्थात ग्रीष्म नाम की ऋतु को जानता है, वह कहता है—''यह जो पंचौदन के रूप वाला अज है, वही नैदाघ नामक ऋतु है. जो दक्षिणा से प्रकाश युक्त अज को पंचौदन के रूप में दान करता है, वह अप्रिय शत्रुओं एवं बांधवों के ऐश्वर्य को छीन लेता है.'' (३१)

यो वै कुर्वन्तं नामर्तुं वेद. कुर्वतींकुर्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते.
एष वै कुर्वन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः. निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना.
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (३२)

जो कुर्वती नामक ऋतु को निश्चित रूप से जानता है, वह कुर्वती का ज्ञान करता हुआ भी अप्रिय शत्रुओं तथा बांधवों के ऐश्वर्य को छीन लेता है. यह जो कुर्वती नाम की ऋतु है, वह पंचौदन रूप अज ही है. यह जानने वाला व्यक्ति अपने अप्रिय शत्रुओं एवं बांधवों के ऐश्वर्य को अपनी शक्ति से जला डालता है तथा दक्षिणा से प्रकाशित होते हुए अज को पंचौदन के रूप में दान करता है. (३२)

यो वै संयन्तं नामर्तुं वेद. संयतींसंयतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते.
एष वै संयन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः. निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना.
योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (३३)

जो संयंती नामक ऋतु को निश्चित रूप से जानता है, वह समझता है कि यह पंचौदन रूप अज है, वही संयंती नाम की ऋतु है. जो दक्षिणा से प्रकाशित अज को पंचौदन के रूप में दान करता है, वह अपने अप्रिय वस्तुओं तथा बांधवों के ऐश्वर्य को अपने बल से जला देता है. (३३)

यो वै पिन्वन्तं नामर्तुं वेद. पिन्वतींपिन्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते.
एष वै पिन्वन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः. निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना.
यो३जं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (३४)

जो पिन्वंती नाम की ऋतु को जानता है, वह पिन्वंती को जानता हुआ ही अप्रिय शत्रुओं एवं बांधवों के ऐश्वर्य को ग्रहण करता है. यह जो पंचौदन रूप अज है, वही पिन्वंती नाम की ऋतु है. जो पुरुष दक्षिणा से प्रकाशित अज को पंचौदन के रूप में देता है, वह अपने अप्रिय शत्रुओं एवं बांधवों के ऐश्वर्य को अपनी शक्ति से जला देता है. (३४)

यो वा उद्यन्तं नामर्तुं वेद. उद्यतीमुद्यतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते.
एष वा उद्यन्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः. निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना.
यो३जं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (३५)

जो उद्यंती नाम की ऋतु को जानता है, वह अपने अप्रिय शत्रुओं और बांधवों की संपत्ति को ग्रहण करता है. वह समझता है कि यह पंचौदन रूप अज ही उद्यंती नाम की ऋतु है. जो दक्षिणा से प्रकाशित अज को पंचौदन के रूप में देता है, वह अपने अप्रिय शत्रुओं एवं बांधवों के ऐश्वर्य को अपने तेज से जला डालता है. (३५)

यो वा अभिभुवं नामर्तुं वेद. अभिभवन्तीमभिभवन्तीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते.
एष वा अभिभूर्नामर्तुर्यदजः पञ्चौदनः. निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना. यो३जं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति (३६)

जो अभिभवंती नाम की ऋतु को जानता है, वह अभिभवंती ऋतु को जानता हुआ ही अपने अप्रिय शत्रुओं एवं बांधवों के ऐश्वर्य को छीन लेता है. यह अभिभू नाम की ऋतु ही पंचौदन रूप अज है. जो दक्षिणा से प्रकाशित पंचौदन रूप अज का दान करता है, वह अपने अप्रिय शत्रुओं और बांधवों के ऐश्वर्य को अपने तेज से जला देता है. (३६)

अजं च पचत पञ्च चौदनान्.
सर्वा दिशः संमनसः सध्रीचीः सान्तर्देशाः प्रति गृह्णन्तु त एतम् (३७)

पंचौदन रूप अज को पकाओ. अंतर्दिशाओं के सहित दिशाएं एकमत हो कर

अंतर्देशों सहित उसे ग्रहण करे. (३७)

तास्ते रक्षन्तु तव तुभ्यमेतं ताभ्य आज्यं हविरिदं जुहोमि (३८)

वे सभी दिशाएं मेरे यज्ञ की रक्षा करें. उन के लिए मैं यह हवि देता हूं. (३८)

सूक्त छठा

देवता—अतिथि, विद्या

यो विद्याद् ब्रह्म प्रत्यक्षं परूंषि यस्य संभारा ऋचो यस्यानूक्यम् (१)

जो ब्रह्म को प्रत्यक्ष रूप में जानता है, उस की गांठें ही संभार हैं तथा ऋचाएं उस का अनूक्य हैं. (१)

सामानि यस्य लोमानि यजुर्हृदयमुच्यते परिस्तरणमिद्धविः (२)

सामवेद के मंत्र जिस के रोम हैं और परिस्तरण जिस का हवि है. (२)

यद् वा अतिथिपतिरतिथीन् प्रतिपश्यति देवयजनं प्रेक्षते (३)

अथवा जो अतिथियों का स्वामी और अतिथियों को देखता है, वह देव यज्ञ को ही देखता है. (३)

यदभिवदति दीक्षामुपैति यदुदकं याचत्यपः प्र णयति (४)

अतिथि से जो बोलता है, वही दीक्षा है. जल की याचना ही उस को लाना है. (४)

या एव यज्ञ आपः प्रणीयन्ते ता एव ताः (५)

जिन्हें यज्ञ में लाया जाता है, ये वे ही जल हैं. (५)

यत् तर्पणमाहरन्ति य एवाग्नीषोमीयः पशुर्बध्यते स एव सः (६)

जो तर्पण को लाते हैं, वही अग्नि सोमीय तर्पण है. जो यज्ञ में पशु का वध किया जाता है, वही वह है. (६)

यदावसथान् कल्पयन्ति सदोहविर्धानान्येव तत् कल्पयन्ति (७)

जो टखनों की कल्पना करता है, वही मानो हवि धान्य का निर्माण है. (७)

यदुपस्तृणन्ति बर्हिरेव तत् (८)

जिन्हें उपस्तरण कहते हैं, वे ही कुश हैं. (८)

यदुपरिशयनमाहरन्ति स्वर्गमेव तेन लोकमव रुन्द्धे (९)

जो उपरिशयन का आहरण करते हैं, उस से स्वर्ग लोक का उद्घाटन करते हैं. (९)

यत् कशिपूपबर्हणमाहरन्ति परिधय एव ते (१०)

जो कशिपु उपबर्हण को लाते हैं, वे ही यज्ञ की परिधियां हैं. (१०)

यदाञ्जनाभ्यञ्जनमाहरन्त्याज्यमेव तत् (११)

जो कशिपु उपबृंहण लाते हैं, वे ही आज्य हैं. (११)

यत् पुरा परिवेषात् खादमाहरन्ति पुरोडाशावेव तौ (१२)

जो सामने परोसने के लिए खाद्य पदार्थ लाते हैं, वे ही पुरोडाश हैं. (१२)

यदशनकृतं ह्वयन्ति हविष्कृतमेव तद्ध्वयन्ति (१३)

भोजन के हेतु जो आमंत्रित करते हैं, वही हवि स्वीकार करने के लिए आह्वान है. (१३)

ये व्रीहयो यवा निरुप्यन्तेंऽशव एव ते (१४)

जो धान और जौ निरूपित किए जाते हैं, वे ही सोम हैं. (१४)

यान्युलूखलमुसलानि ग्रावाण एव ते (१५)

जो उलूखल अर्थात ओखली और मूसल हैं, वे ही पत्थर है. (१५)

शूर्पं पवित्रं तुषा ऋजीषाभिषवणीरापः (१६)

सूप ही पवित्र छन्ना है, भूमि ऋजीषा है और अभिषवणी ही जल है. (१६)

स्रुग् दर्विर्नेक्षणमायवनं द्रोणकलशाः कुम्भ्यो वायव्यानि
पात्राणीयमेव कृष्णाजिनम् (१७)

स्रुवा ही दर्वी अर्थात करछुली हैं, शुद्ध करना ही आयवन है, द्रोण कलश ही घड़ा है, वायव्य पात्र ही कृष्णाजिन अर्थात काले मृग का चर्म है. (१७)

सूक्त सातवां — देवता—अतिथि, विद्या

यजमानब्राह्मणं वा एतदतिथिपतिः कुरुते
यदाहार्याणि प्रेक्षत इदं भूया३ इदा३मिति (१)

जो यजमान को अथवा ब्राह्मण को अतिथि पति अर्थात अतिथि का पालन करने वाला बनता है, वह आहार्य अर्थात यज्ञ संबंधी द्रव्य को देखता हुआ कहता है कि यह होना चाहिए. (१)

यदाह भूय उद्धरेति प्राणमेव तेन वर्षीयांसं कुरुते (२)

जो अतिथि से बारबार भोजन करने की बात कहता है, वह प्राण शक्ति की वृद्धि करता है. (२)

उप हरति हवींष्या सादयति (३)

जो अतिथि के लिए भोजन लाता है, वह हवि प्राप्त करता है. (३)

तेषामासन्नानामतिथिरात्मञ्जुहोति (४)

अतिथि उन परोसे हुए भोज्य पदार्थों का आत्मा में ही हवन करता है. (४)

स्रुवा हस्तेन प्राणे यूपे स्रुक्कारेण वषट्कारेण (५)

अतिथि का हाथ स्रुवा, उस के प्राण स्तूप अर्थात यज्ञीय पशु को बांधने का खंभा और खाते समय चटखारे लेना ही वषट शब्द है. (५)

एते वै प्रियाश्चाप्रियाश्चर्त्विजः स्वर्गं लोकं गमयन्ति यदतिथयः (६)

अतिथि ही वे प्रिय अथवा अप्रिय अतिथि हैं, जो यजमान को स्वर्ग लोक में भेजते हैं. (६)

स य एवं विद्वान् न द्विषन्नश्नीयान्न द्विषतोऽन्नमश्नीयान्न
मीमांसितस्य न मीमांसमानस्य (७)

जिस के विषय में विचार कर चुका हो, अतिथि उस का अन्न खाए, जिस के विषय में विचार चल रहा हो, उस का अन्न न खाए. (७)

सर्वो वा एष जग्धपाप्मा यस्यान्नं नाश्नन्ति (८)

अतिथि जिस का अन्न खाता है, उस के सभी पापों को भी खाता है. (८)

सर्वो वा एषो ऽजग्धपाप्मा यस्यान्नं नाश्नन्ति (९)

अतिथि जिस का अन्न नहीं खाता है उस के पापों को भी नहीं खाता है. (९)

सर्वदा वा एष युक्तग्रावार्द्रपवित्रो विततध्वर आहृतयज्ञक्रतुर्य उपहरति (१०)

जो यजमान अतिथियों को अन्न देता रहता है, वह ग्रावाओं अर्थात सोमलता कूटने वाले पत्थरों से गीले यज्ञ का कर्ता और उस यज्ञ को पूर्ण करने वाला होता है. (१०)

प्राजापत्यो वा एतस्य यज्ञो विततो य उपहरति (११)

अतिथि के निमित्त अन्न देना प्राजापत्य यज्ञ है. (११)

प्रजापतेर्वा एष विक्रमाननुविक्रमते य उपहरति (१२)

जो अतिथि के निमित्त भोजन लाता है, वह प्रजापति के समान ही पराक्रम करता है. (१२)

योऽतिथीनां स आहवनीयो यो वेश्मनि स गार्हपत्यो

यस्मिन् पचन्ति स दक्षिणाग्निः (१३)

अतिथियों को बुलाना आह्वनीय अग्नि है, अपने घर में उन्हें भोजन कराना गार्हपत्य अग्नि है और जिस पात्र में अतिथि के लिए भोजन पकाया जाता है, वह दीक्षाग्नि है. (१३)

सूक्त आठवां देवता—अतिथि, विद्या

इष्टं च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (१)

जो अतिथि से पहले भोजन कर लेता है, वह अपने में होने वाले इष्टापूर्त कर्मों का फल खा लेता है. संध्या आदि नित्य कर्म इष्ट और किसी प्रयोजन से किए जाने वाले यज्ञ आदि कर्म आपूर्त कहलाते हैं. (१)

पयश्च वा एष रसं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (२)

जो अतिथियों से पहले भोजन करता है, वह अपने घरों के दूध और रस को नष्ट करता है. (२)

ऊर्जां च वा एष स्फातिं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (३)

जो व्यक्ति अतिथि से पहले भोजन कर लेता है, वह अपने घरों के बल और समृद्धि का नाश करता है. (३)

प्रजां च वा एष पशूंश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (४)

जो अतिथि से पहले भोजन करता है, वह अपने घरों की संतान और पशुओं का भक्षण करता है. (४)

कीर्तिं च वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (५)

जो अतिथि से पूर्व भोजन करता है, वह अपने घरों की कीर्ति और यश को समाप्त करता है. (५)

श्रियं च वा एष संविदं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति (६)

जो अतिथि से पूर्व भोजन करता है, वह अपने घरों की श्री और सौमनस्य का विनाश करता है. (६)

एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात् पूर्वो नाश्नीयात् (७)

श्रोत्रिय ब्राह्मण ही वास्तव में अतिथि है. यजमान को चाहिए कि उस से पूर्व भोजन नहीं करे. (७)

अशितावत्यतिथावश्नीयाद् यज्ञस्य सात्मत्वाय यज्ञस्याविच्छेदाय तद् व्रतम् (८)

अतिथि के भोजन कर लेने पर ही यजमान भोजन करे. यज्ञ के निर्वाह एवं यज्ञ का विच्छेद न होने के लिए ही यह व्रत है. (८)

एतद् वा उ स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं वा मांसं वा तदेव नाश्नीयात् (९)

चाहे जितना स्वादिष्ट हो, पर यजमान को गाय का दूध और मांस नहीं खाना चाहिए. (९)

सूक्त नौवां देवता—अतिथि, विद्या

स य एवं विद्वान् क्षीरमुपसिच्योपहरति (१)

जो इस बात को जानता है, वह दूध का उपसेचन कर के अतिथि के लिए भोजन लाता है. (१)

यावदग्निष्टोमेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनाव रुन्द्धे (२)

यजमान अग्निष्टोम यज्ञ के द्वारा स्वर्ग में जितना समृद्धिपूर्ण स्थान पा सकता है, उतना ही अतिथि सेवा के द्वारा प्राप्त कर सकता है. (२)

स य एवं विद्वान्त्सर्पिरुपसिच्योपहरति (३)

इस का ज्ञाता घी का उपसेचन कर के अतिथि के लिए भोजन लाता है. (३)

यावदतिरात्रेणेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनाव रुन्द्धे (४)

अतिरात्र यज्ञ के द्वारा यजमान स्वर्ग में जितना समृद्धि पूर्ण पद प्राप्त कर सकता है, उतना ही अतिथि सेवा के द्वारा प्राप्त करता है. (४)

स य एवं विद्वान् मधूपसिच्योपहरति (५)

जो इस बात को जानता है, वह मधुर शहद का उपसेचन कर के अतिथि के लिए भोजन लाता है. (५)

यावत् सत्रसद्येनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनाव रुन्द्धे (६)

यजमान सत्र यज्ञ कर के स्वर्ग में जो समृद्धि पूर्ण स्थान प्राप्त करता है, उसे अतिथि की सेवा के द्वारा पाया जा सकता है. (६)

स य एवं विद्वान् मांसमुपसिच्योपहरति (७)

जो इस बात को जानता है, वह मांस का उपसेचन कर के अतिथि के लिए भोजन लाता है. (७)

यावद् द्वादशाहेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनाव रुन्द्धे (८)

यजमान बारह दिन तक चलने वाले यज्ञ के द्वारा स्वर्ग में जितना समृद्धि पूर्ण स्थान पाता है, वही अतिथि की सेवा के द्वारा पा सकता है. (८)

स य एवं विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति (९)

जो इस बात को जानता है, वह जल का उपसेचन कर के अतिथि के लिए भोजन लाता है. (९)

प्रजानां प्रजननाय गच्छति प्रतिष्ठां प्रियः प्रजानां भवति य एवं विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति (१०)

जो इस बात को जानता है और जल का उपसेचन कर के अतिथि के हेतु भोजन लाता है, वह संतान को जन्म देने की क्षमता प्राप्त करता है, प्रतिष्ठा पाता है और प्रजाओं का प्रिय बनता है. (१०)

सूक्त दसवां देवता—अतिथि, विद्या

तस्मा उषा हिङ्कृणोति सविता प्र स्तौति (१)

उषा उस के लिए हुंकार करती है और सूर्य उस की स्तुति करता है. (१)

बृहस्पतिरूर्जयोद् गायति त्वष्टा पुष्ट्या प्रति हरति विश्वे देवा निधनम् (२)

अन्न के रस से उत्पन्न ऊर्जा से बृहस्पति उदगायन करते हैं, त्वष्टा पुष्टि प्रदान करते हैं और विश्वेदेव पूर्णता प्रदान करते हैं. (२)

निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद (३)

जो इस बात को जानता है, वह सेवकों, संतानों और पशुओं के पालन की पूर्णता प्राप्त करता है. (३)

तस्मा उद्यन्त्सूर्यो हिङ्कृणोति संगवः प्र स्तौति (४)

उदय होते हुए सूर्य उस के लिए हुंकार करते हैं और किरणों वाले सूर्य उस की प्रशंसा करते हैं. (४)

मध्यन्दिन उद्गायत्यपराह्णः प्रति हरत्यस्तंयन् निधनम्.
निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद (५)

सूर्य माध्यंदिन अर्थात दोपहर के समय उस की प्रशंसा करते हैं और दोपहर के बाद उस की मृत्यु का विनाश करते हैं. जो इस बात को जानता है, वह समृद्धि की प्रजाओं और पशुओं को प्राप्त करता है. (५)

तस्मा अभ्रो भवन् हिङ्कृणोति स्तनयन् प्र स्तौति (६)

उत्पन्न होने वाला बादल उस के लिए हुंकार करता है और गर्जन करता हुआ

उस की प्रशंसा करता है. (६)

विद्योतमानः प्रति हरति वर्षन्नुद्गायत्युद्गृहणन् निधनम्.
निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद (७)

बादल दमकता हुआ उस का प्रतिहार करता है, बरसता हुआ उद्गान करता है तथा उद्ग्रहण करता हुआ उसे पूर्णता प्रदान करता है. जो इस प्रकार जानता है, वह प्रजाओं और पशुओं की संपन्नता प्राप्त करता है. (७)

अतिथीन् प्रति पश्यति हिङ्कृणोत्यभि वदति प्र स्तौत्युदकं याचत्युद् गायति (८)

वह अतिथियों को देखता है तो उन्हें बुलाता है, अभिवादन करता है, जल प्रस्तुत करता है और उन की प्रशंसा करता है. (८)

उप हरति प्रति हरत्युच्छिष्टं निधनम् (९)

वह अशेष पूर्णता का उपहार और प्रतिहार करता है. (९)

निधनं भूत्याः प्रजायाः पशूनां भवति य एवं वेद (१०)

जो इस प्रकार जानता है, वह प्रजा और पशुओं की समृद्धि की अंतिम अवस्था को प्राप्त करता है. (१०)

सूक्त ग्यारहवां — देवता—अतिथि, विद्या

यत् क्षत्तारं ह्वयत्या श्रावयत्येव तत् (१)

जो क्षत्ता अर्थात इच्छित कार्य करने वाले का आह्वान करता है, वह श्रुति को ही सुनाता है. (१)

यत् प्रतिशृणोति प्रत्याश्रावयत्येव तत् (२)

जो प्रतिज्ञा करता है, वही श्रुति को सुनाने का आग्रह करता है. (२)

यत् परिवेष्टारः पात्रहस्ताः पूर्वे चापरे च प्रपद्यन्ते चमसाध्वर्यव एव ते (३)

हाथों में पात्र लिए जो परोसने वाले आगेपीछे चलते हैं, वे ही यज्ञ के चमस और अध्वर्यु हैं. (३)

तेषां न कश्चनाहोता (४)

उन अतिथियों में कोई भी ऐसा नहीं है जो होता अर्थात हवन करने वाला न हो. (४)

यद् वा अतिथिपतिरतिथीन् परिविष्य गृहानुपोदैत्यवभृथमेव तदुपावैति (५)

जो अतिथि सत्कार कर्ता अतिथियों को भोजन परोस कर घरों में आता है, यज्ञ के पश्चात होने वाले अवभृथ स्नान का फल प्राप्त करता है. (५)

यत् सभागयति दक्षिणाः सभागयति यदनुतिष्ठत उदवस्यत्येव तत् (६)

जो यजमान भोज्य पदार्थों को अलगअलग करता हुआ तथा दक्षिणा देता हुआ अनुष्ठान करता है, वह उदवास करता है. (६)

स उपहूतः पृथिव्यां भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन् यत् पृथिव्यां विश्वरूपम् (७)

वह बुला कर पृथ्वी के समस्त प्राणियों को भोजन कराता है, उस अतिथि सत्कार में मानो विश्वरूप ही बुलाए जाते हैं. (७)

स उपहूतोऽन्तरिक्षे भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन् यदन्तरिक्षे विश्वरूपम् (८)

वह बुलाने पर स्वर्ग में भोजन करता है. अंतरिक्ष में जो विश्वरूप है, वह उस के यहां बुलाया जाता है. (८)

स उपहूतो दिवि भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन् यद् दिवि विश्वरूपम् (९)

वह बुलाए जाने पर स्वर्ग में भक्षण करता है. स्वर्ग में जो विश्वरूप है, उस में वह बुलाया जाता है. (९)

स उपहूतो देवेषु भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन् यद् देवेषु विश्वरूपम् (१०)

वह बुलाए जाने पर देवों के मध्य भोजन करता है. देवों में जो विश्वरूप है, उस में वह बुलाया जाता है. (१०)

स उपहूतो लोकेषु भक्षयत्युपहूतस्तस्मिन् यल्लोकेषु विश्वरूपम् (११)

वह बुलाया गया लोकों में भोजन करता है. लोकों में जो विश्वरूप है, उस में वह बुलाया जाता है. (११)

स उपहूत उपहूतः (१२)

वह इस लोक और परलोक दोनों में आदर से बुलाया जाता है. (१२)

आप्नोतीमं लोकमाप्नोत्यमुम् (१३)

वह इस लोक को और परलोक को प्राप्त करता है. (१३)

ज्योतिष्मतो लोकाञ्जयति य एवं वेद (१४)

जो इस बात को जानता है, वह ज्योतिर्मय लोकों को जीतता है. (१४)

सूक्त बारहवां

देवता—गौ

प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्रः शिरो अग्निर्ललाटं यमः कृकाटम् (१)

इस गाय के दोनों सींग प्रजापति और परमेष्ठी हैं. इंद्र ही इस का सिर, अग्नि ललाट और यम कृकाट अर्थात गले के नीचे लटकता हुआ भाग है. (१)

सोमो राजा मस्तिष्को द्यौरुत्तरहनुः पृथिव्यधरहनुः (२)

सोम राजा गाय का मस्तक है, द्यौ ऊपर की ठोड़ी और धरती ठोड़ी का ऊपर वाला भाग है. (२)

विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता रेवतीर्ग्रीवाः कृत्तिका स्कन्धा घर्मो वहः (३)

बिजली गाय की जीभ, मरुद्गण, दांत, रेवती नक्षत्र गरदन, कृत्तिका नक्षत्र कंधा और धर्म रक्त का प्रवाह है. (३)

विश्वं वायुः स्वर्गो लोकः कृष्णद्रं विधरणी निवेष्यः (४)

विश्व वायु, स्वर्ग लोक तथा कृष्णाद्रि विधरणी (धारक शक्ति) निवेष्य (पृष्ठ भाग) है. (४)

श्येनः क्रोडोऽन्तरिक्षं पाजस्यं१ बृहस्पतिः ककुद् बृहतीः कीकसाः (५)

श्येन गाय का क्रोड अर्थात कोख अथवा बगल, अंतरिक्ष पाजस्य (उदर), बृहस्पति ककुद, अर्थात ठाट तथा बृहती छंद हड्डियां हैं. (५)

देवानां पत्नीः पृष्टय उपसदः पर्शवः (६)

देवों की पत्नियां गाय की पसलियां हैं और उपसद उस की कोखें हैं. (६)

मित्रश्च वरुणश्चांसौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू (७)

मित्र और वरुण गाय के कंधे हैं, त्वष्टा तथा अर्यमा गाय की भुजाएं अर्थात अगले पैर हैं तथा महादेव बाहु हैं. (७)

इन्द्राणी भसद् वायुः पुच्छं पवमानो बालाः (८)

इंद्राणी गाय की कमर है. वायु पूंछ है और पवमान बाल हैं. (८)

ब्रह्म च क्षत्रं च श्रोणी बलमूरू (९)

ब्राह्मण और क्षत्रिय गाय के नितंब हैं तथा बल उस की जंघाएं हैं. (९)

धाता च सविता चाष्ठीवन्तौ जङ्घा गन्धर्वा अप्सरसः कुष्ठिका अदितिः शफाः (१०)

धाता और सविता गाय के होंठ, गंधर्व जंघाएं, अप्सराएं कोखें और अदिति शफ अर्थात खुर हैं. (१०)

चेतोहृदयं यकृन्मेधा व्रतं पुरीतत् (११)

चेत गाय का हृदय, यकृत अर्थात जिगर मेधा अर्थात बुद्धि है तथा व्रत पुरीतत (आंत) नाड़ी है. (११)

क्षुत् कुक्षिरिरा वनिष्ठुः पर्वताः प्लाशयः (१२)

पर्वत बैल की प्लाशि (छोटी आंत) है, इरा उस की बड़ी आंत है और भूख के अभिमानी देवता इस की कोख हैं. (१२)

क्रोधो वृक्को मन्युराण्डौ प्रजा शेपः (१३)

क्रोध इस के गुर्दे हैं, मन्यु इस के अंडकोष हैं और प्रजा इस का जननांग है. (१३)

नदी सूत्री वर्षस्य पतय स्तना स्तनयित्नुरूधः (१४)

नदी इस गाय का मूत्र, वर्ष के स्वामी इस के थन और मेघगर्जन इस का एन है. (१४)

विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम् (१५)

विश्वव्यचा इस का चर्म है, जड़ीबूटियां इस के लोम हैं तथा नक्षत्र इस का रूप है. (१५)

देवजना गुदा मनुष्या आन्त्राण्यत्रा उदरम् (१६)

देवजन इस की गुदा, मनुष्य आंतें तथा अन्न उदर है. (१६)

रक्षांसि लोहितमितरजना ऊबध्यम् (१७)

राक्षस इस के लोहित अर्थात रक्त और अन्य जन इस के ऊवध्य हैं. (१७)

अभ्रं पीबो मज्जा निधनम् (१८)

बादल इस का मोटापा है तथा निधन मज्जा अर्थात चर्बी है. (१८)

अग्निरासीन उत्थितोऽश्विना (१९)

अग्नि इस की बैठी हुई दशा और दोनों अश्विनीकुमार इस की उठी हुई दशा हैं. (१९)

इन्द्रः प्राङ् तिष्ठन् दक्षिणा तिष्ठन् यमः (२०)

इंद्र इस का पूर्व दिशा में तथा यम इस का दक्षिण दिशा में ठहरना है. (२०)

प्रत्यङ् तिष्ठन् धातोदङ् तिष्ठन्त्सविता (२१)

पूर्व दिशा में गाय का ठहरना इंद्र तथा दक्षिण दिशा में ठहरी हुई गाय यम है. (२१)

तृणानि प्राप्तः सोमो राजा (२२)

पश्चिम दिशा में ठहरी हुई गाय और उत्तर दिशा में ठहरी हुई गाय सविता है. (२२)

मित्र ईक्षमाण आवृत्त आनंदः (२३)

गाय को घास के तिनकों की प्राप्ति सोम राजा है. (२३)

युज्यमानो वैश्वदेवो युक्तः प्रजापतिर्विमुक्तः सर्वम् (२४)

गाय का देखना मित्र और लौटना आनंद है. (२४)

एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम् (२५)

विश्व का यह रूप ही गाय का रूप है . (२५)

उपैनं विश्वरूपाः सर्वरूपाः पशवस्तिष्ठन्ति य एवं वेद (२६)

जो इस बात को जानता है, वह सारे संसार के सभी रूपों वाले पशुओं का स्वामी बनता है. (२६)

सूक्त तेरहवां देवता—सर्व शीर्षामय दूरीकरण

शीर्षक्तिं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम्.
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे (१)

हम तेरे शीश के रोगों अर्थात शीर्षोक्ति, शीर्षामय और कर्ण शूल तथा विलोहित को तुझ से दूर करते हैं. (१)

कर्णाभ्यां ते कङ्कूषेभ्यः कर्णशूलं विसल्पकम्.
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे (२)

मैं तेरे कानों से तथा कानों के गड्ढों से कर्णशूल अर्थात कानों के दर्द को तथा विसल्यक (विशेष कष्ट देने वाले)को दूर करता हूं. इस प्रकार मैं तेरे शीश संबंधी सभी रोगों को दूर करता हूं. (२)

यस्य हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आस्यतः.
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे (३)

जिस सिर रोग के कारण यक्ष्मा रोग, कानों और मुख से प्रकाश में आता है, हम तेरे उस सिर रोग को पूर्णतया बाहर निकालते हैं. (३)

यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरुषम्.
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे (४)

जो रोग पुरुष को शक्तिहीन बनाता है और अंधा कर देता है, तेरे उन सभी

शीश संबंधी रोगों को मैं तुझ से बाहर निकालता हूं. (४)

अङ्गभेदमङ्गज्वरं विश्वाङ्ग्यं विसल्पकम्.
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे (५)

अंग भेद, अंग ज्वर, विश्वांग्य एवं विसल्यक—ये सभी शीश संबंधी रोग हैं. हम इन्हें पूर्ण रूप से तुझ से दूर करते हैं. (५)

यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पूरुषम्.
तक्मानं विश्वशारदं बहिर्निर्मन्त्रयामहे (६)

जिस का भयानक आवेश मनुष्य को कंपित कर देता है, शरद ऋतु में होने वाले उस ज्वर को हम तुझ से पूर्ण रूप से दूर करते हैं. (६)

य ऊरू अनुसर्पत्यथो एति गवीनिके.
यक्ष्मं ते अन्तरङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे (७)

जो गवीनिका नाम की नाड़ियों में तथा जंघाओं में घूमता है, उस यक्ष्मा रोग को हम तेरे अंतरंग अंगों से बाहर निकालते हैं. (७)

यदि कामादपकामाद्धृदयाज्जायते परि.
हृदो बलासमङ्गेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे (८)

हृदय की शक्ति कम करने वाला जो रोग काम के वश में होने अथवा न होने से उत्पन्न होता है, उस बलास (कफ) रोग को हम तेरे अंगों से बाहर निकालते हैं (८)

हरिमाणं ते अङ्गेभ्योऽप्वामन्तरोदरात्. यक्ष्मोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे (९)

हम तेरे अंगों से हरिमा (रक्तहीनता) रोग को, तेरे उदर से अप्वा (जलोदर) रोग को तथा तेरी अंतरात्मा से यक्ष्मा रोग को पूर्णतया बाहर निकालते हैं. (९)

आसो बलासो भवतु मूत्रं भवत्वामयत्.
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोत्तमहं त्वत् (१०)

बलास रोग नष्ट हो तथा मूत्र रोग समाप्त हो. सभी रोगों का विष यक्ष्मा रोग है, उसे मैं तुझ से दूर करता हूं. (१०)

बहिर्बिलं निर्द्रवतु काहाबाहं तवोदरात्.
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् (११)

काहावाह नामक (फड़फड़ाने वाला) रोग तेरे पेट से बाहर निकल जाए. मैं सभी प्रकार के यक्ष्मा रोगों के विष को तुझ से बाहर करता हूं. (११)

उदरात् ते क्लोम्नो नाभ्या हृदयादधि.
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् (१२)

हम तेरे उदर से, क्लोम से, नाभि से और हृदय से यक्ष्मा रोग को बाहर निकालते हैं जो सभी विषों का विष है. (१२)

याः सीमानं विरुजन्ति मूर्धानं प्रत्यर्षणीः.
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् (१३)

जो अंडकोषों को पीड़ित करने वाली एवं मस्तक का निर्माण करने वाली हड्डियां विकार रहित हैं, वे तेरे शरीर का त्याग न करें. (१३)

या हृदयमुपर्षन्त्यनुतन्वन्ति कीकसाः.
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् (१४)

कीकस नाम की जो अस्थियां हृदय के ऊपरी और निचले भाग में फैली हुई हैं, वे रोग रहित अस्थियां हिंसा न करती हुई तुम्हारे शरीर से बाहर न जाएं. (१४)

याः पार्श्वे उपर्षन्त्यनुनिक्षन्ति पृष्टीः.
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् (१५)

जो अस्थियां दोनों पसलियों की ओर जाती हैं तथा पीठ वाले भाग को सशक्त बनाती हैं, वे रोगरहित रहती हुई तुम्हारे शरीर का त्याग न करें. (१५)

यास्तिरश्चीरुपर्षन्त्यर्षणीर्वक्षणासु ते.
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् (१६)

जो अस्थियां तिरछी स्थित हैं एवं वंक्षणाओं (पेडू और जांघों के बीच के भाग) से संबंधित हैं, वे तुम्हें हानि न पहुंचाती हुई एवं नीरोग रहती हुई तुम्हारे शरीर का त्याग न करें. (१६)

या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च.
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् (१७)

गुदा के पीछे फैली एवं आंतों को सहारा देने वाली जो अस्थियां हैं, वे रोग रहित रहती हुई तथा तुम्हें हानि न पहुंचाती हुई तुम्हारे शरीर का त्याग न करें. (१७)

या मज्ज्ञो निर्धयन्ति परूंषि विरुजन्ति च.
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्बिलम् (१८)

जो अस्थियां गांठों का निर्माण करती हैं तथा जो मज्जा अर्थात चर्बी से स्निग्ध होती हैं, वे तुम्हें हानि न पहुंचाती हुई और नीरोग रहती हुई तुम्हारे शरीर का त्याग न करें. (१८)

ये अङ्गानि मदयन्ति यक्ष्मासो रोपणास्तव.
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् (१९)

मैं ने तुझे वे सभी ओषधियां बता दी हैं जो अंगों को स्वस्थ बनाती हैं एवं यक्ष्मा रोग को समाप्त करती हैं. मैं ने यक्ष्मा रोग के समस्त विषों का निवारण करने वाली ओषधियां भी तुझे बता दी हैं. (१९)

विसल्पस्य विद्रधस्य वातीकारस्य वालजेः.
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् (२०)

मैं तेरे लिए विसल्प (पीड़ा), विद्ध (सूजन), वातीकार एवं वालजि (संधि) नामक समस्त यक्ष्मा रोगों के विषयों को नष्ट करने वाले मंत्रों का उच्चारण कर चुका हूं. (२०)

पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परि भंससः.
अनूकादर्षणीरुष्णिहाभ्यः शीर्ष्णो रोगमनीनशम् (२१)

मैं ने तेरी जंघाओं, पैरों, घुटनों, अनूक, उष्णिहा एवं शीश संबंधी समस्त रोगों का विनाश कर दिया है. (२१)

सं ते शीर्ष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः.
उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीनशोङ्गभेदमशीशमः (२२)

तेरे शीश पर प्रकाशमान सूर्य ने अपनी किरणों के द्वारा तेरे सभी रोग समाप्त कर दिए हैं. तेरे शीश में और हृदय में जो अंगों संबंधी दुर्बलता थी, उसे चंद्रमा ने समाप्त कर दिया है. (२२)

सूक्त चौदहवां देवता—आदित्य, अध्यात्म

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः.
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम् (१)

आह्वान करने योग्य सूर्य स्तुति कर्ता का पालन करते हैं. उन सूर्य के मध्यम भ्राता वायुदेव हैं जो आकाश में जल ले जाते हैं. इन सूर्य देव के तीसरे भ्राता अग्नि हैं. इस प्रकार मैं सूर्य को ही प्रमुख एवं आश्चर्यजनक समझता हूं. (१)

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा.
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः (२)

सूर्य के एक पहिए वाले रथ में सात किरणें जुड़ जाती हैं जो सरकने वाली हैं एवं अन्य ज्योतियों को पराजित करने वाली हैं. सात ऋषियों द्वारा नमस्कार करने योग्य उन सूर्य के रथ को एक घोड़ा खींचता है. सूर्य के रथ के पहिए में ग्रीष्म, वर्षा एवं शीत ऋतु रूपी तीन नाभियां हैं. यह जर्जर न होने वाला पहिया सदैव घूमता रहता है. सूर्य के द्वारा कालनिर्धारण में ही समस्त विश्व आश्रित है. (२)

इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्यश्वाः.
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्त यत्र गवां निहिता सप्त नामा (३)

सूर्य के सात पहियों वाले रथ को सात घोड़े खींचते हैं. सात ऋषि इस रथ के समीप खड़े रहते हैं. सात बहनें सूर्य की स्तुति करती हैं. किरणों रूपी सात गाएं सूर्य के रथ से संबंधित हैं जो इसे रस युक्त बनाती हैं. (३)

को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति.
भूम्या असुरसृगात्मा क्वस्वित् को विद्वांसमुप गात् प्रष्टुमेतत् (४)

सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाले अस्थिरहित को किस ने देखा था जो समस्त विश्व को धारण करता है ? भूमि को प्राणवंत करने वाले जल की आत्मा कहां स्थित है ? इस बात को पूछने के लिए विद्वान के समीप कौन गया था ? (४)

इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदास्य वामस्य निहितं पदं वेः.
शीर्ष्णः क्षीरं दुह्रते गावो अस्य वव्रिं वसाना उदकं पदापुः (५)

इन सूर्य के विषय में जो जानता हो, वह बताए कि इन के चरण आकाश में कहां स्थित हैं ? गाएं इन्हीं सूर्य के मंडल में दूध दुहाती हैं तथा वे गाएं इन्हीं सूर्य की किरणों के द्वारा जल पीती हैं. (५)

पाकः पृच्छामि मनसाविजानन् देवानामेना निहिता पदानि.
वत्से बष्कयेऽधि सप्त तन्तून् वि तत्निरे कवय ओतवा उ (६)

सूर्य के रूप को पूर्ण रूप से न जानता हुआ मैं अपने मन से पूछता हूं कि समस्त देवों के रक्षासाधन इन सूर्य में ही निहित हैं. विद्वानों ने सूर्यदेव के विस्तार के हेतु सात तंतु स्थापित कर दिए हैं. (६)

अचिकित्वांश्चिकितुषश्चिदत्र कवीन् पृच्छामि विद्मनो न विद्वान्.
वि यस्तस्तम्भ षडिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि स्विदेकम् (७)

अज्ञानी मैं विद्वानों और ज्ञानियों से पूछता हूं कि जिस ने छः रजोगुणी तत्त्वों को स्तंभित किया है, वह अजन्मा क्या एक ही है ? मैं संदेह में पड़ा हूं, और संदेहरहित जनों से अपना संदेह निवारण करना चाहता हूं. (७)

माता पितरमृत आ बभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे.
सा बीभत्सुर्गर्भरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः (८)

सूर्य के जन्म लेते समय ही उन की माता उन के पिता की सेवा करती है. इस के फल स्वरूप वह बुद्धि और मन से युक्त हो जाती है एवं गर्भरूपी रस से निबद्ध हो जाती है. हवि का अन्न लिए हुए मनुष्य इस कथा के समीप पहुंच जाते हैं. (८)

युक्ता मातासीद् धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद् गर्भो वृजनीष्वन्तः.

अमीमेद् वत्सो अनु गामपश्यद् विश्वरूप्यं त्रिषु योजनेषु (९)

माता दक्षिण दिशा में स्थित हुई. इस के पश्चात बलवती नारियों में गर्भ स्थापित हुआ. जन्म लेने के पश्चात बछड़ा गाय की ओर देखता हुआ रंभाने लगा. विश्वरूप तीन योजनों में व्याप्त हुआ. (९)

तिस्रो मातृस्त्रीन् पितृन बिभ्रदेक ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्त.
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविदो वाचमविश्वविन्नाम् (१०)

तीन माताओं और तीन पिताओं को धारण करता हुआ सूर्य इन के मध्य में स्थित है. विश्व का ज्ञान रखने वाले आकाश के पृष्ठ पर यही वाणी बोलते हैं, जिसे दूसरे लोग नहीं सुन पाते. (१०)

पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने यस्मिन्नातस्तुर्भुवनानि विश्वा.
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न च्छिद्यते सनाभिः (११)

पांच अरों वाला पहिया चलता है. उस में समस्त भुवन स्थित हैं. उस के अधिक भार को सहने वाली धुरी स्वयं स्थापित नहीं होती. वह धुरी रूपी नाभि पुरानी होने पर टूटती नहीं है. (११)

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्.
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणे सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितम् (१२)

बारह आकृतियों अर्थात बारह मासों और पांच चरणों अर्थात ऋतुओं वाले पिता अर्थात सूर्य को स्वर्ग के ऊपरी भाग में सोने वाला कहा गया है. अन्य चतुर जन इस में सात पहियों और छः अरों को स्थित बताते हैं. (१२)

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य.
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः (१३)

बारह अरों वाला पहिया अर्थात सूर्य स्वयं गति करता हुआ भी जीर्ण नहीं होता है. हे अग्नि! सात सौ बीस युगल अर्थात तीन सौ साठ दिन और रात के जोड़े उस के पुत्र रूप में स्थित हैं. (१३)

सनेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति.
सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं यस्मिन्नातस्थुर्भुवनानि विश्वा (१४)

कभी प्राचीन न होने वाला बारह मासों रूपी अरों से युक्त सूर्य रूपी पहिया सदैव चलता रहता है. दस घोड़े उस पहिए को आगे बढ़ाते हैं. सूर्य के नेत्र अंधकार से ढके होते हैं. उसी में समस्त विश्व स्थित रहता है. (१४)

स्त्रियः सतीस्तां उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान् न वि चेतदन्धः.
कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात् स पितुष्पितासत् (१५)

सभी स्त्रियां उसी को ज्ञानी पुरुष कहती हैं, जो उन्हें क्षयहीन प्रतीत होता है. इस के विपरीत दशा वाले पुरुष को वे ज्ञान शून्य समझती हैं. जो विद्वान पुत्र इस बात को जानता है, वह पालकों का भी पालन करता है. (१५)

साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं षडिद्यमा ऋषयो देवजा इति.
तेषामिष्टानि विहितानि धामश स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपश: (१६)

देवों के साथ उत्पन्न ऋषि छः बताए गए हैं. ऋषि और देव बताते हैं कि यह छः एक से ही उत्पन्न हुए हैं. इस के मनचाहे स्थान निश्चित हैं. ये अनेक प्रकार से विराजमान होते हैं. (१६)

अव: परेण पर एनावरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात्.
सा कद्रीची कं स्विदर्धं परागात् क्व स्वित् सूते नहि यूथे अस्मिन् (१७)

धवल वर्ण की गौ अगले पैर से अन्न को तथा पिछले पैर से अपने बछड़े को धारण करती हुई उड़ती है. वह किसी आधे भाग में गई थी. वह इस झुंड में बच्चा नहीं देती. (१७)

अव: परेण पितरं यो अस्य वेदाव: परेण पर एनावरेण.
कवीयमान: क इह प्र वोचद् देवं मन: कुतो अधि प्रजातम् (१८)

अगले पैरों के द्वारा इस के पिता अन्न को जानने वाला एवं पिछले पैरों के द्वारा पर को जानने वाला दिव्य मन कहां से प्रकट हुआ? यह बात प्रजापति ने कही. (१८)

ये अर्वाञ्चस्तां उ पराच आहुर्ये पराञ्चस्तां उ अर्वाच आहु:.
इन्द्रश्च या चक्रथु: सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति (१९)

जो नवीन हैं, वे प्राचीन के विषय में बताते हैं और जो प्राचीन हैं, वे नवीनों का परिचय देते हैं. हे सोम! तुम और सोम जिन्हें स्थापित करते हैं, वे लोक को धारण करने में समर्थ बनते हैं. (१९)

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते.
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति (२०)

सुंदर पंखों वाले दो पक्षी अर्थात आत्मा और परमात्मा एक ही संसार रूपी वृक्ष पर बैठे हैं. इन में से एक अर्थात आत्मा पीपल के स्वादिष्ट फलों को खाता है. दूसरा अर्थात परमात्मा पीपल के फलों को न खाता हुआ अपने दूसरे साथी को देखता है. (२०)

यस्मिन् वृक्षे मध्वद: सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे.
तस्य यदाहु: पिप्पलं स्वाद्वग्रे तन्नोन्नशद्य: पितरं न वेद (२१)

वृक्ष पर मधु का भक्षण करने वाले जो पक्षी बैठते हैं, वे विश्व का विस्तार

करते हैं. जो पीपल के फलों को स्वादिष्ट बताते हैं तथा जो अपने पालक पिता को नहीं जानते, वे विनाश को प्राप्त होते हैं. (२१)

यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भक्षमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति.
एना विश्वस्य भुवनस्य गोपा: स मा धीर: पाकमत्रा विवेश (२२)

जहां पक्षी कर्मों के अमृत के समान स्वादिष्ट फल समझते हैं, वे ही संसार की रक्षा करते हैं और अंत में सूर्यलोक में प्रवेश करते हैं. (२२)

सूक्त पंद्रहवां

देवता—गौ

यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं त्रैष्टुभं वा त्रैष्टुभान्निरतक्षत.
यद्वा जगज्जगत्याहितं पदं य इत् तद् विदुस्ते अमृतत्वमानशु: (१)

गायत्र में गायत्र छिपा हुआ है और त्रैष्टुभ में त्रैष्टुभ व्याप्त है. जो लोग जगती में छिपे हुए जगत को जानते हैं, वे अमृत का उपभोग करते हैं. (१)

गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कमर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम्.
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदाक्षरेण मिमते सप्त वाणी: (२)

गायत्र से अर्क अर्थात सूर्य का निर्माण होता है. अर्क से साम का और त्रैष्टुभ से वाक का निर्माण होता है. वाक से वाक को तथा द्विपदा एवं चतुष्पदा तथा अविनाशी ब्रह्म से सप्तवाणी अर्थात सात प्रकार के वेद के छंद निर्मित होते हैं.(२)

जगता सिन्धुं दिव्यस्कभायद् रथंतरे सूर्यं पर्यपश्यत्.
गायत्रस्य समिधस्तिस्र आहुस्ततो मह्ना प्र रिरिचे महित्वा (३)

संसार के द्वारा सिंधु को द्विलोक की ओर प्रेरित किया गया. ज्ञानियों ने रथंतर में सूर्य का दर्शन किया. उन्होंने गायत्र यज्ञ की तीन समिधाएं बताईं. इस के पश्चात वे अपनी महत्ता से ही वृद्धि को प्राप्त हुए. (३)

उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्.
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचत् (४)

शोभन हाथ से गायों को दोहने वाला मैं सरलता से दुही जाने वाली गाय का दूध दुहता हुआ उसे अपने समीप बुलाता हूं. सविता ने मुझे श्रेष्ठ गौ प्रदान की है. उन्हीं में तेजस्वी धर्म का कथन किया गया है. (४)

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्.
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभागाय (५)

हुंकार करती हुई, धन से पालने योग्य एवं बछड़े की इच्छा करती हुई गौ धनवानों के समीप पहुंची. हिंसा न करने योग्य यह गाय अश्विनीकुमारों के निमित्त

दूध देती हुई हमें महान सौभाग्य के लिए प्राप्त हो. (५)

गौरमीमेदभि वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्ङकृणोन्मातवा उ
सृक्वाणं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः (६)

हुंकार करती हुई गाय उस बछड़े के समीप जा कर उसे सूंघती है जो उस की ओर ताकता है. यह बताने के लिए कि यह बछड़ा मेरा ही है, यह गौ रंभाती है और अपने दूध से उसे बढ़ाती है. (६)

अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता.
सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यान् विद्युद्भवन्ती प्रति वव्रिमौहत (७)

गरजते हुए मेघ ने वाणी को ढक लिया है. मेघ द्वारा ढकी हुई वाणी शब्द करती है. यही वाणी मेघों से बिजली के रूप में प्रकट हो कर मनुष्यों को भयभीत करती है. (७)

अनच्छये तुरगातु जीवमेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम्.
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः (८)

यमलोक की पीड़ाओं के भय से कांपते हुए प्राणी के हृदय में जीव सांस लेता है. मरणशील जीव अन्य मरणधर्मा प्राणियों का सयोनि अर्थात समान शरीर वाला है एवं स्वधा का भक्षण करता है. (८)

विधुं दद्राणं सलिलस्य पृष्ठे युवानं सन्तं पलितो जगार.
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान (९)

दमनशील एवं युवा चंद्रमा को सूर्य निगल जाता है. परमेश्वर की सृष्टि की महत्ता देखो कि आज जो मर जाता है, कल वही जीवित हो कर सांस लेने लगता है. तात्पर्य यह है कि आज छिप जाने वाला चंद्रमा दूसरे दिन फिर निकल आता है. (९)

य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्.
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिरा विवेश (१०)

जिस ने इस की रचना की है, वह इस के गर्भ को नहीं देखता. जो इस के गर्भ में जाता है, वही इस को देखता है. माता की योनि से उत्पन्न बालक अनेक बार जन्ममरण रूपी पाप देवता निर्ऋति के जाल में फंसता है. (१०)

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्.
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः (११)

मैं ने रक्षा करने वाली आत्मा को जन्ममरण के चक्र में घूमते देखा. मैं ने उसे इहलोक और परलोक में एवं सत्व, रज, तम तीन गुणों में भ्रमण करते देखा. आत्मा

अपने में व्याप्त लोकों एवं इंद्रियों में भ्रमण करती है. (११)

द्यौर्नः पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्नो माता पृथिवी महीयम्.
उत्तानयोश्चम्वो३र्योनिरन्तरत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात् (१२)

सृष्टि की रचना करने वाला एवं वीर्योत्पादक द्यौ भी हमारा पिता है. नाभि अर्थात धरती और आकाश का मध्य भाग मेरा भाई है. महीयसी पृथ्वी मेरी माता है. यह वर्षा के जल को ओषधि के रूप में धारण करती है. आकाश और पृथ्वी सूत्र रूप में वायु को धारण करते हैं. पिता रूपी द्यौ पृथ्वी में वर्षा रूपी गर्भ धारण करता है. (१२)

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि वृष्णो अश्वस्य रेतः.
पृच्छामि विश्वस्व भुवनस्य नाभिंपृच्छामि वाचः परमं व्योम (१३)

मैं तुम से पृथ्वी के अंतिम स्थान के विषय में पूछता हूं. मैं इच्छा पूर्ण करने वाले एवं व्यापक परमेश्वर के विषय में पूछता हूं. मैं संपूर्ण भुवन की नाभि अर्थात केंद्र के विषय में पूछता हूं. मैं वाक के परमव्योम में व्याप्त होने के विषय में भी पूछता हूं. (१३)

इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतः
अयं यज्ञो विश्वस्य, भुवनस्य नाभिर्ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम (१४)

यह देवी पृथ्वी का परम अंत हैं. यह सोम इच्छापूर्ण करने वाले व्यापक विष्णु का वीर्य है. यह यज्ञ समस्त भुवनों की नाभि अर्थात केंद्र है. ब्रह्म इस वाणी का परम व्योम है. (१४)

न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनद्धो मनसा चरामि.
यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्यादिद् वाचो अश्नुवे भागमस्याः (१५)

मैं यह नहीं जानता कि मैं ही जानने योग्य परम ब्रह्म हूं तथा मैं द्वैताद्वैत संदेह में पड़ा हुआ उसी के मध्य विचरण करता हूं. अतएव जो बुद्धि समस्त इंद्रियों में प्रमुख है, उस के द्वारा मैं यह जानता हूं कि मैं कार्य हूं अथवा कारण हूं. उसी के अनुसार मैं वाणी का उपयोग करता हूं. (१५)

अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः.
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता न्य१न्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम् (१६)

मरणधर्मिता से रहित अर्थात अमर आत्मा मरणधर्मा मन के साथ गर्भ से प्रकट होती है. इन में से आत्मा ब्रह्म में मिल कर तदाकार हो जाती है. (१६)

सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि.
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः (१७)

व्यापक ब्रह्म की सात किरणें वीर्य के रूप में वर्तमान रहती हैं. वे किरणें कार्य

की उत्पत्ति के रूप से समस्त जगत में विस्तृत होती हैं. (१७)

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः.
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्ते अमी समासते (१८)

परम व्योम में ओंकार का अक्षर है. उस में समस्त देव निवास करते हैं. जो इस बात को नहीं जानता, वह वेद मंत्रों को जान कर भी क्या करेगा ? जो इस बात को जानते हैं, वे उसी ब्रह्म में निवास करते हैं. (१८)

ऋचः पदं मात्रया कल्पयन्तोऽर्धर्चेन चाक्लृपुर्विश्वमेजत्.
त्रिपाद् ब्रह्म पुरुरूपं वि तष्ठे तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः (१९)

ओंकार के पद की कल्पना करते हुए जनों ने उसी अर्थ में इस चैतन्य और गतिशील विश्व की कल्पना की. निश्चल ब्रह्म तीन मात्राओं से निज रूप में स्थित रहता है और इस की एक मात्रा से चारों दिशाएं अर्थात चारों दिशाओं में वर्तमान प्राणी जीवित रहते हैं. (१९)

सूयवासद् भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्तः स्याम.
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती (२०)

हे भूमि! तू जलमय सूर्य के संपर्क के कारण जल रूप ऐश्वर्य को प्राप्त कर सकी. हम भी तेरे जल रूप ऐश्वर्य से संपत्तिशाली बनें. हे हिंसित न होने वाली पृथ्वी! तू मेघों को चूरचूर कर के शुद्ध जल का सेवन कर एवं सूर्य की किरणों के द्वारा जल का सेवन कर. (२०)

गौरिन्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी. अष्टापदी नवपदी बभूवुषी
सहस्राक्षरा भुवनस्य पङ्क्तिस्तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति (२१)

इस वाणीरूपी गौ ने ही विश्व की रचना की है. यही जल का निर्माण करती है. मध्यम के साथ एकत्व प्राप्त कर के यह सूर्य के साथ एकपदी, दिशाओं के साथ चतुष्पदी और अंतर्दिशाओं के साथ अष्टपदी होती है. दिशाओं, विदिशाओं एवं सूर्य के साथ यह नवपदी हो जाती है. यह अविभक्त आत्मा में मिल कर भुवन की रचना करती है. इसी के कारण मेघ वर्षा करते हैं. (२१)

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति.
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्यादिद् घृतेन पृथिवीं व्यूदुः (२२)

जल को लपेटती हुई किरणें आकाश में उछलती हैं. वे ही किरणें दक्षिणायन रूप में सूर्यमंडल से लौटती हैं, तभी धरती जल से भीग जाती है. (२२)

अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद् वां मित्रावरुणा चिकेत.
गर्भो भारं भरत्या चिदस्या ऋतं पिपर्त्यनृतं नि पाति (२३)

हे मित्र और वरुण! तुम्हारे रूप को कौन जानता है? बिना चरणों वाली किरणें चरणों वाले प्राणियों से पहले इस जगत में आ जाती हैं. धरती इन का भार धारण करती है तथा सत्य बोलने वाले का पालन करती है. यह धरती झूठ बोलने वाले का विनाश कर देती है. (२३)

विराड् वाग् विराट् पृथिवी विराडन्तरिक्षं विराट् प्रजापतिः. विराण्मृत्युः साध्यानामधिराजो बभूव तस्य भूतं भव्यं वशे स मे भूतं भव्यं वशे कृणोतु (२४)

विराट ही वाणी है, विराट पृथ्वी है, विराट अंतरिक्ष है और विराट प्रजापति है. विराट मृत्यु और साध्यों का स्वामी है. भूत और भविष्य उसी के वश में है. वही विराट भूत और भविष्य को मेरे वश में करे. (२४)

शकमयं धूममारादपश्यं विषूवता पर एनावरेण.
उक्षाणं पृश्निमपचन्त वीरास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् (२५)

मैं ने विषुवत एवं ऐनावर यज्ञ के द्वारा सर्वत्र व्याप्त धूम को समीप से देखा. वीरों ने शक्ति देने वाले सोमरस को पकाया. वे ही प्रमुख धर्म थे. (२५)

त्रयः केशिन ऋतुथा वि चक्षते संवत्सरे वपत एक एषाम्.
विश्वमन्यो अभिचष्टे शचीभिर्ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम् (२६)

तीन ज्योतियों अर्थात अग्नि, सूर्य एवं वायु ऋतुओं के अनुसार अपने कार्यों के रूप में समयसमय पर संसार पर कृपा करती हैं. इन में से एक अर्थात अग्नि संवत्सर में पृथ्वी को भस्म करती है. इस प्रकार वह कर्म करने योग्य बनती है. इन में वायु का रूप अदृश्य है. उस की केवल गति जानी जाती है. (२६)

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ते मनीषिणः.
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति (२७)

वाणी के चार निश्चित पद अर्थात चरण हैं. जो मनीषी ब्राह्मण हैं, वे उन्हें जानते हैं. इन में से तीन चरण बुद्धि रूपी गुफा में छिपे होने के कारण गति नहीं करते हैं. मनुष्य वाणी के चौथे चरण का उच्चारण करते हैं. (२७)

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्.
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः (२८)

तत्त्वज्ञानी विद्वान उस दिव्य गतिशील को इंद्र, मित्र, वरुण और अग्नि कहते हैं. यह दिव्य गतिशील एक है, पर विद्वान उसे अनेक प्रकार से कहते हैं. वे उसे अग्नि, वायु एवं यम कहते हैं. (२८)

दसवां कांड

सूक्त पहला

देवता—मंत्र में उक्त

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः.
सारादेत्वप नुदाम एनाम् (१)

कृत्या को बनाने वाले उसे दहेज के साथ प्राप्त होने वाली वधू के समान सजाते हैं. हम उसी कृत्या को भगाते हैं. वह कृत्या हम से दूर चली जाए. (१)

शीर्षण्वती नस्वती कर्णिनी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा.
सारादेत्वप नुदाम एनाम् (२)

सिर, नाक, कान आदि अंगों से युक्त बनाई गई कृत्या अनेक प्रकार की आपत्तियां लाती है. उसे हम भगाते हैं. वह हमारे पास से दूर चली जाए. (२)

शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्माभिः कृता.
जाया पत्या नुत्तेव कर्तारं बन्ध्वृच्छतु (३)

शूद्र के द्वारा निर्मित, राजा के द्वारा निर्मित, स्त्री के द्वारा निर्मित एवं मंत्रों के द्वारा प्रेरित कृत्या अपने बनाने वाले के समीप उसी प्रकार लौट जाए, जिस प्रकार भाइयों के द्वारा विदा की गई पत्नी अपने पति के समीप लौट जाती है. (३)

अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम्.
यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वा ते पुरुषेषु. (४)

मैं इस जड़ीबूटी के द्वारा समस्त कृत्याओं को क्षेत्र में गायों पर एवं पुरुषों पर की गई कृत्या को शक्तिहीन कर चुका हूं. (४)

अघमस्त्वघकृते शपथः शपथीयते.
प्रत्यक् प्रतिप्रहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत् (५)

पाप उसे प्राप्त हो, जिस ने पाप किया है. शपथ उसी के पास जाए, जिस ने शपथ की है. मैं कृत्या को इस प्रकार वापस लौटाता हूं कि वह अपने निर्माता का ही विनाश कर दे. (५)

प्रतीचीन आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः.
प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामून् कृत्याकृतो जहि (६)

हमारा पुरोहित पश्चिम देश का रहने वाला एवं हमारे सामने उपस्थित है. पूर्व के निवासियों ने कृत्या का निर्माण किया है. हे पुरोहित! तुम उस को नष्ट करो. (६)

यस्त्वोवाच परेहीति प्रतिकूलमुदाय्यम्.
तं कृत्येऽभिनिवर्तस्वमास्मानिच्छो अनागसः (७)

हे कृत्या! जिस ने तुझे आदेश दिया कि दूर जा. उस ने हमारे प्रतिकूल आचरण किया है. तू उसी के पास लौट जा तथा हम निरपराधों की इच्छा मत कर. (७)

यस्ते परूंषि संदधौ रथस्येवर्भुर्धिया.
तं गच्छ तत्र तेऽयनमज्ञातस्तेऽयं जनः (८)

हे कृत्या! बढ़ई जिस प्रकार रथ के अंगों को जोड़ता है, उसी प्रकार जिस ने बुद्धिमत्ता के साथ तेरी हड्डियों को जोड़ा है, तू उसी के समीप लौट जा. तेरा गंतव्य वही है. मैं तेरा अपरिचित हूं. (८)

ये त्वा कृत्वालेभिरे विद्वला अभिचारिणः.
शम्भ्वी३दं कृत्यादूषणं प्रतिवर्त्म पुनःसरं तेन त्वा स्नपयामसि (९)

हे कृत्या! जिस जादूटोना करने वाले ने तुझे प्राप्त किया है, वह मार्ग को दूषित कर के तुझे लौटा सकता है. हम उसी के रक्त से तुझे स्नान कराते हैं. (९)

यद् दुर्भगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम.
अपैतु सर्वं मत् पापं द्रविणं मोप तिष्ठतु (१०)

हम जिस कृत्या को प्राप्त कर के मृतवत्सा गौ की दशा वाले हो गए हैं. अर्थात हमारी पत्नियां मरे हुए बच्चे को जन्म देती हैं. मुझ से संबंधित समस्त पाप दूर हो जाएं तथा मुझे धन प्राप्त हो. (१०)

यत् ते पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगृहुः.
संदेश्या३त् सर्वस्मात् पापादिमा मुञ्चन्तु त्वौषधीः (११)

यज्ञ में पितरों का भाग देते हुए जो नाम लिया गया था, ये जड़ीबूटियां उस नाम लेने के पाप से तुझे छुड़ाएं. (११)

देवैनसात् पित्र्यान्नामग्राहात् संदेश्या दभिनिष्कृतात्.
मुञ्चन्तु त्वां वीरुधो वीर्येण ब्रह्मण ऋग्भिः पयस ऋषीणाम् (१२)

देवों के प्रति किए गए पाप से, पितरों का नाम लेने के पाप से, अपमानित

करने से और अपशब्द कहने के पाप से ये जड़ीबूटियां ब्राह्मणों के मंत्र बल के द्वारा एवं ऋषियों के तपोबल के द्वारा हमें छुड़ाएं. (१२)

यथा वातश्च्यावयति भूम्या रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम्.
एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति (१३)

वायु जिस प्रकार धरती से धूल को और आकाश में मेघों को उड़ा ले जाती है, उसी प्रकार मंत्रों का बल मेरे सभी पापों को दूर करे. (१३)

अप क्राम नानदती विनद्धा गर्दभीव.
कर्तॄन् नक्षस्वेतो नुत्ता ब्रह्मणा वीर्यावता (१४)

हे कृत्या! जिस प्रकार खुली हुई गधी रेंकती हुई भागती है, उसी प्रकार तू हमारे मंत्र बल के कारण अपने निर्माताओं के समीप जा और उन्हें नष्ट कर. (१४)

अयं पन्थाः कृत्येति त्वा नयामोऽभिप्रहितां प्रति त्वा प्र हिण्मः.
तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनी विश्वरूपा कुरूटिनी (१५)

हे कृत्या! यह मार्ग है. तू शत्रु के द्वारा हमारे पास भेजी गई है. हम तुझे उसी के पास भेजते हैं. तू बैलगाड़ियों, वाणी एवं अनेक वीरों से युक्त सेना के समान हल्ला करती हुई हमारे शत्रुओं पर आक्रमण कर. हम मंत्र के बल से तुझे लौटाते हैं. (१५)

पराक् ते ज्योतिरपथं ते अर्वागन्यत्रास्मदयना कृणुष्व.
परेणेहि नवतिं नाव्याः अति दुर्गाः स्रोत्या मा क्षणिष्ठाः परेहि (१६)

हे कृत्या! तेरी ज्योति शत्रुओं के समीप पहुंचे. तू अपना निवास स्थान हम से दूर किसी अन्य स्थान में बना. तू नाव के द्वारा पार की जा सकने वाली नब्बे दुर्गम नदियों के पार चली जा और हमारी हिंसा मत कर. (१६)

वात इव वृक्षान् नि मृणीहि पादय मा गामश्वं पुरुषमुच्छिष एषाम्.
कर्तॄन् निवृत्येतः कृत्येऽप्रजास्त्वाय बोधय (१७)

हे कृत्या! वायु जिस प्रकार वृक्षों को उखाड़ देती है, उसी प्रकार तू शत्रुओं को कुचल दे. उन शत्रुओं की गाएं, घोड़े और पुरुष शेष न रहें. तू अपने बनाने वालों के पास जा एवं उन्हें संतानहीन बना. (१७)

यां ते बर्हिषि यां श्मशाने क्षेत्रे कृत्यां वलगं वा निचख्नुः.
अग्नौ वा त्वा गार्हपत्येऽभिचेरुः पाकं सन्तं धीरतरा अनागसम् (१८)

हे कृत्या! जादूटोना करने वालों ने तुझे कुशाओं पर, मरघट में अथवा खेत में गुप्त रूप से बनाया है अथवा उन्होंने गार्हपत्य अग्नि पर पाक कर के तेरा निर्माण किया है. मैं अपराधहीन होने के कारण तुझे शक्तिहीन बनाता हूं. (१८)

उपाहृतमनुबुद्धं निखातं वैरं त्सार्यन्वविदाम कर्त्रम्.
तदेतु यत आभृतं तत्राश्व इव वि वर्ततां हन्तु कृत्याकृतः प्रजाम् (१९)

कपटपूर्ण वैर को हम उसी के पास लौटाते हैं और वैर के कारण बनाई गई कृत्या को हम उसी के निर्माणकर्ता के पास वापस भेजते हैं. कृत्या घोड़े के समान अपने स्थान पर चली जाए और कृत्या का प्रयोग करने वाले की संतान का विनाश कर दे. (१९)

स्वायसा असय: सन्ति नो गृहे विद्मा ते कृत्ये यतिधा परूंषि.
उत्तिष्ठैव परेहीतोऽज्ञाते किमिहेच्छसि (२०)

हे कृत्या! हम तेरी हड्डियों के जोड़ों को जानते हैं. हमारे घरों में अच्छे लोहे से बनी तलवारें हैं. भलाई इसी में है कि तू यहां से शीघ्र ही हमारे शत्रु के समीप चली जा. हम तुझे नहीं जानते. तू यहां क्या चाह रही है? (२०)

ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ चापि कर्त्स्यामि निर्द्रव.
इन्द्राग्नी अस्मान् रक्षतां यौ प्रजानां प्रजावती (२१)

हे कृत्या! मैं तेरी गरदन और पैर काट डालूंगा. तू यहां से भाग जा. प्रजाओं की रक्षा करने वाले इंद्र और अग्नि हमारी रक्षा करें. (२१)

सोमो राजाधिपा मृडिता च भूतस्य न: पतयो मृडयन्तु (२२)

राजा सोम प्राणियों के रक्षक हैं. प्राणियों की रक्षा करने वाले वे हमें सुखी बनाएं. (२२)

भवाशर्वावस्यतां पापकृते कृत्याकृते. दुष्कृते विद्युतं देवहेतिम् (२३)
यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा.

कृत्या का निर्माण करने वाला पापी है. भव और शर्व उस के विनाश के लिए विद्युत को प्रेषित करें जो देवों का शस्त्र है. (२३)

सेतोऽष्टापदी भूत्वा पुन: परेहि दुच्छुने (२४)

हे कृत्या! तेरा निर्माण करने वालों ने तुझे दो पैरों वाली अथवा चार पैरों वाली बनाया है. यदि तू हमारे समीप आ रही है तो आठ पैरों वाली बन कर यहां से लौट जा. (२४)

अभ्य१क्ताक्ता स्वरंकृता सर्वं भरन्ती दुरितं परेहि.
जानीहि कृत्ये कर्तारं दुहितेव पितरं स्वम् (२५)

हे कृत्या! तू घी से भीगी हुई, भलीभांति अलंकृत और बुरे कर्म करने वाली है जिस प्रकार पुत्री अपने पिता को जानती है, उसी प्रकार तू अपने रचयिता को जान अर्थात उसी के समीप लौट जा. (२५)

परेहि कृत्य मा तिष्ठो विद्धस्येव पदं नय.
मृग: स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति (२६)

हे कृत्या! तू यहां से चली जा, यहां ठहर मत. जिस प्रकार सिंह घायल हरिण

के स्थान की ओर जाता है, उसी प्रकार तू अपने बनाने वाले के पास चली जा. तेरा बनाने वाला हरिण के समान है और तू सिंह के समान है, अतएव वह तुझे नष्ट नहीं कर सकता. (२६)

उत हन्ति पूर्वासिनं प्रतयादायापर इष्वा.
उत पूर्वस्य निघ्नतो नि हन्त्यपरः प्रति (२७)

प्रथम बैठे हुए व्यक्ति को दूसरा मनुष्य बाण से मार डालता है. मारने वाले को अन्य मनुष्य मार डालता है. हे कृत्या! तू अपने बनाने वाले के समीप लौट जा. (२७)

एतद्धि शृणु मे वचोऽथेहि यत एयथ. यस्त्वा चकार तं प्रति (२८)

हे कृत्या! मेरी यह बात सुन. तू जहां से यहां आई है और जिस ने तेरा निर्माण किया है, तू वहीं जा. (२८)

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः.
यत्रयत्रासि निहिता ततस्त्वोत्थापयामसि पर्णाल्लघीयसी भव (२९)

निरपराध की हत्या करना भयंकर कर्म है. तू हमारी गायों, अश्वों, और पुरुषों की हत्या मत कर. तुझे जहांजहां स्थापित किया गया है, वहांवहां से हम तुझे हटाते हैं. तू पत्ते से भी हलकी हो जा. (२९)

यदि स्थ तमसावृता जालेनाभिहिता इव.
सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिण्मसि (३०)

हे कृत्याओ! यदि तुम अंधकार से ढकी हुई और जाल में फंसी हुई के समान विवश हो तो हम तुम सब को यहां से दूर भगाते हैं और तुम्हारे रचयिताओं के पास भेजते हैं. (३०)

कृत्याकृतो वलगिनोऽभिनिष्कारिणः प्रजाम्.
मृणीहि कृत्ये मोच्छिषोऽमून् कृत्याकृतो जहि (३१)

हे कृत्या! तू अपने रचयिता कपटी की संतान का विनाश कर. हे कृत्या! इन्हें मत छोड़. तू अपने रचयिता का विनाश कर दे. (३१)

यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युषसश्च केतून्.
एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रं कृत्याकृता कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि (३२)

जिस प्रकार सूर्य अंधकार से छूट जाता है और रात्रि तथा उषा के उत्पत्ति के कारणों को त्याग देता है और हाथी जिस प्रकार अपने शरीर पर लगी हुई धूल झाड़ देता है, उसी प्रकार मैं कृत्या का निर्माण करने वाले के कर्म को अपने से पूरी तरह दूर करता हूं. (३२)

केन पार्ष्णी आभृते पूरुषस्य केन मांसं संभृतं केन गुल्फौ.
केनाङ्गुली: पेशनी: केन खानि केनोच्छ्लङ्खौ मध्यत: क: प्रतिष्ठाम् (१)

मनुष्य की एड़ियों को, टखनों को और मांस को किस ने पुष्ट बनाया? मनुष्य की सुंदर उंगलियों को किस ने पुष्ट किया? उंगलियों के मध्य में नसों को किस ने स्थित किया? (१)

कस्मान्नु गुल्फावधरावकृण्वन्नष्ठीवन्तावुत्तरौ पूरुषस्य.
जङ्घे निर्ऋत्य न्यदधु: क्व स्विज्जानुनो: सन्धी क उ तच्चिकेत (२)

नीचे के टखनों को किस से बनाया गया? पुरुष के घुटनों को, जांघों को तथा चरणों के मध्य को किस से बनाया गया? घुटनों का जोड़ कहां है और उसे कौन जानता है? (२)

चतुष्टयं युज्यते संहितान्तं जानुभ्यामूर्ध्वं शिथिरं कबन्धम्.
श्रोणी यदूरू क उ तज्जयान याभ्यां कुसिन्धं सुदृढं बभूव (३)

घुटनों के ऊपर चारों भाग हैं—शिथिल, धड़, कंधे और जंघाएं. इन्हें किस ने बनाया, जिस से शरीर का भाग धड़ दृढ़ हुआ? (३)

कति देवा: कतमे त आसन् य उरो ग्रीवाश्चिक्यु: पूरुषस्य.
कति स्तनौ व्यदधु: क: कफोडौ कति स्कन्धान् कति पृष्टीरचिन्वन् (४)

वे देव कितने थे, जिन्होंने पुरुष के हृदय को और गरदन को बनाया? कितने देवों ने पुरुष के स्तन बनाए. फेफड़ों को किस ने बनाया? कंधों की रचना कितने देवों ने की? पीठ की रचना कितने देवों ने की? (४)

को अस्य बाहू समभरद् वीर्यं करवादिति.
अंसौ को अस्य तद् देव: कुसिन्धे अध्या दधौ (५)

किस देव ने मनुष्य के बाहुओं को शक्ति से भर दिया और किस ने उस में वीर्य की रचना की? पुरुष के कंधों की रचना करने वाला देव कौन है? इसे धड़ पर किस ने स्थापित किया? (५)

क: सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम्.
येषां पुरुत्रा विजयस्य मह्मनि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम् (६)

मनुष्य के सिर में सात छेद अर्थात दो कान, दो नथुने, दो आंखें और एक मुख किस देव ने बनाया? इन्हीं देवों की महिमा से दो पैरों और चार पैरों वाले प्राणी अनेक स्थानों में गति करते हुए यमराज के स्थान पर जाते हैं. (६)

हन्वोर्हि जिह्वमदधात् पुरूचीमधा महीमधि शिश्राय वाचम्.

स आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तरपो वसानः क उ तच्चिकेत (७)

अनेक स्थलों को छूने वाली जीभ को ठोड़ी में किस ने स्थापित किया? जीभ में वाणी की स्थापना किस ने की. अपने शरीर के भीतर जल को धारण करता हुआ कौन सा देव प्राणियों में व्याप्त है? उस का जानने वाला कौन है? (७)

मस्तिष्कमस्य यतमो ललाटं ककाटिकां प्रथमो यः कपालम्.
चित्वा चित्यं हन्वोः पुरुषस्य दिवं रुरोह कतमः स देवः (८)

इस का मस्तिष्क, ललाट और जबड़ों के जोड़ एवं कपाल किस ने बनाया? वह देव कौन सा है? पुरुष की ठोड़ी की हड्डियों को जोड़ कर जो स्वर्ग को गया था, वह देव कौन सा है? (८)

प्रियाप्रियाणि बहुला स्वप्नं संबाधतन्द्र्यः.
आनन्दानुग्रो नन्दांश्च कस्माद् वहति पूरुषः (९)

मनुष्य के प्रिय और अप्रिय स्वप्नों को, संबंधित इंद्रियों को, आनंद को तथा दुख को कौन सा देव धारण करता है? (९)

आर्तिरवर्तिर्निर्ऋतिः कुतो नु पुरुषेऽमतिः.
राद्धिः समृद्धिरव्यृद्धिर्मतिरुदितयः कुतः (१०)

पुरुष में पाप, आजीविका विरोधी तत्त्व, दुष्कर्म आदि कहां से प्राप्त होते हैं? इसे ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि, बुद्धि एवं उन्नति कहां से प्राप्त होती है. (१०)

को अस्मिन्नापो व्यदधाद् विषूवृतः पुरूवृतः सिन्धुसृत्याय जाताः.
तीव्रा अरुणा लोहिनीस्ताम्रधूम्रा ऊर्ध्वा अवाचीः पुरुषे तिरश्चीः (११)

इस पुरुष में सर्वत्र विद्यमान सागर को और सदा तेजी से बहने वाले जलों को किस ने प्रविष्ट किया है जो लाल, लोहित, तांबई एवं धुमेले रंग के हैं? इन जलों को ऊपर, नीचे और तिरछा जाने की शक्ति किस ने प्रदान की? (११)

को अस्मिन् रूपमदधात् को मह्यानं च नाम च.
गातुं को अस्मिन् कः केतुं कश्चरित्राणि पूरुषे (१२)

किस देव ने पुरुष में रूप, महिमा एवं नाम को धारण किया? इसे ज्ञान, चरित्र और गति किस देव ने प्रदान की? (१२)

को अस्मिन् प्राणमवयत् को अपानं व्यानमु.
समानमस्मिन् को देवोऽधि शिश्राय पूरुषे (१३)

इस पुरुष में प्राण, अपान एवं व्यान वायु को किस ने धारण किया? इस पुरुष में समान वायु को किस ने आश्रित किया? (१३)

को अस्मिन् यज्ञमदधादेको देवोऽधि पूरुषे.
को अस्मिन्त्सत्यं कोऽनृतं कुतो मृत्युः कुतोऽमृतम् (१४)

किस प्रधान देव ने इस पुरुष में यज्ञ रूप कर्म को स्थापित किया है? इस में सत्य, असत्य, अमृत और मृत्यु की स्थापना किस ने की? (१४)

को अस्मै वासः पर्यदधात् को अस्यायुरकल्पयत्.
बलं को अस्मै प्रायच्छत् को अस्याकल्पयज्जवम् (१५)

इस पुरुष के शरीर पर त्वचा रूपी वस्त्र किस ने रखा और इस की आयु की रचना किस देव ने की? इस पुरुष के लिए बल किस देव ने प्रदान किया और किसने इसे गति दी? (१५)

केनापो अन्वतनुत केनाहरकरोद् रुचे.
उषसं केनान्वैन्द्ध केन सायंभवं ददे (१६)

किस देव ने इस पुरुष के लिए जल की रचना की और किस ने इस के लिए प्रकाश वाला दिवस बनाया? उषा को किस देव ने उज्ज्वल किया तथा सायंकाल किस ने प्रदान किया? (१६)

को अस्मिन् रेतो न्यदधा तन्तुरा तायतामिति.
मेधां को अस्मिन्नध्यौहत् को बाणं को नृतो दधौ (१७)

इस पुरुष में वीर्य का आधान किस ने किया, जिस से प्रजा रूपी तंतु का विस्तार हो सके? इस पुरुष में बुद्धि की स्थापना किस देव ने की तथा किस ने इस में बाण धारण किया? (१७)

केनेमां भूमिमौर्णोत् केन पर्यभवद् दिवम्.
केनाभि मह्वा पर्वतान् केन कर्माणि पूरुषः (१८)

पुरुष ने किस प्रकार से भूमि को आवृत किया तथा यह किस प्रभाव से स्वर्ग पर आरूढ़ हुआ? यह पुरुष किस प्रभाव से पर्वतों पर आरोहण करता और कर्म करता है? (१८)

केन पर्जन्यमन्वेति केन सोमं विचक्षणम्.
केन यज्ञं च श्रद्धां च केनास्मिन् निहितं मनः (१९)

यह पुरुष किस प्रभाव से बादलों को प्राप्त करता और सोमलता को खोजता है? यह पुरुष यज्ञ को और श्रद्धा को किस के द्वारा प्राप्त करता है तथा इस के मन को उत्तम कर्मों में किस ने संलग्न किया है? (१९)

केन श्रोत्रियमाप्नोति केनेमं परमेष्ठिनम्.
केनेममग्निं पूरुषः केन संवत्सरं ममे (२०)

यह पुरुष किस के द्वारा श्रोत्रिय ब्राह्मण को प्राप्त करता है? यह किस के द्वारा परमेष्ठी को पाता है? यह पुरुष अग्नि को किस के द्वारा प्रेरित करता है और संवत्सर की गणना कैसे कर पाता है? (२०)

ब्रह्म श्रोत्रियमाप्नोति ब्रह्मेमं परमेष्ठिनम्.
ब्रह्ममग्निं पूरुषो ब्रह्म संवत्सरं ममे (२१)

ब्रह्म श्रोत्रिय को प्राप्त करता है और ब्रह्म ही परमेष्ठी को प्राप्त करता है. ब्रह्म ही यह पुरुष है और अग्नि को प्राप्त करता है तथा संवत्सर की गणना करता है. (२१)

केन देवां अनु क्षियति केन दैवजनीर्विशः.
केनेदमन्यन्नक्षत्रं केन सत् क्षत्रमुच्यते (२२)

पुरुष किस कर्म के द्वारा देवों की अनुकूलता प्राप्त करता है तथा किस कर्म को देवी प्रजा के अनुकूल बनाता है. यह पुरुष इस कर्म के द्वारा क्षत्र नहीं बनता और किस कर्म के द्वारा क्षत्र कहलाता है? (२२)

ब्रह्म देवां अनु क्षियति ब्रह्म दैवजनीर्विशः.
ब्रह्मेदमन्यन्नक्षत्रं ब्रह्म सत् क्षत्रमुच्यते (२३)

ब्रह्म देवों के अनुकूल रहता है तथा ब्रह्म ही दैवी प्रजाओं के अनुकूल व्यवहार करता है. ब्रह्म ही क्षत्र का अभाव है और ब्रह्म ही उत्तम धन कहलाता है. (२३)

केनेयं भूमिर्विहिता केन द्यौरुत्तरा हिता.
केनेदमूर्ध्वं तिर्यक् चान्तरिक्षं व्यचो हितम् (२४)

इस भूमि को किस ने स्थापित किया है तथा द्यौ को इस के ऊपर किस ने स्थित किया है? यह ऊपर का भाग, तिरछा भाग एवं अनेक प्राणियों के लिए हितकारी अंतरिक्ष किस ने बनाया? (२४)

ब्रह्मणा भूमिर्विहिता ब्रह्म द्यौरुत्तरा हिता.
ब्रह्मेदमूर्ध्वं तिर्यक् चान्तरिक्षं व्यचो हितम् (२५)

ब्रह्म ने भूमि को स्थापित किया है और ब्रह्म ने ही इस के ऊपरी भाग में द्यौ को स्थित किया है. ब्रह्म ही ऊपर एवं तिरछा है तथा ब्रह्म ने अनेक प्राणियों के हितकारी अंतरिक्ष की रचना की है. (२५)

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत्.
मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत् पवमानोऽधि शीर्षतः (२६)

अथर्वा ने मूर्धा और हृदय की एकरूपता स्थापित की. इस ऊपर गमन करने वाले पवन ने मस्तिष्क के द्वारा उत्तम प्रेरणा प्रदान की. (२६)

तद् वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुब्जितः.

तत् प्राणो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मनः (२७)

अथर्वा की वह वाणी देवकोष के रूप में उपस्थित हुई. प्राण और मन उस अन्नमय शीश की रक्षा करते हैं. (२७)

ऊर्ध्वो नु सृष्टा३स्तिर्यङ् नु सृष्टा३: सर्वा दिशः पुरुष आ बभूवां३.
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते (२८)

जिस ब्रह्म को पुरुष कहा जाता है, उस की पुरी को जो जानता है, उसी ने ऊपरी और तिरछे भागों का निर्माण किया है. वही पुरुष समस्त दिशाओं में व्याप्त है. (२८)

यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरम्.
तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राणं प्रजां ददुः (२९)

जो व्यक्ति ब्रह्म की उस पुरी को जानता है, जो अमृत अर्थात मरणहीनता से ढकी हुई है, उस पुरुष को ब्रह्म एवं मंत्र चक्षु, प्राण एवं संतान प्रदान करते हैं. (२९)

न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरा.
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते (३०)

जो ब्रह्म की पुरी अर्थात निवास स्थान को जानता है और उस में शयन करने के कारण ही ब्रह्म पुरुष कहा जाता है, उसे जो जानता है, वृद्धावस्था तक नेत्र एवं प्राण उस का त्याग नहीं करते. (३०)

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या.
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः (३१)

देवों की नगरी आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली है. कोई युद्ध कर के उसे जीत नहीं सकता. उस में हिरण्यमय कोष और प्रकाश से ढका हुआ स्वर्ण है. (३१)

तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते.
तस्मिनं यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः (३२)

उस नौ द्वारों वाले हिरण्यमय कोष में जो आत्मा स्थित है, वहां जो यज्ञ का विस्तार करते हैं, वे ही ब्रह्मज्ञानी माने जाते हैं. (३२)

प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम्.
पुरं हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम् (३३)

उस प्रकाशमान, पाप का विनाश करने वाली, यश से ढकी हुई एवं हिरण्यमय

पुरी में ब्रह्म प्रवेश करता है. (३३)

सूक्त तीसरा

देवता—वरणमणि, वनस्पति

अयं मे वरणो मणिः सपत्नक्षयणो वृषा.
तेना रभस्व त्वं शत्रून् प्र मृणीहि दुरस्यतः (१)

यह मेरी वरण वृक्ष की मणि शत्रुओं का नाश करने वाली और अभिलाषा पूरक है. इसे धारण कर के तू उद्योग कर और दुष्टता करने वाले शत्रुओं का विनाश कर. (१)

प्रैणाञ्छृणीहि प्र मृणा रभस्व मणिस्ते अस्तु पुरएता पुरस्तात्.
अवारयन्त वरणेन देवा अभ्याचारमसुराणां श्वः श्वः (२)

तू इन शत्रुओं का विनाश कर, इन्हें मसल दे और प्रसन्न बन. यह मणि तेरे आगेआगे चले. वरण वृक्ष से निर्मित इस मणि की सहायता से देवों ने असुरों द्वारा किए गए जादू-टोनों का दूसरे दिन ही निवारण कर दिया था. (२)

अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः सहस्राक्षो हरितो हिरण्ययः.
स ते शत्रूनधरान् पादयाति पूर्वस्तान् दभ्नुहि ये त्वा द्विषन्ति (३)

वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि समस्त रोगों की ओषधि है. यह मणि हजार आंखों वाले इंद्र के समान शक्तिशालिनी, हरे रंग की और हिरण्यमय है. यह मणि तेरे शत्रुओं को मार डाले, उस से पहले ही तू उन का विनाश कर दे. (३)

अयं ते कृत्यां विततां पौरुषेयादयं भयात्.
अयं त्वा सर्वस्मात् पापाद् वरणो वारयिष्यते (४)

तेरे निमित्त जो कृत्या बनाई गई है, यह वरण वृक्ष से निर्मित मणि उस को प्रभावहीन बना देगी एवं तुझे भयरहित कर देगी. दिव्य वनस्पति से निर्मित यह मणि तेरे सभी पापों का विनाश कर देगी. (४)

वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः.
यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन् (५)

दिव्य गुणों से संपन्न यह वरण वृक्ष से निर्मित मणि हमारे शरीर में प्रविष्ट यक्ष्मा रोग के साथ हमारे शत्रुओं को भी समाप्त कर देगी. (५)

स्वप्नं सुप्त्वा यदि पश्यासि पापं मृगः सृतिं यदि धावादजुष्टाम्.
परिक्षवाच्छकुनेः पापवादादयं मणिर्वरणो वारयिष्यते (६)

हे पुरुष! वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि पापपूर्ण स्वप्न के भय से, अनिच्छित दिशा की ओर दौड़ने वाले मृग से, छींक से तथा कौआ आदि पक्षी से संबंधित

अपशकुनों से तुझे बचाएगी. (६)

अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या अभिचारादथो भयात्.
मृत्योरोजीयसो वधाद् वरणो वारयिष्यते (७)

हे पुरुष! यह मणि शत्रु से, निर्ऋति नामक पाप देवता से, जादूटोने के भय से तथा मृत्यु से तुम्हारी रक्षा करे. (७)

यन्मे माता यन्मे पिता भ्रातरो यच्च मे स्वा यदेनश्चकृमा वयम्.
ततो नो वारयिष्यतेऽयं देवो वनस्पतिः (८)

यह वनस्पति से निर्मित दिव्य गुण वाली मणि मेरी माता, मेरे पिता, मेरे भ्रात और मुझे किए गए समस्त पापों से बचाएगी. (८)

वरणेन प्रव्यथिता भ्रातृव्या मे सबन्धवः.
असूर्तं रजो अप्यगुस्ते यन्त्वधमं तमः (९)

मेरे जो बांधव एवं भतीजे मुझ से शत्रुता रखते हैं, वे वरण वृक्ष से निर्मित इस मणि के प्रभाव से व्यथित हों. वे कष्टदायिनी धूल को प्राप्त हों तथा घने अंधकार में प्रवेश करें. (९)

अरिष्टोऽहमरिष्टगुरायुष्मान्त्सर्वपूरुषः.
तं मायं वरणो मणिः परि पातु दिशोदिशः (१०)

हिंसा रहित मैं शांति प्राप्त कर रहा हूं. मेरी संतान, परिवारीजन एवं सेवक अधिक अवस्था प्राप्त करें. वरण वृक्ष से निर्मित यह शक्तिशालिनी मणि उन की सभी प्रकार रक्षा करे. (१०)

अयं मे वरण उरसि राजा देवो वनस्पतिः.
स मे शत्रून् वि बाधतामिन्द्रो दस्यूनिवासुरान् (११)

वरण वृक्ष से निर्मित यह दिव्य मणि मेरे सीने पर स्थित है. इंद्र ने जिस प्रकार असुरों का विनाश किया, उसी प्रकार यह मेरे शत्रुओं का विनाश करे. (११)

इमं बिभर्मि वरणमायुष्माञ्छतशारदः.
स मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजश्च मे दधत् (१२)

सौ की आयु प्राप्त करने का इच्छुक मैं इस मणि को धारण करता हूं. यह मणि मेरे राष्ट्र, बल, पशुओं एवं घोड़े की रक्षा करे. (१२)

यथा वातो वनस्पतीन् वृक्षान् भनक्त्योजसा.
एवा सपत्ना मे भङ्ग्धि पूर्वाञ्जातां उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु (१३)

वायु जिस प्रकार अपनी शक्ति से वृक्षों एवं वनस्पतियों को तोड़ देती है, उसी प्रकार यह मणि मेरे पूर्ववर्ती और बाद में होने वाले शत्रुओं का विनाश कर के मेरी रक्षा करे. (१३)

यथा वातश्चाग्निश्च वृक्षान् प्सातो वनस्पतीन्.
एवा सपत्नान् मे प्साहि पूर्वाञ्जातां उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु (१४)

हे वरण वृक्ष से निर्मित मणि! वायु एवं अग्नि जिस प्रकार वृक्षों के पास जा कर उन्हें जला डालते हैं, उसी प्रकार तुम मेरे पूर्ववर्ती और बाद में होने वाले शत्रुओं का विनाश करो. (१४)

यथा वातेन प्रक्षीणा वृक्षाः शेरे न्यर्पिताः. एवा सपत्नांस्त्वं मम
प्र क्षिणीहि न्यर्पय पूर्वाञ्जातां उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु (१५)

सूखे हुए वृक्ष जिस प्रकार वायु के कारण गिर जाते हैं, उसी प्रकार हे मणि! तुम मेरे पूर्ववर्ती एवं बाद में होने वाले शत्रुओं का विनाश कर के मेरी रक्षा करो. (१५)

तांस्त्वं प्र च्छिन्द्धि वरण पुरा दिष्टात् पुरायुषः.
य एनं पशुषु दिप्सन्ति ये चास्य राष्ट्रदिप्सवः (१६)

हे वरण वृक्ष से निर्मित मणि! जो इस यजमान के पशुओं एवं राष्ट्र का अपहरण करना चाहते हैं, तू उन के भाग्य और आयु को उन से छीन कर उन्हें नष्ट कर दे. (१६)

यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन् तेज आहितम्. एवा मे वरणो मणिः
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (१७)

जिस प्रकार यह सूर्य अत्यधिक प्रकाशित होता है और जिस प्रकार इस में तेज व्याप्त है, उसी प्रकार वरण वृक्ष से निर्मित मणि मुझे कीर्ति एवं ऐश्वर्य प्रदान करे. यह मणि मुझे तेजस्वी और यशस्वी बनाए. (१७)

यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च नृचक्षसि. एवा मे वरणो मणिः
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (१८)

सभी मनुष्यों के साक्षी चंद्रमा में और सूर्य में जैसा यश व्याप्त है, यह वरण वृक्ष से निर्मित मणि उसी प्रकार मुझे यश और ऐश्वर्य प्रदान करे. (१८)

यथा यशः पृथिव्यां यथास्मिञ्जातवेदसि. एवा मे वरणो मणिः
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (१९)

पृथ्वी और अग्नि में जिस प्रकार यश प्रतिष्ठित है, वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि मुझे उसी प्रकार यश और ऐश्वर्य प्रदान करे. (१९)

यथा यशः कन्यायां यथास्मिन्त्संभृते रथे. एवा मे वरणो मणिः
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (२०)

कन्या में और भरे हुए रथ में जिस प्रकार यश व्याप्त है, वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि मुझे उसी प्रकार यश और ऐश्वर्य प्रदान करे. (२०)

यथा यश: सोमपीथे मधुपर्के यथा यशः. एवा मे वरणो मणि:
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (२१)

जिस प्रकार सोमपीथ और मधुपर्क नामक यज्ञ क्रियाओं के करने से यश प्राप्त होता है, उसी प्रकार वरण वृक्ष से निर्मित मणि मुझे यश और ऐश्वर्य प्रदान करे. (२१)

यथा यशोऽग्निहोत्रे वषट्कारे यथा यशः. एवा मे वरणो मणि:
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (२२)

अग्निहोत्र एवं वषट करने से जिस पकार यज्ञ प्राप्त होता है, उसी प्रकार वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि मुझे कीर्ति और ऐश्वर्य प्रदान करे. (२२)

यथा यशो यजमाने यथास्मिन् यज्ञ आहितम्. एवा मे वरणो मणि:
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (२३)

इस यजमान में एवं इस यज्ञ में जिस प्रकार यश स्थित है, वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि उसी प्रकार मुझे कीर्ति और ऐश्वर्य प्रदान करे. (२३)

यथा यश: प्रजापतौ यथास्मिन् परमेष्ठिनि. एवा मे वरणो मणि:
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (२४)

जिस प्रकार प्रजापति में और परमेष्ठी में यश व्याप्त है, उसी प्रकार वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि मुझ में कीर्ति और ऐश्वर्य स्थापित करे तथा मुझे तेज और यश से सुशोभित करे. (२४)

यथा देवेष्वमृतं यथैषु सत्यमाहितम्. एवा मे वरणो मणि:
कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा (२५)

जिस प्रकार देवों में अमृत एवं सत्य प्रतिष्ठित है, उसी प्रकार वरण वृक्ष से निर्मित यह मणि मुझे कीर्ति और ऐश्वर्य प्रदान करे तथा मुझे तेज और यश से सुशोभित करे. (२५)

सूक्त चौथा — देवता—सर्प, विषापकरण

इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानामपरो रथो वरुणस्य तृतीय इत्.
अहीनामपमा रथ: स्थाणुमारदथार्षत् (१)

इंद्र का रथ पहला, देवों का दूसरा और वरुण का तीसरा है. सर्पों का रथ अपमा अर्थात निम्न गतिशील नामक है, जो स्थाणु अर्थात सूखे वृक्षों से अधिक रमणीय है एवं तेज चलता है. (१)

दर्भः शोचिस्तरुणकमश्वस्य वारः परुषस्य वारः. रथस्य बन्धुरम् (२)

दर्भ सर्पों को शोक देने वाला है, यह तरुणक एवं अश्व नामक सर्पों के विष का निरोधक है. परुष नामक सर्प के विष का निवारण करने वाला दर्भ रथ का बाधक है. (२)

अव श्वेत पदा जहि पूर्वेण चापरेण च.
उदप्लुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्. (३)

हे श्वेतपद! तू अपने अगले एवं पिछले पैरों के द्वारा सर्पों का विनाश कर. गिरता हुआ काष्ठ जिस प्रकार शक्ति से हीन हो जाता है, उसी प्रकार सर्प विष प्रभावहीन हो जाता है. हे दर्भ! तू इस भयानक सर्प विष का निवारण कर. (३)

अरंघुषो निमज्योन्मज्य पुनरब्रवीत्.
उदप्लुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम् (४)

अरंघुष नाम की ओषधि ने पानी में डुबकी लगाई और ऊपर आ कर कहा कि जिस प्रकार गिरता हुआ काष्ठ शक्तिहीन होता है, उसी प्रकार सर्पों का विष भी प्रभावहीन हो जाए. हे कुश! तू इस भयानक सर्प विष का निवारण कर. (४)

पैद्वो हन्ति कसर्णीलं पैद्वः श्वित्रमुतासितम्.
पैद्वो रथर्व्याः शिरः सं बिभेद पृदाक्वाः (५)

पैद्व नामक ओषधि कसर्णील नामक सर्प को, श्वेत सर्प को और काले सर्प को नष्ट करती है. पैद्व ने रथर्व्या और पृदाकू नामक नागों का सिर तोड़ दिया था. (५)

पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु त्वा वयमेमसि.
अहीन् व्यस्यतात् पथो येन स्मा वयमेमसि (६)

हे पैद्व! तुम सर्वश्रेष्ठ हो. हम तुम्हारी प्रार्थना करते हैं. तुम यहां आओ. हम जिस मार्ग से आतेजाते हैं, तुम उस मार्ग से सर्पों को दूर भगा दो. (६)

इदं पैद्वो अजायतेदमस्य परायणम्.
इमान्यर्वतः पदाहिघ्न्यो वाजिनीवतः (७)

यह पैद्व उत्पन्न हुआ है. यह इस के आश्रय में है. वह इन शीघ्र चलने वाले सर्पों का निवर्तन करने वाला है. (७)

संयतं न वि ष्परद् व्यात्तं न सं यमत्.
अस्मिन् क्षेत्रे द्वावही स्त्री च पुमांश्च तावुभावरसा (८)

सर्प का बंद मुख हमें डसने के लिए न खुले. इस क्षेत्र में निवास करने वाले

नर और मादा सर्प अर्थात सांप और सांपिन मंत्र की शक्ति से शक्तिहीन हो जाएं. (८)

अरसास इहाहयो ये अन्ति ये च दूरके.
घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दण्डेनागतम् (९)

जो सर्प यहां से समीप रहते हैं और जो दूर रहते हैं, वे विषहीन हो जाएं. मैं बिच्छू को मुगद से मारता हूं और सांप को डंडे से मारता हूं. (९)

अघाश्वस्येदं भेषजमुभयोः स्वजस्य च.
इन्द्रो मेऽहिमघायन्तमहिं पैद्वो अरन्धयत् (१०)

मेरे पास जो जड़ीबूटियां हैं, वे अघाश्व और स्वज दोनों प्रकार के सर्पों का विष दूर करने वाली हैं. हिंसा रूपी पाप करने वाले सांप को रोकने के हेतु इंद्र ने पैद्व को मेरे वश में किया है. (१०)

पैद्वस्य मन्महे वयं स्थिरस्य स्थिरधाम्नः.
इमे पश्चा पृदाकवः प्रदीध्यत आसते (११)

स्थिर एवं स्थायी तेज वाले पैद्व को हम मानते हैं. ये पश्च और पृदाकू नामक सर्पों को शोक मग्न करते हैं. (११)

नष्टासवो नष्टविषा हता इन्द्रेण वज्रिणा. जघानेन्द्रो जघ्निमा वयम् (१२)

वज्रधारी इंद्र ने उन सर्पों के प्राण एवं विष को समाप्त कर दिया था, जिन्हें इंद्र ने मारा था. हम उन का विनाश करते हैं. (१२)

हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासः पृदाकवः.
दर्विं करिक्रतं श्वित्रं दर्भेष्वसितं जहि (१३)

तिरश्चिराजी सांप मार दिए गए हैं और पृदाकू नामक सांप पीस डाले गए हैं. हे दर्वी! तू दर्भों पर पड़े हुए सफेद और काले करिकृत सांपों का विनाश कर दे. (१३)

कैरातिका कुमारिका सका खनति भेषजम्.
हिरण्ययीभिरभ्रिभिर्गिरीणामुप सानुषु (१४)

किरात जाति की कुमारी कुदाल से सर्पों की ओषधि खोजती है. वह पर्वतों की चोटियों पर सोने के फावड़ों से ओषधि खोदती है. (१४)

आयमगन् युवा भिषक् पृश्निहापराजितः.
स वै स्वजस्य जम्भन उभयोर्वृश्चिकस्य च (१५)

कभी पराजित न होने वाला युवा वैद्य मंत्र शक्ति से संपन्न है. यह स्वज नामक

सर्प और बिच्छू का विनाश कर सकता है. (१५)

इन्द्रो मेऽहिमरन्धयन्मित्रश्च वरुणश्च. वातापर्जन्योऽभा (१६)

इंद्र, मित्र, वरुण, वायु और पर्जन्य अर्थात बादल ने सर्प को मेरे वश में कर दिया है. (१६)

इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत् पृदाकुं च पृदाक्वम्.
स्वजं तिरश्चिराजिं कसर्णीलं दशोनसिम् (१७)

इंद्र ने मेरे कल्याण के हेतु पृदाकू, पृदाक्व, स्वज तिरश्चिराजी, कसर्णील एवं दशोनसि नामक सर्पों को मेरे वश में कर दिया है. (१७)

इन्द्रो जघान प्रथमं जनितारमहे तव.
तेषामु तृह्यमाणानां कः स्वित् तेषामसद् रसः (१८)

हे सर्प! इंद्र ने सब से पहले तेरे जन्म देने वालों को मारा था. उन सर्पों के विनाश के समय किस सर्प में विष शेष रहा ? (१८)

सं हि शीर्षाण्यग्रभं पौञ्जिष्ठ इव कर्वरम्.
सिन्धोर्मध्यं परेत्य व्यनिजमहेर्विषम् (१९)

केवट जिस प्रकार पतवार को ग्रहण करता है, उसी प्रकार मैं ने सर्प शीश पकड़ लिए हैं. मैं ने सिंधु के मध्य भाग से लौट कर सर्प के विष को प्रभावहीन बना दिया है. (१९)

अहीनां सर्वेषां विषं परा वहन्तु सिन्धवः.
हतास्तिरश्चिराजयो निपिष्टासः पृदाकवः (२०)

सभी नदियां सर्पों के विष को अपने जल के साथ बहा ले जाएं. तिरश्चिराजी नामक सर्प नष्ट हो गए और पृदाकू नाम के सर्प पीस डाले गए. (२०)

ओषधीनामहं वृण उर्वरीरिव साधुया. न्याम्यर्वतीरिवाहे निरैतु ते विषम् (२१)

मैं अपनी उत्तम बुद्धि के द्वारा उपजाऊ भूमि पर उगी हुई जड़ीबूटियों को स्वीकार कर के उन्हें इस प्रकार प्रेरित करता हूं, जिस प्रकार वेग वाली नदियां बहती हैं. हे सर्प! उन जड़ीबूटियों से विष समाप्त हो जाए. (२१)

यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिव्यामोषधीषु यत्.
कान्दाविषं कनक्रकं निरैत्वैतु ते विषम् (२२)

अग्नि में, सूर्य में, पृथ्वी में तथा जड़ीबूटियों में जो विष है, वह तथा कंदों का विष पूर्णतया नष्ट हो जाए. (२२)

ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां ये अप्सुजा विद्युत आबभूवुः.

येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्पेभ्यो नमसा विधेम (२३)

अग्नि, जड़ीबूटियों, जल एवं सर्पों में जो विष है तथा जिन के द्वारा भयानक कर्म हुए हैं, हम उन सभी सर्पों को हव्य द्वारा तृप्त करते हैं. (२३)

तौदी नामासि कन्या घृताची नाम वा असि.
अधस्पदेन ते पदमा ददे विषदूषणम् (२४)

हे जड़ीबूटी! तू तौदी और घृताची नाम वाली हो. नीचे की ओर किए गए अपने पैर के द्वारा मैं विष समाप्त करता हूं और सभी को वश में करता हूं. (२४)

अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय हृदयं परि वर्जय.
अधा विषस्य यत् तेजोऽवाचीनं तदेतु ते (२५)

हे रोगी! तू अपने प्रत्येक अंग से विष को टपकाता हुआ अपने हृदय की रक्षा कर विष का जो तेज है, वह अधोगति को प्राप्त हो कर नष्ट हो जाए. (२५)

आरे अभूद् विषमरौद् विषे विषमप्रागपि.
अग्निर्विषमहेर्निरधात् सोमो निरणयीत्. दंष्टारमन्वगाद् विषमहिरमृत (२६)

नवीन विष भी प्राचीन विष में मिल कर रुक गया है. इस प्रकार विष नष्ट हो चुका है. अग्नि ने सांप के विष को नष्ट कर दिया है. सोम सर्प के विष को दूर ले गया है. काटने वाले सांप को ही उस का विष प्राप्त हुआ, जिस से उस की मृत्यु हो गई. (२६)

सूक्त पांचवां — देवता—जल

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सह स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्य१ स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ.
जिष्णवे योगाय ब्रह्मयोगैर्वो युनज्मि (१)

हे जलो! तुम इंद्र के ओज, बल एवं वीर्य हो. तुम ही इंद्र को नवीन बनाने वाली शक्ति हो तथा तुम ही इंद्र के ऐश्वर्य हो. मैं तुम्हें ब्रह्म योगों से युक्त कर के विजय दिलाने वाले योग की क्षमता वाला बनाता हूं. (१)

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सह स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्य१ स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ.
जिष्णवे योगाय क्षत्रयोगैर्वो युनज्मि (२)

हे जलो! तुम इंद्र के ओज, बल एवं वीर्य हो. तुम ही इंद्र को नवीन बनाने वाली शक्ति हो तथा तुम ही इंद्र के ऐश्वर्य हो. मैं तुम्हें क्षत्रिय संबंधी योगों से युक्त कर के विजय दिलाने वाले योग की क्षमता वाला बनाता हूं. (२)

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सह स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्य१ स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ.
जिष्णवे योगायेन्द्रयोगैर्वो युनज्मि (३)

हे जलो! तुम इंद्र के ओज, बल एवं वीर्य हो. तुम ही इंद्र को नवीन बनाने वाली शक्ति एवं तुम ही इंद्र के ऐश्वर्य हो. मैं तुम्हें इंद्र संबंधी योगों से युक्त कर के विजय दिलाने वाले योग की क्षमता वाला बनाता हूं. (३)

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सह स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्य१ स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ.
जिष्णवे योगाय सोमयोगैर्वो युनज्मि (४)

हे जलो! तुम इंद्र के ओज, वीर्य एवं बल हो. तुम ही इंद्र को नवीन बनाने वाली शक्ति एवं ऐश्वर्य प्रदान करने वाले हो. मैं तुम्हें जल संबंधी योग से युक्त करता हूं, जिस से मैं विजय प्राप्त कर सकूं. (४)

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सह स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्य१ स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ.
जिष्णवे योगायाप्सुयोगैर्वो युनज्मि (५)

हे जलो! तुम इंद्र के ओज, बल एवं वीर्य हो. तुम ही इंद्र को नवीन बनाने वाली शक्ति हो एवं तुम ही इंद्र के ऐश्वर्य हो. मैं विजय प्राप्त करने वाले योग के हेतु तुम्हें अपने समीप रखना चाहता हूं. समस्त प्राणी मेरे समीप रहें. (५)

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य सह स्थेन्द्रस्य बलं स्थेन्द्रस्य वीर्य१ स्थेन्द्रस्य नृम्णं स्थ.
जिष्णवे योगाय विश्वानि मा भूतान्युप तिष्ठन्तु युक्ता म आप स्थ (६)

हे जलो! तुम अग्नि के भाग हो. जलों से मुक्त भाग को एवं दिव्य तेज को हम में धारण करो. अग्नि का भाग इस लोक के प्रजापति के तेज से युक्त हो. (६)

अग्नेर्भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (७)

हे जलो! तुम इंद्र के भाग को, जलों के वीर्य एवं दिव्य तेज को हम में स्थित करो. लोक का कल्याण करने के लिए प्रजापति का तेज हम में धारण करो. (७)

इन्द्रस्य भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (८)

हे दिव्य प्रवाह वाले जलो! तुम इंद्र के अंश हो. तेज जल का वीर्य है. तुम हम में तेज स्थापित करो. तुम प्रजापति के निवास स्थान से पधारे हो. हम तुम्हें इस लोक में निश्चित स्थान प्रदान करते हैं. (८)

सोमस्य भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (९)

हे जलो! तुम सोम के भाग हो, तुम जलों का वीर्य एवं दिव्य तेज हम में धारण

करो. लोक के कल्याण के लिए प्रजापति का तेज हम में स्थित हो. (९)

वरुणस्य भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (१०)

हे जलो! तुम वरुण के भाग हो. तुम जलों का वीर्य एवं दिव्य तेज हम में धारण करो. तुम लोक के कल्याण के लिए प्रजापति का तेज हम में स्थित हो. (१०)

मित्रावरुणयोर्भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (११)

हे जलो! तुम मित्र और वरुण के भाग हो. तुम जलों का वीर्य और दिव्य तेज हमें में धारण करो. तुम लोक के कल्याण के लिए प्रजापति का तेज हम में स्थित करो. (११)

यमस्य भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (१२)

हे जलो! तुम यम के भाग हो. तुम जलों का वीर्य और दिव्य तेज हम में धारण करो. तुम लोक कल्याण के लिए प्रजापति का तेज हम में स्थित करो. (१२)

पितृणां भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (१३)

हे जलो! तुम पितरों के भाग हो. तुम जलों का वीर्य और दिव्य तेज हम में धारण करो. लोक के कल्याण के लिए तुम हम में प्रजापति का तेज स्थित करो. (१३)

देवस्य सवितुर्भाग स्थ. अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त.
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये (१४)

हे जलो! तुम सवितादेव के भाग हो. तुम जलों का वीर्य एवं दिव्य तेज हम में धारण करो. लोक कल्याण के निमित्त तुम हम में प्रजापति का तेज स्थित करो. (१४)

यो व आपोऽपां भागोऽप्स्वऽन्तर्यजुष्यो देवयजनः. इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि.
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन
कर्मणानया मेन्या (१५)

हे जलो! तुम्हारा जो जलीय भाग यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा सेवा करने योग्य एवं देवों से संयुक्त है, उसे मैं अपने शत्रुओं की ओर भेजता हूं. वह जलीय भाग मुझे पुष्ट करे. मैं इस मंत्र से होने वाले जादूटोने के द्वारा और जलरूप वस्त्र से आच्छादित कर के उन्हें नष्ट करता हूं. (१५)

यो व आपोऽपामूर्मिरप्स्व१न्तर्यजुष्यो देवयजनः. इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि. तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या (१६)

हे जलो! तुम्हारी जो लहरें यजुर्वेद के मंत्रों से सेवा करने योग्य एवं देवों से संयुक्त हैं, मैं उन्हें अपने शत्रुओं की ओर भेजता हूं. वे लहरें मुझे पुष्ट करें. मैं इस मंत्र के द्वारा होने वाले जादूटोने से और जल की लहरों रूपी शस्त्र से आच्छादित कर के उन्हें नष्ट करता हूं. (१६)

यो व आपोऽपां वत्सोऽप्स्व१न्तर्यजुष्यो देवयजनः. इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि. तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या (१७)

हे जलो! तुम में जो जलों का वत्स है, वह यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा सेवा करने योग्य है एवं देवों से संयुक्त है. मैं उसे अपने शत्रुओं की ओर भेजता हूं. जलों के वे वत्स मुझे पुष्ट करें. मैं इस मंत्र के द्वारा होने वाले जादूटोने से और जल के वत्स रूपी शस्त्र से आच्छादित कर के उन्हें नष्ट करता हूं. (१७)

यो व आपोऽपां वृषभोऽप्स्व१न्तर्यजुष्यो देवयजनः. इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि. तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या (१८)

हे जलो! तुम में जो वृषभ अर्थात बैल है, वह यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा सेवा करने योग्य है एवं देवों से संयुक्त है. उसे मैं अपने शत्रुओं की ओर भेजता हूं. जल का वृषभ मुझे पुष्ट करे. मैं इस मंत्र के द्वारा होने वाले जादूटोने से और जल के वृषभ रूपी शस्त्र से उन्हें नष्ट करता हूं. (१८)

यो व आपोऽपां हिरण्यगर्भोऽप्स्व१न्तर्यजुष्यो देवयजनः. इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि. तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या (१९)

हे जलो! तुम्हारे मध्य जो हिरण्यगर्भ है, वह यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा सेवा करने योग्य है एवं देवों से संयुक्त है. उसे मैं अपने शत्रुओं की ओर भेजता हूं. जल का हिरण्यगर्भ अंश मुझे पुष्ट करे. मैं इस मंत्र के द्वारा होने वाले जादूटोने से और जल के हिरण्यगर्भ रूपी शस्त्र से उन्हें नष्ट करता हूं. (१९)

यो व आपोऽपामश्मा पृश्निर्दिव्योऽप्स्व१न्तर्यजुष्यो देवयजनः. इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि. तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या (२०)

हे जलो! तुम में जो दिव्य पृश्नि अश्मा है, वह यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा सेवा करने

योग्य है एवं देवों से संयुक्त है; उसे मैं अपने शत्रुओं की ओर भेजता हूं. जल का दिव्य पृश्नि अश्मा अंश मुझे पुष्ट करे. मैं इस मंत्र के द्वारा होने वाले जादूटोने से और जल के दिव्य पृश्नि अश्मा रूपी शस्त्र से उन्हें नष्ट करता हूं. (२०)

ये व आपोऽपामग्नयोऽप्स्व१न्तर्यजुष्या देवयजनाः. इदं तानति सृजामि तान् माभ्यवनिक्षि. तैस्तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. तं वधेयं तं स्तृषीयानेन ब्रह्मणानेन कर्मणानया मेन्या (२१)

हे जलो! तुम में जो अग्नियां हैं, वे यजुर्वेद के मंत्रों के द्वारा सेवा करने योग्य एवं देवों की संगति करने वाली हैं. उन्हें मैं अपने शत्रुओं की ओर भेजता हूं. जलों की अग्नियां मुझे पुष्ट करें. इस मंत्र की शक्ति से होने वाले जादूटोने के द्वारा और जल रूपी अस्त्र के द्वारा मैं अपने शत्रुओं को नष्ट करता हूं. (२१)

यदर्वाचीनं त्रैहायणादनृतं किं चोदिम.
आपो मा तस्मात् सर्वस्माद् दुरितात् पान्त्वंहसः (२२)

हम ने तीन वर्षों में जो झूठ बोला है, वह नवीन दुर्गति लाने वाला है. जल मुझे इस समस्त पाप से बचाएं. (२२)

समुद्रं वः प्र हिणोमि स्वां योनिमपीतन.
अरिष्टाः सर्वहायसो मा च नः किं चनाममत् (२३)

हे जलो! मैं तुम्हें सागर की ओर जाने की प्रेरणा देता हूं. सागर तुम्हारा उत्पत्ति स्थान है. तुम उस में मिल जाओ. सभी ओर गति वाले तुम हिंसा समाप्त करने वाले हो. हमें कोई नष्ट न करे. (२३)

अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत्.
प्रास्मदेनो दुरितं सुप्रतीकाः प्र दुष्वप्न्यं प्र मलं वहन्तु (२४)

हे शत्रुओं का विनाश करने वाले जलो! हमारे शत्रुओं का विनाश करो. तुम हमारे पाप का विनाश करो एवं बुरे स्वप्न रूपी मैल को हम से दूर कर दो. (२४)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्नितेजाः. पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (२५)

तू विश्व का पराक्रम एवं शत्रुओं का विनाश करने वाला है. तू पृथ्वी पर आश्रित एवं अग्नि का तेज है. मैं पृथ्वी पर विक्रम का प्रदर्शन करता हूं तथा पृथ्वी से उसे हटाता हूं. जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिस से द्वेष करते हैं, वह जीवित न रहे. प्राण उसे त्याग दें. (२५)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहान्तरिक्षसंशितो वायुतेजाः. अन्तरिक्षमनु वि

क्रमेऽहमन्तरिक्षात् तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (२६)

तू विश्व का पराक्रम एवं शत्रुओं का विनाश करने वाला है. तू अंतरिक्ष पर आश्रित एवं विश्व का तेज है. मैं अंतरिक्ष में पराक्रम दिखाता हूं एवं उसे अंतरिक्ष से दूर भगाता हूं. जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिससे द्वेष करते हैं, वह जीवित न रहे. प्राण उसका त्याग कर दें. (२६)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यतेजाः. दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (२७)

तू विष्णु का पराक्रम एवं शत्रुओं का विनाश करने वाला है. तू द्युलोक में आश्रित एवं सूर्य का तेज है. मैं द्युलोक में पराक्रम प्रदर्शित करता और उसे द्युलोक से बाहर निकालता हूं. जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिस से द्वेष करते हैं, वह जीवित न रहे. प्राण उसका त्याग कर दें. (२७)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा दिक्संशितो मनस्तेजाः. दिशोऽनु वि क्रमेऽहं दिग्भ्यस्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (२८)

तू विष्णु का पराक्रम एवं शत्रुओं का विनाश करने वाला है. तू दिशाओं में स्थित है एवं मन का तेज है. मैं दिशाओं में पराक्रम का प्रदर्शन करता हूं तथा दिशाओं से उसे हटाता हूं. जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिससे द्वेष करते हैं, उसका विनाश हो. प्राण उसका त्याग कर दें. (२८)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाशासंशितो वाततेजाः. आशा अनु वि क्रमेऽहमाशाभ्यस्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (२९)

तू विष्णु का पराक्रम एवं शत्रुओं का विनाश करने वाला है. तू आकाश में स्थित है एवं वायु का तेज है. मैं आकाश में पराक्रम का प्रदर्शन करता हूं और आकाश से उसे हटाता हूं. जो हम से द्वेष करते हैं अथवा हम जिन से द्वेष करते हैं, उन का विनाश हो. प्राण उन का त्याग कर दें. (२९)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नह ऋक्संशितः सामतेजाः. ऋचोऽनु वि क्रमेऽहमृग्भ्यस्तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (३०)

तू विष्णु का पराक्रम एवं शत्रु का विनाश करने वाला है. तू ऋचाओं में स्थित है. सोम तेरा तेज है. मैं आकाश के मध्य ऋचाओं में पराक्रम का प्रदर्शन करता हूं और ऋचाओं से उसे हटाता हूं. जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिस से द्वेष करते हैं, उस का विनाश हो. प्राण उस का त्याग कर दें. (३०)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा यज्ञसंशितो ब्रह्मतेजाः. यज्ञमनु वि क्रमेऽहं यज्ञात् तं निर्भजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (३१)

तू विष्णु का तेज एवं शत्रुओं का विनाश करने वाला है. तू यज्ञ में स्थित है एवं ब्रह्म का तेज है. मैं ब्रह्म में पराक्रम का प्रदर्शन करता हूं तथा ब्रह्म से उसे हटाता हूं. हम जिस से द्वेष करते हैं अथवा जो हम से द्वेष करता है, उस का विनाश हो. प्राण उस का त्याग कर दें. (३१)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहौषधीसंशितः सोमतेजाः. ओषधीरनु वि क्रमेऽहमोषधीभ्यस्तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (३२)

तुम विष्णु के पराक्रम एवं शत्रुओं का विनाश करने वाले हो. तुम ओषधि में आश्रित हो एवं सोम के तेज हो. मैं ओषधियों में अपने पराक्रम का प्रदर्शन करता हूं तथा ओषधियों से उसे हटाता हूं. मैं जिस से द्वेष करता हूं अथवा जो हम से द्वेष करता है. उस का विनाश हो. प्राण उस का त्याग करें. (३२)

विष्णो क्रमोऽसि सपत्नहाप्सुसंशितो वरुणतेजाः. अपोऽनु वि क्रमेऽहमद्भ्यस्तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (३३)

तुम विष्णु के पराक्रम एवं शत्रुओं का विनाश करने वाले हो. तुम जलों में स्थित एवं वरुण का तेज हो. मैं जलों में अपने पराक्रम का प्रदर्शन करता हूं तथा जलों से उसे हटाता हूं. मैं जिस से द्वेष करता हूं अथवा जो मुझ से द्वेष करता है, उस का विनाश हो. प्राण उस का त्याग करें. (३३)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा कृषिसंशितोऽन्नतेजाः. कृषिमनु वि क्रमेऽहं कृष्यास्तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (३४)

तुम विष्णु के पराक्रम एवं शत्रु विनाशकर्ता हो. तुम कृषि में स्थित एवं अन्न के तेज हो. मैं कृषि में अपने पराक्रम का प्रदर्शन करता हूं तथा कृषि से उसे हटाता हूं. हम जिस से द्वेष करते हैं अथवा जो हम से द्वेष करता है, उस का विनाश हो. प्राण उस का त्याग करें. (३४)

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा प्राणसंशितः पुरुषतेजाः. प्राणमनु वि क्रमेऽहं प्राणात् तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः. स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (३५)

तुम विष्णु के पराक्रम एवं शत्रुविनाशकर्ता हो. तुम प्राणों में स्थित हो एवं पुरुष तुम्हारा तेज है. हम प्राणों में अपने पराक्रम का प्रदर्शन करते हैं और उसे प्राण से दूर करते हैं. जो हम से द्वेष करता है अथवा हम जिस से द्वेष करते हैं, उस का विनाश हो. प्राण उस का त्याग कर दें. (३५)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्ठां विश्वाः पृतना अरातीः. इदमहमामुष्यायणस्यामुष्याः पुत्रस्य वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (३६)

जीते हुए पदार्थ हमारे हैं और लाए हुए सभी पदार्थ भी हमारे हैं. शत्रुओं की

सभी सेनाएं और शत्रु पराजित हो गए हैं. अमुक गोत्र में उत्पन्न एवं अमुक माता का पुत्र यह मेरा शत्रु है. मैं इस के वर्च, तेज, प्राण एवं आयु को घेरता हूं तथा इस शत्रु को पराजित करता हूं. (३६)

सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते दक्षिणामन्वावृतम्.
सा मे द्रविणं यच्छतु सा मे ब्राह्मणवर्चसम् (३७)

जो मार्ग दक्षिण में फैला हुआ है और जिसे सूर्य ने आवृत किया हुआ है, मैं उस मार्ग का अनुगमन करता हूं. यह दक्षिण दिशा मुझे धन एवं ब्रह्म तेज प्रदान करे. (३७)

दिशो ज्योतिष्मतीरभ्यावर्ते. ता मे द्रविणं यच्छन्तु ता मे ब्राह्मणवर्चसम् (३८)

मैं प्रकाश से पूर्ण दिशाओं का अनुवर्तन करता हूं. वे दिशाएं मुझे धन प्रदान करें एवं ब्रह्म तेज दें. (३८)

सप्तऋषीनभ्यावर्ते. ते मे द्रविणं यच्छन्तु ते मे ब्राह्मणवर्चसम् (३९)

मैं सप्त ऋषियों का अनुवर्तन करता हूं. वे मुझे धन प्रदान करें एवं ब्रह्म तेज दें. (३९)

ब्रह्माभ्यावर्ते. तन्मे द्रविणं यच्छतु तन्मे ब्राह्मणवर्चसम् (४०)

मैं ब्रह्म का अनुवर्तन करता हूं. वह मुझे धन प्रदान करे और ब्रह्म तेज दे. (४०)

ब्राह्मणां अभ्यावर्ते. ते मे द्रविणं यच्छन्तु ते मे ब्राह्मणवर्चसम् (४१)

मैं ब्राह्मणों के अनुकूल आचरण करता हूं. वे ब्राह्मण मुझे धन एवं ब्रह्म तेज प्रदान करें. (४१)

यं वयं मृगयामहे तं वधै स्तृणवामहै.
व्यात्ते परमेष्ठिनो ब्रह्मणापीपदाम तम् (४२)

हम जिसे खोज रहे हैं, उसे वध के साधन अर्थात आयुधों के द्वारा नष्ट करें. हम मंत्र बल से उसे परमेष्ठी अर्थात ब्रह्म की दाढ़ के नीचे डाल दें. (४२)

वैश्वानरस्य दंष्ट्राभ्यां हेतिस्तं समधादभि.
इयं तं प्सात्वाहुतिः समिद् देवी सहीयसी (४३)

वैश्वानर अर्थात अग्नि की जो दाढ़ आयुध के समान है, हम शत्रु को उस में धारण करते हैं अर्थात रखते हैं. उस शत्रु का नाश कर के अग्नि में जो समिधा डाली जाती है, वह दिव्य समिधा शत्रु को दूर भगाने में समर्थ है. (४३)

राज्ञो वरुणस्य बन्धो ऽसि. सो३मुमामुष्यायणममुष्याः
पुत्रमन्ने प्राणे बधान (४४)

तू राजा वरुण के बंधन में पड़ा है. वे इस गोत्र वाले एवं अमुक माता के पुत्र

को अन्न और प्राण के बंधन में बांधते हैं. (४४)

यत् ते अन्नं भुवस्पत आक्षियति पृथिवीमनु.
तस्य नस्त्वं भुवस्पते संप्रयच्छ प्रजापते (४५)

हे पृथ्वी के स्वामी! तुम्हारा जो अन्न पृथ्वी पर बिखरा हुआ है, वह पृथ्वी के स्वामी प्रजापति हमें प्रदान करें. (४५)

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्ष्महि.
पयस्वानग्न आगमं तं मा सं सृज वर्चसा (४६)

हे दिव्य जलो! मैं तुम से याचना करता हूं. तुम मुझे अपने रस से संयुक्त करो. हे अग्नि देव! मैं अन्न ले कर आ रहा हूं. तुम मुझे तेज से युक्त बनाओ. (४६)

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा.
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः (४७)

हे अग्नि देव! तुम मुझे तेज से युक्त करो एवं संतान प्रदान करो. समस्त देव मेरे इस भाव को जानें. ऋषियों के साथ-साथ इंद्र भी मेरे इस भाव को जानें. (४७)

यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः.
मन्योर्मनसः शरव्या३ जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान् (४८)

हे अग्निदेव! जो लोग एकत्र हो कर हमें गालियां दे रहे हैं तथा जो बोलने वाले दोष पूर्ण वाणी का उच्चारण कर रहे हैं, जो शत्रु अपने क्रोधपूर्ण हृदयों के कारण तुम्हारे बाणों के लक्ष्य बन रहे हैं, अपने ज्वाला रूप बाणों से उन के हृदयों को भेद दो. (४८)

परा शृणीहि तपसा यातुधानान् पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि.
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपः शोशुचतः शृणीहि (४९)

हे अग्निदेव! अपनी ज्वालाओं से इन राक्षसों को दूर भगा दो एवं इन्हें नष्ट कर दो. तुम अपनी लपटों से मूर्खों को दूर भगा दो. जो दूसरों के प्राणों को नष्ट कर के संतुष्ट होते हैं, तुम उन का संहार करो. (४९)

अपामस्मै वज्रं प्र हरामि चतुर्भृष्टि शीर्षभिद्याय विद्वान्.
सो अस्याङ्गानि प्र शृणातु सर्वा तन्मे देवा अनु जानन्तु विश्वे (५०)

इन मंत्रों को जानने वाला मैं इस शत्रु का सिर तोड़ने के लिए उस वज्र का प्रहार करता हूं जो जलों के चारों ओर विनाश करने वाला है, वह वज्र इस शत्रु के सभी अंगों को काट दे. मेरा यह कर्म समस्त देव अनुकूलता से जानें अर्थात

उचित समझें. (५०)

सूक्त छठा

देवता—वनस्पतिफला मणि

अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य दुर्हार्दो द्विषतः शिरः. अपि वृश्चाम्योजसा (१)

बंधुओं में जो मेरा शत्रु, दुष्ट हृदय वाला और द्वेष करने वाला है, उस का शीश भी मैं वेग से तोड़ता हूं. (१)

वर्म मह्यमयं मणिः फालाज्जातः करिष्यति.
पूर्णो मन्थेन मागमद् रसेन सह वर्चसा (२)

फाल से उत्पन्न यह मणि मेरे लिए कवच बन कर रक्षा करेगी. मंथन की सामर्थ्य एवं रस बल से युक्त होने के कारण समर्थ यह मणि मेरे पास आई है. (२)

यत् त्वा शिक्वः परावधीत् तक्षा हस्तेन वास्या.
आपस्त्वा तस्माज्जीवलाः पुनन्तु शुचयः शुचिम् (३)

कुशल बढ़ई जो तुझे औजार सहित हाथ से मारता है अर्थात छील कर तेरा निर्माण करता है, इसी कारण जीवन देने वाले एवं पवित्र जल तुझे शुद्ध करें और पवित्र बनाएं. (३)

हिरण्यस्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत्. गृहे वसतु नोऽतिथिः (४)

सुवर्ण की माला से युक्त यह मणि श्रद्धा, यज्ञ एवं तेज को धारण करती हुई हमारे घर में अतिथि बन कर निवास करे. (४)

तस्मै घृतं सुरां मध्वन्नमन्नं क्षदामहे.
स नः पितेव पुत्रेभ्यः श्रेयः श्रेयश्चिकित्सतु भूयोभूयः श्वः श्वो: देवेभ्यो मणिरेत्य (५)

हम इस अतिथि के लिए घृत, मदिरा, शहद और अन्न देते हैं. जिस प्रकार पिता पुत्र को परम कल्याण देता है, उसी प्रकार यह मणि मुझे कल्याण दे. यह मणि देवों के समीप से मेरे पास आ कर बारबार और प्रतिदिन मुझे सुख प्रदान करे. (५)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खदिरमोजसे.
तमग्निः प्रत्यमुञ्चत सो अस्मै दुह आज्यं भूयोभूयः श्वः श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (६)

यह मणि फाल से उत्पन्न, घृत टपकाने वाली, बल युक्त एवं खदिर अर्थात खैर वृक्ष की लकड़ी से बनी है. बृहस्पति ने बल प्राप्ति के लिए इसे बांधा था. अग्नि ने यह मणि मुझे दी है. हे यजमान! यह मणि तुझे बारबार और प्रतिदिन बल प्रदान करे, जिस से तू प्रतिदिन एवं बारबार शत्रुओं का विनाश कर सके. (६)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खदिरमोजसे.
तमिन्द्रः प्रत्यमुञ्चतौजसे वीर्याय कम्.
सो अस्मै बलमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (७)

यह मणि फाल से उत्पन्न, घृत टपकाने वाली, बल युक्त एवं खदिर अर्थात् खैर वृक्ष की लकड़ी से बनी है. बृहस्पति ने बल प्राप्ति के लिए इसे बांधा था. इंद्र ने बल, वीर्य और सुख प्रदान करने हेतु इस मणि को मुझे दिया है. हे यजमान! यह मणि बारबार और प्रतिदिन तुझे बल प्रदान करे. उस बल की सहायता से तू शत्रुओं का विनाश करे. (७)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खदिरमोजसे. तं सोमः प्रत्यमुञ्चत महे श्रोत्राय चक्षसे. सो अस्मै वर्च इद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (८)

बृहस्पति ने जिस फाल से उत्पन्न, घी टपकाने वाली, शक्तिशालिनी एवं खैर वृक्ष की लकड़ी से बनी मणि को बल प्राप्त करने के लिए बांधा था, उसे सोम ने महत्त्व, सुनने की शक्ति और उत्तम दृष्टि पाने के लिए मुझे प्रदान किया है. हे यजमान! यह मणि तुझे बारबार एवं प्रतिदिन तेज प्रदान करे, जिस की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर सके. (८)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खदिरमोजसे. तं सूर्यः प्रत्यमुञ्चत तेनेमा अजयद् दिशः. सो अस्मै भूतिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (९)

बृहस्पति ने फाल से उत्पन्न, घी टपकाने वाली, शक्तिशालिनी एवं खैर वृक्ष की लकड़ी से बनी मणि को बल प्राप्ति के लिए बांधा था. उसे सूर्य ने मुझे दिया था. इस से मैं ने इन सभी दिशाओं को जीत लिया था. हे यजमान! यह मणि तेरे लिए प्रतिदिन और बार-बार ऐश्वर्य प्रदान करे, जिस की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर सके. (९)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्चुतमुग्रं खदिरमोजसे.
तं बिभ्रच्चन्द्रमा मणिमसुराणां पुरोऽजयद् दानवानां हिरण्ययीः.
सो अस्मै श्रियमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (१०)

बृहस्पति ने फाल से उत्पन्न, घी टपकाने वाली, शक्तिशालिनी एवं खैर वृक्ष की लकड़ी से बनी मणि को बल प्राप्ति के लिए बांधा था. उसे धारण करते हुए चंद्रमा ने असुरों के नगरों एवं दानियों के स्वर्ण को जीत लिया था. यह मणि इस यजमान के लिए बारबार एवं प्रतिदिन श्री प्रदान करे. हे यजमान! उस की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर. (१०)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे.
सो अस्मै वाजिनं दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (११)

बृहस्पति ने जिस को यह मणि वायु के समान शीघ्र गति प्राप्त करने के लिए

बांधी, उस के लिए यह मणि प्रतिदिन एवं बारबार घोड़े प्रदान करे. हे यजमान! उन की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर. (११)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे. तेनेमां मणिना कृषिमश्विनावभि रक्षतः. स भिषग्भ्यां महो दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (१२)

बृहस्पतिदेव ने जिसे यह मणि वायु के समान शीघ्र गति प्राप्त करने के लिए बांधी, उसी मणि के द्वारा अश्विनीकुमार इस कृषि की रक्षा करें. इस ने अश्विनीकुमारों का बारबार एवं प्रतिदिन महत्त्व प्रदान किया. हे यजमान! इस मणि की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर. (१२)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे. तं बिभ्रत् सविता मणिं तेनेदमजयत् स्वः. सो अस्मै सूनृतां दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (१३)

बृहस्पतिदेव ने जिस को यह मणि वायु के समान वेग प्राप्त करने के लिए बांधी थी, उसे धारण करते हुए सवितादेव ने स्वर्ग को विजय किया. उस ने यजमान के लिए सत्य प्रदान किया. हे यजमान! इस से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर. (१३)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे. तमापो बिभ्रतीर्मणिं सदा धावन्त्यक्षिताः. सो आभ्योऽमृतमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (१४)

बृहस्पति ने वायु के समान वेग प्राप्त करने के लिए जिस को यह मणि बांधी, उस मणि को धारण करने वाले जल सदा अविनाशी हो कर दौड़ते है अर्थात बहते हैं. इस मणि ने जलों के लिए बारबार और प्रतिदिन अमृत प्रदान किया. हे यजमान! इस मणि की सहायता से तुम शत्रुओं का विनाश करो. (१४)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे. तं राजा वरुणो मणिं प्रत्यमुञ्चत शंभुवम्. सो अस्मै सत्यमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (१५)

जिस मणि को बृहस्पतिदेव ने वायु के समान वेग प्राप्त करने के लिए बांधा, उसी सुखदायी मणि को राजा वरुण ने हमें दिया है. वह मणि इस यजमान के लिए प्रतिदिन और बारबार सत्य प्रदान करे. हे यजमान! इस की सहायता से तुम अपने शत्रु का विनाश करो. (१५)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे. तं देवा बिभ्रतो मणिं सर्वांल्लोकान् युधाजयन्. स एभ्यो जितिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (१६)

बृहस्पतिदेव ने जिस मणि को वायु के समान वेग प्राप्त करने के लिए बांधा था, उसी मणि को धारण करने वाले देवों ने युद्ध के द्वारा सभी लोकों को जीत लिया. वह मणि इस यजमान के लिए विजय प्रदान करे. हे यजमान! इस की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर. (१६)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे. तमिमं देवता मणिं प्रत्यमुञ्चन्त शंभुवम्.
स आभ्यो विश्वमिद् दुहे भूयोभूय: श्व: श्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि (१७)

बृहस्पति ने वायु के समान वेग प्राप्त करने के लिए जिस मणि को बांधा, देवों ने उसी सुखदायी मणि को मुझे दिया है. इस मणि ने देवों के लिए बार-बार और प्रतिदिन सत्य प्रदान किया है. हे यजमान! इस मणि की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर. (१७)

ऋतवस्तमबध्नतार्तवास्तमबध्नत. संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति (१८)

बसंत आदि ऋतुओं ने इस मणि को बांधा और ऋतुओं से उत्पन्न चैत्र आदि मासों ने इस मणि को बांधा है. संवत्सर इसी मणि को बांध कर समस्त प्राणियों की रक्षा करता है. (१८)

अन्तर्देशा अबध्नत प्रदिशस्तमबध्नत. प्रजापतिसृष्टो मणिर्द्विषतो मेऽधरां अकः. (१९)

आग्नेय, ईशान आदि अंतर्दिशाओं ने इस मणि को बांधा तथा पूर्व आदि दिशाओं ने भी इस को बांधा. प्रजापति के द्वारा निर्मित यह मणि मेरे शत्रुओं को पराजित करे. (१९)

अथर्वाणो अबध्नताथर्वणा अबध्नत.
तैर्मेदिनो अङ्गिरसो दस्यूनां बिभिदुः पुरस्तेन त्वं द्विषतो जहि (२०)

अथर्वा ऋषियों ने इस मणि को बांधा तथा उन की संतान आथर्वणों ने भी इस मणि को बांधा. उन की अर्थात अथर्वा ऋषियों और उन की संतान की सहायता से शक्तिशाली बने अंगिरा गोत्र वालों ने लुटेरों के नगरों का विनाश कर दिया. हे यजमान! इस मणि की सहायता से तू अपने शत्रुओं को मार. (२०)

तं धाता प्रत्यमुञ्चत स भूतं व्यकल्पयत्. तेन त्वं द्विषतो जहि (२१)

इस मणि को विधाता ने हमें दिया. विधाता ने इस मणि की सहायता से समस्त प्राणियों की रचना की. हे यजमान! इस मणि की सहायता से तू अपने शत्रुओं का विनाश कर. (२१)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्. स मायं मणिरागमद् रसेन सहवर्चसा. (२२)

बृहस्पति ने असुरों का विनाश करने वाली जिस मणि को देवों के हाथों में बांधा था, वही मणि रस और तेज के साथ मेरे पास आई है. (२२)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्.
स मायं मणिरागमत् सह गोभिरजाविभिरन्नेन प्रजया सह (२३)

बृहस्पति ने असुरों का विनाश करने वाली जिस मणि को देवों के हाथों में बांधा था, वही मणि गायों, बकरियों, भेड़ों, अन्न एवं संतान के साथ मुझे प्राप्त हुई है. (२३)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्.
स मायं मणिरागमत् सह व्रीहियवाभ्यां महसा भूत्या सह (२४)

बृहस्पति ने असुरों का विनाश करने वाली जिस मणि को देवों के हाथों में बांधा था, वही मणि गेहूं, जौ एवं महान विभूति के साथ मुझे प्राप्त हुई है. (२४)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्.
स मायं मणिरागमन्मधोर्घृतस्य धारया कीलालेन मणिः सह (२५)

असुरों का विनाश करने वाली जिस मणि को बृहस्पति ने देवों के हाथों में बांधा था, वही मणि मधु एवं घृत की धाराओं तथा मदिरा की धाराओं के साथ मुझे प्राप्त हुई है. (२५)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्.
स मायं मणिरागमदूर्जया पयसा सह द्रविणेन श्रिया सह (२६)

बृहस्पति देव ने असुरों का विनाश करने वाली जिस मणि को देवों के हाथों में बांधा था, वही मणि ऊर्जा, दूध एवं शोभा के साथ मुझे प्राप्त हुई है. (२६)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्.
स मायं मणिरागमत् तेजसा त्विष्या सह यशसा कीर्त्या सह (२७)

बृहस्पति ने असुरों का विनाश करने वाली जिस मणि को देवों के हाथों में बांधा था, वही मणि तेज, प्रकाश, यज्ञ एवं कीर्ति के साथ मुझे प्राप्त हुई है. (२७)

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम्.
स मायं मणिरागमत् सर्वाभिर्भूतिभिः सह (२८)

बृहस्पति ने असुरों का विनाश करने वाली जिस मणि को देवों के हाथों में बांधा था, वही मणि मुझे समस्त विभूतियों के साथ प्राप्त हुई है. (२८)

तमिमं देवता मणिं मह्यं ददतु पुष्टये.
अभिभुं क्षत्रवर्धनं सपत्नदम्भनं मणिम्. (२९)

देव वही मणि मुझे पुष्टि के लिए प्रदान करें. वह मणि शत्रु नाशक, क्षात्र शक्ति बढ़ाने वाली एवं शत्रु का विनाश करने वाली है. (२९)

ब्रह्मणा तेजसा सह प्रति मुञ्चामि मे शिवम्.
असपत्नः सपत्नहा सपत्नान् मेऽधरां अकः (३०)

ब्रह्म तेज के साथ मैं इस मणि को धारण करता हूं. यह मणि मेरे लिए कल्याणकारी है. इस मणि का कोई शत्रु नहीं है. शत्रुघातक इस मणि ने मेरे शत्रुओं की अवनति की है. (३०)

उत्तरं द्विषतो मामयं मणिः कृणोतु देवजाः. यस्य लोका इमे त्रयः पयो दुग्धमुपासते.
स मायमधि रोहतु मणिः श्रैष्ठ्याय मूर्धतः (३१)

देवों से उत्पन्न इस मणि ने मुझे शत्रुओं की अपेक्षा उत्तम स्थिति में रखा. इस मणि से दुहे सार रूप दूध का तीनों लोक सेवन करते हैं. यह मणि मुझे श्रेष्ठ स्थान पर आरोपित करे. (३१)

यं देवाः पितरो मनुष्या उपजीवन्ति सर्वदा.
स मायमधि रोहतु मणिः श्रैष्ठ्याय मूर्धतः (३२)

देव, मनुष्य और पितर सदा जिस मणि के सहारे जीवित रहते हैं, वह मणि मुझे श्रेष्ठ स्थान पर आरोपित करे. (३२)

यथा बीजमुर्वरायां कृष्टे फालेन रोहति.
एवा मयि प्रजा पशवोऽन्नमन्नं वि रोहतु (३३)

जिस प्रकार हल के फाल से जुती हुई उपजाऊ भूमि में बीज उगता है, उसी प्रकार मुझे पुत्र, पौत्र आदि संतान, अन्न और पशु प्राप्त हों. (३३)

यस्मै त्वा यज्ञवर्धन मणे प्रत्यमुचं शिवम्.
तं त्वं शतदक्षिण मणे श्रैष्ठ्याय जिन्वतात् (३४)

हे यज्ञ बढ़ाने वाली मणि! तू कल्याणकारिणी है. मैं तुझे जिस को बांधूं, तू उस को श्रेष्ठता प्रदान कर. (३४)

एतमिध्मं समाहितं जुषाणो अग्ने प्रति हर्य होमैः.
तस्मिन् विदेम सुमतिं स्वस्ति प्रजां चक्षुः पशून्त्समिद्धे जातवेदसि ब्रह्मणा (३५)

हे अग्नि! इस मणि को प्राप्त होते हुए तुम हवनों से समृद्धि प्राप्त करो. इस प्रज्वलित अग्नि में ब्रह्म ज्ञान के द्वारा उत्तम बुद्धि, कल्याण, संतान, आंखें तथा पशुओं को प्राप्त करो. (३५)

सूक्त सातवां — देवता—स्कंभ, अध्यात्म

कस्मिन्नङ्गे तपो अस्याधि तिष्ठति कस्मिन्नङ्ग ऋतमस्याध्याहितम्.
क्व व्रतं क्व श्रद्धास्य तिष्ठति कस्मिन्नङ्गे सत्यमस्य प्रतिष्ठितम् (१)

इस मनुष्य के किस अंग में तपस्या करने की शक्ति स्थित है? इस मनुष्य के किस अंग में सत्य भाषण की क्षमता स्थित है? इस मनुष्य के किस अंग में व्रत

अर्थात दृढ़ निश्चय और श्रद्धा, किस अंग में स्थित रहती है? इस मनुष्य के किस अंग में सत्य प्रतिष्ठित है? (१)

कस्मादङ्गाद् दीप्यते अग्निरस्य कस्मादङ्गात् पवते मातरिश्वा.
कस्मादङ्गाद वि मिमीतेऽधि चन्द्रमा मह स्कम्भस्य मिमानो अङ्गम् (२)

इस परमेश्वर के किस अंग से अग्नि दीप्त होती है? इस के किस अंग से वायु चलती है? चंद्रमा का निर्माण इस के किस अंग से हुआ है? वह चंद्रमा इस विश्वाधार से किस अंग को नापता है? (२)

कस्मिन्नङ्गे तिष्ठति भूमिरस्य कस्मिन्नङ्गे तिष्ठत्यन्तरिक्षम्.
कस्मिन्नङ्गे तिष्ठत्याहिता द्यौः कस्मिन्नङ्गे तिष्ठत्युत्तरं दिवः (३)

इस परमात्मा के किस अंग में भूमि स्थित रहती है? इस के किस अंग में अंतरिक्ष होता है? यह दृढ़ द्यौ इस के किस अंग में स्थित है? ऊंचा स्वर्ग इस के किस अंग में स्थित है? (३)

क्व१ प्रेप्सन् दीप्यत ऊर्ध्वो अग्निः क्व१ प्रेप्सन् पवते मातरिश्वा.
यत्र प्रेप्सन्तीरभियन्त्यावृतः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (४)

ऊपर की ओर चलने वाली अग्नि, कहां जाने की इच्छा से प्रज्वलित होती है? वायु कहां जाने की इच्छा करती हुई चलती हैं? आवागमन के चक्कर में पड़े हुए प्राणी जहां जाने की इच्छा से गतिशील हैं, उस जगदाधार का वर्णन करो कि वह कौन है. (४)

क्वार्धमासाः क्व यन्ति मासाः संवत्सरेण सह संविदानाः.
यत्र यन्त्यृतवो यत्रार्तवाः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (५)

संवत्सर के साथ मिलते हुए अर्धमास अर्थात पक्ष एवं मास कहां चले जाते हैं? ये ऋतुएं और ऋतुओं से संबंधित पदार्थ कहां चले जाते हैं? उस परमात्मा के विषय में बताओ कि वह क्या है? (५)

क्व१ प्रेप्सन्ती युवती विरूपे अहोरात्रे द्रवतः संविदाने.
यत्र प्रेप्सन्तीरभियन्त्यापः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (६)

परस्पर विरोधी रूप वाले युवा दिन और युवती रात कहां जाने की इच्छा से एक मत हो कर जाते हैं. जल जहां जाने की इच्छा से चले आ रहे हैं, उसी परमात्मा के विषय में बताओ कि वह कौन है? (६)

यस्मिन्स्तब्ध्वा प्रजापतिर्लोकान्त्सर्वां अधारयत्.
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (७)

जिस में स्थित रह कर प्रजापति समस्त लोकों को धारण करता है, उस

परमात्मा के विषय में बताओ कि वह कौन है? (७)

यत् परममवमं यच्च मध्यमं प्रजापतिः ससृजे विश्वरूपम्.
कियता स्कम्भः प्र विवेश तत्र यन्न प्राविशत् कियत् तद् बभूव (८)

प्रजापति ने उत्तम, अधम और मध्यम के रूप में संसार की सभी वस्तुओं और प्राणियों को बनाया है. इस संसार के कितने पदार्थ प्रजापति में प्रवेश कर चुके हैं? जो प्रवेश नहीं करता, वह कौन है? (८)

कियता स्कम्भः प्र विवेश भूतं कियद् भविष्यदन्वाशयेऽस्य.
एकं यदङ्गमकृणोत् सहस्रधा कियता स्कम्भः प्र विवेश तत्र (९)

कितने पदार्थ भूतकाल में प्रवेश कर चुके हैं अर्थात नष्ट हो चुके हैं? इस के आशय अर्थात उदर में कितने पदार्थ होंगे? अर्थात भविष्य में कितने पदार्थ उत्पन्न होंगे. इस ने अर्थात परमात्मा ने अपने एक अंश को हजारों रूपों में प्रकट किया है, उस में कितने पदार्थों ने प्रवेश किया? (९)

यत्र लोकांश्च कोशांश्चापो ब्रह्म जना विदुः.
असच्च यत्र सच्चान्तः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१०)

ज्ञानी लोग जानते है कि जहां लोक और कोष निवास करते हैं तथा जहां जल एवं ब्रह्म स्थित हैं, सत्य और असत्य दोनों प्रकार के पदार्थ जहां स्थित हैं, उस परमात्मा के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१०)

यत्र तपः पराक्रम्य व्रतं धारयत्युत्तरम्.
ऋतं च यत्र श्रद्धा चापो ब्रह्म समाहिताः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (११)

जिस को आधार बना कर तपस्या का विधान किया जाता है एवं उत्तम व्रतों का निर्वाह होता है, जिस में सत्य श्रद्धा जल एवं ब्रह्म व्याप्त हैं, उस परमात्मा के विषय में बताओ कि वह कौन है? (११)

यस्मिन् भूमिरन्तरिक्षं द्यौर्यस्मिन्नध्याहिता.
यत्राग्निश्चन्द्रमाः सूर्यो वातस्तिष्ठन्त्यार्पिताः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१२)

जिस के आधार पर भूमि, आकाश और स्वर्ग टिके हुए हैं तथा अग्नि, चंद्रमा, सूर्य और वायु जिस में अर्पित हो कर स्थित है, उस परमेश्वर के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१२)

यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवा अङ्गे सर्वे समाहिताः.
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१३)

जिस के अंग में सभी तैंतीस देव समाए हुए हैं, उस परमेश्वर के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१३)

यत्र ऋषयः प्रथमजा ऋचः साम यजुर्मही.
एकर्षिर्यस्मिन्नार्पितः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१४)

पूर्ववर्ती ऋषि, ऋचाएं, साममंत्र, यजुर्वेद के मंत्र तथा महती ब्रह्मविद्या जिस में स्थित है एवं एक ऋषि जिस में समाया हुआ है, उस परमात्मा के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१४)

यत्रामृतं च मृत्युश्च पुरुषेऽधि समाहिते.
समुद्रो यस्य नाड्य१: पुरुषेऽधि समाहिताः
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१५)

जिस आदि पुरुष में अमृत और मृत्यु स्थित हैं तथा सागर जिस आदि पुरुष की नाड़ियों में समाया हुआ है, उस परमेश्वर के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१५)

यस्य चतस्रः प्रदिशो नाड्य१ स्तिष्ठन्ति प्रथमाः.
यज्ञो यत्र पराक्रान्तः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१६)

जिस आदि पुरुष के शरीर में प्रथम कल्पित पूर्व, पश्चिम आदि चार दिशाएं नाड़ियों के रूप में स्थित है तथा यज्ञ जहां पराक्रम करता है, उस परमेश्वर के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१६)

ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते विदुः परमेष्ठिनम्. यो वेद परमेष्ठिनं यश्च वेद प्रजापतिम्.
ज्येष्ठं ये ब्राह्मणं विदुस्ते स्कम्भमनुसंविदुः (१७)

जो इस आदि पुरुष में ब्रह्म को स्थित जानते हैं, वे परमेष्ठी को जानते हैं. जो परमेष्ठी एवं प्रजापति को जानता है तथा जो उत्तम ब्राह्मण को जानता है, वह परमात्मा को भलीभांति जानता है. (१७)

यस्य शिरो वैश्वानरश्चक्षुरङ्गिरसोऽभवन्.
अङ्गानि यस्य यातवः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१८)

जिस का शीश वैश्वानर अग्नि और नेत्र अंगिरस हुए, जिस के अंग ही राक्षस बने, उस परमात्मा के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१८)

यस्य ब्रह्म मुखमाहुर्जिह्वां मधुकशामुत.
विराजमूधो यस्याहुः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (१९)

ब्रह्म जिस का मुख कहा गया है, मधुकशा जिस की जीभ बताई गई है एवं विराट ऐन कहा गया है, उस ब्रह्म के विषय में बताओ कि वह कौन है? (१९)

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्.
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (२०)

जिस से ऋचाएं बनीं एवं जिस से यजुर्वेद के मंत्र बने, साम वेद के मंत्र जिस के रोम एवं अथर्व वेद के मंत्र जिस का मुख है, उस परमेश्वर के विषय में बताओ कि वह कौन है? (२०)

असच्छाखां प्रतिष्ठन्तीं परममिव जना विदुः.
उतो सन्मन्यन्तेऽवरे ये ते शाखामुपासते (२१)

असत अर्थात निराकार से उत्पन्न हुई शाखा स्थित है. मनुष्य उसी को सब से श्रेष्ठ तत्त्व मानते हैं तथा उस शाखा की उपासना करते हैं. (२१)

यत्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः. भूतं च यत्र भव्यं च सर्वे लोकाः प्रतिष्ठिताः स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (२२)

जिस में बारह आदित्य, एकादश रुद्र और आठ वसु समाए हुए हैं, उस परमेश्वर के विषय में बताओ कि वह कौन है. (२२)

यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवा निधिं रक्षन्ति सर्वदा.
निधिं तमद्य को वेद यं देवा अभिरक्षथ (२३)

तैंतीस देवता सदा जिस की निधि अर्थात खजाने की रक्षा करते हैं, हे देवो! जिस की निधि की तुम रक्षा करते हो, आज उसे कौन जानता है? (२३)

यत्र देवा ब्रह्मविदो ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते.
यो वै तान् विद्यात् प्रत्यक्षं स ब्रह्मा वेदिता स्यात् (२४)

उस ब्रह्म को जानने वाले देव ज्येष्ठ ब्रह्म की उपासना करते हैं, जो उस ब्रह्म को निश्चित रूप से जानता है, वह ब्रह्म हो सकता है. (२४)

बृहन्तो नाम ते देवा येऽसतः परि जज्ञिरे.
एकं तदङ्गं स्कम्भस्यासदाहुः परो जनाः (२५)

वे बृहत नाम के देव हैं जो असत अर्थात प्रकृति से उत्पन्न हुए हैं. लोक उन्हें श्रेष्ठ कहता है. (२५)

यत्र स्कम्भः प्रजनयन् पुराणं व्यवर्तयत्.
एकं तदङ्गं स्कम्भस्य पुराणमनुसंविदुः (२६)

जहां परमात्मा पुराण पुरुष को उत्पन्न करता हुआ विस्तृत करता है, उस परमात्मा के एक अंग को ज्ञानी जन पुराण के नाम से ही जानते हैं. (२६)

यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवा अङ्गे गात्रा विभेजिरे.
तान् वै त्रयस्त्रिंशद् देवानेके ब्रह्मविदो विदुः (२७)

जिस के शरीर के अवयवों में तैंतीस देवता अलगअलग निवास करते हैं, उन

तैंतीस देवों को केवल वे ही जानते हैं जो ब्रह्म के ज्ञाता हैं. (२७)

हिरण्यगर्भं परममनत्युद्यं जना विदुः.
स्कम्भस्तदग्रे प्रासिञ्चद्धिरण्यं लोके अन्तरा (२८)

लोग हिरण्यगर्भ को महान और श्रेष्ठ जानते हैं. परमात्मा ने ही इस संसार के मध्य उस हिरण्यगर्भ को बनाया था. (२८)

स्कम्भे लोकाः स्कम्भे तपः स्कम्भेऽध्यृतमाहितम्.
स्कम्भं त्वा वेद प्रत्यक्षमिन्द्रे सर्वं समाहितम् (२९)

उस परमात्मा में समस्त लोक, तप और ऋत अर्थात सत्य समाया हुआ है. हे परमात्मा! मैं तुझे प्रत्यक्ष रूप से जानता हूं. इंद्र में ही यह सब समाया हुआ है. (२९)

इन्द्रे लोका इन्द्रे तप इन्द्रेऽध्यृतमाहितम्.
इन्द्रं त्वा वेद प्रत्यक्षं स्कम्भे सर्वं प्रतिष्ठितम् (३०)

इंद्र में समस्त लोक, तप और ऋत अर्थात सत्य समाया हुआ है. हे इंद्र! मैं तुझे प्रत्यक्ष रूप से जानता हूं. परमात्मा में ही यह सब समाया हुआ है. (३०)

नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात् पुरोषसः.
यदजः प्रथमं संबभूव स ह तत् स्वराज्यमियाय यस्मान्नान्यत् परमस्ति भूतम् (३१)

सूर्योदय से पूर्व एवं उषा काल से पूर्व श्रद्धालु जन नाम के द्वारा नाम का हवन करते हैं अर्थात परमात्मा के नाम के द्वारा उस के महत्त्व का वर्णन करते हैं. इस प्रकार प्रयत्नशील जो अजन्मा आत्मा अर्थात भक्त परमात्मा के साथ संयोग प्राप्त करता है, वह स्वराज्य को प्राप्त करता है अर्थात जन्ममरण के बंधन से मुक्ति पा जाता है. उस परमात्मा की अपेक्षा कोई तत्त्व श्रेष्ठ नहीं है. (३१)

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्.
दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (३२)

धरती जिस के पैरों का नाम है, अंतरिक्ष जिस का उदर है तथा जिस ने स्वर्ग को अपना शीश बनाया है, उस ज्येष्ठ ब्रह्म को मेरा नमस्कार है. (३२)

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः.
अग्निं यश्चक्र आस्यं१ तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (३३)

सूर्य एवं बारबार नवीन होने वाला चंद्रमा जिस के नेत्र हैं तथा अग्नि को जिस ने अपना मुख बनाया है, उस श्रेष्ठ ब्रह्म के लिए मेरा नमस्कार है. (३३)

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसोऽभवन्.
दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (३४)

वायु जिस के प्राण और अपान तथा अंगिरस जिस के नेत्र बने थे तथा दिशाओं को जिस ने अपनी प्रज्ञा का साधन बनाया था, उस ज्येष्ठ के लिए मेरा नमस्कार है. (३४)

स्कम्भो दाधार द्यावापृथिवी उभे इमे स्कम्भो दाधारोर्व१न्तरिक्षम्.
स्कम्भो दाधार प्रदिशः षडुर्वीः स्कम्भ इदं विश्वं भुवनमा विवेश (३५)

परमात्मा ने स्वर्ग और पृथ्वी दोनों को धारण किया है. उसी ने अंतरिक्ष अर्थात आकाश को धारण किया है. उसी परमात्मा ने छः विशाल दिशाओं —अर्थात पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर और नीचे की दिशाओं को धारण किया है. वही परमात्मा इस सारे संसार में समाया हुआ है. (३५)

यः श्रमात् तपसो जातो लोकान्त्सर्वान्त्समानशे.
सोमं यश्चक्रे केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (३६)

जो तपस्या रूपी श्रम से उत्पन्न हो कर समस्त लोकों में व्याप्त रहता है तथा जिस ने एक मात्र सोमलता को ही उत्तम जड़ी बनाया है, उस श्रेष्ठ परमात्मा के लिए मेरा नमस्कार है. (३६)

कथं वातो नेलयति कथं न रमते मनः.
किमापः सत्यं प्रेप्सन्तीर्नेलयन्ति कदा चन (३७)

वायु स्थिर क्यों नहीं रहती तथा मन शांत क्यों नहीं रहता ? सत्य की अभिलाषा करते हुए जल कभी अस्थिर क्यों नहीं होते ? (३७)

महद् यक्षं भुवनस्य मध्ये तपसि क्रान्तं सलिलस्य पृष्ठे.
तस्मिञ्छ्रयन्ते य उ के च देवा वृक्षस्य स्कन्धः परित इव शाखाः (३८)

संसार के मध्य महान यक्ष, अर्थात परमात्मा है. संताप अर्थात गरमी देने वाला वह परमात्मा जल के ऊपर वर्तमान है. ऐसा सुना जाता है कि सभी देव उस में इस प्रकार व्याप्त हैं, जिस प्रकार वृक्ष की शाखाएं उस में व्याप्त रहती हैं. (३८)

यस्मै हस्ताभ्यां पादाभ्यां वाचा श्रोत्रेण चक्षुषा. यस्मै देवाः सदा बलिं प्रयच्छन्ति विमितेऽमितं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः (३९)

जिस असीमित परमात्मा के लिए देवगण हाथों, पैरों, वाणी, कानों और आंखों के द्वारा सदा उपहार प्रदान करते हैं, उसी परमात्मा के विषय में बताओ कि वह कौन है ? (३९)

अप तस्य हतं तमो व्यावृत्तः स पाप्मना.
सर्वाणि तस्मिञ्ज्योतींषि यानि त्रीणि प्रजापतौ (४०)

जो परमात्मा को जान लेता है, उस का अज्ञान मिट जाता है तथा उस का पाप

नष्ट हो जाता है. प्रजापति में जो तीन ज्योतियां हैं, वे उसे प्राप्त हो जाती हैं. (४०)

यो वेतसं हिरण्ययं तिष्ठन्तं सलिले वेद. स वै गुह्यः प्रजापतिः (४१)

जल में सोने का बेंत ठहरा हुआ है. जो इस बात को जानता है, वही गुप्त प्रजापति है. (४१)

तन्त्रमेके युवती विरूपे अभ्याक्रामं वयतः षण्मयूखम्.
प्रान्या तन्तूंस्तिरते धत्ते अन्या नाप वृञ्जाते न गमातो अन्तम् (४२)

एक दूसरे से भिन्न रूप वाली दो युवतियां लगातार घूमती हैं तथा छः खूटियों वाला एक ताना पूरती हैं. उन में से एक धागों को फैलाती है और दूसरी उन्हें संभाल कर रखती है अर्थात समेटती है. वे दोनों न विश्राम करती हैं और न अंत को प्राप्त होती हैं. तात्पर्य यह है कि रात और दिन ही वे युवतियां हैं. छः ऋतुएं छः खूंटे तथा समय ही अनंग धागा है. (४२)

तयोरहं परिनृत्यन्त्योरिव न वि जानामि यतरा परस्तात्.
पुमानेनद् वयत्युद् गृणत्ति पुमानेनद् वि जभाराधि नाके (४३)

उन नृत्य करती हुई दो स्त्रियों अर्थात दिन और रात में कौन सी दूसरी है, यह मैं नहीं जानता. उस वस्त्र को एक पुरुष बुनता है तथा दूसरा उधेड़ता है. इसे वह स्वर्ग में धारण करता है. (४३)

इमे मयूखा उप तस्तभुर्दिवं सामानि चक्रुस्तसराणि वातवे (४४)

ये खूटियां अर्थात छः ऋतुएं स्वर्ग को धारण करती है तथा वस्त्र बुनने के लिए सामवेद के मंत्रों को धागा बनाए हुए हैं. (४४)

सूक्त आठवां — देवता—अध्यात्म

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति.
स्व१र्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः (१)

जो इन भूत, भविष्य तथा वर्तमान कालों को व्याप्त कर के स्थित है तथा जिस का स्वरूप केवल प्रकाशमय है, उसी ज्येष्ठ ब्रह्म को मैं नमस्कार करता हूं. (१)

स्कम्भेनेमे विष्टभिते द्यौश्च भूमिश्च तिष्ठतः.
स्कम्भ इदं सर्वमात्मन्वद् यत् प्राणन्निमिषच्च यत् (२)

परमात्मा के द्वारा धारण की हुई भूमि और स्वर्ग अपने स्थान पर स्थित हैं. जो सांस लेते हैं और जो पलक झपकाते हैं, वे सब आत्मा के समान परमात्मा में व्याप्त है. (२)

तिस्रो ह प्रजा अत्यायमायन् न्य१न्या अर्कमभितोऽविशन्त.

बृहन् ह तस्थौ रजसो विमानो हरितो हरिणीरा विवेश (३)

तीन प्रकार की प्रजाएं अतिक्रमण करती हुई परमेश्वर को प्राप्त होती हैं. एक प्रकार की अर्थात सतोगुणी प्रजाएं सूर्य में प्रविष्ट होती हैं. दूसरे प्रकार की अर्थात रजोगुणी प्रजाएं रजोलोक को नापती हुई स्थित रहती हैं. तीसरी अर्थात तमोगुणी प्रजाएं सब का हरण करती हुई हरे रंग में अर्थात अंधकार में प्रवेश करती हैं. (३)

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत.
तत्राहतास्त्रीणि शतानि शङ्कवः षष्टिश्च खीला अविचाचला ये (४)

बारह अरे तथा तीन नेमियां एक पहिए से संबंधित हैं. बारह मास, बारह अरे तथा शीत, ग्रीष्म, वर्षा, तीन ऋतुएं तीन नेमियां हैं. ये समय रूपी पहिए में स्थित हैं. इस बात को कौन जानता है अर्थात कोई नहीं जानता. उस पहिए में तीन सौ साठ खूंटियां तथा इतनी ही कीलें लगाई गई हैं जो स्थिर हैं. वर्ष के दिन और रात ही खूंटियां और कीलें हैं. (४)

इदं सवितर्वि जानीहि षड् यमा एक एकजः.
तस्मिन् हापित्वमिच्छन्ते य एषामेक एकजः (५)

हे सविता देव! तुम यह जानो कि ये एक से एक बने हुए छः जोड़े हैं. इन में जो एकएक से बने जोड़े हैं, वे उस में समाहित होना चाहते हैं. तात्पर्य दो-दो मासों वाली छः ऋतुओं के वर्ष अथवा काल में समाहित होने से है. (५)

आविः सन्निहितं गुहा जरन्नाम महत् पदम्.
तत्रेदं सर्वमार्पितमेजत् प्राणत् प्रतिष्ठितम् (६)

प्रकट होने वाला एवं संचार करने वाला महत्त्व पद गुफा में है. यह शरीर ही गुफा है और आत्मा उस में संचार करने वाला महत्त्व पद है. वह महत्त्व पद अर्थात आत्मा गतिशील एवं सांस लेने वाला है तथा उसी में यह सारा विश्व समाहित और प्रतिष्ठित है. (६)

एकचक्रं वर्तत एकनेमि सहस्राक्षरं प्र पुरो नि पश्चा.
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं क्व१ तद् बभूव (७)

बीच की नाभि वाला एक पहिया है. इस में आगेपीछे से हजार अरे लगे हुए हैं यह पहिया लगातार चल रहा है. इस के आधे भाग से संसार उत्पन्न हुआ है तथा इस का शेष भाग कहां है? सूर्य ही एक नाभि वाला एक पहिया है. उस की हजार किरणें हजार अरे हैं. दिन उस का आधा भाग है, जिस के कारण संसार गतिशील रहता है. शेष आधा भाग अर्थात रात्रि में वह सूर्य न जाने कहां चला जाता है? (७)

पञ्चवाही वहत्यग्रमेषां प्रष्टयो युक्ता अनुसंवहन्ति.
अयातमस्य ददृशे न यातं परं नेदीयोऽवरं दवीयः (८)

इन में जो आगे चलने वाला है, वह पंचवाही (पांच के द्वारा उठाया जाने वाला). इस में जुड़े हुए घोड़े इसे ठीक से ले कर चलते हैं. इस का न आना दिखाई देता है और न जाना. यह अत्यंत दूर और अत्यधिक समीप है. तात्पर्य यह है कि प्राण, अपान पांच वायुएं जीवन को गतिशील रखती हैं. इंद्रियां ही शरीर को आगे बढ़ाने वाले घोड़े हैं. शरीर में आत्मा का आना और जाना दृष्टिगोचर नहीं होता है. यह आत्मा अत्यंत समीप और अत्यधिक दूर है. (८)

तिर्यग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्मिन् यशो निहितं विश्वरूपम्.
तदासत ऋषयः सप्त साकं ये अस्य गोपा महतो बभूवुः (९)

एक चमचा है, जिस का मुख नीचे की ओर है और जड़ अर्थात पकड़ने वाला भाग ऊपर की ओर है. उस में अनेक रूपों वाला यशस्वी छिपा हुआ है. वहां सात ऋषि एक साथ बैठे हैं. वे ही अनेक रूपों वाले के रक्षक बनें. (९)

या पुरस्ताद् युज्यते या च पश्चाद् या विश्वतो युज्यते या च सर्वतः.
यया यज्ञः प्राङ् तायते तां त्वा पृच्छामि कतमा सर्चाम् (१०)

ऋचाओं के मध्य वह कौन सी ऋचा है जो आगे से और पीछे से जुड़ी हुई है. जो चारों ओर से तथा सभी प्रकार जुड़ी हुई है. जिस की सहायता से पूर्व की ओर यज्ञ विस्तृत किया गया, मैं तुम से उसी के विषय में पूछता हूं. (१०)

यदेजति पतति यच्च तिष्ठति प्राणदप्राणन्निमिषच्च यद् भुवत्.
तद् दाधार पृथिवीं विश्वरूपं तत् संभूय भवत्येकमेव (११)

जो कांपता है, गिरता है और स्थित रहता है; जो सांस लेता है, सांस नहीं लेता तथा सत है. उसी विश्व रूप ने पृथ्वी को धारण किया है. वह सब से मिल कर एक रूप हो जाता है. (११)

अनन्तं विततं पुरुत्रानन्तमन्तवच्चा समन्ते.
ते नाकपालश्चरति विचिन्वन् विद्वान् भूतमुत भव्यमस्य (१२)

एक तत्त्व अंतहीन तथा चारों ओर विस्तृत है. दूसरा अंतहीन तथा अंत वाला है. ये दोनों परस्पर मिले हुए हैं. स्वर्ग सुख का इच्छुक उन्हें खोजता फिरता है. वही सब जानता है तथा भूत और भविष्य उसी के कर्म हैं. यहां पहला परमात्मा और दूसरा आत्मा है. (१२)

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरदृश्यमानो बहुधा वि जायते.
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं कतमः स केतुः (१३)

प्रजापति दिखाई न देता हुआ गर्भ में संचरण करता है तथा अनेक रूपों में जन्म लेता है. उस के आधे भाग से सारा विश्व उत्पन्न हुआ है. उस का शेष भाग श्रद्धा

है, वही उस की पहचान है. (१३)

ऊर्ध्वं भरन्तमुदकं कुम्भेनेवोदहार्यम्.
पश्यन्ति सर्वे चक्षुषा न सर्वे मनसा विदुः (१४)

घड़े की सहायता से कुएं के जल को ऊपर निकालते हुए को सभी आंख से देखते हैं, परंतु मन से नहीं जान पाते. (१४)

दूरे पूर्णेन वसति दूर ऊनेन हीयते.
महद् यक्षं भुवनस्य मध्ये तस्मै बलिं राष्ट्रभृतो भरन्ति (१५)

अपने को पूर्ण मानने वाले से वह बहुत दूर रहता है तथा अपने को हीन मानने वाले से भी दूर भागता है. ऐसा महान देव अर्थात परमात्मा संसार के मध्य व्याप्त है. राष्ट्र का भरणपोषण करने वाला उस की सेवा करता है. (१५)

यतः सूर्य उदेत्यस्तं यत्र च गच्छति.
तदेव मन्येऽहं ज्येष्ठं तदु नात्येति किं चन (१६)

सूर्य जहां से उदय होता है और जहां अस्त होता है, मैं उसी को सब से बड़ा मानता हूं. कोई भी उस का अतिक्रमण नहीं करता अर्थात कोई भी उस से महान नहीं है. (१६)

ये अर्वाङ् मध्य उत वा पुराणं वेदं विद्वांसमभितो वदन्ति.
आदित्यमेव ते परि वदन्ति सर्वे अग्निं द्वितीयं त्रिवृतं च हंसम् (१७)

जो पुराण, ज्ञानी एवं विद्वान उस के पीछे, बीच में अथवा चारों ओर बताते हैं, वे सब सूर्य की ही प्रशंसा करते हैं. वे अग्नि को दूसरा और हंस को तीसरा बताते हैं. (१७)

सहस्राह्ण्यं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम्.
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन् याति भुवनानि विश्वा (१८)

पाप का विनाश करने वाला यह हंस जब स्वर्ग की ओर गमन करता है तो इस के दोनों पंख हजार दिनों तक फैले रहते हैं. यह सभी देवों को अपनी छाती पर बैठा कर सारे संसार को देखता हुआ जाता है. (१८)

सत्येनोर्ध्वस्तपति ब्रह्मणार्वाङ् वि पश्यति.
प्राणेन तिर्यङ् प्राणति यस्मिञ्ज्येष्ठमधि श्रितम् (१९)

वह सत्य की सहायता से ऊपर तपता है तथा वेद मंत्रों के द्वारा नीचे की ओर देखता है. वह प्राण वायु में तिरछी सांस लेता है, उसी में वह सब से महान परमात्मा स्थित है. (१९)

यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु.

स विद्वाञ्ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद् ब्राह्मणं महत् (२०)

जो उन दोनों अणियों को जानता है, जिस के द्वारा धन का मंथन किया जाता है, वही विद्वान परमात्मा को सब से महान मानता है और वही महान वेद मंत्रों को जानता है. (२०)

अपादग्रे समभवत् सो अग्रे स्व१राभरत्.
चतुष्पाद् भूत्वा भोग्यः सर्वमादत्त भोजनम् (२१)

सब से पहले चरणहीन आत्मा उत्पन्न हुआ. उस ने आगे चल कर आनंद को अपने में पूर्ण किया. उस ने चार चरणों वाला अर्थात अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चतुर्वर्ग बन कर समस्त भोजन को स्वीकार किया अर्थात सारे भोग भोगे. (२१)

भोग्यो भवदथो अन्नमदद् बहु. यो देवमुत्तरावन्तमुपासातै सनातनम् (२२)

पहले भोग्य अर्थात भोजन करने वाला उत्पन्न हुआ. इस के पश्चात उस ने बहुत सा अन्न खाया. वही सनातन एवं श्रेष्ठ देव की उपासना करता है. वही भोग्य हुआ और अधिक मात्रा में अन्न खाने लगा जो सनातन एवं सर्वश्रेष्ठ देव परमात्मा की उपासना करता है. (२२)

सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णवः.
अहोरात्रे प्र जायेते अन्यो अन्यस्य रूपयोः (२३)

इस सूर्य को सनातन कहा गया है. वह आज भी पुनः नवीन है. उसी परमात्मा से दिन और रात उत्पन्न होते हैं जो एकदूसरे से भिन्न रूप वाले हैं. (२३)

शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदमसंख्येयं स्वमस्मिन् निविष्टम्.
तदस्य घ्नन्त्यभिपश्यत एव तस्माद् देवो रोचत एष एतत् (२४)

सौ, एक हजार, दस हजार, एक अरब एवं अनगिनती दिवस इसी सूर्य में व्याप्त हैं. वे दिवस इस के देखतेदेखते ही आघात करते हैं. इसी कारण यह देव अर्थात सूर्य इस विश्व को प्रकाशित करता है. (२४)

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नेव दृश्यते.
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया (२५)

आत्मतत्त्व एक है. यह बाल से भी सूक्ष्म होने के कारण दिखाई नहीं देता. इस आत्मा का आलिंगन करने वाला देवता अर्थात परमात्मा मुझे प्रिय है. (२५)

इयं कल्याण्य१जरा मर्त्यस्यामृता गृहे.
यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः (२६)

यह कल्याणी आत्मा वृद्धावस्था से रहित है तथा मरणशील शरीर रूपी घर में

रह कर भी अमर है. जिस आत्मा के लिए शरीर का निर्माण हुआ है, वह इस में शयन करती है. वह शरीर ही वृद्ध होता है. (२६)

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी.
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः (२७)

हे आत्मा! तू स्त्री है, तू ही पुरुष है. तू ही कुमार है और तू ही कुमारी है. वृद्ध होने पर तू ही डंडे के सहारे चलता है तथा तू ही उत्पन्न होने पर सभी ओर मुख वाला बनता है. (२७)

उतैषां पितोत वा पुत्र एषामुतैषां ज्येष्ठ उत वा कनिष्ठः.
एको ह देवो मनसि प्रविष्टः प्रथमो जातः स उ गर्भे अन्तः (२८)

इन समस्त जीवों में पिता और पुत्र के रूप में एवं बड़े और छोटे के रूप में एक ही देव है जो मन में प्रविष्ट है. वह सब से पहले उत्पन्न हुआ था. वही गर्भ में स्थित होता है. (२८)

पूर्णात् पूर्णमुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते.
उतो तदद्य विद्याम यतस्तत् परिषिच्यते (२९)

पूर्ण अर्थात परमात्मा से ही पूर्ण अर्थात समस्त विश्व अलग होता है अर्थात जन्म लेता है. उसी पूर्ण के द्वारा यह विश्व सिंचित होता है अर्थात पालन किया जाता है. आज हम उस तत्त्व को जानें, जहां से वह सींचा जाता है अर्थात जो इस विश्व का पालन करता है. (२९)

एषा सनत्नी सनमेव जातैषा पुराणी परि सर्वं बभूव.
मही देव्यु१षसो विभाती सैकेनैकेन मिषता वि चष्टे (३०)

यह सनातन शक्ति वाला आकर्षण सनातन परमात्मा के साथ ही उत्पन्न हुआ है. वही पुराण शक्ति सब कुछ बन गई है. वही महती, दिव्य शक्ति उषाओं को प्रकाशित करती है तथा वह प्रत्येक प्राणी के साथ अलगअलग दिखाई देती है. (३०)

अविर्वै नाम देवतर्तेनास्ते परीवृता.
तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः (३१)

वही रक्षा करने वाली दिव्य शक्ति है और सत्य से घिरी हुई है. उसी के रूप से वे सारे वृक्ष हरेभरे हैं और हरे पत्तों से ढके रहते हैं. (३१)

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति.
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति (३२)

समीप से आए हुए को वह छोड़ता नहीं है तथा समीप होने पर भी वह दिखाई नहीं देता है. उस देव अर्थात परमात्मा का काव्य देखो जो कभी न मरता है और न

वृद्ध होता है. (३२)

अपूर्वेणेषिता वाचस्ता वदन्ति यथायथम्.
वदन्तीर्यत्र गच्छन्ति तदाहुर्ब्राह्मणं महत् (३३)

वह परमात्मा अपूर्व है अर्थात उस से पहले कोई नहीं था. उस ने ही इन वाणियों को प्रेरित किया है जो वास्तविकता का वर्णन करती हैं. वर्णन करती हुई वाणियां जहां पहुंचती हैं, उसी को महान ब्राह्मण अर्थात वेद मंत्रों का समूह कहा गया है. (३३)

यत्र देवाश्च मनुष्याश्चारा नाभाविव श्रिताः.
अपां त्वा पुष्पं पृच्छामि यत्र तन्मायया हितम् (३४)

99

मैं जल के उस कमल के विषय में पूछता हूं, जिस में सभी मनुष्य और देव इस प्रकार आश्रित हैं, जिस प्रकार कमल में उस की पंखुड़ियां रहती हैं. माया से ढका हुआ वह कहां रहता है ? (३४)

येभिर्वात इषितः प्रवाति ये ददन्ते पञ्च दिशः सध्रीचीः.
य आहुतिमत्यमन्यन्त देवा अपां नेतारः कतमे त आसन् (३५)

जिन देवों से प्रेरित हो कर वायु चलती है तथा जो पांच परस्पर मिली हुई दिशाओं अर्थात पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऊपर को प्रदान करता है. जो देव आहुति को अत्यधिक महान मानते हैं, जलों के नेता वे देव कौन हैं. (३५)

इमामेषां पृथिवीं वस्त एकोऽन्तरिक्षं पर्येको बभूव.
दिवमेषां ददते यो विधर्ता विश्वा आशाः प्रति रक्षन्त्येके (३६)

इन में से एक इस पृथ्वी पर निवास करता है तथा अंतरिक्ष में व्याप्त रहता है, जो धारण करता है एवं इन जीवों को स्वर्ग प्रदान करता है. कुछ अर्थात शेष देव ऐसे हैं जो सभी दिशाओं की रक्षा करते हैं. (३६)

यो विद्यात् सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः.
सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात् स विद्याद् ब्राह्मणं महत् (३७)

जिस में सारी प्रजाएं पिरोई हुई हैं तथा जो इस फैले हुए सूत्र अर्थात धागे को जानता है. संसार रूपी विस्तृत सूत्र के कारण बने हुए सूत्र अर्थात परमात्मा को जो जानता है, वही महान ब्रह्म को जानता है अथवा वही विशाल वेद मंत्रों का ज्ञाता है. (३७)

वेदाहं सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः.
सूत्रं सूत्रस्याहं वेदाथो यद् ब्राह्मणं महत् (३८)

मैं उस विस्तृत धागे अर्थात परमात्मा को जानता हूं, जिस में ये सारी प्रजाएं पिरोई हुई हैं. मैं इस संसार रूपी विस्तृत सूत्र के मूल कारण को जानता हूं, जो महान ब्रह्म अथवा विशाल वेद मंत्रों का समूह हैं. (३८)

यदन्तरा द्यावापृथिवी अग्निरैत् प्रदहन् विश्वदाव्यः.
यत्रातिष्ठन्नेकपत्नीः परस्तात् क्वे वासीन्मातरिश्वा तदानीम् (३९)

इस संसार को जलाने वाली अग्नि द्यावा और पृथ्वी के मध्य आती है. वहीं पोषण करने वाली देवियां निवास करती हैं. उस समय मातारिश्वा अर्थात वायु कहां रहती है? (३९)

अप्स्वा सीन्मातरिश्वा प्रविष्टः प्रविष्टा देवाः सलिलान्यासन्.
बृहन् ह तस्थौ रजसो विमानः पवमानो हरित आ विवेश (४०)

उस समय वायु जलों में प्रविष्ट थी तथा देवगण भी जलों में ही प्रवेश किए हुए थे. पृथ्वी का निर्माण करने वाला महान ब्रह्म उस समय कहां स्थित था? उस समय वायु ने दिशाओं में प्रवेश किया. (४०)

उत्तरेणेव गायत्रीममृतेऽधि वि चक्रमे.
साम्ना ये साम संविदुरजस्तद् ददृशे क्व (४१)

जो साम मंत्रों के द्वारा परमात्मा को जानने वाले हैं, उन्होंने अंत में गायत्री रूप अमृत में प्रवेश किया. वह अजन्मा कहां दिखाई दिया था अर्थात कहीं नहीं. (४१)

निवेशनः संगमनो वसूनां देव इव सविता सत्यधर्मा.
इन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् (४२)

सत्य धर्म वाले सविता उसी दिव्य परमात्मा के समान हैं. वे ही समस्त धनों के संगम हैं अर्थात पुण्यात्मा जन उन्हीं में प्रवेश करते हैं. धनों के समूह में अर्थात पुण्यात्माओं में इंद्र प्रवेश नहीं करते. (४२)

पुण्डरीकं नवद्वारं त्रिभिर्गुणेभिरावृतम्.
तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः (४३)

नौ द्वारों वाला कमल तीनों अर्थात रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण से घिरा हुआ है. उस में जो आत्मा वाला दिव्य दल है, उसे ब्रह्मज्ञानी जानते हैं. (४३)

अकामो धीरो अमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः.
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् (४४)

वह परमात्मा कामना रहित, धीर, मरण रहित, स्वयं उत्पन्न होने वाला तथा रस से तृप्त है. वह कहीं से भी कम नहीं है अर्थात सर्वथा पूर्ण है. उसी धीर, जरा अर्थात

वृद्धावस्था से रहित तथा युवा आत्मा को जानने वाला मृत्यु से नहीं डरता. (४४)

सूक्त नौवां देवता—शतौदना गौ

अघायतामपि नह्या मुखानि सपत्नेषु वज्रमर्पयैतम्.
इन्द्रेण दत्ता प्रथमा शतौदना भ्रातृव्यघ्नी यजमानस्य गातुः (१)

यह धेनु पापियों के मुखों को बंद करे और शत्रुओं पर इस वज्र को गिराए. इंद्र के द्वारा दी हुई यह सब से पहली शतौदना गाय शत्रु विनाशिनी एवं यजमान का मार्गदर्शन करने वाली है. (१)

वेदिष्टे चर्म भवतु बर्हिर्लोमानि यानि ते.
एषा त्वा रशनाग्रभीद् ग्रावा त्वैषोऽधि नृत्यतु (२)

हे शतौदना गौ! तेरे रोम कुशों के रूप में हैं और यज्ञ वेदी तेरा चर्म है. यह रस्सी तुझे बांध रही है. यह पत्थर तेरे ऊपर नृत्य करे. (२)

बालास्ते प्रोक्षणीः सन्तु जिह्वा सं माष्ट्वघ्न्ये.
शुद्धा त्वं यज्ञिया भूत्वा दिवं प्रेहि शतौदने (३)

हे हिंसा के अयोग्य गौ! तेरे बाल यज्ञ का प्रोक्षणी नामक पात्र बनें तथा तेरी जीभ यज्ञ वेदी का मार्जन करे अर्थात सफाई करे. हे शतौदना गौ! तू इस प्रकार शुद्ध और यज्ञ के योग्य बन कर स्वर्ग को गमन कर. (३)

यः शतौदनां पचति कामप्रेण स कल्पते.
प्रीता ह्यस्यर्त्विजः सर्वे यन्ति यथायथम् (४)

जो शतौदना गौ का पालन करता है, वह अपनी कामनाएं पूर्ण करता है. उस के संतुष्ट हुए सभी ऋत्विज जहां से आते हैं, वहीं चले जाते हैं. (४)

स स्वर्गमा रोहति यत्रादस्त्रिदिवं दिवः.
अपूपनाभिं कृत्वा यो ददाति शतौदनाम्. (५)

वह उस स्वर्ग में पहुंचता है जो अंतरिक्ष में स्थित है तथा जो पुए बना कर शतौदना गौ को देता है. (५)

स तांल्लोकान्त्समाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः.
हिरण्यज्योतिषं कृत्वा यो ददाति शतौदनाम् (६)

जो स्वर्ण से अलंकृत कर के शतौदना गौ का दान करता है, वह उन लोकों को प्राप्त करता है जो दिव्य एवं पार्थिव अर्थात पृथ्वी से संबंधित हैं. (६)

ये ते देवि शमितारः पक्तारो ये च ते जनाः.

ते त्वा सर्वे गोप्स्यन्ति मैभ्यो भैषी: शतौदने (७)

हे शतौदना गौ! तेरी शांति करने वाले एवं तेरे पालन कर्ता तेरे रक्षक होंगे. तू उन से भयभीत मत हो. (७)

वसवस्त्वा दक्षिणत उत्तरान्मरुतस्त्वा.
आदित्या: पश्चाद् गोप्स्यन्ति साग्निष्टोममति द्रव (८)

हे शतौदना गौ! आठ वसु, दक्षिण की ओर, उनन्चास मरुत उत्तर की ओर तथा आदित्य पीछे से तेरी रक्षा करेंगे. तू अग्निष्टोम यज्ञ के पार जा. (८)

देवा: पितरो मनुष्या गन्धर्वाप्सरसश्च ये.
ते त्वा सर्वे गोप्स्यन्ति सातिरात्रमति द्रव (९)

हे शतौदना गौ! देव, पितर, मनुष्य, गंधर्व, और अप्सराएं—ये सभी तेरी रक्षा करेंगे. तू अतिशय नामक यज्ञ कर्म के पार जा. (९)

अन्तरिक्षं दिवं भूमिमादित्यान् मरुतो दिश:.
लोकान्त्स सर्वानाप्नोति यो ददाति शतौदनाम् (१०)

जो शतौदना गौ का दान करता है, वह अंतरिक्ष को, स्वर्ग को, भूमि को, आदित्यों को, मरुतों को, दिशाओं को तथा सभी लोकों को प्राप्त करता है. (१०)

घृतं प्रोक्षन्ती सुभगा देवी देवान् गमिष्यति.
पक्तारमघ्न्ये मा हिंसीर्दिवं प्रेहि शतौदने (११)

घी टपकाती हुई, सौभाग्य शालिनी एवं दिव्य गुण युक्त शतौदना गौ देवों के समीप जाएगी. हे हिंसा के अयोग्य शतौदना गौ! तू अपने पालने वाले की हिंसा मत कर और स्वर्ग को जा. (११)

ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये ये चेमे भूम्यामधि.
तेभ्यस्त्वं धुक्ष्व सर्वदा क्षीरं सर्पिरथो मधु (१२)

हे शतौदना गौ! जो देव स्वर्ग में स्थित हैं, जो अंतरिक्ष में हैं एवं जो पृथ्वी पर निवास करते हैं, तू उन के लिए सदा मीठा दूध, दही और घी प्रदान कर. (१२)

यत् ते शिरो यत् ते मुखं यौ कर्णौ ये च ते हनू.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (१३)

हे शतौदना गौ! तेरा जो शीश, तेरा जो मुख, तेरे जो दो कान एवं तेरी ठोड़ी है—ये सब अंग तेरे दानदाता को दही, मधुर दूध एवं घी देते रहें. (१३)

यौ त ओष्ठौ ये नासिके ये शृङ्गे ये च तेऽक्षिणी.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (१४)

हे शतौदना गौ! तेरे जो दोनों होंठ, तेरी नाक, तेरे जो दोनों सींग तथा जो दोनों आंखें हैं, वे तेरे दानदाता को सदा दही, मधुर दूध एवं घी देते रहें. (१४)

यत् ते क्लोमा यद् हृदयं पुरीतत् सहकण्ठिका.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (१५)

हे शतौदना गौ! तेरा क्लोम, हृदय, मलाशय और गला तेरे दानदाता को सदा दही, मधुर दूध और घी देते रहें. (१५)

यत् ते यकृद् ये मतस्ने यदान्त्रं याश्च ते गुदाः.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (१६)

हे शतौदना गौ! तेरा जिगर, तेरी आंतें तथा तेरी गुदा तेरे दानदाता को सदा दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (१६)

यस्ते प्लाशियों वनिष्ठुर्यौ कुक्षी यच्च चर्म ते.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (१७)

हे शतौदना गौ! तेरी जो तिल्ली, गुदा, दोनों आंखें और तेरा चमड़ा है, ये सब तेरे दानदाता को सदा दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (१७)

यत् ते मज्जा यदस्थि यन्मांसं यच्च लोहितम्.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (१८)

हे शतौदना गौ! तेरी चर्बी, तेरी हड्डियां, मांस और रक्त तेरे दानदाता को सदा दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (१८)

यौ ते बाहू ये दोषणी यावंसौ या च ते ककुत्.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (१९)

हे शतौदना गौ! तेरी दोनों भुजाएं, दोनों पिंडलियां, दोनों कंधे और ठाट तेरे दानदाता को सदा दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (१९)

यास्ते ग्रीवा ये स्कन्धा याः पृष्टीर्याश्च पर्शवः.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (२०)

हे शतौदना गौ! तेरी जो गरदन, तेरे जो कंधे, जो पीठ और जो पसलियां हैं, वे तेरे दानदाता को सदा दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (२०)

यौ त ऊरू अष्ठीवन्तौ ये श्रोणी या च ते भसत्.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (२१)

हे शतौदना गौ! तेरे पैर, तेरे घुटने, तेरे कूल्हे और प्रजनन अंग सदा तेरे दानदाता को दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (२१)

यत् ते पुच्छं ये ते बाला यदूधो ये च ते स्तनाः.

आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (२२)

हे शतौदना गौ! तेरी जो पूंछ, तेरे जो बाल, तेरा जो ऐन एवं जो थन हैं, वे तेरे दानदाता को सदा दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (२२)

यास्ते जङ्घा याः कुष्ठिका ऋच्छरा ये च ते शफाः.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (२३)

हे शतौदना गौ! तेरी जो जंघाएं, जो घुटने, कूल्हे और खुर हैं, वे सदा तेरे दानदाता को दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (२३)

यत् ते चर्म शतौदने यानि लोमान्यघ्न्ये.
आमिक्षां दुहतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु (२४)

हे शतौदना गौ! तेरा जो चमड़ा है, हे हिंसा के अयोग्य! तेरे जो बाल हैं, वे सदा तेरे दानदाता को दही, मीठा दूध और घी देते रहें. (२४)

क्रोडौ ते स्तां पुरोडाशावाज्येनाभिघारितौ.
तौ पक्षौ देवि कृत्वा सा पक्तारं दिवं वह (२५)

हे शतौदना गौ! तेरे पिछले दोनों भाग घी से सिंचित हैं एवं पुरोडाश हैं. हे देवी! उन्हें पंख बना कर तू पालनकर्ता को स्वर्ग में ले जा. (२५)

उलूखले मुसले यश्च चर्मणि यो वा शूर्पे तण्डुलः कणः.
यं वा वातो मातरिश्वा पवमानो ममाथाग्निष्टद्धोता सुहुतं कृणोतु (२६)

जो ओखली और मूसल हैं, जो चमड़े, जो सूप, चावल और चावलों के टूटे हुए भाग हैं तथा जिन को पवित्र करने वाली वायु ने मथा है, उन्हें होता अग्नि की उत्तम आहुति बनाएं. (२६)

अपो देवीर्मधुमतीर्घृतश्चुतो ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि.
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहं तन्मे सर्वं सं पद्यतां वयं स्याम पतयो रयीणाम् (२७)

मधु से युक्त एवं घी टपकाने वाले जल हम ब्राह्मणों के हाथों में अलग-अलग डालते हैं. जिस कामना से हम ब्राह्मणों के हाथों को धुलाते हैं, हमारी वह कामना पूर्ण हो तथा हम धनों के स्वामी बनें. (२७)

सूक्त दसवां देवता—वशा गौ

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः.
बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः (१)

हे हिंसा न करने योग्य गौ! तुझ जन्म लेती हुई को एवं उत्पन्न होती हुई को नमस्कार है. तेरे बालों के लिए, खुरों के लिए तथा रूप के लिए नमस्कार है. (१)

यो विद्यात् सप्त प्रवतः सप्त विद्यात् परावतः.
शिरो यज्ञस्य यो विद्यात् स वशां प्रति गृह्णीयात् (२)

जो वशा गौ के समीप रहने वाली सात वस्तुओं और दूर रहने वाली सात वस्तुओं को जानता हो तथा यज्ञ का शीश जानता हो, वही वशा गौ का दान स्वीकार करे. (२)

वेदाहं सप्त प्रवतः सप्त वेद परावतः.
शिरो यज्ञस्याहं वेद सोमं चास्यां विचक्षणम् (३)

मैं वशा गौ के समीप रहने वाली सात वस्तुओं और दूर रहने वाली सात वस्तुओं को जानता हूं. मैं यज्ञ के शीश को जानता हूं तथा वशा गौ में होने वाले प्रकाशशील सोम को भी जानता हूं. (३)

यया द्यौर्यया पृथिवी ययापो गुपिता इमाः.
वशां सहस्त्रधारां ब्रह्मणाच्छावदामसि (४)

जिस के द्वारा द्यौ, जिस के द्वारा पृथ्वी तथा जिस के द्वारा ये जल सुरक्षित हैं, दूध की हजार धाराएं बहाने वाली वशा की हम वेद मंत्रों द्वारा प्रशंसा करते हैं (४)

शतं कंसाः शतं दोग्धारः शतं गोप्तारो अधि पृष्ठे अस्याः.
ये देवास्तस्यां प्राणन्ति ते वशां विदुरेकधा (५)

इस वशा गौ की पीठ पर दुग्ध पात्र लिए हुए सौ दूध काढ़ने वाले एवं सौ रक्षक हैं. जो देव इस गौ के कारण सांस लेते हैं अर्थात जीवित हैं, एक मात्र वे ही इस गौ को जानते हैं. (५)

यज्ञपदीराक्षीरा स्वधाप्राणा महीलुका. वशा पर्जन्यपत्नी देवां अप्येति ब्रह्मणा (६)

जिस वशा गौ को यज्ञ में स्थान प्राप्त है, जो अत्यधिक दूध देती है, स्वधा जिस के प्राण हैं तथा जो धरती पर परम प्रसिद्ध है, उस का वर्षा के कारण उत्पन्न घास से पालनपोषण होता है वह वशा गौ यज्ञ के द्वारा देवों को तृप्त करती है. (६)

अनु त्वाग्निः प्राविशदनु सोमो वशे त्वा.
ऊधस्ते भद्रे पर्जन्यो विद्युतस्ते स्तना वशे (७)

हे वशा गौ! अग्नि ने तुझ में प्रवेश किया था तथा सोम भी तुझ में प्रविष्ट हुआ था. पर्जन्य अर्थात बादल ने तेरे एन में और बिजली ने तेरे थनों में निवास किया था. (७)

अपस्त्वं धुक्षे प्रथमा उर्वरा अपरा वशे. तृतीयं राष्ट्रं धुक्षेऽन्नं क्षीरं वशे त्वम् (८)

हे वशा गौ! सब से पहले तू जलों को दोहन के रूप में प्रदान करती है. इस के पश्चात भूमि को उपजाऊ बना कर हमें अन्न देती है. तीसरे तू राष्ट्र को शक्तिरूपी क्षीर प्रदान करती है. (८)

यदादित्यैर्हूयमानोपातिष्ठ ऋतावरि. इन्द्रः सहस्रं पात्रान्त्सोमं त्वापाययद् वशे (९)

हे ऋतावरी अर्थात दूध देने वाली गौ! तू आदित्यों द्वारा बुलाए जाने पर समीप आई थी. हे वशा गौ! तब इंद्र ने हजारों पात्र ले कर तुझे सोमरस पिलाया था. (९)

यदनूचीन्द्रमैरात् त्व ऋषभो ऽह्वयत्.
तस्मात् ते वृत्रहा पयः क्षीरं क्रुद्धो हरद् वशे (१०)

हे वशा गौ! जब तू अनुकूल बन कर इंद्र के समीप जाती है, तब बैल तुझे समीप से बुलाता है. इस कारण इंद्र क्रोधित हो कर तेरे मधुर दूध को दुहता है. (१०)

यत् ते क्रुद्धो धनपतिरा क्षीरमहरद् वशे. इदं तदद्य नाकस्त्रिषु पात्रेषु रक्षति (११)

हे वशा गौ! जब क्रोध में भरा हुआ धनपति अर्थात कुबेर तेरा दूध लेता है, तो उसे स्वर्ग तीन पात्रों में सुरक्षित रखता है. (११)

त्रिषु पात्रेषु तं सोममा देव्य हरद् वशा.
अथर्वा यत्र दीक्षितो बर्हिष्यास्त हिरण्यये (१२)

जहां दीक्षा धारण करने वाला अथर्ववेदी यजमान स्वर्णमय कुशों के आसन पर बैठा था, वहां दिव्य गुणों वाली वशा गौ ने तीन पात्रों में सोमरस को भर दिया. (१२)

सं हि सोमेनागत समु सर्वेण पद्वता.
वशा समुद्रमध्यष्ठाद् गन्धर्वैः कलिभिः सह (१३)

वह वशा गौ चरणों वाले सभी मनुष्यों के साथ सोमरस ले कर आई. वह गौ कलह करने वाले गंधर्वों के साथ सागर में प्रतिष्ठा पाती रही. (१३)

सं हि वातेनागत समु सर्वैः पतत्रिभिः.
वशा समुद्रे प्रानृत्यदृचः सामानि बिभ्रती (१४)

ऋचाओं और सामवेद के मंत्रों को धारण करती हुई वशा गौ सभी पक्षियों के साथ वायु के पास गई और सागर पर नृत्य करने लगी. (१४)

सं हि सूर्येणागत समु सर्वेण चक्षुषा.
वशा समुद्रमत्यख्यद् भद्रा ज्योतींषि बिभ्रती (१५)

सभी नेत्रों के साथ वशा गौ सूर्य से मिली. कल्याणकारिणी उस गौ ने प्रकाश को धारण करते हुए सागर से भी अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की. (१५)

अभीवृता हिरण्येन यदतिष्ठ ऋतावरि.
अश्वः समुद्रो भूत्वाध्यस्कन्दद् वशे त्वा (१६)

हे ऋतावरी अर्थात अधिक मात्रा में दूध देने वाली गौ! तू जब सोने के आभूषणों से ढकी हुई खड़ी थी, तो हे वशा गौ! सागर घोड़ा बन कर अर्थात घोड़े के समान तेज चाल से तेरे समीप आ गया था. (१६)

तद् भद्राः समगच्छन्त वशा देष्ट्र्यथो स्वधा.
अथर्वा यत्र दीक्षितो बर्हिष्यास्त हिरण्यये (१७)

यज्ञ में दीक्षित अथर्व वेद के मंत्रों का ज्ञाता ब्राह्मण जहां स्वर्णमय कुशों के आसन पर बैठता है, वहां भद्र पुरुष अथवा कल्याणकारी तत्त्व एकत्र होते हैं, वहां वशा गौ अन्न देने वाली एवं यज्ञ के साधन के रूप में उपस्थित होती है. (१७)

वशा माता राजन्यस्य वशा माता स्वधे तव.
वशाया यज्ञ आयुधं ततश्चित्तमजायत (१८)

हे वशा गौ! तू क्षत्रिय की माता है. हे स्वधा अर्थात अन्न! वशा गौ तेरी माता है. यज्ञ वशा गौ का आयुध है. वशा गौ में ही चित्त अर्थात बुद्धि उत्पन्न हुई है. (१८)

ऊर्ध्वो बिन्दुरुदचरद् ब्रह्मणः ककुदादधि.
ततस्त्वं जज्ञिषे वशे ततो होताजायत (१९)

ब्रह्म के ककुद अर्थात ऊपर वाले भाग से एक बूंद उछली. हे वशा गौ! तू उसी बूंद से उत्पन्न हुई है तथा उसी बूंद से हवन करने वाले होता उत्पन्न हुए हैं. (१९)

आस्नस्ते गाथा अभवन्नुष्णिहाभ्यो बलं वशे.
पाजस्याज्जज्ञे यज्ञ स्तनेभ्यो रश्मयस्तव (२०)

हे वशा गौ! तेरे मुख से गाथाएं उत्पन्न हुईं तथा तेरी गरदन से बल की उत्पत्ति हुई. तेरे ऐन से यज्ञ उत्पन्न हुआ तथा तेरे थनों से किरणें उत्पन्न हुईं. (२०)

ईर्माभ्यामयनं जातं सक्थिभ्यां च वशे तव.
आन्त्रेभ्यो जज्ञिरे अत्रा उदरादधि वीरुधः (२१)

हे वशा गौ! तेरे बाहुओं अर्थात अगली टांगों और पिछले पैरों से तेरा चलना होता है. तेरी आंतों से अनेक पदार्थ उत्पन्न हुए तथा तेरे पेट से वृक्ष उत्पन्न हुए. (२१)

यदुदरं वरुणस्यानुप्राविशथा वशे.
ततस्त्वा ब्रह्मोदह्वयत् स हि नेत्रमवेत् तव (२२)

हे वशा गौ! वरुण के उदर में तेरा प्रवेश हुआ. इस के पश्चात ब्रह्म ने तेरा आह्वान किया. वही तेरा नेत्र जानता है. (२२)

सर्वे गर्भादवेपन्त जायमानादसूस्वः.
ससूव हि तामाहुर्वशेति ब्रह्मभिः क्लृप्तः स ह्यस्या बन्धुः (२३)

प्राणहीन उत्पन्न होने वाले गर्भ से सभी कांपने लगे. उस ने कहा कि हे वशा तू बच्चे को जन्म दे. ब्राह्मणों ने उसी को वशा का बंधु निश्चित किया. (२३)

युध एकः सं सृजति यो अस्या एक इद् वशी.
तरांसि यज्ञा अभवन् तरसां चक्षुरभवद् वशा (२४)

एक योद्धा इस के समीप आता है जो एक मात्र एक गौ को वश में करने वाला है. यज्ञ ही पार करने वाले बने. वशा गौ ही पार करने वालों की आंख बनी. अर्थात वशा गौ के पीछे चल कर ही सब ने दुख को पार किया. (२४)

वशा यज्ञं प्रत्यगृह्णाद् वशा सूर्यमधारयत्.
वशायामन्तरविशदोदनो ब्रह्मणा सह (२५)

वशा गौ ने यज्ञ को स्वीकार किया तथा सूर्य को धारण किया. ब्रह्म अर्थात ज्ञान के साथ ओदन अर्थात भात वशा गौ में प्रविष्ट हुआ. (२५)

वशामेवामृतमाहुर्वशां मृत्युमुपासते.
वशेदं सर्वमभवद्देवा मनुष्या३ असुराः पितर ऋषयः (२६)

वशा गौ को ही अमृत कहा गया है. मृत्यु समझ कर भी वशा गौ की उपासना की जाती है. वशा ही यह सब हुई जैसे—देव, मनुष्य, असुर, पितर और ऋषि. (२६)

य एवं विद्यात् स वशां प्रति गृह्णीयात्.
तथा हि यज्ञः सर्वपाद् दुहे दात्रेऽनपस्फुरन् (२७)

जो इस बात को जानता है, वही वशा गौ का दान स्वीकार करेगा. यज्ञ सभी चरणों से गति करता हुआ अर्थात स्थिर हो कर वशा गौ का दान देने वाले को सभी पुण्य फल प्रदान करता है. (२७)

तिस्रो जिह्वा वरुणस्यान्तर्दीद्यत्यासनि.
तासां या मध्ये राजति सा वशा दुष्प्रतिग्रहा (२८)

वरुण के मुख में तीन जिह्वाएं दीप्त हैं. उन के मध्य में जो विराजमान है, वही वशा है. उस को दान के रूप में स्वीकार करना कठिन काम है. (२८)

चतुर्धा रेतो अभवद् वशायाः.
आपस्तुरीयममृतं तुरीयं यज्ञस्तुरीयं पशवस्तुरीयम् (२९)

वशा गौ का वीर्य अर्थात बल चार भागों में विभाजित हुआ. जल, अमृत, यज्ञ और पशु उस के चौथे भाग हैं. (२९)

वशा द्यौर्वशा पृथिवी वशा विष्णुः प्रजापतिः.
वशाया दुग्धमपिबन्त्साध्या वसवश्च ये (३०)

वशा गौ द्यौ, पृथ्वी, विष्णु और प्रजापति हैं. जो साध्य और वायु हैं, उन्होंने वशा गौ का दूध पिया. (३०)

वशाया दुग्धं पीत्वा साध्या वसवश्च ये.
ते वै ब्रध्नस्य विष्टपि पयो अस्या उपासते (३१)

जो साध्य और वसु थे, वे वशा गौ का दूध पी कर स्वर्ग के स्थान में पहुंचे और सदा वशा गौ का दूध पीते हैं. (३१)

सोममेनामेके दुह्रे घृतमेक उपासते.
य एवं विदुषे वशां ददुस्ते गतास्त्रिदिवं दिवः (३२)

कुछ ने इस वशा गौ से सोम का दोहन किया. कुछ ने इस के घृत की उपासना की अर्थात घृत प्राप्त किया. जो इस प्रकार जानने वाले को वशा गौ का दान करते हैं, वे देवों के स्वर्ग में जाते हैं. (३२)

ब्राह्मणेभ्यो वशां दत्त्वा सर्वांल्लोकान्त्समश्नुते.
ऋतं ह्यस्यामार्पितमपि ब्रह्माथो तपः (३३)

मनुष्य ब्राह्मणों को वशा गौ दे कर सभी लोकों का सुख भोगता है. वशा गौ में सत्य, ज्ञान एवं तप आश्रित है. (३३)

वशां देवा उप जीवन्ति वशां मनुष्या उत.
वशेदं सर्वमभवद् यावत् सूर्यो विपश्यति (३४)

देवगण एवं मनुष्य वशा गौ के सहारे जीवित रहते हैं. जहां तक सूर्य का प्रकाश है, वहां तक यह वशा गौ ही है. (३४)

101

ग्यारहवां कांड

सूक्त पहला

देवता—ब्रह्मौदन

अग्ने जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रह्मौदनं पचति पुत्रकामा.
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वा मन्थन्तु प्रजया सहेह (१)

हे अग्नि देव! तुम अरणि मंथन से उत्पन्न हुए हो. यह देव माता अदिति पुत्र की कामना से इस ब्रह्मौदनासव नामक कर्म में ब्राह्मणों को खिलाने के हेतु भात पकाना चाहती है. मरीच आदि सप्त ऋषि पृथ्वी आदि को बनाने वाले हैं. वे इस देवयज्ञ में मंथन के द्वारा तुम्हें यजमान के पुत्र, पौत्र आदि के साथ उत्पन्न करें. (१)

कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽद्रोघाविता वाचमच्छ.
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून् (२)

हे कामना पूर्ण करने वाले एवं जगत के मित्र सप्त ऋषियो! तुम अरणि मंथन के द्वारा धुआं उत्पन्न करो. ये अग्निदेव स्तुति रूपी ऋचाएं सुन कर उत्तम चरित्र वाले यजमानों की शत्रुओं से रक्षा करते हैं. देवों सहित ये अग्नि देवशत्रु सेनाओं को पराजित करते हैं. अग्नि की सहायता से देवों ने राक्षसों को पराजित किया था. (२)

अग्नेऽजनिष्ठा महते वीर्याय ब्रह्मौदनाय पक्तवे जातवेदः.
सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वाजीजनन्नस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ (३)

हे उत्पन्न होने वाले प्राणियों के ज्ञाता अग्निदेव! तुम परम सामर्थ्य के लिए अरणि मंथन से उत्पन्न होते हो. पृथ्वी आदि की रचना करने वाले सप्त ऋषियों ने तुम्हें ब्रह्मौदन पकाने के लिए उत्पन्न किया था. तुम इस पत्नी को पुत्र, पौत्र आदि वीरों से युक्त धन प्रदान करो. (३)

समिद्धो अग्ने समिधा सामिध्यस्व विद्वान् देवान् यज्ञियां एह वक्षः.
तेभ्यो हविः श्रपयञ्जातवेद उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् (४)

हे प्रज्वलित अग्नि! तुम समिधाओं के द्वारा अधिक दीप्त बनो एवं यज्ञ के योग्य देवों को जानते हुए उन्हें यहां लाओ. हे जातवेद अग्नि! उन देवों के निमित्त ब्रह्मौदन

रूपी हवि पकाते हुए तुम इस यजमान को उत्तम स्वर्ग लोक में पहुंचाओ. (४)

त्रेधा भागो निहितो यः पुरा वो देवानां पितॄणां मर्त्यानाम्.
अंशाञ्जानीध्वं वि भजामि तान् वो यो देवानां स इमां पारयाति (५)

तुम्हारे लिए अर्थात अग्नि आदि देवों के लिए, पितरों के लिए और मनुष्यों के लिए पहले जो भाग तीन से विभाजित किए गए हैं, हे देव! पितर एवं मनुष्य! उन भागों को जानो. मैं तुम्हारे लिए उन भागों को अलगअलग करता हूं. उन में देवों का जो भाग है, वह अग्नि में हवि के रूप में हवन किया जा रहा है. वह देव भाग इस यजमान पत्नी को इष्ट फल प्रदान करे. (५)

अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि नीचो न्युब्ज द्विषतः सपत्नान्.
इयं मात्रा मीयमाना मिता च सजातांस्ते बलिहृतः कृणोतु (६)

हे अग्निदेव! तुम सामर्थ्य वाले होने के कारण शत्रुओं को पराजित करते हो. तुम बुरे कर्म करने वाले हमारे शत्रुओं को नीचे की ओर मुंह कर के गिराओ. हे यजमान! कारीगर के द्वारा बनाई गई यह शाला तुझे भेंट लाने वाले पुत्र, पौत्र आदि से संपन्न करे. (६)

साकं सजातैः पयसा सहैध्युदुब्जैनां महते वीर्याय.
ऊर्ध्वो नाकस्याधि रोह विष्टपं स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति (७)

हे यजमान! तू समान जन्म वाले पुरुषों के साथ कर्मफल के सहित वृद्धि को प्राप्त हो एवं इस पत्नी को अधिक वीर्य प्राप्त करने हेतु स्वाभिमानी बने. हे यजमान! तू देहांत के पश्चात उस स्वर्ग में पहुंच, जिसे उत्तम कर्मों का फल कहा जाता है. (७)

इयं मही प्रति गृह्णातु चर्म पृथिवी देवी सुमनस्यमाना.
अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् (८)

देवगण की यह भूमि बिछे हुए चर्म को स्वीकार करे एवं हमारे प्रति कोमल हृदय बन कर दया करे. पृथ्वी की कृपा के कारण हम यज्ञ के फल के रूप में प्राप्त होने वाले स्वर्ग में पहुंचें. (८)

एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्ग्धि चर्मणि निर्भिन्ध्यंशून् यजमानाय साधु.
अवघ्नती नि जहि य इमां पृतन्यव ऊर्ध्वं प्रजामुद्भरन्त्युदूह (९)

हे ऋत्विज! सामने रखे हुए एवं लोहे के समान दृढ़ उलूखल और मूसल को एक साथ मिला कर बिछे हुए बैल के चमड़े पर रख लो तथा यजमान के लिए सोमलता के अंशों से बने हुए धानों को कूटो. हे पत्नी! उलूखल और मूसल से धान को कूटती हुई तू हमारी संतान को सेना की सहायता से मारने के इच्छुक शत्रुओं को बाधा पहुंचा. तू मूसल उठाती हुई हमारी संतान को उन्नत स्थान प्राप्त करा. (९)

गृहाण ग्रावाणौ सकृतौ वीर हस्त आ ते देवा यज्ञिया यज्ञमगुः

त्रयो वरा यतमां स्त्वं वृणीषे तास्ते समृद्धीरिह राधयामि (१०)

हे वीर अध्वर्यु! अपने हाथ में उत्तम कर्म वाले उलूखल और मूसल नाम के दो पत्थर ग्रहण करो. प्रसिद्ध एवं यज्ञ के योग्य देव तुम्हारे यज्ञ में आए हैं. हे यजमान! तू यज्ञ कर्म की समृद्धि, सासांरिक सुखों की समृद्धि और परलोक की समृद्धि— इन तीन वरों की कामना करता है. मैं इस यज्ञ के द्वारा इन तीन समृद्धियों की साधना करता हूं. (१०)

इयं ते धीरितिरिदमु ते जनित्रं गृह्णातु त्वामदितिः शूरपुत्रा.
परा पुनीहि य इमां पृतन्यवोऽस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ (११)

हे सूप! चावलों से भूसी को अलग करना तेरा कार्य है और यही तेरे जन्म का कारण है. शूर पुत्रों वाली देवमाता अदिति इस कार्य के लिए तुझे हाथ में ले. जो शत्रु इस पत्नी की हिंसा करने के लिए सेना ले कर आए हैं, उन की हिंसा करने के लिए तू चावलों से भूसी को अलग कर. तू इस पत्नी के लिए वीर पुत्रों एवं पौत्रों से युक्त धन अधिक मात्रा में प्रदान कर. (११)

उपश्वसे द्रुवये सीदता यूयं वि विच्यध्वं यज्ञियासस्तुषैः.
श्रिया समानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि (१२)

हे चावलो! मैं स्थिर एवं उत्तम फल वाले कर्म के निमित्त तुम्हें अधिक बना रहा हूं. इसीलिए तुम सूप में बैठ जाओ. यज्ञ में उपयोग के योग्य तुम भूसी से अलग हो जाओ. हम भी तुम्हारे कारण उत्पन्न संपत्ति से अपने समान जन्म वाले पुरुषों की अपेक्षा श्रेष्ठ हो जाएं और द्वेष करने वाले शत्रुओं को अपने पैरों में गिराएं. (१२)

परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रमपां त्वा गोष्ठोऽध्यरुक्षद् भराय.
तासां गृह्णीताद् यतमा यज्ञिया असन् विभाज्य धीरीतरा जहीतात् (१३)

हे नारी! तू मुझ से विमुख हो कर जल भरने जा और जल ले कर शीघ्र लौट आ. उस समय गायों के जल पीने का जलाशय जल भरने के हेतु तेरे शीष पर चढ़े अर्थात उस जलाशय से जल ले कर तू जल पात्र सिर पर रख ले. जलाशय के जलों में जो जल यज्ञ के योग्य हैं, उन्हें ग्रहण करना. हे बुद्धिमती तू यज्ञ के योग्य जलों को अलग कर के त्याग देना. (१३)

एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व.
सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावत्या त्वागन् यज्ञः प्रति कुम्भं गृभाय (१४)

हे पत्नी! शोभन अलंकारों से युक्त ये नारियां जल भरने के लिए आ गई हैं. तू भी उठ कर जल भरने के लिए तैयार हो जा. तू उत्तम पति के कारण श्रेष्ठ पत्नी एवं संतान के कारण प्रजावती है. यज्ञ तुझे जल के रूप में प्राप्त हुआ है. तू जल से भरा

हुआ घड़ा ले कर आ जा. (१४)

ऊर्जो भागो निहितो यः पुरा व ऋषिप्रशिष्टाप आ भरैताः.
अयं यज्ञो गातुविन्नाथवित् प्रजाविदुग्रः पशुविद् वीरविद् वो अस्तु (१५)

हे जलो! तुम्हारा जो बलकारक अंश ब्रह्मा जी ने बनाया था, वही इस यज्ञ में लाया जाता है. हे पत्नी! ये जल मंत्रों एवं ब्रह्मा जी के द्वारा अनुमति प्राप्त हैं. इन्हें तू घड़े में भर. यह तैयार किया जाता हुआ ब्रह्मौदनासव नामक यज्ञ तेरे लिए स्वर्ग के मार्ग को प्राप्त कराने वाला, चाहे गए स्वर्ग आदि फल को देने वाला, पुत्र, पौत्रों का दाता, गाय, घोड़े आदि पशुओं को प्राप्त कराने वाला एवं अनेक सेवकों को प्रदान करने वाला हो. (१५)

अग्ने चरुर्यज्ञियस्त्वाध्यरुक्षच्छुचिस्तपिष्ठस्तपसा तपैनम्.
आर्षेया दैवा अभिसङ्गत्य भागमिमं तपिष्ठा ऋतुभिस्तपन्तु (१६)

हे अग्नि! यज्ञ के योग्य चरु अर्थात हवि पकाने की बटलोई तुम्हारे ऊपर स्थित हो. तुम अपने तेज से इस शुद्ध एवं तपी हुई बटलोई को अधिक तपाओ. गोत्र प्रवर्तक ऋषियों को जानने वाले ब्राह्मण एवं इंद्रादि देव अपनाअपना भाग पा कर इस बटलोई से संतुष्ट हों और इसे अधिक तपाएं. (१६)

शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा आपश्चरुमव सर्पन्तु शुभ्राः.
अदुः प्रजां बहुलान् पशून् नः पक्तौदनस्य सुकृतामेतु लोकम् (१७)

शुद्ध और पवित्र स्त्रियां यज्ञ के योग्य इन श्वेत रंग के जलों को बटलोई में डालें. वे जल हमें पुत्र आदि रूप संतान और गाय, भैंस आदि पशु प्रदान करें. ब्रह्मौदन को पकाने वाला यजमान पुण्य करने वालों के लोक अर्थात स्वर्ग को जाए. (१७)

ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन सोमस्यांशवस्तण्डुला यज्ञिया इमे.
अपः प्र विशत प्रति गृह्णातु वश्चरुरिमं पक्त्वा सुकृतामेत लोकम् (१८)

ये चावल मंत्र के द्वारा शुद्ध तथा जल के द्वारा धोए गए एवं अमृत के अंश हैं. यज्ञ के योग्य ये चावल बटलोई में भरे हुए जल में प्रवेश करें. हे चावल! बटलोई तुम्हें स्वीकार करे. यजमान इस ब्रह्मौदन को पका कर पुण्य करने वालों के लोक अर्थात स्वर्ग को प्राप्त हो. (१८)

उरुः प्रथस्व महता महिम्ना सहस्रपृष्ठः सुकृतस्य लोके.
पितामहाः पितरः प्रजोपजाहं पक्ता पञ्चदशस्ते अस्मि (१९)

हे भात! तू पुण्य के फल के रूप में प्राप्त होने वाले स्वर्ग में अतिशय विस्तीर्ण हो और हजारों अवयवों वाला बन कर फैल. हमारे पिता, पितामह आदि सात पुरुष तेरे द्वारा तृप्त हों एवं हमारे पुत्र, पौत्र आदि सात पीढ़ियां तेरे द्वारा प्रसन्न हों. ब्रह्मौदन

को पकाने वाला मैं तेरे लिए पंद्रहवां हूं. (१९)

सहस्रपृष्ठ: शतधारो अक्षितो ब्रह्मौदनो देवयान: स्वर्ग:.
अमूंस्त आ दधामि प्रजया रेषयैनान् बलिहाराय मृडतान्मह्यमेव (२०)

हे यजमान! तेरे द्वारा किया जाता हुआ यह ब्रह्मौदनासव नाम का यज्ञ हजार शरीर वाला, अमृतमयी सौ धाराओं से युक्त, देवों तक पहुंचाने वाला तथा फल के रूप में स्वर्ग प्राप्त कराने वाला है. यह ब्रह्मौदन खाए जाने पर भी कभी समाप्त नहीं होता है. हे ब्रह्मौदन! मैं अपने सजातीय पुरुषों को तेरे सामने खड़ा करता हूं. इन्हें पुत्र, सेवक आदि प्रजा के रूप में मेरी अपेक्षा हीन बना. यह सब यज्ञ केवल मुझे ही सुखी और उत्तम बनाए. (२०)

उदेहि वेदिं प्रजया वर्धयैनां नुदस्व रक्ष: प्रतरं धेह्येनाम्.
श्रिया समानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि (२१)

हे पके हुए भात! अग्नि से उठ कर यज्ञ वेदी पर आओ. इस पत्नी को पुत्र, पौत्र रूपी प्रजा के द्वारा बढ़ाओ. यज्ञ में विघ्न डालने वाले राक्षसों को इस स्थान से भगाओ तथा इस पत्नी को उत्तम बनाने के लिए इस का पोषण करो. (२१)

अभ्यावर्तस्व पशुभि: सहैनां प्रत्यङेनां देवताभि: सहैधि.
मा त्वा प्रापच्छपथो माभिचार: स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज (२२)

हे यजमान एवं यजमान पत्नी! दूसरों के द्वारा किया हुआ आक्रोश तुम तक न पहुंचे. दूसरों के द्वारा किया हुआ मारण संबंधी जादूटोना भी तुम्हें प्राप्त न हो. तुम इस स्थान में निरोग हो कर निवास करो. हे ब्रह्मौदन! पत्नी, यजमान, आदि को गाएं, भैंसे आदि पशुओं के साथ प्राप्त हों तथा तुम यज्ञ के योग्य इन देवों के साथ यजमान के सामने खड़े होओ. (२२)

ऋतेन तष्टा मनसा हितैषा ब्रह्मौदनस्य विहिता वेदिरग्रे.
अंसद्रीं शुद्धामुप धेहि नारि तत्रौदनं सादय दैवानाम् (२३)

ब्रह्मा ने इस वेदी का निर्माण किया. हिरण्यगर्भ ने इसे स्थापित किया एवं ब्रह्मौदन को पकाने के लिए महर्षियों ने इस वेदी की कल्पना की. हे पत्नी! तू देवों, पितरों और मनुष्यों के भागों को धारण करने वाली इस वेदी के समीप बैठ तथा देवों के इस भाग को पका. (२३)

अदितेर्हस्तां स्रुचमेतां द्वितीयां सप्तऋषयो भूतकृतो यामकृण्वन्.
सा गात्राणि विदुष्योदनस्य दर्विर्वेद्यामध्येनं चिनोतु (२४)

प्राणियों की सृष्टि करने वाले सप्त ऋषियों ने देव माता अदिति के द्वितीय हाथ के रूप में होम के साधन इस करछुली को बनाया था. यह करछुली पके हुए भात के शरीरों को जानती हुई वेदी के ऊपर इस भात को स्थापित करे. (२४)

शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु दैवा निःसृप्याग्नेः पुनरेनान् प्र सीद.
सोमेन पूतो जठरे सीद ब्रह्मणामार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः (२५)

हे पके हुए एवं हवन के योग्य भात! देव तुम्हारे समीप बैठें. तुम अग्नि के समीप से निकल कर इन्हें प्रसन्न करो. दूध, दही, रूप, अमृत से पवित्र तुम ब्राह्मणों के पेट में बैठो. अपनेअपने गोत्र और प्रवर को जानने वाले ये ब्राह्मण तुम्हें खा कर नष्ट न हों अर्थात तुम इन की हिंसा मत करना. (२५)

सोम राजन्त्संज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान्.
ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान् ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि (२६)

हे राजा सोम रूपी ब्रह्मौदन! इन खाने वाले ब्राह्मणों को उत्तम ज्ञान दो. इन में जो उत्तम ब्राह्मण तुम्हारे समीप बैठे हैं, उन्हें भी उत्तम ज्ञान प्राप्त कराओ. तप से उत्पन्न एवं शोभन आह्वान वाली पत्नी मैं ज्ञानी ऋषियों को ब्रह्मौदन के निमित्त बारबार बुलाती हूं. (२६)

शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि.
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददादिदं मे (२७)

पाप रहित एवं अपने संसर्ग से अन्यों को भी पवित्र करने वाले एवं यज्ञ के योग्य इन जलों को मैं धोने के प्रयोजन से ब्राह्मणों के हाथ में डालता हूं. हे जलो! मैं जिस अभिलाषा से इस समय तुम्हें सब ओर छिड़कता हूं, मरुतों से मुक्त इंद्र मेरी वह कामना पूरी करें. (२७)

इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं पक्वं क्षेत्रात् कामदुघा म एषा.
इदं धनं नि दधे ब्राह्मणेषु कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः (२८)

यह स्वर्ण मेरे स्वर्ग के मार्ग की कभी न बुझने वाली ज्योति है. यह पकाया हुआ अन्न मेरी कामधेनु है. मैं दक्षिणा के रूप में दिया जाता हुआ धन ब्राह्मणों में धारण करता हूं तथा मेरे पिता, पितामह आदि के द्वारा अभिलषित जो स्वर्ग लोक है, मैं उस का मार्ग बनाता हूं. (२८)

अग्नौ तुषाना वप जातवेदसि परः कम्बूकां अप मृड्ढि दूरम्.
एतं शुश्रुम गृहराजस्य भागमथो विद्म निर्ऋतेर्भागधेयम् (२९)

हे ऋत्विज! ब्रह्मौदन से अलग की गई भूसी को जातवेद अग्नि में डालो तथा कंबूकों अर्थात फलकणों को पैर से दूर मसल दो. इस कंबूक को मैं ने गृहपति अर्थात वास्तु देवता का भाग सुना है. इसे मैं पाप देवता निर्ऋति का भाग जानता हूं. (२९)

श्राम्यतः पचतो विद्धि सुन्वतः पन्थां स्वर्गमधि रोहयैनम्.
येन रोहात् परमापद्य यद् वय उत्तमं नाकं परमं व्योम (३०)

हे ब्रह्मौदन! इन दीक्षा रूप तप करने वालों को, ब्रह्मौदन पकाने वालों को एवं सोमरस निचोड़ने वाले यजमानों को जानो तथा स्वर्ग के मार्ग पर स्थापित करो. उस मार्ग से चल कर यजमान उत्तम एवं दुख रहित स्वर्ग में स्थित हो. उत्तम पक्षी बाज के समान ये जिस प्रकार स्वर्ग में पहुंच सके, वैसा करो. (३०)

बभ्रेरध्वर्यो मुखमेतद् वि मृड्ढ्याज्याय लोकं कृणुहि प्रविद्वान्.
घृतेन गात्रानु सर्वा नि मृड्ढि कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः (३१)

हे अध्वर्यु! ऋत्विज का भरणपोषण करने वाले पके हुए भात का मुंह शुद्ध करो. हे विद्वान अध्वर्यु! ओदन में घी डालने के लिए गड्ढा बनाओ. इस के पश्चात बटलोई के भाग के सभी अंगों को घी से चिकना करो. इस ओदन के द्वारा मैं पूर्वजों के अभिलषित स्वर्ग का मार्ग बनाऊंगा. (३१)

बभ्रे रक्षः समदमा वपैभ्योऽब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान्.
पुरीषिणः प्रथमानाः पुरस्तादार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः (३२)

हे भरणशील ब्रह्मौदन! ब्राह्मणों के अतिरिक्त क्षत्रिय आदि जो तुझे खाने के लिए बैठें, उन्हें तू वह पीड़ा पहुंचा जो राक्षस पहुंचाते हैं. पूर्व में जो ऋषि गोत्र एवं प्रवर के ज्ञाता, प्रजा पशु आदि के पूरक एवं लोक में पुत्र, पौत्र आदि के द्वारा समृद्ध भृगु अंगिरा आदि के मंत्रों को जानने वाले ब्राह्मण तुझे खाते हैं, वे तुझे खा कर कष्ट प्राप्त न करें. (३२)

आर्षेयेषु नि दध ओदन त्वा नानार्षेयाणामप्यस्त्यत्र.
अग्निर्मे गोप्ता मरुतश्च सर्वे विश्वे देवा अभि रक्षन्तु पक्वम् (३३)

हे भात! मैं तुम्हें ऋषि आदि को जानने वाले ब्राह्मणों में धारण करता हूं और इस प्रकार के ब्राह्मणों को तुम्हें खिलाता हूं. इस ब्रह्मौदन में ऋषि, गोत्र आदि न जानने वाले ब्राह्मणों की संभावना भी नहीं है. अग्नि देव मेरे रक्षक हैं. सभी अर्थात उनन्चास मरुत एवं विश्वेदेव मेरे द्वारा पकाए हुए भात की रक्षा करें. (३३)

यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं पुमांसं धेनुं सदनं रयीणाम्.
प्रजामृतत्वमुत दीर्घमायू रायश्च पोषैरुप त्वा सदेम (३४)

यह ब्रह्मौदन यज्ञों को उत्पन्न करने वाला, सदैव बढ़े हुए ऊधस्क अर्थात थन वाला पुरुष रूपी धेनु है. हे भात! संपत्तियों के गृह रूप तुझ को खाते हुए हम पुत्र, पौत्र आदि के द्वारा अमरता, दीर्घ आयु, धन एवं समृद्धि प्राप्त करें. (३४)

वृषभोऽसि स्वर्ग ऋषीनार्षेयान् गच्छ.
सुकृतां लोके सीद तत्र नौ संस्कृतम् (३५)

हे ब्रह्मौदन! तुम कामनाओं के पूरक एवं स्वर्ग लोक में पहुंचाने वाले हो. तुम मंत्र जानने वाले ऋषियों के पास जाओ. उन के द्वारा खाए जाने पर तुम हमें पुण्य करने वालों के लोक अर्थात स्वर्ग में पहुंचाओ. वहां हमारा और तुम्हारा संस्कार होगा. (३५)

समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यग्ने पथः कल्पय देवयानान्.
एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञं नाके तिष्ठन्तमधि सप्तरश्मौ (३६)

हे ब्रह्मौदन! तुम अपने सभी अंगों को समूह बनाते हुए वहां जाओ, जहां तुम्हें जाना है. हे अग्नि देव! तुम भी इस ओदन के जाने हेतु देवों के जाने योग्य मार्ग बनाओ. इन देव मार्गों एवं पुण्य कर्मों के कारण हम स्वर्ग के ऊपर सूर्य मंडल में स्थित यज्ञ को प्राप्त होंगे. (३६)

येन देवा ज्योतिषा द्यामुदायन् ब्रह्मौदनं पक्त्वा सुकृतस्य लोकम्.
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् (३७)

इंद्र आदि देव जिस ज्योति के द्वारा ब्रह्मौदनासव नामक यज्ञ पूर्ण कर के स्वर्ग को गए, वह स्वर्ग पुण्य कर्म करने वालों का लोक है. उसी देवयान मार्ग से हम भी पुण्य के फल के रूप में प्राप्त होने वाले स्वर्ग लोक को जीतेंगे. उत्तम एवं सुखकारक लोक को लक्ष्य कर के हम स्वर्ग में पहुंचेंगे. (३७)

सूक्त दूसरा — देवता—मंत्रों में उक्त भव आदि

भवाशर्वौ मृडतं माभि यातं भूतपती पशुपती नमो वाम्.
प्रतिहितामायतां मा वि स्राष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः (१)

हे संसार की सृष्टि करने वाले भव एवं संसार की हिंसा करने वाले शर्व! हमें सुखी करो तथा हमारी रक्षा के लिए हमारे सामने आओ. प्राणियों एवं पशुओं के पालक तुम दोनों को नमस्कार है. अपने धनुष की डोरी पर रखा हुआ बाण हमारी ओर मत छोड़ो. हमारे मनुष्यों एवं पशुओं की हिंसा मत करो. (१)

शुने क्रोष्ट्रे मा शरीराणि कर्तमलिक्लवेभ्यो गृध्रेभ्यो ये च कृष्णा अविष्यवः.
मक्षिकास्ते पशुपते वयांसि ते विघसे मा विदन्त (२)

हे भव एवं शर्व! तुम हमारे शरीर को कुत्ते और सियार के खाने योग्य मत बनाओ. कातर न होने वाले गिद्धों एवं मांस की इच्छा करने वाले कौओं को भी हमारे शरीर मत खाने दो. हे पशुपति रुद्र! मक्खियां और तुम्हारे पक्षी भी भोजन की इच्छा से हमारे शरीरों को प्राप्त न करें. (२)

क्रन्दाय ते प्राणाय याश्च ते भव रोपयः.
नमस्ते रुद्र कृण्मः सहस्राक्षायामर्त्य (३)

हे भव! हम तुम्हारे शब्द और प्राण वायु को नमस्कार करते हैं. हम तुम्हारे मोहक शरीरों को नमस्कार करते हैं. हे रुद्र! हे सहस्राक्ष एवं मृत्यु रहित! हम तुम्हें नमस्कार करते हैं. (३)

पुरस्तात् ते नमः कृण्म उत्तरादधरादुत.
अभीवर्गाद् दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ते नमः (४)

हे रुद्र! हम तुम्हें सामने से, उत्तर दिशा से एवं दक्षिण दिशा से नमस्कार करते हैं. प्रकाशपूर्ण आकाश के ऊपर वाले भाग में वर्तमान तुम्हारे लिए नमस्कार है. (४)

मुखाय ते पशुपते यानि चक्षूंषि ते भव.
त्वचे रूपाय संदृशे प्रतीचीनाय ते नमः (५)

हे पशुपति! तुम्हारे मुख को नमस्कार है. हे भव! तुम्हारे तीन नेत्रों को नमस्कार है. तुम्हारे चर्म को, रूप को एवं सम्यक दर्शन की शक्ति को नमस्कार है. (५)

अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्याय ते. दद्भ्यो गन्धाय ते नमः (६)

हे पशुपति! तुम्हारे हाथ, पैर आदि अंगों को नमस्कार है. तुम्हारी जीभ को, मुख को, दांतों को और तुम्हारी गंध ग्राहक इंद्रिय नाक को नमस्कार है. (६)

अस्त्रा नीलशिखण्डेन सहस्राक्षेण वाजिना.
रुद्रेणार्धकघातिना तेन मा समरामहि (७)

हम अस्त्र फेंकने वाले, नीले रंग के शिखंड अर्थात मोर के पंखों से युक्त, हजार आंखों वाले, वेगशाली एवं सेना के आधे भाग का वध करने वाले रुद्र के द्वारा दुखी न हों. (७)

स नो भवः परि वृणक्तु विश्वत आप इवाग्निः परि वृणक्तु नो भवः.
मा नोऽभि मांस्त नमो अस्त्वस्मै (८)

103

बताए हुए प्रभाव वाले भव हमें सभी उपद्रवों से बचाएं. जिस प्रकार जलती हुई अग्नि जल का परित्याग करती है, उसी प्रकार भव हमें त्याग दें. वे हमें बाधा न पहुंचाएं. इस भव के लिए नमस्कार है. (८)

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते.
तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः (९)

शर्व को चार बार और भव को आठ बार नमस्कार है. हे पशुपति! तुम्हें दस बार नमस्कार है. हे पशुपति! भिन्नभिन्न जाति वाले पांच पशु अर्थात गाय, घोड़े, पुरुष, बकरियां और भेड़ें तुम्हारे ही हैं. इन की रक्षा करो. (९)

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेदमुग्रोर्व१न्तरिक्षम्.

तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत् प्राणत् पृथिवीमनु (१०)

हे अतिशय बलशाली रुद्र! पूर्व आदि चार दिशाएं तुम्हारे अधिकार में हैं. द्यौ, पृथ्वी, विशाल अंतरिक्ष तथा आत्मा के द्वारा भोक्ता के रूप में वर्तमान सारे शरीर तुम्हारे अधिकार में हैं. पृथ्वी पर जितने सांस लेने वाले हैं, वे भी तुम्हारे अधिकार में हैं. इन सब पर कृपा करने के लिए तुम्हें नमस्कार है. (१०)

उरुः कोशो वसुधानस्तवायं यस्मिन्निमा विश्वा भुवनान्यन्तः.
स नो मृड पशुपते नमस्ते परः क्रोष्टारो अभिभाः
श्वानः परो यन्त्वघरुदो विकेश्यः (११)

हे पशुपति! विस्तीर्ण एवं पापपुण्य रूप कर्मों को धारण करने वाला यह कोष ब्रह्मांड एवं कटाह तुम्हारा है. सभी इसी कोष के अंदर विद्यमान हैं. हे पशुपति! तुम हमें सुखी बनाओ. तुम्हें नमस्कार है. तुम्हारी कृपा से हमें पराजित करने वाले सियार एवं कुत्ते हम से दूर देश में चले जाएं. अमंगल पूर्ण रोदन करने वाली पिशाचियां भी हम से दूर चली जाएं. (११)

धनुर्बिभर्षि हरितं हिरण्ययं सहस्रघ्नि शतवधं शिखण्डिनम्.
रुद्रस्येषुश्चरति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशीऽतः (१२)

हे रुद्र! तुम विश्व के संहार के लिए धनुष धारण करते हो. जो हरे रंग का, स्वर्ण निर्मित, एक बार में एक हजार जनों को तापित करने वाला तथा सौ प्राणियों का वध करने वाला है. हे मोरपंख से निर्मित मुकुट वाले रुद्र! तुम्हारे उस धनुष के लिए नमस्कार है. रुद्र देव का बाण बिना रुके सर्वत्र जाता है. यह देवों का हनन साधन है. यह बाण जिस दिशा में है, उसी दिशा में इस बाण को नमस्कार है. (१२)

योऽभियातो निलयते त्वां रुद्र निचिकीर्षति.
पश्चादनुप्रयुङ्क्षे तं विद्धस्य पदनीरिव (१३)

हे रुद्र! जिस पुरुष पर तुम आक्रमण करते हो, वह तुम्हारे सामने नहीं ठहर पाता एवं तुम्हारी हिंसा करने की इच्छा करता है. हे देव! इस प्रकार के अपकारी पुरुष को तुम उस के अपराध के अनुसार उसी प्रकार दंड देते हो, जिस प्रकार घायल व्यक्ति के पद चिह्नों के अनुसार पहुंच कर शत्रु उस पर वार करता है. (१३)

भवारुद्रौ सयुजा संविदानावुभावुग्रौ चरतो वीर्याय.
ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीऽतः (१४)

भव और रुद्र मित्र बने हुए, एक मत को प्राप्त एवं शत्रुओं द्वारा अपराजेय हो कर अपना शौर्य प्रकट करने के लिए सर्वत्र घूमते हैं. इन दोनों के लिए नमस्कार है. हमारे निवास स्थान से वे जिस दिशा में वर्तमान हों, वहीं उन को नमस्कार है. (१४)

नमस्तेऽस्त्वायते नमो अस्तु परायते.

नमस्ते रुद्र तिष्ठत आसीनायोत ते नमः (१५)

हे रुद्र! हमारे सम्मुख आते हुए तुम्हें नमस्कार है और हमारी ओर पीठ कर के जाते हुए तुम्हें नमस्कार है. खड़े हुए एवं अपने स्थान पर बैठे हुए तुम्हें नमस्कार है. (१५)

नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा.
भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नमः (१६)

हे रुद्र! तुम्हें सायंकाल, प्रातःकाल, रात्रि में एवं दिन में नमस्कार है. हे भव और शर्व! मैं तुम दोनों को नमस्कार करता हूं. (१६)

सहस्राक्षमतिपश्यं पुरस्ताद् रुद्रमस्यन्तं बहुधा विपश्चितम्.
मोपाराम जिह्वयेयमानम् (१७)

हजार नेत्रों वाले, क्रांतदर्शी, सामने की ओर बाण चलाने वाले, मेधावी एवं भक्षण के लिए सारे संसार को अपनी जीभ के अग्र भाग से व्याप्त करने वाले रुद्र के सामने हम न जाएं. (१७)

श्यावाश्वं कृष्णमसितं मृणन्तं भीमं रथं केशिनः पादयन्तम्.
पूर्वे प्रतीमो नमो अस्त्वस्मै (१८)

काले रंग वाले, काले वस्त्रों वाले, हिंसक एवं भयंकर रुद्र ने केशी नामक असुर के रथ को तोड़ कर धरती पर डाल दिया था. अन्य स्तोताओं के पूर्ववर्ती हम रुद्र को अपना रक्षक जानते हैं. ऐसे रुद्र को नमस्कार है. (१८)

मा नोऽभि स्रा मत्यं देवहेतिं मा नः क्रुधः पशुपते नमस्ते.
अन्यत्रास्मद् दिव्यां शाखां वि धूनु (१९)

हे रुद्र! अपने दैवी बाण को हम मरणधर्माओं पर मत चलाओ. हे पशुपति! हमारे प्रति क्रोध न करो. तुम्हारे लिए नमस्कार है. शाखा के समान विस्तृत अपने दिव्य बाण को हमारी अपेक्षा अन्यत्र छोड़ो. (१९)

मा नो हिंसीरधि नो ब्रूहि परि णो वृङ्ग्धि मा क्रुधः. मा त्वया समरामहि (२०)

हे रुद्र! हमारी हिंसा मत करो. हमारे प्रति पक्षपात के वचन अधिक मात्रा में बोलो. हमें तुम अपने आयुध का लक्ष्य मत बनाओ एवं हमारे प्रति क्रोध मत करो. हम कभी भी तुम से न मिलें. (२०)

मा नो गोषु पुरुषेषु मा गृधो नो अजाविषु.
अन्यत्रोग्र वि वर्तय पियारूणां प्रजां जहि (२१)

हे रुद्र! हमारी गायों, पुत्र, भृत्य आदि को मारने की इच्छा मत करो. हमारी बकरियों एवं भेड़ों की हिंसा करने की बात मत सोचो. हे शक्तिशाली रुद्र! अपना आयुध हमें छोड़ कर अन्यत्र चलाओ तथा देव हिंसकों की संतान का

वध करो. (२१)

यस्य तक्मा कासिका हेतिरेकमश्वस्येव वृषण: क्रन्द एति.
अभिपूर्वं निर्णयते नमो अस्त्वस्मै (२२)

ज्वर एवं खांसी जिन रुद्र के आयुध हैं, वे गर्भाधान में समर्थ घोड़े के समान शब्द करते हुए अपकारी पुरुष के पास जाते हैं. रुद्र के वे आयुध अपराधी के अपराध का विचार कर के क्रम से नाश करते हैं. ऐसे रुद्र को मेरा नमस्कार है. (२२)

योऽन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टभितोऽयज्वन: प्रमृणन् देवीपीयून्.
तस्मै नमो दशभि: शक्वरीभि: (२३)

जो रुद्र अंतरिक्ष में स्थित हो कर यज्ञ न करने वालों एवं देव हिंसकों की हत्या करते हैं, उन के लिए मेरा हाथ जोड़ कर नमस्कार है. (२३)

तुभ्यमारण्या: पशवो मृगा वने हिता हंसा: सुपर्णा: शकुना वयांसि.
तव यक्षं पशुपते अप्स्व१न्तस्तुभ्यं क्षरन्ति दिव्या आपो वृधे (२४)

हे पशुपति! वन में जन्म लेने वाले हरिण, सिंह आदि पशु एवं हंस आदि नर पक्षी तुम्हारे लिए बनाए गए हैं. तुम उन्हीं को स्वीकार करो और हमारे पशुओं का वध मत करो. तुम्हारा पूज्य स्वरूप जलों के भीतर वर्तमान है, इसलिए तुम्हारे स्नान के हेतु दिव्य जल बहते हैं. तुम हमारे उपयोग के जल को मत छुओ. (२४)

शिंशुमारा अजगरा: पुरीकया जषा मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि.
न ते दूरं न परिष्ठास्ति ते भव सद्य: सर्वान् परि पश्यसि भूमिं पूर्वस्माद्धंस्युत्तरस्मिन् समुद्रे (२५)

हे रुद्र! मगर, अजगर, झष, मत्स्य आदि जलचर तुम्हारे हेतु हैं, जिन की ओर तुम अपने तेज से आयुध चलाते हो. तुम सारी भूमि को एक क्षण में ही देख लेते हो और पूर्व दिशा में वर्तमान सागर से उत्तर दिशा में स्थित सागर तक एक क्षण में ही पहुंच जाते हो. (२५)

मा नो रुद्र तक्मना मा विषेण मा न: सं स्रा दिव्येनाग्निना.
अन्यत्रास्मद् विद्युतं पातयैताम् (२६)

हे रुद्र! ज्वर के द्वारा, विष के द्वारा एवं बिजली रूपी दिव्य तेज के द्वारा हमारा स्पर्श मत करो. तुम अपने प्रकाश युक्त आयुध को हमें छोड़ कर अन्यत्र गिराओ. (२६)

भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या भव आ पप्र उर्व१न्तरिक्षम्.
तस्मै नमो यतमस्यां दिशी३त: (२७)

भव द्युलोक और पृथ्वी के स्वामी हैं. ये विस्तृत अंतरिक्ष को अपने तेज से पूर्ण करते हैं. ये भव और जिस दिशा में भी विद्यमान हैं, उन त्रिलोकव्यापी को उसी दिशा में नमस्कार है. (२७)

भव राजन् यजमानाय मृड पशूनां हि पशुपतिर्बभूथ.
यः श्रद्दधाति सन्ति देवा इति चतुष्पदे द्विपदेऽस्य मृड (२८)

हे सब के स्वामी भव! यजमान को सुखी बनाओ. हे गाय, अश्व आदि पशुओं के पालको! जो मनुष्य ऐसी श्रद्धा करता है कि इंद्र आदि देव मेरे रक्षक हैं, उस मनुष्य की संतान और पशुओं की रक्षा करो. (२८)

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा नो वक्ष्यतः.
मा नो हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वं रुद्र मा रीरिषो नः (२९)

हे रुद्र! हमारे संबंधी वृद्ध की हिंसा मत करो. हमारे शिशु की तथा भार वहन के योग्य युवक की हिंसा मत करो. भार ढोने वाले सेवकों की भी हिंसा मत करो. हे रुद्र! हमारे मातापिता की तथा हमारे अपने शरीर की भी हिंसा मत करो. (२९)

रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः.
इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः (३०)

मैं रुद्र को प्रेरणा देने वाले कर्म करने वालों को नमस्कार करता हूं. मैं अशोभन वचन बोलने वाले रुद्र गणों को तथा शिकार के सहायक विशाल मुख वाले कुत्तों को नमस्कार करता हूं. (३०)

नमस्ते घोषिणीभ्यो नमस्ते केशिनीभ्यः. नमो नमस्कृताभ्यो नमः सम्भुञ्जतीभ्यः.
नमस्ते देव सेनाभ्यः स्वस्ति नो अभयं च नः (३१)

हे रुद्र! घोष करती हुई एवं बिखरे हुए केशों वाली तुम्हारी सेनाओं को नमस्कार है. तुम्हारी चंडेश्वर सेनाओं को नमस्कार है, जिन्हें सब प्रणाम करते हैं तुम्हारी एक साथ भोजन करती हुई सेनाओं को नमस्कार है. हे देव, तुम्हारी कृपा से हमें कुशल और निर्भयता प्राप्त हो. (३१)

सूक्त तीसरा — देवता—बृहस्पति का भोजन

तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् (१)

विराट के रूप में कल्पित ओदन अर्थात भात का शीश बृहस्पति और मुख ब्रह्म है. (१)

द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रमसावक्षिणी सप्तऋषयः प्राणापानाः (२)

द्यावा पृथ्वी उस ओदन के दोनों कान, सूर्य, चंद्रमा दोनों आंखें और सात ऋषि उस के प्राण तथा अपान वायु हैं. (२)

चक्षुर्मुसलं काम उलूखलम् (३)

इस प्रकार की महिमा वाले ओदन का मूसल चक्षु और उलूखल कान हैं. (३)

दितिः शूर्पमदितिः शूर्पग्राही वातोऽपाविनक् (४)

असुरों की माता इस का सूप हैं, देव माता अदिति उस सूप को पकड़ने वाली हैं और वायु चावलों और भूसी का विवेचन करने वाले हैं. (४)

अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः (५)

ओदन संबंधी कण अश्व, चावल गाय और भूसी मशक अर्थात मच्छर हैं. (५)

कब्रु फलीकरणाः शरोऽभ्रम् (६)

इस ओदन का फलीकरण ही कब्रु नामक प्राणी है, जिस के सिर और भौंहों में भेद नहीं होता. आकाश में घूमता हुआ मेरु ही उस का सिर है. (६)

श्याममयोऽस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम् (७)

खनित्र अथवा फावड़े का काले रंग का लोहा इस विराट रूप ओदन का मांस और लाल रंग का तांबा इस का रक्त है. (७)

त्रपु भस्म हरितं वर्णः पुष्करमस्य गन्धः (८)

ओदन पकाने के पश्चात होने वाली राख जस्ता है, सोना इस ओदन का रंग है और कमल इस की गंध है. (८)

खलः पात्रं स्फ्यावंसावीषे अनूक्ये (९)

खल अर्थात खलिहान इस ओदन का पात्र तथा अनाज भरने की गाड़ी के फूले हुए भाग इस के कंधे और गाड़ी की हरसें इस ओदन के कंधों और शरीर के बीच के जोड़ है. (९)

आन्त्राणि जत्रवो गुदा वरत्राः (१०)

सभी प्राणियों से संबंधित जो आंतें हैं, वे ही बैलों को गाड़ी में जोड़ने की रस्सियां हैं. समस्त प्राणियों के शरीर की गुदा गाड़ी और जुए को जोड़ने हेतु चमड़े की रस्सियां हैं. (१०)

इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् (११)

यह दिखाई देती हुई पृथ्वी पकाए जाते हुए पूर्वोक्त ओदन को पकाने की बटलोई है तथा द्युलोक उसे ढकने का पात्र है. (११)

सीताः पर्शवः सिकता ऊबध्यम् (१२)

खेत में हल चलाने से बनने वाली रेखाएं इस ओदन की पसली की हड्डियां हैं तथा नदियों की बालू इस के पेट के भीतर के आधे पके हुए तृण हैं. (१२)

ऋतं हस्तावनेजनं कुल्योपसेचनम् (१३)

लोक में विद्यमान समस्त जल इस ओदन के हाथ धुलाने के लिए हैं तथा छोटी नदियां इस ओदन को मिलाने का साधन हैं. (१३)

ऋचा कुम्भ्यधिहितार्त्विज्येन प्रेषिता (१४)

विराट रूप ओदन को पकाने वाली बटलोई ऋग्वेद में अग्नि पर रखी है और यजुर्वेद ने इस में आग जलाई है. (१४)

ब्रह्मणा परिगृहीता साम्ना पर्यूढा (१५)

इस ओदन को पकाने वाली बटलोई अथर्ववेद ने पकड़ी है और सामवेद ने इसे चारों ओर से अंगारों से घेर दिया है. (१५)

बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः (१६)

बृहत साम पानी में डाले गए चावलों को मिलाने का काठ है तथा रथंतर साम बटलोई से भात निकालने की करछुली है. (१६)

ऋतवः पक्तार आर्तवाः समिन्धते (१७)

बसंत आदि ऋतुएं इस ओदन को पकाने वाली हैं और ऋतुओं संबंधी रातदिन अग्नि को जलाते हैं. (१७)

चरुं पञ्चबिलमुखं घर्मो३भीन्धे (१८)

गाय, अश्व, पुरुष, बकरी, भेड़ की उत्पत्ति का कारण विराट ही चरु अर्थात ओदन पकाने का पात्र है. सूर्य की धूप उसे गरम करती है. (१८)

ओदनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः (१९)

इस प्रकार महा प्रभाव से पके हुए ओदन के द्वारा यज्ञों से प्राप्त होने वाले सभी लोग पाए जा सकते हैं. (१९)

यस्मिन्त्समुद्रो द्यौर्भूमिस्त्रयोऽवरपरं श्रिताः (२०)

इस ओदन में सागर, द्यौ और भूमि ऊपरनीचे स्थित है. (२०)

यस्य देवा अकल्पन्तोच्छिष्टे षडशीतयः (२१)

यज्ञ से बचे हुए इस ओदन के अंश से चार सौ अस्सी देव शक्तिशाली बनें. (२१)

तं त्वौदनस्य पृच्छामि यो अस्य महिमा महान् (२२)

शिष्य ने प्रश्न किया—"हे गुरु! मैं आप के इस ओदन की उस महिमा को पूछता हूं जो अत्यधिक है." (२२)

स य ओदनस्य महिमानं विद्यात् (२३)

वह प्रसिद्ध गुरु है जो इस ओदन की महिमा जाने. (२३)

नाल्प इति ब्रूयान्नानुपसेचन इति नेदं च किं चेति (२४)

गुरु ओदन की महिमा के उपदेश के समय महिमा की अल्पता का उपदेश न करे. वह ओदन दूध, घी, आदि से रहित है, ऐसा भी न कहे. वह ओदन सामने रखा है अथवा वह अनिर्दिष्ट है, ऐसा भी न कहे. (२४)

यावद् दाताभिमनस्येत तन्नाति वदेत् (२५)

ब्रह्मौदन सत्र यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला मन से जितना फल पाना चाहे, गुरु उस से अधिक फल न बताए. (२५)

ब्रह्मवादिनो वदन्ति पराञ्चमोदनं प्राशी३: प्रत्यञ्चा३मिति (२६)

वेद के विचारक महर्षि परस्पर कहते हैं कि हे देवदत्त! तुम ने इस ओदन को पराङ्मुख हो कर खाया है अथवा आत्माभिमुख हो कर खाया है. (२६)

त्वमोदनं प्राशी३स्त्वामोदना३ इति (२७)

तुम ने ओदन को खाया है अथवा ओदन ने तुम्हें खाया है. (२७)

पराञ्चं चैनं प्राशी: प्राणास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह (२८)

यदि तुम ने पराङ्मुख हो कर ब्रह्मौदन खाया है, तो प्राण तुम्हें त्याग देंगे. ऐसे ओदन खाने वाले की महिमा को विद्वान बताएं. (२८)

प्रत्यञ्चं चैनं प्राशीरपानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह (२९)

यदि तुम ने आत्माभिमुख हो कर ब्रह्मौदन खाया है तो अपान वायु तुम्हें त्याग देगी. ऐसा ओदन खाने वाले की महिमा को विद्वान बताएं. (२९)

नैवाहमोदनं न मामोदन: (३०)

न मैं ने ओदन खाया है और न ओदन ने मुझे खाया है. (३०)

ओदन एवौदनं प्राशीत् (३१)

ओदन ने ही ओदन को खाया है. (३१)

सूक्त चौथा — देवता—मंत्र में बताए गए

ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णा प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषय: प्राश्नन्. ज्येष्ठतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. बृहस्पतिना शीर्ष्णा.

तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१)

हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठान करने वालों ने जिस शीश से इस ओदन को खाया था, तुम ने यदि उस से भिन्न शीश के द्वारा खाया है तो तुम्हारी संतान ज्येष्ठ क्रम से मरेगी अर्थात सब से पहले बड़ा लड़का मरेगा, उस के पश्चात उस से कम आयु वाला. ऐसा शिष्य से गुरु कहे. शिष्य कहे कि इस ओदन को मैं ने न पराङ्मुख हो कर खाया था और न आत्माभिमुख हो कर खाया है. बृहस्पति से संबंधित ओदन का जो शीश है, उस ओर से मैं ने ओदन को खाया था तथा उसी शीश से ओदन को वहां पहुंचाया है, जहां उसे पहुंचना चाहिए. यह ओदन सभी अंगों से युक्त, सभी जोड़ों से युक्त एवं संपूर्ण शरीर वाला है. जो पुरुष ऊपर बताए हुए ढंग से ओदन को खाना जानता है, वही संपूर्ण अंगों से युक्त, सभी जोड़ों से युक्त एवं संपूर्ण शरीर वाला होता है. (१)

ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. बधिरो भविष्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. द्यावापृथिवीभ्यां श्रोत्राभ्याम्. ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः सर्वाङ्गः एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (२)

''हे देवदत्त! इन पूर्ववर्ती अनुष्ठान कर्ता ऋषियों ने जिन कानों की ओर से इस ओदन को खाया था, तुम ने यदि उस से भिन्न ओर से उस को खाया तो तुम बहरे हो जाओगे.''—गुरु शिष्य से इस प्रकार कहे. शिष्य कहे कि मैं ने इस ओदन को न पराङ्मुख हो कर खाया, न सामने हो कर खाया और न आत्माभिमुख हो कर खाया. मैं ने ओदन को द्यावा, पृथ्वी रूप कानों की ओर से खाया है. उन्हीं के द्वारा मैं ने ओदन खाया है और उसे वहां पहुंचा दिया, जहां उसे पहुंचना था. यह ओदन सभी अंगों से युक्त, सभी जोड़ों वाला और संपूर्ण शरीर के रूप में है. जो इस ओदन को इस रूप में जानता है, वही समस्त अंगों वाला, सभी जोड़ों सहित एवं संपूर्ण शरीर युक्त होता है. (२)

ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. अन्धो भविष्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. सूर्याचन्द्रमसाभ्या मक्षीभ्याम्. ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (३)

''हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठान कर्ता ऋषियों ने जिन आंखों की ओर से इस ओदन को खाया था, तुम ने यदि उस से भिन्न उस की आंखों की ओर से खाया तो तुम अंधे हो जाओगे'' —गुरु इस प्रकार अपने शिष्य से कहे. शिष्य कहे कि मैं ने इस ओदन को न पराङ्मुख हो कर खाया और न सामने हो कर खाया और न

आत्माभिमुख हो कर खाया है. मैं ने इस ओदन को सूर्य और चंद्रमा रूपी आंखों की ओर से खाया है. मैं ने इसे उन्हीं के द्वारा खाया है और इसे वहीं पहुंचा दिया है, जहां इसे पहुंचना चाहिए. यह ओदन सभी अंगों से युक्त, सभी जोड़ों सहित एवं संपूर्ण शरीर वाला है. जो इस ओदन को इस रूप में खाना जानता है, वही समस्त अंगों से युक्त, सभी जोड़ों सहित एवं संपूर्ण शरीर वाला है. (३)

ततश्चैनमन्येन मुखेन प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. मुखतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. ब्रह्मणा मुखेन. तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (४)

"हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठान कर्ता ऋषियों ने जिस मुख से इस ओदन को खाया था, यदि तुम ने उस से भिन्न उस के मुख की ओर से खाया तो तुम्हारी संतान मर जाएगी"—गुरु इस प्रकार अपने शिष्य से कहे. शिष्य कहे कि मैं ने इस ओदन को न पराङ्मुख हो कर खाया और न सामने हो कर खाया और न आत्माभिमुख हो कर खाया. मैं ने इसे ब्रह्मरूपी मुख की ओर से खाया. मैं ने इस ओदन को इसी मुख से खाया और वहीं पहुंचाया है, जहां इसे पहुंचना चाहिए था. यह ओदन सभी अंगों से युक्त, सभी जोड़ों वाला एवं संपूर्ण शरीर से युक्त है. जो पुरुष ऊपर बताई हुई विधि से इस ओदन को खाना जानता है, वही संपूर्ण अंगों से युक्त, सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला होता है. (४)

ततश्चैनमन्यया जिह्वया प्राशीर्यया चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. जिह्वा ते मरिष्यतीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. अग्नेर्जिह्वया. तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (५)

"हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठान कर्ता ऋषियों ने जिस जीभ की ओर से इस ब्रह्मौदन को खाया है, तुम ने यदि उस से भिन्न उस की जीभ की ओर से खाया तो तुम्हारी जीभ मर जाएगी अर्थात तुम गूंगे हो जाओगे"— गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे. शिष्य कहे कि मैं ने इस ओदन को न पराङ्मुख हो कर खाया और न सामने से खाया और न आत्माभिमुख हो कर खाया. मैं ने इसे अग्नि की जीभ से खाया है. मैं ने इसे वहीं पहुंचा दिया है, जहां इसे पहुंचना चाहिए था. यह ओदन समस्त अंगों सहित, सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है. इस विधि से जो इस ओदन को खाना जानता है, वही सब अंगों से युक्त, पूरे जोड़ों सहित एवं संपूर्ण शरीर वाला होता है. (५)

ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. दन्तास्ते शत्स्यन्तीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. ऋतुभिर्दन्तैः. तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः

सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (६)

"हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठान कर्ता ऋषियों ने जिन दांतों की ओर से इस ब्रह्मौदन को खाया था, तुम ने यदि उस से भिन्न उस के दांतों की ओर से इसे खाया तो तुम्हारे दांत गिर जाएंगे." गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे. शिष्य कहे कि मैं ने इस ओदन का न पराङ्मुख हो कर खाया, न सामने से खाया और न आत्माभिमुख हो कर खाया. मैं ने इसे बसंत आदि ऋतुओं रूपी दांतों से खाया है. मैं ने इसे उन्हीं के द्वारा खाया है और इसे जहां जाना चाहिए था, वहीं पहुंचा दिया है. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है. इस विधि से जो इस ओदन को खाना जानता है, वही समस्त अंगों वाला, सभी जोड़ों सहित एवं संपूर्ण शरीर वाला है. (६)

सूक्त पांचवां — देवता—मंत्र में बताए गए

एतद् वै ब्रध्नस्य विष्टपं यदोदनः (१)

यह जो पूर्वोक्त ओदन अर्थात भात है, वह सूर्य मंडल के मध्यवर्ती ईश्वर के आकाश में स्थित मंडल हैं. (१)

ब्रध्नलोको भवति ब्रध्नस्य विष्टपि श्रयते य एवं वेद (२)

जो पुरुष ओदन के सूर्य मंडल में स्थित होने के विषय में जानता है, वह सूर्य मंडल में स्थित होता है तथा सूर्य मंडल रूप स्थान में आश्रय पाता है. (२)

एतस्माद् वा ओदनात् त्रयस्त्रिंशतं लोकान् निरमिमीत प्रजापतिः (३)

प्रजापति ने समस्त जगत के उपादान के रूप में इस ओदन से तैंतीस देव लोकों को बनाया. (३)

तेषां प्रज्ञानाय यज्ञमसृजत (४)

प्रजापति ने उन तैंतीस देव लोकों का साक्षात्कार करने के लिए यज्ञ की रचना की. (४)

स य एवं विदुष उपद्रष्टा भवति प्राणं रुणद्धि (५)

जो कोई पुरुष इस प्रकार से उपासक का साक्षात्कार करने वाला होता है एवं उस के कार्य में बाधा डालता है, वह अपने शरीर में प्राणों की गति को रोकता है. (५)

न च प्राणं रुणद्धि सर्वज्यानिं जीयते (६)

वह न केवल शरीर में प्राणों की गति को रोकता है, अपितु आयु से सर्वथा हीन हो जाता है अर्थात अल्प आयु में मर जाता है. (६)

ततश्चैनमन्यै: प्राणापानै: प्राशीर्येश्चैतं पूर्व ऋषय: प्राश्नन्. प्राणापानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. सप्तर्षिभि: प्राणापानै:. तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम्. एष वा ओदन: सर्वाङ्ग: सर्वपरु: सर्वतनू:. सर्वाङ्ग एव सर्वपरु: सर्वतनू: सं भवति य एवं वेद (७)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—हे देवस्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्ता ऋषियों ने जिन प्राण और अपनों की सहायता से ओदन का सेवन किया था, तुमने यदि उससे भिन्न अर्थात लौकिक प्राण और अपनों की सहायता से इस ओदन का सेवन किया तो तुम्हारे प्राण और रूप वायु तुम्हारा त्याग कर देंगे. इसके उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से कहे—मैंने इसका सेवन अभिमुख, पराङ्मुख और आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने इस ओदन का सेवन समर्षि रूप प्राण और अपान वायुओं की सहायता से किया है इस प्रकार सेवन किया हुआ होदन संपूर्ण शरीर वाला होता है मैंने इसे वहीं पहुंचा दिया है, जहां इसे जाना चाहिए था. इस प्रकार सेवन किया हुआ ओदन मनचाहा फल देने वाला होता है. इस विधि से जो इस ओदन का सेवन करता है वही समस्त अंगों वाला, सभी जोड़ों सहित एवं संपूर्ण शरीर वाला है. (७)

ततश्चैनमन्येन व्यचसा प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषय: प्राश्नन्. राजयक्ष्मस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. अन्तरिक्षेण व्यचसा. तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्. एष वा ओदन: सर्वाङ्ग: सर्वपरु: सर्वतनू:. सर्वाङ्ग एव सर्वपरु: सर्वतनू: सं भवति य एवं वेद (८)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्ता ऋषियों ने जिस विधि से इस ओदन का सेवन किया था, उसके अतिरिक्त यदि किसी अन्य लौकिक विधि से तुमने इस ओदन का सेवन किया तो राजयक्ष्मा रोग तुम्हारा विनाश कर देगा. इसके उत्तर के रूप में शिष्य गुरु से कहे,—मैं ने इस ओदन का सेवन न पराङ्मुख होकर किया है, न सामने से किया है और न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने इस ओदन का सेवन अंतरिक्ष विधि से किया है. इस विधि से सेवन किया हुआ ओदन सर्वांग पूर्ण हो जाता है. जो पुरुष इस प्रकार से ओदन का सेवन करना जानता है वह सर्वांग पूर्ण फल को प्राप्त करता है. (८)

ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषय: प्राश्नन्. विद्युत् त्वा हनिष्यतीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. दिवा पृष्ठेन. तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्. एष वा ओदन: सर्वाङ्ग: सर्वपरु: सर्वतनू:. सर्वाङ्ग एव सर्वपरु: सर्वतनू: सं भवति य एवं वेद (९)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठान करने वाले ऋषियों ने जिस पृष्ठ से इस ओदन का सेवन किया है, तू ने यदि उस से भिन्न अर्थात लौकिक पृष्ठ से इस ओदन का सेवन किया तो विद्युत तेरा विनाश कर देगी. इस के उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से कहे—मैं ने इस ओदन का सेवन न पराङ्मुख

होकर किया है, न सामने से किया है और न आत्माभिमुख होकर किया है मैं ने ... रूपी पृष्ठ से इस ओदन का सेवन किया है. इसे जहां जाना चाहिए था मैंने उसे वहीं पहुंचा दिया है. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त सभी जोड़े वाला और संपूर्ण शरीर वाला है. इस विधि से जो इस ओदन का सेवन करना चाहता है. वही सब अंगों से युक्त सभी जोड़ों वाला और संपूर्ण फलवाला होकर स्वर्ग आदि लोकों में स्थित होता है. (९)

ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. कृष्या न रात्स्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. पृथिव्योरसा तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१०)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्ता ऋषियों ने जिस वक्षस्थल से इस ओदन का सेवन किया था, तुमने उससे भिन्न पृष्ठ से यदि इस ओदन का सेवन किया तो तुम्हें ऋषि कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होगी. इसके उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से निवेदन करे—मैंने इस ओदन का सेवन न पराङ्मुख होकर किया है, न सामने से किया है और न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने पृथ्वी रूप वक्षस्थल से इस ओदन का सेवन किया है. इसे जहां जाना चाहिए था मैंने उसे वहीं पहुंचा दिया है. यह ओदन सभी अंगों से युक्त, सभी जोड़ों सहित और सम्पूर्ण शरीरवाला है. इस विधि से जो उस ओदन का सेवन करना जानता है वह समस्त अंगो वाला सभी जोड़ों वाला संपूर्ण शरीर वाला तथा सर्वांगफल से युक्त होकर स्वर्ग आदि पुण्य लोकों में स्थित होता है. (१०)

ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. उदरदारस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. सत्येनोदरेण. तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (११)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्ता ऋषियों ने जिस उदर से इस ओदन का सेवन किया था, तुमने यदि उससे भिन्न अर्थात लौकिक उदर से इस ओदन का सेवन किया तो उदर के लिए कष्ट देने वाला अतिसार रोग तुम्हें नष्ट कर देगा. इसके उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से कहे—मैंने उस ओदन का सेवन न पराङ्मुख होकर किया है, न सामने से किया है, न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने सत्यरूपी उदर से इस ओदन का सेवन किया है. इसे जहां जाना चाहिए था मैंने उसे वहीं पहुंचा दिया है. यह ओदन समस्त अंशों से युक्त सभी जोड़ों वाला और संपूर्ण शरीर से युक्त है इस विधि से जो पुरुष इस ओदन का सेवन करना जानता है, वही समस्त अंगों वाला सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है वह स्वर्ग आदि उत्तम लोकों में स्थित होता है. (११)

ततश्चैनमन्येन वस्तिना प्राशीर्येन चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. अप्सु मरिष्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. समुद्रेण वस्तिना. तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१२)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—हे देवदत्त पूर्ववर्ती अनुष्ठान करने वाले ऋषियों ने उस ओदन का सेवन जिस व्यक्ति अर्थात मूत्राशय की सहायता से किया, तुमने यदि उससे भिन्न विधि से इस ओदन का सेवन किया तो तुम्हारी मृत्यु जल में होगी. उसके उत्तर रूप में शिष्य अपने गुरु से कहे—मैंने इस ओदन का सेवन न पराङ्मुख होकर किया, न सामने से किया और न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने इसका सेवन समुद्ररूपी बस्ती अर्थात मूत्राशय की सहायता से किया है. मैंने इस ओदन को वहीं पहुंचा दिया है जहां इसे जाना चाहिए था. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त सभी जोड़ों वाला और संपूर्ण शरीर रहित है. इस स्थिति से जो इस ओदन का सेवन करना जानता है वही समस्त अंगों वाला सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है. वह स्वर्ग आदि पुण्य लोकों में स्थित होता है. (१२)

ततश्चैनमन्याभ्यामूरुभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. ऊरू ते मरिष्यत इत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. मित्रावरुणयो रूरुभ्याम्. ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१३)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे— ''हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्त्ता ऋषियों ने इस ओदन का सेवन जिन जंघाओं की सहायता से किया, यदि तुमने उससे भिन्न अर्थात लौकिक जंघाओं की सहायता से इसका सेवन किया तो तुम्हारी जंघाएं नष्ट हो जाएंगी.'' इसे उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से निवेदन करे—''मैंने उस ओदन का सेवन न पराङ्मुख होकर किया है, न सामने से किया है और न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने इस ओदन का सेवन मित्र और वरुण रूपी जंघाओं की सहायता से किया है. इसे जहां जाना चाहिए था, मैंने उसे वहीं पहुंचा दिया है. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त, सभी जोड़ों वाला और संपूर्ण शरीर सहित है. इस विधि से जो इस ओदन का सेवन करना जानता है, वह समस्त अंगों सहित, सभी जोड़ों से युक्त और संपूर्ण शरीर वाला होता है. वह स्वर्ग आदि पुण्यलोकों में प्रतीक्षित होता है.''(१३)

ततश्चैनमन्याभ्यामष्ठीवद्भ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. स्रामो भविष्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. त्वष्टुरष्ठीवद्भ्याम्. ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१४)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहें—"हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठान करने वाले ऋषियों ने जिन अस्थियुक्त .... अर्थात हड्डियों वाले घुटनों की सहायता से सेवन किया था, यदि तुमने उससे भिन्न अर्थात लौकिक अस्थियुक्त जानुओं अर्थात हड्डियों वाले घुटनों की सहायता से ओदन का सेवन किया तो तुम्हारे घुटने सूख जाएंगे." इसके उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से कहे—"मैंने इस ओदन का सेवन न पराङ्मुख होकर किया है न सामने से किया है और न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने इस ओदन का सेवन देव के घुटनों की सहायता से किया है. उसे वहीं पहुंचा दिया है जहां उसे जाना चाहिए था. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त, सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है, इस विधि से जो ओदन का सेवन करना जानता है, वह समस्त अंगों से युक्त, सभी जोड़ों वाला और संपूर्ण शरीर सहित होता है, वह स्वर्ग आदि पुण्य लोकों में प्रतिष्ठित होता है. (१४)

> ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. बहुचारी भविष्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. अश्विनोः पादाभ्याम्. ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१५)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—"हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्ता ऋषियों ने जिन पैरों की सहायता से इस ओदन का सेवन किया था उससे भिन्न अर्थात लौकिक पैरों की सहायता से यदि तुमने इस ओदन का सेवन किया तो तुम बहुचरी अर्थात निरर्थक बहुत चलने वाले बनोगे." इसके उत्तर में शिष्य अपने गुरु से कहे—मैंने इस ओदन का सेवन न तो पराङ्मुख होकर किया है, न सामने से किया है और न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने इसका सेवन अश्विनीकुमारों रूपी चरणों की सहायता से किया है. मैंने इसे वहीं पहुंचा दिया है जहां इसे जाना था. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त, सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है. इस स्थिति से जो उस ओदन का सेवन करता है, वह समस्त अंगों वाला, सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है. वह स्वर्ग आदि पुण्य लोकों में स्थित होता है. (१५)

> ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. सर्पस्त्वा हनिष्यतीत्येनमहा. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. सवितुः प्रपदाभ्याम्. ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१६)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे—"हे देवदत्त पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्ता ऋषियों ने जिन चरणांशों अर्थात पंजों की सहायता से ब्रह्मौदन सेवन किया था उससे भिन्न प्रकार से यदि तुमने इस का सेवन किया तो सर्प तुम्हारी मृत्यु कर देगा." इसके उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से कहे — मैंने इस ओदन का सेवन न

पराङ्मुख होकर किया है, न सामने से किया है और न आत्माभिमुख होकर किया है. मैंने इसे वहीं पहुंचा दिया, जहां इसे जाना चाहिए था. मैंने सविता देव के प्रपदों अर्थात अर्थात पंजों की सहायता से उसका सेवन किया है, यह ओदन समस्त अंगों से युक्त सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला है. जो इस ओदन को उस विधि से सेवन करना जानता है, वही समस्त अंगों वाला, सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर वाला हैं. वह स्वर्ग आदि श्रेष्ठ स्थानों में स्थित होता है. (१६)

ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. ब्राह्मणं हनिष्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. ऋतस्य हस्ताभ्याम्. ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१७)

गुरु अपने शिष्य से इस प्रकार कहे — हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्त्ता ऋषियों ने इस ओदन को जिन हाथों की सहायता से सेवन किया उस के अतिरिक्त अर्थात लौकिक हाथों से यदि इस ओदन का सेवन किया है. यदि उससे भिन्न अर्थात लौकिक हाथों की सहायता से उस ब्रह्मौदन का सेवन किया तो ब्राह्मणों की हत्या करोगे अथवा तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप लगेगा. इसके उत्तर के रूप में शिष्य अपने गुरु से कह — मैंने इस ओदन का सेवन न पराङ्मुख होकर किया है, न सामने से खाया है और न आत्माभिमुख होकर खाया है. मैंने ऋतु रूपी हाथों की सहायता से इस ओदन का सेवन किया है. मैंने ओदन को वहीं पहुंचा दिया है, जहां उसे जाना था. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त, सभी जोड़ों वाला और संपूर्ण अंगों सहित है. इस विधि से जो इस ओदन का सेवना करना जाता. वह समस्त अंगों वाला है सभी जोड़ों से युक्त और संपूर्ण शरीर वाला हो जाता है, वह स्वर्ग आदि पुण्य लोकों में प्रतिष्ठित होता है. (१७)

ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया प्राशीर्यया चैतं पूर्व ऋषयः प्राश्नन्. अप्रतिष्ठानो ऽनायतनो मरिष्यसीत्येनमाह. तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम्. सत्ये प्रतिष्ठाय. तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम्. एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः. सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद (१८)

गुरु अपने शिष्य से कहे — हे देवदत्त! पूर्ववर्ती अनुष्ठानकर्त्ता ऋषियों ने जिस प्रतिष्ठा के माध्यम से इस ब्रह्मौदन का सेवन किया है उसके अतिरिक्त लौकिक प्रतिष्ठा के माध्यम से तुम यदि इस ओदन का सेवन करोगे तो तुम बिना प्रतिष्ठा वाले और बिना घर के स्वामी हुए मरोगे. इसके उत्तर में शिष्य अपने गुरु से निवेदन करे — मैंने इस ब्रह्मौदन का न पराङ्मुख होकर सेवन किया है, न सामने से सेवन किया है और न आत्माभिमुख होकर सेवन किया है. मैंने सत्य में प्रतिष्ठित होकर उस प्रतिष्ठा के माध्यम से इस ओदन का सेवन किया है. इस ब्रह्मौदन को जहां जाना चाहिए था मैंने उसे वहीं पहुंचा दिया है. यह ओदन समस्त अंगों से युक्त, सभी

जोड़ों सहित एवं संपूर्ण शरीर वाला है इस विधि से जो इस ओदन का सेवन करना जानता है वह समस्त अंगों वाला, सभी जोड़ों सहित और संपूर्ण शरीर है. (१८)

सूक्त छठा

देवता—प्राण

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे.
यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम् (१)

इस प्राण के लिए नमस्कार है, जिस के वश में यह समस्त चराचर जगत है. यह प्राण सब का ईश्वर है और इसी में सारा जगत स्थित है. (१)

नमस्ते प्राण क्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे.
नमस्ते प्राण विद्युते नमस्ते प्राण वर्षते (२)

हे ध्वनि करते हुए प्राण! तुम्हारे लिए नमस्कार है, मेघ घटा में घुस कर वर्षा करने वाले तुम्हारे लिए नमस्कार है. बिजली के रूप में प्रकाशित एवं वर्षा करते हुए तुम्हें नमस्कार है. (२)

यत् प्राण स्तनयित्नुनाभिक्रन्दत्योषधीः.
प्र वीयन्ते गर्भान् दधतेऽथो बह्वीर्वि जायन्ते (३)

जब प्राण अर्थात सूर्यात्मक देव वर्षा काल में मेघ ध्वनि के द्वारा जौ, गेहूं, एवं जंगली वृक्षों को लक्ष्य कर के गरजते हैं, तब सभी फसलें गर्भ धारण करती हैं एवं अनेक प्रकार से उत्पन्न होती हैं. (३)

यत् प्राण ऋतावागतेऽभिक्रन्दत्योषधीः.
सर्वं तदा प्र मोदते यत् किं च भूम्यामधि (४)

जब प्राण अर्थात सूर्यात्मक देव वर्षा ऋतु आने पर फसलों को लक्ष्य कर के गर्जन करते हैं, तब भूमि के ऊपर जितने भी प्राणी हैं, वे सब प्रसन्न होते हैं. (४)

यदा प्राणो अभ्यवर्षीद् वर्षेण पृथिवीं महीम्.
पशवस्तत् प्र मोदन्ते महो वै नो भविष्यति (५)

जिस समय प्राण अर्थात सूर्यदेव, पृथ्वी को वर्षा के जल से सभी ओर गीला कर देते हैं, उस समय गाय आदि पशु प्रसन्न होते हैं कि घास की अधिकता से हमारे लिए उत्सव होगा. (५)

अभिवृष्टा ओषधयः प्राणेन समवादिरन्.
आयुर्वै नः प्रातीतरः सर्वा नः सुरभीरकः (६)

प्राण अर्थात सूर्य देव के द्वारा वर्षा के जल से सींची गई फसलें और जड़ीबूटियां सूर्य से संभाषण करने लगती हैं.—''हे प्राण अर्थात सूर्यदेव! तुम हमारा

जीवन बढ़ाओ तथा हमें शोभन गंध वाली बनाओ.'' (६)

नमस्ते अस्त्वायते नमो अस्तु परायते.
नमस्ते प्राण तिष्ठत आसीनायोत ते नमः (७)

हे प्राण देव! तुझ आते हुए को नमस्कार है और वापस जाते हुए को नमस्कार है हे प्राण देव! तुझ स्थिर रहने वाले को तथा बैठे हुए को नमस्कार है. (७)

नमस्ते प्राण प्राणते नमो अस्त्वपानते. पराचीनाय
ते नमः प्रतीचीनाय ते नमः सर्वस्मै त इदं नमः (८)

हे प्राण देव! सांस लेने का व्यापार करने वाले तुम्हें नमस्कार है तथा अपान वायु छोड़ने वाले तुम्हें नमस्कार है. अधिक कहने से क्या लाभ है, समस्त व्यापार अर्थात क्रियाएं करने वाले तुम्हें नमस्कार है. (८)

या ते प्राण प्रिया तनूर्यो ते प्राण प्रेयसी.
अथो यद् भेषजं तव तस्य नो धेहि जीवसे (९)

हे प्राणदेव! तुम्हारा प्रिय जो शरीर है एवं प्राण, अपान अर्थात अग्नि और सोम रूपी तुम्हारी जो दो प्रियाएं हैं तथा जो तुम्हारी अमरता प्रदान करने वाली ओषधि है, इन सब से हमें जीवन के अमृत का साधन ओषधि प्रदान करो. (९)

प्राणः प्रजा अनु वस्ते पिता पुत्रमिव प्रियम्.
प्राणो ह सर्वस्येश्वरो यच्च प्राणति यच्च न (१०)

हे प्राणदेव! समस्त प्रजाओं के शरीर में तुम इस प्रकार निवास करते हो, जिस प्रकार पिता अपने वस्त्र से प्रिय पुत्र को ढकता है. प्राण उन सब के स्वामी हैं, जो सांस लेते हैं अथवा सांस नहीं लेते हैं. (१०)

प्राणो मृत्युः प्राणस्तक्मा प्राणं देवा उपासते.
प्राणो ह सत्यवादिनमुत्तमे लोक आ दधत् (११)

ये प्राणदेव ही मृत्यु करने वाले हैं एवं यही जीवन को कष्टमय बनाने वाले ज्वर हैं. शरीर के मध्य में वर्तमान इन्हीं प्राण की देवगण उपासना करते हैं. (११)

प्राणो विराट् प्राणो देष्ट्री प्राणं सर्व उपासते.
प्राणो ह सूर्यश्चन्द्रमाः प्राणमाहुः प्रजापतिम् (१२)

107

प्राण अर्थात स्थूल प्रपंच का अभिमानी देवता ईश्वर प्राण है तथा अपनेअपने व्यापारों में सब को प्रेरित करने वाला परम देवता प्राण है. अपने मनचाहे फल को पाने के लिए सभी प्राण की उपासना करते हैं. प्राण सूर्य और चंद्रमा है तथा प्राण

को ही ज्ञानी जन सब की रचना करने वाला प्रजापति कहते हैं. (१२)

प्राणापानौ व्रीहियवावनड्वान् प्राण उच्यते.
यवे ह प्राण आहितोऽपानो व्रीहिरुच्यते (१३)

प्राण और अपान प्रधान प्राण की विशेष वृत्तियां हैं. प्राण ही गेहूं, जौ तथा अपान बैल कहे जाते हैं. प्राण वायु जौ में आश्रित है तथा अपान वायु को ही गेहूं कहा जाता है. (१३)

अपानति प्राणति पुरुषो गर्भे अन्तरा.
यदा त्वं प्राण जिन्वस्यथ स जायते पुनः (१४)

पुरुष स्त्री के गर्भाशय के मध्य सांस लेता और अपान वायु छोड़ता है. हे प्राण! जब तुम गर्भस्थ भ्रूण को पुष्ट करते हो, तब वह जन्म लेता है. (१४)

प्राणमाहुर्मातरिश्वानं वातो ह प्राण उच्यते.
प्राणे ह भूतं भव्यं च प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम् (१५)

प्राण को मातरिश्वा अंतरिक्ष का स्वामी वायु कहा जाता है. उसी वायु को प्राण कहा जाता है. उन दोनों में केवल नाम का भेद है. जगत के आधार बने हुए उस प्राण में भूतकाल से संबंधित और भविष्य काल में उत्पन्न होने वाला जगत आश्रित रहता है. इस प्रकार प्राणों में ही सब प्रतिष्ठित हैं. (१५)

आथर्वणीराङ्गिरसीर्दैवीर्मनुष्यजा उत.
ओषधयः प्र जायन्ते यदा त्वं प्राण जिन्वसि (१६)

अथर्वा महर्षि द्वारा, अंगिरा महर्षि द्वारा, देवों द्वारा तथा मनुष्यों द्वारा उत्पन्न अनेक प्रकार की जड़ीबूटियों और फसलों को हे प्राण! तुम ही वर्षा का जल प्रदान कर के प्रसन्न करते हो. (१६)

यदा प्राणो अभ्यवर्षीद् वर्षेण पृथिवीं महीम्.
ओषधयः प्र जायन्तेऽथो याः काश्च वीरुधः (१७)

प्राण जब वर्षा के रूप में विशाल पृथ्वी पर जल गिराता है, तभी जड़ीबूटियां, फसलें और जो भी वृक्ष हैं, वे सब उत्पन्न होते हैं. (१७)

यस्ते प्राणेदं वेद यस्मिंश्चासि प्रतिष्ठितः.
सर्वे तस्मै बलिं हरानमुष्मिंल्लोक उत्तमे (१८)

हे प्राण! यह कहा हुआ तुम्हारा माहात्म्य जो जानता है एवं जिस विद्वान में तुम प्रतिष्ठित रहते हो, उस के लिए सभी देव स्वर्ग में अमृतमय भाग प्रस्तुत करते हैं. (१८)

यथा प्राण बलिहृतस्तुभ्यं सर्वाः प्रजा इमाः.
एवा तस्मै बलिं हरान् यस्त्वा शृणवत् सुश्रवः (१९)

हे प्राण! जिस प्रकार ये सभी प्रजाएं तुम्हारे लिए बलि प्रस्तुत करें. हे सुनने वाले प्राण! जो तुम्हारा माहात्म्य सुनता है, उस के लिए भी सब बलि प्रस्तुत कर देते हैं. (१९)

अन्तर्गर्भश्चरति देवतास्वाभूतो भूतः स उ जायते पुनः.
स भूतो भव्यं भविष्यत् पिता पुत्रं प्र विवेशा शचीभिः (२०)

प्राण गर्भ हो कर देवताओं में विचरण करता है, वही भलीभांति व्याप्त हो कर मनुष्य आदि के शरीर के रूप में पुनः उत्पन्न होता है. नित्य वर्तमान वह प्राण भूतकाल की वस्तुओं में तथा भविष्य काल की वस्तुओं के रूप में उत्पन्न होता है. वही अपनी शक्तियों से पिता और पुत्र में प्रवेश करता है. (२०)

एकं पादं नोत्खिदति सलिलाद्धंस उच्चरन्. यदङ्ग स तमुत्खिदेन्नैवाद्य
न श्वः स्यान्न रात्री नाहः स्यान्न व्युच्छेत् कदा चन (२१)

हंस अर्थात जगत के प्राण बने हुए सूर्य जल से उदित होते हुए अपने एक चरण अर्थात भाग को जल से ऊपर नहीं उठाते हैं. यदि वे अपने दूसरे चरण को भी ऊपर उठा लें तो काल विभाजन नहीं हो सकेगा. तब वे कहीं न जा सकेंगे और न दिन और रात हो सकेंगे. (२१)

अष्टाचक्रं वर्तत एकनेमि सहस्राक्षरं प्र पुरो नि पश्चा.
अर्धेन विश्वं भुवनं जजान यदस्यार्धं कतमः स केतुः (२२)

त्वचा, रक्त आदि आठ धातुएं शरीर का निर्माण करती हैं. उन्हीं का यहां रथ के पहियों के रूप में निरूपण है—यह शरीर आठ पहियों वाला रथ है. प्राण ही इस की एकमात्र धुरी है. लोक में रथ के पहिए धुरी को घेरे रहते हैं. प्राण रूपी धुरी एक पहिए से निकल कर दूसरे में प्रवेश करती है. वह प्राण अपने एक अंश से सारे प्राणियों में प्रवेश कर के आत्मा के रूप में उत्पन्न होता है. उस का दूसरा भाग असीमित ब्रह्म का झंडा अर्थात ब्रह्मांड बन जाता है. (२२)

यो अस्य विश्वजन्मन ईशे विश्वस्य चेष्टतः.
अन्येषु क्षिप्रधन्वने तस्मै प्राण नमोऽस्तु ते (२३)

जो प्राण नाना रूपों को जन्म देने वाला है, जो इस संसार का स्वामी है तथा नाना प्राणियों के शरीरों में व्याप्त है, उस तीव्रता से व्याप्त होने वाले हे प्राण! तुम्हारे लिए नमस्कार है. (२३)

यो अस्य सर्वजन्मन ईशे सर्वस्य चेष्टतः.
अतन्द्रो ब्रह्मणा धीरः प्राणो मानु तिष्ठतु (२४)

वह जगदीश्वर प्राण आलस्य रहित सदा सूर्य के रूप में विचरण करने वाला,

ज्ञानवान एवं सर्वव्यापक होने के कारण मेरा अनुवर्तन करे. (२४)

ऊर्ध्वः सुप्तेषु जागार ननु तिर्यङ् नि पद्यते.
न सुप्तमस्य सुप्तेष्वनु शुश्राव कश्चन (२५)

हे प्राण! तुम ऊर्ध्वगामी हो कर निद्रा परवश प्राणियों में जागते रहो. सोने वाला प्राणी निद्रा के वशीभूत हो जाता है. इसलिए उस की रक्षा हेतु तुम जाग्रत रहो. ऐसा किसी ने नहीं सुना है कि मनुष्य के निद्रा पर वश होने पर उस का प्राण भी सो गया हो. (२५)

प्राण मा मत् पर्यावृतो न मदन्यो भविष्यसि.
अपां गर्भमिव जीवसे प्राण बध्नामि त्वा मयि (२६)

हे प्राण! आप मुझ से न तो विमुख हों तथा न मुझे त्याग कर अन्यत्र जाएं. जल जिस प्रकार वाडवाग्नि को धारण करते हैं, उसी प्रकार हम अपनी देह में आपको धारण करते हैं.(२६)

सूक्त सातवां — देवता—ब्रह्मचारी

ब्रह्मचारीष्णंश्चरति रोदसी उभे तस्मिन् देवाः संमनसो भवन्ति.
स दाधार पृथिवीं दिवं च स आचार्य१ तपसा पिपर्ति (१)

वेदों का अध्ययन करने वाला अपने तप से धरती और आकाश दोनों में व्याप्त होता है. इंद्र आदि सभी देव इस ब्रह्मचारी के प्रति अनुग्रह करते हैं. यह ब्रह्मचारी अपने तप से धरती और स्वर्ग को धारण करता है तथा सन्मार्ग पर चलता हुआ अपने आचार्य का पालन करता है. (१)

ब्रह्मचारिणं पितरो देवजनाः पृथग् देवा अनुसंयन्ति सर्वे.
गन्धर्वा एनमन्वायन् त्रयस्त्रिंशत् त्रिशताः षट्सहस्राः
सर्वान्त्स देवांस्तपसा पिपर्ति (२)

पितर, देवजन एवं इंद्र आदि सभी देव ब्रह्मचारी की रक्षा के लिए उस के पीछे चलते हैं. गंधर्व भी ब्रह्मचारी का अनुगमन करते हैं. ब्रह्मचारी अपने तप से तैंतीस, तीस और छः हजार संख्या वाले सभी देवों का पालन करता है. (२)

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः.
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः (३)

आचार्य ब्रह्मचारी का उपनयन अर्थात यज्ञोपवीत संस्कार कर के अपने समीप रखता हुआ उसे विद्या से संपन्न करता है. आचार्य उस ब्रह्मचारी को तीन रात्रियों तक अपने अत्यधिक समीप रखता है. चौथे दिन विद्यामय शरीर से उत्पन्न उस ब्रह्मचारी को देखने के लिए देवगण एकत्र हो कर आते हैं. (३)

इयं समित् पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्षं समिधा पृणाति.

ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकांस्तपसा पिपर्ति (४)

यह पृथ्वी ब्रह्मचारी की पहली समिधा है. द्युलोक अर्थात स्वर्ग ब्रह्मचारी की दूसरी समिधा है. ब्रह्मचारी स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य अर्थात अंतरिक्ष को अग्नि में डाली गई समिधा के द्वारा पूर्ण करता है. इस प्रकार ब्रह्मचारी समिधा, मेखला, श्रम और तप के द्वारा लोकों को पूर्ण करता है अर्थात भर देता है. (४)

पूर्वो जातो ब्रह्मणो ब्रह्मचारी घर्मं वसानस्तपसोदतिष्ठत्.
तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम् (५)

सर्व जगत के कारण ब्रह्म से सब से पहले ब्रह्मचारी उत्पन्न हुआ. उत्पन्न हुआ ब्रह्मचारी धर्म से अपने आप को ढकता हुआ तप के द्वारा उठा. उस ब्रह्मचारी रूपी ब्रह्म से ब्राह्मणों का धन वेद उत्पन्न हुआ. उस वेद से अमृत के साथ अग्नि आदि देव उत्पन्न हुए. (५)

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्धः कार्ष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः.
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुराचरिक्रत् (६)

समिधा से उत्पन्न तेज को धारण करता हुआ, नियमों के द्वारा वश में किया गया, लंबी दाढ़ी वाला ब्रह्मचारी पूर्व सागर से उत्तर सागर की ओर गया. उस ने पृथ्वी, अंतरिक्ष आदि लोकों को वश में कर के अपने अभिमुख किया. (६)

ब्रह्मचारी जनयन् ब्रह्मापो लोकं प्रजापतिं परमेष्ठिनं विराजम्.
गर्भो भूत्वामृतस्य योनाविन्द्रो ह भूत्वासुरांस्ततर्ह (७)

उस ब्रह्मचारी ने ब्राह्मण जाति के जल अर्थात गंगा आदि नदियों को, स्वर्ग आदि लोकों को, प्रजाओं की सृष्टि करने वाले प्रजापति को तथा प्रजापति के बाद सृष्टि की रचना करने वाले परमेष्ठी को उत्पन्न किया. वह ब्रह्मचारी मृत्यु रहित ब्रह्म की सत्ता, रज, तमोगुण वाली प्रकृति में गर्भ बन कर सब को जन्म देता है. उस ने तप के बल से इंद्र हो कर देवों के विरोधी असुरों का विनाश किया. (७)

आचार्य स्ततक्ष नभसी उभे इमे उर्वी गम्भीरे पृथिवीं दिवं च.
ते रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तस्मिन् देवाः संमनसो भवन्ति (८)

आचार्य ने उसी क्षण आकाश और धरती दोनों को जन्म दिया. ये दोनों विस्तृत और गंभीर हैं. पृथ्वी विस्तृत है और आकाश गंभीर है. ब्रह्मचारी अपने तप से दोनों की चर्चा करता है. उस ब्रह्मचारी से सभी देव प्रसन्न होते हैं. (८)

इमां भूमिं पृथिवीं ब्रह्मचारी भिक्षामा जभार प्रथमो दिवं च.
ते कृत्वा समिधावुपास्ते तयोरार्पिता भुवनानि विश्वा (९)

सब से पहले उत्पन्न ब्रह्मचारी ने इस विस्तृत भूमि को पहली भिक्षा के रूप में

ग्रहण किया. इस के बाद स्वर्ग को दूसरी भिक्षा के रूप में ग्रहण किया. वह भिक्षा में प्राप्त उन स्वर्ग और धरती को समिधा बना कर अग्नि की परिचर्या अर्थात सेवा करता है. स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य सभी प्राणी स्थापित किए गए हैं. (९)

अर्वागन्य: परो अन्यो दिवस्पृष्ठाद् गुहा निधी निहितौ ब्रह्मणस्य.
तौ रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तत् केवलं कृणुते ब्रह्म विद्वान् (१०)

स्वर्ग के ऊपरी भाग से तथा उस के नीचे के भाग अर्थात धरती पर वेद रूपी खजाने को आचार्य की हृदयरूपी गुफा में छिपा दिया. दूसरा खजाना अर्थात वेद के द्वारा प्रतिपाद्य देवों को स्थापित किया. वेद पढ़ने वाले से संबंधित इन दोनों खजानों की रक्षा ब्रह्मचारी अपने तप से करता है. वह वेद के रूप में उस के विषय ब्रह्म का ही साक्षात्कार करता है. (१०)

अर्वान्य इतो अन्य: पृथिव्या अग्नी समेतो नभक्षी अन्तरेमे.
तयो: श्रयन्ते रश्मयोऽधि दृढास्ताना तिष्ठति तपसा ब्रह्मचारी (११)

108

इस स्वर्ग के नीचे एक सूर्यात्मक अग्नि है और दूसरी पृथ्वी के ऊपर है इस स्वर्ग और धरती के मध्य दोनों अग्नियां आपस में मिल कर उदय होती हैं. उन सूर्य और अग्नि से संबंधित किरणें धरती और स्वर्ग के मध्य आश्रय लेती हैं. ब्रह्मचारी अपने तप की महिमा से उन का देवता बनता है. (११)

अभिक्रन्दन् स्तनयन्नरुण: शितिङ्गो बृहच्छेपोऽनु भूमौ जभार.
ब्रह्मचारी सिञ्चति सानौ रेत: पृथिव्यां तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्त्र: (१२)

मेघों में गर्जन करता हुआ, जल पूर्ण मेघ को प्राप्त वह ब्रह्मचारी वरुण बन कर अपने जलरूपी वीर्य को ऊंचे स्थानों पर बरसाता है. उस जल से धरती पर चारों दिशाएं प्राणियों को धारण करती हैं. (१२)

अग्नौ सूर्ये चन्द्रमसि मातरिश्वन् ब्रह्मचार्य१प्सु समिधमा दधाति.
तासामर्चींषि पृथगभ्रे चरन्ति तासामाज्यं पुरुषो वर्षमाप: (१३)

ब्रह्मचारी अग्नि में, सूर्य में, चंद्रमा में, वायु में और जल में समिधा को धारण करता है. अग्नि आदि की किरणें अंतरिक्ष अर्थात आकाश में अलग-अलग विचरण करती हैं. वे किरणें गायों में घृत को, पुरुष और स्त्री में संतान को तथा वर्षा में जल को उत्पन्न करती हैं. (१३)

आचार्यो मृत्युर्वरुण: सोम ओषधय: पय:.
जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिदं स्व१राभृतम् (१४)

आचार्य ही मृत्यु, वरुण, सोम, जड़ीबूटियां, फसलें एवं जल है. आचार्य रूपी वरुण के अनुचर जलपूर्ण मेघ हुए. उन मेघों ने अपने भीतर वर्षा के निमित्त जल धारण किया है. (१४)

अमां घृतं कृणुते केवलमाचार्यो भूत्वा वरुणो यद्यदैच्छत् प्रजापतौ.
तद् ब्रह्मचारी प्रायच्छत् स्वान्मित्रो अध्यात्मनः (१५)

वरुण देव आचार्य हो कर जल को ही उत्पन्न करते हैं. वह वरुण अपने जनक प्रजापति अर्थात ब्रह्म से जो चाहता है, मित्रदेव बन कर अपने ब्रह्मचर्य के माहात्म्य के द्वारा अपने शरीर से ही प्राप्त कर लेता है. (१५)

आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः.
प्रजापतिर्वि राजति विराडिन्द्रोऽभवद्वशी (१६)

आचार्य पहले विद्या का उपदेश कर के ब्रह्मचारी के रूप में उत्पन्न हुआ. ब्रह्मचारी तप के द्वारा अधिक महिमा को प्राप्त कर के जगत सृष्टा प्रजापति हुआ. प्रजापति विराट हुआ. बाद में वह स्वतंत्र इंद्र हुआ. (१६)

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति.
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते (१७)

ब्रह्मचर्य रूपी तप से राजा राष्ट्र की रक्षा करता है. आचार्य भी ब्रह्मचर्य के नियम के द्वारा अपने शिष्य को अपने समान बनाना चाहता है. (१७)

ब्रह्मचर्येण कन्या३ युवानं विन्दते पतिम्.
अनड्वान् ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीर्षति (१८)

ब्रह्मचर्य के द्वारा कन्या युवा पति को प्राप्त करती है. ब्रह्मचर्य के द्वारा बैल और घोड़ा घास खाने की इच्छा करता है. (१८)

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत.
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्व१राभरत् (१९)

ब्रह्मचर्य रूपी तप के द्वारा देवों ने मृत्यु का हनन कर दिया अर्थात देव अमर हो गए. इंद्र ने ब्रह्मचर्य के द्वारा देवों के लिए स्वर्ग पर अधिकार किया. (१९)

ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे वनस्पतिः.
संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः. (२०)

जड़ीबूटियां और फसलें, भूतकाल में उत्पन्न और भविष्य में उत्पन्न होने वाला प्राणि समूह, दिन और रात, ऋतुओं के साथ संवत्सर—ये सब ब्रह्मचर्य से उत्पन्न हुए. (२०)

पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या ग्राम्याश्च ये.
अपक्षाः पक्षिणश्च ये ते जाता ब्रह्मचारिणः (२१)

पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य, देव, जंगली और ग्रामीण पशु, बिना पंखों के और पंखों वाले प्राणी सभी ब्रह्मचर्य से उत्पन्न हुए. (२१)

पृथक् सर्वे प्राजापत्याः प्राणानात्मसु बिभ्रति.
तान्त्सर्वान् ब्रह्म रक्षति ब्रह्मचारिण्याभृतम् (२२)

प्रजापति के द्वारा उत्पन्न देव, मनुष्य आदि सभी अपने शरीरों में प्राणों को धारण करते हैं. उन सभी की रक्षा आचार्य के द्वारा ब्रह्मचारी में धारण किया हुआ अर्थात पढ़ाया हुआ वेद करता है. (२२)

देवानामेतत् परिषूतमनभ्यारूढं चरति रोचमानम्.
तस्माज्जातं ब्राह्मणं ब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्च सर्वे अमृतेन साकम् (२३)

इस अपरोक्ष ब्रह्म का साक्षात्कार देवों ने किया है. यह ब्रह्म अपने प्रकाश से प्रकाशित और सब से उत्कृष्ट है. ब्राह्मण से सब से अधिक बढ़ा हुआ और प्रशंसनीय वेद रूपी ब्रह्म उत्पन्न हुआ है. अग्नि आदि सब देव अपने द्वारा उपभोग किए जाने वाले अमृत के साथ उत्पन्न हुए. (२३)

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् बिभर्ति तस्मिन् देवा अधि विश्वे समोताः.
प्राणापानौ जनयन्नाद् व्यानं वाचं मनो हृदयं ब्रह्म मेधाम् (२४)

ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला पुरुष दीप्ति वाले वेदरूपी ब्रह्म को धारण करता है. उस वेद से सभी देव संबंधित हैं. देवों का निवास बना हुआ ब्रह्मचारी प्राण और अपान के बाद ज्ञान को, मन, वाणी, हृदय और मेधा को उत्पन्न करता है. (२४)

चक्षुः श्रोत्रं यशो अस्मासु धेह्यन्नं रेतो लोहितमुदरम् (२५)

हे ब्रह्मचारी रूपी ब्रह्म! हम स्तोत्राओं में चक्षु, क्षेत्र अर्थात यज्ञ को धारण करो. तुम अन्न, वीर्य, रक्त तथा संपूर्ण शरीर को हम में धारण करो. (२५)

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोऽतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे.
स स्नातो बभ्रुः पिङ्गलः पृथिव्यां बहु रोचते (२६)

ब्रह्मचारी उन अन्न आदि को उत्पन्न करता हुआ, जल के ऊपर तपस्या करता हुआ सागर पर वर्तमान रहता है. स्नान से पवित्र हुआ एवं कबरे रंग के साथ पीले रंग का होता हुआ पृथ्वी पर अधिक दीप्त होता है. अर्थात अधिक चमकता है (२६)

सूक्त आठवां

देवता—अग्नि

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोषधीरुत वीरुधः.
इन्द्रं बृहस्पतिं सूर्यं ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१)

हम अग्नि की, वनस्पतियों की, जड़ीबूटियों और फसलों की, वृक्षों की, इंद्र की, बृहस्पति की तथा सूर्य की स्तुति करते हैं. वे हमें सभी पापों से मुक्त करें. (१)

ब्रूमो राजानं वरुणं मित्रं विष्णुमथो भगम्.
अंशं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (२)

हम तेजस्वी वरुण की, मित्र की, विष्णु की, भग की, अंश और विवस्वान अर्थात सूर्य की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (२)

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम्.
त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (३)

हम दानादि गुणों से युक्त सविता, धाता, पूषा, त्वष्टा और अग्नि की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (३)

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम्.
अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (४)

हम प्रथम गिने जाने वाले गंधर्वों की, अप्सराओं की, अश्विनीकुमारों की, त्वष्टा की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (४)

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा.
विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहस (५)

हम दिनरात तथा सूर्य चंद्रमा दोनों की स्तुति करते हैं. हम सभी आदित्यों की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (५)

वातं ब्रूमः पर्जन्यमन्तरिक्षमथो दिशः.
आशाश्च सर्वा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (६)

हम वायु की, मेघ की, आकाश की तथा दिशाओं की स्तुति करते हैं. हम सभी विदिशाओं अर्थात दिशाओं के कोनों की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (६)

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादहोरात्रे अथो उषाः.
सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति (७)

दिन, रात और उषाएं शपथ से उत्पन्न पाप से हमारी रक्षा करें. वे सोमदेव मुझे पाप से मुक्त करें, जिन्हें लोग चंद्रमा कहते हैं. (७)

पार्थिवा दिव्याः पशव आरण्या उत ये मृगाः.
शकुन्तान् पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (८)

हम पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों, देवों, ग्रामीण पशुओं और सिंह आदि जंगली पशुओं की स्तुति करते हैं. हम शकुन बने हुए पक्षियों की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (८)

भवाशर्वाविदं ब्रूमो रुद्रं पशुपतिश्च यः.

इषुर्या एषां संविद्म ता नः सन्तु सदा शिवाः (९)

हम उन भव, शर्व, रुद्र और पशुपति की स्तुति करते हैं. हम इन देवों के बाणों को जानते हैं. वे सदा हमारे लिए कल्याणकारी हों. (९)

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान्.
समुद्रा नद्यो वेशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१०)

हम स्वर्ग की, नक्षत्रों अर्थात तारों की, भूमि की, यक्षों और पर्वतों की स्तुति करते हैं. जो सागर, नदियां और सरोवर हैं, वे हमें पाप से बचाएं. (१०)

सप्तर्षीन् वा इदं ब्रूमोऽपो देवीः प्रजापतिम्.
पितॄन् यमश्रेष्ठान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (११)

हम उन सप्तर्षियों की, जल देवियों की और प्रजापति की स्तुति करते हैं. हम ऐसे पितरों की स्तुति करते हैं, जिन में यमराज श्रेष्ठ हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (११)

ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये.
पृथिव्यां शक्रा ये श्रितास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१२)

जो देव स्वर्ग में निवास करते हैं और अंतरिक्ष अर्थात धरती और आकाश के मध्य निवास करते हैं, जो देव पृथ्वी पर आश्रित हैं, वे हमें पाप से मुक्त करें. (१२)

आदित्या रुद्रा वसवो दिवि देवा अथर्वाणः.
अङ्गिरसो मनीषिणस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१३)

आदित्य, रुद्र और वसु देव स्वर्ग में निवास करते हैं. जो देव पृथ्वी पर शक्तिशाली हैं, वे हमें पाप से मुक्त करें. वेद मंत्रों के दृष्टा अंगिरा गोत्रीय ऋषि तथा मनीषी पाप से हमारी रक्षा करें. (१३)

यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः सामानि भेषजा.
यजूंषि होत्रा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१४)

हम यज्ञ की, यजमान की, ऋचाओं की, सामवेद के मंत्रों की, यजुर्वेद के मंत्रों तथा इन वेदों में बताई गई ओषधियों एवं होताओं की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (१४)

पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः.
दर्भो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१५)

फल पकने पर उन्नत होने वाली जड़ीबूटियों और फसलों में जो पांच श्रेष्ठ हैं और इन के राजा हैं, हम उन की स्तुति करते हैं. दर्भ भाग, जौ और सह नाम की

विशेष ओषधि की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (१५)

अरायान् ब्रूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजनान् पितृन्.
मृत्यूनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१६)

हम दान के प्रतिबंधक हिंसकों, राक्षसों, सर्पों, यातुधानों और पितरों की स्तुति करते हैं. मैं एक से एक मृत्युओं की स्तुति करता हूं. वे मुझे पाप से मुक्त करें. (१६)

ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान्.
समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१७)

हम ऋतुओं की, ऋतुओं के स्वामियों की, ऋतुओं से संबंधित पदार्थों की, अर्थात चंद्र वर्षों की, सूर्य वर्षों की, सवंत्सरों की तथा मासों की स्तुति करते हैं. वे हमें पाप से मुक्त करें. (१७)

एत देवा दक्षिणतः पश्चात् प्राञ्च उदेत.
पुरस्तादुत्तराच्छक्रा विश्वे देवाः समेत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१८)

हे दक्षिण दिशा में स्थित देवों! तुम आओ. चारों दिशाओं में स्थित सभी देव यहां यज्ञ में आ कर हमें पाप से मुक्त करें. (१८)

विश्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः.
विश्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (१९)

हम सच्ची प्रतिज्ञा वाले, सत्य अथवा यज्ञ की वृद्धि करने वाले सभी देवों की स्तुति करते हैं. वे अपनी पत्नियों के साथ यहां हमारे यज्ञ में आएं और हमें पाप से मुक्त करें. (१९)

सर्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतावृधः.
सर्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (२०)

हम कहे गए और न कहे गए सच्ची प्रतिज्ञा वाले और यज्ञ अथवा सत्य की रक्षा करने वाले सभी देवों की स्तुति करते हैं. वे सभी अपनी पत्नियों के साथ आएं और हमें पाप से मुक्त करें. (२०)

भूतं ब्रूमो भूतपतिं भूतानामुत यो वशी.
भूतानि सर्वा संगत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः (२१)

हम भूत की, भूतों के स्वामी की तथा भूतों को वश में करने वाले की स्तुति करते हैं. सभी भूत मिल कर हमें पाप से मुक्त करें. (२१)

या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः.
संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः (२२)

पांच प्रधान दिशाओं की जो देवियां हैं तथा बारह मासों के स्वामी जो देव हैं

और स्वतंत्र रूप प्रजापति की जो दाढ़ें अर्थात पक्ष, सप्ताह आदि हैं, वे हमें पाप से मुक्त करें. (२२)

यन्मातली रथक्रीतममृतं वेद भेषजम्.
तदिन्द्रो अप्सु प्रावेशयत् तदापो दत्त भेषजम् (२३)

इंद्र का सारथी मातलि रथ के बदले में खरीदी हुई मृत्यु का नाश करने वाली ओषधि को जानता है. इंद्र ने उस ओषधि को जल में डुबा दिया है. जल हमें वह ओषधि प्रदान करे. (२३)

सूक्त नौवां — देवता—हवन से बचा भात

उच्छिष्टे नाम रूपं चोच्छिष्टे लोक आहितः.
उच्छिष्ट इन्द्रश्चाग्निश्च विश्वमन्तः समाहितम् (१)

उच्छिष्ट अर्थात होम के बाद बचे हुए भात में नाम और रूप वाला विश्व स्थित है. इस उच्छिष्ट में पृथ्वी आदि सभी लोक स्थित हैं. उच्छिष्ट ही इंद्र और अग्नि हैं. होम के बाद शेष बचे हुए इस भात में ईश्वर ने सारा जगत स्थापित किया है. (१)

उच्छिष्टे द्यावापृथिवी विश्वं भूतं समाहितम्.
आपः समुद्र उच्छिष्टे चन्द्रमा वात आहितः (२)

उच्छिष्ट अर्थात होम करने के बाद बचे हुए भात में स्वर्ग, पृथ्वी तथा उन में स्थित प्राणी आश्रित हैं. इस उच्छिष्ट में जल, सागर, चंद्रमा और वायु स्थित हैं. (२)

सन्नुच्छिष्टे असंश्चोभौ मृत्युर्वाजः प्रजापतिः.
लौक्या उच्छिष्ट आयत्ता व्रश्च द्रश्चापि श्रीर्मयि (३)

उच्छिष्ट अर्थात होम करने के बाद शेष बचे भात में सत और असत दोनों के अतिरिक्त मृत्यु, मृत्यु का बल, प्रजापति तथा प्रजाएं स्थापित हैं. वरुण और सोम भी इस में स्थित हैं. उन की कृपा से मुझ में भी श्री स्थित हो. (३)

दृढो दृंहस्थिरो न्यो ब्रह्म विश्वसृजो दश.
नाभिमिव सर्वतश्चक्रमुच्छिष्टे देवताः श्रिताः (४)

दृढ़ अंग वाला देव, दृढ़ होने के कारण स्थिर किया हुआ लोम, सभी प्राणी, जगत का कारण ब्रह्म, दस प्राण एवं सभी देवता हुतशिष्ट अर्थात हवन करने के बाद शेष बचे भात में उसी प्रकार आश्रित हैं, जिस प्रकार रथ का पहिया धुरी पर आश्रित रहता है. (४)

ऋक् साम यजुरुच्छिष्ट उद्गीथः प्रस्तुतं स्तुतम्.
हिङ्कार उच्छिष्टे स्वरः साम्नो मेडिश्च तन्मयि (५)

ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद के मंत्र, इन का गाया हुआ भाग एवं प्रस्तुत स्तुतियां उच्छिष्ट अर्थात होम के बाद बचे हुए भात में आश्रित हैं. सभी उद्गाताओं के द्वारा प्रयोग किया जाता हुआ 'हिं' शब्द, सामवेद के स्वर, सामवेद संबंधित वाणी—ये सब यज्ञ शेष के लिए मुझ में स्थित हैं. (५)

ऐन्द्राग्नं पावमानं महानाम्नीर्महाव्रतम्.
उच्छिष्टे यज्ञस्याङ्गान्यन्तर्गर्भइव मातरि (६)

इंद्र और अग्नि की स्तुति से संबंधित सामवेद के मंत्र, तीनों में सोम देवता से संबंधित सामवेद के मंत्र, महानाम्नी और महाव्रत नाम के स्तोत्र तथा यज्ञ के अंग होम के बाद बचे भात में उसी प्रकार स्थित हैं, जिस प्रकार गर्भ माता के पेट में स्थित रहता है. (६)

राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः.
अर्काश्वमेधावुच्छिष्टे जीवबर्हिर्मदिन्तमः (७)

राजसूय, वाजपेय और अग्निष्टोम नाम के यज्ञ हिंसा रहित हैं. अर्क, अश्वमेध, जीवबर्हि तथा मादक सोमयाग—ये सभी उच्छिष्ट अर्थात होम से शेष बचे भात में आश्रित हैं. (७)

अग्न्याधेयमथो दीक्षा कामप्रश्छन्दसा सह.
उत्सन्ना यज्ञाः सत्त्राण्युच्छिष्टेऽधि समाहिताः (८)

अग्नि के आधान के पश्चात सोम याग की दीक्षा, यजमान की इच्छाएं पूर्ण करने वाले मंत्रों के साथ लुप्तप्राय यज्ञ एवं सोमयाग उच्छिष्ट रूपी ब्रह्म में आश्रित हैं. (८)

अग्निहोत्रं च श्रद्धा च वषट्कारो व्रतं तपः.
दक्षिणेष्टं पूर्तं चोच्छिष्टेऽधि समाहिताः (९)

अग्नि होम, श्रद्धा, वषट शब्द, व्रत, तप, दक्षिणा, वेदों में बताए गए याग, होमादि कर्म तथा स्मृतियों और पुराणों में बताए गए बावड़ी, कुआं आदि बनवाने के कर्म उच्छिष्ट अर्थात यज्ञ शेष रूपी ब्रह्म में स्थित हैं. (९)

एकरात्रो द्विरात्रः सद्यः क्रीः प्रक्रीरुक्थ्यः.
ओतं निहितमुच्छिष्टे यज्ञस्याणूनि विद्यया (१०)

एक रात्रि वाला सोमयाग, दो रात्रियों तक चलने वाला सोमयाग, एक दिन में होने वाले क्री और प्रक्री नाम के सोमयाग, उक्थों वाला सोमयाग, यज्ञ से संबंधित सूक्ष्म रूप, भावना के साथ यज्ञ शेष अर्थात यज्ञ के पश्चात बचे हुए भातरूपी ब्रह्म में स्थित है. (१०)

चतूरात्रः पञ्चरात्रः षड्रात्रश्चोभयः सह. षोडशी
सप्तरात्रश्चोच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे ये यज्ञा अमृते हिताः (११)

चार रात्रियों वाला, पांच रात्रियों वाला, छः रात्रियों वाला तथा इन से दूनी रात्रियों वाले सोमयाग, सोलह रात्रियों वाले, सात रात्रियों वाले सोमयाग तथा अमृत का फल देने वाले जो यज्ञ हैं, वे सब उच्छिष्ट अर्थात यज्ञशेष रूपी ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं. (११)

प्रतीहारो निधनं विश्वजिच्चाभिजिच्च यः.
साह्नातिरात्रावुच्छिष्टे द्वादशाहोऽपि तन्मयि (१२)

उद्‌गीथ के बाद गाए जाने वाले सामवेद के मंत्र, प्रतीहार तथा सोमयागों की समाप्ति के मंत्र, विश्वजित और अभिजित नाम के यज्ञ, एक दिन में होने वाला सोमयाग साह्न, अतिरात्र नाम के जो सोमयाग यज्ञ शेष रूपी ब्रह्म में स्थित हैं, वे सब मुझ में हों अर्थात मेरे द्वारा किए जाएं. (१२)

सूनृता संनतिः क्षेमः स्वधोर्जामृतं सहः.
उच्छिष्टे सर्वे प्रत्यञ्चः कामाः कामेन तातृपुः (१३)

सूनृता, विनम्र भाव, क्षेम, स्वधा, अमृत, बल तथा सामने उपस्थित सभी कामनाएं यज्ञशेष रूपी ब्रह्म में स्थित हैं. ये सभी कामना करने वाले यजमान को तृप्त करते हैं. (१३)

नव भूमीः समुद्रा उच्छिष्टेऽधि श्रिता दिवः.
आ सूर्यो भात्युच्छिष्टेऽहोरात्रे अपि तन्मयि (१४)

नौ खंडों वाली पृथ्वी, सात सागर तथा स्वर्ग यज्ञशेष रूपी ब्रह्म में स्थित है. सूर्य और रात दिन भी उच्छिष्ट अर्थात यज्ञ शेष रूपी ब्रह्म में स्थित हैं. ये सभी मेरे द्वारा हों. (१४)

उपहव्यं विषूवन्तं ये च यज्ञा गुहा हिताः.
बिभर्ति भर्ता विश्वस्योच्छिष्टो जनितुः पिता (१५)

उपहव्य, विषूवान नाम के सोमयाग तथा जो सोमयाग ज्ञात नहीं है, विश्व का भरणपोषण करने वाला तथा सवनयज्ञ का अनुष्ठान करने वाले का पालनकर्ता यज्ञशेष रूपी ब्रह्म है. (१५)

पिता जनितुरुच्छिष्टोऽसोः पौत्रः पितामहः.
स क्षियति विश्वस्येशानो वृषा भूम्यामतिघ्न्यः (१६)

यज्ञशेष रूपी ब्रह्म अपने को उत्पन्न करने वाले का पिता है. यह भात प्राण वायु का पौत्र और पितामह है. विश्व का स्वामी और कामनाएं पूर्ण करने वाला वह सब

को अतिक्रमण कर के भूमि पर निवास करता है. (१६)

ऋतं सत्यं तपो राष्ट्रं श्रमो धर्मश्च कर्म च.
भूतं भविष्यदुच्छिष्टे वीर्यं लक्ष्मीर्बलं बले (१७)

ऋत, सत्य, तप, राष्ट्र, श्रम, धर्म, कर्म, भूतकाल, भविष्यकाल, वीर्य, लक्ष्मी और बल यज्ञशेष रूपी बल में आश्रित है. (१७)

समृद्धिरोज आकूतिः क्षत्रं राष्ट्रं षडुर्व्यः.
संवत्सरोऽध्युच्छिष्ट इडा प्रैषा ग्रहा हविः (१८)

समृद्धि, ओज, आकूति अर्थात मन चाहे फल संबंधी संकल्प, क्षत्रिय का तेज, राष्ट्र, छः पृथिवियां, संवत्सर, इडा नाम की देवी, यज्ञ कर्मों में ऋत्विजों के प्रेरक मंत्र, गृह और हवि ये सभी यज्ञ शेषरूपी ब्रह्म में स्थित हैं. (१८)

चतुर्होतार आप्रियश्चातुर्मास्यानि नीविदः.
उच्छिष्टे यज्ञा होत्राः पशुबन्धास्तदिष्टयः (१९)

चतुर्होत्र नाम के मंत्र, पशुयाग संबंधी मंत्र, चार मासों में किए जाने वाले चार पर्व, स्तुति संबंधी देव के उत्कर्ष को बताने वाले मंत्र, नीविद, यज्ञ, होता, इष्टियां—ये सब यज्ञशेष रूपी ब्रह्म में स्थित हैं. (१९)

अर्धमासाश्च मासाश्चार्तवा ऋतुभिः सह.
उच्छिष्टे घोषिणीरापः स्तनयित्नुः श्रुतिर्मही (२०)

आधा महीना अर्थात पक्ष, महीने, ऋतुओं के साथ उन में उत्पन्न होने वाले पदार्थ, शब्द करने वाले जल, गर्जन करते हुए मेघ और पवित्र भूमि—ये सभी यज्ञशेष रूपी ब्रह्म में स्थित हैं. (२०)

शर्कराः सिकता अश्मान ओषधयो वीरुधस्तृणा.
अभ्राणि विद्युतो वर्षमुच्छिष्टे संश्रिता श्रिता (२१)

पत्थरों के छोटे टुकड़े, बालू, पत्थर, जड़ीबूटी और फसलें, लताएं, तिनके, मेघ, बिजलियां और वर्षा ये सब यज्ञशेष रूपी ब्रह्म में स्थित हैं. (२१)

राद्धिः प्राप्तिः समाप्तिर्व्याप्तिर्मह एधतुः.
अत्याप्तिरुच्छिष्टे भूतिश्चाहिता निहिता हिता (२२)

सिद्धि, प्राप्ति, समाप्ति, व्याप्ति, तेज, वृद्धि, अत्यधिक प्राप्ति, समृद्धि तथा सामने स्थित हितकारी पदार्थ यज्ञशेष रूपी ब्रह्म में स्थित है. (२२)

यच्च प्राणति प्राणेन यच्च पश्यति चक्षुषा.
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः (२३)

जो प्राण वायु के द्वारा जीवित रहता है, जो आंखों से देखता है, स्वर्ग में स्थित देव और स्वर्ग—ये सभी यज्ञ शेष रूपी ब्रह्म से उत्पन्न है. (२३)

ऋचः सामानि च्छन्दांसि पुराणं यजुषा सह.
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः (२४)

ऋग्वेद और सामवेद के मंत्र, छंद, यजुर्वेद के सहित प्राचीन मंत्र, स्वर्ग और स्वर्ग में स्थित देव—ये सभी यज्ञ रूपी ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं. (२४)

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या.
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः (२५)

प्राण और अपान वायु, नेत्र, कान, विनाश का अभाव और विनाश, स्वर्ग और स्वर्ग में स्थित देव—ये सभी यज्ञशेष रूपी ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं. (२५)

आनन्दा मोदाः प्रमुदोऽभीमोदमुश्च ये.
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः (२६)

विषयों के उपभोग से उत्पन्न आनंद नाम के विशेष सुख, हर्ष, अधिक प्रसन्नता एवं इन्हें देने वाले पदार्थ, स्वर्ग और स्वर्ग में स्थित देव—ये सभी यज्ञशेष रूपी ब्रह्म से उत्पन्न हुए. (२६)

देवाः पितरो मनुष्या गन्धर्वाप्सरसश्च ये.
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः (२७)

देव, पितर, मनुष्य, गंधर्व, अप्सराएं, स्वर्ग और स्वर्ग में स्थित देव—ये सभी यज्ञ शेष रूपी ब्रह्म से उत्पन्न हुए. (२७)

सूक्त दसवां — देवता—मन्यु

यन्मन्युर्जायामावहत् संकल्पस्य गृहादधि.
क आसं जन्याः के वराः क उ ज्येष्ठवरोऽभवत् (१)

ब्रह्म माया के अभिमुख उसी प्रकार प्राप्त हुआ, जिस प्रकार पति पत्नी के सामने जाता है. ब्रह्म ने माया को उसी प्रकार प्राप्त किया, जिस प्रकार पति अपनी पत्नी को घर से प्राप्त करता है. ब्रह्मा की सृष्टि रचना की इच्छा में वधू पक्ष के बंधन कौन थे? कन्या का वरण करने वाले कौन थे? उस समय प्रधान वर अर्थात विवाह करने वाला कौन था? (१)

तपश्चैवास्तां कर्म चान्तर्महत्यर्णवे. त आसं
जन्यास्ते वरा ब्रह्म ज्येष्ठवरोऽभवत् (२)

उस सृष्टि रचना के समय सृष्टि की रचना करने वाले परमेश्वर का तप और कर्म ही उस समय स्थित थे. यह तप और कर्म प्रलय काल के सागर का मंत्र था.

637/37

विवाह के मुहूर्त पर जो कन्या पक्ष वाले बंधन थे, वे ही विवाह करने वाले थे. ब्रह्म उन में सब से बड़ा वर था. (२)

दश साकमजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा. यो वै
तान् विद्यात् प्रत्यक्षं स वा अद्य महद् वदेत् (३)

अग्नि आदि देवों की उत्पत्ति से पहले ही ज्ञानेंद्रियां और कर्मेंद्रियां उत्पन्न हुईं. जो उपासक उन देवों को जान सकेगा, वह प्रत्यक्ष ही ब्रह्म का उपदेश करेगा. (३)

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या.
व्यानोदानौ वाङ्मनस्ते वा आकूतिमावहन् (४)

प्राण और अपान वायु, नयन, कान, क्षीण होने वाली क्रिया शक्ति, क्षय रहित ब्रह्म, व्यान और उदान वायुएं, वाणी और मन ने देवकृत संकल्प को धारण किया. (४)

अजाता आसन्नृतवोऽथो धाता बृहस्पतिः.
इन्द्राग्नी अश्विना तर्हि कं ते ज्येष्ठमुपासत (५)

सृष्टि रचना के समय बसंत आदि ऋतुएं उत्पन्न नहीं हुई थीं. धाता, बृहस्पति, इंद्र, अग्नि तथा दो अश्विनीकुमार भी उस समय उत्पन्न नहीं हुए थे. धाता आदि वे देव अपने जन्मदाता ब्रह्म की उपासना कर रहे थे. (५)

तपश्चैवास्तां कर्म चान्तर्महत्यर्णवे.
तपो ह जज्ञे कर्मणस्तत् ते ज्येष्ठमुपासत (६)

प्रलय काल के महासागर में तप और कर्म ही थे. तप कर्म से उत्पन्न हुआ था. वे धाता आदि सृष्टि के कारण बने हुए ब्रह्म की उपासना कर रहे थे. (६)

येत आसीद् भूमिः पूर्वा यामद्धातय इद् विदुः.
यो वै तां विद्यान्नामथा स मन्येत पुराणवित् (७)

सामने वर्तमान इस भूमि से पहले जो भूमि थी. उसे तप के प्रभाव से शक्ति प्राप्त करने वाले ऋषि जानते थे. जो अतीत काल के कल्प में स्थित उस भूमि को जो जानेगा, वह प्राचीन अर्थ को जानने वाला माना जाएगा. (७)

कुत इन्द्रः कुतः सोमः कुतो अग्निरजायत.
कुतस्त्वष्टा समभवत् कुतो धाताजायत (८)

कहां से इंद्र, कहां से सोम और कहां से अग्नि उत्पन्न हुई ? त्वष्टा कहां से उत्पन्न हुआ तथा धाता की उत्पत्ति कहां से हुई ? (८)

इन्द्रादिन्द्रः सोमत् सोमो अग्नेरग्निरजायत.

त्वष्टा ह जज्ञे त्वष्टुर्धातुर्धाताजायत (९)

पूर्व काल में जो इंद्र थे, उन से इन वर्तमान काल के इंद्र की उत्पत्ति हुई. इसी सोम से सोम, अग्नि से अग्नि, त्वष्टा से त्वष्टा और धाता से धाता उत्पन्न हुए. (९)

ये त आसन् दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा.
पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा कस्मिंस्ते लोक आसते (१०)

प्राचीन काल में देवों से जो दस देव उत्पन्न हुए, वे अपने पुत्रों को यह लोक दे कर भी स्वयं किस लोक में निवास करते हैं? (१०)

यदा केशानस्थि स्नाव मांसं मज्जानमाभरत्.
शरीरं कृत्वा पादवत् कं लोकमनुप्राविशत् (११)

जिस सृष्टि रचना के समय रचना करने वाले ने केशों को, अस्थियों को, स्नायुओं अर्थात नसों को, मांस को और मज्जा अर्थात चर्बी को एकत्र किया. हाथपैरों वाले शरीर की रचना कर के सृष्टि रचना करने वाले ब्रह्म ने उस शरीर में आत्मा के रूप में प्रवेश किया. (११)

कुतः केशान् कुतः स्नाव कुतो अस्थीन्याभरत्.
अङ्गा पर्वाणि मज्जानं को मांसं कुत आभरत् (१२)

सृष्टि रचना करने वाले ईश्वर ने केशों, स्नायुओं अर्थात नसों को और हड्डियों को किस उपादान कारण से बनाया, अंगों, जोड़ों, चर्बी और मांस की रचना उस ने कहां से की? (१२)

संसिचो नाम ते देवा ये संभारान्त्समभरन्.
सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् (१३)

ज्ञानेंद्रियां, कर्मेंद्रियों एवं प्राण, अपान आदि के रूप में जिन साधनों को पहले बताया गया है, उन्हें सृष्टि रचना करने वाले ब्रह्म ने एकत्र किया. उन साधनों से बने शरीर को रक्त, मज्जा आदि से गीला कर के उन देवों ने मरण धर्मा पुरुष का निर्माण कर के आत्मा के रूप में उस में प्रवेश किया. (१३)

ऊरू पादावष्ठीवन्तौ शिरो हस्तावथो मुखम्.
पृष्टीर्बर्जह्ये पार्श्वे कस्तत् समदधादृषिः (१४)

जंघाओं को, पैरों को, घुटनों को, शीश को, हाथों को और मुख को, पसलियों को किस ऋषि ने बनाया. (१४)

शिरो हस्तावथो मुखं जिह्वां ग्रीवाश्च कीकसाः.
त्वचा प्रावृत्य सर्वं तत् संधा समदधान्मही (१५)

शीश को, दोनों हाथों को, मुख को, जीभ को, गरदन को, हड्डियों को एवं उस सारे शरीर को त्वचा से ढक कर इस के निर्माण कर्ता देवता ने आपस में जोड़ दिया. (१५)

यत्तच्छरीरमशयत् संधया संहितं महत्.
येनेदमद्य रोचते को अस्मिन् वर्णमाभरत् (१६)

इस प्रकार के शरीर का निर्माण करने वाले देवता सहित जो बढ़ा हुआ शरीर है, वह इस समय जिस रंग के कारण सुंदर लगता है, उस शरीर में किस नाम के देव ने उस रंग को बनाया है ? (१६)

सर्वे देवा उपाशिक्षन् तदजानाद् वधूः सती.
ईशा वशस्य या जाया सास्मिन् वर्णमाभरत् (१७)

सभी देवों ने समीप में शक्तिशाली होने की इच्छा की. परमेश्वर के साथ विवाह करने वाली माया ने देवों के द्वारा बनाए हुए उस शरीर को जाना. जो माया सारे संसार का नियंत्रण करने वाली है, उस ने इस शरीर में रंग भरा है. (१७)

यदा त्वष्टा व्यतृणत् पिता त्वष्टुर्य उत्तरः.
गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् (१८)

उस शरीर में आत्मा के रूप में उस का निर्माण करने वाला ईश्वर स्थित है. उस निर्माण कार्य से भी श्रेष्ठ इस विचित्र संसार का निर्माण करने वाला जो देव है, उस ने निर्माण के समय पुरुष के शरीर, आंखों, कानों आदि के रूप में छेद किए, तब उस निर्माण देव ने उस पुरुष शरीर को घर बना कर उस में प्रवेश किया. (१८)

स्वप्नो वै तन्द्रीर्निर्ऋतिः पाप्मानो नाम देवताः.
जरा खालत्यं पालित्यं शरीरमनु प्राविशन् (१९)

नींद, आलस्य, पापदेवता एवं ब्रह्महत्या आदि पापों ने इस शरीर में प्रवेश किया. वृद्धावस्था, नयन आदि का नष्ट होना, त्वचा का ढीला हो जाना आदि के अभिमानी देवों ने शरीर में प्रवेश किया. (१९)

स्तेयं दुष्कृतं वृजिनं सत्यं यज्ञो यशो बृहत्.
बलं च क्षत्रमोजश्च शरीरमनु प्राविशन् (२०)

चोरी, सुरा पीना आदि बुरे कर्म, इन से उत्पन्न पाप, सत्य भाषण, यज्ञ, महान यश, बल और क्षत्रियों से संबंधित ओज ने इस शरीर में प्रवेश किया. (२०)

भूतिश्च वा अभूतिश्च रातयोऽरातयश्च याः.
क्षुधश्च सर्वास्तृष्णाश्च शरीरमनु प्राविशन् (२१)

समृद्धि, असमृद्धि अर्थात संपन्नता और दीनता, मित्र और शत्रु, भूख और

प्यास, इन सब ने पुरुष के शरीर में प्रवेश किया. (२१)

निन्दाश्च वा अनिन्दाश्च यच्च हन्तेति नेति च.
शरीरं श्रद्धा दक्षिणा श्रद्धा चानु प्राविशन् (२२)

निंदा और प्रशंसा, हर्ष और शोक, धन की समृद्धि और इच्छा का अभाव—इन्होंने शरीर में प्रवेश किया. (२२)

विद्याश्च वा अविद्याश्च यच्चान्यदुपदेश्यम्.
शरीरं ब्रह्म प्राविशदृचः सामाथो यजुः (२३)

शास्त्र आदि में ज्ञान और अज्ञान ने, अन्य उपदेश योग्य भावों ने, ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद के मंत्रों के पश्चात ब्रह्म अर्थात ब्रह्म के अंश आत्मा ने शरीर में प्रवेश किया. (२३)

आनन्दा मोदाः प्रमुदोऽभीमोदमुदश्च ये.
हसो नरिष्टा नृत्तानि शरीरमनु प्राविशन् (२४)

आनंद, मोद, प्रमोद, सामने वर्तमान मोद अर्थात अभिमोद, हंसी, शब्द, रूप, स्पर्श आदि एवं नृत्य आदि ने इस शरीर में प्रवेश किया. (२४)

आलापाश्च प्रलापाश्चाभीलापलपश्च ये.
शरीरं सर्वे प्राविशन्नायुजः प्रयजो युजः (२५)

सार्थक वचन, निरर्थक वचन, अभिलाषाओं से पूर्ण वचन, आयोजन, प्रयोजन और योजना—इन सब ने मनुष्य के शरीर में प्रवेश किया. (२५)

प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमक्षितिश्च क्षितिश्च या.
व्यानोदानौ वाङ् मनः शरीरेण त ईयन्ते (२६)

प्राण और अपान वायुएं, नेत्र, कान, विनाश का अभाव और विनाश, व्यान और उदान वायुएं, वाणी और मन—ये सभी इस शरीर में प्रवेश कर के अपने-अपने काम लगे हैं. (२६)

आशिषश्च प्रशिषश्च संशिषो विशिषश्च याः.
चित्तानि सर्वे संकल्पाः शरीरमनु प्राविशन् (२७)

मनचाहे फल की प्रार्थनाएं, उत्कृष्ट प्रार्थनाएं, भलीभांति होने वाली प्रार्थनाएं तथा अनेक प्रकार की प्रार्थनाएं, मनबुद्धि और अहंकार, सभी संकल्प—इन्होंने पुरुष शरीर में प्रवेश किया. (२७)

आस्तेयीश्च वास्तेयीश्च त्वरणाः कृपणीश्च याः.
गुह्याः शुक्रा स्थूला अपस्ता बीभत्सावसादयन् (२८)

भलीभांति स्नान, स्नान से संबंधित जल, शीघ्रता से चलने वाले तथा थोड़ी मात्रा में होने वाले जल, गुफा में होने वाले, श्वेत वर्ण के अर्थात स्वच्छ जल, अधिक मात्रा में होने वाले नदी रूप में वर्तमान जल—इन सब ने पुरुष के शरीर में प्रवेश किया. (२८)

अस्थि कृत्वा समिधं तदष्टापो असादयन्.
रेतः कृत्वाज्यं देवाः पुरुषमाविशन् (२९)

हड्डियों को समिधा बना कर पहले कहे गए आठ प्रकार के जलों ने पुरुष के शरीर में प्रवेश किया. वीर्य को घृत बना कर देवों ने पुरुष के शरीर में प्रवेश किया. (२९)

या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह.
शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः (३०)

जो जल, जो देवता, जो विराट तथा जो प्रजापति कहे गए हैं, ब्रह्म के साथ आत्मा के रूप में उन सभी ने पुरुष के शरीर में प्रवेश किया. (३०)

सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य वि भेजिरे.
अथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नग्नये (३१)

सूर्य ने पुरुष के नयनों को तथा वायु ने पुरुष के प्राणों को मृत्यु के बाद ले लिया. प्राणों और इंद्रियों के अतिरिक्त पुरुष के शरीर को देवों ने अग्नि को दे दिया. (३१)

तस्माद् वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते.
सर्वा ह्यस्मिन् देवता गावो गोष्ठ इवासते (३२)

इसी कारण विद्वान इस पुरुष को ब्रह्म मानते हैं. जिस प्रकार गाएं गोशाला में रहती हैं, उसी प्रकार सब देवता मनुष्य के इस शरीर में निवास करते हैं. (३२)

प्रथमेन प्रमारेण त्रेधा विष्वङ् वि गच्छति.
अद एकेन गच्छत्यद एकेन गच्छतीहैकेन नि षेवते (३३)

पुरुष के शरीर में प्रवेश करने वाला जीवात्मा इंद्रियों के द्वारा पुण्य और पाप रूपी कर्म पूरे कर के मृत्यु के बाद स्वर्ग या नरक में स्थान प्राप्त करता है. पहले होने वाले स्थूल शरीर की मृत्यु के बाद वह जीवात्मा शरीर त्याग कर अनेक नियमों के अनुसार तीन प्रकार से जाता है. एक अर्थात पाप कर्म से नरक में जाता है, पुण्य कर्म से स्वर्ग में जाता है तथा पुण्य और पाप से मिले हुए दोनों प्रकार के कर्म से यहां सुख दुखों को अनुभव करता है. (३३)

अप्सु स्तीमासु वृद्धासु शरीरमन्तरा हितम्.

तस्मिञ्छवोऽध्यन्तरा तस्माञ्छवोऽध्युच्यते (३४)

संसार को गीला करने वाले एवं बढ़े हुए उन जलों के मध्य शरीर स्थित है. उस ब्रह्मांड शरीर के ऊपर, नीचे और मध्य में वह आत्मा कहा जाता है. (३४)

सूक्त ग्यारहवां   देवता—अर्बुदि

ये बाहवो या इषवो धन्वनां वीर्याणि च. असीन् परशूनायुधं चित्ताकूतं च यद्धृदि. सर्वं तदर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय (१)

हमारे योद्धाओं के जो बाण, जो भुजाएं और बल है, तलवारें और फरसारूपी आयुध, चित्त में संकल्पित शत्रुओं को मारना कार्य है, हे अर्बुद ऋषि के पुरुषार्थी! तुम यह सब हमारे शत्रुओं को दिखलाओ. शत्रुओं को डसने के लिए हमें अंतरिक्ष में विचरण करने वाले राक्षसों और पिशाचों को दिखाओ. (१)

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम्.
संदृष्टा गुप्ता वः सन्तु या नो मित्राण्यर्बुदे (२)

हे मित्रो अर्थात हमारी विजय के प्रदानशील देवगणो! तुम सेना की इस छावनी से विजय प्राप्ति के लिए प्रार्थना करो. आप के द्वारा दिए हुए हमारे योद्धा आपके द्वारा रक्षित हैं. हे अर्बुद सर्प! हमारे जो मित्र हैं जो हमारे शत्रुओं के साथ युद्ध करने के लिए आए हैं, उन के तुम अंग बनो. (२)

उत्तिष्ठतमा रभेथामादानसंदानाभ्याम्. अमित्राणां सेना अभि धत्तमर्बुदे (३)

हे अर्बुदि सर्प! तुम और निर्बुद इस स्थान से चले जाओ. तुम यहां से दूर जाओ. तथा युद्ध करो. तुम आदान और संदान नाम की रस्सियों से शत्रुओं की सेना को बांधो. (३)

अर्बुदिर्नाम यो देव ईशानश्च न्यर्बुदिः. याभ्यामन्तरिक्षमावृतमियं च पृथिवी मही. ताभ्यामिन्द्रमेदिभ्यामहं जितमन्वेमि सेनया (४)

अर्बुदि, ईशान और न्यर्बुदि नाम के जो देव है, उन के द्वारा आकाश और विशाल पृथ्वी को ढक लिया है. स्वर्ग और धरती को व्याप्त कर के स्थित एवं इंद्र के मित्र अर्बुदि और न्यर्बुदि के द्वारा जीती हुई सेना का मैं अनुगमन करूं. (४)

उत्तिष्ठ त्वं देवजनार्बुदे सेनया सह.
भञ्जन्नमित्राणां सेनां भोगेभिः परि वारय (५)

हे देव जाति से संबंधित अर्बुदि नाम के सर्प! तुम अपनी सेना के साथ उठो. इस के बाद तुम शत्रुओं की सेनाओं का वध करते हुए अपने सर्प शरीरों के द्वारा उन की आंखें बंद कर लो. (५)

सप्त जातान् न्यर्बुद उदाराणां समीक्षयन्.

तेभिष्ट्वमाज्ये हुते सर्वैरुत्तिष्ठ सेनया (६)

हे न्यर्बुदि नाम के सर्प! पहले बताए हुए आंखों को बंद करने वाले सब शरीरों के शत्रुओं को दिखाते हुए तुम घृत एवं आज्य के होने पर उन सब के द्वारा जाते हुए शत्रुओं को उन सब को दिखाओ जो उन की आंखों को बंद कर देते हैं. तुम उन सब के साथ हमारी सेना के संग उठो. (६)

प्रतिघ्नानाश्रुमुखी कृधुकर्णी च क्रोशतु.
विकेशी पुरुषे हते रदिते अर्बुदे तव (७)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! तुम्हारे द्वारा काटे जाने पर हमारे शत्रु पुरुष के मर जाने पर उस की पत्नी छाती पीटती हुई, आंसू बहाती हुई, गहनों से शून्य कानों वाली, बाल बिखराए हुए रोए. (७)

संकर्षन्ती करूकरं मनसा पुत्रमिच्छन्ती.
पतिं भ्रातरमात् स्वान् रदिते अर्बुदे तव (८)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! काटने के कारण शरीर में विष फैल जाने पर शत्रु की पत्नी हाथ मलती हुई विष के नाश के लिए अपने पुत्र की इच्छा करती हुई, इस के बाद पति की भी इच्छा करती हुई तथा विष दूर करने केलिए अपने संबंधियों की इच्छा करें. (८)

अलिक्लवा जाष्कमदा गृध्राः श्येनाः पतत्रिणः.
ध्वाङ्क्षाः शकुनयस्तृप्यन्त्वमित्रेषु समीक्षयन् रदिते अर्बुदे तव (९)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! तुम्हारे द्वारा हमारे शत्रुओं को काटे जाने पर धृष्ट पक्षी, शरीर को कष्ट देने वाले पक्षी, गिद्ध, बाज तथा अन्य मांस खाने वाले पक्षी और कौवे, जो हमारे शत्रुओं का मांस खाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वे तृप्त हों. (९)

अथो सर्वं श्वापदं मक्षिका तृप्यतु क्रिमिः.
पौरुषेयेऽधि कुणपे रदिते अर्बुदे तव (१०)

हे अर्बुदि! तुम्हारे द्वारा काटे जाने पर हमारे शत्रुओं के शरीर में जो घाव हो जाते हैं, उन के शरीर को खा कर मांसभक्षी पशु, मक्खियां और कीड़े तृप्त हों. (१०)

आ गृह्णीतं सं बृहतं प्राणापानान् न्यर्बुदे.
निवाशा घोषाः सं यन्त्वमित्रेषु समीक्षयन् रदिते अर्बुदे तव (११)

हे न्यर्बुदि तथा अर्बुदि नाम के सर्पो! तुम हमारे शत्रुओं के प्राण और अपान को ग्रहण करो. तुम्हारे द्वारा हमारे शत्रुओं को काटे जाने पर उन्हें देखने वालों के द्वारा दुख भरे स्वर उच्चारण किए जाएं. (११)

उद् वेपय सं विजन्तां भियामित्रान्त्सं सृज.

उरुग्राहैर्बाह्वङ्कैर्विध्यामित्रान् न्यर्बुदे (१२)

हे न्यर्बुदि नाम के सर्प! तुम हमारे शत्रुओं को कंपित करो. तुम्हारे भय के कारण वे अपने स्थान से भाग जाएं. इस के बाद तुम हमारे शत्रुओं के पैरों और हाथों को बांध कर मारो. (१२)

मुह्यन्त्वेषां बाहवश्चित्ताकूतं च यद्धृदि.
मैषामुच्छेषि किं चन रदिते अर्बुदे तव (१३)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! तुम्हारे खाए जाने पर उन शत्रुओं की भुजाएं निष्क्रिय हो जाएं. उन के मन में जो भी भावनाएं हैं, वे भी मोहित हो जाएं. हमारे शत्रुओं की जो रथ, घोड़ा हाथी आदि सेना है, वह भी शेष न बचे. (१३)

प्रतिघ्नानाः सं धावन्तूरः पटूरावाघ्नानाः.
अघारिणीर्विकेश्यो रुदत्य१ः पुरुषे हते रदिते अर्बुदे तव (१४)

हे अर्बुदि! तुम्हारे द्वारा जिन के पतियों को काटा गया है. हमारे उन शत्रुओं की पत्नियां अपने हाथों से अपने मुख और सीने को पीटती हुई, केश बिखेरे हुए उन मृत पुरुषों के समीप शीघ्र जाएं. (१४)

श्वन्वतीरप्सरसो रूपका उतार्बुदे. अन्तःपात्रे रेरिहतीं रिशां दुर्णिहितैषिणीम्.
सर्वास्ता अर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय (१५)

हे अर्बुदि! तुम हमारे शत्रुओं की माया के द्वारा निर्मित ऐसी अप्सराओं को दिखाओ, जिन के साथ शिकारी कुत्ते हों. तुम उन्हें ऐसी गायों को दिखाओ जो पात्र को बारबार चाट रही हों. तुम उन्हें उल्कापात आदि अदभुत अपशकुन दिखाओ. (१५)

खड़ूरेऽधिचङ्क्रमां खर्विकां खर्ववासिनीम्.य उदारा
अन्तर्हिता गन्धर्वाप्सरसश्च ये. सर्पा इतरजना रक्षांसि (१६)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! तुम हमारे शत्रुओं को माया के द्वारा निर्मित ऐसे छोटे प्राणियों को दिखाओ. जो आकाश में चलफिर रहे हों और धीमी आवाज कर रहे हों. (१६)

चतुर्दंष्ट्राञ्छ्यावदतः कुम्भमुष्कां असृङ्मुखान. स्वभ्यसा ये चोद्भयसाः (१७)

जो यक्ष, राक्षस आदि अपनी माया से छिपे रहते हैं, उन काले रंग वालों और चार दांतों वालों को हमारे शत्रुओं को दिखाओ. जो राक्षस अनेक रूपों के कारण भयानक हैं, उन्हें भी तुम हमारे शत्रुओं को दिखाओ. (१७)

उद् वेपय त्वमर्बुदेऽमित्राणाममूः सिचः.
जयांश्च जिष्णुश्चामित्राञ्जयतामिन्द्रमेदिनौ (१८)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! विष की अधिकता के कारण हमारे शत्रुओं की जो सेनाएं दुखी हैं, उन्हें कंपित करो. हे विजय प्राप्त करने वाले अर्बुदि और न्यर्बुदि नाम के सर्पो! तुम हमारे शत्रुओं को पराजित करते हुए विजयी बनो एवं इंद्र के साथ मिल कर हमें विजयी बनाओ. (१८)

प्रब्लीनो मृदितः शयां हतोऽमित्रो न्यर्बुदे.
अग्निजिह्वा धूमशिखा जयन्तीर्यन्तु सेनया (१९)

हे न्यर्बुदि नाम के सर्प! हमारे शत्रु तुम्हारे द्वारा काटे जाने पर प्राण हीन हो कर सोएं. तुम्हारे द्वारा माया के बल से उत्पन्न की गई अग्नि की ज्वालाएं और धुएं की शिखाएं हमारे शत्रुओं की सेना को पराजित करती हुई हमारे साथ चलें. (१९)

तयार्बुदे प्रणुतानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम्.
अमित्राणां शचीपतिर्मामीषां मोचि कश्चन (२०)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! तुम्हारे द्वारा युद्ध भूमि से भगाए गए हमारे जो शत्रु हैं, उन में जो श्रेष्ठ हैं, उन्हें शची के पति इंद्र मारें. वे हमारे किसी शत्रु को न छोड़ें. (२०)

उत्कसन्तु हृदयान्यूर्ध्वः प्राण उदीषतु.
शौष्कास्यमनु वर्तताममित्रान् मोत मित्रिणः (२१)

हमारे शत्रुओं के हृदय उन के शरीर से निकल जाएं. उन की प्राण वायु भी उन के शरीर से निकल जाए. मुख सूख जाने से हमारे शत्रु मर जाएं. हमारे मित्रों का मुख न सूखे. (२१)

ये च धीरा ये चाधीराः पराञ्चो बधिराश्च ये. तमसा ये च तूपरा अथो
बस्ताभिवासिनः. सर्वांस्तां अर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय (२२)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! हमारे शत्रुओं में जो वीर कायर, युद्ध से भागने वाले, भय के कारण कुछ न सुनने वाले, बिना सींग के पशुओं के समान हानि न पहुंचाने वाले और भेड़ों के समान शब्द करने वाले हैं, उन सब को अपनी माया से पराजित होने वाला बनाओ. हे सर्प! तुम हमारे शत्रुओं को अपनी माया के द्वारा उल्कापात आदि अपशकुन दिखाओ. (२२)

अर्बुदिश्च त्रिषन्धिश्चामित्रान् नो वि विध्यताम्.
यथैषामिन्द्र वृत्रहन् हनाम शचीपतेऽमित्राणां सहस्रशः (२३)

त्रिषंधि अर्थात सेना को मोहित करने वाला देव और अर्बुदि नाम का सर्प हमारे शत्रुओं को अनेक प्रकार से चोट पहुंचाए. हे शचीपति इंद्र! हम जिस प्रकार उन शत्रुओं से संबंधित लोगों को हजारों की संख्याओं में मारें, हमें ऐसी शक्ति दो. (२३)

वनस्पतीन् वानस्पत्यानोषधीरुत वीरुधः. गन्धर्वाप्सरसः सर्पान् देवान् पुण्य-
जनान् पितृन्. सर्वांस्तां अर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्र दर्शय (२४)

हे अर्बुदि नाम के सर्प! तुम हमारे शत्रुओं को अपनी माया से वृक्षों, वृक्षों के विकारों, गेहूं, जौ आदि फसलों, वन के वृक्षों गंधर्वों और अप्सराओं को दिखाओ. तुम उन्हें उल्कापात आदि अद्‌भुत अपशकुन दिखाओ. (२४)

ईशां वो मरुतो देव आदित्यो ब्रह्मणस्पतिः. ईशां व इन्द्रश्चाग्निश्च धाता मित्रः
प्रजापतिः. ईशां व ऋषयश्चक्रुरमित्रेषु समीक्षयन् रदिते अर्बुदे तव (२५)

हे शत्रुओ! मरुत देव और ब्रह्मणस्पति तुम्हारे शिक्षक हों. इंद्र, अग्नि, धाता, मित्र और प्रजापति तुम्हारा नियंत्रण करने वाले हों. हे अर्बुदि नाम के सर्प! तुम्हारे द्वारा हमारे शत्रुओं को काटे जाने पर ऋषिगण उन्हें देखते हुए उन के शिक्षक बनें. (२५)

तेषां सर्वेषामीशाना उत्तिष्ठ सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम्.
इमं संग्रामं संजित्य यथालोकं वि तिष्ठध्वम् (२६)

हमारे मित्र रूप देवगण उन सभी शत्रुओं के शिक्षक होते हुए उठें. ये सभी उन की शिक्षा के लिए तैयार हो जाएं. हे शत्रुओ! देवगण इस संग्राम को जीत कर शत्रुओं का विनाश कर के अपने स्थान को जाएं. (२६)

सूक्त बारहवां — देवता—त्रिषंधि

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वमुदाराः केतुभिः सह.
सर्पा इतरजना रक्षांस्यमित्राननु धावत (१)

हे उदार गुणों वाले सेना नायको! अपने झंडों के साथ उठो और युद्ध के लिए चलो. तुम कवच आदि पहन कर युद्ध के लिए तैयार हो जाओ. हे सर्पों की आकृति वाले देवो! हे राक्षसो! तुम भी हमारे शत्रुओं के पीछे दौड़ो. (१)

ईशां वो वेद राज्यं त्रिषन्धे अरुणैः केतुभिः सह. ये अन्तरिक्षे ये दिवि
पृथिव्यां ये च मानवाः. त्रिषन्धेस्ते चेतसि दुर्णामान उपासताम् (२)

हे शत्रुओ! वज्र के अभिमानी देव त्रिषंधि तुम्हारा राज्य छीन कर अपने अधिकार में करें. हे वज्रात्मक देव! तुम्हारे जो लाल झंडे आकाश में उत्पात के रूप में उत्पन्न होते हैं तथा भूलोक में मनुष्य संबंधी हैं, तुम उन के साथ आओ. (२)

अयोमुखाः सूचीमुखा अथो विकङ्कतीमुखाः.
क्रव्यादो वातरंहस आ सजन्त्वमित्रान् वज्रेण त्रिषन्धिना (३)

लोहे के समान मुख वाले, सुई के आकार के मुंह वाले, बहुत से कांटों जैसे पंखों वाले पक्षी, गिद्ध आदि मांस भक्षी पक्षी और हवा के समान तेजी से उड़ने वाले पक्षी, हमारे जिस शत्रु के आसपास मंडराते हैं, वे वज्र से मारे जाएं. (३)

अन्तर्धेहि जातवेद आदित्य कुणपं बहु.
त्रिषन्धेरियं सेना सुहितास्तु मे वशे (४)

हे जातवेद अग्नि, आदित्य देव अर्थात सूर्य को आकाश में गिरते हुए शवों के शरीरों के द्वारा ढक दो. त्रिषंधि नामक देव से संबंध रखने वाली यह सेना भलीभांति मेरे वश में हो, जिस से मैं शत्रुओं को मार सकूं. (४)

उत्तिष्ठ त्वं देवजनार्बुदे सेनया सह.
अयं बलिर्व आहुतस्त्रिषन्धेराहुतिः प्रिया (५)

हे देव जाति के अर्बुद नाम के सर्प! तुम अपनी सेना के साथ उठो. हमारा यह बलि कार्य तुम्हारी तृप्ति करने वाला हो. त्रिषंधि देव की जो सेना है, वह भी बलि प्राप्त होने के कारण शत्रुओं का विनाश करे. (५)

शितिपदी सं द्यतु शरव्येऽयं चतुष्पदी.
कृत्येऽमित्रेभ्यो भव त्रिषन्धेः सह सेनया (६)

श्वेत चरणों वाली गाय, चार चरणों वाली हो कर तथा बाणों का समूह बना कर हमारे शत्रुओं को प्राप्त हो. हे कृत्यारूपिणी गौ! तू त्रिषंधि देव के समान हमारे शत्रुओं का संहार करने वाली बन. (६)

धूमाक्षी सं पततु कृधुकर्णी च क्रोशतु.
त्रिषन्धेः सेनया जिते अरुणाः सन्तु केतवः (७)

हमारे शत्रुओं की सेना माया से उत्पन्न धुएं से ढके हुए नयनों वाली हो जाए. हमारे रण के बाजों के कारण उन के कान बहरे हो जाएं. इस प्रकार त्रिषंधि नामक देव के द्वारा शत्रु की सेना को जीत लिए जाने पर देव सेना के झंडे लाल रंग को हो जाएं. (७)

अवायन्तां पक्षिणो ये वयांस्यन्तरिक्षे दिवि ये चरन्ति.
श्वापदो मक्षिकाः सं रभन्तामामादो गृध्राः कुणपे रदन्ताम् (८)

जो पक्षी मरी हुई शत्रु सेना का मांस खाने के लिए नीचे की ओर मुंह कर के आकाश में उड़ते हैं तथा द्युलोक अर्थात स्वर्ग में जो पक्षी उड़ते हैं, वे तथा मांसभक्षी सिंह, गीदड़ आदि पशु और मांस भक्षिणी नीले रंग की मक्खियां शवों का मांस खाने के लिए शत्रु सेनाओं में विचरण करें. मांस भक्षक गिद्ध शत्रु सेना के शरीरों को अपनी चोंच से नोंचें. (८)

यामिन्द्रेण संधां समधत्था ब्रह्मणा च बृहस्पते.

तयाहमिन्द्रसंधया सर्वान् देवानिह हुव इतो जयत मामुतः (९)

हे बृहस्पति देव! इंद्र और प्रजापति देव के साथ जो आपने प्रतिज्ञा की है, उस देव सेना को उस संग्राम में बुलाता हूं. हे बुलाए गए देव! हमारी सेना को विजय प्रदान करो. हमारे शत्रु सैनिकों को विजय मत प्रदान करो. (९)

बृहस्पतिराङ्गिरस ऋषयो ब्रह्मसंशिताः.
असुरक्षयणं वधं त्रिषन्धि दिव्याश्रयन् (१०)

अंगिरा ऋषि के पुत्र बृहस्पति जो देवों के मंत्री हैं, वेद मंत्रों के अभ्यास से शक्तिशाली बनें अन्य ऋषियों ने असुरों का नाश करने वाले आयुध वज्र को द्युलोक अर्थात स्वर्ग में स्थित किया है. (१०)

येनासौ गुप्त आदित्य उभाविन्द्रश्च तिष्ठतः.
त्रिषन्धि देवा अभजन्तौजसे च बलाय च (११)

जिस वज्र के द्वारा दिखाई देने वाले आदित्य अर्थात सूर्य को स्वर्ग में पाला गया है, जिस वज्र की शक्ति के कारण आदित्य और इंद्र दोनों अपनेअपने स्थान पर स्थित हैं, उस त्रिषंधि नाम के देव अर्थात वज्र की सभी देवों ने तेज और बल की प्राप्ति के लिए सेवा की है. (११)

सर्वाल्लोकान्त्समजयन् देवा आहुत्यानया.
बृहस्पतिराङ्गिरसो वज्रं यमसिञ्चतासुरक्षयणं वधम् (१२)

अंगिरा ऋषि के पुत्र एवं देवों के मंत्री बृहस्पति ने तथा इंद्र आदि देवों ने इस आहुति के द्वारा असुरों को मार कर सभी लोकों को प्राप्त किया है. बृहस्पति ने असुरों का विनाश करने के साधन उस वज्र को इस आहुति के द्वारा ही बनाया है. (१२)

बृहस्पतिराङ्गिरसो वज्रं यमसिञ्चतासुरक्षयणं वधम्.
तेनाहममूं सेनां नि लिम्पामि बृहस्पतेऽमित्रान हन्म्योजसा (१३)

अंगिरा ऋषि के पुत्र एवं देवों के मंत्री बृहस्पति ने तथा इंद्र आदि देवों ने असुरों का वध करने वाले जिस वज्र की रचना घृत की आहुति से की है, हे देवो! उस वज्र के द्वारा मैं अपनी शत्रु सेना का विनाश करता हूं. सेना के विनाश के कारण मैं अपने शत्रुओं का विनाश अपने बल से करूं. (१३)

सर्वे देवा अत्यायन्ति ये अश्नन्ति वषट् कृतम्.
इमां जुषध्वमाहुतिमितो जयत मामुतः (१४)

इंद्र आदि सभी देव हमारे शत्रुओं को छोड़ कर हमारे सामने आएं. वे देव वषट्

शब्द के साथ दिए गए हवि का भोग करते हैं. वे सब हमारी उस आहुति का सेवन करें. उस आहुति से प्रसन्न सभी देव हमारी सेनाओं को विजयी बनाएं. हमारे शत्रुओं की सेनाओं को विजयी न बनाएं. (१४)

सर्वे देवा अत्यायन्तु त्रिषन्धेराहुतिः प्रिया.
संधां महतीं रक्षत ययाग्रे असुरा जिताः (१५)

इंद्र आदि सभी देव हमारे शत्रुओं की सेना को छोड़ कर हमारे पास आएं. सेना को मोहित करने वाले देव को हमारी यह आहुति प्रसन्न करने वाली हो. हे देवो! अपनी असुर विजय की महती प्रतिज्ञा की रक्षा करो. इस त्रिषंधि की आहुति ने पहले असुरों को जीत लिया था. (१५)

वायुरमित्राणामिष्वग्राण्याञ्चतु. इन्द्र एषां बाहून् प्रति भनक्तु मा शकन् प्रति-धामिषुम्.
आदित्य एषामस्त्रं वि नाशयतु चन्द्रमा युतामगतस्य पन्थाम् (१६)

वायुदेव शत्रुओं के बाणों के आगे जाएं. तात्पर्य यह है कि प्रतिकूल हवा के कारण उन के बाण अपना लक्ष्य प्राप्त न कर सकें. इंद्र देव उन की घायल भुजाओं को आयुध पकड़ने के अयोग्य बनाएं. सूर्य उन शत्रुओं के आयुधों का विनाश करें. चंद्रमा हमारे शत्रुओं को उस मार्ग से अलग करें जो हमारे समीप तक आता है. (१६)

यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे तनूपानं
परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि (१७)

हे देव! हमारे शत्रुओं ने तनूपान एवं परिमाण नामक कर्म के समय अपने मंत्रमय कवचों को सिद्ध कर लिया है. तुम इन कर्मों से संबंधित मंत्रों को असफल बनाओ. (१७)

क्रव्यादानुवर्तयन् मृत्युना च पुरोहितम्.
त्रिषन्धे प्रेहि सेनया जयामित्रान् प्र पद्यस्व (१८)

हे त्रिषंधि देव! हमारे सामने स्थित शत्रु के पीछे मांसभक्षी पशु चलें. तुम हमारी सेना के साथ जाओ और हमारे शत्रुओं का विनाश करने के लिए उन में घुसो. (१८)

त्रिषन्धे तमसा त्वममित्रान् परि वारय.
पृषदाज्यप्रणुत्तानां मामीषां मोचि कश्चन (१९)

हे त्रिषंधि! तुम हमारे शत्रुओं को अंधकार के द्वारा घेर लो. हमारे यज्ञ कार्य में तुम दही से मिले भात को खाने के लिए बुलाए गए हो. तुम हमारे शत्रुओं में से एक को भी जीवित मत छोड़ो. (१९)

शितिपदी सं पतत्वमित्राणाममूः सिचः.

मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां न्यर्बुदे (२०)

श्वेत चरणों वाली गौ हमारे शत्रुओं की उस सेना को शोक प्रदान करने के लिए जाए और हमारे बाणों से पीड़ित उस सेना पर टूट पड़े. हे न्यर्बुदि! सामने दिखाई देने वाली वह सेना आज युद्ध के समय मोह को प्राप्त हो जाए. (२०)

मूढा अमित्रा न्यर्बुदे जह्येषां वरंवरम्. अनया जहि सेनया (२१)

हे न्यर्बुदि! तुम हमारे शत्रुओं को अपनी माया के कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य जानने के लिए मूर्ख बना दो. तुम इस सेना के श्रेष्ठों को नष्ट कर दो. तुम्हारी कृपा से हमारी सेना विजय प्राप्त करे. (२१)

यश्च कवची यश्चाकवचोऽमित्रो यश्चाज्मनि.
ज्यापाशैः कवचपाशैरज्मनाभिहतः शयाम् (२२)

हमारा जो शत्रु कवच धारण किए है अथवा जो कवच रहित है, हमारे जो शत्रु रथ में बैठे हैं, वे अपनेअपने पाशों से बंधे हुए सो जाएं. (२२)

ये वर्मिणो येऽवर्माणो अमित्रा ये च वर्मिणः.
सर्वांस्तां अर्बुदे हताञ्छ्वानोऽदन्तु भूम्याम् (२३)

हमारे जो शत्रु कवच धारण करने वाले, कवचहीन और कवच के अतिरिक्त अन्य शस्त्र से रक्षा करने वाले साधन से युक्त हैं, हे न्यर्बुदि! तुम्हारे द्वारा मारे गए उन शत्रुओं को कुत्ते आदि मांसभक्षी पशु खाएं. (२३)

ये रथिनो ये अरथा असादा ये च सादिनः.
सर्वानदन्तु तान् हतान् गृध्राः श्येनाः पतत्रिणः(२४)

हमारे जो शत्रु रथ में बैठे हैं, जो रथहीन हैं, जो घोड़े पर सवार हैं और जो बिना घोड़े वाले हैं, उन सब को गिद्ध, बाज तथा अन्य मांसभक्षी पक्षी खाएं. (२४)

सहस्रकुणपा शेतामामित्री सेना समरे वधानाम्. विविद्धा ककजाकृता (२५)

हमारे शत्रुओं की सेना हमारी सेना को प्राप्त कर के आयुध साधनों की युद्ध में भिड़ंत होने पर मरी हुई एवं अनगिनती लाशों वाली हो. (२५)

मर्माविधं रोरुवतं सुपर्णैरदन्तु दुश्चितं मृदितं शयानम्.
य इमां प्रतीचीमाहुतिममित्रो नो युयुत्सति (२६)

शोभन पतन वाले बाणों के द्वारा मर्मस्थलों में विद्ध एवं अत्यधिक रोते हुए दुखों से पूर्ण, चूर्ण किए हुए और धरती पर पड़े हुए शत्रु सैनिकों को गीदड़ आदि मांसभक्षी पशु खाएं. हमारा जो शत्रु हमारी इस आहुति को पा कर इस की गति प्रतिनिवृत्त कर के हमारे साथ युद्ध करना चाहता है, इस प्रकार के शत्रु को भी मांसभक्षी पशु खाएं. (२६)

यां देवा अनुतिष्ठन्ति यस्या नास्ति विराधनम्.
तयेन्द्रो हन्तु वृत्रहा वज्रेण त्रिषन्धिना (२७)

जिस दधि मिश्रित भात की आहुति को देवगण वज्र बनाने का साधन बनाते हैं, जिस आयुध की असमानता नहीं है. उस आहुति द्वारा उत्पन्न वज्र से वृत्र असुर का वध करने वाले इंद्र इस शत्रु सेना का वध करें. (२७)

बारहवां कांड

सूक्त पहला

देवता—भूमि

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति.
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु (१)

पृथ्वी को धारण करने वाले ब्रह्म, तप, यज्ञदीक्षा तथा विशाल रूप में फैले हुए जल हैं. इस पृथ्वी ने भूत काल के जीवों का पालन किया था और भविष्य काल के जीवों का भी पालन करेगी. इस प्रकार की पृथ्वी हमें निवास के हेतु विस्तृत स्थान प्रदान करे. (१)

असंबाधं बध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु.
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः (२)

जिस भूमि पर ऊंचे, नीचे तथा समतल स्थान हैं तथा जो अनेक प्रकार की सामर्थ्य वाली जड़ीबूटियों को धारण करती है, वह भूमि हमें सभी प्रकार तथा पूर्ण रूप से प्राप्त हो और हमारी सभी कामनाओं को पूर्ण करे. (२)

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः.
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु (३)

यह पृथ्वी सागरों, नदियों, झरनों और सरोवरों के जल से सुशोभित है. इस पृथ्वी पर कृषि की जाती है, जिस से अन्न उत्पन्न होता है. उस अन्न से संसार के प्राणवान मनुष्य, पशु आदि तृप्ति पाते हैं. इस प्रकार की पृथ्वी हमें उस प्रदेश में प्रतिष्ठित करे, जहां पर रसदार फल उत्पन्न होते हैं. (३)

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः.
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु (४)

जिस पृथ्वी पर चार दिशाएं हैं, जिस पर अन्न उत्पन्न होता है और जिस पर किसान खेती करते हैं तथा जो सांस लेने वाले एवं गतिशील प्राणियों को धारण करती है, वह पृथ्वी हमारे लिए दुधारू गाएं और अन्न धारण करे. (४)

637/38

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्.
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु (५)

हमारे पूर्व पुरुषों अर्थात पूर्वजों ने जिस पृथ्वी पर अनेक प्रशंसनीय कार्य किए, जिस पृथ्वी पर देवों ने अत्याचारी दैत्यों के साथ संग्राम किया तथा जो पृथ्वी गायों, घोड़ों तथा पक्षियों को आश्रय प्रदान करने वाली है, वह पृथ्वी हमें तेज और ऐश्वर्य प्रदान करे. (५)

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी.
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु (६)

जो पृथ्वी वनों को धारण करने वाली तथा संसार के प्राणियों का भरणपोषण करने वाली है, जो पृथ्वी अपने सीने अर्थात खदानों में स्वर्ण को धारण करती है तथा वैश्वानर अग्नि को आश्रय प्रदान करती है, वह पृथ्वी हमारे लिए धन प्रदान करे. (६)

यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्.
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा (७)

देवगण जाग्रत रहते हुए अथवा सावधान रहते हुए जिस पृथ्वी की रक्षा करते हैं, वह पृथ्वी हमें मधु, धन एवं बल से युक्त करे. (७)

यार्णवेऽधि सलिलमग्र आसीद् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः.
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः.
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे (८)

जो पृथ्वी पहले सागर के जल में डूबी हुई थी, मनीषीजनों ने अनेक प्रकार के कार्य करते हुए, जिस पृथ्वी पर विचरण किया था, जिस का हृदय विशाल आकाश में स्थित है, वह मरण रहित पृथ्वी हमें श्रेष्ठ राष्ट्र, बल और दीप्ति प्रदान करे. (८)

यस्यामापः परिचराः समानीरहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति.
सा नो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा (९)

जिस पृथ्वी पर बहता हुआ जल रात में और दिन में समान रूप से गमन करता है, ऐसी अधिक जल वाली पृथ्वी हमें दूध के समान सार रूप फलों तथा तेज से युक्त करे. (९)

यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे. इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः.
सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः (१०)

अश्विनीकुमारों ने जिस पृथ्वी का निर्माण किया, विष्णु ने जिस पर पराक्रम का प्रदर्शन किया तथा इंद्र ने जिस पृथ्वी को अपने अधीन कर के शत्रुओं से हीन

कर दिया, वह पृथ्वी अपना सार रूप जल मुझे उसी प्रकार पिलाए, जिस प्रकार माता पुत्र को दूध पिलाती है. (१०)

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु. बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्. अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् (११)

हे पृथ्वी! तेरे बर्फ से ढके हुए पर्वत एवं घने वन हमें सुख प्रदान करें. मैं इंद्रदेव के द्वारा सुरक्षित पृथ्वी पर इस प्रकार प्रतिष्ठित रहूं कि न मेरा विनाश हो तथा न मैं किसी से परिचित होऊं. (११)

यत् ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः. तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः. पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु (१२)

हे पृथ्वी! तेरी नाभि अर्थात मध्य भाग से सभी के शरीरों को पुष्ट करने वाले जो पदार्थ उत्पन्न होते हैं, मुझे उन्हीं के मध्य स्थित करो. भूमि मेरी माता है और मेघ मेरे पिता हैं. ये दोनों यज्ञ कर्म को पूर्ण करते हैं. (१२)

यस्यां वेदिं परिगृह्णन्ति भूम्यां यस्यां यज्ञं तन्वते विश्वकर्माणः. यस्यां मीयन्ते स्वरवः पृथिव्यामूर्ध्वाः शुक्रा आहुत्याः पुरस्तात्. सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना (१३)

यज्ञ में आहुति देने से पूर्व ही जिस पृथ्वी पर लकड़ी के स्तंभ गाढ़े जाते हैं, वह पृथ्वी स्वयं वृद्धि को प्राप्त कर के हमें समृद्धिशाली बनाए. (१३)

यो नो द्वेषत् पृथिवि यः पृतन्याद् योऽभिदासान्मनसा
यो वधेन. तं नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि (१४)

हे पृथ्वी! हम से द्वेष करता हुआ जो सेना ले कर हमें क्षीण करना अथवा मारना चाहे, तुम हमारी रक्षा के लिए उस का विनाश कर दो. (१४)

त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति मर्त्यास्त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः. तवेमे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्य उद्यन्त्सूर्यो रश्मिभिरातनोति (१५)

हे पृथ्वी! जो प्राणी तुम्हारे ऊपर जन्म लेते हैं, वे तुम्हारे ही ऊपर भ्रमण करते हैं. तुम जिन चार पैरों वाले पशुओं तथा दो पैरों वाले मनुष्यों का पोषण करती हो, उनके लिए सूर्य अपनी किरणों के द्वारा जीवन पर्यंत अमृतमयी ज्योति फैलाता है. (१५)

ता नः प्रजाः सं दुह्रतां समग्रा वाचो मधु पृथिवि धेहि मह्यम् (१६)

हे पृथ्वी! सूर्य की किरणें हमारे हेतु प्रजा अर्थात संतान और सेवक वर्ग के अतिरिक्त सभी प्रकार की वाणी प्रदान करें. हे पृथ्वी! तुम मुझे मधुर पदार्थ प्रदान करो. (१६)

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं धर्मणा धृताम्.
शिवां स्योनामनु चरेम विश्वहा (१७)

हम ऐसी पृथ्वी पर सदा विचरण करते रहें जो ओषधियों को उत्पन्न करने वाली, संसार की ऐश्वर्य रूप, धर्म के द्वारा आश्रित कल्याणमयी एवं सुख देने वाली है. (१७)

महत् सधस्थं महती बभूविथ महान् वेग एजथुर्वेपथुष्टे.
महांस्त्वेन्द्रो रक्षत्यप्रमादम्. सा नो भूमे प्र रोचय
हिरण्यस्येव संदृशि मा नो द्विक्षत कश्चन (१८)

हे पृथ्वी! तू महती निवास भूमि है. तेरा वेग और कंपन भी भाव पूर्ण है. वे इंद्र तेरे रक्षक हैं. तू हमें सबका प्रिय बनाए. जिस प्रकार स्वर्ग सब को प्रिय होता है, उसी प्रकार हमारा द्वेषी कोई न हो अर्थात हम सब के प्रिय बनें. (१८)

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु.
अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः (१९)

जल अग्नि को धारण करता है. पृथ्वी में अग्नि है. जल में, पुरुष में, मेरे अश्वादि पशुओं में भी अग्नि है. (१९)

अग्निर्दिव आ तपत्यग्नेर्देवस्योर्व१न्तरिक्षम्.
अग्निं मर्तास इन्धते हव्यवाहं घृतप्रियम् (२०)

अग्नि देव स्वर्ग में तपते हैं, अंतरिक्ष में भी हैं और मरण धर्म वाले मनुष्य हमारी अग्नि को प्रदीप्त करते हैं. (२०)

अग्निवासाः पृथिव्य सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोति (२१)

जिस धूम में अग्नि का वास है, उस धूम को जानने वाली पृथ्वी मुझे तेजस्वी बनाए. (२१)

भूम्यां देवेभ्यो ददति यज्ञं हव्यमरंकृतम्. भूम्यां मनुष्या जीवन्ति स्वधयान्ने न मर्त्याः.
सा नो भूमिः प्राणमायुर्दधातु जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु (२२)

पृथ्वी पर जो यज्ञ सुशोभित हैं, उन में देवों के हेतु हवि प्रदान की जाती है. इसी पृथ्वी पर मरणधर्मा जीव अन्न जल से अपना जीवन व्यतीत करते हैं. यह पृथ्वी हम को प्राण और आयु प्रदान करती हुई वृद्धावस्था तक जीवित रहने वाला बनाए. (२२)

यस्ते गन्धः पृथिवि संबभूव यं बिभ्रत्योषधयो यमापः. यं गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे
तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन (२३)

हे पृथ्वी! तेरी जिस गंध को ओषधियां और जल धारण करते हैं, जिस का सेवन गंधर्व और अप्सराएं करती हैं, तू मुझे उसी गंध से सुशोभित बना. कोई मेरा बैरी न रहे. (२३)

हम ऐसी पृथ्वी पर सदा विचरण करते रहें जो ओषधियों को उत्पन्न करने वाली, संसार की ऐश्वर्य रूप, धर्म के द्वारा आश्रित कल्याणमयी एवं सुख देने वाली है. (१७)

महत् सधस्थं महती बभूविथ महान् वेग एजथुर्वेपथुष्टे.
महांस्त्वेन्द्रो रक्षत्यप्रमादम्. सा नो भूमे प्र रोचय
हिरण्यस्येव संदृशि मा नो द्विक्षत कश्चन (१८)

हे पृथ्वी! तू महती निवास भूमि है. तेरा वेग और कंपन भी भाव पूर्ण है. वे इंद्र तेरे रक्षक हैं. तू हमें सबका प्रिय बनाए. जिस प्रकार स्वर्ग सब को प्रिय होता है, उसी प्रकार हमारा द्वेषी कोई न हो अर्थात हम सब के प्रिय बनें. (१८)

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु.
अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः (१९)

जल अग्नि को धारण करता है. पृथ्वी में अग्नि है. जल में, पुरुष में, मेरे अश्वादि पशुओं में भी अग्नि है. (१९)

अग्निर्दिव आ तपत्यग्नेर्देवस्योर्व१न्तरिक्षम्.
अग्निं मर्तास इन्धते हव्यवाहं घृतप्रियम् (२०)

अग्नि देव स्वर्ग में तपते हैं, अंतरिक्ष में भी हैं और मरण धर्म वाले मनुष्य हमारी अग्नि को प्रदीप्त करते हैं. (२०)

अग्निवासाः पृथिव्य सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोति (२१)

जिस धूम में अग्नि का वास है, उस धूम को जानने वाली पृथ्वी मुझे तेजस्वी बनाए. (२१)

भूम्यां देवेभ्यो ददति यज्ञं हव्यमरंकृतम्. भूम्यां मनुष्या जीवन्ति स्वधयान्ने न मर्त्याः.
सा नो भूमिः प्राणमायुर्दधातु जरदष्टिं मा पृथिवी कृणोतु (२२)

पृथ्वी पर जो यज्ञ सुशोभित हैं, उन में देवों के हेतु हवि प्रदान की जाती है. इसी पृथ्वी पर मरणधर्मा जीव अन्न जल से अपना जीवन व्यतीत करते हैं. यह पृथ्वी हम को प्राण और आयु प्रदान करती हुई वृद्धावस्था तक जीवित रहने वाला बनाए. (२२)

यस्ते गन्धः पृथिवि संबभूव यं बिभ्रत्योषधयो यमापः. यं गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे
तेन मा सुरभिं कृणु मा नो द्विक्षत कश्चन (२३)

हे पृथ्वी! तेरी जिस गंध को ओषधियां और जल धारण करते हैं, जिस का सेवन गंधर्व और अप्सराएं करती हैं, तू मुझे उसी गंध से सुशोभित बना. कोई मेरा बैरी न रहे. (२३)

तं नि दध्म:. पवित्रेण पृथिवि मोत् पुनामि (३०)

पवित्र जल हमारी देह को सींचे. हमारे शरीर पर हो कर जाने वाले जल शत्रु को प्राप्त हों. हे पृथ्वी! मैं अपनी देह को पवित्र जल के द्वारा पवित्र करता हूं. (३०)

यास्ते प्राची: प्रदिशो या उदीचीर्यास्ते भूमे अधराद् याश्च पश्चात्.
स्योनास्ता मह्यं चरते भवन्तु मा नि पप्तं भुवने शिश्रियाण: (३१)

हे पृथ्वी! तुम्हारी पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम रूप चारों दिशाएं मुझे विचरण की शक्ति प्रदान करें. इस लोक में रहता हुआ मैं गिरने न पाऊं. (३१)

मा न: पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत.
स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन् परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम् (३२)

हे पृथ्वी! तू मेरे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों ओर खड़ी रहे. मुझे दस्यु प्राप्त न करे. तू विशाल हिंसा से मुझे बचाती हुई मंगल करने वाली हो. (३२)

यावत् तेऽभि विपश्यामि भूमे सूर्येण मेदिना.
तावन्मे चक्षुर्मा मेष्टोत्तरामुत्तरां समाम् (३३)

मैं जब तक तुझे सूर्य के सामने देखता रहूं, तब तक मेरे देखने की शक्ति नष्ट न हो. (३३)

यच्छयान: पर्यावर्ते दक्षिणं सव्यमभि भूमे पार्श्वम्. उत्तानास्त्वा प्रतीचीं यत् पृष्ठीभिरधिशेमहे. मा हिंसीस्तत्र नो भूमे सर्वस्य प्रतिशीवरि (३४)

हे पृथ्वी! सोता हुआ मैं करवट लूं अथवा सीधा हो कर सोऊं, उस समय कोई मेरी हिंसा न करे. (३४)

यत् ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु.
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम् (३५)

हे पृथ्वी! मैं तेरे जिस स्थल को खोदूं वह शीघ्र ही पहले जैसा हो जाए. मैं तेरे मर्म को पूर्ण करने में समर्थ नहीं हूं. (३५)

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्त: शिशिरो वसन्त:.
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम् (३६)

हे पृथ्वी! ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और बसंत—ये छ: ऋतुएं तथा दिन, रात और वर्ष—ये सब हम को फल देने वाले हों. (३६)

याप सर्प विजमाना विमृग्वरी यस्यामासन्नग्नयो ये अप्स्व१न्त:. परा दसयून् ददती

देवपीयूनिन्द्रं वृणाना पृथिवी न वृत्रम्. शक्राय दध्रे वृषभाय वृष्णे (३७)

जो पृथ्वी सूर्य के हिलने पर कांपती है, विद्युत के रूप में जल में रहने वाली अग्नि जिस पृथ्वी में भी निवास करती है, जिस ने वृत्रासुर को त्याग कर इंद्र का वरण किया था, जो देव हिंसकों के लिए फल देने वाली नहीं होती तथा जो पुष्ट और शक्तिशाली पुरुष के अधीन रहती है. (३७)

यस्यां सदोहविर्धाने यूपो यस्यां निमीयते. ब्रह्माणो यस्यामर्चन्त्यृग्भिः साम्ना यजुर्विदः. युज्यन्ते यस्यामृत्विजः सोममिन्द्राय पातवे (३८)

जिस पृथ्वी पर यज्ञ मंडप की रचना होती है, जिस पर यूप खड़े किए जाते है. जिस पृथ्वी पर ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा देव पूजन और इंद्र को सोमपान कराने का कार्य होता है. (३८)

यस्यां पूर्वे भूतकृत ऋषयो गा उदानृचुः.
सप्त सत्रेण वेधसो यज्ञेन तपसा सह (३९)

जिस पृथ्वी पर प्राणियों की रचना करने वाले ऋषियों ने सप्त सूत्रों वाले ब्रह्मयोग और स्तुति रूपी वाणियों से देव पूजन किया था. (३९)

सा नो भूमिरा दिशतु यद्धनं कामयामहे.
भगोः अनुप्रयुङ्क्तामिन्द्र एतु पुरोगवः (४०)

वह भूमि हमारा चाहा हुआ धन प्रदान करे. भग हम को प्रेरणा देने वाले हों तथा इंद्र हमारे आगे चलने वाले हों. (४०)

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या व्यैलबाः. युध्यन्ते यस्यामाक्रन्द्रो यस्यां वदति दुन्दुभिः. सो नो भूमिः प्र णुदतां सपत्नानसपत्नं मा पृथिवी कृणोतु (४१)

जिस पृथ्वी पर मनुष्य नाचते और गाते हैं, जिस पर रुदन होता है और दुंदुभि बजती है, वह पृथ्वी मुझे शत्रुहीन बनाए. (४१)

यस्यामन्नं व्रीहियवौ यस्या इमाः पञ्च कृष्टयः.
भूम्यै पर्जन्यपत्न्यै नमोऽस्तु वर्षमेदसे (४२)

जिस पृथ्वी पर गेहूं और जौ जैसे अन्न पैदा होते हैं, जिस पर पांच प्रकार की खेतियां होती हैं, वर्षा द्वारा पुष्ट की जाने वाली पृथ्वी को नमस्कार है. (४२)

यस्याः पुरो देवकृताः क्षेत्रे यस्या विकुर्वते.
प्रजापतिः पृथिवीं विश्वगर्भामाशामाशां रण्यां नः कृणोतु (४३)

देवताओं द्वारा बनाए गए हिंसक पशु जिस पृथ्वी पर अनेक प्रकार की क्रीड़ाएं करते हैं, जो पूरे संसार को अपने में धारण करती है, उस पृथ्वी की दिशाओं को प्रजापति हमारे लिए मंगलमय करें. (४३)

निधिं बिभ्रती बहुधा गुहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे.
वसूनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना (४४)

निधियों को धारण करने वाली पृथ्वी मुझे गुफा, स्वर्ण, मणि आदि धन प्रदान करे. धन प्रदान करने वाली पृथ्वी हम पर प्रसन्न होती हुई वरदायिनी बने. (४४)

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम.
सहस्त्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती (४५)

अनेक धर्मों और अनेक भाषाओं वाले मनुष्यों को धारण करने वाली पृथ्वी अडिग धेनु के समान मेरे लिए धन की हजारों धाराओं को दुहाए. (४५)

यस्ते सर्पो वृश्चिकस्तृष्टदंश्मा हेमन्तजब्धो भृमलो गुहा शये. क्रिमिर्जिन्वत् पृथिवि यद्यदेजति प्रावृषि तन्नः सर्पन्मोप सृपद् यच्छिवं तेन नो मृड (४६)

हे पृथ्वी! तुम में जो सर्प निवास करते हैं, उन का दंश प्यास लगाने वाला है. तुम में जो बिच्छू हैं, वे हेमंत ऋतु में डंक नीचे किए हुए गुफा में शयन करते हैं. वर्षा ऋतु में प्रसन्नता पूर्वक विचरण करने वाले ये प्राणी अर्थात सांप और बिच्छू मेरे समीप न आएं. (४६)

ये ते पन्थानो बहवो जनायना रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे. यैः संचरन्त्युभये भद्रपापास्तं पन्थानं जयेमानमित्रमतस्करं यच्छिवं तेन नो मृड (४७)

हे पृथ्वी! मनुष्यों के चलने के और रथ आदि के चलने के जो मार्ग हैं, उन मार्गों पर धर्मात्मा और पापात्मा दोनों प्रकार के मनुष्य चलते हैं. जो मार्ग चोरों और शत्रुओं से हीन है, उसी कल्याणमय मार्ग के द्वारा तुम हमें सुखी बनाओ. (४७)

मल्वं बिभ्रती गुरुभृद् भद्रपापस्य निधनं तितिक्षुः. वराहेण पृथिवी संविदाना सूकराय वि जिहीते मृगाय (४८)

पुण्य एवं पाप कर्म करने वालों के शवों को तथा शत्रु को भी धारण करने वाली जिस पृथ्वी को वाराह खोज रहे थे, वह पृथ्वी उन वाराह को ही प्राप्त हुई थी. (४८)

ये त आरण्याः पशवो मृगा वने हिताः सिंहा व्याघ्राः पुरुषादश्चरन्ति.
उलं वृकं पृथिवि दुच्छुनामित ऋक्षीकां रक्षो अप बाधयास्मत् (४९)

जो व्याघ्र आदि हिंसक पशु घूमते हैं, उन को और व्रक अर्थात भेड़ियों, भालुओं और राक्षसों को हम से दूर कर के बाधा पहुंचाओ. (४९)

ये गन्धर्वा अप्सरसो ये चारायः किमीदिनः.
पिशाचान्त्सर्वा रक्षांसि तानस्मद् भूमे यावय (५०)

हे पृथ्वी! गंधर्व, अप्सरा, राक्षस, मांसभक्षी, पिशाच आदि को हम से दूर करो. (५०)

यां द्विपादः पक्षिणः संपतन्ति हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि. यस्यां वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वंश्च्यावयंश्च वृक्षान्. वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः (५१)

जिस पृथ्वी पर दो पांवों वाले पक्षी हंस, कौवे, गिद्ध आदि घूमते हैं, जिस पृथ्वी पर वायु धूल उड़ाती और वृक्षों को गिराती है तथा वायु के तीक्ष्ण होने पर अग्नि भी उस के साथ चलती है. (५१)

यस्यां कृष्णमरुणं च संहिते अहोरात्रे विहिते भूम्यामधि. वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनिधामनि (५२)

जिस पृथ्वी पर काले और लाल दिनरात मिले रहते हैं, जो पृथ्वी वर्षा से ढकी रहती है, वह पृथ्वी सुंदर चित्त वृत्ति से हमें प्रिय स्थान प्राप्त कराए. (५२)

द्यौश्च म इदं पृथिवी चान्तरिक्षं च मे व्यचः.
अग्निः सूर्य आपो मेधां विश्वे देवाश्च सं ददुः (५३)

आकाश, पृथ्वी, अंतरिक्ष, अग्नि, सूर्य, जल, मेघ तथा सब देवताओं ने मुझे चलने की शक्ति प्रदान की है. (५३)

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्.
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः (५४)

मैं पृथ्वी पर शत्रु का तिरस्कार करने वाले के रूप में प्रसिद्ध हूं. मैं अपने शत्रुओं के सामने जा कर उन्हें दबाऊं. मैं हर दिशा में रहने वाले शत्रु को भलीभांति वश में कर लूं. (५४)

अदो यद् देवि प्रथमानापुरस्ताद् देवैरुक्ता व्यसर्पो महित्वम्.
आ त्वा सुभूतमविशत् तदानीमकल्पयथाः प्रदिशश्चतस्रः (५५)

हे पृथ्वी! तुम्हारे विस्तृत होने से पहले देवताओं ने तुम से विस्तार वाली होने को कहा था. उस समय तुम में भूतों ने प्रवेश किया. तभी चार दिशाएं बनाई गई. (५५)

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्.
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते (५६)

पृथ्वी पर जो गांव, जंगल और सभाएं हैं, जो युद्ध की मत्रंणाएं हैं तथा जो युद्ध होते हैं, हे भूमि! हम उन सब में तेरी वंदना करते हैं. (५६)

अश्व इव रजो दुधुवे वि तान् जनान् य आक्षियन् पृथिवीं यादजायत.
मन्द्राग्रेत्वरी भुवनस्य गोपा वनस्पतीनां गृभिरोषधीनाम् (५७)

पृथ्वी में उत्पन्न हुए पदार्थ पृथ्वी पर ही रहते हैं तथा अश्व के समान उस पर धूल उड़ाते हैं. यह भूमि भद्रा और उर्वरा हैं. यह वनस्पतियों तथा ओषधियों के प्रभाव से लोक का पालन करने वाली है. (५७)

यद् वदामि मधुमत् तद् वदामि यदीक्षे तद् वनन्ति मा.
त्विषीमानस्मि जुतिमानवान्यान् हन्मि दोधतः (५८)

मैं जो कुछ कहूं, वह मधुर हो, मैं जिसे देखूं, वही मेरा प्रिय हो जाए. मैं यशस्वी और वेग वाला बनूं. मैं दूसरों का रक्षक होता हुआ उन का संहार करूं जो मुझे कंपित करें. (५८)

शन्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्वती.
भूमिरधि ब्रवीतु मे पृथिवी पयसा सह (५९)

सुख और शांति प्रदान करने वाली, अन्न और दूध देने वाली, दूध के समान सार पदार्थों वाली होती हुई पृथ्वी मेरे पक्ष में रहे. (५९)

यामन्वैच्छद्धविषा विश्वकर्मान्तरर्णवे रजसि प्रविष्टाम्.
भुजिष्यं१ पात्रं निहितं गुहा यदाविर्भोगे अभवन्मातृमद्भ्यः (६०)

विश्वकर्मा ने हवि द्वारा पृथ्वी को राक्षसों के चक्कर से निकालने की इच्छा की थी. तब गुप्त रहने वाला भुजिष्य पात्र अर्थात अन्न उपभोग के सामान दिखाई पड़ने लगा. (६०)

त्वमस्यावपनी जनानामदितिः कामदुघा पप्रथाना.
यत् त ऊनं तत् त आ पूरयाति प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य (६१)

हे पृथ्वी! तुम कामनाओं को पूर्ण करने वाली हो. तुम इस विश्व की क्षेत्र रूपी विस्तार वाली हो. तुम्हारे कम होने वाले भाग को प्रजापति पूरा करते हैं. (६१)

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः.
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम (६२)

हे पृथ्वी! तुम में रहने वाले हमारे लोग यक्ष्मा रोग रहित रहें. हम अपनी दीर्घ आयु से युक्त हो कर तुम्हें हवि देने वाले बनें. (६२)

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्.
संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम् (६३)

हे पृथ्वी माता! मुझे मंगलमय प्रतिष्ठा प्रदान करो. हे विश! मुझे लक्ष्मी और विभूति में स्थित रखती हुई स्वर्ग प्रदान कराओ. (६३)

सूक्त दूसरा — देवता—अग्नि तथा मृत्यु

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि.

यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकमधराङ् परेहि (१)

हे क्रव्याद अग्नि! तू नड अर्थात सरकंडे पर आरोहण कर. जो यक्ष्मा रोग मनुष्यों में अथवा जो यक्ष्मा गौ में है, तू उस के साथ यहां से दूर चली जा. तू अपने भाग्य की सीमा पर आ. (१)

अघशंसदुःशंसाभ्यां करेणानुकरेण च.
यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरजामसि (२)

पाप और दुर्भावनाओं का नाश करने वाले कर तथा अनुकर से मैं यक्ष्मा रोग को पृथक करता हूं. मैं मृत्यु को भी दूर भगाता हूं. (२)

निरितो मृत्युं निर्ऋतिं निररातिमजसि.
यो नो द्वेष्टि तमद्ध्यग्ने अक्रव्याद् यमु द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि (३)

हे क्रव्याद अग्नि! हम पाप देवता निर्ऋति और मृत्यु को दूर करते हैं. हम अपने शत्रुओं को भी दूर करते हैं. जो हमारे शत्रु हैं, हम उन्हें तुम्हारी ओर भेजते हैं. तुम उन का भक्षण करो. (३)

यद्यग्निः क्रव्याद् यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः.
तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुषदोऽप्यग्नीन् (४)

यदि क्रव्याद अग्नि ने अथवा व्याघ्र ने हमारे गोष्ठ में प्रवेश किया है तो मैं उसे माष अर्थात उर्द आज्य द्वारा दूर करता हूं. (४)

यत् त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते.
सुकल्पमग्ने तत् त्वया पुनस्त्वोद्दीपयामसि (५)

पुरुष की मृत्यु के कारण क्रोधित हुए प्राणियों ने तुम्हें प्रदीप्त किया. वह कार्य पूर्ण हो गया, इसीलिए हमने तुम्हें तुम से ही प्रदीप्त किया है. (५)

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्ने.
पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय (६)

हे अग्नि! वसु, बृह्मणस्पति, ब्रह्म, रुद्र, सूर्य और वसुनीति ने तुम्हें सौ वर्ष का जीवन प्राप्त करने के लिए पुनः प्रदीप्त किया था. (६)

यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश नो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम्.
तं हरामि पितृयज्ञाय दूरं स घर्ममिन्धां परमे सधस्थे (७)

अन्य अग्नियों को देखने के लिए यदि क्रव्याद अग्नि हमारे घर में प्रविष्ट हुआ है तो पितृयज्ञ करने के लिए मैं उसे दूर भगाता हूं. वह पाप नाश में स्थित हो धर्म को बढ़ाए. मैं क्रव्याद अग्नि को दूर भगाता हूं. वह पाप को साथ लेता हुआ यज्ञ के स्थान को प्राप्त हो. जातवेद अग्नि यहां प्रतिष्ठित हो कर देवों के लिए हवि वहन करे. (७)

क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः.
इहायमितरो जातवेदा देवो देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् (८)

उक्थके प्रशंसक क्रव्याद अग्नि को मैं पितृयान मार्ग से भेजता हूं. हे क्रव्याद! तू पितरों में ही प्रबुद्ध हो और वहीं जागता रह. देवयान मार्ग द्वारा तू यहां दुबारा मत आ. (८)

क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् दृंहन्तं वज्रेण मृत्युम्.
नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितृणां लोके अपि भागो अस्तु (९)

मैं अपने मंत्र रूप वज्र से क्रव्याद अग्नि को दूर करता हूं. गार्हपत्य अग्नि के द्वारा मैं उस अग्नि का शासन करता हूं. यह पित्तरों का भाग होता हुआ, उन के लोक में स्थित हो. (९)

क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यं१ प्र हिणोमि पथिभिः पितृयाणैः.
मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितृषु जागृहि त्वम् (१०)

उक्थ प्रशंसक क्रव्याद अग्नि को मैं पितृयान मार्ग में भेजता हूं. हे क्रव्याद! तू पितरों में ही बढ़ और वहीं जागता रह. देवयान मार्ग द्वारा तू यहां दुबारा मत आ. (१०)

समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः.
जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति (११)

पवित्रता प्रदान करने वाले अग्नि देव शुद्ध होने के लिए शवभक्षक अग्नि को प्रदीप्त करते हैं. वह अग्नि अपने पाप का त्याग करता हुआ जाता है. उसे यह पवित्र अग्नि शुद्ध करते हैं. (११)

देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्ठान्यारुहत्.
मुच्यमानो निरेणसोऽमोगस्मां अशस्त्याः (१२)

शव भक्षक अग्नि स्वयं पाप से मुक्त होते हैं और अमंगल से हमारी रक्षा करके स्वर्ग पर जाते हैं. (१२)

अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे.
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूंषि तारिषत् (१३)

इस शव भक्षक अग्नि में हम पापों को शुद्ध करते हैं. हम शुद्ध हो गए अब यह अग्नि हम को पूर्ण आयु वाला बनाए. (१३)

संकसुको विकसुको निर्ऋथो यश्च निस्वरः.
ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद् दूरमनीनशन् (१४)

यक्ष्मा रोग को जानने वाले जो संघात्मक, विधातक और शब्दरहित अग्नि हैं, वे यक्ष्मा के साथ ही सुदूर चले गए और वहां जा कर नष्ट हो गए. (१४)

यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु.
क्रव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः (१५)

जो क्रव्याद हमारे अश्वों, गायों, बकरियों तथा वीरपुत्र, पौत्रादि में प्रविष्ट हुआ है, उसे हम दूर भगाते हैं. (१५)

अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा.
निः क्रव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितयोपनः (१६)

जो क्रव्याद जीवन का क्रम बिगाड़ने वाला है, उसे हम मंत्र बल से दूर भगाते हैं. हे क्रव्याद अग्नि! हम तुझे मनुष्यों, गायों और घोड़ों से दूर भगाते हैं. (१६)

यस्मिन् देवा अमृजत यस्मिन् मनुष्या उत.
तस्मिन् घृतस्तावो मृष्ट्वा त्वमग्ने दिवं रुह (१७)

हे अग्नि! जिस में देवता और मनुष्य शुद्ध होते हैं, उस में शुद्ध हो कर तू भी स्वर्ग को जा. (१७)

समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यपक्रमीः.
अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्यं दृशे (१८)

हे गार्हपत्य अग्नि! तुम हमारा त्याग मत करो. तुम भलीभांति प्रदीप्त हो रही हो. तुम में आहुतियां दी जा रही हैं. तुम चिरकाल तक सूर्य के दर्शन कराने के लिए प्रदीप्त रहो. (१८)

सीसे मृड्ढ्वं नडे मृड्ढ्वमग्नौ संकसुके च यत्.
अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपबर्हणे (१९)

हे पुरुषो! तुम सिर के रोग को सीसे में, नड नाम की घास में और काली भेड़ में शुद्ध करो. (१९)

सीसे मलं सादयित्वा शीर्षक्तिमुपबर्हणे.
अव्यामसिक्न्यां मृष्ट्वा शुद्धा भवत यज्ञियाः (२०)

हे पुरुषो! सिर के रोग को तकिए में स्थापित करो. मल को सीसे में तथा काली भेड़ में शुद्ध कर के स्वयं शुद्ध बनो. (२०)

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्त एष इतरो देवयानात्.
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु (२१)

हे मृत्यु! तू देवयान से भिन्न मार्ग में जा. तू दर्शन और श्रोत्र शक्तियों से युक्त

है. इसलिए तू सुन ले कि हमारे बहुत से वीर पुत्र बढ़ते रहेंगे. (२१)

इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद् भद्रा देवहूतिर्नो अद्य.
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय सुवीरासो विदथमा वदेम (२२)

ये प्राणी मृत्यु को दूर करने वाली शक्ति से युक्त हो गए. हम सुंदर वीरों से संपन्न हो कर नृत्य, गान, हास्य में रत हैं. हम यज्ञ की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि देवताओं को आहुति देना कल्याणकारी है. (२२)

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्.
शतं जीवन्तः शरदः पुरूचीस्तिरो मृत्युं दधतां पर्वतेन (२३)

हे मनुष्यो! तुम अपनी मृत्यु को पत्थर से दबाओ. मैं तुम्हें पत्थर रूपी कवच देता हूं. उसे कोई अन्य प्राप्त न करे. तुम सौ वर्षों तक जीवित रहो. (२३)

आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यदि स्थ.
तान् वस्त्वष्टा सुजनिमा सजोषाः सर्वमायुर्नयतु जीवनाय (२४)

हे मनुष्यो! तुम वृद्धावस्था की दीर्घ आयु को प्राप्त करो. तुम संदर जन्म वाले और मान प्रीति वाले हो. त्वष्टा तुम्हें दीर्घ जीवन के हेतु पूर्ण आयु प्रदान करें. (२४)

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्तव ऋतुभिर्यन्ति साकम्.
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातुरायूंषि कल्पयैषाम् (२५)

जिस प्रकार ऋतुएं एक के पीछे दूसरी आती हैं, जैसे दिन एक के पीछे दूसरे आते हैं, जैसे बाद वाला पहले का त्याग नहीं करता, हे माता! उसी प्रकार प्रकार इन्हें आयुष्मान बनाओ. (२५)

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः.
अत्रा जहीत ये असन् दुरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान् (२६)

हे मनुष्यो! यह नदी पाषाणों से युक्त बह रही है. वीरतापूर्वक इस नदी के पार हो जाओ. अपने पापों को तुम इसी नदी में डाल दो. इस के बाद हम रोग निवारक वेगों को प्राप्त करें. (२६)

उत्तिष्ठता प्र तरता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम्.
अत्रा जहीत ये असन्नशिवाः शिवान्त्स्योनानुत्तरेमाभि वाजान् (२७)

हे मित्रो! हे मित्रो! उठो और तैरना आरंभ करो. पत्थरों वाली सरिता तेजी से बह रही है. जो अकल्याणकारी हैं उन्हें हम यहीं पर त्याग दें. हम नदी को पार करके सुख देने वाले अन्नों की प्राप्ति करें. (२७)

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः.
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम (२८)

हे पवित्र देवों वाली अग्नियो! तुम शुद्ध होने के समय सब देवताओं का स्तवन करो. ऋग्वेद के पदों से पापों को लांघते हुए हम सौ हेमंतों तक पुत्रादि सहित आनंदित रहें. (२८)

उदीचीनैः पथिभिर्वायुमद्भिरतिक्रामन्तोऽवरान् परेभिः.
त्रिः सप्त कृत्व ऋषयः परेता मृत्युं प्रत्यौहन् पदयोपनेन (२९)

परलोक गमन में वायु से पूर्ण उत्तरायाण मार्ग में जाने वाले ऋषियों ने निकृष्ट मार्गों को लांघा था. उन्होंने मृत्यु को भी इक्कीस बार पार किया था. (२९)

मृत्योः पदं योपयन्त एत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः.
आसीना मृत्युं नुदता सधस्थेऽथ जीवासो विदथमा वदेम (३०)

मृत्यु के लक्ष्य को भ्रमित करने वाले ऋषि आयु से परिपूर्ण हैं. तुम भी इस मृत्यु को भगाओ. फिर हम जीवन में यज्ञ की स्तुति करें. (३०)

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम्.
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे (३१)

ये स्त्रियां सुंदर पतियों से युक्त रहें. ये विधवा न हों. ये अश्रुओं से रहित और घृत से युक्त हों. ये सुंदर अलंकारों को धारण करने वाली हों तथा संतानोत्पत्ति के हेतु मनुष्य योनि में ही रहें. (३१)

व्याकरोमि हविषाहमेतौ तौ ब्रह्मणा व्य१हंकल्पयामि.
स्वधां पितृभ्यो अजरां कृणोमि दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि (३२)

मैं उन दोनों को मंत्र शक्ति के द्वारा सामर्थ्य वाला बनाता हूं. मैं पितरों की स्वधा को जीर्णता युक्त करता हुआ उन्हें दीर्घ आयु वाला बनाता हूं. (३२)

यो नो अग्निः पितरो हृत्स्व१न्तराविवेशामृतो मर्त्येषु.
मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं मत् (३३)

हे पितरो! नष्ट न होने वाले फल को देने वाले अग्नि हमारे हृदय में विराजमान हैं. वे हम सब से द्वेष करने वाले न हों. हम भी उन के प्रति द्वेष न करें. (३३)

अपावृत्य गार्हपत्यात् क्रव्यादा प्रेत दक्षिणा.
प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् (३४)

हे प्राणियो! मंत्रों के द्वारा इस गार्हपत्य अग्नि से दूर हटो तथा क्रव्याद अग्नि से दक्षिण दिशा को जाओ. वहां तुम्हारे लिए और पितरों के लिए जो प्रिय हो, वही कार्य करो. (३४)

द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या.

अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः (३५)

जो पुरुष क्रव्याद अग्नि को नहीं छोड़ता, वह अपने ज्येष्ठ पुत्र को तथा अपने धन को लेता हुआ क्षय का पात्र होता है. (३५)

यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्नेन विन्दते.
सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः (३६)

जो पुरुष क्रव्याद अग्नि का सेवन करना न छोड़े, उस की कृषि, सेवनीय वस्तु, बहुमूल्य वस्तु आदि जो उस के पास है, वे शून्य के समान रह जाती हैं. (३६)

अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे.
छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद् यं क्रव्यादनुवर्त्तते (३७)

जो पुरुष क्रव्याद अग्नि को नहीं छोड़ता, वह यज्ञ करने का अधिकारी नहीं रहता. उस का तेज नष्ट हो जाता है तथा आहूत अर्थात बुलाए गए देवता उस के पास नहीं आते. (३७)

मुहुर्गृध्यैः प्र वदत्यार्तिं मर्त्यो नीत्य.
क्रव्याद् यानग्निरन्तिकादनुविद्वान् वितावति (३८)

क्रव्याद अग्नि जिस के पास रह कर ताप देता है, वह पुरुष अत्यंत व्यथा को प्राप्त होता है. आवश्यक वस्तुओं के समेत उसे बारबार दीन वचन कहने पड़ते हैं. (३८)

ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः.
ब्रह्मैव विद्वानेष्योऽ३ यः क्रव्यादं निरादधत् (३९)

जो पुरुष क्रव्याद अग्नि को पूर्ण रूप से ग्रहण करता है, उस के लिए घर कारागार के समान बन जाता है और स्त्री का पति मृत्यु को प्राप्त होता है. उसे विद्वान मनुष्य का आदेश मानना चाहिए. (३९)

यद् रिप्रं शमलं चकृम यच्च दुष्कृतम्.
आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् (४०)

हम जो पाप कर चुके हैं, उस पाप से तथा शव भक्षक अग्नि के स्पर्श के दोष से मुझे जल बचाएं. (४०)

ता अधरादुदीचीराववृत्रन् प्रजानतीः पथिभिर्देवयानैः.
पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्चरन्ति सरितः पुराणीः (४१)

जल देव मार्ग के द्वारा दक्षिण से उत्तर को जाते हैं तथा नवीन बन कर वर्षा के रूप पर्वत पर नदी का रूप धारण कर लेते हैं. (४१)

अग्ने अक्रव्यान्निःक्रव्यादं नुदा देवयजनं वह (४२)

हे गार्हपत्य अग्नि! तुम क्रव्याद अग्नि को हम से दूर करो तथा देव पूजन की सामग्री को वहन करो. (४२)

इमं क्रव्यादा विवेशायं क्रव्यादमन्वगात्.
व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम् (४३)

इस पुरुष ने क्रव्याद अग्नि का अपने घर में प्रवेश कर लिया है तथा यह उसी का अनुगामी हो गया है. मैं उन दोनों को बाधक के समान मानता हूं तथा इस क्रव्याद अग्नि को अलग करता हूं. (४३)

अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणामग्निर्गार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः (४४)

देवताओं के भीतरी और मनुष्यों के परिधि रूप गार्हपत्य अग्नि देवताओं और मनुष्यों के मध्यस्थ हैं. (४४)

जीवानामायुः प्र तिर त्वमग्ने पितृणां लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः.
सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिमुषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै (४५)

हे अग्नि! तुम जीवितों की आयु की वृद्धि करो तथा मृतकों को देवलोक में भेजो. गार्हपत्य अग्नि शत्रुओं को जलाएं. हे गार्हपत्य अग्नि! तुम मंगलमयी उषा को हम में प्रतिष्ठित करो. (४५)

सर्वानग्ने सहमानः सपत्नानैषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि (४६)

हे अग्नि! तुम सब शत्रुओं को वश में करते हुए उन के बल और धन को हम में प्रतिष्ठित करो. (४६)

इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात्.
तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परि पातास्ताम् (४७)

इन ऐश्वर्य वाली अग्नि का स्तवन करो. ये तुम्हें पाप से मुक्त करें. उन के द्वारा तुम रुद्र के बाण को दूर हटाते हुए अपनी रक्षा करो. (४७)

अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात्.
आ रोहत सवितुर्नावमेतां षड्भिरुर्वीभिरमतिं तरेम (४८)

हवि रूप माता की वाहक अग्नि का स्तवन करो. वे पाप से तुम्हारी रक्षा करें. अग्नि सविता की नौका पर चढ़ कर छः देवियों के द्वारा हमें बुद्धि से बचाएंगे. (४८)

अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः.
अनातुरान्त्सुमनसस्तल्प बिभ्रज्ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि (४९)

637/39

हे गार्हपत्य अग्नि! तुम दिन और रात के आश्रय रूप होते हुए हमें प्राप्त हो. तुम कल्याणप्रद होते हुए हमें पुत्र, पौत्रादि से युक्त करते हो. तुम्हारी आराधना सुगम है. तुम हमें नीरोग तथा हर्ष युक्त करो तथा पर्यंक (पलंग) पर चढ़ाते हुए दीर्घ काल तक प्रदीप्त होते रहो. (४९)

ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा. क्रव्याद्
यानग्निरन्तिकादश्व इवानुवपते नडम् (५०)

जिन का पाप अश्व द्वारा घास को कुचलने के समान क्रव्याद अग्नि को कुचलता है, पाप से अपनी जीविका चलाने वाले वे पुरुष देवयान के घातक हैं. तू इस पशु धर्म पर चढ़. (५०)

ये ऽश्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते.
ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा (५१)

जो मनुष्य धन की इच्छा से क्रव्याद अग्नि की सेवा करते हैं, वे पुरुष सदा दूसरों की रक्षा करते हैं. (५१)

प्रेव पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः.
क्रव्याद् यानग्निरन्तिकादनुविद्वान् वितावति (५२)

जिस पुरुष के पास आ कर क्रव्याद अग्नि तपती है, वह बारबार आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है तथा अधोगति को प्राप्त होता है. (५२)

अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः.
माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्यमरण्यान्या गह्वरं सचस्व (५३)

हे क्रव्याद अग्नि! काली भेड़, सीसा और चंद्रमा को तेरा भाग माना जाता है. तथा पिसे हुए उर्द भी तेरे हव्य रूप हैं. अतः तू फिर जंगल में पहुंच जा. (५३)

इषीकां जरतीमिष्ट्वा तिल्पिञ्जं दण्डनं नडम्.
तमिन्द्र इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ (५४)

पुरानी सींक, दंड, तिलों का ढेर तथा सरकंडे को इंद्र ने ईंधन बनाया और उस के द्वारा यम की इस अग्नि को पृथक कर दिया. (५४)

प्रत्यञ्चमर्क प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पन्थां वि ह्या विवेश.
परामीषामसून् दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि (५५)

गार्हपत्य अग्नि सूर्य को अर्पित हो कर देवयान मार्ग में प्रविष्ट हुई थी और जिन के प्राणों को नष्ट कर दिया, मैं उन यजमानों को चिर आयु से युक्त करता हूं. (५५)

हे गार्हपत्य अग्नि! तुम दिन और रात के आश्रय रूप होते हुए हमें प्राप्त हो. तुम कल्याणप्रद होते हुए हमें पुत्र, पौत्रादि से युक्त करते हो. तुम्हारी आराधना सुगम है. तुम हमें नीरोग तथा हर्ष युक्त करो तथा पर्यंक (पलंग) पर चढ़ाते हुए दीर्घ काल तक प्रदीप्त होते रहो. (४९)

ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा. क्रव्याद्
यानग्निरन्तिकादश्व इवानुवपते नडम् (५०)

जिन का पाप अश्व द्वारा घास को कुचलने के समान क्रव्याद अग्नि को कुचलता है, पाप से अपनी जीविका चलाने वाले वे पुरुष देवयान के घातक हैं. तू इस पशु धर्म पर चढ़. (५०)

ये ऽश्रद्धा धनकाम्या क्रव्यादा समासते.
ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा (५१)

जो मनुष्य धन की इच्छा से क्रव्याद अग्नि की सेवा करते हैं, वे पुरुष सदा दूसरों की रक्षा करते हैं. (५१)

प्रेव पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः.
क्रव्याद् यानग्निरन्तिकादनुविद्वान् वितावति (५२)

जिस पुरुष के पास आ कर क्रव्याद अग्नि तपती है, वह बारबार आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है तथा अधोगति को प्राप्त होता है. (५२)

अविःकृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः.
माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्यमरण्यान्या गह्वरं सचस्व (५३)

हे क्रव्याद अग्नि! काली भेड़, सीसा और चंद्रमा को तेरा भाग माना जाता है. तथा पिसे हुए उर्द भी तेरे हव्य रूप हैं. अतः तू फिर जंगल में पहुंच जा. (५३)

इषीकां जरतीमिष्ट्वा तिल्पिञ्जं दण्डनं नडम्.
तमिन्द्र इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ (५४)

पुरानी सींक, दंड, तिलों का ढेर तथा सरकंडे को इंद्र ने ईंधन बनाया और उस के द्वारा यम की इस अग्नि को पृथक कर दिया. (५४)

प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पन्थां वि ह्या विवेश.
परामीषामसून् दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि (५५)

गार्हपत्य अग्नि सूर्य को अर्पित हो कर देवयान मार्ग में प्रविष्ट हुई थी और जिन के प्राणों को नष्ट कर दिया, मैं उन यजमानों को चिर आयु से युक्त करता हूं. (५५)

अधिकार पाते हैं, उन में जो प्रकाशित और मधुमय लोक है. उस लोक को अथवा पृथ्वी और स्वर्ग दोनों लोकों को प्राप्त करो तथा संतान से संपन्न होते हुए वृद्धावस्था तक जीवित रहो. (६)

प्राचींप्राचीं प्रदिशमा रभेथामेतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते.
यद् वां पक्वं परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दम्पती सं श्रयेथाम् (७)

हे पति और पत्नी! तुम पूर्व की ओर बढ़ो. उस स्वर्ग पर श्रद्धालु जन ही चढ़ पाते हैं. तुम ने जो पका हुआ ओदन अग्नि पर रखा है उस की रक्षा के लिए खड़े रहो. (७)

दक्षिणां दिशमभि नक्षमाणौ पर्यावर्तेथामभि पात्रमेतत्.
तस्मिन् वां यमः पितृभिः संविदानः पक्वाय शर्म बहुलं नि यच्छात् (८)

हे पति और पत्नी! तुम दक्षिण की ओर जा कर इस की प्रदक्षिणा करते हुए आओ. असमय पितरों से सहमत हुए यमराज तुम्हारे ओदन के लिए अनेक प्रकार के कल्याण प्रदान करें. (८)

प्रतीची दिशामियमिद् वरं यस्यां सोमो अधिपा मृडिता च.
तस्यां श्रयेथां सुकृतः सचेथामधा पक्वान्मिथुना सं भवाथः (९)

पश्चिम दिशा में स्वामी और सुख देने वाला व्योम है, इसलिए यह दिशा श्रेष्ठ मानी जाती है. तुम इस दिशा में पके हुए ओदन को रख कर पुण्य कर्मों का फल प्राप्त करो. फिर इस पके हुए ओदन के प्रभाव से तुम दोनों स्वर्ग और पृथ्वी पर प्रकट होओ. (९)

उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद् दिशामुदीची कृणवन्नो अग्रम्.
पाङ्क्तं छन्दः पुरुषो बभूव विश्वैर्विश्वाङ्गैः सह सं भवेम (१०)

उत्तर दिशा प्रजाओं से युक्त है. यह श्रेष्ठ दिशा हम को श्रेष्ठता प्रदान करे. पंक्ति छंद ओदन के रूप में प्रकट होता है. हम भी पृथ्वी और स्वर्ग को अपने सभी अंगों सहित प्राप्त हों. (१०)

ध्रुवेयं विराण्नमो अस्त्वस्यै शिवा पुत्रेभ्य उत मह्यमस्तु.
सा नो देव्यदिते विश्ववार इर्य गोपा अभि रक्ष पक्वम् (११)

यह वरण करने योग्य तथा खंड न होने वाली पृथ्वी है. यह हमारे लिए सुख देने वाली हो. यह हमारे पुत्रों का मंगल करे तथा नियुक्त रक्षक के समान यह ओदन की रक्षा करे. (११)

पितेव पुत्रानभि सं स्वजस्व नः शिवा नो वाता इह वान्तु भूमौ.
यमोदनं पचतो देवते इह तन्नस्तप उत सत्यं च वेत्तु (१२)

हे पृथ्वी! जिस प्रकार पिता अपने पुत्रों का आलिंगन करता है, उसी प्रकार तुम इस ओदन का आलिंगन करो. यहां मंगलमय वस्तु प्रवाहित हो. तुम हमारे ओदन को तपाओ तथा हमारे यथार्थ संकल्प को जानो. (१२)

यद्यत् कृष्णः शकुन एह गत्वा त्सरन् विषक्तं बिल आससाद.
यद्वा दास्या३र्द्रहस्ता समङ्क्त उलूखलं मुसलं शुम्भतापः (१३)

कौवे ने कपट कर के इस में बिल बनाया हो अथवा दासी ने भीगे हुए हाथ से मूसल और उलूखल का स्पर्श कर लिया हो, तब भी यह मंगलकारक हो. (१३)

अयं ग्रावा पृथुबुध्नो वयोधाः पूतः पवित्रैरप हन्तु रक्षः.
आ रोह चर्म महि शर्म यच्छ मा दम्पती पौत्रमघं नि गाताम् (१४)

यह दृढ़ पाषाण हवि धारण करने वाला है. यह शुद्ध हो कर राक्षसों को नष्ट करे. हे ओदन! तू चरम पर आता हुआ कल्याण करने वाला हो. इस दंपती के पौत्र को उनका पाप न छू सके. (१४)

वनस्पतिः सह देवैर्न आगन् रक्षः पिशाचां अपबाधमानः.
स उच्छ्र्यातै प्र वदाति वाचं तेन लोकां अभि सर्वाञ्जयेम (१५)

यह वनस्पति राक्षसों और पिशाचों को रोकती हुई हम को प्राप्त हुई है. वह हमें उच्च स्वर वाला तथा सभी लोकों पर विजय प्राप्त करने वाला बनाए. (१५)

सप्त मेधान् पशवः पर्यगृह्णन् य एषां ज्योतिष्मां उत यश्चकर्श.
त्रयस्त्रिंशद् देवतास्तान्त्सचन्ते स नः स्वर्गमभि नेष लोकम् (१६)

इन चावलों में जो पतला, परंतु अधिक चमकता हुआ है, ऐसे सात चावलों को लोगों ने पशु के समान ग्रहण किया है. यह तैंतीस देवताओं के द्वारा सेवन करने योग्य है. यह ओदन हम को स्वर्ग में पहुंचाए. (१६)

स्वर्गं लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रैः स्याम.
गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्निर्ऋतिर्मो असातिः (१७)

हे ओदन! तू हमें स्वर्ग में लिए जा रहा है. वहां हम स्त्रीपुरुषों सहित प्रकट हों. पाप देवता निर्ऋति और शत्रु वहां हम को अपने वश में न करें इसलिए तू अनुगमन कर. मैं तेरे हाथ को पकड़ रहा हूं. (१७)

ग्राहिं पाप्मानमति तां अयाम तमो व्यस्य प्र वदासि वल्गु.
वानस्पत्यं उद्यतो मा जिहिंसीर्मा तण्डुलं वि शरीर्देवयन्तम् (१८)

हे वनस्पति! तुम पाप से उत्पन्न होने वाले अंधकार को दूर करते हुए मधुर शब्द करती हो. हम अपने पापों से पार हो जाएं. यह वनस्पति मेरी हिंसा न करे और न मुझे देवमार्ग प्राप्त कराने वाले चावलों की हिंसा करे. (१८)

विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुप याह्येतम्.
वर्षवृद्धमुप यच्छ शूर्पं तुषं पलावानप तद् विनक्तु (१९)

हे ओदन! तू घृतपृष्ठ अर्थात घी की पीठ वाला हो कर मत आ. तू परलोक में हमारे साथ प्रकट होने के लिए हमारे पास आ और वर्षा ऋतु में प्रवृद्ध उपकरण वाले रूप को प्राप्त हो. वह तुझ से भूसी को अलग करे. (१९)

त्रयो लोकाः संमिता ब्राह्मणेन द्यौरेवासौ पृथिव्य१न्तरिक्षम्.
अंशून् गृभीत्वान्वारभेथामा प्यायन्तां पुनरा यन्तु शूर्पम् (२०)

आकाश, अंतरिक्ष और पृथ्वी इन तीनों लोकों को ब्राह्मण प्राप्त कराता है. हे पति और पत्नी! तुम चावलों को फटकना आरंभ करो. यह धान उछालते हुए सूप को प्राप्त हो. (२०)

पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनामेकरूपो भवसि सं समृद्ध्या.
एतां त्वचं लोहिनीं तां नुदस्व ग्रावा शुम्भाति मलग इव वस्त्रा (२१)

हे धान! पशु विभिन्न रूपों वाले होते हैं, परंतु तू एक ही रूप वाला है. तू पाषाण के द्वारा अपनी भूसी का त्याग कर. (२१)

पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि तनूः समानी विकृता त एषा.
यद्यद् द्युत्तं लिखितमर्पणेन तेन मा सुस्रोर्ब्रह्मणापि तद् वपामि (२२)

हे मूसल! तू पृथ्वी का बना हुआ है. इसलिए तू पृथ्वी ही है. पृथ्वी की तथा तेरी देह एक समान है. इसलिए मैं पृथ्वी को ही पृथ्वी पर मार रहा हूं. हे ओदन! मूसल के प्राप्त होने से तेरे अंग में जो पीड़ा हो रही है, उस पीड़ा से तू भूसी से अलग हो कर छूट जा. मैं तुझे मंत्र द्वारा अग्नि को अर्पित करता हूं. (२२)

जनित्रीव प्रति हर्यासि सूनुं सं त्वा दधामि पृथिवीं पृथिव्या.
उखा कुम्भी वेद्यां मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषक्ता (२३)

माता जिस प्रकार अपने पुत्र को प्राप्त करती है, उसी प्रकार मैं मूसल रूपी पृथ्वी को पृथ्वी से मिलाता हूं. वेदी में भी ओखली रूपी कुंभी अर्थात पकाने वाला पात्र है. इसलिए तू व्यथित मत हो. तू यज्ञ के आयुधों द्वारा घृत से युक्त की जा चुकी है. (२३)

अग्निः पचन् रक्षतु त्वा पुरस्तादिन्द्रो रक्षतु दक्षिणतो मरुत्वान्.
वरुणस्त्वा दृंहाद्धरुणे प्रतीच्या उत्तरात् त्वा सोमः सं ददातै (२४)

अग्नि पाचन अर्थात पकाने के कर्म में तेरी रक्षक हो. इंद्र पूर्व से, मरुदगण दक्षिण से, वरुण पश्चिम से तथा सोम उत्तर दिशा की ओर से तेरी रक्षा करें. (२४)

पूताः पवित्रैः पवन्ते अभ्राद् दिवं च यन्ति पृथिवीं च लोकान्.
ता जीवला जीवधन्याः प्रतिष्ठाः पात्र आसिक्ताः पर्यग्निरिन्धाम् (२५)

पुण्य कर्मों द्वारा शुद्ध हुए जल तुझे शुद्ध करने वाले हों. वे मेघों द्वारा आकाश में जाते और फिर पृथ्वी पर आ कर मनुष्यों की सेवा करते हैं. जल पृथ्वी से पुनः अंतरिक्ष में पहुंचते हैं तथा प्राणियों को सुखी करने वाले पात्र में स्थित होते हैं. अग्नि इन आसक्त होने वाले जलों को सभी ओर दीप्त करें. (२५)

आ यन्ति दिवः पृथिवीं सचन्ते भूम्याः सचन्ते अध्यन्तरिक्षम्.
शुद्धाः सतीस्ता उ शुम्भन्त एव ता नः स्वर्गमभि लोकं नयन्तु (२६)

आकाश से आने वाले ये जल पृथ्वी की सेवा करते हैं तथा पृथ्वी से पुनः आकाश में पहुंचते हैं. ये पवित्र जल पवित्रता देने वाले हैं. ये जल हम को स्वर्ग की प्राप्ति कराएं. (२६)

उतेव प्रभ्वीरुत संमितास उत शुक्राः शुचयश्चामृतासः.
ता ओदनं दंपतिभ्यां प्रशिष्टा आपः शिक्षन्तीः पचता सुनाथाः (२७)

ये जल श्वेत रंग वाले, दमकते हुए एवं अमृत के समान हैं. हे जलो! इस दंपती द्वारा डाले जाने पर ओदन को शुद्ध करते हुए पकाओ. (२७)

संख्याता स्तोकाः पृथिवीं सचन्ते प्राणापानैः संमिता ओषधीभिः.
असंख्याता ओप्यमानाः सुवर्णाः सर्वं व्यापुः शुचयः शुचित्वम् (२८)

प्राण, अपान तथा समान स्वरूप ओषधियों से युक्त पृथ्वी का सेचन करते हैं और शोभन वर्ण वाले जीवों में प्रविष्ट असंख्य जल शुद्धता देते हुए प्राप्त होते हैं. (२८)

उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः फेनमस्यन्ति बहुलांश्च बिन्दून्.
योषेव दृष्ट्वा पतिमृत्वियायैतैस्तण्डुलैर्भवता समापः (२९)

ताप देने पर ये जल शब्द करते हैं तथा बूंदों को उड़ाते हुए युद्ध सा करते हैं. हे जलो! जिस प्रकार पति को देख कर पत्नी उस से मिल जाती है, उसी प्रकार तुम ऋतु में होने वाले यज्ञ के निमित्त चावलों में मिल जाओ. (२९)

उत्थापय सीदतो बुध्न एनानद्भिरात्मानमभि सं स्पृशन्ताम्.
अमासि पात्रैरुदकं यदेतन्मितास्तण्डुलाः प्रदिशो यदीमाः (३०)

हे ओदन की अधिष्ठात्री देवी! मूसल की जड़ से व्यथित होते हुए इन चावलों को उठाओ. ये जल से मिलें. हे यजमान! तू जल को पात्रों द्वारा नाप रहा है. इधर ये चावल भी नप गए हैं. इन्हें जल में डालने की अनुज्ञा प्रदान कर. (३०)

प्र यच्छ पर्शुं त्वरया हरोषमहिंसन्त ओषधीर्दान्तु पर्वन्.

यासां सोमः परि राज्यं बभूवामन्युता नो वीरुधो भवन्तु (३१)

कलछी को चलाओ और जो चावल पक चुके हैं, उन्हें ले लो. ये किसी की हिंसा न करते हुए प्रत्येक पर्व में ओषधि रूपी फल प्राप्त करें. जिन लताओं का राजा सोम है, ये लताएं मोक्ष करने वाली हों. (३१)

नवं बर्हिरोदनाय स्तृणीत प्रियं हृदश्चक्षुषो वल्ग्वस्तु.
तस्मिन् देवाः सह दैवीर्विशन्त्विमं प्राश्नन्त्वृतुभिर्निषद्य (३२)

ओदन रखने के लिए नवीन कुशा फैला दो. यह कुशा का आसन हृदय और नेत्रों को सुंदर लगे. देवता उस पर अपनी पत्नियों सहित विराजमान होते हुए इस ओदन का सेवन करें. (३२)

वनस्पते स्तीर्णमा सीद बर्हिरग्निष्टोमैः संमितो देवताभिः.
त्वष्ट्रेव रूपं सुकृतं स्वधित्यैना एहाः परि पात्रे ददृश्राम् (३३)

हे वनस्पति! कुशा बिछा दी है. तुम उस पर बैठो. देवताओं ने तुम्हें अग्नि सोम के समान समझा है. स्वधिति ने उसे त्वष्टा के समान शोभन रूप दिया है. वह अब पात्रों में दिखाई देता है. (३३)

षष्ट्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् स्वः पक्वेनाभ्यश्नवातै.
उपैनं जीवान् पितरश्च पुत्रा एतं स्वर्गं गमयान्तमग्नेः (३४)

इस निधि का रक्षक यजमान इस पके हुए ओदन के भक्षण का फल स्वर्ग में साठ वर्ष पश्चात प्राप्त करे. हे यश के अभिमानी देव! तुम इस यजमान को स्वर्ग प्राप्त कराते हुए इस के पितरों, पुत्र आदि को भी इस के समीप रखो. (३४)

धर्ता ध्रियस्व धरुणे पृथिव्या अच्युतं त्वा देवताश्च्यावयन्तु.
तं त्वा दम्पती जीवन्तौ जीवपुत्रावुद् वासयातः पर्यग्निधानात् (३५)

हे ओदन! तू धारण करने वाला है. इसलिए भूमि के स्थान में प्रतिष्ठित हो. तू अच्युत है, देवता तुझे च्युत न करें. जीवित पुत्रों वाले पतिपत्नी तुझे धान के द्वारा पुष्ट करें. (३५)

सर्वान्त्समागा अभिजित्य लोकान् यावन्तः कामाः समतीतृपस्तान्.
वि गाहेथामायवनं च दर्विरेकस्मिन् पात्रे अध्युद्धरैनम् (३६)

हे ओदन! तू सभी लोकों पर विजय प्राप्त करता हुआ आ. तू हमारी सभी इच्छाओं को पूरी तरह तृप्त कर. कलछी को घुमाते हुए पतिपत्नी ओदन को निकाल कर पात्र में स्थित करें. (३६)

उप स्तृणीहि प्रथमय पुरस्ताद् घृतेन पात्रमभि घारयैतत्.
वाश्रेवोस्रा तरुणं स्तनस्युमिमं देवासो अभिहिङ्कृणोत (३७)

तुम इसे परोस कर फैलाओ तथा इस में घी डालो. हे देवगण! दूध पीने वाले को देख कर दुधारू गाएं दूध पीने वाले बछड़े को देखकर शब्द करती हुई जिस प्रकार उस की ओर दौड़ती हैं, उसी प्रकार इस तैयार ओदन की ओर तुम शब्द करो. (३७)

उपास्तरीरकरो लोकमेतमुरुः प्रथतामसमः स्वर्गः.
तस्मिञ्छ्रयातै महिषः सुपर्णो देवा एनं देवताभ्यः प्र यच्छान् (३८)

हे यजमान! ओदन परोस कर तुम ने इस लोक को वश में कर लिया है. उस के प्रभाव से स्वर्ग के यही ओदन तुझे अधिक बढ़े हुए प्राप्त हों. हे पति और पत्नी! यह सुंदर महिमा वाला और गमनशील ओदन तुम्हें स्वर्ग को प्राप्त कराए. देवता इस यजमान को देवों के समीप पहुंचा दें. (३८)

यद्यज्जाया पचति त्वम् परः परः पतिर्वा जाये त्वत् तिरः.
सं तत् सृजेथां सह वां तदस्तु संपादयन्तौ सह लोकमेकम् (३९)

हे जाया! तू इस ओदन को पकाती है. यदि तू अपने पति से पहले चली जाए तो तुम दोनों स्वर्ग में मिल जाना. तुम दोनों एक लोक में रहो तथा यह ओदन भी वहां तुम्हारे पास रहे. (३९)

यावन्तो अस्याः पृथिवीं सचन्ते अस्मत् पुत्राः परि ये संबभूवुः.
सर्वास्तां उप पात्रे ह्वयेथां नाभिं जानानाः शिशवः समायान् (४०)

हे यजमान! तुम अपनी पत्नी और सब पुत्रों को इस पात्र के पास बुलाओ. वे बालक अपनी नाभि (केंद्र) को जानते हुए यहां आएं (४०)

वसोर्या धारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः.
सर्वास्ता अव रुन्धे स्वर्गः षष्ट्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् (४१)

वसुयुक्त ओदन की मधु के द्वारा मोटी बनी हुई धाराएं घी से मिली हुई हैं. स्वर्ग अमृत की थाली के समान है. स्वर्ग इन को रोकता है. वसु की धाराएं निधि की रक्षक हैं. मनुष्य साठ वर्ष की अवस्था में इन की इच्छा करे. (४१)

निधिं निधिपा अभ्येनमिच्छादनीश्वरा अभितः सन्तु येऽन्ये.
अस्माभिर्दत्तो निहितः स्वर्गस्त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्त्स्वर्गानरुक्षत् (४२)

यजमान को इस निधि की कामना करनी चाहिए. हमारे द्वारा दिया हुआ भात धरोहर के रूप में है. यह ओदन स्वर्गगामी होता हुआ अपने तीनों कांडों सहित स्वर्ग में पहुंचे. (४२)

अग्नी रक्षस्तपतु यद् विदेवं क्रव्यात् पिशाच इह मा प्र पास्त.
नुदाम एनमप रुध्मो अस्मदादित्या एनमङ्गिरसः सचन्ताम् (४३)

जो राक्षस मेरे कर्म फल में बाधा पहुंचाते हैं. ये अग्नि देव उन्हें बाधित करें अर्थात रोकें. क्रव्याद और पिशाच हमारा शोषण न करें. इस राक्षस को यहां आने से रोकते हुए हम भागते हैं. आंगिरस और सूर्य इस राक्षस को वश में करें. (४३)

आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो मध्विदं घृतेन मिश्रं प्रति वेदयामि.
शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्यानिहत्यैतं स्वर्गं सुकृतावपीतम् (४४)

मैं यह घृत युक्त मधु आंगिरसों तथा आदित्यों के हेतु निवेदित करता हूं. ब्राह्मण के पवित्र हाथ फल के रूप में इस ओदन को स्वर्ग में पहुंचाएं. (४४)

इदं प्रापमुत्तमं काण्डमस्य यस्माल्लोकात् परमेष्ठी समाप.
आ सिञ्च सर्पिर्घृतवत् समङ्ग्ध्येष भागो अङ्गिरसो नो अत्र (४५)

प्रजापति ने जिस दिखाई देते हुए कांड के द्वारा फल प्राप्त किया था. उस उत्तम कांड को मैं ने भी प्राप्त कर लिया है. इसे घृत से सींचो. यह घृत युक्त भाग हम अंगिरा गोत्र वाले ऋषियों का है. (४५)

सत्याय च तपसे देवताभ्यो निधिं शेवधिं परि दद्म एतम्.
मा नो द्यूतेऽव गान्मा समित्यां मा स्मान्यस्मा उत्सृजता पुरा मत् (४६)

सत अर्थात स्थायी फल के निमित्त हम यह ओदन रूप धरोहर देवताओं को सौंपते हैं. परस्पर कर्म के आदानप्रदान रूप द्यूत में तथा समिति में भी यह हम से अलग न हो. इसे अन्य पुरुषों का भोज्य मत बनाओ. (४६)

अहं पचाम्यहं ददामि ममेदु कर्मन् करुणेऽधि जाया.
कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रोऽन्वारभेथां वय उत्तरावत् (४७)

पाक क्रिया करने वाला मैं ही इस का दान कर रहा हूं. हे यज्ञात्मक कर्म! इस कार्य में मेरे साथ मेरी पत्नी भी सहयोग कर रही है. हमारे घर में कुमार अवस्था वाला एक पुत्र है. हम इस उत्तम कर्म रूप यज्ञान्न के पाक तथा दान आदि कर्मों को उसके कल्याण के हेतु करते हैं. (४७)

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति.
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति (४८)

इस कर्म में किसी प्रकार का हेरफेर नहीं है. इस का कोई अन्य आधार भी नहीं है. यह अपने मित्रों के साथ मिलकर भी नहीं आता है. यह जो पूर्ण पात्र रखा गया है, वही पकाने वाले को पुनः प्राप्त हो जाता है. (४८)

प्रियं प्रियाणां कृणवाम तमस्ते यन्तु यतमे द्विषन्ति.
धेनुरनड्वान् वयोवय आयदेव पौरुषेयमप मृत्युं नुदन्तु (४९)

हे यजमान! प्रिय से भी प्रिय फल वाले कर्म को भी हम तेरे लिए करते हैं. तेरे

द्वेषी पुरुष नरक के रूप अंधकार की करे. गौ, बेल, अन्न, आयु और पुरुषार्थ ये हमारे समीप आते हुए अपमृत्यु आदि को दूर भगाएं. (४९)

समग्नयो विदुरन्यो अन्यं य ओषधीः सचते यश्च सिन्धून्.
यावन्तो देवा दिव्या३तपन्ति हिरण्यं ज्योतिः पचतो बभूव (५०)

ओषधियों का भक्षण करने वाले अग्नि तथा जलों के सेवन कर्ता अग्नि एकदूसरे को जानते हैं. उन के अतिरिक्त अन्य अग्नि भी इस कर्म को जानते हैं. देवताओं के तप, सुवर्ण तथा चमचमाते हुए अन्य पदार्थ पाक कर्म करने वाले को प्राप्त होते हैं. (५०)

एषा त्वचां पुरुषे सं बभूवानग्नाः सर्वे पशवो ये अन्ये.
क्षत्रेणात्मानं परि धापयोथोऽमोतं वासो मुखमोदनस्य (५१)

ये पशु चर्म से आच्छादित दिखाई पड़ते हैं. इन की त्वचा पहले पुरुष में थी. हे पति और पत्नी! तुम अपने को क्षमा तेज से संपन्न करो तथा इस भात के मुख को ढक दो. (५१)

यदक्षेषु वदा यत् समित्यां यद्वा वदा अनृतं वित्तकाम्या.
समानं तन्तुमभि संवसानौ तस्मिन्त्सर्वं शमलं सादयाथः (५२)

द्यूत कर्म में अथवा युद्ध में धन प्राप्ति की अभिलाषा से तुम ने जो मिथ्या भाषण किया है, समस्त तंतुओं से बने इस वस्त्र से ढकते हुए अग्नि में उस दोष को प्रविष्ट कर दो. (५२)

वर्षं वनुष्वापि गच्छ देवांस्त्वचो धूमं पर्युत्पातयासि.
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुप याह्येतम् (५३)

हे ओदन! तू फल की वर्षा करने वाला हो. तू देवताओं के पास जा कर अपनी त्वचा को धुएं के समान उछालना. तू धृत पृष्ठ होता हुआ अनेक प्रकार से पूजित हो कर तथा समान उत्पत्ति वाला बन कर इस पुरुष को स्वर्ग में प्राप्त हो. (५३)

तन्वं स्वर्गो बहुधा वि चक्रे यथा विद आत्मन्नन्यवर्णाम्.
अपाजैत् कृष्णां रुशतीं पुनानो या लोहिनी तां ते अग्नौ जुहोमि (५४)

यह ओदन स्वर्ग में अपने आप को उसी प्रकार अनेक आकार वाला बना लेने में समर्थ है. जिस प्रकार आत्मा ज्ञानी को अनेक प्रकार का बना देता है तथा कालिमा को शुद्ध करता जाता है, उसी प्रकार मैं तेरे रूप को अग्नि में होम करता हूं. (५४)

प्राच्यै त्वा दिशे३ऽग्नयेऽधिपतयेऽसिताय रक्षित्र आदित्यायेषुमते. एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः. दिष्टं नो अत्र जरसे नि नेषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन

सहं सं भवेम (५५)

हम तुझे पूर्व दिशा, अग्नि, काले सर्प और आदित्य को दान करते हैं. तू हमारे यहां से जाने तक इस पुरुष की रक्षा कर. इसे वृद्धावस्था तक हम को माननीय रूप में प्राप्त कराओ. हमारी वृद्धावस्था ही इसे मृत्यु प्रदान करें. हम इस पके हुए ओदन सहित स्वर्ग वासी होते हुए आनंद को प्राप्त करें. (५५)

दक्षिणायै त्वा दिश इन्द्रायाधिपतये तिरश्चिराजये रक्षित्रे यमायेषुमते.
एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः. दिष्टं नो अत्र जरसे नि नेषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम (५६)

हम तुझे दक्षिण दिशा, इंद्र, तिरश्ची सर्प और यम को प्रदान करते हैं. तू हमारे यहां से जाने तक इस की रक्षा कर. इसे वृद्धावस्था तक हम भाग्य रूप में प्राप्त करें. हमारी वृद्धावस्था इसे मृत्यु प्रदान करे. (५६)

प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणायाधिपतये पृदाकवे रक्षित्रेऽन्नायेषुमते. एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः. दिष्टं नो अत्र जरसे नि नेषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम (५७)

हम तुझे पश्चिम दिशा, वरुण, प्रदाकू सर्प तथा वरुणधारी अन्न को प्रदान करते हैं. तू हमारे यहां से प्रस्थान करने तक इस की रक्षा कर. इसे वृद्धावस्था तक भाग्य रूप में हमें प्राप्त करा. हमारी वृद्धावस्था ही इसे मृत्यु प्रदान करे और मरने पर हम इस पके हुए ओदन सहित स्वर्ग में जा कर आनंद प्राप्त करें. (५७)

उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये स्वजाय रक्षित्रेऽशन्या इषुमत्यै. एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः. दिष्टं नो अत्र जरसे नि नेषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम (५८)

हम तुझे उत्तर दिशा, सोम, स्वज नामक सर्प एवं अशनि को प्रदान करते हैं. तू हमारे यहां से प्रस्थान करने तक इस की रक्षा कर. इसे वृद्धावस्था तक भाग्य के रूप में हमें प्राप्त करा. हमारी वृद्धावस्था इसे मृत्यु प्रदान करे. मरने पर हम इस पके हुए ओदन के साथ स्वर्ग में आनंद प्राप्त करें. (५८)

ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवेऽधिपतये कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य इषुमतीभ्यः. एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः. दिष्टं नो अत्र जरसे नि नेषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम (५९)

हे ओदन! हम तुझे ध्रुव अर्थात नीचे की ओर वाली दिशा, उस के अधिपति विष्णु, संरक्षण कर्ता कल्माष ग्रीव नामक सर्प और इषुमती ओषधियों को देते हैं. तुम हमारे जाने के समय तक इसकी रक्षा करो. उसे हमारे कर्मों के फल स्वरूप जीर्ण अवस्था प्राप्त कराओ. जीर्णावस्था इसे मृत्यु को सौंपे. इस पके हुए अन्न के

साथ हम पुनः उत्पन्न होंगे. (५९)

ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतयेऽधिपतये श्वित्राय रक्षित्रे वर्षायेषुमते. एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः. दिष्टं नो अत्र जरसे नि नेषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वथ पक्वेन सह सं भवेम (६०)

हम तुझे ऊर्ध्व दिशा, बृहस्पति, सर्प और इषुमान वर्ष को देते है. हमारे यहां से प्रस्थान करने तक तू इस की रक्षा कर. इसे वृद्धावस्था तक हमारे भाग्य के रूप में प्राप्त करा. वृद्धावस्था मृत्यु प्रदान करे. मरने पर हम इस सुपक्व ओदन सहित स्वर्गगामी हों तथा वहां आनंद प्राप्त करें. (६०)

सूक्त चौथा — देवता—वशा

ददामीत्येव ब्रूयादनु चैनामभुत्सत.
वशां ब्रह्मभ्यो याचद्भ्यस्तत् प्रजावदपत्यवत् (१)

मैं मांगने वाले ब्राह्मणों को देता हूं, ऐसा कह कर उत्तर दे, फिर वे ब्राह्मण कहें कि यह कर्म यजमान को संतान आदि से संपन्न कराने वाला हो. (१)

प्रजया स वि क्रीणीते पशुभिश्चोप दस्यति.
य आर्षेयेभ्यो याचद्भ्यो देवानां गां न दित्सति (२)

जो पुरुष ऋषियों सहित मांगने वाले ब्राह्मणों को देवताओं के निमित्त गोदान नहीं करता, वह अपनी संतान विक्रय करने वाला होता हुआ पशुओं से हीन हो जाता है. (२)

कूटयास्य सं शीर्यन्ते श्लोणया काटमर्दति.
बण्डया दह्यन्ते गृहाः काणया दीयते स्वम् (३)

वशा गौ के कूटा अर्थात बिना सींगों वाले अंग के कारण दान न करने वाले के पदार्थ समाप्त हो जाते हैं. दान न करने वाला लकड़ी से गाय के सीगों के स्थान को पीड़ित करता है. बंडी अर्थात बिना सींगों वाली गाय देने से उस के घर का नाश हो जाता है तथा कानी गाय देने से धन चला जाता है. (३)

विलोहितो अधिष्ठानाच्छक्नो विन्दति गोपतिम्.
तथा वशायाः संविद्यं दुरदभ्ना ह्यु१च्यसे (४)

बिना ब्यायी हुई गौ दुर्दमना कहती है. गौ के स्वामी को वशा के अधिष्ठान अर्थात रहने के स्थान से विलोहित शक्ति और संविद्य अर्थात रक्त ज्वर प्राप्त होता है. (४)

पदोरस्या अधिष्ठानाद् विक्लिन्दुर्नाम विन्दति.
अनामनात् सं शीर्यन्ते या मुखेनोपजिघ्रति (५)

गौ के स्वामी को वशा अर्थात बिना ब्याची गाय के पांवों के स्थान से विक्लिंदु नाम की विपत्ति मिलती है. उस के सूंघने से बिना जाने ही उस के पदार्थ नष्ट हो जाते हैं. (५)

यो अस्या: कर्णावास्कुनोत्या स देवेषु वृश्चते.
लक्ष्म कुर्व इति मन्यते कनीय: कृणुते स्वम् (६)

वशा गौ के कानों को दुख देने वाला देवताओं पर प्रहार करता है. जो अपने आप को इस गाय के कंधों पर चिह्न न करने वाला मानता है, वह अपनेआप को छोटा बना लेता है. (६)

यदस्या: कस्मै चिद् भोगाय बालान् कश्चित् कृन्तति.
तत: किशोरा म्रियन्ते वत्सांश्च घातुको वृक: (७)

किसी भोग के निमित्त इस वशा गाय के बालों को काटने से काटने वाले का युवा पुत्र मृत्यु को प्राप्त होता है तथा उस के पुत्रों का संहार शृगाल अर्थात स्यार करते हैं. (७)

यदस्या गोपतौ सत्या लोम ध्वाङ्क्षोअजीहिडत्.
तत: कुमारा म्रियन्ते यक्ष्मो विन्दत्यनामनात् (८)

गौ के स्वामी की उपस्थिति में यदि गाय के बालों को कौआ नौचता है तो उसके पुत्र मर जाते हैं तथा वह स्वयं क्षय रोग को प्राप्त होता है.(८)

यदस्या: पल्पूलनं शकृद् दासी समस्यति.
ततोऽपरूपं जायते तस्मादव्येष्यदेनस: (९)

यदि गाय के गोबर आदि को दासी फेंकती है तो गाय का स्वामी उस पाप से नहीं छूट पाता तथा कुरूप हो जाता है. (९)

जायमानाभि जायते देवान्त्सब्राह्मणान् वशा.
तस्माद् ब्रह्मभ्यो देयैषा तदाहु: स्वस्य गोपनम् (१०)

वशा अर्थात तुरंत ब्याही हुई गाय देवताओं और ब्राह्मणों के लिए ही प्रकट होती है. इसलिए ब्राह्मणों को उस का दान देना ही अपनी रक्षा करना है, ऐसा विद्वान लोग कहते हैं. (१०)

य एनां वनिमायन्ति तेषां देवकृता वशा.
ब्रह्मज्येयं तदब्रुवन् य एनां निप्रियायते (११)

जो लोग गाय को परम प्रिय समझते हुए उस की सेवा करते हैं उन के लिए वह ब्रह्मज्या होती है, ऐसा विद्वानों का कथन है. (११)

य आर्षेयेभ्यो याचद्भ्यो देवानां गां न दित्सति.

आ स देवेषु वृश्चते ब्राह्मणानां च मन्यवे (१२)

जो देवताओं की गाय को ऋषि पुत्रों वाले ब्राह्मणों को नहीं देना चाहता है, वह ब्रह्म कोप के कारण देवताओं के द्वारा नाश को प्राप्त होता है. (१२)

यो अस्य स्याद् वशाभोगो अन्यामिच्छेत तर्हि सः.
हिंस्ते अदत्ता पुरुषं याचितां च न दित्सति (१३)

यदि वशा अर्थात तुरंत ब्यायी हुई गाय उस के स्वामी के लिए उपभोग योग्य हो तो वह अन्य गाय की कामना करे. जो पुरुष याचक को वशा गाय का दान नहीं देता है तो यह दान न की हुई वशा गौ उसे नष्ट कर देती है. (१३)

यथा शेवधिर्निहितो ब्राह्मणानां तथा वशा.
तामेतदच्छायन्ति यस्मिन् कस्मिंश्च जायते (१४)

वशा गाय ब्राह्मणों की धरोहर के समान होती है. यह गाय वास्तव में ब्राह्मणों की ही है. वह चाहे जिस के घर में प्रकट हो जाए, ये ब्राह्मण गोस्वामी के सामने आ कर इस गाय को मांगते हैं. (१४)

स्वमेतदच्छायन्ति यद् वशां ब्राह्मणा अभि.
यथैनानन्यस्मिन् जिनीयादेवास्या निरोधनम् (१५)

वशा गाय के सामने आने वाले ब्राह्मण अपने ही धन के समान उसके पास जाते हैं. इन्हें वर्जित करना अर्थात इन्हें रोकना गाय के स्वामी को हानि पहुंचाता है. (१५)

चरेदेवा त्रैहायणादविज्ञातगदा सती.
वशां च विद्यान्नारद ब्राह्मणास्तर्ह्येष्याः (१६)

हे नारद! यह धेनु अविजात गद अर्थात रोग को न जानती हुई तीन वर्ष तक विचरण करे अथवा घास आदि खाए. यजमान इस के बाद इस धेनु को वशा मानता हुआ ब्राह्मणों की खोज करे. (१६)

य एनामवशामाह देवानां निहितं निधिम्.
उभौ तस्मै भवाशर्वौ परिक्रम्येषुमस्यतः (१७)

यह वशा इन देवताओं की धरोहर के रूप में है. इस वशा को जो मनुष्य अवशा कहता है वह भव और शर्व के बाणों का लक्ष्य बनता है. (१७)

यो अस्या ऊधो न वेदाथो अस्या स्तनानुत.
उभयेनैवास्मै दुहे दातुं चेदशकद् वशाम् (१८)

जो मनुष्य इस वशा के थनों और ऊधस अर्थात ऐन को जानता हुआ इस का दान करता है, यह वशा उसे अपने थनों और उन दोनों के द्वारा फल देने वाली

होती है. (१८)

दुरदभ्नैनमा शये याचितां च न दित्सति.
नास्मै कामाः समृध्यन्ते यामदत्त्वा चिकीर्षति (१९)

जो मांगने पर उस वशा का दान नहीं करता है, उस को दुर्दम्न अर्थात वश में न आने वाली दशा जकड़ लेती है. जो उसे अपने पास ही रखना चाहता है, उस की इच्छाएं पूर्ण नहीं होतीं. (१९)

देवा वशामयाचन् मुखं कृत्वा ब्राह्मणम्.
तेषां सर्वेषामददद्धेडं न्येति मानुषः (२०)

ब्राह्मण को अपना मुख बना कर देवता वशा को मांगते हैं. इसे न देने वाला मनुष्य उन के क्रोध का लक्ष्य बनता है. (२०)

हेडं पशूनां न्येति ब्राह्मणेभ्योऽददद् वशाम्.
देवानां निहितं भागं मर्त्यश्चेन्निप्रियायते (२१)

जो पुरुष देवताओं की धरोहर रूप भाग को अपना अत्यंत प्रिय समझता है, वह ब्राह्मणों को वशा का दमन करने के कारण पशुओं का क्रोध प्राप्त करता है. (२१)

यदन्ये शतं याचेयुर्ब्राह्मणा गोपतिं वशाम्.
अथैनां देवा अब्रुवन्नेवं ह विदुषो वशा (२२)

गौ के स्वामी से चाहे अन्य सैकड़ों ब्राह्मण वशा की याचना करें, पर वशा विद्वान की होती है, ऐसी देवों की उक्ति है. (२२)

य एवं विदुषेऽदत्त्वाथान्येभ्यो ददद् वशाम्.
दुर्गा तस्मा अधिष्ठाने पृथिवी सहदेवता. (२३)

जो पुरुष विद्वान को गौ न देता हुआ, अन्य ब्राह्मण को देता है, उस के लिए पृथ्वी देवताओं सहित दुर्गम हो जाती है. (२३)

देवा वशामयाचन् यस्मिन्नग्रे अजायत.
तामेतां विद्यान्नारदः सह देवैरुदाजत. (२४)

जिस के सामने वशा प्रकट होती है, देवता उस से वशा मांगते हैं. यह जान कर नारद भी देवताओं सहित वहां पहुंच गए. (२४)

अनपत्यमल्पपशुं वशा कृणोति पूरुषम्.
ब्राह्मणैश्च याचितामथैनां निप्रियायते. (२५)

ब्राह्मणों के द्वारा मांगी गई वशा को जो पुरुष अत्यंत प्रिय मानता हुआ नहीं देता

है, वही वशा उसे संतानहीन तथा अन्य पशुओं वाला बना देती है. (२५)

अग्नीषोमाभ्यां कामाय मित्राय वरुणाय च.
तेभ्यो याचन्ति ब्राह्मणास्तेष्वा वृश्चतेऽददत्. (२६)

ब्राह्मण सोम के लिए, अग्नि के लिए, काम के लिए और मित्रावरुण के लिए वशा को मांगते हैं. वशा न देने पर ये वशा के स्वामी को काटते हैं. (२६)

यावदस्या गोपतिर्नोपशृणुयादृचः स्वयम्.
चरेदस्य तावद् गोषु नास्य श्रुत्वा गृहे वसेत्. (२७)

गौ का स्वामी जब तक गौ के संबंध में कोई संकल्प न करे, तब तक वह उस की गायों में विचरे, फिर उस के घर में वास न करे. (२७)

यो अस्या ऋच उपश्रुत्याथ गोष्वचीचरत्.
आयुश्च तस्य भूतिं च देवा वृश्चन्ति हीडिताः. (२८)

जो संकल्प रूप वाणी के पश्चात भी अपनी गायों में विचरण करता है. वह देवताओं का अपमान करता है और देवताओं द्वारा ही अपनी आयु और ऐश्वर्य को नष्ट करने वाला होता है. (२८)

वशा चरन्ती बहुधा देवानां निहितो निधिः.
आविष्कृणुष्व रूपाणि यदा स्थाम जिघांसति. (२९)

देवताओं की निधि रूप वशा अनेक प्रकार से विचरण करती हुई जब स्थान को नष्ट करना चाहती है, तब विभिन्न रूपों को प्रकट करती है. (२९)

आविरात्मानं कृणुते यदा स्थाम जिघांसति.
अथो ह ब्रह्मभ्यो वशा याञ्च्याय कृणुते मनः. (३०)

जब वशा अपने स्थान का नाश करने की इच्छा करती है, तब वह ब्राह्मणों के द्वारा मांगे जाने की इच्छा करती हुई अनेक रूपों को प्रकट करती है. (३०)

मनसा सं कल्पयति तद् देवां अपि गच्छति.
ततो ह ब्रह्माणो वशामुपप्रयन्ति याचितुम्. (३१)

वशा जब इच्छा करती है, तब उस की इच्छा देवताओं के पास जाती है. तब ब्राह्मण वशा को मांगने के लिए उस के पास आते हैं. (३१)

स्वधाकारेण पितृभ्यो यज्ञेन देवताभ्यः.
दानेन राजन्यो वशाया मातुर्हेडं न गच्छति. (३२)

पितरों के लिए स्वधा करने से, देवताओं के विभिन्न यज्ञ करने से तथा वशा का दान करने से क्षत्रिय अपनी माता का क्रोध प्राप्त नहीं करता है. (३२)

वशा माता राजन्यस्य तथा संभूतमग्रशः.
तस्या आहुरनर्पणं यद् ब्रह्मभ्यः प्रदीयते (३३)

वशा क्षत्रिय की माता है. वशाओं का समूह पहले प्रकट हुआ था. ब्राह्मणों को वशा का दान करने से पहले उस वशा को अनर्पण अर्थात अर्पण न की हुई कहा जाता है. (३३)

यथाज्यं प्रगृहीतमालुम्पेत् स्रुचो अग्नये.
एवा ह ब्रह्मभ्यो वशामग्नय आ वृश्चतेऽददत् (३४)

119

ग्रहण किया हुआ घृत जिस प्रकार स्रुवा से अग्नि के लिए पृथक होता है उसी प्रकार अग्नि का ध्यान करते हुए ब्राह्मण के लिए वशा का दान करना चाहिए. (३४)

पुरोडाशवत्सा सुदुघा लोकेऽस्मा उप तिष्ठति.
सास्मै सर्वान् कामान् वशा प्रददुषे दुहे. (३५)

सुंदरता और सुख से दुहाने वाली वशा इस लोक में यजमान के पास रहती है. यजमान जब वशा का दान करता है तो वह उसे सभी अभीष्ट प्रदान करती है. (३५)

सर्वान् कामान् यमराज्ये वशा प्रददुषे दुहे.
अथाहुर्नारकं लोकं निरुन्धानस्य याचिताम्. (३६)

यह वशा यम के राज्य में दाता की सभी कामनाओं को पूरा करने वाली है. मांगी हुई वशा के न देने पर नरक प्राप्त होता है, ऐसा विद्वानों का कथन है. (३६)

प्रवीयमाना चरति क्रुद्धा गोपतये वशा.
वेहतं मा मन्यमानो मृत्योः पाशेषु बध्यताम् (३७)

क्रोध में भरी हुई वशा गाय अपने स्वामी को खाती हुई सी घूमती है. वह कहती है कि मुझ गर्भघातिनी को अपनी जानने वाला मूर्ख मृत्यु के बंधनों में पड़े. (३७)

यो वेहतं मन्यमानोऽमा च पचते वशाम्.
अप्यस्य पुत्रान् पौत्रांश्च याचयते बृहस्पतिः (३८)

यह वशा अन्य गायों में ताप बढ़ाती हुई घूमती है. यदि इस का स्वामी इसे दान नहीं करता तो वह उस के लिए विष का दोहन करती है. (३८)

महदेषाव तपति चरन्ती गोषु गौरपि.
अथो ह गोपतये वशाददुषे विषं दुहे (३९)

जो गर्भघातिनी वशा को अपनी मानता है या उस का पाचन करता है, बृहस्पति उस के पुत्र, पौत्र आदि को लेने की इच्छा करते हैं. (३९)

प्रियं पशूनां भवति यद् ब्रह्मभ्यः प्रदीयते.
अथो वशायास्तत् प्रियं यद् देवत्रा हविः स्यात् (४०)

ब्राह्मणों को वशा का दान कर देने पर वशा का स्वामी पशुओं का प्रिय होता है. वशा देवताओं को हवि के रूप में प्रदान की जाती है. (४०)

या वशा उदकल्पयन् देवा यज्ञादुदेत्य.
तासां विलिप्त्यं भीमामुदाकुरुत नारदः (४१)

यज्ञों से लौट कर देवताओं ने वशा का निर्माण किया, तब नारद ने अधिक घी वाली और विशालकाय वशा को स्वीकार किया. (४१)

तां देवा अमीमांसन्त वशेया३मवशेति.
तामब्रवीन्नारद एषा वशानां वशतमेति (४२)

उस समय देवताओं ने यह कहा कि यह वशा अवशा है अर्थात इस पर किसी का अधिकार नहीं है. नारद ने उसे वशाओं में परम वशा अर्थात सब से वही वशा बनाया. (४२)

कति नु वशा नारद यास्त्वं वेत्थ मनुष्यजाः.
तास्त्वा पृच्छामि विद्वांसं कस्या नाश्नीयादब्राह्मणः (४३)

हे नारद! तुम ऐसी कितनी गायों को जानने वाले हो जो मनुष्यों में प्रकट होती हैं. तुम विद्वान हो इसी कारण मैं तुम से पूछता हूं. अब्राह्मण वशा के प्राशन अर्थात खाने से बचे. (४३)

विलिप्त्या बृहस्पते या च सूतवशा वशा.
तस्या नाश्नीयादब्राह्मणो य आशंसेत भूत्याम् (४४)

हे बृहस्पति! जो अब्राह्मण ऐश्वर्य चाहे वह विलिप्ती अर्थात विशेष प्रयोजनों में लिप्त सूतवशा और वशा का भोजन न करे. (४४)

नमस्ते अस्तु नारदानुष्ठु विदुषे वशा.
कतमासां भीमतमा यामदत्त्वा पराभवेत् (४५)

हे नारद! तुम्हें नमस्कार है. वशा विद्वान की स्तुति के अनुकूल ही है. इन में भयंकर वशा कौन सी है, जिस का दान न करने पर पराजय प्राप्त होती है. (४५)

विलिप्ती या बृहस्पतेऽथो सूतवशा वशा.
तस्या नाश्नीयादब्राह्मणो य आशंसेत भूत्याम् (४६)

हे बृहस्पति! ऐश्वर्य की प्रार्थना करने वाला अब्राह्मण विलिप्ती और सूत वशा और वशा का भोजन न करे. (४६)

त्रीणि वै वशाजातानि विलिप्ती सूतवशा वशा.

ताः प्र यच्छेद् ब्रह्मभ्यः सो ऽनाव्रस्कः प्रजापतौ (४७)

वशाओं के तीन भेद होते हैं—विलिप्ती, सूत वशा और वशा. इन्हें ब्राह्मणों को दान कर दे तो वह प्रजापति को क्रोध उत्पन्न करने वाला नहीं होता है. (४७)

एतद् वो ब्राह्मणा हविरिति मन्वीत याचितः.
वशां चेदेनं याचेयुर्या भीमाददुषो गृहे (४८)

दान करने वाले के घर में यदि भीमा वशा है तो उस वशा की याचना करने पर यह कहे कि हे ब्राह्मणो! यह तुम्हारे लिए हवि है. (४८)

देवा वशां पर्यवदन् न नोऽदादिति हीडिताः.
एताभिर्ऋग्भिर्भेदं तस्माद् वै स पराभवत् (४९)

क्रोधित देवताओं ने वशा से कहा कि इस यजमान ने हम को दान नहीं किया, वह दान न करने वाला इसी कारण पराजित होता है. (४९)

उतैनां भेदो नाददाद् वशामिन्द्रेण याचितः.
तस्मात् तं देवा आगसोऽवृश्चन्नहमुत्तरे (५०)

इंद्र के प्रार्थना करने पर भी यदि वशा का दान न करे तो उस से इस पाप के कारण देवता अहंकार व्याप्त कर के उसे मिटा देते हैं. (५०)

ये वशाया अदानाय वदन्ति परिरापिणः.
इन्द्रस्य मन्यवे जाल्मा आ वृश्चन्ते आचित्त्या (५१)

जो लोग वशा का दान न करने का परामर्श देते हैं, वे मूर्ख लोग इंद्र के कोप के कारण स्वयं नष्ट हो जाते हैं. (५१)

ये गोपतिं पराणीयाथाहुर्मा ददा इति.
रुद्रस्यास्तां ते हेतिं परि यन्त्यचित्त्या (५२)

जो लोग वशा गौ के स्वामी से उस का दान न करने के लिए कहते हैं, वे मूर्ख इंद्र के आयुध वज्र के लक्ष्य बनते हैं. (५२)

यदि हुतां यद्यहुताममा च पचते वशाम्.
देवान्सब्राह्मणानृत्वा जिह्मो लोकान्निर्ऋच्छति (५३)

हुत अर्थात दान में दी गई या अहुत अर्थात दान में न दी गई वशा का पालन करने वाला देवता और ब्राह्मणों का अपमान करने वाला होता है. वह इस लोक में बुरी गति प्राप्त करता है. (५३)

सूक्त पांचवां

देवता—ब्रह्मगवी

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिता (१)

तप के द्वारा विरचित तथा परब्रह्म में आश्रित इस धेनु को ब्राह्मण ने यम से प्राप्त किया है. (१)

सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता (२)

यह धेनु सत्य, संपत्ति और यश से परिपूर्ण है. (२)

स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम् (३)

यह धेनु श्रद्धा से व्याप्त, स्वधा से युक्त और दीक्षा के द्वारा रक्षित है. यह मन से प्रतिष्ठित है. क्षत्रिय का इस की ओर दृष्टि डालना मृत्यु के समान है. (३)

ब्रह्म पदवायं ब्राह्मणोऽधिपतिः (४)

इस धेनु के द्वारा ब्रह्म पद प्राप्त होता है. इस गौ का स्वामी ब्राह्मण ही है. (४)

तामाददानस्य ब्रह्मगवीं जिनतो ब्राह्मणं क्षत्रियस्य.
अप क्रामति सूनृता वीर्य१ पुण्या लक्ष्मीः (५-६)

जो क्षत्रिय ब्राह्मण की इस प्रकार की गौ का अपहरण करता है और ब्राह्मण को दुखी करता है, उस की लक्ष्मी, शक्ति और प्रिय वाणी पलायन कर जाती है. (५-६)

सूक्त छठा

देवता—ब्रह्मगवी

ओजश्च तेजश्च सहश्च बलं च वाक् चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च (१)

ब्रह्म च क्षत्रं च राष्ट्रं च विशश्च त्विषिश्च यशश्च वर्चश्च द्रविणं च (२)

आयुश्च रूपं च नाम च कीर्तिश्च प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रं च (३)

पयश्च रसश्चान्नं चान्नाद्यं चर्तं च सत्यं चेष्टं च पूर्तं च प्रजा च पशवश्च (४)

तानि सर्वाण्यप क्रामन्ति ब्रह्मगवीमाददानस्य जिनतो ब्राह्मणं क्षत्रियस्य (५)

उस क्षत्रिय के ओज, तेज, ब्रह्म, वाणी, इंद्रियों, लक्ष्मी, धर्म, वेद, क्षात्र शक्ति, राष्ट्र, हवि, यश, पराक्रम, धन, आयु, रूप, नाम, कीर्ति, नेत्र, कान, दूध, रस, अन्न, अग्नि, सत्य, इष्ट, पूर्त, प्रजा आदि सभी छिन जाते हैं जो ब्राह्मण गौ का अपहरण करता है. वह अपनी आयु को क्षीण करता है. (१-५)

सूक्त सातवां

देवता—ब्रह्मगवी

सैषा भीमा ब्रह्मगव्य१घविषा साक्षात् कृत्या कूल्बजमावृता (१)

ब्राह्मण की यह धेनु विराजमान होती है. कूल्बज पाप से ढके हुए हिंसा करने वाले विष से युक्त हुई यह धेनु कृत्या के समान हो जाती है. (१)

सर्वाण्यस्यां घोराणि सर्वे च मृत्यवः (२)

ब्राह्मण की इस गाय में सभी विकराल कर्म और मृत्यु देने वाले कारण व्याप्त रहते है. (२)

सर्वाण्यस्यां क्रूराणि सर्वे पुरुषवधाः (३)

ब्राह्मण की इस गाय में सभी प्रकार के कूट कर्म तथा पुरुषों के सब प्रकार के वध व्याप्त रहते हैं. (३)

सा ब्रह्मज्यं देवपीयुं ब्रह्मगव्या दीयमाना मृत्योः पड्वीश आ द्यति (४)

ब्राह्मण से छीनी हुई इस प्रकार की यह गाय ब्राह्मणत्व को अपमानित करने वाले मनुष्य को मृत्यु के बंधन में बांध देती है. (४)

मेनिः शतवधा हि सा ब्रह्मज्यस्य क्षितिर्हि सा (५)

जो मनुष्य ब्राह्मण की आयु क्षीण करता है. उस को क्षीण करने वाली यह गौ सैकड़ों प्रकार के संहारक अस्त्रों के समान बन जाती है. (५)

तस्माद् वै ब्राह्मणानां गौर्दुराधर्षा विजानता (६)

इसलिए ब्राह्मण की धेनु को विद्वान पुरुष सैकड़ों का वध करने वाली के रूप में जाने. (६)

वज्रो धावन्ती वैश्वानर उद्वीता (७)

ब्राह्मण की गाय वज्र के समान दौड़ती है तथा अग्नि के समान ऊपर उठती है. (७)

हेतिः शफानुत्खिदन्ती महादेवो३पेक्षमाणा (८)

खुरों का शब्द करती हुई ब्राह्मण की गाय महादेव के आयुध के रूप में बन जाती है. (८)

क्षुरपविरीक्षमाणा वाश्यमानाभि स्फूर्जति (९)

रंभाती हुई ब्राह्मण की गाय के खुर वज्र के समान होते हैं. (९)

मृत्युर्हिङ्कृण्वत्यु१ग्रो देवः पुच्छं पर्यस्यन्ती (१०)

हुंकार का शब्द करती हुई ब्राह्मण की गाय मृत्यु के समान होती हैं. सभी ओर पूंछ को घुमाती हुई यह गाय उग्र रूप वाली हो जाती है. (१०)

सर्वज्यानिः कर्णौ वरीवर्जयन्ती राजयक्ष्मो मेहन्ती (११)

सभी प्रकार से आयु को क्षीण करने वाली यह गौ कानों को हिलाती है. यह गौ अपने मूत्र को त्यागती हुई क्षय अर्थात विनाश को उत्पन्न करने वाली

हो जाती है. (११)

मेनिर्दुह्यमाना शीर्षक्तिर्दुग्धा (१२)

यह गौ जब दुही जाती है तब यह अस्त्र के समान होती है. तब दुही जाने के बाद सिर दर्द स्वरूपा बन जाती है. (१२)

सेदिरुपतिष्ठन्ती मिथोयोधः परामृष्टा (१३)

यह गाय स्पर्श करने पर आपस में युद्ध कराती है तथा समीप खड़ी होने पर विदीर्ण अर्थात टुकड़ेटुकड़े कर देती है. (१३)

शरव्या३ मुखेऽपिनह्यमान ऋतिर्हन्यमाना (१४)

यह गाय पीटने पर दुर्गति प्रदान करती है तथा ढकने पर विनाश करने वाली होती है. (१४)

अघविषा निपतन्ती तमो निपतिता (१५)

यह गाय बैठती हुई भयानक विष के समान तथा बैठ जाने पर साक्षात मृत्युरूपी अंधकार के समान हो जाती है. (१५)

अनुगच्छन्ती प्राणानुप दासयति ब्रह्मगवी ब्रह्मज्यस्य (१६)

ब्राह्मण की यह गाय ब्राह्मण को हानि पहुंचाने वाले के पीछे चलती हुई उस के प्राणों का विनाश करती है. (१६)

सूक्त आठवां

देवता—ब्रह्मगवी

वैरं विकृत्यमाना पौत्राद्यं विभाज्यमाना (१)

यह ब्राह्मण की अपहृत अर्थात चुराई हुई गाय है. यह पुत्र, पौत्र आदि का बंटवारा कर उन का विनाश करने वाली है. (१)

देवहेतिर्ह्रियमाणा व्यृद्धिर्हृता (२)

ब्राह्मणों की यह गाय हरण करते समय अर्थात चुराते समय अस्त्र रूप है और चुराने के बाद चुराने वाले को क्षीण करने वाली होती है. (२)

पाप्माधिधीयमाना पारुष्यमवधीयमाना (३)

पाप रूप होने वाली ब्राह्मण की यह गाय कठोरता उत्पन्न करती है. (३)

विषं प्रयस्यन्ती तक्मा प्रयस्ता (४)

ब्राह्मण की चुराई हुई गाय यदि दूध देती है तो इस का दूध और मांस विष के

समान होता है तथा यह चुराने वाले का जीवन संकट में डालने का कारण बनती है. (४)

अघं पच्यमाना दुष्वप्न्यं पक्वा (५)

ब्राह्मण की यह गाय पकाते समय व्यसनों अर्थात बुरी लतों को बढ़ाने वाली है तथा पक जाने पर बुरे स्वप्नों का कारण बनती है. (५)

मूलबर्हणी पर्याक्रियमाणा क्षितिः पर्याकृता (६)

ब्राह्मण की चुराई हुई गाय को अगर बेचा जाए तो चुराने वाले को जड़ से उखाड़ देती है. बेचने के बाद यह चुराने वाले को क्षीण करती है. (६)

असंज्ञा गन्धेन शुगुद्ध्रियमाणाशीविष उद्धृता (७)

यदि ब्राह्मण की गाय को उठाया तो उठाते समय यह शोक प्रदान करती है और उठाने के बाद उठाने वाले के लिए सर्प के विष के समान बन जाती है. यह अपनी गंध से चुराने वाले की चेतना नष्ट कर देती है. (७)

अभूतिरुपह्रियमाणा पराभूतिरुपहृता (८)

यदि ब्राह्मण की गाय चुरा कर किसी को उपहार में दी जाए तो यह पराभव अर्थात हार का कारण बनती है. उपहार में देने के बाद यह उपहार देने वाले की समृद्धि नष्ट करती है. (८)

शर्वः क्रुद्धः पिश्यमाना शिमिदा पिशिता (९)

यदि ब्राह्मण की गाय को क्लेश दिया जाए तो यह क्रोध में भरे शिव शंकर के समान बन जाती है. यदि इस का रक्त निकाला जाए तो यह रक्त निकालने वाले को मृत्यु देने वाली होती है. (९)

अवर्तिरश्यमाना निर्ऋतिरशिता (१०)

यदि ब्राह्मण की गाय का मांस खाया जाए तो यह खाने वाले को दरिद्र बना देती है. मांस खाने के बाद यह खाने वाले को बुरी गति प्रदान करती है. (१०)

अशिता लोकाच्छिनत्ति ब्रह्मगवी ब्रह्मज्यमस्माच्चामुष्माच्च (११)

यदि ब्राह्मण को हानि पहुंचाई जाए तो ब्राह्मण की गाय इहलोक और परलोक दोनों को बिगाड़ देती है. (११)

सूक्त नौवां

देवता—ब्रह्मगवी

तस्या आहननं कृत्या मेनिराशसनं वलग ऊबध्यम् (१)

ब्राह्मण की गाय को मारना मरणासन्न बन जाता है. इस को हनन करना कृत्या

राक्षसी है. इस का गोबर युक्त आधा पका हुआ चारा शपथ के समान है. (१)

अस्वगता परिह्णुता (२)

ब्राह्मण की अपहरण की गई गाय अपने वश में नहीं रहती है. (२)

अग्निः क्रव्याद् भूत्वा ब्रह्मगवी ब्रह्मज्यं प्रविश्यात्ति (३)

मारी हुई ब्राह्मण की गाय मांसाहारी पशु बन कर मारने वाले को खाती है. (३)

सर्वास्याङ्ग पर्वा मूलानि वृश्चति (४)

यदि ब्राह्मण की गाय को कोई मारता है तो यह मारने वाले के शरीर के सभी जोड़ों को छिन्नभिन्न कर देती है. (४)

छिनत्त्यस्य पितृबन्धु परा भावयति मातृबन्धु (५)

यह ब्राह्मण की गाय चुराने वाले के पिता के बांधवों का छेदन करती है और माता के बांधवों को अपमानित करती है. (५)

विवाहां ज्ञातीन्त्सर्वानपि क्षापयति ब्रह्मगवी ब्रह्मज्यस्य क्षत्रियेणापुनर्दीयमाना (६)

क्षत्रिय द्वारा ब्राह्मण की गाय न लौटाई जाने पर उस के सभी बंधुओं को नष्ट कर देती है. (६)

अवास्तुमेनमस्वगमप्रजसं करोत्यपरापरणो भवति क्षीयते (७)

ब्राह्मण की गाय को अगर क्षत्रिय न लौटाए तो वह क्षत्रिय को गृहहीन तथा संतानहीन कर देती है. ब्राह्मण की गाय चुराने वाला क्षत्रिय अपरा रोग से ग्रसित हो कर नष्ट हो जाता है. (७)

य एवं विदुषो ब्राह्मणस्य क्षत्रियो गामादत्ते (८)

ऊपर बताई गई दशा उस क्षत्रिय की होती है जो विद्वान की गौ का अपहरण करता है. (८)

सूक्त दसवां — देवता—ब्रह्मगवी

क्षिप्रं वै तस्याहनने गृध्राः कुर्वत ऐलबम् (१)

जो क्षत्रिय ब्राह्मण की गाय को ले जाता है, गिद्ध उस के नेत्र निकालते हैं. (१)

क्षिप्रं वै तस्यादहनं परि नृत्यन्ति केशिनीराघ्नानाः.
पाणिनोरसि कुर्वाणाः पापमैलबम् (२)

जो क्षत्रिय ब्राह्मण की गाय ले जाता है, उस की चिता भस्म के समीप केशों वाली स्त्रियां अपनी छाती कूटती हैं और आंसू बहाती हैं. (२)

क्षिप्रं वै तस्य वास्तुषु वृकाः कुर्वत ऐलबम् (३)

जो क्षत्रिय ब्राह्मण की गाय ले जाता है उस के घरों में शृंगाल शीघ्र ही अपने नेत्र घुमाते हैं. (३)

क्षिप्रं वै तस्य पृच्छन्ति यत् तदासी३दिदं नु ता३दिति (४)

जो क्षत्रिय ब्राह्मण की गाय ले जाता है उस के विषय में यह कहा जाने लगता है कि क्या यह उस का घर है. (४)

छिन्ध्या च्छिन्धि प्र च्छिन्ध्यपि क्षापय क्षापय (५)

हे ब्राह्मण की गाय! तू इस चुराने वाले का छेदन कर और उसे नष्ट कर डाल. (५)

आददानमाङ्गिरसि ब्रह्मज्यमुप दासय (६)

हे आंगिरस! तू अपहरणकर्ता क्षत्रिय का नाश कर दे. (६)

वैश्वदेवी ह्यु१च्यसे कृत्या कूल्बजमावृता (७)

हे ब्राह्मण की गौ! तू मांस रूपी वज्र से अपने अपहरणकर्ता को नष्ट करने वाली है. (७)

ओषन्ती समोषन्ती ब्रह्मणो वज्रः (८)

हे ब्राह्मण की गाय! तू वज्र से ढकी हुई विश्व देवी कृत्या कही जाती है. (८)

क्षुरपविर्मृत्युर्भूत्वा वि धाव त्वम् (९)

हे ब्राह्मण की गौ! तू मृत्य रूप होती हुई दौड़. (९)

आ दत्ते जिनतां वर्च इष्टं पूर्तं चाशिषः (१०)

हे ब्राह्मण की गाय! तू अपहरण करने वाले के तेज, कामना, पूर्त और आशीवार्दात्मक शब्दों का हरण करती है. (१०)

आदाय जीतं जीताय लोके३ऽमुष्मिन् प्र यच्छसि (११)

हे ब्राह्मण की गाय! तू ब्राह्मण को हानि पहुंचाने वाले को न्यून आयु वाला करने के लिए पकड़ कर परलोकगामी बनाती है. (११)

अघ्न्ये पदवीर्भव ब्राह्मणस्याभिशस्त्या (१२)

हे अघ्न्या! ब्राह्मण के शाप के कारण तू अपहरण कर्ता के पैरों की बेड़ी बन जाती है. (१२)

मेनिः शरव्या भवाघादघविषा भव (१३)

हे ब्राह्मण की गाय! तू अस्त्ररूप बाणों के समूह को प्राप्त होती हुई उस के पाप के कारण अधिष्ठाता बन जा. (१३)

अघ्न्ये प्र शिरो जहि ब्रह्मज्यस्य कृतागसो देवपीयोरराधसः (१४)

हे अघ्न्या! तू उस देव हिंसक अपरधी के कार्य को विफल करने के लिए उस के शीश को काट डाल. (१४)

त्वया प्रमूर्ण मृदितमग्निर्दहतु दुश्चितम् (१५)

हे ब्राह्मण की गौ! तेरे द्वारा कुचले और मसले हुए उस पाप पूर्ण चित्त वाले को अग्नि भस्म कर डालें. (१५)

सूक्त ग्यारहवां — देवता—ब्रह्मगवी

वृश्च प्र वृश्च सं वृश्च दह प्रदह सं दह (१)

हे ब्राह्मण की गाय! तू अपने अपहरण करने वाले को बारबार काट और जला दे. (१)

ब्रह्मज्यं देव्यघ्न्य आ मूलादनुसंदह (२)

हे अघ्न्या! तू अपहरण करने वाले को समूल नष्ट कर दे. (२)

यथायाद् यमसादनात् पापलोकान् परावतः (३)

हे अघ्न्या! तेरा अपहरण करने वाला यम के लोकों और पाप के घरों को प्राप्त हो. (३)

एवा त्वं देव्यघ्न्ये ब्रह्मज्यस्य कृतागसो देवपीयोरराधसः (४)

हे अघ्न्या देवी! तू अपराध करने वाले अपहरणकर्ता, देव हिंसक के कंधों और सिर को काट दे. (४)

वज्रेण शतपर्वणा तीक्ष्णेन क्षुरभृष्टिना (५)

हे अघ्न्या! तू सौ पैरों वाले एवं तेज धार वाले वज्र से अपने अपहरणकर्ता का वध कर. (५)

प्र स्कन्धान् प्र शिरो जहि (६)

हे अघ्न्या! तू अपने अपहरणकर्ता को नष्ट कर दे. (६)

लोमान्यस्य सं छिन्धि त्वचमस्य वि वेष्टय (७)

हे अघ्न्या! तू अपने अपहरणकर्ता के लोमों को नष्ट कर उस का चमड़ा उधेड़ दे. (७)

मांसान्यस्य शातय स्नावान्यस्य सं वृह (८)

हे अघ्न्या! तू अपने अपहरणकर्ता के मांस को काट कर उस की नसों को सुखा दे. (८)

अस्थीन्यस्य पीडय मज्जानमस्य निर्जहि (९)

हे अघ्न्या! तू इस अपहरणकर्ता की हड्डियों में दाह और मज्जा में क्षय भर दे. (९)

सर्वास्याङ्गा पर्वाणि वि श्रथय (१०)

हे अघ्न्या! इस अपहरणकर्ता के अवयवों और जोड़ों को ढीला कर दे. (१०)

अग्निरेनं क्रव्यात् पृथिव्या नुदतामुदोषतु वायुरन्तरिक्षान्महतो वारिम्णः (११)

इस अपहरण करने वाले को वायु अंतरिक्ष और पृथ्वी से खदेड़ दे तथा क्रव्याद अग्नि इसे भस्म कर दे. (११)

सूर्य एनं दिवः प्र णुदतां न्योषतु (१२)

सूर्य भी इस अपहरणकर्ता को स्वर्ग से नीचे ढकेल दे तथा भस्म कर डाले. (१२)

तेरहवां कांड

सूक्त पहला — देवता—अध्यात्म आदि

उदेहि वाजिन् यो अप्स्व१न्तरिदं राष्ट्रं प्र विश सूनृतावत्.
यो रोहितो विश्वमिदं जजान स त्वा राष्ट्राय सुभृतं बिभर्तु (१)

हे सूर्य तुम अंतरिक्ष में क्यों छिपे हो, तुम उदय प्राप्त करो. तुम सत्य और प्रिय वाणी से युक्त हो कर यहां आओ. इस प्रकार के सूर्यदेव ने संसार का प्रकाशन किया. सूर्यदेव तुम्हें राष्ट्र के भरणकर्ता के रूप में पुष्ट करें. (१)

उद्वाज आ गन् यो अप्स्व१न्तर्विश आ रोह त्वद्योनयो याः.
सोमं दधानोऽप ओषधीर्गाश्चतुष्पदो द्विपद आ वेशयेह (२)

हे सूर्य! जल में रहने वाली जो प्रजाएं तथा जलप्रद अन्न हैं, वे तुम्हारे पास आएं. तुम जल पर चढ़ो और सोम को धारण करते हुए जल, ओषधि तथा दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं को इस राष्ट्र में प्रविष्ट करो. (२)

यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून्.
आ वो रोहितः शृणवत् सुदानवस्त्रिषप्तासो मरुतः स्वादुसंमुदः (३)

हे मरुद्गण! तुम इंद्र के सखा हो. तुम शत्रुओं का नाश करो. तुम स्वादिष्ट पदार्थों से प्रसन्न होने वाले हो और सुंदर वर्षा प्रदान करते हो. सूर्य तुम्हारी बात सुनें. (३)

रुहो रुरोह रोहित आ रुरोह गर्भो जनीनां जनुषामुपस्थम्.
ताभिः संरब्धमन्वविन्दन् षडुर्वीर्गातुं प्रपश्यन्निह राष्ट्रमाहाः (४)

सूर्य उदय होते हुए आकाश पर चढ़ रहे हैं. छः उर्वियों की प्राप्ति के हेतु वे राष्ट्र को नित्यप्रति देखते हुए उर्वियों को प्राप्त करते हैं. (४)

आ ते राष्ट्रमिह रोहितोऽहार्षीद् व्यास्थन्मृधो अभयं ते अभूत्.
तस्मै ते द्यावापृथिवी रेवतीभिः कामं दुहाथामिह शक्वरीभिः (५)

हे यजमान! तेरे राष्ट्र पर सूर्य आ गए हैं, इसलिए तू युद्ध का भय मत कर. आकाश, पृथ्वी और धन देने वाली ऋचाएं तेरे लिए कामनाओं का दोहन करें. (५)

रोहितो द्यावापृथिवी जजान तत्र तन्तुं परमेष्ठी ततान.
तत्र शिश्रियेऽज एकपादोऽदृंहद् द्यावापृथिवी बलेन (६)

सूर्य ने आकाश और पृथ्वी को प्रकट किया. सूर्य ने उस में तंतु को बढ़ाया. एक पाद अज ने वहां आश्रय ले कर आकाश और पृथ्वी को बल से युक्त किया. (६)

रोहितो द्यावापृथिवी अदृंहत् तेन स्व स्तभितं तेन नाकः.
तेनान्तरिक्षं विमिता रजांसि तेन देवा अमृतमन्वविन्दन् (७)

सूर्य ने आकाश और पृथ्वी को दृढ़ किया. उसी सूर्य ने दुखों से रहित आकाश को स्थिर किया. उसी सूर्य ने अंतरिक्ष तथा वन्य सुख लोकों को बनाया. देवताओं ने उसी से अमृतत्व प्राप्त किया है. (७)

वि रोहितो अमृशद् विश्वरूपं समाकुर्वाणः प्ररुहो रुहश्च.
दिवं रुढ्वा महता महिम्ना सं ते राष्ट्रमनक्तु पयसा घृतेन (८)

रूह और प्ररूह अर्थात उगने वाले लता वृक्ष आदि को भलीभांति प्रकट करने वाले सूर्य ने सब शरीरों का स्पर्श किया. हे यजमान! वे सूर्य अपने महत्त्व से तेरे राष्ट्र को घृत और दूध से संपन्न करें. (८)

यास्ते रुहः प्ररुहो यास्त आरुहो याभिरापृणासि दिवमन्तरिक्षम्.
तासां ब्रह्मणा पयसा वावृधानो विशि राष्ट्रे जागृहि रोहितस्य (९)

हे मनुष्यो! तुम्हारी जो रोहण, प्ररोहण और आरोहण करने वाली फसलें, लताएं आदि हैं, जिन के द्वारा तुम अंतरिक्ष के प्राणियों का भरणपोषण करते हो, उस के दूध के समान सारयुक्त कर्म के द्वारा मित्र बाल और वृद्धि को प्राप्त होते हुए तुम सूर्य के राष्ट्र में सचेत रहो. (९)

यास्ते विशस्तपसः संबभूवुर्वत्सं गायत्रीमनु ता इहागुः.
तास्त्वा विशन्तु मनसा शिवेन संमाता वत्सो अभ्येतु रोहितः (१०)

जो प्रजाएं तपोबल से प्रकट हुई हैं, जो गायत्री रूप वत्सों के साथ यहां आई हैं, वे कल्याण करने वाले चित्त से तुम में रमें. इन का वत्स सूर्य तुम्हारे पास आए. (१०)

ऊर्ध्वो रोहितो अधि नाके अस्थाद् विश्वा रूपाणि जनयन् युवा कविः.
तिग्मेनाग्निर्ज्योतिषा वि भाति तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि (११)

जब वे सूर्य ऊंचे हो कर स्वर्ग में प्रतिष्ठित होते हैं, तब वे सब रूपों को प्रकट करते हैं. उन सूर्य की ही तीक्ष्ण ज्योति से अग्नि ज्योति वाली है. वे तृतीय लोक अर्थात द्युलोक में इच्छित फलों को प्रकट करते हैं. (११)

सहस्रशृङ्गो वृषभो जातवेदा घृताहुत: सोमपृष्ठ: सुवीर:.
मा मा हासीन्नाथितो नेत् त्वा जहानि गोपोषं च मे वीरपोषं च धेहि (१२)

सहस्रों सींगों वाले, घृत के द्वारा बुलाए गए, इष्टों की पूर्ति करने वाले, सोम, पृष्ठ, सुवीर तथा जातवेद अग्नि मेरा त्याग न करें. वे अग्नि मुझे गायों तथा पुत्र, पौत्र आदि की पुष्टि में प्रतिष्ठित करें. (१२)

रोहितो यज्ञस्य जनिता मुखं च रोहिताय वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि.
रोहितं देवा यन्ति सुमनस्यमाना: स मा रोहै: सामित्यै रोहयतु (१३)

सूर्य यज्ञ को प्रकट करने वाले तथा यज्ञ के मुख रूप हैं. वाणी, घोष और मन से मैं उन सूर्य के लिए आहुति देता हूं. सब देवता प्रसन्न होते हुए सूर्य के समीप जाते हैं. वे सूर्य मुझे संग्राम के लिए उन्नत बनाएं. (१३)

रोहितो यज्ञं व्य दधाद् विश्वकर्मणे तस्मात् तेजांस्युप मेमान्यागु:.
वोचेयं ते नाभिं भुवनस्याधि मज्मनि (१४)

सूर्य ने विश्वकर्मा के लिए यज्ञ का पोषण किया. उस यज्ञ के द्वारा मुझे वह तेज प्राप्त हो रहा है. मैं तुम्हारी नाभि को लोक की मज्जा पर स्वीकार करता हूं. (१४)

आ त्वा रुरोह बृहत्युऽत पङ्क्तिरा ककुब् वर्चसा जातवेद:.
आ त्वा रुरोहोष्णिहाक्षरो वषट्कार आ त्वा रुरोह रोहितो रेतसा सह (१५)

हे अग्नि! बृहती पंक्ति और ककुप छंदों ने तथा उष्णिहा अक्षरों ने तुम में प्रवेश किया है. वषटकार भी तुम में प्रविष्ट हो गया है. सूर्य भी अपने तेज से तुम में प्रवेश करते हैं. (१५)

अयं वस्ते गर्भं पृथिव्या दिवं वस्तेऽयमन्तरिक्षम्.
अयं ब्रध्नस्य विष्टपि स्वर्लोकान् व्यानशे (१६)

सूर्य पृथ्वी के गर्भ को, आकाश और अंतरिक्ष को भी ढक लेते हैं. ये संपूर्ण संसार के प्रकाशक हैं और सभी स्वर्गों में व्याप्त होते हैं. (१६)

वाचस्पते पृथिवी न: स्योना स्योना योनिस्तल्पा न: सुशेवा.
इहैव प्राण: सख्ये नो अस्तु तं त्वा परमेष्ठिन् पर्यग्निरायुषा वर्चसा दधातु (१७)

हे वाचस्पति! हमारे लिए पृथ्वी, योनि और शय्या सुख देने वाली हों. प्राण हमारे लिए सुख देने वाला हो. हम दीर्घ जीवी हों हे परमेष्ठी! ये अग्निदेव हमें दीर्घायु और

तेजस्वी बनाएं. (१७)

वाचस्पत ऋतवः पञ्च ये नो वैश्वकर्मणाः परि ये संबभूवुः. इहैव प्राणः
सख्ये नो अस्तु तं त्वा परमेष्ठिन् परि रोहित आयुषा वर्चसा दधातु (१८)

हे वाचस्पति! हमारे कर्म के द्वारा जो पांच ऋतुएं उत्पन्न हुई हैं, उन में हमारा हमारा प्राण मित्र के भावों से स्थिर रहे. हे प्रजापति! सूर्य तुम्हें अपने तेज और आयु से धारण करे. (१८)

वाचस्पते सौमनसं मनश्च गोष्ठे नो गा जनय योनिषु प्रजाः.
इहैव प्राणः सख्ये नो अस्तु तं त्वा परमेष्ठिन् पर्यहमायुषा वर्चसा दधामि (१९)

हे वाचस्पति! हमारा मन प्रसन्न रहे. तुम हमारे गोष्ठ में गायों को प्रकट करो तथा हमारी पत्नियों में संतान को उत्पन्न करो. प्राण हमारे साथ मित्र भाव से रहे. मैं आयु और तेज से तुम्हें धारण करता हूं. (१९)

परि त्वा धात् सविता देवो अग्निर्वर्चसा मित्रावरुणावभि त्वा.
सर्वा अरातीरवक्रामन्नेहीदं राष्ट्रमकरः सूनृतावत् (२०)

हे राजन! सवितादेव तुम्हें सभी ओर से पुष्ट करे. अग्नि, मित्र और वरुण तुम्हें पुष्ट बनाएं. तुम सभी शत्रुओं को वश में करते हुए इस राष्ट्र में आ कर सच्ची और प्रिय वाणी बोलो. (२०)

यं त्वा पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहित. शुभा यासि रिणन्नपः (२१)
अनुव्रता रोहिणी रोहितस्य सूरिः सुवर्णा बृहती सुवर्चाः.

हे सूर्य! हिरणियों का समूह तुम्हें रथ में धारण करता है. तुम जलों में चलते हुए कल्याण के निमित्त गति करते हो. (२१)

तया वाजान् विश्वरूपां जयेम तया विश्वाः पृतना अभि ष्याम (२२)

रोहिणी चढ़ते हुए से रोहित अर्थात लाल वर्ण के सूर्य का अनुगमन करने वाली है. सुंदर वर्ण वाली वह बृहती सुंदर तेज वाली है. उसी के कारण हम विभिन्न रूपों वाले प्राणियों पर विजय प्राप्त करते हैं. उसी के कारण हम सेनाओं को अपने वश में करें. (२२)

इदं सदो रोहिणी रोहितस्यासौ पन्थाः पृषती येन याति.
तां गन्धर्वाः कश्यपा उन्नयन्ति तां रक्षन्ति कवयोऽप्रमादम् (२३)

यह रोहिणी और रोहित का धाम है. पृषती इसी मार्ग से गमन करती है. उसे गंधर्व ऊपर ले जाते हैं. चतुर व्यक्ति सावधानी से इस की रक्षा करते हैं. (२३)

सूर्यस्याश्वा हरयः केतुमन्तः सदा वहन्त्यमृताः सुखं रथम्.
घृतपावा रोहितो भ्राजमानो दिवं देवः पृषतीमा विवेश (२४)

सूर्य के घोड़े वेगशाली और ज्ञान युक्त हैं. वे अमरत्व वाले रथ को सरलता से खींचते हैं. फल से संपन्न करने योग्य वे सूर्य पृषती के साथ स्वर्ग में प्रवेश करें. (२४)

यो रोहितो वृषभस्तिग्मशृङ्गः पर्यग्निं परि सूर्यं बभूव.
यो विष्टभ्नाति पृथिवीं दिवं च तस्माद् देवा अधि सृष्टिः सृजन्ते (२५)

वे रोहित अर्थात लाल रंग के तथा अभीष्ट की वर्षा करने वाले हैं. वे तीक्ष्ण राशियों वाले हैं. जो अग्निदेव सूर्य, पृथ्वी और आकाश को स्थिर रखते हैं, देवता उन्हीं के बल से सृष्टि की रचना करते हैं. (२५)

रोहितो दिवमारुहन्महतः पर्यर्णवात्. सर्वा रुरोह रोहितो रुहः (२६)

वे सूर्य आकाश पर चढ़ते हैं तथा रोहणशील वस्तुओं पर भी चढ़ते हैं. (२६)

वि मिमीष्व पयस्वतीं घृताचीं देवानां धेनुरनपस्पृगेषा.
इन्द्रः सोमं पिबतु क्षेमो अस्त्वग्निः प्र स्तौतु वि मृधो नुदस्व (२७)

हे यजमान! तुम देवताओं की दुधारू और पूजनीय गौ का मान करने के कारण अन्यों को स्पर्श करने वाले अर्थात पराजित करने वाले हो. अग्नि तुम्हारा कुशलमंगल करें तथा इंद्रदेव सोम रस का पान करें. इस के बाद तू शत्रुओं को युद्धस्थल से खदेड़ दे. (२७)

समिद्धो अग्निः समिधानो घृतवृद्धो घृताहुतः.
अभीषाड् विश्वाषाडग्निः सपत्नान् हन्तु ये मम (२८)

ये अग्नि प्रदीप्त हो कर घृत से प्रबुद्ध हुए हैं. इस में घृत की आहुति दी गई है. अग्निदेव शत्रुओं को पराजित करने वाले हैं. अतः वे मेरे शत्रुओं का संहार करें. (२८)

हन्त्वेनान् प्र दहत्वरिर्यो नः पृतन्यति.
क्रव्यादाग्निना वयं सपत्नान् प्र दहामसि (२९)

अग्निदेव उन सब शत्रुओं का संहार करें जो शत्रु सेना सहित आ कर हमें मारना चाहे, अग्निदेव उसे भस्म कर दें. (२९)

अवाचीनानव जहीन्द्र वज्रेण बाहुमान्.
अधा सपत्नान् मामकानग्नेस्तेजोभिरादिषि (३०)

हे शक्तिशाली भुजाओं वाले इंद्र! तुम हमारे शत्रुओं को मारो. हे अग्नि! तुम अपनी ज्वालाओं से उन्हें भस्म कर दो. (३०)

अग्ने सपत्नानधरान् पादयास्मद् व्यथया सजातमुत्पिपानं बृहस्पते.
इन्द्राग्नी मित्रावरुणावधरे पद्यन्तामप्रतिमन्यूयमानाः (३१)

हे अग्नि! तुम हमारे शत्रुओं को पतित बनाओ. हे बृहस्पति! तुम उन्नतिशील होते हुए हमारे शत्रुओं का संतप्त करो. इंद्र, अग्नि, मित्र और वरुण देवता हमारे शत्रुओं का विरोध करें. हमारे शत्रु पतित हो जाएं. (३१)

उद्यंस्त्वं देव सूर्य सपत्नानव मे जहि.
अवैनानश्मना जहि ते यन्त्वधमं तमः (३२)

हे उदय होते हुए सूर्य! तुम मेरे शत्रुओं का वध करो. तुम इन्हें पत्थरों से मार डालो. मेरे शत्रु मृत्यु के समान घोर अंधकार को प्राप्त हों. (३२)

वत्सो विराज वृषभो मतीनामा रुरोह शुक्रपृष्ठोऽन्तरिक्षम्.
घृतेनार्कमभ्यर्चन्ति वत्सं ब्रह्म सन्तं ब्रह्मणा वर्धयन्ति (३३)

विराट के वत्स सूर्य अंतरिक्ष अर्थात आकाश पर चढ़ते हैं. सूर्य रूप वत्स जब ब्रह्म हो जाते हैं, तभी वे ब्राह्मण उन्हें घृत से बढ़ाते हैं और मंत्रों के द्वारा उन की पूजा करते हैं. (३३)

दिवं च रोह पृथिवीं च रोह राष्ट्रं च रोह द्रविणं च रोह.
प्रजां च रोहामृतं च रोह रोहितेन तन्वं१ सं स्पृशस्व (३४)

हे राजन! तुम पृथ्वी पर अधिष्ठित रहो. तुम राष्ट्र और धन पर अधिष्ठित रहो. तुम छत्र के समान प्रजाओं पर छाया करते रहो. तुम अमृत पर अधिष्ठित होते हुए सूर्य का स्पर्श करने वाले बनो तथा स्वर्ग पर आरोहण करो. (३४)

ये देवा राष्ट्रभृतोऽभितो यन्ति सूर्यम्. तैष्टे रोहितः
संविदानो राष्ट्रं दधातु सुमनस्यमानः (३५)

राष्ट्र का भरणपोषण करने वाले जो देवता सूर्य के चारों ओर घूमते हैं, रोहितदेव उन से समान मति रखते हुए तुम्हारे राष्ट्र को संतुष्ट करें. (३५)

उत् त्वा यज्ञा ब्रह्मपूता वहन्त्यध्वगतो हरयस्त्वा
वहन्ति. तिरः समुद्रमति रोचसेऽर्णवम् (३६)

122

हे सूर्य! मंत्र के द्वारा ये यज्ञ तुम्हें वहन करते हैं. तुम तिरछे हो कर सागर को अत्यधिक शोभायमान करते हो. (३६)

रोहिते द्यावापृथिवी अधि श्रिते वसुजिति गोजिति संधनाजिति.
सहस्रं यस्य जनिमानि सप्त च वोचेयं ते नाभिं भुवनस्याधि मज्मनि (३७)

वसुजित, गोजित और साधनाजित नामक रोहित में आकाश और पृथ्वी स्थित हैं. मैं उन के सहस्र प्रादुर्भावों का वर्णन करता हुआ उन्हें लोक की महिमा का केंद्र मानता हूं. (३७)

यशा यासि प्रदिशो दिशश्च यशाः पशूनामुत चर्षणीनाम्.

यशाः पृथिव्या आदित्या उपस्थेऽहं भूयासं सवितेव चारुः (३८)

हे सूर्य! तुम अपने यश के द्वारा दिशाओं और प्रदिशाओं में गमन करते हो. तुम अपने यश के द्वारा ही मनुष्यों और पशुओं में घूमते हो. मैं भी अखंडनीय पृथ्वी की गोद में सवितादेव के समान यश से समृद्ध बनूं. (३८)

अमुत्र सन्निह वेत्थेतः संस्तानि पश्यसि. इतः
पश्यन्ति रोचनं दिवि सूर्यं विपश्चितम् (३९)

हे सूर्य! तुम परलोक में अथवा इस लोक में रहते हुए यहां की सभी बातों को जानते हो. तुम यहां और वहां के सब प्राणियों को देखते हो तथा सभी प्राणी इस लोक से आकाश में स्थित सूर्य को देखते हैं. (३९)

देवो देवान् मर्चयस्यन्तश्चरस्यर्णवे.
समानमग्निमिन्धते तं विदुः कवयः परे (४०)

हे सूर्य! तुम देवता हो कर भी अन्य देवताओं को कर्म में प्रेरित करते हो तथा आकाश में घूमते हो. सूर्य अपने समान तेजस्वी अग्नि को प्रदीप्त करते हैं. ज्ञानी जन ऐसे सूर्य को जानते हैं. (४०)

अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात्.
सा कद्रीची कं स्विदर्धं परागात् क्व स्वित् सूते नहि यूथे अस्मिन् (४१)

एक पैर से बछड़े को तथा दूसरे से अन्न को धारण करती हुई श्वेत रंग की गौ उठती है. यह किसी अर्द्ध भाग में जाती और प्रसन्न रहती है. यह झुंड में जा कर नहीं रहती. (४१) •

एकपदी द्विपदी सा चतुष्पद्यष्टापदी नवपदी बभूवुषी.
सहस्राक्षरा भुवनस्य पङ्क्तिस्तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति (४२)

यह वाणी रूपी गौ अर्थात काव्यमयी भाषा एक, दो, चार, आठ अथवा नौ पादों वाले छंदों में विभाजित हुई हैं. इस प्रकार इस भाषा की मर्यादा हजार अक्षरों तक है. ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब भुवनों की पूर्ण करने वाली है तथा इस से काव्य के विविध रस टपकते हैं. (४२)

आरोहन् द्याममृतः प्राव मे वचः. उत् त्वा यज्ञा
ब्रह्मपूता वहन्त्यध्वगतो हरयस्त्वा वहन्ति (४३)

हे सूर्यदेव! तुम अमृत हो. सूर्यलोक में चढ़ते हुए तुम मेरे वचन की रक्षा करो. मंत्रमय यज्ञ और मार्गगामी अश्व तुम्हें वहन करते हैं. (४३)

वेत तत् ते अमर्त्य यत् त आक्रमणं दिवि.
यत् ते सधस्थं परमे व्योमन् (४४)

हे अविनाशी सूर्य! द्युलोक में तुम्हारा स्थान है. तुम इस में गमन करते हो. मैं उस स्थान को जानता हूं. उपासकों सहित आकाश में तुम्हारा जो निवास स्थान है, उसे मैं भलीभांति जानता हूं. (४४)

सूर्यो द्यां सूर्यः पृथिवीं सूर्य आपोऽति पश्यति.
सूर्यो भूतस्यैकं चक्षुरा रुरोह दिवं महीम् (४५)

सूर्यदेव आकाश, पृथ्वी और जल के साक्षी हैं. वे सभी प्राणियों की दर्शन शक्ति हैं. वे ही आकाश और पृथ्वी पर चढ़ते हैं. (४५)

उर्वीरासन् परिधयो वेदिर्भूमिरकल्पत.
तत्रैतावग्नी आधत्त हिमं घ्रंसं च रोहितः (४६)

भूमिरूपी वेदी पर यज्ञ का अनुष्ठान हुआ. इस यज्ञ की परिधियां विस्तृत थीं. वहीं पर शीतकाल और ग्रीष्म काल रूपी दो अग्नियों का आधान किया गया. (४६)

हिमं घ्रंसं चाधाय यूपान् कृत्वा पर्वतान्.
वर्षाज्यावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः (४७)

सूर्यरूपी स्वर्ग को पाने की अभिलाषा वाले पुरुष हिम और ग्रीष्म रूपी दो अग्नियों का आधान कर के पर्वतों को यूप अर्थात लकड़ी का खंभा बनाते हैं. वर्षा ऋतु रूपी घृत प्राप्त करने के लिए ये दोनों अग्नि तथा आज्य देव के हेतु यज्ञ करते हैं. (४७)

स्वर्विदो रोहितस्य ब्रह्मणाग्निः समिध्यते. तस्माद्
घ्रंसस्तस्माद्धिमस्तस्माद् यज्ञो ऽजायत (४८)

आत्मज्ञानी सूर्य संबंधी मंत्रों के द्वारा अग्नि को प्रदीप्त किया जाता है. उसी से हिम, दिवस और यज्ञ की उत्पत्ति हुई. (४८)

ब्रह्मणाग्नी वावृधानौ ब्रह्मवृद्धौ ब्रह्माहुतौ.
ब्रह्मेद्धावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः (४९)

जो पुरुष सूर्य रूपी स्वर्ग की कामना करते हैं, वे मंत्रों के साथ आहुति दी गई तथा मंत्रों के द्वारा प्रवृद्ध की गई अग्नियों का पूजन करते हैं, उन्हें सदा प्रदीप्त रखते हैं. (४९)

सत्ये अन्यः समाहितोऽप्स्व१न्यः समिध्यते.
ब्रह्मेद्धावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः (५०)

सत्य में अन्य अग्नियां समाहित हैं. जल में प्रदीप्त होने वाली अग्नियां इस से भिन्न है. सूर्यरूपी स्वर्ग की प्राप्ति की इच्छा करने वाले पुरुषों ने उन अग्नियों का पूजन किया है जो मंत्रों के द्वारा बढ़ी है. (५०)

यं वातः परि शुम्भति यं वेन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः.
ब्रह्मेद्धावग्नी ईजाते रोहितस्य स्वर्विदः (५१)

वायु, इंद्र तथा ब्रह्मणस्पति जिस पुरुष को सुशोभित करना चाहते हैं, वे पुरुष ही सूर्यात्मक स्वर्ग की प्राप्ति की कामना करते हुए मंत्रों द्वारा बढ़ी हुई अग्नि की पूजा करते हैं. (५१)

वेदिं भूमिं कल्पयित्वा दिवं कृत्वा दक्षिणाम्.
घ्रंसं तदग्निं कृत्वा चकार विश्वमात्मन्वद् वर्षेणाज्येन रोहितः (५२)

रोहित ने पृथ्वी को वेदी बना कर, आकाश को दक्षिणा का रूप दे कर और दिन को अग्नि स्वीकार कर के वर्षा रूपी घृत से जगत को आत्मा के समान बना लिया है. (५२)

वर्षमाज्यं घ्रंसो अग्निर्वेदिर्भूमिरकल्पत.
तत्रैतान् पर्वतानग्निर्गीर्भिरूर्ध्वां अकल्पयत् (५३)

पृथ्वी को वेदी, दिन को अग्नि और वर्षा को घृत बनाया गया. स्तुतियों के द्वारा समृद्ध हुए अग्निदेव ने ही इन पर्वतों को उन्नत किया है. (५३)

गीर्भिरूर्ध्वान् कल्पयित्वा रोहितो भूमिमब्रवीत्.
त्वयीदं सर्वं जायतां यद् भूतं यच्च भाव्यम् (५४)

रोहित ने पृथ्वी को स्तुतियों से उन्नत करते हुए उस से कहा कि भूत और भविष्य जो कुछ हों, ये तुम से ही उत्पन्न हों. (५४)

स यज्ञः प्रथमो भूतो भव्यो अजायत. तस्माद्ध जज्ञ इदं
सर्वं यत् किं चेदं विरोचते रोहितेन ऋषिणाभृतम् (५५)

यज्ञ की उत्पत्ति पहले भूत और भविष्यत के रूप में ही हुई. जो कुछ भी रोचमान है, वह सब पृथ्वी से ही प्रकट हुआ था. रोहित ने उसे पुष्ट किया. (५५)

यश्च गां पदा स्फुरति प्रत्यङ् सूर्यं च मेहति.
तस्य वृश्चामि ते मूलं न च्छायां करवोऽपरम् (५६)

जो सूर्य की ओर मुंह कर के मूत्र का त्याग करता है तथा गौ को अपने पैर से छूता है, मैं उस का मूल छिन्न करता हूं. मैं उस के ऊपर कभी छाया नहीं करता. (५६)

यो माभिच्छायमत्येषि मां चाग्निं चान्तरा.
तस्य वृश्चामि ते मूलं न च्छायां करवोऽपरम् (५७)

जो मनुष्य मेरे और अग्नि के मध्य से हो कर निकलता है अथवा जो मेरी छाया

को लांघता है, मैं उस की जड़ काट दूंगा तथा उस के ऊपर कभी छाया नहीं करूंगा. (५७)

यो अद्य देव सूर्य त्वां च मां चान्तरायति.
दुःष्वप्न्यं तस्मिञ्छमलं दुरितानि च मृज्महे (५८)

हे सूर्यदेव! हमारे और आप के मध्य जो बाधक होना चाहता है, उसे में पाप, दुःस्वप्न तथा दुष्कर्मों में स्थापित करता हूं. (५८)

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः. मान्त स्थुर्नो अरातयः (५९)

हे इंद्रदेव! जिस यज्ञ विधि में सोम का प्रयोग होता है, हम उस पद्धति से पृथक न जाएं. हमारे देश में शत्रु न रहें. (५९)

यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः. तमाहुतमशीमहि (६०)

जो यज्ञ देवताओं में अधिक विस्तृत है, हम उस यज्ञ की वृद्धि करने वाले बनें. (६०)

सूक्त दूसरा देवता—अध्यात्म रोहित

उदस्य केतवो दिवि शुक्रा भ्राजन्त ईरते.
आदित्यस्य नृचक्षसा महिव्रतस्य मीढुषः (१)

महान कर्म करने वाले, सेचन करने वाले और समर्थ एवं साक्षी रूप सूर्य की निर्मल रश्मियां आकाश में चमकती हैं और सूर्य को ऊपर उठाती हैं. (१)

दिशां प्रज्ञानां स्वरयन्तमर्चिषा सुपक्षमाशुं पतयन्तमर्णवे.
स्तवाम सूर्यं भुवनस्य गोपां यो रश्मिभिर्दिश आभाति सर्वाः (२)

हम ज्ञानमयी दिशाओं में अपने तेज से शब्द भरने वाले, सुंदर पंखों वाले, अपनी रश्मियों से प्रकाश देने वाले तथा लोकों के रक्षक सूर्य की स्तुति करते हैं. (२)

यत् प्राङ् प्रत्यङ् स्वधया यासि शीभं नानारूपे अहनी कर्षि मायया.
तदादित्य महि तत् ते महि श्रवो यदेको विश्वं परि भूम जायसे (३)

हे सूर्यदेव! तुम अन्नमय स्वधा अर्थात हवियों के साथ पूर्व और पश्चिम दिशाओं को गमन करते हो. तुम अपने तेज से दिवस और रात्रि को भिन्नभिन्न रूपों वाला बनाते हो. हे सूर्यदेव! यह तुम्हारी बहुत बड़ी महिमा है जो तुम अकेले पूरे संसार को प्रभावित करते हो. (३)

विपश्चितं तरणिं भ्राजमानं वहन्ति यं हरितः सप्त बह्वीः.

सुताद् यमत्रिर्दिवमुन्निनाय तं त्वा पश्यन्ति परियान्तमाजिम् (४)

सात तेजस्वी किरणें सूर्य के प्रकाश को प्रभावशाली बनाती हैं. ज्ञानीजन इस का महत्त्व जानते हैं. ये सूर्य द्युलोक पर चढ़ कर अपना तेज सर्वत्र फैलाते हैं. (४)

मा त्वा दभन् परियान्तमाजिं स्वस्ति दुर्गां अति याहि शीभम्.
दिवं च सूर्य पृथिवीं च देवीमहोरात्रे विमिमानो यदेषि (५)

हे सूर्यदेव! तुम आकाश और पृथ्वी पर दिन तथा रात्रि का निर्माण करते हुए विचरण करते हो. तुम दुर्गम स्थलों का शीघ्र और सुखपूर्वक उल्लंघन करो. चारों ओर घूमने वाले तुम को शत्रु वश में न कर सकें. (५)

स्वस्ति ते सूर्य चरसे रथाय येनोभावन्तौ परियासि सद्यः.
यं ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः शतमश्वा यदि वा सप्त बह्वीः (६)

हे सूर्यदेव! तुम्हारा रथ सब का कल्याण करने वाला है. उस रथ के द्वारा तुम उदय से अस्त तक विचरण करते हो. सात किरणों और अनंत प्रकाश तुम्हारे प्रभाव की वृद्धि कर रहे हैं. (६)

सुखं सूर्य रथमंशुमन्तं स्योनं सुवह्निमधि तिष्ठ वाजिनम्.
यं ते वहन्ति हरितो वहिष्ठाः शतमश्वा यदि वा सप्त बह्वीः (७)

हे सूर्यदेव! तुम अपने उस रथ पर बैठो जो अग्नि के समान ज्योति वाला तथा वेग से चलने वाला है. तुम ने प्रकाश करने वाले सौ अथवा अधिक सात घोड़ों को अपने रथ में जोड़ा है. (७)

सप्त सूर्यो हरितो यातवे रथे हिरण्यत्वचसो बृहतीरयुक्त.
अमोचि शुक्रो रजसः परस्ताद् विधूय देवस्तमो दिवमारुहत् (८)

सूर्य अपनी माया के लिए अपने रथ में सुनहरी त्वचा वाले तथा हरे रंग के सात घोड़ों को जोड़ते हैं. वे अंधकार का विनाश करते हुए उन घोड़ों को छोड़ कर अपने लोक में चले जाते हैं. (८)

उत् केतुना बृहता देव आगन्नपावृक् तमोऽभि ज्योतिरश्रैत्.
दिव्यः सुपर्णः स वीरो व्यख्यददितेः पुत्रो भुवनानि विश्वा (९)

सूर्यदेव महान प्रकाश के साथ उदय को प्राप्त हुए हैं. उन्होंने अंधकार को दूर कर के तेज का आश्रय लिया है. अदिति के वीर पुत्र आदित्य अर्थात सूर्य दिव्य प्रकाश वाले हैं. उन्होंने ही भुवनों को प्रकाशित किया है. (९)

उद्यन् रश्मीना तनुषे विश्वा रूपाणि पुष्यसि.
उभा समुद्रौ क्रतुना वि भासि सर्वांल्लोकान् परिभूर्भ्राजमानः (१०)

हे सूर्यदेव! तुम उदय होने के बाद अपनी किरणों का विस्तार करते हो. तुम्हारे

उदय होने पर सागर पर्यंत धरती पर यज्ञ कर्म आरंभ होते हैं. तुम गति करते हुए दोनों सागरों तथा समस्त लोकों को प्रकाशित करते हो. (१०)

पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम्.
विश्वान्यो भुवना विचष्टे हैरण्यैरन्यं हरितो वहन्ति (११)

सूर्य और चंद्र दोनों बालकों के समान क्रीड़ा करते हुए अपनी शक्ति से ही आगेपीछे चलते हैं और भ्रमण करते हुए सागर तक पहुंच जाते हैं. इन दोनों में एक अर्थात चंद्र सभी भुवनों को प्रकाशित करता है और दूसरा अर्थात सूर्य सभी ऋतुओं का निर्माण करता हुआ सभी को नवीनता प्रदान करता है. (११)

दिवि त्वात्रिरधारयत् सूर्या मासाय कर्तवे.
स एषि सुधृतस्तपन् विश्वा भूतावचाकशत् (१२)

हे सूर्यदेव! दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तापों से मुक्त होने वाले अत्रि ऋषि ने तुम्हें महीनों को बनाने के लिए आकाश में स्थापित किया है. तुम वहीं रहो और तपते हुए आकर सभी प्राणियों को प्रकाशित करते रहो. (१२)

उभावन्तौ समर्षसि वत्सः संमातराविव.
नन्वेऽतदितः पुरा ब्रह्म देवा अमी विदुः (१३)

बालक जिस प्रकार कुशलतापूर्वक अपने पिता और माता के पास सरलता से पहुंच जाता है, उसी प्रकार तुम दोनों सागरों के समीप पहुंच जाते हो. यह निश्चय है कि इस से पहले ही देवगण ब्रह्म को जानते हैं. (१३)

यत् समुद्रमनु श्रितं तत् सिषासति सूर्यः.
अध्वास्य विततो महान् पूर्वश्चपरश्च यः (१४)

समुद्र में जो भी रत्न आदि हैं उन्हें सूर्यदेव प्राप्त करते हैं. सूर्य का पूर्व से पश्चिम तक का मार्ग विशाल है. (१४)

तं समाप्नोति जूतिभिस्ततो नापचिकित्सति.
तेनामृतस्य भक्षं देवानां नाव रुन्धते (१५)

हे सूर्यदेव! तुम शीघ्र चलने वाले अश्वों की सहायता से उस मार्ग को शीघ्र प्राप्त कर लेते हो. तुम अपना मन इधरउधर नहीं होने देते, इस कारण तुम को अमृत अन्न का भाग नियमित रूप से प्राप्त होता है. (१५)

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः. दृशे विश्वाय सूर्यम् (१६)

सूर्यदेव की किरणें विश्व को प्रभावित करने के लिए निकलती हैं. सभी को जानने वाले सूर्य के दर्शन सब जन कर सकें इस हेतु उन की रश्मियां ऊपर उठती हैं. (१६)

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः. सूराय विश्वचक्षसे (१७)

रात्रि की समाप्ति पर जिस प्रकार चोर भाग जाता है, उसी प्रकार सूर्य को देख कर रात्रि के साथसाथ सब तारे भाग जाते हैं. (१७)

अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनां अनु. भ्राजन्तो अग्नयो यथा (१८)

सूर्यदेव की किरणें अग्नि के समान चमकती हैं और सभी को प्रकाश देती हैं. (१८)

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य. विश्वमा भासि रोचन (१९)

हे सूर्यदेव! तुम नौका के समान सब के तारक, सब को देखने वाले, ज्योति प्रदान करने वाले तथा सब को प्रकाशमय करने वाले हो. (१९)

प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषीः. प्रत्यङ् विश्वं स्व दृशे (२०)

हे सूर्यदेव! तुम सभी मानवी और दिव्य प्रजाओं के सामने प्रकट होते हो. तुम सभी को देखने के लिए प्रत्यक्ष रूप से उदय होते हो. (२०)

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनां अनु. त्वं वरुण पश्यसि (२१)

हे पाप नाशक सूर्य! जिस दृष्टि से तुम सब का भरणपोषण करने वाले मनुष्य को देखते हो, उसी दृष्टि से हमें भी देखो. (२१)

वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहर्मिमानो अक्तुभिः. पश्यन् जन्मानि सूर्य (२२)

हे सूर्यदेव! तुम सभी जीवों को कृपा दृष्टि से देखते हुए तथा रात्रि और दिन का निर्माण करते हुए इन आकाश, पृथ्वी और अंतरिक्ष में अनेक एकार से भ्रमण करते हो. (२२)

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य. शोचिष्केशं विचक्षणम् (२३)

हे सूर्यदेव! तेजस्वी रश्मियों वाले रथ से जुड़े हुए हरे रंग के सात घोड़े तुम को वहन करते हैं. (२३)

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः. ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः (२४)

सूर्य सब को पवित्र करने वाले सात घोड़ों को अपने रथ में जोड़ते हैं तथा उन के सहारे अपनी युक्तियों से गमन करते हैं. (२४)

रोहितो दिवमारुहत् तपसा तपस्वी.
स योनिमैति स उ जायते पुनः स देवानामधिपतिर्बभूव (२५)

सूर्य अपने तेज के सहारे स्वर्ग पर चढ़ते हैं. इस प्रकार उदय को प्राप्त होते हुए सूर्य अन्य सभी देवों के स्वामी हो गए हैं. (२५)

यो विश्वचर्षणिरुत विश्वतोमुखो यो विश्वतस्पाणिरुत विश्वतस्पृथः.

सं बाहुभ्यां भरति सं पतत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन् देव एक: (२६)

अनेक मुखों वाले, सब को देखने वाले और सभी ओर किरणें फैलाने वाले सूर्य अपनी नीचे की ओर आती हुई किरणों के द्वारा आकाश और पृथ्वी को प्रकट करते हुए अपनी भुजाओं से सब का भरणपोषण करते हैं. (२६)

एकपाद् द्विपदो भूयो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात्.
द्विपाद्ध षट्पदो भूयो वि चक्रमे त एकपदस्तन्वं१ समासते (२७)

सूर्यदेव एक चरण वाले होने पर भी अनेक चरणों वालों से आगे बढ़ जाते हैं. अनेक चरणों वाले अनेक प्राणी इस एक चरण वाले सूर्य के आश्रय में रहते हैं. (२७)

अतन्द्रो यास्यन् हरितो यदास्थाद् द्वे रूपे कृणुते रोचमान:.
केतुमानुद्यन्त्सहमानो रजांसि विश्वा आदित्य प्रवतो वि भासि (२८)

अज्ञान से रहित सूर्य चलते हुए जब विश्राम करते हैं, तब अपने दो रूप बनाते हैं. हे सूर्यदेव! तुम उदय हो कर सभी लोकों को वश में करते हुए उन्हें प्रकाशित करते हो. (२८)

बण्महां असि सूर्य बडादित्य महां असि.
महांस्ते महतो महिमा त्वमादित्य महां असि (२९)

हे सूर्यदेव! यह सत्य है कि तुम महान हो और तुम्हारी महिमा भी महती है. (२९)

रोचसे दिवि रोचसे अन्तरिक्षे पतङ्ग पृथिव्यां रोचसे रोचसे अपस्व१न्त:.
उभा समुद्रौ रुच्या व्यापिथ देवो देवासि महिष: स्वर्जित् (३०)

हे सूर्यदेव! तुम स्वर्ग में, अंतरिक्ष में, पृथ्वी पर तथा जल में दमकते हो. तुम अपने तेज से पूर्व और पश्चिम सागरों को व्याप्त कर लेते हो. (३०)

अर्वाङ् परस्तात् प्रयतो व्यध्व आशुर्विपश्चित् पतयन् पतङ्ग:.
विष्णुर्विचित्त: शवसाधितिष्ठन् प्र केतुना सहते विश्वमेजत् (३१)

दक्षिण की ओर जाते हुए सूर्य अपना मार्ग शीघ्र ही पूरा कर लेते हैं. ये व्यापक देव परम ज्ञानी हैं. ये अपनी शक्ति से अधिष्ठित होते हैं. ये अपने ज्ञान के बल से समस्त विश्व को अपने वश में कर लेते हैं. (३१)

चित्रश्चिकित्वान् महिष: सुपर्ण आरोचयन् रोदसी अन्तरिक्षम्.
अहोरात्रे परि सूर्यं वसाने प्रास्य विश्वा तिरतो वीर्याणि (३२)

महिमामय सूर्य ज्ञानवान एवं पूज्य हैं. सूर्यदेव शोभन मार्ग से गमन करते हैं. सूर्यदेव आकाश, पृथ्वी और अंतरिक्ष को दमकाते हुए दिवस और रात्रि को आश्रय देते हैं. सूर्यदेव के बल से ही सब पार होते हैं. (३२)

तिग्मो विभ्राजन् तन्वं१ शिशानोऽरंगमास: प्रवतो रराण:.
ज्योतिष्मान् पक्षी महिषो वयोधा विश्वा आस्थात् प्रदिश: कल्पमान: (३३)

सूर्यदेव अपनी किरणें दमकाते हुए अपने शरीर को तपाते हैं. ये सुंदर गति वाले, ज्योतिमान, महिमाशाली तथा अन्न को पुष्ट करने वाले हैं. (३३)

चित्रं देवानां केतुरनीकं ज्योतिष्मान् प्रदिश: सूर्य उद्यन्.
दिवाकरोऽति द्युम्नैस्तमांसि विश्वातारीद् दुरितानि शुक्र: (३४)

देवताओं की धजा रूप सूर्य सब के दर्शनीय हैं. ये उदय हो कर दिशाओं को प्रकाशित करते हैं तथा सभी प्रकार के अंधकार को मिटाते हुए अपने प्रकाश से दिन को प्रकट करते हैं. सूर्यदेव पापों को दूर करते हैं. (३४)

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने:.
आप्राद् द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च (३५)

रश्मियों का प्रशंसनीय समूह मित्रावरुण के चक्षु के समान है. सूर्य देव भी प्राणियों के आत्मा रूप हैं. सभी प्राणियों में प्रवेश करने वाले सूर्य, आकाश, अंतरिक्ष और पृथ्वी को व्याप्त किए हुए हैं. (३५)

उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्.
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्त्रि: (३६)

ऊर्ध्वगामी, अरुण वर्ण वाले एवं शुभ गति वाले सूर्य के हम सदा तभी दर्शन करें, जब वे आकाश में गमन कर रहे हों. (३६)

दिवस्पृष्ठे धावमानं सुपर्णमदित्या: पुत्रं नाथकाम उप यामि भीत:.
स न: सूर्य प्र तिर दीर्घमायुर्मा रिषाम सुमतौ ते स्याम (३७)

मैं भयभीत हो कर आकाश में द्रुत गमन करते हुए सूर्य की स्तुति करता हुआ उन का आश्रय प्राप्त करता हूं. हे सूर्य! हम तुम्हारी शोभन कृपा दृष्टि में रहें तथा हिंसा को प्राप्त न हों. तुम हमें दीर्घ जीवन प्रदान करो. (३७)

सहस्राह्ण्यं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पतत: स्वर्गम्.
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन् याति भुवनानि विश्वा (३८)

हम पापों के नाशक, सुंदर गमन वाले तथा स्वर्गगामी सूर्यदेव के दोनों अर्थात उत्तरायण व दक्षिणायन तथा सहस्रों दिनों तक नियम में रहते हैं. ये सूर्यदेव सभी देवों को अपने में लीन कर के सभी भूतों अर्थात प्राणियों को देखते हुए चलते हैं. (३८)

रोहित: कालो अभवद् रोहितोऽग्रे प्रजापति:.
रोहितो यज्ञानां मुखं रोहित: स्व१राभरत् (३९)

रोहित काल में ये प्रजापति थे. ये यज्ञों के मूल रूप हैं तथा ये ही रोहित अब स्वर्ग का पोषण करते हैं. (३९)

रोहितो लोको अभवद् रोहितोऽत्यतपद् दिवम्.
रोहितो रश्मिभिर्भूमिं समुद्रमनु सं चरत् (४०)

स्वर्ग में रहने वाले रोहित अपनी रश्मियों से सागर और पृथ्वी में विचरते हैं. ऐसे रोहित दर्शन करने योग्य हैं. (४०)

सर्वा दिशः समचरद् रोहितोऽधिपतिर्दिवः.
दिवं समुद्रमाद् भूमिं सर्वं भूतं विरक्षति (४१)

स्वर्ग के अधिपति रोहित सब दिशाओं में भ्रमण करते तथा स्वर्ग सागर में जाते हैं. ये सभी जीवों के साथसाथ पृथ्वी की रक्षा करते हैं. (४१)

आरोहञ्छुक्रो ब्रहतीरतन्द्रो द्वे रूपे कृणुते रोचमानः.
चित्रश्चिकित्वान् महिषो वातमाया यावतो लोकानभि यद् विभाति (४२)

ये रोहित सूर्य रथ पर और अश्वों पर अपने दो रूप बनाते हैं. ये पूज्य महत्त्वशाली और प्रकाशमान हैं. सुंदर गमन वाले सूर्य सभी लोकों को प्रकाशित करते हैं. (४२)

अभ्य१न्यदेति पर्यन्यदस्यतेऽहोरात्राभ्यां महिषः कल्पमानः.
सूर्यं वयं रजसि क्षियन्तं गातुविदं हवामहे नाधमानाः (४३)

दिनों तथा रात्रियों के द्वारा सूर्य का एक रूप सामने आता है. उन का दूसरा रूप गमनशील है. स्वर्ग के मार्ग में चलने वाले एवं अंतरिक्षगामी सूर्य का हम आह्वान करते हैं. (४३)

पृथिवीप्रो महिषो नाधमानस्य गातुरदब्धचक्षुः परि विश्वं बभूव.
विश्वं संपश्यन्त्सुविदत्रो यजत्र इदं शृणोतु यदहं ब्रवीमि (४४)

जिन की दृष्टि कभी हीन नहीं होती जो पृथ्वी के पालनकर्ता और महिमाशाली हैं, वे सूर्य संसार के सभी ओर व्याप्त हैं. वे जगत के द्रष्टा, अत्यधिक ज्ञानी और पूज्य हैं. ऐसे सूर्य मेरे वचन सुनें. (४४)

पर्यस्य महिमा पृथिवीं समुद्रं ज्योतिषा विभ्राजन् परि द्यामन्तरिक्षम्.
सर्वं संपश्यन्त्सुविदत्रो यजत्र इदं शृणोतु यदहं ब्रवीमि (४५)

सूर्य अपनी ज्योति के द्वारा व्याप्त हो कर पृथ्वी, सागर और अंतरिक्ष में अपनी ज्योति के द्वारा व्याप्त हैं. सब के कर्मों को देखने वाले सूर्य की महिमा अंतरिक्ष में फैली हुई है. सूर्य शोभना विद्या वाले तथा पूज्य हैं. (४५)

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्.

यह्वा इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ (४६)

गौ के समान आने वाली उषा के अग्निदेव मनुष्य की सुविधाओं के द्वारा जाने जाते हैं. उन की ऊर्ध्वगामी रश्मियां स्वर्ग की ओर शीघ्र जाती हैं. मैं सूर्य का आश्रय प्राप्त करता हूं. (४६)

सूक्त तीसरा — देवता—अध्यात्म रोहित

य इमे द्यावापृथिवी जजान यो द्रापिं कृत्वा भुवनानि वस्ते.
यस्मिन् क्षियन्ति प्रदिशः षडुर्वीर्याः पतङ्गो अनु विचाकशीति.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१)

इस आकाश और पृथ्वी को उन्होंने प्रकट किया जो सभी लोकों को आच्छादित करते हैं, जिन में छः उर्वियां और दिशाएं निवास करती हैं. जिन दिशाओं को वे ही प्रकाशित करते हैं, उन क्रोध पूर्ण सूर्य का जो अपमान करता है अथवा विद्वान ब्राह्मण की हिंसा करता है अथवा कष्ट देता है; हे रोहित देव! तुम उस को कंपित करो तथा उसे क्षीण करते हुए बंधन में डाल दो. (१)

यस्माद् वाता ऋतुथा पवन्ते यस्मात् समुद्रा अधि विक्षरन्ति.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (२)

जिस देवता के प्रभाव से वायु ऋतुओं के अनुसार चलती है, तथा समुद्र प्रभावित होते हैं, क्रोध में भरे हुए सूर्य का जो अपमान करता है अथवा विद्वान ब्राह्मण की हिंसा करता है; हे रोहितदेव! उस ब्रह्मघाती को कंपित करते हुए क्षीण करो और बंधन में डाल दो. (२)

यो मारयति प्राणयति यस्मात् प्राणन्ति भुवनानि विश्वा.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (३)

जो मनुष्य में प्राण भरते हैं, जो मनुष्य की हिंसा करते हैं, उन के द्वारा सभी प्राणी श्वास लेते और प्रश्वास के रूप में छोड़ते हैं, क्रोध में भरे उस देवता का जो अपमान करता है अथवा विद्वान ब्राह्मण की हिंसा करता है, उस ब्रह्मघाती को कंपित करते हुए हे रोहितदेव! क्षीण करो एवं बंधन में डालो. (३)

यः प्राणेन द्यावापृथिवी तर्पयत्यपानेन समुद्रस्य जठरं यः पिपर्ति.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (४)

जो देवता प्राण, आकाश और पृथ्वी को तृप्त करता है तथा अपमान से समुद्र

के पेट को पालता है, क्रोध में भरे रोहितदेव के अपराधी और विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव कंपित करते हुए क्षीण बनाओ एवं बंधन में डालो. (४)

यस्मिन् विराट् परमेष्ठी प्रजापतिरग्निर्वैश्वानर: सह पङ्क्त्या श्रित:. य: परस्य प्राणं परमस्य तेज आददे. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (५)

जिस में विराट परमेष्ठी वैश्वानर पंक्ति, प्रजा और अग्नि सहित निवास करते हैं, जिस ने उत्कृष्ट प्राण के महान तेज को धारण किया है, उन क्रोधवंत रोहितदेव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण करो तथा अपने बंधन में बांध लो. (५)

यस्मिन् षडुर्वी: पञ्च दिशो अधि श्रिताश्चतस्र आपो यज्ञस्य त्रयोऽक्षरा:. यो अन्तरा रोदसी क्रुद्धश्चक्षुषैक्षत. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (६)

पांच दिशाएं, छ: उर्वियां, चार जलों तथा यज्ञ के तीन अक्षर जिस में आश्रित हैं, जो आकाश और पृथ्वी के मध्य अपने क्रोधपूर्ण नेत्र से देखता है, उस क्रोधवान देवता के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और अपने पाश में बांध लो. (६)

यो अन्नादो अन्नपतिर्बभूव ब्रह्मणस्पतिरुत य:. भूतो भविष्यद् भुवनस्य यस्पति:. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (७)

जो ब्रह्मणस्पति हैं, जो अन्न के पालक और भक्षक हैं, जो भूत, भविष्य और लोक के स्वामी हैं; उन क्रोध युक्त देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा अपने पाशों में बांध लो. (७)

अहोरात्रैर्विमितं त्रिंशदङ्गं त्रयोदशं मासं योनिर्मिमीति.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (८)

जिन्होंने तीन दिनरात्रि का समूह बना कर तेरहवें अधिक मास का निर्माण किया, ऐसे क्रोधयुक्त देव के अपराधी और विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा उसे अपने पाशों में बांध लो. (८)

कृष्णं नियानं हरय: सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत् पतन्ति.
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्य. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (९)

सूर्य की सुंदर रश्मियां जल को सोख कर स्वर्ग में जाती हैं तथा दक्षिणायन में

जल स्थान से लौटती हैं, उन क्रोध वाले देव के अपराधी एवं विद्वान ब्राह्मणों के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा अपने पाशों में बांध लो. (९)

यत् ते चन्द्रं कश्यप रोचनावद् यत् संहितं पुष्कलं चित्रभानु. यस्मिन्त्सूर्या आर्पिताः सप्त साकम्. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१०)

हे कश्यप! तुम्हारे रोचमान चित्रभानु में सात सूर्य एक साथ रहते हैं. ऐसे क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और अपने पाशों में बांध लो. (१०)

बृहदेनमनु वस्ते पुरस्ताद् रथन्तरं प्रति गृह्णाति पश्चात्. ज्योतिर्वसाने सदमप्रमादम्. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (११)

जिस के अनुकूल रह कर बृहत आच्छादन करता और रथंतर उसे धारण करता है, वे दोनों ही जातियों से सदैव ढके रहते हैं. ऐसे क्रोधवंत देव के अपराधी एवं विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ अपने पाशों से बांध दो. (११)

बृहदन्यतः पक्ष आसीद् रथन्तरमन्यतः सबले सध्रीची. यद् रोहितमजनयन्त देवाः. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१२)

देवताओं द्वारा रोहित को उत्पन्न करने के समय बृहत एक ओर तथा रथंतर दूसरी ओर हुए. ये दोनों ही शक्तिशाली और साथ रहने वाले पक्ष हैं. इस क्रोधवंत देव के अपराधी और विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा अपने बंधन में बांध लो. (१२)

स वरुणः सायमग्निर्भवति स मित्रो भवति प्रातरुद्यन्.
स सविता भूत्वान्तरिक्षेण याति स इन्द्रो भूत्वा तपति मध्यतो दिवम्.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१३)

वे वरुणदेव सायं समय अग्नि होते हैं और प्रातःकाल उदित होते हुए मित्र बन जाते हैं. वे सविता के रूप से अंतरिक्ष में तथा इंद्र के रूप में स्वर्ग में स्थित रहते हैं. ऐसे क्रोधवंत देव का जो अपराध करता है और विद्वान ब्राह्मण की हिंसा करता है, उसे हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा अपने पाशों में बांध लो. (१३)

सहस्राह्ण्यं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम्.
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन् याति भुवनानि विश्वा.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१४)

इन पापनाशक और स्वर्गगामी सूर्य से दोनों अयन अर्थात उत्तरायण और दक्षिणायन सहस्रों दिवसों में नियमपूर्वक बंधे रहते हैं. ये सब देवताओं को अपने में लीन कर के सभी जीवों को देखते हुए चलते हैं. ऐसे क्रोधवंत देव के अपराधी और विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और अपने पाशों के बंधन में डालो. (१४)

अयं स देवो अप्स्व१न्तः सहस्रमूलः पुरुशाको अत्त्रिः. य इदं विश्वं भुवनं जजान.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१५)

सभी लोकों को जिन्होंने प्रकाशित किया वे देव जल में वास करते हैं. वे ही सहस्रों के मूल रूप तथा तीनों तापों अर्थात दैहिक, दैविक भौतिक से रहित अग्नि हैं. इस क्रोधवंत देव के अपराधी और विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और अपने पाशों में बांध लो. (१५)

शुक्रं वहन्ति हरयो रघुष्यदो देवं दिवि वर्चसा भ्राजमानम्.
यस्योर्ध्वा दिवं तन्व१स्तपन्त्यर्वाङ् सुवर्णैः पटरैर्वि भाति.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१६)

स्वर्ग में अपने तेज से दमकते हुए सूर्य को उन की द्रुतगामी रश्मियां निर्मल रस प्राप्त कराती हैं उन की देह के ऊर्ध्व भाग रूप रश्मियां स्वर्ग को संतप्त करती हैं. जो स्वर्णिम रश्मियों द्वारा प्रकाश फैलाते हैं, उन क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और अपने पाशों से बांध दो. (१६)

येनादित्यान् हरितः संवहन्ति येन यज्ञेन बहवो यन्ति प्रजानन्तः. यदेकं
ज्योतिर्बहुधा विभाति. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं
जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१७)

जिन के प्रभाव से सूर्य के अश्व सूर्य को वहन करते हैं तथा जिन के प्रभाव से विज्ञ पुरुष यज्ञ आदि कर्मों को प्राप्त होते हैं, जो एक ज्योति होते हुए भी अनेक रूप से प्रकाशमान हैं, ऐसे क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा उसे अपने पाशों से बांधो. (१७)

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा.
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१८)

फैलने वाली किरणें अन्य जातियों को निस्तेज कर के चक्र वाले सूर्य के रथ में युक्त होती हैं. ये सूर्य सप्तऋषियों द्वारा किए हुए नमस्कार को स्वीकार कर के घूमते हैं. ये ग्रीष्म, वर्षा और हेमंत—इन तीन ऋतुओं वाले वर्ष को बनाते हैं. सब लोक इस काल के आश्रित हैं. ऐसे क्रोधवंत देवता के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और उसे अपने पाशों से बांध लो. (१८)

अष्टधा युक्तो वहति वह्निरुग्रः पिता देवानां जनिता मतीनाम्.
ऋतस्य तन्तुं मनसा मिमानः सर्वा दिशः पवते मातरिश्वा.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (१९)

आठ प्रकार से बहने वाले अग्नि उग्र हैं. वे देवों के पालक तथा बुद्धियों को उत्पन्न करने वाले हैं. ऐसे क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा उसे अपने पाशों से बांध दो. (१९)

सम्यञ्चं तन्तुं प्रदिशोऽनु सर्वा अन्तर्गायत्र्याममृतस्य गर्भे.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (२०)

गायत्री में, अमृत के गर्भ में तथा सभी दिशाओं में पूजनीय जलतंतु को वायु पवित्र करते हैं. उन क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा उसे अपने पाशों से बांध दो. (२०)

निम्रुचस्तिस्रो व्युषो ह तिस्रस्त्रीणि रजांसि दिवो अङ्ग तिस्रः.
विद्मा ते अग्ने त्रेधा जनित्रं त्रेधा देवानां जनिमानि विद्म.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (२१)

हे अग्नि! हम तुम्हारी तीनों उत्पत्तियों को जानते हैं. तुम्हारी तीनों गतियां भस्म करने वाली हैं. हम तीन लोकों तथा स्वर्ग में तीन भेदों को भी जानते हैं. ऐसे उन क्रोधवंत देव के अपराधी को तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा उसे अपने पाशों से बांध लो. (२१)

वि य और्णोत् पृथिवीं जायमान आ समुद्रमदधादन्तरिक्षे.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (२२)

जो उत्पन्न हो कर भूमि को आच्छादित करता है तथा जल को अंतरिक्ष में स्थिर करता है, ऐसे उस क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा अपने पाशों से बांध लो. (२२)

त्वमग्ने क्रतुभिः केतुभिर्हितोऽर्कः समिद्ध उदरोचथा दिवि.
किमभ्यार्चन्मरुतः पृश्निमातरो यद् रोहितमजनयन्त देवाः.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (२३)

हे अग्नि! तुम ऋतु संबंधी दशों में प्रदीप्त किए जाते हो तथा स्वर्ग में अर्चना के साधन रूप बनते हो. क्या प्रश्निमाताओं के पुत्र मरुद्गण ने तुम्हारी पूजा की थी जो देवता रोहितदेव से मिले थे. उन क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और अपने पाशों से बांध लो. (२३)

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः. योऽस्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदः. तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति. उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (२४)

शारीरिक बल के प्रदाता आत्मिक बल के प्रेरक, जिन के बल की देवता आराधना करते हैं तथा जो प्राणि मात्र के स्वामी हैं, ऐसे क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ तथा अपने पाशों से बांध लो. (२४)

एकपाद् द्विपदो भूयो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात्.
चतुष्पाच्चक्रे द्विपदामभिस्वरे संपश्यन् पङ्क्तिमुपतिष्ठ मानः.
तस्य देवस्य क्रुद्धस्यैतदागो य एवं विद्वांसं ब्राह्मणं जिनाति.
उद् वेपय रोहित प्र क्षिणीहि ब्रह्मज्यस्य प्रति मुञ्च पाशान् (२५)

यह देव एक पैर वाला होने पर भी दो पैर वालों से तेज दौड़ता है, दो पैरों वाला तीन पैरों वालों के पीछे चलता है. चार पैरों वाला दो पैरों वालों तथा एक स्वर में रहने वालों की पंक्ति में देखता हुआ उन से सेवा लेता है. ऐसे उन क्रोधवंत देव के अपराधी तथा विद्वान ब्राह्मण के हिंसक ब्रह्मघाती को हे रोहितदेव! तुम कंपित करते हुए क्षीण बनाओ और उसे अपने दृढ़ पाशों से बांध लो. (२५)

कृष्णायाः पुत्रो अर्जुनो रात्र्या वत्सोऽजायत.
स ह द्यामधि रोहति रुहो रुरोह रोहितः (२६)

काले रंग की रात्रि का पुत्र प्रकाशमान सूर्य हुआ है. लाल रंग वाला वह वृद्धि करने वाले सब से ऊपर चढ़ा है. वही निश्चित रूप से द्युलोक पर चढ़ता है. (२६)

125

सूक्त चौथा देवता—अध्यात्म

स एति सविता स्वर्दिवस्पृष्ठेऽवचाकशत् (१)

वे सूर्य आकाश की पीठ पर दमकते हुए आते हैं. (१)

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः (२)

सूर्य ने अपनी रश्मियों से आकाश को ढक दिया है. सूर्य रश्मियों से युक्त हैं. (२)

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम्.
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः (३)

वह धाता है, विधाता है तथा वही वायु है, जिस ने आकाश को ऊंचा बनाया है. (३)

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः.
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः (४)

वही अर्यमा, वही वरुण, वही रुद्र और वही महादेव है. (४)

सो अग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः.
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः (५)

वही अग्नि, वे ही सूर्य तथा वे ही महान यम हैं. (५)

तं वत्सा उप तिष्ठन्त्येकशीर्षाणो युता दश.
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः (६)

एक शीश वाले दस वत्स उन्हीं की आराधना करते हैं. (६)

पश्चात् प्राञ्च आ तन्वन्ति यदुदेति वि भासति.
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः (७)

वे उदय होते ही दमकने लगते हैं तथा उन के पीछे उन की पूजनीय रश्मियां उन के चारों ओर छा जाती हैं. (७)

तस्यैष मारुतो गणः स एति शिक्याकृतः (८)

छींके के आकार वाला उन का ही एक गण मारुत उन के पीछे आ रहा है. (८)

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः (९)

उन्होंने अपनी रश्मियों से आकाश को ढक लिया है. ये महान इंद्र के द्वारा किरणों से ढके हुए चले आ रहे हैं. (९)

तस्मेमे नव कोशा विष्टम्भा नवधा हिता: (१०)

उस के नौ कोष विविध रूप धारण किए हुए हैं. (१०)

स प्रजाभ्यो वि पश्यति यच्च प्राणति यच्च न (११)

वे स्थावर और जंगम सभी प्रजाओं के द्रष्टा और सभी के साक्षी हैं. (११)

तमिदं निगतं सह: स एष एक एकवृदेक एव (१२)

यह सब उसी को प्राप्त होता है. वह अकेला ही एकवृत है. (१२)

एते अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति (१३)

सब देवता इस एक का ही वरण करते हैं. (१३)

सूक्त पांचवां — देवता—अध्यात्म

कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च नभश्च ब्राहमणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च
य एतं देवमेकवृतं वेद (१)

कीर्ति, यश, आकाश, जल, ब्रह्मवर्चस् अर्थात ब्रह्म तेज अन्न और अन्न को पचाने की क्रिया उसे ही प्राप्त होती है जो इन एकवृत अर्थात ब्रह्म का ज्ञाता है. (१)

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते. य एतं देवमेकवृतं वेद (२)

इन एकवृत अर्थात ब्रह्म का ज्ञाता द्वितीय, तृतीय चतुर्थ नहीं कहलाता. (२)

न पञ्चमो न षष्ठ: सप्तमो नाप्युच्यते. य एतं देवमेकवृतं वेद (३)

इन एकवृत अर्थात ब्रह्म का ज्ञाता पंचम, षष्ठ अथवा सप्तम नहीं कहलाता है (३)

नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते. य एतं देवमेकवृतं वेद (४)

जो इन एकवृत अर्थात ब्रह्म का ज्ञाता है वह अष्टम, नवम नहीं कहलाता है. (४)

स सर्वस्मै वि पश्यति यच्च प्राणति यच्च न. य एतं देवमेकवृतं वेद (५)

इन एकवृत अर्थात ब्रह्म का ज्ञाता स्थावर और जंगम सभी को देखने वाला होता है. (५)

तमिदं निगतं सह: स एष एक एकवृदेक एव. य एतं देवमेकवृतं वेद (६)

वह असाधारण एकवृत अर्थात ब्रह्म ही है, यह सब उसे ही प्राप्त होता है. (६)

सर्वे अस्मिन देवा एकवृतो भवन्ति.
य एतं देवमेकवृतं वेद. (७)

ये सब देव उस ब्रह्म में एक रूप होते हैं जो एकव्रत को जानता है. (७)

सूक्त छठा देवता—अध्यात्म

ब्रह्म च तपश्च कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च नभश्च ब्रह्मणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च. य एतं देवमेकवृतं वेद (१)

भूतं च भव्यं च श्रद्धा च रुचिश्च स्वर्गश्च स्वधा च (२)
य एतं देवमेकवृतं वेद (३)

ब्रह्म, तप, कीर्ति, यश, जल, आकाश, ब्रह्मचर्य, अन्न और अन्न को पचाने की शक्ति व भूत, भविष्य, श्रद्धा, रुचि, स्वर्ग और स्वधा—ये सभी उस एक वृत अर्थात ब्रह्म के ज्ञाता को प्राप्त होते हैं. (१-३)

य एव मृत्युः सो३मृतं सो३भ्वं१ स रक्षः (४)

वे ही मृत्यु, अमृत, अभ्व हैं तथा वही राक्षस हैं. (४)

स रुद्रो वसुवनिर्वसुदेये नमोवाके वषट्कारोऽनु संहितः (५)

वही रुद्र धनदान के समय धन प्राप्त करने वाले तथा वही नमस्कार यज्ञ में उत्तम रीति से बोला गया वष्टकार है. (५)

तस्येमे सर्वे यातव उप प्रशिषमास्ते (६)

ये सब राक्षस आदि उस की आज्ञा में रहते हैं. (६)

तस्यामू सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह (७)

ये सब नक्षत्र चंद्रमा के साथ उस के वश में रहते हैं. (७)

सूक्त सातवां देवता—अध्यात्म

स वा अह्नोऽजायत तस्मादहरजायत (१)

उस से दिन प्रकट हुआ और वह दिन से प्रकट हुआ. (१)

स वै रात्र्या अजायत तस्माद् रात्रिरजायत (२)

रात्रि उन्हीं ब्रह्म से प्रकट हुई और वे रात्रि से उत्पन्न हुए. (२)

स वा अन्तरिक्षादजायत तस्मादन्तरिक्षमजायत (३)

अंतरिक्ष उन से प्रकट हुआ और वे अंतरिक्ष से प्रकट हुए. (३)

स वै वायोरजायत तस्माद् वायुरजायत (४)

वायु उन से प्रकट हुई और वे वायु से प्रकट हुए. (४)

स वै दिवोऽजायत तस्माद् द्यौरध्यजायत (५)

आकाश उन से प्रकट हुआ और वे आकाश से प्रकट हुए. (५)

स वै दिग्भ्योऽजायत तस्माद् दिशोऽजायन्त (६)

दिशाएं उन से प्रकट हुईं और वे दिशाओं से प्रकट हुए. (६)

स वै भूमेरजायत तस्माद् भूमिरजायत (७)

पृथ्वी उन से प्रकट हुई और वे पृथ्वी से प्रकट हुए. (७)

स वा अग्नेरजायत तस्मादग्निरजायत (८)

अग्नि उन से प्रकट हुई और वे अग्नि से प्रकट हुए. (८)

स वा अद्भ्योऽजायत तस्मादापोऽजायन्त (९)

जल उन से प्रकट हुआ और वे जल से प्रकट हुए. (९)

स वा ऋग्भ्यो ऽजायत तस्मादृचोऽजायन्त (१०)

ऋचाएं उन से प्रकट हुईं और वे ऋचाओं से प्रकट हुए. (१०)

स वै यज्ञादजायत तस्माद् यज्ञोऽजायत (११)

यज्ञ उन से प्रकट हुआ और वे यज्ञ से प्रकट हुए. (११)

स यज्ञस्तस्य यज्ञः स यज्ञस्य शिरस्कृतम् (१२)

यज्ञ उन का है और वे यज्ञ के हैं एवं यज्ञ के शीर्ष रूप हैं. (१२)

स स्तनयति स वि द्योतते स उ अश्मानमस्यति (१३)

वे ही दमकते और कड़कते हैं वे ही उपल गिराते है. (१३)

पापाय वा भद्राय वा पुरुषायासुराय वा (१४)

तुम पापियों को, कल्याणकारी पुरुष को, असुर को और ओषधियों को उत्पन्न करते हो. (१४)

यद्वा कृणोष्योषधीर्यद्वा वर्षसि भद्रया यद्वा जन्यमवीवृधः (१५)

कल्याणमयी वृष्टि के रूप में तुम रसते हो तथा उत्पन्न हुओं को बढ़ाते हो. (१५)

तावांस्ते मघवन् महिमोपो ते तन्वः शतम् (१६)

तुम मघवन अर्थात इंद्र हो. तुम सैकड़ों देवों से युक्त हो और महिमा के द्वारा महान हो. (१६)

उपो ते बध्वे बद्धानि यदि वासि न्यर्बुदम् (१७)

तुम सैकड़ों बांधे हुओं के बांधने वाले और अंत रहित हो. (१७)

सूक्त आठवां — देवता—अध्यात्म रोहित

भूयानिन्द्रो नमुराद् भूयानिन्द्रासि मृत्युभ्यः (१)

वे इंद्र नमुर से श्रेष्ठ हैं. हे इंद्र! तुम मृत्यु के कारणों से भी उत्कृष्ट हो. (१)

भूयानरात्याः शच्याः पतिस्त्वमिन्द्रासि विभूः प्रभूरिति त्वोपास्महे वयम् (२)

हे इंद्र! तुम शत्रुओं की अपेक्षा महान हो. तुम शक्ति के पति हो, तुम व्यापक और स्वामी हो. इस प्रकार के तुम्हारी हम उपासना करते हैं. (२)

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत (३)

हे दर्शनीय! तुम्हारे लिए नमस्कार है. हे शोभन! तुम मुझे देखो. (३)

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन (४)

तुम मुझे खानपान, यश, तेज और ब्रह्मवर्चस से युक्त करो. (४)

अम्भो अमो महः सह इति त्वोपास्महे वयम्. नमस्ते अस्तु पश्यत
पश्य मा पश्यत. अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन (५)

तुम जल, पौरुष, महत्ता और बल स्वरूप हो. हम तुम्हारी उपासना करते हैं. (५)

अम्भो अरुणं रजतं रजः सह इति त्वोपास्महे वयम्. नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत. अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन (६)

हे जल! आप अरुण एवं श्वेत वर्ण के हैं. हम आपको क्रियात्मक तथा शक्तिरूप समझ कर आपकी उपासना करते हैं. आप हमें अन्न, यश, तेज तथा ब्रह्मवर्चस प्रदान करें. (६)

सूक्त नौवां — देवता—अध्यात्म रोहित

उरुः पृथुः सुभूर्भुव इति त्वोपास्महे वयम्. नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत. अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन (१)

तुम हमें अन्न, यश, तेज और ब्रह्मवर्चस प्रदान करो. तुम्हारी हम उपासना करते हैं. (१)

प्रथो वरो व्यचो लोक इति त्वोपास्महे वयम्. नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत.
अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन (२)

तुम महान, विस्तृत, उत्तम होने वाले एवं सामर्थ्य रूप हो. हम तुम्हारी उपासना करते हैं. (२)

भवद्वसुरिदद्वसुः संयद्वसुरायद्वसुरिति त्वोपास्महे वयम् (३)

हम तुम्हें भागमुक्त, संबंधों को एकत्र करने वाले, संबंधों को प्राप्त करने वाले मान कर तुम्हारी उपासना करते हैं. (३)

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत (४)

हे दर्शनीय! तुम्हारे लिए नमस्कार है. तुम मुझे देखो. (४)

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन (५)

तुम मुझे खानपान, यश, तेज और ब्रह्मवर्चस से युक्त करो. (५)

चौदहवां कांड

सूक्त पहला

देवता—सोम

सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्यणोत्तभिता द्यौः.
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः (१)

सत्य से भूमि और सूर्य से आकाश स्थित है. सूर्य के बिना आकाश में चंद्रमा स्थित नहीं होता. (१)

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही.
अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः (२)

सोम के कारण आदित्य बलशाली है तथा सोम के कारण पृथ्वी विशाल है. इसी कारण यह सोम नक्षत्रों के समीप रहता है. (२)

सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिषन्त्योषधिम्.
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति पार्थिवः (३)

जो सोम रूप ओषधि को पीस कर पीते हैं, वे अग्नि को सोमपान करने वाला समझते हैं. ज्ञानी जन जिस सोम को जानते हैं उस का भक्षण साधारण प्राणी नहीं कर सकते. (३)

यत् त्वा सोम प्रपिबन्ति तत आ प्यायसे पुनः.
वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः (४)

हे सोम! पुरुष तुम्हें पीते हैं, फिर भी तुम वृद्धि को प्राप्त होते रहते हो. अनेक संवत्सरों रूप से वायु इस सोम की रक्षा करता है. (४)

आच्छद्विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः.
ग्राव्णामिच्छृण्वन् तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः (५)

हे सोम! बृहती छंदों वाले कर्मों से तथा आच्छद विधानों से तुम्हारी रक्षा होती

है. सोम कूटने के पाषाण से जो शब्द होता है, उस से तुम्हारी स्थिति है. पार्थिव जीव तुम्हारा सेवन नहीं कर सके. (५)

चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम्.
द्यौर्भूमिः कोश आसीद् यदयात् सूर्या पतिम् (६)

जब सूर्या अपने पति के पास गई, तब ज्ञान उस का तकिया तथा चक्षु ही अंजन बने. आकाश और पृथ्वी उस के कोष थे. (६)

रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी.
सूर्याया भद्रमिद् वासो गाथयैति परिष्कृता (७)

वेद मंत्रों के साथ उस की पिता के घर से विदाई हुई. मंत्रों से ही पति गृह में उस का स्वागत हुआ. मंत्रों के द्वारा पवित्र बना पति के घर का वस्त्र उस वधू का कल्याण करता है. (७)

स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः.
सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत् पुरोगवः (८)

पति के घर के यज्ञ वधू के लिए भोग तथा वेदमंत्र ही उस के आभूषण हुए थे. कुरीर नाम का छंद उस के शरीर का आभूषण बना. दोनों अश्विनी कुमार सूर्य के घर में और अग्निदेव उस के आगे चल रहे थे. (८)

सोमो वधूयुरभवदश्विनास्तामुभा वरा.
सूर्यां यत् पत्ये शंसन्तीं मनसा सवितादददात् (९)

सोम वधू की इच्छा करने वाले हुए. दोनों अश्विनीकुमार उन के साक्षी थे. तब सविता ने मन से स्तुति करने वाली सूर्या को पति के हाथ में दान के रूप में दिया. (९)

मनो अस्या अन आसीद् द्यौरासीदुत च्छदिः.
शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात् सूर्या पतिम् (१०)

जब सूर्या अपने पति को प्राप्त हुई तब मन रथ बना तथा द्युलोक उस की छत हुआ. उस रथ में दो बलवान बैल जुड़े हुए थे. (१०)

ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावैताम्.
श्रोत्रे ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः (११)

ऋग्वेद और सामवेद से अभिमंत्रित तेरे दोनों बैल शक्ति पूर्वक चलते हैं. दोनों कान तेरे रथ के दो पहिए हैं. द्युलोक में तेरा चर और अचर मार्ग है. (११)

शुची ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः.
अनो मनस्मयं सूर्यारोहत् प्रयती पतिम् (१२)

तुझे ले जाने वाले रथ के दोनों पहिए शुद्ध हैं. उस रथ के अक्ष के स्थान पर व्यान नामक वायु रखी है. अपने पति के पास जाने वाली सूर्या इस मनोमय रथ पर चढ़ती है. (१२)

सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत्.
मघासु हन्यते गावः फल्गुनीषु व्यु ह्यते (१३)

सविता देव ने जिस को भेजा था, सूर्या का वह दहेज आगे गया है. मघा नक्षत्र में गाएं भेजी जाती हैं और फाल्गुनी नक्षत्रों में विवाह होता है. (१३)

यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः.
क्वैकं चक्रं वामासीत् क्व देष्ट्राय तस्थथुः (१४)

हे अश्विनीकुमारो! जब तुम सूर्या का दहेज ले कर चले, उस समय तुम देवों को पूछते हुए तीन पहियों वाले रथ के सहारे चले. तुम्हारा वह कर्म सब देवों को रुचिकर प्रतीत हुआ. पूषा ने तुम्हें इस प्रकार स्वीकार किया जैसे पुत्र पिता को स्वीकार करता है. (१४)

यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप. विश्वे देवा
अनु तद् वामजानन् पुत्रः पितरमवृणीत पूषा (१५)

हे सूर्या! तेरे रथ के दोनों चक्रों को ज्ञानीजन ऋतु के अनुसार जानते हैं. तेरे रथ का जो एक चक्र गुप्त है उसे विशेष ज्ञानी ही जानते हैं. (१५)

द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माण ऋतुथा विदुः.
अथैकं चक्रं यद् गुहा तदद्धातय इद् विदुः (१६)

हे शुभ करने वाले अश्विनीकुमारो! तुम दोनों जब वर के द्वारा पूछने योग्य सूर्या के समीप गए, तुम्हारे उसे कर्म को सभी देवों ने सराहा. पूषा ने तुम्हें उसी प्रकार स्वीकार किया जिस प्रकार पुत्र पिता को स्वीकार करता है. (१६)

अर्यमणं यजामहे सुबन्धुं पतिवेदनम्. उर्वारुकमिव
बन्धनात् प्रेतो मुञ्चामि नामुतः (१७)

अच्छे बंधुबांधवों से युक्त पति का ज्ञान देने वाले तथा श्रेष्ठ मनवाले हम तेरा सत्कार करते हैं. खरबूजा जिस प्रकार अपनी बेल से छूट जाता है, उसी प्रकार मैं तुझे तेरे पितृ कुल से छुड़ाता हूं, मैं तुझे पति कुल से अलग नहीं करता. (१७)

प्रेतो मुञ्चामि नामुतः सुबद्धाममुतस्करम्.
यथेयमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रा सुभगासति (१८)

मैं तुझे तेरे पितृकुल से मुक्त करता हूं, पति कुल से नहीं. पतिकुल से तो मैं तुझे भलीभांति बांधता हूं. हे दाता इंद्र! ऐसी कृपा करो कि यह वधू उत्तम पुत्रों वाली

तथा सौभाग्यशालिनी बने. (१८)

प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशाद् येन त्वाबध्नात् सविता सुशेवाः.
ऋतस्य योनौ सुकृतस्य लोके स्योनं ते अस्तु सहसंभलायै (१९)

मैं तुझे वरुण के उस शाप से मुक्त करता हूं, जिस से तुझे सेवा करने योग्य सविता ने बांधा था. सदाचारी और उत्तम कर्म करने वाले पति के घर में तुझे सुख प्राप्त हो. (१९)

भगस्त्वेतो नयतु हस्तगृह्याश्विना त्वा प्र वहतां रथेन.
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो वशिनी त्वं विदथमा वदासि (२०)

भग नाम के देव तेरा हाथ पकड़ कर तुझे यहां से चलाएं. अश्विनीकुमार तुझे रथ में बैठा कर तेरे पति के घर पहुंचाएं. तू अपने पति के घर को जा. वहां तू घर की स्वामिनी बन और सब को वश में रख. पति के घर में तू उत्तम विवेक की बात कह. (२०)

इह प्रियं प्रजायै ते समृध्यतामस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि.
एना पत्या तन्वं१ सं स्पृशस्वाथ जिर्विर्विदथमा वदासि (२१)

अपने पति के घर में तू गार्हपत्य अग्नि के प्रति सचेत रहा. तेरी संतान के लिए वस्तुएं बढ़ें. तू अपनी आयु पूर्ण होने तक बोलती रहे. (२१)

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्य श्नुतम्.
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ (२२)

तुम दोनों पतिपत्नी सदा साथ रहो. तुम कभी एकदूसरे से अलग मत होओ. तुम दोनों जीवन पर्यंत अनेक प्रकार के भोजन करो, अपने पुत्र आदि के साथ क्रीड़ा कर के तथा कल्याण से मुक्त होते हुए सदा प्रसन्न रहो. (२२)

पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम्.
विश्वान्यो भुवना विचष्ट ऋतूंरन्यो विदधज्जायसे नवः (२३)

ये सूर्य और चंद्रमा शिशु के समान क्रीड़ा करते हुए पूर्व से पश्चिम की ओर गमन करते हैं. इनमें से एक अर्थात सूर्य लोकों को देखता हुआ ऋतुओं का निर्माण करता है तथा नवीन रूप में प्रकट होता है. (२३)

नवोनवो भवसि जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेष्यग्रम्.
भागं देवेभ्यो वि दधास्यायन् प्र चन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः (२४)

हे चंद्र! तुम मास में स्थित हो कर सदा नवीन रहते हो. तुम अपनी कलाओं को घटाते और बढ़ाते हुए प्रतिपदा आदि तिथियों का निर्माण करते हो. तुम उषा काल में आगे आ कर देवों को उत्तम भाग देते हो तथा सभी को दीर्घ जीवन

प्रदान करते हो. (२४)

परा देहि शामुल्यं ब्रह्मभ्यो वि भजा वसु.
कृत्यैषा पद्वती भूत्वा जाया विशते पतिम् (२५)

हे वर! तुम उत्तम वस्त्रदान करो तथा ब्राह्मणों को धन दो, जब यह कृत्या अर्थात विनाशक स्वभाव वाली स्त्री बन कर पति के समीप जाती है. (२५)

नीललोहितं भवति कृत्यासक्तिर्व्य ज्यते.
एधन्ते अस्या ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते (२६)

जब नीला और लाल वस्त्र होता है अथवा पुरुष क्रोधित होता है, तभी यह कृत्या अर्थात विनाशक स्वभाव वाली स्त्री बढ़ती है तथा इस की जाति के मनुष्यों की वृद्धि होती है. इसी के कारण इस का पति बंधन में बंध जाता है. (२६)

अश्लीला तनूर्भवति रुशती पापयामुया.
पतिर्यद् वध्वो३ वाससः स्वमङ्गमभ्यूर्णुते (२७)

जब पत्नी के वस्त्र से पति अपना शरीर ढकता है, तब सुंदर शरीर वाला पति भी इस पाप पूर्ण रीति के कारण शोभाहीन हो जाता है. (२७)

आशसनं विशसनमथो अधिविकर्तनम्.
सूर्यायाः पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मोत शुम्भति (२८)

धारी वाले वस्त्रों में सिर के वस्त्र तथा सभी अंगों पर रहने वाले वस्त्रों में कृत्या अर्थात दुष्ट स्वभाव वाली स्त्री के रूपों को देखो. इन रूपों को ब्रह्मा ही तेजस्वी करता है. (२८)

तृष्टमेतत् कटुकमपाष्ठवद् विषवन्नैतदत्तवे.
सूर्यां यो ब्रह्मा वेद स इद् वाधूयमर्हति (२९)

यह अन्न प्यास उत्पन्न करने वाला तथा कड़वा है. यह अन्न घृणित तथा विषैला है. यह खाने योग्य नहीं है. जो ब्राह्मण सूर्या को इस प्रकार की शिक्षा देता है, वह निश्चित रूप से वधू संबंधी वस्त्र लेने योग्य है. (२९)

स इत् तत् स्योनं हरति ब्रह्मा वासः सुमङ्गलम्.
प्रायश्चित्तिं यो अध्येति येन जाया न रिष्यति (३०)

जिस वस्त्र से प्रायश्चित्त होता है अर्थात चित्त शुद्धि होती है तथा जिस के कारण पत्नी मरण को प्राप्त नहीं होती है, उस कल्याणकारी वस्त्र को ब्रह्मा धारण करता है. (३०)

युवं भगं भरतं समृद्धमृतं वदन्तावृतोद्येषु.

ब्रह्मणस्पते पतिमस्यै रोचय चारु संभलो वदतु वाचमेताम् (३१)

हे पति और पत्नी! तुम दोनों सत्य व्यवहारों के रहते हुए तथा सत्य भाषण करते हुए समृद्धि वाला भाग्य प्राप्त करो. हे बृहस्पति! इस पत्नी के हृदय में पति के प्रति रुचि उत्पन्न करो. पति इस के प्रति सुंदर वाणी बोले. (३१)

इहेदसाथ न परो गमाथेमं गावः प्रजया वर्धयाथ.
शुभं यतीरुस्त्रियाः सोमवर्चसो विश्वे देवाः क्रन्निह वो मनांसि (३२)

हे गायो! तुम यहां ही रहो. तुम यहां से दूर मत जाओ. तुम इसे उत्तम संतान के साथ बढ़ाओ. हे गायो! तुम शुभ को प्राप्त कराने वाली तथा चंद्रमा की किरणों के समान प्रभा वाली बनो. सभी देव तुम्हारे हृदयों को स्थिर बनाएं. (३२)

इमं गावः प्रजया सं विशाथायं देवानां न मिनाति भागम्.
अस्मै वः पूषा मरुतश्च सर्वे अस्मै वो धाता सविता सुवाति (३३)

हे गायो! तुम इस के घर में अपनी संतान के साथ प्रवेश करो. यह मनुष्य देवों के भाग का लोप नहीं करता. विधाता और सविता तुम्हें दूसरे मनुष्य के लिए उत्पन्न करते हैं. (३३)

अनृक्षरा ऋजवः सन्तु पन्थानो येभिः सखायो यन्ति नो वरेयम्.
सं भगेन समर्यम्णा सं धाता सृजतु वर्चसा (३४)

हमारे वे सभी मार्ग कंटक रहित और सरल हैं, जिन से हमारे मित्र कन्या के घर तक पहुंचते हैं. धाता, भग और अर्यमा देव इसे तेज से युक्त करें. (३४)

यच्च वर्चो अक्षेषु सुरायां च यदाहितम्.
यद् गोष्वश्विना वर्चस्तेनेमां वर्चसावतम् (३५)

हे अश्विनीकुमारो! जो तेज आंखों में होता है, जो संपत्ति में स्थान प्राप्त करता है तथा जो तेज गायों में है, उसी तेज से इस की रक्षा करो. (३५)

येन महानघ्न्या जघनमश्विना येन वा सुरा.
येनाक्षा अभ्यषिच्यन्त तेनेमां वर्चसावतम् (३६)

हे अश्विनीकुमारो! जिस से बड़ी गौ का निचला दुग्धाशय का भाग, जिस से संपत्ति तथा जिस से आंखें भरी रहती हैं, उस तेज से उस वधू की रक्षा करो. (३६)

यो अनिध्मो दीदयदप्स्व१न्तर्यं विप्रास ईडते अध्वरेषु.
अपां नपान्मधुमतीरपो दा याभिरिन्द्रो वावृधे वीर्या वान् (३७)

जो जलों में बिना ईंधनों के चमकने वाला तेज है, जो यज्ञों के द्विजों का ज्ञान रूप तेज है, जो जलों में मधुरता और पुरुषों में वीर्य है; इस तेज, ज्ञान, माधुर्य और वीर्य से गृहस्थ युक्त हों. इंद्र इन्हीं की अधिकता से सब से महान बने हैं. (३७)

इदमहं रुशन्तं ग्राभं तनूदुषिमपोहामि. यो भद्रो रोचनस्तमुदचामि (३८)

मैं शरीर में दोष उत्पन्न करने वाले विनाशक रोग को दूर करता हूं. जो कल्याणमय तेजस्वी है, उसे अपने पास बुलाता हूं. (३८)

आस्यै ब्राह्मणाः स्नपनीर्हरन्त्वीरघ्नीरुदजन्त्वापः.
अर्यम्णो अग्नि पर्येतु पूषन् प्रतीक्षन्ते श्वशुरो देवरश्च (३९)

ब्राह्मण इस के लिए स्नान का जल ले आएं. वे ऐसा जल लाएं जो वीर का नाश न करे. वह अर्यमा देव की अग्नि की प्रदक्षिणा करे. हे पूषादेव! ससुर और देवर इस वधू की प्रतीक्षा करें. (३९)

शं ते हिरण्यं शमु सन्त्वापः शं मेथिर्भवतु शं युगस्य तदर्म.
शं त आपः शतपवित्रा भवन्तु शमु पत्या तन्वं१ सं स्पृशस्व (४०)

तेरे लिए सुवर्ण कल्याणकारी तथा जल सुख देने वाला हो. गाय बांधने का खंभा तुझे सुख देने वाला हो. जुए का छेद तुझे सुखकर हो. सौ प्रकार से पवित्रता प्रदान करने वाला जल तेरे लिए सुखकारी हो. तू सुखकारक एक रीति से अपने पति के साथ अपने शरीर का स्पर्श कर. (४०)

खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो.
अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्वाकृणोः सूर्यत्वचम् (४१)

हे सौ यज्ञ करने वाले इंद्रदेव! रथ के छिद्र में, गाड़ी के छिद्र तथा जुए के छिद्र में अयोग्य रीति से पाली हुई युवती को तुम ने तीन बार पवित्र कर के सूर्य के समान तेजस्वी त्वचा वाला बनाया है. (४१)

आशासाना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम्.
पत्युरनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृताय कम् (४२)

उत्तम मन, संतान, सौभाग्य और धन की आशा करने वाली तू पति के अनुकूल आचरण करने वाली हो कर सुख पूर्वक अमरत्व के हेतु सिद्ध हो. (४२)

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा.
एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य (४३)

जिस प्रकार शक्तिशाली सागर नदियों पर शासन करता है, उसी प्रकार तू भी अपने पति के घर पहुंच कर सम्राज्ञी बनती हुई निवास कर. (४३)

सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु. ननान्दुः
सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः (४४)

तू ससुरों में स्वामिनी के समान, वरों में महारानी के समान आदर पा कर रह. तू ननद के साथ रानी के समान तथा सास के साथ सम्राज्ञी के समान निवास कर. (४४)

या अकृन्तन्नवयन् याश्च तत्निरे या देवीरन्तां अभितोऽददन्त.
तास्त्वा जरसे सं व्ययन्त्वायुष्मतीदं परि धत्स्व वासः (४५)

जिन देवियों ने स्वयं सूत काता है, जिन्होंने बुना है, जो ताना तानती हैं तथा चारों ओर अंतिम भागों को ठीक रखती हैं, वे तुझे वृद्धावस्था तक रहने के लिए बुनें. तू दीर्घ आयु वाली हो कर इन सब को धन्य बना. (४५)

जीवं रुदन्ति वि नयन्त्यध्वरं दीर्घामनु प्रसितिं दीध्युर्नरः.
वामं पितृभ्यो य इदं समीरिरे मयः पतिभ्यो जनये परिष्वजे (४६)

जीवित मनुष्य की विदाई पर लोग रोते हैं, यज्ञ को साथ ले जाते हैं तथा दीर्घ मार्ग का विचार करते हैं. वे लोग अपने मातापिता के लिए यह सुंदर कार्य करते है. वे पत्नी को सुख देने वाले हैं, जो स्त्री का आलिंगन करते हैं. (४६)

स्योनं ध्रुवं प्रजायै धारयामि तेऽश्मानं देव्याः पृथिव्या उपस्थे.
तमा तिष्ठानुमाद्या सुवर्चा दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु (४७)

मैं पृथ्वी माता के पास संतान के लिए सुख देने वाला तथा स्थिर पत्थर के समान आधार बनाता हूं. तू उस पर खड़ा तथा आनंद का अनुभव कर. तुम उत्तम तेज वाला बनो. सविता तुझे लंबी आयु प्रदान करे. (४७)

येनाग्निरस्या भूम्या हस्तं जग्राह दक्षिणम्.
तेन गृह्णामि ते हस्तं मा व्यथिष्ठा मया सह प्रजया च धनेन च (४८)

जिस कारण अग्नि ने इस भूमि का दायां हाथ ग्रहण किया है, उसी उद्देश्य से मैं तेरा हाथ पकड़ता हूं. तू दुख मत कर. तू मेरे साथ प्रजा अर्थात संतान और धन के साथ निवास कर. (४८)

देवस्ते सविता हस्तं गृह्णातु सोमो राजा सुप्रजसं कृणोतु.
अग्निः सुभगां जातवेदाः पत्ये पत्नीं जरदष्टिं कृणोतु (४९)

सवितादेव तेरा पाणिग्रहण करें. राजा लोग तुझे उत्तम संतान वाली बनाएं. जातवेद अग्नि पति के लिए सौभाग्य वाली स्त्री को वृद्धावस्था तक जीवित रहने वाली बनाएं. (४९)

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः.
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः (५०)

मैं सौभाग्य के लिए तेरा हाथ पकड़ता हूं. तू मुझ पति के साथ वृद्धावस्था तक जीवित रह. भग, अर्यमा, सविता तथा सभी देवों ने तुझ को मेरे हाथ में गृहस्थाश्रम चलने के लिए दिया है. (५०)

भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत्.

पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव (५१)

भग तथा सूर्यदेव ने तेरा हाथ पकड़ा है, इसलिए तू धर्म पूर्वक मेरी पत्नी है और मैं तेरा पति हूं. (५१)

ममेयमस्तु पोष्या मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिः.
मया पत्या प्रजावति सं जीव शरदः शतम् (५२)

बृहस्पति ने तुझे मेरे लिए दिया है. तू मुझ पति के साथ रहती हुई संतान वाली बन तथा सौ वर्ष की आयु भोगती हुई मेरी पोष्या अर्थात पुष्ट होने वाली और पोषण प्राप्त करने वाली बन. (५२)

त्वष्टा वासो व्यदधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिषा कवीनाम्.
तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामिव परि धत्तां प्रजया (५३)

हे शुभे! इस कल्याणकारी वस्त्र को बृहस्पति की आज्ञा से त्वष्टा ने बनाया है. सविता तथा भग देवता सूर्या के समान ही इस स्त्री को इस वस्त्र के द्वारा संतान आदि से संपन्न बनाएं. (५३)

इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा.
बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु (५४)

दोनों अश्विनीकुमार, इंद्र और अग्नि, मित्र और वरुण, आकाश और पृथ्वी, बृहस्पति, वायु, मरुद्गण, ब्रह्म तथा सोम देवता इस स्त्री को संतान से बढ़ाएं. (५४)

बृहस्पतिः प्रथमः सूर्यायाः शीर्षे केशां अकल्पयत्.
तेनेमामश्विना नारीं पत्ये सं शोभयामसि (५५)

हे अश्विनीकुमारो! बृहस्पति ने सूर्या के केशों का विन्यास किया था. उसी के अनुसार हम वरभाव आदि के द्वारा इस स्त्री को पति के निमित्त सजाते हैं. (५५)

इदं तद्रूपं यदवस्त योषा जायां जिज्ञासे मनसा चरन्तीम्.
तामन्वर्तिष्ये सखिभिर्नवग्वैः क इमान् विद्वान् वि चचर्त पाशान् (५६)

इस रूप को योषा धारण करती है. मैं योषा को जानता हूं. मैं इस की नवीन चाल वाली सखियों के अनुसार चलूंगा. यह केश विन्यास किस विद्वान ने किया है. (५६)

अहं वि ष्यामि मयि रूपमस्या वेददित् पश्यन् मनसः कुलायम्.
न स्तेयमद्मि मनसोदमुच्ये स्वयं श्रथ्नानो वरुणस्य पाशान् (५७)

मैं इस के हृदय को जानता हुआ तथा उस के रूप को देखता हुआ अपने से आबद्ध करता हूं. मैं चोरी का काम नहीं करता. मैं स्वयं मन लगा कर तेरे केशों को गूंथता हुआ तुझे वरुण के पाशों से मुक्त करता हूं. (५७)

प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशाद् येन त्वाबध्नात् सविता सुशेवा:.
उरुं लोकं सुगमत्र पन्थां कृणोमि तुभ्यं सहपत्न्यै वधु (५८)

सविता ने तुझे वरुण के जिस पाश में बांधा है उस पाश से मैं तुझे छुड़ाता हूं. हे पत्नी! मैं तेरे साथ लोक के इस विस्तृत मार्ग को सरल बनाता हूं. (५८)

उद्यच्छध्वमप रक्षो हनाथेमां नारीं सुकृते दधात.
धाता विपश्चित् पतिमस्यै विवेद भगो राजा पुर एतु प्रजानन् (५९)

जल प्रदान करो. राक्षसों को मारो. इस स्त्री को पुण्य में प्रतिष्ठित करो. धाता ने इसे पति प्रदान किया है. विद्वान भग इस के सामने हैं. (५९)

भगस्ततक्ष चतुरः पादान् भगस्ततक्ष चत्वार्युष्पलानि.
त्वष्टा पिपेश मध्यतोऽनु वर्ध्रान्त्सा नो अस्तु सुमङ्गली (६०)

भग देवता ने इस के पैरों के लिए चार आभूषणों को तथा शरीर पर धारण करने योग्य चार फूलों को बनाया है. उन्होंने कमर में पहनने योग्य करधनी बनाई है. इन आभूषणों को धारण कर के यह स्त्री उत्तम मंगलमयी बने. (६०)

सुकिंशुकं वहतुं विश्वरूपं हिरण्यवर्णं सुवृतं सुचक्रम्.
आ रोह सूर्ये अमृतस्य लोकं स्योनं पतिभ्यो वहतुं कृणु त्वम् (६१)

हे सूर्या! तू उत्तम पुष्पों वाले, अनेक रूप वाले तथा चमकने वाले अनेक रंगों से सुशोभित इस रथ पर आसीन हो. जो उत्तम वेष्टनों वाला तथा सुंदर पहियों वाला है. तू अमृत के लोक पर पहुंच तथा विवाह के दहेज के रूप में प्राप्त इसे अपने पति के लिए सुखदायक बना. (६१)

अभ्रातृघ्नीं वरुणापशुघ्नीं बृहस्पते.
इन्द्रापतिघ्नीं पुत्रिणीमास्मभ्यं सवितर्वह (६२)

हे बृहस्पति, हे इंद्र, हे सविता देव! इस वधू को अपने भ्राता, पति, पशु आदि का विनाश करने वाली मत बनाओ. इसे पुत्र, धन आदि में संपन्न रूप में हमें प्राप्त कराओ. (६२)

मा हिंसिष्टं कुमार्य१ स्थूणे देवकृते पथि.
शालाया देव्या द्वारं स्योनं कृण्मो वधूपथम् (६३)

हे देव! इस वधू को वहन करने वाले रथ को हानि मत पहुंचाओ. हम इस वधू के मार्ग को शाला के द्वार पर कल्याणमय बनाते हैं. (६३)

ब्रह्मापरं युज्यतां ब्रह्म पूर्वं ब्रह्मान्ततो मध्यतो ब्रह्म सर्वत:.
अनाव्याधां देवपुरां प्रपद्य शिवा स्योना पतिलोके वि राज (६४)

हे वधू! तेरे आगेपीछे, भीतर बाहर एवं मध्य में अर्थात सभी ओर ब्राह्मण रहें.

तू देवों के निवास वाली एवं रोग रहित शाला को प्राप्त कर तथा पति गृह में मंगलमयी होती हुई प्रसन्नता प्राप्त कर. (६४)

सूक्त दूसरा देवता—आत्मा, यक्ष्मानाशिनी

तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यां वहतुना सह.
स नः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह (१)

हे अग्निदेव! हम दहेज के साथ सूर्या को तुम्हारे निमित्त लाए थे. तुम हमें संतान वाली पत्नी दो. (१)

पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा सह वर्चसा.
दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम् (२)

अग्निदेव ने हमें आयु और तेज के साथसाथ पत्नी प्रदान की है. इस का पति दीर्घजीवी हो और सौ वर्ष की आयु प्राप्त करे. (२)

सोमस्य जाया प्रथमं गन्धर्वस्तेऽपरः पतिः.
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः (३)

हे वधू! तू पहले सोम की पत्नी हुई. इस के बाद तू गंधर्वों की पत्नी बनी. इस के बाद तेरे तीसरे पति अग्निदेव बने. मैं मनुष्य तेरा चौथा पति हूं. (३)

सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो ददग्नये.
रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् (४)

हे वधू! सोम ने तुझे गंधर्व को दिया. गंधर्व ने तुझे अग्नि को प्रदान किया तथा अग्नि ने तुझे मेरे लिए दिया है. उन्होंने मुझे धन और पुत्रों से भी संपन्न किया. (४)

आ वामगन्त्सुमतिर्वाजिनीवसू न्यू शिवना हत्सु कामा अरंसत.
अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती प्रिया अर्यम्णो दुर्यां अशीमहि (५)

हे उषाकालीन ऐश्वर्य वाले अश्विनकुमारो! तुम्हारे हृदय में जो अभीष्ट है, वह तुम्हारी कृपामयी बुद्धि के द्वारा हमें प्राप्त हो. तुम हमारे प्रिय तथा रक्षक बनो. हम सूर्यदेव की कृपा से घरों में सुख का भोग करने वाले हैं. (५)

सा मन्दसाना मनसा शिवेन रयिं धेहि सर्ववीरं वचस्यम्.
सुगं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थाणुं पथिष्ठामप दुर्मतिं हतम् (६)

तुम कल्याणकारी मन से वीरों से युक्त धन का पोषण करो. हे अश्विनी कुमारो! तुम इस तीर्थ को सुफल करते हुए मार्ग में प्राप्त होने वाली दुर्गति आदि को दूर करो. (६)

या ओषधयो या नद्यो३ यानि क्षेत्राणि या वना.
तास्त्वा वधु प्रजावतीं पत्ये रक्षन्तु रक्षसः (७)

हे वधू! ओषधि, नदी, श्वेत और वन तुझे संतान वाली बनाएं तथा दुष्टों से तेरे पति की रक्षा करें. (७)

एमं पन्थामरुक्षाम सुगं स्वस्तिवाहनम्.
यस्मिन् वीरो न रिष्यत्यन्येषां विन्दते वसु (८)

हम उस मार्ग पर चलते हैं, जिस पर वाहन सुखपूर्वक चल सकते हैं. इस मार्ग पर वीरों की हानि नहीं होती तथा अन्य जनों का धन प्राप्त होता है. (८)

इदं सु मे नरः शृणुत ययाशिषा दम्पती वाममश्नुतः.
ये गन्धर्वा अप्सरसश्च देवीरेषु वानस्पत्येषु येऽधि तस्थुः.
स्योनास्ते अस्यै वध्वै भवन्तु मा हिंसिषुर्वहतुमुह्यमानम् (९)

हे मनुष्यो! मेरी बात सुनो. वनस्पतियों में गंधर्व तथा अप्सराएं हैं. वे इसे सुख देने वाले हैं इस दहेज रूप धन को नष्ट न करें. इस आशीर्वादात्मक वाणी से ये दोनों उत्तम पदार्थों का उपभोग करें. (९)

ये वध्व श्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनां अनु.
पुनस्तान् यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः (१०)

चंद्रमा के समान प्रसन्नता देने वाले दहेज की ओर जो साधन आते हैं, यज्ञीय देवता उन्हें वहीं पहुंचा दें, जहां से वे आते हैं. (१०)

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीदन्ति दम्पती.
सुगेन दुर्गमतीतामप द्रान्त्वरातयः (११)

जो दस्यु दंपती के समीप आना चाहते हैं, वे इन्हें प्राप्त न कर सकें. हम इस दुर्गम मार्ग को सुगमता से पार करें तथा हमारे शत्रु दुर्गति में पड़ें. (११)

सं काशयामि वहतुं ब्रह्मणा गृहैरघोरेण चक्षुषा मित्रियेण.
पर्याणद्धं विश्वरूपं यदस्ति स्योनं पतिभ्यः सविता तत् कृणोतु (१२)

मैं मंत्रों और नक्षत्रों के द्वारा दहेज को दीप्त करता हूं. इस में जो विभिन्न प्रकार के पदार्थ हैं, सवितादेव उन पदार्थों को प्राप्त करने वालों को सुख देने वाला बनाएं. (१२)

शिवा नारीयमस्तमागन्निमं धाता लोकमस्यै दिदेश.
तामर्यमा भगो अश्विनोभा पजापतिः प्रजया वर्धयन्तु (१३)

इस स्त्री के लिए धाता ने घर के रूप में लोक का निर्माण किया है. यह कल्याणी इसे प्राप्त हो गई है. इस वधू को अश्विनीकुमार, अर्यमा, भग और प्रजापति संतान के द्वारा बढ़ाएं. (१३)

आत्मन्वत्युर्वरा नारीयमागन् तस्यां नरो वपत बीजमस्याम्.
सा वः प्रजां जनयद् वक्षणाभ्यो बिभ्रती दुग्धमृषभस्य रेतः (१४)

हे पुरुष! तू इस उर्वरा नारी में बीजों का वपन कर. वृषभ के समान तेरे वीर्य को और अपने दूध को धारण करने वाले यह तेरे निमित्त संतान उत्पन्न करे. (१४)

प्रति तिष्ठ विराडसि विष्णुरिवेह सरस्वति.
सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् (१५)

हे सरस्वती! तू विष्णु के समान विराट् है. इसलिए तू प्रतिष्ठित हो. हे सिनी वाली! तू भग देवता की सुंदर बुद्धि में रहती हुई संतान उत्पन्न कर. (१५)

उद् व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत.
मादुष्कृतौ व्ये नसावघ्न्यावशुनमारताम् (१६)

हे जलो! अपने कर्म की तरंगों को शांत करो तथा लगामों को ढीला करो. श्रेष्ठ कर्म करने वाले तथा न मारने योग्य वाहन अशुभ न करने लगें. (१६)

अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्यः.
वीरसूर्देवृकामा स त्वयैधिषीमहि सुमनस्यमाना (१७)

हे वधू! तू स्निग्ध दृष्टि रखती हुई तथा पति को क्षीण न करने वाली हो. तू वीर पुत्रों को प्रसन्न करती हुई तथा अपने मन में प्रसन्न होती हुई सब को सुखी करने वाली हो. तू इस घर को प्राप्त हो तथा हम भी तेरे द्वारा वृद्धि प्राप्त करें. (१७)

अदेवृघ्न्यपतिघ्नीहैधि शिवा पशुभ्यः सुयमा सुवर्चाः.
प्रजावती वीरसूर्देवृकामा स्योनेममग्निं गार्हपत्यं सपर्य (१८)

हे वधू! तू अपने पति और देवर को हानि न पहुंचाने वाली, पशुओं का हित करने वाली, प्रजावती, शोभन कांति से युक्त तथा सुख देने वाली होती हुई पति और देवर को कष्ट मत पहुंचाए. तू अग्नि का पूजन कर. (१८)

उत्तिष्ठेतः किमिच्छन्तीदमागा अहं त्वेडे अभिभूः स्वाद् गृहात्.
शून्यैषी निर्ऋते याजगन्थोत्तिष्ठाराते प्र पत मेह रंस्थाः (१९)

हे निर्ऋति! तू यहां से उठ कर भाग. तू किसी वस्तु की इच्छा से यहां उपस्थित हुई है. मैं तुझे अपने घर से भगाता हुआ तेरा सत्कार करता हूं. तू शुभ रूपिणी है तथा शून्य बनाने की इच्छा से यहां आई है, परंतु तू यहां विहार मत कर. (१९)

यदा गार्हपत्यमसपर्यैत् पूर्वमग्निं वधूरियम्.
अधा सरस्वत्यै नारि पितृभ्यश्च नमस्कुरु (२०)

गृहस्थ रूप आश्रम में प्रवेश करने से पहले यह वधू अग्नि का पूजन कर रही है. हे स्त्री! अब तू सरस्वती को तथा पित्तरों को नमस्कार कर. (२०)

शर्म वर्मैतदा हरास्यै नार्या उपस्तरे.
सिनीवालि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् (२१)

इस स्त्री के लिए मृगचर्म रूप आसन मंगल और रक्षा को प्राप्त कराए. ये भग देवता प्रसन्न रहें. हे सिनीवाली! यह स्त्री संतानोत्पत्ति करती रहे. (२१)

यं बल्वजं न्यस्यथ चर्म चोपस्तृणीथन.
तदा रोहतु सुप्रजा या कन्या विन्दते पतिम् (२२)

यह प्रजावती और पति की कामना करने वाली कन्या तुम्हारे द्वारा रखे गए तृण और मृगचर्म पर आसीन हो. (२२)

उप स्तृणीहि बल्वजमधि चर्मणि रोहिते.
तत्रोपविश्य सुप्रजा इममग्निं सपर्यतु (२३)

पहले चटाई फैला दो. इस के बाद मृगचर्म के ऊपर उत्तम प्रजा उत्पन्न करने वाली यह स्त्री अग्नि की उपासना करे. (२३)

आ रोह चर्मोप सीदाग्निमेष देवो हन्ति रक्षांसि सर्वा.
इह प्रजां जनय पत्ये अस्मै सुज्यैष्ठ्यो भवत् पुत्रस्त एषः (२४)

हे स्त्री! तू इस मृगचर्म पर चढ़ कर अग्नि देव के पास बैठ. ये देवता सभी राक्षसों को मारने में समर्थ हैं. तू इस घर में अपनी प्रथम संतान को उत्पन्न कर. यह तेरा ज्येष्ठ पुत्र कहलाएगा. (२४)

वि तिष्ठन्तां मातुरस्या उपस्थान्नानारूपाः पशवो जायमानाः.
सुमङ्गल्युप सीदेममग्निं संपत्नी प्रति भूषेह देवान् (२५)

इस माता से अनेक पुत्र प्रकट हो कर इस की गोद में बैठें. हे सुंदर कल्याण वाली स्त्री! तू अग्नि के पास बैठ कर इन सब देवताओं को सुशोभित कर. (२५)

सुमङ्गली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा पत्ये श्वशुराय शंभूः.
स्योना श्वश्र्वै प्र गृहान् विशेमान् (२६)

तू कल्याणकारी, पति को सुख देने वाली, घर का काम करने वाली ससुर और सास के लिए सुखकारिणी होती हुई घर में प्रवेश कर. (२६)

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः.
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव (२७)

तू पति को सुख देने वाली तथा घर के लिए मंगलमयी हो. तू श्वसुर का कल्याण करने वाली तथा संतानों को सुख देती हुई उन का पालन पोषण कर. (२७)

सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत.
सौभाग्यमस्मै दत्त्वा दौर्भाग्यैर्विपरेतन...(२८)

यह वधू कल्याणमयी है. सब मिल कर इसे देखो. तुम सब इस के दुर्भाग्य को दूर करते हुए इसे भाग्य प्रदान करो. (२८)

या दुर्हार्दो युवतयो याश्चेह जरतीरपि.
वर्चो न्व१स्यै सं दत्ताथास्तं विपरेतन (२९)

जो स्त्रियां दूषित हृदय वाली तथा वृद्धाएं हों, वे इसे तेज प्रदान करती हुईं यहां से चली जाएं. (२९)

रुक्मप्रस्तरणं वह्यं विश्वा रूपाणि बिभ्रतम्.
आरोहत् सूर्या सावित्री बृहते सौभगाय कम् (३०)

सूर्या सुख देने के लिए इस पलंग पर चढ़ी थी जिस पर मन को अच्छा लगने वाला बिछौना बिछा था. (३०)

आ रोह तल्पं सुमनस्यमानेह प्रजां जनय पत्ये अस्मै.
इन्द्राणीव सुबुधा बुध्यमाना ज्योतिरग्रा उषसः प्रति जागरासि (३१)

हे स्त्री! तू प्रसन्न होती हुई इस पलंग पर चढ़ तथा पति हेतु संतान उत्पन्न कर. तू अपने पति के समान बुद्धि से संपन्न बन तथा नित्य उषाकाल में जागने वाली बन. (३१)

देवा अग्रे न्य पद्यन्त पत्नीः समस्पृशन्त तन्वः स्तनूभिः.
सूर्येव नारि विश्वरूपा महित्वा प्रजावती पत्या सं भवेह (३२)

प्राचीन काल में देवताओं ने भी पलंग पर चढ़ कर अपने अंगों से अपनी पत्नियों के अंगों का स्पर्श किया था. हे स्त्री! तू सूर्या के समान ही पति के साथ निवास करती हुई संतानवती बन. (३२)

उत्तिष्ठेतो विश्वावसो नमसेडामहे त्वा.
जामिमिच्छ पितृषदं न्यक्तां स ते भागो जनुषा तस्य विद्धि (३३)

हे विश्वावसु! यहां से उठो. हम तुम्हें नमस्कार करते हैं. तू पिता के घर रहने वाली सुशोभित वधू को प्राप्त करने की इच्छा कर. यह तेरा भाग है. जन्म से उस का ज्ञान प्राप्त कर. (३३)

अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्यं च.
तास्ते जनित्रमभि ताः परेहि नमस्ते गन्धर्वर्तुना कृणोमि (३४)

हविर्धान और सूर्य के मध्य में अप्सराएं साथसाथ मिल कर आनंदित होने वाले कर्म में हर्षित होती हैं. वह तेरा जन्म स्थान है. तू उन के समीप जा. गंधर्व तथा ऋतुओं के साथ मैं तुझे नमन करता हूं. (३४)

नमो गन्धर्वस्य नमसे नमो भामाय चक्षुषे च कृण्मः.
विश्वावसो ब्रह्मणा ते नमोऽभि जाया अप्सरसः परेहि (३५)

गंधर्व के नमस्कार को हमारा नमस्कार है. उस की तेजस्वी आंखों के लिए हम नमस्कार करते हैं. हे सभी प्रकार के धनों के स्वामी! तुझे हम ज्ञानपूर्वक नमन करते हैं. तुम अप्सराओं के समान हमारी पत्नियों से दूर रहो. (३५)

राया वयं सुमनसः स्यामोदितो गन्धर्वमावीवृताम.
अगन्त्स देवः परमं सधस्थमगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः (३६)

हम लोग धन के साथ उत्तम मन वाले हैं. हम यहां रहते हुए गंधर्वों को घेरें. वे हमारा नमस्कार स्वीकार करें. हम उन की कृपा प्राप्त करें. वह देव उस परम श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त हुआ है, जहां अपनी आयु को दीर्घ बनाते हुए हम भी पहुंचते हैं. (३६)

सं पितरावृत्विये सृजेथां माता पिता च रेतसो भवाथः.
मर्य इव योषामधिरोहयैनां प्रजां कृण्वाथामिह पुष्यतं रयिम् (३७)

तुम दोनों ऋतुकाल में मातापिता बनने के लिए संयुक्त होओ. वीर्य के योग से तुम माता और पिता बनो. हे पति! मानवोचित निर्णय से पलंग पर चढ़ो. इस प्रकार तुम संतान को जन्म दो तथा अपने धन की वृद्धि करो. (३७)

तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्या३ वपन्ति.
या न ऊरू उशती विश्रयाति यस्यामुशन्तः प्रहरेम शेपः (३८)

हे पूषादेव! तुम उस कल्याणमयी स्त्री को प्राप्त करो, जिस में बीज बोया जाता है. जो इच्छा करती हुई हमें अपना शरीर समर्पित करती है, हम उस के साथ इंद्रिय सुख प्राप्त करें. (३८)

आ रोहोरुमुप धत्स्व हस्तं परि ष्वजस्व जायां सुमनस्यमानः.
प्रजां कृण्वाथामिह मोदमानौ दीर्घं वामायुः सविता कृणोतु (३९)

हे पति! तू अपनी पत्नी को स्पर्श कर. प्रसन्न होते हुए तुम दोनों संतान को उत्पन्न करो. सवितादेव तुम्हारी आयु में वृद्धि करें. (३९)

आ वां प्रजां जनयतु प्रजापतिरहोरात्राभ्यां समनक्त्वर्यमा.
अदुर्मङ्गली पतिलोकमा विशेमं शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे (४०)

प्रजापति तुम दोनों की संतान को जन्म दें. अर्यमादेव तुम दोनों को रातदिन संयुक्त करें. हे वधू! तू अमंगलों से अलग रहती हुई इस घर में प्रवेश कर और दो पैरों वाले मनुष्यों तथा चार पैरों वाले पशुओं को सुख देने वाली बन. (४०)

देवैर्दत्तं मनुना साकमेतद् वाधूयं वासो वध्वश्च वस्त्रम्.
यो ब्रह्मणे चिकितुषे ददाति स इद् रक्षांसि तल्पानि हन्ति (४१)

मनु के साथसाथ देवों द्वारा दिया हुआ विवाह के समय का यह वस्त्र वधू का वस्त्र है. यह निश्चित रूप से पलंग पर रहने वाले राक्षसों का विनाश करता है. (४१)

यं मे दत्तो ब्रह्मभागं वधूयोर्वाधूयं वासो वध्वश्च वस्त्रम्.
युवं ब्रह्मणेऽनुमन्यमानौ बृहस्पते साकमिन्द्रश्च दत्तम् (४२)

हे बृहस्पति देव! तुम इंद्र के साथ मिल कर वधू का विवाह के समय पहना जाने वाला वस्त्र इस वधू को प्रदान करो. जो ब्राह्मण का भाग है, तुम दोनों वह वस्त्र मुझे प्रदान करते हो. तुम दोनों ब्राह्मण की अनुमति से यह वस्त्र मुझे देते हो. (४२)

स्योनाद्योनेरधि बुध्यमानौ हसामुदौ महसा मोदमानौ.
सुगू सुपुत्रौ सुगृहौ तराथो जीवावुषसो विभातीः (४३)

हम दोनों हंसते हुए प्रसन्नता को तथा सुखपूर्वक ज्ञान को प्राप्त करें. हम सुंदर गति वाले हों तथा पुत्र आदि से संपन्न रहते हुए उषाओं को पार करें. (४३)

नवं वसानः सुरभिः सुवासा उदागां जीव उषसो विभातीः.
आण्डात् पतत्रीवामुक्षि विश्वस्मादेनसस्परि (४४)

मैं नवीन वस्त्र धारण करता हूं. सुगंध धारण कर के उत्तम वस्त्र पहनने वाला मैं जीवधारी मनुष्यों के समान उषा काल में उठता हूं. जिस प्रकार पक्षी अंडे से निकलता है, उसी प्रकार मैं भी सब पापों से छूट जाऊं. (४४)

शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिव्रते.
आपः सप्त सुस्रुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः (४५)

सुशोभित पृथ्वी और आकाश के मध्य चेतन और अचेतन दोनों प्रकार के प्राणी निवास करते हैं. विशाल कर्म वाले आकाश और पृथ्वी तथा ये प्रवाहित होने वाले सात प्रकार के जल हमें पापों से मुक्त करें. (४५)

सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च.
ये भूतस्य प्रचेतसस्तेभ्य इदमकरं नमः (४६)

जो सूर्या को, देवगण को, मित्र और वरुण को तथा सभी प्राणियों को जानने वाले हैं, उन्हें मैं नमस्कार करता हूं. (४६)

य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः.
संधाता संधिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विहुतं पुनः (४७)

जो चिपके बिना तथा छेद किए बिना इन हड्डियों को जोड़ देता है, जो फटे हुए को पुनः जोड़ता है तथा उत्तम और पर्याप्त धन प्रदान करता है, वही ईश्वर है. (४७)

अपास्मत् तम उच्छतु नीलं पिशङ्गमुत लोहितं यत्.
निर्दहनी या पृषातक्य१स्मिन् तां स्थाणावध्या सजामि (४८)

जो नीला, पीला तथा लाल रंग का अंधकार है, वह हम से दूर रहे. जो जलाने वाली दोष की स्थिति इस में है, मैं उसे इस स्तंभ में लगा देता हूं. (४८)

यावती: कृत्या उपवासने यावन्तो राज्ञो वरुणस्य पाशा:.
व्यृद्धयो या असमृद्धयो या अस्मिन् ता स्थाणावधि सादयामि (४९)

उपवस्त्रों में हिंसा करने वाली जो कृत्याएं हैं, राजा वरुण के जितने पाश हैं तथा जो दरिद्रताएं और बुरी अवस्थाएं हैं, उन सब को मैं इस खंभे में स्थापित करता हूं. (४९)

या मे प्रियतमा तनू: सा मे बिभाय वासस:.
तस्याग्रे त्वं वनस्पते नीविं कृणुष्व मा वयं रिषाम (५०)

मेरा प्रिय शरीर मेरे वस्त्र में भयभीत होता है, इसलिए हे वनस्पति! पहले तुम इस की गांठ बांध दो जिस से हम दुखी न हों. (५०)

ये अन्ता यावती: सिचो य ओतवो ये च तन्तव:.
वासो यत् पत्नीभिरुतं तन्न: स्योनमुप स्पृशात् (५१)

इस वस्त्र में जो झालरें और किनारियां हैं, जो ताने और बाने हैं तथा जो वस्त्र स्त्रियों ने बुना है, वह हमारे शरीर का सुखपूर्वक स्पर्श करने वाला हो. (५१)

उशती: कन्यला इमा: पितृलोकात् पतिं यती:.
अव दीक्षामसृक्षत स्वाहा (५२)

पति की इच्छा करने वाली ये कन्याएं पिता के घर से पति के घर जाती हुई दीक्षा का व्रत धारण करें. यही उत्तम उपदेश है. (५२)

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन्.
वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि (५३)

बृहस्पति की यह ओषधि विश्वेदेवों के द्वारा पुष्ट की गई है. हम इसे गायों के तेज से मिलाते हैं. (५३)

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन्.
तेजो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि (५४)

बृहस्पति की रची हुई इस ओषधि को विश्वेदेवों ने पुष्ट किया है. हम इसे उस तेज से संयुक्त करते हैं जो गायों में प्रवेश कर गया है. (५४)

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन्.
भगो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि (५५)

बृहस्पति द्वारा विरचित इस ओषधि को विश्वेदेवों ने धारण किया था. जो भग गायों में प्रवेश कर चुका है, हम इस ओषधि को उस भग से संपन्न करते हैं. (५५)

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन्.
यशो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि (५६)

बृहस्पतिदेव द्वारा इस ओषधि का सृजन हुआ है. गायों में जो यज्ञ प्रवेश कर गया है, मैं उस यज्ञ से इसे संयुक्त करता हूं. (५६)

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन्.
पयो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि (५७)

बृहस्पति द्वारा यह ओषधि विश्वेदेवों के हेतु पुष्ट हुई है. गायों में जो दूध स्थित है, हम इस ओषधि को उस से संयुक्त करते हैं. (५७)

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन्.
रसो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि (५८)

बृहस्पति के द्वारा निर्मित इस ओषधि को सभी देवों ने पुष्ट किया है. गायों में जो रस प्रविष्ट है, हम उस रस से इस ओषधि को संयुक्त करते हैं. (५८)

यदीमे केशिनो जना गृहे ते समनर्तिषू रोदेन कृण्वन्तो३घम्.
अग्निष्ट्वा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् (५९)

लंबे केशों वाले ये लोग तेरे घर में नाचते रहे हैं तथा रोके से पाप करते रहे हैं, अग्निदेव तुझे उस पाप से मुक्त कराएं. (५९)

यदीयं दुहिता तव विकेश्यरुदद् गृहे रोदेन कृण्वत्य१घम्.
अग्निष्ट्वा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् (६०)

तेरी पुत्री अपने केशों को फैला कर रोती रही है, तेरे घर में हुए इस पाप से सविता और अग्नि तुझे छुड़ाएं. (६०)

यज्जामयो यद्युवतयो गृहे ते समनर्तिषू रोदेन कृण्वतीरघम्.
अग्निष्ट्वा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् (६१)

तेरी बहन तथा अन्य स्त्रियां दुखी हुईं और रोती हुई तेरे घर में घूमती रही हैं. सविता और अग्नि तुझे उस पाप से मुक्त करें. (६१)

यत् ते प्रजायां पशुषु यद्वा गृहेषु निष्ठितमघकृद्भिरघं कृतम्.
अग्निष्ट्वा तस्मादेनसः सविता च प्र मुञ्चताम् (६२)

संतान और पशुओं को दुखी करने वालों ने तेरे घर में जिस दुख का विस्तार किया है. उस पाप से सविता और अग्नि तुझे छुड़ाएं. (६२)

इयं नार्युप ब्रूते पूल्यान्यावपन्तिका.

दीर्घायुरस्तु मे पतिर्जीवाति शरदः शतम् (६३)

अग्नि में खीलों की आहुति देती हुई यह वधू कामना करती है कि मेरा पति दीर्घ आयु वाला हो और सौ वर्ष तक जीवित रहे. (६३)

इहेमाविन्द्र सं नुद चक्रवाकेव दम्पती.
प्रजयैनौ स्वस्तकौ विश्वमायुर्व्य श्नुताम् (६४)

हे इंद्र! इन पति और पत्नी को ऐसा प्रेम दो, जैसे चकवी और चकवे में होता है. इन्हें सुंदर घर और संतानों से युक्त रखो. ये दोनों जीवनभर भांतिभांति के सुख भोगते रहें. (६४)

यदासन्द्यामुपधाने यद् वोपवासने कृतम्.
विवाहे कृत्यां यां चक्रुरास्नाने तां नि दध्मसि (६५)

हम ने असंदी अर्थात कुरसी पर, बिस्तर पर, सिरहाने तथा उपवस्त्र पर जो पाप किया और अपने विवाह में जो हिंसक प्रयोग किया, उसे हम स्नान के द्वारा धो डालते हैं. (६५)

यद् दुष्कृतं यच्छमलं विवाहे वहतौ च यत्.
तत् संभलस्य कम्बले मृज्महे दुरितं वयम् (६६)

हम ने विवाह में तथा बरात के रथ में जो दुष्ट और मलिन कर्म किया, उसे हम मधुर भाषी पुरुष के कंबलों से युक्त करते हैं. (६६)

संभले मलं सादयित्वा कम्बले दुरितं वयम्.
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूंषि तारिषत् (६७)

संभल अर्थात दूत में मन को तथा कंबल में पाप को स्थित कर के हम यज्ञ करने योग्य शुद्ध हो जाएं. वह शुद्धि हमारी आयु को शुद्ध बनाए. (६७)

कृत्रिमः कण्टकः शतदन् य एषः.
अपास्याः केश्यं मलमप शीर्षण्यं लिखात् (६८)

यह सैकड़ों दांतों वाला कंघा कृत्रिम रूप से बनाया गया है. यह हमारे शीश पर पहुंच कर हमारे शीश के मैल को छुड़ाए. (६८)

अङ्गादङ्गाद् वयमस्या अप यक्ष्मं नि दध्मसि.
तन्मा प्रापत् पृथिवीं मोत देवान् दिवं मा प्रापदुर्व१न्तरिक्षम्.
अपो मा प्रापन्मलमेतदग्ने यमं मा प्रापत् पितृंश्च सर्वान् (६९)

मैं इस कंघे से अपने शरीर के संहारक दोषों को दूर करता हूं. यह दोष मुझे न लगे, पृथ्वी को, आकाश को, अंतरिक्ष को, देवों को तथा जल को भी वह दोष न लगे. हे अग्नि! यह दोष पितरों तथा उन के अधिष्ठाता देव यमराज को भी न लगे. (६९)

सं त्वा नह्यामि पयसा पृथिव्याः सं त्वा नह्यामि पयसौषधीनाम्.
सं त्वा नह्यामि प्रजसा धनेन सा संनद्धा सनुहि वाजमेमम् (७०)

हे पत्नी! मैं पृथ्वी के जल के समान सारतत्त्व से तथा ओषधियों के सारतत्त्व से तुझे बांधता हूं. तू प्रजा और धन से संपन्न होती हुई मुझे धन देने वाली हो. (७०)

अमोऽहमस्मि सा त्वं सामाहमस्म्यृक् त्वं द्यौरहं.
पृथिवी त्वम्. ताविह सं भवाव प्रजामा जनयावहै (७१)

हे पत्नी! मैं साम हूं और तू ऋचा है. मैं आकाश हूं और तू पृथ्वी है. मैं विष्णु रूप हूं और तू मेरी लक्ष्मी है. हम इस लोक में साथसाथ निवास करते हुए संतान को उत्पन्न करें. (७१)

जनियन्ति नावग्रवः पुत्रियन्ति सुदानवः.
अरिष्टासू सचेवहि बृहते वाजसातये (७२)

हे पत्नी! अविवाहित लोग हम लोगों के समान विवाह करने की इच्छा करते हैं. दाता लोग पुत्र की कामना करते हैं. जब तक हमारे शरीरों में प्राण रहें, तब तक हम दोनों एकत्र हों तथा बल प्राप्ति के लिए मिल कर रहें. (७२)

ये पितरो वधूदर्शा इमं वहतुमागमन्.
ते अस्यै वध्वै संपत्न्यै प्रजावच्छर्म यच्छन्तु (७३)

नव वधू को देखने की इच्छा वाले बहुत से लोग इस बरात को देखेंगे. वे इस वधू के लिए उत्तम सुख प्रदान करें. (७३)

येदं पूर्वागन् रशनायमाना प्रजामस्यै द्रविणं चेह दत्त्वा.
तां वहन्त्वगतस्यानु पन्थां विराडियं सुप्रजा अत्यजैषीत् (७४)

रस्सी के समान बांधने वाली जो नारी पहले इस स्थान को प्राप्त हुई थी, हम संतान और धन के द्वारा उस वधू को उस मार्ग से ले जाएं, जिस पर अब तक कोई नहीं चला है. (७४)

प्र बुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय.
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु (७५)

हे उत्तम बुद्धि वाली! जगाई जाने पर तू सौ वर्ष की दीघार्यु प्राप्त करने के लिए जाग. तू गृहपत्नी बनने के लिए घर चल. सवितादेव तुझे दीर्घ जीवन प्रदान करें. (७५)

130

पंद्रहवां कांड

सूक्त पहला देवता—अध्यात्म, व्रात्य

व्रात्य आसीदीयमान एव स प्रजापतिं समैरयत् (१)

व्रात्य अर्थात समूहों का हित करने वाला समूहपति सब का प्रेरक था. भग ने प्रजापालक को उत्तम प्रेरणा दी. (१)

स प्रजापतिः सुवर्णमात्मन्नपश्यत् तत् प्राजनयत् (२)

उस प्रजापति ने आत्मा को उत्तम तेज से युक्त किया तथा उस ने सब को उत्पन्न किया. (२)

तदेकमभवत् तल्ललाममभवत् तन्महदभवत् तज्ज्येष्ठमभवत् तद्
ब्रह्माभवत् तत् तपोऽभवत् तत् सत्यमभवत् तेन प्राजायत (३)

वह विलक्षण तथा विशाल हुआ. वह श्रेष्ठ ब्रह्म हुआ. वह तपाने वाला तथा सत्य हुआ. उस के द्वारा यह विश्व प्रकट हुआ. (३)

सो ऽवर्धत स महानभवत् स महादेवो ऽभवत् (४)

वह वृद्धि को प्राप्त हुआ. वही महान और महादेव हुआ. (४)

स देवानामीशां पर्यैत् स ईशानोऽभवत् (५)

वह देवों का स्वामी एवं ईशान हुआ. (५)

स एकव्रात्यो ऽभवत् स धनुरादत्त तदेवेन्द्रधनुः (६)

वह एक व्रात्य अर्थात समूहों का स्वामी हुआ. उस ने धनुष उठाया और वह इंद्रधनुष बन गया. (६)

नीलमस्योदरं लोहितं पृष्ठम् (७)

उस का पेट नीला और पीठ लाल है. (७)

नीलेनैवाप्रियं भ्रातृव्यं प्रोर्णोति लोहितेन द्विषन्तं विध्यतीति ब्रह्मवादिनो वदन्ति (८)

वह नीले भाग से अप्रिय शत्रु को घेरता है तथा अपने लाल भाग से द्वेष करने वालों को वेधता है. ऐसा ब्रह्मवादी जन कहते हैं. (८)

सूक्त दूसरा   देवता—अध्यात्म, व्रात्य

स उदतिष्ठत् स प्राचीं दिशमनुव्यचलत् (१)

वह उठ कर पूर्व दिशा में चल दिया. (१)

तं बृहच्च रथन्तरं चादित्याश्च विश्वे च देवा अनुव्य चलन् (२)

बृहत साम, रथंतर साम, सूर्य तथा सभी देवता उस के पीछेपीछे चले. (२)

बृहते च वै स रथन्तराय चादित्येभ्यश्च विश्वेभ्यश्च देवेभ्य आ वृश्चते य एवं विद्वांसं व्रात्यमुपवदति (३)

उस का सत्कार करने वाला बृहत साम, रथंतर, सूर्य और सब देवताओं की प्रिय पूर्व दिशा में अपना प्रिय धाम बनाता है. (३)

बृहतश्च वै स रथन्तरस्य चादित्यानां च विश्वेषां च देवानां प्रियं धाम भवति तस्य प्राच्यां दिशि (४)

जो ऐसे विद्वान व्रतचारी को अपशब्द कहता है, वह बृहत, रथंतर, आदित्य और विश्वेदेवों का अपराधी होता है. (४)

श्रद्धा पुंश्चली मित्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः (५)

श्रद्धा पुंश्चली, मित्र अर्थात सूर्य स्तुति करने वाला, विज्ञान वस्त्र, दिन पगड़ी, रात्रि केश, किरणें कुंडल तथा तारे मणि के समान होते हैं. (५)

भूतं च भविष्यच्च परिष्कन्दौ मनो विपथम् (६)

भूत और भविष्यत—ये दोनों काल उस के रक्षक हैं तथा मन उस का युद्ध संबंधी रथ है. (६)

मातरिश्वा च पवमानश्च विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः (७)

श्वास और उच्छ्‌वास उस के रथ के घोड़े हैं. प्राण उस का सारथी है और वायु उस सारथी का चाबुक है. (७)

कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या यशो गच्छति य एवं वेद (८)

कीर्ति और यश उस के आगे चलने वाले हैं. कीर्ति उस के समीप आती है तथा यश उस के पास आता है. जो इस प्रकार जानता है, उसे कीर्ति और यश

प्राप्त होते हैं. (८)

स उदतिष्ठत् स दक्षिणां दिशमनु व्य चलत् (९)

वह उठा और दक्षिण दिशा की ओर चला. (९)

तं यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च यज्ञश्च यजमानश्च पशवश्चानुव्यचलन् (१०)

यज्ञ करने वाले और न करने वाले, वामदेव से संबंधित, यज्ञ, यजमान उस के अत्यधिक अनुकूल हुए और पीछेपीछे चले. (१०)

यज्ञायज्ञियाय च वै स वामदेव्याय च यज्ञाय च यजमानाय च पशुभ्यश्चा वृश्चते य एवं विद्वांसं व्रात्यमुपवदति (११)

जो इस प्रकार के विद्वान और व्रत का आचरण करने वाले का उपहास करता है, वह यज्ञ करने वाले तथा न करने वाले, वामदेव संबंधी का, यज्ञ का, यजमान का और पशुओं का अपराधी बनता है. (११)

यज्ञायज्ञियस्य च वै स वामदेव्यस्य च यज्ञस्य च यजमानस्य च पशूनां च प्रियं धाम भवति तस्य दक्षिणायां दिशि (१२)

जो उस का सत्कार करता है, वह यज्ञाज्ञिय, वामदेव्य, यज्ञ, यजमान और पशुओं का प्रिय होता है. उस का स्थान दक्षिण दिशा में होता है. (१२)

उषाः पुंश्चली मन्त्रो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः (१३)

उस की उषा स्त्री, मंत्र प्रशंसक, विज्ञान वस्त्र, दिन पगड़ी, रात्रि केश, किरण कुंडल तथा तारे मणि के समान होते हैं. (१३)

अमावास्या च पौर्णमासी च परिष्कन्दौ मनो विपथम्. मातरिश्वा च पवमानश्च विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः. कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या यशो गच्छति य एवं वेद (१४)

अमावस्या और पूर्णमासी उस की रक्षा करने वाली होती हैं. मन उस का युद्ध संबंधी रथ होता है. (१४)

स उदतिष्ठत् स प्रतीचीं दिशमनु व्यचलत् (१५)

वह उठा और पूर्व दिशा में चल दिया. (१५)

तं वैरूपं च वैराजं चापश्च वरुणश्च राजानुव्यचलन् (१६)

जल, वरुण, वैरूप और वैराज उस के पीछेपीछे चले. (१६)

वैरूपाय च वै स वैराजाय चाद्भ्यश्च वरुणाय च राज्ञ आ वृश्चते य एवं विद्वांसं

व्रात्यमुपवदति (१७)

जो इस प्रकार जानने वाले और व्रतधारी का अपमान करता है, वह वैरूप, वैराज, जल और राजा वरुण का अपराधी होता है. (१७)

वैरूपस्य च वै स वैराजस्य चापां च वरुणस्य च राज्ञः प्रियं धाम भवति तस्य प्रतीच्यां दिशि (१८)

जो यह बात जानता है, वह वैरूप, वैराज, जल और राजा वरुण का प्रिय धाम बनता है. (१८)

इरा पुंश्चली हसो मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः (१९)

ऐसे व्यक्ति के लिए पश्चिम दिशा में भूमि स्त्री, हास्य प्रशंसा करने वाला, विज्ञान वस्त्र, दिन पगड़ी, रात्रि केश, किरण कुंडल तथा तारे मणि होते हैं. (१९)

अहश्च रात्री च परिष्कन्दौ मनो विपथम्. मातरिश्वा च पवमानश्च विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः. कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या यशो गच्छति य एवं वेद (२०)

दिन और रात उस के रक्षक होते हैं. (२०)

स उदतिष्ठत् स उदीचीं दिशमनु व्यचलत् (२१)

वह उठा और उत्तर दिशा की ओर चलने लगा. (२१)

तं श्यैतं च नौधसं च सप्तर्षयश्च सोमश्च सोमश्च राजानुव्यचलन् (२२)

श्वेत, नौधस, सप्तर्षि और राजा सोम उस के पीछे चलने लगे. (२२)

श्यैताय च वै स नौधसाय च सप्तर्षिभ्यश्च सोमाय च राज्ञ आ वृश्चते य एवं विद्वांसं व्रात्यमुपवदति (२३)

जो इस प्रकार जानने वाले व्रात्य का अपमान करता है, वह श्वेत, नौधस, सप्तर्षि और राजा सोम का अपराधी बनता है. (२३)

श्यैतस्य च वै स नौधसस्य च सप्तर्षीणां च सोमस्य च राज्ञः प्रियं धाम भवति तस्योदीच्यां दिशि (२४)

जो यह बात जान लेता है वह श्वेत, नौधस, सप्तर्षि और राजा वरुण का प्रिय बनता है. उत्तर दिशा में उस का प्रिय स्थान होता है. (२४)

विद्युत् पुंश्चली स्तनयित्नुर्मागधो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीषं रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ कल्मलिर्मणिः (२५)

उस के लिए बिजली स्त्री, गरजने वाला मेघ प्रशंसक, विज्ञान वस्त्र, दिन पगड़ी, रात केश, किरणें कुंडल तथा तारे मणि बन जाते हैं. (२५)

श्रुतं च विश्रुतं च परिष्कन्दौ मनो विपथम् (२६)

ज्ञान और विज्ञान उस के रक्षक होते हैं तथा मन उस का युद्ध संबंधी रथ होता है. (२६)

मातरिश्वा च पवमानश्च विपथवाहौ वातः सारथी रेष्मा प्रतोदः (२७)

श्वास और उच्छ्वास उस के रथ के घोड़े, प्राण सारथी और वायु उस का चाबुक बनता है. (२७)

कीर्तिश्च यशश्च पुरःसरावैनं कीर्तिर्गच्छत्या यशो गच्छति य एवं वेद (२८)

जो इस बात को जानता है कीर्ति और यश उस के आगे चलने वाले होते हैं. कीर्ति उस के पास आती है और यश उस के समीप आता है. (२८)

सूक्त तीसरा — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

स संवत्सरमूर्ध्वो ऽतिष्ठत् तं देवा अब्रुवन व्रात्य किं नु तिष्ठसीति (१)

वह एक वर्ष तक खड़ा रहा, तब देवताओं ने उस से पूछा—"हे व्रात्य! यह तप क्यों कर रहे हो ?" (१)

सो ऽब्रवीदासन्दीं मे सं भरन्त्विति (२)

उस ने उत्तर दिया—"मेरे लिए आसंदी और बैठने की चौकी बनाओ." (२)

तस्मै व्रात्यायासन्दीं समभरन् (३)

तब देवताओं ने उस के लिए आसंदी बनाई. (३)

तस्या ग्रीष्मश्च वसन्तश्च द्वौ पादावास्तां शरच्च वर्षाश्च द्वौ (४)

उस के दो पाए ग्रीष्म और बसंत ऋतुएं तथा शेष दो पाए शरद और वर्षा नामक ऋतुएं हुई. (४)

बृहच्च रथन्तरं चानूच्येऽ आस्तां यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च तिरश्चये (५)

बृहत और रथंतर उस चौकी के बाजू अर्थात अगलबगल के फलक या तख्ते थे. यज्ञायज्ञिय और वामदेव्य उस के तिरछे फलक अर्थात तख्ते थे. (५)

ऋचः प्राञ्चस्तन्तवो यजूंषि तिर्यञ्चः (६)

ऋग्वेद के मंत्र उसे बुनने के लिए लंबाई के तंतु और यजुर्वेद के मंत्र तिरछे तंतु थे. (६)

वेद आस्तरणं ब्रह्मोपबर्हणम् (७)

वेद उस का बिछौना था और ब्रह्म उस के ओढ़ने का वस्त्र था. (७)

सामासाद उद्गीथो ऽपश्रयः (८)

सामवेद के मंत्र उस का गद्दा था और उद्गीथ उस का तकिया था. (८)

तामासन्दीं व्रात्य आरोहत् (९)

व्रात्य इस प्रकार की ज्ञानमयी चौकी पर चढ़ा. (९)

तस्य देवजनाः परिष्कन्दा आसन्त्संकल्पाः प्रहाय्या३ विश्वानि भूतान्युपसदः (१०)

संकल्प उस के दूत बने तथा सभी प्राणी उस के साथ बैठने वाले हुए. (१०)

विश्वान्येवास्य भूतान्युपसदो भवन्ति य एवं वेद (११)

जो इस बात को जानता है, सभी प्राणी उस के मित्र हो जाते हैं. (११)

सूक्त चौथा — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तस्मै प्राच्या दिशः.
वासन्तौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् बृहच्च रथन्तरं चानुष्ठातारौ (१-२)

देवताओं ने उस के लिए वसंत ऋतु के दो महीनों को पूर्व दिशा में रक्षक नियुक्त किया. बृहतसाम और रथंतर को उस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (१-२)

वासन्तावेनं मासौ प्राच्या दिशो गोपायतो बृहच्च
रथन्तरं चानु तिष्ठतो य एवं वेद (३)

जो यह बात जानता है, वसंत ऋतु के दो महीने, पूर्व दिशा की ओर से उस की रक्षा करते हैं. बृहत साम और रथंतर उस के अनुकूल हो जाते हैं. (३)

तस्मै दक्षिणाया दिशः
ग्रैष्मौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं चानुष्ठातारौ (४-५)

दक्षिण दिशा की ओर देवताओं ने ग्रीष्म ऋतु के दो महीनों को उस का रक्षक बनाया तथा यज्ञायज्ञिय और वामदेव्य को उस का अनुष्ठान करने वाला नियुक्त किया. (४-५)

ग्रैष्मावेनं मासौ दक्षिणाया दिशो गोपायतो यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं चानु तिष्ठतो

य एवं वेद (६)

जो इस बात को जानता है, दक्षिण दिशा की ओर से ग्रीष्म ऋतु के दो महीने उस की रक्षा करते हैं तथा यज्ञायज्ञिय और वामदेव उस के अनुकूल होते हैं. (६)

तस्मै प्रतीच्या दिशः (७)
वार्षिकौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् वैरूपं च वैराजं चानुष्ठातारौ (८)

देवताओं ने पश्चिम दिशा में वर्षा ऋतु के दो महीनों को उस का रक्षक नियुक्त किया तथा वैरूप और वैराज को उस का अनुष्ठान करने वाला नियुक्त किया. (७-८)

वार्षिकावेनं मासौ प्रतीच्या दिशो गोपायतो वैरूपं च वैराजं चानु तिष्ठतो य एवं वेद (९)

जो इस बात को जानता है, वह पश्चिम दिशा की ओर से वर्षा ऋतु के दो महीनों द्वारा रक्षित रहता है तथा वैरूप और वैराज उस के अनुकूल रहते हैं. (९)

तस्मा उदीच्या दिशः (१०)
शारदौ मासौ गोप्तारावकुर्वञ्छ्यैतं च नौधसं चानुष्ठातारौ (११)

देवताओं ने उत्तर दिशा की ओर से शरद ऋतु के दो महीनों को उस का रक्षक नियुक्त किया तथा श्येत और नौधस को उस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (१०-११)

शारदावेनं मासावुदीच्या दिशो गोपायतः श्यैतं च नौधसं चानु तिष्ठतो य एवं वेद (१२)

जो यह बात जानता है, उत्तर दिशा की ओर से उस की रक्षा शरद ऋतु के दो महीने करते हैं तथा नौधस और श्येत उस के अनुकूल बन जाते हैं. (१२)

तस्मै ध्रुवाया दिशः (१३)
हैमनौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् भूमिं चाग्निं चानुष्ठातारौ (१४)

देवताओं ने ध्रुव दिशा अर्थात पृथ्वी की अथवा नीचे की ओर से हेमंत ऋतु के दो महीनों को उस का रक्षक नियुक्त किया तथा पृथ्वी और अग्नि को उस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (१३-१४)

हैमनावेनं मासौ ध्रुवाया दिशो गोपायतो भूमिश्चाग्निश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद (१५)

जो इस बात को जानता है, ध्रुव दिशा की ओर से हेमंत ऋतु के दो महीने उस पुरुष की रक्षा करते हैं. पृथ्वी और अग्नि उस के अनुकूल हो जाते हैं. (१५)

तस्मा ऊर्ध्वाया दिशः (१६)
शैशिरौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् दिवं चादित्यं चानुष्ठातारौ (१७)

देवताओं ने ऊर्ध्व दिशा अर्थात ऊपर की ओर से शिशिर ऋतु के दो महीनों को

उस का रक्षक नियुक्त किया और आकाश तथा सूर्य को उस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (१६-१७)

शैशिरावेनं मासावूर्ध्वाया दिशो गोपायतो द्यौश्चादित्यश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद (१८)

जो इस बात को जानता है. वह ऊपर की दिशा की ओर से शिशिर ऋतु के दो महीनों के द्वारा रक्षित होता है. आकाश तथा सूर्य उस के अनुकूल हो जाते हैं. (१८)

सूक्त पांचवां

देवता—रुद्र

तस्मै प्राच्या दिशो अन्तर्देशाद् भवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् (१)

देवताओं ने पूर्व दिशा के कोने से उस की रक्षा के लिए धनुष धारण करने वाले भव अर्थात महादेव को उस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (१)

भव एनमिष्वासः प्राच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः (२)

जो इस बात को जानता है, धनुष धारण करने वाले भव अर्थात महादेव, शर्व, ईशान उस के अनुकूल रहते हैं. (२)

नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद (३)

जो इसे जानता है, उस के अनुकूल रहने वाले पुरुषों और पशुओं की वे हिंसा नहीं करते. (३)

तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशाच्छर्वमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् (४)

देवताओं ने दक्षिण दिशा की ओर से बाण चलाने वाले शर्व अर्थात शिव को उस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (४)

शर्व एनमिष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः. नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद (५)

जो इस बात को जानता है, दक्षिण दिशा के कोण से शर्व, भव और ईशान उस के अनुकूल रहते हैं. जो पुरुष और पशु उस के अनुकूल होते हैं शर्व उन की हिंसा नहीं करते. (५)

तस्मै प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशात् पशुपतिमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् (६)

देवताओं ने पश्चिम दिशा के कोने से बाण फेंकने वाले पशुपति को उस का अनुष्ठान करने वाला नियुक्त किया. (६)

पशुपतिरेनमिष्वासः प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो

नेशानः. नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद (७)

जो इस बात को जानता है, पशुपति पश्चिम दिशा के कोने से उस के अनुकूल रहते हैं. जो पुरुष और पशु उस के अनुकूल होते हैं, पशुपति उन की हिंसा नहीं करते हैं. (७)

तस्मा उदीच्या दिशो अन्तर्देशादुग्रं देवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् (८)

देवों ने पश्चिम दिशा के कोने से धनुष धारण करने वाले पशुपति को इस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (८)

उग्र एनं देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं
शर्वो न भवो नेशानः. नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद (९)

देवों ने उत्तर दिशा के कोने से धनुष धारण करने वाले उग्रदेव को इस का अनुष्ठान करने वाला बनाया. (९)

तस्मै ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशाद् रुद्रमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् (१०)

जो इस बात को जानता है, धनुष धारण करने वाले उग्रदेव उत्तर दिशा के कोने से इस के पक्ष में रहते हैं, शर्व, भव और ईशान उसे हानि नहीं पहुंचाते. जो पुरुष और पशु इस के अनुकूल होते हैं, उग्रदेव उन की हिंसा नहीं करते. (१०)

रुद्र एनमिष्वासो ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं
शर्वो न भवो नेशानः. नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद (११)

ध्रुव दिशा के कोने से देवों ने धनुष धारण करने वाले रुद्र को इस का अनुष्ठान करने वाला बनाया है. (११)

तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशान्महादेवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् (१२)

बाण धारण करने वाले रुद्र ध्रुव दिशा में इस की रक्षा करते हैं. जो इस बात को जानता है, शर्व, भव और ईशान उसे हानि नहीं पहुंचाते. जो मनुष्य और पशु इस के अनुकूल होते हैं. रुद्र उन की हिंसा नहीं करते. (१२)

महादेव एनमिष्वास ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं
शर्वो न भवो नेशानः. नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद (१३)

देवताओं ने ऊपर की दिशा के कोने से धनुष धारण करने वाले महादेव को तेरा अनुष्ठान करने वाला नियुक्त किया. जो इस बात को जानता है, महादेव ऊपर की दिशा के कोने से उस की रक्षा करते हैं. जो पुरुष और पशु इस के अनुकूल होते हैं, उन की महादेव हिंसा नहीं करते हैं. (१३)

तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्य ईशानमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् (१४)

देवताओं ने उस की सभी दिशाओं के कोनों से रक्षा करने के लिए धनुष धारण करने वाले ईशान को अनुष्ठान करने वाला नियुक्त किया. (१४)

ईशान एनमिष्वासः सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्योऽनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं
शर्वो न भवो नेशानः (१५)
नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद (१६)

जो इस बात को जानता है, ईशान उस की सभी दिशाओं के कोनों से रक्षा करते हैं. जो पुरुष एवं पशु उस के अनुकूल होते हैं, ईशान भव और शर्व उन की हिंसा नहीं करते. (१५-१६)

सूक्त छठा — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

स ध्रुवां दिशमनु व्यचलत् (१)

वह व्रात्य ध्रुव दिशा की ओर चल पड़ा. (१)

तं भूमिश्चाग्निश्चौषधयश्च वनस्पतयश्च वानस्पत्याश्च वीरुधश्चानुव्य चलन् (२)

पृथ्वी, अग्नि, ओषधि, वनस्पति तथा ओषधियां उस के पीछे चले. (२)

भूमेश्च वै सोऽग्नेश्चौषधीनां च वनस्पतीनां च वानस्पत्यानां च
वीरुधां च प्रियं धाम भवति य एवं वेद (३)

जो इस बात को जानता है, वह पृथ्वी, अग्नि, ओषधि एवं वनस्पतियों का प्रिय होता है. (३)

स ऊर्ध्वां दिशमनु व्यचलत् (४)

वह ऊपर की दिशा की ओर चला. (४)

तमृतं च सत्यं च सूर्यश्च चन्द्रश्च नक्षत्राणि चानुव्यचलन् (५)

ऋतु, सत्य, सूर्य, चंद्र और नक्षत्र उस के पीछे चले. (५)

ऋतस्य च वै स सत्यस्य च सूर्यस्य च चन्द्रस्य च नक्षत्राणां च
प्रियं धाम भवति य एवं वेद (६)

जो इस बात को जानता है वह सूर्य, चंद्रमा तथा नक्षत्र का प्रिय स्थान होता है. (६)

स उत्तमां दिशमनु व्यचलत् (७)

वह उत्तर दिशा की ओर चला. (७)

तमृचश्च सामानि च यजूंषि च ब्रह्म चानुव्यचलन् (८)

साम, यजु, ऋचाएं और ब्रह्म उस के पीछे चले. (८)

ऋचां च वै स साम्नां च यजुषां च ब्रह्मणश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद (९)

जो इस बात को जानता है, वह साम, यजु, ऋचा और ब्रह्म का प्रिय धाम होता है. (९)

स बृहतीं दिशमनु व्यचलत् (१०)

उस ने बृहती दिशा में गमन किया. (१०)

तमितिहासश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसीश्चानुव्य चलन् (११)

पुराण, इतिहास तथा मनुष्यों की प्रशंसात्मक गाथाएं उस के पीछेपीछे चलीं. (११)

इतिहासस्य च वै स पुराणस्य च गाथानां च नाराशंसीनां च
प्रियं धाम भवति य एवं वेद (१२)

इस बात को जो जानता है, वह पुराण, इतिहास तथा गाथाओं का प्रिय धाम बनता है. (१२)

स परमां दिशमनु व्यचलत् (१३)

उस ने परम दिशा की ओर प्रस्थान किया. (१३)

तमाहवनीयश्च गार्हपत्यश्च दक्षिणाग्निश्च यज्ञश्च यजमानश्च पशवश्चानुव्य चलन् (१४)

आह्वनीय, गार्हपत्य तथा दक्षिण अग्नियां उस के पीछेपीछे चलीं. (१४)

आहवनीयस्य च वै स गार्हपत्यस्य च दक्षिणाग्नेश्च यज्ञस्य च
यजमानस्य च पशूनां च प्रियं धाम भवति य एवं वेद (१५)

जो इस बात को जानता है, आह्वनीय, गार्हपत्य और दक्षिण नाम की अग्नियों का वह प्रिय धाम बनता है. (१५)

सोऽनादिष्टां दिशमनु व्यचलत् (१६)

वह अनादिष्ट दिशा की ओर चल पड़ा. (१६)

तमृतवश्चार्तवाश्च लोकाश्च लौक्याश्च मासाश्चार्धमासाश्चाहोरात्रे चानुव्य चलन् (१७)

ऋतुएं, पदार्थ, लोक, मास, पक्ष, दिवस और रात्रि उस के पीछेपीछे चलने लगे. (१७)

ऋतूनां च वै स आर्तवानां च लोकानां च लौक्यानां च मासानां
चार्धमासानां चाहोरात्रयोश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद (१८)

जो इस बात को जानता है, वह पुरुष ऋतुओं, पदार्थों, लोक, मासों, पक्षों,

दिवसों और रात्रियों का प्रिय धाम बनता है. (१८)

सोऽनावृत्तां दिशमनु व्यचलत् ततो नावर्त्स्यन्नमन्यत (१९)

वह अनावृत दिशा की ओर चला. (१९)

तं दितिश्चादितिश्चेडा चेन्द्राणी चानुव्यचलन् (२०)

इडा, इंद्राणी, दिति और अदिति उस के पीछेपीछे चलीं. (२०)

दितेश्च वै सोऽदितेश्चेडायाश्चन्द्राण्याश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद (२१)

जो इस बात को जानता है, वह पुरुष इडा, इंद्राणी, दिति और अदिति का प्रिय धाम बनता है. (२१)

स दिशोऽनु व्य चलत् तं विराडनु व्यचलत् सर्वे च देवा: सर्वाश्च देवता: (२२)

उस ने दिशाओं की ओर गमन किया. विराट, अदिति देव और देवता उस के पीछेपीछे चलने लगे. (२२)

विराजश्च वै स सर्वेषां च देवानां सर्वासां च देवतानां.
प्रियं धाम भवति य एवं वेद (२३)

जो इस बात को जानता है, वह विराट और सभी देवों का प्रिय धाम होता है. (२३)

स सर्वानन्तर्देशाननु व्यचलत् (२४)

वह सभी अंतर्दिशाओं की ओर चला. (२४)

तं प्रजापतिश्च परमेष्ठी च पिता च पितामहश्चानुव्यचलन् (२५)

प्रजापति, परमेष्ठी पिता और पितामह उस के पीछे चले. (२५)

प्रजापतेश्च वै स परमेष्ठिनश्च पितुश्च पितामहस्य च
प्रियं धाम भवति य एवं वेद (२६)

जो पुरुष इस बात को जानता है वह प्रजापति, परमेष्ठी, पिता और पितामह का प्रिय धाम होता है. (२६)

सूक्त सातवां — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

स महिमा सद्रुर्भूत्वान्तं पृथिव्या अगच्छत् स समुद्रो ऽभवत् (१)

वह बड़ा समर्थ और गतिशाली हो कर पृथ्वी के अंत तक गया है और वह सागर बन गया. (१)

तं प्रजापतिश्च परमेष्ठी च पिता च पितामहश्चापश्च श्रद्धा च वर्षं भूत्वानुव्य वर्तयन्त (२)

उस के साथ प्रजापति, परमेष्ठी, पिता, पितामह श्रद्धा और वृष्टि हो कर रहने लगे. (२)

ऐनमापो गच्छत्यैनं श्रद्धा गच्छत्यैनं वर्षं गच्छति य एवं वेद (३)

जो इस बात को जानता है, जल उसे प्राप्त होते हैं. उसे श्रद्धा और वर्षा प्राप्त होती है. (३)

तं श्रद्धा च यज्ञश्च लोकश्चान्नं चान्नाद्यं च भूत्वाभिपर्यावर्तन्त (४)

श्रद्धा, यज्ञ, लोक अन्न और खानपान उस के चारों ओर रहने लगे. (४)

ऐनं श्रद्धा गच्छत्यैनं यज्ञो गच्छत्यैनं लोको गच्छत्यैनमन्नं
गच्छत्यैनमन्नाद्यं गच्छति य एवं वेद (५)

जो यह जानता है, उसे श्रद्धा प्राप्त होती है, उसे लोक प्राप्त होते हैं. उस को अन्न प्राप्त होता है और उस को खानपान प्राप्त होता है. (५)

सूक्त आठवां — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

सो ऽरज्यत ततो राजन्योऽजायत (१)

वह अनुरक्त हुआ. उस के बाद वह राजा बन गया. (१)

स विशः सबन्धूनन्नमन्नाद्यमभ्युदतिष्ठत् (२)

वह प्रजाओं के, बंधुओं के अन्न के और खानपान के अनुकूल व्यवहार करने लगा. (२)

विशां च वै स सबन्धूनां चान्नस्य चान्नाद्यस्य च प्रियं धाम भवति य एवं वेद (३)

जो पुरुष इस प्रकार जानता है, वह प्रजाओं, अन्नों और खानपान का प्रिय धाम होता है. (३)

सूक्त नौवां — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

स विशोऽनु व्य चलत् (१)

उस ने प्रजाओं के अनुकूल व्यवहार किया. (१)

तं सभा च समितिश्च सेना च सुरा चानुव्य चलन् (२)

इस से समिति, सभा, सेना और सुख उस के अनुकूल हुए. (२)

सभायाश्च वै स समितेश्च सेनायाश्च सुरायाश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद (३)

इस बात के जानने वाला सभी, समिति, सेनाओं को सुरानुकूलता प्राप्त करता है. (३)

सूक्त दसवां देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो राज्ञोऽतिथिर्गृहानागच्छेत् (१)
श्रेयांसमेनमात्मनो मानयेत् तथा क्षत्राय ना वृश्चते तथा राष्ट्राय ना वृश्चते (२)

ऐसा विशेष ज्ञानी व्रात्य जिस राजा का अतिथि हो, राजा उस का सम्मान करे. ऐसा करने से व्रात्य राष्ट्र को तथा क्षत्र शक्ति को नष्ट नहीं करता. (१-२)

अतो वै ब्रह्म च क्षत्रं चोदतिष्ठतां ते अब्रूतां कं प्र विशावेति (३)

इस के बाद ब्रह्म बल और क्षात्र शक्ति को हम किस में प्रवेश करें. (३)

अतो वै बृहस्पतिमेव ब्रह्म प्रा विशत्विन्द्रं क्षत्रं तथा वा इति (४)

ब्रह्मबल बृहस्पति में और क्षात्र बल इंद्र में प्रवेश करे. (४)

अतो वै बृहस्पतिमेव ब्रह्म प्राविशदिन्द्रं क्षत्रम् (५)

तब ब्रह्म बल बृहस्पति में और क्षात्र बल इंद्र में प्रविष्ट हुए. (५)

इयं वा उ पृथिवी बृहस्पतिर्द्यौरेवेन्द्रः (६)

आकाश ही इंद्र है और पृथ्वी ही बृहस्पति है. (६)

अयं वा उ अग्निर्ब्रह्मासावादित्यः क्षत्रम् (७)

आदित्य क्षत्र बल है और अग्नि ब्रह्म बल है. (७)

ऐनं ब्रह्म गच्छति ब्रह्मवर्चसी भवति (८)
यः पृथिवीं बृहस्पतिमग्निं ब्रह्म वेद (९)

जो पृथ्वी, बृहस्पति और अग्नि को ब्रह्म जानता है, वह ब्रह्म बल और ब्रह्म वर्च को प्राप्त करता है. (८-९)

ऐनमिन्द्रियं गच्छतीन्द्रियवान् भवति (१०)
य आदित्यं क्षत्रं दिवमिन्द्रं वेद (११)

जो आदित्य को क्षत्र और द्युलोक को इंद्र जानता है, उसे इंद्रियां प्राप्त होती हैं. (१०-११)

सूक्त ग्यारहवां देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽतिथिर्गृहानागच्छेत् (१)

स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वा ऽवात्सीर्व्रात्योदकं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति (२)

इस प्रकार का विशेष ज्ञानी व्रात्य जिस घर में अतिथि हो, उसे स्वयं आसन दे कर कहे—हे व्रात्य! तुम कहां निवास करते हो ? यह जल है. हमारे घर के व्यक्ति तुम्हें संतुष्ट करें. तुम्हें जो प्रिय हो, जैसा तुम्हारा वश हो और जैसा तुम्हारा काम हो उसी प्रकार का रहे. (१-२)

यदेनमाह व्रात्य क्वा ऽवात्सीरिति पथ एव तेन देवयानानव रुन्द्धे (३)

यह कहने पर कि हे व्रात्य! तुम कहां रहोगे ? देवयान मार्ग ही खुल जाता है. (३)

यदेनमाह व्रात्योदकमित्यप एव तेनाव रुन्द्धे (४)

व्रात्य से यह कहने वाला कि हे व्रात्य! यह जल है, अपने लिए जल को ही खोल लेता है. (४)

यदेनमाह व्रात्य तर्पयन्त्विति प्राणमेव तेन वर्षीयांसं कुरुते (५)

यह कहने वाला कि हमारे व्यक्ति तुम्हें तृप्त करें, अपने ही प्राणों को सींचता है. (५)

यदेनमाह व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्त्विति प्रियमेव तेनाव रुन्द्धे (६)

ऐसा जानने वाला व्यक्ति प्रिय पुरुष को प्राप्त होता हुआ प्रिय पुरुष का भी प्रिय हो जाता है. (६)

ऐनं प्रियं गच्छति प्रियः प्रियस्य भवति य एवं वेद (७)

यह कहने वाला कि जैसा तुम्हारा वक्ष है वैसा ही हो, अपने हेतु वक्ष को खोल लेता है. (७)

यदेनमाह व्रात्य यथा ते वशस्तथास्त्विति वशमेव तेनाव रुन्द्धे (८)

यह कहने वाला कि जैसा तुम्हारी इच्छा है, वैसा ही हो, अपने लिए इच्छाओं को ही खोल लेता है. (८)

ऐनं वशो गच्छति वशी वशिनां भवति य एवं वेद (९)

इस बात को जानने वाला वश को प्राप्त करता है. वह वश में करने वालों को भी वश में कर लेता है. (९)

यदेनमाह व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति निकाममेव तेनाव रुन्द्धे (१०)

यह कहने वाला कि तुम्हारा निवास जैसा है, वैसा ही हो, अपने लिए

कामनाओं का द्वार खोल लेता है. (१०)

ऐनं निकामो गच्छति निकामे निकामस्य भवति य एवं वेद (११)

इस प्रकार जानने वाला अभीष्ट को प्राप्त करता है. (११)

सूक्त बारहवां देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य उद्धृतेष्वग्निष्वधिश्रितेऽग्निहोत्रेऽतिथिर्गृहानागच्छेत् (१)
स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्यति सृज होष्यामीति (२)

जिस के घर में ऐसा विद्वान व्रतधारी अतिथि बन कर उस समय आए, जब अग्नियां प्रदीप्त हो गई हों और अग्निहोम चल रहा हो तो गृहस्थ स्वयं उस के सामने जा कर कहे कि हे व्रती! तुम आज्ञा दो, मैं हवन करूंगा. (१-२)

स चातिसृजेज्जुहुयान्न चातिसृजेन्न जुहुयात् (३)

अतिथि विद्वान आज्ञा दे, तभी हवन करे. यदि वह आज्ञा न दे तो हवन न करे. (३)

स य एवं विदुषा व्रात्येनातिसृष्टो जुहोति (४)
प्र पितृयाणं पन्थां जानाति प्र देवयानम् (५)

जो इस प्रकार के विद्वान व्रतधारी की आज्ञा से हवन करता है, वह पितृयान और देवयान मार्ग पर जाता है. (४-५)

न देवेष्वा वृश्चते हुतमस्य भवति (६)
पर्यस्यास्मिल्लोक आयतनं शिष्यते य एवं विदुषा व्रात्येनातिसृष्टो जुहोति (७)

जो इस प्रकार के विद्वान व्रतधारी की आज्ञा से हवन करता है, उस का अग्निहोम सफल होता है तथा देवों इस का कोई दोष नहीं होता. इस लोक के उस गृहस्थ का आश्रम सुरक्षित रहता है. (६-७)

अथ य एवं विदुषा व्रात्येनानतिसृष्टो जुहोति (८)
न पितृयाणं पन्थां जानाति न देवयानम् (९)

जो इस प्रकार के विद्वान व्रतधारी की आज्ञा के बिना हवन करता है, वह न पितृयान मार्ग को जानता है और न देवयान मार्ग का उसे ज्ञान होता है. (८-९)

आ देवेषु वृश्चते अहुतमस्य भवति (१०)

उस का हवन विफल होता है और वह देवों का अपराधी होता है. (१०)

नास्यास्मिल्लोक आयतनं शिष्यते य एवं विदुषा व्रात्येनानतिसृष्टो जुहोति (११)

इस लोक में उस का आधार नहीं रहता जो ऐसे विद्वान की आज्ञा के बिना

हवन करता है. (११)

सूक्त तेरहवां

देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य एकां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति (१)
ये पृथिव्यां पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे (२)

जिस के घर में ऐसा विद्वान व्रात्य रात्रि में अतिथि होता है, वह उस के आने के फल से पृथ्वी के सभी पुण्य लोकों पर विजय प्राप्त करता है. (१-२)

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो द्वितायां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति (३)
येऽन्तरिक्षे पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे (४)

जिस गृहस्थ के घर में ऐसा विद्वान व्रात्य रात्रि में निवास करता है, वह गृहस्थ उस के फल के रूप में अंत में स्थित सभी पुण्य लोकों को जीत लेता है. (३-४)

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यस्तृतीयां रात्रिमतिथिर्गृहे वसति (५)
ये दिवि पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे (६)

यदि ऐसा विद्वान व्रात्य अतिथि के रूप में गृहस्थ के घर में तीसरी रात्रि में भी निवास करता है तो उस के फल से वह गृहस्थ आकाश में स्थित समस्त पुण्य लोकों को अपने लिए मुक्त कर लेता है. (५-६)

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्यश्चतुर्थीं रात्रिमतिथिर्गृहे वसति (७)
ये पुण्यानां पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे (८)

जिस गृहस्थ के घर में ऐसा व्रात्य चौथी रात निवास करता है तो उस के फल के रूप में वह गृहस्थ पुण्यात्माओं के सभी लोकों को अपने लिए मुक्त कर लेता है. (७-८)

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽपरिमिता रात्रीरतिथिर्गृहे वसति (९)
य एवापरिमिताः पुण्या लोकास्तानेव तेनाव रुन्द्धे (१०)

जिस गृहस्थ के घर में ऐसा विद्वान व्रात्य अनेक रातों तक निवास करता है तो उस के फल के रूप में वह गृहस्थ अनेक पुण्य लोकों को अपने लिए मुक्त कर लेता है. (९-१०)

अथ यस्याव्रात्यो व्रात्यब्रुवो नामबिभ्रत्यतिथिर्गृहानागच्छेत् (११)
कर्षेदेनं न चैनं कर्षेत् (१२)

जिस के घर अपने आपको व्रात्य बताने वाला कोई अव्रात्य आए तो क्या गृहस्थ उसे अपने घर से भगा दे. नहीं, उस को भी भगाना नहीं चाहिए. (११-१२)

अस्यै देवताया उदकं याचामीमां देवतां वासय इमामिमां

देवतां परि वेवेष्मीत्येनं परि वेविष्यात् (१३)

मैं इस देवता को अपने घर में निवास देता हूं. मैं इस से जल ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूं. मैं इस देवता के लिए भोजन परोसता हूं. ऐसा स्वीकार करता हुआ उस के लिए भोजन परोसना आदि कार्य करे. (१३)

तस्यामेवास्य तद् देवतायां हुतं भवति य एवं वेद (१४)

जो इस बात को जानता है, उस की आहुति देवताओं के लिए दी जाने पर उत्तम आहुति बन जाती है. (१४)

सूक्त चौदहवां — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

स यत् प्राचीं दिशमनु व्यचलन्मारुतं शर्धो भूत्वानुव्य चलन्मनोऽन्नादं कृत्वा (१)

जब वह पूर्व दिशा की ओर चला, तब उस ने बलशाली हो कर अपनी आयु के अनुकूल आचरण करते हुए अपने मन को अन्नाद अर्थात अन्न खाने वाला बनाया. (१)

मनसान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (२)

जो मनुष्य इस बात को जानता है, वह अन्नाद मन से अन्न को खाता है. (२)

स यद् दक्षिणां दिशमनु व्यचलदिन्द्रो भूत्वानुव्य चलद् बलमन्नादं कृत्वा (३)

जब वह दक्षिण दिशा की ओर गया, तब वह अपने बल को अन्नाद बताता हुआ इंद्र बन कर गमनशील हुआ. (३)

बलेनान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (४)

इस बात को जानने वाला अन्नाद बल से अन्न का सेवन करता है. (४)

स यत् प्रतीचीं दिशमनु व्यचलद् वरुणो राजा भूत्वानुव्य चलपदोऽन्नादीः कृत्वा (५)

जब वह पश्चिम दिशा की ओर चला, तब वह जल को अन्नाद बताता हुआ वरुण बन कर गतिशील हुआ. (५)

अद्भिरन्नादिभिरन्नमत्ति य एवं वेद (६)

इस बात को जानने वाला अन्नाद जल से अन्न का भक्षण करता है. (६)

स यदुदीचीं दिशमनु व्यचलत् सोमो राजा भूत्वानुव्य
चलत् सप्तर्षिभिर्हुत आहुतिमन्नादीं कृत्वा (७)

जब वह उत्तर दिशा की ओर चला, तब वह सप्तर्षियों द्वारा दी गई आहुति को अन्नाद बना कर तथा सोम हो कर चला. (७)

आहुत्यान्नाद्यान्नमत्ति य एवं वेद (८)

इस बात को जानने वाला अन्नाद आहुति से अन्न का भक्षण करता है. (८)

स यद् ध्रुवां दिशमनु व्यचलद् विष्णुर्भूत्वानुव्य चलद् विराजमन्नादीं कृत्वा (९)

जब वह ध्रुव दिशा की ओर चला, तब विराट को अन्नाद बता कर स्वयं विष्णु रूप में चला. (९)

विराजान्नाद्यान्नमत्ति य एवं वेद (१०)

इस बात को जानने वाला अन्नाद विराट के द्वारा अन्न का भक्षण करता है. (१०)

स यत् पशूननु व्यचलद् रुद्रो भूत्वानुव्य चलदोषधीरन्नादीः कृत्वा (११)

जब वह पशुओं की ओर चला तब ओषधियों को अन्नाद बनाते हुए उस ने रुद्र के रूप में गमन किया. (११)

ओषधीभिरन्नादीभिरन्नमत्ति य एवं वेद (१२)

इस बात को जानने वाला अन्नाद ओषधियों से अन्न को खाता है. (१२)

स यत् पितृननु व्यचलद् यमो राजा भूत्वानुव्य चलत् स्वधाकारमन्नादं कृत्वा (१३)

जब वह पितरों की ओर चला, तब उस ने स्वधा को अन्नाद बनाया और वह हो स्वयं यमराजा बन कर चला. (१३)

स्वधाकारेणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (१४)

इस बात को जानने वाला स्वधाकार अन्नाद से अन्न को खाता है. (१४)

यन्मनुष्या३ननु व्यचलदग्निर्भूत्वानुव्य चलत् स्वाहाकारमन्नादं कृत्वा (१५)

जब वह मनुष्यों की ओर चला, तब स्वाहा को अन्नाद बना कर अग्नि होता हुआ चला. (१५)

स्वाहाकारेणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (१६)

इस बात को जानने वाला स्वाहाकार अन्नाद के द्वारा अन्न का सेवन करता है. (१६)

स यदूर्ध्वां दिशमनु व्यचलद् बृहस्पतिर्भूत्वानुव्य चलद् वषट्कारमन्नादं कृत्वा (१७)

जब वह ऊर्ध्व दिशा की ओर चला, तब वषटकार को अन्नाद बना कर बृहस्पति बनता हुआ चला. (१७)

वषट्कारेणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (१८)

इस बात को जानने वाला वषटकार रूप अन्नाद के द्वारा अन्न का भक्षण करता है. (१८)

स यद् देवाननु व्यचलदीशानो भूत्वानुव्य चलन्मन्युमन्नादं कृत्वा (१९)

जब वह देवता की ओर चला, तब यज्ञ को अन्नाद बना कर ईशान बनता हुआ चला. (१९)

मन्युनान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (२०)

इस बात को जानने वाला अन्नाद यज्ञ के द्वारा अन्न को खाता है. (२०)

स यत् प्रजा अनु व्यचलत् प्रजापतिर्भूत्वानुव्य चलत् प्राणमन्नादं कृत्वा (२१)

जब वह प्रजाओं की ओर चला, तब प्राण को अन्नाद बना कर प्रजापति के रूप में चला. (२१)

प्राणेनान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (२२)

इस बात को जानने वाला अन्नाद प्राण के द्वारा अन्न का भोजन करता है. (२२)

स यत् सर्वानन्तर्देशाननु व्यचलत् परमेष्ठी भूत्वानुव्य चलद् ब्रह्मान्नादं कृत्वा (२३)

जब वह सब अंतर्देशों की ओर चला, तब ब्रह्म को अन्नाद बना कर प्रजापति बनाता हुआ चला. (२३)

ब्रह्मणान्नादेनान्नमत्ति य एवं वेद (२४)

इस बात को जानने वाला पुरुष अन्नाद ब्रह्म के द्वारा अन्न का भोजन करता है. (२४)

सूक्त पंद्रहवां — देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तस्य व्रात्यस्य (१)

सप्त प्राणाः सप्तापानाः सप्त व्यानाः (२)

इस व्रात्य के सात प्राण, सात अपान तथा सात ही व्यान हैं. (१-२)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य प्रथमः प्राण ऊर्ध्वो नामायं सो अग्निः (३)

इस वात्य का पहला ऊर्ध्व प्राण अग्नि है. (३)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य द्वितीयः प्राणः प्रौढो नामासौ स आदित्यः (४)

इस व्रात्य का द्वितीय प्रौढ़ प्राण आदित्य है. (४)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य तृतीयाः प्राणो३भ्यू ढो नामासौ स चन्द्रमाः (५)

इस का जो तृतीय प्राण है, वह अभ्यूढ़ नाम का चंद्रमा है. (५)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य चतुर्थः प्राणो विभूर्नामायं स पवमानः (६)

इस का चतुर्थ प्राण विभु पवमान है. (६)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य पञ्चमः प्राणो योनिर्नाम ता इमा आपः (७)

इस व्रात्य का पांचवां प्राण योनि जल है. (७)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य षष्ठः प्राणः प्रियो नाम त इमे पशवः (८)

इस का छठा प्राण प्रिय नाम वाला पशु है (८)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य सप्तमः प्राणोऽपरिमितो नाम ता इमाः प्रजाः (९)

इस के सप्तम प्राण का नाम अपरिमित है. यह प्रजा है. (९)

सूक्त सोलहवां देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य प्रथमोऽपानः सा पौर्णमासी (१)

इस व्रात्य का प्रथम अपान पूर्णमासी है. (१)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य द्वितीयोऽपानः साष्टका (२)

इस का द्वितीय अपान अष्टकार है. (२)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य तृतीयोऽपानः सामावास्या (३)

इस का तृतीय अपान अमावस्या है. (३)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य चतुर्थोऽपानः सा श्रद्धा (४)

इस का चतुर्थ अपान श्रद्धा है. (४)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य पञ्चमोऽपानः सा दीक्षा (५)

इस का पांचवां अपान दीक्षा है. (५)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य षष्ठोऽपानः स यज्ञः (६)

इस का छठा अपान यज्ञ है. (६)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य सप्तमोऽपानस्ता इमा दक्षिणाः (७)

इस का सप्तम अपान दक्षिणा है. (७)

सूक्त सत्रहवां देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य प्रथमो व्यानः सेयं भूमिः (१)

इस व्रात्य का प्रथम व्यान भूमि है. (१)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य द्वितीयो व्यानस्तदन्तरिक्षम् (२)

इस का द्वितीय व्यान अंतरिक्ष है. (२)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य तृतीयो व्यानः सा द्यौः (३)

इस का तृतीय व्यान द्यौ है. (३)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य चतुर्थो व्यानस्तानि नक्षत्राणि (४)

इस का चतुर्थ व्यान नक्षत्र है. (४)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य पञ्चमो व्यानस्त ऋतवः (५)

इस का पांचवां व्यान ऋतु हैं. (५)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य षष्ठो व्यानस्त आर्तवाः (६)

इस का छठा व्यान आर्तव है. (६)

तस्य व्रात्यस्य. योऽस्य सप्तमो व्यानः स संवत्सरः (७)

इस का सातवां व्यान संवत्सर है. (७)

तस्य व्रात्यस्य. समानमर्थं परि यन्ति देवाः संवत्सरं वा
एतदृतवोऽनुपरियन्ति व्रात्यं च (८)

देवगण इस के समान अर्थ को प्राप्त होते तथा संवत्सर और ऋतुएं भी इस का अनुमान करते हैं. (८)

तस्य व्रात्यस्य. यदादित्यमभिसंविशन्त्यमावास्यां चैव तत् पौर्णमासीं च (९)
तस्य व्रात्यस्य. एकं तदेषाममृतत्वमित्याहुतिरेव (१०)

अमावस्या और पूर्णिमा आदित्य में प्रवेश करती हैं. आहुति ही इन का अविनाशी होना है. (९-१०)

सूक्त अठारहवां देवता—अध्यात्म, व्रात्य

तस्य व्रात्यस्य (१)

इस व्रात्य का दक्षिण चक्षु आदित्य है. (१)

यदस्य दक्षिणमक्ष्यसौ स आदित्यो यदस्य सव्यमक्ष्यसौ स चन्द्रमाः (२)

इस का वाम चक्षु चंद्रमा है. (२)

योऽस्य दक्षिणः कर्णोऽयं सो अग्निर्योऽस्य सव्यः कर्णोऽयं स पवमानः (३)

इस का दाहिना कान अग्नि और बायां कान पवमान है. (३)

अहोरात्रे नासिके दितिश्चादितिश्च शीर्षकपाले संवत्सरः शिरः (४)

इस की नासिका दिन और रात हैं. इस का शीर्ष दिति और कपाल अदिति है. इस का शीश संवत्सर है. (४)

अह्ना प्रत्यङ् व्रात्यो रात्र्या प्राङ्नमो व्रात्याय (५)

यह व्रात्य दिन में सबके लिए पूज्य है. इस प्रकार के व्रात्य को नमस्कार है. (५)

सोलहवां कांड

सूक्त पहला

देवता—प्रजापति

अतिसृष्टो अपां वृषभोऽतिसृष्टा अग्नयो दिव्याः (१)

जलों में जो वृषभ के समान जल है वह मुक्त हुआ है और दिव्य अग्नियां मुक्त हुई हैं. (१)

रुजन् परिरुजन् मृणन् प्रमृणन् (२)
म्रोको मनोहा खनो निर्दाह आत्मदूषिस्तनूदूषिः (३)
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि (४)
तेन तमभ्यतिसृजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः (५)

भंग करने वाला, विनाशक, पलायन करने वाला, मन को दबाने वाला, दाह उत्पन्न करने वाला, खोदने से प्राप्त होने वाला और देह को दूषित करने वाला जो जल है, उस से अपने शत्रुओं को युक्त करता हुआ मैं उस का त्याग करता हूं. मैं स्वयं उस का स्पर्श नहीं करूंगा. (२-५)

अपामग्रमसि समुद्रं वोऽभ्यवसृजामि (६)

हे जलों के श्रेष्ठ भाग! मैं तुम्हें सागर की ओर प्रेरित करता हूं. (६)

यो३प्स्व१ग्निरति तं सृजामि म्रोकं खनिं तनूदूषिम् (७)

शरीर के बल का अपहरण कर के जलों के भीतर ले जाने वाले अग्नि का भी मैं त्याग करता हूं. (७)

यो व आपोऽग्निराविवेश स एष यद् वो घोरं तदेतत् (८)

हे जल! जो अग्नि तुम में प्रविष्ट हुई है वह तुम्हारा भयानक भाग है. (८)

इन्द्रस्य व इन्द्रियेणाभि षिञ्चेत् (९)

हे जल! जो तुम्हारा अत्यधिक ऐश्वर्य वाला भाग है, उसे हम इंद्रियों से सींचें. (९)

अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत् (१०)

जल हमारे पाप को हमसे दूर करे. पाप हमे अलग हों. (१०)

प्रास्मदेनो वहन्तु प्र दुःष्वप्न्यं वहन्तु (११)

यह जल हमारे पाप और बुरे स्वप्न को बहा कर ले जाए. (११)

शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे (१२)

हे जल! तुम मुझे कृपा की दृष्टि से देखो और अपने कल्याणकारक भाग से मेरी त्वचा का स्पर्श करो. (१२)

शिवानग्नीनप्सुषदो हवामहे मयि क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः (१३)

हम जल में व्याप्त और मंगलकारिणी अग्नियों को बुलाते हैं. यह जल मुझे क्षमाबल वाली शक्ति से संपन्न करे. (१३)

सूक्त दूसरा — देवता—प्रजापति

निर्दुरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक् (१)

मैं दूषित चर्मरोग से मुक्त रहूं. मेरी वाणी शक्तिशालिनी तथा मधुयुक्त हो. (१)

मधुमती स्थ मधुमतीं वाचमुदेयम् (२)

हे ओषधियो! तुम मधुरस से पूर्ण रहो. मेरी वाणी भी मधुररस से पूर्ण हो. (२)

उपहूतो मे गोपा उपहूतो गोपीथः (३)

मेरे कान कल्याण करने वाली बातें सुनें. मैं मंगलपूर्ण एवं प्रशंसाभरी बातें सुनूं. (३)

सुश्रुती कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम् (४)

मेरे कान भली भांति तथा निकट से सुनना कभी न छोड़ें. मेरे नेत्र गरुड़ के समान हों तथा सदैव देखने की शक्ति से सम्पन्न रहें. (४)

सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः (५)

मेरे कान ठीक से सुनना और पास से सुनना न छोड़ें. मेरी आंखें गरुड़ की देखने की शक्ति से पूर्ण रहें. (५)

ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय (६)

तू ऋषियों का पाषाण है. तुझ देवरूप पाषाण को मैं नमस्कार करता हूं. (६)

सूक्त तीसरा — देवता—आदित्य

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम् (१)

मैं धनों का शीर्ष रूप रहूं. जो व्यक्ति मेरे समान हैं उन में मैं मस्तक के समान उच्च रहूं. (१)

रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम् (२)

रज, यज्ञ, मूर्धा अर्थात शीश और विशेष धर्म मेरा त्याग न करें. (२)

उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्टाम् (३)

उर्व अर्थात पकाने वाला पात्र, चमस अर्थात चमचा धारण करने वाले और आधार मुझ से अलग न हों. (३)

विमोकश्च माद्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम् (४)

मुक्त करने वाला तथा गीला आयुध, आर्द्रदानु और मातरिश्वा अर्थात पवन मुझ से अलग न हो. (४)

बृहस्पतिर्म आत्मा नृमणा नाम हृद्यः (५)

हर्ष देने वाले, अनुग्रह करने वाले तथा मन को लगाने वाले बृहस्पति मेरी आत्मा हैं. (५)

असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा (६)

दो कोस तक की भूमि मेरे अधिकार में हो. मेरा हृदय कभी संतप्त न रहे. मैं धारण करने की शक्ति के द्वारा सागर के समान गंभीर बनूं. (६)

सूक्त चौथा — देवता—आदित्य

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम् (१)

मैं धनों की नाभि के समान बनूं. जो पुरुष मेरे समान हैं, उन में भी मैं नाभि रूप बनूं. (१)

स्वासदसि सूषा अमृतो मर्त्येष्वा (२)

श्रेष्ठ उषा मरण धर्मा मनुष्यों में अमृत से युक्त है तथा सुंदरता के साथ प्रतिष्ठित होती है. (२)

मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परा गात् (३)

प्राण वायु मेरा त्याग न करे. अपान वायु भी मुझे छोड़ कर न जाए. (३)

सूर्यो माह्नः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो
मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः (४)

सूर्य दिन में मेरी रक्षा करें. अग्नि पृथ्वी पर मेरी रक्षा करे. वायु अंतरिक्ष में, यम

मनुष्यों से तथा सरस्वती पार्थिव पदार्थों से मेरी रक्षा करने वाली हैं. (४)

प्राणापानौ मा मा हासिष्टं मा जने प्र मेषि (५)

प्राण और अपान वायु मेरा त्याग न करें. मैं सदा प्रसन्न रहूं. (५)

स्वस्त्य१द्योषसो दोषसश्च सर्व आपः सर्वगणो अशीय (६)

उषा काल और रात्रि के द्वारा मंगल हो. मैं सभी गणों और जलों का उपयोग करने वाला बनूं. (६)

शक्वरी स्थ पशवो मोप स्थेषुर्मित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु (७)

हे पशुओ! तुम भुजाओं वाले बनो तथा मेरे पास स्थित रहो. वरुण देव मेरी प्राण और अपान वायु को पोषित करें. अग्निदेव मेरे बल को दृढ़ करें. (७)

सूक्त पांचवां — देवता—दुःस्वप्ननाशन

विद्म ते स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः (१)

हे स्वप्न! तू ग्राह्य पिशाचों से उत्पन्न हुआ है तथा यम को प्राप्त करने वाला है. मैं तेरी उत्पत्ति जानता हूं. (१)

अन्तकोऽसि मृत्युरसि (२)

हे स्वप्न! तू जीवन का अंत करने वाली मृत्यु है. (२)

तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि (३)

हे प्रश्न! हम तुम्हें भलीभांति जानते हैं. तुम हमें बुरे स्वप्नों से बचाओ. (३)

विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः पुत्रो ऽसि यमस्य करणः. अन्तकोऽसि मृत्युरसि. तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि (४)

हे स्वप्न! हम तुम्हारे जन्म को जानते हैं. तुम निर्ऋति अर्थात पाप देवता के पुत्र हो तथा यम देव के साधन हो. तुम जीवन का अंत करने वाली मृत्यु हो. हम तुम्हारे इस रूप को जानते हैं. तुम हमें बुरे स्वप्न से बचाओ. (४)

विद्म ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः. अन्तकोऽसि मृत्युरसि. तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि (५)

हे स्वप्न! हम तुम्हारी उत्पत्ति को जानते हैं. तुम मृत्यु और अभूति अर्थात दरिद्रता के पुत्र हो. हे स्वप्न! हम तुम्हें भलिभांति जानते हैं. तुम हमारी बुरे स्वप्नों से रक्षा करो. (५)

विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः. अन्तकोऽसि

मृत्युरसि. तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि (६)

हे स्वप्न! हम तुम्हारी उत्पत्ति को जानते हैं. तुम निर्भूति अर्थात निर्धनता के पुत्र और यमराज के साधन हो. हम तुम्हें भलीभांति जानते हैं, इसलिए तुम हमें बुरे स्वप्न से बचाओ. (६)

विद्म ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः. अन्तकोऽसि
मृत्युरसि. तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि (७)

हे स्वप्न! हम तुम्हारी उत्पत्ति को जानते हैं. तुम पराभूति अर्थात पराजय के पुत्र और यमराज के साधन हो. तुम यमराज के साधन और मृत्यु हो. हम तुम्हारे स्वरूप को भलीभांति जानते हैं. तुम हमें बुरे स्वप्नों से बचाओ. (७)

विद्म ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः (८)

हे स्वप्न! हम तुम्हारे जन्म को जानते हैं. तुम इंद्रिय विकारों के पुत्र और यम के साधन हो. तुम जीवन का अंत करने वाली मृत्यु हो. हम तुम्हें भलीभांति जानते हैं. तुम हमें बुरे स्वप्न से बचाओ. (८)

अन्तकोऽसि मृत्युरसि (९)

हे स्वप्न! तुम जीवन का अंत करने वाली मृत्यु हो. (९)

तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स नः स्वप्न दुष्वप्न्यात् पाहि (१०)

हे स्वप्न! मैं तुम्हें भलीभांति जानता हूं. तुम मुझे बुरे स्वप्नों से बचाओ. (१०)

सूक्त छठा — देवता—दुःस्वप्ननाशन

अजैष्माद्यासनामाद्याभूमानागसो वयम् (१)

हम आज विजय प्राप्त करें. हम आज खाद्य पदार्थ प्राप्त करें. आज हम पाप रहित हो जाएं. (१)

उषो यस्माद् दुष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छतु (२)

हे उषा देवी! जिस बुरे स्वप्न से हम डरते हैं, वह बुरा स्वप्न समाप्त हो जाए. (२)

द्विषते तत् परा वह शपते तत् परा वह (३)

हे देव! आप उसे भय को प्राप्त कराएं जो हमसे द्वेष करता है तथा हमारी निन्दा करता है. (३)

यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तस्मा एनद् गमयामः (४)

हम जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, हम इस भय को उस के

पास भेजते हैं. (४)

उषा देवी वाचा संविदाना वाग् देव्यु१षसा संविदाना (५)

उषा देवी वाणी के साथ और वाणी की देवी उषा के साथ एकमत स्थापित करें. (५)

उषस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिरुषस्पतिना संविदानः (६)

उषा के पति वाचस्पति अर्थात वाणी के स्वामी के साथ तथा वाचस्पति उषा देवी के पति के साथ एकमत स्थापित करें. (६)

ते३मुष्मै परा वहन्त्वरायान् दुर्णाम्नः सदान्वाः (७)
कुम्भीका दूषीकाः पीयकान् (८)

वे इस दुष्ट शत्रु के लिए दूषित नाम वाले दुखों को, आपत्तियों को घड़े के समान बढ़ने वाले उदर रोगों को, शरीर के दूषित रोगों को तथा प्राणघातक रोगों को प्राप्त कराएं. (७-८)

जाग्रद्दुष्वप्न्यं स्वप्नेदुष्वप्न्यम् (९)
अनागमिष्यतो वरानवित्तेः संकल्पानमुच्या द्रुहः पाशान् (१०)

हम जाग्रत अवस्था में जो दुःस्वप्न देखते हैं और सोते हुए जो दुःस्वप्न देखते हैं उनके बुरे फलों से तथा धनहीनता के अतीतकाल के संकल्पों से, न प्राप्त होने वाले उत्तम पदार्थों से और न छूटने वाले द्रोहजनित पाशों से मुक्त हों. (९-१०)

तदमुष्मा अग्ने देवाः परा वहन्तु वध्रिर्यथासद् विथुरो न साधुः (११)

हे अग्निदेव! सभी देव सभी प्रकार की उन आपत्तियों को हमारे शत्रुओं की ओर ले जाएं, जिनके कारण हमारे शत्रु पौरुषहीन व्याधि और सज्जनों को प्राप्त होने वाले यज्ञ को न पाकर अपयश भोगें. (११)

सूक्त सातवां — देवता—दुःस्वप्ननाशन

तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं विध्यामि निर्भूत्यैनं विध्यामि पराभूत्यैनं
विध्यामि ग्राह्यैनं विध्यामि तमसैनं विध्यामि (१)

मैं इस अर्थात बुरे स्वप्न को अभिचार कर्म अर्थात जादूटोने से, दुर्गति से, दरिद्रता से तथा रोग से विद्ध करता हूं. (१)

देवानामेनं घोरैः क्रूरैः प्रैषैरभिप्रेष्यामि (२)

मैं इस बुरे स्वप्न को देवताओं की भयंकर आज्ञाओं के सामने उपस्थित करता हूं. (२)

वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि दधामि (३)

मैं इस बुरे स्वप्न को वैश्वानर अर्थात अग्नि की दाढ़ों में डालता हूं. (३)

एवानेवाव सा गरत् (४)

वैश्वानर इस बुरे स्वप्न को निगल जाएं. (४)

योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु यं वयं द्विष्मः स आत्मानं द्वेष्टु (५)

जो हम से द्वेष करता हो, उस से आत्मा द्वेष करे. जिस से हम द्वेष करते हैं, वह आत्मा से द्वेष करे. (५)

निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षाद् भजाम (६)

जो हम से द्वेष करता है, उसे हम आकाश, पृथ्वी और अंतरिक्ष से दूर भगाते हैं. (६)

सुयामंश्चाक्षुष (७)
इदमह मामुष्यायणेऽमुष्याः पुत्रे दुष्वप्न्यं मृजे (८)

हे उत्तम नियामक और निरीक्षक! मैं बुरे स्वप्न से होने वाले फल को अमुक गोत्र वाले तथा अमुक स्त्री के पुत्र के पास भेजता हूं. (७-८)

यददोअदो अभ्यगच्छन् यद् दोषा यत् पूर्वां रात्रिम् (९)
यज्जाग्रद यत् सुप्तो यद् दिवा यन्नक्तम् (१०)
यदहरहरभिगच्छामि तस्मादेनमव दये (११)

मैं पहली रात में अमुकअमुक कर्म कर चुका हूं. जाग्रतावस्था में, सुषुप्तावस्था में, दिन में अथवा रात्रि में मैं नित्यप्रति जिस पाप और दोष को प्राप्त करता हूं, उन्हीं के द्वारा मैं उस बुरे स्वप्न को नष्ट करता हूं. (९-११)

तं जहि तेन मन्दस्व तस्य पृष्टीरपि शृणीहि (१२)

हे देव! उस शत्रु की हिंसा करो, उस के साथ चलो तथा उस की पसलियों को तोड़ दो. (१२)

स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु (१३)

वह प्राणहीन हो जाए, वह जीवित न रहे. (१३)

सूक्त आठवां — देवता—बुरे स्वप्न का नाश

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् (१)

हमारा उदय हो. हम सत्य को प्राप्त करें, हमारा तेज बढ़े. हमारा ज्ञान बढ़े तथा हमारे उत्तम प्रकाश में वृद्धि हो. हमारे यज्ञ सफल हों, हमारे अधिकार में पशु हों, हमारी संतान की वृद्धि हो. हमारे लोग वीर हों. (१)

तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः (२)

इस अपराध के कारण हम शत्रु पर आक्रमण करते हैं. इस गोत्र वाला तथा इस का पुत्र हमारा शत्रु है. (२)

स ग्राह्याः पाशान्मा मोचि (३)

वह रोग के पाशों से न छूट सके. (३)

तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (४)

उस के तेज, बल, प्राण और आयु को मैं घेरता हूं. मैं इसे नीचे गिराता हूं. (४)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं
निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स निर्ऋत्याः पाशान्मा मोचि.
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (५)

मैं उस के तेज, बल, प्राण और आयु को घेरता हूं. वह दुर्गति के पाशों से न छूट सके. (५)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं
निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. सोऽभूत्याः पाशान्मा मोचि.
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (६)

मैं उस के तेज, बल, प्राण और आयु को घेरता हूं. वह दरिद्रता के पाशों से न छूटने पाए. (६)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं
निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स निर्भूत्याः पाशान्मा मोचि.
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (७)

मैं उस के तेज, बल, प्राण और आयु को घेरता हूं. वह बुरी अवस्था के पाशों से न छूट सके. (७)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं
निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स पराभूत्याः पाशान्मा मोचि.

तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (८)

मैं उस के तेज, बल, प्राण और आयु को घेरता हूं. वह पराजय के पाशों से न छूटने पाए. (८)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स देवजामीनां पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (९)

मैं उस के तेज, बल, प्राण और आयु को घेरता हूं. वह इंद्रिय संबंधी दोषों से छूटने न पाए. (९)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स बृहस्पतेः पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१०)

शत्रुओं को मार कर लाए हुए तथा जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, प्रजा तथा सभी वीर हमारे हैं. अमुक गोत्र वाले और अमुक स्त्री के पुत्र को, हम इस लोक से दूर करते हैं. वह बृहस्पति के बंधन से मुक्त न हो. मैं उस के तेज, वर्च, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराता हूं. (१०)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स प्रजापतेः पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (११)

शत्रुओं को मार कर और जीत कर लाए हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान तथा सभी वीर हमारे हैं. अमुक गोत्र वाले और अमुक स्त्री के पुत्र को हम इस लोक से दूर करते हैं, वह प्रजापति के बंधन से मुक्त न हो. मैं उस के तेज, वर्च, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराता हूं. (११)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स ऋषीणां पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१२)

शत्रुओं को घायल कर के लाए हुए तथा जीते हुए सब पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, पशु, प्रजा तथा सब वीर हमारे हैं. वह ऋषियों के बंधन से मुक्त न हो.

मैं उस के तेज, वर्च, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराना चाहता हूं. (१२)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स आर्षेयाणां पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१३)

शत्रुओं को विदीर्ण कर के लाए हुए तथा जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान तथा सभी वीर हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर भेजते हैं. वह ऋषियों से उत्पन्न पाशों से कभी छूटने न पाए. मैं उस के तेज, वर्च, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराता हूं. (१३)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. सोऽङ्गिरसां पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१४)

शत्रुओं को विदीर्ण कर के लाए हुए तथा जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह अंगिराओं के बंधन से मुक्त न हो. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (१४)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स आङ्गिरसानां पाशान्मामोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१५)

शत्रुओं को घायल कर के लाए हुए तथा जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान तथा सभी वीर हमारे हैं. अमुक गोत्र वाला तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को हम इस लोक से दूर करते हैं. वह आंगिरसों अर्थात अंगिरा गोत्र वालों के बंधन से मुक्त न हो. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह डालते हैं. (१५)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. सोऽथर्वणां पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१६)

शत्रुओं का वध कर के लाए हुए तथा जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य,

तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को लोक से दूर करते हैं. वह अथर्वा गोत्र वालों के बंधन से मुक्त न हो. हम उस के तेज, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (१६)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स आथर्वणानां पाशान्मामोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१७)

शत्रुओं को घायल कर के लाए हुए और जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह अथर्वणों के बंधन से न छूटे. हम उस के तेज, ब्रह्म, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (१७)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स वनस्पतीनां पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१८)

शत्रुओं को विदीर्ण कर के लाए हुए तथा जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को हम इस लोक से दूर करते हैं. वह वनस्पतियों के बंधन से मुक्त न हो. हम उस के तेज, बल, प्राण तथा आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (१८)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स वनस्पत्यानां पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (१९)

शत्रुओं का वध कर के लाए गए और जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. हम सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान तथा सभी वीर पुरुषों के अधिकारी हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह वनस्पतियों के पाश से मुक्त न हो. हम उस के तेज, बल, स्वर्ग, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (१९)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं

निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स ऋतूनां पाशान्मा मोचि.
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२०)

शत्रुओं का वध कर के लाए हुए तथा जीते हुए सभी पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान, स्त्री तथा वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह ऋतुओं के बंधन से मुक्त न होने पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२०)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं
निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स आर्तवानां पाशान्मा मोचि.
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२१)

शत्रुओं को घायल कर के लाए हुए तथा जीत कर लाए हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान तथा सभी वीर पुरुष हमारे हैं. अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को हम इस लोक से दूर करते हैं. वह ऋतुओं के पदार्थों के बंधन से मुक्त न हो. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२१)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं
निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स मासानां पाशान्मा मोचि.
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२२)

135

शत्रुओं का वध कर के लाए हुए पदार्थ तथा जीत कर लाए हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान तथा सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह मासों के पाश से न छूटने पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२२)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं
यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं
निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. सोऽर्धमासानां पाशान्मा मोचि.
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयायीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२३)

शत्रुओं को मार कर लाए हुए पदार्थ तथा जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह अर्धमास के बंधन से मुक्त न होने पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट

कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२३)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२४)

शत्रुओं को घायल कर के लाए हुए पदार्थ और जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह दिन और रात्रियों के पाश से मुक्त न होने पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२४)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. सोऽह्नोः संयतोः पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२५)

शत्रुओं को नष्ट कर के लाए हुए पदार्थ और जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह रातदिन के संयत पाशों से मुक्त न होने पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२५)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स द्यावापृथिव्योः पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२६)

शत्रुओं को विदीर्ण कर के लाए हुए पदार्थ तथा जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, प्रजा और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह द्यावा पृथ्वी के पाश से छूट न सके. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२६)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स इन्द्राग्न्योः पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२७)

शत्रुओं को मार कर लाए हुए पदार्थ तथा जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, पशु, संतान और सभी वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह इंद्र और अग्नि के बंधन से मुक्त न होने पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२७)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स मित्रावरुणयोः पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२८)

शत्रुओं को विदीर्ण कर के लाए हुए पदार्थ और जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सब वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. वह मित्र और वरुण के बंधन से छूटने न पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२८)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्. तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः. स राज्ञो वरुणस्य पाशान्मा मोचि. तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (२९)

शत्रुओं को घायल कर के लाए हुए पदार्थ तथा जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सब वीर पुरुष हमारे हैं. हम अमुक गोत्र वाले और अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से मुक्त करते हैं. वह राजा वरुण के पाश से मुक्त न होने पाए. हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (२९)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो३ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् (३०)

शत्रुओं को मार कर लाए हुए पदार्थ और जीत कर लाए हुए पदार्थ हमारे हैं. सत्य, तेज, ब्रह्म, स्वर्ग, पशु, संतान और सब वीर पुरुष हमारे हैं. (३०)

तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ यः (३१)

हम अमुक गोत्र वाले तथा अमुक नाम वाली स्त्री के पुत्र को इस लोक से दूर करते हैं. (३१)

स मृत्योः पड्वीशात् पाशान्मा मोचि (३२)

वह मृत्यु के पाशों से कभी मुक्त न हो. (३२)

तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि (३३)

हम उस के तेज, बल, प्राण और आयु को लपेट कर उसे औंधे मुंह गिराते हैं. (३३)

सूक्त नौवां

देवता—प्रजापति

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्यष्ठां विश्वाः पृतना अरातीः (१)

शत्रुओं को घायल कर के लाए हुए पदार्थ तथा जीते हुए पदार्थ हमारे हैं. हम शत्रुओं की सेना पर अधिकार करें. (१)

तदग्निराह तदु सोम आह पूषा मा धात् सुकृतस्य लोके (२)

अग्नि और सोम इसी बात को कह रहे हैं. पूषा देव हमें पुण्य लोक में प्रतिष्ठित करें. (२)

अगन्म स्व१: स्वरगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म (३)

हमें स्वर्ग प्राप्त है, जो लोक सूर्य की ज्योति से उत्तम बना है, हम उसे प्राप्त करें. (३)

वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि (४)

मैं सत्कार पाने के योग्य हूं. मैं परमधनी बनने के लिए धन पर अधिकार कर सकूं. हे देव! मेरे धन को पुष्ट करो. (४)

131

सत्रहवां कांड

सूक्त पहला — देवता—आदित्य

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्. सहमानं सहोजितं स्वर्जितं
गोजितं संधनाजितम्. ईड्यं नाम ह्व इन्द्रमायुष्मान् भूयासम् (१)

सहमान अर्थात दूसरों को दबाने वाले तेज से युक्त, शत्रुओं के उस तेज को जीतने वाले, स्वर्ग के विजेता, शत्रुओं के गाय आदि पशुओं को जीतने वाले तथा जलों पर विजय प्राप्त करने वाले इंद्र रूप सूर्य को मैं प्रातः, मध्याह्न तक संध्या के कर्मों के द्वारा बुलाता हूं. उन इंद्र रूप सूर्य की कृपा से मैं अधिक आयु वाला बनूं. (१)

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्. सहमानं सहोजितं स्वर्जितं
गोजितं संधनाजितम्. ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम् (२)

सहमान अर्थात दूसरों को दबाने वाले तेज से युक्त, शत्रुओं के उस तेज को जीतने वाले, स्वर्ग के विजेता, शत्रुओं के गाय आदि पशुओं को जीतने वाले तथा जलों पर विजय प्राप्त करने वाले इंद्र रूप सूर्य को बुलाता हूं. उन इंद्र की कृपा से मैं संतान आदि का प्रिय बनूं. (२)

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्. सहमानं सहोजितं स्वर्जितं
गोजितं संधनाजितम्. ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम् (३)

मैं सहमान अर्थात दूसरों को दबाने वाले तेज से युक्त, शत्रुओं के उस तेज को जीतने वाले, स्वर्ग के विजेता, शत्रुओं के गाय आदि पशुओं को जीतने वाले तथा जलों पर विजय प्राप्त करने वाले इंद्र रूप सूर्य को मैं बुलाता हूं. उन इंद्र रूप सूर्य की कृपा से मैं प्रजाओं का प्रिय बनूं. (३)

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्. सहमानं सहोजितं स्वर्जितं
गोजितं संधनाजितम्. ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम् (४)

सहमान अर्थात दूसरों को दबाने वाले तेज से युक्त, शत्रुओं के उस तेज को जीतने वाले, स्वर्ग के विजेता, शत्रुओं के गाय आदि पशुओं को जीतने वाले तथा

जलों पर विजय प्राप्त करने वाले इंद्र रूप सूर्य का मैं प्रातः, सायं तथा मध्याह्न के कर्मों के द्वारा आह्वान करता हूं. उन की कृपा से मैं गाय, भैंस आदि पशुओं का प्रिय बनूं. (४)

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम्. सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम्. ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम् (५)

सहमान अर्थात दूसरों को दबाने वाले तेज से युक्त, शत्रुओं के उस तेज को जीतने वाले, स्वर्ग के विजेता, शत्रुओं के गाय आदि पशुओं को जीतने वाले तथा जलों पर विजय प्राप्त करने वाले सूर्य को मैं प्रातः, मध्याह्न और संध्या के कर्मों के द्वारा बुलाता हूं. उन इंद्र रूप सूर्य की कृपा से मैं अपने समान लोगों का प्रिय बनूं. (५)

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि. द्विषंश्च मह्यं रध्यतु मा चाहं द्विषते रधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (६)

हे सूर्यदेव! आप उदित हैं और उदित होकर अपने तेज से मुझे प्रकाशित करें. जो लोग मुझ से द्वेष करते हैं. वे मेरे वश में हो जाएं. मैं किसी भी प्रकार उनके वशीभूत न बनूं. हे व्यापनशील सूर्यदेव! आपका पराक्रम सीमारहित है आप मुझे अमुक रूपों वाले अर्थात गाय, घोड़ा, भैंस आदि पशुओं से पूर्ण करें तथा परमव्योम में जो अमृत है, उसमें मुझे स्थापित करें. (६)

उदिह्युदिहि सूर्य वर्चसा माभ्युदिहि. यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (७)

हे सूर्यदेव! तुम उदय होओ. हे अपने तेज से दूसरों को दबाने वाले सूर्यदेव! तुम उदय होओ. मैं जिन को देख रहा हूं और जिन्हें नहीं देख रहा हूं, उन के विषय में मुझे शोभन बुद्धि वाला बनाओ. हे व्यापनशील सूर्य! तुम्हारे वीर्य अर्थात शक्तियां अंतहीन हैं. तुम मुझे अनेक रूपों वाले अर्थात गाय, अश्व, भैंस आदि पशुओं से पूर्ण करो तथा परम व्योम में जो अमृत है उस में मुझे स्थापित करो. (७)

मा त्वा दभन्त्सलिले अप्स्व१न्तर्ये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र. हित्वाशस्तिं दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (८)

हे पाशों को धारण करने वाले सूर्य! राक्षस तुम्हें जलों में प्रवेश करने से न रोकें. तुम उस निंदा को त्याग कर आकाश में आरोहण करो. तुम मुझ पर कृपा करो. हम तुम्हारी शोभन बुद्धि में रहें. हे व्याप्त होने वाले सूर्य! यहां तुम्हारे वीर्य अर्थात शक्तियां अनेक हैं. तुम गाय, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से हमें पूर्ण करो

तथा परम व्योम में जो सुधा है, उस में हमें स्थापित करो. (८)

त्वं न इन्द्र महते सौभगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (९)

हे परम ऐश्वर्य संपन्न सूर्य! ऐश्वर्य को प्राप्त करने के हेतु तुम बहुत से पराक्रम करते हो. तुम व्याधि, चोर, भूत, राक्षस, अग्निदाह आदि की हिंसा से रहित दिवसों के द्वारा हमारी रक्षा करो. हे व्यापक सूर्य! तुम्हारे वीर्य अर्थात शक्तियां अनेक प्रकार की हैं. तुम गाय, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से मुझे पूर्ण करो तथा परम व्योम में जो सुधा है, उस में मुझे स्थापित करो. (९)

त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव. आरोहंस्त्रिदिवं दिवो गृणानः
सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि.
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१०)

हे इंद्र! तुम अपनी मंगलमयी रक्षाओं के द्वारा हमारे लिए अधिक सुखकारी बनो. तुम अंतरिक्ष संबंधी स्वर्ग पर चढ़ते हुए सोम याग में सोमरस पीने के लिए आओ. हे प्रिय निवास स्थानों वाले इंद्र! तुम हमारे कल्याण के निमित्त पधारो. हे व्यापक इंद्र! तुम्हारे वीर्य अर्थात शक्तियां अनंत हैं. तुम हमें गाय, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से पूर्ण करो और परम व्योम में जो सुधा है. उस में हमें स्थापित करो. (१०)

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहूतस्त्वमिन्द्र. त्वमिन्द्रेमं सुहवं
स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि.
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (११)

हे इंद्र! तुम विश्वविजयी एवं सभी को जीतने वाले हो. हे इंद्र! तुम बहुतों के द्वारा यज्ञों में बुलाए जाने वाले हो. हे इंद्र! तुम इस समय की जाती हुई शोभन ज्ञान की साधन स्तुतियों के लिए हमें प्रेरित करो. तुम हमारी रक्षा करो. हम तुम्हारी उत्तम बुद्धि में रहें अर्थात हमारे प्रति तुम्हारी श्रेष्ठ भावना हो. हे व्यापक इंद्र! तुम्हारे वीर्य अर्थात शक्तियां अनेक प्रकार की हैं. तुम हमें गाय, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से पूर्ण करो तथा हमें परम व्योम में स्थित सुधा में स्थापित करो. (११)

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे. अदब्धेन ब्रह्मणा
वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि षञ्छर्म यच्छ तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि.
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१२)

हे इंद्र! तुम द्युलोक अर्थात स्वर्ग में तथा पृथ्वी पर किसी के द्वारा हिंसित नहीं हो. तात्पर्य यह है कि इन दोनों स्थानों पर कोई भी तुम्हारा विरोध करने का साहस नहीं करता है. आकाश में तुम्हारी महिमा को सहन करने में कोई समर्थ नहीं है. जिस की सामर्थ्य कुंठित नहीं होती है, ऐसे मंत्रों के द्वारा वृद्धि

प्राप्त करते हुए तुम हमारी रक्षा करो. हे व्यापक इंद्र! तुम्हारे वीर्य अर्थात शक्तियां अनंत हैं. तुम हमें गाय, घोड़ा आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से पूर्ण करो तथा परम व्योम में जो सुधा है, उस में हमें स्थापित करो. (१२)

या त इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरग्नौ या त इन्द्र पवमाने स्वर्विदि.
ययेन्द्र तन्वाऽन्तरिक्षं व्यापिथ तया न इन्द्र तन्वा शर्म यच्छ तवेद् विष्णो
बहुधा वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१३)

हे परम ऐश्वर्य वाले सूर्य! तुम्हारी जो विभूतियां जलों में, पृथ्वी पर, आकाश में हैं तथा तुम्हारी जो विभूति अंतरिक्ष में गतिशील वायु में है, हे इंद्र उन विभूतियों अथवा मूर्तियों के द्वारा हमें सुख प्रदान करो. हे व्यापक सूर्य! तुम्हारी शक्तियां अनंत हैं. तुम हमें गाय, भैंस आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से पूर्ण करो तथा परम व्योम में स्थित जो सुधा है, उस में हमें स्थापित करो. (१३)

त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुर्ऋषयो नाधमानास्तवेद् विष्णो बहुधा
वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१४)

हे ऐश्वर्य वाले सूर्य! अंगिरा आदि प्राचीन ऋषि अपने मंत्रों के स्तोत्र आदि के द्वारा अपने सोमरस आदि के रूप वाले हवि से तुम्हारी वृद्धि करते हुए नियम से निवास करते रहें. हे व्यापक सूर्य! तुम्हारी ये शक्तियां अनेक प्रकार की हैं. तुम हमें गाय, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से पूर्ण करो एवं परमव्योम में व्याप्त जो सुधा है, उस में हमें स्थापित करो. (१४)

त्वं तृतं त्वं पर्येष्युत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि.
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१५)

हे इंद्र! तुम विस्तृत अंतरिक्ष को व्याप्त करते हो. तुम अनेक धाराओं वाले जल को व्याप्त करते हो. तुम ज्ञान के साधन यज्ञ पर अधिकार करते हो. हे व्यापक इंद्र! तुम्हारे वीर्य अर्थात शक्तियां अनेक प्रकार की हैं. तुम हमें गौ, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से पूर्ण करो तथा हमें परम व्योम में स्थित सुधा में स्थापित करो. (१५)

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि. त्वमिमा विश्वा
भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि.
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१६)

हे सूर्य! तुम चारों दिशाओं की रक्षा करते हो और अपनी किरणों से आकाश को प्रकाशित करते हो. तुम इन सभी भुवनों को प्रकाशित करते हो. तुम सत्य अथवा यज्ञ की स्थिति जानते हुए उन के मार्गों को क्रम से व्याप्त करते हो. हे व्यापक सूर्य! तुम्हारी शक्तियां अनंत हैं. तुम हमें धेनु, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से पूर्ण करो एवं परम व्योम में जो सुधा है, उस में हमें स्थापित करो. (१६)

पञ्चभिः पराङ् तपस्येकयार्वाङशस्तिमेषि सुदिने बाधमानस्तवेद् विष्णो
बहुधा वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः
सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१७)

हे सूर्य! तुम अपनी पांच किरणों से ऊपर की ओर मुख करके तपते हो तथा अपनी एक किरण से नीचे की ओर मुख करके पृथ्वी पर तपते हो. पाला, बादल आदि से रहित दिन की याचना करने पर तुम अपनी किरण से पृथ्वी पर तपते हो. हे व्यापक सूर्य! तुम्हारी ही शक्तियां अनंत हैं. तुम गौ, अश्व आदि अनेक रूपों वाले पशुओं से हमें पूर्ण करो तथा परम व्योम में जो सुधा है, उस में हमें स्थापित करो. (१७)

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः. तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं
जुह्वति जुह्वतस्तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि. त्वं नः पृणीहि
पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१८)

हे ऐश्वर्य शाली सूर्य! तुम स्वर्ग के स्वामी एवं महत्त्वपूर्ण गुण से युक्त हो. स्वर्ग आदि लोक तुम ही हो तथा तुम ही प्रजाओं के स्वामी हो. तुम्हारे लिए यज्ञ विस्तृत किए गए. (१८)

असति सत् प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम्. भूतं ह भव्य आहितं
भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि.
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (१९)

यह दृश्यमान जगत निराकार ब्रह्म में प्रतिष्ठित है. इस दृश्यमान जगत में पृथ्वी आदि पांच तत्त्व प्रतिष्ठित हैं. हे व्यापक सूर्य! तुम्हारी ही शक्तियां अनेक प्रकार की हैं. तुम हमें गौ, अश्व आदि सभी रूप के पशुओं से पूर्ण करो तथा परम व्योम में जो सुधा स्थित है, उस में हमें स्थापित करो. (१९)

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि. स यथा त्वं भ्राजता
भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् (२०)

हे सूर्य! तुम शुक्ल अर्थात अत्यधिक उज्ज्वल हो तथा तुम दीप्तिशाली हो. तुम जिस प्रकार की ज्योति से पूर्ण रहते हो, मैं तुम्हारे उसी ज्योति पूर्ण भाव की उपासना करता हूं. (२०)

रुचिरसि रोचोऽसि. स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं
पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन च रुचिषीय (२१)

हे सूर्य! तुम दीप्ति रूप हो तथा दूसरों को दीप्ति वाला बनाते हो. तुम जिस प्रकार दीप्ति से दीप्ति मग्न हो, उसी प्रकार मैं पशुओं तथा ब्राह्मणोचित तेज से संपन्न बनूं. (२१)

उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः.

विराजे नमः स्वराजे नमःसम्राजे नमः (२२)

हे सूर्य! उदय होते हुए तुम को नमस्कार है तथा उदय के पश्चात ऊपर उठते हुए तुम को नमस्कार है. हे विराट रूप वाले सूर्य! तुम को नमस्कार है! स्वयं प्रकाशित होने वाले तुम को नमस्कार है. अतिशय रूप से प्रकाशित होने वाले तुम को नमस्कार है. (२२)

अस्तंयते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः.
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः (२३)

अस्त होने वाले, अस्त हो रहे और अस्त हो चुके सूर्य देव को मेरा नमस्कार है. विशेष तेजवान को नमस्कार है, शोभनीय तेज वाले को नमस्कार है तथा उत्तम तेज वाले को नमस्कार है. (२३)

उदगादयमादित्यो विश्वेन तपसा सह.
सपत्नान् मह्यं रन्धयन् मा चाहं द्विषते रधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि.
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमन् (२४)

यह सूर्य पूर्ण विश्व को संतप्त करने वाली किरणों के साथ उदय हुए हैं. ये मेरे शत्रुओं को मेरे वश में करते हैं तथा मुझे किसी शत्रु के वशीभूत नहीं बनाते. हे व्यापक सूर्य! तुम्हारी ही शक्तियां अनंत हैं. तुम मुझे गाय, भैंस आदि सभी पशुओं से पूर्ण करो और परम व्योम में जो सुधा है, उस में मुझे स्थित करो. (२४)

आदित्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये.
अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्राति पारय (२५)

हे आदित्य अर्थात अदिति पुत्र सूर्य! तुम रथ के लक्षणों वाली नाव पर सवार हो. वह नाव सौ डांडों वाली है. उस नाव पर तुम्हारे चढ़ने का प्रयोजन सभी का कल्याण है. इस प्रकार की नाव पर आरूढ़ तुम मुझे अनेक आध्यात्मिक, अधिभौतिक तथा अधिदैविक विविध बाधाओं से पार कर के रात्रि और दिन के मध्य मार्गों के पार पहुंचाओ. (२५)

सूर्य नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये.
रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सत्राति पारय (२६)

सूर्यदेव सब के कल्याण के लिए सौ डांडों वाली नाव पर सवार होते हैं. यह नाव रथ के लक्षणों वाली है. हे सूर्य! रात्रि में मुझे कोई बाधा न पहुंचाए तथा दिन के तीनों सत्रों अर्थात प्रातः, मध्याह्न और संध्या से मुझे पार करो. (२६)

प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च.
जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम् (२७)

वर्षा आदि के द्वारा प्रजाओं का पालन करने से सूर्य प्रजापति हैं. मैं प्रजापति सूर्य के कवच से तथा कश्यप ऋषि की ज्योति और तेज से घिरा हुआ हूं, सुरक्षित हूं. मैं जीर्ण अर्थात वृद्ध हो कर भी दृढ़ अंगों वाला हूं तथा अनेक प्रकार के भोगों को भोगता हूं. मैं दीर्घ आयु प्राप्त करता हुआ तथा लौकिक और वेदों का कार्य करता हुआ सूर्यदेव की कृपा का पात्र रहूं. (२७)

परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च.
मा मा प्रापन्निषवो दैव्य या मा मानुषीरवसृष्टा वधाय (२८)

मैं कश्यप रूपी सूर्य के मंत्र रूपी कवच से ढका हुआ हूं तथा सत्य और रक्षा करने वाली किरणों से आच्छादित हूं. इसलिए मनुष्य और देवता मेरी हिंसा करने के लिए जिन आयुधों का प्रयोग करते हैं, वे मुझे प्रभावित नहीं कर सकेंगे. (२८)

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैभूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्.
मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः (२९)

सत्य, सूर्यरूपी ब्रह्म और सभी ऋतुएं मेरी रक्षा कर रही हैं. इस कारण पाप मेरे समीप नहीं आ सकता जो नरक में निवास का कारण बनता है, मैं उसी प्रकार अदृश्य रहता हूं, जिस प्रकार अभिमंत्रित जल में छिपे प्राणी किसी को दिखाई नहीं देते. मैं पापों से सुरक्षित होने के लिए अपने आप को अभिमंत्रित और पवित्र करता हूं. (२९)

अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वत उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान्.
व्युच्छन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम् (३०)

अपने आश्रितों के रक्षक अग्निदेव मेरी रक्षा करें. उदय होते हुए सूर्य मृत्यु के पाशों से मेरी रक्षा करें. उषा मृत्यु के पाशों को मुझ से दूर रखें. मैं आयु की कामना करता हूं. मुझ में प्राण स्थित रहें. मेरी इंद्रियां चेष्टा करती रहें. (३०)

अठारहवां कांड

सूक्त पहला

देवता—मंत्रों में कहे गए

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिर: पुरू चिदर्णवं जगन्वान्.
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यान: (१)

यमी का कथन—मैं समान प्रसिद्धि वाले मित्र यम को आदर भाव के अनुकूल बनाती हूं. समुद्र तट के समीप वाले द्वीप में चलते हुए यम अपने पुत्र को मुझ में स्थापित करें. हे यम! तुम्हारी प्रसिद्धि सभी लोकों में है. तुम सदा तेज से दीप्त रहो. (१)

न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत् सलक्ष्मा यद् विषुरूपा भवाति.
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन् (२)

यम का कथन—मैं तेरा सोदर अर्थात एक ही पेट से उत्पन्न हुआ तेरा मित्र हूं. पर मैं भाई और बहन के समागम संबंधी मित्र भाव की इच्छा नहीं करता हूं. तू एक उदर से उत्पन्न हो कर भी मेरी पत्नी बनने की कामना करती है. मैं ऐसे मित्रभाव को स्वीकार नहीं करता हूं. शत्रुओं को दबाने वाले महाबली रुद्र के पुत्र मरुद्गण भी इस की निंदा करेंगे. (२)

उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य.
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्यु: पतिस्तन्व१मा विविश्या: (३)

यमी—हे यम! मरुद्गण उस मार्ग की इच्छा करते हैं, जिस का मैं ने तुम से निवेदन किया है. इसलिए तुम अपने मन को मेरी ओर लगाओ. फिर तुम संतान को उत्पन्न करने वाले मेरे पति बनते हुए भाई के भाव को छोड़ कर मुझ में प्रविष्ट हो जाओ. (३)

न यत् पुरा चकृमा कद्ध नूनमृतं वदन्तो अनृतं रपेम.
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नौ नाभि: परमं जामि तन्नौ (४)

यम—हे यमी! असत्य बात को हम सत्य भाषण करने वाले किस प्रकार सत्य कहें ? जल को धारण करने वाले सूर्य भी आकाश में अपनी पत्नी के सहित स्थित

है. इसलिए एक ही माता और पिता वाले हम दोनों उन्हीं के सामने तेरी इच्छा पूर्ण करने में समर्थ न होंगे. (४)

गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः.
नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत द्यौः (५)

यमी—हे यम! संतान उत्पन्न करने वाले देव ने हम दोनों को माता के उदर में ही दांपत्य बंधन में बांध दिया है. उस देव के कर्म का जो फल है, उसे कौन निष्फल कर सकता है. त्वष्टा देव के गर्भ में ही हमारे दंपती बनाने वाले कर्म को आकाश और पृथ्वी दोनों जानते हैं. इस कारण यह असत्य नहीं है. (५)

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून्.
आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात् (६)

यम—हे यमी! सत्य का भार वहन करने के निमित्त अपनी वाणी रूप वृषभ को कौन नियुक्त कर सकता है. कर्मठ, तेजस्वी, क्रोध और लज्जा से हीन तथा अपने शब्दों से श्रोताओं के हृदय में बैठने वाला जो पुरुष सत्य वचनों से ही वृद्धि करता है, वह उस के फल के कारण दीर्घजीवी होता है. (६)

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत्.
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नॄन् (७)

यमी—हे यम! हमारे प्रथम दिन को कौन जान रहा है और कौन देख रहा है? फिर कौन पुरुष इस बात को दूसरों से कह सकेगा? दिन मित्र देवता का स्थान है. ये दोनों ही विशाल हैं. इसलिए मेरी इच्छा के प्रतिकूल मुझे क्लेश देने वाले तुम अनेक कर्मों वाले मनुष्यों के संबंध में ऐसा किस प्रकार कहते हो. (७)

यमस्य मा यम्यं१ काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय.
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् वृहेव रथ्येव चक्रा (८)

मेरी इच्छा है कि पति को अपना शरीर अर्पण करने वाली पत्नी के समान यम को अपनी देह अर्पित करूं. वे दोनों पहिए के समान मार्ग में एकदूसरे से मिलते हैं. मैं उसी प्रकार की हो जाऊं. (८)

न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति.
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा (९)

यम—हे यमी! देवदूत लगातार विचरण करते रहते हैं. इसलिए हे मेरी धर्म बुद्धि को नष्ट करने की इच्छा करने वाली! तू मुझे छोड़ कर किसी अन्य को अपना पति बना तथा शीघ्र जा कर रथ के पहिए के समान संयुक्त हो जा. (९)

रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात्.

दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विवृहादजामि (१०)

यमी—यम के निमित्त यजमान दिनरात आहुति दें. प्रकाश करने वाला सूर्य का तेज नित्यप्रति इस के निमित्त उदय हो. आकाश और पृथ्वी जिस प्रकार आपस में मिले हुए हैं. उसी प्रकार मैं इस के भ्रातृत्व से अलग होती हुई इस से मिल जाऊं. (१०)

आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि.
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् (११)

यम—संभव है, आगे चल कर ऐसे ही दिन और रात आएं, जब बहन अपने बंधु भाव को छोड़ कर पत्नी का रूप प्राप्त करने लगेगी. पर अभी ऐसा नहीं हो रहा है. इसलिए हे यमी! तू स्त्री में गर्भ धारण करने में समर्थ किसी अन्य पुरुष की ओर अपना हाथ बढ़ा और मुझे छोड़ कर उसी को अपना पति बनाने की इच्छा कर. (११)

किं भ्रातासाद् यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्.
काममूता बह्वे३तद् रपामि तन्वा मे तन्वं१ सं पिपृग्धि (१२)

यमी—वह भाई कैसा है, जिस के विद्यमान रहते हुए उस की बहन अपनी चाही हुई कामना से हीन रह जाए. वह कैसी बहन है, जिस के सामने ही उस का भाई काम संतप्त हो. इसी कारण तुम मेरी इच्छा के अनुसार आचरण करो. (१२)

न ते नाथं यम्यत्राहमस्मि न ते तनूं तन्वा३ सं पपृच्याम्.
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत् (१३)

यम—हे यमी! मैं तेरी इस कामना को पूर्ण करने वाला नहीं हो सकता. मैं तेरी देह को स्पर्श नहीं कर सकता. इसलिए तू अब मुझे छोड़ कर किसी अन्य पुरुष से इस प्रकार का संबंध स्थापित कर. मैं तुझे पत्नी बनाने की कामना नहीं करता हूं. (१३)

न वा उ ते तनूं तन्वा३ सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्.
असंयदेतन्मनसो हृदो मे भ्राता स्वसुः शयने यच्छयीय (१४)

यम—हे यमी! मैं तेरे शरीर का स्पर्श नहीं कर सकता. धर्म के जानने वाले भाई और बहन के ऐसे संबंध को पाप कहते हैं. यदि मैं ऐसा करूं तो यह कर्म मैं हृदय, मन और प्राण का नाश कर देगा. (१४)

बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम.
अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परि ष्वजातै लिबुजेव वृक्षम् (१५)

यमी—हे यम! तेरी दुर्बलता पर मैं दुखी हूं. तेरा मन मुझ में नहीं लगा है. मैं अभी तक तेरे मन को नहीं समझ सकी. तू किसी अन्य स्त्री से संबंधित होगा. (१५)

अन्यमू षु यम्यन्य उ त्वां परि ष्वजातै लिबुजेव वृक्षम्.
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम् (१६)

यम—हे यमी! रस्सी जिस प्रकार घोड़े से मिलती है, बेल जैसे पेड़ से लिपट जाती है, उसी प्रकार तू किसी अन्य पुरुष से मिल. तुम दोनों परस्पर अनुकूल मन वाले बनो. इस के बाद तू अत्यधिक कल्याण वाले पुत्र को प्राप्त कर. (१६)

त्रीणि च्छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्.
आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि (१७)

देवताओं ने संसार को ढकने का प्रयत्न किया. जल तत्त्व देखने में प्रिय लगने वाला तथा विश्व को देखने वाला है, वायु तत्त्व भी दर्शनीय और विश्व दृष्टा है. ओषधि तत्त्व भी इसी प्रकार का है. इन तीनों तत्त्वों को देवताओं ने पृथ्वी का भरणपोषण करने के लिए प्रतिष्ठित किया है. (१७)

वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः पयांसि यह्वो अदितेरदाभ्यः.
विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया स यज्ञियो यजति यज्ञियां ऋतून् (१८)

महान अग्निदेव यजमान के निमित्त पाश आदि के द्वारा जल की वर्षा करते हैं. वे अपनी बुद्धि के माध्यम से सब को ऐसे जान लेते हैं, जैसे वरुण देव अपनी बुद्धि से सब को जानते हैं. ये ही अग्नि यज्ञ में देवों की पूजा करते हैं जो पूजा करने के योग्य है. (१८)

रपद् गन्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु नो मनः.
इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो भ्राता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति (१९)

जल धारण करने वाले सूर्य की वाणी और अंतरिक्ष में विचरने वाली सरस्वती मेरे द्वारा अग्नि की स्तुति कराएं तथा मेरे स्तुति रूप नाद में मन की रक्षा करे. इस के बाद देवमाता अदिति मुझे फल के मध्य स्थापित करें. बंधु के समान हितकारी अग्नि मुझे उत्तम यजमान बनाएं. (१९)

सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वत्युषा उवास मनवे स्वर्वती.
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं होतारं विदथाय जीजनन् (२०)

अध्वर्यु जनों ने देवताओं का आह्वान कर के अग्नि को देवों के हेतु हव्य वहन के लिए प्रकट किया है. तभी कल्याणमयी मंत्र रूप वाणी तथा सूर्य से संबंध रखने वाली उषा यज्ञ आदि की सिद्धि के लिए प्रकट होती है. (२०)

अध त्यं द्रप्सं विभ्वं विचक्षणं विराभरदिषिरः श्येनो अध्वरे
यदी विशो वृणते दस्ममार्या अग्निं होतारमध धीरजायत (२१)

जब सोम के लाए जाने के बाद यज्ञ को पूरा करने वाली अग्नि का वरण किया जाता है, तब सोम और अग्नि के सिद्ध होने पर अग्निष्टोम आदि कर्म भी

पूर्ण होते हैं. (२१)

सद्रासि रण्वो यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः.
विप्रस्य वा यच्छशमान उक्थ्यो३ वाजं ससवां उपयासि भूरिभिः (२२)

हे अग्नि! तुम यज्ञ को सुंदरता पूर्वक पूर्ण करते हो. जिस प्रकार हरी घास आदि को खाने वाला पशु अपने पालने वाले को सुंदर दिखाई देता है, उसी प्रकार घृत आदि से अपने आपको पुष्ट करने वाले यजमान के लिए तुम दर्शनीय हो जाते हो. (२२)

उदीरय पितरा जार आ भगमियक्षति हर्यतो हृत्त इष्यति.
विवक्ति वह्निः स्वपस्यते मखस्तविष्यते असुरो वेपते मती (२३)

हे अग्नि! आकाशरूपी अपने पिता और पृथ्वीरूपी माता को तुम यहां के लिए प्रेरित करो. जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश को प्रेरित करते हैं. उसी प्रकार तुम अपने तेज को प्रेरित करो. यह यजमान जिन देवताओं की कामना करता है, अग्नि स्वयं उस की कामना करते हैं. वे इच्छित पदार्थ देने की बात कहते हैं और यज्ञ के हेतु यजमान के समीप आते हैं. (२३)

यस्ते अग्ने सुमतिं मर्तो अख्यत् सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे.
इषं दधानो वहमानो अश्वैरा द्युमां अमवान् भूषति द्यून् (२४)

हे अग्नि! जो यजमान तुम्हारी कृपा का दूसरों के सामने वर्णन करता है. वह यजमान तुम्हारी कृपा के कारण सभी जगह प्रसिद्ध होता है. वह यजमान अन्न, अश्व आदि से युक्त होता हुआ चिरकाल तक ऐश्वर्य से प्रतिष्ठित रहता है. (२४)

श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रवित्नुम्.
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप भूरिह स्याः (२५)

हे अग्नि! तुम इस देव स्थान अर्थात यज्ञशाला में हमारा आह्वान सुनो. तुम अपने जल बरसाने वाले रथ को लाने लिए प्रस्तुत करो. जो आकाश और पृथ्वी देवताओं के पलक के समान है, उन्हें भी अपने साथ लाओ. ऐसा कोई भी देवता शेष न रहे जो यहां न आया हो. (२५)

यदग्न एषा समितिर्भवाति देवी देवेषु यजता यजत्र.
रत्ना च यद् विभाजासि स्वधावो भागं नो अत्र वसुमन्तं वीतात् (२६)

हे अग्नि! तुम पूजा करने योग्य हो. जब देवताओं में स्तोतों और हवियों की संगति हो, तब तुम स्तुति करने वालों के लिए रत्न दाता बनो तथा उन्हें बहुत धन प्रदान करो. (२६)

अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः.
अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीनन्‌ द्यावापृथिवी आ विवेश (२७)

अग्नि उषा काल के साथ ही प्रकाशित होते हैं. ये दिनों के साथ भी प्रकाशित होते हैं. ये ही अग्नि सूर्य बन कर उषा की ओर अपनी किरणें प्रकाशित करते हैं. ये ही सूर्यात्मक अग्नि आकाश और पृथ्वी को सब ओर से प्रकाशित रखते हैं. (२७)

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः.
प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ ततान (२८)

ये अग्नि उषाकाल में नित्य प्रकाशित होते तथा दिन के समय भी प्रकाश वाले रहते हैं. ये ही सूर्यात्मक अग्नि अनेक प्रकार से प्रकट होने वाली किरणों में भी प्रकाश भरते हैं. ये आकाश और पृथ्वी दोनों को प्रकाश से भर देते हैं. (२८)

द्यावा ह क्षामा प्रथमे ऋतेनाभिश्रावे भवतः सत्यवाचा.
देवो यन्मर्तान् यजथाय कृण्वन्त्सीदद्धोता प्रत्यङ् स्वमसुं यन् (२९)

आकाश और पृथ्वी मुख तथा सत्य वाणी हैं. जब अग्निदेव यजमान के समीप आ कर यज्ञ संपन्न करने के लिए बैठे, तब ये आकाश और पृथ्वी स्तुति सुनने के योग्य हैं. (२९)

देवो देवान् परिभूर्ऋतेन वहा नो हव्यं प्रथमश्चिकित्वान्.
धूमकेतुः समिधा भाऋजीको मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान् (३०)

हे अग्नि! तुम प्रचंड ज्वालाओं से संपन्न हो. तुम पूज्य देवताओं को यज्ञ के द्वारा अपने वश में करते हुए तथा उन के पूजन की इच्छा करते हुए उन के पास हवि को पहुंचाओ. तुम धूम रूप ध्वजा वाले, समिधाओं से दीप्त होने वाले, देव वाहक तथा पूजा के पात्र हो. तुम हमारी हवि को देवों के समीप पहुंचाओ. (३०)

अर्चामि वां वर्धायापो घृतस्नू द्यावाभूमी शृणुतं रोदसी मे.
अहा यद् देवा असुनीतिमायन् मध्वा नो अत्र पितरा शिशीताम् (३१)

हे आकाश और पृथ्वी के अधिष्ठाता देवताओ! मैं यज्ञकर्म की सिद्धि के लिए तुम्हारी स्तुति करता हूं. हे आकाश और पृथ्वी! तुम दोनों मेरी स्तुति को सुनो तथा जब ऋत्विज अपने यज्ञ कार्य में लगा हो, तब तुम जल प्रदान के द्वारा हमारी वृद्धि करो. (३१)

स्वावृग् देवस्यामृतं यदी गोरतो जातासो धारयन्त उर्वी.
विश्वे देवा अनु तत् ते यजुर्गुर्दुहे यदेनी दिव्यं घृतं वाः (३२)

अमृत के समान उपकार करने वाला जल जब किरणों से प्रकट होता है, तब ओषधियां आकाश और पृथ्वी में व्याप्त होती हैं. जब अग्नि की दीप्तियां अंतरिक्ष से टपकने वाले जल का दोहन करती हैं, तब हे अग्नि! उस जल का सब अनुगमन

करते हैं जो तुम्हारे द्वारा प्रकट किया जाता है. (३२)

किं स्विन्नो राजा जगृहे कदस्याति व्रतं चकृमा को वि वेद.
मित्रश्चिद्धि ष्मा जुहुराणो देवाञ्छ्लोको न यातामपि वाजो अस्ति (३३)

देवताओं में क्षत्रियों संबंधी शक्ति वाले यम हमारे हव्य का कुछ भाग ग्रहण करें. कहीं हम से उस कार्य का अतिक्रमण हो गया जो यम को प्रसन्न करने में सक्षम है तो यहां देवों का आह्वान करने वाले अग्नि विराजमान हैं. वे ही हमारे अपराध को दूर करेंगे. हमारे पास स्तुति के समान हवि भी है. उस के द्वारा हम अग्नि को संतुष्ट कर के यम के अपराध से छूट सकते हैं. (३३)

दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद् विषुरूपा भवाति.
यमस्य यो मनवते सुमन्त्वग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन् (३४)

यहां पर यम का नाम लेना उपयुक्त नहीं है, क्योंकि उन की बहन ने उन की पत्नी बनने की इच्छा की थी. फिर भी जो इन यम की स्तुति करे, हे अग्नि! तुम उस निंदा को भुलाते हुए उस स्तोता की रक्षा करो. (३४)

यस्मिन् देवा विदथे मादयन्ते विवस्वतः सदने धारयन्ते.
सूर्ये ज्योतिरदधुर्मास्य१क्तून् परि द्योतनिं चरतो अजस्रा (३५)

जिस अग्नि के यज्ञ पूर्ण कराने वाले रूप से प्रतिष्ठित होने पर देवता प्रसन्न होते हैं तथा जिस के कारण मनुष्य सूर्य लोक में निवास करते हैं, जिस अग्नि ने ही देवताओं के प्रकाशमान तेज को तीनों लोकों में प्रतिष्ठित किया है तथा अंधकार का नाश करने वाली किरणों को जिस से लेकर चंद्रमा में स्थापित किया है, सूर्य और चंद्रमा ऐसे तेजस्वी अग्नि की निरंतर पूजा करते हैं. (३५)

यस्मिन् देवा मन्मनि संचरन्त्यपीच्ये३ न वयमस्य विद्म.
मित्रा नो अत्रादितिरनागान्त्सविता देवो वरुणाय वोचत् (३६)

वरुण के जिस स्थान में देवता घूमते हैं, उस स्थान से हम परिचित नहीं हैं. देवगण उस स्थान से हमारे निर्दोष होने की बात कहें. सविता अदिति, आकाश तथा मित्र देवता भी अग्नि की कृपा से हम को निर्दोष कहें. (३६)

सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे. स्तुष ऊ षु नृतमाय धृष्णवे (३७)

हम सखा रूप इंद्र के लिए दृढ़ कार्य करने की इच्छा रखते हैं. उन शत्रुओं का मर्दन करने वाले महान नेता और वज्रधारी इंद्र की हम स्तुति करते हैं. (३७)

शवसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा. मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि (३८)

हे वृत्र राक्षस का विनाश करने वाले इंद्र! तुम जिस प्रकार वृत्र राक्षस का हनन करने वाले रूप में प्रसिद्ध हो, उसी प्रकार अपने धन के कारण भी विख्यात हो. तुम अपना धन मुझे प्रदान करो. (३८)

स्तेगो न क्षामत्येषि पृथिवीं मही नो वाता इह वान्तु भूमौ.
मित्रो नो अत्र वरुणो युज्यमानो अग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् (३९)

वर्षा ऋतु में मेंढक जिस प्रकार पृथ्वी को लांघ जाता है, उसी प्रकार तुम पृथ्वी को लांघ कर ऊपर जाते हो. अग्नि की कृपा से वायु हमारे लिए सुखकर हो. मित्र एवं वरुण देवता भी हमें सुख देने वाले कार्य में लगें. अग्नि जिस प्रकार तिनकों आदि को भस्म करते हैं, उसी प्रकार हमारे शोक को समाप्त करें. (३९)

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहत्नुमुग्रम्.
मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमस्मत् ते नि वपन्तु सेन्यम् (४०)

हे स्तोता! उन रुद्र देवता की स्तुति करो, जिन का निवास स्थान श्मशान में है, जो पिशाच आदि के स्वामी हैं तथा जो पराक्रमी, भय उत्पन्न करने वाले तथा समीप आ कर हिंसित करने वाले हैं. हे दुख का नाश करने वाले इंद्र! तुम हमारी स्तुति से प्रसन्न हो कर हमें सुख प्रदान करो. तुम्हारी सेना हम को त्याग कर उन पर आक्रमण करे जो हम से द्वेष रखते हैं. (४०)

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने.
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् (४१)

मृतक संस्कार करने वाले तथा अग्नि की इच्छा करते हुए पुरुष सरस्वती का आह्वान करते हैं. हम ज्योतिष्टोम आदि यज्ञों में भी सरस्वती को बुलाते हैं. देवी सरस्वती हवि प्रदान करने वाले यजमान को मनचाहा धन दें. (४१)

सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः.
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे (४२)

वेदी की दक्षिण दिशा में प्रतिष्ठित पितर भी सरस्वती का आह्वान करते हैं. हे पितरो! तुम इस यज्ञ में विराजमान होते हुए प्रसन्न रहो. तुम सरस्वती को प्रसन्न करो तथा हवियों को प्राप्त कर के संतुष्ट बनो. हे सरस्वती! तुम पितरों के द्वारा बुलाई गई हो. तुम हम में ऐसे अन्न को स्थापित करो जो रागरहित और हमारा इच्छित है. (४२)

सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती.
सहस्रार्घमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि (४३)

हे सरस्वती! तुम अपने आप को तृप्त करती हुई पितरों सहित एक ही रथ पर

आती हो. अनेक व्यक्तियों तथा प्रजाओं को तृप्त कर के अन्न के भाग को और अन्न के बल को मुझ यजमान को प्रदान करो. (४३)

उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः.
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु (४४)

अवस्था एवं गुणों में श्रेष्ठ, निकृष्ट एवं मध्यम श्रेणी के पितर भी उठें. ये पितर सोम का भक्षण करने वाले हैं. ये प्राण से उपलक्षित शरीर को प्राप्त होने वाले, अहिंसक और पदार्थ के ज्ञाता हैं. बुलाए जाने पर ये पितर हमारी रक्षा करें. (४४)

आहं पितृन्त्सुविदत्रां अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः.
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः (४५)

मैं कल्याण करने वाले पितरों के सामने उपस्थित होता हूं. मैं यज्ञ की रक्षा करने वाले अग्नि के सामने उपस्थित होता हूं. इसलिए जो पितर बर्हिषद अर्थात कुशाओं पर बैठने वाले हैं, वे स्वधा के साथ सोमरस पीते हैं. हे अग्नि! उन्हें मेरे समीप बुलाओ. (४५)

इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो ये अपरास ईयुः.
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु (४६)

जो पितर पहले पितरलोक को प्राप्त हुए थे तथा जो अब वहां गए हैं, जो अभी पृथ्वी लोक में ही हैं तथा जो भिन्नभिन्न दिशाओं में हैं, उन सभी पितरों को नमस्कार है. (४६)

मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः.
यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवांस्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु (४७)

मातल नाम वाले पितृ देवता यजमान के द्वारा दिए गए हवि से कव्य नाम वाले पितरों के साथ वृद्धि पाते हैं. पितरों के नेता यम नाम के देव यजमान को इस हवि से अंगिरा नाम के पितरों के साथ बढ़ते हैं. मातल आदि देवता जिन पितरों के यज्ञ में प्रबुद्ध करते हैं तथा जो कुव्यादि की आहुति से प्रबुद्ध करते हैं, वे पितर आह्वान काल में हमारी रक्षा करें. (४७)

स्वादुष्किलायं मधुमां उतायं तीव्रः किलायं रसवां उतायम्.
उतो न्व१स्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु (४८)

यह सोमरस निश्चित रूप से स्वादिष्ट है, यह सोमरस माधुर्य गुण से युक्त है. यह सोमरस पीने में निश्चित रूप से तीखा लगता है. यह सोम उत्तम स्वाद वाला है. इस को पीने के इच्छुक इंद्र को संग्राम में कोई भी सहन नहीं कर पाता. तात्पर्य यह है कि संग्राम में इंद्र के सामने कोई भी नहीं टिक पाता है. (४८)

परेयिवांसं प्रवतो महीरिति बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम्.

वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत (४९)

पृथ्वी को लांघ कर दूर देश में गमन करने वाले अनेक पितरों के मार्ग पर चलने वाले विवस्वान अर्थात सूर्य के पुत्र मृतकों के धाम रूप यमराज को रखते हैं. (४९)

यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ.
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेता एना जज्ञानाः पथ्या३ अनु स्वाः (५०)

यम ने सब से पहले हमारे मार्ग को जाना. यह मार्ग अपसरण अर्थात छुटकारे के लिए नहीं है. इस मार्ग से छुटकारा नहीं पाया जा सकता. जहां पर हमारे पूर्वज पितर गए हैं, इस मार्ग को न जानने वाले प्राणी अपनेअपने कर्मों के अनुसार जाते हैं. (५०)

बर्हिषदः पितर ऊत्य१र्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्.
त आ गतावसा शंतमेनाधा नः शं योररपो दधात (५१)

हे यज्ञ में आए हुए एवं कुशों पर बैठे हुए पितरो! तुम हमारी रक्षा करने के लिए हमारे सामने आओ. ये हवियां तुम्हारे निमित्त हैं. तुम इन का सेवन करो. तुम अपने कल्याणकारी रक्षा साधनों के साथ आओ तथा राग का शमन करने वाले तथा पाप का नाश करने वाले बल को हम में स्थापित करो. (५१)

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येदं नो हविरभि गृणन्तु विश्वे.
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता कराम (५२)

हे पितरो! घुटने सिकोड़ कर वेदी की दक्षिण दिशा में बैठे हुए तुम हमारी हवि की प्रशंसा करो. हमारे किसी भी छोटे अथवा बड़े अपराध के कारण हमारी हिंसा मत करना. मनुष्य स्वभाव के कारण हम से अपराध का होना असंभव नहीं है. (५२)

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति तेनेदं विश्वं भुवनं समेति.
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश (५३)

सिंचित वीर्य को पुरुष आदि की आकृति में बदलने वाले त्वष्टा ने अपनी पुत्री सरण्यु का विवाह किया. उसे देखने के लिए पूरा विश्व एकत्र हुआ. यम की माता सरण्यु जब सूर्य के द्वारा विवाही गई, तब सूर्य की अधिक प्रभाव वाली पत्नी उन के समीप से अदृश्य हो गई. (५३)

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणैर्येना ते पूर्वे पितरः परेताः.
उभा राजानौ स्वधया मदन्तौ यमं पश्यासि वरुणं च देवम् (५४)

हे प्रेत! जिस अर्थी को मनुष्य उठाते हैं. उस से यम के मार्ग को गमन करो. तुम्हारे पूर्व पुरुष इसी मार्ग से गए हैं. वहां देवताओं में अग्नि के समान कर्म करने वाले वरुण और यम दोनों हैं. वे हमारे द्वारा दी गई हवियों से प्रसन्न हो रहे हैं. इस

1140

लोक में तुम यम और वरुण के दर्शन करोगे. (५४)

अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन्.
अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै (५५)

हे राक्षसो! तुम इस स्थान से भागो. तुम चाहे यहां पर पहले से रहते हो अथवा नए आकर रहने लगे हो, तुम यहां से चले जाओ, क्योंकि यह स्थान इस प्रेत के लिए दिन, रात और जल के सहित रहने के लिए यम ने प्रदान किया है. (५५)

उशन्तस्त्वेधीमह्युशन्तः समिधीमहि.
उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे (५६)

हे अग्नि! इस पितृ यज्ञ को संपन्न करने के लिए हम तुम्हारी कामना करते हैं तथा तुम्हारा आह्वान करते हैं. तुम भलीभांति प्रदीप्त हो कर स्वधन की इच्छा करने वाले पितरों को लिए हवि भक्षण करने आओ. (५६)

द्युमन्तस्त्वेधीमहि द्युमन्तः समिधीमहि.
द्युमान् द्युमत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे (५७)

हे अग्नि! हम तुम्हारा आह्वान करते हैं. तुम्हारी कृपा से हम यशस्वी हो गए हैं. हम तुम्हें प्रदीप्त करते हैं. तुम हमारी हवि स्वीकार कर के उसे भक्षण करने के लिए पितरों के यहां ले आओ. (५७)

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः.
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम (५८)

प्राचीन अंगिरा ऋषि हमारे पितर हैं. नवीन स्तोक वाले अथर्वा तथा भृगु हमारे पितर हैं. ये सब सोमरस का पान करने वाले हैं. हम उन की कृपा दृष्टि में रहें. वे हम से प्रसन्न रहें. (५८)

अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गहीह यम वैरूपैरिह मादयस्व.
विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन् बर्हिष्या निषद्य (५९)

हे यम! अंगिरा नाम के यज्ञ संबंधी पितरों के साथ यहां आ कर तृप्त बनो. मैं तुम को ही नहीं, तुम्हारे पिता सूर्य को भी बुलाता हूं, जिस से वे इस कुश के आसन पर बैठ कर हवि ग्रहण करें. मैं इस प्रकार तुम्हें आहूत करता हूं. (५९)

इमं यम प्रस्तरमा हि रोहाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः.
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषो मादयस्व (६०)

हे यम! तुम अंगिरा नाम वाले पितरों के समान मति वाले बन कर कुश के इस आसन पर बैठो. महर्षियों के मंत्र तुम्हें बुलाने में समर्थ हों. तुम हवि प्राप्त कर के

प्रसन्न बनो. (६०)

इत एत उदारुहन् दिवस्पृष्ठान्यारुहन्.
प्र भूर्जयो यथा पथा द्यामङ्गिरसो ययुः (६१)

दाह संस्कार करने वाले पुरुषों ने मृतक को पृथ्वी से उठा कर अर्थी पर रखा और आकाश के उपभोग योग्य स्थानों पर चढ़ा दिया. पृथ्वी को जीतने वाले आंगिरस जिस मार्ग से गए हैं, उसी मार्ग से इसे भी आकाश में पहुंचा दिया. (६१)

सूक्त दूसरा देवता—यम तथा मंत्र में कहे गए

यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः.
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः (१)

यज्ञ में यम के लिए सोम को पवित्र किया जाता है. यम के लिए हवि दी जाती है. नाना प्रकार के द्रव्यों से सुशोभित किया गया यज्ञ अग्नि को दूत बना कर यम के पास जाता है. ये ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ यम को प्राप्त होते हैं. (१)

यमाय मधुमत्तमं जुहोता प्र च तिष्ठत.
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः (२)

हे यजमानो! यम के लिए सोम, घृत आदि की आहुति दो. पूर्व पुरुषों तथा मंत्र द्रष्टा अंगिरा आदि ऋषियों के लिए नमस्कार है. (२)

यमाय घृतवत् पयो राज्ञे हविर्जुहोतन.
स नो जीवेष्वा यमेद् दीर्घमायुः प्र जीवसे (३)

हे यजमानो! घृत से युक्त क्षीर रूप हवि यम के लिए अर्पण करो. वे हवि पा कर हमें जीवित मनुष्यों में रखेंगे और सौ वर्ष की आयु प्रदान करेंगे. (३)

मैनमग्ने वि दहो माभि शूशुचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम्.
शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितॄंरुप (४)

हे अग्नि! इस प्रेत को भस्म मत करो; इस की त्वचा को अन्यत्र मत फेंको. इस के लिए शोक भी मत करो. जब तुम इस हवि रूप शरीर को पका लो, तब इसे रक्षा के लिए पितरों को दो. इस प्रेत की आत्मा पितृ लोक में चली जाए. (४)

यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेममेनं परि दत्तात् पितृभ्यः.
यदो गच्छात्यसुनीतिमेतामथ देवानां वशनीर्भवाति (५)

हे जातवेद अग्नि! जब तू इस प्रेत को पूरी तरह भस्म कर दे, तब इसे पितरों के लिए सौंप दे. जब इस के प्राण निकल जाते हैं, तब यह प्रेत देवों के वश में हो जाता है. (५)

त्रिकद्रुकेभिः पवते षडुर्वीरेकमिद् बृहत्.
त्रिष्टुब् गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आर्पिता (६)

यह सब का नियंत्रण करने वाला तथा महान यम कद्रुक नाम के तीन यंत्रों से छह उर्वियों को प्राप्त होता है. त्रिष्टुप, गायत्री आदि छंद सब का नियंत्रण करने वाले परमात्मा में स्थित हैं. (६)

सूर्यं चक्षुषा गच्छ वातमात्मना दिवं च गच्छ पृथिवीं च धर्मभिः.
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः (७)

हे प्रेत! तू नेत्र द्वार से सूर्य को प्राप्त हो. तू आत्मा के द्वारा वायु को प्राप्त हो तथा वन्य इंद्रियों से आकाश और पृथ्वी को प्राप्त हो तथा अंतरिक्ष और जल को प्राप्त हो. यदि इन स्थानों में जाने की तेरी इच्छा हो तो जा अथवा ओषधि आदि में प्रविष्ट हो जा. (७)

अजो भागस्तपसस्तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः.
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभिर्वहैनं सुकृतामु लोकम् (८)

हे अग्नि! इस प्रेत का जो जन्म न लेने वाला भाग अर्थात आत्मा है, उसे तुम अपने तप से संतप्त करो. तेरी दीप्त होती हुई ज्वाला इस प्रेत की आत्मा को तपाए. हे जातवेद अग्नि! तेरा जो ज्वालारूपी कल्याणकारी शरीर है, उस के द्वारा इस प्रेत की आत्मा को उत्तम कर्म करने वालों के लोक में ले जा. (८)

यास्ते शोचयो रंहयो जातवेदो याभिरापृणासि दिवमन्तरिक्षम्.
अजं यन्तमनु ताः समृण्वतामथेतराभिः शिवतमाभिः शृतं कृधि (९)

हे जातवेद अग्नि! तेरा जो ज्वालारूपी शरीर है, उस से तू द्युलोक तथा अंतरिक्ष लोक व्याप्त करता है. तेरा ज्वालारूपी शरीर द्युलोक को जाती हुई इस प्रेत की आत्मा के पीछे जाए तथा दूसरे कल्याणकारी शरीरों के पीछे रह गई इस प्रेत की मृत देह को पूरी तरह जला दे. (९)

अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुतश्चरति स्वधावान्.
आयुर्वसान उप यातु शेषः सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः (१०)

हे अग्नि! हवि के रूप में जो प्रेत तुम्हें दिया गया है तथा हमारे प्रति स्वधा से संपन्न हो कर तुम्हारे द्वारा जलाया जा रहा है, उसे तुम पितृलोक के लिए छोड़ दो. उस का पुत्र आयु से संपन्न होता हुआ अपने घर को लौटे. यह प्रेत सुंदर शक्ति वाला तथा पितृलोक में निवास करने वाला हो. (१०)

अति द्रव श्वानौ सारमेयौ चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा.
अधा पितृन्त्सुविदत्रां अपीहि यमेन ये सधमादं मदन्ति (११)

हे प्रेत! तू पितृलोक को जाने वाला है. तू सरमा नाम की देवों की कुतिया के

श्याम और शबल नाम वाले दोनों पुत्रों के साथ प्रसन्न रहने वाले एवं हव्य संपन्न पितरों के पास पहुंचे. (११)

यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिषदी नृचक्षसा.
ताभ्यां राजन् परि धेह्येनं स्वस्त्यस्मा अनमीवं च धेहि (१२)

हे पितरों के प्रभु! पितर मार्ग में स्थित चार नेत्रों वाले जो कुत्ते यमपुर की रक्षा करने के हेतु तुम्हारे द्वारा नियुक्त किए गए हैं, इस प्रेत की रक्षा के लिए उन्हें सौंप दो. वह तुम्हारे लोक में रहने को आया है. इसे बाधा रहित स्थान दो. (१२)

उरूणसावसुतृपावुदुम्बलौ यमस्य दुतौ चरतो जनां अनु.
तावस्मभ्यं दृशये सूर्याय पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम् (१३)

बड़ीबड़ी नाक वाले प्राणियों के प्राणों से तृप्ति को प्राप्त हुए तथा प्राणों का अपहरण करने वाले महाबली यमदूत सभी जगह घूमते हैं. ये दोनों दूत सूर्य दर्शन के निमित्त पांच इंद्रियों वाले प्राण को हमारे शरीर में पुनः स्थापित करें. (१३)

सोम एकेभ्यः पवते घृतमेक उपासते.
येभ्यो मधु प्रधावति तांश्चिदेवापि गच्छतात् (१४)

कुछ पितरों के लिए नदी के रूप में सोमरस बहता है. अन्य पितर घृत का उपभोग करते हैं. ब्रह्म याग में अथर्ववेद के मंत्रों का पाठ करने वालों के लिए मधु अर्थात शहद की नदी है. हे मृतात्मा को प्राप्त प्रेत! तू उन सब को प्राप्त हो. (१४)

ये चित् पूर्व ऋतसाता ऋतजाता ऋतावृधः.
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजां अपि गच्छतात् (१५)

जो पूर्व पुरुष सत्य से युक्त थे, जो साम से उत्पन्न हो कर सत्य की वृद्धि करते थे, हे यम के निमित्त पुरुष! उन तपोबल वाले ऋषियों को तू प्राप्त हो. (१५)

तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः.
तपो ये चक्रिरे महस्तांश्चिदेवापि गच्छतात् (१६)

तप के द्वारा, यज्ञ आदि साधनों के द्वारा, दुष्कर कर्म और उपासना के द्वारा महान तप करते हुए जो पुरुष पुण्य लोकों को जाते हैं, हे पुरुष! तू उन तपस्वियों के लोकों को जा. (१६)

ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः.
ये वा सहस्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापि गच्छतात् (१७)

जो वीर पुरुष युद्धों में शत्रुओं पर प्रहार करते हैं, जो रणक्षेत्र में शरीर का त्याग करते हैं तथा जो अन्न, दक्षिणा आदि वाले यज्ञों को पूर्ण करते हैं, उन्हें जो फल प्राप्त है, तू उन सभी फलों को प्राप्त कर. (१७)

सहस्रणीथाः कवयो ये गोपायन्ति सूर्यम्.
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजां अपि गच्छतात् (१८)

जो अनंत द्रष्टा ऋषि सूर्य की रक्षा करते हैं, हे पुरुष! तू यम के पास ले जाने वाला हो कर उन तपस्वी ऋषियों के कर्म फल को प्राप्त कर. (१८)

स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी.
यच्छास्मै शर्म सप्रथाः (१९)

हे वेदी रूपिणी पृथ्वी! तू मरने वाले पुरुष के लिए कंटकहीन बन जा तथा इसे सभी प्रकार का सुख प्रदान कर. (१९)

असंबाधे पृथिव्या उरौ लोके नि धीयस्व.
स्वधा याश्चकृषे जीवन् तास्ते सन्तु मधुश्चुतः (२०)

हे मरने वाले पुरुष! तू यज्ञ आदि की वेदी के विस्तृत स्थान में प्रतिष्ठित हो. पहले तू ने जिन उत्तम हवियों को दिया है, वे तुझे मधु आदि रसों के रूप में प्राप्त हों. (२०)

ह्वयामि ते मनसा मन इहेमान् गृहां उप जुजुषाण एहि.
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन स्योनास्त्वा वाता उप वान्तु शग्माः (२१)

हे प्रेत पुरुष! मैं अपने मन के द्वारा तेरे मन को इस लोक में बुलाता हूं. जिन घरों में तेरे लिए और्ध्वदैहिक अर्थात देह त्याग के बाद का कर्म किया जाता है, तू हमारे उन घरों में जा तथा संस्कार के बाद पिता, पितामह, प्रपितामह आदि के साथ सपिण्डीकरण की विधि के अनुसार मिल. यम के पास पहुंचा हुआ तू पितृलोक में जा कर श्रम को दूर करने वाली वायु को प्राप्त कर. (२१)

उत् त्वा वहन्तु मरुत उदवाहा उदप्रुतः.
अजेन कृण्वन्तः शीतं वर्षेणोक्षन्तु बालिति (२२)

हे प्रेत! मरुद्गण तुझे व्योम में धारण करें. वायु तुझे ऊर्ध्वलोक में पहुंचाए. जल को धारण करने वाले तथा वर्षा करने वाले मेघ समीप में भी अज अर्थात अजन्मा आत्मा सहित तुझे वर्षा के जल से सींचें. (२२)

उदह्वमायुरायुषे क्रत्वे दक्षाय जीवसे.
स्वान् गच्छतु ते मनो अधा पितृंरुप द्रव (२३)

हे प्रेत! प्राणन अर्थात सांस लेने और अपानन अर्थात अपान वायु छोड़ने के व्यापार अर्थात कार्य के लिए मैं तेरी आयु का आह्वान करता हूं. तेरा मन संस्कार से

उत्पन्न नवीन शरीर को प्राप्त हो. इस के बाद तू पितरों के समीप पहुंच. (२३)

मा ते मनो मासोर्माङ्गानां मा रसस्य ते.
मा ते हास्त तन्वः१: किं चनेह (२४)

हे प्रेत! तेरा मन और तेरी इंद्रियां तेरा त्याग न करें. तेरे प्राण के किसी अंश का क्षय न हो. तेरे शरीर के अंगों में किसी प्रकार का विकार न हो. तेरे शरीर में रुधिर रस आदि भी पूरी मात्रा में रहें. तेरा कोई भी भाग तुझ से अलग न हो. (२४)

मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट मा देवी पृथिवी मही.
लोकं पितृषु वित्त्वैधस्व यमराजसु (२५)

हे प्रेत! तू जिस वृक्ष के नीचे बैठे, वह तुझे व्यथित न करे. तू जिस धरती का आश्रय ले, वह भी तुझे पीड़ा न पहुंचाए. तू यम की प्रजा रूप पितरों के स्थान पर जा कर वृद्धि प्राप्त कर. (२५)

यत् ते अङ्गमतिहितं पराचैरपानः प्राणो य उ वा ते परेतः.
तत् ते संगत्य पितरः सनीडा घासाद् घासं पुनरा वेशयन्तु (२६)

हे प्रेत! तेरा जो अंग तेरे शरीर से अलग हो गया था, जो प्राण वापस न होने के लिए तेरे शरीर से निकल गए थे, उन सब को एक स्थान पर स्थित पितर तुझे एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रविष्ट करें. (२६)

अपेमं जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वहत परि ग्रामादितः.
मृत्युर्यमस्यासीद् दूतः प्रचेता असून् पितृभ्यो गमयां चकार (२७)

हे जीवित बंधुओ! इस प्रेत को घर से ले जाओ. उसे उठा कर ग्राम से बाहर ले जाओ. यम के दूत रूप मृत्यु ने इस के प्राणों को पितर के रूप में करने के लिए ले लिया है. (२७)

ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा ज्ञातिमुखा अहुतादश्चरन्ति.
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टानस्मात् प्र धमाति यज्ञात (२८)

जो राक्षसों के समान पिता, पितामह आदि पितरों में मिल कर बैठ जाते हैं, माया कर के हवि का भक्षण करते हैं तथा पिंडदान करने वाले पुत्रों और पौत्रों की हिंसा करते हैं, उन मायावी राक्षसों को पितृयाग से अग्नि देव बाहर निकालें. (२८)

सं विशन्त्विह पितरः स्वा नः स्योनं कृण्वन्तः प्रतिरन्त आयुः.
तेभ्यः शकेम हविषा नक्षमाणा ज्योग् जीवन्तः शरदः पुरूचीः (२९)

हमारे गोत्र में उत्पन्न पिता, पितामह आदि सभी पितर भलीभांति यज्ञ में आ कर बैठें तथा हमें सुखी बनाएं. वे हमारी आयु की वृद्धि करें. हम भी आयु प्राप्त कर के हवियों द्वारा पितरों को पूजते हुए चिरकाल तक जीवित रहें. (२९)

यां ते धेनुं निपृणामि यमु ते क्षीर ओदनम्.
तेना जनस्यासो भर्ता योऽत्रासदजीवनः (३०)

हे प्रेत! मैं तेरे निमित्त गोदान करता हूं. मैं तेरे लिए दूध से बना जो भात देता हूं, उस के द्वारा तू यमलोक में अपने जीवन को पुष्ट करने वाला हो. (३०)

अश्वावतीं प्र तर या सुशेवार्क्षाकं वा प्रतरं नवीयः.
यस्त्वा जघान वध्यः सो अस्तु मा सो अन्यद् विदत् भागधेयम् (३१)

हे प्रेत! मैं नए वन मार्ग में रीछ आदि दुष्ट पशुओं से बचता हुआ पार हो जाऊं. तू हमें अश्वावती नदी के उस पार उतार दे. यह नदी हमें सुख देने वाली हो. जिस ने तेरा वध किया है, वह वध के योग्य होता हुआ उपभोग के योग्य पदार्थ न पा सके. (३१)

यमः परोऽवरो विवस्वान् ततः परं नाति पश्यामि किं चन.
यमे अध्वरो अधि मे निविष्टो भुवो विवस्वानन्वाततान (३२)

सूर्य के पुत्र यम अपने पिता से भी अधिक तेजस्वी हैं. मैं किसी भी प्राणी को यम से श्रेष्ठ नहीं पाता हूं. तेरा यज्ञ उन श्रेष्ठ यम में व्याप्त हो रहा है. यज्ञ की सिद्धि के लिए ही सूर्य ने भूखंडों को विस्तृत किया है. (३२)

अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वा सवर्णामदधुर्विवस्वते.
उताश्विनावभरद् यत् तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः (३३)

मरणधर्मा मनुष्यों से देवताओं ने अपनेअपने अविनाशी रूप अदृश्य कर लिए. उन्होंने सूर्य को अन्य वर्ण वाली स्त्री बना कर दी. सरण्यु ने घोड़ी का रूप धारण कर के अश्विनीकुमारों का पालन किया. त्वष्टा की पुत्री सरण्यु ने सूर्य का घर छोड़ते समय यमयमी के जोड़े को घर पर ही छोड़ा था. (३३)

ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिताः.
सर्वांस्तानग्न आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे (३४)

जो पिता भूमि में गाड़े जा कर, जो काठ के समान त्यागे जा कर तथा जो अग्नि दाह के संस्कार के द्वारा ऊपर स्थित पितृलोक को प्राप्त हुए हैं, इस प्रकार के पितरो! हवि भक्षण के लिए यहां आओ. (३४)

ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते.
त्वं तान् वेत्थ यदि ते जातवेदः स्वधया यज्ञं स्वधितिं जुषन्ताम् (३५)

जो पितर अग्नि के द्वारा संस्कृत हुए, जो गाड़ने आदि के द्वारा संस्कृत हुए और जो पिंड, पितृयाग आदि से तृप्त हुए आकाश में निवास करते हैं, हे अग्नि! तुम उन्हें भलीभांति जानते हो. वे अपनी संतानों के द्वारा किए जाने वाले पितृयाग

आदि का सेवन करें. (३५)

शं तप माति तपो अग्ने मा तन्वं१ तपः.
वनेषु शुष्मो अस्तु ते पृथिव्यामस्तु यद्धरः (३६)

हे अग्नि! इस प्रेत के शरीर को अधिक मत जलाओ. जिस प्रकार इसे सुख मिले, वैसा करो. शोषण करने वाली तुम्हारी ज्वालाएं जंगल में जाएं तथा रस का हरण करने वाला तेज पृथ्वी में रहे. तुम हमारे शरीरों को भस्म मत करो. (३६)

ददाम्यस्मा अवसानमेतद् य एष आगन् मम चेहभूदिह.
यमश्चिकित्वान् प्रत्येतदाह ममैष राय उप तिष्ठतामिह (३७)

यम का वचन—यह आया हुआ पुरुष मेरा हो तो मैं उसे स्थान दूं. अब यह मेरे पास आया है. यदि यह मेरा स्तवन करता रहे तो यहां रह सकता है. (३७)

इमां मात्रां मिर्मीमहे यथापरं न मासातै. शते शरत्सु नो पुरा (३८)

हम इस श्मशान को नापते हैं, क्योंकि ब्रह्मा जी ने हमें सौ वर्ष की आयु प्रदान की है. इसलिए बीच में ही श्मशान हमें अपने कर्म के द्वारा प्राप्त न हो. (३८)

प्रेमां मात्रां मिमीमहे यथांपरं न मासातै.
शते शरत्सु नो पुरा (३९)

हम इस श्मशान को अच्छी प्रकार नापते हैं, जिस से हमें सौ वर्ष से पहले बीच में ही श्मशान कर्म प्राप्त न हो. (३९)

अपेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै.
शते शरत्सु नो पुरा (४०)

हम इस श्मशान के नाप संबंधी दोषों को हटाते हुए नापते हैं, जिस से हमें सौ से पहले बीच में ही दूसरा मृतक कर्म प्राप्त न हो. (४०)

वी३मां मात्रां मिमीहहे यथापरं न मासातै. शते शरत्सु नो पुरा (४१)

हम इस श्मशान भूमि को विशेष प्रकार से नापते हैं, जिस से हमें सौ वर्ष से पहले बीच में ही दूसरा श्मशान कर्म प्राप्त न हो. (४१)

निरिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै. शते शरत्सु नो पुरा (४२)

हम दोष रहित करते हुए इस श्मशान को नापते है, जिस से हमें सौ वर्ष से पहले बीच में ही दूसरा श्मशान कर्म प्राप्त न हो. (४२)

उदिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै. शते शरत्सु नो पुरा (४३)

उत्कृष्ट साधन वाली नाप से हम इस श्मशान को नापते हैं, जिस से हमें सौ वर्ष से पहले बीच में ही दूसरा श्मशान कर्म प्राप्त न हो. (४३)

समिमां मात्रां मिमीहहे यथापर न मासातै. शते शरत्सु नो पुरा (४४)

इस श्मशान भूमि को हम भलीभांति नापते हैं, जिस से हमें सौ वर्ष से पहले बीच में ही दूसरा श्मशान कर्म प्राप्त न हो. (४४)

अमासि मात्रां स्व रगामायुष्मान् भूयासम्.
यथापरं न मासातै शते शरत्सु नो पुरा (४५)

मैं ने श्मशान की भूमि को नाप लिया है, उसी नाप के द्वारा मैं इस प्रेत को स्वर्ग भेज चुका हूं. उस कर्म से ही मैं सौ वर्ष की आयु प्राप्त करूं तथा सौ वर्ष से पहले बीच में ही मुझे अन्य श्मशान कर्म प्राप्त न हो. (४५)

प्राणो अपानो व्यान आयुश्चक्षुर्दृशये सूर्याय.
अपरिपेण पथा यमराज्ञः पितॄन् गच्छ (४६)

प्राण, अपान, व्यान, आयु तथा चक्षु—सब आदित्य के दर्शन करने वाले हों. हे पुरुष! तू भी यमराज के प्रत्यक्ष मार्ग के द्वारा पितरों को प्राप्त हो. (४६)

ये अग्रवः शशमानाः परेयुर्हित्वा द्वेषांस्यनपत्यवन्तः.
ते द्यामुदित्याविदन्त लोकं नाकस्य पृष्ठे अधि दीध्यानाः (४७)

जो पितर संतान रहित होने पर भी पापों का त्याग करते हुए परलोक में गए, वे अंतरिक्ष को लांघ कर स्वर्ग के ऊपरी भाग में निवास करते हैं तथा पुण्य का फल प्राप्त करते हैं. (४७)

उदन्वती द्यौरवमा पीलुमतीति मध्यमा.
तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितर आसते (४८)

सब से नीचे उदंचती नाम का द्युलोक है, जिस में जल रहता है. उस के ऊपर अर्थात बीच में पीलुमती नाम का द्युलोक है, जिस में नक्षत्र आदि रहते हैं. सब से ऊपर तीसरा प्रद्यौ नाम का द्युलोक है, जिस के इसी तीसरे भाग में पितर निवास करते हैं. (४८)

ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्व१न्तरिक्षम्.
य आक्षियन्ति पृथिवीमुत द्यां तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम (४९)

हमारे पिता के जन्मदाता पितर, पितामह के जन्मदाता पितर, वे पितर जो विशाल अंतरिक्ष में प्रविष्ट हुए हैं तथा जो पितर स्वर्ग अथवा पृथ्वी पर निवास करते हैं, हम इन सभी लोकों में निवास करने वाले पितरों का नमस्कारों के द्वारा पूजन करते हैं. (४९)

इदमिद् वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम्.
माता पुत्रं यथा सिचाभ्ये नं भूम ऊर्णुहि (५०)

हे मृतक! हम श्राद्ध आदि में जो कुछ देते हैं, वही तेरा जीवन है. तेरे जीवन का अन्य कोई साधन नहीं है. इस श्मशान को प्राप्त हुआ तू सूर्य के दर्शन करता है. हे पृथ्वी! जिस प्रकार माता अपने पुत्र को आंचल से ढकती है. उसी प्रकार तुम इस मृतक को अपने तेज से ढक लो. (५०)

इदमिद् वा उ नापरं जरस्यन्यदितोऽपरम्.
जाया पतिमिव वाससाभ्ये नं भूम ऊर्णुहि (५१)

जीर्ण होते हुए इस शरीर ने जो भोजन किया था, उस के अतिरिक्त इस लिए कुछ भी अनुकूल नहीं है. इस के लिए इस श्मशान के अतिरिक्त कोई अन्य स्थान भी नहीं है. हे भूमि! श्मशान को प्राप्त हुए पितर को तुम उसी प्रकार ढक लो, जिस प्रकार पत्नी वस्त्र से अपने पति को ढकती है. (५१)

अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या मातुर्वस्त्रेण भद्रया.
जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि (५२)

हे मृतक! सब की मंगलमयी माता पृथ्वी के वस्त्र से मैं तुझे ढकता हूं. जीवित अवस्था में दान करने के लिए जो सुंदर वस्तु प्राणी के पास होती है, वह मुझ संस्कार करने वाले के पास हो. स्वधाकार जो अन्न पितरों में होता है, वह तुझ में हो. (५२)

अग्नीषोमा पथिकृता स्योनं देवेभ्यो रत्नं दधथुर्वि लोकम्.
उप प्रेष्यन्तं पूषणं यो वहात्यञ्जोयानैः पथिभिस्तत्र गच्छतम् (५३)

हे अग्नि एवं सोम! तुम पुण्य लोक के मार्ग का निर्माण करते हो. तुम ने सुख देने वाले स्वर्गलोक की रचना की है. जो लोक सूर्य को अपने में धारण करता है, इस प्रेत को सरल मार्गों द्वारा उस लोक में पहुंचाओ. (५३)

पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः.
स त्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः (५४)

हे प्रेत! पशुओं की हिंसा न करने वाले पशुपालक पूषा तुझे यहां से उस स्थानों से ले जाएं. प्राणियों की रक्षा करने वाले ये दोनों तुझे पितरों को अर्पण करें. अग्निदेव तुझे ऐश्वर्य वाले देवताओं को सौंपें. (५४)

आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्.
यत्रासते सुकृतो यत्र त ईयुस्तत्र त्वा देवाः सविता दधातु (५५)

जीवन का अभिमानी देवता आयु तेरा रक्षक हो. पूषादेव तेरे उस मार्ग की रक्षा करें जो पूर्व की ओर जाता हो. हे प्रेत! पुण्य आत्माओं के निवास रूप स्वर्ग में सविता देव तुझे पहुंचाएं. (५५)

इमौ युनज्मि ते वह्नी असुनीताय वोढवे.
ताभ्यां यमस्य सादनं समितीश्चाव गच्छतात् (५६)

हे मृतक! भार ढोने वाले इन बैलों को मैं तेरे लिए छोड़ रहा हूं. मैं इन्हें प्राणों का वहन करने के लिए बैलगाड़ी में जोड़ता हूं. बैलों से युक्त इस गाड़ी के द्वारा तू यम के घर को प्राप्त हो. (५६)

एतत् त्वा वासः प्रथमं न्वागन्नपैतदूह यदिहाबिभः पुरा.
इष्टापूर्तमनुसंक्राम विद्वान् यत्र ते दत्तं बहुधा विबन्धुषु (५७)

हे मृतक! तू अपने पहने हुए मुख्य वस्त्र को त्याग. जिन इच्छाओं की पूर्ति के लिए तूने अपने बांधवों को धन दिया था, उस इष्ट कर्म के फल के रूप बावड़ी, कुआं, तालाब आदि को प्राप्त हो. (५७)

अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व मेदसा पीवसा च.
नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग् विधक्षन् परीङ्खयातै (५८)

हे प्रेत! इंद्रियों संबंधी अवयवों से तू अग्नि का पाप निवारक कवच पहन. अपने भीतर विद्यमान स्थूल चर्बी से ये अग्नि तुझे अधिक भस्म करने की इच्छा रखते हुए इधरउधर न गिराएं. (५८)

दण्डं हस्तादाददानो गतासोः सह श्रोत्रेण वर्चसा बलेन.
अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वा मृधो अभिमातीर्जयेम (५९)

ब्राह्मण के हाथ से बांस के दंड को ग्रहण करता हुआ मैं कानों के तेज तथा उस से प्राप्त बल से युक्त रहूं. हे प्रेत! तू इस चिता में ही रह. हम इस पृथ्वी पर सुख से रहते हुए अपने शत्रुओं तथा उन के उपद्रवों को दबाएं. (५९)

धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन.
समागृभाय वसु भूरि पुष्टमर्वाङ् त्वमेह्युप जीवलोकम् (६०)

मृतक क्षत्रिय के हाथ से धनुष ग्रहण करता हुआ मैं तेज और बल से युक्त होऊं. हे धनुष! तू इस जीवित लोक में ही हमारे सामने आ तथा हमें देने के लिए धन ला. (६०)

सूक्त तीसरा — देवता—यम

इयं नारी पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम्.
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि (१)

यह स्त्री धर्म का पालन करने के लिए तेरे दान आदि की इच्छा करती हुई तेरे समीप आती है. इस प्रकार तेरा अनुकरण करने वाली इस स्त्री को तू अगले जन्म में भी संतान वाली बनाना. (१)

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि.
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ (२)

हे नारी! तू इस प्राणहीन पति के पास बैठी है. अब तू इस के पास से उठ. तू अपने पति से उत्पन्न हुए पुत्र, पौत्र आदि को प्राप्त हो गई है. (२)

अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम्.
अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम् (३)

मैं तरुण अवस्था वाली जीवित गौ को मृतक के समीप ले जाई जाती हुई देखता हूं. यह भी अज्ञान से ढकी हुई है, इसलिए मैं इसे शव के पास से हटा कर अपने सामने लाता हूं. (३)

प्रजानत्यघ्न्ये जीवलोकं देवानां पन्थामनुसंचरन्ती.
अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधि रोहयैनम् (४)

हे गौ! तू पृथ्वी लोक को भलीभांति जानती तथा यज्ञ मार्ग को देखती है. तू दूध, दही आदि से युक्त हो कर जा. तू अपने उस स्वामी का सेवन कर जो गायों का स्वामी है. तू इस मृतक को स्वर्ग की प्राप्ति करा. (४)

उप द्यामुप वेतसमवत्तरो नदीनाम्. अग्ने पित्तमपामसि (५)

जल में उगी हुई काई और बेंत में जल का सार अंश है जो उन का रक्षक है. हे अग्नि! तू जल संबधी पित्त है. इसलिए मैं तुझे बेंत की शाखा, नदी के फेन और दूब आदि से शांत करता हूं. (५)

यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः.
क्याम्बूरत्र रोहतु शाण्डदूर्वा व्यल्कशा (६)

हे अग्नि! जिस पुरुष को तुम ने भस्म किया है, उसे सुखी करो. इस स्थान पर दुखनाशक दूब घास उग सके, उस के लिए यहां कितना जल डालना चाहिए? (६)

इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व.
संवेशने तन्वा३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे सधस्थे (७)

हे प्रेत! यह गार्हपत्य अग्नि तुझे परलोक पहुंचाने वाली ज्योति है. न रुकने वाली पवन दूसरी तथा आह्वनीय अग्नि तीसरी ज्योति है. तू आह्वनीय अग्नि से मिल तथा अग्नि में प्रवेश करने के कारण देव शरीर को प्राप्त कर के बढ़. इस के बाद तू इंद्र आदि देवताओं का प्रिय पात्र होगा. (७)

उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः कृणुष्व सलिले सधस्थे.
तत्र त्वं पितृभिः संविदानः सं सोमेन मदस्व सं स्वधाभिः (८)

हे प्रेत! तू इस स्थान से उठ और चल. शीघ्रता से चलता हुआ तू अंतरिक्ष को अपना निवास स्थान बना तथा पितरों से मिल कर सोमरस का पान करता हुआ हर्षित हो. (८)

प्र च्यवस्व तन्वं१ सं भरस्व मा ते गात्रा वि हायि मो शरीरम्.
मनो निविष्टमनुसंविशस्व यत्र भूमेर्जुषसे तत्र गच्छ (९)

हे प्रेत! तू अपने शरीर के सब अंगों को एकत्र कर. तेरा कोई भी अंग यहां न छूट जाए. तेरा मन जिन स्वर्ग आदि स्थानों में रमा है, तू वहां प्रवेश कर. तू जिस भूमि से प्रेम करता है, उसी भूमि को प्राप्त हो. (९)

वर्चसा मां पितरः सोम्यासो अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन.
चक्षुषे मा प्रतरं तारयन्तो जरसे मा जरदष्टिं वर्धन्तु (१०)

सोमरस पीने के अधिकारी पितर मुझे तेजस्वी बनाएं. विश्वेदेव मुझे मधुर घृत से युक्त करें. मैं दीर्घकाल तक देखता रहूं, इसलिए तू मुझे रोगों से मुक्त करते हुए बढ़. (१०)

वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां मे विष्णुर्न्य नक्त्वासन्.
रयिं मे विश्वे नि यच्छन्तु देवाः स्योना मापः पवनैः पुनन्तु (११)

अग्निदेव मुझे तेजस्वी बनाएं तथा विष्णु मेरे मुख में बुद्धि को भलीभांति स्थापित करें. विश्वेदेव मुझे सुख देने वाले धन का स्वामी बनाएं. जल अपने शुद्ध साधन वायु के द्वारा मुझे पवित्र करें. (११)

मित्रावरुणा परि माममधातामादित्या मा स्वरवो वर्धयन्तु.
वर्चो म इन्द्रो न्यनक्तु हस्तयोर्जरदष्टिं मा सविता कृणोतु (१२)

दिवस के अभिमानी देवता मित्र अर्थात सूर्य तथा रात्रि के अभिमानी देव वरुण मुझे वस्त्र आदि प्रदान करें. आदित्य देव हम सब की वृद्धि करते हुए हमारे शत्रुओं को संतप्त बनाएं. इंद्र मुझे भुजाओं का बल दें तथा सविता मुझे दीर्घ आयु वाला बनाएं. (१२)

यो ममार प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयाय प्रथमो लोकमेतम्.
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत (१३)

यम मरणधर्मा मनुष्यों में उत्पन्न हुए थे. सब से पहले उन्हीं की मृत्यु हुई थी. इस के पश्चात ये दूसरे लोक में पहुंचे. यम सूर्य के पुत्र हैं. सभी प्राणी मृत्यु के पश्चात इन्हीं के पास जाते हैं. हे ऋत्विजो! इन यम का पूजन करो जो सब को पाप और पुण्य के अनुसार फल देते हैं. (१३)

परा यात पितर आ च यातायं वो यज्ञो मधुना समक्तः.
दत्तो अस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं रयिं च नः सर्ववीरं दधात (१४)

हे पितरो! तुम हमारे पितृयाग नामक कर्म से संतुष्ट हो कर अपने स्थान की ओर जाओ. हम जब तुम्हारा पुनः आह्वान करें, तब आना. हम ने तुम्हें मधु और घृत से युक्त यज्ञ दिया है. तुम इस यज्ञ को स्वीकार कर के हमारे घर में मंगलमय ऐश्वर्य तथा पुत्रों, पौत्रों, पशुओं आदि को स्थापित करो. (१४)

कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो अगस्त्यः श्यावाश्वः सोभर्यर्चनानाः.
विश्वामित्रोऽयं जमदग्निरत्रिरवन्तु नः कश्यपो वामदेवः (१५)

पूजा के योग्य कण्व, कक्षीवान, पुरुमीढ, अगस्त्य, श्यावाश्व, सौभरि, विश्वामित्र, जमदग्नि, अग्नि, कश्यप तथा वामदेव नाम वाले अनेक ऋषि हमारे रक्षक हैं. (१५)

विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ भरद्वाज गोतम वामदेव.
शर्दिर्नो अत्रिरग्रभीन्नमोभिः सुसंशासः पितरो मृडता नः (१६)

हे विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, भारद्वाज, गौतम, वामदेव नामक महर्षियो! तुम हमें सुख प्रदान करो. महर्षि अत्रि ने हमारे घर रक्षा करना स्वीकार कर लिया है. हे पितरो! तुम हमारे नमस्कार आदि के द्वारा पूजने के योग्य हो. तुम भी हमें सुख प्रदान करो. (१६)

कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रमायुर्दधानाः प्रतरं नवीयः.
आप्यायमानाः प्रजया धनेनाध स्याम सुरभयो गृहेषु (१७)

हम श्मशान में अपने बांधव की मृत्यु के दुख का त्याग करते हुए तथा शव के स्पर्श के पाप से मुक्त होते हुए अपने घर जाते हैं. इस प्रकार हम दुख से छूट गए हैं. इस कारण हम पुत्र, पौत्र आदि, पशु आदि, सुवर्ण, धन आदि तथा सुंदर गंध और वायु से संपन्न रहें. (१७)

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते.
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमासु गृहणते (१८)

143

ऋत्विज सोमयाग के आरंभ में यजमान की आंखों में अंजन लगाते हैं. सागर की वृद्धि के समय उदय होने वाले, रश्मियों द्वारा देखने वाले तथा प्रकाशमय चंद्रमा की रक्षा करने वाले सोम के रूप में स्थापित करते हुए हम चार थालियों में उस का शोधन करते हैं. (१८)

यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं च तेनो सचध्वं स्वयशसो हि भूत.
ते अर्वाणः कवय आ शृणोत सुविदत्रा विदथे हूयमानाः (१९)

हे पितरो! तुम अपने सोमरूपी धन के सहित हम से मिलो, क्योंकि तुम अपने यज्ञ के कारण यशस्वी हो. तुम हमें हमारा अभीष्ट प्रदान करो और बुलाए जाने पर हमारे आह्वान को सुनो. (१९)

ये अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा इष्टावन्तो रातिषाचो दधानाः.
दक्षिणावन्तः सुकृतो य उ स्थासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् (२०)

हे पितरो! तुम अत्रि और अंगिरा गोत्र वाले हो. तुम नौ महीने तक सत्र याग करने के कारण स्वर्ग में आरोहण करने वाले होता हो. तुम दस मास वाला याग पूर्ण करने पर दक्षिणा देने वाले पुण्य आत्मा हो. इस कारण इस विस्तृत कुश पर बैठ कर हमारी हवि से तृप्ति करो. (२०)

अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशशानाः.
शुचीदयन् दीध्यत उक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन् (२१)

हे अग्नि! जिस प्रकार हमारे श्रेष्ठ पितर स्वर्ग को प्राप्त हुए हैं, उसी प्रकार उक्थों का गान करने वाले पितर रात्रि के अंधकार को अपने तेज से दूर कर के उषाओं को प्रकाशित करते हैं. (२१)

सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमन्तः.
शुचन्तो अग्निं वावृधन्त इन्द्रमुर्वीं गव्यां परिषदं नो अक्रन् (२२)

सुंदर कर्म तथा सुंदर तेज वाले देव काम्य तप से अपने जन्म का शोधन करने वाले देवत्व को प्राप्त हुए. गार्हपत्य अग्नि को प्रदीप्त करते हुए तथा अपनी स्तुतियों से इंद्र को प्रबुद्ध बनाते हुए वे पितर गायों को हमारे यहां निवास करने वाली बनाएं. (२२)

आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद् देवानां जनिमान्त्युग्रः.
मर्तासश्चिदुर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदर्य उपरस्यायोः (२३)

हे अग्नि! तुम्हारे द्वारा भस्म किया जाता हुआ यह यजमान देवताओं के प्रादुर्भाव को देखे. मरणधर्मा मनुष्य तुम्हारी कृपा से उर्वशी आदि अप्सराओं को भोगने वाले होते हैं. तुम्हारी कृपा से देवत्व को प्राप्त मनुष्य भी गर्भाशय में स्थित जीवन की वृद्धि वाला होता है. (२३)

अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः.
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः (२४)

हे अग्नि! हम तुम्हारे सेवक हैं और तुम हमारा पालन करने वाले हो. इस कारण हम शोभन कर्म करने वाले बनें. उषा काल हमारे कर्मों को सत्य बनाए. देवताओं द्वारा रक्षित कर्म हमारे लिए कल्याणकारी हो. हम भी सुंदर पुत्र आदि से युक्त रहते हुए यज्ञ में विस्तृत स्तोत्रों का उच्चारण करें. (२४)

इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२५)

मरुतों के स्वामी इंद्र पूर्व दिशा से मेरी रक्षा करें. बाहुओं में प्राप्त पृथ्वी जिस प्रकार ऊपर स्थित स्वर्ग की रक्षा करती है, उसी प्रकार लोकों तथा मार्गों के निर्माताओं की पूजा हम यज्ञ द्वारा करते हैं. हे देवगण! तुम इस यज्ञ में भाग प्राप्त करने वाले बनो. (२५)

धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२६)

दक्षिण के धाता देव पाप की देवी निर्ऋति के भय से मेरी रक्षा करें. दाता के द्वारा दी गई पृथ्वी जिस प्रकार स्वर्ग के उपभोक्ता की रक्षा करती है, उसी प्रकार मेरी रक्षा करने वाली हो. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग के मार्ग का प्रवर्तन करने वालों को हम हवि के द्वारा पूजते हैं. हे देवगण! इस यज्ञ में तुम भाग प्राप्त करने वाले बनो. (२६)

अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२७)

देव माता अदिति पश्चिम दिशा के भय से मेरी रक्षा करें. दाता के द्वारा दी गई पृथ्वी जिस प्रकार दाता और दान ग्रहण करने वाले के स्वर्ग संबधी उपभोग की रक्षा करती है, उसी प्रकार मेरी रक्षा करने वाली बने. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग के मार्ग का प्रवर्तन करने वालों को हम हवि के द्वारा पूजते हैं. हे देवगण! इस यज्ञ में तुम भाग प्राप्त करने वाले बनो. (२७)

सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२८)

सभी देवों के साथ सोम उत्तर दिशा में स्थित राक्षस आदि से मेरी रक्षा करें. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग में मार्ग का प्रवर्तन करने वालों की हम हवि के द्वारा पूजा करते हैं. हे देवगण! इस यज्ञ में तुम भाग प्राप्त करने वाले बनो. (२८)

धर्ता ह त्वा धरुणो धारयाता ऊर्ध्वं भानुं सविता द्यामिवोपरि.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२९)

हे प्रेत! संपूर्ण जगत को धारण करने वाले तथा ऊपर की दिशा का स्वामी धाता देव ऊपर के लोक को जाने के लिए इच्छुक तेरी उसी प्रकार रक्षा करें, जिस प्रकार सब के प्रेरक सूर्य दीप्त आकाश को धारण करते हैं. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग के मार्ग का प्रवर्तन करने वालों को हम हवि के द्वारा पूजते हैं. हे देवगण! तुम हमारे इस यज्ञ में भाग प्राप्त करने वाले बनो. (२९)

प्राच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी
द्यामिवोपरि. लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (३०)

हे प्रेत! दहन के स्थान से पूर्व दिशा में कंबल से लिपटा हुआ मैं शरीर वाला रहा हूं, उस दिशा में मैं तुझे पितरों की तृप्ति करने वाली स्वधा नाम की देवी पर स्थापित करता हूं. दाताओं द्वारा ब्राह्मणों को दान की गई पृथ्वी जिस प्रकार ऊपर की दिशा में स्थित स्वर्ग का पालन करती है, हम हवि के द्वारा तुम्हारा स्वागत करते हैं. हे देवगण! तुम इस यज्ञ में भाग लेने वाले बनो. (३०)

दक्षिणायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी
द्यामिवोपरि. लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (३१)

हे प्रेत! हम दहन के स्थान से दक्षिण दिशा में पहले से स्थित तथा कंबल से ढकी हुई स्वधा नाम की पितृ देवता में तुझे स्थापित करते हैं. दाताओं द्वारा ब्राह्मणों को दान की गई पृथ्वी जिस प्रकार ऊपर की दिशा में स्वर्ग का पालन करती है, उसी प्रकार स्वधा नाम की पितृ देवता तुम्हारा पालन करें. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग के मार्ग का प्रवर्तन करने वालों की पूजा हम हवि द्वारा करते हैं. हे देवगण! तुम इस यज्ञ में भाग लेने वाले बनो. (३१)

प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी
द्यामिवोपरि. लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (३२)

हे प्रेत! हम दहन के स्थान से पश्चिम दिशा में पहले से स्थित तथा कंबल से ढकी हुई स्वधा नाम की पितृदेवता में तुझे स्थापित करते हैं. दाताओं द्वारा ब्राह्मणों को दान में दी गई पृथ्वी जिस प्रकार ऊपर की दिशा में स्वर्ग का पालन करती है, उसी प्रकार स्वधा नाम की पितृदेवता तुम्हारा पालन करें. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग के मार्ग का प्रवर्तन करने वालों की पूजा हम हवि के द्वारा करते हैं. हे देवगण! तुम इस यज्ञ में भाग लेने वाले बनो. (३२)

उदीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी
द्यामिवोपरि. लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (३३)

हे प्रेत! हम दहन के स्थान से उत्तर दिशा में पहले से स्थित तथा कंबल से ढकी हुई स्वधा नाम की पितृ देवता में तुझे स्थापित करते हैं. दाताओं द्वारा ब्राह्मणों को दान की गई पृथ्वी जिस प्रकार ऊपर की दिशा में स्वर्ग का पालन करती है उसी प्रकार स्वधा नाम की पितृदेवता तुम्हारा पालन करें. पुण्य के फल में रूप में स्वर्ग का प्रवर्तन करने वालों की पूजा हम हवि के द्वारा करते हैं. हे देवगण! तुम इस यज्ञ में भाग लेने वाले बनो. (३३)

ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी
द्यामिवोपरि. लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (३४)

हे प्रेत! स्थिर रहने वाली नीचे की दिशा में हम तुझे पहले से स्थित तथा कंबल से ढकी हुई स्वधा नाम की पितृ देवता में स्थापित करते हैं. जिस प्रकार दाताओं

द्वारा ब्राह्मणों के लिए दान की गई पृथ्वी ऊपर की दिशा में स्वर्ग की रक्षा करती है, उसी प्रकार स्वधा नाम की पितृ देवता तुम्हारा पालन करें. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग के मार्ग का प्रवर्तन करने वालों की पूजा हम हवि के द्वारा करते हैं. हे देवगण! तुम इस यज्ञ में भाग लेने वाले बनो. (३४)

ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी
द्यामिवोपरि. लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (३५)

हे प्रेत! मैं तुझे ऊपर की दिशा में स्थित स्वधा नाम की पितृ देवता में स्थापित करता हूं. मैं पहले से ही कंबल से ढका हुआ हूं. जिस प्रकार पुण्य करने वालों द्वारा ब्राह्मणों को दान की हुई पृथ्वी ऊपर की दिशा में स्थित स्वर्ग का पालन करती है, उसी प्रकार स्वधा देवी तुम्हारा पालन करें. पुण्य के फल के रूप में स्वर्ग के मार्ग का प्रवर्तन करने वालों की पूजा मैं हवि के द्वारा करता हूं. हे देवगण! तुम इस यज्ञ में भाग लेने वाले बनो. (३५)

धर्तासि धरुणोऽसि वंसगोऽसि (३६)

हे अग्नि! तुम सब के धारणकर्ता एवं धरुण हो. (३६)

उदपूरसि मधुपूरसि वातपूरसि (३७)

हे अग्नि! तुम उदक को पूर्ण करने वाले, मधु को पूर्ण करने एवं प्राण वायु को पूर्ण करने वाले हो. (३७)

इतश्च मामुतश्चावतां यमेइव यतमाने यदैतम्.
प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तो आ सीदतां स्वमु लोकं विदाने (३८)

हे पुरुष! जिन से हविर्धान होता है अर्थात हवि दी जाती है, ऐसे द्यावा पृथ्वी, भूलोक और स्वर्गलोक से होने वाले भय से तेरी रक्षा करें. हे द्यावा पृथ्वी! तुम जुड़वां संतानों के समान सर्वत्र व्याप्त होने वाले हो, इसलिए तुम जगत के पोषण के लिए आओ. स्तुतियों का समूह तुम्हें इस प्रकार प्राप्त होता है. तुम जुड़वां संतान के समक्ष जगत के पोषण हेतु प्रयत्न करो. देवों की कृपा प्राप्त करने वाले पुरुष जब तुम्हें हवि प्रदान करें, तब तुम उस स्थान को जानती हुई, वहां प्रतिष्ठित हो जाओ. (३८)

स्वासस्थे भवतमिन्दवे नो युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः.
वि श्लोक एति पथ्येव सुरिः शृण्वन्तु विश्वे अमृतास एतत् (३९)

हे हविर्धान! तुम हमारे सोम के लिए सुख के आसन पर बैठी हुई एवं स्थिर होओ. तुम से पूर्व काल में उत्पन्न नमकारात्मक मंत्रों का समूह तुम्हें विशेष रूप से प्राप्त हो. धर्म पथ पर चलने वाला विद्वान जिस प्रकार इच्छित फल प्राप्त करता है, उसी प्रकार मैं स्तोत्रों के सहित तुम्हें नमस्कार करता हूं. ये स्तोत्र तुम्हें प्राप्त होते हैं.

तुम हमारे सोम के लिए स्थिर बनो. हमारे इस स्तोत्र को मरण रहित सभी देव सुनें. (३९)

त्रीणी पदानि रुपो अन्वरोहच्चतुष्पदीमन्वैतद् व्रतेन.
अक्षरेण प्रति मिमीते अर्कमृतस्य नाभावभि सं पुनाति (४०)

मृत पुरुष स्वर्ग में स्थित तीन सीढ़ियों को क्रम से चढ़ गया था. वह इस अनुत्तरणी गौ को ध्यान में रखता हुआ द्युलोक के तीनों स्थानों में पहुंचा. तुम अपने द्वारा अर्जित विनाश रहित पुण्य से सूर्यलोक को प्राप्त करो. इस प्रकार व्यक्ति सूर्य के समान हो जाता है. सूर्य में फल सभी ओर से पूर्ण है. (४०)

देवेभ्य: कमवृणीत मृत्युं प्रजायै किममृतं नावृणीत.
बृहस्पतिर्यज्ञमतनुत ऋषि: प्रियां यमस्तन्व१मा रिरेच (४१)

सृष्टि के आरंभ में विधाता ने इंद्र आदि देवों के निमित्त किस प्रकार की मृत्यु की व्यवस्था की थी ? इस के बाद सूर्य पुत्र यम ने बृहस्पति के कृपा पात्र मनुष्यों की देह को सभी ओर से खींच कर प्राण हीन किया. (४१)

त्वमग्न ईडितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा.
प्रादा: पितृभ्य: स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषी (४२)

हे अग्नि! तुम उत्पन्न होने वाले मनुष्यों को जानने वाले हो. हमारे द्वारा स्तुति किए गए तुम हमारे सुगंधित एवं रस युक्त चरु, पुरोडाश आदि को देवों के लिए वहन करो. तुम ने पितृ देवताओं के लिए स्वधा शब्द के साथ काव्य नामक इंद्रियों को दिया है. उन पितरों ने तुम्हारे द्वारा दी हुई हवियों का उपभोग किया है. हे प्रकाश युक्त अग्नि! तुम हमारे द्वारा अधिक मात्रा में दी हुई हवियों का भक्षण करो. (४२)

आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय.
पुत्रेभ्य: पितरस्तस्य वस्व: प्र यच्छत त इहोर्जं दधात (४३)

हे पितरो! लाल रंग की माताओं की गोद में बैठे हुए एवं हवि का दान करने वाले मरणधर्मा यजमान के लिए धन प्रदान करो. वह प्रसिद्ध धन हम पुत्रों को प्रदान करो. हे पितरो! तुम इस भूलोक में हमारे लिए बलकारक अन्न धारण करो. (४३)

अग्निष्वात्ता: पितर एह गच्छत सद:सद: सदत सुप्रणीतय:.
अत्तो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि रयिं च न: सर्ववीरं दधात (४४)

पितर दो प्रकार के होते हैं. बर्हिषद एवं अग्निष्वात्त. इस मंत्र में अग्निष्वात्त पितरों को संबोधित किया गया है. हे अग्निष्वात्त पितरो! इस यज्ञ में आओ. हम ने पिता, पितामह और प्रपितामह आदि के लिए जो स्थान निश्चित किया है, उसे प्राप्त करो. कुशाओं पर जो हवियां शुद्ध की गई हैं, उन चरु, पुरोडाश आदि हवियों का भक्षण करो. हवि भक्षण से संतुष्ट तुम हमारे लिए सभी वीरों से युक्त

धन प्रदान करो. (४४)

उपहूता नः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु.
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् (४५)

हमारे द्वारा बुलाए गए पितर सोमरस पान के अधिकारी हैं. वे अपनी हवियों के रखे होने पर आएं एवं हमारे इस यज्ञ में हमारे स्तोत्र सुनें, हमारे प्रति पक्षपात पूर्ण वचन करें एवं हमारी रक्षा करें. (४५)

ये नः पितुः पितरो ये पितामहा अनूजहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः.
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु (४६)

हमारे पिता के जो पितर हैं, उन को जन्म देने वाले अर्थात हमारे बाबा अधिक धन वाले थे और क्रम से सोम पान करते थे. उन पितरों के साथ रमण करते हुए यम कामना करते हुए उन पितरों को हमारे द्वारा दिए हुए चरु, पुरोडाश आदि का भक्षण करें. (४६)

ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तोमतष्टासो अर्कैः.
अग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः सत्यैः कविभिर्ऋषिभिर्घर्मसद्भिः (४७)

देवों में व्याप्त होने वाले, सात परिक्रमा करने वालों के द्वारा किए हुए यज्ञों को जानते हुए, अर्चनीय स्तुति करने वाले जो पितर प्यासे हैं, देवों को प्रणाम करने वाले, उन देवों के साथ तथा सत्य फल एवं क्रांतदर्शी ऋषियों के साथ सोमयाग में बैठने वाले हे अग्नि! हमारे लिए अपरिमित धन ले कर आओ. (४७)

ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेण.
आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् परैः पूर्वैर्ऋषिभिर्घर्मसद्भिः (४८)

जो पितर सत्य का भाषण करने वाले, चरु, पुरोडाश आदि हवियों का भक्षण करने वाले, सोमरस का पान करने वाले इंद्र तथा अन्य देवों के साथ एक रथ पर बैठे हुए हैं. उन शोभन धनों वाले एवं उत्कृष्ट पूर्व पुरुषों के साथ यज्ञ में बैठने वाले हे अग्नि! तुम शीघ्र हमारे सामने आओ. (४८)

उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम्.
ऊर्णम्रदाः पृथिवी दक्षिणावत एषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् (४९)

हे प्रेत! विस्तीर्ण व्याप्ति वाली, सुख देने वाली माता भूमि के समीप आओ. यह पृथ्वी यज्ञ संबंधी बहुत सी दक्षिणाओं से युक्त तुम्हारे लिए ऊनों से बने हुए कंबल प्रदान करने वाली एवं सुखकारी हो कर पूर्व दिशा के निमित्त मार्गों में तुम्हारी रक्षा करे. (४९)

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपसर्पणा.
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि (५०)

हे भू देवता! तुम पुलकित हो जाओ और अपने समीप आए हुए पुरुष को बाधा मत दो. अपितु इस पुरुष के सुख से प्राप्त होने वाली बनो. माता जिस प्रकार अपने पुत्र को आंचल से ढकती है, उसी प्रकार अपने पास आए इस पुरुष को चारों ओर से ढक लो. इस से इसे शीत, उष्ण आदि दुख नहीं होंगे. (५०)

उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्.
ते गृहासो घृतश्चुतः स्योना विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र (५१)

पुलिकत पृथ्वी सुखपूर्वक स्थिर रहे. श्मशान में उगी हुई हजारों ओषधियां अर्थात जड़ीबूटियां तुम्हारे आश्रित हों, तुम्हारे लिए ही टपकाने वाली हों. इस मृत पुरुष के लिए सभी दान सुख देने वाली पृथ्वी को गृह निर्माण के लिए धारण करते हैं. वे श्मशान देश में रक्षक बनें. (५१)

उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत् परीमं लोगं निदधन्मो अहं रिषम्.
एतां स्थूणां पितरो धारयन्ति ते तत्र यमः सादना ते कृणोतु (५२)

हे मृत पुरुष! तेरे लिए मैं इस पृथ्वी को ऊंची बनाता हूं. तेरे चारों ओर सभी प्राणियों से युक्त इस भूलोक को धारण करता हुआ मैं हिंसा का आधार न बनूं. पितृ देवता उस प्रसिद्ध थूनी को तुम्हारे घर का निर्णायक करने के लिए स्थापित करते हैं. (५२)

इममग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम्.
अयं यश्चमसो देवपानस्तस्मिन् देवा अमृता मादयन्ताम् (५३)

हे अग्नि! खाने के इस साधन को टेढ़ा मत करो. यह चमचा देवों तथा मनुष्यों और सोमरस के पात्र देवों को प्रसन्न करने वाला है. देवता इस चमस के द्वारा अमृत पीते हैं. इस चमचे से मृत्यु रहित इंद्र आदि सभी देव प्रसन्न हैं. अथर्वा ऋषि के द्वारा बनाए हुए इस चम्मच में स्थिति स्वादिष्ट क्वाद होने के कारण सभी देव प्रसन्न हैं. (५३)

अथर्वा पूर्णं चमसं यमिन्द्रायाबिभर्वाजिनीवते.
तस्मिन् कृणोति सुकृतस्य भक्षं तस्मिन्निन्दुः पवते विश्वदानीम् (५४)

अथर्वा नाम के ऋषि ने यज्ञ क्रिया वाले इंद्र को प्रसन्न करने के लिए सोमरस पीने का साधन यह चमस भरा है. ऋत्विजों का समूह इस चमस से हवन से बची हुई हवि का भक्षण करता है. अथर्वा ऋषि द्वारा बनाए हुए इस चम्मच के लिए चंद्रमा सदा सोमरस टपकाता है. (५४)

यत् ते कृष्णः शकुन आतुतोद पिपीलः सर्प उत वा श्वापदः.
अग्निष्टद् विश्वादगदं कृणोतु सोमश्च यो ब्राह्मणां आविवेश (५५)

हे पुरुष! तेरे जिस अंग को काले रंग के पक्षी कौवे ने काट लिया है तथा

विषैले दांतों वाली विशेष चींटियों ने, सांप ने अथवा बाघ ने काट लिया है, तेरे उस अंग को सर्वभक्षक अग्नि रोग रहित बनाएं. जिस सोम ने रस के रूप में ऋषियों में प्रवेश किया है, वह सोम तुझे रोग रहित बनाए. (५५)

पयस्वतीरोषधयः पयस्वन्मामकं पयः.
अपां पयसो यत् पयस्तेन मा सह शुम्भतु (५६)

फल पकने पर समाप्त होने वाली ओषधियां हमारे लिए सार वाली हों. मेरे शरीर में स्थित जो बल है, वह भी सार वाला बने. जलों से संबंधित दूध का जो सार अंश है, वह फसलों और जड़ीबूटियों में स्थित सार अंश के साथ मुझे शोभन बनाए. जल के अधिकारी देव वरुण स्नान से मुझे शुद्ध करें. (५६)

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम्.
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे (५७)

प्रेत के कुल में उत्पन्न ये नारियां वैधव्य से हीन श्रेष्ठ पतियों वाली होती हुई घृत से मिले हुए अंजन से स्पर्श प्राप्त करें. ये आंसू न बहाने वाली, रोगरहित और शोभन आभरणों वाली हो कर संतान को जन्म देने के लिए स्वस्थ हों. (५७)

सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन्.
हित्वावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः (५८)

हे मृत पुरुष! तुम पिता, पितामह और प्रपितामह अर्थात बाबा के साथ सपिंडी विधि के द्वारा मिल जाओ. अर्थात तुम पितरों के मध्य स्थान प्राप्त करो. पितरों के राजा जो यम हैं, तुम उन के साथ भी हो जाओ. पितृलोक से भी श्रेष्ठ एवं आकाश में स्थित द्युलोक अर्थात स्वर्ग में इष्ट अर्थात वेदों द्वारा स्पष्ट कहे गए यज्ञ, होम आदि, पूर्त अर्थात स्मृति, पुराण एवं शास्त्रों द्वारा प्रेरित बावड़ी, कुआं, तालाब, देवमंदिर निर्माण आदि दोनों प्रकार के कर्मों से मिलो. तात्पर्य यह हैकि स्वर्ग में उन दोनों प्रकार के कर्मों के फल का उपभोग करो. तुम पाप का त्याग कर के स्वर्ग लोक में बने हुए उत्तम घर को प्राप्त करो. शोभन दीप्ति वाली तुम्हारी आत्मा स्वर्गलोक का सुख भोगने में समर्थ शरीर से मिल जाए. (५८)

ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्व१न्तरिक्षम्.
तेभ्यः स्वराडसुनीतिर्नो अद्य यथावशं तन्वः कल्पयाति (५९)

हमारे पिता के जो पितर अर्थात पितामह आदि तथा हमारे गोत्र में उत्पन्न पितर विस्तीर्ण अंतरिक्ष में प्रविष्ट हैं, उन के शरीरों का आज राजा यम अपने आप हमारी इच्छा के अनुसार निर्माण करें. (५९)

शं ते नीहारो भवतु शं ते प्रुष्वाव शीतयाम्. शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति. मण्डूक्य१प्सु शं भुव इमं स्व१ग्निं शमय (६०)

हे प्रेत पुरुष! पाला तेरे लिए सुखकारी हो तथा जल तुझे सुखी करता हुआ वर्षा करे. हे शीतकारिणी जड़ीबूटियों से व्याप्त पृथ्वी तथा हे सुख उत्पन्न करने वाली मंडूकपर्णी ओषधि! तू इस दग्ध पुरुष को सुख प्रदान कर तथा जलाने वाली अग्नि को शांत कर. (६०)

विवस्वान् नो अभयं कृणोतु यः सुत्रामा जीरदानुः सुदानुः.
इहेमे वीरा बहवो भवन्तु गोमदश्ववन्मय्यस्तु पुष्टम् (६१)

विवस्वान अर्थात सूर्य हमें मृत्यु संबंधी भय से रहित करें. जीवन के कर्ता एवं शोभनदान वाले सुत्रामा नामक देव भी हमें मृत्यु के भय से मुक्त करें. इस लोक में हमारे पुत्र, पौत्र आदि अनेक वीर पुरुष हों. इस के अतिरिक्त बहुत सी गायों वाला एवं बहुत से अश्वों वाला पोषक मेरे पास हो. (६१)

विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु परैतु मृत्युरमृतं न ऐतु.
इमान् रक्षतु पुरुषना जरिम्णो मो ष्वे षामसवो यमं गुः (६२)

विवस्वान अर्थात सूर्य हमें अमृतत्व में धारण करें अर्थात हमें मृत्यु रहित बनाएं. उस के प्रभाव से मृत्यु मुझ से विमुख हो जाए. हम को मरणहीनता प्राप्त हो. सूर्यदेव हमारे पुत्रों और पौत्रों का वृद्धावस्था तक पालन करें. इन पुरुषों के पुत्र विवस्वान के पुत्र यम के पास न जाएं. (६२)

यो दध्रे अन्तरिक्षे न मह्ना पितॄणां कविः प्रमतिर्मतीनाम्.
तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात् (६३)

क्रांतदर्शी एवं उत्तम बुद्धि वाले यम अपनी महिमा से स्तोताओं और पितरों को अंतरिक्ष में धारण करते हैं. हे ब्राह्मणो! तुम सभी प्राणियों के मित्र हो. तुम हवि आदि से यम की पूजा करो. वे यम हमारा जीवन पुष्ट बनाएं. (६३)

आ रोहत दिवमुत्तमामृषयो मा बिभीतन.
सोमपाः सोमपायिन इदं वः क्रियते हविरगन्म ज्योतिरुत्तमम् (६४)

हे मंत्रदर्शी मनुष्यो! तुम उत्तम स्वर्ग को प्राप्त करो. तुम भय मत करो. मंत्र दर्शी ऋषियों ने स्वयं सोमरस को पिया है तथा दूसरों को सोमरस का पान कराया है. स्वर्ग में आरूढ़ तुम्हारे निमित्त यह हवि संपन्न की गई है. इस से तुम चिरकाल का जीवन प्राप्त करो. (६४)

प्र केतुना बृहता भात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति.
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानपामुपस्थे महिषो ववर्ध (६५)

यह अग्निदेव धूम रूपी महान अंडे के द्वारा बहुत दीप्त होते हैं. स्वर्ग और पृथ्वीवासियों की कामनाओं की वर्षा करने वाले अग्नि महान शब्द करते हैं. ये अग्नि आकाश से भी ऊपर व्याप्त होते हैं. उस के बाद जलों के प्रदेश में महान हो

कर वृद्धि प्राप्त करते हैं. (६५)

नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा.
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् (६६)

हे प्रेत! हम जब तुम्हें उत्तम गति से स्वर्ग की ओर जाता हुआ देखते हैं, तब तुम्हें स्वर्णिम पंखों वाले वरुण के दूत यमराज के घर में पक्षी के समान तथा भरण करने वाले के रूप में देखते हैं. (६६)

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा.
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि (६७)

हे परम ऐश्वर्य वाले इंद्रदेव! हमें सोमयाग लक्षण कर्म अथवा उस से संबंधित ज्ञान इस प्रकार प्रदान करो, जिस प्रकार पिता पुत्रों के लिए उन के मनचाहे फल लाता है. हे पुरुहूत! हमें संसार गमन की शिक्षा दो अथवा हमें मनचाहा फल प्रदान करो. हम तुम्हारी कृपा से चिरकाल के जीवन से युक्त हों और इस लोक के सुख का अनुभव करें. (६७)

अपूपापिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन्.
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः (६८)

हे प्रेत! तेरे लिए देवों ने पुओं से ढके हुए तथा घी से भरे हुए घड़ों को धारण किया था, वे घड़े तेरे लिए घी टपकाने वाले हों. (६८)

यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः.
तास्ते सन्तु विभ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् (६९)

हे प्रेत! मैं तेरे लिए जो तिल से युक्त स्वधान वाले भुने जौ दे रहा हूं. वे तेरे लिए तृप्ति करने वाले हों. यमराज तुझे इन तिलों के उपयोग का आदेश प्रदान करें (६९)

पुनर्देहि वनस्पते य एष निहितस्त्वयि.
यथा यमस्य सादन आसातै विदथा वदन् (७०)

हे वनस्पति! तुझ में जो अस्थि रूप पुरुष अर्थात पुरुष की हड्डियों का ढांचा छिपा हुआ है, उसे हमें प्रदान करो. जिस से वह यमराज के घर में यज्ञ संबंधी कार्य करता हुआ स्थित हो सके. (७०)

आ रभस्व जातवेदस्तेजस्वद्धरो अस्तु ते.
शरीरमस्य सं दहाथैनं धेहि सुकृतामु लोके (७१)

हे अग्नि! तुम्हारी ज्वालाएं दहनशील अर्थात जलाने वाली हैं. उन में रस का हरण करने वाली शक्ति आ जाए. तुम इस मृतक के शरीर को पूरी तरह से जलाओ. शरीर दहन के पश्चात इस पुरुष को पुण्य करने वालों के लोक स्वर्ग

पहुंचाओ. (७१)

ये ते पूर्वे परागता अपरे पितरश्च ये.
तेभ्यो घृतस्य कुल्यै तु शतधारा व्युन्दती (७२)

जो पहले उत्पन्न ज्येष्ठ पितर हम से मुंह मोड़ कर चले गए. उन के पश्चात जो उत्पन्न हुए, उन सभी पितरों के लिए घृत पूर्ण प्रवाह प्राप्त हो. वह धारा सौ संख्याओं वाली हो. इसलिए सभी को भिगोती हुई बहे. (७२)

एतदा रोह वय उन्मृजानः स्वा इह बृहदु दीदयन्ते.
अभि प्रेहि मध्यतो माप हास्थाः पितॄणां लोकं प्रथमो यो अत्र (७३)

हे मृत पुरुष! तू इस दिखाई देने वाले अंतरिक्ष अर्थात आकाश में आरूढ़ हो. तू आत्मा के उत्क्रमण से शरीर को शुद्ध करता हुआ अंतरिक्ष में आरूढ़ हो. तू अपने बंधुजनों के मध्य से लोकांतर को गमन कर. तेरे बंधु इस लोक में अधिक दीप्त हों. द्युलोक अर्थात स्वर्ग पितरों से संबंधित मृत्युलोक है. तू उस लोक का त्याग मत कर अर्थात वहां बहुत दिनों तक निवास कर. (७३) ८

सूक्त चौथा देवता—अग्नि

आ रोहत जनित्रीं जातवेदसः पितृयाणैः सं व आ रोहयामि.
अवाड्ढव्येषितो हव्यवाह ईजानं युक्ताः सुकृतां धत्त लोके (१)

हे अग्नियो! तुम अपनी उत्पन्न करने वाली के पास पहुंचो. मैं तुम्हें पितृयान मार्गों से वहां भलीभांति पहुंचाता हूं. हव्यों के वाहक अग्नि हव्यों को वहन करते हैं. हे अग्नियो! तुम मिल कर यज्ञकर्ताओं को श्रेष्ठ कर्म करने वालों के लोकों में पहुंचाओ. (१)

देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति हविः पुरोडाशं स्रुचो यज्ञायुधानि.
तेभिर्याहि पथिभिर्देवयानैर्यैरीजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् (२)

देवगण और बसंत आदि ऋतुएं अनेक प्रकार के यज्ञों की रचना करते हैं. इस यज्ञ में डालने के लिए घृत आदि से बनाए हुए पदार्थों को अग्नि में डालने के लिए चमचे की आकृति के अनेक पात्र बनाते हैं. हे मनुष्य! उन देवयान मार्गों अर्थात यज्ञ करने की विधियों से तू नित्य प्रति यज्ञ कर. इन देवयान मार्गों से यज्ञ करने वाले जन स्वर्ग लोक को जाते हैं. (२)

ऋतस्य पन्थामनु पश्य साध्वङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति.
तेभिर्याहि पथिभिः स्वर्गं यत्रादित्या मधु भक्षयन्ति तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व (३)

हे प्रेत! तू सत्य के कारण रूप मार्गों को भलीभांति जानता हुआ महर्षि अंगिरस आदि के स्वर्ग को जा, जिस मार्ग में अदिति के पुत्र देवगण अमृत का सेवन करते

हैं. तू उस तीसरे स्वर्ग में निवास कर. (३)

त्रयः सुपर्णा उपरस्य मायू नाकस्य पृष्ठे अधि विष्टपि श्रिताः.
स्वर्गा लोका अमृतेन विष्ठा इषमूर्जं यजमानाय दुह्राम् (४)

अग्नि, वायु और सूर्य उत्तम विधि से गमन करने वाले हैं. वायु तथा पर्जन्य मेघ के समान शब्द करते हैं. ये सभी स्वर्गलोक से ऊपर विष्टप में निवास करते हैं. अपने कर्मों से प्राप्त होने वाला यह स्वर्ग लोक अमृत से संपन्न है. यह स्वर्ग यज्ञ कर्म का अनुष्ठान करने वाले प्रेत को मनचाहा अन्न तथा रस देने वाला है. (४)

जुहूर्दाधार द्यामुपभृदन्तरिक्षं ध्रुवा दाधार पृथिवीं प्रतिष्ठाम्.
प्रतीमां लोका घृतपृष्ठाः स्वर्गाः कामंकामं यजमानाय दुह्राम् (५)

होम के पात्र जुहू ने आकाश को पुष्ट किया, उपभृत नाम के यज्ञपात ने अंतरिक्ष को धारण किया तथा स्रुवा नाम के यज्ञ पात्र ने पृथ्वी का पालन किया. यह स्रुवा पात्र पृथ्वी का ध्यान करते हुए ऊपर स्थित स्वर्गलोक में यजमान को मनचाहा फल प्रदान करे. (५)

ध्रुव आ रोह पृथिवीं विश्वभोजसमन्तरिक्षमुपभृदा क्रमस्व. जुहु द्यां गच्छ
यजमानेन साकं स्रुवेण वत्सेन दिशः प्रपीनाः सर्वा धुक्ष्वाहृणीयमानः (६)

हे स्रुवा नामक चम्मच! तू पृथ्वी पर आरोहण कर और यजमान भी पृथ्वी पर प्रतिष्ठित रहे. हे उपभृत नाम के पात्र! तू अंतरिक्ष पर आरोहण कर. हे जुहू नामक पात्र! तू यजमान के साथ द्युलोक अर्थात स्वर्ग को गमन कर तथा सभी दिशाओं से मनचाहे फलों का दोहन कर. (६)

तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो महीरिति यज्ञकृतः सुकृतो येन यन्ति.
अत्रादधुर्यजमानाय लोकं दिशो भूतानि यदकल्पयन्त (७)

लोग तीर्थो तथा यज्ञादि कर्मों के द्वारा बड़ीबड़ी विपत्तियों से पार हो जाते हैं. इस प्रकार विचार करने वाले तथा यज्ञ कर्म करते हुए पुरुष जिस मार्ग से स्वर्ग को जाते हैं, उस मार्ग को खोजते हुए यज्ञ कर्त्ता इस यजमान के लिए वह मार्ग खोलें. (७)

अङ्गिरसामयनं पूर्वो अग्निरादित्यानामयनं गार्हपत्यो दक्षिणानामयनं
दक्षिणाग्निः. महिमानमग्नेर्विहितस्य ब्रह्मणा समङ्गः सर्व उप याहि शग्मः (८)

आंगिरसों का मार्ग पूर्व के नाम की अग्नि है. आदित्यों का मार्ग गार्हपत्य अग्नि है. यज्ञ कार्य में दक्ष जनों का मार्ग दक्षिणा अग्नि है. वेदमंत्रों के द्वारा यज्ञ में स्थापित की गई अग्नि की महिमा को दृढ़ अंगों तथा पूर्ण शरीर वाला तू प्राप्त कर. (८)

पूर्वो अग्निष्ट्वा तपतु शं पुरस्ताच्छं पश्चात् तपतु गार्हपत्यः. दक्षिणाग्निष्टे तपतु
शर्म वर्मोत्तरतो मध्यतो अन्तरिक्षाद् दिशोदिशो अग्ने परि पाहि घोरात् (९)

हे भस्म होते हुए प्रेत! पूर्व की अग्नि तुझे आगे से सुखपुर्वक संतप्त करे. गार्हपत्य अग्नि तुझे पीछे से सुखपूर्वक तपाए. दक्षिणाग्नि तेरे लिए सुख रूप हो तथा तेरा कवच बन कर तुझे तपाए. हे अग्नि! तू उत्तर दिशा से, दिशाओं के बीच से, अंतरिक्ष से तथा प्रत्येक दिशा से आने वाले हिंसक से हमारी ठीक से रक्षा करे. (९)

यूयमग्ने शंतमाभिस्तनूभिरीजानमभि लोकं स्वर्गम्.
अश्वा भूत्वा पृष्टिवाहो वहाथ यत्र देवैः सधमादं मदन्ति (१०)

हे गार्हपत्य आदि अग्नियो! तुम पीठ से वहन करने वाले घोड़ों के समान बन कर अपने सुखकारी शरीरों से यज्ञ करने वाले को स्वर्गलोक की ओर ले जाओ. यज्ञ करने वाले लोग उस स्वर्ग में देवों के साथ आनंद का भोग करते हुए तृप्त होते हैं. (१०)

शमग्ने पश्चात् तप शं पुरस्ताच्छमुत्तराच्छमधरात् तपैनम्.
एकस्त्रेधा विहितो जातवेदः सम्यगेनं धेहि सुकृतामु लोके (११)

हे अग्नि! तुम पश्चिम, पूर्व, उत्तर, दक्षिण आदि दिशाओं से इस मृतक को सुखपूर्व भस्म करो. तुम एक हो, पर यजमान ने तुम्हें तीन रूपों में स्थापित किया था. तुम इस यजमान को श्रेष्ठ जनों के लोक में भलीभांति स्थापित करो. (११)

शमग्नयः समिद्धा आ रभन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः.
शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन् (१२)

विधिपूर्वक प्रकाशित की गई अग्नियां तथा उत्पन्न पदार्थों में वर्तमान अग्नियां प्रजापति को देवता मानने वाले इस पवित्र यजमान को सुख पूर्वक यज्ञ कार्य के हेतु उत्सुक बनाएं. इस लोक में वे अग्नियां यजमान को पूर्ण बनाएं तथा उसे यज्ञ कार्य से विमुख न होने दें. (१२)

यज्ञ एति विततः कल्पमान ईजानमभि लोकं स्वर्गम्. तमग्नयः सर्वहुतं जुषन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः. शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन् (१३)

विस्तृत यज्ञ समर्थ हो कर यज्ञकर्ता को स्वर्गलोक में पहुंचाता है. सर्वस्व होम करने वाले यज्ञकर्ता को अग्नियां संतुष्ट करें. इस लोक में वे अग्नियां यजमान को पूर्ण बनाएं. अग्नियां यजमान को इस यज्ञ कार्य से विमुख न होने दें. (१३)

ईजानश्चितमारुक्षदग्निं नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत्पतिष्यन्.
तस्मै प्र भाति नभसो ज्योतिषीमान्त्स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः (१४)

स्वर्ग के ऊपर स्थित द्युलोक जाने की इच्छा करता हुआ यज्ञकर्त्ता पुरुष चयन की हुई अग्नि को प्रकट करता है. अर्थात प्रज्वलित करता है. उस उत्तम कर्म करने वाले यजमान के लिए आकाश को प्रकाशित करने वाले जिस मार्ग से जाते हैं, उसी प्रकार का सुख देने वाला मार्ग प्रकाशित होता है. (१४)

अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिरिन्द्रो ब्रह्मा दक्षिणतस्ते अस्तु.
हुतोऽयं संस्थितो यज्ञ एति यत्र पूर्वमयनं हुतानाम् (१५)

हे प्रेत! तेरे पितृमेघ यज्ञ में अग्नि होता बने, बृहस्पति अध्वर्यु का कार्य करे और इंद्र ब्रह्मा हो. इस प्रकार पूर्ण किया हुआ यह यज्ञ पहले किए गए अनेक यज्ञों का स्थान प्राप्त करता है. (१५)

अपूपवान् क्षीरवांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (१६)

पिसे हुए गेहूं में दूध मिला कर तैयार किया हुआ ओदन रूप चरु इस कर्म में अस्थियों के समीप पश्चिम दिशा में रखा रहे. इस संस्कार को प्राप्त हुए प्रेत के लिए स्वर्ग के निर्माता इंद्र आदि देवों में से इस हवि के अधिकारी यहां वर्तमान देवों को मैं प्रसन्न करता हूं. (१६)

अपूपवान् दधिवांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (१७)

पिसे हुए गेहूं तथा दही मिले हुए ओदन रूप चरु इस कर्म में अस्थियों के समीप पश्चिम दिशा में स्थित रहे. इस संस्कार को प्राप्त हुए प्रेत के लिए स्वर्ग का निर्माण करने वाले इंद्र आदि देवताओं में से इस हवि के अधिकारी यहां वर्तमान देवताओं को हम प्रसन्न करते रहें. (१७)

अपूपवान् द्रप्सवांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (१८)

पिसे हुए गेहूं और गाय का घी मिले हुए चरु से जिस प्रेत का संस्कार किया गया है, उस के लिए स्वर्ग के निर्माता इंद्र आदि देवताओं में से इस हवि का अधिकारी जो देवता यहां वर्तमान हो, उसे हम प्रसन्न करते हैं. (१८)

अपूपवान् घृतवांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (१९)

मालपुए आदि से युक्त तथा मुग्ध करने वाले अन्य द्रव्यों से युक्त चरु इस यज्ञ में स्थित हो. लोकों और मार्गों का निर्माण करने वाले तथा यहां उपस्थित इंद्र आदि देवों के मध्य जिन के लिए यज्ञ भाग दिया गया है, उन्हें हम प्रसन्न करते हैं. (१९)

अपूपवान् मांसवांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२०)

मालपुए तथा मांस से युक्त यह चरु यहां इस यज्ञ में स्थित हो. हम लोकों और मार्गों का निर्माण करने वाले इंद्र आदि देवों के लिए यज्ञ करते हैं. यज्ञ के भाग का उपभोग करने वाले यहां स्थित रहें. (२०)

अपूपवानन्नवांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२१)

पिसे हुए गेहूं के पुओं से युक्त, अन्न से मिश्रित पवन का ओदन रस यह चरु इस यज्ञ कार्य में पश्चिम दिशा में स्थित रहे. जिस प्रेत का संस्कार किया जा रहा है, उस के लिए स्वर्ग का निर्माण करने वाले इंद्र आदि देवताओं में से इस हवि के जो देवता यहां वर्तमान हैं, हम उन्हें प्रसन्न करते हैं. (२१)

अपूपवान् मधुमांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२२)

पिसे हुए गेहूं के पुओं से युक्त और शहद मिले हुए कुंभी पक्व भात रूप चरु इस कार्य में अस्थियों के पश्चिम भाग में रखा रहे. जिस का संस्कार किया जा रहा है उस प्रेत के लिए स्वर्ग का निर्माण करने वाले इंद्र आदि देवताओं में से इस हवि के अधिकारी जो देवता यहां विद्यमान हैं, हम उन का स्वागत करते हैं. (२२)

अपूपवान् रसवांश्चरुरेह सीदतु.लोककृतः पथिकृतो
यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२३)

जिस गेहूं तथा छः रसों से युक्त मालपुए से युक्त कुंभी पक्व ओदन रूप चरु इस कार्य में अस्थियों के पश्चिम भाग में स्थित रहे. यह संस्कार जिस प्रेत के लिए किया जा रहा है, उस के लिए स्वर्ग का निर्माण करने वाले इंद्र आदि देवताओं में से इस हवि के अधिकारी यहां वर्तमान देवों को हम प्रसन्न करते हैं. (२३)

अपूपवानपवांश्चरुरेह सीदतु.
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ (२४)

जिस गेहूं तथा अन्य प्रकार के पुओं से युक्त कुंभी पक्व ओदन रूप चरु इस कार्य में अस्थियों के पश्चिम भाग में रहे. यह संस्कार जिस प्रेत के लिए किया जा रहा है, उस के लिए स्वर्ग का निर्माण करने वाले इंद्र आदि देवताओं में से हवि के अधिकारी यहां वर्तमान देवताओं को हम प्रसन्न करते हैं. (२४)

अपूपापिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन्.
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः (२५)

हे प्रेत! हवि के अधिकारी जिन देवताओं ने चरु से पूर्ण कलशों को अपने भाग के रूप में ग्रहण किया है, वे चरु तुझे परलोक में स्वधा से युक्त करें. (२५)

यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः.
तास्ते सन्तूद्भ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् (२६)
अक्षितिं भूयसीम् (२७)

हे प्रेत! तेरे लिए मैं जिन काले तिलों से युक्त जौ की खीलों को बिखेरता हूं,

वे तुझे परलोक में प्रचुर परिमाण में प्राप्त हों तथा उन्हें खाने के लिए यमराज तुझे आज्ञा दें. (२६-२७)

द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः.
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः (२८)

सब को प्रसन्न करने वाला आदित्य सब से पहले का है. यह चराचर जगत की कारण रूप पृथ्वी पर और द्युलोक में विचरण करता रहता है. तात्पर्य यह है कि आदित्य इन दोनों में व्याप्त है. सब की कारण बनी हुई पृथ्वी संचरण करते हुए हर्ष देने वाले आदित्य को मैं सात होताओं द्वारा सभी दिशाओं में हवि प्रदान करता हूं. (२८)

शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते रयिम्.
ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा ते दुह्रते दक्षिणां सप्तमातरम् (२९)

हे प्रेत! मनुष्यों को देखने वाले देवता टपकते हुए जल से युक्त वायु के वेग से चलते हुए एवं स्वर्ग प्राप्त कराने वाले इस कुंभ को तेरे लिए धन के रूप में जानते हैं. तेरे गोत्र वाले तुझे इस कुंभ के जल से तृप्त करते हैं. कुमोदक अर्थात घड़े का जल देने वाले तुझे सात माताओं रूपी जल धारा की दक्षिणा सदा प्रदान करते हैं. (२९)

कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये.
ऊर्जं मदन्तीमदितिं जनेष्वग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् (३०)

मनुष्यों के स्वभाव को जानने वाले बुद्धिमान मनुष्य अनेक प्रकार के दोनों के रूप में पानी के समान बहाए जाने वाले, विचरण करते हुए और सुख देने वाले धन को प्राप्त करते हैं. जो मनुष्य अपने को उस धन से सदा पूर्ण करते रहते हैं तथा उत्तम पात्र के लिए उस धन का दान करते हैं, वे मनुष्य सात माताओं वाली दक्षिणा प्राप्त करते हैं. (३०)

एतत् ते देवः सविता वासो ददाति भर्तवे.
तत् त्वं यमस्य राज्ये वसानस्तार्प्यं चर (३१)

हे पुरुष! सविता देव तुझे पहनने के लिए यह वस्त्र प्रदान करते हैं. तू इस तृप्ति देने वाले वस्त्र को पहन कर यम के राज्य में विचरण कर. (३१)

धाना धेनुरभवद् वत्सो अस्यास्तिलोऽभवत्.
तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुप जीवति (३२)

हे प्रेत! मंत्रों के अनुसार दिए गए धान यमलोक में जा कर तृप्त करने वाली गाय बनते हैं और तिल उस धन रूपी गाय का बछड़ा बनता है. प्रेत यम के राज्य में उन धानों से बनी हुई गाय पर ही आश्रित होता हुआ जीवित रहता है. (३२)

147

एतास्ते असौ धेनवः कामदुघा भवन्तु.
एनीः श्येनीः सरूपा विरूपास्तिलवत्सा उप तिष्ठन्तु त्वात्र (३३)

हे पुरुष! ये गाएं तेरे लिए कामनाएं पूर्ण करने वाली हों. लाल और श्वेत रंग वाली, समान और भिन्न रंग वाली तथा अनेक रूपों वाली इन गायों का तिल बछड़ा है. ऐसी गाएं तेरे निवास स्थान में नित्य तेरे समीप रहें तथा तेरी सेवा करती रहें. (३३)

एनीर्धाना हरिणीः श्येनीरस्य कृष्णा धाना रोहिणीर्धेनवस्ते.
तिलवत्सा ऊर्जमस्मै दुहाना विश्वाहा सन्त्वनपस्फुरन्तीः (३४)

हे प्रेत! ये हरे रंग वाले धान तेरे लिए लाल श्वेत रंग वाली गाएं बन जाएं. काले धान लाल रंग की गाएं बनें और तिल उन के बछड़े हों. इस प्रकार की गाएं कभी नष्ट नहीं होतीं. वे तेरे लिए सदा बल देने वाला दूध देती रहें. (३४)

वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्सम्.
स बिभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान् बिभर्ति पिन्वमानः (३५)

मैं वैश्वानर अग्नि में यह हवि डालता हूं. ये हवि सैकड़ों हजारों धाराओं वाले सोने के समान हैं. वैश्वानर अग्नि इस हवि से तृप्त हुए हैं. यह अग्नि हमारे पिताओं, पितामहों तथा प्रपितामहों का पोषण करते हैं. (३५)

सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं व्यच्यमानं सलिलस्य पृष्ठे.
ऊर्जं दुहानमनपस्फुरन्तमुपासते पितरः स्वधाभिः (३६)

पितर सैकड़ों व हजारों धाराओं वाले सोते के समान जो अंतरिक्ष के ऊपर व्याप्त है तथा अन्न जल को देने वाली है उस का सेवन स्वधाओं के साथ करते हैं. (३६)

इदं कसाम्बु चयनेन चितं तत् सजाता अव पश्यतेत.
मर्त्योऽयममृतत्वमेति तस्मै गृहान् कृणुत यावत्सबन्धु (३७)

हे समान गोत्र वालो! इस एकत्र आस्था समूह को ध्यान से देखो. यह प्रेत अमरत्व को प्राप्त हो रहा है. तुम सब इस के लिए घर का निर्माण करो. (३७)

इहैवैधि धनसनिरिहचित्त इहक्रतुः. इहैधि वीर्यवत्तरो वयोधा अपराहतः (३८)

हे मनुष्य! तू यहीं पर वृद्धि प्राप्त कर. तू यहीं पर ज्ञानवान हुआ है. तू यहीं कर्म करता हुआ हमें धन प्रदान कर. तू यहीं पर अतिशय बलवान बना तथा शत्रुओं से पराजित नहीं हुआ. तू अन्न को धारण करने वाला एवं दीर्घ आयु वाला हो कर वृद्धि प्राप्त कर. (३८)

पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः.

स्वधां पितृभ्यो अमृतं दुहाना आपो देवीरुभयांस्तर्पयन्तु (३९)

यह मधुर जल पुत्र, पौत्र आदि को पूर्ण तृप्त करता है, ये दिव्य पितरों के लिए स्वधा तथा अमृत का दोहन करते हुए पुत्र और पौत्र दोनों को तृप्त करें. (३९)

आपो अग्निं प्र हिणुत पितॄंरुपेमं यज्ञं पितरो मे जुषन्ताम्.
आसीनामूर्जमुप ये सचन्ते ते नो रयिं सर्ववीरं नि यच्छान् (४०)

हे जल! अग्नि को पितरों के पास भेजो. मेरे पितृगण इस यज्ञ का सेवन करते हैं. जो पितर हमारे द्वारा प्रस्तुत किए गए अन्न का सेवन करते हैं, वे हमें निरंतर वीरत्व तथा धन संपत्ति देते रहें. (४०)

समिन्धते अमर्त्यं हव्यवाहं घृतप्रियम्.
स वेद निहितान् निधीन् पितॄन् परावतो गतान् (४१)

मरणधर्म से रहित अर्थात अमर और घी को प्रेम करने वाली तथा हव्यों को वहन करने वाली अग्नि को पितृगण प्रदीप्त करते हैं. ये अग्नि दूर चले गए पितरों को जानते हैं. (४१)

यं ते मन्थं यमोदनं यन्मांसं निपृणामि ते.
ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्चुतः (४२)

हे प्रेत! मैं तेरे लिए जो मंथ अर्थात दही मथने से प्राप्त मक्खन दे रहा हूं, यह तुझे स्वधा और घृत से संपन्न हो कर प्राप्त हो. (४२)

यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः.
तास्ते सन्तूद्भ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् (४३)

हे प्रेत! ये काले तिलों से मिश्रित तथा स्वधा से पूर्ण खीलें परलोक की प्राप्ति पर तुझे विस्तृत रूप में प्राप्त हों. यमराज तुझे इन को खाने की अनुमति दें. (४३)

इदं पूर्वमपरं नियानं येना ते पूर्वे पितरः परेताः.
पुरोगवा ये अभिशाचो अस्य ते त्वा वहन्ति सुकृतामु लोकम् (४४)

इस लोक में प्राणी जिस के माध्यम से यात्रा करते हैं, मृतक को ढोने वाली वह गाड़ी प्राचीन और नवीन दोनों प्रकार की है. हे प्रेत! इसी के द्वारा तेरे पूर्व पुरुष ढोए गए थे. इस के दोनों ओर जोड़े गए दोनों बैल तुझे पुण्यात्माओं का लोक प्राप्त कराएं. (४४)

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने.
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् (४५)

मृतक का दाह संस्कार करने वाले पुरुष अग्नि की इच्छा करते हुए सरस्वती

का आह्वान करते हैं. ज्योतिष्टोम आदि यज्ञों के अवसर पर भी सरस्वती का आह्वान किया जाता है. वे सरस्वती हवि देने वाले यजमान को वरण करने योग्य पदार्थ प्रदान करें. (४५)

सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः.
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे (४६)

वेदी के दक्षिण भाग में बैठे हुए पितर भी सरस्वती का आह्वान करते हैं. हे पितरो! तुम इस यज्ञ में प्रसन्नता प्राप्त करो. हे सरस्वती! तुम पितरों के द्वारा बुलाए जाने पर हमें मन चाहे अन्न से प्रतिष्ठित करो. (४६)

सरस्वति या सरथं ययाथोक्थैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती.
सहस्रार्घमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि (४७)

हे सरस्वती! तुम उक्थ, शस्त्र और स्वधा रूप अन्न से तृप्त होती हुई पितरों सहित एक ही रथ पर बैठ कर आती हो. तुम यजमान को वह अन्न प्रदान करो जो अनेक व्यक्तियों को तृप्त कर सके. (४७)

पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः.
परापरैता वसुविद् वो अस्त्वधा मृताः पितृषु सं भवन्तु (४८)

हे मिट्टी से बने हुए मृत पुरुष! मैं तुझे मिट्टी में मिलाता हूं अर्थात जला कर तेरे शरीर को राख कर के मिट्टी में मिलाता हूं अथवा तुझे मिट्टी में गाढ़ता हूं. धाता देवता यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले हम सब की आयु बढ़ाएं. हे दूर लोक में वास करने वाले पितरो! धाता देव तुम्हारे लिए निवास स्थान देने वाले हों. तुम पितरों में भलीभांति जा कर मिलो. (४८)

आ प्र च्यवेथामप तन्मृजेथां यद् वामभिभा अत्रोचुः.
अस्मादेतमघ्न्यौ तद् वशीयो दातुः पितृष्विहभोजनौ मम (४९)

हे प्रेत का वहन करने वाले बैलो! तुम हमारे सामने ही इस गाड़ी से अलग हो जाओ तथा प्रेत की सवारी करने से संबंधित निंदा वचनों से छूट जाओ. तुम इस गाड़ी सहित हमारे पास आओ. तुम्हारा आना शुभ हो. इस पितृमेघ यज्ञ में पितरों के लिए हवि देने वाले बनो. (४९)

एयमगन् दक्षिणा भद्रतो नो अनेन दत्ता सुदुघा वयोधाः.
यौवने जीवानुपपृञ्चती जरा पितृभ्य उपसंपराणयादिमान् (५०)

यह संस्कार करने वालों के पास यह गौ रूप दक्षिणा आ रही है. सुंदर फल और दूध रूपी अन्न को देती हुई यह गौ वृद्धावस्था में भी युवती रहे. संस्कार किए गए पुरुष को यह पूर्व काल के पितरों के पास पहुंचाए. (५०)

इदं पितृभ्यः प्र भरामि बर्हिर्जीवं देवेभ्य उत्तरं स्तृणामि.
तदा रोह पुरुष मेध्यो भवन् प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम् (५१)

संस्कार करने वाले पुरुष! पितरों और देवताओं के जीवन की कामना करता हुआ मैं कुशों को फैलाता हूं. हे मृत पुरुष! तू योग्य होता हुआ इन कुशाओं पर बैठा. पितर यहां से गए हुए तुझ प्रेत को इन कुशों पर बैठने की अनुमति दें. (५१)

एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभूः प्रति त्वा जानन्तु पितरः परेतम्.
यथापरु तन्वं१ सं भरस्व गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि (५२)

हे प्रेत! चिता के समीप बिछे हुए कुशों पर बैठ कर तू पवित्र हो गया है. तू दहन से शुद्ध हो गया है. यहां से गए हुए पितर तुझ को जान लें. तू जोड़ों के अनुसार अपने शरीर को पूर्ण कर. मैं मंत्रों के द्वारा तेरे अंगों को समर्थ बनाता हूं. तात्पर्य यह है कि मैं मंत्रों के द्वारा तुझे शक्ति प्रदान करता हूं. (५२)

पर्णो राजापिधानं चरूणामूर्जो बलं सह ओजो न आगन्.
आयुर्जीवेभ्यो वि दधद् दीर्घायुत्वाय शतशारदाय (५३)

ढाक का पत्ता चरुओं का ढक्कन है. इस पलाश पत्र से हमें अन्न, बल, शत्रु का नाश करने का सामर्थ्य तथा तेज प्राप्त हो. यह पलाश पत्र हमें सौ वर्ष की आयु वाला बनाए. (५३)

ऊर्जो भागो य इमं जजानाश्मान्नानामाधिपत्यं जगाम.
तमर्चत विश्वमित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात् (५४)

चरु रूप अन्न के अधिकारी जिन यमराज ने इसे प्रेत बनाया है, जो यम इन चरुओं को ढकने वाले पत्थरों के स्वामी हैं, हे बंधुओ! उन यमदेव को हवियों के द्वारा संतुष्ट करो. वे दीर्घ जीवन के हेतु हमारा पोषण करे. (५४)

यथा यमाय हर्म्यमवपन् पञ्च मानवाः.
एवा वपामि हर्म्यं यथा मे भूरयोऽसत (५५)

जिस प्रकार पांच मनुष्यों ने यमराज के लिए घर बनाया है, उसी प्रकार मैं भी घर बनाता हूं. इस प्रकार मेरे बहुत से घर हो जाएं. (५५)

इदं हिरण्यं बिभृहि यत् ते पिताबिभः पुरा.
स्वर्गं यतः पितुर्हस्तं निर्मृड्ढि दक्षिणम् (५६)

हे मरणासन्न पुरुष! तू इस सोने को धारण कर, जिसे तेरे पिता ने पहले धारण किया था. हे पुरुष! तू स्वर्ग को जाते हुए अपने पिता के दाएं हाथ को सुशोभित कर. (५६)

ये च जीवा ये च मृता ये जाता ये च यज्ञियाः.

तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु मधुधारा व्युन्दती (५७)

जो जीवित हैं, जो मर गए हैं, जो उत्पन्न हुए हैं तथा जो भविष्य में जन्म लेने वाले हैं, इन सब के लिए उमड़ती हुई जलधारा वाली छोटी नदी प्राप्त हो. (५७)

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सूरो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः.
प्राणः सिन्धूनां कलशां अचिक्रददिन्द्रस्य हार्दिमाविशन्मनीषया (५८)

स्तुति करने वालों को मनचाहा फल देने वाला सोम कपड़े से छान कर तैयार किया जाता है. यह सोम दिन और रात्रियों को प्रेरित करने वाला है. उषाकाल और प्रकाश को भी यही बढ़ाता है. यह नदियों के जलों का प्राण है. कलशों की ओर जाता हुआ यह सोम बहुत शब्द करता है. यह सोम तीनों सवनों में पूज्य इंद्र के पेट में प्रवेश करे. (५८)

त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु दिवि षञ्छुक्र आततः.
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे (५९)

हे प्रेत! तेरा धुआं मेघ का रूप धारण कर के अंतरिक्ष को ढक ले. तुम स्तुति के कारण प्रदीप्त हो कर सूर्य के समान प्रकाशित होते हो. (५९)

प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतिं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरः.
मर्य इव योषाः समर्षसे सोमः कलशे शतयामना पथा (६०)

कपड़े से छनता हुआ यह सोम इंद्र के पेट में जाता है. यह यज्ञ करने वाले के लिए मित्र के समान है तथा उस की इच्छित कामना यह व्यर्थ नहीं करता. यह सोम पुरुष के स्त्री से मिलने के समान सहस्रों धाराओं में मिलता है. (६०)

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियां अधूषत.
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा यविष्ठा ईमहे (६१)

कुशों पर रखे गए पिंडों को खा कर पितर तृप्त हुए तथा उन्होंने अपने शरीरों को कंपित किया. इस के पश्चात वे हमारी प्रशंसा करने लगे. उन तृप्त पितरों से हम अपने लिए मनचाहे वरदान की याचना करते हैं. (६१)

आ यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पथिभिः पितृयाणैः.
आयुरस्मभ्यं दधतः प्रजां च रायश्च पोषैरभि नः सचध्वम् (६२)

हे पितरो! आप सोमरस प्राप्त करने योग्य हो. तुम गंभीर पितृयानों से आ कर पिंडदान के लिए बिछाए गए कुशों पर तिल बिखेरने वाले हमें दीर्घ जीवन तथा पुत्रों एवं पौत्रों के रूप में संतान प्रदान करो तथा हमें धन की समृद्धि से मिलाओ. (६२)

परा यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पथिभिः पूर्याणैः.
अधा मासि पुनरा यात नो गृहान् हविरत्तुं सुप्रजसः सुवीराः (६३)

हे सोमरस प्राप्त करने के अधिकारी पितरो! तुम पितृयानों से अपने लोक को गमन करो तथा अमावस्या के दिन हवि भक्षण करने हेतु हमारे घर पुन: आना. हमारे घर शोभन पुत्रों और उत्तम वीरों से युक्त हों. (६३)

यद् वो अग्निरजहादेकमङ्गं पितृलोकं गमयञ्जातवेदा:.
तद् व एतत् पुनरा प्याययामि साङ्गा: स्वर्गे पितरो मादयध्वम् (६४)

हे प्रेत! तुम्हारे जिस अंग को अग्नि ने दूर फेंक कर भस्म नहीं किया है. उसे मैं पुन: अग्नि में डाल कर तुम्हारी वृद्धि करता हूं. तूम पूर्ण अंग वाले हो कर स्वर्ग की ओर गमन करते हुए प्रसन्नता प्राप्त करो. (६४)

अभूद् दूत: प्रहितो जातवेदा: सायं न्यह्न उपवन्द्यो नृभि:.
प्रादा: पितृभ्य: स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि (६५)

हम ने प्रात: और सायं काल वंदना के योग्य अग्नि को दूत बना कर पितरों के पास भेजा है. हे अग्नि! हमारी हवियों को तुम पितरों को प्रदान करो. हे अग्नि! वे पितर उन हवियों का सेवन करें. इस के पश्चात जो हवि तुम्हें दी गई है, तुम भी उस का सेवन करो. (६५)

असौ हा इह ते मन: ककुत्सलमिव जामय:.
अभ्ये नं भूम ऊर्णुहि (६६)

हे प्रेत! तेरा मन उस श्मशान में है. हे श्मशान भूमि! इस प्रेत को तुम उसी प्रकार ढको, जिस प्रकार स्त्रियां अपने कंधों को वस्त्र से ढकती हैं. (६६)

शुम्भन्तां लोका: पितृषदना: पितृषदने त्वा लोक आ सादयामि (६७)

हे प्रेत! तेरे बैठने के लिए पितरों के लोक प्रकट हों. मैं तुझे उसी लोक में प्रतिष्ठित करता हूं. (६७)

येऽस्माकं पितरस्तेषां बर्हिरसि (६८)

हे कुश! तू हमारे पूर्वज पितरों के बैठने का स्थान बन. (६८)

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय.
अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम (६९)

हे वरुण! तुम अपने उत्तम, मध्यम और निकृष्ट पाशों अर्थात फंदों को हम से दूर रखो. तुम्हारे पाशों से छूटते हुए हम तुम्हारी सेवा करें तथा कोई हमारी हिंसा न करे. (६९)

प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् यै: समामे बध्यते यैर्व्यामे.
अधा जीवेम शरदं शतानि त्वया राजन् गुपिता रक्षमाणा: (७०)

हे वरुण! जिन पाशों अर्थात फंदों से मनुष्य जकड़ जाता है, उन्हें हम से दूर

रखो. तुम्हारे द्वारा रक्षित हुए तथा भविष्य में तुम से रक्षा प्राप्त करते हुए हम सौ वर्ष की आयु प्राप्त करें. (७०)

अग्नये कव्यवाहनाय स्वधा नमः (७१)

कव्य वहन करने वाले अग्नि को स्वधा युक्त हवि प्राप्त हो. हम अग्नि को नमस्कार करते हैं. (७१)

सोमाय पितृमते स्वधा नमः (७२)

श्रेष्ठ पिता वाले अग्नि को स्वधा और नमस्कार है. (७२)

पितृभ्यः सोमवद्भ्यः स्वधा नमः (७३)

सोमवान पितरों के लिए स्वधा व नमस्कार है. (७३)

यमाय पितृमते स्वधा नमः (७४)

उत्तम पिता वाले यम के लिए स्वधा और नमस्कार है. (७४)

एतत् ते प्रततामह स्वधा ये च त्वामनु (७५)

हे प्रपितामह तुम्हारे लिए दिया हुआ यह पदार्थ स्वधा हो. जो तुम्हारे अनुगामी हैं, उन के लिए भी यह स्वधा हो. (७५)

एतत् ते ततामह स्वधा ये च त्वामनु (७६)

हे पितामह! तुम्हारे लिए दिया हुआ यह पदार्थ स्वधा हो. (७६)

एतत् ते तत स्वधा (७७)

हे पिता! तुम्हारे लिए यह हवि स्वधा हो. (७७)

स्वधा पितृभ्यः पृथिविषद्भ्यः (७८)

पृथ्वी पर बैठने वाले पितरों के लिए यह हवि स्वधा हो. (७८)

स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्षसद्भ्यः (७९)

अंतरिक्ष में स्थित पितरों के लिए यह हवि स्वधा हो. (७९)

स्वधा पितृभ्यो दिविषद्भ्यः (८०)

द्युलोक में स्थित पितरों के लिए हवि स्वधा हो. (८०)

नमो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय (८१)

हे पितरो! तुम्हारे अन्न अथवा बल के लिए नमस्कार है. हे पितरो! तुम्हारे रस और अन्न के लिए नमस्कार है. (८१)

नमो वः पितरो भामाय नमो वः पितरो मन्यवे (८२)

हे पितरो! तुम्हारे क्रोध के लिए नमस्कार है. हे पितरो! तुम्हारे मन्यु अर्थात आक्रोश के लिए नमस्कार है. (८२)

नमो वः पितरो यद् घोरं तस्मै नमो वः पितरो यत् क्रूरं तस्मै (८३)

हे पितरो! तुम्हारा जो घोर कर्म है, उस के लिए नमस्कार है. हे पितरो! तुम्हारा जो क्रूर कर्म है उस के लिए नमस्कार है. (८३)

नमो वः पितरो यच्छिवं तस्मै नमो वः पितरो यत् स्योनं तस्मै (८४)

हे पितरो! तुम्हारा जो कल्याणमय कर्म है, उस के लिए नमस्कार है. हे पितरो! तुम्हारा जो सुखमय कर्म है, उस के लिए नमस्कार है. (८४)

नमो वः पितरः स्वधा वः पितरः (८५)

हे पितरो! तुम्हारे लिए नमस्कार है. हे पितरो! तुम्हारे लिए स्वधा प्राप्त हो. (८५)

येऽत्र पितरः पितरो येऽत्र यूयं स्थ युष्मांस्तेऽनु युयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्थ (८६)

ये अन्य पितर यहां हैं. जो पितृगण यहां पर हैं. अन्य पितर तुम्हारे अनुकूल हों. (८६)

य इह पितरो जीवा इह वयं स्मः. अस्मांस्तेऽनु वयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्म (८७)

जो पितर यहां हैं, उन के अनुग्रह से हम यहां जीवित हैं. ये पितर हमारे अनुकूल बने रहें. हम उन में श्रेष्ठ हैं. हम दोनों मिल कर परस्पर श्रेष्ठ हों. (८७)

आ त्वाग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्.
यद् घ सा ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवि. इषं स्तोतृभ्य आ भर (८८)

हे प्रकाशमान अग्नि! तुम चमकने वाली और जरा रहित हो. हम तुम्हें प्रकाशित करते हैं. तुम्हारी अत्यधिक प्रशंसनीय दीप्ति अंतरिक्ष में प्रकाशित हो रही है. हे अग्नि! जो तुम्हारी स्तुति करते हैं, उन के लिए तुम अन्न प्रदान करो. (८८)

चन्द्रमा अप्स्व१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि.
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी (८९)

सुंदर किरणों वाला चंद्रमा जलों के भीतर निवास करता हुआ दौड़ता रहता है. हे द्यावा पृथ्वी! तुम्हारी स्थिति को सोने के चमकीले सीमा भाग वाली बिजलियां प्राप्त नहीं कर पाती हैं. तुम दोनों मेरी इस स्तुति को जानो. (८९)

उन्नीसवां कांड

सूक्त पहला

देवता—यज्ञ

सं सं स्रवन्तु नद्य१: सं वाताः सं पतत्रिणः.
यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि (१)

नाद करती हुई सरिताएं भलीभांति प्रवाहित हों. वायु हमारे अनुकूल बहे. पक्षी आदि सभी प्राणी हमारे अनुकूल आचरण करें. हे स्तुति किए जाते हुए देवो! जिस यजमान के निमित्त यह यज्ञ रूप शांति कर्म किया जा रहा है, तुम पुत्र, पशु आदि से उस की वृद्धि करो. मैं आप देवों के उद्देश्य से घृत, क्षीर, आदि से युक्त हवि की अग्नि में आहुति देता हूं. (१)

इमं होमा यज्ञमवतेमं संस्रावणा उत.
यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि (२)

हे आहुतियो! तुम इस यज्ञ की रक्षा करो. हे घृत, क्षीर आदि! तुम इस यज्ञ का पालन करो. हे देवो! फल की कामना वाले इस यजमान की रक्षा करो. इस यजमान की पुत्र, पशु आदि से वृद्धि करो. मैं आप देवों के उद्देश्य से घृत, क्षीर आदि से युक्त हवि की अग्नि में आहुति देता हूं. (२)

रूपंरूपं वयोवयः संरभ्यैनं परि ष्वजे.
यज्ञमिमं चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु संस्राव्येण हविषा जुहोमि (३)

मैं फल की कामना करने वाले तथा यज्ञ कर्म के प्रयोजक यजमान को पशु, पुत्र आदि फलों से संबद्ध करता हूं. चारों दिशाएं एवं उन दिशाओं में निवास करने वाले जन इस यजमान को अभिलषित फल प्रदान करें. मैं आप देवों के उद्देश्य से घृत, क्षीर आदि से युक्त हवि की अग्नि में आहुति देता हूं. (३)

सूक्त दूसरा

देवता—आप अर्थात जल

शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तूत्स्याः.
शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः (१)

हे यजमान! हिमवान पर्वत से आए हुए जल, झरनों के जल तथा सदा बहने वाले जल तेरे लिए सुख करने वाले हों. वर्षा के जल भी तेरा कल्याण करने वाले हों. मैं आप देवों के उद्देश्य से घृत, क्षीर आदि से युक्त हवि की अग्नि में आहुति देता हूं. (१)

शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः
शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः (२)

हे यजमान! मरुस्थल के जल तथा जल वाले प्रदेश के जल तेरे लिए कल्याणकारी हों. कुएं, तालाब आदि के जल तुझे सुख देने वाले बनें. घड़ों के द्वारा लाए गए जल भी तेरा कल्याण करें. (२)

अनभ्रयः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः.
भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपो अच्छा वदामसि (३)

खोदने के साधनों में कुदाल आदि से रहित एवं लकड़ी, हाथों और पैरों से खोदने में समर्थ एवं असाध्य कर्मों को भी मंत्र के बल से सिद्ध करने वाले हम मेधावी ब्राह्मण वैद्यों से बढ़ कर वैद्य हैं. हम जलों की वंदना करते हैं. (३)

अपामह दिव्यानामपां स्रोतस्यानाम्.
अपामह प्रणेजनेऽश्वा भवथ वाजिनः (४)

हे ऋत्विजों! तुम आकाश से बरसने वाले, नदियों में बहने वाले तथा अन्य प्रकार के जलों और तेज दौड़ने वाले घोड़ों के समान इस जल शक्ति वाले यज्ञ कर्म में शीघ्रता करने वाले बनो. (४)

ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः.
यथैव तृप्यते मयस्तास्त आ दत्त भेषजीः (५)

हे ऋत्विजो! प्रसिद्ध, कल्याण करने वाले तथा यक्ष्मा आदि रोगों से छुटकारा दिलाने वाले ओषधि रूप जलों को मेरे सुख की वृद्धि के लिए यहां ले आओ. (५)

सूक्त तीसरा देवता—अग्नि

दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद् वनस्पतिभ्यो अध्योषधीभ्यः.
यत्रयत्र विभृतो जातवेदास्तत स्तुतो जुषमाणो न एहि (१)

हे अग्नि देव! आकाश से पृथ्वी से, अंतरिक्ष से, वनस्पतियों से, ओषधियों से तथा जहांजहां तुम विशेष रूप से पूर्ण हो, वहांवहां से हमें प्रसन्न करते हुए यहां आओ. (१)

यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वप्स्व१न्तः.

अग्ने सर्वास्तन्व१: सं रभस्व ताभिर्न एहि द्रविणोदा अजस्रः (२)

हे अग्नि! तुम्हारी जो महिमा वाडवाग्नि रूप से जलों में वर्तमान है, दावाग्नि रूप से वनों में विद्यमान है, जो ओषधियों में फल के पकने का कारण बनती है, जो सभी प्राणियों में जठराग्नि के रूप में स्थित है तथा जो विद्युत के रूप में बादलों में रहती है, इन सब को एकत्र कर के नित्य धनदाता के रूप में आओ. (२)

यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तनूः पितृष्वाविवेश.
पुष्टिर्या ते मनुष्येषु पप्रथेऽग्ने तया रयिमस्मासु धेहि (३)

हे अग्नि! तुम्हारी जो महिमा स्वर्गगामी के रूप में देवों में है, तुम्हारा जो नाम का हवि स्वधा के रूप में पितृलोक जाने वाला है तथा मनुष्य, पशु आदि चराचर में तुम्हारी जो पुष्टि है, अपने उन सभी रूपों के द्वारा हमें धन दो. (३)

श्रुत्कर्णाय कवये वेद्याय वचोभिर्वाकैरुप यामि रातिम्.
यतो भयमभयं तन्नो अस्त्वव देवानां यज हेडो अग्ने (४)

हे अग्निदेव! तुम हमारे स्तोत्रों को सुनने में समर्थ करने वाले, मनचाहा फल देने वाले एवं सबके द्वारा जानने योग्य हो. मैं मंत्र रूप वाक्यों, अनुवाकों तथा सूक्तों से तुम्हारी स्तुति करता हूं. जिस से मुझे अभय प्राप्त हो जो देव हमारे प्रति क्रोध करते हों, तुम उन का क्रोध शांत करो. (४)

सूक्त चौथा — देवता—अग्नि

यामाहुतिं प्रथमामथर्वा या जाता या हव्यमकृणोज्जातवेदाः.
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि ताभिष्टुप्तो वहतु हव्यमग्निरग्नये स्वाहा (१)

हे अग्नि! अथर्वा रूप परमात्मा ने सृष्टि से पूर्व अपने द्वारा रचे हुए देवताओं को प्रसन्न करने के लिए तुम में जो आहुति दी थी और तुम ने उस आहुति को देवगण तक पहुंचने योग्य बनाया, हे अग्नि! मैं सब यजमानों से पहले उस आहुति को तुम्हारे मुख में डालता हूं. हवि प्राप्त कराने वाले दूत रूप, देवता रूप एवं हवि प्रक्षेप के आधार रूप तीन रूपों से स्तुति किए गए अग्नि मेरा यह हवि देवों को प्राप्त कराएं. (१)

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु.
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम् (२)

मैं तात्पर्य रूप, प्रकाशित होने वाली एवं शोभन भाग्य से युक्त वाणी अर्थात सरस्वती की सेवा करता हूं. पुत्र जिस प्रकार माता के वश में होता है, उसी प्रकार मेरे मन को वश में रखती हुई हमारे आह्वान से हमारे अनुकूल हो. मैं जो कामना करता हूं, वह केवल मेरी हो, किसी अन्य को प्राप्त न हो. मैं अपनी कामना को सदा प्राप्त करूं. (२)

आकूत्या नो बृहस्पत आकूत्या न उपा गहि.
अथो भगस्य नो धेह्यथो नः सुहवो भव (३)

हे बृहस्पति! तुम सब देवों के पालनकर्ता हो. तुम सभी को देने के लिए आओ. तुम सरस्वती को हमारे अनुकूल करने के लिए आओ. तुम हमें सौभाग्य प्रदान करो. तुम हमारे आह्वान मात्र से हमारे अनुकूल बनो. (३)

बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रति जानातु वाचमेताम्.
यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वेत्वस्मान् (४)

अंगिराओं के पुत्र बृहस्पति देव सब वाक्यों की रूपा सरस्वती को मुझे देने के लिए स्मरण करें. स्त्री-पुरुष रूप सभी देवता जिस बृहस्पति के वश में है और सभी देवता जिस बृहस्पति के द्वारा कार्यों में लगाए गए हैं, वे बृहस्पति देव हम कामना करने वालों को फल देने के लिए आएं. (४)

सूक्त पांचवां — देवता—इंद्र

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति.
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद् राध उपस्तुतश्चिदर्वाक् (१)

तीनों लोकों में निवास करने वाले मनुष्यों एवं देवताओं के स्वामी इंद्र हवि देने वाले यजमान को धन ला कर दें. धरती पर जो अनेक रूपों वाला धन है उसे मुझे प्रदान करें. स्तुति किए गए इंद्र धनों को हमारे सामने प्रेरित करें, हमें प्रदान करें. (१)

सूक्त छठा — देवता—पुरुष

सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्.
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् (१)

अनंत भुजाओं, अनंत नेत्रों और अनंत चरणों वाले यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले नारायण नाम के पुरुष हैं, वे सात समुद्रों और सात द्वीपों वाली भूमि को अपनी महिमा से सभी ओर से व्यक्त कर के दश अंगुल वाले हृदय रूप आकाश में स्थित हुए. (१)

त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत् पादस्येहाभवत् पुनः.
तथा व्य क्रामद् विष्वङ्शनानशने अनु (२)

यज्ञ के अनुष्ठाता वे नारायण नाम के पुरुष अपने तीन चरणों से स्वर्ग लोक पर आरूढ़ हुए. उन का चौथा चरण इस भूलोक में बारबार प्रकट होता है. यह चौथा चरण भोजन करने वाले मनुष्य, पशु आदि और भोजन न करने वाले देव, वृक्ष आदि सभी में व्याप्त है. (२)

तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः.
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि (३)

जितनी इस नारायण नाम के पुरुष की महिमाएं हैं, ये उन से भी अधिक महान हैं. इस का एक मात्र अर्थात चौथा अंश सभी प्राणियों में व्याप्त है. इस के तीन चरण अर्थात मात्र मरण रहित होते हुए स्वर्गलोक में वर्तमान हैं. (३)

पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्.
उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत् सह (४)

जो अतीत जगत, भविष्य में होने वाला जगत और यह दृश्यमान जगत है, वह सब पुरुष ही है. यह पुरुष मरण रहित देवों का भी स्वामी है तथा जो भोग्य अन्न के साथ हुए यह उन का भी ईश्वर है. (४)

यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्.
मुखं किमस्य किं बाहु किमूरू पादा उच्येते (५)

साध्य और वसु नाम के देवताओं ने जब यज्ञ पुरुष की कल्पना की, तब उन्होंने यह कल्पना कितने प्रकार से की थी. इस का मुख क्या था, इस की भुजाएं क्या थीं और इस के चरण क्या कहलाते थे. (५)

ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यो ऽभवत्.
मध्यं तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत (६)

इस यज्ञात्मा पुरुष का मुख ब्राह्मण था. इस की भुजाएं क्षत्रिय हुए. इस का जो मध्य भाग था, इससे वैश्य जाति के पुरुष हुए और इस के दोनों चरणों से शुद्र की उत्पत्ति हुई. (६)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत.
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत (७)

इस यज्ञ रूप पुरुष के मन से चंद्रमा उत्पन्न हुआ और नयनों से सूर्य की उत्पत्ति हुई. इस के मुख से इंद्र और अग्नि देव तथा प्राण से अग्नि की उत्पत्ति हुई. (७)

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत.
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकां अकल्पयन् (८)

इस यज्ञ पुरुष की नाभि से अंतरिक्ष लोक, शीश से स्वर्गलोक, चरणों से भूमि तथा कानों से दिशाएं उत्पन्न हुई. इस प्रकार साध्य और वसु नाम के देवों ने लोकों की कल्पना की, लोकों का निर्माण किया. (८)

विराडग्रे समभवद् विराजो अधि पूरुषः.

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः (९)

इस सृष्टि के आदि में विराट उत्पन्न हुआ. उस विराट से पुरुष की उत्पत्ति हुई. वह पुरुष उत्पन्न होते ही वृद्धि को प्राप्त हुआ. वह भूमि आदि लोकों के पीछे और आगे व्याप्त कर के उन से अतिरिक्त हुआ. तात्पर्य यह है कि पुरुष ने जीवों की रचना की. (९)

यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत.
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः (१०)

जब देवों ने पुरुष रूप अथवा अश्व रूप हवि से यज्ञ किया, उस समय वसंत ऋतु अपनी महिमा से इस यज्ञ का घृत, ग्रीष्म समिधा तथा शरद ऋतु यज्ञीय चरु, पुरोडाश आदि हवि हुआ. (१०)

तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रशः.
तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये (११)

सृष्टि के आरंभ में उत्पन्न उस यज्ञीय पशु अथवा पुरुष को वर्षा ऋतु के द्वारा धोया गया. उस पुरुष के द्वारा साध्य और वसु नाम वाले देवों ने यज्ञ किया. (११)

तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः.
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः (१२)

उस यज्ञात्मक पुरुष से घोड़े उत्पन्न हुए. उन घोड़ों के अतिरिक्त गधे और खच्चर भी उत्पन्न हुए जो ऊपर और नीचे अर्थात दोनों ओर दांतों वाले थे. उस यज्ञात्मक पुरुष से गाएं उत्पन्न हुईं तथा उससे बकरियां और भेड़ें उत्पन्न हुईं. (१२)

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे.
छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत (१३)

उस अश्व रूप यज्ञीय पुरुष से ऋक् नाम के पश् बद्ध मंत्र तथा गीत रूप साम नाम के मंत्र उत्पन्न हुए. उसी यज्ञीय पुरुष से छंदों की उत्पत्ति हुई. उसी से गद्यपद्य के सम्मिलित पाठ वाले यजुष नाम के मंत्र प्रकट हुए. (१३)

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्.
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये (१४)

उस अश्व रूप यज्ञीय पुरुष से दही से मिले हुए घी का संपादन हुआ. साध्य नाम वाले देवों ने वायु देवता वाले वन में विचरणशील सिंह, हाथी आदि पशुओं को तथा ग्रामों में रहने वाले गाय, घोड़े, गधे आदि पशुओं को बनाया. (१४)

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः.

देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् (१५)

अश्वमेध अथवा पुरुष मेध यज्ञ करते हुए देवों ने अपने यज्ञ में अश्व रूप पुरुष को यूप अर्थात लकड़ी के खंभे से बांधा. देवों ने गायत्री आदि सात छंदों को परिधि बनाया तथा इक्कीस समिधाओं की रचना की. (१५)

मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशव: सप्त सप्तती:.
राज्ञ: सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि (१६)

उस यज्ञ रूप पुरुष के मस्तक से सोम राजा की चार सौ नब्बे महान शोभा वाली रश्मियां उत्पन्न हुईं. (१६)

सूक्त सातवां — देवता—नक्षत्र

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि.
तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भि: सपर्यामि नाकम् (१)

अनेक रूपों वाले जो प्रकाश युक्त नक्षत्र आकाश में चमकते हैं, वे प्रति क्षण द्रुत गति से सरकने वाले हैं. मैं उन नक्षत्रों की मंत्र रूप वाली स्तुति करता हूं, क्योंकि मैं उन की बाधा निवारण करने वाली कल्याणमयी बुद्धि की इच्छा करता हूं. (१)

सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिर: शमार्द्रा.
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे (२)

हे अग्नि! कृत्तिका नक्षत्र हमारे आह्वान के अनुकूल हो. हे प्रजापति! रोहिणी नक्षत्र हमारे सुंदर आह्वान के योग्य हो. हे सोम! मृगशिरा नक्षत्र हमारे लिए मंगलदायक तथा आह्वान के योग्य हो. हे रुद्र! आर्द्रा नक्षत्र हमारे लिए सुखकारी हो. हे अदिति! पुनर्वसु नक्षत्र हमें सत्य वाणी देने वाला हो. बृहस्पति संबंधी पुष्य नक्षत्र हमारे लिए श्रेय देने वाला हो. सर्प देवता वाला अश्लेषा नक्षत्र हमें दीप्ति प्रदान करे. पितृ देवता वाला मघा नक्षत्र मेरा गंतव्य स्थान हो. (२)

पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु.
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम् (३)

अर्यमा देव का पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, भग देव का उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, सविता देव का हस्त नक्षत्र तथा इंद्र देव का चित्रा नक्षत्र मुझे पुण्य से भरा हुआ सुख दे. वायुदेव का स्वाति नक्षत्र, इंद्र देवता वाला राधा अथवा विशाखा नक्षत्र और मित्र देव का अनुराधा नक्षत्र हमारे लिए सुख से आह्वान योग्य हो. इंद्र देव का ज्येष्ठा नक्षत्र हमें सुखी बनाए. पितर देवों का व्याधियों से पूर्ण मूल नक्षत्र मेरे लिए कल्याणकारी हो. (३)

अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आ वहन्तु.
अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवण: श्रविष्ठा: कुर्वतां सुपुष्टिम् (४)

637/50

जलदेवता का पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र मुझे खाने योग्य उत्तम अन्न दे. विश्वेदेवों का उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हमें बलदायक रस प्रदान करे. ब्रह्म देवता का अभिजित नक्षत्र मुझे पुण्य दे. विष्णु देव का श्रवण नक्षत्र तथा वसु देवता का धनिष्ठा नक्षत्र भी भलीभांति मेरा पालन करे. (४)

आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म.
आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु (५)

इंद्र देव का शतभिषा नक्षत्र, अजैकपाद का पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र तथा अहिंबुध्न्य देव का उत्तराभाद्रपद नक्षत्र हमारे लिए महान फल दे और सुसज्जित घर प्रदान करे. पूषा देव का रेवती नक्षत्र तथा अश्विनीकुमारों का अश्विनी नक्षत्र मुझे सौभाग्यशाली बनाए. यम देवता का भरणी नक्षत्र मुझे ऐश्वर्य प्रदान करे. (५)

सूक्त आठवां — देवता—नक्षत्र

यानि नक्षत्राणि दिव्य१न्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु.
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु (१)

जो नक्षत्र अंतरिक्ष अर्थात आकाश में, जलों में, भूमियों तथा पर्वतों पर एवं दिशाओं में हैं तथा चंद्रमा जिन नक्षत्रों को प्रकट करता हुआ उदय होता है, वे नक्षत्र मुझे सुख देने वाले हों. (१)

अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे.
योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु (२)

देखने में सुख देने वाले तथा सुख प्रदान करने वाले जो अट्ठाईस नक्षत्र हैं, वे एक साथ मिल कर मुझे प्राप्त हों एवं मुझे सुख प्रदान करें. मैं नक्षत्रों की कृपा से अप्राप्त वस्तुओं को प्राप्त करूं तथा प्राप्त वस्तुओं की सुरक्षा कर सकूं. दिन और रात को मेरा नमस्कार है. (२)

स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु.
सुहवमग्ने स्वस्त्य१मर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् (३)

प्रातःकाल मुझे सुख प्रदान करें, सायं काल मुझे सुख प्रदान करे तथा दिनरात मुझे सुखी बनाएं. मैं जिस प्रयोजन संबंधी नक्षत्र में प्रस्थान करूं, उस में हरिण आदि शुभ शकुन के रूप मेरे अनुकूल गति वाले हों. हे अग्नि! सभी नक्षत्रों के देवताओं का अभिनंदन करने वाले एवं अविनश्वर द्युलोक में जा कर हवि देने वाले हम यजमानों और ऋत्विजों को प्रसन्न करने के हेतु पुनः यहां आओ. (३)

अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षवम्.
सर्वैर्मे रिक्तकुम्भान् परा तान्त्सवितः सुव (४)

हे सविता देव! कार्य के निमित्त जाते हुए मुझ को तुम सभी नक्षत्रों में अनुभव

नाम ले कर पीछे से बुलाना, परिहव नाम ले कर दोनों ओर से पुकारना. परिवाद अर्थात कठोर भाषण, परिक्षव अर्थात वर्जित स्थल में प्रवेश व खाली घड़े आदि देखना—अपशकुनों से बचाओ. (४)

अपपापं परिक्षवं पुण्यं भक्षीमहि क्षवम्.
शिवा ते पाप नासिकां पुण्यगश्चाभि मेहताम् (५)

अहित करने वाली छींक हम से दूर हो. धन प्राप्ति के लिए जाते हुए पुरुष को गीदड़ी का दर्शन, उस का शब्द सुनना तथा नपुंसक का दर्शन—ये सभी हमारे पापों को शांत करने वाले हों. (५)

इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते.
सध्रीचीरिन्द्रा ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि (६)

हे ब्रह्मणस्पति इंद्र! ये सभी दिशाएं आंधी के कारण धुंधली हो जाती हैं तथा पता नहीं चलता कि यह कौन सी दिशा है. उन अंधकार से ढकी हुई दिशाओं को मेरे अनुकूल करते हुए कल्याण करने वाली बनाओ. (६)

स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु (७)

हमारा कल्याण हो तथा हमारा भय दूर हो. दिन और रात के लिए हमारा नमस्कार हो. (७)

सूक्त नौवां — देवता—मंत्र में बताए हुए

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्व१न्तरिक्षम्.
शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः (१)

अपने कारण से उत्पन्न दोषों को शांत करता हुआ द्युलोक हमें सुख प्रदान करे. विशाल अंतरिक्ष और पृथ्वी हमें सुख प्रदान करें. सागरों के जल तथा ओषधियां हमें सुख देने वाले हों. (१)

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम्.
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः (२)

कार्य से पहले होने वाले कारण मेरे लिए शांत हों. मेरे द्वारा किए गए और न किए गए दुष्कर्म मुझे शांति प्रदान करने वाले हों. भूतकाल के कार्य और भविष्यत काल के कार्य मेरे लिए शांतिप्रद हों. भूत, भविष्यत् और वर्तमान कालों से संबंधित सभी कार्य मेरे लिए शांति देने वाले हों. (२)

इदं या परमेष्ठिनी वाग् देवी ब्रह्मसंशिता.
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः (३)

उत्तम स्थान में रहने वाली अथवा ब्रह्मा की पत्नी, मंत्रों के द्वारा भलीभांति

उत्तेजित एवं विद्वानों के द्वारा स्वयं अनुभव की गई जो वाग्देवी अथवा सरस्वती है, वे शाप देने आदि में भी उच्चारण की जाती हैं—ये हमारे लिए शांति देने वाली हों. (३)

इदं यत परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम्.
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः (४)

परमेष्ठी ने सृष्टि के आदि में मन की रचना की, जो संसार का मूल कारण है. ऐसा ब्रह्म ने कहा है. जिस मन के द्वारा कर्म किया जाता है, उसी मन के द्वारा हमें शांति प्राप्त हो. (४)

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनःषष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि.
यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः (५)

जो पांच ज्ञानेंद्रियां, (आंख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा) हैं, इन के अतिरिक्त मन छठी ज्ञानेंद्रिय है. ये मेरे हृदय में स्थित हैं और चेतन आत्मा इन पर नियंत्रण करता है. इन्हीं के द्वारा घोर कर्म किया जाता है. इन्हीं के द्वारा हमें शांति प्राप्त हो. (५)

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः.
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्यमा (६)

मित्र अर्थात सूर्य, वरुण, विष्णु, प्रजापति, इंद्र, बृहस्पति और अर्यमा हमें शांति प्रदान करने वाले हों. (६)

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वाञ्छमन्तकः.
उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः (७)

मित्र, वरुण, सूर्य तथा अंतक हमें शांति प्रदान करें. पृथ्वी और अंतरिक्ष में होने वाले उत्पात एवं द्युलोक में संचरण करने वाले गृह हमें शांति प्रदान करें. (७)

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत्.
शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यतीः (८)

प्राणियों का संहार करने वाले काल के कारण कांपती हुई पृथ्वी हमारे कंपन रूपी दोष को दूर करने वाली बने. ज्वाला के रूप में गिरने वाली उल्काओं के स्थान हमें शांति प्रदान करें. दूध के स्थान पर रक्त देने वाली गाएं तथा फटती हुई धरती हमें शांति प्रदान करे. (८)

नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः.
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शमु नो भवन्तु (९)

आकाश से गिरती हुई उल्काओं से अपने स्थान से पतित होने वाले नक्षत्र हमें शांति प्रदान करें. शत्रुओं द्वारा हमें मारने के निमित्त किए गए अभिचार कर्म (जादू टोने, टोटके) तथा पिशाचियां हमारे उपद्रवों को शांत करने वाली हों. भूमि खोद कर तथा हड्डी, केश आदि लपेट कर बनाई गई विष पुत्तलिकाएं हमें शांति देने वाली हों. आकाश से गिरने वाली उल्काएं देखने से जो अनिष्ट होता है, उसे उल्काएं ही शांत करें. राष्ट्र में होने वाले विघ्न भी शांत हों. (९)

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा.
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः (१०)

चंद्र मंडल भेदक मंगल आदि ग्रह हमें शांति प्रदान करें. राहु के द्वारा ग्रसित सूर्य हमारी शक्ति का निमित्त बने. मारक धूमकेतु हमें शांति देने वाला हो. तीक्ष्ण तेज वाले रुद्र हमें शांति देने वाले हों. (१०)

शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्नयः.
शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः (११)

रुद्र, वायु, आदित्य और अग्निदेव हमारे लिए शांति के कारण बनें. अतिमान तेज वाले सात महर्षि, इंद्र आदि देव और देवों के पुरोहित बृहस्पति हमारी शांति के कारण बनें. (११)

ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयोऽग्नयः.
तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु.
विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु (१२)

सच्चिदानंद लक्षण वाला ब्रह्म, प्रजापति, चार मुखों वाले ब्रह्मा, सात लोक, अंगों सहित चार वेद, सात ऋषि तथा तीन अग्नियां मुझे शांति देने वाली हों. इन सब ने मुझे स्वस्त्य यमन अर्थात शांति प्रदान की है. इंद्र और ब्रह्मा मुझे सुख प्रदान करें. विश्वेदेव मुझे सुख प्रदान करें तथा विश्वेदेव मुझे सुख प्रदान करें. (१२)

यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः.
सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु (१३)

सप्त ऋषि लोक में जिन शक्तियों को जानते थे, वे सब मुझे सुख देने वाली हों, मुझे सुख प्राप्त हो तथा मुझे सभी से अभय मिले. (१३)

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः.
ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं यदिह
पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः (१४)

पृथ्वी, अंतरिक्ष, द्युलोक, जल, ओषधियां, वनस्पतियां तथा सभी देव हमारी

अपेक्षा अधिक शक्ति प्राप्त करें. सभी प्रकार की इस शांति प्रक्रिया में यहां जो भयानक और निर्दय फल है, उसे हम दूर करते हैं. ये सभी शांत बन कर हमें कल्याण प्रदान करें. (१४)

सूक्त दसवां

देवता—मंत्र में बताए हुए

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातह.
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वा (१)

हे इंद्र और अग्नि! तुम अपनी रक्षा बुद्धि के द्वारा हमारे सकल दुखों को दूर करने वाले बनो. यजमानों के द्वारा हवि दिए गए इंद्र और वरुण हमारे दुखों को दूर करें. इंद्र और सोम हमें सुख देने के लिए हमारा दुख निवारण करें. इंद्र और पूषा देव भयंकर युद्ध में हमारे दुखों, भयों एवं रोगों का शमन करें. (१)

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः.
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु (२)

भग और नराशंस देवता हमारा कल्याण करने वाले हों. हमारी बुद्धि और हमारा धन हमें सुख देने वाले हों. शोभन संयम से युक्त सत्य वचन हमारे दुख निवारण और सुख देने के हेतु बनें. सब से आरंभ में उत्पन्न अर्यमा देव हमें सुख दें. (२)

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः.
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु (३)

सब का निर्माण करने वाले ब्रह्मा तथा वरुण देव हमें सुख देने वाले हों. पृथ्वी अन्नों के साथ हमारे दुखों का निवारण कर के सुख देने वाली बने. धाता, पृथ्वी एवं पर्वत हमें सुख प्रदान करें. देवताओं की स्तुतियां हमारा कल्याण करें. (३)

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्.
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः (४)

जिस के मुख में ज्योति है, ऐसी अग्नि हमें सुख देने वाले हों. मित्र, वरुण और अश्विनीकुमार हमारे सुख के कारण बनें. पुण्य कर्म करने वालों के उत्तम कर्म हमें सुख प्रदान करें. गमनशील वायु हमारे सुख के उद्देश्य से चले. (४)

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु.
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः (५)

देवों के द्वारा सब से पहले स्तुति किए गए द्यावा और पृथ्वी हमारा कल्याण करने वाले हों. अंतरिक्ष अर्थात मध्यम लोक हमारी दृष्टि को सुख देने वाला हो. ओषधियां अर्थात जड़ीबूटियां तथा वनों के वृक्ष हमारा कल्याण करें. लोकों के पालनकर्ता एवं जयशील इंद्र हमें सुख प्रदान करें. (५)

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुण: सुशंस:.
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाष: शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु (६)

वसु नाम के देवों के साथ इंद्र हमें सुख प्रदान करें. शोभन स्तुतियों वाले वरुण आदित्य देवों के साथ हमारा कल्याण करें. सुखकारी रुद्र रुद्रों के साथ हमें सुख दें. त्वष्टा देव सभी देव पत्नियों के साथ इस यज्ञ में हमें सुख प्रदान करने वाले बनें. (६)

शं न: सोमो भवतु ब्रह्म शं न: शं नो ग्रावाण: शमु सन्तु यज्ञा:.
शं न: स्वरूणां मितयो भवन्तु शं न: प्रस्व१: शम्वस्तु वेदि: (७)

निचोड़े गए सोम, स्तोत्रों तथा शंसों वाले मंत्र, सोमलता कुचलने के साधन पत्थर तथा यज्ञ हमारा कल्याण करें. यूपों के समूह हमें सुख दें. चरु और पुरोडाश बनाने में काम आने वाली तथा अधिकता से उत्पन्न होने वाली ओषधियां अर्थात जड़ीबूटियां हमारा कल्याण करें. यज्ञ की वेदि हमें सुख प्रदान करे. (७)

शं न: सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नो भवन्तु प्रदिशश्चतस्र:.
शं न: पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं न: सिन्धव: शमु सन्त्वाप: (८)

फैले हुए तेज वाले सूर्य हमें सुख देने के लिए उदय हों. चारों दिशाएं, स्थिर रहने वाले पर्वत, नदियां और जल हमारा कल्याण करने वाले हों. (८)

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभि: शं नो भवन्तु मरुत: स्वर्का:.
शं नो विष्णु: शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायु: (९)

देवमाता अदिति व्रतों के साथ हमें सुख देने वाली हों. उत्तम स्तुतियों वाले मरुत हमारा कल्याण करें. विष्णु, पूषा, अंतरिक्ष अथवा जल हमें सुख देने वाले हों. वायु हमारा कल्याण करते हुए चलें. (९)

शं नो देव: सविता त्रायमाण: शं नो भवन्तूषसो विभाती:.
शं न: पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्य: शं न: क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभु: (१०)

भयों से रक्षा करते हुए सविता देव हमारे सुख के कारण बनें. सुंदर प्रतीत होती हुई उषाएं हमारा कल्याण करें. वृष्टि करने वाले बादल हमारी प्रजाओं अर्थात पुत्रों और सेवकों को सुख देने वाले हों. क्षेत्र के स्वामी शंभु हमारा कल्याण करें. (१०)

सूक्त ग्यारहवां — देवता—मंत्र में कहे गए

शं न: सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्त: शमु सन्तु गाव:.
शं न ऋभव: सुकृत: सुहस्ता: शं नो भवन्तु पितरो हवेषु (१)

सत्य का पालन करने वाले देव हमारी शांति के कारण बनें. घोड़े और गाएं हमें शांति देने वाले हों. उत्तम कर्म करने वाले तथा शोभन हाथों वाले देव हमें सुख

हैं. पितर हमारे स्तोत्रों अथवा मंत्रों को सुन कर सुख देने वाले हों. (१)

शं नः देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु.
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः (२)

विश्वेदेव एवं इंद्र आदि देव हमें शांति प्रदान करें. हमारी स्तुतियों के साथ सरस्वती हमें सुख देने वाली हों. यज्ञ में चारों ओर से आने वाले एवं दान के हेतु एकत्र होने वाले देवता हमें शांति दें. देव, पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले मनुष्य, पशु आदि तथा आकाश में उड़ने वाले पक्षी हमें सुख दें. (२)

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शमहिर्बुध्न्य१: शं समुद्रः.
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा (३)

जन्म न लेने वाले तथा स्थावर जंगम रूप एक चरण वाले एकपाद देव हमें शांति प्रदान करें. अहिर्बुध्न्य नाम के देव एवं सागर हमें सुख दें. अपानपात नाम के देव हमें शांति प्रदान करें तथा दुखों से पार करने वाले हों. देव जिस की रक्षा करते हैं, ऐसी पृश्नि हमारी रक्षा करे. (३)

आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तामिदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः.
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः (४)

अदिति के पुत्र देव, रुद्र एवं वसु हमारे किए गए इस नवीन स्तोत्र को स्वीकार करें. दिव्य पार्थिव अर्थात पृथ्वी पर उत्पन्न मनुष्य पशु, वृक्ष आदि, पृश्नि से उत्पन्न मरुत नाम के देव तथा यज्ञ के योग्य देव हमारी रक्षा करें. (४)

ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः.
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः (५)

देवताओं के ऋत्विज, यज्ञकर्ता, मनु के पुत्र अर्थात मनुष्य, अमृतत्व को प्राप्त तथा सत्यनिष्ठ देवता हैं, वे आज हमें अधिक यज्ञ प्रदान करें. हे देवताओ! तुम कल्याणकारी रक्षा साधनों से सदा हमारी रक्षा करो. (५)

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्.
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय (६)

हे मित्र और वरुण! हमें कहा जाता हुआ फल प्राप्त हो. भयों एवं रोगों से रक्षा करने वाला प्रशंसनीय फल हमें प्राप्त हो. हम धन लाभ और प्रतिष्ठा का अनुभव करें. विशाल एवं सभी देवों के निवासस्थान द्युलोक को नमस्कार है. (६)

L152

सूक्त बारहवां — देवता—उमा

उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता.

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः (१)

उषा आते ही अपनी बहन रात्रि के अंधकार को दूर कर देती है. इस के पश्चात उषा लौकिक और वैदिक मार्ग को पूर्ण रूप से खोलती है. इस उषा के द्वारा हम देवों द्वारा भली प्रकार दिए हुए एवं हितकारी अन्न को प्राप्त करें. कर्म करने में कुशल पुत्र एवं पौत्र वाले हम सौ वर्षों तक प्रसन्न हों. (१)

सूक्त तेरहवां

देवता—इंद्र

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ वृषाणौ चित्रा इमा वृषभौ पारयिष्णू.
तौ योक्षे प्रथमो योग आगते याभ्यां जितमसुराणां स्व१र्यत् (१)

इंद्र की भुजाएं देवों से बैर करने वाले राक्षसों पर विजय प्राप्त करने वाली, स्थूल तथा अभिमत फल देने वाली हैं. मैं अपने कल्याण के लिए इन भुजाओं का पूजन करता हूं. ये भुजाएं सब के द्वारा प्रशंसनीय, सांड़ों के समान सबल तथा शत्रुओं का हनन करने में समर्थ हैं. परम ऐश्वर्य संपन्न इंद्र की दोनों भुजाएं सभी उपासकों के लिए पूर्व निश्चित है. मैं अप्राप्त की प्राप्ति अर्थात योग और प्राप्त के रक्षण अर्थात क्षेम के लिए इन की पूजा करता हूं. इन भुजाओं ने स्वर्ग के निवासी देवों को बाधा पहुंचाने वाली सेना को पराजित किया है. (१)

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्.
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः (२)

शीघ्रकारी, अपनी इच्छा पूरी करने में संलग्न, सांड़ के समान भयंकर, शत्रुओं के हंता, मनुष्यों को क्षुब्ध करने वाले, युद्ध में शत्रुओं का आह्वान करने वाले, आंखें न झपकाने वाले, बिना किसी सहायक के कार्य पूर्ण करने वाले एवं वीर इंद्र ने शत्रुओं की सौ सेनाओं को एक साथ जीत लिया था. (२)

संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुनाऽयोध्येन दुश्च्यवनेन धृष्णुना.
तदिन्द्रेण जयत तत् सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा (३)

युद्ध में शत्रुओं को रुलाने वाले, निमिषहीन नयनों वाले, जयशील, युद्ध में प्रहार करने वाले, दुख से विचल करने योग्य, शत्रु का वार सहन करने वाले, धनुर्धारी तथा मनचाही वर्षा करने वाले इंद्र की सहायता से हमें विजय प्राप्त हो. हे योद्धाओ! उन्हीं इंद्र की सहायता शत्रु को पराजित करे. (३)

स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन.
संसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्यु१ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता (४)

खड्ग धारण करने वाले एवं बाण धारण करने वाले इंद्र अपने वीर अनुचरों को शत्रुओं के सामने भेजते हैं. इंद्र युद्ध की इच्छा से आने वाले शत्रुओं पर इसी प्रकार विजय प्राप्त करते हैं. सोमपान करने वाले इंद्र शत्रुओं के समूहों को जीतने

वाले, बाहुबल से युक्त, भयंकर धनुष वाले एवं दूसरों के शरीरों पर मारे गए बाणों से उन के संहारक हैं. हे वीरो! तुम इस प्रकार के इंद्र की सहायता से जय प्राप्त करो. (४)

बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः.
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजिज्जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोविदन् (५)

शत्रुओं के बल को जानने वाले, पुरातन, उग्र, बलवान वीरों के स्वामी, पराजित करने की शक्ति वाले, वेगवान, शत्रुओं को अपमानित करने वाले, शत्रुओं की सेना के विजेता एवं दूसरों की गायों को अपनी जानने वाले हे इंद्र! तुम हमारी सहायता के लिए अपने जयशील रथ पर बैठने योग्य हो. (५)

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम्.
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा (६)

हे समान बुद्धि और कर्म वाले योद्धाओ! तुम सब इस शत्रु को पराजित करने में समर्थ, वीर एवं उग्र इंद्र को आगे कर के उत्साह वाले बनो. शत्रु के विनाश के लिए उद्योगशील इंद्र के साथ तुम भी उद्योग करो. इंद्र शत्रुओं के समूह के विजेता, शत्रुओं की गायों के विजेता एवं हाथ में वज्र धारण करने वाले हैं. इंद्र शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले एवं अपनी शक्ति से शत्रुओं की सेनाओं का विनाश करने वाले हैं. (६)

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदाय उग्रः शतमन्युरिन्द्रः.
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयोध्योऽस्माकं सेना अवतु प्रयुत्सु (७)

इंद्र युद्ध क्षेत्र में अपनी शक्ति से शत्रु सेना के सामने से प्रवेश करने वाले, दयाहीन, क्रोध करने वाले एवं प्रचंड पराक्रमी हैं. ये शत्रुओं की सेना को वश में कर लेते हैं. कोई भी इन्हें युद्ध क्षेत्र से भगाने में समर्थ नहीं है. ये शत्रु सेनाओं को पराजित करने वाले हैं. इन से युद्ध करने में कोई भी समर्थ नहीं है. इस प्रकार के इंद्र युद्धों में हमारी सेना की रक्षा करें. (७)

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्रां अपबाधमानः.
प्रभञ्जञ्छत्रून् प्रमृणन्नमित्रानस्माकमेध्यविता तनूनाम् (८)

हे देवों का पालन करने वाले बृहस्पति! तुम रथ में बैठ कर युद्ध में सभी ओर गमन करो. तुम राक्षसों का वध करने वाले एवं शत्रुओं को बाधा पहुंचाने वाले हो. तुम शत्रुओं को सभी ओर से नष्ट करते हुए एवं उन की हिंसा करते हुए हमारे शरीरों के रक्षक बनो. (८)

इन्द्र एषां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः.
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्तु मध्ये (९)

हमारे शत्रुओं को सामने से नष्ट करने के लिए विजय प्राप्त करने वाली देव सेनाओं के इंद्र नेता हैं. बृहस्पति इन देव सेनाओं की दक्षिण दिशा में चलें. यज्ञ और सोम इन के आगे चलें तथा मरुद्गण इन सेनाओं के मध्य भाग में गमन करें. (९)

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्.
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् (१०)

कामनाओं को पूर्ण करने वाले अथवा निरंतर शस्त्रों की वर्षा करने वाले इंद्र, शत्रुओं को युद्ध भूमि से भगाने वाले वरुण, मरुद्गण तथा आदित्य शत्रुओं को वश में करने वाली शक्ति सहित प्रकट हों. आदित्य शत्रुओं को इस लोक से भी दूर भगाने में समर्थ हैं. वे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें सभी देवों की जयध्वनि उठे. (१०)

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु.
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मान् देवासोऽवता हवेषु (११)

ध्वजाओं वाले संग्रामों के प्राप्त होने पर इंद्र हमारे रक्षक हों. हमारे बाण शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें. हमारे वीर उत्तर दिशा में अथवा उत्तम स्थिति में हों. हे देवो! आप सब भी संग्रामों में हमारी रक्षा करो. (११)

सूक्त चौदहवां देवता—द्यावा पृथ्वी

इदमुच्छ्रेयोऽवसानमागां शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम्.
असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अभयं (१)

मैं ने श्रेष्ठ फल के रूप में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है. द्यावा और पृथ्वी मुझे उत्तम फल देने वाले हों. पूर्व आदि उत्तम दिशाएं मेरे लिए शत्रु रहित हों. हे विरोधी! मैं तुझ से द्वेष न करूं, इसलिए मुझे अभय प्राप्त हो. (१)

सूक्त पंद्रहवां देवता—इंद्र एवं मंत्र में कहे गए

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि.
मघवञ्छग्धि तव त्वं न ऊतिभिर्वि द्विषो वि मृधो जहि (१)

हे अभय करने वाले इंद्र! हम भयभीत हैं. इसलिए हमारे भय के कारण उपद्रव को समाप्त कर के हमें भय रहित बनाइए. हे धनवान इंद्र! तुम अपने रक्षा साधनों से हमारी रक्षा करने के लिए समर्थ बनो. तुम हमारे शत्रुओं को नष्ट करो तथा हमारे शत्रु संबंधी संग्रामों में हमें विजयी बनाओ. (१)

इन्द्रं वयमनूराधं हवामहेऽनु राध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा.
मा नः सेना अररुषीरुप गुर्विषूचीरिन्द्र द्रुहो वि नाशय (२)

सब अपनेअपने कार्यों की सिद्धि के लिए इंद्र से ही प्रार्थना करते हैं. हम क्रम के अनुसार पूजनीय इंद्र का आह्वान करते हैं. इंद्र की कृपा से हम दो पैरों वाले

सेवकों तथा चार पैरों वाले पशुओं से संपन्न बनें. हमारे मन चाहे फल में बाधा डालने वाली शत्रुसेनाएं हमारे सामने न आएं. हे इंद्र! सब स्थानों पर फैली हुई शत्रु सेनाओं का नाश करो. (२)

इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा परस्फानो वरेण्यः.
स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्चात् स पुरस्तान्नो अस्तु (३)

वृत्र असुर का अथवा जल रोकने वाले मेघ का वध करने वाले इंद्र हमारे रक्षक हों. वरण करने योग्य इंद्र शत्रुओं से हमारी रक्षा करने वाले हैं. वे ही इंद्र अंत में, मध्य में, पीछे और आगे हमारी रक्षा करने वाले हों. (३)

उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्त्स्व१र्यज्ज्योतिरभयं स्वस्ति.
उग्रा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप क्षयेम शरणा बृहन्ता (४)

हे इंद्र! तुम सब कुछ जानते हो. तुम हमें इहलोक और विस्तृत स्वर्गलोक का सुख प्राप्त कराओ. स्वर्ग को व्याप्त करने वाला प्रकाश हमें भय रहित कर के सुख प्रदान करे. हे इंद्र! तुम महान हो. शत्रुओं का संहार करने में समर्थ, शत्रुओं से रक्षा करने वाली एवं विशाल आपकी भुजाओं की हम शरण में जाते हैं. (४)

अभयं नः करत्यनरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे.
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु (५)

अंतरिक्ष अर्थात मध्यम लोक हमें अभय प्रदान करे. ये दोनों द्यावा और पृथ्वी हमें अभय प्रदान करें. पीछे से, आगे से, ऊपर से तथा नीचे से हमें अभय प्राप्त हो. (५)

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः.
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु (६)

हमें मित्रों से तथा शत्रुओं से अभय प्राप्त हो. हम प्रत्यक्ष और परोक्ष जनों से भयभीत न हों. दिन में और रात में हमें अभय प्राप्त हो. सभी दिशाएं मेरे लिए मित्र के समान हित करने वाली हों. (६)

सूक्त सोलहवां — देवता—मंत्र में कहे गए

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम्.
सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः (१)

हे सब के प्रेरक सविता देव! पूर्व दिशा में हमें शत्रु रहित बनाओ तथा पश्चिम दिशा को भी हमारे शत्रुओं से शून्य कर दो. सविता देव उत्तर दिशा में तथा शची के पति इंद्र दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें. (१)

दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः. इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विना-

वभितः शर्म यच्छताम्. तिरश्चीनघ्न्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म (२)

आदित्य अर्थात अदिति के पुत्र सभी देव द्युलोक में मेरी रक्षा करें. भूमि संबंधी उपद्रवों से तीन अग्नियां मेरी रक्षा करें. इंद्र और अग्नि पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें. सूर्य के पुत्र एवं देवों के वैद्य अश्विनीकुमार सभी ओर से मुझे सुख प्रदान करें. जातवेद अग्नि सभी दिशाओं में मेरी रक्षा करें. भूतों और पिशाचों की रक्षा करने वाले देव सभी ओर से हमारी रक्षा करें. (२)

सूक्त सत्रहवां — देवता—मंत्र में कहे गए

अग्निर्मा पातु वसुभिः पुरस्तात् तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि.
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (१)

पृथ्वी स्थानीय देव अग्नि वसु नाम वाले देवों के साथ पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें. वे पैर रखने की क्रिया में और पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा करें, जहां मैं जाऊं एवं वे मेरा हित साधन करें. मैं सभी प्रकार से रक्षक अग्नि के प्रति समर्पण करता हूं. यह हवि अग्नि को प्राप्त हो. (१)

वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये क्रमे तां पुरं प्रैमि.
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (२)

अंतरिक्ष के स्थायी देवता वायु अंतरिक्ष में एवं पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें. वे पैर रखने की क्रिया में और पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा करें, जहां मैं जाऊं एवं वे मेरा हित साधन करें. मैं वायु के प्रति आत्म समर्पण करता हूं. यह हवि वायु को प्राप्त हो. (२)

सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि.
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (३)

सोम देवता रुद्र नाम के देवों के साथ मिल कर दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें. वे पैर रखने की क्रिया में एवं पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा करें, जहां मैं जाऊं. वे मेरा हित साधन करें. मैं सोम के प्रति आत्म समर्पण करता हूं. यह हवि सोम को प्राप्त हो. (३)

वरुणो मादित्यैः रेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि.
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (४)

वरुण आदित्यों के साथ मिल कर दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें. वे पैर रखने की क्रिया में एवं पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा करें एवं मेरा हित साधन करें, जहां मैं जाऊं. मैं वरुण के प्रति आत्म समर्पण करता हूं. यह हवि वरुण को प्राप्त हो. (४)

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये
तां पुरं प्रैमि. स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (५)

सूर्य देवता द्यावा और पृथ्वी के साथ पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें. वे पैर रखने की क्रिया में एवं पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा एवं मेरा हित साधन करें, जहां मैं जाऊं. मैं सूर्य देव के प्रति आत्म समर्पण करता हूं. यह हवि सूर्य को प्राप्त हो. (५)

आपो मौषधीमतीरेतस्या दिशः पान्तु क्रमे तासु श्रये तां पुरं प्रैमि.
स मा रक्षतु सन्तु मा गोपायता तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (६)

जल ओषधियों अर्थात जड़ीबूटियों वाली पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें. वे मेरी पैर रखने की क्रिया में एवं पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा एवं मेरा हित साधन करें, जहां मैं जाऊं. मैं वायु देव के प्रति आत्म समर्पण करता हूं. यह हवि जल को प्राप्त हो. (६)

विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिरुदीच्याशः दिश पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं
प्रैमि. स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (७)

विश्वकर्मा सप्त ऋषियों के साथ उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें. वे मेरी पैर रखने की क्रिया में एवं स्थान में मेरी रक्षा करे. वे उस नगर में मेरी रक्षा और हित साधन करें, जहां मैं जाऊं. मैं विश्वकर्मा के प्रति आत्मसमर्पण करता हूं. यह हवि विश्वकर्मा को प्राप्त हो. (७)

इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये तां पुरं प्रैमि.
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (८)

मरुतों से युक्त इंद्र उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें. वे मेरी पैर रखने की क्रिया में एवं पैर रखने के स्थान पर मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा और मेरा हित साधन करें, जहां मैं जाऊं. मैं इंद्र के प्रति आत्मसमर्पण करता हूं. यह हवि इंद्र को प्राप्त हो. (८)

प्रजापतिर्मा प्रजननवान्त्सह प्रतिष्ठाया ध्रुवाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये
तां पुरं प्रैमि. स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (९)

सर्व जगत को उत्पन्न करने के साधन वाले प्रजापति प्रतिष्ठा के साथ भूमि की दिशा में मेरी रक्षा करें. वे मेरी पैर रखने की क्रिया में एवं पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करें. वे उस नगर में मेरी रक्षा और मेरा हित साधन करें, जहां मैं जाऊं. मैं प्रजापति के प्रति आत्मसमर्पण करता हूं. यह हवि प्रजापति को प्राप्त हो. (९)

बृहस्पतिर्मा विश्वैर्देवैरूर्ध्वाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिञ्छ्रये
तां पुरं प्रैमि. स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा (१०)

बृहस्पति विश्वेदेवों के साथ ऊपर की दिशा में मेरी रक्षा करें. वे मेरी पैर रखने की क्रिया में तथा पैर रखने के स्थान में मेरी रक्षा करे. वे उस नगर में मेरी रक्षा और मेरा हित साधन करें, जहां मैं जाऊं. मैं बृहस्पति के प्रति आत्मसमर्पण करता हूं. यह आहुति बृहस्पति के लिए हो. (१०)

सूक्त अठारहवां   देवता—मंत्र में कहे गए

अग्नि ते वसुवन्तमृच्छन्तु. ये माघायवः प्राच्या दिशो ऽभिदासात् (१)

जो मेरी हिंसा रूपी पाप की इच्छा करते हैं, वे पूर्व दिशा से आ कर रात्रि की पूजा करने वाले मुझे किसी प्रकार हिंसित न करें. वे शत्रु अपने विनाश के लिए वसु नामक देवों वाली अग्नि के पास जाएं. (१)

वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु. ये माघायव एतस्या दिशो ऽभिदासात् (२)

दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक जो शत्रु पूर्व दिशा से आ कर रात्रि की पूजा करने वाले मेरी हिंसा करें, वे शत्रु अपने विनाश के लिए अंतरिक्ष अधिष्ठान वाली वायु को प्राप्त हों. (२)

सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु. ये माघायवो दक्षिणाया दिशो ऽभिदासात् (३)

दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक जो शत्रु दक्षिण दिशा से आ कर रात्रि की पूजा करने वाले मेरी हिंसा करें, वे शत्रु अपने विनाश के लिए रुद्रों का सहयोग प्राप्त करने वाले सोम को प्राप्त हों. (३)

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु. ये माघायव एतस्या दिशो ऽभिदासात् (४)

जो दूसरों की हिंसा करने की इच्छा वाले शत्रु हैं, वे दक्षिण दिशा में आ कर रात्रि की पूजा करने वाले मेरी हिंसा करें. वे अपने विनाश के लिए आदित्यों का सहयोग प्राप्त करने वाले वरुण को प्राप्त हों. (४)

सूर्यं ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु. ये माघायव प्रतीच्या दिशो ऽभिदासात् (५)

दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक जो शत्रु हैं, वे पश्चिम दिशा से आ कर रात्रि की पूजा करने वाले मेरी हिंसा करें, वे अपने विनाश के लिए द्यावा पृथ्वी का सहयोग प्राप्त करने वाले सूर्य को प्राप्त हों. (५)

अपस्त ओषधीमतीर्ऋच्छन्तु . ये माघायव एतस्या दिशो ऽभिदासात् (६)

दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक जो शत्रु हैं, वे पश्चिम दिशा से आ कर रात्रि की उपासना करने वाले मेरी हिंसा करें, वे अपने विनाश की ओषधियों अर्थात जड़ीबूटियों का सहयोग प्राप्त करने वाले जलों को प्राप्त हों. (६)

विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु.

ये माघायव उदीच्या दिशो ऽभिदासात् (७)

दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक जो शत्रु हैं, वे उत्तर दिशा से आ कर रात्रि की अर्चना करने वाले मेरी हिंसा करें, वे सप्त ऋषियों का सहयोग प्राप्त करने वाले विश्वकर्मा को अपने विनाश के हेतु प्राप्त हों. (७)

इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु. ये माघायव एतस्या दिशो ऽभिदासात् (८)

दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक जो शत्रु उत्तर दिशा से आ कर रात्रि की अर्चना करने वाले मेरी हिंसा करें, वे मरुतों का सहयोग प्राप्त करने वाले इंद्र को अपने विनाश के लिए प्राप्त हों. (८)

प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु. ये माघायवा ध्रुवाया दिशो ऽभिदासात् (९)

दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक जो शत्रु पृथ्वी की दिशा से आ कर रात्रि की अर्चना करने वालो मेरी हिंसा करे, वे अपने विनाश के लिए प्रजनन में समर्थ प्रजापति को प्राप्त हों. (९)

बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु.
ये माघायव ऊर्ध्वाया दिशो ऽभिदासात् (१०)

दूसरों की हिंसा के इच्छुक जो शत्रु ऊपर की दिशा से आ कर मुझ रात्रि की अर्चना करने वाले की हिंसा करें, वे अपने विनाश के लिए विश्वेदेवों से युक्त बृहस्पति को प्राप्त हों. (१०)

सूक्त उन्नीसवां देवता—मंत्र में कहे गए

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (१)

मित्र नाम वाले अग्नि जिस पुर की रक्षा के लिए पृथ्वी से उठते हैं, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं. वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (१)

वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (२)

वायु अंतरिक्ष अर्थात मध्यम लोक से जिस पुर की रक्षा के लिए अंतरिक्ष से उठते हैं, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं. वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (२)

सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (३)

सूर्य द्युलोक अर्थात अपने निवास स्थान से जिस पुर की रक्षा के लिए उठते हैं.

उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा सहित प्रवेश कराता हूं, वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (३)

चन्द्रमा नक्षत्रैरुद क्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (४)

चंद्रमा नक्षत्रों के साथ जिस पुर की रक्षा के लिए उदय होता है, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं. वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (४)

सोम ओषधीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (५)

सोम ओषधियां अर्थात जड़ीबूटियों के साथ जिस पुर की रक्षा के लिए प्रकट होते हैं, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं, वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (५)

यज्ञो दक्षिणाभिरुद्क्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (६)

यज्ञ दक्षिणा के साथ जिस पुर की रक्षा के लिए प्रकट हुआ है, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं. वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (६)

समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (७)

सागर नदियों के साथ जिस पुर की रक्षा के लिए उद्यत हुआ है, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं, वह पुर तुम्हें सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (७)

ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (८)

वे ब्रह्म अर्थात वेद ब्रह्मचारियों सहित जिस पुर की रक्षा के लिए प्रकट हुए हैं, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं. वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (८)

इन्द्रो वीर्येऽणोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (९)

इंद्र अपने शक्तिशाली बाहुओं के द्वारा जिस पुर की रक्षा को उद्यत होते हैं,

उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं, वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (९)

देवा अमृतेनोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (१०)

सभी देव अमृत के साथ जिस पुर की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा के साथ प्रवेश कराता हूं, वह पुर तुम को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (१०)

प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः.
तामा विशत तं प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु (११)

प्रजापति ने मनुष्य आदि के साथ जिस पुर की रक्षा की है, उस शैया युक्त पुर में मैं तुझ राजा को पत्नी और प्रजा सहित प्रवेश कराता हूं, वह पुर तुझ को सुख और कवच अर्थात रक्षा प्रदान करे. (११)

सूक्त बीसवां — देवता—मंत्र में कहे गए

अप न्यधुः पौरुषेयं वधं यमिन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः.
सोमो राजा वरुणो अश्विना यमः पूषास्मान् परि पातु मृत्योः (१)

शत्रु पुरुषों द्वारा गुप्त रूप से हमारे विरुद्ध जो मृत्यु साधन किया गया है, उस में इंद्र, अग्नि, धाता, सविता, बृहस्पति, सोम, वरुण, अश्विनीकुमार, यम और पूषा हमारे कवचधारी राजा की रक्षा करें. (१)

यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः.
प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्माण बहुलानि सन्तु (२)

सभी प्राणियों के पालनकर्ता प्रजापति ने मनुष्य, पशु आदि प्रजाओं की रक्षा के लिए जो कवच बनाए हैं तथा सभी दिशाएं, प्रदिशाएं तथा अवंतर दिशाएं जिन कवचों को रक्षा के लिए धारण करती हैं, वे कवच मुझ युद्ध करने के इच्छुक के लिए अधिक संख्या में प्राप्त हों. (२)

यत् ते तनूष्वनह्यन्त देवा द्युराजयो देहिनः.
इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदस्मान् पातु विश्वतः (३)

स्वर्गलोक में विराजमान शरीरधारी देवों ने असुरों से युद्ध करते समय अपने शरीर की रक्षा के लिए जिन कवचों को धारण किया था, इंद्र ने भी जिस कवच को पहना था, वह कवच युद्ध करने के लिए उद्यत हमारी सभी ओर से रक्षा करे. (३)

वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः.
वर्म मे विश्वे देवाः क्रन् मा मा प्रापत् प्रतीचिका (४)

द्यावा पृथ्वी, अग्नि एवं सूर्य मुझ युद्ध करने के इच्छुक को रक्षा करने वाला कवच प्रदान करे. हमारे अथवा हमारे राजा के समीप शत्रु सेना गुप्त रूप से न पहुंच सके. (४)

सूक्त इक्कीसवां देवता—इंद्र

गायत्र्युश्ष्णिुगनुष्टुब् बृहती पङ्क्तिस्त्रिष्टुब् जगत्यै (१)

गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप तथा जगती नाम के छंदों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१)

सूक्त बाईसवां देवता—मंत्र में कहे गए

आङ्गिरसानामाद्यैः पञ्चानुवाकैः स्वाहा (१)

आंगिरसों अर्थात अंगिरा गोत्र वाले ऋषियों के लिए आरंभ के पांच अनुवाकों के द्वारा यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१)

षष्ठाय स्वाहा (२)

षष्ठ अर्थात छठे के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२)

सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा (३)

सातवें और आठवें के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (३)

नीलनखेभ्यः स्वाहा (४)

नीले नाखून वालों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (४)

हरितेभ्यः स्वाहा (५)

हरित नाम के ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (५)

क्षुद्रेभ्यः स्वाहा (६)

क्षुद्रों अर्थात तुच्छ व्यक्तियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (६)

पर्यायिकेभ्यः स्वाहा (७)

पर्यायिकों अर्थात पर्यायिक नाम वाले ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (७)

प्रथमेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा (८)

प्रथम शंख नाम के ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (८)

द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा (९)

द्वितीय शंख नाम के ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (९)

तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा (१०)

तीसरे शंख नाम के ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१०)

उपोत्तमेभ्यः स्वाहा (११)

उपोत्तम अर्थात उत्तमों के समीपवर्ती ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (११)

उत्तमेभ्यः स्वाहा (१२)

उत्तम ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१२)

उत्तरेभ्यः स्वाहा (१३)

उत्तरवर्ती अर्थात बाद में होने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१३)

ऋषिभ्यः स्वाहा (१४)

ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१४)

शिखिभ्यः स्वाहा (१५)

शिखि नाम के ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१५)

गणेभ्यः स्वाहा (१६)

गणों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१६)

महागणेभ्यः स्वाहा (१७)

महागणों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१७)

सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा (१८)

सभी विद्वान अंगिरा गणों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१८)

पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा (१९)

पृथक् और सहस्र ऋषियों के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१९)

ब्रह्मणे स्वाहा (२०)

ब्रह्मा के लिए यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२०)

ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान.

भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं क: (२१)

ब्रह्मा जिन ऋषियों में ज्येष्ठ अर्थात बड़े हैं, उन ऋषियों ने जो वीर कर्म किए, वे ही सब से श्रेष्ठ हैं, इस दृष्टि से सृष्टि के आदि में ज्येष्ठ ब्रह्म ने द्युलोक का विस्तार किया. ब्रह्मा सभी प्राणियों से पहले उत्पन्न हुए. उन ब्रह्मा से स्पर्धा करने के लिए कौन देव अथवा मनुष्य समर्थ है. (२१)

सूक्त तेईसवां — देवता—मंत्र में कहे गए

आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्य: स्वाहा (१)

आथर्वणों की पांच ऋचाओं को अर्थात इन ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१)

पञ्चर्चेभ्य: स्वाहा (२)

पांच ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२)

षड्ऋचेभ्य: स्वाहा (३)

छ: ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (३)

सप्तर्चेभ्य: स्वाहा (४)

सात ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (४)

अष्टर्चेभ्य: स्वाहा (५)

आठ ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (५)

नवर्चेभ्य: स्वाहा (६)

नौ ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (६)

दशर्चेभ्य: स्वाहा (७)

दस ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (७)

एकादशर्चेभ्य: स्वाहा (८)

ग्यारह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (८)

द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा (९)

बारह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (९)

त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा (१०)

तेरह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१०)

चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा (११)

चौदह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (११)

पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा (१२)

पंद्रह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१२)

षोडशर्चेभ्यः स्वाहा (१३)

सोलह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१३)

सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा (१४)

सत्रह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१४)

अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा (१५)

अठारह ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१५)

एकोनविंशतिः स्वाहा (१६)

उन्नीस ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१६)

विंशतिः स्वाहा (१७)

बीस ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति

प्राप्त हो. (१७)

महत्काण्डाय स्वाहा (१८)

बीस कांड वाले अर्थात बीस कांडों की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१८)

तृचेभ्यः स्वाहा (१९)

तीन ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (१९)

एकर्चेभ्यः स्वाहा (२०)

एक ऋचा की रचना करने वाले ऋषियों की यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२०)

क्षुद्रेभ्यः स्वाहा (२१)

यजुर्वेद के मंत्रों की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२१)

एकानृचेभ्यः स्वाहा (२२)

आधी ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२२)

रोहितेभ्यः स्वाहा (२३)

रोहित आदि कांडों की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२३)

सूर्याभ्यां स्वाहा (२४)

सूर्या नाम की दो ऋषि पत्नियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२४)

व्रात्याभ्यां स्वाहा (२५)

व्रात्य नाम के दोनों ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२५)

प्राजापत्याभ्यां स्वाहा (२६)

प्रजापति के पुत्र दो ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२६)

विपासह्यै स्वाहा (२७)

सत्रह कांडों की रचना करने वाले ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२७)

मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा (२८)

मांगलिक नाम के ऋषियों को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२८)

ब्रह्मणे स्वाहा (२९)

ब्रह्मा को यह आहुति भलीभांति प्राप्त हो. (२९)

ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान.
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः (३०)

ब्रह्मा जिन ऋषियों में ज्येष्ठ अर्थात बड़े हैं. उन ऋषियों ने जो वीर कर्म किए. सब में यही श्रेष्ठ है, इस दृष्टि से सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने द्युलोक अर्थात स्वर्ग का विस्तार किया. ब्रह्मा सभी प्राणियों से पहले उत्पन्न हुए. उन ब्रह्मा से कौन देव तथा मनुष्य स्पर्धा कर सकता है. (३०)

155

सूक्त चौबीसवां — देवता—मंत्र में कहे गए

येन देवं सवितारं परि देवा अधारयन्.
तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन (१)

इंद्र आदि देवों ने सब के प्रेरक आदि देव को जिस कारण चारों ओर से घेर लिया था. उस कारण से हे शत्रु विनाशकर्ता ब्रह्मणस्पति! महा शांति का प्रयोग करने वाले इस यजमान को राजा बनाओ. (१)

परीममिन्द्रमायुषे महे क्षत्राय धत्तन.
यथैनं जरसे नयां ज्योक् क्षत्रेऽधि जागरत्. (२)

हे परम ऐश्वर्य संपन्न इंद्र! मुझ साधक को आयु और महान बल लाभ करने के लिए स्थापित करो. चिरकाल तक बाधा नष्ट करने वाला बल प्राप्त होने पर यह शांतिकर्ता यजमान जागृत रहे. इसे वृद्धावस्था को प्राप्त कराओ. (२)

परीमं सोममायुषे महे श्रोत्राय धत्तन.
यथैनं जरसे नयां ज्योक् श्रोतेऽधि जागरत् (३)

हे सोम! शांतिकर्ता मुझ यजमान को चिरकालीन जीवन के लिए तथा इंद्रियों से साध्य उपदान आदि कार्यों के लिए सभी ओर से धारण करो. चिरकाल तक सभी इंद्रियां सक्रिय रहने पर यह शांतिकर्ता यजमान जागृत रहे. इसे वृद्धावस्था को प्राप्त कराओ. (३)

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः.

बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ (४)

हे देवो! इस ब्रह्मचारी को वस्त्र धारण कराओ. हमारे इस ब्रह्मचारी को तेज से पोषित करो. वृद्धावस्था ही इसकी मृत्यु करने वाली हो. इसे ऐसी दीर्घ आयु वाला बनाओ. बृहस्पति ने यह वस्त्र राजा सोम को धारण करने के हेतु दिया था. (४)

जरां सु गच्छ परि धत्स्व वासो भवा गृष्टीनामभिशस्तिपा उ.
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व (५)

हे शांति प्रयोक्ता! तुम वृद्धावस्था को प्राप्त करो. तुम इस वस्त्र को धारण करो. तुम गायों को हिंसा के भय से बचाने वाले बनो. तुम अनेक प्रकार के पुत्रपौत्रों को प्राप्त करने वाली सौ शरद् ऋतुओं तक जीवित रहो. तुम धन और पुष्टि धारण करो. (५)

परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्वापीनामभिशस्तिपा उ.
शतं च जीव शरदः पुरूचीर्वसूनि चारुर्वि भजासि जीवन् (६)

हे शांतिकर्ता यजमान! तुम ने यह वस्त्र क्षेम अर्थात पात्र की रक्षा के लिए धारण किया है. इस वस्त्र को धारण कर के तुम गायों को चमड़ा उतारने के भय से रक्षा करने वाले बनो. तुम अनेक प्रकार के पुत्रपौत्रों को प्राप्त कराने वाली सौ शरद् ऋतुओं तक जीवित रहो. सौ वर्ष तक जीवित रहने वाले तुम सुंदर वस्त्र से सुशोभित रहो तथा धनों को पुत्र, मित्र आदि में विभाजित करो. (६)

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे. सखाय इन्द्रमूतये (७)

हम स्तुतिकर्ता सभी अप्राप्त फलों की प्राप्ति होने पर तथा अन्नादि की प्राप्ति होने पर इंद्रदेव को अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं. (७)

हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो जरामृत्युः प्रजया सं विशस्व.
तदग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः (८)

हे यजमान! तू सोने के समान कांति वाला, जरा रहित, कर्म करने में कुशल पुत्रों वाला तथा वृद्धावस्था से ही मृत्यु प्राप्त करने वाला हो कर अपने घर में निवास करे. अग्नि इस सूक्त में कहे गए अर्थ को जान हैं. यही सोम देव ने कहा है. बृहत् पति, सविता और इंद्र ने भी यही कहा है. (८)

सूक्त पच्चीसवां — देवता—वाजी

अश्रान्तस्य त्वा मनसा युनज्मि प्रथमस्य च.
उत्कूलमुद्वहो भवोदुह्य प्रति धावतात् (१)

हे अश्व! मैं तुझे शत्रु सेना पर आक्रमण करने में भी न थकने वाला तथा सृष्टि के आदि में उत्पन्न घोड़े के मन से युक्त करता हूं. शरीर की दृढ़ता, शीघ्र गमन तथा

शत्रु सेना को पराजित करने वाली सामर्थ्य वाले तुम गर्वीले बनो. जिस प्रकार सरिता का प्रवाह तटों को नष्ट कर के चलता है, उसी प्रकार तुम भी युद्ध के लिए प्रस्तुत हो. इस प्रकार के अश्व से मैं मन चाहे फल प्राप्त करूं. हे अश्व! तुम जीतने योग्य स्थान की ओर शीघ्र दौड़ो. (१)

सूक्त छब्बीसवां — देवता—अग्नि

अग्नेः प्रजातं परि यद्धिरण्यममृतं दध्रे अधि मर्त्येषु.
य एनद् वेद स इदेनमर्हति जरामृत्युर्भवति यो बिभर्ति (१)

अग्नि से उत्पन्न स्वर्ण तथा मरणधर्मा मनुष्यों में अमृत अर्थात आत्मा के रूप में व्याप्त सुवर्ण के रूपों को जानने वाला पुरुषा ही स्वर्ण को धारण करने का अधिकारी है. इस सुवर्ण का आभूषण जो धारण करता है, वह वृद्धावस्था में मृत्यु को प्राप्त करता है. (१)

यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्वं ईषिरे.
तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति (२)

प्रज्ञावान मनु ने सूर्य से उत्पन्न जिस सुवर्ण को प्राप्त किया था, मनुष्यों द्वारा धारण किया गया वह सुवर्ण प्रसन्नता पहुंचाने वाले तेज से तुम्हें संयुक्त करे. जो पुरुष इस सुवर्ण को धारण करता है, वह चिरजीवी होता है. (२)

आयुषे त्वा वर्चसे त्वौजसे च बलाय च.
यथा हिरण्यतेजसा विभासासि जनां अनु (३)

हे स्वर्ण को धारण करने वाले पुरुष! चंद्रमा उस स्वर्ण को तुम्हारे बल, लाभ एवं तेज प्राप्त करने के लिए निर्माण करे. जिस प्रकार स्वर्ण तेज से भास्वर होता है उसी प्रकार तुम भी मनुष्यों को लक्ष्य कर के सुशोभित बनो. (३)

यद् वेद राजा वरुणो वेद देवो बृहस्पतिः.
इन्द्रो यद् वृत्रहा वेद तत् त आयुष्यं भुवत् तत् ते वर्चस्यं भुवत् (४)

जिस स्वर्ण को तेजस्वी वरुण देव जानते हैं तथा बृहस्पति देव जानते हैं, वह स्वर्ण तुम्हारी आयु बढ़ाने वाला हो तथा तेज प्रदान करने वाला हो. (४)

सूक्त सत्ताईसवां — देवता—विवृत

गोभिष्ट्वा पात्वृषभो वृषा त्वा पातु वाजिभिः.
वायुष्ट्वा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वा पात्विन्द्रियैः (१)

हे विवृत नाम की मणि धारण करने वाले पुरुष! सांड़ गायों के साथ तुम्हारी रक्षा करे तथा प्रजनन करने में समर्थ अश्व घोड़ों के साथ तुम्हारी रक्षा करे. अंतरिक्ष में विचरण करने वाले वायु देवता यज्ञलक्षण वाले कर्म के द्वारा तुम्हारी रक्षा करें.

इंद्र देवता इंद्रियों के साथ तुम्हारी रक्षा करें. (१)

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः.
माद्भ्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु (२)

ओषधियों अर्थात जड़ीबूटियों के राजा सोम ओषधियों की सहायता से तुम्हारी रक्षा करें. सूर्यदेव नक्षत्रों की सहायता से तुम्हारी रक्षा करें. महीनों की सहायता से चंद्रमा, वृत्र अर्थात आवरण करने वाले अंधकार का नाश करने वाले इंद्र एवं प्राण वायु की सहायता से वायु देव तुम्हारी रक्षा करें. (२)

तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीस्त्रीण्यन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान्.
त्रिवृतं स्तोमं त्रिवृत आप आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः (३)

तीन द्युलोक, तीन पृथ्वियां, तीन अंतरिक्ष अर्थात मध्यम लोक, चार सागर, त्रिवृत नाम के तीन प्रकार के स्त्रोत तथा तीन प्रकार के जल ये—सभी त्रिवृत नाम की मणि के साथ तुम्हारी रक्षा करें. (३)

त्रीन्नाकांस्त्रीन् त्समुद्रांस्त्रीन् ब्रध्नांस्त्रीन् वैष्टपान्.
त्रीन् मातरिश्वनस्त्रीन्त्सूर्यान् गोप्तॄन् कल्पयामि ते (४)

हे हिरण्य! रजत और लोहे की तीन प्रकार की मणि धारण करने वाले पुरुष! मैं तीन आकाशों, तीन समुद्रों, तीन आदित्यों, तीन भुवनों, तीन वायुओं तथा तीन स्वर्गों को तेरा रक्षक नियुक्त करता हूं. (४)

घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्न आज्येन वर्धयन्.
अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दभन् (५)

हे अग्नि! मैं होम के साधन घृत से तुम्हें बढ़ाता हुआ तुम्हें घी से सींचता हूं. घृत के कारण वृद्धि प्राप्त अग्नि की, चंद्र की एवं सूर्य की कृपा से हे त्रिवृत मणि धारण करने वाले पुरुष! तेरे प्राणों का अपहरण राक्षस न करें. (५)

मा वः प्राणं मा वोऽपानं मा हरो मायिनो दभन्.
भ्राजन्तो विश्ववेदसो देवा दैव्येन धावत (६)

हे पुरुष! तुम्हारे प्राणों की हिंसा मायवी राक्षस न करें. तुम्हारी अपान वायु की हिंसा मायावी राक्षस न करें. हे अग्नि, चंद्र आदि देवो! प्रकाशित होते हुए सभी ज्ञानी देव संबंधी रथ आदि साधन से हमारी प्राण रक्षा के लिए दौड़ कर आएं. (६)

प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः प्राणेन संहितः.
प्राणेन विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन् (७)

पुरुष मुख में स्थित प्राण वायु से अग्नि को संयुक्त करता है. इसलिए प्राण की रक्षा करनी चाहिए. बाहरी वायु मुख में स्थित प्राण वायु से मिलती है. इंद्र

आदि देवों ने प्राण वायु से सर्वत्र प्रकाश करने वाले सूर्य को उत्पन्न किया है. (७)

आयुषायुः कृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः.
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम् (८)

हे मणिधारक पुरुष! दूसरों की आयु की वृद्धि करने वाले प्राचीन महर्षि तप आदि के द्वारा चिरकाल तक जीवित रहते थे. उन के द्वारा जीवित आयु से तुम जीवित रहो एवं मृत्यु को प्राप्त मत करो. स्थिर आत्मा वालों के प्राणों से तुम जीवित रहो तथा मृत्यु के वश में मत जाओ. (८)

देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रोऽन्वविन्दत् पथिभिर्देवयानैः.
आपो हिरण्यं जुगुपुस्त्रिवृद्भिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः (९)

सुरक्षित रूप से स्थापित देवों के जिस हिरण्य नाम के धन को इंद्र ने देवों के गमन पर चल कर प्राप्त किया था, उस को तीन प्रकार के जलों ने तीन प्रकार के साधनों से सुरक्षित किया. ये तीन प्रकार के जल, स्वर्ण, रजत और लोहे के तीन रूपों के द्वारा तुम्हारी रक्षा करें. (९)

त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुपुरप्स्व१न्तः.
अस्मिंश्चन्द्रे अधि यद्धिरण्यं तेनायं कृणवद् वीर्याणि (१०)

तैंतीस देवाओं ने कायिक, वाचिक तथा मानसिक तीन प्रकार के सामर्थ्य से प्रसन्न होते हुए जलों में स्वर्ण को सुरक्षित रखा था. इस चद्रंमा में जो स्वर्ण है, उस से यह त्रिवृत नाम की मणि तैंतीस देवों के तीन बलों के समान मणिधारक पुरुष में धारण करे. (१०)

ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् (११)

जो आदित्य नाम के देव द्युलोक में एकादश हैं, वे इस हवन किए जाते हुए हवि का सेवन करें. (११)

ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् (१२)

जो आदित्य नाम के देव अंतरिक्ष अर्थात मध्य भाग में एकादश हैं, वे इस हवन किए जाते हुए हवि का सेवन करें. (१२)

ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् (१३)

जो आदित्य नाम के देव पृथ्वी पर एकादश हैं, वे इस हवन किए जाते हुए हवि का सेवन करें. (१३)

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम्.

सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः.

अग्नि और सविता नाम के दो देव पूर्व दिशा को शत्रुओं से रहित बनाएं तथा पश्चिम दिशा को भय रहित बनाएं. सविता दक्षिण दिशा में तथा शचीपति इंद्र उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें. (१४)

दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः. (१४)
इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यच्छताम्.
तिरश्चीनघ्न्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म (१५)

आदित्य अर्थात सूर्य मेरी द्युलोक से रक्षा करें. अग्नि मेरी भूमि से रक्षा करें. इंद्र और अग्नि सामने से मेरी रक्षा करें. अश्विनीकुमार मुझे चारों ओर से सुख प्रदान करें. हिंसा रहित अग्नि तिरछी दिशाओं में मेरी रक्षा करें. पृथ्वी आदि भूतों की रचना करने वाले अग्नि आदि देव सभी ओर से मेरे लिए कवच अर्थात रक्षक बनें. (१५)

सूक्त अट्ठाईसवां — देवता—दर्भमणि

इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे. दर्भं सपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः (१)

हे विजय, बल आदि के इच्छुक पुरुष! मैं तुम्हें दीर्घ आयु और तेज को प्राप्त कराने के लिए यह दर्भमय मणि तुम्हारे हाथ में बांधता हूं. यह मणि शत्रुओं की हिंसा करने वाली और शत्रुओं के हृदय को संताप देने वाली है. (१)

द्विषतस्तापयन् हृदः शत्रूणां तापयन् मनः.
दुर्हार्दः सर्वांस्त्वं दर्भ घर्म इवाभिन्त्संतापयन् (२)

हे दर्भमणि! तू द्वेष करने वाले के हृदय को संतप्त करने वाली तथा शत्रुओं के मन को दुखी करने वाली है. दुष्ट हृदय वालों के घर, खेत, पशु आदि तुम इस प्रकार संतप्त करते हुए नष्ट कर दो, जिस प्रकार सूर्य सब को सुखा देता है. जो दुष्ट जन भय रहित हैं, उन्हें तुम संतप्त करो. (२)

घर्म इवाभितपन् दर्भ द्विषतो नितपन् मणे.
हृदः सपत्नानां भिन्द्धीन्द्र इव विरुजं बलम् (३)

हे दर्भमणि! गरमी की धूप के समान हम से द्वेष करने वाले शत्रुओं को नष्ट करो. इंद्र जिस प्रकार अपने शत्रुओं के बल को नष्ट करते हैं, उसी प्रकार तुम हमारे शत्रुओं को समाप्त करो. (३)

भिन्द्धि दर्भ सपत्नानां हृदयं द्विषतां मणे.
उद्यन् त्वचमिव भूम्याः शिर एषां वि पातय (४)

हे दर्भमणि! हमारे शत्रुओं तथा हम से द्वेष करने वालों के हृदय का भेदन करो. तुम हमारे शत्रुओं का शीश इस प्रकार काट कर गिरा दो, जिस प्रकार धरती पर

उपजने वाले तृण, घास आदि को काट दिया जाता है. (४)

भिन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे भिन्द्धि मे पृतनायतः.
भिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो भिन्द्धि मे द्विषतो मणे (५)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों का विनाश करो. तुम मेरे प्रति दुर्भावना रखने वालों तथा मुझ से द्वेष करने वालों का विनाश करो. (५)

छिन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे छिन्द्धि मे पृतनायतः.
छिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दान् छिन्द्धि मे द्विषतो मणे (६)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को काट दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वालों और द्वेष करने वालों को काट दो. (६)

वृश्च दर्भ सपत्नान् मे वृश्च मे पृतनायतः.
वृश्च मे सर्वान् दुर्हार्दो वृश्च मे द्विषतो मणे (७)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं को तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों का छेदन करो. तुम मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी को तथा मेरे प्रति द्वेष करने वालों का छेदन करो. (७)

कृन्त दर्भ सपत्नान् मे कृन्त मे पृतनायतः.
कृन्त मे सर्वान् दुर्हार्दा कृन्त मे द्विषतो मणे (८)

हे दर्भमणि! तुम मेरे शत्रुओं तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को काट दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सब को तथा मुझ से द्वेष करने वालों को काट दो. (८)

पिंश दर्भ सपत्नान् मे पिंश मे पृतनायतः.
पिंश मे सर्वान् दुर्हार्दः पिंश मे द्विषतो मणे (९)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं को तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को पीस दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी को तथा मुझ से द्वेष रखने वालों को पीस डालो. (९)

विध्य दर्भ सपत्नान् मे विध्य मे पृतनायतः.
विध्य मे सर्वान् दुर्हार्दो विध्य मे द्विषतो मणे (१०)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं को तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को ताड़ित करो. जो मेरे प्रति दुर्भावना रखते हैं तथा जो मेरे द्वेषी हैं, तुम उन की ताड़ना करो. (१०)

सूक्त उनतीसवां — देवता—दर्भमणि

निक्ष दर्भ सपत्नान् मे निक्ष मे पृतनायतः.

निक्ष मे सर्वान् दुर्हार्दो निक्ष मे द्विषतो मणे (१)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को चूस ले. जो मेरे प्रति दुर्भावना रखते हैं तथा जो मेरे द्वेषी हैं, तुम उन्हें चूस लो. (१)

तृन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे तृन्द्धि मे पृतनायत:.
तृन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दस्तृन्द्धि मे द्विषतो मणे (२)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं का तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों का नाश करो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी मनुष्यों का तथा मुझ से द्वेष करने वालों का नाश करो. (२)

रुन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे रुन्द्धि मे पृतनायत:.
रुन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो रुन्द्धि मे द्विषतो मणे (३)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं को तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को रोक दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी व्यक्तियों तथा मुझ से द्वेष करने वालों को रोक दो. (३)

मृण दर्भ सपत्नान् मे मृण मे पृतनायत:.
मृण मे सर्वान् दुर्हार्दो मृण मे द्विषतो मणे (४)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं की तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों की हिंसा करो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी व्यक्तियों की तथा मुझ से द्वेष करने वालों की हिंसा करो. (४)

मन्थ दर्भ सपत्नान् मे मन्थ मे पृतनायत:.
मन्थ मे सर्वान् दुर्हार्दो मन्थ मे द्विषतो मणे (५)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र वालों को मथ दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी व्यक्तियों को तथा मुझ से द्वेष रखने वालों को मथ दो. (५)

पिण्ड्ढ दर्भ सपत्नान् मे पिण्ड्ढ मे पृतनायत:.
पिण्ड्ढ मे सर्वान् दुर्हार्द: पिण्ड्ढ मे द्विषतो मणे (६)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं का तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों का चूर्ण बना दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी व्यक्तियों को तथा मुझ से द्वेष रखने वालों का चूर्ण बना दो. (६)

ओष दर्भ सपत्नान् मे ओष मे पृतनायत:.
ओष मे सर्वान् दुर्हार्द ओष मे द्विषतो मणे (७)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं को तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को जला

दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी व्यक्तियों को तथा मुझ से द्वेष करने वालों को जला दो. (७)

दह दर्भ सपत्नान् मे दह मे पृतनायतः.
दह मे सर्वान् दुर्हार्दो दह मे द्विषतो मणे (८)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं को तथा मेरे प्रति सेना एकत्र करने वालों को जला दो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी व्यक्तियों को तथा मुझ से द्वेष रखने वालों को जला दो. (८)

जहि दर्भ सपत्नान् मे जहि मे पृतनायतः.
जहि मे सर्वान् दुर्हार्दो जहि मे द्विषतो मणे (९)

हे दर्भमणि! मेरे शत्रुओं को तथा मेरे विरुद्ध सेना एकत्र करने वालों को मारो. तुम मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले सभी व्यक्तियों को तथा मुझ से द्वेष करने वालों को मारो. (९)

सूक्त तीसवां — देवता—दर्भमणि

यत् ते दर्भ जरामृत्युः शतं वर्मसु वर्म ते.
तेनेमं वर्मिणं कृत्वा सपत्नाञ्जहि वीर्यैः (१)

हे दर्भ! तेरी गांठों में सैकड़ों वृद्धावस्थाएं और मृत्यु व्याप्त हैं. तेरे पास वृद्धावस्था और मृत्यु से बचाने वाला कवच है. उस कवच से रक्षा, जय आदि की कामना करने वाले पुरुष को सुरक्षित कर के अपनी शक्तियों से इस राजा के शत्रुओं को मारो. (१)

शतं ते दर्भ वर्माणि सहस्रं वीर्याणि ते.
तमस्मै विश्वे त्वां देवा जरसे भर्तवा अदुः (२)

हे दर्भमणि! तुम्हारी गांठों में सैकड़ों सुरक्षा कवच और शक्तियां विद्यमान हैं. सभी देवों से रक्षा की कामना करने वाले इस राजा को वृद्धावस्था दूर करने के लिए तुम्हें दिया है. (२)

त्वामाहुर्देववर्म त्वां दर्भ ब्रह्मणस्पतिम्.
त्वामिन्द्रस्याहुर्वर्म त्वं राष्ट्राणि रक्षसि (३)

हे दर्भमणि! तुम्हें देवों का कवच और वेदों का रक्षक कहा गया है. तुम्हें इंद्रक कवच बताया गया है. तुम राष्ट्रों की रक्षा करते हो. (३)

सपत्नक्षयणं दर्भ द्विषतस्तपनं हृदः.
मणिं क्षत्रस्य वर्धनं तनूपानं कृणोमि ते (४)

हे दर्भमणि! तुम शत्रुओं का विनाश करने वाले तथा द्वेष करने वालों के हृदय को संतप्त करने वाले हो. हे राजन! मैं दर्भमणि को तुम्हारा रक्षक एवं शक्ति बढ़ाने वाला बनाता हूं. (४)

यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत् पर्जन्यो विद्युता सह.
ततो हिरण्ययो बिन्दुस्ततो दर्भो अजायत (५)

जिस मेघ से जल बरसता है, उस से बिजली की गड़गड़ाहट के साथ हिरण्यमय बूंद प्रकट हुई, उन्हीं से दर्भ उत्पन्न हुआ है. (५)

सूक्त इकतीसवां देवता—औदुंबरमणि

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय वेधसा.
पशूनां सर्वेषां स्फातिं गोष्ठे मे सविता करत् (१)

विधाता ने पशु, पुत्र, धन, शरीर आदि की कामना करने वाले पुरुष के लिए प्राचीन काल में उदुंबर अर्थात गूलर की मणि के द्वारा इन्हें प्रदान करने का प्रयोग किया है. मैं उसी उदुंबर मणि के द्वारा तेरी रक्षा करता हूं. सविता देव मेरी गोशाला में दो पैरों वाले मनुष्यों और चार पैरों वाले पशुओं की वृद्धि करें. (१)

यो नो अग्निर्गार्हपत्यः पशूनामधिपा असत्.
औदुम्बरो वृषा मणिः सं मा सृजतु पुष्ट्या (२)

जो गार्हपत्य अग्नि है, वह हमारे पशुओं का पालनकर्ता है. मनचाहा फल देने वाली उदुंबर मणि मेरे शरीर की वृद्धि तथा सभी प्रकार से पशुओं का पोषण करे. (२)

करीषिणीं फलवतीं स्वधामिरां च नो गृहे.
औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु मे (३)

विधाता देव गूलर की मणि के तेज के द्वारा मेरे शरीर की पुष्टि करें तथा मेरे घर में अन्न तथा गोबर करने वाली गाएं प्रदान करें. (३)

यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च यान्यन्नानि ये रसाः.
गृह्णे३हं त्वेषां भूमानं बिभ्रदौदुम्बरं मणिम् (४)

उदुंबर मणि को धारण करता हुआ मैं दो पैरों वाले पुरुषों, चार पैरों वाले पशुओं, सभी प्रकार के अन्नों तथा शहद, दूध आदि रसों की अधिकता को स्वीकार करूं. (४)

पुष्टिं पशूनां परि जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम्.
पयः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात् (५)

उदुंबर मणि के तेज से तथा बृहस्पति और सविता देव की कृपा से मैं दो पैरों वाले मनुष्यों, चार पैरों वाले पशुओं तथा गेहूं, जौ आदि अन्नों की अधिकता स्वीकार करूं. ये देव मुझे पशुओं का दूध और ओषधियां अर्थात जड़ीबूटियों का रस प्रदान करें. (५)

अहं पशूनामधिपा असानि मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु.
मह्यमौदुम्बरो मणिर्द्रविणानि नि यच्छतु (६)

पुष्टि की कामना करने वाला मैं दो पैरों वाले मनुष्यों तथा चार पैरों वाले पशुओं का स्वामी बनूं. पशु आदि की पुष्टि की स्वामिनी उदुम्बर मणि मुझे स्वर्ण आदि धन प्रदान करे. (६)

उप मौदुम्बरो मणिः प्रजया च धनेन च.
इन्द्रेण जिन्वितो मणिरा मागन्त्सह वर्चसा (७)

उदुंबर मणि मुझ को पुत्र, पौत्र आदि प्रजा और सोना, चांदी रूप धन से संपन्न करे. इंद्र के द्वारा प्रेरित उदुंबर मणि विशेष तेज के साथ मेरे समीप आए. (७)

देवो मणिः सपत्नहा धनसा धनसातये.
पशोरन्नस्य भूमानं गवां स्फातिं नि यच्छतु (८)

प्रकाश युक्त उदुंबर मणि शत्रुओं का हनन करने वाली, धनों का लाभ कराने वाली हो. वह मणि मुझे पशुओं तथा अन्न की अधिकता तथा गायों की अधिकता प्रदान करे. (८)

यथाग्रे त्वं वनस्पते पुष्ट्या सह जज्ञिषे.
एवा धनस्य मे स्फातिमा दधातु सरस्वती (९)

हे वन का पालन करने वाली उदुंबर मणि! तुम जिस प्रकार ओषधियों और वनस्पतियों की रचना के समय पुष्टि के साथ उत्पन्न हुई हो, उसी प्रकार तुम्हारे साधन से सरस्वती देवी मुझे धन की अधिकता प्रदान करें. (९)

आ मे धनं सरस्वती पयस्फातिं च धान्यम्.
सिनीवाल्युपा वहादयं चौदुम्बरो मणिः (१०)

सरस्वती देवी मेरे धन की, दूध की तथा अन्न की वृद्धि करें. अमावस्या की देवी सिनीवाली तथा यह उदुंबर मणि धन आदि प्रदान करें. (१०)

त्वं मणीनामधिपा वृषासि त्वयि पुष्टं पुष्टपतिर्जजान. त्वयीमे वाजा
द्रविणानि सर्वौदुम्बरः स त्वमस्मत् सहस्वारादरातिममतिं क्षुधं च (११)

हे उदुंबर मणि! तुम अन्य रक्षा साधनों की स्वामिनी हो. प्रजापति ने तुम को

गाय, घोड़ा आदि की पुष्टि की क्षमता प्रदान की है. तुम में ये सभी घोड़े और अन्न व्याप्त हैं. तुम इन सब को पराजित करो. तुम शत्रु तथा दरिद्रता को हम से दूर करो. तुम बुद्धि के अभाव और भूख को हम से दूर करो. (११)

ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थायाभिषिक्तोऽभि मा सिञ्च वर्चसा.
तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि (१२)

हे उदुंबर मणि! तुम गाय की स्वामिनी हो. तुम हमारी सभी अभिलाषाओं को पूर्ण करो. तुम तेज से अभिषिक्त हो, उठ कर मुझे भी तेज से सिंचित करो. तुम तेज रूप हो, मुझ में भी तेज धारण करो. तुम धन प्राप्त करने वाली हो, मुझे भी धन प्राप्त कराओ. (१२)

पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्ग्धि गृहमेधी गृहपतिं मा कृणु.
औदुम्बरः स त्वमस्मासु धेहि रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ रायस्पोषाय प्रति मुञ्चे अहं त्वाम् (१३)

हे उदुंबर मणि! तुम पुष्टि हो, मुझे भी पुष्टि से युक्त करो. तुम गृहमेधी हो, मुझे गृहपति बनाओ. तुम हमें धन प्रदान करो. तुम हमें ऐसा धन प्रदान करो, जिस से हमारे पुत्र, पौत्र, सेवक आदि पुष्ट हों. हे मणि! मैं तुझे धनों की वृद्धि के लिए बांधता हूं. (१३)

अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते.
स नः सनिं मधुमतीं कृणोतु रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छात् (१४)

अमित्रों का विनाश करने वाली यह उदुंबर मणि वीरता को प्राप्त करने के लिए बांधी जाती है. यह मणि हमारी उपलब्धि को मधुमती करे. यह हमारे सभी वीरों अर्थात पुत्र, पौत्र आदि को धन प्रदान करे. (१४)

सूक्त बत्तीसवां — देवता—दर्भ

शतकाण्डो दुश्च्यवनः सहस्रपर्ण उत्तिरः.
दर्भो य उग्र औषधिस्तं ते बध्नाम्यायुषे. (१)

हे मृत्यु के भय से दुखी पुरुष! मैं सौ गांठों वाली, दुख में चबाने योग्य, हजार पुत्रों वाली एवं उत्तम दर्भ उग्र ओषधि अर्थात जड़ीबूटी है. उसे मैं दीर्घ आयु प्राप्त करने के लिए बांधता हूं. (१)

नास्य केशान् प्र वपन्ति नोरसि ताडमा घ्नते.
यस्मा अच्छिन्नपर्णेन दर्भेण शर्म यच्छति (२)

उस के केशों को मृत्यु दूत नहीं खींचते हैं तथा राक्षस, पिशाच आदि हृदय में चोट पहुंचा कर उसी की हिंसा नहीं करते, जिसे प्रयोक्ता बिना कटे हुए पत्तों वाले

दर्भ से बनी मणि सुख पहुंचाती है. (२)

दिवि ते तूलमोषधे पृथिव्यामसि निष्ठितः.
त्वया सहस्रकाण्डेनायुः प्र वर्धयामहे (३)

हे सौ गांठों वाली दर्भ नामक ओषधि! तेरा ऊपर वाला भाग द्युलोक अर्थात स्वर्ग में है तथा तू पृथ्वी पर स्थित है. इस प्रकार पृथ्वी से स्वर्ग तक व्याप्त होने वाली तथा हजार गांठों वाली दर्भ नाम की ओषधि के द्वारा मैं तेरी आयु को बढ़ाता हूं. (३)

तिस्रो दिवो अत्यतृणत् तिस्र इमाः पृथिवीरुत.
त्वयाहं दुर्हार्दो जिह्वां नि तृणाद्मि वचांसि (४)

हे हजार गांठों वाली ओषधि दर्भ! तू तीन स्वर्गों का अतिक्रमण गई है तथा तूने इन तीन पृथ्वियों का अतिक्रमण किया है. मैं तेरे द्वारा उस की जीभ को लपेटता हूं जो मेरे प्रति दुर्भावना रखता है तथा उस के वचनों को बांधता हूं. (४)

त्वमसि सहमानोऽहमस्मि सहस्वान्.
उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा सपत्नान्त्सहिषीवहि (५)

हे सौ गांठों वाली ओषधि दर्भ! तुम शत्रुओं को वश में करने वाली हो तथा मैं शत्रु की हिंसा के साधन और बल से युक्त हूं. हम दोनों शत्रु को दबा के स्वभाव वाले हो कर अपने शत्रुओं को पराजित करें. (५)

सहस्व नो अभिमातिं सहस्व पृतनायतः.
सहस्व सर्वान् दुर्हार्दः सुहार्दो मे बहून् कृधि (६)

हे सौ गांठों वाली ओषधि दर्भ! हमारे शत्रुओं अथवा पापों को पराजित करो. जो लोग हमारे विरुद्ध सेना एकत्र कर रहे हैं, उन को भी पराजित करो. मेरे प्रति दुर्भावना रखने वाले व्यक्तियों का विनाश करो और मेरे मित्रों की संख्या बढ़ाओ. (६)

दर्भेण देवजातेन दिवि ष्टम्भेन शश्वदित्.
तेनाहं शश्वतो जनां असनं सनवानि च (७)

देवों के समीप से उत्पन्न, द्युलोक अर्थात स्वर्ग में स्थित रहने वाले दर्भ के द्वारा मैं सर्वदा दीर्घजीवी जनों को प्राप्त करूं. (७)

प्रियं मा दर्भ कृणु ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च.
यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै च विपश्यते (८)

हे दर्भ! मुझ धारणकर्ता को ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र तथा श्रेष्ठ जनों का प्रिय बनाओ. अनुलोम और प्रतिलोम जाति के मध्य जिन लोगों को मैं अपना प्रिय बनाना

चाहूं, पाप अन्वेषण करने वाले उस पुरुष को मेरा प्रिय बनाओ. (८)

यो जायमानः पृथिवीमदृंहद् यो अस्तभ्नादन्तरिक्षं दिवं च.
यं बिभ्रतं ननु पाप्मा विवेद स नोऽयं दर्भो वरुणो दिवा कः (९)

जिस दर्भ ने उत्पन्न होते ही पृथ्वी को दृढ़ किया था तथा जिस ने अंतरिक्ष और द्युलोक अर्थात स्वर्ग को स्थिर किया, उस दर्भ को जानने वाले को पाप स्पर्श नहीं करता. इस प्रकार का अंधकार निवारक दर्भ हमें प्रकाश दे. (९)

सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वानोषधीनां प्रथमः सं बभूव.
स नोऽयं दर्भः परि पातु विश्वतस्तेन साक्षीय पृतनाः पृतन्यतः (१०)

शत्रुओं का विनाश करने वाला, सौ गांठों से युक्त एवं शक्तिशाली दर्भ सभी ओषधियों अर्थात जड़ीबूटियों से पहले उत्पन्न हुआ है. इस प्रकार का दर्भ सभी दिशाओं के भयों से हमारी रक्षा करें. उस दर्भमणि की सहायता से मैं उस सेना को पराजित करूं, जिसे मेरा शत्रु एकत्र करता है. (१०)

सूक्त तैंतीसवां देवता—दर्भ

सहस्रार्घः शतकाण्डः पयस्वानपामग्निर्वीरुधां राजसूयम्.
स नोऽयं दर्भः परि पातु विश्वतो देवो मणिरायुषा सं सृजाति नः (१)

बहुमूल्य, सौ गांठों वाली, शक्ति संपन्न, जलों की अग्नि अर्थात वाड़वाग्नि, राजसूय कर्म के समान यह दर्भ चारों ओर से हमारी रक्षा करे. यह देवों के द्वारा निर्मित मणि हमें आयु से मिलाए. (१)

घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पयस्वान् भूमिदृंहोऽच्युतश्च्यावयिष्णुः.
नुदन्सपत्नानधरांश्च कृण्वन् दर्भा रोह महतामिन्द्रियेण (२)

हवन करने से शेष बचे घृत से चिकना बना हुआ, मधुरता से युक्त, अधिक दूध वाला, अपनी जड़ों से धरती को दृढ़ करने वाला, अपने स्थान से पतित न होने वाला, दूसरों का पतन कराने वाला, शत्रुओं को दूर भगाता हुआ और शक्ति हीन बनाता हुआ दर्भ अन्य अधिक बल युक्त ओषधियों अर्थात जड़ीबूटियों में इंद्र के द्वारा प्रदत्त सामर्थ्य से स्थित बने. (२)

त्वं भूमिमत्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे.
त्वां पवित्रमृषयोऽभरन्त त्वं पुनीहि दुरितान्यस्मत् (३)

हे दर्भमणि! तुम अपने बल से भूमि का अतिक्रमण करते हो. तुम यज्ञ में सुंदर वेदी पर स्थित होते हो. ऋषियों ने तुम्हें पवित्र करके आहरण किया है. तुम पापों को हम से दूर भगाओ. (३)

तीक्ष्णो राजा विषासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः.

ओजो देवानां बलमुग्रमेतत् तं ते बध्नामि जरसे स्वस्तये (४)

तीक्ष्ण, सभी ओषधियों में श्रेष्ठ, विशेष रूप से शत्रु नाशक, राक्षसों का हनन करने वाला, सारे संसार को देखने वाला, देवों का बल तथा दूसरों के द्वारा असहनीय शक्ति संपन्न यह दर्भ नाम का रक्षा साधन है. हे रक्षा की इच्छा करने वाले पुरुष! इस प्रकार की दर्भमणि को मैं तेरी वृद्धावस्था दूर करने एवं कल्याण के लिए तेरे हाथ में बांधता हूं. (४)

दर्भेण त्वं कृणवद् वीर्याणि दर्भं बिभ्रदात्मना मा व्यथिष्ठा:.
अतिष्ठाया वर्चसाधान्यान्त्सूर्य इवा भाहि प्रदिशश्चतस्र: (५)

हे पुरुष! तुम दर्भमणि रूपी साधन के द्वारा वीरता पूर्ण कर्म करो. शक्ति के साधन इस दर्भमणि को धारण करते हुए तुम दुखी मत होओ. तुम अपने शरीर के बल से शत्रुओं को व्यथित कर के सूर्य के समान चारों दिशाओं को प्रकाशित करो. (५)

सूक्त चौंतीसवां — देवता—जंगिड़ वनस्पति

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिड:.
द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वं रक्षतु जङ्गिड: (१)

हे जंगिड़ नाम की ओषधि अर्थात जड़ीबूटी! तुम कृत्या नाम की राक्षसी को तथा उस के द्वारा किए हुए कर्मों को निगल लेती हो. इस आधार पर तुम सभी भयों से रक्षा करने वाली होती हो. हे जंगिड़! तुम हमारे दो पैरों वाले पुत्र, पौत्र आदि की तथा चार पैरों वाले गाय, अश्व आदि पशुओं की रक्षा करो. (१)

या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशी: शतं कृत्याकृतश्च ये.
सर्वान् विनक्तु तेजसोऽरसाञ्जङ्गिडस्करत् (२)

तिरेपन प्रकार की जो हानि पहुंचाने वाली राक्षसियां, कृत्याएं है तथा पुतलियां बनाने वाले जो सैकड़ों जादूटोना करने वाले हैं, जंगिड नाम की ओषधि से बनी हुई मणि उन सभी को नष्ट शक्ति वाला तथा रसहीन करे. (२)

अरसं कृत्रिमं नादमरसा: सप्त विस्रस:.
अपेतो जङ्गिडामतिमिषुमस्तेव शातय (३)

अभिचार अर्थात जादूटोना करने वाले के द्वारा उत्पन्न की गई हानि को यह जंगिड मणि सारहीन करे. सात छेदों—नाक, नेत्र, कान तथा मुख में उत्पन्न किए गए अभिचार कर्म को यह जंगिड मणि नष्ट करे. बाण फेंकने वाला शत्रुओं को जिस प्रकार नष्ट कर देता है, उसी प्रकार जंगिड मणि हम से दुर्बुद्धि और दरिद्रता को दूर करे. (३)

कृत्यादूषण एवायमथो अरातिदूषणः.
अथो सहस्वाञ्जङ्गिडः प्र ण आयूंषि तारिषत् (४)

यह जंगिड़ मणि शत्रु के द्वारा उत्पन्न कृत्या राक्षसी का निराकरण करने वाली है तथा शत्रु को नष्ट करने का साधन है. यह जंगिड़ मणि ऊपर बताए हुए कार्यों की शक्ति से युक्त है. यह हमारी आयु को बढ़ाए. (४)

स जङ्गिडस्य महिमा परि णः पातु विश्वतः.
विष्कन्धं येन सासह संस्कन्धमोज ओजसा (५)

जंगिड़ मणि का यह महत्त्व सभी ओर से हमारी रक्षा करे. यह मणि विस्कंद नाम के वातरोग को अपने बल से नष्ट करती है. (५)

त्रिष्ट्वा देवा अजनयन् निष्ठितं भूम्यामधि.
तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणाः पूर्व्या विदुः (६)

इस समय धरती पर स्थित तुम को इंद्र आदि देवों ने तीन बार उत्पन्न किया था. इस प्रकार के तुम को अंगिरा गोत्रीय ऋषि एवं ब्राह्मण जानते थे. (६)

न त्वा पूर्वा ओषधयो न त्वा तरन्ति या नवाः.
विबाध उग्रो जङ्गिडः परिपाणः सुमङ्गलः (७)

हे जंगिड़ मणि! सृष्टि के आदि में उत्पन्न ओषधियां अर्थात जड़ीबूटियां तुम से श्रेष्ठ नहीं हैं. नई ओषधियां भी तुम से श्रेष्ठ नहीं हैं. हे शत्रुसेना आदि को बाधा उत्पन्न करने वाली जंगिड मणि! तुम उग्र, चारों ओर से रक्षा करने वाली तथा भलीभांति मंगलकारी हो. (७)

अथोपदान भगवो जङ्गिडामितवीर्य. पुरा त उग्रा ग्रसत उपेन्द्रो वीर्यं ददौ (८)

हे कृत्या राक्षसी को दूर करने में स्वीकृत! हे अधिक माहात्म्य वाली! हे असीमित शक्ति वाली जंगिड़ मणि! अधिक शक्ति वाले प्राणी तुम्हें खा लेंगे, ऐसा जान कर इंद्र ने तुम्हें अधिक बल प्रदान किया है. (८)

उग्र इत् ते वनस्पत इन्द्र ओज्मानमा दधौ.
अमीवाः सर्वाश्चातयञ्जहि रक्षांस्योषधे (९)

हे जंगिड़ नाम की वनस्पति अर्थात जड़ीबूटी! तुम अधिक शक्ति वाली ही हो. इंद्र ने तुम में बल धारण किया है, इस कारण हे जंगिड़ ओषधि! तुम सभी रोगों का नाश करती हुई राक्षसों को नष्ट करो. (९)

आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ट्यामयम्.
तक्मानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत् (१०)

सभी प्रकार से हिंसक अशरीक रोग को, विशेष रूप से हिंसक विशरीक रोग को. बल का नाश करने वाले बलास रोग को, सभी अंगों में व्याप्त पृष्ठम रोग को, तक्मा रोग को तथा विश्वशारद रोग को जंगिड मणि पीड़ा पहुंचाने में असमर्थ बनाए. (१०)

सूक्त पैंतीसवां — देवता—जंगिड़ वनस्पति

इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त ऋषयो जङ्गिडं ददुः.
देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम् (१)

प्राचीन ऋषियों ने इंद्र का नाम लेते हुए रक्षा के इच्छुक मनुष्यों को जंगिड़ मणि दी. सृष्टि को आदि में इंद्र आदि देवों ने जंगिड़ ओषधियों को विष्कांध नाम के महारोग नष्ट करने वाली बनाया था. (१)

स नो रक्षतु जङ्गिडो धनपालो धनेव.
देवा यं चक्रुर्ब्राह्मणाः परिपाणमरातिहम् (२)

राजा का धनाध्यक्ष जिस प्रकार धन की रक्षा करता है, उसी प्रकार जंगिड मणि हमारी रक्षा करे. जंगिड मणि को देवों तथा ब्राह्मणों ने सभी प्रकार से रक्षक और शत्रुओं का विनाश करने वाला बनाया है. (२)

दुर्हार्दः संघोरं चक्षुः पापकृत्वानमागमम्.
तांस्त्वं सहस्रचक्षो प्रतीबोधे नाशय परिपाणोऽसि जङ्गिडः (३)

हे जंगिड़ मणि! तुम दुष्ट हृदय वाले शत्रु का नाश करो. तुम अति भयानक व्यक्ति का नाश करो. हिंसा आदि पाप करने वाले का तुम नाश करो. हे हजार नेत्रों वाली जंगिड़ मणि! तुम उन शत्रुओं को अपनी प्रतिकूल बुद्धि से नष्ट करो. हे जंगिड़! तुम सभी प्रकार से रक्षा करने वाली हो. (३)

परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् परि मा वीरुद्भ्यः.
परि मा भूतात् परि मोत भव्याद् दिशोदिशो जङ्गिडः पात्वस्मान् (४)

यह जंगिड़ मणि मुझे द्युलोक अर्थात स्वर्ग से होने वाले भय से, पृथ्वी से होने वाले भय से, अंतरिक्ष के राक्षसों आदि के भय से तथा वृक्षों से होने वाले भय से बचाएं. यह जंगिड़ मणि मुझे अतीत काल के प्राणियों से एवं भविष्य में होने वाले प्राणियों से बचाए. जंगिड़ मणि सभी दिशाओं में होने वाले भयों से हमारी रक्षा करे. (४)

य ऋष्णवो देवकृता य उतो ववृतेऽन्यः.
सर्वास्तान् विश्वभेषजोऽरसां जङ्गिडस्करात् (५)

देवों के द्वारा बनाए हुए जो हिंसक पुरुष हैं तथा मनुष्य आदि के द्वारा प्रेरित जो बाधक हैं, उन सभी भेषजों अर्थात ओषधियों को जंगिड़ मणि शक्तिहीन करे. (५)

सूक्त छत्तीसवां देवता—शतवार

शतवारो अनीनशद् यक्ष्मान् रक्षांसि तेजसा.
आरोहन् वर्चसा सह मणिर्दुर्णामचातनः (१)

शतवार नाम की विशेष ओषधि अर्थात जड़ीबूटी अपनी महिमा से यक्ष्मा अर्थात टी. बी. रोग को नष्ट करे. यह मणि राक्षसों का भी विनाश करे. त्वचा के दोषों को नष्ट करने वाली शतवार मणि अपनी दीप्ति के साथ पुरुष की भुजा पर विराजमान हो. (१)

शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते मूलेन यातुधान्यः.
मध्येन यक्ष्मं बाधते नैनं पाप्माति तत्रति (२)

यह शतवार मणि! अपने सींगों अर्थात अगले भागों से अंतरिक्ष में स्थित राक्षसों को भगाती है तथा अपनी जड़ अर्थात नीचे वाले भाग से राक्षसियों को दूर करती है. यह मणि अपने मध्य भाग से यक्ष्मा अर्थात टी. बी. रोग को दूर करती है. पाप इस का अतिक्रमण नहीं कर पाता. (२)

ये यक्ष्मासो अर्भका महान्तो ये च शब्दिनः.
सर्वान् दुर्णामहा मणिः शतवारो अनीनशत् (३)

जो उत्पन्न हुए अर्थात प्रारंभिक अवस्था वाले यक्ष्मा अर्थात टी. बी. रोग हैं, जो बढ़े हुए यक्ष्मा तथा जो कष्ट से चिकित्सा योग्य यक्ष्मा रोग हैं, इन सभी बुरे नाम वाले रोगों को शतवार मणि नष्ट कर देती है. (३)

शतं वीरानजनयच्छतं यक्ष्मानपावपत्.
दुर्णाम्नः सर्वान् हत्वाव रक्षांसि धूनुते (४)

धारण की जाती हुई यह शतवार मणि सौ वीर पुत्रों को जन्म देती है तथा यक्ष्मा नाम के सौ रोगों को दूर भगाती है. यह सभी बुरे नाम वाले राक्षसों को नष्ट कर के ऐसा कर देती है कि ये पुनः उपद्रव न कर सकें. (४)

हिरण्यशृङ्ग ऋषभः शातवारो अयं मणिः.
दुर्णाम्नः सर्वांस्तृढ्वाव रक्षांस्यक्रमीत् (५)

सोने के समान चमकने वाले अग्र भाग वाली शतवार ओषधि अर्थात जड़ीबूटी सभी ओषधियों में श्रेष्ठ है. यह सभी अयश वाले जनों को तिनके के समान नष्ट कर के राक्षसों पर आक्रमण करे. (५)

शतमहं दुर्णाम्नीनां गन्धर्वाप्सरसां शतम्.
शतं शश्वन्वतीनां शतवारेण वारये (६)

मैं कोढ़, दाद आदि सौ व्याधियों, सौ गंधर्वों तथा सौ अप्सराओं को निवारण करता हूं. बारबार पीड़ा देने के लिए आने वाली सैकड़ों अपस्मार अर्थात पागलपन आदि व्याधियों को शतवार ओषधि से निवारण करता हूं. (६)

सूक्त सैंतीसवां   देवता—अग्नि

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन् भर्गो यशः सह ओजो वयो बलम्.
त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि तान्यग्निः प्र ददातु मे (१)

अग्नि देव के द्वारा दी हुई यह दीप्ति आए. तेज एवं यश के साथ ओज, यौवन और बल आए. तैंतीस प्रकार के जो कार्य अर्थात वीरता पूर्ण सामर्थ्य हैं, अग्नि उन्हें मुझे प्रदान करें. (१)

वर्च आ धेहि मे तन्वां३ सह ओजो वयो बलम्.
इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्याय प्रति गृह्णामि शतशारदाय (२)

हे अग्नि! मेरे शरीर में शत्रुओं को पराजित करने वाला तेज हो तथा तेज के साथ मुझे पूर्ण आयु और बल प्रदान करो. मैं ज्ञानेंद्रियों तथा कर्मेंद्रियों की दृढ़ता के लिए तुझे स्वीकार करता हूं. मैं अग्निहोत्र आदि कर्म के लिए वायु पर विजय प्राप्त करने वाले कार्य के लिए तथा सौ वर्ष का जीवन प्राप्त करने के लिए तुझे ग्रहण करता हूं. (२)

ऊर्जे त्वा बलाय त्वौजसे सहसे त्वा.
अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय (३)

हे स्वीकार किए गए पदार्थ! मैं तुम्हें अन्न प्राप्ति के लिए, बल प्राप्ति के लिए, तेज प्राप्ति के लिए, धन प्राप्ति के लिए, शत्रु जय के लिए तथा राज्य के भरणपोषण के लिए सौ वर्षों की अवधि हेतु ग्रहण करता हूं. (३)

ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो माद्भ्यः संवत्सरेभ्यः.
धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे (४)

हे पदार्थ! मैं तुझे ग्रीष्म आदि ऋतुओं को प्रसन्न करने के लिए, ऋतु संबंधी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए, चैत्र आदि मासों को प्रसन्न करने के लिए, संवत्सरों को प्रसन्न करने के लिए, धाता और विधाता तथा सभी प्राणियों के स्वामी समृध को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करता हूं. (४)

सूक्त अड़तीसवां   देवता—गुग्गुलुः

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते.

यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते (१)

उस राजा को यक्ष्मा अर्थात टी. बी. नाम का रोग पीड़ित नहीं करता और दूसरों के द्वारा अभिशाप उस पर प्रभाव डालता है, जिस राजा को गूगल नाम की ओषध की सुखदायक गंध व्याप्त करती है. (१)

विष्वञ्चस्तस्माद् यक्ष्मा मृगा अश्वा इवेरते.
यद् गुल्गुलु सैन्धवं यद् वाप्यासि समुद्रियम् (२)

गूगल की गंध सूंघने वाली यह यक्ष्मा अर्थात टी. बी. नाम की व्याधि हिरन और घोड़े के समान सभी दिशाओं में तीव्र गति से भागती है. गुग्गुल या तो सिंधु देश में उत्पन्न हो अथवा समुद्र में उत्पन्न हो. (२)

उभयोरग्रभं नामास्मा अरिष्टतातये (३)

हे गुग्गुलु! मैं तुझे दोनों प्रकार के रोगों का नाम बताता हूं. दुख देने वाले वर्तमान रोग के विनाश हेतु मैं तुझ से प्रार्थना करता हूं. (३)

सूक्त उन्तालीसवां — देवता—कुष्ठ

ऐतु देवस्त्रायमाणः कुष्ठो हिमवतस्परि.
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः (१)

कूठ नाम की विशेष ओषधि द्युलोक में उत्पन्न हुई है. यह हमारी रक्षा करती हुई हिमवान पर्वत से आए. वह सभी क्लेशकारी रोगों का नाश करे तथा सभी राक्षसियों को नष्ट करे. (१)

त्रीणि ते कुष्ठ नामानि नद्यमारो नद्यारिषः.
नद्यायं पुरुषो रिषत्. यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा (२)

हे कुष्ठ! तुम्हारे तीन नाम नद्यमार, नद्यारिष और नद्य हैं. तुम्हारा नाम लेने के अभाव में यह पुरुष हिंसित हुआ है. मैं रोग से दुखी पुरुष के लिए तुम्हारा नाम मंत्र के रूप में बता रहा हूं. वह सायंकाल, प्रातः और दिन में तुम्हारे नाम का उच्चारण करे. (२)

जीवला नाम ते माता जीवन्तो नाम ते पिता.
नद्यायं पुरुषो रिषत्. यस्मै परिब्रवीमि त्वासायंप्रातरथो दिवा (३)

हे कुष्ठ नाम की ओषधि! जीवला तेरी माता है और जीवंत तेरे पिता हैं. तुम्हारा नाम न लेने के कारण इस पुरुष की हिंसा हुई है. मैं रोग से दुखी पुरुष को तुम्हारा नाम मंत्र के रूप में प्रातः, सायं और दिन में उच्चारण हेतु बताता हूं. (३)

उत्तमो अस्योषधीनामनड्वान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव.
नद्यायं पुरुषो रिषत्. यस्मै परिब्रवीमि सायंप्रातरथो दिवा (४)

हे कुष्ठ ओषधि! जिस प्रकार गति करने वाला बैल श्रेष्ठ है उसी प्रकार ओषधियों में तुम श्रेष्ठ हो. जंगली पशुओं में बाघ जिस प्रकार श्रेष्ठ है. उसी प्रकार तुम ओषधियों में श्रेष्ठ हो. (४)

त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यस्त्रिरादित्येभ्यस्परि. त्रिर्जातो विश्वदेवेभ्यः.
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति.
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः (५)

159

हे कुष्ठ ओषधि! तुम अंगिरा गोत्रीय ऋषियों की संतान शांबु नाम के ऋषियों से तीन बार उत्पन्न हुए, आदित्यों से तीन बार उत्पन्न तथा विश्वेदेवों से तीन बार उत्पन्न कहे जाते हो. सभी रोगों की ओषधि कुष्ठ सोम के साथ स्थित होती हैं. तुम सभी रोगों तथा सभी राक्षसियों का नाश करो. (५)

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि. तत्रामृतस्य चक्षणं ततः
कुष्ठो अजायत. स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति.
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः (६)

इस भूलोक से तीसरे द्युलोक अर्थात स्वर्ग में देवों का घर पीपल का वृक्ष है. उस पीपल पर मरण रहित सोम उत्पन्न हुआ है. उस सोम से कुष्ठ ओषधि उत्पन्न हुई है. सभी रोगों की ओषधि यह कुष्ठ सोम के साथ स्थित होता है. हे कुष्ठ! तुम सभी रोगों और सभी राक्षसियों का नाश करो. (६)

हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि. तत्रामृतस्य चक्षणं ततः
कुष्ठो अजायत. स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति.
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः (७)

स्वर्ग में सोने से बनी रस्सी से बंधी हुई सोने की नाव घूमती रहती है. वहां मरणरहित सोम की उत्पत्ति हुई है. उस सोम से कुष्ठ उत्पन्न हुआ है. सभी रोगों की ओषधि यह कुष्ठ सोम के साथ स्थित रहता है. हे कुष्ठ! तुम सभी रोगों और राक्षसियों का विनाश करो. (७)

यत्र नावप्रभ्रंशनं यत्र हिमवतः शिरः. तत्रामृतस्य चक्षणं ततः
कुष्ठो अजायत. स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति.
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः (८)

जिस स्वर्ग से उत्तम कर्म करने वालों का पतन नहीं होता तथा जहां हिमवान पर्वत शीश अर्थात सब से ऊंचा शिखर है वहां अमृत की स्थिति है. उस अमृत से कुष्ठ उत्पन्न हुआ है. सभी रोगों की ओषधि कुष्ठ वहां स्वर्ग में सोम से संबंधित रहता है. हे कुष्ठ! सभी रोगों और राक्षसियों का विनाश करो. (८)

यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं वा त्वा कुष्ठ काम्यः.

यं वा वसो यमात्स्यस्तेनासि विश्वभेषजः (९)

हे कुष्ठ नाम की ओषधि! तुम को इक्ष्वाकु वंश के प्राचीन राजा जानते थे तथा तुझ को कामदेव का पुत्र जान गया था. तुम्हें वसु नाम का देवता जानता था. इस कारण तुम सभी रोगों की ओषधि हो, तुम्हें सभी रोगों के विनाश के रूप में जाना जाता है. (९)

शीर्षलोकं तृतीयकं सदन्दिर्यश्च हायनः.
तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं परा सुव (१०)

तृतीय लोक अर्थात स्वर्ग को तुम्हारा शीश कहा जाता है. वह सभी रोगों का खंडन करने वाला हो. हे सभी प्रकार की शक्तियों से युक्त कुष्ठ! तुम सभी रोगों को तथा नीचे होने वाले पतन को हम से दूर करो. (१०)

सूक्त चालीसवां देवता—विश्वेदेव, बृहस्पति

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तं जगाम.
विश्वैस्तद् देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः (१)

जो मेरे मन का छिद्र अर्थात दोष है तथा वाणी का दोष है, उसके कारण सरस्वती क्रोध से युक्त मुझ को छोड़ कर चली गई है. सभी देवों के साथ एकमत हुए बृहस्पति मेरे इन दोषों को दूर करें. (१)

मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन.
सुष्यदा यूयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधा वर्चस्वी (२)

हे जल देवता! तुम मेरी बुद्धि को भ्रष्ट मत करो. ब्रह्मा मेरे द्वारा अध्ययन किए गए वेद को भ्रष्ट न करें. मेरा जो जो कर्म सूख रहा है अर्थात नष्ट हो रहा है, उसे लक्ष्य बना कर तुम सभी ओर से उसे गीला बनाओ अर्थात सुरक्षित करो. आप सभी की अनुमति से मैं उत्तम बुद्धि वाला बनूं तथा ब्रह्म के तेज से युक्त हो जाऊं. (२)

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत् तपः.
शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः (३)

हे द्यावा पृथ्वी! तुम मेरी बुद्धि को तथा दीक्षा को नष्ट मत करो. जल देवता मेरे लिए सुखकारी हों तथा मेरी आयुवृद्धि के लिए कहें. माता के समान हितकारी जल मेरे लिए कल्याणकारी हों. (३)

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः. तामस्मे रासतामिषम् (४)

हे अश्विनीकुमारो! सभी व्यवहारों को बाधा पहुंचाने वाला अंधकार हमारे पास आए. प्रकाश वाली रात उस अंधकार का तिरस्कार करे. हमें इस प्रकार की प्रकाश युक्त रात्रि प्रदान करो. (४)

सूक्त इकतालीसवां देवता—तप

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे.
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु (१)

सृष्टि के आदि में सब के कल्याण की इच्छा करते हुए ऋषियों ने स्वर्ग प्राप्त करते हुए तप की दीक्षा प्राप्त की. उस से राष्ट्र, बल और ओज उत्पन्न हुए. देव उस राष्ट्र आदि को इस पुरुष के लिए प्रदान करें. (१)

सूक्त बयालीसवां देवता—ब्रह्म

ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः.
अध्वर्युर्ब्रह्मणो जातो ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः (१)

जगत की उत्पत्ति का कारण ब्रह्म होता है, ब्रह्म ही यज्ञ है. ब्रह्म ने उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि स्वरों का गमन निश्चित किया है. ब्रह्म से ही अध्वर्यु उत्पन्न हुए. यज्ञ का साधन हवि ब्रह्म में ही स्थित है. (१)

ब्रह्म स्रुचो घृतवतीर्ब्रह्मणा वेदिरुद्धिता.
ब्रह्म यज्ञस्य तत्त्वं च ऋत्विजो ये हविष्कृतः. शमिताय स्वाहा (२)

घृत से पूर्ण तथा होम का साधन स्रुवा भी ब्रह्म है. ब्रह्म ने ही यज्ञवेदी को खोदा है. ब्रह्म यज्ञ का तत्त्व है. हवि तैयार करने वाले ऋत्विज भी ब्रह्म ही हैं. अभेद को प्राप्त ब्रह्म के लिए आहुति उत्तम हो. (२)

अंहोमुचे प्र भरे मनीषामा सुत्राव्णे सुमतिमावृणानः.
इममिन्द्र प्रति हव्यं गृभाय सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः (३)

पापों से छुटकारा दिलाने वाले तथा भलीभांति रक्षा करने वाले इंद्र के लिए मैं उत्तम स्तुति बोलता हुआ उपासना पूर्ण करता हूं. हे इंद्र! तुम मेरा हव्य स्वीकार करो. तुम्हारी कृपा से यजमान की इच्छाएं पूर्ण हों. (३)

अंहोमुचं वृषभं यज्ञियानां विराजन्तं प्रथममध्वराणाम्.
अपां नपातमश्विना हुवे धिय इन्द्रियेण त इन्द्रियं दत्तमोजः (४)

यज्ञ के योग्य देवों में श्रेष्ठ, पाप से मुक्त कराने वाले तथा यज्ञों में प्रमुख रूप में विराजमान इंद्र का मैं आह्वान करता हूं. जलों की वर्षा करने वाले अग्नि तथा अश्विनीकुमारों का मैं आह्वान करता हूं. वे अश्विनीकुमार इंद्रियों की सामर्थ्य से तुम्हें बुद्धि, ओज और बल प्रदान करें. (४)

सूक्त तितालीसवां देवता—मंत्रों में कहे गए अग्नि आदि

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
अग्निर्मा तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे. अग्नये स्वाहा (१)

जिस स्थान में सगुण ब्रह्म के स्वरूप को जानने वाले दीक्षा और तप के द्वारा जाते हैं, अग्निदेव मुझे वहां ले जाएं. अग्निदेव मुझे बुद्धि प्रदान करें. यह आहुति अग्नि को भलीभांति प्राप्त हो. (१)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान् दधातु मे. वायवे स्वाहा (२)

सगुण ब्रह्म के स्वरूप को जानने वाले दीक्षा और तप के कारण जहां जाते हैं, वायु मुझे वहां ले जाएं तथा वायु मुझ में प्राणों का आधान करें. यह आहुति भलीभांति वायु को प्राप्त हो. (२)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः दधातु मे. सूर्याय स्वाहा (३)

सगुण ब्रह्म के स्वरूप को जानने वाले दीक्षा और तप की सहायता से जहां जाते हैं, सूर्यदेव मुझे वहां ले जाएं. सूर्यदेव मुझे नेत्र प्रदान करें. यह आहुति सूर्यदेव को भलीभांति प्राप्त हो. (३)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे. चन्द्राय स्वाहा (४)

सगुण ब्रह्म का स्वरूप जानने वाले दीक्षा और तप की सहायता से जहां जाते हैं, चंद्र मुझे वहां पहुंचाएं. चंद्र देव मुझ में मन धारण करें. यह आहुति चंद्रदेव को भलीभांति प्राप्त हो. (४)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे. सोमाय स्वाहा (५)

सगुण ब्रह्म के स्वरूप को जानने वाले दीक्षा और तप की सहायता से जहां जाते हैं, सोम मुझे वहां ले जाएं. सोम मुझे दूध प्रदान करें. यह आहुति सोम को भलीभांति प्राप्त हो. (५)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो दधातु मे. इन्द्राय स्वाहा (६)

सगुण ब्रह्म का स्वरूप जानने वाले दीक्षा और तप की सहायता से जहां जाते हैं, इंद्रदेव मुझे वहां ले जाएं. इंद्रदेव मुझ में बल धारण करें. यह आहुति इंद्र को भलीभांति प्राप्त हो. (६)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोप तिष्ठतु. अद्भ्यः स्वाहा (७)

सगुण ब्रह्म का स्वरूप जानने वाले अपनी दीक्षा और तप की सहायता से जहां जाते हैं, जल देवता मुझे वहां ले जाएं. जल देवता मुझ में अमृत धारण करें. यह

आहुति जल देवता को भलीभांति प्राप्त हो. (७)

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह.
ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे. ब्रह्मणे स्वाहा (८)

सगुण ब्रह्म का स्वरूप जानने वाले दीक्षा और तप की सहायता से जहां पहुंचते हैं, ब्रह्मा जी मुझे वहां ले जाएं. ब्रह्मा जी मुझ में ब्रह्म की उपासना करें. यह आहुति ब्रह्मा जी को भलीभांति प्राप्त हो. (८)

सूक्त चवालीसवां — देवता—आंजन, वरुण

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे.
तदाञ्जन त्वं शंताते शमापो अभयं कृतम् (१)

हे आंजन! तुम सौ वर्ष की आयु देने वाले हो. तुम प्रसन्न करने वाली ओषधि कहे जाते हो, इसलिए हे आंजन! तुम सुख रूप कहे जाते हो. हे जल के लक्ष्ण आंजन! तुम और जल देवता मुझे सुख प्रदान करें तथा अभय प्रदान करें. (१)

यो हरिमा जायान्योऽङ्गभेदो विसल्पकः.
सर्वं ते यक्ष्ममङ्गेभ्यो बहिर्निर्हन्त्वाञ्जनम् (२)

हलदी के समान पीले रंग का जो पांडु रोग कठिनता से चिकित्सा करने योग्य है, वह अंगों को भिन्न करता है और अनेक प्रकार के घाव कर देता है. यह आंजन के अंगों से सभी रोगों को बाहर निकाल कर नष्ट करे. (२)

आञ्जनं पृथिव्यां जातं भद्रं पुरुषजीवनम्.
कृणोत्वप्रमायुकं रथजूतिमनागसम् (३)

पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ आंजन कल्याण करने वाला तथा पुरुषों को जीवित करने वाला है. यह आंजन हमें मरण रहित, रथ के समान तीव्र गति वाला तथा पाप रहित करे. (३)

प्राण प्राणं त्रायस्वासो असवे मृड. निर्ऋते निर्ऋत्या नः पाशेभ्यो मुञ्च (४)

हे प्राण रूप आंजन! तुम मेरे प्राण की रक्षा करो तथा अकाल में नष्ट न होने वाला बनाओ. हे प्राणरूप आंजन! तुम प्राणों को सुखी बनाओ. हे निर्ऋति रूप आंजन! हमें निर्ऋति के फंदों से छुड़ाओ. (४)

सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां पुष्पम्.
वातः प्राणः सूर्यश्चर्दिवस्पयः (५)

हे आंजन! तुम सागर के गर्भ और बिजली के फूल हो. तुम वायु के प्राण, सूर्य के नेत्र और आकाश के जल हो. (५)

देवाञ्जन त्रैककुदं परि मा पाहि विश्वतः.
न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्याः पर्वतीया उत (६)

हे त्रिककुद पर्वत पर उत्पन्न एवं देवों के द्वारा अपनी रक्षा के लिए धारण किए जाते हुए आंजन! सभी ओर से हमारी रक्षा करो. पर्वत से अधिक ऊंचे स्थान पर उत्पन्न ओषधियां अर्थात जड़ीबूटियां तुम्हारे प्रभाव को नहीं लांघ सकतीं. (६)

वी३दं मध्यमवासृपद् रक्षोहामीवचातनः.
अमीवाः सर्वाश्चातयन् नाशयदभिभा इतः (७)

राक्षसों का विनाश करने वाला तथा रोगों को नष्ट करने वाला यह आंजन सभी रोगों का विनाश करता हुआ तथा सभी रोगों को पराजित करता हुआ प्रसिद्ध हो. (७)

बह्वी३दं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः.
तस्मात् सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः (८)

हे राजा वरुण! यह मनुष्य सवेरे से शाम तक अनेक प्रकार का असत्य भाषण करता है. इसके असत्य भाषण को क्षमा करो. हे हजारों प्रकार की शक्ति वाले आंजन! इस असत्य भाषण रूप बाण से हमें सभी ओर से छुड़ाओ. (८)

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति यदूचिम.
तस्मात् सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः (९)

हे वरुण! हम ने जो कहा था, तुम जल के स्वामी होने के कारण उसे जानते हो. हे गायो! तुम मेरे चित्त को जानती हो. हे वरुण! मैं ने जो कहा है, उसे तुम जानते हो. हे हजार गुणी शक्ति वाले आंजन! हमें उस पाप से मुक्ति दिलाओ. (९)

मित्रश्च त्वा वरुणश्चानुप्रेयतुराञ्जन.
तौ त्वानुगत्य दूरं भोगाय पुनरोहतुः (१०)

हे आंजन! मित्रदेव और वरुण देव तुम्हारे पीछेपीछे भूमि पर पहुंचे तथा बाद में स्वर्ग को गए. तुम सुख का उपभोग करने के लिए उन्हें लाओ. (१०)

सूक्त पैंतालीसवां देवता—आंजन

ऋणादृणमिव संनयन् कृत्यां कृत्याकृतो गृहम्.
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणाञ्जन (१)

हे आंजन! जिस प्रकार ऋण लेने वाला धन ऋण दाता को लौटा देता है, उसी तरह मुझे पीड़ा पहुंचाने वाली कृत्या नाम की राक्षसी को उसी के घर भेज दो, जिस ने उसे मेरे पास भेजा है. हे आदित्य के चक्षु आंजन! दुष्ट हृदय वालों के समीपवर्तियों का भी विनाश करो. (१)

637/53

यदस्मासु दुष्वप्न्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे.
अनामगस्तं च दुर्हार्दः प्रियः प्रति मुञ्चताम् (२)

हमारे पुत्र, पौत्र आदि में जो बुरा स्वप्न है, हमारी गायों से संबंधित जो बुरा स्वप्न है, हमारे घर में स्थित दास आदि का जो बुरा स्वप्न है, उसे नाम रहित शत्रुओं के लिए छोड़ दो. (२)

अपामूर्ज ओजसो वावृधानमग्नेर्जातमधि जातवेदसः.
चतुर्वीरं पर्वतीयं यदाञ्जनं दिशः प्रदिशः करदिच्छिवास्ते (३)

हे जल के सार, ओज को बढ़ाने वाले तथा जातवेद अग्नि से उत्पन्न तथा त्रिककुद नाम के पर्वत पर जन्म लेने वाले आंजन! मेरे लिए दिशाओं और प्रदिशाओं को मंगलकारी बनाओ. (३)

चतुर्वीरं बध्यत आञ्जनं ते सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु.
ध्रुवस्तिष्ठासि सवितेव चार्य इमा विशो अभि हरन्तु ते बलिम् (४)

हे रक्षा रूपी फल की कामना करने वाले पुरुष! तेरे हाथ में चारों दिशाओं में शक्ति का प्रदर्शन करने वाली आंजन मणि रूपी ओषधि अर्थात जड़ी बांधी जाती है. इस मणि को धारण करने से तेरी दिशाएं और प्रदिशाएं भय रहित हो जाएं. हे अधिकार संपन्न आंजन! तुम सूर्य के समान चारों दिशाओं को प्रकाशित करते हुए स्थिर रूप में रहो. ये सभी दिशाएं तुम्हें बल प्रदान करें. (४)

आक्ष्वैकं मणिमेकं कृण्वुष्व स्नाह्येकेना पिबैकमेषाम्.
चतुर्वीरं नैर्ऋतेभ्यश्चतुर्भ्यो ग्राह्या बन्धेभ्यः परि पात्वस्मान् (५)

हे पुरुष! एक आंजन को अपनी आंख में धारण करो तथा दूसरे आंजन को मणि बनाओ. एक आंजन से स्नान करो. इस प्रकार पर्वत की तीन चोटियों पर उत्पन्न तीन आंजनों का उपयोग करो. ये तीनों वहां धारण की जाएं. इस का ज्ञान न कर के इच्छानुसार इन का प्रयोग करो. चार शक्तियों वाले इस आंजन को ग्रहण करने के योग्य ओषधि अर्थात जड़ीबूटी के साथ निर्ऋति देवता से संबंधित बंधनों से हमारी रक्षा करो. (५)

अग्निर्माग्निनावतु प्राणायापानायुषे वर्चस
ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा (६)

अग्नि अपने अग्नित्व धर्म के द्वारा मेरी रक्षा करें. अग्नि प्राण की स्थिरता के लिए, अपान की स्थिरता के लिए, आयु की वृद्धि के लिए, वेद के अध्ययन से उत्पन्न तेज के लिए, बल के लिए, शरीर की कांति के लिए, कुशल के लिए तथा शोभन संपत्ति के लिए मेरी रक्षा करें. यह आहुति भलीभांति अग्नि को प्राप्त हो.(६)

इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस
ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा (७)

इंद्र अपनी असाधारण शक्ति से मेरी रक्षा करें. इंद्र प्राण की स्थिरता के लिए, अपान की स्थिरता के लिए, आयु की वृद्धि के लिए, शरीर की कांति के लिए, कुशल के लिए तथा शोभन संपत्ति के लिए मेरी रक्षा करें. यह आहुति भलीभांति इंद्र को प्राप्त हो. (७)

सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस
ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा (८)

सोम अपनी शक्ति प्राण की स्थिरता के लिए, अपान की स्थिरता के लिए, आयु की वृद्धि के लिए, शरीर की कांति के लिए, कुशल के लिए तथा शोभन संपत्ति के लिए मेरी रक्षा करें. यह आहुति सोम को भलीभांति प्राप्त हो. (८)

भगो मा भगेनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा (९)

भगदेव अपनी शक्ति से प्राण की स्थिरता के लिए, अपान की स्थिरता के लिए, आयु की वृद्धि के लिए, शरीर की कांति के लिए, कुशल के लिए तथा शोभन संपत्ति के लिए मेरी रक्षा करें. यह आहुति कामदेव को भलीभांति प्राप्त हो. (९)

मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायापानायायुषे वर्चस
ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा (१०)

मरुत अपने गणों के साथ प्राण की स्थिरता के लिए, अपान की स्थिरता के लिए, आयु की वृद्धि के लिए, शरीर की क्रांति के लिए, कुशल के लिए तथा शोभन संपत्ति के लिए मेरी रक्षा करें. यह आहुति मरुत देव को भलीभांति प्राप्त हो. (१०)

सूक्त छियालीसवां देवता—आस्तृत मणि

प्रजापतिष्ट्वा बध्नात् प्रथममस्तृतं वीर्याय कम्.
तत् ते बध्नाम्यायुषे वर्चस ओजसे च बलाय चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु (१)

हे आस्तृत मणि! सृष्टि के आदि से प्रजापति ने तुम्हें वीरता पूर्ण काम के लिए बांधा था. शत्रु तुम्हें बाधा नहीं पहुंचा सकते. हे पुरुष! आयु वृद्धि के लिए, दीप्ति के लिए, ओज के लिए तथा बल के लिए मैं तेरे हाथ में शत्रुओं का उपद्रव शांत करने वाली मणि को बांधता हूं. यह मणि तुम्हारी रक्षा करे. (१)

ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादमस्तृतेमं मा त्वा दभन् पणयो यातुधानाः.

इन्द्र इव दस्यूनव धूनुष्व पृतन्यतः सर्वाञ्छत्रून् वि षहस्वास्तृतस्त्वाभि रक्षतु (२)

हे आस्तृत मणि! तुम सावधानी पूर्वक इस धारणकर्ता की रक्षा करती हुई सर्वदा जागरूक रहो. यातुधान अर्थात राक्षस एवं पणि नाम के असुर तुम्हारी हिंसा न करें. इंद्र ने जिस प्रकार अपने शत्रुओं को रण से भगाते हुए कंपित किया था, उसी प्रकार तुम लुटेरों को कंपित करो. जो संग्राम की इच्छा करते हैं उन सभी शत्रुओं को विशेष रूप से पराजित करो. आस्तृत मणि तुम्हारी रक्षा करे. (२)

शतं च न प्रहरन्तो निघ्नन्तो न तस्तिरे.
तस्मिन्निन्द्रः पर्यदत्त चक्षुः प्राणमथो बलमस्तृतस्त्वाभि रक्षतु (३)

सैकड़ों शत्रु शस्त्र आदि से प्रहार करते हुए तथा प्राणों से हीन करते हुए हिंसा न कर सकें. इंद्र ने शत्रुओं द्वारा हिंसित न होने वाली आस्तृत मणि के मध्य चक्षु, प्राण तथा बल पूर्ण किया. आस्तृत मणि तुम्हारी रक्षा करे. (३)

इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयामो यो देवानामधिराजो बभूव.
पुनस्त्वा देवाः प्र णयन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वाभि रक्षतु (४)

हे आस्तृत मणि! मैं तुम्हें इंद्र के कवच से आच्छादित करता हूं. वे इंद्र देवों के राजा हुए. सभी देव तुझे अपने कार्यों की सिद्धि के लिए अपनेअपने कवचों से आच्छादित करें. हे आस्तृत मणि! सब देव तुम्हारी रक्षा करें. (४)

अस्मिन् मणावेकशतं वीर्याणि सहस्रं प्राणा अस्मिन्नस्तृते. व्याघ्रः
शत्रूनभि तिष्ठ सर्वान् यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्त्वस्तृतस्त्वाभि रक्षतु (५)

इंद्र के कवच से सुरक्षित होने के कारण इस आस्तृत मणि के एक सौ एक सामर्थ्य हैं तथा हजारों प्राण अर्थात बल हैं. तुम बाघ के समान सभी शत्रुओं पर आक्रमण कर के उन्हें पराजित करने में समर्थ बनो. मेरा जो शत्रु तुझ मणि से युद्ध करने की इच्छा करे, वह पराजित हो. हे आस्तृत मणि! सब देव तुम्हारी रक्षा करें. (५)

घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पयस्वान्त्सहस्रप्राणः शतयोनिर्वयोधाः.
शंभूश्च मयोभूश्चोर्जस्वांश्च पयस्वांश्चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु (६)

ऊपर के भाग में घी से लिए हुए, शहद से युक्त, दूध से संपन्न, सभी देवों से अनुगृहीत होने के कारण हजारों शक्तियों से पूर्ण, इंद्र के कवच से सुरक्षित होने के कारण सौ बलों से संपन्न, मणि धारक पुरुष को अन्न प्रदान करने वाले, सुख देने वाले, सुविधा प्रदान करने वाले, अन्न के दाता तथा दूध आदि देने वाले आस्तृत नाम की इस मणि की सभी देव रक्षा करें. (६)

यथा त्वमुत्तरोऽसो असपत्नः सपत्नहा.
सजातानामसद् वशी तथा त्वा सविता करदस्तृतस्त्वाभि रक्षतु (७)

हे साधक! तुम सब से श्रेष्ठ बनो. कोई तुम्हारा शत्रु न बने तथा तुम सभी शत्रुओं का विनाश करो. तुम अपने सजातीय जनों के मध्य में दूसरों को वश में करने वाले बनो. सविता देव मणि बांधने वाले तुम को इसी प्रकार का करें. आस्तृत मणि तुम्हारी रक्षा करे. (७)

सूक्त सैंतालीसवां देवता—रात्रि

आ रात्री पार्थिवं रजः पितुरप्रायि धामभिः.
दिवः सदांसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः (१)

हे रात्रि! तुम ने अपने अंधकारों से पृथ्वी लोक तथा पितरों के लोक स्वर्ग को पूर्ण कर दिया है. महती रात्रि द्युलोक के स्थानों को विशेष रूप ये व्याप्त करती है. नील वर्ण का अंधकार सब को व्याप्त करता है. (१)

न यस्याः पारं ददृशे न योयुवद् विश्वमस्यां नि विशते यदेजति.
अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि (२)

रात का पार दिखाई नहीं देता है. लोक व्यापिनी रात्रि में चराचर विश्व एकाकार ही हो जाता है, अलगअलग दिखाई नहीं देता है. जगत कांपता है, तथा प्राणी इस रात्रि में इधरउधर जाने में असमर्थ हो जाते हैं. हे अंधकार वाली रात्रि! सर्प, बाघ, चोर आदि की बाधा से रहित हम तेरे अंतिम नाम अर्थात प्रातःकाल को प्राप्त करें. हे कल्याणकारिणी रात्रि! हम कल्याण को प्राप्त करें. (२)

ये ते रात्रि नृचक्षसो द्रष्टारो नवतिर्नव.
अशीतिः सन्त्यष्टा उतो ते सप्त सप्ततिः (३)

हे रात्रि! मनुष्यों के कर्म फल के देखने वाले तुम्हारे जो निन्यानवे गण देवता हैं, अठासी गण देवता हैं तथा सतहत्तर गण देवता हैं, वे तुम्हारी महिमा का विस्तार करते हैं. (३)

षष्टिश्च षट् च रेवति पञ्चाशत् पञ्च सुम्नयि.
चत्वारश्चत्वारिंशच्च त्रयस्त्रिंशच्च वाजिनि (४)

हे धन प्रदान करने वाली रात्रि! छियासठ और पचपन जो गण देवता हैं, हे सुख देने वाली रात्रि! चवालीस जो गण देवता हैं, हे अन्न प्रदान करने वाली रात्रि! तैंतीस जो गण देवता हैं, वे तुम्हारी महिमा का विस्तार करते हैं. (४)

द्वौ च ते विंशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः.
तेभिर्नो अद्य पायुभिर्नु पाहि दुहितर्दिवः (५)

हे रात्रि! तुम्हारे जो बाईस और ग्यारह गण देवता हैं तथा इस से कम संख्या वाले जो गण देवता हैं, हे द्युलोक की पुत्री रात्रि! इस समय उन रक्षक गण देवों के

साथ हमारी रक्षा करो. (५)

रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत.
मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत (६)

हे रात्रि! हमारा पालन करो, पाप कर्म करने की बात कहने वाला कोई भी हमें बाधा पहुंचाने में समर्थ न हो. दुष्टता पूर्ण वचन बोलने वाला हमें बाधा न पहुंचाए. हे रात्रि! आज चोर हमारी सभी गायों को चुराने में समर्थ न हो. भेड़िया हमारी भेड़ों का बलपूर्वक अपहरण करने में समर्थ न हो. (६)

माश्वानां भद्रे तस्करो मा नृणां यातुधान्यः. परमेभिः पथिभि स्तेनो
धावतु तस्करः. परेण दत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु (७)

हे भली रात्रि! चोर हमारे घोड़ों को चुराने में समर्थ न हो तथा यातुधान हमारे पुत्रों आदि के स्वामी न बन सकें. चोर और तस्कर अति दूर मार्गों से अपने साधनों द्वारा दूर भाग जाएं. दांतों वाली रस्सी के समान विशाल सर्प दूर भाग जाएं. दूसरों की हिंसा करने के इच्छुक हम से दूर चले जाएं. (७)

अध रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु.
हनू वृकस्य जम्भयास्तेन तं द्रुपदे जहि (८)

हे रात्रि! प्यास उत्पन्न करने वाले तथा धुआं छोड़ने वाले सर्प को तुम बिना शीश वाला बनाओ अर्थात मार डालो. दृढ़ दाढ़ों के कारण दूसरों का भक्षण करने वाले भेड़ियों को टूटी हुई ठोड़ी वाला बना कर नष्ट करो. हे सर्वत्र व्याप्त रात्रि उस भेड़िए को मारो. (८)

त्वयि रात्रि वसामसि स्वपिष्यामसि जागृहि.
गोभ्यो नः शर्म यच्छाश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः (९)

हे रात्रि! हम तुझ में निवास करते हैं. हम रात्रि के समय सोते हैं, पर तुम जाग्रत रहो. तुम हमारी गायों को, घोड़ों को तथा परिवारी जनों को सुख प्रदान करो. (९)

सूक्त अड़तालीसवां — देवता—रात्रि

अथो यानि च यस्मा ह यानि चान्तः परीणहि.
तानि ते परि दद्मसि (१)

मुझ से संबंधित जो बाहरी वस्तुएं गोचर तथा खुले प्रदेश में हैं तथा जो आसपास के घरों में विद्यमान हैं, मैं वे सभी वस्तुएं तुझे देता हूं. (१)

रात्रि मातरुषसे नः परि देहि.
उषा नो अह्ने परि ददात्वहस्तुभ्यं विभावरि (२)

हे माता रात्रि! हमें उषा:काल को प्रदान करो तथा उषा:काल हमें दिन को प्रदान करे. हे रात्रि! दिन हमें तुम को प्रदान करें. (२)

यत् किं चेदं पतयति यत् किं चेदं सरीसृपम्.
यत् किं च पर्वतायासत्वं तस्मात् त्वं रात्रि पाहि नः (३)

जो पक्षी आदि आकाश में संचरण करते हैं, जो धरती पर सरकने वाले सर्प आदि हैं, जो पर्वत संबंधी जीव—जंतु हैं, हे रात्रि उन से हमारी रक्षा करो. (३)

सा पश्चात् पाहि सा पुरः सोत्तरादधरादुत.
गोपाय नो विभावरि स्तोतारस्त इह स्मासि (४)

हे पूर्व उक्त लक्षणों वाली रात्रि! तुम पश्चिम दिशा में, पूर्व दिशा में, उत्तर दिशा में तथा दक्षिण दिशा में हमारी रक्षा करो. हे रात्रि! हमारी रक्षा करो. हम इस समय तुम्हारी स्तुति करने वाले हों. (४)

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति.
पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति ते नः पशुषु जाग्रति (५)

जो मनुष्य रात्रि के समय अर्चनपूजन आदि अनुष्ठान करते हैं तथा जो भवन संबंधी प्राणियों के कारण जागते हैं, जो सभी पशुओं की रक्षा करते हैं, वे हमारे तथा हमारे पुत्र आदि की रक्षा के लिए जागते हैं, वे पशुओं की रक्षा के लिए भी जागें. (५)

वेद वै रात्रि ते नाम घृताची नाम वा असि.
तां त्वां भरद्वाजो वेद सा नो वित्तेऽधि जाग्रति (६)

हे रात्रि! मैं तेरे नामों को जानता हूं. तू दीप्तिमती नाम वाली है. ऐसी तुझ रात्रि को भरद्वाज जानते हैं. वह रात्रि हमारे धन की रक्षा के लिए जागृत रहे. (६)

सूक्त उनन्चासवां — देवता—रात्रि

इषिरा योषा युवतिर्दमूना रात्री देवस्य सवितुर्भगस्य.
अश्वक्षभा सुहवा संभृतश्रीरा पप्रौ द्यावापृथिवी महित्वा (१)

सब के द्वारा प्रार्थनीय, यौवन वाली तथा श्रेष्ठ मन वाली रात्रि सभी के प्रेरक सविता और भगदेव की पत्नी है. यह अपने विषय में चक्षु आदि इंद्रियों का तिरस्कार करती है. यह उत्तम हवन करने योग्य तथा संपूर्ण कांति वाली रात्रि अपने महत्त्व से द्यावा और पृथ्वी को पूर्ण करती है. (१)

अति विश्वान्यरुहद् गम्भीरो वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः.
उशती रात्र्यनु सा भद्राभि तिष्ठते मित्र इव स्वधाभिः (२)

जिस में प्रवेश करना कठिन है, ऐसी रात्रि सभी चराचर वस्तुओं को व्याप्त कर के वर्तमान है. इस अतिशय अन्न वाली रात्रि की सब स्तुति करते हैं. यह वन, पर्वत, सागर आदि को व्याप्त कर के स्थित है. यजमान आदि के द्वारा प्रदत्त अन्न आदि साधनों से सूर्य जिस प्रकार अपने तेज से प्रतिक्षण विश्व को आक्रांत करते हैं, उसी प्रकार यह रात्रि भी जगत पर छा जाती है. (२)

वर्ये वन्दे सुभगे सुजात आजगन् रात्रि सुमना इह स्याम्.
अस्मांस्त्रायस्व नर्याणि जाता अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या (३)

हे न रुकने वाले प्रभाव वाली, सभी के द्वारा स्तुति की गई, सौभाग्य वाली तथा भलीभांति उत्पन्न रात्रि! तुम आ गई हो. तुम्हारे आने पर मैं सुंदर मन वाला बनूं. मेरा पालन करो तथा उत्पन्न वस्तुओं को, मनुष्यों की हितकारी वस्तुओं को तथा पुष्ट करने वाली गाय आदि जो हितकारी वस्तुएं हैं, उन की रक्षा करो. (३)

सिंहस्य रात्र्युशती पींषस्य व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ ददे.
अश्वस्य ब्रध्नं पुरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि कृणुषे विभाती (४)

इच्छा करती हुई यह रात्रि सिंह, हाथी, गैंडा, बाघ आदि के तेजों का अपहरण करती है. यह अश्व के वेग को तथा पुरुष के शब्द को खींच लेती है. हे रात्रि! तुम दीप्तिमती हो कर नाना प्रकार के रूप धारण करती हो. (४)

शिवां रात्रिमनुसूर्यं च हिमस्य माता सुहवा नो अस्तु.
अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु (५)

हे रात्रि! मैं कल्याण करने वाली तेरी तथा सूर्य की वंदना करता हूं. तुषार की माता रात्रि हमारे उत्तम आह्वान का विषय हो. हे सौभाग्यशालिनी रात्रि! तुम इस समय किए जाते हुए हमारे स्तोत्र को जानो. इस स्तोत्र के द्वारा हम सभी दिशाओं में तेरी वंदना करते हैं. (५)

स्तोमस्य नो विभावरि रात्रि राजेव जोषसे.
आसाम सर्ववीरा भवाम सर्ववेदसो व्युच्छन्तीरनूषसः (६)

हे प्रकाशित होती हुई रात्रि! जिस प्रकार राजा स्तोताओं के द्वारा की जाती हुई स्तुति को ध्यानपूर्वक सुनता है, उसी प्रकार तुम हमारी स्तुतियों को सावधान हो कर सुनो. अंधकार का विनाश करती हुई एवं उषाःकाल के पश्चात आती हुई रात्रि की कृपा से हम वीर पुत्रों, पौत्रों और सेवकों वाले बनें तथा सभी प्रकार के धन से संपन्न हों. (६)

शम्या ह नाम दधिषे मम दिप्सन्ति ये धना.
रात्रीहि तानसुतपा य स्तेनो न विद्यते यत् पुनर्न विद्यते (७)

हे रात्रि! तुम शम्या अर्थात शत्रु के बल को शांत करने वाला नाम धारण करती

हो. जो शत्रु मेरे धनों का अपहरण करने की इच्छा करते हैं, हे रात्रि! तुम उन शत्रुओं के प्राणों को संतप्त करती हुई आओ. मेरा विरोधी जो दिखाई दे रहा है, वह पुनः दिखाई न दे. (७)

भद्रासि रात्रि चमसो न विष्टो विष्वङ् गोरूपं युवतिर्बिभर्षि.
चक्षुष्मती मे उशती वपूंषि प्रति त्वं दिव्या न क्षाममुक्थाः (८)

हे रात्रि! तुम चम्मच के समान कल्याण रूपा हो. तुम सर्वत्र व्याप्त यौवन वाली गाय का रूप धारण करती हो. हमारा पोषण करने की कामना करती हुई एवं देखने की शक्ति से संपन्न तुम मेरे तथा मेरे पुत्र आदि के शरीरों की रक्षा करो. जिस प्रकार दिव्य पुरुष शरीर का त्याग नहीं करते, उसी प्रकार तुम धरती को मत छोड़ो. (८)

यो अद्य स्तेन आयत्यघायुर्मर्त्यो रिपुः.
रात्री तस्य प्रतीत्य प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत् (९)

इस समय जो चोर, हिंसा करने वाला तथा मरणधर्मा शत्रु आता है, हे सुंदर रूप वाली रात्रि! मेरे समीप आने वाले शत्रु के समीप जा कर उस की जिह्वा और शीश को काट दो. (९)

प्र पादौ न यथायति प्र हस्तौ न यथाशिषत्. यो मलिम्लुरुपायति स
संपिष्टो अपायति. अपायति स्वपायति शुष्के स्थाणावपायति (१०)

हे रात्रि! तुम मेरे शत्रु के पैरों को इस प्रकार काट दो कि वह फिर आने योग्य न रहे. तुम उस के हाथों को इस प्रकार काट दो जिस से वह मेरा आलिंगन न कर सके. जो चोर मेरे समीप आता है. उसे इस प्रकार पीस दो कि वह मुझ से दूर चला जाए. वह भलीभांति पूर्ण रूप से चला जाए. वह मेरे पास से जा कर सूखे खंभे का आश्रय प्राप्त करे. (१०)

सूक्त पचासवां — देवता—रात्रि

अध रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु.
अक्षौ वृकस्य निर्जह्यास्तेन तं द्रुपदे जहि (१)

हे रात्रि! जिस सर्प की धुएं के समान सांस कष्टदायक है, उस का सिर काट दो. भेड़िए को नेत्रहीन कर के वृक्ष के नीचे मार डालो. (१)

ये ते रात्र्यनड्वाहस्तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाशवः.
तेभिर्नो अद्य पारयाति दुर्गाणि विश्वहा (२)

हे रात्रि! तुम्हारे वाहन जो नुकीले सींगों वाले तथा अत्यधिक शीघ्र चलने वाले बैल हैं, उन के द्वारा हमें सभी रात्रियों के सभी अनर्थों से पार कराओ. (२)

रात्रिंरात्रिमरिष्यन्तस्तरेम तन्वा वयम्.

गम्भीरमप्लवा इव न तरेयुररातयः (३)

सभी रात्रियों में गमन करते हुए हम शरीर से पुनः पौत्र आदि के साथ रात्रि को पार करें. हमारे शत्रु नदी पार करने के साथ नाव आदि से हीन पुरुषों के समान रात्रि को पार न कर पाएं अर्थात रात्रि में ही नष्ट हो जाएं. (३)

यथा शाम्याकः प्रपतन्नपवान् नानुविद्यते.
एवा रात्रि प्र पातय यो अस्माँ अभ्यघायति (४)

जिस प्रकार सवां अन्न पकने पर गिरता हुआ सारहीन हो जाता है तथा बिलकुल नहीं बचता, हे रात्रि! जो हमारे प्रति हिंसा करने की इच्छा रखता है, उसे उसी प्रकार गिरा दो. (४)

अप स्तेनं वासो गोअजमुत तस्करम्.
अथो यो अर्वतः शिरोऽभिधाय निनीषति (५)

जो चोर हमारे वस्त्र, गायें तथा बकरियां ले जाना चाहते हैं तथा जो हमारे घोड़ों के सिरों को रस्सी से बांध कर ले जाना चाहते हैं, उन्हें दूर भगाओ. (५)

यदद्या रात्रि सुभगे विभजन्त्ययो वसु.
यदेतदस्मान् भोजय यथेदन्यानुपायसि (६)

162

हे सौभाग्यशालिनी रात्रि! आज जो चोर स्वर्ण आदि धातुओं का अपहरण करते हैं, उस धन को हमारे उपभोग का साधन बनाओ. इस से शत्रु द्वारा छीने गए हमारे घोड़े, हाथी भी हमें प्राप्त हो जाएं. (६)

उषसे नः परि देहि सर्वान् रात्र्यनागसः.
उषा नो अह्ने आ भजादहस्तुभ्यं विभावरि (७)

हे रात्रि! हम सभी स्तुतिकर्ताओं तथा पशुओं, पुत्रों, मित्र आदि को रक्षण के लिए उषा को प्रदान करो. हे विभावरी! उषः हम सब को दिन प्रदान करे तथा दिन पुनः तुम्हें प्राप्त करे. (७)

सूक्त इक्यावनवां — देवता—आत्मा, सविता

अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रमयुतो मे.
प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे व्यानोऽयुतोऽहं सर्वः (१)

कर्म का अनुष्ठान करने का इच्छुक मैं पूर्ण हूं. मेरा शरीर पूर्ण है, मेरी आत्मा पूर्ण है, मेरे नेत्र, कान, मेरी प्राण वायु, मेरी अपान वायु तथा मेरी व्यान वायु पूर्ण है. इस प्रकार मैं सभी दृष्टि से पूर्ण हूं. (१)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रसूत आ रभे (२)

हे कर्म! मैं सब के प्रेरक सविता देव की आज्ञा से, अश्विनीकुमारों की भुजाओं

से तथा पूषा देव के हाथों से तेरा आरंभ करता हूं. (२)

सूक्त बावनवां

देवता—काम

कामस्तदग्रे समवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्.
स काम कामेन बृहता सयोनी रायस्पोषं यजमानाय धेहि (१)

इस वर्तमान सृष्टि के पहले परमेश्वर के मन में काम भलीभांति व्याप्त हो गया. माया में विलीन अंत:करण में वही काम बीज बना. हे काम! सारे संसार का निर्माण करने के लिए उत्पन्न किए गए तुम महान परमेश्वर के द्वारा समान कारण बने. हे काम! तुम यजमान को धन की अधिकता प्रदान करो. (१)

त्वं काम सहसासि प्रतिष्ठितो विभुर्विभावा सख आ सखीयते.
त्वमुग्रः पृतनासु सासहिः सह ओजो यजमानाय धेहि (२)

हे काम! तुम अपने सामर्थ्य से प्रतिष्ठित हो. हे व्यापक एवं विशेष दीप्ति वाले! तुम हमारे प्रति मित्र के समान आचरण करते हो. हे काम! तुम क्रोधित होने पर शत्रु सेनाओं को सहन करते हो. तुम यजमान को ऐसा बल प्रदान करो जो शत्रु को पराजित करने में समर्थ हो. (२)

दूराच्चकमानाय प्रतिपाणायाक्षये.
आस्मा अशृण्वन्नाशाः कामेनाजनयन्त्स्वः (३)

अति दुर्लभ फल की इच्छा करने वाले मुझ को सभी ओर से रक्षा करने के लिए तथा अनिष्ट के निवारण के लिए सभी दिशाएं काम के सहयोग से सुख उत्पन्न करें. (३)

कामेन मा काम आगन् हृदयाद् हृदयं परि.
यदमीषामदो मनस्तदैतूप मामिह (४)

फल विषयक इच्छा से काम मेरे समीप आए. ब्राह्मणों का फल प्राप्त करने वाला मन भी मुझे प्राप्त हो. (४)

यत्काम कामयमाना इदं कृण्मसि ते हविः.
तन्नः सर्वं समृध्यतामथैतस्य हविषो वीहि स्वाहा (५)

हे काम! जिस फल की इच्छा करते हुए हम तेरे लिए हवि प्रदान करते हैं, उस हवि का तुम भक्षण करो. यह हवि तुम्हें भलीभांति प्राप्त हो. हम ने जो कामना की है, यह सभी प्रकार से पूर्ण हो. (५)

सूक्त तिरेपनवां

देवता—काल

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः.
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा (१)

सात किरणों अथवा रस्सियों वाला, हजार नेत्रों वाला, वृद्धावस्था रहित तथा अत्यधिक वीर्य से युक्त कालरूपी घोड़ा रथ को खींचता है. सभी लोक उस के चक्र अर्थात पहिए हैं. विद्वान पुरुष उस रथ पर सवार होते हैं. (१)

सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः.
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः (२)

यह काल रूप परमात्मा क्रम से पहियों के समान सात ऋतुओं को धारण करता है. इस संवत्सर रूप काल की सात नाभियां हैं और इस के अक्ष अर्थात अरे नष्ट न होने वाले हैं. वह संवत्सर रूप काल उन सात भुवनों तथा इन में रहने वाले प्राणियों को व्यक्त करता हुआ सब से पहले उत्पन्न एवं दिव्य है. (२)

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः.
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ् कालं तमाहुः परमे व्योमन् (३)

यह ब्रह्मांड रूप भरा हुआ कुंभ अर्थात घड़ा संवत्सर रूपी काल पर रखा हुआ है. संत अर्थात ज्ञानी पुरुष उस काल के दिवस, रात्रि आदि अनेक रूपों को देखते हैं. यह काल रूप परमात्मा सभी उपस्थित प्राणियों के सामने प्रकट होता है तथा उन्हें अपने में मिला लेता है. इस काल को आकाश के समान निर्लेप कहा जाता है. (३)

स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्यैत्.
पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमस्ति तेजः (४)

वही काल सब भुवनों को उत्पन्न करता है. वही काल सब भुवनों में व्याप्त होता है. वही काल इन भुवनों को उत्पन्न करने वाला पिता होता हुआ पुत्र भी होता है. उस काल के अतिरिक्त कोई भी तेज महान नहीं है. (४)

कालोऽमूं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरुत.
काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते (५)

काल रूप परमात्मा ने इस द्युलोक अर्थात स्वर्ग को जन्म दिया. काल ने उन पृथ्वियों को उत्पन्न किया. काल में ही यह भूत, भविष्य एवं वर्तमान विश्व चेष्टा करता है. (५)

कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः.
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति (६)

काल ने भवनों वाले संसार को उत्पन्न किया है. काल की प्रेरणा से ही सूर्य संसार को प्रकाशित करता है. सभी प्राणी काल में ही वर्तमान रहते हैं. चक्षु आदि इंद्रियां अपना काम करती हैं. (६)

काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम्.
कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः (७)

काल में मन, प्राण तथा नाम व्याप्त हैं. ये सब प्रजाएं वसंत आदि रूप काल के कारण प्रसन्न रहती है. (७)

काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम्.
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः (८)

काल में तप, काल में संसार का कारण हिरण्य गर्भ व्याप्त है. काल में ही अंगो सहित वेद व्याप्त था. काल ही सब का स्वामी है. काल ही प्रजाओं का ईश्वर और पिता था. (८)

तेनेषितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम्.
कालो ह ब्रह्म भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम् (९)

काल ने इस संसार को बनाने की इच्छा की. काल से उत्पन्न जगत काल में ही प्रतिष्ठित हुआ. काल ही बल बन कर परमेष्ठी ब्रह्म को धारण करता है. (९)

कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम्.
स्वयम्भूः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत (१०)

काल ने प्रजाओं को उत्पन्न किया. काल ने सृष्टि के आरंभ में प्रजापति को उत्पन्न किया. काल से ही स्वयंभू ब्रह्मा और कश्यप ऋषि उत्पन्न हुए. तेज भी काल से ही उत्पन्न हुआ. (१०)

सूक्त चौअनवां — देवता—काल

कालादापः समभवन् कालाद् ब्रह्म तपो दिशः.
कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः (१)

काल से जलों की उत्पत्ति हुई. काल से ब्रह्म अर्थात यज्ञ आदि कर्म, चांद्रायण आदि तप तथा पूर्व आदि दिशाएं उत्पन्न हुईं. काल के कारण ही सूर्य उदय होता है तथा काल में ही अस्त हो जाता है. (१)

कालेन वातः पवते कालेन पृथिवी मही. द्यौर्मही काल आहिता (२)

काल के कारण वायु चलती है. काल के कारण पृथ्वी महिमामयी है. द्युलोक काल से महिमामय है तथा काल के आश्रित है. (२)

कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत् पुरा.
कलादृचः समभवन् यजुः कालादजायत (३)

पहले काल से भूत, भविष्य, पुत्र तथा ऋचाएं उत्पन्न हुईं. काल से ही यजुर्वेद का जन्म हुआ. (३)

कालो यज्ञं समैरयद्देवेभ्यो भागमक्षितम्.
काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः (४)

काल ने यज्ञ को देवताओं के भाग के रूप में प्रकट किया. काल में गंधर्व, अप्सराएं एवं सब लोक प्रतिष्ठित हैं. (४)

कालेऽयमीङ्गरा देवोऽथर्वा चाधि तिष्ठतः. इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्यांश्च लोकान् विधृतीश्च पुण्याः. सर्वाल्लोकानभिजित्य ब्रह्मणा कालः स ईयते परमो नु देवः (५)

ये अंगिरा देव और अथर्वा ऋषि अधिष्ठित हैं. इस लोक को, परलोक को, पुण्य लोकों को, दुखरहित लोकधारकों को, सभी कहे गए और बिना कहे गए लोकों को यह ब्रह्म रूप काल व्याप्त कर के उत्तम कालदेव सभी स्थावर और जंगम जगत को उत्पन्न करता है. (५)

सूक्त पचपनवां देवता—अग्नि

रात्रिंरात्रिमप्रयातं भरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै.
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम (१)

हे अग्निदेव! तुम यज्ञ के साधन के रूप में गार्हपत्य आदि यज्ञशालाओं में वर्तमान हो. जिस प्रकार घोड़े को घास दी जाती है, उसी प्रकार तुम्हारे लिए हम यह खाने योग्य हवि रातदिन प्रदान करते हुए अन्न और धन से प्रसन्न होते हुए तुम्हारा सामीप्य प्राप्त करें तथा हमें नाश की प्राप्ति न हो. (१)

या ते वसोर्वात इषुः सा त एषा तया नो मृड.
रासस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम (२)

हे निवास करने वाले अग्निदेव! तुम्हारी तथा अन्य देवों की जो कृपामयी बुद्धि है, अपनी इस बुद्धि से हमारी रक्षा करो. धन और अन्न से प्रसन्न होते हुए हम तुम्हारा सामीप्य प्राप्त करें और हम नाश को प्राप्त न हों. (२)

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातःप्रातः सौमनसस्य दाता.
वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम (३)

गृहपति द्वारा आधान की गई अग्नि सायं और प्रातः तथा सभी कालों में सुख को देने वाली हो. हे अग्नि! तुम सभी प्रकार के धनों को देने वाली बनो. तुम्हें हवि के द्वारा प्रदीप्त करते हुए हम पुत्र, मित्र आदि सभी के शरीरों को पुष्ट करें. (३)

प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता.
वसोर्वसोर्वसुदान एधीन्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम (४)

हे गृहपति द्वारा आधान की गई अग्नि! तुम सायं और प्रातः हमें सुख देने वाली बनो. हे धन प्रदान करने वाली अग्नि! तुम वृद्धि प्रदान करो. हम तुम्हें हवि द्वारा दीप्त करते हुए सौ वर्ष तक जीवित रहें. (४)

अपश्चादग्धान्नस्य भूयासम्. अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमो अग्नये.
सभ्य सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः (५)

बटलोई के निचले भाग में जले हुए भोजन को प्राप्त करने वाला मैं न बनूं. तात्पर्य यह है कि मैं अधिक भोजन प्राप्त करूं. अन्न प्रदान करने वाले अग्नि और अन्न के स्वामी रुद्र के लिए नमस्कार है. हे सभा के योग्य अग्नि! तुम मेरी सभा अर्थात पुत्र, मित्र, पशु आदि के समूह की रक्षा करो. जो उस समूह में स्थित रहने वाले हैं, हे अग्निदेव! उन की रक्षा करो. (५)

त्वमिन्द्रा पुरुहूत विश्वमायुर्व्य श्नवत्.
अहरहर्बलिमित्ते हरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्ने (६)

हे बहुतों के द्वारा आह्वान किए गए इंद्र और ऐश्वर्य वाले अग्नि! तुम हमें संपूर्ण अन्न और जीवन प्राप्त कराओ. बंधे हुए घोड़े को जिस प्रकार घास प्राप्त कराई जाती है, उसी प्रकार तुम्हें प्रतिदिन हवि प्रदान करते हुए हम पूर्ण आयु प्राप्त करें. (६)

सूक्त छप्पनवां — देवता—दुःस्वप्न नाशन

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः.
एकाकिना सरथं यासि विद्वान्स्वप्नं मिमानो असुरस्य योनौ (१)

हे बुरे स्वप्न के अभिमानी क्रूर पिशाच! तू यमलोक से धरती पर आया है. तू निर्भय हो कर स्त्रियों और पुरुषों के समीप पहुंच जाता है. शरीरधारियों की आयु की वृद्धि और हानि जानता हुआ तू प्राण के आत्मीय स्थान हृदय में स्वप्न के कष्ट का निर्माण करता हुआ सहायक हीन रथ के द्वारा यमलोक प्राप्त कराता है. (१)

बन्धस्त्वाग्रे विश्वचया अपश्यत् पुरा रात्र्या जनितोरेके अह्नि.
ततः स्वप्नेदमध्या बभूविथ भिषग्भ्यो रूपमपगूहमानः (२)

हे दुःस्वप्न के अभिमानी! सब के सृष्टा और विधाता ने तुझे सृष्टि से पहले देखा था. मानस, स्थापत्य आदि ने तुझे दिवस और रात्रि के जन्म से पूर्व देखा था. हे स्वप्न! तुम इस जगत को व्याप्त कर रहे हो. तुम चिकित्सकों से अपना रूप छिपाए रहते हो. तात्पर्य यह है कि चिकित्सक तुम्हारा प्रभाव समाप्त नहीं कर पाते. (२)

बृहद्गावासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन्.
तस्मै स्वप्नाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशासः स्व रानशाना (३)

सब को व्याप्त करने वाला स्वप्न असुरों के पास से चल कर देवों को प्राप्त

हुआ था. स्वप्न देवों के पास महत्व प्राप्त करने के लिए गया था. तैंतीस देवताओं ने उस स्वप्न को अनिष्ट करने की शक्ति प्रदान की. (३)

नैतां विदुः पितरो नोत देवा येषां जल्पिश्चरत्यन्तरेदम्.
त्रिते स्वप्नमदधुराप्त्ये नर आदित्यासो वरुणेनानुशिष्टाः (४)

देवों के द्वारा स्वप्न को जो अनिष्ट कारक शक्ति प्रदान की गई थी, उसे न पिता जानते हैं और न देव जानते हैं. आदित्यों ने दुःस्वप्न से बचने का उपाय वरुण से पूछा. वरुण ने आदित्यों को स्वप्न से बचने का उपाय बताया. आदित्यों ने जलों के पुत्र मित्र नामक ऋषि पर अनिष्ट फल सूचक स्वप्न को स्थापित कर दिया. (४)

यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतोऽस्वप्नेन सुकृतः पुण्यमायुः.
स्वर्मदसि परमेण बन्धुना तप्यमानस्य मनसोऽधि जज्ञिषे (५)

पापी पुरुष उस दुःस्वप्न का भयंकर फल प्राप्त करते हैं. उत्तम कर्म करने वाले दुःस्वप्न न देख कर पुण्य कर्म करने के लिए आयु प्राप्त करते हैं. हे बुरे स्वप्न! तुम स्वर्ग लोक में सर्वश्रेष्ठ विधाता के साथ प्रसन्न रहते हो तथा मृत्यु के पास से संतप्त बुरे कर्म करने वाले पुरुष के मन में मृत्यु की सूचना देने के लिए उत्पन्न होते हो. (५)

विद्म ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद् विद्म स्वप्न यो अधिपा इहा ते.
यशस्विनो नो यशसेह पाह्याराद् द्विषेभिरप याहि दूरम् (६)

हे स्वप्न! हम तेरे सभी परिजनों को जानते हैं तथा इस समय तेरा जो स्वामी है, उसे भी जानते हैं. तेरे परिजनों तथा स्वामी को जानने वाले हम यशस्वीजनों की इस प्रसंग में यज्ञ अथवा अन्न के लिए रक्षा करो. जो लोग हम से द्वेष करते हैं, तुम उन के साथ दूर देश में चले जाओ. (६)

सूक्त सत्तावनवां देवता—दुःस्वप्ननाशन

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति.
एवा दुष्वप्न्यं सर्वमप्रिये सं नयामसि (१)

जैसे ऋत्विज मारे गए बलि पशु को काट कर टुकड़े योग्य अंगों का संस्कार करते हुए खुर आदि प्रयोग में न आने वाले अंगों को साथ ले कर अन्यत्र जाते हैं तथा जिस प्रकार ऋण देने वाले को मूल धन और ब्याज लौटाते हैं, उसी प्रकार बुरे स्वप्न के कारण जितने भी अनर्थ हैं, उन्हें हम जलों के मध्य त्रित नाम के महर्षि पर धारण करते हैं. (१)

सं राजानो अगुः समृणान्यगुः सं कुष्ठा अगुः सं कला अगुः.
समस्मासु यद् दुष्वप्न्यं निर्द्विषते दुष्वप्न्यं सुवाम (२)

जिस प्रकार राजा लोग दूसरे के राष्ट्र का विनाश करने के लिए एकत्र हो जाते हैं, जिस प्रकार एक ऋण के न चुकाने पर बहुत से ऋण हो जाते हैं, जिस प्रकार कुष्ठ रोग होने पर बहुत से रोग हो जाते हैं, जैसे पशुओं के खुर आदि अनुपयोगी अंग फेंकने से गड्ढे अथवा पुराने कुएं में एकत्र हो जाते हैं उसी प्रकार हम अपने दुःस्वप्न को उस के पास भेजते हैं जो हम से द्वेष करता है. (२)

देवानां पत्नीनां गर्भ यमस्य कर यो भद्रः स्वप्न. स मम यः पापस्तद्
द्विषते प्र हिण्मः. मा तृष्टानामसि कृष्णशकुनेर्मुखम् (३)

हे स्वप्न! तुम अप्सराओं के गर्भ हो, यमराज के हाथ हो. तुम्हारा जो मंगलकारी अंश है, वह मुझे प्राप्त हो. तुम्हारा जो क्रूर अंश है, उसे मैं उस के पास में भेजता हूं जो मुझ से द्वेष करता है. हे कौए के मुख से उत्पन्न दुःस्वप्न! तुम मेरे लिए बाधक मत बनो. (३)

तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स त्वं स्वप्नाश्व इव कायमश्व इव नीनाहम्.
अनास्माकं देवपीयुं पियारुं वप यदस्मासु दुष्वप्न्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे (४)

हे स्वप्न! तुम किस लिए उत्पन्न हुए हो, यह सब हम जानते हैं. घोड़ा जिस प्रकार अपने धूलि धूसरित अंगों को कंपित करता है और अपनी काठी आदि को दूर फेंक देता है, उसी प्रकार मैं तुम्हें अपने शत्रु के पास तथा देवों के यज्ञों में बाधा डालने वाले के पास फेंकता हूं. हमारे शरीर में, हमारी गायों में और हमारे घरों में जो दुःस्वप्न का फल है, वह हमारे शत्रु और देव शत्रु अर्थात यज्ञ कर्म में बाधा डालने वाले पर पहुंचे. (४)

अनास्माकस्तद् देवपीयुः पियारुर्निष्कमिव प्रति मुञ्चताम.
नवारत्नीनपमया अस्माकं ततः परि. दुष्वप्न्यं सर्वं द्विषते निर्दयामसि (५)

हे स्वप्न! तेरे अनिष्ट फल को हमारा तथा देवों का शत्रु अपने शरीर पर स्वर्ण के आभूषण के समान धारण करे. हमारे दुःस्वप्न का जो फल है, वह हम से नौ मुट्ठी दूर हट जाए. हम दुःस्वप्न के बुरे प्रभाव को अपने शत्रु की ओर भेजते हैं. (५)

सूक्त अट्ठावनवां — देवता—मंत्रों में बताए गए

घृतस्य जूतिः समना सदेवा संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती.
श्रोत्रं चक्षुः प्राणोच्छिन्नो नो अस्त्वच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः (१)

परमात्मा के स्वरूप के विषय में जो ज्ञान है, वह सभी प्राणियों के हृदयों तथा सभी प्राणियों की इंद्रियों में स्थित है. परमात्मा से संबंधित ज्ञान परमात्मा को हवि के द्वारा बढ़ाता हुआ हमारे कानों और आंखों को स्वस्थ करे. हम जीवन के तेज से युक्त रहें. (१)

उपास्मान् प्राणो ह्वयतामुप वयं प्राणं हवामहे.

वर्चो जग्राह पृथिव्य१न्तरिक्षं वर्चः सोमो बृहस्पतिर्विधत्ता (२)

शरीर को धारण करने वाली प्राण वायु मानस यज्ञ करने वाले हम को दीर्घ जीवन की अनुमति प्रदान करे. हम प्राण वायु को अपने शरीर में चिरकाल तक स्थित रहने के लिए बुलाते हैं. पृथ्वी और अंतरिक्ष ने हमें देने के लिए ही तेज ग्रहण किया है. हे सोम! बृहस्पति एवं अग्नि अथवा सूर्य हमें देने के लिए तेज ग्रहण करें. (२)

वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुर्वर्चो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम.
यशसं गावो गोपतिमुप तिष्ठन्त्यायतीर्यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम (३)

हे आकाश और पृथ्वी! तुम हमें तेज प्रदान करने वाली बनो. हम तेज ग्रहण कर के पृथ्वी पर संचरण करें. गायों के स्वामी मेरे अधिकार में अन्न और गाएं स्थित हैं. हम आती हुई गायों को ग्रहण कर के पृथ्वी पर संचरण करें. (३)

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मा सीव्यध्वं बहुला पृथूनि.
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दृंहता तम् (४)

हे इंद्रियो! तुम शरीर में स्थान बनाओ, क्योंकि यह शरीर अपनेअपने विषयों में तुम्हारा रक्षक है. तुम अपने विस्तृत विषयों को अधिकार में करो. यह शरीर तुम्हारा चमस अर्थात तुम्हारे भोग का साधन है. इस का विनाश न हो. तुम इस शरीर को दृढ़ करो. (४)

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि.
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः (५)

चक्षु आदि इंद्रियों को मैं मानस यज्ञ में हवन करता हूं. यह यज्ञ विश्वकर्मा देव ने विस्तृत किया है. उत्तम हृदय वाले देव इस मानस यज्ञ को प्राप्त करें. (५)

ये देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम्.
इमं यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम् (६)

देवताओं में जो समय-समय पर यज्ञ करने वाले अर्थात ऋत्विज हैं तथा जो यज्ञ के योग्य हैं, इन दोनों के भाग के रूप में हवि प्रदान किया जाता है. जितने महान देव हैं, वे अपनीअपनी पत्नियों, इंद्राणी आदि के साथ इस यज्ञ में आ कर हवि प्राप्त करें तथा तृप्त हों. (६)

सूक्त उनसठवां — देवता—अग्नि

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा. त्वं यज्ञेष्वीड्यः (१)

हे अग्नि! तुम यज्ञकर्मों का पालन करने वाली हो. तुम मनुष्यों में जठराग्नि के रूप में सभी ओर व्याप्त हो. तुम दर्श, पौर्णमास आदि यज्ञों की स्तुति के

योग्य हो. (१)

यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः.
अग्निष्टद् विश्वादा पृणातु विद्वान्त्सोमस्य यो ब्राह्मणां आविवेश (२)

हे देवो! अपने व्रतों को न जानने वाले हम जानने वालों को नष्ट करते हैं. उस लुप्त कर्म को जानती हुई अग्नि पूर्ण करे. वह अग्नि सोम के संबंध से ब्राह्मणों के सम्मुख जाती है. (२)

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम.
अग्निर्विद्वान्त्स यजात् स इद्धोता सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति (३)

जिस मार्ग पर चल कर देवों को प्राप्त किया जाता है, हम उस मार्ग पर चलें. हम जो अनुष्ठान कर सकते हैं, उसे करने के हेतु देवों के मार्ग पर गमन करें. जानने वाली अग्नि उस मार्ग को देवों को प्राप्त कराएं. वही अग्नि देवों और मनुष्यों का आह्वान करने वाली है. अग्नि यज्ञों तथा ऋतुओं को सुरक्षित करें. (३)

सूक्त साठवां देवता—याग आदि

वाङ् म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः.
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम् (१)

मेरे मुख में वाणी हो. मेरी नासिका में प्राण रहें. मेरी आंखों में देखने की शक्ति रहे. मेरे कानों में सुनने की शक्ति हो. मेरे केश श्वेत न हों. मेरे दांत कभी न टूटें. मेरी भुजाओं में अधिक बल रहे. (१)

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः.
प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः (२)

मेरे उरुओं में ओज रहे, जंघाओं में वेग रहे तथा चरणों में चलने की शक्ति रहे. मेरी आत्मा अहिंसित रहे तथा मेरे सभी अंग पाप रहित हों. (२)

सूक्त इकसठवां देवता—ब्रह्मणस्पति

तनूस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय.
स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे (१)

मैं जीवनभर अपने दांतों से खाता रहूं. मैं शत्रुओं को अपने शरीर से दबाने में समर्थ रहूं. हे अग्नि! तुम मेरे घर में सुख से प्रतिष्ठित रहो. तुम स्वर्ग में भी मुझे सुख से संपन्न बनाओ. (१)

सूक्त बासठवां देवता—ब्रह्मणस्पति

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु.

प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये (१)

हे अग्नि! तुम मुझे देवों का प्रिय बनाओ. मुझे राजाओं का भी प्रिय करो. मैं सभी देखने वालों का, शूद्रों का और आर्यों का प्रिय बनूं. अर्थात सब का प्रिय बनूं. (१)

सूक्त तिरेसठवां — देवता—ब्रह्मणस्पति

उत् तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय.
आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय (१)

हे ब्रह्मणस्पति! उठो और देवों को मेरे यज्ञों का ज्ञान कराओ. तुम इस यजमान की आयु, प्राण, प्रजा, पशु तथा कीर्ति को बढ़ाओ. तुम इस यजमान की वृद्धि करो. (१)

सूक्त चौंसठवां — देवता—अग्नि

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे.
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु (१)

मैं महान और जातवेद अग्नि के लिए प्रज्वलित होने का साधन समिधाएं लाया हूं. समिधाओं से वृद्धि को प्राप्त जातवेद अग्नि मुझे श्रद्धा और बुद्धि प्रदान करें. (१)

इध्मेन त्वा जातवेदः समिधा वर्धयामसि.
तथा त्वमस्मान् वर्धय प्रजया च धनेन च (२)

हे जातवेद अग्नि! हम प्रज्वलित होने के साधन समिधाओं के द्वारा तुम्हें बढ़ाते हैं. तुम हमें प्रजा और धन से बढ़ाओ. (२)

यदग्ने यानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि.
सर्वं तदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्ठ्य (३)

हे अग्नि! मैं तुम्हारे लिए जो यज्ञ के योग्य और यज्ञ के अयोग्य काष्ठ (लकड़ी) प्रदान करता हूं, वह सब मेरे लिए कल्याणकारी हो अर्थात उन से मेरा कल्याण हो. हे अतिशय युवा अग्नि! तुम मेरे द्वारा दिए गए काष्ठ (लकड़ी) को स्वीकार करो. (३)

एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः समिद् भव.
आयुरस्मासु धेह्यमृतत्वमाचार्याय (४)

हे अग्नि! मैं तुम्हारे लिए ये समिधाएं लाया हूं. उन समिधाओं के द्वारा तुम प्रज्वलित होओ. तुम हम सब में आयु और जीवन का आधान करो. तुम हमारे

उपाध्याय के लिए अमृत प्रदान करो. (४)

सूक्त पैंसठवां देवता—सूर्य, जातवेद, वज्र

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम्.
अव तां जहि हरसा जातवेदोऽ बिभ्यदुग्रोऽर्चिसा दिवमा रोह सूर्य (१)

हे सूर्य! तुम अंधकार का नाश करने वाले तथा उत्तम पालन वाले हो. तुम अपने तेज से द्युलोक अर्थात आकाश पर चढ़ते हो. आकाश पर चढ़ते हुए तुम को जो शत्रु तिरस्कृत करना चाहते हैं, हे जातवेद सूर्य! उन्हें तुम अपने शत्रु विनाशक तेज से नष्ट करो. इस के पश्चात शत्रुओं से भयभीत न होते हुए तुम अपने तेज से आकाश में स्थित बनो. (१)

सूक्त छियासठवां देवता—सूर्य, जातवेद

अयोजाला असुरा मायिनोऽयस्मयैः पाशैरङ्किनो ये चरन्ति.
तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्त्रऋष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः (१)

हे जातवेद सूर्य! जो मायावी असुर लोहे का जाल ले कर तथा लोहे के बने फंदे हाथ में ले कर उत्तम कर्म करने वालों को मारने के लिए घूमते हैं, उन्हें मैं तुम्हारे तेज के द्वारा अपने वश में करता हूं. हे हजार संख्या वाले आयुधों से युक्त तथा वज्रधारी! तुम शत्रुओं को अधिक मात्रा में नष्ट करो तथा हमारा पालन करो. (१)

सूक्त सड़सठवां देवता—सूर्य

पश्येम शरदः शतम् (१)

हे सूर्य! हम सौ वर्षों तक देखते रहें. (१)

जीवेम शरदः शतम् (२)

हे सूर्य! हम सौ वर्षों तक जीवित रहें. (२)

बुध्येम शरदः शतम् (३)

हे सूर्य! हम सौ वर्षों तक बुद्धि युक्त रहें. (३)

रोहेम शरदः शतम् (४)

हे सूर्य! हम सौ वर्षों तक वृद्धि करते रहें. (४)

पूषेम शरदः शतम् (५)

हे सूर्य! हम सौ वर्षों तक पुष्ट रहें. (५)

भवेम शरदः शतम् (६)

हे सूर्य! हम सौ वर्षों तक पुत्र आदि से युक्त रहें. (६)

भूयेम शरदः शतम् (७)

हे सूर्य! हम सौ वर्षों तक संतान वाले रहें. (७)

भूयसीः शरदः शतात् (८)

हे सूर्यदेव! हम सौ वर्षों से भी अधिक समय तक जीवित रहें. (८)

सूक्त अड़सठवां — देवता—मंत्र में बताए गए

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं वि ष्यामि मायया.
ताभ्यामुद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्महे (१)

मैं सभी के शरीरों में व्याप्त व्यान वायु और व्यक्तिगत रूप से व्याप्त प्राण वायु के मूल आधार को कर्म के द्वारा विस्तृत करता हूं. हम उन व्यान और प्राण वायु के द्वारा अक्षरात्मक वेद को परा, पश्यंती और वैखरी वाणियों के क्रम से प्रत्यक्ष कर के यज्ञ कर्म करते हैं. (१)

सूक्त उनहत्तरवां — देवता—आप अर्थात जल

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् (१)

हे देवगण! आप आयु वाले हैं. आप की कृपा से मैं भी आयु वाला बनूं. मैं पूर्ण आयु अर्थात सौ वर्ष तक जीवित रहूं. (१)

उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् (२)

हे देवगण! आप अधिक जीवन वाले हैं. आप की कृपा से मैं भी अधिक जीवन वाला बनूं. मैं सौ वर्ष तक जीवित रहूं. (२)

संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् (३)

हे देवगण! आप जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं करते हैं. मैं भी आप की कृपा से जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ न करूं. मैं सौ वर्ष तक जीवित रहूं. (३)

जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् (४)

हे इंद्र! तुम सभी ऐश्वर्यों के प्रकाशक हो. मैं भी तुम्हारी कृपा से पूर्ण ऐश्वर्य का प्रकाशक बनूं. मैं सौ वर्ष तक जीवित रहूं. (४)

सूक्त सत्तरवां — देवता—मंत्र में कथित इंद्र आदि

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम्. सर्वमायुर्जीव्यासम् (१)

हे इंद्र! तुम जीवित रहो. हे सूर्य! तुम जीवित रहो. हे इंद्र आदि देवो! तुम जीवित

रहो. मैं भी आप की कृपा से जीवित रहूं. मैं पूर्ण आयु अर्थात सौ वर्ष तक जीवित रहूं. (१)

सूक्त इकहत्तरवां — देवता—गायत्री

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्. आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्. मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् (१)

वेद का अध्ययन करने वाले अथवा गायत्री का जप करने वाले मैं ने इच्छाओं को पूर्ण करने वाली, पापों से छुड़ाने वाली एवं वेदों की माता सावित्री की स्तुति की है. ब्राह्मणों को पवित्र करने वाली सावित्री हमें प्रेरित करे. वह सावित्री देवी मुझे आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति और ब्रह्म तेज दे कर ब्रह्म लोक को गमन करे. (१)

सूक्त बहत्तरवां — देवता—परमात्मा और देव

यस्मात् कोशादुदभराम वेदं तस्मिन्नन्तरव दध्म एनम्.
कृतमिष्टं ब्रह्मणो वीर्येण तेन मा देवास्तपसावतेह (१)

हम ने मूल आधार रूप कोश से वेदों का उद्धार किया है, हम ने वेदों का उद्धार यज्ञ कार्य के हेतु किया है. हम वेदों को उसी स्थान पर स्थापित करते हैं. परमात्मा की शक्ति रूप वेदों से हम ने जो यज्ञादि कर्म किए हैं, हे देवो! उस मन चाहे कर्म के फल के द्वारा तुम मेरा पालन करो. (१)

१६

बीसवां कांड

सूक्त पहला देवता—यज्ञ

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे. स पाहि मध्वो अन्धसः (१)

हे कामनाओं की वर्षा करने वाले इंद्र! हम यजमान निचोड़े हुए सोम को पीने के लिए तुम्हें बुलाते हैं. तुम मधुर सोम का पान करो. (१)

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः. स सुगोपातमो जनः (२)

हे अतिशय तेज युक्त मरुतो! तुम आकाश से आ कर जिस यजमान की यज्ञशाला में सोमपान करते हो, उस गृह का स्वामी यजमान अपने आश्रितों की रक्षा वालों में श्रेष्ठ बन जाता है. (२)

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे. स्तोमैर्विधेमाग्नये (३)

गर्भधारण करने में समर्थ बैल और बांझ बकरी जिस का भोजन है तथा सोम जिस के ऊपर स्थित है, ऐसे अग्निदेव की हम वेद मंत्रों द्वारा स्तुति करते हैं. (३)

सूक्त दूसरा देवता—मरुत, अग्नि, इंद्र, द्रविणोदा

मरुतः पोत्रात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु (१)

मरुद्गण होता के सुंदर स्तोत्रों वाले तथा सुंदर मंत्रों से युक्त यज्ञ कर्म में संस्कार किए गए अर्थात कूटे और निचोड़े गए सोम का पान करें. (१)

अग्निराग्नीध्रात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु (२)

अग्निदेव! अग्नि को प्रज्वलित करने वाले ऋत्विज के कर्म से प्रसन्न होते हुए सोम रस का पान करें. यह कर्म सुंदर स्तोत्रों और सुंदर मंत्रों वाला है. (२)

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु (३)

ब्रह्मात्मा इंद्र! ब्राह्मण नाम के ऋत्विज की सुंदर स्तुतियों से पूर्ण यज्ञ कर्म में

संस्कार किए गए अर्थात निचोड़े गए सोम का पान करो. (३)

देवो द्रविणोदाः पोत्रात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु (४)

द्रविणोदा अर्थात धन देने वाले देव होता के सुंदर स्तोत्रों तथा सुंदर मंत्रों वाले यज्ञ कर्म में संस्कार किए गए अर्थात निचोड़े गए सोम का पान करें. (४)

सूक्त तीसरा देवता—इंद्र

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्. एदं बर्हिः सदो मम (१)

हे इंद्र! आओ. तुम्हारे निमित्त सोम निचोड़ा गया है, इस का पान करो तथा मेरे द्वारा बिछाए गए कुशों पर बैठो. (१)

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना. उप ब्रह्माणि नः शृणु (२)

हे इंद्र! मंत्रों के द्वारा रथ में जुड़ने वाले तथा अभीष्ट स्थान पर पहुंचने वाले हरि नाम के घोड़े तुम्हें हमारे समीप लाएं. तुम्हारे घोड़े लंबे बालों वाले हैं. तुम हमारे यज्ञ में आ कर हमारी स्तुतियों को सुनो. (२)

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः. सुतावन्तो हवामहे (३)

हे इंद्र! हम यजमान तुम को तुम्हारे योग्य स्तोत्रों के द्वारा बुलाते हैं. हे इंद्र! तुम सोम को पीने वाले हो. हम सोमरस तैयार करने वाले हैं तथा हम ने सोम रस को निचोड़ा है. (३)

सूक्त चौथा देवता—इंद्र

आ नो याहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतीरुप. पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः (१)

हे इंद्र! सोम को निचोड़ने वाले हम यजमानों के समीप आओ. हम शोभन स्तुतियों वाले हैं. हे सुंदर ठोड़ी वाले इंद्र! सोमरस का पान करो. (१)

आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धावतु. गृभाय जिह्वया मधु (२)

हे इंद्र! मैं तुम्हारी दोनों कोखों को सोमरस से भरता हूं. यह सोमरस तुम्हारी नाड़ियों में बहे. तुम मधु वाले सोमरस को अपनी जीभ से ग्रहण करो. (२)

स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान् तन्वे३ तव. सोमः शमस्तु ते हृदे (३)

हे उत्तम दान करने वाले इंद्र! मेरे द्वारा दिया हुआ सोम तुम्हारे लिए स्वादिष्ट हो. इस के बाद यह सोम तुम्हारे शरीर के लिए सुख देने वाला हो. (३)

सूक्त पांचवां देवता—इंद्र

अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः. प्र सोम इन्द्र सर्पतु (१)

हे विशेष द्रष्टा इंद्र! संतान वाली स्त्रियां जिस प्रकार पुत्र आदि से सभी ओर से घिरी रहती हैं, उसी प्रकार यह सोम अध्वर्यु आदि से घिरा हुआ रखा है. यह सोम तुम्हें प्राप्त हो. (१)

तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे. इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते (२)

सोमपान करने से इंद्र के कंधे बैल के समान मोटे हो जाते हैं. सोमपान से इंद्र का उदर विशाल और भुजाएं दृढ़ हो जाती है. इस प्रकार सोम पान के कारण शक्तिशाली बने इंद्र वृत्र असुर के समान आक्रामक शत्रुओं का विनाश करते हैं. (२)

इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा. वृत्राणि वृत्रहञ्जहि (३)

हे इंद्र! तुम सभी के स्वामी हो. तुम हमारी सेना के आगे चलो. हे वृत्र नाम के असुर के हंता इंद्र! तुम हमारे शत्रुओं का विनाश करो. (३)

दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि. यजमानाय सुन्वते (४)

हे इंद्र! अंकुश के समान झुकी हुई उंगलियों वाला तुम्हारा हाथ विशाल है. उस हाथ से तुम सोम निचोड़ने वाले यजमान को धन देते हो. (४)

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि. एहीमस्य द्रवा पिब (५)

हे इंद्र! भलीभांति छान कर स्वच्छ किया हुआ यह सोम बिछे हुए कुशों पर रखा है. तुम यहां शीघ्र आ कर उस सोम का पान करो. (५)

शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः. आखण्डल प्र हूयसे (६)

हे पणियों द्वारा अपहृत गायों को वापस लाने में समर्थ इंद्र! ये स्तोत्र तुम्हारे गुणों को प्रकाशित करने वाले हैं. यह सोम तुम्हारी प्रसन्नता के लिए निचोड़ा गया है. हे शत्रुओं का विनाश करने वाले इंद्र! हम तुम्हें यह सोम पीने के लिए बुलाते हैं. (६)

यस्ते शृङ्गवृषो नपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः. न्य स्मिन् दध्र आ मनः (७)

हे इंद्र! तुम सींगों के समान ऊपर की ओर उठने वाली किरणों से संपन्न सूर्य को गिरने नहीं देते हो. हमारा यज्ञ कुंडों में भरे सोमरस को पीने से संबंधित है. तुम इस यज्ञ में आने के लिए अपना मन बनाओ. (७)

सूक्त छठा देवता—इंद्र

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे. स पाहि मध्वो अन्धसः (१)

हे कामनाओं की वर्षा करने वाले इंद्र! हम यजमान निचोड़े हुए सोम को पीने के लिए तुम्हें बुलाते हैं. तुम मधुर सोम का पान करो. (१)

इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत. पिबा वृषस्व तातृपिम् (२)

हे अनेक यजमानों द्वारा स्तुति किए गए इंद्र! यज्ञ को पूर्ण करने वाला यह सोम निचोड़ा गया है. तुम तृप्त करने वाले इस सोमरस का दान करो. तुम इस सोम को पेट भर कर पियो. (२)

इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः. तिर स्तवान विश्पते (३)

हे स्तुति किए गए एवं मरुतों के स्वामी इंद्र! तुम सब देवों के साथ हमारे इस सोममय यज्ञ में आ कर हवि ग्रहण करो तथा हमारे यज्ञ की वृद्धि करो. (३)

इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते. क्षयं चन्द्रास इन्दवः (४)

हे यजमानों का पालन करने वाले इंद्र! निचोड़ा गया और चंद्रमा की किरणों के समान सुख देने वाला यह सोम तुम्हारे पेट में जाता है. (४)

दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम्. तव द्युक्षास इन्दवः (५)

हे इंद्र! वरण करने योग्य एवं निचोड़े गए इस सोम को अपने पेट में धारण करो. दीप्ति वाले सोम तुम्हारे विशेष भाग हैं. (५)

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे. इन्द्र त्वादातमिद् यशः (६)

हे स्तुतियों द्वारा पूजन करने योग्य इंद्र! तुम हमारे द्वारा निचोड़े गए सोम को पियो. तुम मधुर सोम की धाराओं के द्वारा भिगोए जाते हो. हे इंद्र! यह सोम तुम्हारे यश का रूप है. (६)

अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता. पीत्वी सोमस्य वावृधे (७)

यजमान का उज्ज्वल सोम इंद्र को भी सभी ओर से प्राप्त हो रहा है. इस सोम का पान करते हुए इंद्र वृद्धि प्राप्त करें. (७)

अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन्. इमा जुषस्व नो गिरः (८)

हे वृत्र असुर के हंता इंद्र! तुम समीपवर्ती देश से तथा दूरवर्ती देश से हम यजमानों के समीप आओ और आकर हमारी इन स्तुतियों को स्वीकार करो. (८)

यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे. इन्द्रेह तत आ गहि (९)

हे इंद्र! तुम दूर देश में अथवा समीपवर्ती देश में जहां भी हो. वहां से बुलाए जा रहे हो. हे इंद्र! तुम इस यज्ञ में शीघ्र आओ. (९)

सूक्त सातवां देवता—इंद्र

उद् घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्. अस्तारमेषि सूर्य (१)

हे सूर्य! यज्ञ करने वालों अथवा स्तुति करने वालों के लिए इंद्र के द्वारा धन दिया जाना प्रसिद्ध है. इंद्र अभीष्ट फलों की वर्षा करने वाले हैं. उन के कर्म मनुष्यों के लिए हितकारी हैं. अनिष्टों को दूर करने तथा शत्रुओं को दबाने के कार्य को ध्यान में रख कर तुम उदित होते हो. (१)

नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वो जसा. अहिं च वृत्रहावधीत् (२)

जिन इंद्र ने शंबर असुर की माया के लिए निन्यानवे नगरों को अपने बाहुबल से तोड़ डाला था, उन्हीं इंद्र ने वृत्रासुर का वध किया था. (२)

स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद् गोमद् यवमत्. उरुधारेव दोहते (३)

इंद्र हमारे लिए कल्याणकारी तथा हमारे मित्र हैं. वे हमें घोड़े, गाएं और जौ नाम का अन्न प्रदान करें. इंद्र अधिक दूध देने वाली गाय के समान धन देते हैं. (३)

इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत. पिबा वृषस्व तातृपिम् (४)

हे बहुतों के द्वारा प्रशंसित इंद्र! यज्ञ के साधक और निचोड़े गए सोम को पीने की इच्छा करो. तुम इस सोम को अपने उदर में भर लो. (४)

सूक्त आठवां — देवता—इंद्र

एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः.
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूंरभि गा इन्द्र तृन्धि (१)

हे इंद्र! तुम ने जिस प्रकार प्राचीन काल में अंगिरा आदि ऋषियों के यज्ञों में सोमपान किया था, उसी प्रकार हमारे इस यज्ञ में भी करो. पिया हुआ सोम तुम्हें प्रसन्न करे. तुम हमारे मंत्र रूप स्तोत्रों को सुनो. तुम हमारी स्तुतियों के द्वारा वृद्धि को प्राप्त करो. तुम सूर्य को प्रकाशित करो. तुम अन्नों को हमारे उपभोग का साधन बनाओ तथा हमारे शत्रुओं का विनाश करो. हे इंद्र! पाणियों द्वारा चुराई गई हमारी गायों को हमें लाकर दो. (१)

अर्वाङेहि सोमकामं त्वाहुरयं सुतस्तस्य पिबा मदाय.
उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हूयमानः(२)

हे इंद्र! तुम्हें सोम की इच्छा करने वाला कहा जाता है, तुम हमारे सामने आओ. यह निचोड़ा हुआ सोम तुम अपनी प्रसन्नता के लिए पियो. तुम विशाल कोखों वाले अपने उदर को इस सोम से भर लो. हे इंद्र! पिता जिस प्रकार पुत्र का वचन सुनता है, उसी प्रकार तुम हमारे आह्वान को सुनो. (२)

आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्यै.
समु प्रिया आववृत्रन् मदाय प्रदक्षिणिदभि सोमास इन्द्रम् (३)

इंद्र के लिए यह पूर्ण कलश सोम रस से भरा हुआ है. जिस प्रकार जल छिड़कने वाला मशक को जल से भरता है. उसी प्रकार अध्वर्यु इंद्र के पीने के लिए सोमरस निचोड़ता है. ये सोम इंद्र की प्रसन्नता के लिए इंद्र की ओर जाते हैं. (३)

सूक्त नौवां — देवता—इंद्र

166

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः.
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे (१)

हे यजमानो! तुम्हारे यज्ञ की पूर्णता तथा तुम्हारे अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिए हम स्तुतियों के द्वारा इंद्र से प्रार्थना करते हैं. इंद्र दर्शनीय और दुःख विनाशक हैं. इंद्र सोम पीने के हर्ष से पूर्ण रहते हैं. गाएं सायं और प्रातःकाल रंभाती हुई जिस प्रकार अपने बछड़ों के पास जाती हैं, उसी प्रकार हम भी स्तुति करते हुए इंद्र की ओर जाते हैं. (१)

द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम्.
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे (२)

जिस प्रकार दुर्भिक्ष पड़ने पर लोग कंद, मूल, फल आदि से संपन्न पर्वत की प्रार्थना करते हैं, उसी प्रकार हम सुंदर दान वाले, प्रजाओं के पोषक, दीप्ति युक्त, स्तुति करने योग्य एवं गाय आदि से संपन्न धन की प्रार्थना करते हैं. (२)

तत् त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये.
येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ (३)

हे इंद्र! मैं तुम से शोभन बल युक्त एवं उत्तम अन्न की याचना करता हूं. तुम ने जो धन यज्ञ कर्म न करने वालों से छीन कर भृगु ऋषि को शांति प्रदान की थी और जिस धन से तुम ने कण्व के पुत्र प्रस्कण्व का पालन किया, वही धन हम तुम से मांगते हैं. (३)

येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः.
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे (४)

हे इंद्र! जिस बल से तुम ने सागर को भरने वाले प्रभूत जलों का निर्माण किया था, तुम्हारा वह बल सब को अभीष्ट फल देता है. हम भूलोकवासी तुम्हारी जिस महिमा का गान करते हैं, उसे दूसरे अर्थात शत्रु भलीभांति नहीं जान सकते. (४)

सूक्त दसवां — देवता—इंद्र

उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते.
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव (१)

जो स्तुतियां प्रकट हो रही हैं, वे गाए जाने वाले मंत्रों से साध्य और न गाए जाने

वाले मंत्रों से असाध्य हैं. ये स्तुतियां अन्न प्रदान करती हैं और रक्षा करने में समर्थ हैं. जैसे रथ रथारोही के अभिप्राय के अनुसार गमन करता है, उसी प्रकार ये स्तुतियां इंद्र को प्रसन्न करने के लिए गमन करती हैं. (१)

कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद् धीतमानशुः.
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् (२)

मनुष्य स्तोत्रों के द्वारा इंद्र को उसी प्रकार प्राप्त होते हैं, जिस प्रकार कण्व गोत्रीय ऋषि तीनों लोकों के स्वामी एवं फल की कामना करने वालों के द्वारा पूजित इंद्र को स्तुतियों के कारण प्राप्त हुए थे. जिस प्रकार सूर्य अपने नियंता इंद्र को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार भृगवंश के ऋषि इंद्र को प्राप्त होते हैं. (२)

सूक्त ग्यारहवां — देवता—इंद्र

इन्द्रः पूर्भिदातिरद् दासमर्कैर्विदद्वसुर्दयमानो वि शत्रून्.
ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद् रोदसी उभे (१)

इंद्र देव ने शत्रुओं के नगरों को अपने पूजनीय बल से नष्ट कर दिया है और शत्रुओं की पूर्ण रूप से हिंसा कर दी है. इंद्र ने किरणों के द्वारा अंधकार का नाश करने वाले दिन को बढ़ाया है. इंद्र ने शत्रुओं का धन प्राप्त किया है तथा उन के पुत्र आदि की विशेष रूप से हिंसा की है. पर्याप्त स्तोत्रों के कारण वृद्धि को प्राप्त शरीर द्वारा धन संपन्न इंद्र ने धरती और आकाश दोनों को व्याप्त किया है. (१)

मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिमियर्मि वाचममृताय भूषन्.
इन्द्र क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा (२)

हे इंद्र! मैं तुम्हारे प्रशंसनीय बल को बढ़ाने वाली स्तुतिरूपी वाणी को प्रेरित करता हूं. मैं अन्न प्राप्ति के लिए तुम्हें अलंकृत करता हूं. हे इंद्र! तुम मनुष्य संबंधी और देव संबंधी प्रजाओं के आगे चलने वाले हो. (२)

इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद् वर्पणीतिः
अहन् व्यंसमुशधग् वनेष्वाविर्धेना अकृणोद् राम्याणाम् (३)

अपने हिंसक बल का शत्रु पर प्रयोग करने वाले इंद्रदेव ने सभी ओर से व्याप्त करने वाले वृत्र को रोका और अपने शस्त्र से मायावी शत्रु का विनाश किया. इंद्र ने वृत्र असुर को भुजाओं से हीन कर के मारा. इस के बाद उस के रमण के साधनों — पत्नी अथवा गौ आदि को अपने अधिकार में किया. (३)

इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः.
प्रारोचयन्मनवे केतुमह्नामविन्दज्ज्योतिर्बृहते रणाय (४)

इंद्र स्वर्ग प्राप्त कराने वाले तथा शत्रुओं का विनाश करने वाले हैं. इंद्र अंधकार

का विनाश कर के दिनों को जन्म देते हैं. इंद्र ने असुरों के साथ युद्ध कर के उन की सेनाओं को जीता है. इंद्र ने यजमानों के अधिक सुख के लिए दिन के स्वामी सूर्य को आकाश में दीप्त किया और उस से महान तेज प्राप्त किया है. (४)

इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद् दधानो नर्या पुरूणि.
अचेतयद् धिय इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् (५)

जैसे युद्ध का इच्छुक वीर शत्रु सेना में प्रवेश करता है, उसी प्रकार इंद्र भी यजमानों के हित के लिए असुरों की विशाल सेनाओं में प्रवेश करते हैं तथा स्तुति करने वालों के लिए उषाओं का उदय करते हैं. इंद्र ही उषाओं के श्वेत रंग को बढ़ाते हैं. (५)

महो महानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि.
वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेष मायाभिर्दस्यूंरभिभूत्योजाः (६)

इंद्र ने जो अनेक प्रशंसनीय कार्य किए हैं, श्रोता उन की प्रशंसा करते हैं. शत्रुओं को वश में करने वाले इंद्र ने पापी राक्षसों को अपने अस्त्रों से नष्ट कर दिया है तथा शक्तिशाली असुरों का विनाश कर दिया. (६)

युधेन्द्रो महावरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः.
विवस्वतः सदने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति (७)

किसी की सहायता न ले कर इंद्र ने अकेले ही अपने स्तुति कर्ताओं को धन प्राप्त कराया. इंद्र यजमानों की सदा रक्षा करते हैं और मनुष्यों को इच्छित फल देते हैं. यज्ञ आदि कर्म करने वाले मनुष्य इंद्र का वरण करते हैं. (७)

सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवांसं स्वरपश्च देवीः.
ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमामिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणासः (८)

बल प्रदान करने वाले, शत्रु सेना को पराजित करने वाले एवं स्वर्गीय जलों के सेवन कर्ता इंद्र ने मनुष्यों को धरती तथा आकाश दिए हैं. उन इंद्र की स्तुति करने वाले और यज्ञ कर्ता यजमान हवि दे कर उन्हें प्रसन्न करते हैं. (८)

ससानात्यां उत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम्.
हिरण्ययमुतभोगं ससान हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत् (९)

इंद्र ने मनुष्यों के उपभोग के लिए घोड़े, हाथी और ऊंट दिए हैं. गायों, भैंसों तथा सोने के आभूषणों को भी इंद्र ने ही दिया है. इंद्र ने सूर्य को प्रकाशित किया है तथा राक्षसों का विनाश कर के सभी वर्णों का पालन किया है. (९)

इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतींरसनोदन्तरिक्षम्.

विभेद वलं नुनुदे विवाचोऽथाभवद् दमिताभिक्रतूनाम् (१०)

इंद्र ने प्राणियों के उपभोग के लिए जौ, गेहूं आदि की रचना की है. इंद्र ने ही वनस्पतियों एवं दिवसों की रचना की है. उन्हीं ने सब के उपकारकर्ता अंतरिक्ष की रक्षा की है. इंद्र ने बल नाम के असुर को चीर डाला तथा विरोधियों का अनुष्ठान करने वालों का मर्दन किया. (१०)

शुंन हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ.
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् (११)

हम धन और ऐश्वर्य वाले तथा सुखदाता इंद्र को इस संग्राम में बुलाते हैं. जिस युद्ध से अन्न प्राप्त होता है, हम उस में अपनी रक्षा के लिए इंद्र का आह्वान करते हैं. शत्रुओं का नाश करने वाले और धनों के विजेता इंद्र का हम आह्वान करते हैं. (११)

सूक्त बारहवां देवता—इंद्र

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ.
आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि (१)

हे ऋत्विजो! तुम अन्न प्राप्ति की इच्छा से स्तोत्रों का उच्चारण करो. हे यजमान वसिष्ठ! अपने ऋत्विजों के साथ हवि आदि साधनों से इष्टदेव की पूजा करो. जिस इंद्र ने अपने बल से सभी प्राणियों का विस्तार किया है, वे इंद्र परिचर्या करते हुए मुझ वसिष्ठ के वचनों को यहां आ कर सुने. (१)

अयामि घोष इन्द्र देवजामिरिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि.
नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्ष्यस्मान् (२)

हे इंद्र! मैं उस स्तोत्र का उच्चारण करता हूं जो देवों को बंधु के समान प्रिय है. इस स्तोत्र के द्वारा उस सोम की वृद्धि होती है जो यजमान को स्वर्ग का फल देने वाला है. मनुष्यों के मध्य रहने वाला यह यजमान अपनी आयु नहीं जानता है. हमें इतनी दीर्घ आयु प्रदान करो, जिस से यह तुम्हारे लिए यज्ञ आदि का अनुष्ठान कर सके. आयु का नाश करने वाले जो पाप हैं, उन्हें इस से दूर रखो. (२)

युजे रथं गवेषणं हरिभ्यामुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः.
वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वेन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् (३)

इंद्र गौओं को प्राप्त कराने वाले अपने रथ में हरि नाम के अश्वों को जोड़ते है. हमारे स्तोत्र सभी के द्वारा सेवा किए जाते हुए इंद्र को प्राप्त होते हैं. इंद्र ने अपनी महिमा से धरती और आकाश को आक्रांत किया है. इंद्र ने अपने शत्रुओं अर्थात वृत्र आदि राक्षसों

को इस प्रकार मारा है कि वे शेष नहीं रहे हैं. (३)

आपश्चित् पिप्यु स्तर्यो३ न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त इन्द्र.
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् (४)

हे इंद्र! यह निचोड़ा गया सोमरस गायों के समान वृद्धि को प्राप्त हो रहा है. हे इंद्र! तुम्हारी स्तुति करने वाले ऋत्विज यज्ञमंडप में पहुंच चुके हैं, इसलिए तुम हमारे स्तोत्र को सुनने के लिए आओ. वायुदेव यज्ञस्थलों में जाने के लिए जिस प्रकार अपने अश्वों की ओर जाते हैं, तुम भी उसी प्रकार संतुष्ट हो कर हमें अन्न देने के लिए आओ. (४)

ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे.
एको देवत्रा दयसे हि मर्तानस्मिञ्छूर सवने मादयस्व (५)

हे इंद्र! संस्कार किए गए सोम तुम्हें मदयुक्त करें. तुम बलशाली और स्तोताओं को अधिक धन देने वाले हो. देवों के मध्य अकेले तुम्हीं ऐसे हो जो मनुष्यों पर दया करते हो. हे इंद्र! इस यज्ञ में मनचाहा फल दे कर हमें प्रसन्न करो. (५)

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः.
स न स्तुतो वीरवद् धातु गोमद् यूयं पात स्वस्तिभि : सदा नः (६)

वसिष्ठ कुल के ऋषि कामनाओं की वर्षा करने वाले और हाथ में वज्र धारण करने वाले इंद्र की पूजा स्तोत्रों से करते हैं. वे इंद्र हमारे स्तोत्रों के द्वारा पूजित हो कर हमें पुत्रों एवं गायों से युक्त धन प्रदान करें. हे देवो! आप भी इंद्र का अनुकरण करते हुए क्षेमों से सदा हमारी रक्षा करें. (६)

ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट्छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा.
युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ् माध्यंदिने सवने मत्सदिन्द्रः (७)

सोमरस के प्रेमी, वज्रधारी, कामनाओं की वर्षा करने वाले, शत्रुओं को पराजित करने वाले, शत्रु पराभवकारी बदल से संपन्न, सभी देवों के स्वामी, वृत्र असुर का विनाश करने वाले एवं नियम से सोमरस का पान करने वाले इंद्र अपने हरि नाम के घोड़ों को रथ में जोड़ कर हमारे यज्ञ में आएं और इस माध्यंदिन यज्ञ में सोमपान कर के प्रसन्न हों. (७)

167

सूक्त तेरहवां — देवता—इंद्र

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पतेऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू.
आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् (१)

हे बृहस्पति देव! तुम और इंद्र इस यज्ञ में प्रसन्न होने वाले तथा धनों की वर्षा करने वाले हो. तुम दोनों सोमरस का पान करो. उत्तम सोमरस ने तुम दोनों के शरीर में प्रवेश किया है. तुम हमें सभी पुत्रों से युक्त धन प्रदान करो. (१)

आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः.
सीदता बर्हिरुरु वः सदस्कृतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः (२)

हे मरुतो! मंद गति वाले अश्व तुम्हें यज्ञशाला में लाएं. तुम भी शीघ्र गमन के साधनों द्वारा यहां आओ. हम ने तुम्हारे बैठने के लिए यज्ञवेदी के रूप में विशाल स्थान बनाया है. उस पर हम ने कुश बिछाए हैं. तुम उन कुशों पर बैठो. वहां बैठ कर तुम सोमरस पियो और प्रसन्न होओ. (२)

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषय. भद्रा हि नः
प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव (३)

रथकार जिस प्रकार रथ बनाता है, उसी प्रकार हम पूज्य अग्नि के लिए अपनी तीव्र बुद्धि से बनाए गए स्तोत्र से अग्निदेव की पूजा करते हैं. अग्नि के निवास स्थान अर्थात यज्ञशालाओं में हमारी उत्तम बुद्धि कल्याणकारिणी हो. हे अग्निदेव! तुम्हारे बंधुभाव को प्राप्त कर के हम किसी के द्वारा पराजित न हों. (३)

ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः.
पत्नीवतस्त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व (४)

हे अग्नि! तुम तैंतीस देवताओं के साथ एक रथ पर बैठ कर हमारे यज्ञ में आओ. तुम चाहो तो अनेक रथों में बैठ कर आओ. तुम्हारे अश्व अत्यधिक शक्तिशाली हैं. इसलिए तुम जबजब सोमरस पान के लिए बुलाए जाए, तबतब उन देवों को पत्नियों सहित यहां लाओ और सोमपान से उन्हें आनंदित करो. (४)

सूक्त चौदहवां देवता—इंद्र

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः. वाजे चित्रं हवामहे (१)

हे सदा नवीन रहने वाले इंद्र! तुम पूज्य हो और अपने उपासकों का पोषण करने वाले हो. हम रक्षा की कामना करते हुए तुम्हें बुलाते हैं. तुम हमारे किसी विरोधी के पास मत जाओ. हम तुम्हें उसी प्रकार बुलाते हैं, जैसे किसी अत्यधिक शक्तिशाली राजा को विजय के हेतु बुलाया जाता है. (१)

उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चकाम यो धृषत्.
त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् (२)

हे इंद्र! हम युद्ध प्रारंभ होने पर रक्षा के लिए तुम्हारे समीप जाते हैं. जो इंद्र नित्य युवा और शत्रुओं को पराजित करने वाले तथा अत्यधिक शक्तिशाली हैं, वे हमारी रक्षा के लिए आएं. हे इंद्र! हम तुम्हें अपना सखा मानते हैं, इसलिए हम अपनी रक्षा के हेतु तुम्हारी ही इच्छा करते हैं. (२)

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे. सखाय इन्द्रमूतये (३)

हे मित्र बने हुए यजमान! मैं तुम्हारी रक्षा के लिए इंद्र की स्तुति करता हूं. जिस इंद्र ने पहले हमें निर्देश कर के गाय आदि धन दिया था, हम उसी इंद्र की स्तुति करते हैं. (३)

हर्यश्वं सम्पति चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत.
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् (४)

इन मनुष्यों के रक्षक इंद्र के अश्व हरे रंग के हैं. जो इंद्र मनुष्यों पर नियंत्रण रखते हैं तथा स्तुतियां सुन कर प्रसन्न होते हैं, मैं उन्हीं इंद्र की स्तुति करता हूं. वे इंद्र हम स्तोताओं को सौ गाएं तथा सौ घोड़े प्रदान करें. (४)

सूक्त पंद्रहवां देवता—इंद्र

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे.
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् (१)

मैं अतिशय महान, गुणों में बढ़े हुए, अत्यधिक धन वाले एवं सच्ची सामर्थ्य वाले इंद्र की स्तुति बल प्राप्त करने के लिए करता हूं. उन इंद्र का धन सभी मनुष्यों का पोषण करने में समर्थ है. जिस प्रकार जल नीचे की ओर जाता है उसी प्रकार इंद्र का धन बल प्रदान करने के लिए प्रवृत्त होता है. (१)

अध ते विश्वमनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः.
यत् पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः (२)

हे इंद्र! जिस प्रकार जल नीचे की ओर जाता है, उसी प्रकार यह सारा जगत तुम्हारे यज्ञ का स्थान है. यजमान के तीनों सवन तुम्हें प्राप्त होते हैं. इंद्र का सुंदर, शत्रुओं की हिंसा करने वाला और स्वर्ण से विभूषित वज्र पर्वत को विदीर्ण करने में समर्थ हुआ. (२)

अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे.
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे (३)

हे दीप्त उषा देवता! शत्रुओं के लिए भयंकर एवं स्तुति के अधिक योग्य इंद्र को अन्न सहित हमारे यज्ञ में लाओ. जिन इंद्र का जल अन्न की समृद्धि करता है तथा जो इंद्र दिशाओं को प्रकाशित करते हैं, उन्हें हमारी यज्ञशाला में लाओ. (३)

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो.
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत् क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद् वचः (४)

हे इंद्र! तुम महान धन से संपन्न और स्तुतियों के पात्र हो. हम तुम्हारे ही आश्रित हैं. हे इंद्र! तुम्हारी महिमा बहुत अधिक है तथा हमारी स्तुतियां बहुत कम हैं. इस कारण तुम्हें हमारी स्तुति सुननी चाहिए, जिस प्रकार राजा प्रजा की बात सुनता है,

उसी प्रकार तुम हमारी प्रार्थना सुनो. (४)

भूरि त इन्द्र वीर्यं१ तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन् काममा पृण.
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे (५)

हे इंद्र! तुम्हारा वृत्र वध का वीरतापूर्ण कार्य महान है. इसी को ध्यान में रख कर हम तुम्हारे उपासक बने हैं. हे धन के स्वामी इंद्र! स्तुति करते हुए इस यजमान की अभिलाषा पूर्ण करो. हे इंद्र! तुम्हारा बल महान आकाश को नापता है. यह पृथ्वी तुम्हारे बल के कारण झुकती है. (५)

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन् पर्वशश्चकर्तिथ.
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः (६)

हे वज्रधारी इंद्र! तुम ने प्रसिद्ध, महान और विशाल पर्वतों के पंख आदि को अपने वज्र से काटा था. इस के बाद तुम ने पर्वत द्वारा रोके गए जलों को नदी के रूप में बहने के लिए छोड़ दिया था. केवल तुम ही इस प्रकार का असाधारण बल धारण करते हो. (६)

सूक्त सोलहवां — देवता—बृहस्पति

उदप्रुतो न वयो रक्षमाणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः.
गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्य१र्का अनावन् (१)

जिस प्रकार जलों में गमन करते हुए तथा व्याध आदि से अपनी रक्षा करते हुए पक्षी उच्च ध्वनि करते हैं, जिस प्रकार मेघ समूह गर्जन करता है तथा जिस प्रकार मेघों से बरसने वाला जल फसलों आदि को तृप्त करता है, उसी प्रकार स्तोता अपनी स्तुतियों से बृहस्पति देव की प्रशंसा करते हैं. (१)

सं गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भग इवेदर्यमणं निनाय.
जने मित्रो न दम्पती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूंरिवाजौ (२)

महर्षि अंगिरस जिस प्रकार भगदेव के समान विवाह के समय पतिपत्नी को गोघृत आदि सहित अर्यमा देव की शरण प्राप्त कराते हैं, उसी प्रकार अंगिरस ऋषि इस पतिपत्नी को अर्यमा देव की शरण प्राप्त कराएं. सूर्य जिस प्रकार प्रकाश के निमित्त अपनी किरणों को एकत्र करते हैं, उसी प्रकार अंगिरस ऋषि इन पतिपत्नी को एकत्र करें. (२)

साध्वर्या अतिथिनीरिषिरा स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः.
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः (३)

जिस प्रकार कोठियों से अन्न निकालते हैं, उसी प्रकार सज्जन पुरुषों को प्राप्त होने वाले, अतिथियों को तृप्त करने वाले, सब के द्वारा चाहे गए, सुंदर रंगों वाले एवं प्रशंसनीय रूप वाले बृहस्पति देव पर्वतों से निकाल कर गाएं स्तुति करने वालों

को प्रदान करते हैं. (३)

आप्रुषायन् मधुन ऋतस्य योनिमवक्षिपन्नर्क उल्कामिव द्योः.
बृहस्पतिरुद्धरन्नश्मनो गा भूम्या उद्नेव वि त्वचं बिभेद (४)

बृहस्पति देव ने जल से धरती को सभी ओर से सींचते हुए जल के समूह मेघ को आकाश से उसी प्रकार नीचे गिराया, जिस प्रकार सूर्य आकाश से उल्का गिराते हैं. जिस प्रकार जल धरती को कोमल बना देते हैं, उसी प्रकार बृहस्पति देव पणियों के द्वारा चुरा कर पर्वतों में रखी गई गायों को बाहर निकाल कर उन के खुरों से धरती को खुदवाते हैं. (४)

अप ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षादुद्नः शीपालमिव वात आजत्.
बृहस्पतिरनुमृश्या वलस्याभ्रमिव वात आ चक्र आ गाः (५)

वायु जिस प्रकार जल से काई को अलग कर देते हैं, उसी प्रकार बृहस्पति ने अपने प्रकाश से पर्वत की गुफाओं के उस अंधकार का विनाश कर दिया था जो गायों को छिपाए हुए था. वायु जिस प्रकार बादलों को सभी ओर बिखरा देती है, बृहस्पति देव ने उसी प्रकार बल नामक असुर द्वारा चुरा कर पर्वत की गुफा में रखी गई गायों को निकाल कर सभी ओर फैला दिया था. (५)

यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद् बृहस्पतिरग्नितपोभिरर्कैः.
दद्भिर्न जिह्वा परिविष्टमाददाविर्निधींरकृणोदुस्रियाणाम् (६)

बृहस्पति देव ने जिस समय बल नामक असुर के हिंसा के साधन आयुध को अग्नि के समान ताप वाले अपने मंत्रों से तोड़ दिया था, उस समय उन्होंने बल असुर के द्वारा छिपाई गई दुधारू गायों को उसी प्रकार प्रकट कर दिया था, जिस प्रकार चबाए हुए अन्न को जीभ भक्षण करती है. जब बृहस्पति देव ने पर्वत की गुफा में छिपी हुई गायों को उन के रंभाने के स्वर से जान लिया, तब पर्वत का भेदन कर के उन्होंने गायों को इस प्रकार बाहर निकाल लिया, जिस प्रकार मोर आदि के अंडे को तोड़ कर उस के भीतर से बच्चा निकाला जाता है. (६)

बृहस्पतिरमत हि त्यदासां नाम स्वरीणां सदने गुहा यत्.
आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्रियाः पर्वतस्य त्मनाजत् (७)

बृहस्पति देव ने पर्वत में छिपाई हुई गायों को शिला हटा कर उसी प्रकार देख लिया, जिस प्रकार जल कम हो जाने पर मनुष्य उस में रहने वाली मछलियों को देख लेते हैं. जिस प्रकार वृक्ष से चमस बाहर निकाला जाता है, उसी प्रकार बृहस्पति देव ने गायों को छिपाने वाले बल असुर को मार कर गायों को बाहर निकाला था. (७)

अश्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यन्मत्स्यं न दीन उदनि क्षियन्तम्.

निष्टञ्जभार चमसं न वृक्षाद् बृहस्पतिर्विरवेणा विकृत्य (८)

बृहस्पति देव ने पर्वत में छिपाई हुए गायों को उसी प्रकार देख लिया, जिस प्रकार जल कम हो जाने पर मनुष्य उस में रहने वाली मछलियों को देख लेते हैं. जिस प्रकार वृक्ष से चमस बाहर निकाला जाता है उसी प्रकार बृहस्पति देव ने गायों को छिपाने वाले असुर को मार कर गायों को बाहर निकाला था. (८)

सोषामविन्दत् स स्व१: सो अग्नि सो अर्केण वि बबाधे तमांसि.
बृहस्पतिर्गोवपुषो वलस्य निर्मज्जानं न पर्वणो जभार (९)

बृहस्पति देव ने पर्वत की गुफा में अंधकार से छिपी हुई गायों को देखने के लिए उषादेवी को प्राप्त किया. बृहस्पति देव ने प्रकाश करने के लिए सूर्य एवं अग्नि को प्राप्त किया. इन्हें प्राप्त कर के बृहस्पति देव ने प्रकाश से अंधकार को नष्ट कर दिया. बृहस्पति देव ने गौ रूपधारी असुर का हनन कर के गायों को इस प्रकार बाहर निकाला, जिस प्रकार हड्डियों से मज्जा अर्थात चर्बी बाहर निकाली जाती है. (९)

हिमेव पर्णा मुषिता वनानि बृहस्पतिनाकृपयद् वलो गाः.
अनानुकृत्यमपुनश्चकार यात् सूर्यामासा मिथ उच्चरातः (१०)

जिस प्रकार हिमपात सारहीन पत्तों को ग्रहण करता है, उसी प्रकार बृहस्पति देव ने बल असुर के द्वारा चुराई गई गायों को प्राप्त किया. बल असुर ने भी गाएं बृहस्पति देव को प्रदान कीं. बृहस्पति द्वारा ही सूर्य दिन को और चंद्रमा रात्रि को प्रकट करता हुआ घूमता है. बृहस्पति देव का यह कर्म ऐसा है, जिसे कोई दूसरा नहीं कर सकता और उसे दुबारा नहीं किया जा सकता. (१०)

अभि श्यावं न कृशनेभिरश्वं नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन्.
रात्र्यां तमो अदधुर्ज्योतिरहन् बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद् गाः (११)

बृहस्पति देव ने जब गायों को छिपाने वाले पर्वत को विदीर्ण कर के गायों को प्राप्त किया, तब इंद्र आदि देवों ने आकाश को नक्षत्रों से उसी प्रकार अलंकृत किया, जिस प्रकार घोड़े को सजाते हैं. इस प्रकार उन्होंने रात्रि में अंधकार को तथा दिन में प्रकाश को स्थापित किया. (११)

इदमकर्म नमो अभ्रियाय यः पूर्वीरन्वानोनवीति.
बृहस्पतिः स हि गोभिः सो अश्वैः स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात् (१२)

मेघ को विदीर्ण कर के जल प्रदान करने वाले बृहस्पति देव को हम यह हवि प्रदान करते हैं. बृहस्पति देव ने हमारी ऋचाओं की प्रशंसा की है. वे हमें गायों, घोड़ों, पुत्रों तथा सेवकों सहित अन्न प्रदान करें. (१२)

अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत.
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये (१)

मैं सुंदर हाथ और वाणी वाला हूं. मेरी स्तुतियां इंद्रदेव की प्रशंसा करती हैं. ये स्तुतियां स्वर्ग प्राप्त करने में सहायक एवं परस्पर मिली हुई हैं. इंद्र की कामना करती हुई ये स्तुतियां इस प्रकार आपस में लिपटी हुई हैं, जिस प्रकार पुत्र की कामना करने वाली स्त्रियां पति से लिपटती हैं. जिस प्रकार पिता आदि को आता हुआ देख कर पुत्र अपनी रक्षा के लिए उन से लिपट जाते हैं, उसी प्रकार मेरी स्तुतियां इंद्र से लिपटती हैं. (१)

न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत् कामं पुरुहूत शिश्रय.
राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते (२)

हे इंद्र! मेरा मन कभी तुम से अलग नहीं होता और सदा तुम्हारी ही कामना करता रहता है. हे शत्रुओं का विनाश करने वाले इंद्रदेव! जिस प्रकार राजा सिंहासन पर बैठता है. उसी प्रकार तुम इन कुशों पर बैठो तथा भलीभांति संस्कार किए गए इस सोम धारा में सोमरस का पान करो. (२)

विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते.
तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः (३)

इंद्रदेव हमारी दरिद्रता, बुद्धिहीनता तथा भूख का नाश करें. इंद्रदेव ही देने योग्य धन के स्वामी हैं. वर्षा करने वाले इंद्र की ही गंगा आदि सात नदियां निचले स्थानों में अन्न को बढ़ाती है. (३)

वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन्त्सोमास इन्द्रं मन्दिनश्चमूषदः.
प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद् विदत् स्व१र्मनवे ज्योतिरार्यम् (४)

जिस प्रकार पक्षी वृक्ष पर बैठते हैं, उसी प्रकार प्रसन्नता देने वाले सोम इंद्र का आश्रय लेते हैं. इन सोमों का मुख तेज से दीप्त होता है. इन्हीं सोमों ने मनुष्यों को प्रकाश प्राप्त करने के लिए सूर्य के रूप में ज्योति प्रदान की है. (४)

कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत्.
न तत् ते अन्यो अनु वीर्यं शकन्न पुराणो मघवन् नोत नूतनः (५)

जुआरी जिस प्रकार पासों को पकड़ता है, उसी प्रकार हमारी स्तुतियां इंद्र को ग्रहण करती है. धन के स्वामी इंद्र ने अंधकार का विनाश करने वाले सूर्यदेव को आकाश में स्थापित किया है. हे इंद्र! तुम्हारे इस कार्य का अनुकरण प्राचीन अथवा आधुनिक कोई अन्य नहीं कर सकता है. (५)

विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद् वृषा.
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः (६)

कामनाओं को पूर्ण करने वाले इंद्र अपने सभी उपासकों के पास एक साथ पहुंच जाते हैं तथा सब की स्तुतियां एक ही समय में सुन लेते हैं. इस प्रकार के इंद्र जिस यजमान के तीनों सपनों में प्रतिष्ठित होते हैं, वह अत्यधिक मादकता प्रदान करने वाले सोमों के प्रभाव से युद्ध के इच्छुक शत्रुओं को पराजित करता है. (६)

आपो न सिन्धुमभि यत् समक्षरन्त्सोमास इन्द्रं कुल्या इव ह्रदम्.
वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना (७)

जिस प्रकार जल सागर में जाता है और छोटी नदियां सरोवरों को प्राप्त करती हैं, उसी प्रकार सोमरस इंद्र देव की ओर जाते हैं. स्तोता अपनी स्तुतियों से इंद्रदेव की महिमा को उसी प्रकार बढ़ाते हैं जिस प्रकार जल देते हुए मेघ अन्न को बढ़ाते हैं. (७)

वृषा न क्रुद्धः पतयद् रजः स्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः.
स सुन्वते मघवा जीरदानवेऽविन्दज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते (८)

जो इंद्र सूर्य के द्वारा रक्षित जलों को पृथ्वी पर गिराते हैं, वे क्रोधित बैल के समान मेघ को छिन्नभिन्न कर देते हैं. इस के पश्चात धन के स्वामी इंद्र सोमरस निचोड़ने वाले एवं शीघ्र हवि प्रदान करने वाले यजमान को प्रकाश युक्त तेज प्रदान करते हैं. (८)

उज्जायतां परशुर्ज्योतिषा सह भूया ऋतस्य सुदुघा पुराणवत्.
वि रोचतामरुषो भानुना शुचिः स्व१र्ण शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः (९)

मेघ को विदीर्ण करने के लिए इंद्र का वज्र अपने तेज के साथ प्रकट हो तथा जल का दोहन करने वाली मध्यमा वाणी पहले के समान प्रकट हो तथा अपने तेज से प्रकाश वाली हो. सूर्यदेव जिस प्रकार अपने ही तेज से प्रकाशित होते हैं, उसी प्रकार सज्जनों का पालन करने वाले इंद्र अत्यधिक दीप्त हों. (९)

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्.
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम (१०)

हे बहुतों के द्वारा स्तुति किए गए इंद्र! तुम्हारी कृपा को प्राप्त करते हुए हम यजमान तुम्हारे द्वारा दी गई गायों के कारण दरिद्रता को पार करें. तुम्हारे द्वारा दिए हुए अन्न से हम अपने लोगों की भूख दूर करें. तुम्हारी कृपा से हम अपने समान जनों में श्रेष्ठ हों तथा राजा से धन प्राप्त कर के अपने शत्रुओं को पराजित करें. (१०)

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः.

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु (११)

बृहस्पति देव पश्चिम दिशा से, ऊपर से एवं नीचे से अपने वाले हिंसक पापियों से हमारी रक्षा करें. इंद्रदेव सामने से तथा मध्य भाग से आते हुए हिंसक से हमारी रक्षा करें. इस प्रकार चारों ओर से हमारी रक्षा करते हुए सखा रूप इंद्र हमें धन प्रदान करें. (११)

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य.
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः (१२)

हे बृहस्पति एवं इंद्र! तुम दोनों आकाश और धरती संबंधी धन के स्वामी हो. इसलिए मुझ स्तोता को धन प्रदान करते हुए सदा रक्षा करो. (१२)

सूक्त अठारहवां देवता—इंद्र

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः. कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते (१)

हे इंद्र! हम कण्व गोत्र वाले महर्षि सखा के समान तुम्हारी कामना करते हुए तुम से संबंधित स्तोत्र से तुम्हारी स्तुति करते हैं. (१)

न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ. तवेदु स्तोमं चिकेत (२)

हे वज्रधारी इंद्र! यज्ञरूपी नवीन कर्म की इच्छा पर हम इस समय तुम्हारे अतिरिक्त किसी अन्य देव की स्तुति नहीं करते हैं. हम केवल तुम्हारी स्तुति को जानते हैं. (२)

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति. यन्ति प्रमादमतन्द्राः (३)

इंद्र आदि देव सोमरस निचोड़ने वाले यजमान की कामना करते हैं. वे उदासीनता नहीं करते हैं. वे अत्यंत मदकारी सोम रस के लिए आलस्य रहित हो कर जाते हैं. (३)

वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन्. विद्धि त्व१स्य नो वसो (४)

हे कामनाओं को पूर्ण करने वाले इंद्र! तुम्हारी इच्छा करते हुए हम तुम्हारे सामने तुम्हारी स्तुति करते हैं. तुम भी हमारे स्तोत्र की कामना करो. (४)

मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे. त्वे अपि क्रतुर्मम (५)

हे स्वामी इंद्र! तुम हमें निंदक के वश में मत करो. हमें कठोर वचन बोलने वालों तथा दान न करने वाले शत्रुओं के अधीन मत करो. (५)

त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन्. त्वया प्रति ब्रुवे युजा (६)

हे वृत्र का हनन करने वाले और सब से महान इंद्र! तुम आगे रह कर युद्ध करते हो. तुम मेरे कवच हो. मैं तुम्हारी सहायता से शत्रुओं को भयभीत करता हूं. (६)

सूक्त उन्नीसवां देवता—इंद्र

वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च. इन्द्र त्वा वर्तयामसि (१)

हे इंद्र! हम वृत्र हनन के समान बल प्रदर्शन और शत्रु सेनाओं को अपमानित करने जैसे कर्मों के निमित्त तुम्हें अपने सामने बुलाते हैं. (१)

अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो. इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः (२)

हे अनेक कर्म करने वाले इंद्र! यज्ञ कर्म का निर्वाह करने वाले ऋत्विज तुम्हें हमारे सामने लाएं. वे तुम्हारी दृष्टि को भी हमारे सामने करें. (२)

नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे. इन्द्राभिमातिषाह्ये (३)

हे शतक्रतु इंद्र! हम पाप का विनाश करने वाले यज्ञ कर्म में तुम्हारी सभी स्तुतियों की कामना करते हैं. हे इंद्र! तुम संग्राम में शत्रुओं का विनाश करने वाले हो. (३)

पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि. इन्द्रस्य चर्षणीधृतः (४)

सैकड़ों स्तोताओं द्वारा पूजा के योग्य, मनुष्यों के रक्षक एवं सैकड़ों प्रकार के तेजों से युक्त इंद्र की हम पूजा करते हैं. (४)

इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे. भरेषु वाजसातये (५)

युद्धभूमि में अनेक योद्धाओं द्वारा विजय पाने के लिए बुलाए गए एवं यजमानों द्वारा अन्न प्राप्ति के लिए बुलाए गए इंद्र की मैं स्तुति करता हूं. (५)

वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो. इन्द्र वृत्राय हन्तवे (६)

हे शतक्रतु इंद्र! तुम संग्रामों में शत्रुओं को पराजित करने वाले हो. मैं तुम्हारी स्तुति करता हूं. मैं वृत्र अर्थात पाप के नाश के लिए तुम्हारी स्तुति करता हूं. (६)

द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च. इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु (७)

हे इंद्र! धन प्राप्ति के लिए युद्ध उपस्थित होने पर, अन्न की प्राप्ति के अवसर पर, पापों और शत्रुओं का नाश करने के निमित्त तुम हमारा सहयोग करो. (७)

सूक्त बीसवां देवता—इंद्र

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्. इन्द्र सोमं शतक्रतो (१)

हे इंद्र! तुम हमारी रक्षा के निमित्त अतिशय बल कारक, बुरे स्वप्न का नाश करने वाले तथा तेज से दमकते हुए सोमरस का पान करो. (१)

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु. इन्द्र तानि त आ वृणे (२)

हे इंद्र! तुम्हारा जो बल ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद—पांच वर्णों में है, हम उसी बल की याचना करते हैं. (२)

अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्. उत् ते शुष्मं तिरामसि (३)

हे इंद्र! तुम्हारा अधिक अन्न हमें प्राप्त हो. तुम शत्रुओं के द्वारा प्राप्त न करने योग्य यश अथवा धन को हमें प्राप्त कराओ. हम सोमरस अथवा स्तोत्र के द्वारा तुम्हारा बल बढ़ाते हैं. (३)

अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः.
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि (४)

हे शतक्रतु इंद्र! तुम समीप और दूर देश से हमारे समीप आओ. हे वज्रधारी इंद्र! तुम्हारा जो भी लोक है, वहां से इस देव कर्म अर्थात यज्ञ में सोमरस पीने के लिए आओ. (४)

इन्द्रो अङ्ग महद् भयमभी षदप चुच्यवत्. स हि स्थिरो विचर्षणिः (५)

इंद्रदेव हमारे उस भय का विनाश करते हैं, जिसे दूसरे दूर नहीं कर सकते. वे इंद्र किसी अन्य के द्वारा अस्थिर होने वाले नहीं हैं. वे सभी को देखने वाले हैं. (५)

इन्द्रश्च मृडयाति नो न नः पश्चादघं नशत्. भद्रं भवाति नः पुरः (६)

हम जिस की शरण में जाते हैं, वे इंद्रदेव यदि सब प्राणियों के रक्षक हैं तो हमें भी सुखी बनाएं. हमारे सामने सदा मंगल उपस्थित हो. (६)

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्. जेता शत्रून् विचर्षणिः (७)

इंद्र चारों दिशाओं, दिशाओं के चारों कोणों तथा ऊपर नीचे से हमें अभय प्रदान करें. इंद्र हम से द्वेष रखने वाले शत्रुओं को जीतने वाले और द्वेष करने वाले हैं. (७)

सूक्त इक्कीसवां — देवता—इंद्र

न्यूऽषु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः.
नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदन्न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते (१)

हम इन इंद्र के लिए शोभन स्तुतियां प्रदान करते हैं. उपासना करने वाले यजमान के यज्ञमंडप में इंद्र के लिए स्तुतियां की जा रही हैं. जिस प्रकार चोर सोते हुए लोगों का धन शीघ्र प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार इंद्र असुरों का धन प्राप्त करते हैं. धन देने वाले पुरुषों के प्रति बुरी स्तुति प्रयोग नहीं की जाती. (१)

दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः.
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि (२)

हे इंद्र! तुम अश्व, गज आदि वाहनों, गाय, भैंस आदि पशुओं तथा जौ, गेंहू आदि अन्नों के देने वाले हो. तुम स्वर्ण, मणि, मोती आदि धनों के स्वामी एवं रक्षक हो. तुम दान के नेता, अपने सेवकों की इच्छा बढ़ाने वाले तथा अपने ऋत्विजों के मित्र हो, इसलिए तुम्हारे प्रति हम इस स्तुति का उच्चारण करते हैं. (२)

शचीव इन्द्र पुरुकृद् द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु.
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः (३)

हे इंद्र! तुम बुद्धिमान, परम ऐश्वर्य युक्त तथा बहुत से कर्म करने वाले हो. सर्वत्र विद्यमान धन के तुम्हीं स्वामी हो. हे शत्रुओं को बारबार पराजित करने वाले इंद्र! इसलिए तुम पूरे धन का संग्रह कर के मुझे प्रदान करो. मैं तुम्हारी कामना करता हुआ तुम्हारी स्तुति करता हूं. मुझे तुम अपूर्ण मत रहने दो. (३)

एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना.
इन्द्रेण दस्युं दरयन्त इन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि (४)

हे इंद्र! हमारी अधिक हवि और सोमरस से प्रसन्न होते हुए तुम गाय और अश्व आदि धन दे कर हमारी दरिद्रता समाप्त करो. हे शोभन मन वाले इंद्र! हमारे द्वारा दिए हुए सोमरसों से प्रसन्न हो कर तुम शत्रुओं की हिंसा करते हुए हमें शत्रुविहीन बनाओ. हम इंद्र के द्वारा दिए हुए अन्न से संपन्न हों. (४)

समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः.
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि (५)

हे इंद्र! हम सब के द्वारा चाहे गए धन से संपन्न हों. हम प्रजाओं को प्रसन्न करने वाले बल से युक्त हों. हमें तुम्हारी कृपामयी बुद्धि प्राप्त हो. वह बुद्धि हमें गायों को देने वाली तथा हमारे क्लेशों का निवारण करने वाली हो. (५)

ते त्वा मदा अमदन् तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते.
यत् कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः (६)

हे सज्जनों के रक्षक इंद्र! शत्रुओं के हनन कर्म में प्रसिद्ध एवं मादक आज्य, पुरोडाश आदि तुम्हें प्रसन्न करें. हमारे प्रसिद्ध स्तोत्र भी प्रसन्नता के साधन होने के कारण तुम्हें हर्षित करें. प्रसिद्ध सोमरस भी तुम्हें प्रसन्न करें. स्तुति करते हुए यजमान के दस सहस्र पापों को तुम समाप्त करो. (६)

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा.
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम् (७)

हे इंद्र! तुम अपने प्रहार के साधन वज्र के द्वारा शत्रुओं के आयुधों पर आक्रमण

करते हो. तुम शत्रुओं के नगरों में निवास करने वाले वीरों को अपने मरुद्गण आदि वीरों के द्वारा नष्ट कराते हो. तुम ने मायावी नमुचि का संहार किया था, इसलिए हम तुम्हारी स्तुति करते हैं. (७)

त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी.
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत् पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना (८)

हे इंद्र! तुम ने अपनी अतिशय तेज युक्त वर्तनी नाम की शक्ति से अतिथि अतिथिग्व के राजा के शत्रुओं करज एवं पर्णय असुरों का वध किया था. तुम ने ऋजिश्वा राजा के शत्रु वंगृदासुर के सौ नगरों का भी विध्वंस किया था. (८)

त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः.
षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् (९)

हे इंद्र! तुम ने सहायक विहीन सुश्रवा राजा को घेरने वाले साठ हजार निन्यानवे सेनापतियों को अपने उस चक्र से नष्ट कर दिया जो रक्षा के योग्य था और जिसे शत्रु प्राप्त नहीं कर सकते थे. (९)

त्वमाविथ सुश्रवसं तवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम्.
त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः (१०)

हे इंद्र! तुम ने सहायक विहीन राजा सुश्रवा की अपने रक्षा साधनों से रक्षा की. तुम ने तूर्वयाण नाम के राजा का पालन किया. तुम ने युवराज बने हुए कुत्स, अतिथि ग्व और आयु का आश्रय सुश्रवा को प्राप्त कराया. (१०)

य उदृचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम.
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः (११)

हे इंद्र! इस यज्ञ की समाप्ति पर हमें तुम्हारी रक्षा प्राप्त हो. सखा के समान तुम्हारे अत्यंत प्रिय होते हुए हम इस यज्ञ के बाद भी अतिशय कल्याणों को प्राप्त करें. इस यज्ञ की समाप्ति के उत्तरकाल में भी हम तुम्हारी स्तुति करें. तुम्हारी स्तुतियां करते हुए हम शोभन पुत्रों को तथा दीर्घ आयु को प्राप्त करें. (११)

सूक्त बाईसवां — देवता—इंद्र

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पातये. तृम्पा व्य श्नुही मदम् (१)

हे वर्षा करने वाले इंद्र! सोम के निचोड़ लिए जाने पर एवं शुद्ध हो जाने पर हम उसे पीने के लिए तुम्हें बुलाते हैं. उस हर्षदायक सोम को पी कर तुम तृप्त बनो. तुम उस प्रसन्न करने वाले सोम रस को विशेष रूप से प्राप्त करो. (१)

मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्. माकीं ब्रह्मद्विषो वनः (२)

हे इंद्र! तुम्हारी कृपा से हम अपने पालन की इच्छा करते हैं. अपनी रक्षा का उपाय न जानते हुए मूर्ख तुम्हारी हिंसा न करें. जो ब्राह्मणों से द्वेष करने वाले हैं, तुम उन की सेवा को स्वीकार मत करो. (२)

इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे. सरो गौरो यथा पिब (३)

हे इंद्र! ऋत्विज धन प्राप्ति के लिए तुम्हें गाय के दूध से मिश्रित सोमरस दे कर प्रसन्न करें. गौर मृग अत्यधिक प्यासा होने पर जिस प्रकार जल पीता है, तुम उसी प्रकार सोमरस को पियो. (३)

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे. सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् (४)

हे स्तोता! तुम इंद्र की पूजा उस प्रकार करो, जिस से वे हमें अपना मान लें. इंद्र सत्य के पुत्र और सत्य की रक्षा करने वाले हैं. (४)

आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि. यत्राभि संनवामहे (५)

इंद्र के सुंदर अश्व उन के रथ को हमारे यज्ञ में बिछे हुए कुशों के समीप लाएं. (५)

इन्द्राय गाव आशिरं दुदुहे वज्रिणे मधु. यत् सीमुपह्वरे विदत् (६)

वज्रधारी इंद्र के लिए गाएं उस समय मधुर दूध दुहाती है जिस समय पास में रखे हुए मधुर एवं स्वादिष्ट सोमरस को इंद्र पीते हैं. (६)

सूक्त तेईसवां देवता—इंद्र

आ तू न इन्द्र मद्र्य ग्घुवानः सोमपीतये. हरिभ्यां याह्यद्रिवः (१)

हे वज्रधारी इंद्र! हमारे द्वारा आह्वान करने पर तुम सोमरस का पान करने के लिए अपने अश्वों द्वारा हमारे यज्ञ में आओ. (१)

सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक्. अयुज्रन् प्रातरद्रयः (२)

हे इंद्र! हमारे यज्ञ में होता नाम का ऋत्विज समय पर उपस्थित हो कर बैठे. हमारे यज्ञ में कुश एकदूसरे से मिले हुए बिछें. सोमरस कूटने के लिए प्रातः स्वप्न में पत्थर एकदूसरे से मिलें. (२)

इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद. वीहि शूर पुरोळाशम् (३)

हे इंद्र! हम तुम्हारी स्तुति कर रहे हैं. तुम इन कुशाओं पर बैठो. हे वीर! कुशाओं पर बैठ कर तुम हमारे द्वारा दिए गए पुरोडाश का भक्षण करो. (३)

रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन्. उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः (४)

हे स्तुतियों द्वारा सेवा करने योग्य तथा वृत्रासुर का वध करने वाले इंद्र! हमारे तीनों सवनो में की जाती हुई स्तुतियों से प्रसन्न बनो. (४)

मतय: सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम्. इन्द्रं वत्सं न मातर: (५)

हमारी स्तुतियां महान सोमरस का पान करने वाले तथा बल के स्वामी इंद्र को उसी प्रकार प्राप्त होती हैं, जिस प्रकार गाय अपने बछड़े को चाटती है. (५)

स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे. न स्तोतारं निदे कर: (६)

हे इंद्र! तुम अपने शरीर में बल प्राप्त करने के लिए सोमरस पी कर प्रसन्न बनो. मुझे अधिक धन देने के लिए तुम हर्षित होओ. मैं तुम्हारा स्तोता हूं. मुझे दूसरे का निंदक मत बनाओ. (६)

वयमिन्द्र त्वायवो हिवष्मन्तो जरामहे. उत त्वमस्मयुर्वसो (७)

हे इंद्र! हम सोम रूप हवि से युक्त हो कर तुम्हारी कामना करते हैं. हे सब को वास देने वाले इंद्र! तुम हमें मनचाहा फल देने के लिए प्रसन्न बनो. (७)

मारे अस्मद् वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ् याहि. इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह (८)

हे इंद्र! तुम अश्वों को प्रेम करने वाले हो. अपने अश्वों को तुम हम से दूर रथ से अलग मत करो. तुम अश्व युक्त रथ पर चढ़े हुए ही हमारे यज्ञ में आओ. यहां आ कर तुम सोमरस पियो और हर्ष पूर्ण बनो. (८)

अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना. घृतस्नू बर्हिरासदे (९)

हे इंद्र! श्रम की बूंदों के कारण भीगे हुए घोड़े तुम्हें सुख देने वाले रथ पर बैठा कर बिछी हुई कुशाओं पर विराजमान करने के लिए हमारे सामने लाएं. (९)

सूक्त चौबीसवां देवता—इंद्र

उप न: सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम्. हरिभ्यां यस्ते अस्मयु: (१)

हे इंद्र! हमारा सोम गाय के दूध से युक्त है. तुम उसे पीने के लिए हमारे पास आओ. तुम्हारे जिन रथों में घोड़ों को जोड़ दिया गया है, वे रथ हमारे यज्ञ में आना चाहते हैं. (१)

तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिष्ठां ग्रावभि: सुतम्. कुविन्न्व स्य तृष्णव: (२)

हे इंद्र! यह सोम कुशाओं पर रखा है. तुम इस की ओर आओ तथा इसे पी कर तृप्त बनो. (२)

इन्द्रमित्था गिरो ममाच्छागुरिषिता इत:. आवृते सोमपीतये (३)

हमारी स्तुति रूपी वाणियां इंद्र को हमारे यज्ञ में लाने के लिए उन के पास जाती हैं. (३)

इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे. उक्थेभिः कुविदागमत् (४)

हम अपनी स्तुतियों के द्वारा इंद्र को सोम पान के लिए बुलाते हैं. इंद्र हमारे यज्ञ में अनेक बार आएं. (४)

इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् दधिष्व शतक्रतो. जठरे वाजिनीवसो (५)

हे इंद्र! ये सोम, चमस आदि तुम्हारे हेतु एकत्र किए गए हैं. तुम इस सोम को उदरस्थ करो. (५)

विद्मा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधृषं कवे. अधा ते सुम्नमीमहे (६)

हे इंद्र! हम जानते हैं कि तुम युद्ध के अवसर पर शत्रुओं को अपने वश में करते हो तथा धनों के विजेता हो. (६)

इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब. आगत्या वृषभिः सुतम् (७)

हे इंद्र! यहां आ कर पत्थरों से कूट कर तैयार किए गए और गाय का दूध मिले हुए सोम का पान करो. (७)

तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये३ सोमं चोदामि पीतये. एषा रारन्तु ते हृदि (८)

हे इंद्र! मैं इस सोम को पी कर अपने उदर में भर लेने के लिए तुम्हें प्रेरित करता हूं. यह सोम पीने के बाद तुम्हारे हृदय में रमा रहेगा. (८)

त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे. कुशिकासो अवस्यवः (९)

हे इंद्र! हम कौशिक गोत्री ऋषि तुम से रक्षा की कामना करते हुए तैयार किए हुए सोम रस पीने के लिए तुम्हें बुलाते हैं. (९)

सूक्त पच्चीसवां — देवता—इंद्र

अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः.
तमित् पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः. (१)

हे इंद्र! जो पुरुष तुम्हारे द्वारा रक्षित होता है, वह बहुसंख्यक अश्वों वाले युद्धों में तथा अश्वारोहियों में प्रमुख बन जाता है. वह गायों वाले पुरुषों में भी श्रेष्ठ होता है. जिस प्रकार जल सब ओर से सागर को भरते हैं, उसी प्रकार तुम भी उसे अनेक प्रकार से प्राप्त होने वाले धन से पूर्ण करते हो. (१)

आपो न देवीरुप यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः.
प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव (२)

हे इंद्र! जिस प्रकार जल नीचे की ओर बहता हुआ सागर में जाता है, उसी प्रकार स्तुतियां तुम से जा कर मिल जाती हैं. जिस प्रकार मनुष्य सूर्य के प्रकाश की चकाचौंध के कारण नीचे की ओर देखने लगते हैं, उसी प्रकार लोग तुम्हारे तेज से दृष्टियां बचाते हैं. जिस प्रकार स्तोता तुम्हें यज्ञ वेदी के सामने बुला लेते हैं, उसी प्रकार ऋत्विज तुम्हारी सेवा करते हैं. (२)

अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं१ वचो यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः.
असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते (३)

जो यज्ञ साधन पात्र रखे हैं, ऋत्विज उन पात्रों के द्वारा इंद्र आदि का पूजन करते हैं. उन पात्रों पर स्तुति के योग्य उक्थ स्थापित किया गया है. हे इंद्र! तुम्हारे निमित्त यज्ञ करने वाला यजमान संतान, पशु आदि से संपन्न हो तथा कल्याणमयी शक्ति को प्राप्त करे. (३)

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया.
सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः (४)

हे इंद्र! जब पणियों ने गायों का अपहरण कर लिया, तब अंगिरागोत्री ऋषियों ने सब से पहले तुम्हारे निमित्त ही हवि अन्न का संपादन किया. हमें जो भीषण भय प्राप्त है, उसे इंद्र हम से दूर करते हैं. वे इंद्र सदैव अपने उत्तम कर्मों से आह्वनीय अग्नि को प्रदीप्त करते हैं. देवों के नेता इंद्र ने पणियों से छीना हुआ धन गौ, अश्व, भेड़, बकरी आदि से प्राप्त किया था. (४)

यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि.
आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे (५)

इंद्र के लिए यज्ञ करने वाले अथर्वा ऋषि ने पणियों द्वारा चुराई हुई गायों को छिपा कर रखने के स्थान का मार्ग पहले ही जान लिया था. जब सूर्योदय हो गया, तब कवि के पुत्र उशना ने इंद्र की सहायता से उन गायों को प्राप्त किया था. हम अविनाशी इंद्र का पूजन करते हैं. (५)

बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय वृज्यतेऽर्को वा श्लोकमाघोषते दिवि.
ग्रावा यत्र वदति कारुरुक्थ्य१स्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति (६)

सुंदर संतान रूप फल को पाने के लिए यज्ञ में कुशाएं बिछाई जाती हैं. वाणी के रूप में यज्ञ के जिस स्तोत्र का उच्चारण किया जाता है तथा जिस यज्ञ में सोम को कूटने वाला पत्थर स्तोता के समान शब्द करता है, वहां इंद्र विराजमान होते हैं. (६)

प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्.
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः (७)

हे इंद्र! तुम हरि नाम के अश्वों द्वारा श्रेष्ठ गमन करने वाले तथा कामनाओं के वर्षक हो. मैं तुम्हें सोमरस पीने को प्रेरित करता हूं. तुम स्तुतियां सुन कर हमारे यज्ञ में प्रसन्न बनो. (७)

सूक्त छब्बीसवां देवता—इंद्र

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे. सखाय इन्द्रमूतये (१)

यज्ञ के अवसर पर अथवा युद्ध प्राप्त होने पर अपने सखा रूप इंद्र का हम आह्वान करते हैं. (१)

आ घा गमद् यदि श्रवत् सहस्रिणीभिरूतिभिः. वाजेभिरुप नो हवम् (२)

इंद्र मेरी स्तुतियां और आह्वानों को सुन कर अपने रक्षा साधन और अन्न ले कर यहां आएं. (२)

अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्. यं ते पूर्वं पिता हुवे (३)

हे इंद्र! तुम प्राचीन स्वर्ग के स्वामी तथा असंख्य वीरों के प्रतिनिधि हो. प्राचीन काल में मेरे पिता ने तुम्हारा आह्वान किया था, इसलिए मैं भी तुम्हें बुलाता हूं. (३)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः. रोचन्ते रोचना दिवि (४)

इंद्र के विशाल, देदीप्यमान तथा विचरणशील रथ में हरि नाम के अश्व जुड़े रहते हैं. वे अश्व आकाश में दमकते रहते हैं. (४)

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे. शोणा धृष्णू नृवाहसा (५)

इंद्र के सारथी उन के रथ में घोड़ों को जोड़ते हैं. वे घोड़े रथ के दोनों ओर रहते हैं. वे अश्व कामना करने योग्य एवं इंद्र को वहन करने वाले हैं. (५)

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे. समुषद्भिरजायथाः (६)

हे मनुष्यो! अंधकार में छिपे पदार्थों को अपने प्रकाश से आकार देने वाले तथा अज्ञानी को ज्ञान प्रदान करने वाले सूर्य अपनी किरणों के साथ उदय हो गए हैं. तुम इन के दर्शन करो. (६)

सूक्त सत्ताईसवां देवता—इंद्र

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्. स्तोता मे गोषखा स्यात् (१)

हे इंद्र! तुम ऐश्वर्यवान हो. जिस प्रकार तुम देवों में श्रेष्ठ तथा धनों के स्वामी हो, उसी प्रकार मैं भी धन का स्वामी बनूं. जिस प्रकार तुम्हारी स्तुति करने वाला गायों का मित्र हो जाता है, उसी प्रकार मेरी प्रशंसा करने वाला भी गौ आदि धन प्राप्त करे. (१)

शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे. यदहं गोपतिः स्याम् (२)

हे शचीपति इंद्र! जब तुम्हारी कृपा से मैं गायों से संपन्न हो जाऊंगा, तब इस स्तुति करने वाले विद्वान को धन देने की इच्छा करता हुआ इसे धन दे सकूंगा. (२)

धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते. गामश्वं पिप्युषी दुहे (३)

हे इंद्र! हमारी सच्ची स्तुति तुम्हें उसी प्रकार तृप्त करे, जिस प्रकार गाएं लोगों को अपने दूध से तृप्त करती हैं. यह स्तुति सोम का संस्कार करने वाले यजमान की वृद्धि करे. यह स्तुति गौ आदि अभीष्ट पदार्थों को प्रदान करती है. (३)

न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः. यद् दित्ससि स्तुतो मघम् (४)

हे इंद्र! तुम्हारे धन को कोई रोक नहीं सकता. देवगण तुम्हारे धन को अन्यथा नहीं कर सकते तथा मनुष्य तुम्हारे धन को मिटाने में समर्थ नहीं हैं. हमारी स्तुति से प्रसन्न हो कर तुम यदि हम को धन देना चाहो, उस धन को कोई नष्ट नहीं कर सकता. (४)

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत्. चक्राण ओपशं दिवि (५)

जो इंद्र आकाश में मेघ को विस्तृत करते हैं तथा वर्षा के जल से धरती को गीला करते हैं, वे ही वर्षा के जल से भूमि के धान्यों को पुष्ट बनाते हैं. (५)

वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः. ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे (६)

हे इंद्र! तुम स्तुतियों से वृद्धि प्राप्त करते हो. हम तुम्हारी उस शक्ति का वरण करते हैं जो शत्रु के धनों को जीतने वाली और हमारी रक्षा करने वाली है. (६)

सूक्त अट्ठाईसवां देवता—इंद्र

व्य१न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना. इन्द्रो यदभिनद् वलम् (१)

सोमपान से उत्पन्न शक्ति के द्वारा जब इंद्र ने मेघ को विदीर्ण किया, तब वर्षा के जल से अंतरिक्ष की वृद्धि की. (१)

उद्‌गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः. अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् (२)

इंद्र ने अंगिरा गोत्र वाले ऋषियों के लिए गुफा में छिपी गायों को प्रकट किया तथा उन्हें निकाल कर उन का अपहरण करने वाले राक्षसों को अधोमुख कर के मिटा दिया. (२)

इन्द्रेण रोचना दिवो दृढानि दृंहितानि च. स्थिराणि न पराणुदे (३)

जो ग्रह और नक्षत्र आकाश में स्थित हैं, उन्हें इंद्र ने दृढ़ किया है, इसीलिए उन्हें कोई नीचे नहीं गिरा सकता. (३)

अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते. वि ते मदा अराजिषुः (४)

हे इंद्र! तुम्हारा स्तोत्र वर्षा के जल से सागर आदि को हर्षित करता हुआ तथा रस के समान हमारे मुख से प्रकट होता है. सोमपान के बाद तुम्हारी शक्ति विशिष्ट हो जाती है. (४)

सूक्त उनतीसवां देवता—इंद्र

त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः. स्तोतृणामुत भद्रकृत् (१)

हे इंद्र! तुम स्तोत्रों तथा उक्थों से वृद्धि प्राप्त करते हो. तुम स्तुति करने वालों के कल्याणकारी हो. (१)

इन्द्रमित् केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः. उप यज्ञं सुराधसम् (२)

इंद्र के हरि नाम के अश्व उन्हें हमारे सुंदर फल वाले यज्ञ में सोमपान के लिए लाएं. (२)

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः. विश्वा यदजय स्पृधः (३)

हे इंद्र! तुम ने जल के फेन का वज्र बना कर नमुचि राक्षस का सिर काट दिया था तथा विरोधी सेनाओं पर विजय प्राप्त की थी. (३)

मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः. अव दस्यूंरधूनुथाः (४)

हे इंद्र! जो असुर अपनी माया से आकाश पर चढ़ने की इच्छा करते हैं, उन्हें तुम अधोमुख कर के गिरा देते हो. (४)

असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्य नाशयः. सोमपा उत्तरो भवन् (५)

हे इंद्र! तुम सोमरस पी कर बलवान बनते हो. जहां सोमरस नहीं निचोड़ा जाता, उस समाज को तुम नष्ट कर देते हो. (५)

सूक्त तीसवां देवता—इंद्र

|17|

प्र ते महे विदथे शंसिषं हरी प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम्.
घृतं न यो हरिभिश्चारु सेचत आ त्वा विशन्तु हरिवर्पसं गिरः (१)

हे इंद्र! तुम्हारे अश्व शीघ्रता से गमन करने वाले हैं. इस विशाल यज्ञ में मैं उन की प्रशंसा करता हूं. तुम शत्रुओं का वध करने वाले हो. सोमपान से उत्पन्न हुई शक्ति वाले इंद्र से मैं अपना अभीष्ट फल मांगता हूं. जैसे अग्नि में घृत सींचा जाता है, उसी प्रकार इंद्र अपने ही नाम के अश्वों सहित आते हुए धन की वर्षा करते हैं. (१)

हरि हि योनिमभि ये समस्वरन् हिन्वन्तो हरी दिव्यं यथा सदः.
आ यं पृणन्ति हरिभिर्न धेनव इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चत (२)

प्राचीन महर्षियों ने इंद्र को अपने यज्ञ में शीघ्रता से बुलाने के लिए उन के अश्वों को प्रेरित किया. उन का स्तोत्र मूल रूप से इंद्र के ही निमित्त था. नव प्रसूता गाय जैसे दूध दे कर अपने स्वामी को तृप्त करती है, उसी प्रकार यजमान सोमरस के द्वारा इंद्र को तृप्त करते हैं. हे ऋत्विजो! शत्रु विनाशक, शक्तिशाली तथा हरि नामक अश्वों वाले इंद्र का पूजन करो. (२)

सो अस्य वज्रो हरितो य आयसो हरिर्निकामो हरिरा गभस्त्योः.
द्युम्नी सुशिप्रो हरिमन्युसायक इन्द्रे नि रूपा हरिता मिमिक्षिरे (३)

इंद्र का लौह निर्मित वज्र हरा है. इंद्र का सुंदर शरीर भी हरे रंग का है. इंद्र के पास हरे रंग का ही बाण रहता है. इंद्र की पूरी साजसज्जा हरे रंग की है. (३)

दिवि न केतुरधि धायि हर्यतो विव्यचद् वज्रो हरितो न रंह्या.
तुददहिं हरिशिप्रो य आयसः सहस्रशोका अभवद्धरिभरः (४)

इंद्र का वज्र सूर्य के समान अंतरिक्ष में स्थित है. जिस प्रकार सूर्य के अश्व वेग से आकाश को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार इंद्र का वज्र गंतव्य स्थान पर पहुंच जाता है. इंद्र ने अपने हरे वज्र से वृत्रासुर को संतप्त किया तथा उस के सहस्रों साथियों को शोक में डाल दिया. (४)

त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुतः पूर्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः.
त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्य१मसामि राधो हरिजात हर्यतम् (५)

हे इंद्र! तुम्हारे केश हरे रंग के हैं. जहां सोम रूप हवि होता है, वहां तुम उपस्थित होते हो. तुम स्तुतियां सुन कर हवि की इच्छा करते रहे हो और अब भी कर रहे हो. तुम अपने हरि नाम के अश्वों सहित यज्ञ में आते हो. हे इंद्र! ये सोम, अन्न और उक्थ तुम्हारे लिए ही हैं. (५)

सूक्त इकत्तीसवां — देवता—इंद्र

ता वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं मद इन्द्रं रथे वहतो हर्यता हरी.
पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे (१)

सोमरस से उत्पन्न शक्ति प्राप्त करने के लिए इंद्र के अश्व उन्हें हमारे यज्ञ में ला रहे हैं. तीनों सवनों में निचोड़े गए सोम इंद्र को धारण करते हैं. (१)

अरं कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन् हरयो हरी तुरा.
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे (२)

हरे रंग वाले सोम युद्धों में अटल रहने वाले इंद्र को धारण करते हैं. सोम ही इंद्र के घोड़ों को यज्ञ की ओर जाने के लिए प्रेरित करते हैं. जो इंद्र अपने अश्वों द्वारा वेग से यज्ञ में आते हैं, वे सोमरस वाले यजमान के पास पहुंच जाते हैं. (२)

हरिश्मशारुर्हरिकेश आयसस्तुरस्पेये यो हरिपा अवर्धत.
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी (३)

इंद्र के केश, दाढ़ी और मूंछें सभी हरे रंग के हैं. इंद्र संस्कारित होने पर सोमरस को पीते हुए वृद्धि प्राप्त करते हैं. इंद्र सोमरस को पीने के लिए अपने तेज चलने वाले घोड़ों से सोमपान करने आते हैं. हवि उन का धन है. इंद्र अपने रथ में घोड़ों को जोड़ कर हमारे सभी पाप नष्ट करें. (३)

स्रुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः.
प्र यत् कृते चमसे मर्मृजद्धरी पीत्वा मदस्य हर्यतस्यान्धसः (४)

यज्ञ में जिस प्रकार वे चलते हैं, उसी प्रकार सोमरस का पान करने के लिए इंद्र की हरे रंग की चिबुक अर्थात ठोड़ी चलती है. जब चमस सोमरस से भर जाता है, तब उसे पीने के लिए इंद्र की ठोढी फड़कने लगती है. उस समय इंद्र अपने घोड़ों का परिमार्जन अर्थात सफाई करते हैं. (४)

उत स्म सद्म हर्यतस्य पस्त्योऽरत्यो न वाजं हरिवां अचिक्रदत्.
मही चिद्धि धिषणाहर्यदोजसा बृहद् वयो दधिषे हर्यतश्चिदा (५)

इंद्र का निवास द्यावा पृथ्वी में है. जिस प्रकार घोड़ा युद्ध क्षेत्र में अग्रसर होता है, उसी प्रकार इंद्र अपने घोड़ों पर चढ़ कर यज्ञशाला की ओर बढ़ते हैं. हे इंद्र! हमारा स्तोत्र तुम्हारी कामना करता है. तुम भी यजमान की कामना करते हुए उसे असीमित धन देते हो. (५)

सूक्त बत्तीसवां — देवता—इंद्र

आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यंनव्यं हर्यसि मन्म नु प्रियम्.
प्र पस्त्यमसुर हर्यतं गोराविष्कृधि हरये सूर्याय (१)

हे इंद्र! तुम अपनी महिमा से आकाश और धरती को व्याप्त करते हो. तुम सदा नवीन रहते हो. तुम हमारे प्रिय स्रोत की इच्छा करते हो. तुम पणियों द्वारा चुराई गई गायों को रखने का स्थान सूर्य को बता देते हो. ऐसी कृपा करो कि सूर्य स्तुति करने वालों को वह गोष्ठ अर्थात गायों को रखने का स्थान दे दें. (१)

आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र.
पिबा यथा प्रतिभृतस्य मतध्वो हर्यन् यज्ञं सधमादे दशोणिम् (२)

हे इंद्र! तुम सोमरस पीने के इच्छुक हो. सोमरस पीने से तुम्हारी ठोढ़ी हरे रंग की हो गई है. तुम्हारे रथ में जुड़े हुए घोड़े तुम को यहां लाएं. चमस आदि पात्रों में रखे हुए सोम वाले घर में आ कर तुम सोम को पी सको, इसलिए तुम्हारे अश्व तुम्हें यहां ले आएं. (२)

अपाः पूर्वेषां हरिवः सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते.

ममद्धि सोमं मधुमन्तमिन्द्र सत्रा वृषञ्जठर आ वृषस्व (३)

हे इंद्र! तुम प्रातः सवन में सोम को पी चुके हो. यह माध्यंदिन सवन भी तुम्हारा ही है. इस सवन में तुम सोम का पान करते हुए प्रसन्न बनो. तुम इस पूरे सोमरस को एक साथ ही अपने पेट में भर लो. (३)

सूक्त तैंतीसवां — देवता—इंद्र

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व.
मिमिक्षुर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः (१)

हे इंद्र! अध्वर्यु जनों ने इस सोम का संस्कार किया है. तुम इसे पी कर अपना पेट भर लो. जिस सोम को पत्थर कूट चुके हैं, उसे पीते हुए तुम हर्ष युक्त बनो. (१)

प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्.
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः (२)

हे इंद्र! तुम इच्छित फल की वर्षा करते हो. मैं तुम्हें सोम की प्रचंड शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता हूं. तुम यज्ञ कार्य में आ कर स्तुतियों से प्रशंसित और हवि से तृप्त बनो. (२)

ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज ऋतज्ञाः.
प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गृणन्तः सधमाद्यासः (३)

हे इंद्र! तुम्हारे द्वारा पुत्र आदि रूप संतान तथा अन्न से युक्त सत्य के ज्ञाता तथा तुम्हें चाहने वाले ऋत्विज यजमान के घर में तुम्हारी स्तुति करते हुए बैठें. (३)

सूक्त चौंतीसवां — देवता—इंद्र

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्.
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृमणस्य मह्ना स जनास इन्द्रः (१)

इंद्र के बल से आकाश और पृथ्वी भयभीत रहते हैं. इंद्र ने प्रकट होते ही अन्य देवताओं को अपनी रक्षा में ले लिया. (१)

यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपितां अरम्णात्.
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः (२)

हे असुर! इंद्र वे हैं, जिन्होंने हिलती हुई भूमि को स्थिर किया, पंखों वाले पर्वतों के पंख काट कर उन्हें अचल बना दिया तथा अंतरिक्ष और आकाश को स्थिर किया. (२)

यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा वलस्य.

यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक् समत्सु स जनास इन्द्रः (३)

जिन्होंने आकाश में विचरण करने वाले मेघ का भेदन कर के नदियों को प्रवाहित किया तथा बल असुर द्वारा चुराई गई गायों को प्रकट किया, जिन्होंने मेघों में भरे हुए पाषाणों से विद्युत को उत्पन्न किया तथा जो युद्धों में शत्रुओं का विनाश करते हैं, वे ही इंद्र हैं. (३)

येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः.
श्वघ्नीव यो जिगीवाल्लंक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः (४)

हे असुरो! जिन्होंने दिखाई देते हुए लोकों को स्थिर किया, असुरों को गुफाओं में डाल दिया, प्रत्यक्ष शत्रुओं पर विजय प्राप्त की तथा जो शत्रु के धनों को छीन लेते हैं, वे ही इंद्र हैं. (४)

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्.
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः (५)

शत्रुओं का विनाश करने वाले इंद्र के संबंध में लोग अनेक शंकाएं करते हैं. इंद्र शत्रुओं की रक्षा करने वाली सेनाओं का पूर्ण नाश कर देते हैं. हे मनुष्यो! उन इंद्र पर विश्वास करो तथा उन के प्रति श्रद्धावान बनो. इंद्र के अतिरिक्त वृत्रासुर आदि शत्रुओं को कौन जीत सकता था. वे इंद्र शत्रु विजेता हैं. (५)

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः.
युक्तग्राव्णो यो ऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः (६)

जो इंद्र निर्धनों को धन देते हैं और असहायों की सहायता करते हैं, जो स्तुति करने वाले ब्राह्मणों को मनचाहा फल प्रदान करते हैं, जिन की चिबुक अर्थात ठोढ़ी सुंदर है तथा जो सोम का संस्कार करने वाले यजमानों के रक्षक हैं, हे मनुष्यो! वे ही इंद्र हैं. (६)

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः.
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः (७)

जिन के पास मांगने वालों को देने के लिए बहुत सी गाएं, अश्व, ग्राम, रथ, गज, ऊंट आदि सब कुछ है, जिन्होंने प्रकाश के लिए सूर्य का उदय किया है तथा उषा को प्रकट किया है, जो वर्षा के जल के प्रेरक हैं, वे ही इंद्र हैं. (७)

यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः.
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः (८)

आकाश और पृथ्वी दोनों एकमत हो कर इंद्र का आह्वान करते हैं. द्युलोक हवि के लिए तथा पृथ्वी वर्षा के लिए इंद्र को बुलाते हैं. समान रथ में बैठे हुए सेनापति जिन्हें बुलाते हैं, वे ही इंद्र हैं. (८)

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते.
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव या अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः (९)

इंद्र की सहायता के बिना विजय की कामना करने वाले लोग अपने शत्रुओं को पराजित नहीं कर सकते. इसी कारण वे युद्ध के अवसर पर इंद्र को बुलाते हैं. जो अचल पर्वतों को हटाने में समर्थ हैं तथा जो प्राणियों का पुण्य देखते हैं, वे इंद्र हैं. (९)

यः शश्वतो मह्येनो दधानानमन्यमानाञ्छर्वा जघान.
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः (१०)

जो लोग महान अपराधी हैं, इंद्र की सत्ता को नहीं मानते हैं. इंद्र उन्हें हिंसित करते हैं. जो अपने कर्मों में इंद्र की अपेक्षा नहीं करते, इंद्र उन के प्रतिकूल रहते हैं. जो वृत्र आदि असुरों के हिंसक हैं, वे इंद्र हैं. (१०)

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्.
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः (११)

जिन्होंने चालीस वर्ष तक पर्वत में छिप कर रहते हुए शंबर असुर का वध किया, जिन्होंने शमन करने वाले शक्तिशाली वृत्र का संहार किया, वे इंद्र हैं. (११)

यः शम्बरं पर्यतरत् कसीभिर्योऽचारुकास्नापिबत् सुतस्य.
अन्तर्गिरौ यजमानं जनं बहुं यस्मिन्नामूर्छत् स जनास इन्द्रः (१२)

जिन की हिंसा करने के लिए असुरों ने सोमपान करने वाले अध्वर्युजनों को घेर लिया था, जिन्होंने अपने वज्र से शंबर का दमन किया तथा जो संस्कार किए हुए सोमरस को पी चुके हैं, वे इंद्र हैं. (१२)

यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून्.
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः (१३)

जो जलों की वर्षा करते हैं, जो कामनाओं को पूर्ण करते हैं, जो सात रश्मियों वाले सूर्य के रूप में स्थित है, जिन्होंने वज्र ग्रहण कर के आकाश पर चढ़ते हुए शंबर असुर का वध किया था तथा जिन्होंने सात नदियों को उत्पन्न किया, वे इंद्र हैं. (१३)

द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते.
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः (१४)

जिन के सामने आकाश और पृथ्वी झुकते हैं, जिन के भय से पर्वत भी कांपते हैं, जो सोमपान करने के कारण दृढ़ शरीर और शक्तिशाली भुजाओं वाले हैं तथा जो वज्र को धारण करते हैं, वे इंद्र हैं. (१४)

य: सुन्वन्तमवति य: पचन्तं य: शंसन्तं य: शशमानमूती.
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः (१५)

हे मनुष्यो! जो सोमरस निचोड़ने वाले की, चमकाने वालों की तथा स्तुतियां करने वाले की रक्षा करते हैं, सोमरस जिसके बल, ज्ञान और यश को बढ़ाता है, वे ही इंद्र हैं. (१५)

जातो व्यख्यत् पित्रोरुपस्थे भुवो न वेद जनितुः परस्य.
स्तविष्यमाणो नो यो अस्मद् व्रता देवानां स जनास इन्द्रः (१६)

हे मनुष्यो! जो इंद्र जन्म लेते ही द्यावा पृथ्वी अर्थात स्वर्ग और धरती की गोद में प्रकाशित हुए, जो अपनी मां रूपी पृथ्वी और पिता रूपी आकाश को नहीं जानते तथा हमारे द्वारा स्तुति किए जाते हुए देव संबंधी कर्म अर्थात यज्ञ को पूर्ण करते है, वे ही इंद्र हैं. (१६)

य: सोमकामो हर्यश्वः सूरिर्यस्माद् रेजन्ते भुवनानि विश्वा.
यो जघान शम्बरं यश्च शुष्णं य एकवीरः स जनास इन्द्रः (१७)

हे मनुष्यो! सोमरस की कामना करते हुए जो इंद्र अपने हरि नाम के घोड़ों को चलने के लिए प्रेरित करते हैं तथा जिन्होंने शंबर और शुष्ण नाम के असुरों को मारा, एकमात्र वे ही इंद्र हैं. (१७)

य: सुन्वते पचते दुध्र आ चिद् वाजं दर्दर्षि स किलासि सत्यः.
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम (१८)

हे मनुष्यो! जो इंद्र सोमरस निचोड़ने वाले तथा चरु पकाने वाले को यथेष्ट अन्न देते हैं तथा जो निश्चित रूप से सत्य हैं, हम सभी ऐसे इंद्र के प्रिय होते हुए उत्तम वीरों के स्वामी बनें. (१८)

सूक्त पैंतीसवां देवता—इंद्र

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय.
ऋचीषमायाध्रिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा (१)

मैं इंद्र को प्राप्त होने वाले स्तोत्र का भलीभांति उच्चारण करता हूं. इंद्र बलवान, सोमपान के लिए शीघ्रता करने वाले तथा गुणों से महान हैं. इंद्र स्तुतियों के समान हैं और उन का सर्वत्र गमन है. जिस प्रकार भूखे को अन्न प्रेरणा देता है, उसी प्रकार स्तुतियों की इच्छा करने वाले इंद्र की मैं स्तुतियां करता हूं. मैं इंद्र के लिए पूर्व यजमानों के द्वारा दिए सोमरस आदि हवि प्रस्तुत करता हूं. (१)

अस्मा इदु प्रयइव प्र यंसि भराम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति.
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त (२)

मैं इंद्र के लिए अन्न के समान अपना स्तोत्र अर्पित करता हूं. मैं अपने शत्रुओं को बाधा पहुंचाने के लिए स्तोत्र रूपी घोष करता हूं. अन्य ऋत्विज भी सब के स्वामी इंद्र के लिए अपने मन और बुद्धि के अनुसार अपनी स्तुतियों को प्रस्तुत करते हैं. (२)

अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भराम्याङ्गूषमास्येन.
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै (३)

मैं उन प्रसिद्ध इंद्र को उपमा देने योग्य, धन का प्रदाता और स्वर्ग प्राप्त करने वाले स्तोत्र बोलता हूं. यह स्तोत्र अतिशय धनवान इंद्र की वृद्धि के लिए उच्चारण कर रहा है. मैं इंद्र के उपयोग के हेतु इस स्तोत्र का घोष कर रहा हूं. (३)

अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय.
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तिन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय (४)

रथकार जिस प्रकार स्वामी के लिए रथ का निर्माण करता है, उसी प्रकार मैं स्तुतियों द्वारा प्राप्त करने योग्य एवं मेधावी इंद्र के लिए सभी यजमानों द्वारा प्रस्तुत करने योग्य सोमरस आदि के रूप में हवि तथा स्तुतियां अर्पित करता हूं. ये स्तुतियां मैं अन्न प्राप्त के हेतु कर रहा हूं. (४)

अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा३ समञ्जे.
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम् (५)

मैं अन्न प्राप्ति की इच्छा से इंद्र के लिए हवि रूप अन्न प्रस्तुत करता हूं जो घी से मिला हुआ है. जिस प्रकार रथ में घोड़े जोड़े जाते हैं, उसी प्रकार मैं हवि को घृत युक्त करता हूं. इंद्र शत्रुओं को पराजित करने वाले, दान करने वाले और असुरों के नगरों को ध्वस्त करने वाले हैं. (५)

अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद् वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं१ रणाय.
वृत्रस्य चिद् विदद् येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता कियेधाः (६)

इन्हीं इंद्र के लिए विश्वकर्मा ने वज्र नाम का आयुध बनाया था जो अतिशय शोभन तथा स्तुति के योग्य हैं. इस वज्र का निर्माण युद्ध के लिए तथा आक्रमण करने वाले शत्रुओं को रोकने के लिए किया गया है. सब के स्वामी इंद्र ने इस वज्र से वृत्र राक्षस के मर्म स्थान में प्रहार किया था. (६)

अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवाञ्चार्वन्ना.
मुषायद् विष्णुः पचतं सहीयान् विध्यद् वराहं तिरो अद्रिमस्ता (७)

सब के निर्माणकर्ता और महान इंद्र के असाधारण कर्म का वर्णन किया जा रहा है. इस इंद्र ने सोमयाग संबंधी यज्ञों में सोमरस का पान किया तथा पुरोडाश के अन्न का भक्षण किया है. तीनों सवनों अर्थात प्रातः मध्याह्न और सांयकाल के

हवनों में व्याप्त तथा शत्रुओं का संहार करने वाले इंद्र ने शत्रुओं का धन छीन लिया है. पर्वतों पर वज्र का प्रयोग करने वाले इंद्र ने वर्षा को रोकने वाले मेघ को विदीर्ण किया था. (७)

अस्मा इदु ग्राश्चिद् देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः.
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः (८)

इस इंद्र के लिए इंद्राणी आदि देव पत्नियों ने स्तोत्र का उच्चारण किया. इस इंद्र ने विस्तृत स्वर्ग और पृथ्वी को अपने तेज से अतिक्रमण किया था. धावा और पृथ्वी इंद्र के महत्व को पराजित नहीं कर पाए. (८)

अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्.
स्वरालिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिमत्रो ववक्षे रणाय (९)

इस इंद्र का महत्व द्युलोक और पृथ्वी से भी बढ़ कर है. ये इंद्र शत्रुओं पर अपने ही तेज से सुशोभित होते हैं. इस प्रकार के इंद्र संग्राम के लिए जाते हैं अथवा वर्षा करने के लिए मेघों के समीप पहुंचते हैं. (९)

अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद् वज्रेण वृत्रमिन्द्रः.
गा न व्राणा अवनीरमुञ्चदभि श्रवो दावने सचेताः (१०)

इन्हीं इंद्र देव के बल से जो वृत्र राक्षस भयभीत हो रहा था इंद्र ने अपने वज्र से उस का शीश काट दिया एवं पाणियों द्वारा चुरा कर रखी गई गायों को मुक्त किया. इंद्र ने मेघ का भेदन कर के सभी प्राणियों की रक्षा के कारण जलों को मुक्त किया. इंद्र हवि देने वाले यजमान के समान अपना मन बना कर प्रसिद्ध अन्न प्राप्त कराएं. (१०)

अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद् वज्रेण सीमयच्छत्.
ईशानकृद दाशुषे दशस्यन् तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः (११)

इन्हीं इंद्र के दीप्त बल के कारण बहने वाली नदियां अपनेअपने स्थान पर सुशोभित होती हैं, क्योंकि इंद्र ने अपने वज्र से उन्हें नियंत्रित किया है. इंद्र शत्रुओं का वध कर के स्वयं को स्वामी बनाते हुए हवि देने वाले यजमान के लिए अन्न प्रदान करते हैं. (११)

अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः.
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्नर्णांस्यपां चरध्यै (१२)

वृत्र राक्षस के वध के लिए अत्यधिक शीघ्रता करते हुए सब के स्वामी इंद्र शत्रु की सेना कितनी है, ऐसा कह कर उस का बल हरण करने वाले तुम वज्र का प्रहार करो. जिस प्रकार पशुओं के मांस के टुकड़े किए जाते हैं. उसी प्रकार तुम शत्रुओं पर प्रहार करो. हे इंद्र! तुम जल की इच्छा करते हुए भूमि पर जल के प्रवाह के लिए

वृत्र के शरीर को अपने वज्र से नष्ट कर दो. (१२)

अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः.
युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून् (१३)

अपनी स्तुतियों में इंद्र की प्रशंसा करो. हे स्तोता! स्तुतियों के योग्य इंद्र की स्तुतियों से प्रशंसा करो. जब इंद्र युद्ध के लिए अपने आयुओं को चलाते हुए तथा शत्रुओं की हिंसा करते हुए उन की ओर जाते हैं, हे स्तोता! उस समय स्तुतियों का उच्चारण करो. (१३)

अस्येदु भिया गिरयश्च दृळ्हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते.
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद् वीर्याय नोधाः (१४)

इन इंद्र के जन्म से ही पंख कटने के भय से पर्वत भी दृढ़ हो गए थे. इंद्र के भय से धरती और स्वर्ग भी कांपते हैं. इन इंद्र की अनेक स्तोत्रों से प्रशंसा कर के नोधा नाम के ऋषि सामर्थ्य वाले हुए. (१४)

अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषामेको यद् वव्ने भूरेरीशानः.
प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्व्ये सुष्विमावदिन्द्रः (१५)

इन्हीं इंद्र के लिए स्तुतियों और सोम लक्षण अन्न प्रदान किया जाता है. इस कारण अधिक धन के स्वामी इंद्र स्तोत्र आदि के विषय में अद्वितीय हुए. इंद्र ने सौवश्य की रक्षा के अवसर पर सूर्य से अधिक तेजस्वी एतश नाम वाले ऋषि की भी रक्षा की थी. (१५)

एवा ते हारियोजना सुवृक्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन्.
ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् (१६)

हे इंद्र! गौतम गोत्र वाले अनेक ऋषि तुम्हारे लिए मंत्र रूपी स्तोत्रों का उच्चारण कर रहे हैं. इन स्तुतिकर्ताओं को अनेक प्रकार का धन और अन्न प्रदान करो. जिस प्रकार इंद्र देव इस समय हमारी रक्षा के लिए आए हैं, उसी प्रकार वे अन्य दिनों में हमारे यज्ञ में आएं. (१६)

सूक्त छत्तीसवां — देवता—इंद्र

य एक इद्धव्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः.
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान् (१)

जो इंद्र यजमानों के यज्ञों में प्रधान रूप से आह्वान करने योग्य हैं, उन की मैं उन वाणियों के द्वारा स्तुति करता हूं, जिनके स्वामी इंद्र हैं. वे कामनाओं को पूर्ण करने वाले इंद्र की स्तुतियों के द्वारा प्रार्थना की जाती है. वे इंद्र बल के विनाशक, अनेक कर्म करने वाले तथा शक्तिशाली हैं. (१)

तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः.
नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम् (२)

हमारे समर्थ पूर्व पुरुषों ने हवि रूपी अन्न दे कर इंद्र की कामना की तब वे नौ महीनों के बाद सिद्धि प्राप्त कर पाए. इंद्र की स्तुति करते हुए उन्होंने पितृलोक प्राप्त किया. इंद्र शत्रुओं की हिंसा करते हैं. दुर्गम मार्ग को पार करते हैं तथा अतिशय शक्तिशाली हैं. इंद्र की आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता. (२)

तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः.
यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तमा भर हरिवो मादयध्यै (३)

173

हम इंद्र से वीर पुत्रों एवं सेवकों के साथ असीमित धन की याचना करते हैं. हे इंद्र देव! हमें ऐसा धन दो जो कभी समाप्त न हो तथा हमें सुख देता रहे. (३)

तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिज्जरितार आनशुः सुम्नमिन्द्र.
कस्ते भागः किं वयो दुध्र खिद्वः पुरुहूत पुरूवसोऽसुरघ्नः (४)

हे इंद्र देव! हम स्तोताओं को तुम वह सुख प्रदान करो, जिसे प्राचीन काल के स्तोताओं ने प्राप्त किया था. यज्ञ में निकस्थ तुम्हारा भाग कौन सा है ? क्या वह तुम्हें देने योग्य हवि लक्षण वाला आगे है. हे दुख से धारण करने योग्य, शत्रुओं को कष्ट देने वाले, बहुतों के द्वारा यज्ञों में बुलाए गए एवं बहुत धन वाले इंद्र! हमें यह बताइए. (४)

तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं वेपी वक्वरी यस्य नू गीः.
तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ (५)

वज्रधारणकर्ता तथा रथ में विराजमान इंद्र को जिस स्तोत्र की स्तुति प्राप्त होती है, अनेक प्रकार के कर्म करने वाले तथा शक्तिशाली जिस इंद्र से यजमान सुख पाने की इच्छा करता है, वह इंद्र को प्राप्त कर लेता है तथा अपने वश में कर लेता है. (५)

अया ह त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन.
अच्युता चिद् वीलिता स्वोजो रुजो वि दळहा धृषता विरप्शिन् (६)

हे इंद्र! तुम्हारे वज्र का वेग मन के समान है. तुम ने अपनी माया से शक्तिशाली वृत्र का नाश किया है तथा ऐसे शत्रु नगरों को ध्वस्त किया, जिन्हें आज तक कोई नष्ट नहीं कर सका. (६)

तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत् परितंसयध्यै.
स नो वक्षदनिमानः सुवह्मेन्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि (७)

हे यजमानो! प्राचीन ऋषियों ने जिस प्रकार नवीन स्तोत्रों से इंद्र की प्रशंसा की, उसी प्रकार मैं भी इंद्र की स्तुति करने के लिए उद्यत हूं. सुंदर वाहनों वाले इंद्र सभी

कठिन कार्यों में हमें सफलता प्राप्त कराएं. (७)

आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्तरिक्षा.
तपा वृषन् विश्वतः शोचिषा तान् ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च (८)

हे इंद्र! पृथ्वी, स्वर्ग और उन के मध्य में स्थित अंतरिक्ष को तुम राक्षसों से रहित बनाओ. तुम अपने तेज से राक्षसों को भस्म कर दो. राक्षस ब्राह्मणों से द्वेष करते हैं. उन के विनाश के हेतु तुम धरती और आकाश को तेज युक्त बनाओ. (८)

भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंदृक्.
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः (९)

हे इंद्र! तुम स्वर्ग के निवासियों के राजा हो. तुम अपने दाहिने हाथ में वज्र ले कर राक्षसों की माया का विनाश करो. (९)

आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्.
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि (१०)

हे वज्रधारी इंद्र! अपनी जिस शक्ति से तुम शत्रुओं के समान मनुष्यों को भी अपनी मंगलकारिणी संपत्ति प्रदान कर के महान बना देते हो, उस महिमा वाली संपत्ति को हमें भी प्रदान करो. (१०)

स नो नियुद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो.
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मद्र्यद्रिक् (११)

हे इंद्र देव! तुम अत्यधिक पूजा के योग्य, सब के रचयिता तथा यजमानों द्वारा बुलाने योग्य हो. तुम्हारे जिन अश्वों को रोकने में देवता या असुर कोई भी समर्थ नहीं होता, उन्हीं अश्वों की सहायता से तुम हमारे यज्ञ में पधारो. (११)

सूक्त सैंतीसवां देवता—इंद्र

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः.
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः (१)

हे इंद्र! टेढ़े सींगों वाला बैल जिस प्रकार भयभीत करता है, तुम भी उसी प्रकार सब को भयभीत करते हो. तुम हमारे शत्रुओं को दूर भगा सकते हो. जो मनुष्य तुम्हें हवि नहीं देता, उसके धन को तुम उसे प्रदान करो जो तुम्हें हवि देता है. (१)

त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये.
दासं यच्छुष्णं कुयवं न्य स्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन् (२)

हे इंद्र! तुम ने संग्राम में कुत्स की रक्षा की. उस समय तुम ने अर्जुनी के पुत्र की रक्षा के निमित्त दास, शुष्ण और कुयव नाम के असुरों को पूरी तरह वश में किया तथा उन का धन कुत्स को दिया. (२)

त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम्.
प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम् (३)

हे इंद्र! तुम्हारा वज्र शत्रुओं को वश में करने वाला है. तुम ने अपने इस वज्र से वीतहव्य और सुदास नाम के राजाओं की रक्षा की. तुम ने इसी वज्र से संग्राम में पुरकुत्स के पुत्र कासदस्यु और पुरु की रक्षा की. (३)

त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि.
त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दभीतये सुहन्तु (४)

हे इंद्र! जब युद्ध का अवसर आता है, तब तुम मरुद्गण का सहयोग ले कर बहुत से दस्यु जनों का वध कर देते हो. तुम ने राजर्षि दभीति की रक्षा के लिए वज्र हाथ में ले कर चुमुरि और धुनि नाम के दस्युओं का नाश किया था. (४)

तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत् पुरो नवतिं च सद्यः.
निवेशने शततमाविवेषीरहं च वृत्रं नमुचिमुताहन् (५)

हे वज्रधारी इंद्र! तुम्हारा वज्र बहुत प्रसिद्ध है. तुम ने अपने इसी वज्र से राक्षसों के निन्यानवे नगरों का विनाश किया था तथा उन के सौवें नगर पर अधिकार कर लिया था, तुम ने अपने वज्र से वृत्र और नमुचि नाम के असुरों का भी वध किया था. (५)

सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे.
वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम् (६)

हे इंद्र! यजमान राजा सुदास ने तुम्हें हवि दान किया था. वे धन सुदास के पास सदा रहे थे. हे इंद्र! तुम बहुत से कर्म करने वाले तथा कामनाओं की वर्षा करने वाले हो. हे इंद्र! तुम्हें यज्ञ में लाने के लिए मैं हरि नाम वाले अथवा हरे रंग के घोड़ों को तुम्हारे रथ में जोड़ता हूं. हे बलशाली इंद्र! हमारे स्तोत्र तुम्हें प्राप्त हों. (६)

मा ते अस्यां सहसावन् परिष्टावघाय भूम हरिवः परादै.
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सूरिषु स्याम (७)

हे शक्तिशाली एवं हरे रंग के अथवा हरि नाम के घोड़ों के स्वामी इंद्र! हम तुम्हारी सेवा का त्याग करने वाले न हों अर्थात सदा तुम्हारी सेवा करते रहें. हे इंद्र! अपनी सेनाओं के द्वारा हमारी रक्षा करो, जिन्हें कोई रोक नहीं सकता. हे इंद्र! हम स्तोत्रों का उच्चारण करने वालों में तुम्हारे प्रिय बनें. (७)

प्रियास इत् ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः.
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् (८)

हे इंद्र! हम यजमान तुम्हारे मित्र हैं. हम अपने घरों में प्रसन्न रहें. तुम अतिथिग्व

नाम के राजा को सुख प्रदान करते हुए तुर्वश और यदु नाम के राजाओं की रक्षा करो. (८)

सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था.
ये ते हवेभिर्वि पर्णीरदाशन्नस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै (९)

हे धन के स्वामी इंद्र! तुम्हारे आने के समय ऋत्विज उक्थ नाम के मंत्रों का उच्चारण करते हैं. जो ऋत्विज तुम्हारा आह्वान कर के यज्ञ न करने वालों को नष्ट करते हैं, वे भी उक्थ नाम के मंत्रों को बोलते हैं. उक्थों का उच्चारण करने वाले हम को तुम फल प्रदान करने के हेतु वरण करो. (९)

एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्यमस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि.
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम् (१०)

हे नेताओं के मध्य श्रेष्ठ इंद्र! हमारे सामने आकर धन प्रदान करने वाले तुम्हारे लिए ये स्तोत्र किए जा रहे हैं. हम स्तोत्राओं के पाप नष्ट कर के हमें सुखी बनाओ तथा हमें घर प्रदान करो. हम तुम्हें हवि देते हैं. तुम मित्र के समान हमारी रक्षा करो. (१०)

नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व.
उप नो वाजान् मिमीह्युप स्तीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः (११)

हे इंद्र! तुम हम से स्तुति और हवि प्राप्त करते हुए अधिक उन्नति करो तथा हमें धन और पुत्र प्रदान करो. हे अग्नि आदि देवताओ! तुम भी हमारा कल्याण करते हुए हमारे रक्षक बनो. (११)

सूक्त अड़तीसवां देवता—इंद्र

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्. एदं बर्हिः सदो मम (१)

हे इंद्र! हम ने सोमरस तैयार कर लिया है. तुम यहां हमारे यज्ञ में आओ तथा इन बिछी हुई कुशाओं पर बैठ कर सोमरस को पियो. (१)

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना. उप ब्रह्माणि नः शृणु (२)

हे इंद्र! तुम्हारे घोड़े हमारे मंत्रोच्चारण के साथ ही तुम्हारे रथ में जुड़ जाते हैं. वे तुम्हें तुम्हारे मन चाहे स्थान पर ले जाते हैं. तुम्हारे वे घोड़े तुम्हें हमारे यज्ञ में लाएं, जिस से तुम हमारे आह्वान को सुन सको. (२)

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः. सुतावन्तो हवामहे (३)

हे इंद्र! हमारे पास तैयार किया हुआ सोमरस है. हम तुम्हारे सेवक हैं और

सोमयाग कर चुके हैं. तुम सोमरस पीते हो, इसलिए हम तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं. (३)

इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः. इन्द्रं वाणीरनूषत (४)

पूजा संबंधी मंत्रों से इंद्र का पूजन किया जाता है. सामवेद के मंत्रों के गान में भी इंद्र की ही स्तुति है. हमारी वाणी भी इंद्र की ही स्तुति करती है. (४)

इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः (५)

वज्र धारण करने वाले इंद्र उपासकों का हित चाहते हैं. इंद्र के घोड़े उन के साथ रहते हैं. हमारे मंत्रोच्चारण के साथ ही वे घोड़े रथ में जोड़े जाते हैं. (५)

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि. वि गोभिरद्रिमैरयत् (६)

इंद्र ने दीर्घ काल तक प्रकाश देने के लिए सूर्य को आकाश में स्थापित किया. सूर्य रूपी इंद्र ने ही अपनी किरणों से मेघों का भेदन किया है. (६)

सूक्त उनतालीसवां — देवता—गोसूक्ति

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः. अस्माकमस्तु केवलः (१)

हम विश्व के सभी प्राणियों की ओर से इंद्र का आह्वान करते हैं. वे इंद्र हमारे ही हों. (१)

व्य१न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना. इन्द्रो यदभिनद् वलम् (२)

इंद्र ने सोमरस पान कर के प्रसन्न होने पर वर्षा के जल की अंतरिक्ष अर्थात आकाश से वृष्टि की. उन्होंने अपनी शक्ति से मेघों को विदीर्ण किया. (२)

उद् गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः. अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् (३)

जो गाएं गुफा में बंद थीं, इंद्र ने अंगिरा गोत्र वाले ऋषियों के लिए उन्हें बाहर निकाला. गायों का अपहरण करने वाला बल राक्षस था. इंद्र ने उस का मुंह नीचे कर के उसे गिरा दिया. (३)

इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च. स्थिराणि न पराणुदे (४)

इंद्र ने आकाश में प्रकाश करते हुए नक्षत्रों को स्थिर किया है. ये नक्षत्र स्थिर हैं. इन्हें कोई नीचे नहीं गिरा सकता. (४)

अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते. वि ते मदा अराजिषुः (५)

हे इंद्र! तुम्हारा स्तोत्र रस के साथ उच्चारण किया जाता है. यह स्तोत्र वर्षा के जल से सरिताओं और सागर को प्रसन्न करता है. इस से सोमरस पीने के कारण

तुम्हारा हर्ष प्रकट होता है. (५)

सूक्त चालीसवां देवता—इंद्र

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा. मन्दू समानवर्चसा (१)

हे इंद्र! तुम मरुतों के साथ रहते हो और अपने उपासकों को अभय प्रदान करते हो. मरुतों के साथ रहते हुए तुम प्रसन्न होते हो. मरुतों का और तुम्हारा तेज समान है. (१)

अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति. गणैरिन्द्रस्य काम्यैः (२)

यह यज्ञ इंद्र की कामना करने वालों से अत्यधिक सुशोभित हो रहा है. इंद्र अत्यधिक तेजस्वी और निष्पाप अर्थात पाप रहित हैं. (२)

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे. दधाना नाम यज्ञियम् (३)

हवि स्वीकार कर के इंद्र शक्तिशाली बनते हैं और याज्ञिक नाम प्राप्त करते हैं. (३)

१७५

सूक्त इकतालीसवां देवता—इंद्र

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः. जघान नवतीर्नव (१)

इंद्र कभी भी युद्ध से पीछे नहीं हटते हैं. उन्होंने ही वृत्र असुर के निन्यानवे वृत्रों (राक्षसों) का विनाश किया था. (१)

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम्. तद् विदच्छर्यणावति (२)

पर्वतों में छिपे हुए अपने घोड़े का सिर प्राप्त करने के इच्छुक इंद्र ने शर्यणावत में प्राप्त किया था, तब उस का वज्र बना कर उन्होंने असुरों का वध किया था. (२)

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्. इत्था चन्द्रमसो गृहे (३)

चंद्र मंडल एक ग्रह है. उस में सूर्य रूपी इंद्र ही अपनी एक किरण में विराजते हैं. (३)

सूक्त बयालीसवां देवता—इंद्र

वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम्. इन्द्रात् परि तन्वं ममे (१)

मैं ने इस वाणी को इंद्र से अपने शरीर में धारण किया है जो सत्य का स्पर्श करने वाली है. उस वाणी के आठ चरण और नौ शीर्ष हैं. (१)

अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम्. इन्द्र यद् दस्युहाभवः (२)

हे इंद्र! जब तुम ने असुरों का विनाश किया था, तब तुम्हारी शक्ति को देख कर द्यावा अर्थात स्वर्ग और पृथ्वी ने तुम पर कृपा की थी. (२)

उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः. सोममिन्द्र चमू सुतम् (३)

हे इंद्र! भलीभांति तैयार किए गए सोमरस को पी कर तुम अपनी ठोड़ी चलाते हुए उठो. (३)

सूक्त तितालीसवां

देवता—इंद्र

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः. वसु स्पार्हं तदा भर (१)

हे इंद्र! तुम हमारे शत्रुओं को काट कर हमारी युद्ध संबंधी बाधा दूर करो. तुम हमें वह धन प्रदान करो, जिसे सभी पाना चाहते हैं. (१)

यद् वीलाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम्. वसु स्पार्हं तदा भर (२)

हे इंद्र! तुम हमें वह धन प्रदान करो जो स्थिर व्यक्ति के पास रहता है और जिसे बसनी अर्थात कमर में बांधी जाने वाली कपड़े की बनी लंबी थैली में भरा जाता है. (२)

यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति. वसु स्पार्हं तदा भर (३)

तुम्हारे द्वारा दिए गए जिस धन को तुम्हारे सभी उपासक प्राप्त करते हैं. तुम हमें वही धन प्रदान करो. (३)

सूक्त चवालीसवां

देवता—इंद्र

प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः. नरं नृषाहं मंहिष्ठम् (१)

मैं ऐसे इंद्र की स्तुति करता हूं जो मनुष्यों के प्रति सहनशील, अग्रगण्य, पूजने के योग्य, मनुष्यों के स्वामी और दयालु हैं. (१)

यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या. अपामवो न समुद्रे (२)

जिस प्रकार नीचे की ओर बहने वाले जल सागर में जाते हैं, उसी प्रकार उक्थ मंत्रों के द्वारा अन्न की इच्छा से किए जाने वाले यज्ञ इंद्र को प्राप्त होते हैं. (२)

तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम्. महो वाजिनं सनिभ्यः (३)

मैं इंद्र को अपनी स्तुति से प्रसन्न करता हूं. इंद्र तेजस्वी शत्रुओं का भी हनन करने वाले हैं. वे स्तुति करने वालों को अन्न तथा यश प्रदान करते हैं. मैं इंद्र को हवि भी प्रदान करता हूं. (३)

सूक्त पैंतालीसवां

देवता—इंद्र

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्. वचस्तच्चिन्न ओहसे (१)

हे इंद्र! कबूतर जिस प्रकार गर्भ धारण करने वाली कबूतरी के समीप जाता है, उसी प्रकार तुम हमारी स्तुतियों को सुन कर हमारे पास आओ. (१)

स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते. विभूतिरस्तु सूनृता (२)

हे धन के स्वामी इंद्र! तुम्हारा यह नाम सत्य हो. हमारी स्तुतियां तुम्हें हमारे पास लाने में समर्थ हैं. (२)

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो. समन्येषु ब्रवावहै (३)

हे सैकड़ों कर्म करने वाले इंद्र! तुम हमारी रक्षा करने के लिए ऊंचे स्थान पर खड़े हो जाओ. अन्य पुरुष हम से द्वेष करते हैं. हम तुम्हारी स्तुति करते हैं. (३)

सूक्त छियालीसवां — देवता—इंद्र

प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु. सासह्वांसं युधामित्रान् (१)

वे इंद्र नेता, युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं को वश में करने वाले और यज्ञों में प्रकाश करने वाले हैं. (१)

स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः. इन्द्रो विश्वा अति द्विषः (२)

इंद्र अपनी कल्याणकारिणी नाव के द्वारा हमें पार लगाते हुए शत्रुओं से हमारी रक्षा करें. (२)

स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च. अच्छा च नः सुम्नं नेषि (३)

हे इंद्र! तुम अपनी दसों उंगलियों से हमारे सामने उस सुख को लाते हो जो अन्न आदि से संपन्न है. (३)

सूक्त सैंतालीसवां — देवता—इंद्र

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे. स वृषा वृषभो भुवत् (१)

कामनाओं की वर्षा करने वाले इंद्र सभी देवों से श्रेष्ठ बनें. हम वृत्र राक्षस का नाश करने के लिए इंद्र को शक्तिशाली बनाते हैं. (१)

इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः. द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः (२)

इंद्र प्रशंसनीय, सौम्य, तेजस्वी, बलवान तथा दूसरों को प्रसन्न करने वाले हैं. (२)

गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः. ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः (३)

इंद्र अच्छे लोगों को धन देते हैं. वज्रधारी इंद्र शक्तिशाली एवं अविनाशी हैं. (३)

इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः. इन्द्रं वाणीरनूषत (४)

स्तोताओं की वाणी इंद्र की स्तुति करती है, सामगान के इच्छुक किस के यश का गान करते हैं ? पूजा संबंधी मंत्रों के द्वारा इंद्र का ही पूजन किया जाता है. (४)

इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः (५)

इंद्र के घोड़े सदा उन के साथ रहते हैं. ऋत्विजों के मंत्रों के उच्चारण के साथ ही उन्हें रथ में जोड़ा जाता है. वज्र धारण करने वाले इंद्र सोने के समान कांति वाले हैं. (५)

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि. वि गोभिरद्रिमैरयत् (६)

इंद्र ने सूर्य को आकाश में इसलिए स्थापित किया कि सब लोग उन का दर्शन कर सकें. वे ही इंद्र सूर्य के रूप में मेघों का भेदन करते हैं. (६)

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्. एदं बर्हिः सदो मम (७)

हे इंद्र! हम ने सोम तैयार कर लिया है. तुम इन बिछी हुई कुशाओं पर बैठ कर सोमरस पियो. (७)

आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना. उप ब्रह्माणि नः शृणु (८)

हे इंद्र! ऋत्विजों के मंत्रोच्चारण के साथ ही तुम्हारे घोड़े रथ में जोड़े जाते हैं. वे घोड़े तुम्हें उस स्थान पर ले जाने में समर्थ हैं, जहां तुम जाना चाहते हो. तुम्हारे घोड़े तुम्हें हमारे यज्ञ में लाएं और तुम हमारे स्तोत्रों को सुनो. (८)

ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः. सुतावन्तो हवामहे (९)

हे इंद्र! हम तुम्हारे उपासक हैं. हम ने सोमपान किया है. तैयार किया हुआ सोमरस हमारे पास रखा है. इसी कारण हम तुम्हें सोमरस पीने को बुलाते हैं. (९)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः. रोचन्ते रोचना दिवि (१०)

हे इंद्र! तुम्हारा रथ सभी प्राणियों को लांघता हुआ चलता है. तुम्हारे रथ में जुड़े हुए हरे रंग अथवा हरि नाम वाले घोड़े आकाश में दमकते हैं. (१०)

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे. शोणा धृष्णू नृवाहसा (११)

इंद्र के सारथी रथ में घोड़ों को जोड़ते हैं. ये घोड़े रथ के दोनों ओर रहते हैं. ये घोड़े कामना करने योग्य हैं एवं इंद्र की यात्रा पूर्ण करने में समर्थ हैं. (११)

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे. समुषद्भिरजायथाः (१२)

हे मनुष्यो! ये सूर्यरूपी इंद्र अज्ञानियों को ज्ञान देते हैं तथा अंधकार से ढके

पदार्थों को प्रकाशित करते हैं. ये अपनी किरणों के साथ उदय हुए हैं. हे मनुष्यो! इन सूर्यरूपी इंद्र के दर्शन करो. (१२)

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः. दृशे विश्वाय सूर्यम् (१३)

सूर्य की किरणें सभी प्राणियों को जाग्रत करती हैं. प्राणी सूर्य रूपी इंद्र का दर्शन कर सकें, इसलिए ये किरणें सूर्य को ऊपर उठाती हैं. (१३)

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः. सूराय विश्वचक्षसे (१४)

जिस प्रकार रात के बीतते ही चोर भाग जाते हैं, उसी प्रकार सूर्य के उदय होते ही आकाश से तारे भाग जाते हैं. (१४)

अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनां अनु. भ्राजन्तो अग्नयो यथा (१५)

सूर्य की किरणें ज्ञान देने वाली एवं अग्नि के समान दीप्त हैं. ये किरणें मनुष्यों का अनुकरण करती हैं. (१५)

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य. विश्वमा भासि रोचन (१६)

हे इंद्र! तुम संसार रूपी नाव के समान हो. तुम सब को देखने वाले हो, सब को ज्योति प्रदान करते हो और सब के प्रकाशक हो. (१६)

प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषीः. प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे (१७)

हे इंद्र! तुम मनुष्यों और देवों के कल्याण के लिए उदय होते हो. तुम सब के सामने प्रकाशित होते हो. (१७)

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनां अनु. त्वं वरुण पश्यसि (१८)

हे पाप का नाश करने वाले इंद्र! जो पुरुष प्राचीन काल के पुण्यात्मा लोगों के मार्ग पर चलते हैं, तुम उन्हें सदैव कृपा की दृष्टि से देखते हो. (१८)

वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहर्मिमानो अक्तुभिः. पश्यञ्जन्मानि सूर्य (१९)

हे इंद्र! तुम सब पर कृपा करते हो तथा उन्हें देखते हुए रात्रि और दिन का निर्माण करते हो. तुम तीनों लोकों में विचरण करते हो. (१९)

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य. शोचिष्केशं विचक्षणम् (२०)

हे सूर्यरूपी इंद्र! तुम्हारी दमकती हुई सात किरणें घोड़ों के रूप में तुम्हारे रथ में जुड़ी रहती हैं. वे ही तुम्हारा वहन करती हैं. (२०)

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः. ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः (२१)

इंद्र ने सात घोड़ों को अपने रथ में जोड़ा है. घोड़े इंद्र की इच्छा के अनुसार अपने ढंग से आगे बढ़ते हैं. (२१)

सूक्त अड़तालीसवां

देवता—गौ

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः. अभि वत्सं न धेनवः (१)

विचरण करने वाली गाएं, जिस प्रकार अपने बछड़ों के पास जाती हैं, उसी प्रकार हमारी वाणी तुम्हें प्राप्त होती है और तुम्हें सींचती हैं. (१)

ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृञ्चन्तीर्वर्चसा प्रियः. जातं जात्रीर्यथा हृदा (२)

जिस प्रकार माता जन्म लेने वाले बच्चे को अपने हृदय से लगा लेती है, उसी प्रकार सुंदर स्तुतियां इंद्र को तेज से सुशोभित करती हैं. (२)

वज्रापवसाध्यः कीर्तिर्म्रियमाणमावहन्. मह्यमायुर्घृतं पयः (३)

ये वज्रधारी इंद्र मुझे यश, आयु, घृत और दूध प्रदान करें. (३)

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः. पितरं च प्रयन्त्स्वः (४)

ये सूर्य रूपी इंद्र उदयाचल पर पहुंच गए हैं. इन्होंने पूर्व दिशा में दर्शन दे कर सभी प्राणियों को अपनी किरणों से ढक लिया है. इस के लिए उन्होंने स्वर्ग और अंतरिक्ष को वर्षा के जल से खींच कर व्याप्त कर लिया है. वर्षा का जल अमृत के समान है. उस को दुहने के कारण ही इंद्र को गौ कहा जाता है. (४)

अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः. व्यख्यन्महिषः स्व : (५)

जो प्राणी प्राण अर्थात सांस लेने और अपान वायु त्यागने का कार्य करते हैं, उन के शरीर में सूर्य की प्रभा प्राण के रूप में विचरण करती है. सूर्य ही सब लोकों को प्रकाशित करते हैं. (५)

त्रिंशद् धामा वि राजति वाक् पतङ्गो अशिश्रियत्. प्रति वस्तोरहर्द्युभिः (६)

सूर्य की किरणों से तीस मुहूर्त दीप्त होते हैं. वे ही दिन और रात के अंग बनते हैं. वेदों की वाणी सूर्य का उसी प्रकार आश्रय लेती है, जिस प्रकार पक्षी वृक्ष का आश्रय लेते हैं. (६)

सूक्त उनन्चासवां

देवता—इंद्र

यच्छक्रा वाचमारुहन्नन्तरिक्षं सिषासथः. सं देवा अमदन् वृषा (१)

हे इंद्र! जब स्तुति करने वाले विद्वान अपनी वाणी का प्रयोग करते हैं, तभी देवता उन पर प्रसन्न होते हैं. (१)

शक्रो वाचमधृष्टायोरुवाचो अधृष्णुहि. मंहिष्ठ आ मदर्दिवि (२)

वे इंद्र शिष्ट जनों के प्रति कठोर वचन न बोलें. हे अतिशय महान इंद्र! तुम अपनी ज्योति से आकाश को पूर्ण करो. (२)

शक्रो वाचमधृष्णुहि धामधर्मन् वि राजति. विमदन् बर्हिरासरन्. (३)

हे इंद्र! तुम कठोर वचन मत बोलो. तुम हमारे यज्ञ में आ कर बिछी हुई कुशाओं पर विराजमान होओ तथा प्रसन्न बनो. (३)

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः.
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे (४)

हे यजमानो! ये इंद्र दुखों का नाश करने वाले, देखने योग्य एवं सोमरस पी कर प्रसन्न होते हैं. तुम्हारे यज्ञ की सफलता के लिए हम इंद्र की स्तुति करते हैं. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय रंभाती हुई गाएं जिस प्रकार अपने बछड़े के पास जाती हैं, उसी प्रकार स्तुतियां करते हुए हम इंद्र की ओर जाते हैं. (४)

द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम्.
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्त्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे (५)

दुर्भिक्ष के समय जिस प्रकार सभी जीवधारी कंद मूल और फल वाले पर्वत की स्तुति करते हैं, उसी प्रकार हम उस की स्तुति करते हैं जो दान करने योग्य, पोषक, गायों से युक्त एवं तेजपूर्ण होता है. (५)

तत् त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये.
येना यतिभ्यो भृगवे धने हते येन प्रस्कण्वमाविथ (६)

हे इंद्र! मैं तुम से बल युक्त अन्न की याचना करता हूं. जिस अन्न रूप धन को प्राप्त कर के भृगु ऋषि ने शांति अनुभव की तथा कण्व ऋषि के पुत्र प्रस्कण्व की रक्षा की, हम उसी धन की याचना करते हैं. (६)

येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः.
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे (७)

हे इंद्र! जिस बल से तुम ने सागरों को भरने वाले जल की रचना की, वह बल हम को मनचाहा फल देने वाला हो. इंद्र की महिमा को शत्रु प्राप्त नहीं कर सकते. (७)

सूक्त पचासवां — देवता—इंद्र

कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः.
नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गृणन्त आनशुः (१)

जो इंद्र मरणशील मनुष्यों का आकार धारण करने वाले हैं, हे स्तोताओ! उन की स्तुति करो. तुम इंद्र की महिमा का पूर्ण रूप से वर्णन न कर सको और थोड़ा गान कर सकोगे, इस से भी तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी. (१)

कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते.

कदा हवं मघवन्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः (२)

हे इंद्र! कौन सा ऋषि तुम्हारे संबंध में तर्क करता है? किस कारण तुम सोमरस वाले स्तोता के बुलाने पर ही आते हो? सत्य की इच्छा करने वाले देवों का समूह किस कारण तुम्हारी स्तुति करता है? (२)

सूक्त इक्यावनवां — देवता—इंद्र

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे.
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति (१)

हे स्तोताओ! उन स्तोत्रों का उच्चारण करो जो इंद्र को मेरे समीप लाने के कारण बनें. वे इंद्र सहस्र संख्या वाला विशाल धन देते हैं. (१)

शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे.
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः (२)

हवि देने वाले जो यजमान अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर के उन का वध करते हैं, उन यजमानों के लिए इंद्र का स्वर्ण रूप धन इस प्रकार बरसता है, जिस प्रकार पर्वत से जल निकलता है. (२)

प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा शक्रमभिष्टये.
यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते (३)

जो स्तोता यज्ञ में अभिषव करता है, इंद्र उसे हजार संख्या वाला धन देते हैं. हे स्तोता! तुम उन्हीं इंद्र की भलीभांति पूजा करो. (३)

शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः.
गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदीं सुता अमन्दिषुः (४)

पापी मनुष्य इंद्र के आयुधों से बच नहीं सकते, क्योंकि इंद्र के आयुध सैकड़ों सेनाओं के समान विनाश करने वाले हैं. भोग प्रदान करने वाला पर्वत अपने पदार्थों से जिस प्रकार संपन्न बनता है, उसी प्रकार तैयार किए हुए सोमरस को पी कर इंद्र शक्ति से पूर्ण हो जाते हैं और यजमान को अन्न प्रदान करते हैं. (४)

सूक्त बावनवां — देवता—इंद्र

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः.
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते (१)

हे इंद्र! हमारे पास वह सोमरस है जो तैयार करने पर जल के समान तरल हो गया है. हम तुम्हारी स्तुति करते हैं. (१)

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः.
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः (२)

हे इंद्र! सोमरस तैयार करने के बाद यजमान तुम्हारा आह्वान करते हैं. तुम बैल के समान प्यासे हो कर इस सोमरस को पीने के लिए हमारे यज्ञ में कब आओगे ? (२)

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद् वाजं दर्षि सहस्रिणम्.
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे (३)

हे इंद्र! तुम शक्तिशाली मनुष्य को भी मार डालते हो तथा उस के धन पर अधिकार कर लेते हो. हम तुम से धन मांगते हैं जो गौ आदि से युक्त हो. (३)

सूक्त तिरेपनवां देवता—इंद्र

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे.
अयं यः पुरो विभिनत्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः (१)

स्तोत्रों को सुन कर सुंदर ठोड़ी वाले इंद्र प्रसन्न होते हैं और शत्रुओं के नगरों का विनाश कर देते हैं. इस बात को कौन नहीं जानता है कि सोम के तैयार होने पर इंद्र कौन सा वैभव धारण करते हैं. (१)

दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे.
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाश्चरस्योजसा (२)

हे इंद्र! रथ में बैठ कर तुम हर्षित मृग के समान अनेक प्रकार से गमन करते हो. तुम्हारे गमन को रोकने में कोई भी समर्थ नहीं है. तुम अपनी शक्ति के कारण महान हो. हमारे द्वारा सोमरस तैयार किए जाने पर तुम यहां आओ. (२)

य उग्रः सन्ननिष्टृत स्थिरो रणाय संस्कृतः.
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् (३)

शत्रु जिन की हिंसा नहीं कर पाते, वे युद्धभूमि में डटे रहते हैं. जिस प्रकार पति पत्नी के पास जाता है, उसी प्रकार इंद्र हमारे आह्वान को सुन कर इस यज्ञ में आएंगे. (३)

सूक्त चौअनवां देवता—इंद्र

विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे.
क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतोग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम् (१)

सभी सेनाओं ने शत्रुओं को मूर्च्छित करने वाले इंद्र का वरण किया है. वे इंद्र अत्यधिक शक्तिशाली और उग्र हैं. (१)

समीं रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये.
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः (२)

ये स्तोता सोमरस पीने के बाद इंद्र की स्तुति करते हैं. यह सोमरस अपनीअपनी रक्षा शक्ति के साथ इन स्तोताओं की ओर जाता है. (२)

नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा.
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः (३)

इंद्र के वज्र पर दृष्टि पड़ते ही स्तोता उन्हें प्रणाम करते हैं. हे स्तोताओ! ऋक्व नाम वाले पितरों सहित, इस वज्र की धमक तुम्हारे कानों को व्यथित न बनाए. (३)

सूक्त पचपनवां देवता—इंद्र

तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि.
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद् राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री (१)

मैं ऐसे इंद्र को अपने यज्ञ में बुलाता हूं जो शक्तिशाली, वज्र धारण करने वाले, युद्धों में आगे रहने वाले, उग्र, बल धारक एवं स्तुति के योग्य हैं वे इंद्र हमारे धन प्राप्ति के मार्गों को सुंदर बनाएं. (१)

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वां असुरेभ्यः.
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः (२)

हे इंद्र! तुम स्वर्ग के स्वामी हो. तुम राक्षसों का वध करने के लिए अपनी जिन भुजाओं को उठाते हो, उन्हीं भुजाओं के द्वारा यजमान और स्तोता की वृद्धि करो. जो ऋत्विज तुम्हारे प्रति श्रद्धा परायण है, तुम उसी को बढ़ाओ. (२)

यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमव्ययम्.
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पणौ (३)

हे इंद्र! तुम जिस गौ, अश्व आदि को पुष्ट बनाते हो, उसे सोमरस तैयार करने वाले और दक्षिणा देने वाले यजमान को दो, पणियों के समान शत्रुओं को मत दो. (३)

सूक्त छप्पनवां देवता—इंद्र

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः.
तमिन्महत्स्वाजिषूतेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् (१)

वृत्र असुर का वध करने वाले इंद्र को शक्ति और प्रसन्नता के लिए बड़ा किया जाता है. हम उन्हें बड़े और छोटे सभी प्रकार के युद्धों में बुलाते हैं. वे युद्ध के अवसर पर हमारे साथ मिल जाएं. (१)

असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि परादादिः.
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु (२)

हे वीर इंद्र! तुम शत्रुओं और खंडन करने वाले दुष्टों को दंड देते हो. यज्ञ में जो तुम्हारे निमित्त सोमरस तैयार करता है उसे तुम परम ऐश्वर्य देते हो. (२)

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धना.
युक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्मां इन्द्र वसौ दधः(३)

हे इंद्र! युद्ध के अवसर पर तुम डराने वाले पुरुष से धन छीनने का प्रयत्न कर रहे होओगे उस समय तुम हरे रंग वाले अथवा हरि नाम के अपने घोड़ों के द्वारा किस का वध करोगे तथा किसे धन दे कर प्रतिष्ठित करोगे ? उस समय तुम अपना धन हमें प्रदान करना. (३)

मदेमदे हि नो ददिर्यूथा गवामृजुक्रतुः.
सं गृभाय पुरू शतोभयाहस्त्या वसु शिशीहि राय आ भर (४)

हे इंद्र! तुम्हारा यश सरलता से सभी ओर फैल जाता है. तुम प्रसन्न हो कर हमें गाएं प्रदान करते हो. तुम हमें उत्तम धन दो. (४)

मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे.
विद्मा हि त्वा पुरूवसुमुप कामान्त्ससृज्महेऽथा नोऽविता भव (५)

हे वीर इंद्र! हमारे यज्ञ में सोमरस तैयार हो जाने पर तुम प्रसन्न बनो तथा बल धारण करो. हम तुम्हें असीमित शक्ति वाला जानते हैं और तुम्हारी कामना करते हैं. तुम हमारी रक्षा करो. (५)

एते त इन्द्र जन्तवो विश्वं पुष्यन्ति वार्यम्.
अन्तर्हि ख्यो जनानामर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर (६)

हे इंद्र! हम तुम्हारी शक्ति बढ़ाते हैं. जो लोग तुम्हें हवि नहीं देते और तुम्हारी निंदा करते हैं, उन का धन छीन कर तुम हमें दो. (६)

सूक्त सत्तावनवां — देवता—इंद्र

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे. जुहूमसि द्यविद्यवि (१)

जिस प्रकार गाय को दुहने के लिए गोदोहक को बुलाया जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक अवसर पर अपनी रक्षा के लिए हम इंद्र का आह्वान करते हैं. (१)

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब. गोदा इद् रेवतो मदः (२)

सदा हर्षित रहने वाले एवं धनवान इंद्र गाएं प्रदान करने वाले हैं. हे इंद्र हमारे सोमयाग में आ कर तुम सोमरस का पान करो. (२)

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्. मा नो अति ख्य आ गहि (३)

हे इंद्र! हम तुम्हारी उत्तम बुद्धि को जानते हैं. तुम दूसरों के द्वारा हमारी निंदा

मत कराओ तथा हमारे यज्ञ में पधारो. (३)

शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्. इन्द्र सोमं शतक्रतो (४)

हे सैकड़ों कर्मों वाले इंद्र! तुम हमारी रक्षा के लिए शक्ति बढ़ाने वाले इस सोमरस का पान करो. (४)

इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु. इन्द्र तानि त आ वृणे (५)

हे बहुत से कर्मों वाले इंद्र! मैं उन शक्तियों का वरण करता हूं जो देवता, पितर आदि में हैं. (५)

अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्. उत् ते शुष्मं तिरामसि (६)

हे इंद्र! तुम्हारा असीमित बल हमें प्राप्त हो. तुम हमें वह दमकता हुआ धन प्रदान करो जो शत्रुओं से संघर्ष होने पर हमें विजय दिला सके. हम अपने इस स्तोत्र के द्वारा सोमरस की वृद्धि करते हुए तुम्हें शक्तिशाली बनाते हैं. (६)

अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः.
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि (७)

हे इंद्र! तुम दूर या पास जहां कहीं हो, वहीं से हमारे समीप आओ. हे वज्रधारी इंद्र! तुम अपने उत्कृष्ट स्वर्गलोक से भी सोमरस पीने के लिए हमारे यज्ञ में आओ. (७)

इन्द्रो अङ्ग महद् भयमभी षदप चुच्यवत्. स हि स्थिरो विचर्षणिः (८)

हे ऋत्विज! इंद्र बड़े से बड़े भय को भी दूर कर देते हैं. उन सूर्य द्रष्टा अर्थात सब को देखने वाले इंद्र को कोई पराजित नहीं कर सकता. (८)

इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत्. भद्रं भवाति नः पुरः (९)

यदि इंद्र हमारी रक्षा करेंगे तो हमारे दुख समाप्त हो जाएंगे और सुख हमारे सामने आएंगे. इंद्र सदा मंगल कर्ता हैं. (९)

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्. जेता शत्रून् विचर्षणिः (१०)

हमारे जो शत्रु सभी दिशाओं में फैले हुए हैं, इंद्र उन सभी को देखते हैं. इंद्र उन भयों को हम से अलग करें जो सभी दिशाओं और उपदिशाओं से प्राप्त होने वाले हैं. (१०)

क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे.
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः (११)

इसे कौन जानता है कि सोमरस निचोड़े जाने पर इंद्र कौन से अन्न को धारण करते हैं ? हवि रूप अन्न से प्रसन्न हुए इंद्र अपनी शक्ति से शत्रुओं के नगरों का

विनाश करते हैं. (११)

दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे.
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महांश्चरस्योजसा (१२)

हे इंद्र! तुम अपने रथ पर सवार हो कर हर्षित बने हुए हिरन के समान अनेक स्थानों पर जाते हो. जब सोमरस निचोड़ा जाता है, उस समय यज्ञ में आने से तुम्हें कोई रोक नहीं सकता. तुम अपने ही बल से महान बन कर घूमते हो. हमारा सोमरस तैयार हो जाने पर तुम हमारे यज्ञ में पधारो. (१२)

य उग्रः सन्ननिष्टृत स्थिरो रणाय संस्कृतः.
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् (१३)

इंद्र शक्तिशाली हैं, इसलिए शत्रुओं के युद्ध करने के लिए उद्यत होने पर वे कभी पराजित नहीं होते. जिस प्रकार पति अपनी पत्नी के पास जाता है, उसी प्रकार इंद्र स्तोता द्वारा बुलाए जाने पर उस के समीप जाते हैं. (१३)

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः.
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते (१४)

हे इंद्र! तैयार हो जाने पर सोमरस जल के समान तरल हो गया है. इस अवसर पर हम ऋत्विज तुम्हारे स्तोत्र का गान करते हुए बैठे हैं. (१४)

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः.
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः (१५)

हे इंद्र! सोमरस तैयार हो जाने पर उक्थ मंत्रों का गान करने वाले ऋत्विज तुम्हें बुला रहे हैं. प्यासे बैल के समान आप कब हमारा सोमरस पीने के लिए हमारे यज्ञ में पधारेंगें. (१५)

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद् वाजं दर्षि सहस्रिणम्.
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे (१६)

हे धनों को अपने अधीन करने वाले इंद्र! तुम उन व्यक्तियों को भी मर्दित कर देते हो जो सैकड़ों साधनों वाले हैं. हम तुम से वह धन मांगते हैं जो गायों से संपन्न हो. (१६)

सूक्त अट्ठावनवां — देवता—इंद्र

श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत.
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम (१)

नित्य प्रति सूर्य के साथ रहने वाली किरणें जलों के स्वामी इंद्र के साथ भी रहती हैं. हम यह कामना करते हैं कि इंद्र के जल रूपी मेघ विस्तृत हों. जिस प्रकार

इंद्र भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों के धनों का विभाजन करते हैं, उसी प्रकार हम उस धन के भाग पर ध्यान देते हैं. (१)

अनर्शरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः.
सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् (२).

हे स्तोताओ! तुम धन देने वाले इंद्र का सच्चे हृदय से आश्रय लो. इंद्र का दान मंगलमय है, इसलिए तुम उन की स्तुति करो. इंद्र अपने उपासक की कामना पूर्ण करते हैं. स्तुति कर के धन मांगने वाला पुरुष इंद्र के मन को धन देने के लिए आकर्षित करता है. (२)

बण्महां असि सूर्य बडादित्य महां असि.
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महां असि (३)

हे सूर्य रूपी इंद्र! हे आदित्य! तुम्हारे महान होने की बात सत्य है. तुम सत्य रूप वाले हो. तुम्हारी महिमा की प्रशंसा की जाती है, इसलिए तुम्हारे महिमावान होने की बात यथार्थ है. (३)

बट् सूर्य श्रवसा महां असि सत्रा देव महां असि.
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् (४)

हे सूर्य! तुम स्वयं महान हो. हमारे हवि रूप अन्न से तुम्हारी महिमा की वृद्धि हो. तुम अपनी महिमा के कारण ही राक्षसों से संघर्ष करते हो. तुम व्यापक हो. कोई तुम्हारी हिंसा नहीं कर सकता. (४)

सूक्त उनसठवां

देवता—इंद्र

उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते.
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव (१)

ये स्तोत्र एवं गायन योग्य वाणियां उत्पन्न हो रही हैं. धन देने वाली वाणी शत्रुओं पर विजय पाती है. अन्न देने वाली स्तोता की सदा रक्षा करती है. जिस प्रकार रथ अपने स्वामी को गंतव्य पर पहुंचाने के लिए चलता है, उसी प्रकार हमारी ये वाणियां इंद्र को प्रसन्न करने के लिए उन के पास जाएं. (१)

कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद्धीतमानशुः.
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् (२)

कण्व गोत्र के ऋषियों की स्तुति जिस प्रकार तीनों लोक के स्वामी इंद्र को प्राप्त होती है, जिस प्रकार द्यावा, अर्यमा आदि सूर्य अपने प्रेरणाप्रद इंद्र से मिलते हैं, उसी प्रकार भृगु वंश के ऋषि इंद्र का आश्रय लेते हैं और प्रिय बुद्धि वाले मनुष्य इंद्र की स्तुति करते हैं. (२)

उदिन्वस्य रिच्यतेंऽशो धनं न जिग्युषः.
य इन्द्रो हरिवान्न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि (३)

इंद्र का यज्ञ भाग जीते हुए धन के समान होता है. हरि नाम के अथवा हरे रंग के घोड़ों वाले इंद्र की हिंसा नहीं कर सकते. जो यजमान इंद्र को सोमरस देता है, इंद्र उस में बल को स्थापित करते हैं. (३)

मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा.
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत् (४)

हे स्तोताओ! ऐसे यज्ञ संबंधी मंत्रों का उच्चारण करो जो सुंदर, तेज और रूप प्रदान करने में समर्थ हों. इंद्र की सेवा करने वाला मनुष्य सभी बंधनों से छुटकारा पा जाता है. (४)

सूक्त साठवां — देवता—इंद्र

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः. एवा ते राध्यं मनः (१)

हे वीर एवं स्थिर इंद्र! तुम दुष्कर्म करने वाले वीरों को रोकते हो. (१)

एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः. अधा चिदिन्द्र मे सचा (२)

हे असीमित धन के स्वामी इंद्र! तुम मेरे सहायक बनो. तुम अपनी पुष्ट करने वाली शक्ति से हम यजमानों में दान करने की शक्ति की स्थापना करो. (२)

मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते. मत्स्वा सुतस्य गोमतः (३)

हे अन्नों के स्वामी इंद्र! तुम ब्रह्मा के समान आलसी मत बनो. तुम बुद्धि देने वाले तैयार सोमरस के द्वारा अत्यधिक आनंद प्राप्त करो. (३)

एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही. पक्वा शाखा न दाशुषे (४)

इंद्र की भूमि गाएं प्रदान करने वाली हैं. यह हवि देने वाले यजमान के लिए पकी हुई शाखा के समान बने. (४)

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते. सद्यश्चित् सन्ति दाशुषे (५)

हे इंद्र! जो यजमान तुम्हें हवि प्रदान करता है, उस के लिए तुम्हारे रक्षा के साधन शीघ्र प्राप्त हो जाते हैं. (५)

एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या. इन्द्राय सोमपीतये (६)

सोमरस का पान करते समय इंद्र को स्तोत्र, उक्थ और शस्त्र नाम की स्तुतियां बहुत प्रिय लगती हैं. (६)

सूक्त इकसठवां

देवता—इंद्र

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम्. उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् (१)

हे वज्रधारी, शत्रुओं को पराजित करने वाले, अश्वों की शोभा से युक्त एवं मनचाहे पदार्थों के वर्षक इंद्र! हम तुम्हारे हवि की पूजा करते हैं. (१)

येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ. मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि (२)

हे इंद्र! जिस सोमरस के प्रभाव से तुमने आयु और मन को तेज प्राप्त कराया था, उसी सोमरस से पुष्ट हो कर तुम उस यजमान के कुशाओं से बने आसन पर बैठो. (२)

तदद्या चित उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा. वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे (३)

हे इंद्र! उक्थ नाम के मंत्रों के ये गायक तुम्हारी महिमा का गान कर रहे हैं. तुम धर्म कार्य करते हुए प्रत्येक अवसर पर विजय प्राप्त करो. (३)

तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्. इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत (४)

बहुतों ने इन इंद्र की स्तुति की है तथा बहुत से लोगों ने इन का आह्वान किया है. हे स्तोता! तुम इन्हीं इंद्र के यश का गान करो तथा अपनी स्तुति रूपी वाणी से उन्हें प्रतिष्ठित करो. (४)

यस्य द्विबर्हसो बृहत् सहो दाधार रोदसी. गिरींरज्रां अपः स्व वृषत्वना (५)

जिन इंद्र के आश्रय के कारण स्वर्ग और पृथ्वी महान बल, जल, पर्वत और वज्र को धारण करते हैं, उन्हीं इंद्र की तुम पूजा करो. (५)

स राजसि पुरुष्टुतं एको वृत्राणि जिघ्नसे. इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे (६)

हे इंद्र! तुम विजय प्राप्त करने वाले यश के कारण तेजस्वी बने हो तथा अकेले ही शत्रुओं का नाश करते हो. (६)

सूक्त बासठवां

देवता—इंद्र

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः. वाजे चित्रं हवामहे (१)

हे सदा नवीन रहने वाले इंद्र! अन्न प्राप्ति के अवसर पर हम तुम्हारी रक्षा की कामना करते हैं और तुम्हें बुलाते हैं. तुम हमें विजय प्राप्त कराने के लिए हमारे समीप आओ, हमारे विरोधियों की ओर मत जाओ. जिस प्रकार विजय की कामना से राजा योद्धाओं को बुलाता है, उसी प्रकार हम तुम्हें बुलाते हैं. (१)

उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत्.

त्वामिद्ध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् (२)

हे इंद्र! कार्य के अवसर पर हम तुम्हारा ही आश्रय लेते हैं. तुम शत्रुओं को वश में करने वाले, नित्य एवं अत्यधिक शक्तिशाली हो. तुम हमें सहायक के रूप में प्राप्त होओ. हम अपनी रक्षा के लिए सखा के रूप में तुम्हारा वरण करते हैं. (२)

यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे. सखाय इन्द्रमूतये (३)

हे यजमानो! तुम्हारी रक्षा के निमित्त हम इंद्र का आह्वान करते हैं. हमें पहले गौ आदि के रूप में धन प्रदान करने वाले इंद्र मनचाहा फल देने में समर्थ हैं. हम उन्हीं इंद्र की स्तुति करते हैं. (३)

हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत.
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् (४)

मैं उन्हीं इंद्र की स्तुति करता हूं जो सभी मनुष्यों के रक्षक, हरे रंग के अथवा हरित नाम वाले घोड़ों के स्वामी और सब का नियंत्रण करने वाले हैं. मैं स्तुतियों से प्रसन्न होने वाले इंद्र की स्तुति करता हूं. वे ही इंद्र हम स्तोओं को गाएं तथा घोड़े प्रदान करें. (४)

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्. धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे (५)

हे विद्वान एवं धर्मात्मा स्तुति कर्ताओ! तुम महान इंद्र की स्तुति सोम गान के द्वारा करो. (५)

त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः. विश्वकर्मा विश्वदेवो महां असि (६)

हे इंद्र! सूर्य को तुम ने ही आकाश में प्रकाशित किया है. तुम शत्रुओं का तिरस्कार करने वाले, विश्वेदेव और महान विश्वकर्मा हो. (६)

विभ्राजं ज्योतिषा स्व१रगच्छो रोचनं दिवः. देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे (७)

हे इंद्र! सभी देवता तुम्हारे मित्र हैं. जो सूर्य स्वर्ग में प्रकाश करते हैं, वे तुम्हारे द्वारा ही ज्योतिमान है. (७)

तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्. इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत (८)

हे स्तोताओ! इंद्र को अनेक स्तोता बुला चुके हैं तथा बहुत से स्तोताओं ने इंद्र की स्तुति की है. उन्हीं पराक्रमी इंद्र को तुम भी अपनी स्तुतियों के द्वारा सुशोभित करो. (८)

यस्य द्विबर्हसो बृहत् सहो दाधार रोदसी. गिरीँरज्रां अपः स्वर्वृषत्वना (९)

जो इंद्र अपनी महिमा से आकाश, पृथ्वी, जल, पर्वतों, वज्र, बल तथा स्वर्ग को धारण करते हैं, तुम उन्हीं इंद्र का पूजन करो. (९)

स राजसि पुरुष्टुतं एको वृत्राणि जिघ्नसे. इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे (१०)

हे इंद्र! तुम विजय प्राप्त करने वाले यश के लिए तेजस्वी हुए हो. तुम अकेले ही अपने शत्रुओं को नष्ट कर देते हो. (१०)

सूक्त तिरेसठवां देवता—इंद्र

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः.
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीक्लृपाति (१)

यह इंद्र, विश्वेदेव और भुवन सुख पाने का प्रयत्न करते हैं. वे इंद्र आदित्यों सहित आ कर हमारे यज्ञ, शरीर और संतान को शक्ति प्रदान करें. (१)

आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम्.
हत्वाय देवा असुरान् यदायन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः. (२)

जिन देवताओं ने स्वर्ग की रक्षा के लिए राक्षसों का विनाश किया था, वे इंद्र आदित्य और मरुत हमारे शरीर की रक्षा के लिए हमारे यज्ञ में पधारें. (२)

प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिरादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्.
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः (३)

जिन इंद्र ने अपनी शक्ति से सूर्य को प्रत्यक्ष किया तथा पृथ्वी को अन्न वाली बनाया, उन्हीं इंद्र से हम देवताओं का हितकारी अन्न प्राप्त करें तथा वीरों से युक्त रहते हुए सौ वर्षों की आयु प्राप्त करें. (३)

य एक इद् विदयते वसु मर्ताय दाशुषे. ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग (४)

इंद्र हवि देने वाले यजमान को अन्न देते हैं. इस कार्य में कोई भी इंद्र की सहायता नहीं कर सकता. (४)

कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत्. कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग (५)

वे इंद्र यज्ञ न करने वालों पर अपने चरण का प्रहार कर के उन्हें कब ताड़ना देंगे तथा हम स्तोताओं की प्रार्थना कब सुनेंगे ? (५)

यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावां आविवासति.
उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग (६)

हे इंद्र! जो पुरुष सोमरस ले कर अनेक स्तोत्रों द्वारा तुम्हारी प्रार्थना करता है, वह प्रचंड बल और ऐश्वर्य प्राप्त करता है. (६)

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति. येना हंसि न्य१त्रिणं तमीमहे (७)

हे इंद्र! तुम सोमरस अत्यधिक पीते हो. उस से बल उत्पन्न होता है. हे इंद्र! तुम

अपने जिस बल से असुरों का नाश करते हो, हम तुम से उसी बल की याचना करते हैं. (७)

येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम्. येना समुद्रमाविथा तमीमहे (८)

हे इंद्र! जिस बल से तुम ने दशग्व, अध्रिगु और कांपते हुए स्वर्णरथ की रक्षा की थी तथा सागर को पुष्ट किया था, हम तुम से उसी बल की याचना करते हैं. (८)

येन सिन्धुं महीरपो रथां इव प्रचोदयः. पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे (९)

हे इंद्र! जिस बल से तुम ने जलों को सागर की ओर गमनशील बनाया. हम अमृत के मार्ग में आगे बढ़ने के लिए उसी बल की याचना करते हैं. (९)

सूक्त चौंसठवां — देवता—इंद्र

एन्द्र नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः. गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः (१)

हे सत्य के द्वारा विजय प्राप्त करने वाले इंद्र! तुम हमारे प्रिय हो. कोई भी तुम्हें ढक नहीं सकता. तुम स्वर्ग के स्वामी हो और तुम्हारा विस्तार स्वर्ग के समान है. तुम हमें अपने प्रिय के रूप में स्वीकार करो. (१)

अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी.
इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः (२)

हे इंद्र! तुम यज्ञ में सब के सामने आ कर सोमरस पीते हो तथा आकाश और पृथ्वी दोनों में ही प्रकट होते हो. तुम स्वर्ग के स्वामी हो. जो तुम्हारे लिए सोमरस निचोड़ता है, तुम उस की वृद्धि करते हो. (२)

त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दर्ता पुरामसि. हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः (३)

हे इंद्र! तुम ने असुरों को मारा और उन के दृढ़ नगरों का विनाश किया है. तुम स्वर्ग के स्वामी हो और मनुष्यों की वृद्धि करते हो. (३)

एदु मध्वो मदिन्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः.
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः (४)

हे अध्वर्युजनो! शहद से भी अधिक मीठे अन्न से इंद्र को तृप्त करो. ये इंद्र सदा यजमान की वृद्धि करते हुए स्तुतियां स्वीकार करते हैं. (४)

इन्द्र स्थातर्हरीणां नकिष्टे पूर्व्यस्तुतिम्. उदानंश शवसा न भन्दना (५)

हे हरे रंग के अथवा हरि नाम वाले घोड़ों पर सवार होने वाले इंद्र! तुम्हारे पूर्व कर्म के बलों और कल्याणों की कोई समानता नहीं कर सकता. (५)

तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः. अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् (६)

अन्न की कामना वाले हम अन्न के स्वामी इंद्र को अपने यज्ञ में बुलाते हैं. जिन यज्ञों का अनुष्ठान विधि पूर्वक किया जाता है. उन से इंद्र की सदा वृद्धि होती है. (६)

सूक्त पैंसठवां

देवता—इंद्र

एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय स्तोम्यं नरम्.
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् (१)

हम स्तुति के योग्य एवं अपने सखा के समान इंद्र से इधर आने के लिए स्तुति करते हैं. ये इंद्र सभी कर्मों के फल प्रदान करते हैं. (१)

अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः.
घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत (२)

हे स्तोताओ! इन तेजस्वी, देखने योग्य वाणी रूपी अन्न वाले तथा गायों को न रोकने वाले इंद्र के प्रति शहद और घी से भी अधिक मधुर वाणी का उच्चारण करो. (२)

यस्यामितानि वीर्या३ न राधः पर्येतवे. ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा (३)

कार्य साधन के हेतु असीमित शक्ति वाले इंद्र दीप्तिमती दक्षिणा के रूप हैं. (३)

सूक्त छियासठवां

देवता—इंद्र

स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनूर्मिं वाजिनं यमम्. अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे (१)

हे ऋत्विजो! जो इंद्र अपने रथ से घोड़ों को खोल कर शांत भाव से यज्ञ में बैठते हैं, उन्हीं प्रशंसा के योग्य इंद्र की स्तुति यजमान की कल्याण कामना के लिए करो. (१)

एवा नूनमुप स्तुहि वैयश्व दशमं नवम्. सुविद्वांसं चर्कृत्यं चरणीनाम् (२)

जो इंद्र सदा नवीन, महान और मेधावी हैं, हे यजमान! तुम उन्हीं इंद्र की पूजा करो. (२)

वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम्. अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव (३)

हे वज्रधारी इंद्र! जिस प्रकर आदित्य अपने सहयोगियों को जानते हैं, उसी प्रकार तुम भी संतप्त करने वाले और शक्तिशाली असुरों को जानते हो. (३)

वनोति हि सुन्वन् क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो
देवानामव द्विषःसुन्वान इत् सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः.
सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् (१)

सोमरस निचोड़ने वाला यजमान अपने शत्रुओं के साथसाथ देवताओं के शत्रुओं का भी पराभव करता है. वह बहुत से घरों को प्राप्त करता है तथा विविध पदार्थों के दान की इच्छा करता है. वह शत्रुओं से घिरा हुआ नहीं रहता तथा अन्न का स्वामी बनता है. इंद्र उसे पृथ्वी संबंधी सभी धन देते हैं. (१)

मो षु वो अस्मदभि तानि पौंस्या सना भूवन् द्युम्नानि मोत जरिषुरस्मत्
पुरोत जारिषुः. यद् वश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम्.
अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरम् (२)

हे मरुतो! तुम्हारा तेज संताप देने वाला है. वह हमारे सामने आ कर हमें जीर्ण न करे. तुम अपने नवीन, चयन योग्य और अविनाशी उस बल को हम में स्थापित करो, जिसे शत्रु कभी प्राप्त नहीं कर सकते. (२)

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न
जातवेदसम्. य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा घृतस्य
विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषाजुह्वानस्य सर्पिषः (३)

अग्नि देव बल देने वाले, देवों के होता, उत्पन्न हुओं के जानने वाले तथा बल के अनुज हैं. वे अपनी ज्वालाओं से यज्ञ को सुसज्जित करते हैं तथा होम अग्नि में डाली गई घृत की बूंदों तथा उन की दीप्ति की कामना करते हैं. (३)

यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामञ्छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत.
आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः (४)

हे स्वर्ग के नेता मरुतो! फल देने के समान तुम अपनी पृषती नाम वाली घोड़ियों के द्वारा यज्ञ में आते हो. तुम इन बिछी हुई कुशाओं पर विराजमान हो कर सोमरस का पान करो. (४)

आ वक्षि देवां इह विप्र यक्षि चोशन् होतर्नि षदा योनिषु त्रिषु.
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात् तव भागस्य तृप्णुहि (५)

हे अग्नि! तुम देवताओं को हमारे इस यज्ञ में ला कर उन का पूजन करो. तुम होता के रूप में पृथ्वी, अंतरिक्ष और स्वर्ग तीनों—स्थानों में विराजमान होओ. तुम हवि का भाग सभी देवों को पहुंचा कर स्वयं भी ग्रहण करो तथा मधुर सोमरस पी कर तृप्ति प्रदान करो. (५)

एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः.
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत् पिब (६)

हे इंद्र! यह सोमरस तुम्हारे शरीर के बल को बढ़ाने वाला है. अन्य सब को वश में करने के लिए तुम्हारी भुजाओं में बल व्याप्त है. हे इंद्र! यह सोमरस निचोड़ा जा कर तुम्हारे पीने के लिए पात्र में रखा है. तुम इसे तब तक पियो, जब तक ब्राह्मण संतुष्ट न हो जाएं. (६)

यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो ददिर्यो नाम पत्यते.
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात् सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः (७)

मैं पहले के समान ही अपने यज्ञ में इंद्र का आह्वान करता हूं. हे इंद्र! तुम अध्वर्युजनों द्वारा दिए गए इस सोमरस रूपी मधु का पान करो. (७)

सूक्त अड़सठवां — देवता—इंद्र

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे. जुहूमसि द्यविद्यवि (१)

जिस प्रकार सरलता से गायों का दूध दुहने के लिए दोहनकर्ता को बुलाया जाता है, उसी प्रकार रक्षा का अवसर आने पर हर बार इंद्र का आह्वान करते हैं. (१)

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब. गोदा इद् रेवतो मदः (२)

ऐश्वर्य संपन्न इंद्र सदा प्रसन्न रहते हैं और यजमानों को गाएं देते हैं. हे इंद्र! प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल के तीन सवनों में आ कर सोमरस का पान करो. (२)

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्. मा नो अति ख्य आ गहि (३)

हे इंद्र! तुम्हारी उत्तम बुद्धियों को हम जानते हैं. तुम हमारी निंदा मत होने दो तथा हमारे यज्ञ में आओ. (३)

परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम्. यस्ते सखिभ्य आ वरम् (४)

हे स्तोताओ! कोई भी इंद्र की हिंसा नहीं कर सकता. तुम मित्रों का मंगल करने वाले इंद्र का आश्रय लो. (४) 6

उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत. दधाना इन्द्र इद् दुवः(५)

हे स्तोताओ! तुम इंद्र का आश्रय ग्रहण करो. इस से निंदा करने वाले हमारी निंदा नहीं कर सकेंगे. (५)

उत नः सुभगां अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः. स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि (६)

हम इतने यशस्वी बनें कि शत्रु भी हमारे यश का गान करें. इंद्र के द्वारा सुख

प्राप्त कर के हम सुंदर कृषि से संपन्न बनें. (६)

एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम्. पतयन्मन्दयत् सखम् (७)

हे स्तोता! ये इंद्र मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले मित्रों को मुदित कराने वाले तथा यज्ञ की शोभा के रूप हैं. इन इंद्र के लिए सोमरस अर्पण करो. (७)

अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः. प्रावो वाजेषु वाजिनम् (८)

हे इंद्र! तुम सोमरस पी कर वृत्र असुर के लिए मृत्यु रूप बनो तथा युद्ध क्षेत्र में हमारे ऐश्वर्य की रक्षा करो. (८)

तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो. धनानामिन्द्र सातये (९)

हे इंद्र! तुम सैकड़ों कर्म करने वाले हो! हम हवियों के द्वारा तुम्हारी पूजा करते हैं और धन पाने के लिए तुम्हें अपने यज्ञ में बुलाते हैं. (९)

यो रायोऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा. तस्मा इन्द्राय गायत (१०)

इंद्र धन प्रदान करने वाले एवं धन के रक्षक हैं. इंद्र उस के लिए मित्र के समान हैं जो सोमरस तैयार करता है. हे स्तोताओ! तुम इंद्र की स्तुति करो. (१०)

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत. सखाय स्तोमवाहसः (११)

हे मेरे मित्र स्तोताओ! तुम यहां यज्ञशाला में विराजो और इंद्र का गुणगान करो. (११)

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्. इन्द्र सोमे सचा सुते (१२)

हे स्तोताओ! वरण करने वालों के स्वामी इंद्र अत्यधिक महान हैं. सोमरस निचोड़ दिए जाने पर उन्हें यहां बुलाओ. (१२)

सूक्त उनहत्तरवां — देवता—इंद्र

स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरंध्याम्. गमद् वाजेभिरा स नः (१)

जब हमें कोई चिंता होती है अथवा हम इंद्र का चिंतन करते हैं, उस समय इंद्र हमारे सामने प्रकट होते हैं. इंद्र अन्नों को साथ में ले कर हमारे पास आएं. (१)

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः. तस्मा इन्द्राय गायत (२)

हे स्तोताओ! जब इंद्र युद्ध में लगे होते हैं, तब शत्रु उन के घोड़ों को नहीं घेर पाते ऐसे समय इंद्र की स्तुति करो. (२)

सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये. सोमासो दध्याशिरः (३)

दही से मिला हुआ सोमरस पवित्र है. यह सोमरस सोम पीने वाले इंद्र के लिए

तैयार हो रहा है. (३)

त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः. इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो (४)

हे इंद्र! तुम सोमरस का पान करने के लिए शीघ्र ही अपने शरीर का विस्तार कर लेते हो. (४)

आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः शं ते सन्तु प्रचेतसे (५)

हे इंद्र ! तुम्हें स्फूर्ति देने वाला सोमरस तुम्हारे शरीर में प्रवेश करे तथा तुम्हें तृप्त बनाए. (५)

त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो. त्वां वर्धन्तु नो गिरः (६)

हे इंद्र! स्तोम, उक्थ और हमारी वाणी रूपी स्तुतियां तुम्हारी वृद्धि करें. (६)

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम्. यस्मिन् विश्वानि पौंस्या (७)

यज्ञ कर्म की रक्षा करने वाले इंद्र में सैकड़ों पराक्रम व्याप्त हैं. हमें उन्हीं की सेवा करनी चाहिए. (७)

मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः. ईशानो यवया वधम् (८)

हे इंद्र! हमारे शत्रु हमारी देह के प्रति हिंसा की भावना न रखें. हे स्वामी इंद्र! तुम हमारे वध रूप कारण को हम से दूर हटाओ. (८)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः. रोचन्ते रोचना दिवि (९)

इंद्र के रथ में हरे रंग के अथवा हरि नाम के घोड़े जोते जाते हैं. आकाश में दमकते हुए वे घोड़े स्थावर और जंगम दोनों प्रकार के प्राणियों को लांघते हैं. (९)

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे. शोणा धृष्णू नृवाहसा (१०)

सारथी इंद्र के रथ में हरि नाम के अथवा हरित वर्ण के घोड़ों को जोड़ते हैं. इंद्र के रथ के दोनों ओर रहने वाले घोड़े ऐसी सवारी हैं, जिस की कामना की जाती है. वे घोड़े सब को वश में करते हैं. (१०)

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे. समुषद्भिरजायथाः (११)

हे मरणधर्मा मनुष्यो! सूर्य रूप इंद्र अज्ञानी को अन्न और अंधकार में छिपे हुए पदार्थ को रूप देते हैं. सूर्य रूप इंद्र अपनी किरणों से उदय हुए हैं. इन के दर्शन करो. (११)

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे. दधाना नाम यज्ञियम् (१२)

मरुद्गण हवि देने वाले की गर्भ में स्थित संतान की रक्षा करने के कारण

वज्रिय नाम धारण करते हैं. (१२)

सूक्त सत्तरवां

देवता—इंद्र

वीलु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः अविन्द उस्रिया अनु (१)

हे इंद्र! तुम ने उषा काल के बाद ही अपनी ज्योति वाली शक्तियों के द्वारा गुफा में छिपे धन को प्राप्त किया था. (१)

देवयन्तो यथ मतिमच्छा विददू वसुं गिरः. महामनूषत श्रुतम् (२)

हे स्तुतियो! हम स्तोता देवताओं की इच्छा करते हैं. हम इंद्र के सामने अपनी उत्तम बुद्धि को प्रस्तुत करेंगे. इस प्रकार उन महिमा वाले इंद्र की स्तुति की जाएगी. (२)

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा. मन्दू समानवर्चसा (३)

हे इंद्र! तुम सदा ही मरुतों के साथ देखे जाते हो, वे मरुत भय रहित हैं. तुम्हारा और मरुतों का तेज समान है, इसलिए तुम सदा मरुतों के साथ देखे जाते हो. (३)

अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति. गणैरिन्द्रस्य काम्यैः (४)

इंद्र की कामना करने वालों से यज्ञ की शोभा बढ़ती है. (४)

अतःपरिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि. समस्मिन्नृञ्जते गिरः (५)

हे इंद्र! तुम ज्योतिर्मान स्वर्ग से हमारे यज्ञ में आओ. हमारी स्तुतियां इंद्र के साथ ही संयोग करती हैं. (५)

इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि. इन्द्रं महो वा रजसः (६)

इंद्र पृथ्वी लोक में, इहलोक में अथवा स्वर्गलोक में तात्पर्य यह कि जहां कहीं भी हों, हम वहीं से उन्हें बुलाने की इच्छा करते हैं. (६)

इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः. इन्द्रं वाणीरनूषत (७)

पूजा करने वाले यजमान इंद्र की पूजा करते हैं तथा स्तोता इंद्र के ही यश का गान करते हैं. (७)

इन्द्र इद्धर्योः सचा संमिश्ल आ वचोयुजा. इन्द्रो वज्री हिरण्ययः (८)

इंद्र के साथ रहने वाले घोड़े हमारे मंत्रोच्चारण के साथ ही रथ में जोड़ दिए जाते हैं. मनुष्यों के हितैषी इंद्र वज्र धारण करते हैं. (८)

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि. वि गोभिरद्रिमैरयत् (९)

इंद्र ने ही सूर्य को स्वर्ग में इसलिए स्थापित किया है कि सब लोग उन्हें देख

सकें तथा इंद्र ने ही अपनी सूर्यरूपी किरणों के द्वारा मेघ का भेदन किया है. (९)

इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च. उग्र उग्राभिरूतिभिः (१०)

हे इंद्र! जो युद्ध श्रेष्ठ धन प्राप्त कराने वाला है, उस युद्ध में तुम अपने अतिरिक्त रक्षा साधनों से हमारी रक्षा करो. (१०)

इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे. युजं वृत्रेषु वज्रिणम् (११)

अधिक अथवा थोड़ा धन पाने के लिए हम इंद्र को ही बुलाते हैं. इंद्र ने वृत्र असुर पर अपने वज्र का प्रहार किया था. (११)

स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि. अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः (१२)

हे इंद्र! यह सत्य है कि तुम धन देने वाले और फलों की वर्षा करने वाले हो. तुम किसी के हटाने से हटते नहीं हो. तुम हमारे इस चरु का भक्षण करो तथा हमारा सुख बढ़ाओ. (१२)

तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः. न विन्ध्ये अस्य सुष्टुतिम् (१३)

मैं धन प्राप्ति के प्रत्येक अवसर पर तथा सदैव धन प्राप्त करने पर धन से संतुष्ट होता हूं. मैं जिन स्तोत्रों का स्मरण करता हूं, उन में इंद्र की महिमा की कोई सीमा नहीं होती. (१३)

वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा. ईशानो अप्रतिष्कुतः (१४)

हे इंद्र! तुम कृषियों को संपन्न करने वाली शक्ति से जलों की वर्षा करते हो. ईशान नाम वाले इंद्र का तिरस्कार कोई नहीं कर सकता. (१४)

य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति. इन्द्रं पञ्च क्षितीनाम् (१५)

इंद्र पांच भूमियों, मनुष्यों तथा ऐश्वर्यों के भी स्वामी हैं. (१५)

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः. अस्माकमस्तु केवलः (१६)

इंद्र का ध्यान यदि दूसरे स्तोताओं की ओर हो, तब भी हम इंद्र को बुलाते हैं. वे इंद्र हमारे ही हैं. (१६)

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्. वर्षिष्ठमूतये भर (१७)

हे इंद्र! तुम सदा प्रसन्नता देने वाले धन तथा फलों की वर्षा करने वाले बल को हमारी रक्षा करने के लिए धारण करो. (१७)

नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै. त्वोतासो न्यर्वता (१८)

हे इंद्र! हम तुम्हारे द्वारा रक्षित हो कर घोड़ों के स्वामी बनें तथा वृत्र के समान शक्ति वाले शत्रुओं को भी नष्ट कर डालें. (१८)

इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि. जयेम सं युधि स्पृधः (१९)

हे इंद्र! हम तुम्हारे द्वारा रक्षित हैं. हम तुम्हारे विकराल बल को धारण करते हुए अपने शत्रुओं को नष्ट कर डालें. (१९)

वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम्. सासह्याम पृतन्यतः (२०)

हे इंद्र! हमारे वीरों की कोई हिंसा न कर सके. हम अपने वीरों को साथ ले कर उन शत्रुओं को भी वश में कर लें जो सेना साथ ले कर हम पर आक्रमण करते हैं. (२०)

सूक्त इकहत्तरवां देवता—इंद्र

महां इन्द्र परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे. द्यौर्न प्रथिना शवः (१)

श्रेष्ठ और महान इंद्र महिमा वाले हैं. उन का पराक्रम आकाश के समान विशाल हो. (१)

समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ. विप्रासो वा धियायवः (२)

जो मनुष्य युद्ध की कामना करते हैं, वे अपने पुत्रों के साथ भी युद्ध करने लगते हैं. (२)

यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते. उर्वीरापो न काकुदः (३)

सोमरस पीने वाले इंद्र की कोख ककुद अर्थात ठाट वाले बैल तथा अधिक जल को धारण करने वाले सागर के समान बढ़ जाती है. (३)

एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही. पक्वा शाखा न दाशुषे (४)

इंद्र को गौ प्रदान करने वाली धरती हवि देने वाले यजमान के लिए उस वृक्ष की शाखा के समान हो जाती है, जिस पर पके हुए फल लगे होते हैं. (४)

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते. सद्यश्चित् सन्ति दाशुषे (५)

हे इंद्र! जो यजमान तुम्हें हवि देता है, उस के निमित्त तुम्हारे रक्षा साधन सदा प्रस्तुत रहते हैं. (५)

एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या. इन्द्राय सोमपीतये (६)

इंद्र जब सोमरस पीते हैं, उस समय स्तोम, उक्थ और शस्त्र नाम वाले मंत्र उन के लिए प्रसन्न करने वाले होते हैं. (६)

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः. महां अभिष्टिरोजसा (७)

हे इंद्र! यहां अर्थात हमारे यज्ञ में आओ. सोमयागों में सोमरस पीने के कारण

उत्पन्न तुम्हारा हर्षपूर्ण ओज हमारे लिए अभीष्ट और महान है. (७)

एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने. चक्रिं विश्वानि चक्रये (८)

हे अध्वर्युजनो! तुम उक्थ मंत्र बोलते हुए सोमरस को चमसों के द्वारा मिलाओ. यह सोम निचुड़ जाने पर इंद्र को प्रसन्न करता है. (८)

मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभि स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे. सचैषु सवनेष्वा (९)

हे सुंदर ठोड़ी वाले इंद्र! तुम सोमयागों में हर्षवर्धक सोमरस को पी कर हर्ष प्राप्त करो. (९)

असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रतित्वामुदहासत. अजोषा वृषभं पतिम् (१०)

जिस प्रकार कामना करने वाली स्त्रियां उस पति के पास जाती हैं जो उन में गर्भाधान कर सकता है, उसी प्रकार हमारी स्तुतियां तुम्हें प्राप्त होती हैं. (१०)

सं चोदय चित्रमर्वाग् राध इन्द्र वरेण्यम्. असदित् ते विभु प्रभु (११)

हे इंद्र! हमारी ओर उस धन को आने की प्रेरणा दो जो वरण करने योग्य, सुंदर और सत्य को धारण करने वाला हो. (११)

अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः. तुविद्युम्न यशस्वतः (१२)

हे इंद्र! तुम हमें महान, यशस्वी और ऐश्वर्य वाला होने की प्रेरणा दो. (१२)

सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्. विश्वायुर्धेह्यक्षितम् (१३)

हे इंद्र! हमें वह यज्ञ प्रदान करो जो गायों से युक्त, हवियों से संपन्न तथा पूर्ण आयु को देने वाला हो. (१३)

अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम्. इन्द्र ता रथिनीरिषः (१४)

हे इंद्र! सहस्रों मनुष्यों द्वारा सेवन करने वाले धन तथा रथ वाली सेनाओं को हमें प्रदान करो. (१४)

वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम्. होम गन्तारमूतये (१५)

हम धन के स्वामी, वसुओं के ईश्वर, ऋग्वेद के द्वारा प्रशंसित इंद्र की साधनों से पूजा करते हैं. (१५)

सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत एदरिः. इन्द्राय शूषमर्चति (१६)

महान इंद्र के लिए सोमयाग में हर बार सोमरस निचोड़े जाने पर शत्रु भी इंद्र के बल की प्रशंसा करते हैं. (१६)

सूक्त बहत्तरवां देवता—इंद्र

विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक् स्वः
सनिष्यवः पृथक्. तं त्वा नावं न पर्षणिं शूरस्य धुरि धीमहि.
इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयव स्तोमेभिरिन्द्रमायवः (१)

हे इंद्र! फलों की वर्षा की याचना करने वाले, भांतिभांति के स्वर्गों की कामना करने वाले तथा प्रातः मध्याह्न और सायं सवनों में तुम्हारी ही प्रार्थना करते हैं. जिस प्रकार नौका अन्न के पूलों से भरी होती है, उसी प्रकार हम बल धारण के लिए नियुक्त करते हैं. हम इंद्र को प्रसन्न करने की इच्छा से अपने स्तोत्रों का उच्चारण करते हैं. (१)

वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः
सक्षन्त इन्द्र निःसृजः. यद् गव्यन्ता द्वा जना स्व१र्यन्ता समूहसि.
आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् (२)

हे इंद्र! अन्न की कामना करने वाले दंपती गोदान के अवसर पर तुम्हारा ध्यान करते हैं तथा तुम से फल देने की प्रार्थना करते हैं. तुम स्वर्ग में जाने वाले व्यक्तियों को जानते हो. तुम्हारा वर्षा करने में सहायक वज्र तुम्हारे हाथ में प्रकट होता है. (२)

उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्य१र्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः
स्वर्षाता हवीमभिः. यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि.
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः (३)

हम स्वर्ग प्राप्ति की कामना से सूर्य को प्रकट करने वाली उषा को हवि प्रदान करते हैं. हे वर्षणशील इंद्र! तुम युद्ध के इच्छुक शत्रुओं का संहार करने के लिए अपना वज्र हाथ में लेते हो. मैं ने जिन नवीन स्तोत्रों की रचना की है, तुम उन्हें सुनो. (३)

सूक्त तिहत्तरवां देवता—इंद्र

तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि.
त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि (१)

हे वीर इंद्र! यज्ञ के सभी सवन तुम्हारे निमित्त हों. तुम्हारे निमित्त ही मैं उन मंत्रों का पाठ करता हूं. तुम सब के पोषक एवं आह्वान के योग्य हो. (१)

नू चिन्नु तोन्यमानस्य दस्मोदश्नुवन्ति महिमानमुग्र.
न वीर्यमिन्द्र ते न राधः (२)

हे इंद्र! तुम उग्र हो. तुम्हारा सुंदर रूप, शक्ति, धन और महिमा को दूसरा कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता. (२)

प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्.
विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः (३)

हे यजन करने वालो! तुम अपनी हवियों के द्वारा इंद्र को प्रसन्न करो. इंद्र मनुष्यों को मन चाहे फल प्रदान करते हैं. हे इंद्र! तुम मेरे हवि रूप अन्न का सेवन करो. (३)

यदा वज्रं हिरण्यमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः.
आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवसस्पतिः (४)

इंद्र के हरे रंग के घोड़े इंद्र के स्वर्णिम वज्र को एवं रथ बंधी रस्सियों के सहारे रथ को खींचते हैं. उस अवसर पर अत्यधिक तेज वाले इंद्र उस रथ पर बैठते हैं. (४)

सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या३ स्वा सचां इन्द्रः श्मश्रूणि हरिताभि प्रुष्णुते.
अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिद्धूनोति वातो यथा वनम् (५)

सोमरस के निचोड़े जाने पर इंद्र हमारे यज्ञ मंडप में आते हैं. वायु जिस प्रकार वन को कंपित करता है, इंद्र उसी प्रकार मेघ को कंपित कर देते हैं. (५)

यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान.
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः (६)

इंद्र दुष्कर्म करने वालों का वध करते हैं एवं विकृत वाणी वालों की वाणी को मधुरता प्रदान करते हैं. पिता जिस प्रकार बल की वृद्धि करता है, इंद्र उसी प्रकार अपने भक्तों का बल बढ़ाते हैं. ऐसे पराक्रमी इंद्र की हम स्तुति करते हैं. (६)

सूक्त चौहत्तरवां — देवता—इंद्र

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ता इव स्मसि.
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ (१)

हे सोमरस का पान करने वाले इंद्र! हमारे हजारों की संख्या वाले घोड़े, गायों और शुभ्रियों के अमृत होने की बात कहो; क्योंकि तुम अमृतत्व को प्राप्त कर चुके हो. (१)

शिप्रिन् वाजानां पते शचीवस्तव दंसना.
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ (२)

हे धन के स्वामी इंद्र! तुम शत्रुओं को दंड देने में समर्थ हो. तुम अपनी उसी सामर्थ्य को हमारे सहस्रों अश्वों, गायों और शुभ्रियों को प्रदान करो. (२)

नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने.
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ (३)

हे इंद्र! मुझे मेरे दोनों नेत्रों के द्वारा निद्रा प्रदान करो. हमारी हजारों गायों आदि को भी निद्रा प्रदान करो. (३)

ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः.
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ (४)

हे अधिक धन के स्वामी इंद्र! तुम हमारी हजारों गायों, घोड़ों आदि को धन से भरो. हम जागृत रहें और हमारे शत्रु निद्रा के वश में हो जाएं. (४)

समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया.
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ (५)

हे इंद्र! तुम पाप वृत्ति वाले राक्षसों का वध कर दो. तुम हमारी गायों आदि को दूसरों का नाश करने की शक्ति प्रदान करो. (५)

पताति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि.
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ (६)

वायु बवंडर के द्वारा जंगल से दूर प्रस्थान करती हैं. हे इंद्र! हमारे गौ आदि पशुओं के श्रेष्ठ होने की बात कहो. (६)

सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्व म्.
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्रेषु तुवीमघ (७)

हे इंद्र! कृकदाश्व को नष्ट करो तथा परिकोश को हटाओ. हमारे अश्व, गौ आदि प्राणियों से तुम परिकोश को दूर करो. (७)

सूक्त पचहतरवां — देवता—इंद्र

वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः
सक्षन्त इन्द्र निःसृज. यद् गव्यन्ता द्वा जना स्व१र्यन्ता समूहसि.
आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् (१)

हे इंद्र! गोदान के अवसर पर अन्न की कामना करने वाले पतिपत्नी तुम्हारा ध्यान करते हुए तुम्हें फल देने के लिए आकर्षित करते हैं. तुम स्वर्ग को गमन करने वाले दोनों पति और पत्नी को जानते हो. उस समय तुम अपने वर्षणशील और सहायक वज्र को प्रकट करते हो. (१)

विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीरवातिरः
सासहानो अवातिरः. शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयज्युं शवसस्पते.

महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः (२)

इंद्र शरद ऋतु की वस्तुओं में प्रकट हो कर शत्रुओं को बारबार व्यथित करते हैं. इंद्र के बल को मनुष्य जानते हैं. हे इंद्र! जो मृत्युलोक वासी तुम्हारा पूजन नहीं करते, उन पर तुम शासन करो तथा इन जलों और पृथ्वी की वृद्धि करो. (२)

आदित् ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन्मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ
सखीयतो यदाविथ. चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे.
ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत. (३)

हे धन समर्थ जलो! हम तुम्हारे वीर्य का वर्णन करते हैं. इंद्र के उन्मत्त होने पर तुम ही उन की रक्षा करते हो. तुम सेनाओं में सेवा योग्य कर्म के करने वाले हो. तुम नदियों के आश्रय में रहो तथा अन्न प्रदान करते हुए सब के स्नान के साधन बनो. (३)

सूक्त छियत्तरवां देवता—इंद्र

वने न वा यो न्यधायि चाकञ्छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः.
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् (१)

हे अश्विनीकुमारो! तुम देवताओं का भरणपोषण करने वाले हो. यह निर्दोष तथा इंद्र की कामना करने वाला स्तोत्र हैं. इंद्र इस की कामना बहुत दिनों से करते हैं. वे इंद्र मनुष्यों के श्रेष्ठ सोमरस को प्राप्त करने वाले हैं. यह स्तोत्र अर्थात मंत्र समूह उन्हीं की ओर अग्रसर होता है. (१)

प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम्.
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नृन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् (२)

हम वीरों में श्रेष्ठ इंद्र के विश्वास पात्र सेवक रहें तथा दूसरी उषा को भी पार करें. त्रिलोक ऋषि ने हमें सैकड़ों उषाएं प्राप्त कराई. कुत्स ऋषि ने संसार रूपी रथ को अन्न से युक्त किया. (२)

कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद् दुरो गिरो अभ्यु१ग्रो वि धाव.
कद् वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः (३)

हे इंद्र! हमें वह स्तोम अर्थात मंत्र समूह कौन देगा जो तुम्हें प्रसन्न कर सके ? कौन सा अश्व तुम्हें मेरे पास लाएगा ? तुम मेरा स्तोम सुनने के लिए आओ. तुम उपमेय हो, मैं तुम्हें हवियों द्वारा प्रसन्न करने में सफलता प्राप्त करूंगा. (३)

कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नृन् कया धिया करसे कन्न आगन्.
मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन्मनीषाः (४)

हे इंद्र! तुम किस बुद्धि से अपने आश्रितों को यशस्वी बनाते हो? तुम महान कीर्ति वाले हो, इसलिए सच्चे साथ के समय इस यज्ञ को अन्न की वृद्धि से संपन्न करो. (४)

प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव ग्मन्.
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नै: (५)

हे इंद्र! जो रश्मियां इस यजमान की इच्छा पूर्ति के लिए माता के समान मिलती हैं, उन रश्मियों में हमें अर्थ के समान पार करो. पवन देव इसे अन्न प्रदान करें. हे इंद्र! तुम अपनी प्राचीन स्तुतियां इस की बुद्धि में लाओ. (५)

मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन.
वराय ते घृतवन्त: सुतास: स्वाद्मन् भवन्तु पीतये मधूनि (६)

हे इंद्र! घृत मिला हुआ सोमरस तुम्हारे लिए उत्तम स्वाद वाला प्रतीत हो. पृथ्वी और आकाश अपने में समर्थ एवं उत्तम काव्य रचना के लिए उत्तम बुद्धि वाला हो. (६)

आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधा:.
स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्य: पौंस्यैश्च (७)

इंद्र के लिए यह पात्र मधुर रस से पूर्ण किया गया है. वे इंद्र अपने बल से ही पृथ्वी पर प्रबुद्ध होते हैं तथा सत्य के द्वारा उन्हीं की पूजा होती है. (७)

व्यानळिन्द्र: पृतना: स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वी:.
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे (८)

इंद्र का बल श्रेष्ठ है. इंद्र सेनाओं में व्याप्त होते हैं. अनगिनत वीर इन के मैत्रीभाव की कामना करते हैं. हे इंद्र! तुम जिस सुमति के द्वारा प्रेरणा देते हो, रथ के समान उसी सुमति से तुम हमारे वीरों में व्याप्त होओ. (८)

सूक्त सतहत्तरवां — देवता—इंद्र

आ सत्यो यातु मघवां ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप न:.
तस्मा इदन्ध: सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं करते गृणान: (१)

इंद्र के घोड़े हमारी ओर आएं. धन के स्वामी, सत्य के प्रति निष्ठा रखने वाले एवं सोमपायी इंद्र यहां आगमन करें. स्तुति करने वाला विद्वान इसी कारण स्नान आदि कर्म कर रहा है तथा हम सोम का संस्कार कर रहे हैं. (१)

अव स्य शूराध्वनो नान्तेऽस्मिन् नो अद्य सवने मन्दध्यै.
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म (२)

हे वीर इंद्र! हमारे इस यज्ञ को प्राप्त करो तथा अपना मार्ग हमारे समीप बनाओ. ये विद्वान उशना अर्थात शुक्राचार्य के समान इंद्र के हेतु उक्थ अर्थात मंत्रों के समूह का उच्चारण करते हैं. (२)

कविर्न निण्यं विदथानि साधन् वृषा यत् सेकं विपिपानो अर्चात्.
दिव इत्था जीजनत् सप्त कारूनह्ना चिच्चक्रुर्वयुना गृणन्तः (३)

इंद्र फलों के वर्षक अर्थात सब को यज्ञ का फल देने वाले हैं. ये वर्षा के जल के द्वारा पृथ्वी को शस्यों अर्थात फसलों से संपन्न बनाते हुए आगमन करें. ऋत्विज यज्ञ कार्य कर रहा है. सात स्तोता शोभन स्तोत्रों द्वारा इंद्र की स्तुति कर रहे हैं. (३)

स्व१र्यद् वेदि सुदृशीकमर्कैर्महि ज्योति रुरुचुर्यद्ध वस्तोः.
अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ (४)

इन मंत्रों के द्वारा दर्शनीय स्वर्ग का ज्ञान होता है ये मंत्र सूर्य को प्रकाशित करते हैं तथा इन मंत्रों के द्वारा सूर्य रूपी इंद्र दूर से भी अंधकार को हटा देते हैं. अतिशय शक्तिशाली इंद्र कामनाओं की वर्षा करते हैं. (४)

ववक्ष इन्द्रो अमितमृजीष्यु१भे आ पप्रौ रोदसी महित्वा.
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव (५)

सोमरस पीने वाले इंद्र असीमित धन हमारी ओर भेजते हैं. इंद्र सभी लोकों में व्याप्त होने के कारण महिमा वाले हैं. उन्हीं इंद्र की महिमा पृथ्वी और आकाश को पूर्ण करती है. (५)

विश्वानि शुक्रो नर्याणि विद्वानपो रिरेच सखिभिर्निकामैः.
अश्मानं चिद् ये बिभिदुर्वचोभिर्व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः (६)

स्वेच्छा से चलने वाले मेघों के द्वारा इंद्रदेव ने हितकारी जलों की वृद्धि की है. ये जल अपने शब्द से पाषाणों को भी तोड़ देते हैं तथा इच्छा होने पर गोचर भूमि पर छा जाते हैं. (६)

अपो वृत्रं वव्रिवासं पराहन् प्रावत् ते वज्रं पृथिवी सचेताः.
प्रार्णांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छवसा शूर धृष्णो (७)

180

हे इंद्र! यह पृथ्वी सावधानी से तुम्हारे वज्र की रक्षा करती है. यही समुद्र की भी रक्षिका है. रोकने वाले वृत्र को जलों ने छिन्नभिन्न कर दिया है. हे इंद्र! तुम अपने बल के द्वारा ही पृथ्वी के स्वामी हो. (७)

अपो यदद्रिं पुरुहूत दर्दराविर्भुवत् सरमा पूर्व्यं ते.
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः (८)

हे इंद्र! तुम अनेक यजमानों के द्वारा बुलाए जा चुके हो. तुम जिस जल को हमें प्रदान करते हो, वह जल तुरंत प्रकट हो कर बहने लगता है. तुम अंगिरसों द्वारा स्तुति

किए गए मेघों को चीरते हुए हमें अपरिमित अन्न प्रदान करते हो. (८)

सूक्त अठहत्तरवां देवता—इंद्र

तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने. शं यद् गवे न शाकिने (१)

हे स्तोता! सोमरस का संस्कार हो जाने पर इंद्रदेव की स्तुति करो, जिस से वे हम सोमरस देने वालों के लिए गौ के समान कल्याणकारी हों. (१)

न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः. यत् सीमुप श्रवद् गिरः (२)

ये इंद्र यदि हमारी स्तुतियों को सुन लेते हैं तो गौ से युक्त अन्न देने में विलंब नहीं करते. (२)

कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत. शचीभिरप नो वेरत्. (३)

हे इंद्र! तुम वृत्र राक्षस का वध करने वाले हो तथा सभी को अपरिमित अन्न देते हो. तुम गौ से सुशोभित स्थान पर आ कर हम को बल से पूर्ण बनाओ. (३)

सूक्त उनासीवां देवता—इंद्र

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा.
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि (१)

हे इंद्र! जिस प्रकार पिता अपने पुत्र को इच्छित वस्तु प्रदान करता है, उसी प्रकार तुम भी हमें हमारी मनचाही वस्तुएं प्रदान करो. हे पुरुहूत! इस संसार यात्रा में तुम हमें इच्छित पदार्थ प्रदान करो, जिस से हम दीर्घजीवी हो कर इस लोक में सुखों का अनुभव करें. (१)

मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३ माशिवासो अव क्रमुः.
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि (२)

हे वीर इंद्र! हम पर आधियों और व्याधियों का आक्रमण न हो. अमंगलमय वाणियां तथा पाप हम पर आक्रमण न करें. हम तुम्हारी कृपा प्राप्त कर के सेवकों वाले बनें तथा सदा सफलतापूर्वक यज्ञ करते रहें. (२)

सूक्त अस्सीवां देवता—इंद्र

इन्द्रं ज्येष्ठं न आ भरं ओजिष्ठं पपुरि श्रवः.
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः (१)

हे इंद्र! तुम अपने महान और ओजस्वी धन से हमें संपन्न बनाओ. हे वज्रधारी इंद्र! तुम ने अपने जिस धन से आकाश तथा पृथ्वी को पूर्ण किया है, वही धन हमें प्रदान करो. (१)

त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन् देवेषु हूमहे.
विश्वा सु नो विथुरा पिब्दना वसोऽमित्रान् सुषहान् कृधि (२)

हे इंद्र! तुम उग्र हो. तुम हमारे भय के सभी कारणों को दूर करो तथा हमें शत्रुओं को वश में करने वाले बल से संपन्न बनाओ. हम अपनी रक्षा के हेतु तुम्हारा आह्वान करते हैं. (२)

सूक्त इक्यासीवां

देवता—इंद्र

यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमिरुत स्युः.
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी (१)

हे इंद्र! हे प्रभु! सैकड़ों आकाश और पृथ्वी भी यदि तुम्हारी समानता करना चाहें, तब भी तुम्हारे समान महान नहीं हो सकते. (१)

आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा.
अस्मां अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः (२)

हे वज्रधारी इंद्र! हमारे गोचर स्थान में अपने रक्षा साधनों के द्वारा हमारी रक्षा करो तथा अपनी महिमा से हमारी वृद्धि करो. (२)

सूक्त बयासीवां

देवता—इंद्र

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय.
स्तोतारमिद् दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय (१)

हे इंद्र! मैं तुम्हारे समान प्रभुत्व प्राप्त करूं तथा स्तुति करने वालों को धन देने वाला बनूं. पाप कर्म करने वाले धनी मुझे व्यथित न करें. (१)

शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे.
नहि त्वदन्यन्मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन (२)

हे इंद्र! मैं जहां से चाहूं, वहीं से धन प्राप्त कर सकूं. जो मुझ से उत्कृष्ट होना चाहे, उसे मैं स्वर्ण का दंड दूं. हे इंद्र! मुझे इस प्रकार की शक्ति देने वाला तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कौन रक्षक हो सकता है? (२)

सूक्त तिरासीवां

देवता—इंद्र

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत्.
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः (१)

हे इंद्र! मुझे मंगलकारी घर दो तथा हिंसा करने वाली शक्तियों को यहां से दूर भगाओ. (१)

ये गव्यता मनसा शत्रुमादभुरभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया.

अध स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्तमो भव (२)

हे इंद्र! तुम्हारे जो बल शत्रुओं को संतप्त करते और मारते हैं, तुम अपने उन्हीं बलों से हमारे शरीरों की रक्षा करो. (२)

सूक्त चौरासीवां देवता—इंद्र

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः. अण्वीभिस्तना पूतासः (१)

हे इंद्र! यहां आओ. यह तैयार किया गया सोमरस तुम्हारे लिए ही है. (१)

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः. उप ब्रह्माणि वाघतः (२)

हे इंद्र! ये विद्वान ब्राह्मण तुम्हें अपने से श्रेष्ठ स्वीकार करते हैं. इन मंत्रों से संपन्न ब्राह्मणों और सोमरस वाले ऋत्विजों के समीप आओ. (२)

इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः. सुते दधिष्व नश्चनः (३)

हे इंद्र! तुम अश्वों के स्वामी हो, इसलिए हमारे स्तोत्रों को सुनने के लिए हमारे समीप शीघ्र आओ तथा हमारे तैयार सोमरस के पास अपने अश्वों को रोको. (३)

सूक्त पच्चासीवां देवता—इंद्र

मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत.
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत (१)

हे स्तोताओ! तुम अन्य किसी देवता का आश्रय मत लो. तुम किसी अन्य देवता की स्तुति मत करो. हे तैयार किए गए सोमरस वाले होताओ! तुम इंद्र की स्तुति करते हुए बारबार उक्थों का गान करो. (१)

अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गा न चर्षणीसहम्.
विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् (२)

इंद्र सांड़ के समान घूमने वाले, संघर्षशील, अवकक्षी, शत्रुओं के द्वेषी, अजर, अतिशय महिमाशाली, सेवा के योग्य तथा दोनों लोकों के रक्षक हैं. (२)

यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये.
अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेहा विश्वा च वर्धनम् (३)

हे इंद्र! तुम्हारा संरक्षण पाने के लिए बहुत से पुरुष तुम्हें बुलाते हैं. हमारा यह स्तोत्र भी तुम्हारी वृद्धि करने वाला है. (३)

वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम्.

अध स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्तमो भव (२)

हे इंद्र! तुम्हारे जो बल शत्रुओं को संतप्त करते और मारते हैं, तुम अपने उन्हीं बलों से हमारे शरीरों की रक्षा करो. (२)

सूक्त चौरासीवां — देवता—इंद्र

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः. अण्वीभिस्तना पूतासः (१)

हे इंद्र! यहां आओ. यह तैयार किया गया सोमरस तुम्हारे लिए ही है. (१)

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः. उप ब्रह्माणि वाघतः (२)

हे इंद्र! ये विद्वान ब्राह्मण तुम्हें अपने से श्रेष्ठ स्वीकार करते हैं. इन मंत्रों से संपन्न ब्राह्मणों और सोमरस वाले ऋत्विजों के समीप आओ. (२)

इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः. सुते दधिष्व नश्चनः (३)

हे इंद्र! तुम अश्वों के स्वामी हो, इसलिए हमारे स्तोत्रों को सुनने के लिए हमारे समीप शीघ्र आओ तथा हमारे तैयार सोमरस के पास अपने अश्वों को रोको. (३)

सूक्त पच्चासीवां — देवता—इंद्र

मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत.
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत (१)

हे स्तोताओ! तुम अन्य किसी देवता का आश्रय मत लो. तुम किसी अन्य देवता की स्तुति मत करो. हे तैयार किए गए सोमरस वाले होताओ! तुम इंद्र की स्तुति करते हुए बारबार उक्थों का गान करो. (१)

अवक्रक्षिणं वृक्षभं यथाजुरं गा न चर्षणीसहम्.
विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् (२)

इंद्र सांड़ के समान घूमने वाले, संघर्षशील, अवकक्षी, शत्रुओं के द्वेषी, अजर, अतिशय महिमाशाली, सेवा के योग्य तथा दोनों लोकों के रक्षक हैं. (२)

यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये.
अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेहा विश्वा च वर्धनम् (३)

हे इंद्र! तुम्हारा संरक्षण पाने के लिए बहुत से पुरुष तुम्हें बुलाते हैं. हमारा यह स्तोत्र भी तुम्हारी वृद्धि करने वाला है. (३)

वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम्.

उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये (४)

हे इंद्र! तुम यहां शीघ्र आ कर विशाल रूप धारण करो. इन विद्वान मनुष्यों और यजमानों की उंगलियां शीघ्रताकारी हैं. तुम हमारे पालन के लिए अन्न हमारे समीप लाओ तथा हमें प्रदान करो. (४)

सूक्त छियासीवां — देवता—इंद्र

ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू.
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वां उप याहि सोमम् (१)

हे इंद्र! मैं कर्मवान मंत्रों के द्वारा तुम्हारे रथ में अश्वों को जोड़ता हूं. हे विद्वान इंद्र! इस सुखदायक रथ पर चढ़ कर तुम हमारे इस सोमरस के पास आओ. (१)

सूक्त सतासीवां — देवता—इंद्र, बृहस्पति

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम्.
गौराद् वेदीयां अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद्याति सुतसोममिच्छन् (१)

हे अध्वर्युजनो! इंद्र पृथ्वी पर वर्षा करने वाले हैं. उन इंद्र के लिए सोमरस के दूध रूप अंश की आहुति दो. ये इंद्र सोमरस की कामना करते हुए यज्ञ में आते हैं. (१)

यद् दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि.
उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान् (२)

हे इंद्र! तुम आकाश में उत्तम अन्न धारण करते हो तथा यज्ञ आदि के अवसर पर सोमरस का पान करते हो. तुम सोमरस की कामना करते हुए इस यज्ञ की रक्षा करो. (२)

जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच.
एन्द्र पप्राथोर्व१न्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ (३)

हे इंद्र! तुम प्रकट होते ही सोमरस की ओर जाते हो. तुम ने संग्राम में विजय प्राप्त कर के देवताओं को धन दिया. तुम विशाल अंतरिक्ष में गमन करते हो. यह अंतरिक्ष तुम्हारी कामना का बखान करता है. (३)

यद् योधया महतो मन्यमानान् साक्षाम तान् बाहुभिः शाशदानान्.
यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम (४)

हे इंद्रदेव! अहंकार से भरे हुए तथा अपने आपको बड़ा मानते हुए शत्रुओं के साथ जब हम युद्ध करें, तब हम अपनी भुजाओं से ही हिंसक शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ हों. आप यदि कभी अन्न अथवा यश पाने के लिए स्वयं युद्ध करें, तब

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्.
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत् तमांसि (४)

बृहस्पति महान ज्योतिष चक्र से परम व्योम में आविर्भूत अर्थात प्रकट होते हैं. वे बृहस्पति सप्त रश्मि वाले बन कर अंधकार को मिटा देते हैं. (४)

स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण.
बृहस्पतिरुस्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद् वावशतीरुदाजत् (५)

ऋचा वाले गणों के द्वारा वे बृहस्पति मेघों को चीरते हैं. वे हव्य से प्रेरित हो कर इच्छा करने वाली गायों को प्राप्त होते हैं और बारबार शब्द करते हैं. (५)

एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः.
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम् (६)

हे बृहस्पति! हम सुंदर और वीर संतानों से संपन्न धन के स्वामी बनें. हम उन बृहस्पति की हवियों और नमस्कारों के द्वारा पूजा करते हैं. (६)

सूक्त उनासीवां 187 देवता—इंद्र

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन् भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै.
वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम् (१)

हे ब्राह्मणो! तुम इंद्र के लिए स्तोमों का गान करो. तुम मंत्र रूप वाणी के पार जाओ. हे स्तुति करने वालो! तुम इंद्र को सोमरस से युक्त बनाओ. (१)

दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम्.
कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम् (२)

हे स्तोताओ! वाणी तुम्हारी मित्र है. उस का दोहन करो तथा जो इंद्र शत्रुओं को क्षीण करते हैं, उन्हें बुलाओ. जो सोमरस धन से युक्त कोष के समान शुद्ध है, उसे इंद्र के लिए तैयार करो. (२)

किमङ्ग त्वा मघवन् भोजमाहुः शिशीहि मा शिशयं त्वा शृणोमि.
अप्नस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः (३)

हे इंद्र! तुम भोक्ता हो. तुम शत्रुओं को क्षीण कर देते हो. तुम मुझे क्षीण मत करना. तुम मुझे धन प्राप्त करने वाला सौभाग्य दो. मेरी बुद्धि कर्मों की ओर अग्रसर हो. (३)

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके.
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः (४)

हे इंद्र! मेरे पुरुष तुम्हीं को बुलाते हैं. जो वीर तुम्हारी मित्रता की कामना करते

हैं तथा हवि वाला अनुष्ठान करते हैं, वे सोमरस का संस्कार भी करते हैं. (४)

धनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमां आसुनोति प्रयस्वान्.
तस्मै शत्रून्सुतुकान् प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान् युवति हन्ति वृत्रम् (५)

हवि धारण करने वाला जो पुरुष इंद्र के निमित्त सोमरस का संस्कार नहीं करता, उस का धन सरकता जाता है. इंद्र उसे अपने शत्रुओं में सम्मिलित कर के उस पर वज्र का प्रहार करते हैं. (५)

यस्मिन् वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे.
आराच्चित् सन् भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम् (६)

जो इंद्र हमारी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं, जिन इंद्र की हम प्रशंसा करते हैं, उन इंद्र के समीप आते ही शत्रु भयभीत हो जाते हैं. संसार के सभी प्राणी इंद्र को नमस्कार करते हैं. (६)

आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन.
अस्मे धेहि यवमद् गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम् (७)

हे इंद्र! तुम अपने उग्र वज्र से पास के अथवा दूर के शत्रु को व्यथित करो. तुम हम को अन्न वाली बुद्धि प्रदान करते हुए अन्न तथा पशुओं से पूर्ण धन में प्रतिष्ठित करो. (७)

प्र यमन्तर्वृष सवासो अग्मन् तीव्राः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम्.
नाह दामानं मघवा नि यंसन् नि सुन्वते वहति भूरि वामम् (८)

जिन इंद्र के समीप तीव्र स्वाद वाला सोमरस गमन करता है, वे इंद्र धन की बाधक रस्सी को रोकते हैं तथा सोम का संस्कार करने वाले स्तोता को असीमित धन प्रदान करते हैं. (८)

उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले.
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित् तं रायः सृजति स्वधाभिः (९)

अक्षक्रीड़ा में कुशल मनुष्य अपने विरोधी को जुए में हरा देता है, क्योंकि वह कृत नाम के पांसे को ही खोजता है. वह खिलाड़ी इंद्र की कामना करता हुआ उस जीते हुए धन को व्यर्थ होने से रोकता है और इंद्र के कार्य में लगता है. इंद्र उसे स्वधाओं वाला बनाते हैं. (९)

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वे.
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टा सो वृजनीभिर्जयेम (१०)

हैं तथा हवि वाला अनुष्ठान करते हैं, वे सोमरस का संस्कार भी करते हैं. (४)

धनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमां आसुनोति प्रयस्वान्.
तस्मै शत्रून्सुतुकान् प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान् युवति हन्ति वृत्रम् (५)

हवि धारण करने वाला जो पुरुष इंद्र के निमित्त सोमरस का संस्कार नहीं करता, उस का धन सरकता जाता है. इंद्र उसे अपने शत्रुओं में सम्मिलित कर के उस पर वज्र का प्रहार करते हैं. (५)

यस्मिन् वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे.
आराच्चित् सन् भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्रा जन्या नमन्ताम् (६)

जो इंद्र हमारी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले हैं, जिन इंद्र की हम प्रशंसा करते हैं, उन इंद्र के समीप आते ही शत्रु भयभीत हो जाते हैं. संसार के सभी प्राणी इंद्र को नमस्कार करते हैं. (६)

आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन.
अस्मे धेहि यवमद् गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम् (७)

हे इंद्र! तुम अपने उग्र वज्र से पास के अथवा दूर के शत्रु को व्यथित करो. तुम हम को अन्न वाली बुद्धि प्रदान करते हुए अन्न तथा पशुओं से पूर्ण धन में प्रतिष्ठित करो. (७)

प्र यमन्तर्वृष सवासो अग्मन् तीवाः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम्.
नाह दामानं मघवा नि यंसन् नि सुन्वते वहति भूरि वामम् (८)

जिन इंद्र के समीप तीव्र स्वाद वाला सोमरस गमन करता है, वे इंद्र धन की बाधक रस्सी को रोकते हैं तथा सोम का संस्कार करने वाले स्तोता को असीमित धन प्रदान करते हैं. (८)

उत प्रहामतिदीवा जयति कृतमिव श्वघ्नी वि चिनोति काले.
यो देवकामो न धनं रुणद्धि समित् तं रायः सृजति स्वधाभिः (९)

अक्षक्रीड़ा में कुशल मनुष्य अपने विरोधी को जुए में हरा देता है, क्योंकि वह कृत नाम के पांसे को ही खोजता है. वह खिलाड़ी इंद्र की कामना करता हुआ उस जीते हुए धन को व्यर्थ होने से रोकता है और इंद्र के कार्य में लगता है. इंद्र उसे स्वधाओं वाला बनाते हैं. (९)

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरुहूत विश्वे.
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्ट सो वृजनीभिर्जयेम (१०)

सत्य कथन द्वारा प्राण के वीर्य से उत्पन्न हुए अंगिरा यज्ञशाला में प्रथम अर्थात उत्तम समझे जाते हैं. (२)

हंसैरिव सखिभिर्वावदद्भिरश्मन्मयानि नहना व्यस्यन्.
बृहस्पतिरभिकनिक्रदद् गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वां अगायत् (३)

गर्जन करने वाले मेघों का उद्‌घाटन करते हुए बृहस्पति स्तुति करते हैं. इसी कारण वे विद्वान समझे जाते हैं. (३)

अवो द्वाभ्यां पर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ.
बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुदुस्रा आकर्वि हि तिस्र आवः (४)

पहले दो से, फिर एक से हृदय रूपी गुफा में स्थित वाणियों को बाहर निकालते हुए तथा अंधकार में प्रकाश की कामना करने वाले बृहस्पति प्रकाशों को प्रकट करते हैं. (४)

विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत्.
बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः (५)

बृहस्पति पुर का विनाश कर के पश्चिम दिशा में सोते हैं. वे सागर के भागों का त्याग नहीं करते तथा आकाश में कड़कते हुए उषा, सूर्य तथा सत्य गौ को प्राप्त करते हैं. (५)

इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण.
स्वेदाञ्जिभिराशिरमिच्छमानोऽरोदयत् पणिमा गा अमुष्णात् (६)

इंद्र कामधेनुओं के पालक मेघ को छिन्नभिन्न कर देते हैं. उन्होंने दधि की इच्छा से गायों को चुराने वाले पणियों को व्यथित किया था. (६)

स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिर्गोधायसं वि धनसैरदर्दः.
ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्घर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानट् (७)

इंद्र धन देने वाले तथा धरती को पुष्ट करने वाले मेघों को विदीर्ण करते हैं. ब्रह्मणस्पति आपस में टकराने वाले मेघों के द्वारा धन में व्याप्त होते हैं. (७)

ते सत्येन मनसा गोपतिं गा इयानास इषणयन्त धीभिः.
बृहस्पतिर्मिथोअवद्यपेभिरुदुस्रिया असृजत स्वयुग्भिः (८)

ये मेघ बैलों और गायों के समीप जाने की कामना करते हुए अपनी वृद्धियों के द्वारा उन्हें प्राप्त करते हैं. शब्द का पालन करते हुए बृहस्पति मेघों के द्वारा गायों से संयुक्त होते हैं. (८)

तं वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सधस्थे.
बृहस्पतिं वृषणं शूरसातौ भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम् (९)

सत्य कथन द्वारा प्राण के वीर्य से उत्पन्न हुए अंगिरा यज्ञशाला में प्रथम अर्थात उत्तम समझे जाते हैं. (२)

हंसैरिव सखिभिर्वावदद्भिरश्मन्मयानि नहना व्यस्यन्.
बृहस्पतिरभिकनिक्रदद् गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वां अगायत् (३)

गर्जन करने वाले मेघों का उद्‌घाटन करते हुए बृहस्पति स्तुति करते हैं. इसी कारण वे विद्वान समझे जाते हैं. (३)

अवो द्वाभ्यां पर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ.
बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुदुस्रा आकर्वि हि तिस्र आवः (४)

पहले दो से, फिर एक से हृदय रूपी गुफा में स्थित वाणियों को बाहर निकालते हुए तथा अंधकार में प्रकाश की कामना करने वाले बृहस्पति प्रकाशों को प्रकट करते हैं. (४)

विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत्.
बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः (५)

बृहस्पति पुर का विनाश कर के पश्चिम दिशा में सोते हैं. वे सागर के भागों का त्याग नहीं करते तथा आकाश में कड़कते हुए उषा, सूर्य तथा सत्य गौ को प्राप्त करते हैं. (५)

इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण.
स्वेदाञ्जिभिराशिरमिच्छमानोऽरोदयत् पणिमा गा अमुष्णात् (६)

इंद्र कामधेनुओं के पालक मेघ को छिन्नभिन्न कर देते हैं. उन्होंने दधि की इच्छा से गायों को चुराने वाले पणियों को व्यथित किया था. (६)

स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिर्गोधायसं वि धनसैरदर्दः.
ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्घर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानट् (७)

इंद्र धन देने वाले तथा धरती को पुष्ट करने वाले मेघों को विदीर्ण करते हैं. ब्रह्मणस्पति आपस में टकराने वाले मेघों के द्वारा धन में व्याप्त होते हैं. (७)

ते सत्येन मनसा गोपतिं गा इयानास इषणयन्त धीभिः.
बृहस्पतिर्मिथोअवद्यपेभिरुदुस्त्रिया असृजत स्वयुग्भिः (८)

ये मेघ बैलों और गायों के समीप जाने की कामना करते हुए अपनी बुद्धियों के द्वारा उन्हें प्राप्त करते हैं. शब्द का पालन करते हुए बृहस्पति मेघों के द्वारा गायों से संयुक्त होते हैं. (८)

तं वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सधस्थे.
बृहस्पतिं वृषणं शूरसातौ भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम् (९)

मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे (४)

ऊपर जो वृत्र राक्षस का हनन करने वाला स्वर्ग है, उस में हम इंद्र के साथ गमन करें. हम इक्कीस बार मधु को पी कर इंद्र की मित्रता प्राप्त करें. (४)

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत. अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत (५)

हे स्तोताओ! तुम इंद्र का पूजन श्रेष्ठ रीति से करो. अपने शत्रुओं का नाश करने के लिए तुम इंद्र का पूजन करो. (५)

अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत्.
पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् (६)

जब हमारे मंत्र इंद्र के प्रति गमन करते हैं तो कलश शब्द करता है. उस समय पीले रंग का पदार्थ गमन करता हुआ धनुष की प्रत्यंचा के समान शब्द करता है. (६)

आ यत् पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः.
अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्राय पातवे (७)

हे स्तोताओ! श्वेत वर्ण की जो गाएं हैं, उन में स्थित अविनाशी पदार्थ को ग्रहण करते हुए इंद्र के पीने के लिए सोमरस लाओ. (७).

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत.
वरुण इदिह क्षयत् तमापो अभ्यनूषत वत्सं संशिश्वरीरिव (८)

इस पदार्थ को अग्नि, इंद्र ने तथा विश्वेदेवों ने पी लिया है. हे जलो! संशिष्वरी के पुत्र के समान वरुण की स्तुति करो. (८)

सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः.
अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्म्यं सुषिरामिव (९)

हे वरुण! तुम्हारे पास सात नदियां हैं. जिस प्रकार जल नगर के बाहर निकलता हैं. उसी प्रकार तुम इन सात नदियों से जल प्रवाहित करो. (९)

यो व्यतींरफाणयत् सुयुक्तां उप दाशुषे.
तक्वो नेता तदिद् वपुरुपमा यो अमुच्यत (१०)

हवि दाता के लिए जो नेता उत्तम युक्तियों का प्रयोग करते हैं, उन की उपमा उन का शरीर ही है. तात्पर्य यह है कि कोई अन्य उन के समान नहीं है. (१०)

अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः.
भिनत् कनीन ओदनं पच्यमानं परो गिरा (११)

भार को संभालने वाले इंद्र सभी शत्रुओं को वश में करते हैं. मंत्र से पकते हुए ओदन को कठिन होते हुए भी उन्होंने उस का भेदन किया. (११)

मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे (४)

ऊपर जो वृत्र राक्षस का हनन करने वाला स्वर्ग है, उस में हम इंद्र के साथ गमन करें. हम इक्कीस बार मधु को पी कर इंद्र की मित्रता प्राप्त करें. (४)

अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत. अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत (५)

हे स्तोताओ! तुम इंद्र का पूजन श्रेष्ठ रीति से करो. अपने शत्रुओं का नाश करने के लिए तुम इंद्र का पूजन करो. (५)

अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत्.
पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् (६)

जब हमारे मंत्र इंद्र के प्रति गमन करते हैं तो कलश शब्द करता है. उस समय पीले रंग का पदार्थ गमन करता हुआ धनुष की प्रत्यंचा के समान शब्द करता है. (६)

आ यत् पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः.
अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्राय पातवे (७)

हे स्तोताओ! श्वेत वर्ण की जो गाएं हैं, उन में स्थित अविनाशी पदार्थ को ग्रहण करते हुए इंद्र के पीने के लिए सोमरस लाओ. (७).

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत.
वरुण इदिह क्षयत् तमापो अभ्यनूषत वत्सं संशिश्वरीरिव (८)

इस पदार्थ को अग्नि, इंद्र ने तथा विश्वेदेवों ने पी लिया है. हे जलो! संशिष्वरी के पुत्र के समान वरुण की स्तुति करो. (८)

सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः.
अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्म्यं सुषिरामिव (९)

हे वरुण! तुम्हारे पास सात नदियां हैं. जिस प्रकार जल नगर के बाहर निकलता हैं. उसी प्रकार तुम इन सात नदियों से जल प्रवाहित करो. (९)

यो व्यतींरफाणयत् सुयुक्तां उप दाशुषे.
तक्वो नेता तदिद् वपुरुपमा यो अमुच्यत (१०)

हवि दाता के लिए जो नेता उत्तम युक्तियों का प्रयोग करते हैं, उन की उपमा उन का शरीर ही है. तात्पर्य यह है कि कोई अन्य उन के समान नहीं है. (१०)

अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः.
भिनत् कनीन ओदनं पच्यमानं परो गिरा (११)

भार को संभालने वाले इंद्र सभी शत्रुओं को वश में करते हैं. मंत्र से पकते हुए ओदन को कठिन होते हुए भी उन्होंने उस का भेदन किया. (११)

अर्भको न कुमारकोऽधि तिष्ठन्नवं रथम्.
स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्रतुम् (१२)

इंद्र श्रेष्ठ राजकुमार के समान अपने रथ पर बैठते हैं. वे अपने पिता द्यावा और माता पृथ्वी के निमित्त खाने के लिए भोजन पकाते हैं. (१२)

आ तू सुशिप्र दंपते रथं तिष्ठा हिरण्ययम्.
अध द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् (१३)

हे इंद्र! तुम स्वर्ण से बने इस रथ पर बैठो. तुम्हारी कृपा से हम भी उस स्वर्ग पर चढ़ें जो सुंदर वाणियों से संपन्न एवं हजारों मार्गों वाला है. (१३)

तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते.
अर्थं चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति दानवे (१४)

उन इंद्र की इस प्रकार की महिमा जानने वाले व्यक्ति अपने राज्य में प्रतिष्ठित होते हैं. ऋत्विक समूह हवि देने वाले यजमान के लिए इंद्र के पास जो धन होता है, उसे प्राप्त कराते हैं. (१४)

अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम्.
पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत (१५)

प्रिय मेधा वाले ऋत्विज इन इंद्र के पूर्व दिशा में बने भवन से हितकारी अन्न प्राप्त कर के प्रगति करते हैं. (१५)

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः.
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो वो वृत्रहा गृणे (१६)

ज्येष्ठ राजा इंद्र अपने रथ के द्वारा गमन करते हुए सभी सेनाओं के पार चले जाते हैं. मैं उन की स्तुति करता हूं. (१६)

इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि.
हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः (१७)

इंद्र की सत्ता मध्य लोक में, अंतरिक्ष में तथा स्वर्गलोक में भी हैं. क्रीडा के निमित्त ऊंचा वज्र इंद्र के हाथ में है. वे सूर्य के समान दर्शन करने योग्य है. इस यज्ञ में अन्न प्राप्ति के लिए उन्हीं इंद्र को आनंदित करो. (१७)

नकिष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम्.
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णवो जसम् (१८)

जो पुरुष महान पराक्रमी, ऋभुओं का नाश करने वाले, धृष्ट न होने वाले, वृद्धिकर्ता तथा धर्षक तेज से संपन्न इंद्र की उपासना में संलग्न होता है. उसे उस के कर्म से कोई रोक नहीं सकता. (१८)

अषाळ्हमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन् महीरुरुज्रयः.
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षमो अनोनवुः (१९)

वे प्रचंड इंद्र विशाल आश्रय के मार्ग वाले, वाणियों के द्वारा स्तुति प्राप्त तथा सेनाओं के द्वारा असहनीय हैं. आकाश और पृथ्वी लोक उन की स्तुति करते हैं. (१९)

यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमिरुत स्युः.
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी (२०)

हे इंद्र! आकाश और पृथ्वी सौसौ हों अथवा हजारों सूर्य और आकाश बन जाएं, तब भी वे तुम्हारी समानता करने में समर्थ नहीं हैं. (२०)

आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा.
अस्माँ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः (२१)

हे इंद्र! हमारी गोचर भूमि में अपने रक्षा साधनों से हमें रक्षित करते हुए हमारी वृद्धि करो. (२१)

सूक्त तिरानवेवां — देवता—इंद्र

उत् त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः. अव ब्रह्मद्विषो जहि (१)

हे वज्रधारी इंद्र! यह स्तुति तुम्हें प्रसन्न करने वाली हो. तुम ब्रह्मद्वेषियों को नष्ट करो तथा हमें धन दो. (१)

पदा पणींरराधसो नि बाधस्व महां असि. नहि त्वा कश्चन प्रति (२)

हे इंद्र! तुम पणियों का धन छीन लो और उन्हें मार दो. तुम महान हो. कोई भी तुम से प्रतिस्पर्धा कर के तुम्हारे सामने नहीं ठहर सकता. (२)

त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्. त्वं राजा जनानाम् (३)

हे इंद्र! तुम संस्कारित सोमरस एवं मनुष्यों के स्वामी हो. (३)

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते. भेजानासः सुवीर्यम् (४)

जल की कामना करती हुई तथा श्रेष्ठ वीर्य से भरी हुई ओषधियां उत्पन्न होते ही इंद्र की इच्छा करती हैं. (४)

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः. त्वं वृषन् वृषेदसि (५)

हे इंद्र! तुम कामनाओं की वर्षा करने वाले अपने उस ओज के साथ प्रकट हुए हो, जो सभी को पराजित करता है. (५)

त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्य१न्तरिक्षमतिरः. उद् द्यामस्तभ्ना ओजसा (६)

त्वमीशिषे सास्मिन्ना सत्सि बर्हिष्यनाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा (५)

हे इंद्र! इस स्तोता को तुम शुभ आशीर्वाद दो तथा इस यजमान में धन को प्रतिष्ठित करो. हे स्वामी इंद्र! इस सोम के गृह में आ कर कुश के इस आसन पर विराजमान हो जाओ. तुम्हारे पात्र धारण शक्ति के कारण अपमान करने योग्य नहीं हैं. (५)

पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा.
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः (६)

हे इंद्र! जो जन अपने ज्ञान और कर्म के अनुसार देवयान आदि मार्गों में जाने की कामना करते हैं तथा जो सर्वसाधारण के लिए कष्टसाध्य देवहूति आदि कर्म करते हैं, वे तुम्हारी कृपा के अभाव में यज्ञरूपी नौका पर नहीं चढ़ पाते. इस कारण से वे साधारण कर्म करते हुए मृत्युलोक में ही रुके रहते हैं. (६)

एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽ श्वा येषां दुर्युज आयुयुज्रे.
इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना (७)

जिन अश्वों को दुर्युज नाम का सारथी रथ में जोड़ता है, वे कभी वृद्ध न हों. जो दाता को बहुत से भोज्य पदार्थों से युक्त बनाते हैं, वे मेघ हैं. (७)

गिरींरज्रान् रेजमानां अधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत्.
समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति (८)

सोमरस से हर्षित हुए इंद्र पर्वतों को धारण करते हैं, अंतरिक्ष के पदार्थों को कुपित करते हैं तथा द्युलोक को कुंदनमय बनाते हैं. (८)

इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवञ्छफारुजः.
अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्यं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभगः (९)

हे इंद्र! मैं तुम्हारे अंकुश को धारण करता हूं. तुम अपने इस अंकुश के द्वारा नख वाले पीड़ा दाता प्राणियों को नष्ट करते हो. इस सवन में तुम प्रजा प्राप्त करो तथा सोमरस निष्पन्न हो जाने पर धन के जानने वाले बनो. (९)

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्.
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम (१०)

हे अनेक पुरुषों द्वारा बुलाए गए इंद्र! हम यजमान तुम्हारे द्वारा दी हुई गायों के कारण दरिद्रता को लांघ जाएं. तुम ने हमें जो अन्न दिया है, उस से हम अपने भृत्यों, पुत्रों आदि की भूख मिटाएं. हम अपनी शक्ति से शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें तथा अपने समान पुरुषों में श्रेष्ठ बन कर धन प्राप्त करें. (१०)

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः.

त्वमीशिषे सास्मिन्ना सत्सि बर्हिष्यनाधृष्या तव पात्राणि धर्मणा (५)

हे इंद्र! इस स्तोता को तुम शुभ आशीर्वाद दो तथा इस यजमान में धन को प्रतिष्ठित करो. हे स्वामी इंद्र! इस सोम के गृह में आ कर कुश के इस आसन पर विराजमान हो जाओ. तुम्हारे पात्र धारण शक्ति के कारण अपमान करने योग्य नहीं हैं. (५)

पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा.
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः (६)

हे इंद्र! जो जन अपने ज्ञान और कर्म के अनुसार देवयान आदि मार्गों में जाने की कामना करते हैं तथा जो सर्वसाधारण के लिए कष्टसाध्य देवहूति आदि कर्म करते हैं, वे तुम्हारी कृपा के अभाव में यज्ञरूपी नौका पर नहीं चढ़ पाते. इस कारण से वे साधारण कर्म करते हुए मृत्युलोक में ही रुके रहते हैं. (६)

एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽ श्वा येषां दुर्युय आयुयुज्रे.
इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना (७)

जिन अश्वों को दुर्युज नाम का सारथी रथ में जोड़ता है, वे कभी वृद्ध न हों. जो दाता को बहुत से भोज्य पदार्थों से युक्त बनाते हैं, वे मेघ हैं. (७)

गिरींरज्रान् रेजमानां अधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत्.
समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति (८)

सोमरस से हर्षित हुए इंद्र पर्वतों को धारण करते हैं, अंतरिक्ष के पदार्थों को कुपित करते हैं तथा द्युलोक को कुंदनमय बनाते हैं. (८)

इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवञ्छफारुजः.
अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्यं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभगः (९)

हे इंद्र! मैं तुम्हारे अंकुश को धारण करता हूं. तुम अपने इस अंकुश के द्वारा नख वाले पीड़ा दाता प्राणियों को नष्ट करते हो. इस सवन में तुम प्रजा प्राप्त करो तथा सोमरस निष्पन्न हो जाने पर धन के जानने वाले बनो. (९)

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्.
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम (१०)

हे अनेक पुरुषों द्वारा बुलाए गए इंद्र! हम यजमान तुम्हारे द्वारा दी हुई गायों के कारण दरिद्रता को लांघ जाएं. तुम ने हमें जो अन्न दिया है, उस से हम अपने भृत्यों, पुत्रों आदि की भूख मिटाएं. हम अपनी शक्ति से शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें तथा अपने समान पुरुषों में श्रेष्ठ बन कर धन प्राप्त करें. (१०)

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः.

हे इंद्र! यह जो हवि रूप अन्न देने वाला यजमान है, तुम इस के रथियों की रक्षा करो. हे इंद्र! सोमरस का संस्कार किया जा चुका है, इसलिए अपने घोड़ों को छोड़ कर यहां आओ और दूसरे यजमानों के यहां गमन मत करो. (१)

तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वासस्त्वां गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति.
इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वां इह पाहि सोमम् (२)

हे इंद्र! इस सोमरस को तुम्हारे लिए ही छाना गया है. ये स्तुतियां तुम्हारा ही आह्वान करती हैं. तुम सब को जानने वाले हो. हमारे यज्ञ में आ कर तुम सोमरस का पान करो. (२)

य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति.
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति (३)

देवों की कामना करने वाला जो पुरुष सोमरस को तैयार करता है, उस के स्रोतो को इंद्र स्वीकार कर लेते हैं तथा मधुर वचनों के द्वारा उसे संतुष्ट करते हैं. (३)

अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम्.
निररत्नौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः (४)

जो पुरुष सोम का संस्कार नहीं करता, वह इंद्र के प्रहार के योग्य होता है. उस ब्रह्मद्वेषी और हवि का दान न करने वाले को इंद्र नष्ट कर देते हैं. (४)

अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ.
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम (५)

हे इंद्र! अश्व, गौ और अन्न की कामना करने वाले हम तुम्हारा आश्रय पाने के लिए नवीन तथा उत्तम बुद्धि से संगत हो कर तुम्हें बुलाते हैं. (५)

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्.
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् (६)

हे रोगी पुरुष! मैं तेरे जीवन के हेतु हवि देता हुआ तुझे क्षय आदि रोगों से मुक्त करता हूं. हे इंद्र और अग्नि! यदि इस पुरुष को पिशाची ने पकड़ लिया हो तो इसे उस के पाप से छुड़ाओ. (६)

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नी त एव.
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय (७)

183

यह पुरुष दुर्गति को प्राप्त हो गया है और इस की आयु क्षीण हो गई है. यह मृत्यु के समीप पहुंच गया है, तब भी मैं इस को, निर्ऋति के अंक को खींचता हूं. मैं ने इस का स्पर्श इस हेतु किया है कि यह सौ वर्ष की आयु प्राप्त करे. (७)

हे इंद्र! यह जो हवि रूप अन्न देने वाला यजमान है, तुम इस के रथियों की रक्षा करो. हे इंद्र! सोमरस का संस्कार किया जा चुका है, इसलिए अपने घोड़ों को छोड़ कर यहां आओ और दूसरे यजमानों के यहां गमन मत करो. (१)

तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वासस्त्वां गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति.
इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वां इह पाहि सोमम् (२)

हे इंद्र! इस सोमरस को तुम्हारे लिए ही छाना गया है. ये स्तुतियां तुम्हारा ही आह्वान करती हैं. तुम सब को जानने वाले हो. हमारे यज्ञ में आ कर तुम सोमरस का पान करो. (२)

य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति.
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति (३)

देवों की कामना करने वाला जो पुरुष सोमरस को तैयार करता है, उस के स्रोतो को इंद्र स्वीकार कर लेते हैं तथा मधुर वचनों के द्वारा उसे संतुष्ट करते हैं. (३)

अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम्.
निररत्नौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः (४)

जो पुरुष सोम का संस्कार नहीं करता, वह इंद्र के प्रहार के योग्य होता है. उस ब्रह्मद्वेषी और हवि का दान न करने वाले को इंद्र नष्ट कर देते हैं. (४)

अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ.
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम (५)

हे इंद्र! अश्व, गौ और अन्न की कामना करने वाले हम तुम्हारा आश्रय पाने के लिए नवीन तथा उत्तम बुद्धि से संगत हो कर तुम्हें बुलाते हैं. (५)

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्.
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् (६)

हे रोगी पुरुष! मैं तेरे जीवन के हेतु हवि देता हुआ तुझे क्षय आदि रोगों से मुक्त करता हूं. हे इंद्र और अग्नि! यदि इस पुरुष को पिशाची ने पकड़ लिया हो तो इसे उस के पाप से छुड़ाओ. (६)

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नी त एव.
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय (७)

यह पुरुष दुर्गति को प्राप्त हो गया है और इस की आयु क्षीण हो गई है. यह मृत्यु के समीप पहुंच गया है, तब भी मैं इस को, निर्ऋति के अंक को खींचता हूं. मैं ने इस का स्पर्श इस हेतु किया है कि यह सौ वर्ष की आयु प्राप्त करे. (७)

सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम्.
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम् (८)

मैं हवि के द्वारा इस रोगी पुरुष को हजारों सूक्ष्म दृष्टियों, सैकड़ों वीर्यों तथा सौ वर्ष की आयु के लिए मृत्यु से छीन लाया हूं. इसे इंद्र पूरी आयु के लिए पाप के पार लगाएं. (८)

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्.
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम् (९)

हे रोगी! तू सौ वर्ष तक जीवित रहता हुआ वृद्धि प्राप्त कर. तू सौ हेमंतों तथा सौ वसंतों तक जीवित रह. इंद्र, अग्नि, सविता तथा बृहस्पति तुझे शतायु बनाएं. इस हवि के द्वारा मैं तुझे शतायु बना कर ले आया हूं. (९)

आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः.
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् (१०)

हे रोगी पुरुष! तू लौट आ तथा पुनः नव जीवन प्राप्त कर. इस कर्म के द्वारा मैं ने तुझे दर्शन शक्ति तथा पूर्ण आयु देने में सफलता प्राप्त कर ली है. (१०)

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः.
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये (११)

अग्नि देवता राक्षसों को नष्ट करने वाले मंत्र से युक्त हो कर तेरे दूषित रोग को रोक दें. यह रोग तेरे गर्भाशय में फैल रहा है. (११)

यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये.
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् (१२)

जो दुष्ट रोग तेरे गर्भाशय में व्याप्त हो रहा है, उसे अग्निदेव मंत्र के बल से नष्ट करें. (१२)

यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम्.
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि (१३)

जो तेरे गिरते हुए अथवा निकलते हुए गर्भ को नष्ट करने की इच्छा करता है, हम उसे नष्ट करते हैं. (१३)

यस्त ऊरु विहरत्यन्तरा दम्पती शये.
योनिं यो अन्तरारेळ्हि तमितो नाशयामसि (१४)

जो रोग तुम पतिपत्नी में व्याप्त है, जो तेरी योनि में तथा तेरी जंघाओं में व्याप्त है, हम उसे दूर करते हैं. (१४)

यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते.

प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि (१५)

जो पिशाच पति, उपपति अथवा भाई बन कर आता हुआ तेरे गर्भ में स्थित शिशु को नष्ट करना चाहता है, हम उसे मारते हैं. (१५)

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते.
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि (१६)

जो तेरे स्वप्न रूप अंधकार में व्याप्त हो कर तेरी संतान का नाश करना चाहता है, उसे हम नष्ट करते हैं. (१६)

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि.
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते (१७)

मैं तेरे नेत्रों, नासिका, कानों, ठोढ़ी आदि से सीर्षण्य रोग को तथा तेरे मस्तक और जीभ से यक्ष्मा आदि रोगों को बाहर करता हूं. (१७)

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात्.
यक्ष्मं दोषण्य१मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते (१८)

मैं तेरी अस्थियों से, नाड़ियों से, कंधों और भुजाओं में यक्ष्मा रोग को नष्ट करता हूं. (१८)

हृदयात् ते परि क्लोम्नो हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम्.
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीहो यक्नस्ते वि वृहामसि (१९)

हे रोगी! मैं तेरे हृदय से यक्ष्मा रोग को निकालता हूं. हृदय के समीप स्थित कलोम से, हलीक्ष्य से, पित्ताशय से, पार्श्वों से, प्लीहा अर्थात तिल्ली से, यकृत से और तेरे उदर से भी तेरे यक्ष्मा रोग को नष्ट करता हूं. (१९)

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि.
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते (२०)

हे क्षय रोग से ग्रसित रोगी! मैं तेरी आंखों से, गुदा से, उदर से, दोनों कुशियों से, प्लासि से तथा नाभि से यक्ष्मा रोग को बाहर निकाल कर हटाता हूं. (२०)

ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्.
यक्ष्मं भसद्यं१ श्रोणिभ्यां भासदं भंससो वि वृहामि ते (२१)

मैं तेरे उरुओं अर्थात जंघाओं, घुटनों तथा पैरों के ऊपर तथा आगे के भाग से, कमर से, कमर के नीचे से यक्ष्मा रोग को बाहर निकाल कर अलग करता हूं. (२१)

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः.
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते (२२)

मज्जा, अस्थि, सूक्ष्म नाड़ियों, उंगलियों, नाखूनों और तेरे शरीर की सभी

धातुओं तेरे यक्ष्मा रोग को बाहर निकाल कर तुझ से दूर करता हूं. (२२)

अङ्गे अङ्गे लोम्निलोम्नि यस्ते पर्वणिपर्वणि.
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि (२३)

हे रोगी! तेरे सब अंगों, सभी रोम कूपों तथा जोड़ों में व्याप्त यक्ष्मा रोग को हम दूर करते हैं. तेरी त्वचा में स्थित तथा नेत्रों में व्याप्त यक्ष्मा रोग को भी मैं मंत्रों द्वारा नष्ट करता हूं. (२३)

अपेहि मनसस्पतेऽ प क्राम परश्चर.
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः (२४)

हे रोग! तू मन पर भी अधिकार करने वाला है. तू दूर हो जा. इस जीवित पुरुष के मन से दूर होने के लिए तू निर्ऋति से कह. (२४)

सूक्त सत्तानवेवां देवता—इंद्र

वयमेनमिदा ह्योपीपेमेह वज्रिणम्.
तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते (१)

हे स्तोताओ! हम ने इंद्र को सोमरस से पुष्ट किया है. तुम भी प्रसन्न मन से उन्हें संस्कार किया हुआ सोम प्रदान करो तथा उन्हें स्तोत्रों के द्वारा सुसज्जित करो. (१)

वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति.
सेमं न स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया (२)

इंद्र का भेड़िया शत्रुओं को भगा देता है तथा भेड़ों को मथ डालता है. हे इंद्र! तुम अपनी श्रेष्ठ बुद्धि के द्वारा इस यज्ञ में आओ तथा स्तुतियों को सुनो. (२)

कदु न्व१ स्याकृतमिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम्.
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा (३)

यह किस ने नहीं सुना है कि इंद्र ने वृत्र राक्षस का नाश किया. ऐसा कोई पराक्रम नहीं है जो इंद्र में न हो. (३)

सूक्त अट्ठानवेवां देवता—इंद्र

त्वामिद्धि हवामहे साता वाजस्य कारवः.
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः (१)

हे इंद्र! स्तुति करने वाले हम अन्न प्राप्ति से संबंधित यज्ञ में तुम्हें ही बुलाते हैं. तुम सज्जनों के रक्षक और जलों को प्रेरित करने वाले हो. (१)

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः.

गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे (२)

हे इंद्र! तुम हमारे द्वारा पूजित हो कर विजय की इच्छा करने वाले नरेश के अश्व, रथ, गाय आदि प्रदान करो. हे इंद्र! तुम अपने हाथों में वज्र धारण करने वाले हो. (२)

सूक्त निन्यानवेवां देवता—इंद्र

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः.
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् (१)

हे इंद्र! तुम ने पहले सोमरस पिया था, उसी प्रकार सोमरस पीने के लिए ऋभु और रुद्र देवता तुम्हारी स्तुति करते हैं. (१)

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि.
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा (२)

तैयार किए हुए सोम रस के द्वारा हर्ष प्राप्त होने पर वे इंद्र यजमान के धन और बल की वृद्धि करते हैं. स्तुति करने वाले ये जन उन इंद्र की महिमा को ही पहले के समान गाते हैं. (२)

सूक्त सौवां देवता—इंद्र

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा कामान् महः ससृज्महे. उदेव यन्त उदभिः (१)

हे इंद्र! जिस प्रकार जल की कामना करते हुए मनुष्य जल में जल को मिलाते हैं, उसी प्रकार तुम्हारी कामना करने वाले मनुष्य तुम्हें सोम रूपी जलों से मिलाते हैं. (१)

वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि. वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे (२)

हे वज्रधारी इंद्र! तुम प्रत्येक स्तुति पर अपनी वृद्धि की कामना करते हो, इसलिए ये मंत्र तुम्हें जल की भांति वृद्धियुक्त बनाते हैं. (२)

युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे. इन्द्रवाहा वचोयुजा (३)

युद्ध के लिए प्रस्थान करने वाले इंद्र के यशोगान संबंधी मंत्रों से रथ में जुड़ने वाले इंद्र के घोड़े रथ में जुड़ते हैं. (३)

सूक्त एक सौ एकवां देवता—अग्नि

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्. अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् (१)

मैं सब के ज्ञाता, होता और यज्ञों को उत्तम बनाने वाले अग्नि का वरण करता

हूं. (१)

अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्. हव्यवाहं पुरुप्रियम् (२)

हव्यवाहक, बहुतों के प्रिय तथा प्रजापति अग्नि को यजमान हवि प्रदान करते हैं. इस कारण हम भी अग्नि को हवि देते हैं. (२)

अग्ने देवां इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे. असि होता न ईड्यः (३)

हे अग्नि! ऋत्विज के हेतु प्रदीप्त होते हुए तुम हमारे होता हो, इसलिए तुम देवों को हमारे इस यज्ञ में ले कर आओ. (३)

सूक्त एक सौ दोवां — देवता—अग्नि

ईळेन्यो नमस्य स्तिरस्तमांसि दर्शतः. समग्निरिध्यते वृषा (१)

अग्नि स्तुतियों और नमस्कारों के योग्य हैं. कामनाओं की वर्षा करने वाले एवं दर्शनीय हैं. अग्नि अपने धूम को तिरछा करते हुए प्रज्वलित होते हैं. (१)

वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः. तं हविष्मन्त ईळते (२)

कामनाओं की वर्षा करने वाले अग्नि देवताओं को वहन करने वाले अश्व के समान प्रदीप्त होते हैं. हवि देने वाले यजमान उन प्रदीप्त अग्नि की पूजा करते हैं. (२)

वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि. अग्ने दीद्यतं बृहत् (३)

हे कामनाओं की वर्षा करने वाले अग्नि! हवि की वर्षा करने वाले हम कामनाओं की वर्षा करने वाले तुम को भलीभांति प्रज्वलित करते हैं. इसलिए तुम भलीभांति प्रदीप्त बनो. (३)

सूक्त एक सौ तीनवां — देवता—अग्नि

अग्निमीळिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम्.
अग्निं राये पुरुमीळ्ह श्रुतं नरोऽग्निं सुदीतये छर्दिः (१)

हे मनुष्य! तू अन्न प्राप्ति के लिए अग्नि की गाथाओं के द्वारा अग्नि की स्तुति कर. तू ऐसे अग्नि की पूजा कर जो धन दान के लिए प्रसिद्ध, प्रदीप्त और शोभायमान हैं. (१)

अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे.
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे (२)

हे अग्नि! हम श्रोतागण तुम्हें यज्ञ में बुलाते हैं. तुम अपनी सभी शक्तियों के साथ इस यज्ञ में आओ. भली प्रकार प्रस्तुत किए गए, हवि रूप से युक्त बर्हि तुम्हारे

साथ सुसंगत बनें. (२)

अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे.
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् (३)

हे अंगिरा गोत्र वाले अग्नि! तुम जल के पुत्र के समान हो. यज्ञ के स्रुच अर्थात स्रुवा नाम के पात्र तुम्हारे सामने गति करते हैं. हम यज्ञ में सदा नवीन और शक्तिशाली अग्नि की स्तुति करते हैं. (३)

सूक्त एक सौ चारवां देवता—इंद्र

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम.
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत (१)

हे इंद्र! तुम अपरिमित ऐश्वर्य वाले हो. अग्नि के समान पवित्र हमारी वाणियां तुम्हारी वृद्धि करें. हे स्तोताओ! तुम इंद्र के लिए प्रशंसा मंत्रों का उच्चारण करो. (१)

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे.
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये (२)

जल के द्वारा बढ़े हुए सागर के समान ये अग्नि ऋषियों द्वारा दी गई हवियों से हजार गुना बढ़ते हैं. मैं इन अग्नि की महिमा का यथार्थ रूप में बखान कर रहा हूं. इन अग्नि का बल यज्ञ में देखने योग्य होता है. (२)

आ नो विश्वासु हव्य इन्द्रः समत्सु भूषतु.
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः (३)

हे इंद्र! तुम हवि प्राप्त करने योग्य हो. तुम हमें सभी यज्ञों में सुशोभित करो. वृत्र राक्षस को मारने वाले इंद्र ऋचाओं के अनुसार अपना रूप प्रकट करते हैं. वे इंद्र हमारे सूक्तों, हवियों तथा मंत्रों को सुशोभित बनाएं. (३)

त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत्.
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः (४)

हे धनों को देने वाले अग्नि! तुम सब को प्रभुता प्रदान करते हो. तुम जलों के पुत्र हो. हम प्रदीप्त अग्नि का वरण करते हैं. (४)

१८५

सूक्त एक सौ पांचवां देवता—इंद्र

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः.
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः (१)

त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः. त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् (३)

हे इंद्र! सूर्य, वरुण, यम और विष्णु तुम्हारे प्रशंसक हैं. वायु के पीछे चलने वाला दल तुम्हें हर्ष प्रदान करता है. (३)

सूक्त एक सौ सातवां — देवता—इंद्र और सूर्य

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः. समुद्रायेव सिन्धवः (१)

कर्म करने वाले इंद्र के लिए सभी प्रजाएं उसी प्रकार झुकती हैं, जिस प्रकार समुद्र के लिए सभी नदियां झुक कर चलती हैं. (१)

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्. इन्द्रश्चर्मेव रोदसी (२)

इंद्र ने आकाश और पृथ्वी को चर्म के समान लपेट लिया था. यह इंद्र का महान पराक्रम है. (२)

वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा. शिरो बिभेद वृष्णिना (३)

इंद्र ने क्रोध में भरे हुए वृत्र के शीश को अपने सौ धारों वाले एवं रक्त वर्षक वज्र के द्वारा काट दिया था. (३)

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः.
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूनन‌ु यदेनं मदन्ति विश्व ऊमाः (४)

ये इंद्र शक्तिशाली, धन संपन्न तथा सभी लोकों में श्रेष्ठ हैं. ये उत्पन्न होते ही शत्रु का वध करते हैं. इन के प्रकट होते ही इन की रक्षक शक्तियां शक्तिशालिनी बन जाती हैं. (४)

वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति.
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु (५)

स्थावर और जंगम जगत ब्रह्म में लीन हो जाता है. शक्तिशाली शत्रु दासों को त्रास देता है. वेतन पाने वाले सैनिक युद्धों में इंद्र की ही प्रार्थना करते हैं. (५)

त्वे क्रतुमपि पृञ्चन्ति भूरि द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः.
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः (६)

ये वीर जन्म के संस्कार तथा युद्ध की दीक्षा लेने के कारण त्रिजन्म अर्थात तीन बार जन्म लेने वाले कहलाते हैं. इन वीरों को स्वादिष्ट पदार्थों वाला बनाओ. हे इंद्र! तुम इन वीरों में प्रवेश कर के संग्राम में तत्पर बनो. (६)

यदि चिन्नु त्वा धना जयन्तं रणेरणे अनुमदन्ति विप्राः.
ओजीयः शुष्मिन्त्स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् दुरेवासः कशोकाः (७)

हे वीर इंद्र! तुम प्रत्येक युद्ध में धनों को जीतते हो. जो ब्राह्मण तुम्हारी स्तुति

त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः. त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् (३)

हे इंद्र! सूर्य, वरुण, यम और विष्णु तुम्हारे प्रशंसक हैं. वायु के पीछे चलने वाला दल तुम्हें हर्ष प्रदान करता है. (३)

सूक्त एक सौ सातवां — देवता—इंद्र और सूर्य

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः. समुद्रायेव सिन्धवः (१)

कर्म करने वाले इंद्र के लिए सभी प्रजाएं उसी प्रकार झुकती हैं, जिस प्रकार समुद्र के लिए सभी नदियां झुक कर चलती हैं. (१)

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्. इन्द्रश्चर्मेव रोदसी (२)

इंद्र ने आकाश और पृथ्वी को चर्म के समान लपेट लिया था. यह इंद्र का महान पराक्रम है. (२)

वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा. शिरो बिभेद वृष्णिना (३)

इंद्र ने क्रोध में भरे हुए वृत्र के शीश को अपने सौ धारों वाले एवं रक्त वर्षक वज्र के द्वारा काट दिया था. (३)

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः.
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूनन् यदेनं मदन्ति विश्व ऊमाः (४)

ये इंद्र शक्तिशाली, धन संपन्न तथा सभी लोकों में श्रेष्ठ हैं. ये उत्पन्न होते ही शत्रु का वध करते हैं. इन के प्रकट होते ही इन की रक्षक शक्तियां शक्तिशालिनी बन जाती हैं. (४)

वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति.
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु (५)

स्थावर और जंगम जगत ब्रह्म में लीन हो जाता है. शक्तिशाली शत्रु दासों को त्रास देता है. वेतन पाने वाले सैनिक युद्धों में इंद्र की ही प्रार्थना करते हैं. (५)

त्वे क्रतुमपि पृञ्चन्ति भूरि द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः.
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः (६)

ये वीर जन्म के संस्कार तथा युद्ध की दीक्षा लेने के कारण त्रिजन्म अर्थात तीन बार जन्म लेने वाले कहलाते हैं. इन वीरों को स्वादिष्ट पदार्थों वाला बनाओ. हे इंद्र! तुम इन वीरों में प्रवेश कर के संग्राम में तत्पर बनो. (६)

यदि चिन्नु त्वा धना जयन्तं रणेरणे अनुमदन्ति विप्राः.
ओजीयः शुष्मिन्त्स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् दुरेवासः कशोकाः (७)

हे वीर इंद्र! तुम प्रत्येक युद्ध में धनों को जीतते हो. जो ब्राह्मण तुम्हारी स्तुति

करें, उन्हें तुम शक्तिशाली बनाओ. जो पुरुष दूसरों के सुख के अवसर पर दुख देते हैं, वे तुम्हें प्राप्त न हों. (७)

त्वया वयं शाशद्महे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि.
चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि (८)

हे इंद्र! रणभूमि में हम तुम्हारे द्वारा ही अपने विरोधियों की हिंसा करते हैं. मैं अपने तप के द्वारा सिद्धि प्राप्त वचनों से तुम्हारे आयुधों को प्रेरित करता हूं तथा पक्षियों के समान वेग वाले तुम्हारे बाणों को तीक्ष्ण बनाता हूं. (८)

नि तद् दधिषेऽवरे परे च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे.
आ स्थापयत मातरं जिगत्नुमत इन्वत कर्वराणि भूरि (९)

हे इंद्र! जिस घर में अन्न के द्वारा मेरा पालन हुआ है, जिन श्रेष्ठ प्राणियों ने मुझे धारण किया है, उस घर में माता के द्वारा शक्ति की स्थापना हो. इस के बाद तुम उस घर में शोभन पदार्थों को लाओ. (९)

स्तुष्व वर्ष्मन् पुरुवर्त्मानं समृभ्वाणमिनतममाप्तमाप्त्यानाम्.
आ दर्शति शवसा भूर्योजाः प्र सक्षति प्रतिमानं पृथिव्याः (१०)

हे स्तोता! परम तेजस्वी, विचरण करने वाले एवं श्रेष्ठ स्वामी इंद्र की स्तुति करो. पृथ्वी रूपी वे इंद्र इस यज्ञशाला में व्याप्त हो रहे हैं. (१०)

इमा ब्रह्म बृहद्दिवः कृणवदिन्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः.
महो गोत्रस्य क्षयन्ति स्वराजा तुरश्चिद् विश्वमर्णवत् तपस्वान् (११)

यह राजा स्वर्ग के स्वामी इंद्र के निमित्त स्तोत्रों की रचना करता हुआ स्वर्ग प्राप्ति की कामना करता है. इंद्र जल की वर्षा करते हुए संसार को जल से पूर्ण करते हैं. (११)

एवा महान् बृहद्दिवो अथर्वावोचत् स्वां तन्व१ मिन्द्रमेव.
स्वसारौ मातरिभ्वरी अरिप्रे हिन्वन्ति चैने शवसा वर्धयन्ति च (१२)

महर्षि अथर्वा ने अपने आपको इंद्र मानते हुए कहा कि पाप रहित मातर और इभ्वरी दोनों बहनें इसे प्रसन्न करती हुई बल की वृद्धि करती हैं. (१२)

चित्रं देवानां केतुरनीकं ज्योतिष्मान् प्रदिशः सूर्य उद्यन्.
दिवाकरोऽति द्युम्नैस्तमांसि विश्वातारीद् दुरितानि शुक्रः (१३)

ये किरणों वाले इंद्र सभी दिशाओं की ओर फैलाने वाले अपने प्रकाश से दिवस को प्रकट करते हैं तथा सभी अंधकारों और पापों से पार हो जाते हैं. (१३)

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः.
आप्राद् द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च (१४)

किरणों का पूजनीय समूह मित्र, वरुण तथा अग्नि के चक्षु के रूप में उदय हो रहा है. ये सूर्य ही प्राणियों की आत्मा तथा अपनी महिमा से आकाश, पृथ्वी और अंतरिक्ष को पूर्ण करते हैं. (१४)

सुर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्.
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम् (१५)

जिस प्रकार पुरुष नारी के पीछे जाता है. उसी प्रकार सूर्य उषा देवी के पीछे गमन करते हैं. उस समय भले लोग अपना समय देव कार्य में लगाते हुए सूर्य के निमित्त श्रेष्ठ कर्म करते हैं. (१५)

सूक्त एक सौ आठवां — देवता—इंद्र

त्वं न इन्द्रा भरं ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे. आ वीरं पृतनाषहम् (१)

हे सैकड़ों कर्म करने वाले इंद्र! तुम हमें धन, बल तथा ऐसी संतान दो जो हमारे शत्रुओं को हरा सके. (१)

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ. अधा ते सुम्नमीमहे (२)

हे इंद्र! तुम हमारे पिता और माता हो. इसी कारण हम तुम से सुख की याचना करते हैं. (२)

त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे शतक्रतो. स नो रास्व सुवीर्यम् (३)

हे इंद्र! तुम हवि रूपी अन्न की कामना करते हो. मैं तुम्हारी बारबार स्तुति करता हूं. तुम मुझे वीरों से युक्त धन प्रदान करो. (३)

सूक्त एक सौ नौवां — देवता—इंद्र

स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः.
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् (१)

स्तोत्ररूपी वाणियां षूवत नाम के यज्ञ के स्वादिष्ट मधु का इस प्रकार पान करती हैं, जिस से वे अनेक शक्तियों वाले इंद्र से मिल कर उन्हें प्रसन्न करती रहें. हे यजमान! इस के बाद तू अपने राज्य पर सुशोभित हो जाएगा. (१)

ता अस्य पृश्नायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः.
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् (२)

पृश्नि नाम की गाएं इस सोमरस का संस्कार कर रही हैं. इंद्र की ये गाएं उन

के बाणों और वज्र को प्रेरणा देती हैं. हे यजमान! इन रात्रियों के बाद तू अपने राज्य पर प्रतिष्ठित होगा. (२)

ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः.
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् (३)

वाणियां हवि के द्वारा इंद्र का पूजन करती हैं तथा यजमान के महान व्रत इंद्र से मिलते हैं. हे यजमान! इन रात्रियों के बाद तू अपने राज्य पर प्रतिष्ठित होगा. (३)

सूक्त एक सौ दसवां देवता—इंद्र

इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः. अर्कमर्चन्तु कारवः (१)

सेवा के योग्य इस यज्ञ में हमारी वाणियां सोमरस से युक्त हो कर इंद्र की स्तुति करती हुई उन की पूजा करें. (१)

यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः. इन्द्रं सुते हवामहे (२)

विभूतिमयी सभी सभाएं जिन्हें प्राप्त होती हैं, उन इंद्र को उस समय बुलाते हैं, जब सोमरस तैयार हो जाता है. (२)

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत. तमिद् वर्धन्तु नो गिरः (३)

यह ज्ञान देने वाला यज्ञ त्रिकद्रुकों ने आरंभ किया. हमारी वाणियां इस यज्ञ की वृद्धि करें. (३)

सूक्त एक सौ ग्यारहवां देवता—इंद्र

यत् सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये.
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः (१)

हे इंद्र! त्रित और आप्य यज्ञ में जो तुम हर्षित होते हो, उस हर्ष का कारण जल पूर्ण सोमरस ही है. (१)

यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे.
अस्माकमित् सुते रणा समिन्दुभिः (२)

हे इंद्र! या तो तुम दूर स्थित सागर में अथवा हमारे यज्ञ में हर्ष को प्राप्त होते हो. तुम वास्तव में जल पूर्ण सोम के कारण ही हर्षित होते हो. (२)

यद्वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते.
उक्थे वा यस्य रण्यसि समिन्दुभिः (३)

हे इंद्र! तुम सोमरस का संस्कार करने वाले यजमान की वृद्धि करते हो. उस वृद्धि का कारण वास्तव में जल पूर्ण सोम ही है. (३)

सूक्त एक सौ बारहवां — देवता—इंद्र

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य. सर्वं तदिन्द्र ते वशे (१)

हे सूर्य की उपासना करने वाले इंद्र! तुम ने वृत्र असुर का नाश किया था. तुम जिस समय नंदित होते हो, वह समय तुम्हारे ही अधीन है. (१)

यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे. उतो तत् सत्यमित् तव (२)

हे इंद्र! तुम जिसकी यह मृत्यु चाहते हो, यह कामना सत्य हो जाती है. (२)

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे. सर्वांस्तां इन्द्र गच्छसि (३)

जो सोमरस समीप अथवा दूर कहीं भी संस्कारित किया जाता है, उस के समीप इंद्र स्वयं पहुंच जाते हैं. (३)

सूक्त एक सौ तेरहवां — देवता—इंद्र

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः.
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् (१)

इंद्र दोनों लोकों में हितकारी कार्य करते हैं. वे इंद्र हमारा वचन स्वीकार करने के लिए सुनें. इंद्र देव सोमपान करने आ रहे हैं. (१)

तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः.
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः (२)

वे इंद्र कामनाओं की वर्षा करने वाले तथा अपने तेज से तेजस्वी हैं. वे आकाश और पृथ्वी को लघु बनाते हैं. हे इंद्र! तुम उपमानों में सर्वश्रेष्ठ होने के साथ ही सोमरस की कामना करते हो. (२)

185

सूक्त एक सौ चौदहवां — देवता—इंद्र

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि. युधेदापित्वमिच्छसे (१)

हे इंद्र! तुम प्रकट होते ही मिलने की कामना करते हो तथा युद्ध में विजय की इच्छा करते हो. तुम्हारा कोई भी शत्रु शेष नहीं है. (१)

नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः.
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित् पितेव हूयसे (२)

हे इंद्र! सुराश्व अर्थात मदिरा पीने वाले तुम्हें दुःखी करते हैं. तुम जब गर्जन करने लगते हो, तब पिता के समान कहे जाते हो. तुम धनी मनुष्य को मित्रता के लिए प्राप्त करते हो. (२)

हे हरि नाम वाले घोड़ों के स्वामी एवं समृद्धि प्रदान करने वाले इंद्र देव! जिस सोमरस से प्राप्त हुए उत्साह के द्वारा आप असुरों का वध करते हैं, वह सोमरस आपको अत्यधिक मादकता प्रदान करे.(२)

बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्.
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व (३)

हे इंद्र! जिस प्रशंसा की वसिष्ठ पूजा करते हैं, उस मंत्र समूह वाली मेरी वाणी को यश के साथ स्वीकार करो. (३)

सूक्त एक सौ अठारहवां — देवता—इंद्र

शग्ध्यू३ षु शचीपत इन्द्र विश्व भिरूतिभिः.
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि (१)

हे इंद्र! मैं यह चाहता हूं कि मैं तुम्हारे सभी रक्षा साधनों के द्वारा यश और सौभाग्य प्राप्त करने के हेतु तुम्हारा अनुयायी बनूं. (१)

पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः.
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर (२)

हे इंद्र! तुम नगरवासियों के लिए अश्व के समान हो तथा धन को अपरिमित बनाते हो. तुम गायों की वृद्धि करने वाले तथा स्वर्ण से पूर्ण और मनचाहा दान देने वाले हो. मैं जिन वस्तुओं को पाने के लिए तुम्हारे आश्रय में आया हूं उन वस्तुओं को मुझे प्रदान करो. (२)

इन्द्रमिद् देवतातय इन्द्रं प्रयत्य ध्वरे.
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये (३)

हम इंद्र की सेवा करने वाले हैं. संग्राम उपस्थित होने पर हम धन प्राप्ति के लिए इंद्र को बुलाते हैं. (३)

इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत्.
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे इन्द्रे सुवानास इन्दवः (४)

इंद्र ने सूर्य को तेजोमय तथा आकाश और पृथ्वी को अपनी महिमा से विस्तृत किया है. इन इंद्र ने सब भुवनों को अपने आश्रय में लिया है. ये सोमरस इंद्र के लिए निष्पन्न किए जाते हैं. (४)

सूक्त एक सौ उन्नीसवां — देवता—इंद्र

अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत.
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत (१)

हे ऋत्विजो! मैं ने प्राचीन स्तोत्र के द्वारा इंद्र की स्तुति की है. अब तुम भी यज्ञ

हे हरि नाम वाले घोड़ों के स्वामी एवं समृद्धि प्रदान करने वाले इंद्र देव! जिस सोमरस से प्राप्त हुए उत्साह के द्वारा आप असुरों का वध करते हैं, वह सोमरस आपको अत्यधिक मादकता प्रदान करे.(२)

बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्.
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व (३)

हे इंद्र! जिस प्रशंसा की वसिष्ठ पूजा करते हैं, उस मंत्र समूह वाली मेरी वाणी को यश के साथ स्वीकार करो. (३)

सूक्त एक सौ अठारहवां देवता—इंद्र

शग्ध्यू३ षु शचीपत इन्द्र विश्व भिरूतिभिः.
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि (१)

हे इंद्र! मैं यह चाहता हूं कि मैं तुम्हारे सभी रक्षा साधनों के द्वारा यश और सौभाग्य प्राप्त करने के हेतु तुम्हारा अनुयायी बनूं. (१)

पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः.
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर (२)

हे इंद्र! तुम नगरवासियों के लिए अश्व के समान हो तथा धन को अपरिमित बनाते हो. तुम गायों की वृद्धि करने वाले तथा स्वर्ण से पूर्ण और मनचाहा दान देने वाले हो. मैं जिन वस्तुओं को पाने के लिए तुम्हारे आश्रय में आया हूं उन वस्तुओं को मुझे प्रदान करो. (२)

इन्द्रमिद् देवतातय इन्द्रं प्रयत्य ध्वरे.
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये (३)

हम इंद्र की सेवा करने वाले हैं. संग्राम उपस्थित होने पर हम धन प्राप्ति के लिए इंद्र को बुलाते हैं. (३)

इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत्.
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे इन्द्रे सुवानास इन्दवः (४)

इंद्र ने सूर्य को तेजोमय तथा आकाश और पृथ्वी को अपनी महिमा से विस्तृत किया है. इन इंद्र ने सब भुवनों को अपने आश्रय में लिया है. ये सोमरस इंद्र के लिए निष्पन्न किए जाते हैं. (४)

सूक्त एक सौ उन्नीसवां देवता—इंद्र

अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत.
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत (१)

हे ऋत्विजो! मैं ने प्राचीन स्तोत्र के द्वारा इंद्र की स्तुति की है. अब तुम भी यज्ञ

यज्ञ में इंद्र का आगमन होने पर हम अन्न की विभिन्न विभूतियों से संपन्न होते हुए सुख प्राप्त करें. (१)

आ घ त्वावान् त्मनाप्त स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः. ऋणोरक्षं न चक्र्योः (२)

हे इंद्र! तुम्हारी दया प्राप्त करने वाला पुरुष स्तोताओं के अनुग्रह से चलने वाले रथ के दोनों पहियों के अक्ष अर्थात धुरे के समान दृढ़ हो जाता है. (२)

आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितृणाम्. ऋणोरक्षं न शचीभिः (३)

हे इंद्र! तुम्हारा उपासक तुम से बल प्राप्त करता हुआ चलने वाले रथ के समान दृढ़ होता है. (३)

सूक्त एक सौ तेईसवां देवता—इंद्र

तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार.
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै (१)

वे सूर्य जब अपनी महिमा से रश्मियों को अपने में समेट लेते हैं, तब लोग फैले हुए अपने सब कार्यों को भी समेट लेते हैं. उस समय अंधकार को सब ओर से समेटती हुई पृथ्वी वस्त्र धारण करती है. (१)

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे.
अनन्तमन्यद् रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति (२)

मैं मित्र और वरुण की महिमा का गान करता हूं. वे सूर्य के रूप में स्वर्ग में अपने रूप का निर्माण करते हैं, जिस से उन का तेज प्रकाशित होता है. इन का दूसरा तेज काले रंग का है. उसे सूर्य की रश्मियां धारण करती हैं. (२)

सूक्त एक सौ चौबीसवां देवता—इंद्र

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा. कया शचिष्ठया वृता (१)

सदा वृद्धि करने वाले ये सखा किस रक्षा साधन से हमारी रक्षा करेंगे? उन की रक्षात्मक वृत्ति किस प्रकार पूरी होगी? (१)

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः. दृळ्हा चिदारुजे वसु (२)

हे इंद्र! हर्ष उत्पन्न करने वाली हवियों में सोम रूप अन्न का कौन सा अंश श्रेष्ठ है, जिस के द्वारा प्रसन्न होते हुए तुम धन को अपने भक्तों में विकीर्ण कर देते हो. (२)

अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्. शतं भवास्यूतिभिः (३)

हे इंद्र! तुम हम स्तुतिकर्ताओं के सखा के समान हो. तुम हमारे सामने सैकड़ों

यज्ञ में इंद्र का आगमन होने पर हम अन्न की विभिन्न विभूतियों से संपन्न होते हुए सुख प्राप्त करें. (१)

आ घ त्वावान् त्मनाप्त स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः. ऋणोरक्षं न चक्र्योः (२)

हे इंद्र! तुम्हारी दया प्राप्त करने वाला पुरुष स्तोताओं के अनुग्रह से चलने वाले रथ के दोनों पहियों के अक्ष अर्थात धुरे के समान दृढ़ हो जाता है. (२)

आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितृणाम्. ऋणोरक्षं न शचीभिः (३)

हे इंद्र! तुम्हारा उपासक तुम से बल प्राप्त करता हुआ चलने वाले रथ के समान दृढ़ होता है. (३)

सूक्त एक सौ तेईसवां देवता—इंद्र

तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार.
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै (१)

वे सूर्य जब अपनी महिमा से रश्मियों को अपने में समेट लेते हैं, तब लोग फैले हुए अपने सब कार्यों को भी समेट लेते हैं. उस समय अंधकार को सब ओर से समेटती हुई पृथ्वी वस्त्र धारण करती है. (१)

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे.
अनन्तमन्यद् रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति (२)

मैं मित्र और वरुण की महिमा का गान करता हूं. वे सूर्य के रूप में स्वर्ग में अपने रूप का निर्माण करते हैं, जिस से उन का तेज प्रकाशित होता है. इन का दूसरा तेज काले रंग का है. उसे सूर्य की रश्मियां धारण करती हैं. (२)

सूक्त एक सौ चौबीसवां देवता—इंद्र

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा. कया शचिष्ठया वृता (१)

सदा वृद्धि करने वाले ये सखा किस रक्षा साधन से हमारी रक्षा करेंगे ? उन की रक्षात्मक वृत्ति किस प्रकार पूरी होगी ? (१)

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः. दृळ्हा चिदारुजे वसु (२)

हे इंद्र! हर्ष उत्पन्न करने वाली हवियों में सोम रूप अन्न का कौन सा अंश श्रेष्ठ है, जिस के द्वारा प्रसन्न होते हुए तुम धन को अपने भक्तों में विकीर्ण कर देते हो. (२)

अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्. शतं भवास्यूतिभिः (३)

हे इंद्र! तुम हम स्तुतिकर्ताओं के सखा के समान हो. तुम हमारे सामने सैकड़ों

हे अश्विनीकुमारो! नमुचि राक्षस के साथ इंद्र का युद्ध होते समय तुमने आनंदित करने वाला सोमरस पी कर इंद्र की रक्षा की थी. (४)

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दसनाभिः.
यत् सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् (५)

हे इंद्र! तुम ने शोभा धारण करने वाला सोमरस पिया है. सरस्वती देवी अपनी विभूतियों से तुम्हें सींचे. (५)

इन्द्रः सुत्रामा स्ववां अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः.
बाधतां द्वेषो अभयं नः कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम (६)

रक्षक एवं ऐश्वर्य वाले इंद्र अपने रक्षा साधनों से हमें सुख प्रदान करें. ये शक्तिशाली इंद्र हमारे शत्रुओं का वध कर के हमारा भय दूर करें. हम उत्तम और प्रभाव पूर्ण धन से संपन्न हों. (६)

स सुत्रामा स्ववां इन्द्रो अस्मदाच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु.
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम (७)

रक्षा करने वाले इंद्र हमारे शत्रुओं को दूर से ही भगा दें. यश के योग्य उन इंद्र की कृपामयी बुद्धि में रहते हुए हम सब उन की मंगलकारी भावना प्राप्त करें. (७)

सूक्त एक सौ छब्बीसवां — देवता—इंद्र

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत.
यत्रामदद् वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१)

वृषाकपि देव ने इंद्र को देवता के समान समझा. वे वृषाकपि पुष्टयों के पालनकर्ता तथा मेरे मित्र हैं. हे इंद्र! इस कारण मैं उत्तम हूं. (१)

परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः.
नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (२)

हे इंद्र! तुम वृषाकपि की अपेक्षा अधिक वेग वाले हो. तुम शत्रुओं को व्यथित करने में समर्थ हो. जहां सोमपान का साधन नहीं होता, वहां तुम नहीं जाते हो. इस प्रकार इंद्र सब से बढ़ कर हैं. (२)

किमयं त्वा वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः.
यस्मा इरस्यसीदु न्व१र्यो वा पुष्टिमद् वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (३)

हे इंद्र! इन वृषाकपि ने तुम्हें हरे रंग का मृग क्यों बनाया है? तुम इन्हें पुष्टिकारक अन्न प्रदान करते हो. इस प्रकार इंद्र सब से बढ़ कर हैं. (३)

हे अश्विनीकुमारो! नमुचि राक्षस के साथ इंद्र का युद्ध होते समय तुमने आनंदित करने वाला सोमरस पी कर इंद्र की रक्षा की थी. (४)

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः.
यत् सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् (५)

हे इंद्र! तुम ने शोभा धारण करने वाला सोमरस पिया है. सरस्वती देवी अपनी विभूतियों से तुम्हें सींचे. (५)

इन्द्रः सुत्रामा स्ववां अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः.
बाधतां द्वेषो अभयं नः कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम (६)

रक्षक एवं ऐश्वर्य वाले इंद्र अपने रक्षा साधनों से हमें सुख प्रदान करें. ये शक्तिशाली इंद्र हमारे शत्रुओं का वध कर के हमारा भय दूर करें. हम उत्तम और प्रभाव पूर्ण धन से संपन्न हों. (६)

स सुत्रामा स्ववां इन्द्रो अस्मदाच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु.
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम (७)

रक्षा करने वाले इंद्र हमारे शत्रुओं को दूर से ही भगा दें. यश के योग्य उन इंद्र की कृपामयी बुद्धि में रहते हुए हम सब उन की मंगलकारी भावना प्राप्त करें. (७)

सूक्त एक सौ छब्बीसवां — देवता—इंद्र

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत.
यत्रामदद् वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१)

वृषाकपि देव ने इंद्र को देवता के समान समझा. वे वृषाकपि पुष्टयों के पालनकर्ता तथा मेरे मित्र हैं. हे इंद्र! इस कारण मैं उत्तम हूं. (१)

परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः.
नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (२)

हे इंद्र! तुम वृषाकपि की अपेक्षा अधिक वेग वाले हो. तुम शत्रुओं को व्यथित करने में समर्थ हो. जहां सोमपान का साधन नहीं होता, वहां तुम नहीं जाते हो. इस प्रकार इंद्र सब से बढ़ कर हैं. (२)

किमयं त्वा वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः.
यस्मा इरस्यसीदु न्व१र्यो वा पुष्टिमद् वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (३)

हे इंद्र! इन वृषाकपि ने तुम्हें हरे रंग का मृग क्यों बनाया है? तुम इन्हें पुष्टिकारक अन्न प्रदान करते हो. इस प्रकार इंद्र सब से बढ़ कर हैं. (३)

इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्.
नह्य स्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (११)

मैं इंद्राणी को अत्यधिक सौभाग्यशालिनी मानता हूं. इस का कारण इन के पति का अमर होना हैं. इंद्राणी के पति वृद्ध भी नहीं होते. अन्य नारियों के पति मरने वाले हैं. (११)

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते.
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१२)

हे इंद्राणी! मैं अपने मित्र वृषाकपि के अतिरिक्त अन्य किसी के पास नहीं जाता हूं. इन की हवि का संस्कार जल से किया जाता है. ये मुझे सभी देवों की अपेक्षा अधिक प्रिय हैं. ये इंद्र सभी देवों में उत्कृष्ट हैं. (१२)

वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे.
घसत् त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१३)

हे वृषाकपि रूप सूर्य की पत्नी! तू सुपुत्रों वाली एवं धन से संपन्न है. तेरी जल रूपी हवि का इंद्र सेवन करें, क्योंकि वे सभी देवों में श्रेष्ठ हैं. (१३)

उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम्.
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१४)

मुझ महान के पंद्रह सेवक बीस प्रकार की हवि का पाक करते हैं. मैं उन हवियों का सेवन करता हूं. इस प्रकार मेरी दोनों कोखें भरी हुई हैं. इंद्र सर्वश्रेष्ठ हैं. (१४)

वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत्.
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१५)

हे इंद्र! जिस प्रकार सींगों वाले बैल गायों में शब्द करते हैं, उसी प्रकार जिन के हृदय को तुम्हारा मंथन सुख देता है, वही सुख प्राप्त करता है, क्योंकि इंद्र सर्वोत्कृष्ट हैं. (१५)

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३ कपृत्.
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१६)

जंघाओं में आभूषण लटकाने वाला ऐश्वर्य प्राप्त नहीं करता. जिस बैठने की इच्छा वाले के रोम अंगड़ाई लेते हैं, वह सामर्थ्य वाला होता है. इंद्र सर्वश्रेष्ठ हैं. (१६)

न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते.
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३ कपृद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१७)

जिस का रोमों वाला मेढ़ा जमुहाई लेता है, वह असमर्थ होता है. जिस का पुरुष

इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम्.
नह्य स्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (११)

मैं इंद्राणी को अत्यधिक सौभाग्यशालिनी मानता हूं. इस का कारण इन के पति का अमर होना है. इंद्राणी के पति वृद्ध भी नहीं होते. अन्य नारियों के पति मरने वाले हैं. (११)

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते.
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१२)

हे इंद्राणी! मैं अपने मित्र वृषाकपि के अतिरिक्त अन्य किसी के पास नहीं जाता हूं. इन की हवि का संस्कार जल से किया जाता है. ये मुझे सभी देवों की अपेक्षा अधिक प्रिय हैं. ये इंद्र सभी देवों में उत्कृष्ट हैं. (१२)

वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे.
घसत् त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१३)

हे वृषाकपि रूप सूर्य की पत्नी! तू सुपुत्रों वाली एवं धन से संपन्न है. तेरी जल रूपी हवि का इंद्र सेवन करें, क्योंकि वे सभी देवों में श्रेष्ठ हैं. (१३)

उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम्.
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१४)

मुझ महान के पंद्रह सेवक बीस प्रकार की हवि का पाक करते हैं. मैं उन हवियों का सेवन करता हूं. इस प्रकार मेरी दोनों कोखें भरी हुई हैं. इंद्र सर्वश्रेष्ठ हैं. (१४)

वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत्.
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१५)

हे इंद्र! जिस प्रकार सींगों वाले बैल गायों में शब्द करते हैं, उसी प्रकार जिन के हृदय को तुम्हारा मंथन सुख देता है, वही सुख प्राप्त करता है, क्योंकि इंद्र सर्वोत्कृष्ट हैं. (१५)

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३ कपृत्.
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१६)

जंघाओं में आभूषण लटकाने वाला ऐश्वर्य प्राप्त नहीं करता. जिस बैठने की इच्छा वाले के रोम अंगड़ाई लेते हैं, वह सामर्थ्य वाला होता है. इंद्र सर्वश्रेष्ठ हैं. (१६)

न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते.
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३ कपृद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः (१७)

जिस का रोमों वाला मेढ़ा जमुहाई लेता है, वह असमर्थ होता है. जिस का पुरुष

संकेत नहीं किया है.

इदं जना उप श्रुत नराशसं स्तविष्यते.
षष्टिं सहस्रा नवतिं च कौरम आ रुशमेषु दद्महे (१)

हे नराशस स्तोताओ सुनो! हम साठ हजार नब्बे (६०९०) रुशम नाम की मुद्रा प्रदान करते हैं. (१)

उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो वधूमन्तो द्विर्दश.
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाणा उपस्पृशः (२)

जिस वधू वाले रथ को बारह ऊंट खींचने वाले हैं वह आकाश का स्पर्श करता हुआ चलता है. (२)

एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः.
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् (३)

अन्न प्राप्ति के निमित्त मैं निष्क नाम की सौ स्वर्ण मुद्राएं, तीन सौ घोड़े, दस हजार गाएं और दस मालाएं देता हूं. (३)

वच्यस्व रेभ वच्यस्व वृक्षे न पक्वे शकुनः.
नष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षुरो न भुरिजोरिव (४)

हे स्तुतिकर्ताओ! पके हुए फलों वाले वृक्ष पर बैठा हुआ पक्षी जिस प्रकार का मधुर शब्द करता है, तुम भी उसी प्रकार का शब्द करो. जिस प्रकार हाथ में पकड़ा हुआ छुरा नहीं रुकता, उसी प्रकार तुम्हारी जीभ भी न रुके अर्थात तुम उच्चारण करते रहो. (४)

प्र रेभासो मनीषा वृषा गाव इवेरते.
अमोतपुत्रका एषाममोत गा इवासते (५)

यह मनीषी स्तोता यहां शक्तिशाली वृषभों अर्थात बैलों के समान वर्तमान है. इन के घर में पुत्र, गाएं आदि हैं. (५)

प्र रेभ धीं भरस्व गोविदं वसुविदम्.
देवत्रेमां वाचं श्रीणीहीषुर्नावीरस्तारम् (६)

हे स्तोता! बाण जिस प्रकार मनुष्य की रक्षा करता है, उसी प्रकार वाणी तेरी रक्षा करे. तू गौ तथा धन प्राप्त कराने वाली बुद्धि को प्राप्त करे. (६)

राज्ञो विश्वजनीनस्य यो देवोऽमर्त्यां अति.
वैश्वानरस्य सुष्टुतिमा सुनोता परिक्षितः (७)

यदि देवता प्रजा के मनुष्यों का अतिक्रमण करे तो वैश्वानर की मंगलमयी स्तुति करनी चाहिए. (७)

संकेत नहीं किया है.

इदं जना उप श्रुत नराशसं स्तविष्यते.
षष्टिं सहस्रा नवतिं च कौरम आ रुशमेषु दद्महे (१)

हे नराशस स्तोताओ सुनो! हम साठ हजार नब्बे (६०९०) रुशम नाम की मुद्रा प्रदान करते हैं. (१)

उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो वधूमन्तो द्विर्दश.
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाणा उपस्पृशः (२)

जिस वधू वाले रथ को बारह ऊंट खींचने वाले हैं वह आकाश का स्पर्श करता हुआ चलता है. (२)

एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः.
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम् (३)

अन्न प्राप्ति के निमित्त मैं निष्क नाम की सौ स्वर्ण मुद्राएं, तीन सौ घोड़े, दस हजार गाएं और दस मालाएं देता हूं. (३)

वच्यस्व रेभ वच्यस्व वृक्षे न पक्वे शकुनः.
नष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षुरो न भुरिजोरिव (४)

हे स्तुतिकर्ताओ! पके हुए फलों वाले वृक्ष पर बैठा हुआ पक्षी जिस प्रकार का मधुर शब्द करता है, तुम भी उसी प्रकार का शब्द करो. जिस प्रकार हाथ में पकड़ा हुआ छुरा नहीं रुकता, उसी प्रकार तुम्हारी जीभ भी न रुके अर्थात तुम उच्चारण करते रहो. (४)

प्र रेभासो मनीषा वृषा गाव इवेरते.
अमोतपुत्रका एषाममोत गा इवासते (५)

यह मनीषी स्तोता यहां शक्तिशाली वृषभों अर्थात बैलों के समान वर्तमान है. इन के घर में पुत्र, गाएं आदि हैं. (५)

प्र रेभ धीं भरस्व गोविदं वसुविदम्,
देवत्रेमां वाचं श्रीणीहीषुर्नावीरस्तारम् (६)

हे स्तोता! बाण जिस प्रकार मनुष्य की रक्षा करता है, उसी प्रकार वाणी तेरी रक्षा करे. तू गौ तथा धन प्राप्त कराने वाली बुद्धि को प्राप्त करे. (६)

राज्ञो विश्वजनीनस्य यो देवोऽमर्त्यां अति.
वैश्वानरस्य सुष्टुतिमा सुनोता परिक्षितः (७)

यदि देवता प्रजा के मनुष्यों का अतिक्रमण करे तो वैश्वानर की मंगलमयी स्तुति करनी चाहिए. (७)

सूर्यं चामू रिशादसस्तद् देवाः प्रागकल्पयन् (१)

अभिषव अर्थात सोमरस निचोड़ने का काम करने वाला, यज्ञकर्ता एवं सभ्य पुरुष सूर्यलोक को भेद कर उस से ऊपर वाले लोक में जाता है. इस की कल्पना देवताओं ने पहले कर ली थी. (१)

यो जाम्या अप्रथयस्तद् यत् सखायं दुधूर्षति.
ज्येष्ठो यदप्रचेतास्तदाहुरधरागिति (२)

जाम्य ने जिसे विस्तृत किया, वह मित्र को सुशोभित करता है. जो ज्येष्ठ प्रचेता है, उसे लोग अधराक् कहते हैं. (२)

यद् भद्रस्य पुरुषस्य पुत्रो भवति दाधृषिः.
तद् विप्रो अब्रवीदु तद् गन्धर्वः काम्यं वचः (३)

जिस ब्राह्मण का पुत्र धारण करने वाला होता है. वह ब्राह्मण अभीष्ट वचन करने में समर्थ है. ऐसा गंधर्व कहते हैं. (३)

यश्च पणि रघुजिष्ठ्यो यश्च देवां अदाशुरिः.
धीराणां शश्वतामहं तदपागिति शुश्रुम (४)

जो वणिक देवताओं को हवि दान नहीं करता, वह शाश्वत वीरों का सेवक बनता है. ऐसा सुना जाता है. (४)

ये च देवा अयजन्ताथो ये च परादिदः.
सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रप्शते (५)

जो स्तोता एवं परा गौ का दान करने वाले हैं, वे सूर्य के समान स्वर्ग में जाते हैं. (५)

योनाक्ताक्षो अनभ्यक्तो अमणि वो अहिरण्यवः.
अब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता (६)

जो भक्त नहीं है, जो आक्त अदक्ष नहीं है, जो मणिवान नहीं, जो हिरपाप नहीं है तथा जो ब्राह्मण नहीं है; वह ब्रह्म पुत्र स्तोता कल्पों में मान्य है. (६)

य आक्ताक्षः सुभ्यक्तः सुमणिः सुहिरण्यवः.
सुब्रह्म ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता (७)

जो आक्त अक्ष हैं, जो सुभक्त हैं, जो सुंदर मणि वाले हैं; ऐसे ब्रह्म पुत्र स्तोता हैं, यह कल्पों अर्थात कला ग्रंथों में माना गया है. (७)

अप्रपाणा च वेशन्ता रेवां अप्रतिदिश्ययः.
अयभ्या कन्या कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता (८)

जो सरोवर जलपूर्ण नहीं हैं; जो धनी हैं, पर दानी नहीं है; जो कन्याएं गृहस्थ

सूर्य चामू रिशादसस्तद् देवाः प्रागकल्पयन् (१)

अभिषव अर्थात सोमरस निचोड़ने का काम करने वाला, यज्ञकर्ता एवं सभ्य पुरुष सूर्यलोक को भेद कर उस से ऊपर वाले लोक में जाता है. इस की कल्पना देवताओं ने पहले कर ली थी. (१)

यो जाम्या अप्रथयस्तद् यत् सखायं दुधूर्षति.
ज्येष्ठो यदप्रचेतास्तदाहुरधरागिति (२)

जाम्य ने जिसे विस्तृत किया, वह मित्र को सुशोभित करता है. जो ज्येष्ठ प्रचेता है, उसे लोग अधराक् कहते हैं. (२)

यद् भद्रस्य पुरुषस्य पुत्रो भवति दाधृषिः.
तद् विप्रो अब्रवीदु तद् गन्धर्वः काम्यं वचः (३)

जिस ब्राह्मण का पुत्र धारण करने वाला होता है. वह ब्राह्मण अभीष्ट वचन करने में समर्थ है. ऐसा गंधर्व कहते हैं. (३)

यश्च पणि रघुजिष्ठ्यो यश्च देवां अदाशुरिः.
धीराणां शश्वतामहं तदपागिति शुश्रुम (४)

जो वणिक देवताओं को हवि दान नहीं करता, वह शाश्वत वीरों का सेवक बनता है. ऐसा सुना जाता है. (४)

ये च देवा अयजन्ताथो ये च परादर्दिः.
सूर्यो दिवमिव गत्वाय मघवा नो वि रप्शते (५)

जो स्तोता एवं परा गौ का दान करने वाले हैं, वे सूर्य के समान स्वर्ग में जाते हैं. (५)

योनाक्ताक्षो अनभ्यक्तो अमणि वो अहिरण्यवः.
अब्रह्मा ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता (६)

जो भक्त नहीं है, जो आक्त अदक्ष नहीं है, जो मणिवान नहीं, जो हिरपाप नहीं है तथा जो ब्राह्मण नहीं है; वह ब्रह्म पुत्र स्तोता कल्पों में मान्य है. (६)

य आक्ताक्षः सुभ्यक्तः सुमणिः सुहिरण्यवः.
सुब्रह्म ब्रह्मणः पुत्रस्तोता कल्पेषु संमिता (७)

जो आक्त अक्ष हैं, जो सुभक्त है, जो सुंदर मणि वाले हैं; ऐसे ब्रह्म पुत्र स्तोता हैं, यह कल्पों अर्थात कला ग्रंथों में माना गया है. (७)

अप्रपाणा च वेशन्ता रेवां अप्रतिदिश्ययः.
अयभ्या कन्या कल्याणी तोता कल्पेषु संमिता (८)

जो सरोवर जलपूर्ण नहीं हैं; जो धनी हैं, पर दानी नहीं है; जो कन्याएं गृहस्थ

उन में एक हरिक्निका है. (३)

हरिक्निके किमिच्छसि (४)

हे हरिक्निका! तेरी क्या इच्छा है ? (४)

साधुं पुत्रं हिरण्ययम् (५)

हे पुत्र! साधु को स्वर्ण दो. (५)

क्वाहतं परास्यः (६)

अवाहत अर्थात घायल हुआ परास्य कहां है ? (६)

यत्रामूस्तिस्रः शिशपाः (७)

इस स्थान पर तीन शिंशिपा वृक्ष हैं. (७)

परि त्रयः (८)

सभी ओर तीन हैं. (८)

पृदाकवः (९)

बहुत से प्रदाकू हैं. (९)

शृङ्गं धमन्त आसते (१०)

वे सींगों को नष्ट कर के बैठे हैं. (१०)

अयन्महा ते अर्वाहः (११)

यह दिवस तुम्हारा महान अश्व है. (११)

स इच्छकं सघाघते (१२)

वह कामना करने वालों का समाधान कर्ता है. (१२)

सघाघते गोमीद्या गोगतीरिति (१३)

गोमीठ गायों की गति को एकत्र करता है. (१३)

पुमां कुस्ते निमिच्छसि (१४)

पुरुष और पृथ्वी तुझे प्रसन्न करते हैं. (१४)

पल्प बद्ध वयो इति (१५)

हे वृद्ध पल्प! यह तेरा अन्न है. (१५)

बद्ध वो अघा इति (१६)

बंधा होना पाप है. (१६)

अजागार केविका (१७)

सेविकाएं जागी नहीं हैं. (१७)

अश्वस्य वारो गोशपद्यके (१८)

अश्व के सवार होकर गाय के खुर के गड्ढे में पड़े हैं. (१८)

श्येनीपती सा (१९)

यह श्येनीपति अर्थात मादा बाज का स्वामी है. (१९)

अनामयोपजिह्विका (२०)

उप जिह्विका रोग रहित है. (२०)

सूक्त एक सौ तीसवां

को अर्य बहुलिमा इषूनि (१)

बहुत से बाणों पर अधिकार करने वाला कौन है? (१)

को असिद्याः पयः (२)

रजोगुणी प्रकृति का पोषक कौन है? (२)

को अर्जुन्याः पयः (३)

अर्जुनी अर्थात प्रकृति का पय अर्थात दूध कौन सा है? (३)

कः कार्ष्ण्याः पयः (४)

तमोगुणी प्रकृति का दूध क्या है. (४)

एतं पृच्छ कुहं पृच्छ (५)

यदि जानते नहीं हो तो पूछो. (५)

कुहाकं पक्वकं पृच्छ (६)

कुशल एवं परिपक्व मनुष्य से पूछो. (६)

यवानो यतिस्वभिः कुभिः (७)

यत्नकर्ता समान पृथ्वियों से युक्त हुआ. (७)

अकुप्यन्तः कुपायकुः (८)

पृथ्वी का मर्म न जानने वाला क्रोधित हो गया. (८)

आमणको मणत्सकः (९)

आमणक मणत्सक है. (९)

देव त्वप्रतिसूर्य (१०)

हे सूर्यदेव. (१०)

एनश्चिपङ्क्तिका हविः (११)

यह पापनाशक हवि है. (११)

प्रदुद्रुदो मघाप्रति (१२)

यह ऐश्वर्य के प्रति गति दे. (१२)

शृङ्ग उत्पन्न (१३)

सींग उत्पन्न हुआ. (१३)

मा त्वाभि सखा नो विदन् (१४)

मेरा मित्र मुझे और तुझे मिले. (१४)

वशायाः पुत्रमा यन्ति (१५)

वशा गौ के पुत्र को लाते हैं. (१५)

इरावेदुमयं दत (१६)

ज्ञानपूर्ण इरा उसे दो. (१६)

अथो इयन्नियन्निति (१७)

इस के पश्चात यह इस प्रकार का है. (१७)

अथो इयन्निति (१८)

फिर यह इस प्रकार है. (१८)

अथो श्वा अस्थिरो भवन् (१९)

इस के बाद श्वा अर्थात कुत्ता अस्थिर हुआ. (१९)

उयं यकांशलोकका (२०)

कष्टकारी लोक वाला हो. (२०)

सूक्त एक सौ इकत्तीसवां

आमिनोनिति भद्यते (१)

यह परम तत्व कहा जाता है. (१)

तस्य अनु निभञ्जनम् (२)

उस के बाद विभाजन है. (२)

वरुणो याति वस्वभिः (३)

वरुण रात्रि के साथ जाते हैं. (३)

शतं वा भारती शवः (४)

वाणी के सौ बल हैं. (४)

शतमाश्वा हिरण्ययाः.
शतं रथ्या हिरण्ययाः. शतं कुथा हिरण्ययाः. शतं निष्का हिरण्ययाः (५)

सुनहरे रंग के सौ घोड़े, सोने के बने सौ रथ, सोने के बने सौ गछे और सोने के सौ निष्क अर्थात सिक्के या आभूषण हैं. (५)

अहल कुश वर्त्तक (६)

उत्तम कुश वर्तमान है. (६)

शफेन इव ओहते (७)

वह शफ अर्थात खुर से वहन करता है. (७)

आय वनेनती जनी (८)

आप झुकने वाली माता की तरह आएं. (८)

वनिष्ठा नाव गृह्यन्ति (९)

जल में स्थित नाव ग्रहण की जाती है. (९)

इदं मह्यं मदूरिति (१०)

यह मुझे प्रसन्न करता है. (१०)

ते वृक्षाः सह तिष्ठति (११)

वे वृक्षों के साथ बैठते हैं. (११)

पाक बलिः (१२)

बलि पक गई है. (१२)

शक बलिः (१३)

बलि सशक्त है. (१३)

अश्वत्थ खदिरो धवः (१४)

पीपल, खैर, धव नाम के वृक्ष हैं. (१४)

अरदुपरम (१५)

विराम प्राप्त करो. (१५)

शयो हत इव (१६)

सोने वाला मृतक के समान होता है. (१६)

व्याप पूरुषः (१७)

पुरुष सर्वत्र व्याप्त है. (१७)

अदूहमित्यां पूषकम् (१८)

मैं पूषा का दोहन करता हूं. (१८)

अत्यर्धर्च परस्वतः (१९)

अर्धर्च अर्थात आधी ऋचा प्रवृत्त हो. (१९)

दौव हस्तिनो दृती (२०)

हाथियों के लिए दो मशकें बनाओ. (२०)

सूक्त एक सौ बत्तीसवां देवता—

आदलाबुकमेककम् (१)

एक अलाबुक अर्थात रामतोरई है. (१)

अलाबुकं निखातकम् (२)

रामतोरई खोदी गई है. (२)

कर्करिको निखातकः (३)

ककड़ी को खोदा गया. (३)

तद् वात उन्मथायति (४)

वह वायु को उखाड़ता है. (४)

कुलायं कृणवादिति (५)

घौंसला बनाता है. (५)

उग्रं वनिषदाततम् (६)

विस्तृत उग्र की सेवा करता है. (६)

न वनिषदनाततम् (७)

जिस का विस्तार नहीं है, उस की सेवा नहीं करता. (७)

क एषां कर्करी लिखत् (८)

इन में से कौन कर्करी को लिखता है. (८)

क एषां दुन्दुभिं हनत् (९)

इन में दुदुंभि राक्षस को किस ने मारा. (९)

यदीयं हनत् कथं हनत् (१०)

यदि यह वध करती है तो किस प्रकार करती है. (१०)

देवी हनत् कुहनत् (११)

देवी ने वध किया, बुरी तरह वध किया. (११)

पर्यागारं पुनः पुनः (१२)

निवास स्थान के चारों ओर बारबार शब्द करती है. (१२)

त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि (१३)

ऊंट के तीन नाम हैं. (१३)

हिरण्यं इत्येके अब्रवीत् (१४)

कुछ लोगों ने हिरण्य, ऐसा कहा. (१४)

द्वौ वा ये शिशवः (१५)

दो बालक हैं. (१५)

नीलशिखण्डवाहनः (१६)

नीलशिखंड उनका वाहन है. (१६)

सूक्त एक सौ तैंतीसवां

विततौ किरणौ द्वौ तावा पिनष्टि पुरुषः.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (१)

हे कुमारी! तू उसे जैसा समझती है, वह वैसा नहीं है. दो किरणें फैली हुई हैं. पुरुष उन्हें पीसने वाला है. (१)

मातुष्टे किरणौ द्वौ निवृत्तः पुरुषानृते.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (२)

हे पुरुष! तू जिस असत्य से मुक्त हुआ है, वह तेरी माता की दो किरणें हैं. हे कुमारी! उसे तू जैसा समझती है, वह उस तरह का नहीं है. (२)

निगृह्य कर्णकौ द्वौ निरायच्छसि मध्यमे.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (३)

हे मध्यमा! तू दोनों कानों को पकड़ कर उसे नियुक्त करती है. तू उसे जैसा समझती है, वह उस प्रकार का नहीं है. (३)

उत्तानायै शयानायै तिष्ठन्ती वाव गूहसि.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (४)

हे कुमारी! तू सोने जाती है. तू उसे जैसा समझती है, वह वैसा नहीं है. (४)

श्लक्ष्णायां श्लक्ष्णिकायां श्लक्ष्णमेवाव गूहसि.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (५)

हे कुमारी! तु आलिंगन में अपना शरीर छिपाती है. तू उसे जैसा समझती है वह उस तरह का नहीं है. (५)

अवश्लक्ष्णमिव भ्रंशदन्तर्लोममति ह्रदे.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (६)

आलिंगन के समय टूटे हुए दांत और रोम सरोवर में है. (६)

सूक्त एक सौ चौंतीसवां

इहेत्थ प्रागपागुदगधराग्-अरालागुदभर्त्संथ (१)

यहां चारों दिशाओं से घिरे हुए को भयभीत करो. (१)

इहेत्थ प्रागपागुदगधराग्-वत्साः पुरुषन्त आसते (२)

यहां चारों दिशाओं से घिरे स्थान में बालक युवक बनने की इच्छा से बैठे हैं. (२)

सूक्त एक सौ तैंतीसवां

वितती किरणौ द्वौ तावा पिनष्टि पूरुषः.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (१)

हे कुमारी! तू उसे जैसा समझती है, वह वैसा नहीं है. दो किरणें फैली हुई हैं. पुरुष उन्हें पीसने वाला है. (१)

मातुष्टे किरणौ द्वौ निवृत्तः पुरुषानृते.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (२)

हे पुरुष! तू जिस असत्य से मुक्त हुआ है, वह तेरी माता की दो किरणें हैं. हे कुमारी! उसे तू जैसा समझती है, वह उस तरह का नहीं है. (२)

निगृह्य कर्णकौ द्वौ निरायच्छसि मध्यमे.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (३)

हे मध्यमा! तू दोनों कानों को पकड़ कर उसे नियुक्त करती है. तू उसे जैसा समझती है, वह उस प्रकार का नहीं है. (३)

उत्तानायै शयानायै तिष्ठन्ती वाव गूहसि.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (४)

हे कुमारी! तू सोने जाती है. तू उसे जैसा समझती है, वह वैसा नहीं है. (४)

श्लक्ष्णायां श्लक्ष्णिकायां श्लक्ष्णमेवाव गूहसि.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (५)

हे कुमारी! तु आलिंगन में अपना शरीर छिपाती है. तू उसे जैसा समझती है वह उस तरह का नहीं है. (५)

अवश्लक्ष्णमिव भ्रंशदन्तर्लोममति ह्रदे.
न वै कुमारि तत् तथा यथा कुमारि मन्यसे (६)

आलिंगन के समय टूटे हुए दांत और रोम सरोवर में है. (६)

सूक्त एक सौ चौंतीसवां

इहेत्थ प्रागपागुदगधराग्–अरालागुदभर्त्सथ (१)

यहां चारों दिशाओं से घिरे हुए को भयभीत करो. (१)

इहेत्थ प्रागपागुदगधराग्–वत्साः पुरुषन्त आसते (२)

यहां चारों दिशाओं से घिरे स्थान में बालक युवक बनने की इच्छा से बैठे हैं. (२)

होता विष्टीमेन जरितरोऽथामो दैव (५)

पत्नी यज्ञ करती हुई दिखाई दे रही है. इस के बाद तुम भयों पर विजय प्राप्त करने की इच्छा करना. (५)

आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामनयन्.
तां ह जरित: प्रत्यायंस्तामु ह जरित: प्रत्यायन् (६)

हे स्तोता! उस को उन्होंने ग्रहण किया. उसे तुम ने भी ग्रहण किया. हम चेतन प्राणियों को हानि पहुंचाने वालों को तथा यज्ञ न करने वालों को विशेष चेतन प्राणियों को प्रदान करते हैं. (६)

तां ह जरितर्न: प्रत्यगृभ्णंस्तामु ह जरितर्न: प्रत्यगृभ्ण:.
अहानेतरसं न वि चेतनानि यज्ञानेतरसं न पुरोगवाम: (७)

तुम श्वेत तथा आशुपत्य वाली ऋचाओं से युवा अवस्था प्राप्त करते हो. यह शीघ्र पूर्ण करता है. (७)

उत श्वेत आशुपत्वा उतो पद्याभिर्यविष्ठ:. उतेमाशु मानं पिपर्ति (८)

हे स्तोता! तुम अंगिरागोत्रीय ऋषियों से दक्षिणा लाते थे. उसे वे लाए थे, वे उसे लाए थे. (८)

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेनु त इदं राध: प्रति गृभ्णीह्यङ्गिर:.
इदं राधो विभु प्रभु इदं राधो बृहत् पृथु (९)

हे अंगिरागोत्रीय ऋषियो! आदित्य, वसु और रुद्र ये सभी तुम पर कृपा करते हैं. तुम इस धन को ग्रहण करो. यह धन विशाल, बृहत, व्यापक तथा प्रभुता से संपन्न है. (९)

देवा ददत्वासुरं तद् वो अस्तु सुचेतनम्.
युष्मां अस्तु दिवेदिवे प्रत्येव गृभायत (१०)

देवता तुझे प्राण, शक्ति एवं चेतना प्रदान करते हुए प्रत्येक अवसर पर प्राप्त होते हैं. (१०)

त्वमिन्द्र शर्मरिणा हव्यं पारावतेभ्य:.
विप्राय स्तुवते वसुवनिं दुरश्रवसे वह (११)

हे इंद्र! तुम इहलोक और परलोक दोनों को पार करने वालों के लिए हवि वहन करो. जिस स्तोता ब्राह्मण को अन्न प्राप्त करना कठिन है, उसे तुम बल प्रदान करो. (११)

त्वमिन्द्र कपोताय च्छिन्नपक्षाय वञ्चते.

होता विष्टीमेन जरितरोऽथामो दैव (५)

पत्नी यज्ञ करती हुई दिखाई दे रही है. इस के बाद तुम भयों पर विजय प्राप्त करने की इच्छा करना. (५)

आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामनयन्.
तां ह जरितः प्रत्यायंस्तामु ह जरितः प्रत्यायन् (६)

हे स्तोता! उस को उन्होंने ग्रहण किया. उसे तुम ने भी ग्रहण किया. हम चेतन प्राणियों को हानि पहुंचाने वालों को तथा यज्ञ न करने वालों को विशेष चेतन प्राणियों को प्रदान करते हैं. (६)

तां ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णंस्तामु ह जरितर्नः प्रत्यगृभ्णः.
अहानेतरसं न वि चेतनानि यज्ञानेतरसं न पुरोगवामः (७)

तुम श्वेत तथा आशुपत्य वाली ऋचाओं से युवा अवस्था प्राप्त करते हो. यह शीघ्र पूर्ण करता है. (७)

उत श्वेत आशुपत्वा उतो पद्याभिर्यविष्ठः. उतेमाशु मानं पिपर्ति (८)

हे स्तोता! तुम अंगिरागोत्रीय ऋषियों से दक्षिणा लाते थे. उसे वे लाए थे, वे उसे लाए थे. (८)

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेनु त इदं राधः प्रति गृभ्णीह्यङ्गिरः.
इदं राधो विभु प्रभु इदं राधो बृहत् पृथु (९)

हे अंगिरागोत्रीय ऋषियो! आदित्य, वसु और रुद्र ये सभी तुम पर कृपा करते हैं. तुम इस धन को ग्रहण करो. यह धन विशाल, बृहत, व्यापक तथा प्रभुता से संपन्न है. (९)

देवा ददत्वासुरं तद् वो अस्तु सुचेतनम्.
युष्मां अस्तु दिवेदिवे प्रत्येव गृभायत (१०)

देवता तुझे प्राण, शक्ति एवं चेतना प्रदान करते हुए प्रत्येक अवसर पर प्राप्त होते हैं. (१०)

त्वमिन्द्र शर्मरिणा हव्यं पारावतेभ्यः.
विप्राय स्तुवते वसुवनिं दुरश्रवसे वह (११)

हे इंद्र! तुम इहलोक और परलोक दोनों को पार करने वालों के लिए हवि वहन करो. जिस स्तोता ब्राह्मण को अन्न प्राप्त करना कठिन है, उसे तुम बल प्रदान करो. (११)

त्वमिन्द्र कपोताय च्छिन्नपक्षाय वञ्चते.

श्यामाकं पक्वं पीलु च वारस्मा अकृणोर्बहुः (१२)

हे इंद्र! पंख कटे हुए कबूतर के लिए तुम पके हुए पीलु, अखरोट तथा अधिक मात्रा में जल प्रदान करो. (१२)

अरंगरो वावदीति त्रेधा बद्धो वरत्रया. इरामह प्रशंसत्यनिरामप सेधति (१३)

चमड़े की रस्सी से बंधा हुआ रहट बारबार शब्द करता हुआ ऐसे स्थान को सींचता है, जहां फसलें हैं. (१३)

सूक्त एक सौ छत्तीसवां

यदस्या अंहुभेद्याः कृधु स्थूलमुपातसत्.
मुष्काविदस्या एजतो गोशफे शकुलाविव (१)

पाप का विनाश करने वाली ओषधि को क्रोध हो गया है. इस के सूखे हुए शकुल गाय के खुर के गड्ढे में भरे पानी में कांपते हैं. (१)

यथा स्थूलेन पससाणौ मुष्का उपावधीत्.
विष्वञ्चा वस्या वर्धतः सिकतास्वेव गर्दभौ (२)

जब स्थूल पसस् के द्वारा मनुष्यों में अणु का प्रहार किया गया, तब धूल में लोटने वाले गधों के समान आच्छादनी अर्थात छप्पर में मुश्क बढ़ते हैं. (२)

यदल्पिकास्वल्पिका कर्कधूकेवपद्यते.
वासन्ति कमिव तेजनं यन्त्यवाताय वित्पति (३)

जो कर्कधू अर्थात बेरी के समान घर को नष्ट करने वाले तथा अल्प से भी अल्प कण प्राप्त होते हैं, तब वासंतिक तेज आधान के निमित्त उस में गमन करते हैं. (३)

यद् देवासो ललामगुं प्रविष्टीमिनमाविषुः.
सकुला देदिश्यते नारी सत्यस्याक्षिभुवो यथा (४)

जब सुंदर गौ में प्रविष्ट देवता हर्षित होते हैं, तब नारी आंखों देखी के समान सत्य से युक्त हो जाती है. (४)

महानग्न्य तृप्नद्वि मोक्रददस्थानासरन्.
शक्तिकानना स्वचमशकं सक्तु पद्यम (५)

महान अग्नि ऊपर खड़े हुए जनों पर आक्रमण न करते हुए तृप्ति प्राप्त करते हैं. हम तेजस्वी जनों को शक्ति प्राप्त हो. (५)

महानग्न्यु लूखलमतिक्रामन्त्यब्रवीत्.

यथा तव वनस्पते निग्घ्नन्ति तथैवति (६)

महान अग्नि उलूखल को लांघते हुए कहने लगे—हे बृहस्पति! लोग जिस प्रकार तुझे कूटते हैं, वैसा होना चाहिए. (६)

महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टोऽथाप्यभूभुवः.
यथैव ते वनस्पते पिप्पति तथैवति (७)

महान अग्नि ने कहा—तू मिट कर भी बारबार उत्पन्न होती है. हे वनस्पति! जिस भांति तू पूर्ण होती है, वैसा ही होना चाहिए. (७)

महानग्न्युप ब्रूते भ्रष्टोऽथाप्यभूभुवः.
यथा वयो विदाह्य स्वर्गे नमवदह्यते (८)

महान अग्नि ने कहा—तू नष्ट हो कर भी उत्पन्न हो जाती है. जीर्ण अवस्था में होने पर भी स्वर्ग में तेरा दोहन हवि के समान किया जाता है. (८)

महानग्न्युप ब्रूते स्वसावेशितं पसः.
इत्थं फलस्य वृक्षस्य शूर्पे शूर्पं भजमहि (९)

महान अग्नि का कथन है कि यह पापनाशक ओषधि भलीभांति उत्तेजित की गई है. हम फल वाले वृक्ष के सूपों में सूप को प्रविष्ट करते हैं. (९)

महानग्नी कृकवाकं शम्यया परि धावति.
अयं न विद्म यो मृगः शीर्ष्णा हरति धाणिकाम् (१०)

महान अग्नि कृक शब्द करने वाले पर दौड़ते हैं. हमें यह ज्ञात है कि वे मृग के समान शीश के द्वारा मौन अर्पण का हरण करते हैं. (१०)

महानग्नी महानग्नं धावन्तमनु धावति.
इमास्तदस्य गा रक्ष यभ मामद्ध्यौदनम् (११)

महान अग्नि महाअग्नि के पीछे दौड़ते हैं. वे इस की इंद्रियों के रक्षक हो कर ओदन अर्थात भात को खाते हैं. (११)

सुदेवस्त्वा महानग्नीर्बबाधते महतः साधु खोदनम्.
कुसं पीवरी नवत् (१२)

महान अग्नि उत्पीड़न करने वाले हैं तथा बड़ेबड़ों को कुरेदते हैं. ये स्थूल और कृश सभी को नष्ट कर देते हैं. (१२)

वशा दग्धामिमाङ्गुरिं प्रसृजतोऽग्रतं परे.
महान् वै भद्रो यभ मामद्ध्यौदनम् (१३)

वशा नाम की गाय ने इस जली हुई उंगली की रचना की. अन्य जन उग्र की

पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः (४)

हर्ष प्रदान करने वाला सोमरस इंद्र के लिए तैयार किया जा चुका है. सोमरस छन्ने अर्थात छानने के लिए प्रयोग किए गए कपड़े से टपक रहा है. हे सोम! तुम्हारी शक्ति देवताओं को हर्षित करे. (४)

इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन्.
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा (५)

इंद्र के लिए सोमरस का शोधन किया जा चुका है. संसार के स्वामी वाचस्पति अपने ओज से प्रशंसित होते हैं. (५)

सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः.
सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे (६)

हजारों धाराओं वाला गमनशील सोमरस तैयार किया जा रहा है. धन का स्वामी यह सोमरस प्रत्येक स्तोत्र में इंद्र का सखा होता है. (६)

अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः.
आवत् तमिन्द्रः शच्या धमन्तमपस्नेहितीर्नृमणा अधत्त (७)

दस हजार किरणों से आकर्षित करने वाले सूर्य पृथ्वी पर आ कर अपने ओज से खड़े हुए तथा अपनी शक्ति से पृथ्वी की हिंसा करने लगे. तब इंद्र ने अपने बल से सूर्य को हटा कर पृथ्वी की रक्षा की तथा अपनी शक्ति से ही इंद्र ने पृथ्वी पर जल वाली शक्तियों की स्थापना की. (७)

द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः.
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ (८)

विषम और विचरण करने वाले शुकु अर्थात काले असुर को अंशुमती के पास घूमते हुए देखा है. वे भी सूर्य के समान ही आकाश में निवास करते हैं. मैं उन का आश्रित हूं. कामनाओं की वर्षा करने वाले इंद्र युद्ध में तुम्हारा साथ दें. (८)

अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत् तन्वं तित्विषाणः.
विशो अदेवीरभ्या३चरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे (९)

इस के बाद शुकु ने अपने शरीर को सूक्ष्म बना कर अंशुमती की गोद में रखा. बृहस्पति की सहायता से इंद्र ने देवों की सत्ता स्वीकार न करने वाली प्रजाओं का वध कर दिया. (९)

त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र.
गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः (१०)

पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः (४)

हर्ष प्रदान करने वाला सोमरस इंद्र के लिए तैयार किया जा चुका है. सोमरस छन्ने अर्थात छानने के लिए प्रयोग किए गए कपड़े से टपक रहा है. हे सोम! तुम्हारी शक्ति देवताओं को हर्षित करे. (४)

इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन्.
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा (५)

इंद्र के लिए सोमरस का शोधन किया जा चुका है. संसार के स्वामी वाचस्पति अपने ओज से प्रशंसित होते हैं. (५)

सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः.
सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे (६)

हजारों धाराओं वाला गमनशील सोमरस तैयार किया जा रहा है. धन का स्वामी यह सोमरस प्रत्येक स्तोत्र में इंद्र का सखा होता है. (६)

अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः.
आवत् तमिन्द्रः शच्या धमन्तमपस्नेहितीर्नृमणा अधत्त (७)

दस हजार किरणों से आकर्षित करने वाले सूर्य पृथ्वी पर आ कर अपने ओज से खड़े हुए तथा अपनी शक्ति से पृथ्वी की हिंसा करने लगे. तब इंद्र ने अपने बल से सूर्य को हटा कर पृथ्वी की रक्षा की तथा अपनी शक्ति से ही इंद्र ने पृथ्वी पर जल वाली शक्तियों की स्थापना की. (७)

द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः.
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ (८)

विषम और विचरण करने वाले शुकु अर्थात काले असुर को अंशुमती के पास घूमते हुए देखा है. वे भी सूर्य के समान ही आकाश में निवास करते हैं. मैं उन का आश्रित हूं. कामनाओं की वर्षा करने वाले इंद्र युद्ध में तुम्हारा साथ दें. (८)

अध द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत् तन्वं तित्विषाणः.
विशो अदेवीरभ्याऽचरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे (९)

इस के बाद शुकु ने अपने शरीर को सूक्ष्म बना कर अंशुमती की गोद में रखा. बृहस्पति की सहायता से इंद्र ने देवों की सत्ता स्वीकार न करने वाली प्रजाओं का वध कर दिया. (९)

त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र.
गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः (१०)

सूक्त एक सौ उनतालीसवां — देवता—अश्विनीकुमार

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे.
प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिर्युयुतं या अरातयः (१)

हे अश्विनीकुमारो! इस के बालक के घूमने के हेतु एवं रक्षा के लिए इसे ऐसा घर दो, जहां स्यार न पहुंच सके. इस के शत्रुओं को उस से दूर करो. (१)

यदन्तरिक्षे यद् दिवि यत् पञ्च मानुषां अनु. नृम्णं तद् धत्तमश्विना (२)

हे अश्विनीकुमारो अंतरिक्ष तथा स्वर्ग में जो धन है तथा निषाद नाम की पांचवीं जाति दासों के पास जो धन है, उसे हमें दे दो. (२)

ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः. एवेत् काण्वस्य बोधतम् (३)

हे अश्विनीकुमारो! ब्राह्मण तुम्हारे कर्मों का वर्णन करते हैं. वे सब कर्म तुम महर्षि कण्व के द्वारा किए हुए समझो. (३)

अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते.
अयं सोमो मधुमान् वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः (४)

हे अश्विनीकुमारो! यह हवि धन सहित है. यह स्तोम अर्थात मंत्र समूह धर्म के द्वारा संचित है. यह सोम मधुरता से पूर्ण है. तुम इसी सोमरस के द्वारा आवश्यक शत्रु को जानो. (४)

यदप्सु यद् वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम्. तेन माविष्टमश्विना (५)

हे अश्विनीकुमारो! जल में, ओषधियों तथा वनस्पतियों में जो कर्म छिपे हुए हैं, उन से मुझे संपन्न बनाओ. (५)

सूक्त एक सौ चालीसवां — देवता—अश्विनी कुमार

यन्नासत्या भुरण्यथो यद् वा देव भिषज्यथः.
अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः (१)

हे अश्विनीकुमारो! तुम शीघ्र गमन करने वाले तथा चिकित्सा करने में कुशल हो. तुम्हारा यह वत्स मोतियों के द्वारा नहीं बांधा जाता है. तुम उस के समीप जाते हो, जिस के पास हवि है. (१)

आ नूनमश्विनोर्ऋषि स्तोमं चिकेत वामया.
आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि (२)

उपासना के योग्य अपनी बुद्धियों के द्वारा ऋषियों ने अश्विनी कुमारों के स्तोत्र को जान लिया. इस लिए तुम मधुरता वाले सोमरस को अथर्व मे सिंचित करो. (२)

सूक्त एक सौ उनतालीसवां　　　देवता—अश्विनीकुमार

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे.
प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिर्युयुतं या अरातय: (१)

हे अश्विनीकुमारो! इस के बालक के घूमने के हेतु एवं रक्षा के लिए इसे ऐसा घर दो, जहां स्यार न पहुंच सके. इस के शत्रुओं को उस से दूर करो. (१)

यदन्तरिक्षे यद् दिवि यत् पञ्च मानुषां अनु. नृम्णं तद् धत्तमश्विना (२)

हे अश्विनीकुमारो अंतरिक्ष तथा स्वर्ग में जो धन है तथा निषाद नाम की पांचवीं जाति दासों के पास जो धन है, उसे हमें दे दो. (२)

ये वां दंसांस्यश्विना विप्रास: परिमामृशु:. एवेत् काण्वस्य बोधतम् (३)

हे अश्विनीकुमारो! ब्राह्मण तुम्हारे कर्मों का वर्णन करते हैं. वे सब कर्म तुम महर्षि कण्व के द्वारा किए हुए समझो. (३)

अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते.
अयं सोमो मधुमान् वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथ: (४)

हे अश्विनीकुमारो! यह हवि धन सहित है. यह स्तोम अर्थात मंत्र समूह धर्म के द्वारा संचित है. यह सोम मधुरता से पूर्ण है. तुम इसी सोमरस के द्वारा आवश्यक शत्रु को जानो. (४)

यदप्सु यद् वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम्. तेन माविष्टमश्विना (५)

हे अश्विनीकुमारो! जल में, ओषधियों तथा वनस्पतियों में जो कर्म छिपे हुए हैं, उन से मुझे संपन्न बनाओ. (५)

181

सूक्त एक सौ चालीसवां　　　देवता—अश्विनी कुमार

यन्नासत्या भुरण्यथो यद् वा देव भिषज्यथ:.
अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथ: (१)

हे अश्विनीकुमारो! तुम शीघ्र गमन करने वाले तथा चिकित्सा करने में कुशल हो. तुम्हारा यह वत्स मोतियों के द्वारा नहीं बांधा जाता है. तुम उस के समीप जाते हो, जिस के पास हवि है. (१)

आ नूनमश्विनोर्ऋषि स्तोमं चिकेत वामया.
आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि (२)

उपासना के योग्य अपनी बुद्धियों के द्वारा ऋषियों ने अश्विनी कुमारों के स्तोत्र को जान लिया. इस लिए तुम मधुरता वाले सोमरस को अथर्व में सिंचित करो. (२)

इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदाविमे कण्वेषु वामथ (४)

हे अश्विनीकुमारो! यह हव्य तुम्हारे लिए हितकारी है. यह सोमरस तुवर्श, यदु तथा कण्व ऋषि का है. तुम यहां अवश्य आगमन करो. (४)

यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम्.
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम् (५)

हे अश्विनीकुमारो! दूर की अथवा समीप की ओषधि को अपने दंभी मन के द्वारा हमें विशेष शक्ति के लिए प्रदान करो तथा हमारे शिशु के लिए घर दो. (५)

सूक्त एक सौ बयालीसवां देवता—अश्विनी कुमार

अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः.
व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः (१)

मैं अपने आप को अश्विनीकुमारों की ज्ञान वृद्धि के साथ रहने वाला मानता हूं. तुम मेरी बुद्धि को प्रकाशित करो तथा मनुष्यों के लिए धन दो. (१)

प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि.
प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् (२)

हे स्तोताओ! तुम प्रातःकाल अश्विनीकुमारों को जगाओ. हे सत्यरूप देवो! तुम स्तोताओं को प्रशंसनीय बनाओ. हे होता! तुम अश्विनीकुमारो के यश को सभी ओर फैलाओ. (२)

यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे.
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् (३)

हे अश्विनीकुमारों के रथ! तू अपने तेज से उषा के साथ मिलता हुआ सूर्य के साथ दमकता है. वह रथ अश्वों के द्वारा मार्ग पर जाता है. (३)

यदापीतासो अंशवो गावो न दुह्र ऊधभिः.
यद्वा वाणीरनूषत प्र देवयन्तो अश्विना (४)

जब रश्मियां जल पीने वाली गायों के समान होती हैं, तब गायों के ऐनों से दूध काढ़ा जाता है. हे अश्विनीकुमारो! उस समय ऋषियों की वाणी तुम्हारी स्तुति करती है. (४)

प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे. प्र दक्षाय प्रचेतसा (५)

हे अश्विनीकुमारो! मैं अपनी सुंदर बुद्धि के द्वारा तुम्हारी स्तुति इसलिए करता हूं कि मैं मनुष्यों को वश में करने वाला महान बल और कल्याण प्राप्त कर सकूं. (५)

यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः. यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या (६)

हे अश्विनीकुमारो! तुम अपनी बुद्धि के द्वारा अपने पालनकर्त्ता के समीप विराजमान होते हो. तुम कल्याणकारी प्रशंसा के पात्र हो. (६)

सूक्त एक सौ तैंतालीसवां देवता—अश्विनीकुमार

तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः.
यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम् (१)

हे अश्विनीकुमारो! आज हम तुम्हारे वेगवान रथ का आह्वान करते हैं. तुम्हारा वह रथ ऊंचेनीचे स्थानों में जाता हुआ सूर्या को वहन करता है. वह रथ वाणी को वहन करने वाला, वसुओं को प्राप्त करने वाला तथा गायों से सुसंगत है. मैं उसी रथ को बुलाता हूं. (१)

युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः.
युवोर्वपुरभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत् ककुहासो रथे वाम् (२)

हे अश्विनीकुमारो! तुम लक्ष्मी के अधिष्ठाता देव हो. तुम उस का सेवन अपनी शक्तियों के द्वारा करते हो तथा उसे आकाश से नीचे नहीं गिरने देते. रथ में तुम्हें वहन करने वाले विशाल घोड़े तथा अन्न तुम्हारे शरीर से सदा मिले रहते हैं. (२)

को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वार्कैः.
ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत् (३)

कौन सा हवि दाता रक्षा पाने के लिए तथा तैयार किया हुआ सोमरस पीने के लिए तुम्हें बुला रहा है. कौन तुम्हारी सेवा कर रहा है. यज्ञ की सेवा करने वाले इंद्र को नमस्कार है. अश्विनीकुमारों को यहां लाने वाले रथ को मैं नमस्कार करता हूं. (३)

हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम्.
पिबाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय (४)

हे अश्विनीकुमारो! तुम सोने के बने हुए अपने रथ के द्वारा इस यज्ञशाला में आओ. तुम मधुर सोमरस पीते हुए इस सेवक पुरुष को रत्न और धन प्रदान करो. (४)

आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन.
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद् ददे नाभिः पूर्व्या वाम् (५)

हे अश्विनीकुमारो! तुम सोने के बने हुए अपने रथ के द्वारा आकाश से पृथ्वी पर आओ. अग्निपूजक तुम्हें न रोक सकें. मैं तुम्हारे लिए स्तुति करता हूं. (५)

नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे.

नरो यद् वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळ्हासो अग्मन् (६)

हे अश्विनीकुमारो! स्तोता मनुष्य स्तुति के साथ ही अजमीढ के पुत्रों के समीप गए. इस स्तोता को तुम इस के वीर्य से उत्पन्न होने वाले पुत्रों और पौत्रों के साथ दोनों लोकों में धन प्रदान करो. (६)

इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना.
ऊरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् (७)

हे अश्विनीकुमारो! इस यजमान को तुम ऐसी बुद्धि दो, जिस से यह तुम पर ही निर्भर रहे तथा तुम इस स्तोता के रक्षक रहो. (७)

मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्.
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम (८)

हमारे लिए आकाश मधुमय हो, अंतरिक्ष मधुमय हो, ओषधियां मधुमती हों तथा क्षेत्रपति भी मधुमय हो. हम अमृतत्व को प्राप्त कर के उस के अनुगामी बन कर घूमें. (८)

पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः.
सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वां इत् तां उप याता पिबध्यै (९)

तुम्हारा स्तोता और कर्म आकाश और पृथ्वी की कामनाओं की वर्षा करने वाला हो. तुम सोमपान कर के गोपूजा वाले सैकड़ों स्तोत्रों को प्राप्त होते हो. (९)

नरो यद् वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळहासो अग्मन् (६)

हे अश्विनीकुमारो! स्तोता मनुष्य स्तुति के साथ ही अजमीढ के पुत्रों के समीप गए. इस स्तोता को तुम इस के वीर्य से उत्पन्न होने वाले पुत्रों और पौत्रों के साथ दोनों लोकों में धन प्रदान करो. (६)

इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना.
ऊरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् (७)

हे अश्विनीकुमारो! इस यजमान को तुम ऐसी बुद्धि दो, जिस से यह तुम पर ही निर्भर रहे तथा तुम इस स्तोता के रक्षक रहो. (७)

मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्.
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम (८)

हमारे लिए आकाश मधुमय हो, अंतरिक्ष मधुमय हो, ओषधियां मधुमती हों तथा क्षेत्रपति भी मधुमय हो. हम अमृतत्व को प्राप्त कर के उस के अनुगामी बन कर घूमें. (८)

पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः.
सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वां इत् तां उप याता पिबध्यै (९)

तुम्हारा स्तोता और कर्म आकाश और पृथ्वी की कामनाओं की वर्षा करने वाला हो. तुम सोमपान कर के गोपूजा वाले सैकड़ों स्तोत्रों को प्राप्त होते हो. (९)